



कालिका धार्य सङ्कलितम्, [ तदुपरि ओमस्वगिरि स्मृति कृता सङ्कत टीका ] और पूज्य परमानन्दार्य कृत ज्ञापा टीका युक्त

पशिली दफ १००० पुस्तकें  
स्वदान श्री पुस्तक ५०॥-)

आयुत राय धनपतिविह बहादुर कृत आगमसङ्ग्रह के

स्वाधार्य की पुस्तक ॥ १५ पनरहवा जग सूत्र ॥ दान १००) रुपया

॥ पंनवणा सूत्र चतुर्थोपाङ्ग प्रारम्भः ॥

लैकागच्छीय श्री रामचन्द्र गणि कृत सस्कृतानुवाद युत

स्वपि नानकचन्दजी से सञ्चोचित होके मुद्रित हुआ ।

इस पुस्तक पर राजिन्दरी हुई है [ जनारम जैन प्रकाशक प्रेस नानकचन्द्र जतो ] सन् १८८४ ईसवी ।

५०० जीनमन्त्र सुसाधनी से  
५०० राय चतुर्विध यज्ञ







## नकल चिठी १

श्रीमज्जिनवरप्रसादलक्ष्यसद्गुह्यप्रकाशितधर्मत्रेपु श्री ५ रायघन  
पतिरसिहबहादुरेपु सधिनयमावेदनम् ।

आगे, मैंने सुना है आप को ऐसी इच्छा है कि पैतालियों जैनागम  
की पुस्तकें मूल टीका और ज्ञापाटीका सहित पाच ५ सौ कापी छपें  
और साधु श्रावकों के पटन पाठन के लिये पाचसौ स्थानमें पुस्तकाल  
य स्थापित करें सो यह अति आनंदकी बात है, परंतु जिन मन्त्राज्ञायों  
को द्रव्य देके पुस्तक लेने की इच्छा है उन लोगों के निमित्त भी यदि  
आप की आज्ञा हो तो वेचने के वास्ते पाचसौ कापी जैनयुक्तसुसाइटी  
की ओरसे भी छपवा ली जावे यह पुस्तकें मैं अभीमगज से प्रकाश

करूंगा अग्रे शुभम्, सम्बत् १८३३ । मि० । शु० । ११

द० जैन युक्त सुसाइटी

शहर मुरसीदाबाद

अभीमगज

कार्यसम्पादक

सुबह्नि सेठ

## नकल चिठी २

श्रीविविधविद्याविपारतत्परपु जैनयुक्तसुसाइटी कार्यसम्पादक  
मन्त्राज्ञायें प्रतिनिवेदनम् ।

जोकि पत्र आपका द्रव्य देके खरीदनेवाले लोगों के लिये सुसाइटी  
की ओरसे पैतालियों जैनागम की पाचसौ पुस्तकें छपवा लेने की  
आज्ञा को विषय में आया सो मैं स्वीकार करता हूँ कि आप जैनयुक्त  
सुसाइटी की तरफ से आगम की प्रत्येक पाच ५ सौ पुस्तकें वेचने के  
वास्ते छपवा लेवे, परंतु पाचसौ से अधिक छपनकी आज्ञा मैं नहीं  
देता, यदि और कोई छपवाना चाहे तो उचित है कि पहले मुज  
से आज्ञा लेलेवे क्योंकि इन ग्रन्थोंपर रजस्टररी हुई है, अग्रे शुभम् ।

सम्बत् १८३३ । मि० । शु० । १३

द० रायघनपतिसिंह बहादुर

शहर मुरसीदाबाद

## ॥ विज्ञापनम् ॥

इस अनादि अनन्त ससार में अनादि काल से बारबार जन्म मरण करते करते जीव थावर योनि में रहा, किसी एक अशुद्ध कर्मकी लघुता से जैसे पहानी नदी में पत्थर गुरुते गुरुते ग्रास चिकना और गोल हो जाता है, तैसे जीव भी जन्म-मरण करते करते पुण्यप्रकृतिरूप यथाप्रवृत्ति नाम करण से थावरपणे को छोड़ त्रसपने वैरिन्द्रियादिक में उपजता है, अथवा पचेद्वितीयचयोनि में, फेर किसी एक कर्मकी लघुता से मनुष्ययोनि में पैदा होता है, उसमें भी अक यवन स्नेच्छ देशको छोड़ आर्य मगधादि जो साठे पचीस देश हैं उनमें जन्म होना—आर्यदेश में जन्म होने पर भी अत्यजाति जाति को छोड़ उत्तमजाति और कुल में जन्म होना—उत्तम जाति और कुल पाने पर भी सब अगोपाग सुदर प्रमाण सहित होना, शरीर के सुदर होने पर भी दीर्घायु होना—सब अशुद्धकर्म के कम होजाने और शुद्धकर्म के बढजाने से होते हैं, नहीं

थोड़े आचूवाला पुरुष उसलोकसंबंधी वा परलोकसंबंधी काम कुछ कर सक्ता है, इसी कारण जगवान् बीत  
 रागने श्री हे आचूषमन् ( हे बड़े आचूवाले ) गीतम ऐसा कहके आचूको सब गुणों से बना दिखलाया है,  
 और श्री अशुभकर्म के लघुता से और शुभकर्म के उदय से धर्मकी राँच, धर्म का उपदेश करने वाला गुरु  
 और उनके वचन का सुनना मिलजाने पर श्री देव गुरु धर्म रूप तत्वपर सच्ची प्रथा होना वज्रत दुर्लभ  
 है, जिनोक्त तत्वपर सच्ची प्रथा होना यही नम्यक्त है, और सब तो मिथ्यादृष्टियों की श्री होता है, यह  
 सब अशुभकर्म के कम होजाने और शुभकर्म बढ़ने से जीव को मिलते है, इस हेतु अशुभकर्म का क्षम और  
 शुभकर्म के बढ़ने से यत्न करना अवश्य है, अशुभकर्मका क्षय और शुभ को बढ़ाने के लिये धर्म के नेत्रा  
 य और कोई श्री यत्न नहीं है, इस हेतु धर्म करो २ धर्म ही का सेवन करो, जैसा के घरके कार्य सिद्ध  
 करने में अनेक तरह से परिश्रम करते हो कुछ काल धर्म के वास्ते श्री परिश्रम करते रहो, कारण के धनी  
 धर्म सेवन करने वाले पुरुष ) की इंद्र आदि देवता श्री केवल प्रशंसा, अनुमोदना और भक्ति करके अप  
 ना जन्म सफल करते हैं, इतनी श्रद्धि पाके श्री उन को धर्म का सेवन करना दुर्लभ है और श्री धर्मी को  
 त्रिभुवन की लक्ष्मी, कल्पवृक्ष, चित्तामणि और कामधेनु आपसे दास हो मिलते हैं, तो पुत्र मित्र कलत्र  
 घर सवारी और राज्य मिलजाना क्या बड़ी चीज है ? धर्म सेवन करने वाले का दो घड़ी का जीना श्री  
 सफल और कार्यकारक है, परन्तु धर्महीन ( अर्थात् पेय, अक्षय, गत्य, अगम्य, अद्वय

और अनुद्वय इत्यादि विचार रहित ) का कोटाकोटि वर्ष जीना भी निष्फल और अकिंचित्कर है , पशुवत्  
 अपना आयु पूर्ण कर भरता है , इन्द्रिय का निग्रह कराने वाला , सकल कल्याण और सुगति का कारण ,  
 अवसागर तरने के लिये नौका रूप तीर्थंकरों का कहा जाऊँगा धर्म ही है और धर्म का मूल दया "वि  
 ना मतलब परायण दुःख को दूर करने की इच्छा" है दया से धर्म की प्राप्ति और धर्म से जीव मुक्त होते हैं ,  
 इसलिए दया सर्वोत्कृष्ट पदार्थ है । जैनदर्शन में दया के अनेक " स्वदया परदया द्रव्यदया ज्ञावदया नि  
 श्रयदया व्यवहारदया स्वरूपदया अनुबधदया " जेद विस्तार से वर्णन किये हैं सर्वदर्शनी दया का उपयोग  
 रखते हैं परन्तु सर्वांगी दया का उपयोग तो जैनदर्शन ही में स्वीकार है इसवास्ते जैनमत श्रेष्ठ भी कहाता  
 है , दयाके सर्वांग उपयोग होनेकी रीति यही है कि जैसे भोजन के वास्ते कोई एक पक्षान्त बनाया जाय  
 तो घृत पिष्ट चीनी उल्यादि सामग्री अवश्य अपेक्षित होती है सामग्री होनेपर भी यथाविधि यथार्थ ए  
 कठा होने से यथाविधि स्वादिष्ट पक्षान्त तयार होता है परन्तु हीनाधिक वस्तु होजाने से कदापि वैसा  
 पक्षान्त नहीं होता तैय ही यथाविधि दया पालीजाय तो यथाविध धर्मोपलब्धि होय , यद्यपि सर्वदर्शनों  
 में दयाका मान है परन्तु उसके स्वरूप में फेरफार करदेने से गतप्राय ( अर्थात् अकिंचित्कर वृथा ) है , जत्र  
 के उसका स्वरूपही शास्त्रानुसार यथार्थ नहीं जानसके है तो पालन करना कैसे हो सके , फेरफार और  
 कोई कहते है पशुप्राणघात अर्थात् पशुजनम से ठोछाना दया है , कोई जिस शरीर को धारण करके जीव

सुखी न होय प्रत्युत दुःखित होय व्याधिग्रस्तादि दीप युक्त होय तो ऐसे प्राणीको तादृश शरीर से मुक्तकर देना भी दया ही है, कोई सूक्ष्म अथवा स्थूल प्राणी जो मनुष्यको दुख देत है उनका नाश करना दया है, कोई बलि यागादिक में प्राणिवध करने से भी पुण्य मानते हैं और कोई स्थूल प्राणिरक्षामात्र को दया कहते है, इस तरह दया का उपयोग अव्यदर्शनी रखते है लेकिन यह भ्रम है; और एकरीत से—आचारधर्म दया धर्म क्रियाधर्म और वस्तुधर्म यह चार प्रकार धर्म होता है, इन चारो धर्मो के दान शील तप और ज्ञाव चार कारण है, जब धनवल होय तो दान होय, मनवल होय तो शील पाला जाय, शरीरवल होय तो तप होय, और सम्यग्ज्ञान होय तो ज्ञाव होय, यह ज्ञावधर्म दान शील तप से श्रेष्ठ है किसवास्ते के ज्ञा वधर्म का कारण ज्ञानवल है “जिसे वस्तुका स्वरूप यथार्थ जानाजाय उसको ज्ञान कहते है”, ज्ञानसे जैसी ज्ञात्मधर्म की वृद्धि और सरक्षण होता है उतना दान शील तपसे कदापि नहीं, क्योंकि नय, निक्षेप, प्रमाण, चारो अनुयांग का विचार, सप्तजगी, पद्मद्रव्यविचार, आदिक सर्व ज्ञानहीसे जीवकी परिपूर्ण प्राप्त होती है। दशवैकालिक में लिखा है के—ज्ञानहीन पुरुष की क्रिया केवल क्षेत्ररूप है अर्थात् क्रिया ज्ञानकी दासी है, और मस्देवी तथा जगत महाराज वैसी अवस्थामें भी रहके जो कर्म विमुक्त हुए यह ज्ञानहीका माहात्म्य है, ज्ञानकी जो तीक्ष्णता सोही अवधचारित्र है, जो निकाचित कर्म कीटिवर्पपर्यंत दानादि कर नसे भी नष्ट नहीं होता वह ज्ञानी के एक स्वासोत्स्वास में नष्ट होचका है इसीलिये ज्ञानीगुरु को रत्नाकर

और क्रियागुरु को पीपल के पान और कहा है, ज्ञान विना सम्यक्त छहिमा और भिदान्नीक समस्त क्रिया का मूल श्रद्धा नहीं होते यह कारण ज्ञानोपाजन के लिए अवश्य यत करना चाहिए ज्ञानके पात्र नेत्र-मति श्रुत अवधि मनपर्यव और केवल है परन्तु श्रुतज्ञान सबसे अधिकोपयोगी है क्योंकि यह पदार्थमात्र लोकालोक स्वमत परमत का प्रकाशक अज्ञानतिमिर को दूर करने के वास्ते सूर्य और दुन्नमकालरूप रात्री मे दीप सदृश है, उद्देश्य समुद्देश्य अज्ञा इत्यादि व्यवहार का लाभ भी श्रुतज्ञान सेही होता है इस श्रुतज्ञान के सुनने से शुद्ध स्वरूप विशुद्ध श्रद्धान को प्राप्ति होती है इसने शुद्धात्माका आचरण छोड़ेवन अनुभवन होता है और इससे परमपदप्राप्ति होती है, यही श्रुतज्ञान से पूर्वकाल मे श्रीगौतमादिक केवली हो ससार से मुक्त हुए वर्त्तमान मे महाविदेहक्षेत्र से विरहमान जिनेंद्रो से सुनके जीव मुक्त होते हैं, आगामिकालमे पद्मनाभ आदि तीर्थङ्गरोसे सुन अनेक जीव मुक्त होगे, इस श्रुतज्ञान की वाचना पृच्छना परावर्त्तना अनुप्रेक्षा और धर्मकथा होती है, श्रीउवाङ्गे सूत्रमे धर्मकथा चार प्रकार की कही है-आक्षेपिणी शिक्षापिणी निर्वेदिनी और सर्वदिनी, जिस्से तत्वमार्ग मे प्रवृत्ति होय उसको आक्षेपिणी, जिस्से मिथ्यात्व की निवृत्ति होय उसको विक्षेपिणी, जिस्से मोक्ष की अभिलाषा होय उसका निर्वेदिनी, जिस्से वैराग्य की भावना होय उसकी सर्वदिनी कहते हैं वह श्रुतज्ञान रूप कथा श्री आरिहन्त देवाधिदेव तीर्थङ्कर परमेश्वर समवसरणमे बैठ "उपन्तेइवा विगमेइवा ध्रुवेइवा", त्रिपदी उच्चारण पूर्वक करते हैं और त्रिपदी से ही गणधर द्वादशांग

की रचना करते हैं (उस्को सूत्र कहते हैं) उस कालमें जितने सूत्र है सब श्रुतज्ञान के भेद हैं यह श्रुतज्ञान सर्वोपकारी है इसलिए इसकी वृद्धि और सरक्षण के हेतु श्रवत्रय यत्न करना चाहिये वर्तमान कालमें जितने ज्ञानवृद्धि के उपाय हैं सब से उत्कृष्ट मुद्रायन्त्र है इस कारण पुस्तक सुलभता ज्ञानवृद्धि की अति उत्कृष्ट अति सुगम रीति की स्वीकार करना जो के पूर्वाचार्योंने बड़े परिश्रम से परोपकार के हेतु ग्रथ बनाये हैं छपवाके प्रसिद्ध करना हर एक विद्वानोको देना इससे अधिक और कोई श्रेष्ठ कार्य नहीं है , यही सब कारण शीघ्र श्रीमूर्ध्निदावाद निवासी श्रीराय धनपतिसिंह बहादुर ने १५ आगम छपवाके हरेक जगे भंडार स्थापन किये हैं आप लोग भी यथाशक्ति इसके करने को प्रवृत्त होय के जिस्से पुन जैनमत युवावस्था को प्राप्त होय इति शम् ॥

वनारस जैनप्रभाकर

नानक चन्द्र यती

# भूमिका।

—०—

पसवणा, इसकी प्रकृति प्रज्ञापना है, प्राकृत शब्द संस्कृत शब्दको आदेश निर्देश करने से सिद्ध होता है। प्रज्ञापना शब्द का समुदायार्थ यह है कि (प्र) प्रम्पसे (ज्ञा) जानिये (प) पदार्थ जिससे सो प्रज्ञापना अर्थात्—समस्त दर्शनी जिसरीति से पदार्थ का निरूपण नहीं करसके केवल तीर्थकर ही यथावस्थित स्वरूप से पदार्थ निरूपण करसके है तो, यथावस्थितस्वरूप निरूपण करके शिष्योकी बुद्धि में आरोपण कियाजाय जीवाजीव आदिक पदार्थ जिसे वह प्रज्ञापना कहाती है। यद्यपि अन्यदर्शनी भी जीवाजीवादि पदार्थोको शिष्य की बुद्धि में आरोपण करते है परन्तु यथार्थ स्वरूप 'जैसा २ जिस २ पदार्थ का स्वरूप है वैसाही ठीक ठीक स्वरूप', निरूपण तीर्थकर सर्वज्ञ ही करसके है अन्यका सामर्थ्य नहीं और वह पदार्थ का यथावस्थित स्वरूप इस ग्रन्थ के द्वारा शिष्यो की बुद्धि के गोचर होता है इससे उस का प्रज्ञापना यह नाम सार्थक है।

समवायाद् में कहे जाए पदार्थो का निरूपण इसमें है इससे समवायाद् चतुर्थ अङ्ग का उपाद्ग है ॥  
कहे का फिरसे कहना निरर्थक है जैसा नहीं, क्यों कि कहे पदार्थो को भी फिरसे विस्तार पूर्वक कहना



मन्दबुद्धि वाले शिष्य लोगों के अनुग्रह के लिये होता है उससे सार्थक है निरर्थक नहीं ।

यह प्रज्ञापना नामक उपाङ्ग भी सब जीव अजीव आदिक पदार्थों के ज्ञासन ( कहने ) से ज्ञात्र है और शास्त्र की आदि में बुद्धिमान् पुरुषों की प्रवृत्ति के लिये प्रयोजन आदि तीन और मङ्गल अवश्य कहना चाहिये नहीं तो वृथा कटकशाखाभर्दन की तरह कोई भी इसमें प्रवृत्त न होगा

इहा प्रयोजन दो प्रकार है, एक पर और दूसरा अपर है, पर भी दो प्रकार और अपर भी कर्त्तागत श्री तागत होने से दो प्रकार है, तथा द्रव्यास्तिकनय के मत से देखिये तो आगम नित्य है और आगम के नित्य होजाने से कर्त्ता का सम्भाव ही है “जैसा के कहा है—यह द्वादशांगी कधी नहीं थी कधी है कधी न होगी ऐसा नहीं ( किन्तु ) ध्रुव है नित्य है जास्वती है”

पर्यायास्तिकनय के मत से देखिये तो आगम अनित्य है अनित्य का सम्भाव अवश्य होगा, तत्त्वदृष्टिसे देखिये तो आगम सूत्र और अर्थ उभयरूप है इसलिये अर्थ की अपेक्षा से नित्य और सूत्र की अपेक्षा से अनित्य होने से कर्त्ता का अवश्य सम्भाव है ॥

ग्रन्थकर्त्ता का अनन्तर प्रयोजन सत्त्वानुग्रह और परम्पर प्रयोजन अपवर्गप्राप्ति है “कहा है—के जो दुखी जीवों की सर्वज्ञ के कहे उपदेश का उपदेश उनके कृपा करते है वो थोड़ेही काल में मुक्त हो जाते हैं,” अर्थ से कहनेवाले अरिहन्त को क्या प्रयोजन है क्यो के वह तो कृतकृत्य हैं और प्रयोजन विना अर्थरूप से कहने

का परिश्रम भी व्यर्थ है विनाप्रयोजन मूर्ख भी किसी कार्य में प्रवृत्त नहीं होता तो तीर्थंकर कैसे प्रवृत्त हुए कोई प्रयोजन इनकी भी कहना चाहिये औसा न कहो, कारण के अर्थरूप से कहने का परिश्रम तीर्थंकर नामर्म के विपाक का उदय से होता है “कहा है के-तीर्थंकरनामकर्म अगलान धर्मदंशना के देने ही से भोगाजाता है”, अर्थात्-तीर्थंकरनामकर्म आधीनता से धर्मदंशनाव्यापार होता है उसकर्म का वह भोगही है कोई प्रयोजन अप्मदादिवत् उनकी नहीं है ।

श्रोता का अनन्तर प्रयोजन जो अध्ययन कहा जायगा उसके अर्थ का ज्ञान है और परम्परप्रयोजन मोक्षप्राप्ति है, श्रोता विवक्षित अध्ययन को अर्थ से अच्छीतरह सुनकर ससार से विरक्त होते हैं, विरक्त होकर ससार से निकलने की इच्छा से सयममार्ग में यथागम प्रवृत्त होते हैं, यथागम सयम मार्ग में प्रवृत्त होने से सयम का प्रकर्ष होता है उससे सकल कर्मद्वय और उससे मोक्षप्राप्ति होती है, लिखा है के-सम्यक् पदार्थ ज्ञान से जीव विरक्त होते हैं, विरक्त हो क्रिया में आशक्त और क्रिया में आशक्त होने से परमगति को पञ्चाचते हैं ॥ इस ग्रन्थ में अन्निधेय जीव अजीव पदार्थ का स्वरूप है ।

सम्बन्ध दो प्रकार है उपायोपेय ज्ञावलक्षण दूसरा गुरुपर्वक्रमलक्षण, तहां पहिला नैयायिक के-जैसे कि वचनरूपापत्त प्रकरण उपाय और उन प्रकरण का परिज्ञान उपेय है । दूसरा गुरुपर्वक्रमलक्षण केवल श्रद्धानुसारि के-जैसा के सूत्रकार आगे कहेंगे, जानना चाहिये ॥

यह प्रज्ञापना नामक उपाङ्ग सम्यग्ज्ञान का कारण है, इसी हेतु परंपरा से मुक्तिपद को देनेवाला है, इसीसे स्वयं योगो व्रत है तोत्री विघ्न की शान्ति के लिये आदि मध्य और अन्त में मगल कहा जाता है ॥

ग्रन्थ की आदि में मङ्गल निर्विघ्न आख्यपरिसमाप्ति के लिये है, मध्यमगल अथगृहीतज्ञास्य की स्थितिके लिये है, और अन्तमगल शिष्य प्रश्नियों के आख्य अव्यवच्छेद हो इसलिये है ॥

तृतीय पदात्मक यह प्रज्ञापना सूत्र है इसमें जीव अजीव आश्रय बन्ध संवर निर्जरा और मोक्ष का प्ररूपण किया है तथा प्रज्ञापना वज्रवक्तव्यता विशेष चरमपरिणाम सज्ञक पांच पदमें जीव अजीव की प्रज्ञापना, प्रयोगपद और क्रियापद में आश्रय (काय वचन मन कर्मयोग) की प्रज्ञापना, कर्मप्रकृतिपदमें बन्ध प्रज्ञापना, समुद्रघातपद में संवर निर्जरा बन्ध और मोक्ष की प्ररूपणा, वाकी स्थान आदि पदोंमें कही किसी कीसी प्रज्ञापना की है, ॥

अथवा इसमें द्रव्य क्षेत्र काल और भाव की प्रज्ञापना है क्योंकि इन चारपदार्थों के सेवाय और कोई प्रज्ञापनीय पदार्थ नहीं है इही पदार्थों के जानने से तत्त्वज्ञानरूप परमपुरुषार्थ सिद्ध होता है इस कारण इसके पढ़ने पढ़ाने में अवश्य यत्न करना चाहिये, परन्तु पढ़ने का अधिकार उरको है जोके मोक्षमार्ग का अभिलाषी और गुरुका आज्ञाकारी हो, और इसके देने का अवसर भी वही है। इतिशम् ॥

बनारस जैनप्रभाकर प्रेस नानकचट यती ।

## ॥ अथ श्रीपद्मवर्णा सूत्रानुक्रमणिका प्रारभ्यते ॥



### विषय और प्रस्तावनादि

आदि मंगल "ववगय जस्मरण नए," यह गाथा  
शास्त्र प्रस्तावना गाथा ५

पद्मवर्णा ठाणाइ इत्यादि ३६ पठ इसग्रन्थमें है  
उन की सख्या और वक्तव्यताधिकार  
तथा ३६ पदों में पहला पद पद्मवर्णा नाम  
कहै उसमें कितनी वक्तव्यता है सो कहते हैं, प  
द्मवर्णा इस पद का अर्थ तो पहले हम कह चु  
कहै इससे नहीं कहा

१ पद पद्मवर्णा नामक

### पत्राक विषय और प्रस्तावनादि पत्रांक

२ प्रज्ञापना के जीव अजीव से दो जेठ

३ रूपी अरूपी जेठ में अजीव पद्मवर्णा दो प्र०

४ अरूपी अजीव पद्मवर्णा धर्मास्ति अधर्मास्ति

५ आकाशास्ति काय १ दंश २ और प्रदेश ३ एव १

६ अष्टा समय १ एव १० भेद कहे

७ (अरूपी अजीव पद्मवर्णा ऊर्ध्व)

रूपी अजीव पद्मवर्णा स्कन्ध १ स्कन्ध दंश २  
स्कन्धप्रदेश ३ और परमाणु पुद्गल ४ एव चार

७ तरह

परमाणु पुद्गल वर्ण गन्ध रस स्पर्श और सस्यान  
 जेद से ५ प्रकार कहे  
 वर्ण परिणत पुद्गल पांच वर्ण से पाच तरह के  
 गन्ध परिणत पुद्गल गन्ध के दो तरह न दो प्रकार  
 रस परिणत पुद्गल रस के पाच जेद से पांच तरह  
 स्पर्श परिणत पुद्गल छ्वाठ तरह है स्पर्श ८  
 है इससे  
 सस्यान परिणत पुद्गल पांच प्रकार है सस्यान ५  
 ही है  
 पुद्गलों के भांगे जेवखन काल व० ते गंधने सुझि  
 गंध परिणयावि इत्यादि भांगे सर्व ५३० कहे है  
 (अजीव पन्तवणा कही)

जीव पन्तवणा सनार अससार समापन्त जीव जे  
 दसे दो प्रकार कही १८  
 अससार समापन्त जीव पन्तवणा अनन्तर पर  
 म्पर सिद्ध अससार समापन्त जेदने दो प्रकार है १८  
 अनन्तर सिद्ध अससार समापन्त जीव पन्तवणा  
 १५ भेद है एवं पनगह जेद सिद्धो के है १९  
 परम्पर सिद्ध ससार समापन्त जीव पन्तवणा अ  
 नेक जेद २१  
 (अससार समापन्त जीव पन्तवणा कही)  
 ससार समापन्त जीव पन्तवणा पांच प्रकार एके  
 न्द्रियादि से कही २२  
 एकेन्द्रिय संसार समापन्त जीव पन्तवणा पृथ्वी  
 कायादि जेद से पांच तरह है २३

पृथ्वीकाय के जेद

अणुकाय के जेद

तेजस्काय के जेद

वायुकाय के जेद

वनस्पति काय के जेद गुच्छा गुल्म वल्ली  
(एकेन्द्रिय सत्सार समापन्न जीव पन्त्रवणा कही)

{ इत्यादि

द्वीन्द्रिय सत्सार समापन्न जीव के अनेक जेद

(द्वीन्द्रिय सत्सार समापन्न जीव पन्त्रवणा)

त्रीन्द्रिय पन्त्रवणा के अनेक जेद उवाङ्मया इत्यादि

(त्रीन्द्रिय सत्सार समापन्न जीव पन्त्रवणा कही)

चौरिन्द्री पन्त्रवणा के अनेक जेद अधिप पौत्ति

य इत्यादि

२३

२७

२८

२९

२९

२३

२५

२५

(चतुरिन्द्रिय सत्सार समापन्न जीव पन्त्र०)

पचेन्द्रिय सत्सार समापन्न जीव पन्त्रवणा चार

गति के जेद से चार प्रकार

नारकी सात जेद

तियोग्योनिक त्रिविध जल थल खचर, इनके त्री

जेद मच्छादिक, उनके त्री जेद विस्तार से कहे

(तियोग्योनिक पचेन्द्रिय सत्सार समापन्न०)

मनुष्य के जेद दो समूर्च्छिम गर्तज, कहां वह

पैदा होते है किस्तम्ह होते है इत्यादि एकोरक

आदि जेद, शक यवन आदि जेद, आर्य २

इत्यादि

ब्राह्मी लिपि में १८ तरह का लेख्य त्रिधान है

(मनुष्य पचेन्द्रिय सत्सार समापन्न जीव प०)

२६

२७

२७

२८

६२

## विषय और प्रश्नादि

पत्रांक

देवता चारप्रकार कहे जवनपति जोतिषी वान  
व्यन्तर वैमानिक

जवनपति १० प्रकार असुरकुमारादि

वानव्यन्तर ८ जेदै किवर कि पुरुपादि

जोतिषी ५ प्रकार चन्द्र सूर्यादि

वैमानिक २ जेदै सौधमोदि देवलोक गन

और कल्पातीत, फिर इनके जेद कहे

(पंचेद्रिय ससार समापन्न जीव पन्तवणा कही)

॥ जीव पन्तवणा कही ॥

॥ पन्तवणा नाम प्रथम पद ज्ञाया ॥

—०—

॥ २ स्थान नामक पद का प्रारम्भ ॥

कहा बादर पृथ्वीकाय पर्याप्त के स्थान कहे

## विषय और प्रश्नादि

पत्रांक

कहां बादर पृथ्वीकाय अपर्याप्त के स्थान कहे

कहां सूक्ष्म पृथ्वीकाय पर्याप्त अपर्याप्त के स्थान हैं

बादर अप्काय पर्याप्त के स्थान का प्रश्न

बादर अप्काय अपर्याप्त के स्थान का प्र०

बादर तेजस्काय पर्याप्त के स्थान का अधि०

बादर तेजस्काय अपर्याप्त के स्थान का नि०

सूक्ष्म तेजस्काय पर्याप्त अपर्याप्त के स्थान का प्र०

बादर वायुकाय पर्याप्त के स्थान का निर्णय

बादर वायुकाय अपर्याप्त के स्थान का निर्णय

सूक्ष्म वायुकाय पर्याप्त अपर्याप्त के स्थान का प्र०

बादर वनस्पतिकाय पर्याप्त के स्थान का अधि०

बादर वनस्पतिकाय अपर्याप्त के स्थान का प्र०

सूक्ष्म वनस्पति पर्याप्त अपर्याप्त के स्थान का

७८

७९

८०

८१

८१

८२

८२

८२

८३

८३

८४

८४

७३

७४

७५

७६

७६

७७

विषय और प्रस्ताव	पत्रांक	विषय और प्रस्ताव	पत्रांक
कहाँ द्वीन्द्रय पर्याप्त अपर्याप्त के स्थान कहे	८५	धूमप्रभा के नारकी का प्रश्न	११
कहाँ त्रीन्द्रय पर्याप्त अपर्याप्त के स्थान कहा	८५	तमोपयित्री के पर्याप्त अपर्याप्त नारकी का	१२
कहाँ चौरिन्द्रय पर्याप्त अपर्याप्त के स्थान कहे	८६	तमत्तमा नारकी प० अप० स्थान का प्रश्न	१२
कहाँ नारकी पर्याप्त अपर्याप्त के स्थान कहे	८७	पर्याप्त अपर्याप्त पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च के स्थान	१३
कहाँ नारकी वसते है	८७	मनुष्य पर्याप्त अपर्याप्त के स्थान प्रश्न, उपपात,	१४
कहाँ रत्नप्रभापूथिवी के पर्याप्त अपर्याप्त नारकी	८८	समुद्रघात, स्वस्थान	१४
वसे है और उनके स्थान कहे	८८	भवनवासि देव प० अप० स्थान का प्रश्न भवन	
कहाँ शर्कराप्रभापूथिवी के पर्याप्त अपर्याप्त नार	८९	वासि के रहने का स्थान और बहुतसा वर्णन	१४
की के स्थान कहे, कहा वह वसे है	८९	क्रिया है	
वालुकाप्रभाके पञ्जत अपज्जत नारकी के स्थान	८९	असुरकुमार स्थान प्रश्न कहा रहते है इत्यादि	
और वसने का	९१	असुरकुमारों का वर्णन लोकपाल अग्रमहिषी	११
पकप्रभा के नारकी का प्रश्न	९१	पर्यन्त अनीक आदिका वर्णन है	१०२
		दक्षिण दिशा के असुरकुमारों का आधिकार	



उत्तर दिशा के असुरकुमारों का अधिकार  
 नागकुमारों के स्थान रहने का स्थान  
 दक्षिण के नागकुमारों का अधिकार  
 उत्तर के नागकुमारों का अधिकार  
 सुवर्णकुमारों के स्थान और रहना कहाँ है  
 दक्षिणसुवर्णकुमारों का अधिकार  
 उत्तरसुवर्णकुमारों का अधिकार  
 चौवटि असुराण इत्यादि गाथा ७, काला असुर  
 रकुमारा इत्यादि गाथा ४ वही है  
 वानव्यन्तर देवों के स्थान और वसने का प्र०  
 पिशाचदेवाधिकार, रहना उनका  
 दक्षिणपिशाचाधिकार  
 उत्तर पिशाचों में विशेष कथन

एव भूतो का भी अधिकार जाणना यात्रु-गंधर्व  
 पर्यन्त कहना इत्यादि  
 अणपत्नी पणपत्नी देवतों के स्थान, रहना इ-  
 त्यादि अधिकार विस्तार से कहा है  
 जोतिषी देवताओं के स्थान, रहना इत्यादि नि०  
 वैमानिकों के स्थान, रहने का वर्णन विस्तार से  
 सौधर्मदेव स्थान, कहाँ है इत्यादि वर्णन  
 शक्रेंद्र का वर्णन विस्तार से  
 ईशानदेवस्थान कहाँ है इत्यादि अधिकार  
 ईशानेन्द्राधिकार विस्तार से  
 सनत्कुमार देवताओं का अधिकार  
 सनत्कुमारेन्द्र का अधिकार  
 माहेन्द्र देवस्थानाधिकार

१०३  
 १०४  
 १०५  
 १०६  
 १०७  
 १०७  
 १०७  
 १०८  
 १०९  
 ११२  
 ११३  
 ११४

११४  
 ११४  
 ११५  
 ११७  
 ११९  
 १२०  
 १२१  
 १२२  
 १२२  
 १२३  
 १२३

विषय और प्रश्नादि

पत्रांक

विषय और प्रश्नादि

पत्रांक

ब्रह्मदेव स्थान का अधिकार  
लान्तक देव लोकाधिकार  
महा शुक्रदेव लोक स्थानाधिकार  
सहस्रार देवलोक का अधिकार  
आनत प्राणत देवलोक का प्रश्न  
धारण अच्युत देवलोकाधिकार  
अवस्तन ग्रैवेयक विमान का प्रश्न  
मध्यम ग्रैवेयक विमान के विषय का प्रश्न  
उपरिम ग्रैवेयक विमान का निर्णय  
अनुत्तरोपपत्तिक प० अ० देवस्थान और वह  
कहा सिद्धो के स्थान और कहा सिद्ध रहते हैं  
इत्यादि इंपत्याग्नाराधिकार तथा सिद्धो का

१२४  
१२४  
१२५  
१२६  
१२६  
१२६  
१२८  
१२९  
१२९  
१३०

अधिकार  
सिद्धो के वर्णन विषय की गाथा कई एक  
(स्थान नामक दूसरा पद पूर्ण)  
३ पद का प्रारम्भ ऊँचा है।  
दिसिगइदियकाए यह द्वार निरूपण गाथा २  
प्रथम दिग्द्वार  
दिसाणवाएण सद्यथोवा जीवा पञ्चिच्छिमेण  
इत्यादि  
सर्वस्तोक पृथिवीकाय दक्षिण मै इत्यादि  
सर्वस्तोक अण्काय पश्चिम मै  
सर्वस्तोक तेजस्काय दक्षिण उत्तर मै  
सर्वस्तोक वायुकाय पूर्व मै

१३०  
१३२  
१३७  
१३८  
१३८  
१३८  
१३८

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
सर्वस्तोक वनस्पतिकाय पश्चिम में	१३८	सर्वस्तोक सनत्कुमार देव पूर्व पश्चिम	१४३
सर्वस्तोक द्वोन्निद्रय पश्चिम दिशि में	१३९	एवं माहेन्द्र में, एव सहस्रार व्यादि देवलोक प्र०	१४३
सर्वस्तोक त्रीन्द्रिय पश्चिम दिशि में	१३९	सर्व थोफा सिद्ध दक्षिण उत्तर दिशा में	१४५
सर्वस्तोक चौरिन्द्री पश्चिम दिशि में	१३९	॥ पहला दिशा द्वार ऊँचा ॥	
सर्व थोफा नारकी पूर्व पश्चिम में	१३९	॥ दूसरा गति द्वार चला है ॥	
एव सातो नरक के नारकी का प्रश्न	१३९	एह नारकी तिर्यच मनुष्य देव और सिद्धों में कौ	
सर्व थोफा पंचेन्द्रिय तिर्यच पश्चिम में	१४१	न किस्से थोफा कौन किस्से वज्रत कौन किस्से	
सर्व थोफा मनुष्य दक्षिण उत्तर में	१४२	तुल्य और कौन किस्से विशेषाधिक है इत्यादि	१४५
सर्व थोफा भवनवासो देव पूर्व पश्चिम	१४२	एह नारकी तिर्यच तिर्यचणी मनुष्य मनुष्यणी दे	
सर्व थोफा वानव्यन्तर देव पूर्व पश्चिम	१४२	वता देवी और सिद्ध इन छाठों गति में कौन कि	
सर्व थोफा जोतिपी देव पूर्व पश्चिम	१४२	स्से अल्प बहुत तुल्य और विशेषाधिक है	१४५
सर्व थोफा सौधर्म में देव पूर्व पश्चिम	१४२	॥ दूसरा द्वार हुआ ॥	
ईजान में सौधर्म की तरह है	१४३	॥ तिसरा द्वार प्रारम्भ ॥	

विषय और प्रश्नादि	पत्राक	विषय और प्रश्नादि	पत्राक
यह सङ्गद्वय एकेन्द्रिय द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय पंचेन्द्रिय अनिन्द्रिय इन में कौन किस्से अल्प अधिक तुल्य और विशेषाधिक होय	१४६	॥ तिसरा द्वार समाप्त हुआ ॥ ॥ चौथा कायद्वार कहते हैं ॥	१४८
सङ्गद्वय एकेन्द्रिय द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय पंचेन्द्रिय अपर्याप्त को में कौन किस्से अल्पादि एकेन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्त का अल्पादि द्वीन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्तका अल्पबहुत्वादि त्रीन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्तका अल्पबहुत्वादि चौरिन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्त का अल्पादि पंचेन्द्रिय पर्याप्ता अपर्याप्त का अल्पादि	१४६	सकाय पृथिवीकाय अप्रकाय तेजस्काय वायुकाय वनस्पतिकाय त्रसकाय अकायिको में अल्पादि सकाय पृथिवीकाय अप्रतेज वायु वनस्पति और त्रसकाय अपर्याप्तक में अल्पादि प्रश्न सकाय पृथिवीकाय आदि यावत् पर्या० में अल्पादि सकाय पञ्जत्त अपज्जत्त में अल्पादि पृथिवीकाय पञ्जत्त अपज्जत्त में अल्पादि अशकाय पञ्जत्त अपज्जत्त में अल्पबहुत्वादि तेजस्काय पञ्जत्त अपज्जत्त में अल्पादि वायुकाय पञ्जत्त अपज्जत्त में अल्पादि वनस्पतिकाय पञ्जत्त अपज्जत्त में अल्पादि	१४९ १४९
सङ्गद्वय एकेन्द्रिय द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय पंचेन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्त में कौन किस्से अल्पादि प्रश्न	१४८		१४०

त्रसकाय पर्याप्त में कौन किस्से थोड़ा ड०  
यह सकाय पृथिवीकाय झुप्काय तेजस्काय वा  
युकाय वनस्पतिकाय और त्रसकाय पर्या० झु

पर्याप्त कौन किस्से थोड़ा इत्यादि  
यह सूक्ष्म पृथिवीकाय झुप् तेज वायु वनस्पति

और निगोद इन में कौन किस्से थोड़ा ड०

सूक्ष्म अपर्याप्त पृथिवी झुप् तेज वायु वनस्पति  
और निगोद कौन किस्से थोड़ा वज्रत इत्यादि

सूक्ष्म पर्याप्त पृथिवीकाय आदि का प्रश्न

(तिसरा द्वार पूर्ण)

॥ चौथा द्वार कहै है ॥

सूक्ष्म पर्याप्त पर्याप्त में कौन किस्से थोड़ा

सूक्ष्म पृथिवीकाय पर्याप्त अपर्याप्त कौन किस्से

१५१

१५१

१५१

१५२

१५२

१५३

१५३

एव अप्काय प्रश्न निर्णय

सूक्ष्म तेजस्काय प्रश्न निर्णय

एव वायु वनस्पति निगोद प्रश्न निर्णय

यह वादर पृथिवी झुप् तेज वायु वनस्पति प्र

त्येक शरीर वादर वनस्पति वादर निगोद और

वादर त्रसकायिको में कौन किस्से थोड़ा ड०

वादर पृथिवीकाय आदि अपर्याप्त प्रश्न निर्णय

वादर पृथिवीकाय आदि पर्याप्त प्रश्न निर्णय

वादर पृथिवीकाय आदि प० झुप० प्रश्न

सूक्ष्म पृथिवीकाय आदि यावत् वादर पृथिवी

काय आदि में कौन किस्से थोड़ा इत्यादि प्रश्न

निर्णय

(चौथा द्वार पूर्ण)

१५३

विषय और प्रवृत्तादि	पत्रांक	विषय और प्रवृत्तादि	पत्रांक
<p>॥ पचम द्वार आरम्भ ॥</p> <p>जीव सयोगी मन्तयोगी वागयोगी काययोगी और अयोगी इनमें कौन किस्से थोड़ा घणा इ०</p> <p>(पचम द्वार पूर्ण)</p> <p>॥ ठठा द्वार कहै है ॥</p> <p>जीव सर्वेष्ट स्त्रीवेद पुरुषवेद नपुंसकवेद और अवे दक इनमें कौन किस्से थोड़ा घणा इत्यादि प्रश्न</p> <p>(ठठा द्वार पूर्ण हुआ)</p> <p>॥ सातमा द्वार कहै है ॥</p> <p>यह जीव सलेत्रय कृष्णलेशी नीललेशी कापोत लेशी तेजोलेशी पद्मलेशी शुक्ललेशी और अलेशी इनमें कौन किस्से थोड़ा और घणा इत्यादि</p> <p>(सातमा द्वार हुआ)</p>	१६७	<p>॥ आठवा द्वार कहते है ॥</p> <p>यह जीव सम्यग्दृष्टी मिथ्यादृष्टी सम्यङ्मिथ्यादृष्टी इनमें कौन किस्से थोड़ा घणा इत्यादि</p> <p>(नवा द्वार हुआ)</p> <p>॥ दशम द्वार कहै है ॥</p> <p>यह जीव आभिनिवोधिक्कज्ञानी श्रुतज्ञानी अत्र धिज्ञानी मनपर्यवज्ञानी केवलज्ञानी इनमें कौन किसे थोड़ा इत्यादि</p> <p>एव अज्ञान प्रश्न निर्णय</p> <p>एव ज्ञान ५ अज्ञान ४ प्रश्न समुदाय से</p> <p>(१० द्वार हुआ)</p> <p>॥ ११ द्वार कहै है ॥</p> <p>यह जीव चक्षुदर्शनी श्रवणदर्शनी अत्रधिदर्शनी</p>	१६९ १७० १७०
	१६८		१६९

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
केवलदर्शनी इनमे कौन किस्से थोडा घणा है ( ११ द्वार पूर्ण ऊञ्या ) ॥ १२ द्वार कहै है ॥ जीव सयत असयत सयतासयत नो संयत नो असयत नो सयतासयत इनमे कौन किस्से थो छा इत्यादि ( १२ वां द्वार ऊञ्या ) ॥ १३ वा द्वार कहै है ॥ यह जीव साकारोपयोगी अनाकारोपयोगी में कौन किस्से थोछा घणा इत्यादि प्रश्न ( १३ वां द्वार पूर्ण ऊञ्या ) ॥ १४ वां द्वार कहते हैं ॥ जीव अनाहारक अनाहारक में कौन किस्से थोछा	१७०	( १४ वां द्वार पूर्ण ऊञ्या ) ॥ १५ वां द्वार कहै है ॥ जीव नासक अनासक में कौन किस्से थोछा ( १५ वां द्वार कहा ) ॥ १६ वां द्वार कहते हैं ॥ जीव परित्त अपरित्त नो परित्त नो अपरित्त में कौन किस्से थोछा घणा ( १६ द्वार ऊञ्या ) ॥ १७ वां द्वार कहते हैं ॥ जीव पर्याप्त अपर्याप्त नो पर्याप्त नो अपर्याप्त में कौन किस्से थोछे घणे है ( १७ द्वार ऊञ्या )	१७१ १७१ १७१ १७२

विषय और प्रश्नादि	पत्राक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
यह सूक्ष्म वादर नोसूक्ष्म नोवादरो में कौन थोड़ा (१८ द्वार ज्ञाया) ॥ १९ वा कहै है ॥	१७२	काय जीवास्ति काय पुद्गलास्ति काय अष्टाचमन मे कौन किस्से द्रव्यार्थता से थोड़ा घणा इत्यादि एवं प्रदेयार्थताने भी प्रश्न निर्णय धर्मास्ति काय आदि द्रव्यार्थ प्रदेयार्थ से प्रश्न (२१ द्वार हुआ) ॥ २२ वा द्वार कहै है ॥	१७३ १७३ १७४
यह जीव सज्ञी असज्ञी नो सज्ञी नो असज्ञी मे कौन किस्से थोड़ा इत्यादि (१९ द्वार ज्ञाया) ॥ २० द्वार कहै है ॥	१७३	जीव चरम अचरम में कौन किस्से थोड़ा घणा इत्यादि (२२ वां द्वार हुआ) ॥ २३ वा द्वार कहै है ॥	१७७
जीव भवसिद्धिक अभवसिद्धिक नो भवसिद्धिक नो अभवसिद्धिको में कौन किस्से थोड़ा इ० (२० द्वार ज्ञाया) ॥ २१ वा द्वार कहै है ॥	१७३	यह जीव पुद्गल अष्टाचमय सर्वद्रव्य सर्वप्रदेश सर्व पर्याय में कौन किस्से थोड़ा इत्यादि नि० (२३ द्वार पूर्ण हुआ)	१७८



विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
<p>॥ २० वा द्वार कहै है ॥ क्षेत्रानुपातसे उर्ध्वलोक आदि में जीवों की संख्या (२० वा द्वार हुआ) ॥ २५ वा कहते है ॥ जीव ज्ञायुर्कर्म के वधक अथवा अपर्याप्त प र्याप्त सुप्त जागर समोहित असमोहित सात्तावे दक असात्तावेदक इन्द्रियोपयोगयुक्त नोद्द्रियो पयोगयुक्त साकारोपयोगयुक्त अनाकारोपयोग युक्त में कौन किस्से थोड़ा घणा इत्यादि (२५ वा द्वार कहा) ॥ २६ वा द्वार कहै है ॥ क्षेत्रानुपात से पुद्गल का त्रैलोक्य में अल्पादि यह परमाणु पुद्गल संख्यातप्रदेशी असंख्यातप्रदे</p>	१७८	<p>शी अनन्तप्रदेशी स्कन्ध इनमें द्रव्यार्थ प्रदेशार्थ द्रव्यार्थ प्रदेशार्थसे कौन किस्से थोड़ा इत्यादि एक प्रदेशावगाढ संख्यात असंख्यात प्रदेशाव गाढ पुद्गलो में द्रव्यार्थ प्रदेशार्थ द्रव्यार्थप्रदेशा र्थसे कौन किस्से थोड़ा घणा एक समयस्थितिक संख्यात असंख्यात सम स्थितिक पुद्गल में द्रव्यार्थ प्रदेशार्थ द्रव्यार्थ प्र देशार्थ से तथैव एवं एकगुण काले का प्रश्न (२६ द्वार पूर्ण ज्ञाया) सर्व जीव अल्प बहुत्व महा दंढक ॥ तीसरा पद पूर्ण ज्ञाया ॥</p>	११३ ११६ ११७ ११८ ११८

॥ चौथा पद आरम्भ ॥

नारकी की कितने काल की स्थिति  
पर्याप्त तथा अपर्याप्त नारकी की कितनी स्थिति  
रत्नप्रभादि सात नरक के पर्याप्त अपर्याप्त नार  
की की स्थिति का प्रश्न

देवता की कितने काल की स्थिति

पर्याप्त अपर्याप्त देवता की कितनी स्थिति

एव भवनवासी आदि देवता देवी पर्याप्त अप

र्याप्त का की स्थिति का निर्णय

पृथिवीमाय की कितने काल की स्थिति

एवं पर्याप्त अपर्याप्त पृथिवीमाय की स्थिति का

प्रश्न

सूक्ष्म पृथिवीमाय की स्थिति का प्रश्न

पर्याप्त अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीमाय की स्थिति  
अपकाय स्थिति प्रश्न

पर्याप्त अपर्याप्त अपकाय की स्थिति

वाटर अपकाय तथा पर्याप्त अपर्याप्त वाटर अ

एव वायुमाय वनस्पतिकाय पर्याप्त अपर्याप्त की

स्थिति का प्रश्न

सूक्ष्म वाटर आदि की स्थिति का प्रश्न

द्वीन्द्रिय तथा पर्याप्त अपर्याप्त की स्थिति

एव त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्त स्थिति

पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च योनिक की स्थिति

एव पर्याप्त अपर्याप्त पञ्चेन्द्रिय तिर्यच की स्थिति

संमूर्च्छिम पचेन्द्रिय तिर्यच की तथा पर्याप्त अप

र्याप्त संमूर्च्छिम पचेन्द्रिय तिर्यच की स्थिति

२०५

२०५

२०६

२०८

२०९

२०९

२१२

२१२

२१२

२१२

२१३

२१३

२१४

२१४

२१५

२१६

२१६

२१७

२१७

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
गर्भव्युत्क्रान्तिक पचेद्रिय तिर्यच तथा पर्या० अ पर्या० गर्भव्युत्क्रान्तिक पचेद्रिय की स्थिति एवं जलचर पर्या० अपर्या० पचेद्रिय तिर्यच स्थिति	२१७	एव मनुष्य पञ्चत अपञ्चत समूर्च्छिम गर्भज मनुष्य स्थिति विषय	२२२
एवं समूर्च्छिम पर्या० अपर्या० तथा गर्भव्युत्क्रा न्तिक पर्या० अपर्या० पचेद्रिय जलचर स्थिति	२१७	वानव्यन्तर देवता देवी पर्या० अपर्या० स्थिति ज्योतिष्क देवता देवी पर्या० अपर्या० स्थिति	२२२
एव सजेद स्थलचर पचेद्रिय तिर्यच स्थिति	२१८	चन्द्रविमान में देवता पर्या० अपर्या० स्थिति सूर्यविमान में देवता तथा देवी प० अप० स्थिति	२२४
उरपरिसर्प स्थलचर पर्या० अपर्या० पचेद्रिय स्थिति	२१८	ग्रहविमान में देवता तथा देवी प० अप० स्थिति नक्षत्र विमान देव देवी प० अप० स्थिति	२२४
समूर्च्छिम पर्या० अपर्या० स्थलचर उरपरिसर्प पचेद्रिय	२१९	तारा विमान देव देवी प० अप० स्थिति वैमानिक देव देवी प० अप० की स्थिति	२२५
एवं भुजपरि सर्प की स्थिति	२२०	सौधर्म देव देवी पर्या० अप० परिगृहीत अप	२२६
एव सचर पचेद्रिय तिर्यच स्थिति	२२१	रिगृहीत पर्या० अप० एवं झालात्रा १२ में स्थिति	२२६

विषय और प्रश्नादि	पन्नांक	विषय और प्रश्नादि	पन्नांक
एव ईशान देव देवी प० अप० आदि की स्थिति	२२७	असुरकुमार के अनन्त पर्याय कहे	२२२
सनत्कुमार देवी देव प० अप० आदि स्थिति	२२८	एव जैसे नारकी तथा असुरकुमार के अनन्त पर्याय कहे तैसे नागकुमार यावत् स्तनितकुमार की कहना	२२४
ब्रह्मदेव देवी से लेके अच्युत देवलोक के देव	२२९	पृथिवीकाय के अनन्ता पर्याय कहे	२२४
ताओ की स्थिति सविशेष	२३२	अण्काय के अनन्ता पर्याय कहे	२२४
नव ग्रैव्यक विमान देव प० अप० स्थिति	२३५	तेजस्काय के अनन्त पर्याय	२२५
विजय वैजयन्त जयन्त अपराजित देव प०	२३५	वायुकाय के अनन्त पर्याय	२२५
अप० स्थिति		वनस्पतिकाय के अनन्त पर्याय	२२५
सर्वार्थसिद्ध देव प० अप० स्थिति		वैरिद्रो के अनन्त पर्याय	२२६
(चौथा स्थिति पद पूर्ण हुआ)		तेरिद्रो चौरिद्रो तथा पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च के	
॥ पाचमा पद आरम्भ ॥	२३५	मनुष्य के अनन्ता पर्याय	२४७
कितने भेदे पर्यव है, जीव अजीवके पर्यन्त	२३७		२४७
नारकी के अनन्ता पर्याय कहे			

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
जघन्य उत्कृष्ट अजघन्यानुत्कृष्ट अवगाहना के	२४८	जघन्य उत्कृष्ट मध्यम अवगाहना के असुरकुमार	२५२
नारकी के अनन्ता पर्याय		को अनन्ता पर्याय कहे	
जघन्य उत्कृष्ट मध्यम स्थिति के नारकी के अा	२४९	एवं स्तनितकुमार पर्यन्त कहना	२५२
नन्त पर्याय कहे		जघन्यावगाहना के पृथिवीकाय पर्यन्ताधिकार	२५२
जघन्य उत्कृष्ट मध्यम गुण कालक नारकी के	२५०	एवं उत्कृष्ट मध्यमावगाहना के पृथिवी पर्यन्त	२५३
पर्यन्त वक्तव्यता		जघन्य मध्यम उत्कृष्ट स्थितिक पृथिवी पर्यन्त	२५३
जघन्य उत्कृष्ट मध्यम आभिनिवोधिक ज्ञानी	२५१	जैसे पहले कहे तैसे सर्व आलावा वनस्पतिकाय	
नारकी की पर्यन्त वक्तव्यता		पर्यन्त सर्व वक्तव्यता कहनी	२५३
एवं श्रुतज्ञानी तथा अवधिज्ञानी नारकी के प	२५१	जघन्यावगाहनादि द्वीन्द्रिय पर्याय वक्तव्यता	२५३
र्यन्त कहना अज्ञान भी कहना		एवं त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय पर्यन्त वक्तव्यता अधिकार	२५३
जघन्य उत्कृष्ट मध्यम चक्षुदर्शनी नारकी के	२५१	जघन्यावगाहनक पञ्चेन्द्रिय तिर्यन्त पर्यन्त व-	२५३
अनन्ता पर्याय कहे		जघन्य आदि स्थितिक पंचेन्द्रिय तिर्यन्त पर्यन्त	२५७
एवं अचक्षुदर्शनी अवधिदर्शनी को कहना	२५२		२५८

वक्तव्यनाधिकार

जघन्यगुण कालकादि पचेद्रिय तिर्यच पर्यव

जघन्यादि आभिनिवोधिकज्ञानी पचे० तिर्य०

पर्यव

जघन्यावधिज्ञानी पचेद्रिय तिर्यच पर्यव

उत्कृष्टावधिज्ञानी इसीतरह से कहना

अवधिज्ञानी तथा विभगज्ञानी कहना

जघन्यावगाही मनुष्य के कितने पर्याय कहे

जघन्यास्थितिक मनुष्य के कितने पर्याय कहे

जघन्यगुणकालक मनुष्य के पर्याय

जघन्याभिनिवोधिक ज्ञानी मनुष्य के पर्यव

जघन्यावधिज्ञानी मनुष्य के पर्यव कितने है

जैसे अवधिज्ञानी तैसे मन पर्यव ज्ञानी

२५८

२५९

२५९

२६०

२६१

२६१

२६१

२६२

२६२

२६३

२६४

२६४

केवलज्ञानी मनुष्य के अनन्ता पर्यव कहे

अजीव पर्यव कितने भेदे

अरूपी अजीव पर्यव दशभेदे कहे हैं

रूपी अजीव पर्याय चार भेदे कहे

परमाणु पुद्गल पर्यव वक्तव्यताधिकार

द्विप्रदेशी आदि स्कन्ध पर्यव वक्तव्यताधिकार

एक प्रदेशावगाह पुद्गल पर्यव मन्त्र

एक समयस्थितिक पुद्गल पर्यव मन्त्रोत्तर

एकगुण कालक पुद्गल पर्यव मन्त्र

जघन्यावगाह द्विप्रदेशी आदि स्कन्ध पर्यव

जघन्यास्थितिक परमाणुपुद्गल पर्यवाधिकार

जघन्यगुणकाल आदि परमाणुपुद्गल पर्यवाधि०

८ स्पर्श की वक्तव्यता कहना

२६५

२६६

२६६

२६६

२६७

२६७

२६९

२७०

२७१

२७२

२७५

२७५

२७६

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
(पाचमा पद पूर्ण हुआ)		एवं अप्र तेज बाहु वनस्पतिकाय उपपात वि रहकाल	२८९
॥ कृष्ण पद प्रारम्भ ॥		ह्रीन्द्रिय उपपात विरहकाल, त्रीन्द्रिय चतुरि न्द्रिय उपपात विरह	२८९
नरक गति में कितने काल विरह है उपपातका तिर्यच गति से कितना विरह उपपात मे	२८६	सम्पूर्णम पंचेन्द्रिय तिर्यच उपपात विरहकाल गर्भव्युत्क्रान्तिक पंचेन्द्रिय तिर्यच उपपात विर	२८९
मनुष्य गति, देवगति, और सिद्धिगति से उप जने का कितना विरह	२८६	हकाल	२८९
एव उद्धर्तना भी चारों गति में कहना	२८७	सम्पूर्णम तथा गर्भज मनुष्य उत्पत्ति विरहाकार सौधर्म आदि १२ देवलोक देवोत्पत्ति विरह	२८९
रत्नप्रभा आदि सात नरक पृथिवी से उपपात विरह काल	२८७	कालाधिकार	२९०
असुरकुमार आदि यावत्स्तनितकुमार पर्यन्त उपपात विरह काल	२८८	त्रैवेयक विमान देवोत्पत्ति विरह, तथा विजय वैजयन्त जयन्त अपराजित देवलोक देवोप	२९१
पृथिवी काय उपपात विरहकालाधिकार	२८८	पात विरहकालाधिकार	२९१

विषय और प्रश्नादि	विषय और प्रश्नादि	पत्राक	पत्राक
सवार्थसिद्ध विमान देवोपपात विरहकालप्रमाण सिद्धोपपात विरहकालप्रमाण	क्या सान्तर उपजै के निरन्तर सौधर्म आदि देवलोक यावत् सिद्ध सान्तर उप जै के निरन्तर, एवं उद्धर्तनाभी सिद्धो को छोड कर कहनी	२९१	२९२
रत्नप्रभा आदि पृथिवी के नारकी या च्यवन काल विरहाधिकार एव सिद्धो को छोड के अनुत्तर वि मान तक च्यवन काल विरहाधिकार (२ द्वार हुआ पूर्ण)	(३ द्वार हुआ पूर्ण) नारकी एक समय मै कितने उपजै, एवं ७ नरक के नारकी कहे, असुरकुमार एक समय मै कित ने उपजै, एवं स्तनितकुमार पर्यंत कहना पृथिवीकाय यावद्धनस्पतिकाय एक समय मै कि तने उपजै	२९३	२९४
नारकी सान्तर उपजै के निरन्तर उपजै, मनुष्य देव सान्तर उपजै के निरन्तर, रत्नप्रभा आदि ७ पृथिवी के नारकी सान्तर उपजै के निरन्तर, असुर कुमार सान्तर उपजै के निरन्तर, एव स्त नितकुमार पर्यंत कहा, पृथिवीकाय यावद्धन स्पतिकाय द्वीद्रिय यावत्पंचेद्रिय तिर्यच मनुष्य	वेरिद्रिय एक समय मै कितने उपजै, एवं त्रीन्द्रिय चतुरिद्रिय संमुखिम पंचेद्रिय तिर्यच, गर्भव्यु त्क्रांतिक पंचेद्रिय तिर्यच, समुच्छिम मनुष्य	२९१	



विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
वानव्यन्तर जोतिषी सौधर्म श्रुति यावत् अनुत्तर		पृथिवीकाय कहा से उपजै इत्यादि वक्तव्यता	३०४
विमान देव एक समय में कितने सीऊँ	२९४	एव श्रुप् तेज वायु वनस्पति काय जी कहा	३०७
सिद्ध एक समय में कितने चवै इत्यादि जैसे	२९५	बोरिद्धी तेरिद्धी चौरिद्धी जैसे तेजो वायु कहे	३०७
नारकी एकसमय में कितने चवै इत्यादि जैसे		तैसे देव वर्ज जानना	
उपपात कहा तैसे चवन सिद्धों को लोफ के कहना		पंचेद्रिय तिर्यच योनिक कहा से उपजै इत्यादि	
यावत् अनुत्तरोपपात के देव पर्यंत कहा	२९५	निर्णय	३०७
(४ द्वार पूर्ण ज्ञात्रा)		मनुष्य कहा से उपजै ,	३०८
नारकी कहा से उपजै, क्या नारकी से उपजै ति		वानव्यन्तर देवता कहा से उपजै	३०९
र्यच से मनुष्य से देव से उपजै		एव वैमानिक देव वक्तव्यताधिकार	३०९
रत्नप्रज्ञा का नारकी कहा से उपजै इत्यादि सात	२९५	ग्रैवेयक देव, अनुत्तर विमान देव एक समय में	
नरक के नारकी का अधिकार		कितने उपजै	३११
असुरकुमार कहा से उपजै इत्यादि सावत् स्त	३०१	(५ मा द्वार पूर्ण ज्ञात्रा)	
नितकुमार पर्यंत	३०४	नारकी अनुन्तर निकल के कहा जाय कहा उपजै	३१२

विषय और प्रश्नादि	पत्राक	विषय और प्रश्नादि	पत्राक
असुरकुमार अनन्तर निकल के कहा जाय कहाँ उपजै	३१२	पृथिवीकाय कितना आयु शेष रहे पर तब आयु बाधै एव यावत् चौरिद्वी	३१५
पृथिवीकाय अनन्तर निकल के कहाँ जाय कहाँ उपजै	३१३	पंचेन्द्रिय तिर्यच कितना आयु शेष रहने से पर तब का आयु बाधै	३१५
एव अप् "तेज वागु, मनुष्य वर्ज," वनस्पति चौरिद्वी तौरिद्वी चौरिद्वी जाणना	३१३	एव मनुष्य वानव्यन्तर जोतिपी वैमानिक जैसे नारकी कहा तैसे कहना	३१७
पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिक अनन्तर निकल कहा जाय कहाँ उपजै	३१३	कितने प्रकार आयुबन्ध कहा, त प्रकार कहा नारकी के त प्रकार आयु बन्ध कहा एव २४	३१७
एवं जैसे जिनका उपपात कहा तैसे उद्धर्तना श्री कहनी	३१३	जीव जातिनाम निहतायु की कितने आयु कर्प से करै दंरुक मे कहना	३१७
(६ द्वार पूर्ण ज्ञाया) नारकी कितना आयु शेष रहै तब पर तब का आयु बाधै एव २४ दंरुक	३१५	नारकी जातिनाम निहतायु की कितने आयु कर्प से करै एव २४ दंरुक मे	३१७
		एवं गति स्थिति अग्रगाहन प्रदेय अनुज्ञाव नाम	३१८

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
जघन्य १। २। ३। उत्कृष्ट ८ आकर्षसे जाति नामनिहत्तायु आदि को करनेवाले जीवों में कौन किस्से थोड़ा पणा इत्यादि अधिकार ॥ व्युत्क्रान्ति पद छठा पूर्ण हुआ ॥ ॥ सातवां पद का आरम्भ हुआ ॥ नारकी कितने कालसे आनप्राण स्वासोत्स्वास लेवै असुरकुमार कितने कालसे आनप्राण स्वासोत्स्वा एवं नागकुमार यावत्स्तिनितकुमार कितने काल से आनप्राण स्वासोत्स्वास लेवै	३१९	पृथिवीकाय वेमात्रा से आनप्राण स्वासोत्स्वास लेवै ज्योतिषी कितने कालसे एव सौधर्म आदि देव कितने काल से लेवै ग्रीव्यक देव यावत्पंचानुत्तर देव कितने कालसे आनप्राण स्वासोत्स्वास सर्वार्थसिद्ध विमानवासी देव कितने काल से स्वाश्वोत्स्वासादि लेवै (सातवां उत्स्वास पद हुआ) ॥ आठवां पद कहते हैं ॥ दश आहार आदि संज्ञा कही	३२१ ३२१ ३२३ ३२४ ३२४

नारकी को १० सज्ञा होती है  
असुरकुमार को १० सज्ञा होती है एवं स्त-  
नितकुमार तक पृथिवीकाय आदि विमानिक  
पर्यन्त कहा  
नारकी क्या आहार संज्ञोपयुक्त के भयसंज्ञोपयुक्त  
इत्यादि प्रश्न  
आहारसंज्ञोपयुक्त यावत्परिग्रहसंज्ञोपयुक्त नारकी  
का अल्प बहुत्व  
तिर्यच क्या आहार यावत्परिग्रह संज्ञोपयुक्त  
तिर्यच आहार आदि संज्ञोपयुक्त का अल्पादि  
मनुष्य क्या आहार स०  
आहारादि संज्ञोपयुक्त मनुष्याल्पबहुत्व  
देवता क्या आहार संज्ञोपयुक्त है के यावत्परि

३२५

३२५

३२६

३२६

३२६

३२६

३२७

३२७

आहारादि १० संज्ञोपयुक्त देवाल्पबहुत्व वक्तव्यता  
(आठवा पद समाप्त हुआ)

॥ नवां पद कहते हैं ॥

कितने प्रकार योनि कही, तीन प्रकार योनि कही  
नारकी के क्या सीतयोनि उद्ययोनि शीतोद्ययोनि  
असुरकुमार के कौन योनि कही एवं स्तनित—

पृथिवीकाय के कौन योनि, एवं अप् वायु वन  
स्पति द्विन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय को योनि  
कहना

तेजस्काय के शीत योनि नहीं

३२८

३२८

३२८

३२९

३२९

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
जघन्य १।२।३। उच्छृष्ट ८ आकर्षसे जाति नामनिहत्तायु आदि को करनेवाले जीवों में कौन किस्से थोड़ा पणा इत्यादि अधिकार ॥ व्युत्क्रान्ति पद छठा पूर्ण हुआ ॥ ॥ सातवां पद का आरम्भ हुआ ॥	३१९	पृथिवीकाय वेमात्रा से ज्ञानप्राण सासोत्स्वास लेवै जोतिषी कितने कालसे एवं सौधर्म आदि देव कितने काल से लेवै त्रैवेयक देव यावत्पंचानुत्तर देव कितने कालसे ज्ञानप्राण सासोत्स्वास सर्वार्थसिद्ध विमानवासी देव कितने काल से स्वाश्वोत्स्वासादि लेवै (सातवां उत्स्वास पद हुआ) ॥ आठवां पद कहते हैं ॥	३२१ ३२१ ३२३ ३२४
नारकी कितने कालसे ज्ञानप्राण स्वासोत्स्वास लेवै असुरकुमार कितने कालसे ज्ञानप्राण स्वासोत्स्वा —स लेवै एवं नागकुमार यावत्स्तनितकुमार कितने काल से ज्ञानप्राण सासोत्स्वास लेवै	३२० ३२० ३२१	दत्त आहार आदि सज्ञा कही	३२४

नारकी को १० संज्ञा होती है  
असुरकुमार को १० संज्ञा होती है एवं स्त-  
नितकुमार तक पृथिवीकाय आदि विमानिक  
पर्यन्त कहा  
नारकी क्या आहार संज्ञोपयुक्त के भयसंज्ञोपयुक्त  
इत्यादि प्रश्न  
आहारसंज्ञोपयुक्त यावत्परिग्रहसंज्ञोपयुक्त नारकी  
का अल्प बहुत्व  
तिर्य्यच क्या आहार यावत्परिग्रह संज्ञोपयुक्त  
तिर्य्यच आहार आदि संज्ञोपयुक्त का अल्पादि  
मनुष्य क्या आहार स०  
आहारादि संज्ञोपयुक्त मनुष्याल्पबहुत्व  
देवता क्या आहार संज्ञोपयुक्त है के यावत्परि

३२५

३२५

३२६

३२६

३२६

३२६

३२७

३२७

आहारादि १० संज्ञोपयुक्त देवाल्पबहुत्व वक्तव्यता  
(आठवा पद समाप्त हुआ)

॥ नवा पद कहते है ॥

कितने प्रकार योनि कही, तीन प्रकार योनि कही  
नारकी के क्या सीतयोनि उच्चयोनि शीतोष्णयोनि  
असुरकुमार के कौन योनि कही एवं स्तनित-

पृथिवीकाय के कौन योनि, एवं अप् वायु वन  
स्पति द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय की योनि  
कहना

तेजस्काय के शीत योनि नहीं

३२८

३२८

३२८

३२९

३२९

३२७

३२८

विषय और प्रवृत्तादि	पत्रांक	विषय और प्रवृत्तादि	पत्रांक
जघन्य १। २। ३। उत्कृष्ट ८ आकर्षसे जाति नामनिहत्तायु आदि को करनेवाले जीवों में कौन -किस्से थोड़ा पणा इत्यादि अधिकार ॥ व्युत्क्रान्ति पद छंठा पूर्ण हुआ ॥ ॥ सातवां पद का आरम्भ हुआ ॥	३१९	पृथिवीकाय वेमात्रा से ज्ञानप्राण सासोत्स्वास लेवै जोतिषी कितने कालसे एव सौधर्म आदि देव कितने काल से लेवै त्रैविक देव यावत्पंचानुत्तर देव कितने कालसे ज्ञानप्राण सासोत्स्वास सर्वार्थसिद्ध विमानवासी देव कितने काल से स्वाश्वोत्स्वासादि लेवै (सातवां उत्स्वास पद हुआ)	३२१ ३२१ ३२३ ३२४
नारकी कितने कालसे ज्ञानप्राण स्वासोत्स्वास लेवै असुरकुमार कितने कालसे ज्ञानप्राण स्वासोत्स्वा -स लेवै एवं नागकुमार आवत्स्तनितकुमार कितने काल से ज्ञानप्राण सासोत्स्वास लेवै	३२० ३२० ३२१	॥ आठवां पद कहते हैं ॥ दत्ता आहार आदि सज्ञा कही	३२४

विषय और प्रश्नादि	पत्राक	विषय और प्रश्नादि	पत्राक
नारकी को १० संज्ञा होती है असुरकुमार को १० संज्ञा होती है एव स्त- नितकुमार तक पृथिवीकाय आदि वैमानिक पर्यन्त कहा	३२५	आहारादि १० संज्ञोपयुक्त देवालपबहुत्व वक्तव्यता (आठवा पठ समाप्त हुआ)	३२७ ३२८
नारकी क्या आहार संज्ञोपयुक्त के भयसंज्ञोपयुक्त इत्यादि प्रश्न	३२५	॥ नवा पद कहते है ॥	
आहारसंज्ञोपयुक्त यावत्परिग्रहसंज्ञोपयुक्त नारकी का अल्प बहुत्व	३२६	कितने प्रकार योनि कही, तीन प्रकार योनि कही नारकी के क्या सीतयोनि उद्धयोनि त्रीतोद्धयोनि असुरकुमार के कौन योनि कही एव स्तनित-	३२८ ३२८
तिर्यच क्या आहार यावत्परिग्रह संज्ञोपयुक्त तिर्यच आहार आदि संज्ञोपयुक्त का अल्पादि मनुष्य क्या आहार स०	३२६ ३२६ ३२७	पृथिवीकाय के कौन योनि, एव आप् वायु वन स्पति द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय की योनि कहना	३२८
आहारादि संज्ञोपयुक्त मनुष्याल्पबहुत्व देवता क्या आहार संज्ञोपयुक्त है के यावत्परि	३२७	तेजस्काय के ज्ञीत योनि नहीं	३२९ ३२९



विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनि को कौनसी योनि सम्मूर्च्छिम पंचेन्द्रिय तिर्यंच, गर्भव्युत्क्रान्तिक प	३२९	पृथिवीकाय को क्या सचित्त योनि अचिन्तयोनि मिश्रयोनि	३३१
चेंद्रिय तिर्यंच योनि वक्तव्यताधिकार मनुष्य को कितने प्रकार योनि कही	३३०	समूर्च्छिम पंचेन्द्रिय तिर्यंच और मनुष्य योनि निर्णय	३३१
वानव्यन्तर, जोतिपी, और वैमानिक योनि वक्तव्यता	३३०	गर्भव्युत्क्रान्तिक पंचेन्द्रिय तिर्यंच मनुष्य योनि निर्णय	३३२
यह जीव जीतयोनि उध्नयोनि जीतोघ्नयोनि अयोनियों में कौन किस्से थोड़ा घणा इत्यादि निर्णय	३३१	वानव्यन्तर जोतिपी वैमानिक को जैसे असुर	३३२
सचित्त अचिन्त मिश्र जेद से तीन प्रकार योनि कही	३३१	यह सचित्त अचिन्त मिश्रयोनिक अयोनिको में	३३२
नारकी के क्या सचित्त अचिन्त और मिश्र योनि है	३३१	संवृत विवृत संवृतविवृत जेदसे तीन प्रकार यो	३३२
असुरकुमार योनि प्रश्न एव स्तानितकुमार पर्यन्त	३३१	नारकी के संवृतयोनि कही, एवं यावद्वनस्पति	३३२

काय पर्यन्त वेङ्गद्रिय को विवृतयोनिकही, चौ  
रिङ्गी पर्यन्त, संसृष्टिम पचेद्रिय तिर्यच और  
मनुष्य को विवृतयोनिकही, गर्भव्युत्क्रान्तिक  
पचेद्रिय तिर्यच और मनुष्य को सवृतविवृत यो

नि है  
वानव्यन्तर जोतिषी वैमानिक को जैसे नारकी

को कहा  
यह सवृत विवृत सवृतविवृतयोनिक व्योनिनिक

जीवी से कौन किस्से थोड़ा घणा इत्यादि  
कर्मोन्नत सखावर्त्त वशीपत्र जेद से तीन प्रकर  
की योनिक है कर्मोन्नत योनिक उत्तम पुरुषोत्पत्ति  
स्थान, सखावर्त्त खीरल की, वशीपत्रा सामा  
न्य मनुष्यो की है

३३३

३३३

३३३

३३४

(नवां पद पूर्ण ऊँचा)

॥ १० वा पद कहते हैं ॥

रत्नप्रभादि यावत् ईषत्प्राग्नारा पर्यन्त छाठ पृ

थिवी कही  
यह रत्नप्रज्ञा पृथिवी नहीं चरमा नहीं अचरमा  
नहीं चरमाइ नहीं अचरमाइ नहीं चरमान्त प्र  
देजा नहीं अचरमान्तप्रदेशा इत्यादि यावत् नी  
चे सातमी पृथिवी, सौधर्म छादि यावत् अनुत्तर  
विमान एव ईषत्प्राग्नारा पृथिवी, एव लोक,

एव अलोक मी कहना  
परमाणु पुद्गल क्या चरम अचरम अवक्तव्य चर

माइ अचरमाइ इत्यादि जगा २६

३३४

३३५

३४०

एव २। ३। ४। ५। ६। ७। ८ प्रदेक्षी स्कन्धो  
की वक्तव्यता यावत् सख्यात असख्यात अनन्त  
प्रदेक्षी स्वध तक कहा  
परमाणुस्मियतडड इत्यादि गाथा ६  
परिमंजुल आदि पाच सस्थानो की वक्तव्यता,  
परिमंजुल सस्थान क्या सख्यात असख्यात अन  
न्त, एव यावत् आयात कहना, परिमंजुल स  
ठाण क्या सख्यातप्रदेशी असख्यातप्रदेशी अनन्त  
प्रदेक्षी एव यावदायत, परिमंजुल सठाण क्या  
सख्यातप्रदेशावगाढ असख्यात प्रदेशावगाढ एवं  
आयात पर्यन्त, परिमंजुल ० असख्यातप्रदेशी क्या  
असख्यातप्रदेशावगाढ अनन्तप्रदेशावगाढ एव  
आयात पर्यन्त

३५०

३५१

३५२

जीव गति चरम से क्या चरम के अचरम एवं  
निरन्तर वैमानिक  
नारकी गति चरम से क्या चरमा के अचरमा एवं  
वैमानिक पर्यन्त  
नारकी स्थितिचरम से कदाचित् चरम कदाचित्  
अचरम एवं यावत् वैमानिक  
नारकी अवचरम से कदाचित् चरम कदाचित्  
अचरम, एव वैमानिक पर्यन्त, नारकी आपा  
चरम से चरम अचरम ज्ञी एवं वैमानिक पर्यन्त,  
एव एकेन्द्रिय को ठोकर के वैमानिक पर्यन्त कहना  
नारकी अज्ञानप्राण चरम से चरम के अचरम, एव  
याव वैमानिक  
एव आहार चरम, भाव चरम से कदाचित् चर

३५६

३५६

३५७

३५७

३५८

एव वर्णं गन्ध रस स्पर्शं चरमं से कदाचित् चर  
म अचरम है  
(१० चरम पद समाप्त जाय)

॥ ११ पद कहते हैं ॥

अथ नूनं मन्ये अविधारिणीति ज्ञापा इत्यादि  
प्रश्न निर्णय  
अविधारिणी भाषा क्या सत्य असत्य सत्यमृषा  
असत्यमृषा  
गावो मृगा पञ्चव पक्षिणः प्रज्ञापनी यह भाषा  
है मृषा नहीं  
याच स्त्री पुरुष नपुंसकवाक् प्रज्ञापनी यह भाषा

३५८

३५९

३६०

३६१

३६२

अहं जाय इत्यौ पञ्चवर्णी इत्यादि भाषा वक्तृ-  
व्यताधिकार

अहं भते मन्दकुमारएवा मन्दकुमारियावा इत्या  
दि प्रश्न निर्णय

अहं भते उहो गोणे खरे घोडए अए एलए इत्या  
दि प्रश्न निर्णय

अहं भते मणुस्ते महिसे आसे इत्यादि प्रश्न नि  
र्णयाधिकार

अहं भते कंसं कंसोय परिमडल इत्यादि प्रश्न नि०

अहं भते पुढवीति स्त्रीवाक् इत्यादि प्रश्न निर्ण  
याधिकार

भाषा किमादि किं प्रवह किं पर्यवसित है

३६२

३६३

३६६

३६६

३६७

३६९

३७०

३७१

विषय और प्रस्तावि	पत्रांक	विषय और प्रस्तावि	पत्रांक
भाषा कनुत्र पभवति इत्यादि गाथा २ कितने प्रकार भाषा है, दो प्रकार भाषा क है पर्याप्तिकी भासा सत्या मृपा से दो भेद है सत्या पर्याप्तिकी भाषा कितने प्रकार है १० प्रकार मृपा भाषा भी दश प्रकार कहि है क्रोधनिशि तादि भेद से अपर्याप्तिकी भाषा सत्यामृपा असत्यामृपा भेद से दो प्रकार है सत्यामृपा भाषा उत्पन्न मिश्रितादि जेद से दश भेद है असत्यामृपा अपर्याप्तिकी आमन्त्रणी आदिक जेद से १२ भेद है जीव भाषक है के अभाषक है इत्यादि	३७१ ३७२ ३७२ ३७२ ३७३ ३७३ ३७४ ३७४ ३७४	नारकी अपर्याप्त अभाषक पर्याप्त भाषक है एव एकैन्द्रिय को छोड़कर सर्वदण्डक मन्त्रोत्तर कहना चार भाषा की जाति कही जीव क्या सत्य भाषा बोलै कि असत्या भाषा बोलै इत्यादि नारकी सत्य भी बोलै असत्य भी बोलै एवं असु रकुमार यावत् स्तनितकुमार पर्यन्त, द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय नहीं सत्य नहीं असत्य नहीं सत्यासत्य असत्यामृपा बोलै, पंचेन्द्रिय तिर्यच असत्यामृपा भाषा बोलै, जीव जिन द्रव्यों को भाषा पणें ग्रहै सो क्या स्थित ग्रहै के अस्थित एव द्रव्य क्षेत्र काल और भाव वक्तव्यता से	६७५ ३७६ ३७६ ३७६ ३७६ ३७६ ३७६ ३७७

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
पुष्टोगाढ छणतर यह उक्तार्थ संग्रह गाथा जीव जिन द्रव्यो को भाषापणे ग्रहै सो क्या सा न्तर ग्रहै के निरन्तर	३७७ ३८२ ३८२	नारकी जिन द्रव्यो को भाषापणे ग्रहै सो स्थित के अस्थित ग्रहै एव एकेन्द्रिय को ढोडकर वैमानिक पर्यन्त द डक कहना अरपबहुत्व तक	६८६ ३८६
जीव जिनको भाषा पणे निकलै सो निरन्तर निकलै के सान्तर निकलै इत्यादि	३८३	जीव जिन द्रव्यों को भाषा पणे ग्रहै सो स्थितके अस्थित ग्रहै एव पृथक् से भी दडक कहना वैमानिक पर्यन्त	३८७
जो द्रव्य भाषापणे निकलै गृहीत के अगृहीत, भिन्नके अभिन्न निकलै	३८४	जीव जिनद्रव्यों को सत्यभाषापणे ग्रहै इत्यादि औधिक गमाके ऐसे सर्व कहना फकत बेरिद्री	३८८
इन भाषा द्रव्यो का खड भेदादि पाचभेद कहे, खड भेदादि निरूपण	३८५	तेरिद्री चौरिद्री छोडदेना कितने प्रकार वचन, सोलह भेदे एकवचनादि भेद से	३८८
खडभेद प्रतरभेद चूर्णिकाभेद अनुतटिकाभेद से उत्कटिका भेद से भिन्न भाषा द्रव्यो मे कौन किस्से थोडा घणा इत्यादि	३८६	कितने भाषाजात, चार कहे, इन चारो को	

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
भाषा कर्तव्य पभवाति इत्यादि गाथा २ कितने प्रकार भाषा है, दो प्रकार भाषा क है पर्याप्तिकी भासा सत्या मृपा से दो भेद है सत्या पर्याप्तिकी भाषा कितने प्रकार है १० प्रकार मृपा भाषा भी दश प्रकार कहें है क्रोधनिशि तादि भेद से अपर्याप्तिकी भाषा सत्यामृपा असत्यामृपा भेद से दो प्रकार है सत्यामृपा भाषा उत्पन्न मिश्रितादि भेद से दश भेद है असत्यामृपा अपर्याप्तिकी आमन्त्रणी आदिक भेद से १२ भेद है जीव भाषक है के अभाषक है इत्यादि	३७१ ३७२ ३७२ ३७२ ३७३ ३७३ ३७४ ३७४ ३७४	नारकी अपर्याप्त अभाषक पर्याप्त भाषक है एव एकैद्रिय की छोड़कर सर्वदण्डक प्रश्नांतर कहना चार भाषा की जाति कही जीव क्या सत्य भाषा बोलै कि असत्या भाषा बोलै इत्यादि नारकी सत्य भी बोलै असत्य भी बोलै एव असु रकुमार यावत् स्तनितकुमार पर्यन्त, द्विन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय नहीं सत्य नहीं असत्य नहीं सत्यासत्य असत्यामृपा बोलै, पचेंद्रिय तिर्यच असत्यामृपा भाषा बोलै, जीव जिन द्रव्यों को भाषा पणे ग्रहै सो क्या स्थित ग्रहै के अस्थित एव द्रव्य क्षेत्र काल और भाव वस्तुव्यता से	६७५ ३७६ ३७६ ३७६ ३७६ ३७६ ३७६ ३७७

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
पुढीगाढ छणतर यह उक्तार्थ संग्रह गाथा	३७७	नारकी जिन द्रव्यों को भापापणें ग्रहै सो स्थित	६८६
जीव जिन द्रव्यों को भापापणें ग्रहै सो क्या सा	३८२	एव एकेन्द्रिय को ठोडकर वैमानिक पर्यन्त द	३८६
जीव जिनकी भापा पणें निकलै सो निरन्तर	३८२	डर कहना अरपबहुत्व तक	
निर ग्रहै के निरन्तर		जीव जिन द्रव्यों को भापा पणें ग्रहै सो स्थितके	
निकलै के सान्तर निकलै इत्यादि	३८३	अस्थित ग्रहै एव पृथक्क से भी दडर कहना	३८७
जो द्रव्य भापापणें निकलै गृहीत के अगृहीत,		वैमानिक पर्यन्त	
भिन्नके अभिन्न निकलै	३८४	जीव जिनद्रव्यों को सत्यभापापणें ग्रहै इत्यादि	
इन भापा द्रव्यों का खड भेदादि पाचभेद कहे,		औधिक गर्माके ऐसे सर्व कहना फकत वेरिद्री	
खड भेदादि निरूपण	३८५	तेरिद्री चौरिद्री खोडदेना	३८८
खडभेद प्रतरभेद चूर्णिकाभेद अनुतटिकाभेद से		कितने प्रकार वचन, सोलह भेदें एकवचनादि	
उत्कटिका भेद से भिन्न भापा द्रव्यों में कौन		भेद से	३८८
किस्से थोडा घणा इत्यादि	३८६	कितने भापाजात, चार कहे, इन चारों को	



विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
भाषा कन्य पभवति इत्यादि गाथा २ कितने प्रकार भाषा है, दो प्रकार भाषा क है पर्याप्तिकी भासा सत्या मृपा से दो भेद है सत्या पर्याप्तिकी भाषा कितने प्रकार है १० प्रकार मृपा भाषा भी दश प्रकार कहि है क्रोधनिश्रि तादि भेद से अपर्याप्तिकी भाषा सत्यामृपा असत्यामृपा भेद से दो प्रकार है सत्यामृपा भाषा उत्पन्न मिश्रितादि चैद से दश भेद है असत्यामृपा अपर्याप्तिकी आमन्त्रणी आदिक जेदसे १२ भेद है जीव भाषक है के अभाषक है इत्यादि	३७१ ३७२ ३७२ ३७२ ३७३ ३७३ ३७४ ३७४ ३७४	नारकी अपर्याप्त अभाषक पर्याप्त भाषक है एव एकैन्द्रिय को छोड़कर सर्वदण्डक प्रश्नोत्तर कहना चार भाषा की जाति कही जीव क्या सत्य भाषा बोलै कि असत्या भाषा बोलै इत्यादि नारकी सत्य भी बोलै असत्य भी बोलै एव असु रकुमार यावत् स्तनितकुमार पर्यन्त, द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय नहीं सत्य नहीं असत्य नहीं सत्यासत्य असत्यामृपा बोलै, पचैन्द्रिय तिर्यच असत्यामृपा भाषा बोलै, जीव जिन द्रव्यों को भाषा पणे ग्रहै सो क्या स्थित ग्रहै के अस्थित एवं द्रव्य क्षेत्र काल और भाव वक्तव्यता से	६७५ ३७६ ३७६ ३७६ ३७६ ३७६ ३७६ ३७७ ३७७

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
एव कार्मण शरीर भी कहना भागान, इत्यादि वक्तव्यता नारकी को दोनो औदारिक शरीर है वरु भी मुक्त भी है	३९५ ३९५	रिक, एव चतुरिन्द्रिय पर्यंत कहा सर्व शरीर पचेन्द्रिय तिर्यच भी इसी तरह कहना वैक्रिय में विज्ञेप है	४०० ४०१
एव वैक्रिय भी, आहारक शरीर भी कहना असुरकुमार शरीर वक्तव्यताधिकार, स्तानितकु- मार पर्यंत	३६९ ३९७	मनुष्य को दो औदारिक शरीर है, इत्यादि (१२ वा शरीर पद पूर्ण ज्ञाया)	४०१
पृथिवीकाय को दो औदारिक शरीर, क्षेत्रकाल से निरूपण	३९८	कितने प्रकार परिणाम, दो जेठ जीव परिणाम और अजीव परिणाम	४०७
पृथिवीकाय को दो वैक्रिय शरीर, एव शेष ज्ञा रीर भी कहना, अप्काय तेजस्काय भी कहना, वायुको दो औदारिक शरीर, दो वैक्रिय, एव ज्ञेप शरीर भी कहना, द्वीन्द्रिय को दो औदा	३९८	जीव परिणाम, गति परिणाम अदि जेद से १० प्रकार है	४०७
		गति परिणाम चार प्रकार है ४ गति जेद से, इन्द्रिय परिणाम ५ जेद है, कपायपरिणाम ४ जेद, लज्जया परिणाम ६ जेद	४०८

बोलता जीव आराधक है के विराधक है,  
सत्यभासी मृपाभायी आदि भापक अभापकजी  
वों में कौन किस्से थोड़ा घणा इत्यादि वक्त  
व्यताधिकार

(११ भाषा पद पूर्ण हुआ)

॥ १२ वां पद कहते हैं ॥

पांच शरीर कहे औदारिक वैक्रिय आहारक  
तैजस कार्मण  
नारकी को वैक्रिय तैजस कार्मण यह तीन शरीर है  
एव असुरकुमार यावत् स्तनितकुमार पर्यन्त कहा  
पृथिवीकाय को औदारिक तैजस कार्मण तीन  
शरीर, वायुको ठोड चौरिन्द्री पर्यन्त सबको

३८९

३९०

३९०

३९०

यही तीन शरीर है, वायु को ४ शरीर औ  
दारिक वैक्रिय तैजस कार्मण है, पंचेन्द्रिय ति

यंच को भी चारही शरीर है  
मनुष्य को पांचो शरीर होते हैं, वानव्यन्तर  
जोतिषी वैमानिक को जैसे नारकी को कहा

३ शरीर कहना,  
औदारिक शरीर वरु और मुक्त भेद से दो भेद

वैक्रिय भी वरु मुक्त भेद से दो तरह है, खेत्र  
काल से निर्णय

आहारक भी दो भेद है  
तैजस भी दो भेद है, क्षेत्र से अनत लोक द्रव्य  
से सिद्धों से अनन्तगुण सर्व जीवों से अनन्त

विषय और प्रश्नादि	पत्राक	विषय और प्रश्नादि	पत्राक
एव कार्मण शरीर भी कहना भागान, इत्यादि वक्तव्यता नारकी को दोनो औदारिक शरीर है वरु भी मुक्त भी है	३१५ ३१५ ३६९ ३१७	रिक, एव चतुरिन्द्रिय पर्यंत कहा सर्व शरीर पचेन्द्रिय तिर्यच भी इसी तरह कहना वैक्रिय में विशेष है मनुष्य को दो औदारिक शरीर है, इत्यादि (१२ वा शरीर पद पूर्ण ऊँचा)	४०० ४०१ ४०१
एव वैक्रिय भी, आहारक शरीर भी कहना असुरकुमार शरीर वक्तव्यताधिकार, स्तनितकु- मार पर्यंत	३१८	कितने प्रकार परिणाम, दो जेद जीव परिणाम और अजीव परिणाम	४०७
पृथिवीकाय को दो औदारिक शरीर, क्षेत्रकाल से निरूपण	३१८	जीव परिणाम, गति परिणाम आदि जेद से १० प्रकार है	४०७
पृथिवीकाय को दो वैक्रिय शरीर, एव शेष आ- रीर भी कहना, अप्काय तेजस्काय भी कहना, वायुको दो औदारिक शरीर, दो वैक्रिय, एव ओप शरीर भी कहना, द्वीन्द्रिय को दो औदा-		गति परिणाम चार प्रकार है ४ गति जेद से, इन्द्रिय परिणाम ५ जेद है, कपायपरिणाम ४ जेद, लंबया परिणाम ६ जेद	४०८

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
योगपरिणाम मन वचन काया से तीन ज्ञेद, उ पयोगपरिणाम दो ज्ञेद है, ज्ञानपरिणाम पांच ज्ञेद है, अज्ञानपरिणाम ३ ज्ञेद, दर्शनपरिणाम तीन ज्ञेद, चारित्रपरिणाम ५ ज्ञेद, वेदपरिणाम तीन ज्ञेद है इत्यादि वक्तव्यताधिकार		वानव्यन्तर गतिपरिणामाधिकार जोतिपी श्री ऐसेही कहा अजीव परिणाम बन्धनपरिणाम आदि ज्ञेद से १० प्रकार कहा	४१२ ४१३ ४१३
असुरकुमार गतिपरिणामाधिकार पृथिवीकाय परिणाम वक्तव्यताधिकार अप् वनस्पतिकाय भी ऐसेही कहा, तेजो वायु मे लेख्यापरिणाम जैसे नारकी को कहा, द्वी न्द्रियगतिपरिणामाधिकार एव चौरिन्द्रिय प र्यन्त	४०९ ४१० ४११	बन्धन परिणाम दो ज्ञेद, दो गाथा गतिपरिणाम दो ज्ञेद है, संस्थानपरिणाम पांच ज्ञेद है, वर्ण परिणाम पांच ज्ञेद है, गन्धपरिणाम दो ज्ञेद है	४१४ ४१४
पर्वेद्विद्य तिर्यच वक्तव्यताधिकार मनुष्य गतिपरिणामाधिकार	४११ ४१२ ४१२	रसपरिणाम ५ ज्ञेद, स्पर्शपरिणाम ८ भेद है, अगुरुलघुपरिणाम १ ज्ञेद, शब्दपरिणाम दो ज्ञेद (गति परिणाम पट १३ पूर्ण)	४१५

विषय और प्रस्तादि	पत्राक	विषय और प्रस्तादि	पत्राक
॥ १४ पद कहते हैं ॥ क्रोधादि चार कपाय कहे एवं वैमानिक पर्यन्त कहा कतिप्रतिष्ठित क्रोध है एव नैरयिक यावद्वैमानि क पर्यन्त कितने तरह से क्रोध होता है ४ तरह कहा वैमा निक पर्यन्त अनन्तानुबन्धी आदि ४ प्रकार क्रोध कहा नार की यावद्वैमानिक पर्यन्त, एव मान माया लोभ सेनी चारो दंक्रक कहा आभोग निर्वर्तित आदि चार भेदें क्रोध कहा एवं मानादिनी जीव चार तरह से आठ कर्म चिणे इत्यादि अ	४१५ ४१६ ४१६ ४१७ ४१७	एवं वैमानिक पर्यन्त जीव से लगाय १८ दंक्रक कहना (१४ वां कपाय पद पूर्ण हुआ) ॥ १५ वां पद कहते हैं ॥ संठाणं बाहल्लं इत्यादि गाथा २ पांच इन्द्रिय कही श्रोत्रेन्द्रिय कलम्बुका संस्थान संस्थित है चक्षु मसूरचन्द्रसंस्थानसंस्थित है, नासिका आतिमुक्तक संस्थान संस्थित है, जिह्वा तुरे के संस्थान है, स्पर्शनेन्द्रिय नानासंस्थान संस्थित है श्रोत्रेन्द्रिय बाह्य यावत् स्पर्शनेन्द्रिय बाह्य	४१७ ४१९ ४२० ४२० ४२०

विषय और प्रश्नादि

पत्रांक

विषय और प्रश्नादि

पत्रांक

अंगुलासख्यातभाग  
श्रोत्रेन्द्रिय अंगुल के असख्यात भाग पृथु है, चक्षु-  
प्राण भी ऐसे

४२१

कलबुकासस्थान है  
नारकी कारपर्शनेन्द्रिय कौन संख्यात इत्यादि नि०  
असुरकुमार के कितने इन्द्रिय जैसे औदारिक कहा

४२४

जिह्वाअंगुलपृथक्, स्पर्शनेन्द्रिय शरीरप्रमाणमात्र है  
श्रोत्रेन्द्रिय अनन्तप्रदेश, असख्यात प्रदेशावगाढ

४२१

अल्पबहुत्व २ विशेष  
एव स्तनितकुमार पर्यन्त कहना, पृथिवीकाय को

४२५

एव यावत्स्पर्श  
इन श्रोत्र चक्षु प्राण जिह्वा स्पर्शनेन्द्रिय में अ-  
वगाहनार्थतासे प्रदेशार्थतासे अवगाहनप्रदेशा

४२१

१ स्पर्शनेन्द्रिय है और वह मसूरचद्रसस्थान है,  
पृथिवीकाय का स्पर्शन अंगुल असख्यात भाग  
बाह्यपण, पृथुपण शरीरप्रमाण मात्र कहा,

४२५

अर्थतासे कौन-किससे थोड़ा घणा इत्यादि  
श्रोत्रेन्द्रिय में अनन्ता कर्कशगुण कहा, एव  
यावत्स्पर्श, श्रोत्रेन्द्रिय में अनन्ता मृदुलघुगुण

४२१

और वह अनन्तप्रदेशिक है, पृथिवीकाय स्पर्शन  
यह पृथिवीकायस्पर्शनेन्द्रिय अवगाहनार्थ प्रदेश है,  
असख्येयप्रदेशावगाढ है,

४२५

कहा एव यावत्स्पर्श  
नारकी को पांच इंद्री है, नारकी का श्रोत्रेन्द्रिय

४२२

शार्थ से कौन किससे अल्पादि  
पृथिवीकायस्पर्शन के कितने कर्कशगुण है,

४२५

एव मृदुलघुगुण भी अनन्त है, और इनका अ  
 एव अप् यावत् वनस्पतिकाय विशेष यह के  
 बुदबुदे ऐना है, तेजस्काय शूचीकलापसस्यान  
 सस्थित है, वायु पताका सस्यान, वनस्पति  
 नानासस्यान सस्थित है  
 वेरिद्रिय के दो इन्द्रिय सर्व अधिकार पूर्ववत् कहा  
 त्रीन्द्रिय के प्राण स्तोक है, चतुरिन्द्रिय के चक्षु  
 स्तोक  
 पचेन्द्रिय तिर्यच और मनुष्य के जैसे नारकी कहा  
 वानव्यन्तर जोतिषी वैमानिक जैसे असुरकु-  
 मार कहा  
 स्पृष्ट वाय्व सुणे अस्पृष्ट सुणै, स्पृष्ट रूप देखे

४२६

४२६  
४२७

४२८  
४२८

४२८

अस्पृष्ट रूप देखै, स्पृष्ट गन्ध लेवे अस्पृष्ट गन्ध  
 लेवे, इत्यादि रस स्पर्श भी कहना जैसे पहले

कहा तैसे कहना  
 एव जैसे स्पृष्ट तैसे प्रविष्ट, श्रोत्रेन्द्रिय का विषय  
 अगुल के असख्यात भाग में उत्कृष्ट वारह यो  
 जनसे छिन्न पुद्गल स्पृष्ट वाय्व सुणे  
 चक्षु इन्द्रिय का विषय जघन्य अगुल का सख्यात  
 भाग उत्कृष्ट सातिरेक योजन सहस्र अचिच्छिन्न

पुद्गल अस्पृष्ट अप्रविष्ट रूप देखै  
 प्राणेन्द्रिय का जघन्य अगुल असख्यात जाग उ  
 त्कृष्ट नव योजन से गन्ध ग्रहण करे, एव जि  
 क्षात्री कही, स्पर्शनेन्द्रिय त्री इसीतरह है,

अनगार जावितात्मा मारणातिक समुदात से सम

४२९

४३०

४३०

४३१



विषय और प्रश्नादि	पत्राक	विषय और प्रश्नादि	पत्राक
<p>वहत के जो चरम निर्जरा पुद्गल सो सूक्ष्म है  इत्यादि निर्णय</p> <p>तद्वत्स्य मनुष्य उन निर्जरा पुद्गलों को अन्यत्व  नानात्व को जाणे देखे नहीं, देवता श्री कीड़े  उन निर्जरा पुद्गलों के अन्यत्व नानात्व को न  देखे न जाणे</p> <p>यह सूक्ष्म निर्जरा पुद्गल सर्वलोक को व्यवगाह के  रहते है, नारकी उन पुद्गलों को न जाणे न देखे  एव पचेन्द्रिय तिर्यच पर्यन्त कहना, मनुष्य उन  निर्जरा पुद्गलों को कोई जाणे देखे कोई न जा  णे न देखे इत्यादि अधिकार</p> <p>वानव्यन्तर जोतिषी जैसे नारकी को कहा, वैमा  निक जैसे मनुष्य को कहा, वैमानिक दो जेदे</p>	४३१	<p>आदर्श (सीसे) को देखता मनुष्य क्या आदर्श  को देखे के अपने को देखे प्रतिभाग (लाया)  को देखे इत्यादि निर्णय</p> <p>एव एसि मणी आदि का श्री आलावा कहा  खूब गाढा लपेटा ऊँचा कम्बल जितने आकाश  को रोक के रहे फैलाया ऊँचा श्री उतने ही आ  काश को रोकै</p> <p>एव स्थूणा सूत्र भी कहा, आकाशधिगल काहे  से व्याप्त है कितने काय से स्पृष्ट है, पृथिवी  काय यावत् त्रसकाय काल से स्पृष्ट है ? धर्मा  स्ति काय से स्पृष्ट है परं इसके देव आ और प्रदे  श से नहीं है एव अधर्मास्ति काय से स्पृष्ट है परं</p>	४३४
	४३२		४३६
	४३३		

उसके देश प्रदेश से नहीं है आकाशास्तिकाय से स्पष्ट नहीं है इसके देश और प्रदेश से स्पष्ट किये है, त्रसकाय से कदाचित् स्पष्ट स्पष्ट है, काल के देश से स्पर्श किए है

जम्बूद्वीप नहीं धर्मास्तिकाय से इसके देश प्रदेश से स्पष्ट एव अधर्म और आकाशास्तिकाय से भी कहा, पृथिवी से यावत् वनस्पति से स्पर्श किये है, त्रस काय से कदाचित् है एव लवण समुद्र, धातकी खरू आदि भी कहा

लोको किरसे व्याप्त है इत्यादि जैसे आकाशाधिगल कहा, अलोक नहीं धर्म अधर्म और आकाशास्तिकाय से किन्तु आकाशास्तिकाय के

देश प्रदेश से स्पष्ट है, पृथिवी से स्पष्ट नहीं काल से स्पष्ट एक अजीव प्रदेश अगुरुलघु अन्त अगुरुलघुगुणसयुक्त सर्वाकाश से अनन्त जागो न है

॥ १५ वां पद का १ उद्देशा पूर्ण ॥

इन्द्रिय उपचय इत्यादि अर्थ संग्रह गाथा २ कितने प्रकार इन्द्रियोपचय कहा, ५ तरह का

नारकी को पांचो इन्द्रिय का उपचय कहा, एव वैमानिक पर्यन्त सर्व द्रव्यमे कहना भेद यही के जिसको जितनी इन्द्रिय उत्तनाही का उपचय कहना, एव इन्द्रिय की निर्वर्तना भी पाच तर ह की कही है, नारकी से वैमानिक पर्यन्त

१३७

१३८

१३८

१४०

१४०

१४०

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
<p>जिस्को जितनी इन्द्रिय है उतने की निर्वर्तना श्री कहना, श्रोत्रेन्द्रिय निर्वर्तना का काल अग्र सख्यात समय अन्तर्मुहूर्त श्री कहा, एव स्पर्शन तक, एव नारकी से वैमानिक पर्यन्त निर्वर्तना काल कहा, पाच जेदे इन्द्रिय लब्धि क ही, एव २४ द्रुक्क मे जिस्को जितनी हो कहना, इन्द्रियोपयोग काल श्री पाच प्रकार है नारकी से वैमानिक पर्यन्त यथोचित कहना इन श्रोत्र आदि पाचो इन्द्रियो के उपयोग ३ जवन्य उत्कृष्ट अजवन्योत्कृष्ट मे परस्पर कौन किससे धोखा घणा इत्यादि</p>	४४१	<p>वगाहना कहनी, पाच प्रकार का अपाय २४ द्रुक्क मे यथोचित कहा, ईहा पाच प्रकार की चौबीस दृढक मे यथोचित कहना, अवग्रह व्यजन और अर्थ के भेद से दो प्रकार है, व्यजनावग्रह श्रोत्र घ्राण जिह्वा स्पर्श से चार भेद है, अर्थावग्रह पाच इन्द्रियो का पाच और मन से छ प्रकार होता है उनमें से नारकी को २ व्यजन और अर्थ का अवग्रह है</p>	४४४
<p>इन्द्रियावगाहना पांच प्रकार नारकी से वैमानिक पर्यन्त जिस्को जितनी इन्द्रिय हो उही की अ</p>	४४२	<p>एवं वैमानिक पर्यन्त कहा पृथिवीकाय को दो प्रकार अवग्रह, व्यञ्जनावग्रह स्पर्शनेन्द्रिय का एक ही है, अर्थावग्रह भी एक स्पर्शनही का है, एव वनस्पति पर्यन्त कहा, एव द्वीन्द्रिय को, जेद यह के व्यञ्जनाव</p>	

ग्रह दो है, एव तेइदीय चौरिदीय मे इद्रिय बढ़ाय के कहना, चौरिदीय को व्यञ्जनावग्रह तीन अर्थावग्रह चार है, शेष जैसे नारकी को

कहा तैसे वैमानिक तक द्रव्य और भाव भेद से दो तरह की इद्रिय है, आठ द्रव्येद्रिय २ कान २ नेत्र २ नाक जीभ स्पर्श ८, नारकी को आठो है, एव असुर यावत् वैमानिक स्तनितकुमार तक । पृथिवी काय द्रव्ये १ स्पर्श यावद्वनस्पति पर्यंत । द्वीन्द्रिय को द्रव्ये स्पर्श १ जिह्वा २ दो है, तैरिद्री को दो नाक जीभ और स्पर्श ५ है । चौरिद्री को द्रव्ये दो नेत्र दो नाक जीभ ५ स्पर्श ५ है । शेष को जैसे नारकी को कहा

१४६

एकैक नारकी के अनता द्रव्येद्रिय अतीत है । वरु आठ है । पुरस्कृत ८ । १६ । १७ । संख्यात

असख्यात और अनत भी होते है एकैक असुरकुमार के कितने द्रव्येद्रिय अतीत अनत । वरु ८ । पुरस्कृत ८ । १ । संख्यात

असख्यात अनत । एव स्तनितकुमार तक एव पृथिवीकाय अग्रकाय कहा, वनस्पतिकाय

को वरु एक स्पर्श द्रव्येद्रिय है, तेजो वायु भी ऐसे ही है भेद यह के पुरस्कृत १ । १०

है, एव द्वीन्द्रिय भी भेद यह के वरु दो है, त्रीन्द्रिय को वरु चार, चौरिद्री को वरु ६

है, पचेन्द्रिय तिर्यच मनुष्य वानव्यन्तर जो तिसी सौधर्म ईसान देव जैसे असुरकुमार, भेद

असुरकुमार, भेद

१४७

१४७

इतनाही के मनुष्य को पुरस्कृत है भी नहीं भी है, सनत्कुमार माहेन्द्र ब्रह्म लान्तक शुक्र सहस्वार आनतप्राणत आरण अच्युत त्रैवेयक देव को जैसे नारकी को, पंचानुत्तर देव को अतीत अनन्त वर ८। १६। २४। सख्यात, सर्वार्थसिद्धदेव को अतीत अनन्त वर ८। पुरस्कृत ८, नारकी को त्रैवेयक अनन्त अतीत

१४८

वर असख्यात पुरस्कृत अनन्त एव त्रैवेयक देव पर्यंत मनुष्य को वर कदाचित् सख्यात असख्यात भी है, पंचानुत्तर देव को अतीत अनन्त वर और पुरस्कृत असंख्य है, सर्वार्थसिद्धदेव को अतीत अनन्त वर पुरस्कृत सख्यात है, एकैक नारकी के नारकी पणे में

कितने त्रैवेयक अतीत, एव नारकी के असुरपणे में अतीत वर पुरस्कृत त्रैवेयक कहें एकैक नारकी को एकैन्द्रिय पणे में कितने अतीत वर पुरस्कृत है, द्वीन्द्रियपणे में कितने है, त्रैवीय पणे में कितने है इत्यादि निर्णय एवं चौरिन्द्रिय भी परं पुरस्कृत ६। १२। १८ सख्यात असख्यात अनन्त है, पंचैवीय त्रैवेय चपणे में जैसे असुरकुमार पणे में कहा, एव मनुष्यपणे में भी पर पुरस्कृत ८। १६। २४। सख्यात असख्यात अनन्त है, चानव्यन्तर जातिपी सौधर्म देव त्रैवेयकदेवपणे में अतीत अनन्त वर नहीं पुरस्कृत कदाचित्, एकैक नारकी को पंचानुत्तर देवपणे में अतीत नहीं

१४९

१५०

विषय और प्रश्नादि	पत्राक	विषय और प्रश्नादि	पत्राक
वहु नही पुरस्कृत कदाचित्, एव सर्वार्थसिद्धि देवत्व मे भी कहा, एकैक मनुष्य के नारकीपने मे, यावत्सर्वेन्द्रिय तिर्यच पने मे मनुष्यपने मे, वानव्यन्तर जो तिष्क यावत् ग्रैवेयक देवपने मे, विजयवैजय न्तादि देवपने मे, सर्वार्थसिद्धदेवपने कितने द्रव्येन्द्रिय अतीत बहु पुरस्कृत इत्यादि वानव्यन्तर जोतिषी जैसे नारकी, सौधर्मदेवभी जैसे नारकी सौधर्म देव को पचानुत्तर देवपने मे, सर्वार्थसिद्धदेवत्वमे अतीतादि कहा, अनु त्तरदेवकी नारकीपने मे अतीतादि अनुत्तरदेव को सर्वार्थसिद्धदेवत्व मे। सर्वार्थसिद्ध देव को नारकीपने मे एव मनुष्यवर्ज सर्व मे	४५१	नारकी के नारकी पने मे कितने द्रव्येन्द्रिय इत्यादि (द्वार पूर्ण हुआ) नारकी को कितने भावेन्द्रिय, पांच है, एव वै मानिक पर्यन्त यथोचित कहना, एकैक नार —की के कितने अतीत बहु पुरस्कृत इत्यादि वस्तुव्यता एकैक नारकी के नारकीपने मे कितने भावेन्द्रिय अतीत (१५ पद समाप्त हुआ) ॥ १६ वां पद कहते है ॥ पनरह प्रकार प्रयोग कहा ।	४५४ ४५४ ४५७ ४५८ ४५९

जीवको पनरह प्रकार उपयोग है । नारकी को ग्यारह भेदे है । एव असुरकुमार पर्यन्त कहना पृथिवीकाय को तीन उपयोग । एवं वनस्पति पर्यन्त कहा वायुकाय को ५ उपयोग । केरिन्द्री को चार प्रकार एवं चौरिद्री पर्यन्त पंचद्वियतिर्यच को तेरह प्रकार है मनुष्य को पनरह उपयोग । वानव्यन्तर जीति यी वैमानिक को जैसे नारकी को कहा । जीव क्या सत्यमनप्रयोगी यावत्क्या कर्मण शरीर कायप्रयोगी इत्यादि भांगे ८ कहे नारकी क्या सत्यमनप्रयोगी इत्यादि । एव असुरकुमार यावत्स्तनितकुमार पर्यन्त कहा । पृ

थिवीकाय क्या औदारिकशरीरकायप्रयोगी— औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगी के कर्मणशरीरकायप्रयोगी एव वनस्पतिकाय पर्यन्त प्रश्नोत्तर कहा । वायुको वैक्रियमिश्रशरीरकाय—

प्रयोग है

द्विन्द्रिय क्या औदारिकशरीरकायप्रयोगी यावत् क्या कर्मणशरीरकायप्रयोगी है । एवं चौरि

द्विय पर्यन्त कहा

पंचेन्द्रिय तिर्यच जैसे नारकी भेद यह के औदारिकशरीरकायप्रयोग औदारिकमिश्रशरीरकाय प्रयोग भी है । मनुष्य को कायप्रयोग निर्णय

भग २४ त्रिकयोगें ३२ चतु. संयोगी १६ सर्व ८० वानव्यन्तर जीति यी वैमानिक जैसे असुरकुमार

१६१

१६२

१६३

१६४

१६५

१६५

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
<p>कहा। पांच प्रकारों गतिप्रपात कहा प्रयोगगति आदि के भेद से। प्रयोगगति १५ भेद जैसे प्रयोग कहा जैसे यह भी कहनी। जीवों को प्रयोगगति पनरह भेद है। नारकी का ११ प्रकार है एव वैमानिक पर्यन्त जीवों को क्या सत्यमनप्रयोगगति यावत् क्या कर्मणञ्चरीरकायप्रयोगगति है यावद्वैमानिक पर्यन्त कहा। एव गति भेद वक्तव्यता (१६ वा प्रयोग पद कहा)।</p> <p>॥ १७ वा पद कहते है ॥</p> <p>आहारसमसरीरा यह अर्थ संग्रह गाथा।</p>	१७४	<p>नारकी सर्व समाहार, समञ्चरीर समुत्खासनिश्चास है इत्यादि</p> <p>नारकी सर्व समकर्म हैं इति वक्तव्यता। नारकी सर्व समोपपन्नक है</p> <p>नारकी सर्व समवर्ण है इत्यादि जैसे वर्णकहा जैसे लेखा, वेदना, समक्रिय है</p> <p>नारकी सर्व समायु समोपपन्नक है इत्यादि निर्णय असुरकुमार सर्व समकर्म इत्यादि एवं स्तनित कुमार पर्यन्त कहा</p> <p>पृथिवीकाय आहार वर्ण कर्म और लेखासे जैसे एव चौरिद्रिय, पचेद्रिय तिर्यंच जैसे नारकी</p>	१८५ १८६ १८७ १८८ १८९ १९९



मनुष्य सर्व समाहार है इत्यादि जैसे नारकी, फर्क क्रियामें है

नेद क्रियासे तीन नेद है  
वानव्यन्तर जैसे असुरकुमार

एव जोतिषी वैमानिक नी नेद यह के वेदना से  
द्विविध है

जैसे औचिक गमा कहा तेसे सलेश्य का गमा  
कहना वैमानिक पर्यन्त

पृथिवी अप् वनस्पति पचेद्रिय तिर्यच मनुष्य जैसे  
औघिक गमा कहा नेद मनुष्य को क्रिया से

प्रमत्त अप्रमत्त कहा  
(१ उद्देशा पूर्ण ज्ञान)

कितनी लेश्या ठ कही, नारकी को कितनी ले

श्या, तिर्यच योनिक को ठ लेश्या, एकेंद्रिय  
को चार लेश्या,

पृथिवीकाय को चार लेश्या, अप् वनस्पति नी  
अचैतही है, तेजो वायु द्वीद्रिय त्रीद्रिय चतुरि

द्रिय जैसे नारकी, पचेद्रिय तिर्यच को ठ, समू  
र्द्धिम पचेद्रिय तिर्यच जैसे नारकी, गर्जज पचे

द्रिय तिर्यच को ठ एव लेश्या वक्तव्यताधिकार  
गर्जजमनुष्य को ठ, देव को ठ, देवियों को चार,

एव नवनवासि देव देवी वानव्यन्तर देव देवी  
वैमानिक देव देवी लेश्याधिकार

यह जीव सलेशी कृष्णलेशी यावत् शुक्ललेशी में  
कौन किससे थोड़ा घणा इत्यादि अप् बहुत्व

वक्तव्यता उद्देश समाप्ति तक

विषय और प्रवृत्तादि	पत्रांक	विषय और प्रवृत्तादि	पत्रांक
(२ उद्देश्या पूर्ण ज्ञाया) नारकी नारकी से उपजै के अनारकी नारकी में उपजै एव वैमानिक पर्यंत कहा, नारकी नारकी से निकले के अनारकी से, एव वैमानिक पर्यंत जोतिषी वैमानिक से चयन्ति ऐसा कहना कृष्णलेखी नारकी कृष्णलेखी नारकी से उपजै इ त्यादि निर्णय यावत् शुक्ललेखी शुक्ललेखी मे उपजै एव २४ द्रुक् मे यथोचित कहना (३ उद्देश्या पूर्ण ज्ञाया) परिणाम गद्य इत्यादि गाथा त लेख्या कही कृष्णलेख्या नीललेख्या को पाके तद्वर्ण तद्रूप तद्ग न्धादि पणे परिणमे	५१३	एव अन्तिलापि नीललेख्या कापोतलेख्या को पाके कापोत तेजोलेख्या को पाके तेजोलेख्या पद्म लेख्या को पाके पद्मलेख्या शुक्ललेख्या को पाके तद्रूपादिपणे परिणमे इत्यादि सदृष्टान्त कृष्णलेख्या कैसी वर्ण से, जीमूत अजन सजन कज्जलादि सदृष्टा है नीललेख्या वर्ण निरूपण, कापोत लेख्यादि वर्ण निरूपण एव आस्वाद निरूपण त लेख्या का तीन लेख्या दुरन्निगन्ध और तीन सुरन्नि गन्ध है, एव शुष्काच्युत्, एवं प्रजास्ता प्रजास्त, सक्ति प्रासक्तिष्ठ, और स्पर्श, सुगति दुर्गतिगामी कही है। कृष्णलेख्या ३।१।२७।८३।४२।	५२३ ५२५ ५२६ ५३३

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
<p>कृष्णलेत्र्यां अनन्तमादेशिकी एवं यावत् शुक्तलेत्र्या, कृष्णलेत्र्या असंख्येयप्रदेशावगाढ एवं यावत् शुक्तलेत्र्या, कृष्णलेत्र्या की कितनी अवगाहना एवं शुक्तलेत्र्यावगाहना, स्थान असंख्यात्</p> <p>लेत्र्यास्थानों का, अल्पबहुत्व द्व्यर्थ्य प्रदेशार्थ्य (चौथा उद्देशा पूर्ण हुआ)</p> <p>कृ लेत्र्या कही, कृष्णलेत्र्या नीलेत्र्या को पाके जैसे चौथे उद्देश में कहा वैदूर्य मणि दृष्टान्त पर्यन्त कहना इत्यादि वक्तव्यता (पांचवां उद्देशा पूर्ण हुआ)</p>	५३४	<p>कृ लेत्र्या कही, मनुष्य को कितनी लेत्र्या इत्यादि निर्णयाधिकार (लेत्र्या पद १७ वां. पूर्ण)</p> <p>॥ १८ वां पद कहते हैं ॥</p> <p>जीवगङ्गदिय काए यह संग्रह गाथा २</p> <p>जीव जीवपनें कालसे कवतक रहै, सर्वकाल नारकी नारकीपनें काल से कितने काल रहै, एव तिर्यच क्षेत्र से काल से कहा, तिर्यचणी, मनुष्य मनुष्यणी देव देवीइनका प्रश्नोत्तर नारकी अपर्याप्त नारकी पणे कालसे कब तक एवं यावद्देवी पर्यन्त</p>	५४२
	५३५		५४५
	५३६		५४६
	५४०		५४८

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
नारकी पर्याप्त नारकी पणें कितने काल तक रहे इत्यादि अधिकांश	५४९	अथौगी अथौगीपणे, एव मन वचनकाय योगी	५५६
सहृदय सहृदयपणे कालसे कवतक होय इत्यादि	५४९	एव स्त्री पुरुषवेद नपुंसकवेद प्रश्न, अवेद प्रश्न, निर्णय	५५७
एव पर्याप्त अथौगी का आलावा कहा	५५०	सकपाई प्रश्न, एव क्रोध माया मान लोभ कपायी	५५९
सकाय सकायपणे, पृथिवीकाय पृथिवीकायपणे, एव अग्नेजवायु	५५१	अकपायी निर्णय	५६०
वनस्पतिकाय प्रश्न, त्रसकाय त्रसकायपणे, अ काय अकायपणे, एव त्रसकाय पर्याप्त अथौगी	५५२	सलेत्री का प्रश्न एव त ले० ओका आलावा क हना अलेत्री नी	५६१
सूक्ष्म पृथिवी अप्रतेज वायु वनस्पति, एव वा तक कहा	५५२	सम्यग्दृष्टि सम्यग्दृष्टिपणे इत्यादि निर्णय	५६२
वाटर निगोट प्रश्न, सयोगी सयोगीपणे काल से कितने काल होय,	५५४	ज्ञानी ज्ञानीपणे कालसे कयतक इत्यादि प्रश्नोत्तर	५६३
	५५५	विभग ज्ञानी चक्षुदर्शनी अचक्षुदर्शनी अवधिद र्शनी का प्रश्न	५६५
		समत असमत संयतासमत प्रश्न	५६६

साकारोपयुक्त अनाकारोपयुक्त जी इसीतरह  
 तन्मस्य आहारक प्रश्न, केवल आहारक तथा  
 अनाहारक काल  
 ज्ञापक अज्ञापक प्रश्न, काय परित् अपरित् काल  
 निर्णय  
 पर्याप्त अपर्याप्त नो पर्याप्त नो अपर्याप्त सूक्ष्म  
 वादर सज्ञो असज्ञो  
 जवसिद्धिक अत्रवसिद्धिक चरम अचरम काल  
 निर्णय

(१८ वां पद समाप्त हुआ)

॥ १९ कहते हैं ॥

जीव सम्यग्दृष्टि मिथ्यादृष्टि सम्यग्मिथ्यादृष्टि है,

एव नारकी असुरकुमार याव तस्तानितकुमार  
 पर्यन्त, पृथिवीकाय मिथ्यादृष्टि ही है, एव वन  
 स्पत्तिकाय पर्यन्त कहना, द्वीन्द्रिय मिश्रदृष्टि  
 नहीं है एव चौरिन्द्रिय पर्यन्त कहा, पंचेन्द्रिय  
 तिर्यच जोतिषी मनुष्य वानव्यन्तर वैमानिक  
 तीनों है, सिद्ध सम्यग्दृष्टि है

(१९ वा सम्यक्त पद कहा)

॥ २० वां पद कहते हैं ॥

नेरडय अतकिरिया यह द्वार गाथा-जीव अंत  
 क्रिया करै एवं नारकी यावद्वैमानिक, नारकी  
 नारकी मे अन्तक्रिया करै नहीं  
 नारकी असुरकुमार मे अन्तक्रिया करै एव याव

द्वैमानिक भेद मनुष्य अन्तक्रियाकरै एव असुरकुमार यावद्वैमानिक एव २४ दंडक, नारकी अनन्तरागत अन्तक्रिया करै परम्परागत

५७५

तेज वायु द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय अन्त क्रिया प्रश्न अनन्तरागत नारकी एकसमय मै जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट दश अन्तक्रिया करै रत्नप्रभा पृथिवी का नारकी तथा अनन्तरागत पङ्कप्रभादि पृथिवी का नारकी अन्तक्रिया

५७५

एव असुरकुमार कुमारी प्रश्न अनन्तरागत पृथिवीकायिक जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट चार एव अष्टकायिक भी वनस्पति का यिक छ पंचेन्द्रिय तीर्यञ्च दश तीर्यञ्चणी दश

मनुष्य दश मनुष्यणी बीश वानव्यतर दश व्यतरी पाच जोतिपी बीस इत्यादि नारकी नरक से निकल नरक मै उपजै नही नारकी नरक से निकल असुरकुमार मै उपजै नही

५७६

यावत् चतुरेन्द्रिय नारकी नरक से निकल पञ्चेन्द्रिय तीर्यञ्च मै

५७६

उपजै इत्यादि

५७७

नारकी नरक से निकल व्यंतर जोतिपी वैमानिक मै उपजै नही असुरकुमार असुरकुमार से निकल नारकी मै उपजै नही असुरकुमार मर कै असुरकुमार मै उपजै नही एव यावत्

५७९

असुरकुमार मरके पृथिवीकाय मै उपजै कदाचित् स्तनितकुमार

एव अप् वनस्पति में भी असुरकुमार मरके तेज वायु द्वौद्रिय त्रीद्रिय चतुरीद्रिय में न उपजै

शेष पांच में उपजै इत्यादि जैसे पृथिवीकाय कहा तैसे अप् वनस्पति भी कहना, तेजसकाय से निकल तेजसकाय में

उपजै यावत् स्तनितकुमार जैसे तेज तेसे वायु, वेरीद्री वेरीद्री से निकल नारकी में उपजै इत्यादि पञ्चैद्रिय तिर्यंच पंचैद्री तिर्यंच से निकल नारकी में उपजै इहां तक रत्नप्रभा पृथिवी का नारकी निकल तीर्थकर होय, कीड़ एक, एव यावत् बालुकाप्रभा पक्कप्रभा पृथिवी का नारकी निकल तीर्थकर न होय

धूमप्रभा तमा यावत् सप्तमी

५८४

असुरकुमारचवके तीर्थकर पणा पावे नही, एव यावत् अप्, तेजसकाय तेजसकाय से निकल तीर्थकर होय नही धर्मसुने एव वायु भी, व नस्पतिकाय अतक्रिया करै तीर्थकर न हो, पञ्चैद्रिय तिर्यंच मनुष्य वानव्यंतर जोतिपी

अतक्रिया ही करै

सौधर्म देव चवके तीर्थकर होय कोई एक जैसे रत्नप्रभा नारकी एव यावत्सर्वार्थसिद्ध का देव रत्नप्रभा का नारकी चक्रवर्त्त होय, शर्कराप्रभा का न होय एव यावत्सातमी का नारकी, तिर्यंच मनुष्य भी नही, भवनपति व्यतर जोतिपी वेमानिक से होय, एव बलदेव भेद यह के शर्करापृथिवीका नारकी भी होय, एव वासु

५८५

५८५

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
देव भी भेद यह दो पृथिवी से वैमानिक से होय शेष नहीं होय मडलीक सातमी से तेज वायु से नहीं, सेनापति ह्यादि भी एव अश्वरत्न हस्तिरत्न रत्नप्रभा से निकल यावत् सह स्रारदेव हो, चक्ररत्न चर्म दड तत्र मणि असि काकिणिरत्न असुरकुमार से ईशान तक हो, शेष नहीं, अस्यत भविकद्रव्य देव अविश्रयितसयम विराधित सयमा सयम में विराधित सयमा सयम असङ्गी तापस कांदर्पिक चरणपरित्राजक कित्तिवपिक तिरश्चीन आजीविक आभियौगिक सलिगी दर्शनव्यापन्नक यह देव लोक में उपजै तो कहा कौन किस देवलोक	५८६	चार प्रकार असंज्ञि आयु कहा, असङ्गी जीव क्या नैरयिकायु करै कि देवायु करै एव मनुष्यायु देवायु जैसे नारकायु, एह नारकी असंज्ञि आयु यावत् देव असंज्ञि आयु में कौन किस्से थोडा घणा है एव अलपवज्जत्व (२० वां अतक्रिया पद पूर्ण)	५८८
	५८६	॥ २१ वा कहते है ॥ विहिसठाणपमाण यह द्वार गाथा पाच औदारिकादि शरीर कहे एकेंद्रियादि ५ जेदने औदारिक पाच जेदहे पृथिवीकायादि ५ जेदसे एकेन्द्रिय औदारिक ज्ञा	५९१ ५९१ ५९२



विषय और प्रस्तावि	पत्रांक	विषय और प्रस्तावि	पत्रांक
<p>पृथिवीकाय एकेंद्रिय औदारिक शरीर सूक्ष्म वा दर भेदसे दो भेद, सूक्ष्म तथा वादरन्ती पर्याप्त अपर्याप्त भेदसे प्रत्येक दो दो भेद है एवं वनस्पतिकाय एकेंद्रिय औदारिकन्ती कहा द्वित्रिचतुरिन्द्रिय औदारिकशरीर पर्याप्त अपर्याप्त भेदसे द्विविध कहा है पंचेंद्रिय औदारिक शरीर तिर्यच मनुष्यसे दो भेद है, तिर्यच औदारिक तीन भेद है एवं जल स्थल स्वचरादि भेदनिर्णय मनुष्य पंचेंद्रियौदारिक शरीर दो भेद इत्यादि औदारिक शरीर नानासंस्थान सस्थित है, एकें द्रिय का औदारिक नानासंस्थान है, पृथिवी</p>	<p>५९२</p> <p>५९२</p> <p>५९३</p> <p>५९३</p> <p>५९३</p> <p>५९४</p> <p>५९४</p>	<p>काय मसूरचद्र संस्थान सस्थित, एवं सूक्ष्म पृ थिवीका वादर कान्ती कहा अपकाय स्तिवुकविंदु संस्थान, सूक्ष्म वादरपर्या प्ता पर्याप्त ० न्ती, तेज सूचीकलाप सस्थित एवं सूक्ष्मवादर पर्याप्त ० पर्याप्त ० न्ती, वायु पताका संस्थान सस्थित है, एवं सूक्ष्मादि न्ती है, वन स्पति नानासंस्थान सस्थित है, एवं सूक्ष्मादि न्ती है, द्वौन्द्रियौदारिक शरीर ऊर्ध्वसंस्थान है, एवं तैरिद्री चउरिद्री न्ती, पंचेंद्रिय तिर्यचको छ संस्थान है पर्याप्त ० अपर्याप्त ० कान्ती पर्याप्त ० अपर्याप्त ० सम्मूर्च्छिम पंचें ० तिर्यच ऊर्ध्व है, प ० अ ० गर्भज पंचेंद्रिय तिर्यच नाना है, एवं तिर्यच के १ अलावे हैं, जलचर में ६</p>	<p>५९६</p> <p>५९६</p>

सस्या० सम्बन्धिंम मे सर्वत्र ऊंढही है, मनुष्य मे ६ सस्यान सम्मू० मे ऊंढही है, औ दारिक शरीर की कितनी वन्नी अवगाहना है

इत्यादि पृथिवीकाय एकैन्द्रिय औदारिक शरीरावगाहना उत्कृष्ट जघन्य अगुल असख्यात भाग एव अ पर्याप्त पर्याप्त, एव सूक्ष्म पर्याप्ता पर्याप्त, वा

दर पर्याप्ता पर्याप्त भी, एव अप्काय भी तेजस्काय वायुकाय भी ऐसे ही कहो, वनस्पति मे जघन्य अगुल असख्यात भाग उत्कृष्ट सा

तिरेक हजार योजन एव पर्या० अगुल असख्यात भाग, पर्याप्त पूर्व कहा तैसे है

द्वीन्द्रिय जघन्य अगुल असख्यात भाग उत्कृष्ट

वारह योजन इत्यादि, त्रीन्द्रि तीन कोस, चौरिद्री चारकोस, पंचेन्द्रिय १००० योजन इत्यादि

जोयणसहस्रच्छंगा यह संग्रहणि गाथा २ मनुष्यौदारिक शरीरावगाहनाधिकार वैक्रिय शरीर द्वि जेद व्यक्तव्यताधिकार वैक्रिय शरीर सस्यान वक्तव्यताधिकार नारकी आदि दडक मे वैक्रियशरीर सस्यान वैक्रिय शरीरावगाहना वक्तव्यताधिकार आहारक शरीर वक्तव्यताधिकार आहारकशरीर सस्यान वक्तव्यताधिकार तैजसशरीर वक्तव्यता तैजसशरीर सस्यान निर्णय २४ दडक मे

५१८

५१९

६००

६००

६०१

६०२

६०३

६०८

६०८

६१०

६१६

६१९

६२०

६२१

एवं सातवेदनी का ८ अनुभाग कहा, असातका भी ८ ही कहा मोहनीका अनुभाग ४ तरह, आयुका ४ एवं सर्व कर्मका

(१ उद्देशा पूरा ऊँचा)

आठ कर्म प्रकृति कही, ज्ञानावरणी ५ जेद, दर्शनावरणी निद्रा ५ दर्शन ४ एवं नव, वेदनी १६ प्रकार साता ८ तरे असाता ८ तरह, मोहनी दो जेदें दर्शनमोहनी तीन चारित्रमोहनी दो जेदें, कपाय वेदनी १६ जेदें हे नो कपायवेदनी १ प्रकार, आयु ४, नाम ४२ गति नाम ४ जेदें, जातिनाम ५, शरीर नाम ५,

अंगोपाग ३, शरीरवधन ५, शरीरसंघात ५, नाम ठ जेदे सस्थान नाम ६, वर्ण ५, गंध २, रस ५, स्पर्श ८, अंगुलघु १, उपघात १, पराघात १, आनुपूर्वी ४, उत्स्वास १, शेष सर्व १, एक हैं यावत्तीर्थकर है, विहायो गति २ जेदें, गोत्र २ जेदें उच्चैः ८, नीचैः ८, अन्त

६७७

६८२

६१५

६११

७००

ज्ञानावरणी आदि ८ कर्मस्थिति निरूपणाधिकार एकेंद्रिय जीव ज्ञानावरणी को क्या बांधै एवं ८

कर्म कहना

एव द्वित्रि चतुरिन्द्रिय को भी कहना

एव पंचेन्द्रिय ज्ञानावरणी का क्या बांधै इत्यादि निरूपण

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
ज्ञानावरणी कर्म का जघन्य स्थिति बन्धक कौन, मोहनीय का जघन्यस्थिति बन्धक कौन; आयु का जघन्य स्थिति बन्धक कौन इत्यादि उत्कृष्टस्थितिक ज्ञानावरणी कर्म क्या नारकी बाधै कि तिर्यच इत्यादि, कैसा नारकी उत्कृष्ट स्थितिक ज्ञानावरणी कर्म बाधै इत्यादि निरूपण एव आयु को ठोकर सातो कर्म के चालावे कहना, उत्कृष्टस्थितिक आयु कर्म क्या नारकी बाधै इत्यादि कैसा तिर्यच उत्कृष्टस्थितिक आयु कर्म बाधै	७०४	(२३ वा पद पूर्ण ऊँछा) ॥ २४ वा पद कहते हैं ॥ अष्ट कर्म प्रकृति कही, नारकी को यावद्वैमानिक की, जीव ज्ञानावरणी (छादि) कर्म बाधता ऊँछा कितनी कर्म प्रकृति बाधै इत्यादि निर्णय (२४ वा पद पूर्ण ऊँछा)	७०८
कैसा मनुष्य तथा मानुषी उत्कृष्टस्थितिक आयु बाधै	७०६	॥ २५ कहते हैं ॥ छाठ कर्म प्रकृति कही, ज्ञानावरणी कर्म बाधतो जीव कितनी प्रकृति वेद, एव नारकी यावद्वैमानिक, एव पृथक् सेत्री, यावत् अंतराय तक कहना, जीव वेदनी कर्म बाधता कितनी	७०७

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
<p>कर्म प्रकृति वेदै, एव एकत्व पृथक् से झाठी कर्म वेदै यावद्वैमानिक ( २५ वा पद पूर्ण कहा )</p> <p>॥ २६ कहते है ॥</p> <p>झाठ कर्म कहे नारकी को यावद्वैमानिक को, जीव ज्ञानावरणी कर्म वेदता कितनी कर्म प्र कृति बाधै, इत्यादि निर्णय ( २६ वा पद कहा पूर्ण )</p>	७१२	<p>कर्मों के झालावे समाप्ति पर्यन्त ( २७ वा पद कहा पूर्ण )</p> <p>सच्चिन्नाहारठी यह द्वार गाथा २, नारकी सच्चिन्नाहार के झुचिन्नाहार मिश्राहार एव असुरकुमार यावद्वैमानिक, नारकी झुहाहार का अर्थी है, कितने कालसे झुहाहार की डच्छा होय इत्यादि</p> <p>नारकी क्या झुहाहार करै इत्यादि निरूपणाधिकार असुरकुमार झुहाहार का अर्थी है, एव जैन नार की यावत भयोभूयः परिणमें पृथिवीकाय आहार का अर्थी है, निरंतर झा हारेच्छा होती है, क्या झुहाहार है जैसे नारकी</p>	७१७ ७१८ ७१९ ७२० ७२५

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
को कहा तैत्ते इहा भी कहना सर्व वनस्पति काय पर्यन्त एवमेव द्वीन्द्रिय आहारार्थी है, एव पूर्ववत् सर्व कहना यावत् अलपवज्जत्व पर्यन्त एवं त्रिचतुरिन्द्रियाहारार्थ, आहार कालादि नि रूपणाधिकार मनुष्य आहारादि निर्णयाधिकार यावत् सर्वार्थ सिद्ध देव तक कहा नारकी क्या एकेन्द्रियशरीर आहार के यावत्पक्षे द्वियशरीर आहार, एव स्तनितकुमारपर्यन्त पृथिवीकाय प्रश्न, द्वीन्द्रिय एव यावच्चतुरि- न्द्रिय इत्यादि जिसके जितनी इन्द्रियशरीर उस्को उतनेही का आहार, नारकी लोमाहार	७२६	है प्रक्षेपाहारी नहीं एव एकेन्द्रिय भी सर्व देव भी पूर्ववत् वैमानिक पर्यन्त, द्वीन्द्रिय से मनुष्य तक दोनू है, नारकी ओजाहारी है मनभक्तो नहीं, एव सर्व देव यात्रद्वैमानिक दोनू है इत्यादि निरूपणाधिकार (१ उद्देशा पूर्ण ज्ञात्रा) आहार भविय सबी यह गाथा, जीव आहारक भी है अनाहारक भी है एव नारकी यावत् असुरकुमार यात्रद्वैमानिक सिद्ध अनाहारी है, एव वज्रवचन से भी आ लावा कहना भवसिद्धिक आहारक अनाहारक भी है, एव वैमा निक पर्यन्त एवं अभवसिद्धिक नोभवसिद्धिक	७३४
	७२८		७३५
	७२९		७३६
	७३०		७३७

विषय और प्रस्ताव	पत्रांक	विषय और प्रस्ताव	पत्रांक
<p>कर्म प्रकृति वेद, एव एकत्व पृथक् से अष्टां कर्म वेद यावद्वैमानिक (२५ वा पद पूर्ण कहा)</p> <p>॥ २६ कहते हैं ॥</p> <p>अष्ट कर्म कहे नारकी को यावद्वैमानिक की, जीव ज्ञानावरणी कर्म वेदता कितनी कर्म प्र कृति बाधै, इत्यादि निर्णय (२६ वा पद कहा पूर्ण)</p>	७१२	<p>कर्मों के अष्टांवे समाप्ति पर्यन्त (२७ वां पद कहा पूर्ण)</p> <p>सच्चिन्नाहारठी यह द्वार गाथा २, नारकी सच्चिन्नाहार के अचिन्नाहार मिश्राहार एव असुरकुमार यावद्वैमानिक, नारकी अाहार का अर्थी है, कितने कालसे अाहार की इच्छा होय इत्यादि</p> <p>नारकी क्या अाहार करै इत्यादि निरूपणाधिकार असुरकुमार अाहार का अर्थी है, एव जैन नार की यावत् भयोभूयः परिणमे पृथिवीकाय अाहार का अर्थी है, निरन्तर अा हारेच्छा होती है, क्या अाहार है जैसे नारकी</p>	७१७
<p>अष्ट कर्म प्रकृति कही, नारकी को यावद्वैमानिक की, जीव ज्ञानावरणी कर्म वेदता कितनी कर्म प्रकृति वेद एवं सर्व एकत्व पृथक् से कहना ८</p>	७१३		७१९
			७२०
			७२५

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
कितने प्रकार पञ्चज्ञा कही २, साकार पञ्चज्ञा ६ प्रकार, अनाकार पञ्चज्ञा तीन प्रकार है एव जीव को कहना नारकी को २ पञ्चज्ञा, साकार पञ्चज्ञा ४ अनाकार २ एव स्तनितकुमार पर्यन्त पृथिवीकाय को १ साकारपञ्चज्ञा एव वनस्पति पर्यन्त द्विन्द्रिय को १ साकार पञ्चज्ञा सो २ तरहकी है एव त्रीन्द्रिय जो चक्षुरिन्द्रिय को २ साकार पञ्चज्ञा जैसे द्विन्द्रिय को अनाकारपञ्चज्ञा १ कही, मनुष्य को जैसे जीवों को शेष जैसे नारकी यावद्वैमानिक जीव साकारपञ्ची है के अनाकार इत्यादि	७५६ ७५७ ७५७ ७५८	केवली इस रत्नप्रज्ञापृथिवी को अनाकार हेतु उ पमा दृष्टान्त वर्ण सस्यान प्रमाण से जिससमय जागै उत्समय देखै इत्यादि प्रश्न (३० पद समाप्त ऊँचा)	७५८ ७६०
		॥ ३१ कहते हैं ॥ जीव सज्ञी असज्ञी के नो सज्ञी नो असज्ञी इत्यादि पृथिवी काय प्रश्न, एवं यावच्चतुरिन्द्रो मनुष्य जैसे जीव, पंचेन्द्रिय तिर्यच वानव्यन्तर जैसे नारकी जोतिपी वैमानिक सज्ञी, (३१ वा पद कहा)	७६२ ७६३



विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
नो अभावसिद्धि आहार अनाहार निर्णय (द्वार १)	७३८	दो प्रकार उपयोग कहा, साकारीपयोग छाठ चेट, अनाकारीपयोग चार जेटे	७५०
सजी जीव आहारक अनाहारक भी है एव वैमा निक पर्यन्त एकेद्रिय विकलेद्रिय न पूछना एव असन्धी भी कहना स्तनितकुमार तक एवं मनुष्य भी, सिद्ध अनाहारक, सलेशी जीव का प्रश्न एकत्वपृथक् से सम्यग्द्रष्टि जीव आहारक प्रश्न, द्वित्रिचतुरिन्द्रिय एक भगा सयत आहारकानाहारक निर्णय, एकत्व पृथक् से सकपायी प्रश्न	७३९ ७४० ७४२ ७४४	नारकी को कितने प्रकार उपयोग, साकारोपयोग ६, अनाकारीपयोग तीन प्रकार एव स्तनित कुमार पर्यन्त कहना पृथिवीकाय उपयोग प्रश्न यावद्धनस्पतिकाय, द्वी पचेद्रिय त्रियेच जैसे नारकी, मनुष्य जैसे औघिक उपयोग इत्यादि (२९ वां पद समाप्त ज्ञाया)	७५१ ७५२ ७५३ ७५३
(२८ वां अहार पद कहा) ॥ २९ वां कहते है ॥			

॥ ३० कहते हैं ॥

सौधर्म देव जघन्य अगुल असख्यातभाग उ०—  
नीचे रत्नप्रभा का नीचे का चरमान्त तिरछा  
असख्य द्वीपसमुद्र, ऊपर अपना विमान ।  
एव इंशानदेवभी, सनत्कुमार भी ऐसे नीचे  
शर्करा का नीचला चरमान्त, एव माहेन्द्रदेव  
भी, ब्रह्म लान्तकदेव निर्फ नीचे तीसरी का  
नीचेका चरमान्त, महाशुक्र सहस्रार चौथीके  
नीचे का चरमान्त, आनतप्राणत प्रारण अ  
व्युत देव नीचे पाचमी धूमप्रभा के नीचे का  
चरमान्त, नीचे मध्यम ग्रैव्यकदेव नीचे ठही  
के नीचे का चरमान्त, उपरिमग्रैव्यक देव  
ज० अगुल असख्यात भाग उ० सातमी के

७६९

नीचे का चरमान्त, तिरछा असख्य द्वीपसमुद्र,  
ऊपर स्वविमान  
अनुत्तरोपपातिक देव सभित्तलोक नाडी जाणे,  
नारकी का अवधि क्षुरप्रान्नार, असुररुमार या  
वत् स्तनितकुमार का पत्यक के आकार . प  
चेद्वित्र तिर्यच का नानाकार है, मनुष्य का भी  
एव, वानव्यन्तर का पटहाकार, जातिपी का  
जालराकार । सौधर्म देव का ऊर्ध्वसृङ्गाकार.  
एव अव्युतदेव पर्यन्त है, ग्रैव्यकदेव का पुत्र  
चगेरीसमान, अनुत्तरदेव का जवनी नाली  
के आकार

७७३

नारकी यावत् स्तनितकुमार अवधि के भीतर  
है के बाहिर, भीतर है, पचेद्वित्र तिर्यच वा

॥ ३२ कहते हैं ॥

जीव सयत के असयत के सयतासयत, एवं वा-  
रकी प्रयत्न, यायन्तुनिद्रिय, पचेद्रिय तिर्यच

मनुष्य प्रयत्न एवं सिद्धतक  
(३२ वां पद कहा)

॥ ३३ कहते हैं ॥

नेद विषय संशरणे यह गाथा  
दो प्रकार अविधि कही मयप्रत्यय द्वायीपञ्चमिक  
नेद से, देव नारकी को मयप्रत्यय, मनुष्य

तिर्यच की द्वायीपञ्चमिक  
नारकी जघन्य अर्द्ध क्रोश उत्कृष्ट चार जाणे अ-  
विधि से, रत्नप्रज्ञा का नारकी अर्द्धाई जघन्य

७६४

७६५

७६७

उत्कृष्ट चार जाणे, अर्द्धा का जघन्य तीन-  
उत्कृष्ट अर्द्ध, अर्द्धा का नारकी जघन्य अर्द्ध-  
उत्कृष्ट तीन, पकप्रज्ञा नारकी जघन्य दो उत्कृष्ट  
अर्द्धाई, धूमप्रज्ञा नारकी जघन्य अर्द्ध उ० दो  
चमा का नारकी क्रोश जघन्य उत्कृष्ट अर्द्ध, नीचे  
सातमी का जघन्य अर्द्ध क्रोश उत्कृष्ट क्रोश।  
असुरकुमार जघन्य २५ योजन उत्कृष्ट अस-  
ख्यात द्वीपसमुद्र, नाग जघन्य २५ उत्कृष्टवही,  
एव स्तनितकुमार पर्यन्त, अर्द्धेद्रिय तिर्यच ज-  
घन्य अर्द्धा उत्कृष्टात नाम उ० असख्यात  
द्वीपसमुद्र, मनुष्य अर्द्धा उत्कृष्टातनाग जघन्य  
उत्कृष्ट असख्यात अर्द्धा लोक मे लोक प्रमाण खरु,  
वानव्यन्तर जैसे नाग, जोतिषी जघन्य उत्कृष्ट

७६८

भवनपति व्यन्तर जोतिषी सौधर्म ईशान के देव सदेवीक सपरिचार, सनत्कुमार से अच्युत तक अदेवीक सपरिचार है, त्रैवेयकानुत्तर देव आ देवीक अपरिचार हैं।  
परिचारणा पाच प्रकार है कायादि भेदसे उसमें भवनपति आदि ईशानान्त कल्प में कायपरिचारणा है, शनत्कुमार माहेद्र में स्पर्शपरिचारणा है, ब्रह्मलातक में रूपपरिचारणा है, शुक्र सङ्स्कार में शब्दपरिचारणा है, अच्युतान्त ४ में मनपरिचारणा है, त्रैवेयकानुत्तर में परिचारणा नहीं है।  
इच्छामन समुत्पन्न होने का अधिकांश

७७८

७७९

७८०

७८०

यह कायपरिचारक यावत् मनपरिचारक दंष्ट्रो में कौन किसे छरपवज्जत्व है  
(३४ वां पद पूर्ण ज्ञाया)

७८४

॥ ३५ वां कहते हैं ॥

सीयायदद्वसारीर यह सग्रह गाथा  
शीत उद्य मिश्र एव तीन प्रकार वेदना कही,

७८६

नारकी को कौन वेदना  
द्रव्य क्षेत्र काल भाव से चारप्रकार वेदना, नार  
की कौन वेदना वेदै एव वैमानिक पर्यन्त  
शारीर मानसी शारीरी मानसी शारीरमानसी  
भेदसे तीनप्रकार वेदना, नारकी कौन वेदना  
वेदै एव यावद्वैमानिक पर्यन्त

७८७

७८८

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
हिर, मनुष्य दोनू है, व्यन्तर जोतिपी वैमानिक जैसे नारकी, नारकी देखावधि है, एव स्तानितकुमार पर्यन्त, पचेद्रिय तिर्यच भी एव, मनुष्य दोनू । व्यन्तर जोतिपी वैमानिक जैसे नारकी । नारकी का अग्रधि आनुगामिक अ प्रतिपाती अवस्थित है । एव स्तानितकुमार पर्यन्त ।	७७३	अणतरागथाहारे इह गाथा २ नारकी अणतराहार है इत्यादि वक्तव्यता याव	७७३
पचेद्रिय तिर्यच का आनुगामी भी यावत् अवस्थित भी है, एव मनुष्य भी, वानव्यन्तर जोतिपी वैमानिक जैसे नारकी	७७३	त २४ दंडक मे नारकी का आहार आभोगनिर्वर्त्तित है के अ- नाभोगनिर्वर्त्तित इत्यादि वक्तव्यता नारकी जिन पुद्गलो को आहारपणें ले उनको जार्णें देखे इत्यादि निर्णय नारकी को असख्यात अध्यवसान, प्रशस्त भी अप्रशस्त भी वैमानिक कोभी है नारकी सम्यक्ताभिगमी मिथ्यात्वाभिगमी सम्य- इमिथ्यात्वाभिगमी भी है, एव वैमानिक पर्यन्त एकेद्रिय विकलेंद्रिय मिथ्यात्वाभिगमी ही है देवता सदेवीक सपरिचार है इत्यादि ४ भंग	७७४
	७७५		७७५
	७७६		७७६
	७७७		७७७

विषय और प्रश्नादि	पत्राक	विषय और प्रश्नादि	पत्राक
<p>प्रश्न निर्णय भवनपति व्यन्तर जोतिषी सौधर्म ईशान के देव सदेवीक सपरिचार, सनत्कुमार से अच्युत तक अदेवीक सपरिचार है, त्रैवेयकानुत्तर देव आ देवीक अपरिचार है परिचारणा पाच प्रकार है कायादि भेदसे उसमें भवनपति आदि ईशानान्त कल्प में कायपरि चारणा है, शनत्कुमार भाहेद्र में स्पर्शपरिचा रणा है, ब्रह्मलातक में रूपपरिचारणा है, शुक्र सहस्रार में शब्दपरिचारणा है, अच्युतान्त ४ में मनपरिचारणा है, त्रैवेयकानुत्तर में परिचा— रणा नहीं है । इच्छामन समुत्पन्न होने का अधिकार</p>	<p>७७८ ७७९ ७८० ७८०</p>	<p>यह कायपरिचारक यावत् मनपरिचारक देष्टो मे कौन किस्से अल्पवज्रत्व है ( ३४ वा पद पूर्ण ऊँआ ) ॥ ३५ वाँ कहते हैं ॥ सीयायद्वृत्तसारीर यह सग्रह गाथा शीत उच्च मिश्र एव तीन प्रकार वेदना कही, नारकी को कौन वेदना द्रव्य क्षेत्र काल भाव से चारप्रकार वेदना, नार की कौन वेदना वेदै एवं वैमानिक पर्यन्त शारीर मानसी शारीरी मानसी शारीरमानसी भेदसे तीनप्रकार वेदना, नारकी कौन वेदना वेदै एव यावद्वैमानिक पर्यन्त</p>	<p>७८४ ७८६ ७८७ ७८८</p>

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
एकेन्द्रिय द्वीन्द्रिय शरीरी वेदना वेदें और नहीं, साता असाता नातासात एव तीन प्रकार वेद नाहै, नारकी को कौन वेदना है एव सर्व जीव यावद्वैमानिक पर्यन्त	७८९	यंच मनुष्य व्यन्तर जैसे नारकी कहा ज्योतिषी का प्रश्न, (३५ वां पद कहा)	७९१ ७९२
दुस्र सुख मिश्र एवं तीन प्रकार वेदना है, नारकी को कौन वेदना यावद्वैमानिक पर्यन्त	७९०	॥ ३६ कहते है ॥ वेदन कषाय मरणे इह गाथा संग्रहणी, कितने	७९३
अभ्युपगमिकी औपक्रमिकी एव २ प्रकार वेदना है नारकी से चौरिन्द्रो तक औपक्रमिकी है, तिर्यच मनुष्य मे दो, व्यन्तर जोतिषी वैमानिक को जैसे नारकी को कहा तैसे कहा	७९०	वेदना समुद्घात असख्य त सामयिक अान्तर्मुक्त त्तिक, एव आहारक तक, केवलितसमुद्घात आठ सामयिक, नारकी को चार समुद्घात, असुरकुमार को पांच समुद्घात, एव स्तनित कुमार तक, पृथिवीकाय को तीन समु०, एव चौरिन्द्रो पर्यंत, वायुकाय को चार समु०	७९५

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
पंचेन्द्रिय तिर्यच यावत् वैमानिक को पाच समु० मनुष्य को सात, एकैक नारकी को कितने स मु० अतीत अतत पुरस्ठत इत्यादि एव असुरकुमार को श्री वैमानिक पर्यंत, एव चौबीस दफ़र कहा, एकैक नारकी को कितने सम० अतीत इत्यादि वैमानिक पर्यंत एकैक नारकी को कितने केवलिसमु० अतीत इत्यादि	७९६	है, एव वैमानिक जेद वनस्पतिकाय मनुष्य मे एकैक नारकी को नारकी पणे कितने वेदना स० अतीत इत्यादि एव असुरकुमार से वैमानिक पर्यंत, एकैक असुरकुमार को नारकीपणे कितने वेदनासमु० अतीत इत्यादि, एकैक असुरकुमार को असुरकुमार पणे कितने वेदना स० अतीत एव वैमानिक	८००
एव वैमानिक यावन्मनुष्य पर्यंत, नारकी को कितने वेदना समु० अतीत इत्यादि, एव वैमानिक तक, एव तैजस श्री एव पाच २४ ट दफ़र नारकी को नितने आहारक समु० अतीत एव वैमानिक तक विशेष वनस्पतिकाय मनुष्य मे	७९७	एव वैमानिक पर्यंत २४ चौबीस दफ़र होय, नारकी के नारकीपणे कितने कपायसमु० अतीत इत्यादि एव एकैक नारकी के असुरकुमार पणे कितना अतीत एव स्तनितकुमार तक मारणातिक समु० स्वस्थान में एकोत्तरिका से जहा	८०१
	७९८		
	७९९		



विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
एकेन्द्रिय द्वीन्द्रिय शारीरी वेदना वेदें और नहीं, साता असाता सातासात एव तीन प्रकार वेद नाहै, नारकी को कौन वेदना है एव सर्व जीव यावद्वैमानिक पर्यन्त	७८९	यंच मनुष्य व्यन्तर जैसे नारकी कहा ज्योतिषी का प्रश्न, (३५ वां पद कहा)	७९३ ७९२
दुख सुख मिश्र एव तीन प्रकार वेदना है, नारकी को कौन वेदना यावद्वैमानिक पर्यन्त अभ्युपगमिकी औपक्रमिकी एव २ प्रकार वेदना है नारकी से चौरिन्द्री तक औपक्रमिकी है, तिर्यच मनुष्य में दो, व्यन्तर जोतिषी वैमानिक की जैसे नारकी को कहा तैसे कहा निदा अनिदा जेद से दो वेदना, नारकी को कौन वेदना है इत्यादि निर्णय, एव स्तनितकुमार पर्यन्त, पृथिवीकाय प्रश्न, एव चौरिन्द्री, ति	७९०	॥ ३६ कहते हैं ॥ वेदन कषाय मरणे इह गाथा संग्रहणी, कितने वेदना समुद्घात असख्यात सामयिक ज्ञान्तर्मूल त्तिक, एव आहारक तरु, केवलिसमुद्घात आठ सामयिक, नारकी को चार समुद्घात, असुरकुमार को पांच समुद्घात, एवं स्तनित कुमार तक, पृथिवीकाय को तीन समु०, एव चौरिन्द्री पर्यंत, वायुकाय को चार समु०	७९३ ७९४

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
पंचेन्द्रिय तिर्यच यावत् वैमानिक को पाच समु० मनुष्य को सात, एकैक नारकी को कितने स मु० अतीत अतः पुरस्कृत इत्यादि एव असुरकुमार को भी वैमानिक पर्यंत, एव चौबीस दंरु कह, एकैक नारकी को कितने समु० अतीत इत्यादि वैमानिक पर्यंत एकैक नारकी को कितने केवलिसमु० अतीत इत्यादि	७९६	है, एव वैमानिक सेट वनस्पतिकाय मनुष्य मे एकैक नारकी को नारकी पणे कितने वेदना स० अतीत इत्यादि	८००
एव वैमानिक याचन्मनुष्य पर्यंत, नारकी को कितने वेदना समु० अतीत इत्यादि, एव वैमानिक तक, एव तैजस भी एव पाच २४ दंरु नारकी को कितने आहारक समु० अतीत एव वैमानिक तक विशेष वनस्पतिकाय मनुष्य में	७९७	एव असुरकुमार से वैमानिक पर्यंत, एकैक असुर कुमार को नारकी पणे कितने वेदनासमु० अतीत इत्यादि, एकैक असुरकुमार को असुर कुमार पणे कितने वेदना स० अतीत एव वैमानिक	८०१
	७९८	एवं वैमानिक पर्यंत २४ चौबीस दंरु होय, नारकी के नारकी पणे कितने कपायनमु० अतीत इत्यादि एव एकैक नारकी के असुरकुमार पणे कितना अतीत एव स्तनिकुमार तक मारणातिक समु० स्वस्थान मे एकोत्तरिका से जहा	८०२
	७९९		८०४

विषय और प्रश्नादि

पत्रांक

विषय और प्रश्नादि

पत्रांक

तक वैमानिक को वैमानिकपणे में, एव २४।

२४ दण्डक, वैक्रिय जैसे कषाय, तैजस जैसे

एकैक नारकी के नारकीपने कितने मारणातिक

एकैक नारकी के नारकीपणे कितने अतीत इत्यादि

अतीत इत्यादि वैमानिक पर्यन्त मनुष्य में

यह वेदनादि समु० यावत्केवल समु० समवहत

यह नारकी वेदना कषाय मरण वैक्रिय समवहत

इत्यादि निर्णय

८०७

८०८

८०९

८१२

८१३

यह असुरकुमार वेदन कषाय मरण वैक्रिय तैज

पृथिवीकायादि निरूपण द्विन्द्रिय यावत्पंचेन्द्रिय

वेदनादि यावत् असमवहतो मे कौन किस्से

मनुष्य वेदनादि यावत्केवलिसमु० समवहता

कषायसमु० चारप्रकार क्रोधादि के चार भेदसे,

एकैक नारकी को कितने क्रोधसमु० एवं याव

एव लोभसमु० पर्यन्त ४ दण्डक एकत्व पृथक् से

८१४

८१६

८१७

८१८

क्रोधसं अतीत इत्यादि अधिकार यह क्रोधसमुं यावत्क्षीभसमुं समवहतासमवहत मे कौन क्रिस्से कितने छाद्वास्थिक समुं ६ कहे वेदना याव दाहारक नारकी को ४ त्वाद्वास्थिक, असुर को ५, एकें द्विय को तीन। वायुको चार। तिर्यच पंचे—  
 द्विय को पाच। मनुष्य को ६ वेदनी समवहत जीव जिन पुद्गलोको छोड़ि उनसे कितना क्षेत्र पूर्ण, कितना स्पष्ट इत्यादि नि रूपणाधिकार केवलिसमुं समवहत अनगर भावितात्मा जो चरम निर्जरापुद्गल सो सूक्ष्म है, सर्वलोक को

८११

८२३

८२५

८२६

८२७

फरस के रहै इत्यादि अर्थनिरूपण छव्रस्य मनुष्य उन निर्जरा पुद्गलों के वर्ण गन्धा दि जाणे नही काहे से केवली समुं को करै ४ कर्म क्षीण न होने से करै कोई केवली समुद्घात करै कोई नही भी करै, इहां २ गाथा है,  
 आवर्जन कितने समय मे होता है, केवलिसमुं कितने समय मे होता है ८ मे इत्यादि तथा समुं गत जीव मनोयोगादि तीन योगमे से कौनसा योग करै तथा समुं गत जीव सीके बुद्धे मुक्त होय इत्यादि समुं प्रतिनिर्वर्त्तित जीव कौनसा योग करै

८३५

८३६

८३७

८४०

८४१

८४२

८४३

८४४

तक वैमानिक को वैमानिकपणे में, एव २४।

२४ दण्डक, वैक्रिय जैसे कषाय, तैजस जैसे

मारणांतिक

एकैक नारकी के नारकीपने

कितने आहारक

अतीत इत्यादि

एकैक नारकी के नारकीपणे कितने केवल स०

अतीत इत्यादि वैमानिक पर्यन्त मनुष्य में

त्रेद है, एव तैजससमु० पर्यन्त कहा

यह वेदनादि समु० यावत्केवल समु० समवहत्

असमवहत् जीवो में कौन किस्से थोड़ा घणा

इत्यादि अधिकार

यह नारकी वेदना कषाय मरण वैक्रिय समवहत्

इत्यादि निर्णय

८०७

८०८

८०९

८१२

८१३

यह असुरकुमार वेदन कषाय मरण वैक्रिय तैज

स सम० निर्णय

पृथिवीकायादि निरूपण द्वीन्द्रिय यावत्पचेद्रिय

वेदनादि यावत् असमवहत्तो में कौन किस्से

थोड़ा घणा इत्यादि अधिकार

मनुष्य वेदनादि यावत्केवलिसमु० समवहत्ता

समवहत्तो में कौन किस्से

कषायसमु० चारप्रकार क्रोधादि के चार भेदसे,

नारकी को ४ कषाय समु० एव यावद्द्वैमानिक

एकैक नारकी को कितने क्रोधसमु० एव याव

तु अतीत इत्यादि

एवं लोभसमु० पर्यन्त ४ दंडक एकत्व पृथक् से

४ दंडक, एकैक नारकी के नारकीपने कितने

८१४

८१६

८१७

८१८

क्रोधसु अतीत इत्यादि अधिकार यह क्रोधसु यावत्तोभसु समवहतासमवहत मे कौन किस्से कितने द्वाद्वास्थिक सु ६ कहे वेदना याव दाहारक नारकी को ४ द्वाद्वास्थिक, असुर को ५, एके द्विय को तीन । वायुको चार । तिर्यच पचे— द्विय को पाच । मनुष्य को ६ वेदनी समवहत जीव जिन पुद्गलोको छोड़े उनसे कितना क्षेत्र पूर्ण, कितना स्पृष्ट इत्यादि नि रूपणाधिकार केवलिसु समवहत अनगर भावितात्मा जो चरम निर्जरापुद्गल सो सूक्ष्म है, सर्वलोक को

८१९

८२३

८२५

८२६

८२७

फरस के रहे इत्यादि अर्थनिरूपण /  
 द्वाद्वास्थ मनुष्य उन निर्जरा पुद्गलो के वर्ण गन्धा दि जाणे नही काहे से केवली सु ० को करै ४ कर्म क्षीण न होने से करै कोई केवली समुद्रघात करै कोई नही भी करै, इहां २ गाथा है,  
 आवर्जन कितने समय मे होता है, केवलिसु ० कितने समय मे होता है ८ मे इत्यादि तथा सु ० गत जीव मनोयोगादि तीन योगमे से कौनसा योग करै तथा सु ० गत जीव सीजे वृक्षे मुक्त होय इत्यादि सु ० प्रतिनिर्वर्त्तित जीव कौनसा योग करै

८३५

८३६

८३७

८४०

८४१

८४२

८४३

८४४

विषय और प्रवृत्ति	पत्रांक	विषय और प्रवृत्ति	पत्रांक
योग निरोध समय निरूपणाधिकार त्रैलोक्यकालनिरूपणाधिकार चार कर्मप्रकृति युगपत् स्वपाय औदारिक तैजस कामेण त्यजे ऋजुश्रौणि पाके अस्पृशद्गति हो के मुक्त होय सिद्ध होय अज्ञेय जीवघन इत्यादि सिद्ध लक्षणनिरूपण निष्क्रियसर्वदुःखा सिद्धत्व निरूपण लक्षण गाथा (समुद्घात पद-३६ पूर्ण कहा)	८४५ ८४६ ८४७ ८४७ ८४८		
॥ चतुर्थ उपाग प्रज्ञापना सूत्रानुक्रमणिका ॥			
॥ समाप्त जाई ॥			

ववगयजरमरणभए । सष्ठआभवांजणतिविहेणं । वंदांमिजिणवरिदं तेलोक्कगुरुंमहावीरं ॥ १ ॥  
 सुयरयणनिहाणजिण वरेणभविजजणणिहुडकरेण । उवदसियाभगवया पत्तवणासत्तभावाणं ॥ २ ॥  
 वायगवरवसातु तेवीसडमेणधीरपुसिणेण । दुद्धरधरेणमुणिणा पुव्वसुयसमिठवुद्धीण ॥ ३ ॥ सुयसागराविए  
 ऊण जेणसुयरयणमुत्तमदिस्स । सीसगणस्सभगवतु तस्सणमोच्चुज्जसामस्स ॥ ४ ॥ अज्जयणमिणचित्तं सुय-  
 रयणदिठ्ठिवायणीसद । जहवसियभगवया अहमवितहवणइस्समि ॥ ५ ॥ पयवणा १ ठाणाइं २, वज्जव  
 त्तव्व ३ ठिईं ४ विसेसाय ५ । वक्कती ६ उस्सास, ७ सणा ८ जोणीय ९ चरिमाइ १० ॥ १ ॥ भासा ११ सरीर १२  
 परिणा, म १३ कसाय १४ इदिय १५ प्पत्तगेय १६ । लेसा १७ कायठिइया १८, सम्मत्ते १९ अत्तकिरियाय २०  
 ॥ २ ॥ उंगाहणसठाणा २१, किरिया २२ कम्मयेय २३ कम्मस्स । वधए २४ कम्मवेयए २५, वेयस्सवधए २६-  
 वेयवेयए २७ ॥ ३ ॥ आहारि २८ उवत्तगे २९, पासणया ३० सखि ३१ सजमे ३२ चेव । उही ३३ पविचारण ३४

व्यपगतजरामरणमयान् सिद्धानिजिबन्धविविधेन । वन्देजिनवरिन्द्रे धैलोक्कगुरुमहावीरम् ॥ १ ॥ श्रुतरत्ननिधानोज्जैन-धरेणप्रअजाननिर्वृत्तिकरे  
 ण । उपदशैताम्रगवता प्रज्ञापनासर्वज्ञावानाम् ॥ २ ॥ वाचकवरवशोत्र-योविशतितमेनधीरपुरुषेण । दुर्द्धरधरेणमुनिना पूव्वश्रुतसमुद्बुद्धिना ३ ॥  
 श्रुतसागरादीनयित्वा येनश्रुतरत्नमुत्तमदत्त । शिष्यगणायत्नगवते तस्मैनमआयइयामाय ॥ ४ ॥ अघ्यनमिदंज्जित श्रुतरत्नदृष्टिवादनिरपन्द । यथा  
 वर्णितम्रगवता हमपितयावणयियामि ॥ ५ ॥ प्रज्ञापनास्थानानिबहुवक्तव्यस्थितिर्विशेषय । व्युरकान्तिशोक्कस सञ्ज्ञायोनियचरमाणि ॥ ६ ॥  
 ज्ञाप्यशरीरपरिणाम कपायैन्निप्रयोगश्च । लेश्याकायस्थितिवो सम्मद्गमयान्तक्रियाचेव ॥ ७ ॥ अत्रगाहनास्थान क्रियाकर्मोपक्रमेण । तन्मको  
 वेदकश्चैव वेदमन्त्रकश्च ॥ ८ ॥ वेदवेदकआहार शोपयोगीय दर्शनम् । सञ्ज्ञाचसयमद्यैवा वचिधप्रविचारणा ॥ ९ ॥ वदनाथ समुद्भूत षट्त्रि



पत्रांक विषय और प्रस्ताव

पत्रांक

विषय और प्रस्ताव

८४५

८४६

योग निरोध समय निरूपणाधिकार

शैलेशिकालनिरूपणाधिकार

जंगलन खापाय औदारिक तैजस

परिणया नीलवस्त्रपरिणया लोहिवस्त्रपरिणया हातिद्वयपरिणया सुक्लिन्नवस्त्रपरिणया । जे गंधपरिणया ते दुर्विहा पणता, तजहा-सुस्निग्धपरिणया दुस्निग्धपरिणया । जेरसपरिणया ते पंचविहा पणता तजहा तित्तरसपरिणया कठुरसपरिणया कसायरसपरिणया अण्डिलरसपरिणया मञ्जरसपरिणया । जे फासपरिणया ते अण्डविहा पणता, तजहा-ककळफासपरिणया मउयफासपरिणया गस्यफासपरिणया लज्जयफासपरिणया सीयफासपरिणया उसिणफासपरिणया णिद्धफासपरिणया लुक्कफासपरिणया । जे सठाणपरिणया ते पंचविहा पणता, तजहा-परिमळसठाणपरिणया बहुसठाणपरिणया तंससठाणपरिणया चउरंससठाणपरिणया अण्यतसठाणपरिणया ॥ जे वणजे कालवणपरिणया ते गंधने सुस्निग्धपरिणया वि दुस्निग्धपरिणया वि, रसने तित्तरसपरिणया वि कठुरसपरिणया वि कसायरसपरिणया वि अण्डिलरसपरिणया वि मञ्जरसपरिणया वि, फासने ककळफासपरिणया वि मउयफासपरिणया वि गस्यफासपरिणया वि लज्ज

स्तद्यथा-सुरभिगन्धपरिणता दुरभिगन्धपरिणता । ये रसपरिणता स्ते पञ्चविधा मञ्जरा स्तद्यथा-तित्तरसपरिणता कटुरसपरिणता फासपरिणता आक्षरसपरिणता मधुररसपरिणता । ये स्पशं परिणता स्ते ऽष्टविधा मञ्जरा स्तद्यथा-ककळफासपरिणता अण्डिलरसपरिणता अण्डयफासपरिणता सुक्लिन्नवस्त्रपरिणता सुक्लिन्नवस्त्रपरिणता लघुकस्पशं परिणता जीतस्पशं परिणता चान्नस्पशं परिणता श्लेष्मस्पशं परिणता । ये सस्यानपरिणता स्ते पञ्चविधा मत्तमास्तद्यथा-परिमण्डलसस्यानपरिणता दृढसस्यानपरिणता ह्यरुच्यसस्यानपरिणता शतुररुच्यसस्यानपरिणता आयतसस्यानपरिणता । ये वर्णत कालवणपरिणता स्ते गन्धत सुरभिगन्धपरिणता अपि, दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसत तित्तरसपरिणता अपि कटुररसपरिणता अपि कसायरसपरिणता अपि आक्षरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पशंत ककळफासपरिणता अण्डिलरसपरिणता अण्डयफासपरिणता मउयफासपरिणता लज्ज

वे, यणा ३५ यततोसमुष्ठाए ३६ ॥ १ ॥ से किं तं पखवणा ? पखवणा दुविहा पखत्ता, तंजहा-जीवपखव  
 णाय अजीवपखवणाय । सेकित अजीवपखवणा २ दुविहा पखत्ता, तंजहा-रूविअजीवपखवणा अरूवि  
 अजीवपखवणाय । सेकितं अरूविअजीवपखवणा ? अरूविअजीवपखवणा दसविहा पखत्ता तंजहा-  
 धम्मत्थिकाए धम्मत्थिकायस्सपएसा, अरूविअत्थिकाए अरूविअत्थिकायस्सदेने अरूविअत्थिकाय  
 कायस्सपएसा अरूविअत्थिकाए अरूविअत्थिकायस्सदेसे अरूविअत्थिकायस्सपदेसा अरूविअत्थिकाय  
 अजीवपखवणा ॥ सेकित रूविअजीवपखवणा रूविअजीवपखवणा चउविहा पखत्ता तंजहा-खधा खधदे  
 सा खधप्पएसा परमाणुपोगला ४ । तेसमासने पचविहा पखत्ता, तंजहा-वखपरिणया गंधपरिणया रस  
 परिणया फासपरिणया सठाणपरिणया । जंखपरिणया ते समासने पचविहा पखत्ता, तंजहा-कालवख

वातवमित्तम्यदम् । अथ प्रज्ञापना कास्यात्, द्विषामज्ञापनामता ॥ १० ॥ तद्यथा-जीवप्रज्ञापना अजीवप्रज्ञापना च । सा कतिविधा अजीवप्रज्ञा  
 पना, द्विविधा प्रज्ञा । तद्यथा रूयजीवप्रज्ञापना अरूयजीवप्रज्ञापना च अथ कतिविधा अरूयजीवप्रज्ञापना दशवि  
 धा प्रज्ञा । तद्यथा धर्मास्तिकाय धर्मास्तिकायस्य दश धर्मास्तिकायो ऽधर्मास्तिकायस्य देशो ऽधर्मास्तिकायस्य  
 प्रदेशा, आकाशास्तिकाय आकाशास्तिकायस्य देश आकाशास्तिकायस्य प्रदेशा, अद्वासनय । समाप्ता ऽरूयजीवप्रज्ञापना ॥ अथ का सा  
 रूयजीवप्रज्ञापना रूयजीवप्रज्ञापना चतुर्विधा प्रज्ञा तद्यथा-स्कन्धा स्कन्धदेशा रक्त्यप्रदेशा परमाणुपुद्गला, ते समासत पञ्चविधा  
 प्रज्ञा स्तद्यथा-वखपरिणता गन्धपरिणता रसपरिणता सस्यानपरिणता । ये वखपरिणता स्ते समासत पञ्चविधा प्रज्ञा  
 स्तद्यथा-कालवर्णपरिणता नीलवर्णपरिणता लोहितवर्णपरिणता हारिद्रवर्णपरिणता शुक्रवर्णपरिणता । ये गन्धपरिणता स्ते द्विविधा प्रज्ञा

परिणया नीलवस्त्रपरिणया लोहिवस्त्रपरिणया हातिद्वयपरिणया सुक्लिन्नवस्त्रपरिणया । जे गधपरिणया ते दुविहा पयत्ता, तजहा-सुस्निग्धपरिणया दुस्निग्धपरिणया । जेरसपरिणया ते पचविहा पयत्ता तजहा तित्तरसपरिणया कठुरसपरिणया कसायरसपरिणया अविहरसपरिणया मज्जरसपरिणया । जेफासपरिणया ते अष्ठविहा पयत्ता, तजहा-कस्करुफासपरिणया मउयफासपरिणया गरुयफासपरिणया लज्जयफासपरिणया सीयफासपरिणया उसिणफासपरिणया णिद्धफासपरिणया लुक्कफासपरिणया । जेसठ्ठाणपरिणया ते पचविहा पयत्ता, तजहा-परिमल्लसठ्ठाणपरिणया वहसठ्ठाणपरिणया तससठ्ठाणपरिणया चउरं ससठ्ठाणपरिणया आयतसठ्ठाणपरिणया ॥ जे वखने कालवस्त्रपरिणया ते गधने सुस्निग्धपरिणयावि दुस्निग्धपरिणयावि, रसने तित्तरसपरिणयावि कठुरसपरिणयावि कसायरसपरिणयावि अविहरसपरिणयावि मज्जरसपरिणयावि, फासने कस्करुफासपरिणयावि मउयफासपरिणयावि गरुयफासपरिणयावि लज्ज

स्तद्या-सुरजिगन्धपरिणता दुरभिगन्धपरिणता । ये रसपरिणता स्ते पञ्चविधा प्रज्ञप्ता स्तद्या-तित्तरसपरिणता कटुरसपरिणता कपायरसपरिणता आक्षरसपरिणता मधुरसपरिणता । ये स्पशंपरिणता स्ते ऽष्टविधा प्रज्ञप्तास्तद्या-कर्कशस्पशंपरिणता मृदुस्पशंपरिणता गुरुकस्पशंपरिणता लघुकस्पशंपरिणता शीतस्पशंपरिणता शूलस्पशंपरिणता । ये सस्यानपरिणता स्ते पञ्चविधा प्रज्ञप्तास्तद्या-परिमल्लसस्यानपरिणता दृढसस्यानपरिणता स्म्यल्लसस्यानपरिणता आयतसस्यानपरिणता । ये वखने कालवस्त्रपरिणता स्ते गन्धत सुरजिगन्धपरिणता अपि दुरजिगन्धपरिणता अपि, रसत तित्तरसपरिणता अपि कटुरक रसपरिणता अपि कपायरसपरिणता अपि आक्षरसपरिणता अपि मधुरसपरिणता अपि, स्पशंत कर्कशस्पशंपरिणता मृदुस्पशंपरिणता

यफासपरिणतावि सीतफासपरिणतावि उसिणफासपरिणतावि णिद्धफासपरिणतावि लुक्फासपरिणतावि सठाणञ्च परिमळसठाणपरिणतावि वहसठाणपरिणतावि तंससठाणपरिणतावि चउरससंठाणपरिणतावि ज्ञायतसंठाणपरिणतावि । जेवखण्ण नीलवखण्णपरिणता ते गंधण्ण सुस्निग्धपरिणतावि दुस्निग्धपरिणतावि, रसण्ण तित्तरसपरिणतावि कळुयसपरिणतावि कसायसपरिणतावि अविलरसपरिणतावि मज्जरसपरिणतावि, फासण्ण कक्कळफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुयफासपरिणतावि लज्जयफासपरिणतावि सीतफासपरिणतावि उसिणफासपरिणतावि णिद्धफासपरिणतावि लुक्फासपरिणतावि, संठाणञ्च परिमळसठाणपरिणतावि वहसठाणपरिणतावि तंससठाणपरिणतावि चउरससंठाणपरिणतावि ज्ञायतसंठाणपरिणतावि । जेवखण्ण लोहिहयवखण्णपरिणता ते गंधण्ण सुस्निग्धपरिणतावि, रसण्ण तित्तरस

अपि गुरुक्कस्पशंपरिणता अपि लघुक्कस्पशंपरिणता अपि शीतस्पशंपरिणता अपि उष्णस्पशंपरिणता अपि रुद्धस्पशंपरिणता अपि, सुखान्त परिमयळसख्यानपरिणता अपि वृत्तसख्यानपरिणता अपि अस्त्रसख्यानपरिणता अपि चतुरस्त्रसख्यानपरिणता अपि आयतसख्यानपरिणता अपि । ये वर्णतो लोहितवर्णपरिणता स्ते गन्धतः सुरजिगन्धपरिणता अपि दुरजिगन्धपरिणता अपि, रसत स्ति त्तरसपरिणता अपि कटुक्कस्पशंपरिणता अपि कपायसपरिणता अपि आक्षरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पशंतः कर्कशस्पशंपरिणता अपि मृदुक्कस्पशंपरिणता अपि गुरुक्कस्पशंपरिणता अपि लघुक्कस्पशंपरिणता अपि शीतस्पशंपरिणता अपि उष्णस्पशंपरिणता अपि रुद्धस्पशंपरिणता अपि, सुखान्त परिमयळसख्यानपरिणता अपि वृत्तसख्यानपरिणता अपि अस्त्रसख्यानपरिणता अपि चतुरस्त्रसख्यानपरिणता अपि आयतसख्यानपरिणता अपि । ये वर्णतो हार्द्रवर्णपरिणता स्ते गन्धतः सुरजिगन्धपरिणता अपि दुरजिग

पारिणतावि कद्रुयरसपरिणतावि कसायरसपरिणतावि अग्निचलरसपरिणतावि मञ्जरसपरिणतावि, फासने  
 कक्कळफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुयफासपरिणतावि लज्जयफासपरिणतावि सीतफासपरिण  
 तावि उसिगफासपरिणतावि णिठफासपरिणतावि लुरुफासपरिणतावि, सठाणने परिमळलसठाणपरिण  
 तावि वहसठाणपरिणतावि तससठाणपरिणतावि चउरससठाणपरिणतावि व्यायतसठाणपरिणतावि ।  
 जेवखने हालिद्ववसपरिणता ते गवने सुप्पिगधपरिणतावि दुप्पिगधपरिणतावि, रसने तित्तरसपरिणता  
 वि कद्रुयरसपरिणतावि कसायरसपरिणतावि अग्निचलरसपरिणतावि मञ्जरसपरिणतावि, फासने कक्कळ  
 फासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीयफासपरि० उसिगफासपरि० णिठफास  
 परि० लुरुफासपरिणतावि, सठाणने परिमळलसठाणपरि० वहसठाणपरि० तससठाणपरि० चउरसस  
 ठाणपरि० व्यायतसठाणपरिणतावि । जेवखने सुक्किन्नसपरिणता ते गधने सुप्पिगधपरिणतावि दुप्पिगध

न्यपरिणता अपि, रसतास्तिक्करसपरिणता अपि कटुक्करसपरिणता अपि कपायरसपरिणता अपि अक्षरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता  
 अपि, स्पशेन कर्कशरसपशपरिणता अपि मृदुक्करसपशपरिणता अपि गुरुक्करसपशपरिणता अपि शीतरसपशपरिणता अपि  
 उग्ररसपशपरिणता अपि स्निग्धरसपशपरिणता अपि रुक्षरसपशपरिणता अपि, सस्यानत परिमण्डलसस्यानपरिणता अपि वृत्तसस्यानपरिणता  
 अपि त्र्यस्यसस्यानपरिणता अपि चतुरस्रसस्यानपरिणता अपि आयत सस्यानपरिणता अपि । ये वर्णत शृङ्गणपरिणता स्ते गन्धत सुरजिगन्ध  
 परिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतास्तिक्करसपरिणता कटुक्करसपरिणता कपायरसपरिणता अक्षरसपरिणता मधुररसपरिणता अपि ।  
 स्पशत कर्कशरसपशपरिणता अपि मृदुक्करसपशपरिणता अपि गुरुक्करसपशपरिणता अपि लघुक्करसपशपरिणता अपि शीतरसपशपरिणता अपि उग्र

परिणतावि, रसनु तित्तरसपरि० कण्ठयसपरि० अम्बिलरसपरि० मञ्जरसपरिणतावि,  
 फासनु कस्कफानपरिणतावि मउयफासपरिणयावि गरुयफासपरिणतावि लज्जयफासपरिणतावि सोयफा  
 सपरिणतावि उसिणफानपरिणतावि णिठ्ठफासपरिणतावि लुक्कफासपरिणतावि, संठाणनु परिमंलसठाण  
 परिणतावि वहसठाणपरिणतावि तससठाणपरिणतावि चउरससठाणपरिणतावि अ्यायतसठाणपरिणतावि।  
 जे गवनु सुस्त्रिगवपरिणता ते वसुनु कालवसुपरिणतावि नीलवसुपरिणतावि लोहितवसुपरिणतावि हालि  
 द्ववसुपरिणतावि सुक्खिवसुपरिणतावि, रसनु तित्तरनपरिणतावि कण्ठयसपरिणतावि कसायसपरिणता  
 वि अम्बिलरसपरिणतावि मञ्जरसपरिणतावि, फासनु कस्कफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुय  
 फासपरिणतावि लज्जयफासपरिणतावि सीतफासपरिणतावि उसिणफासपरिणतावि णिठ्ठफासपरिणतावि  
 लुक्कफासपरिणतावि, संठाणनु परिमंलसठाणपरिणतावि वहसठाणपरिणतावि तससठाणपरिणतावि

स्पज्ञपरिणता अपि स्निग्धस्पज्ञपरिणता अपि रुक्षस्पज्ञपरिणता अपि' सस्यानत परिमण्डलसस्यानपरिणता अपि दृप्तसम्यानपरिणता अपि  
 अलसस्यानपरिणता अपि चतुरस्रसस्यानपरिणता अपि व्यायतसस्यानपरिणता अपि । ये गम्यत सुरज्जिगम्यपरिणता स्ते वणेत कण्ठयणंपरि  
 णता अपि नीलवणंपरिणता अपि लोहितवणंपरिणता अपि द्वारिद्वणंपरिणता अपि शुक्लवणंपरिणता अपि, रसतस्तिक्तरसपरिणता अपि  
 कटुकरसपरिणता अपि कपायसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पज्ञत. कर्कशस्पज्ञपरिणता अपि सुदुस्पज्ञंपरि  
 णता अपि गुरुकस्पज्ञपरिणता अपि लघुकस्पज्ञपरिणता अपि शीतस्पज्ञपरिणता अपि उष्णस्पज्ञपरिणता अपि स्निग्धस्पज्ञपरिणता अपि रुक्ष  
 स्पज्ञपरिणता अपि, सस्यानत परिमण्डलसस्यानपरिणता अपि दृप्तसम्यानपरिणता अपि चतुरस्रसस्यानपरिणता

चउरससंठाणपरिणतावि आयतसंठाणपरिणतावि । जे गधनु दुस्सिगंधपरिणता ते वखनु कालवखणपरि०  
नीलवखणपरिणतावि लोहितवखणपरिणतावि हालिहुवखणपरिणतावि सुक्लिहवखणपरिणतावि, रसनु तित्तरस  
परिणतावि कण्डूरसपरिणतावि कसायरसपरिणतावि अचिलरसपरिणतावि मज्जरसपरिणतावि, फाननु  
कककफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुडफासपरिणतावि लज्जफासपरिणतावि सीतफासपरि०  
उत्तिगफासपरिणतावि णिहुफानपरिणतावि लुरकफानपरिणतावि, संठाणनु परिमळसंठाणपरिणतावि  
बहुसंठाणपरिणतावि तससंठाणपरिणतावि चउरनसंठाणपरिणतावि आयतसंठाणपरिणतावि । जेरसनु  
तित्तरसपरिणता ते वखनु कालवखणपरिणतावि लोहितवखणपरिणतावि हालिहुवख  
णपरिणतावि सुक्लिहवखणपरिणतावि, गधनु सुस्निगंधपरिणतावि दुस्निगंधपरिणतावि, फासनु कण्ठफासप

अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । ये गन्धतो दुरनिगन्धपरिणता सो वणेत कण्ठवणंपरिणता अपि लोहितवणंपरिणता  
अपि इरिद्रवणंपरिणता अपि शुक्रवणंपरिणता अपि, रसतस्तिक्तसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कयापरसपरिणता अपि अक्षरस  
परिणता अपि मधुरसपरिणता अपि, स्पज्ञतः कण्ठस्पज्ञंपरिणता अपि मृदुस्पज्ञंपरिणता अपि गुहकरसपरिणता अपि लघुकरसंपरिणता  
अपि शीतस्पज्ञंपरिणता अपि उष्णस्पज्ञंपरिणता अपि स्निग्धस्पज्ञंपरिणता अपि रुक्षस्पज्ञंपरिणता अपि, संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणता  
अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि व्यस्तसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्त्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । ये रसतस्तिक्तसपरि  
णतास्त वणेत कण्ठवणंपरिणता अपि लोहितवणंपरिणता अपि इरिद्रवणंपरिणता अपि शुक्रवणंपरिणता अपि, गन्ध  
तः सुरनिगन्धपरिणता अपि दुरनिगन्धपरिणता अपि, स्पज्ञतः कण्ठस्पज्ञंपरिणता अपि मृदुस्पज्ञंपरिणता अपि गुहकरसंपरिणता अपि



रिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुयफासपरिणतावि लज्जयफासपरिणतावि सीतफासपरिणतावि उंसिण  
 फासपरिणतावि णिठफासपरिणतावि लुक्कफासपरिणतावि, सठाणन् परिमंळसठाणपरिणतावि वहसठा  
 णपरिणतावि तससठाणपरिणतावि चउरससठाणपरिणतावि अ्यायतसठाणपरिणतावि। जेरसन् कडुयरस  
 परिणता ते वखन् कालवखपरिणतावि नीलवखपरिणतावि लोहितवखपरिणतावि हालिह्वखपरिणतावि  
 सुक्खित्तवखपरिणतावि, गधन् सुप्पिगधपरिणतावि दुप्पिगधपरिणतावि, फासन् कक्कफासप० मउयफा  
 सपरि० गरुयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीयफासपरि० उंसिणफासपरि० णिठफासप० लुक्कफासपरिण  
 तावि, सठाणन् परिमंळसठाणपरि० वहसठाणपरि० तंससठाणपरि० चउरससठाणप० अ्यायतसंठाणप  
 रिणतावि। जे रसन् कसायरसपरिणता ते वखन् कालवखपरि० नीलवखपरि० लोहितवखपरि० हालि

लघुक्कस्पज्ञपरिणता अपि शीतस्पज्ञपरिणता अपि उष्णस्पज्ञपरिणता अपि स्निग्धस्पज्ञपरिणता अपि रुक्षस्पज्ञपरिणता अपि, सस्यानत- परि  
 मण्डलसस्यानपरिणता अपि वृत्तसस्यानपरिणता अपि अस्त्रसस्यानपरिणता अपि चतुरस्त्रसस्यानपरिणता अपि आयतसस्यानपरिणता अपि।  
 ये रसत कटुकरसपरिणतास्ते वणंत कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि द्वारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्ल  
 वर्णपरिणता अपि, गन्धत सुरभिगन्धपरिणता अपि दुर्निगन्धपरिणता अपि, स्पज्ञंत- ककशस्पज्ञपरिणता अपि मृदुस्पज्ञपरिणता अपि गुरु  
 कस्पज्ञपरिणता अपि लघुक्कस्पज्ञपरिणता अपि शीतस्पज्ञपरिणता अपि उष्णस्पज्ञपरिणता अपि स्निग्धस्पज्ञपरिणता अपि रुक्षस्पज्ञपरिणता  
 अपि, सस्यानत परिमण्डलसस्यानपरिणता अपि वृत्तसस्यानपरिणता अपि अस्त्रसस्यानपरिणता अपि चतुरस्त्रसस्यानपरिणता अपि आयत  
 सस्यानपरिणता अपि। ये रसत कषायरसपरिणतास्ते वणंत कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि द्वारि

द्वयस्यपरं सुक्लिष्टवस्यपरिणतावि, गंधं सुप्लिगंधपरिणतावि, फासं कर्करुफास  
परि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिच्छफासपरि०  
लुरुफासपरिणतावि, सठाणं परिमळसठाणपरि० बृहत्सठाणपरि० तत्सठाणपरि० चउरससठाणपरि०  
आयतसंठाणपरिणतावि । जे सरं अंधिलरसपरिणता ते वणं कालवस्यपरि० नीलवस्यपरि० लोहितव  
स्यपरि० हालिद्वयस्यपरि० सुक्लिष्टवस्यपरिणतावि, दुप्लिगंधपरिणतावि, गंधं सुप्लिगंधपरिणतावि, फासं  
कर्करुफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीयफासपरि० उसिणफासपरि०  
णिच्छफासपरि० लुरुफासपरि० लुरुफासपरिणतावि । सठाणं परिमळसठाणपरि० बृहत्सठाणपरि० तत्सठाणपरि०  
चउरससठाणपरि० आयतसठाणपरिणतावि । जे रसं मज्जरपरिणता ते वणं कालवस्यपरि० नीलवस्य०

द्रव्यं परिणता अपि शुक्लवस्यपरिणता अपि, गन्धं सुप्लिगंधपरिणता अपि, दुरन्निगन्धपरिणता अपि, स्वयं कर्करुफासपरिणता अपि, युदु  
स्पर्शपरिणता अपि गुरुस्पर्शपरिणता अपि लघुस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि मिश्रस्पर्शपरिणता अपि  
वि रुक्षस्पर्शपरिणता अपि, सत्त्वानत परिमण्डलसत्त्वानपरिणता अपि युक्तसत्त्वानपरिणता अपि असत्त्वानपरिणता अपि चतुर्गुणसत्त्वान  
परिणता अपि आयतसत्त्वानपरिणता अपि । ये रमणीयस्पर्शपरिणता सो वपंत कान्तस्पर्शपरिणता अपि नीनस्पर्शपरिणता अपि नोद्विग्नपरि  
णता अपि हारिद्रव्यं परिणता अपि शुक्लवस्यपरिणता अपि, गन्धं दुरन्निगन्धपरिणता अपि, स्वयं कर्करुफासपरि  
णता अपि युदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुस्पर्शपरिणता अपि लघुस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि मि  
श्रस्पर्शपरिणता अपि रुक्षस्पर्शपरिणता अपि, सत्त्वानत परिमण्डलसत्त्वानपरिणता अपि युक्तसत्त्वानपरिणता अपि असत्त्वानपरिणता

लोहितवस्त्रपरि० हालिद्वस्त्रपरि० सुक्लिन्नवस्त्रपरिणतावि दुस्निगंधपरिणता  
 वि, फासने कस्करुफासपरि० मउयफासपरि० लज्जफासपरि० सीतफासपरि० उत्तिग  
 फासपरि० णिष्ठफासपरि० लुक्फासपरिणतावि, संठाणने परिमंजलसंठाणपरि० वहसंठाणपरि० तंसं  
 ठाणपरि० चउरससंठाणपरि० आयतसंठाणपरिणतावि ॥ जे फासने कस्करुफासपरि० ते वस्त्रं कालव  
 स्त्रपरि० नीलवस्त्रपरि० लोहितवस्त्रपरि० सुक्लिन्नवस्त्रपरिणतावि, गधने सुस्निगंधपरि०  
 दुस्निगंधपरिणतावि, रसने तित्तरसपरि० कसायरसपरि० अत्रिलरसपरि० मज्जरसपरिण  
 तावि, फासने गरुयफासपरि० लज्जफासपरि० सीतफासपरि० उत्तिगफासपरि० लुक्क

अपि चतुरस्त्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । ये रसतो मधुररसपरिणता स्ते वरुंत कालवस्त्रं परिणता अपि नीलवस्त्रं परिण  
 ता अपि लोहितवस्त्रं परिणता अपि हारिद्रव्यपरिणता अपि शुक्रवर्णपरिणता अपि, गन्धत सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि,  
 स्पर्शत कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुस्पर्शपरिणता अपि लघुस्पर्शपरिणता अपि ग्रीतस्पर्शपरिणता अपि उज्जस्पर्श  
 परिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रुजस्पर्शपरिणता अपि, संस्थानत परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि घृतसंस्थानपरिणता अपि अम्ल  
 संस्थानपरिणता अपि चतुरस्त्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । ये स्पर्शत कर्कशस्पर्शपरिणता स्ते वरुंत कालवस्त्रं परिणता  
 अपि नीलवस्त्रं परिणता अपि लोहितवस्त्रं परिणता अपि हारिद्रव्यं परिणता अपि शुक्रवर्णपरिणता अपि, गन्धत सुरभिगन्धपरिणता अपि दुर  
 भिगन्धपरिणता अपि, रसत तित्तरसपरिणता अपि कसायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिण  
 ता अपि, गुरुलघुशीतोष्ण स्निग्धरुजस्पर्शपरिणता अपि संस्थानत, परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि घृतसंस्थानपरिणता अपि अम्लसंस्थानपरि

फासपारणतावि, सठाणनु परिमळसठाणपरि० वहसठाणपरि० तससठाणपरि० चउरंससठाणपरि०  
 आयतसठाणपरिणतावि। जे फासनु मउयफासपरि० ते वखनु कालवखपरि० नीलवखपरि० लोहितवख  
 परि० हालिदुवखपरि० सुक्लिहवखपरिणतावि, गधनु सुझिगधपरि० दुझिगधपरिणतावि, रसनु तित्त  
 रसपरि० कळुयरसपरि० कसायरसपरि० अचिलरसपरि० मऊररसपरिणतावि, फासनु गरुयफासपरि०  
 लज्जयफासपरि० सीतफासपरि० उषिणफासपरि० निष्ठफासपरि० लुक्कफासपरिणतावि, सठाणनु परि  
 मळसठाणपरि० वहसठाणपरि० तससठाणपरि० चउरससठाण० आयतसठाणपरिणतावि। जे फासनु  
 गरुयफासपरिणता ते वखनु कालवखपरि० नीलवखपरि० लोहितवखपरि० हालिदुवखपरि० सुक्लिहव  
 खपरिणतावि, गधनु सुझिगधपरि० दुझिगधपरिणतावि, रसनु तित्तरसपरि० कळुयरसपरि० कसायरस

यता अपि चतुरस्त्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि। ये स्पष्टतो बहुस्पष्टपरिणतास्ते वक्ष्यते कर्मवर्णपरिणता अपि नीलवर्णे  
 परिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हरिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गम्यते सुरजिगम्यपरिणता अपि दुरजिगम्यपरिणता  
 अपि, रसते तित्तरसपरिणता अपि कळुकरसपरिणता अपि कपायरसपरिणता अपि अक्षरसपरिणता अपि मधुरसपरिणता अपि, स्पष्टतो  
 गुरुकस्पष्टपरिणता अपि लघुकस्पष्टपरिणता अपि शीतस्पष्टपरिणता अपि उष्णस्पष्टपरिणता अपि त्तिग्धस्पष्टपरिणता अपि रुचस्पष्टपरिणता  
 ता अपि, संस्थानते परिमणकसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आय  
 तसंस्थानपरिणता अपि। ये स्पष्टतो गुरुकस्पष्टपरिणतास्ते वक्ष्यते कर्मवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हरि  
 र्द्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गम्यते सुरजिगम्यपरिणता अपि, रसते तित्तरसपरिणता अपि, कळुकरसपरिणता अपि कपायरसपरिणता

लोहितवस्त्रपरि० हालिद्वयपरिणतावि, गंधन सुस्निग्धपरिणतावि दुस्निग्धपरिणता  
वि, फासने कक्कफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लज्जफासपरि० सीतफासपरि० उत्तिण  
फासपरि० णिष्ठफासपरि० लुक्कफासपरिणतावि, संठाणने परिमल्लसठाणपरि० चहुसंठाणपरि० तससं  
ठाणपरि० चउरससठाणपरि० ज्ञायतसठाणपरिणतावि ॥ जे फासने कक्कफासपरि० ते वसने कालव  
स्त्रपरि० नीलवस्त्रपरि० लोहितवस्त्रपरि० सुक्लिन्नवस्त्रपरिणतावि, गंधन सुस्निग्धपरि०  
दुस्निग्धपरिणतावि, रसने तित्तरसपरि० कसुयरसपरि० अजिलरसपरि० मज्जरसपरिण  
तावि, फासने गरुयफासपरि० लज्जफासपरि० सीतफासपरि० उत्तिणफासपरि० णिष्ठफासपरि० लुक्क

अपि चतुरस्त्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । ये रसतो मधुररसपरिणता स्ते वर्णतः कालवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिण  
ता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि द्वारिद्वयपरिणता अपि शुक्रवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि,  
स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि सुदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुस्पर्शपरिणता अपि लघुस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि चमस्पर्श  
परिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि कृद्वस्पर्शपरिणता अपि, संस्थानतः परिमल्लसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि व्यस्त  
संस्थानपरिणता अपि चतुरस्त्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । ये स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता स्ते वर्णतः कालवर्णपरिणता  
अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि द्वारिद्वयपरिणता अपि शुक्रवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुर  
भिगन्धपरिणता अपि, रसतः तित्तरसपरिणता अपि कसुयरसपरिणता अपि अजिलरसपरिणता अपि मज्जरसपरिण  
ता अपि, गुरुलघुशीतोष्ण स्निग्धकृद्वस्पर्शपरिणता अपि संस्थानतः परिमल्लसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि व्यस्तसंस्थानपरि

રિણતાવિ, રસનું તિત્તરસપરિં કઠુયરસપરિં કસાયરસપરિં અંચિલરસપરિં મજ્જરસપરિણતાવિ, ફાસનું કસ્કઠ્ઠાસપરિં મડયફાસપરિં ગરુયફાસપરિં લજ્જયફાસપરિં ગિન્નફાસપરિં લુસ્કફાસપરિણતાવિ, સઠાણનું પરિમઠ્ઠલસઠાણપરિં વઠ્ઠસઠાણપરિં તસસઠાણપરિં ચડરસસઠાણપરિં આયત સઠાણપરિણતાવિ । જેફાસનું ડાસિણફાસપરિં તે વચ્ચનું કાલવચ્ચપરિં નીલવચ્ચપરિં લોહિયવચ્ચપં હાલિદ્વચ્ચપરિં સુક્ષિણ્ણવચ્ચપરિણતાવિ, ગધનું સુશ્ણિગધપરિં દુશ્ણિગધપરિણતાવિ, રસનું તિત્તરસપરિં કઠુયરસપરિં કસાયરસપરિં અંચિલરસપરિં મજ્જરસપરિણતાવિ, ફાસનું કસ્કઠ્ઠાસપરિં મડયફા

अपि अस्त्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्त्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । ये स्पर्शत शीतस्पर्शपरिणतास्ते वणंत कणवर्णं परिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धत सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसत तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि अक्षरसपरिणता अपि अक्षरसपरिणता अपि सुदुस्पर्शपरिणता अपि सुदुस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि, संस्थानत परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि अस्त्रसंस्थानपरिणता अपि च-  
तुरस्त्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । ये स्पर्शत वामस्पर्शपरिणतास्ते वणंत कालवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, रसत तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि अक्षरसपरिणता अपि अक्षरसपरिणता अपि सुदुस्पर्शपरिणता अपि सुदुस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि, संस्थानत परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि अस्त्रसंस्थानपरिणता अपि च-

परि० अत्रिलरसपरि० मञ्जरसपरिणतावि, फासने कक्कफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि सीय  
फासपरिणतावि उसिणफासपरि० णिठफासपरि० लुक्कफासपरिणतावि, सठाणने परिमंलसठाणपरि०  
वहसठाणपरि० तससठाणपरि० चउरससठाणप० अयतसठाणपरिणतावि । जे फासने लज्जयफासपरि  
णता ते वणने कालवखपरि० नीलवखपरि० लोहितवखपरि० हालिहवखप० सुक्खित्तवखपरिणतावि,  
गधने सुप्पिगधपरि० दुप्पिगधपरिणतावि, रसने तित्तरसपरि० ककुयसरसपरि० अत्रिलर  
सपरि० सञ्जरसपरिणतावि, फासने कक्कफासपरि० मउयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि०  
णिठफासपरि० लुक्कफासपरिणतावि, सठाणने परिमंलसठाणपरि० वहसठाणपरि० तनसंठाणपरि०  
चउरससठाणपरि० अयतसठाणपरिणतावि । जे फासने सीतफासपरिणता ते वणने कालवखपरि० नी

करसपरिणता अपि कपायरसपरिणता अपि अक्षरसपरिणता अपि मयुररसपरिणता अपि, स्पञ्जत कर्जशस्पञ्जपरिणता अपि सुदुस्पञ्जपरि  
णता अपि शीतस्पञ्जपरिणता अपि चमस्पञ्जपरिणता अपि स्निग्धस्पञ्जपरिणता अपि रुक्मस्पञ्जपरिणता अपि, सस्यानत परिमण्डलसस्यान  
परिणता अपि वृत्तसस्यानपरिणता अपि अस्त्रसस्यानपरिणता अपि चतुरस्त्रसस्यानपरिणता अपि आयतसस्यानपरिणता अपि । ये स्पञ्जतो  
लघुकस्पञ्जपरिणतास्ते वर्णत कणवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हरिद्रवर्णपरिणता अपि शुभ्रवर्णपरि  
णता अपि, गन्धत सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरन्निगन्धपरिणता अपि, रसतस्तिक्तारसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कपायरसपरि  
णता अपि अक्षरसपरिणता अपि मयुररसपरिणता अपि, स्पञ्जत कर्जशस्पञ्जपरिणता अपि सुदुस्पञ्जपरिणता अपि शीतस्पञ्जपरिणता अपि  
चमस्पञ्जपरिणता अपि स्निग्धस्पञ्जपरिणता अपि रुक्मस्पञ्जपरिणता अपि, सस्यानत परिमण्डलसस्यानपरिणता अपि वृत्तसस्यानपरिणता

लवणपरि० लोहितवणपरि० हालिद्ववणपरि० सुक्लिन्नवणपरिणातावि, गधने सुस्निगधपरि० दुस्निगधपरिणातावि, रसने तित्तरसपरि० कद्रुयसपरि० कसायसपरि० झुविलरसपरि० मञ्जरसपरिणातावि, फासने कस्कृफासपरि० मउयफासपरि० लज्जयफासपरि० णिष्ठफासपरि० लुस्कफासपरिणातावि, सठाणने परिमल्लसठाणपरि० बहुसठाणपरि० तससठाणपरि० चउरससठाणपरि० ज्ञायतसठाणपरिणातावि । जेफासने उसिणफासपरि० ते वणने कालवणपरि० नीलवणपरि० लोहियवणपरि० हालिद्ववणपरि० सुक्लिन्नवणपरिणातावि, गधने सुस्निगधपरि० दुस्निगधपरिणातावि, रसने तित्तरसपरि० कद्रुयसपरि० कसायसपरि० झुविलरसपरि० मञ्जरसपरिणातावि, फासने कस्कृफासपरि० मउयफा

अपि अस्ससत्थानपरिणता अपि चतुरस्रसत्थानपरिणता अपि आयतसत्थानपरिणता अपि । ये स्पशंते शीतस्पर्शपरिणतास्ते वर्णते कलवणपरिणता अपि नीलवणपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवणपरिणता अपि शुक्रवर्णपरिणता अपि । गन्धत सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसत तित्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कपायसपरिणता अपि अक्षरसपरिणता अपि मधुरसपरिणता अपि । स्पशंते कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि सुदुस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रुक्षस्पर्शपरिणता अपि, सत्थानत परिमल्लसत्थानपरिणता अपि वृत्तसत्थानपरिणता अपि अस्त्रसत्थानपरिणता अपि चतुरस्रसत्थानपरिणता अपि आयतसत्थानपरिणता अपि । ये स्पशंते लज्जस्पर्शपरिणतास्ते वर्णते कालवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवणपरिणता अपि शुक्रवणपरिणता अपि, गन्धत सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसत तित्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कपायसपरिणता अपि अक्षरसपरिणता अपि मधुरसपरिणता अपि, स्पशंते



પરિ० અંબિલરસપરિ० મંજુરસપરિણતાવિ, ફાસનું કચ્છફાસપરિણતાવિ મંડયફાસપરિણતાવિ સીય  
 ફાસપરિણતાવિ ડસિણફાસપરિ० ણિદ્ધફાસપરિ० લુચ્છફાસપરિણતાવિ, સઠાણનું પરિમંદલસઠાણપરિ०  
 વહસઠાણપરિ० તસસઠાણપરિ० ચંડરસસઠાણપ० આયતસઠાણપરિણતાવિ । જે ફાસનું લજ્જવફાસપરિ  
 ણતા તે વચ્ચનું કાલવચ્ચપરિ० નીલવચ્ચપરિ० લોહિતવચ્ચપ० સુક્તિલવચ્ચપરિણતાવિ,  
 મધનું સુશ્ણિગધપરિ० દુશ્ણિગધપરિણતાવિ, રસનું તિત્તરસપરિ० કઠુચરસપરિ० કસાયરસપરિ० અંબિલર  
 સપરિ० સંજારસપરિણતાવિ, ફાસનું કચ્છફાસપરિ० મંડયફાસપરિ० સીતફાસપરિ० ડસિણફાસપરિ०  
 ણિદ્ધફાસપરિ० લુચ્છફાસપરિણતાવિ, સઠાણનું પરિમંદલસઠાણપરિ० વહસઠાણપરિ० તંતસઠાણપરિ०  
 ચંડરસસઠાણપરિ० આયતસઠાણપરિણતાવિ । જે ફાસનું સીતફાસપરિણતા તે વચ્ચનું કાલવચ્ચપરિ० ની

કરસપરિણતા અપિ કપાયરસપરિણતા અપિ અમ્બરસપરિણતા અપિ મધુરસપરિણતા અપિ, સ્પર્શત કર્કશસ્પર્શપરિણતા અપિ મૃદુસ્પર્શપરિ  
 ણતા અપિ શીતસ્પર્શપરિણતા અપિ ઊષ્ણસ્પર્શપરિણતા અપિ સ્નિગ્ધસ્પર્શપરિણતા અપિ રુદ્ધસ્પર્શપરિણતા અપિ, સ્થાનત પરિમયકલસસ્યાન  
 પરિણતા અપિ વૃત્તસસ્યાનપરિણતા અપિ ત્ર્યસસસ્યાનપરિણતા અપિ ચતુરસસસ્યાનપરિણતા અપિ આયતસંસ્યાનપરિણતા અપિ । યે સ્પર્શતો  
 નયુક્તસ્પર્શપરિણતાસ્તે વર્ણત કષ્ટવર્ણપરિણતા અપિ નીલવર્ણપરિણતા અપિ હારિદ્રવર્ણપરિણતા અપિ શુદ્ધવર્ણપરિ  
 ણતા અપિ, ગન્ધત સુરન્નિગન્ધપરિણતા અપિ દુરન્નિગન્ધપરિણતા અપિ, રસતસ્તિક્તકરસપરિણતા અપિ કટુકરસપરિણતા અપિ કાપાયરસપરિ  
 ણતા અપિ અમ્બરસપરિણતા અપિ મધુરસપરિણતા અપિ, સ્પર્શત કર્કશસ્પર્શપરિણતા અપિ શીતસ્પર્શપરિણતા અપિ  
 ઊષ્ણસ્પર્શપરિણતા અપિ સ્નિગ્ધસ્પર્શપરિણતા અપિ રુદ્ધસ્પર્શપરિણતા અપિ, સ્થાનત પરિમયકલસસ્યાનપરિણતા અપિ વૃત્તસસ્યાનપરિણતા

दुःखपरिणताय, रसने तत्तत्सपरि० कमायसपरि० अघिलसपरि० मज्जरसपरि०  
 तावि, फासने करकफासपरि० मउयफासपरि० लज्जफासपरि० भीतफासपरि० उन्निग  
 फासपरिणतायि, सठाणने परिमंलसठाणपरि० ग्रहसंठाणपरि० तंसंठाणपरि० चउरंसंठाणपरि०  
 आयतसंठाणपरि० । जे संठाणने परिमंलसंठाणपरिणता ते वगणने मालयसपरि० नीलयसपरि० अहित  
 वसपरि० हाडिहवणपरि० सुकितवसपरिणतायि, गंयने सुन्निगपपरिणतायि दुन्निगपपरिणतायि, र  
 सने तितरसपरि० कहुयरनपरि० कमायसपरि० अघिलसपरि० मज्जरसपरिणतायि, फासने करक  
 फासपरि० मउयफासपरि० गुहयफासपरि० लज्जफासपरि० भीतफासपरि० उन्निगफासपरि० निदकान  
 परि० लुक्कफासपरिणतायि । जे संठाणने ग्रहसंठाणपरि०, वगणने कालयसपरि० नीलयसपरि० लोकि

कपपञ्चपरिणतासे वसेत्त. रुजवसेपरिणता चापि नीनशर्गपरिणता चापि मोदिगपपरिणता चापि दारिद्र्यवसेपरिणता चापि अशर्गपरिणता  
 चापि, गयत्त सुरनिगमपरिणता चापि दुरभिनयपरिणता चापि, रमत्त तिक्करमपरिणता चापि बहुभयपरिणता चापि अवायवपरिणता  
 चापि अयरसपरिणता चापि मयुरमपरिणता चापि, रपणत्त कंसशर्गपरिणता चापि अशर्गपरिणता चापि अशर्गपरिणता चापि अशर्गपरिणता  
 रपणपरिणता चापि अशर्गपरिणता चापि अशर्गपरिणता चापि अशर्गपरिणता चापि अशर्गपरिणता चापि अशर्गपरिणता चापि अशर्गपरिणता  
 अशर्गपरिणता चापि अशर्गपरिणता चापि अशर्गपरिणता चापि अशर्गपरिणता चापि अशर्गपरिणता चापि अशर्गपरिणता चापि अशर्गपरिणता  
 वसेपरिणता चापि नीनशर्गपरिणता चापि मोदिगपपरिणता चापि दारिद्र्यवसेपरिणता चापि अशर्गपरिणता चापि अशर्गपरिणता  
 यत्ता चापि दुरभिनयपरिणता चापि, रमत्त तिक्करमपरिणता चापि बहुभयपरिणता चापि अवायवपरिणता चापि अशर्गपरिणता

सपरि० गह्यफासपरि० लज्जफासपरि० णिष्ठफासपरि० लुक्फासपरिणतावि, संठाणनु परिमंळसंठाण  
परि० बहसंठाणपरि० तससंठाणपरि० चउरसंठाणपरि० अ्यायतसंठाणपरिणतावि । जे फासनु णिष्ठ  
फासपरिणया ते वसुनु कालवसुपरि० नीलवसुपरि० लोहितवसुपरि० हालिहवसुपरि० सुक्लिबवसुप  
रिणतावि, गधनु सुस्निगधपरि० दुस्निगधपरिणतावि, रसनु तित्तरसपरि० कद्रुयरसपरि० कसायरसप०  
अचिलरसपरि० मज्जररसपरिणतावि, फासनु कक्कफासपरि० मउयफासपरि० गह्यफासपरि० लज्जय  
फासपरि० सीयफासपरि० उंसिणफासपरिणतावि, संठाणनु परिमंळसंठाणपरि० बहसंठाणपरि० तंस  
संठाणपरि० चउरससंठाणपरि० अ्यायतसंठाणपरिणतावि । जे फासनु लुक्फासपरिणता ते वसुनु काल  
वसुपरि० नीलवसुपरि० लोहितवसुपरि० हालिहवसुपरि० सुक्लिबवसुपरिणतावि, गधनु सुस्निगधप०

कंकणस्पशंपरिणता अपि सृदुस्पशंपरिणता अपि गुरुक्कस्पशंपरिणता अपि स्निग्धस्पशंपरिणता अपि रुक्षस्पशंपरि  
णता अपि, सस्यानत परिमणलसस्यानपरिणता अपि वृक्षसस्यानपरिणता अपि अस्त्रसस्यानपरिणता अपि चतुरस्त्रसस्यानपरिणता अपि  
आयतसस्यानपरिणता अपि । ये स्पशंत स्निग्धस्पशंपरिणतास्त कालवसुपरिणता अपि नीलवसुपरिणता अपि लोहितवसुपरिणता अपि हा-  
रिद्रवणंपरिणता अपि शुक्लवणंपरिणता अपि, गन्धत सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि तित्तरसपरिणता अपि  
कटुकरसपरिणता अपि कपायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि । स्पशंत कंकणस्पशंपरिणता अपि सृदुस्पशंप  
रिणता अपि गुरुक्कस्पशंपरिणता अपि लघुक्कस्पशंपरिणता अपि शीतस्पशंपरिणता अपि उष्णस्पशंपरिणता अपि, सस्यानत परिमणलसस्या  
नपरिणता अपि वृक्षसस्यानपरिणता अपि अस्त्रसस्यानपरिणता अपि चतुरस्त्रसस्यानपरिणता अपि । ये स्पशंतो

दुष्प्रगधपरिणतावि, रसुत्त तत्तरसपरि० कसायसपरि० अत्रिलसपरि० मञ्जरसपरि०  
 तावि, फासुत्त कस्करफासपरि० मउयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीतफासपरि० उत्तिण  
 फासपरिणतावि, सठाणुत्त परिमल्लसठाणपरि० बहसठाणपरि० तससंठाणपरि० चउरससठाणपरि०  
 आयतसठाणपरि० । जे संठाणुत्त परिमल्लसठाणपरिणता ते वणुत्त कालवणपरि० नीलवणपरि० लोहित  
 वणपरि० हालिह्वणपरि० सुक्लिबवणपरिणतावि, गधुत्त सुस्निग्धपरिणतावि दुस्निग्धपरिणतावि, र  
 सुत्त तित्तरसपरि० कटुरसपरि० कसायसपरि० अत्रिलसपरि० मञ्जरसपरि० फासुत्त कस्कर  
 फासपरि० मउयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीतफासपरि० उत्तिणफासपरि० णिद्धफास  
 परि० लुक्कफासपरिणतावि । जेसठाणुत्त बहसठाणपरि० ने वणुत्त कालवणपरि० नीलवणपरि० लोहि

रुक्मस्पशंपरिणतास्ते वर्णतः कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि शारिद्रवर्णपरिणता अपि गुह्यवर्णपरिणता  
 अपि, गन्धतः सुरजिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतः तिक्तरसपरिणता अपि कटुरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता  
 अपि अक्षरसपरिणता अपि मयुररसपरिणता अपि, स्पशंतः कर्कशस्पशंपरिणता अपि मृदुस्पशंपरिणता अपि गुह्यस्पशंपरिणता अपि गण्ड  
 स्पशंपरिणता अपि क्षीतस्पशंपरिणता अपि उग्रस्पशंपरिणता अपि, सुस्वागतः परिमयङ्गनसुस्थानपरिणता अपि वृत्तसुस्वागतपरिणता अपि  
 अत्यसुस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसुस्थानपरिणता अपि आयतसुस्थानपरिणता अपि । ये सुस्थानतः परिमयङ्गनसुस्थानपरिणतास्ते वणतः कृष्ण  
 वर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि शारिद्रवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुरजिगन्धपरि  
 णता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतः तिक्तरसपरिणता अपि कटुरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अक्षरसपरिणता अपि म

तवसपरि० हालिद्वयसप० सुक्लिप्तवसपरिणतावि, गंधने सुस्निग्धप० दुस्निग्धपरिणतावि, रसने ति  
त्तरसपरि० कङ्कयसपरि० कसायसपरि० अञ्जिरसपरि० मञ्जरसपरिणतावि, फासने कक्कफासप०  
मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिष्ठफासपरि० लुस्क  
फासपरिणतावि । जेसठाणने तंससठाणपरि० ते वसने कालवसपरि० नीलवसपरि० लोहितवसपरि०  
हालिद्वयसपरि० सुक्लिप्तवसपरिणतावि, गंधने सुस्निग्धपरिणतावि दुस्निग्धपरिणतावि, रसने तित्तर  
सपरि० कङ्कयसपरि० कसायसपरि० अञ्जिरसपरि० मञ्जरसपरिणतावि, फासने कक्कफासपरि०

धुररसपरिणता अपि, स्पञ्जत कर्कशरसपरिणता अपि मृदुरसपरिणता अपि लघुकस्पञ्जपरिणता अपि शीतरसपञ्च  
परिणता अपि उष्णरसपरिणता अपि स्निग्धरसपरिणता अपि रूक्षरसपरिणता अपि । ये सस्यानतो वृत्तसस्यानपरिणतास्ते वर्णत कृष्णवर्ण  
परिणता नीलवर्णपरिणता लोहितवर्णपरिणता हारिद्रवर्णपरिणता अति, गन्धत सुरभिगन्धपरिणता दुरभिगन्धपरिणता  
अपि, रसतस्तिक्तपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अमुररसपरिणता अपि, स्पञ्जत कर्क  
शरसपरिणता अपि मृदुरसपरिणता अपि लघुकस्पञ्जपरिणता अपि शीतरसपरिणता अपि उष्णरसपरिणता अपि  
अपि स्निग्धरसपरिणता अपि रूक्षरसपरिणता अपि । ये सस्यानत अलसस्यानपरिणतास्ते वर्णत कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता  
अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्रवर्णपरिणता अपि, गन्धत सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि,  
रसतस्तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अमुररसपरिणता अपि, स्पञ्जत कर्कशरस  
परिणता अपि मृदुरसपरिणता अपि लघुकस्पञ्जपरिणता अपि शीतरसपरिणता अपि उष्णरसपरिणता अपि

मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लज्जफासपरि० उसिणफासपरि० णिठफासपरि० लु  
रुफासपरि० । जे सठाणने चउरससठाणपरिणता ते वणने कालवसुपरि० नीलवसुपरि० लोहि  
यवसुपरि० हालिद्वसुपरि० सुक्खिवसुपरि० गधने सुप्पिगधपरि० दुप्पिगधपरि० तावि, रसने  
तित्तरसप० कहुयरसप० कसायरसपरि० अचिलरसपरि० मज्जरसपरि० फासने कक्कफासपरि०  
मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लज्जफासपरि० उसिणफासपरि० णिठफासपरि० लु  
फासपरि० । जे सठाणने आयतसठाणपरिणता ते वणने कालवसुपरि० नीलवसुपरि० लोहितवसुप०  
हालिद्वसुपरि० सुक्खिवसुपरि० गधने सुप्पिगधपरि० तावि, रसने तित्तरस  
परि० कहुयरसपरि० कसायरसपरि० अचिलरसपरि० मज्जरसपरि० फासने कक्कफासपरि०

पिग्गपस्पज्ञपरिणता अपि रुक्कस्पज्ञपरिणता अपि । ये सस्यानतश्चतुरस्रसस्यानपरिणतास्ते वणने कालवसुपरिणता अपि नीलवसुपरिणता  
अपि लोहितवसुपरिणता अपि हारिद्रवणपरिणता अपि शुक्लवणपरिणता अपि, गन्धत सुरजिगन्धपरिणता अपि दुरजिगन्धपरिणता अपि,  
रमतस्तिक्करसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि, स्पज्ञत कर्कश  
स्पज्ञपरिणता अपि मृदुस्वस्वपरिणता अपि गुरुस्वस्वपरिणता अपि लघुस्वस्वपरिणता अपि शीतस्वस्वपरिणता अपि उष्णस्वस्वपरिणता अपि  
रिगवस्वस्वपरिणता अपि रुक्कस्पज्ञपरिणता अपि । ये सस्यानत आयतसस्यानपरिणतास्ते वणने रुक्कवसुपरिणता अपि नीलवसुपरिणता अपि  
लोहितवसुपरिणता अपि हारिद्रवणपरिणता अपि शुक्लवसुपरिणता अपि, गन्धत सुरजिगन्धपरिणता अपि दुरजिगन्धपरिणता अपि,  
स्तिक्करसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि, स्पज्ञत कर्कशस्पज्ञ

तवसपरि० हालिद्वसपरि० सुक्लिप्तवसपरिणतावि, गंधने सुस्निग्धप० दुस्निग्धपरिणतावि, रसने ति  
त्तरसपरि० कटुयस्सपरि० कसायस्सपरि० अंबिलस्सपरि० मज्जरस्सपरिणतावि, फासने कक्कफासप०  
मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीतफासपरि० उस्सिणफासपरि० णिष्ठफासपरि० लुक्क  
फासपरिणतावि । जेसठाणने तंससठाणपरि० ते वसने कालवसपरि० नीलवसपरि० लोहितवसपरि०  
हालिद्वसपरि० सुक्लिप्तवसपरिणतावि, गंधने सुस्निग्धपरिणतावि दुस्निग्धपरिणतावि, रसने तित्तर  
सपरि० कटुयस्सपरि० कसायस्सपरि० अंबिलस्सपरि० मज्जरस्सपरिणतावि, फासने कक्कफासपरि०

पूरस्सपरिणता अपि, स्पज्ञे ककंशस्सपरिणता अपि सुदुस्सपरिणता अपि गुरुक्कस्सपरिणता अपि लघुक्कस्सपरिणता अपि शीतस्सपरि  
परिणता अपि उष्णस्सपरिणता अपि स्निग्धस्सपरिणता अपि रुक्कस्सपरिणता अपि वृत्तस्सपरिणता अपि । ये सस्यानतो वृत्तस्सपरिणतास्ते वर्णत कृष्णवर्णे  
परिणता नीलवर्णपरिणता लोहितवर्णपरिणता हारिद्रवर्णपरिणता शूक्रवर्णपरिणता अपि, गन्धत सुरजिगन्धपरिणता दुरजिगन्धपरिणता  
अपि, रसतस्तिक्तपरिणता अपि कटुकरस्सपरिणता अपि कपायस्सपरिणता अपि अम्लस्सपरिणता अपि मधुरस्सपरिणता अपि, स्पज्ञे ककं  
शस्सपरिणता अपि सुदुस्सपरिणता अपि गुरुक्कस्सपरिणता अपि लघुक्कस्सपरिणता अपि शीतस्सपरिणता अपि उष्णस्सपरिणता  
अपि स्निग्धस्सपरिणता अपि रुक्कस्सपरिणता अपि वृत्तस्सपरिणता अपि । ये सस्यानत अम्लस्सपरिणतास्ते वर्णत कृष्णवर्णपरिणता  
अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शूक्रवर्णपरिणता अपि, गन्धत सुरजिगन्धपरिणता अपि दुरजिगन्धपरिणता अपि,  
रसतस्तिक्तस्सपरिणता अपि कटुकरस्सपरिणता अपि कपायस्सपरिणता अपि अम्लस्सपरिणता अपि मधुरस्सपरिणता अपि, स्पज्ञे ककंशस्स  
परिणता अपि सुदुस्सपरिणता अपि गुरुक्कस्सपरिणता अपि लघुक्कस्सपरिणता अपि शीतस्सपरिणता अपि उष्णस्सपरिणता अपि

मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीतफासपरि० उंसिणफासपरि० णिठफासपरि० लु  
रुफामपरिणतावि । जे सठाणने चउरससठाणपरिणता ते वणुने कालवखपरि० नीलवखपरि० लोहि  
यवखपरि० हालिहवखपरि० सुक्खिवखपरिणतावि, गधने सुप्पिगधपरि० दुप्पिगधपरिणतावि, रसने  
तित्तरसप० कहुयरसप० कसायरसपरि० अचिलरसपरि० मज्जरसपरिणतावि, फासने कक्कफासपरि०  
मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीतफासपरि० उंसिणफासपरि० णिठफासपरि० लुक्क  
फासपरि० । जे सठाणने आयतसठाणपरिणता ते वणुने कालवखपरि० नीलवखपरि० लोहितवखप०  
हालिहवखपरि० सुक्खिवखपरिणतावि, गधने सुप्पिगधपरिणतावि दुप्पिगधपरिणतावि, रसने तित्तरस  
परि० कहुयरसपरि० कसायरसपरि० अचिलरसपरि० मज्जरसपरिणतावि, फासने कक्कफासपरि०

रिगपस्पज्ञपरिणता अपि रुक्कस्पज्ञपरिणता अपि । ये सत्थानतच्चतुरससत्थानपरिणतास्ते वणुते' कालवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता  
अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धत सुरन्निगन्धपरिणता अपि दुरन्निगन्धपरिणता अपि,  
रमन्तिक्कसरपरिणता अपि कटुकरसरपरिणता अपि कपायरसरपरिणता अपि अम्लसरपरिणता अपि, स्पञ्जत कर्कश  
स्पञ्जपरिणता अपि सुदुक्कस्पज्ञपरिणता अपि गुरुक्कस्पज्ञपरिणता अपि लघुक्कस्पज्ञपरिणता अपि शीतस्पज्ञपरिणता अपि उष्णस्पज्ञपरिणता अपि  
रिगपस्पज्ञपरिणता अपि रुक्कस्पज्ञपरिणता अपि । ये सत्थानत आयतसत्थानपरिणतास्ते वणुते रुक्कवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि  
लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धत सुरन्निगन्धपरिणता अपि दुरन्निगन्धपरिणता अपि, रसत  
स्तिक्कसरपरिणता अपि कटुकरसरपरिणता अपि कपायरसरपरिणता अपि अम्लसरपरिणता अपि, स्पञ्जत कर्कशस्पज्ञ



तवस्परि० हालिद्ववस्परि० सुक्लिप्तवस्परिणतावि, गंधने सुस्निग्धप० दुस्निग्धप० रसने ति  
त्तरस्परि० कटुयस्परि० कसायस्परि० अचिलरस्परि० मज्जरस्परिणतावि, फासने कक्कफासप०  
मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्रुफासपरि० लुक्क  
फासपरिणतावि । जेसठाणने तंससठाणपरि० ते वसने कालवस्परि० नीलवस्परि० लोहितवस्परि०  
हालिद्ववस्परि० सुक्लिप्तवस्परिणतावि, गंधने सुस्निग्धप० दुस्निग्धप० रसने तित्तर  
स्परि० कटुयस्परि० कसायस्परि० अचिलरस्परि० मज्जरस्परिणतावि, फासने कक्कफासपरि०

धुरस्परिणता अपि, स्पर्शते कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि लघुस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्श  
परिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रुक्षस्पर्शपरिणता अपि । ये सस्यानतो वृत्तसस्यानपरिणतास्ते वर्णते कृष्णवर्णे  
परिणता नीलवर्णपरिणता लोहितवर्णपरिणता हारिद्रवर्णपरिणता शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धत सुरभिगन्धपरिणता दुरभिगन्धपरिणता  
अपि, रसतल्लिक्तपरिणता अपि कटुकरस्परिणता अपि कपायस्परिणता अपि अम्लरस्परिणता अपि मधुरस्परिणता अपि स्पर्शते कर्क  
शस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुस्पर्शपरिणता अपि लघुस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता  
अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रुक्षस्पर्शपरिणता अपि । ये सस्यानत व्यस्यसस्यानपरिणतास्ते वर्णते कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता  
अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि । गन्धत सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि,  
रसतल्लिक्तस्परिणता अपि कटुकरस्परिणता अपि कपायस्परिणता अपि अम्लरस्परिणता अपि मधुरस्परिणता अपि, स्पर्शते कर्कशस्पर्  
शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुस्पर्शपरिणता अपि लघुस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि

मउयफासपर० गुरुयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लु  
रुफासपरिणतावि । जे सठाणउ चउरससठाणपरिणता ते वखनु कालवखपरि० नीलवखपरि० लोहि  
यवखपरि० हालिद्ववखपरि० सुक्लिबवखपरिणतावि, गधनु सुप्रिगधपरि० दुप्रिगधपरिणतावि, रसनु  
तित्तरसप० कटुरसप० कसायरसपरि० अत्रिलरसपरि० मज्जरसपरिणतावि, फासनु कक्कफासपरि०  
मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्क  
फासपरि० । जे सठाणउ आयतसठाणपरिणता ते वखनु कालवखपरि० नीलवखपरि० लोहितवखप०  
हालिद्ववखपरि० सुक्लिबवखपरिणतावि, गधनु सुप्रिगधपरिणतावि दुप्रिगधपरिणतावि, रसनु तित्तरस  
परि० कटुरसपरि० कसायरसपरि० अत्रिलरसपरि० मज्जरसपरिणतावि, फासनु कक्कफासपरि०

स्त्रिगधपञ्चपरिणता अपि कूटस्वपञ्चपरिणता अपि । ये सस्यानतश्चतुरस्रसस्यानपरिणतास्ते वर्णत कालवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता  
अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धत सुरजिगन्धपरिणता अपि दुरजिगन्धपरिणता अपि,  
रसतस्त्रिफरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पर्शत कर्कश  
स्पर्शपरिणता अपि मृदुकरसपरिणता अपि गुरुकरसपरिणता अपि लघुकरसपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि  
स्त्रिगन्धपरिणता अपि कूटस्वपञ्चपरिणता अपि । ये सस्यानत आयतसस्यानपरिणतास्ते वर्णत कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि  
लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धत सुरजिगन्धपरिणता अपि दुरजिगन्धपरिणता अपि, रसत  
स्त्रिफरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पर्शत कर्कशस्पर्श

मउयफासप० गुरुयफासपरि० लङ्गायफासप० सीतफासप० उसिगफासप० णिहफासप० लुक्फासपरि  
 णतावि ॥ सेत्त रुविण्णजीवपसवणा ॥ सेत्त ण्णजीवपसवणा ॥ से कित जीवपसवणा ? जीवपसवणा दुविहा  
 पसत्ता, तजहा—सत्तारत्तमावसजीवपसवणाय असत्तमावसजीवपसवणाय । से कित असत्तारत्तमा  
 वसजीवपसवणा ? असत्तारत्तमावसजीवपसवणा दुविहा पसत्ता, तजहा—अणतरसिद्धअसत्तारत्तमाव  
 सजीवपसवणा परपरनिद्धअसत्तारत्तमावसजीवपसवणा । से कित अणतरसिद्धअसत्तारत्तमावसजीवपस  
 वणा ? अणतरसिद्धअसत्तारत्तमावसजीवपसवणा पसत्ता, तजहा—तित्यनिद्ध १ अतित्य  
 सिद्धा २ तित्यगरसिद्धा ३ अतित्यगरसिद्धा ४ सयवुद्धसिद्धा ५ पत्तेयवुद्धसिद्धा ६ बुद्धवोहियसिद्धा ७  
 इत्थीलिंगसिद्धा ८ पुरिसलिंगसिद्धा ९ नपुसकलिंगसिद्धा १० सलिंगसिद्धा ११ अणालिंगसिद्धा १२

परिणता अपि मृदुक्कस्पर्शपरिणता अपि गुरुक्कस्पर्शपरिणता अपि लघुक्कस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि  
 स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि ॥ संपा कूयजोव प्रज्ञापना ॥ संपा उजोव प्रज्ञापना ॥ अथ कतिविधा जीवप्रज्ञापना । ?  
 जीव प्रज्ञापना द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा—सत्तारत्तमापन्नजीवप्रज्ञापना, असत्तारत्तमापन्नजीवप्रज्ञापना च । अथ कतिविधा असत्तारत्तमापन्न  
 जीवप्रज्ञापना ? । असत्तारत्तमापन्नजीवप्रज्ञापना द्विविधा प्रज्ञप्ता । अनन्तरसिद्धासत्तारत्तमापन्नजीवप्रज्ञापना, परपरसिद्धासत्तारत्तमापन्नजी  
 वप्रज्ञापना च । अथ कतिविधानन्तरसिद्धासत्तारत्तमापन्नजीवप्रज्ञापना । ? अनन्तरसिद्धासत्तारत्तमापन्नजीवप्रज्ञापना पञ्चदशविधा प्रज्ञप्ता ।  
 तद्यथा तीर्थसिद्धा १ अतीथसिद्धा, २ तीर्थकरसिद्धा, ३ अतीर्थकरसिद्धा, ४ स्वयवुद्धसिद्धा, ५ मत्थेकवुद्धसिद्धा, ६ बुद्धवोचिचतिसिद्धा, ७  
 खोलिङ्गसिद्धा, ८ पुरुषलिङ्गसिद्धा, ९ नपुसकलिङ्गसिद्धा, १० स्वलिङ्गसिद्धा, ११ अन्यलिङ्गसिद्धा, १२ गृहलिङ्गसिद्धा, १३ एकलिङ्गसिद्धा, १४

गाहालगासिद्धा १३ एगसिद्धा १४ अणगासिद्धा १५ । सेत अणतरसिद्धाससारसमावसुजीवपसुवणा । सेत परपरसिद्धाससारसमावसुजीवपसुवणा १६ । सेत अणतरसिद्धाससारसमावसुजीवपसुवणा । अणगविहा प० तजहा-अणपढमनमयसिद्धा दुसमयसिद्धा तिसमयसिद्धा चउसमयसिद्धा जाव सखेजसमयसिद्धा असखेज समयसिद्धा अणतसमयसिद्धा, सेत परपरसिद्धाससारसमावसुजीवपसुवणा । सेत अससारसमावसुजीवपसुवणा । से कित ससारसमावसुजीवपसुवणा १ ससारसमावसुजीवपसुवणा पचविहा पसुत्ता, तजहा एगिदियससारनमावसुजीवपसुवणा वेइदियससारसमावसुजीवपसुवणा तेइदियससारसमावसुजीवपसुवणा चउरिदियससारसमावसुजीवपसुवणा पचिदियससारसमावसुजीवपसुवणा । से कित एगिदियससार समावसुजीवपसुवणा १ एगिदियससारसमावसुजीवपसुवणा पचविहा पसुत्ता, तजहा-पुढविकाडया

यनेकलिङ्ग सिद्धा, १५ । सेपा उततरसिद्धाससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना । अथ कतिविधा परपरसिद्धाससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना ? । परपर सिद्धाससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना अनकविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा अग्रथमसमयसिद्धा, द्विथमयसिद्धा, तिसमयसिद्धा चतु समयसिद्धा, यावत् सत्यपसुनमयसिद्धा, असत्येयसमयसिद्धा, अनन्तसमयसिद्धा, सेपा परपरसिद्धाससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना । सेपा अससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना । अथ कतिविधा ससारसमापन्न जीवप्रज्ञापना ? । ससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना पञ्चावधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-एकैन्द्रियससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना, द्वीन्द्रियससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना, त्रीन्द्रियससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना, चोन्द्रियससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना, पतुरिन्द्रियससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना, पञ्चिन्द्रियससार समापन्नजीवप्रज्ञापना । अथ कतिविधा एकैन्द्रियससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना पञ्चविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-पृथिवीकायिका, अपृथिवीकायिका, तेज कायिका, वायुकायिका, वनस्पतिकायिका । अथ कतिविधा पृथिवीकायिका ? । पृथ्वीकायिका

॥ १ ॥  
 अण्डकाड्या त्रैकाड्या वाडकाड्या वणस्सडकाड्या । से कितं पुढविकाड्या पुढविकाड्या दुविहा प०,  
 तजहा-सुज्जमपुढविकाड्या वाडरपुढविकाड्या । से कितं सुज्जमपुढविकाड्या सुज्जमपुढविकाड्या दुविहा  
 पणत्ता, तजहा-पज्जत्तसुज्जमपुढविकाड्याय अपज्जत्तसुज्जमपुढविकाड्याय, सेत्तसुज्जमपुढविकाड्या । से  
 कितं वाडरपुढविकाड्या वाडरपुढविकाड्या दुविहा पणत्ता, तजहा-सण्णवाडरपुढविकाड्याय खरवाडर  
 पुढविकाड्याय । से कितं सण्णवाडरपुढविकाड्या २ रात्तविहा पणत्ता, तजहा-किण्हमत्तिया नीलमत्तिया  
 लोहियमत्तिया होलिदुमत्तिया सुक्खिमत्तिया पण्णमत्तिया । सेत्तं सण्णवाडरपुढविकाड्या ।  
 से कितं खरवाडरपुढविकाड्या ? खरवाडरपुढविकाड्या अप्पणेगविहा पणत्ता, तजहा-पुढवीयसक्करावा  
 लुयायउवल्लेसिलायलोण्णसे । अप्पयतवतउयसीस रुप्पसुवसेयवडरेय ॥ १ ॥ हरियालेहिगुलुण्ण मणोसिलासा

द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-सूक्ष्मपृथिवीकायिका, वाडरपृथिवीकायिका । अथ कतिविधा सूक्ष्मपृथिवीकायिका ? । सूक्ष्मपृथिवीकायिका ।  
 द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिका अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिका । तदेता सूक्ष्मपृथिवीकायिका । अथ कतिविधा वाडर  
 पृथिवीकायिका ? । वाडरपृथिवीकायिका द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-शक्कवाडरपृथिवीकायिका खरवाडरपृथिवीकायिका । अथ कति  
 विधा शक्कवाडरपृथिवीकायिका ? । शक्कवाडरपृथिवीकायिका सप्तविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-कल्लमृत्तिका, नीलमृत्तिका, लोहितमृत्तिका,  
 रारिद्रमृत्तिका, शुक्लमृत्तिका पाण्डुमृत्तिका । तदेता शक्कवाडरपृथिवीकायिका । अथ कतिविधा खरवाडरपृथिवीकायिका ? ।  
 खरवाडरपृथिवीकायिका अनेकविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-पृथिवीशर्करावालुका उपला त्रिला लवणम्पम् । अथस्ताम्रपुषोसकप्यसुवर्णानि  
 प्रतीतानि ॥ १ ॥ हरितालकहिन्दुलके सप्त त्रिला सीसकमज्जनप्रवालम् । अत्रपटलान्नवालुका वाडरपृथिवीकायैत्वमीदेता ॥ २ ॥ गोमेषकथ

मरगमसारगहे नृयमीयगइदनीलिय ॥ ३ ॥ चढणगेरुयहसे पुलएसोगीधिएयवोधहे । चदप्पन्नवेरुलिए ज लफतेसूरकतेय ॥ ४ ॥ जेयावणेयतहप्पगारा ते समासने दुविहा पयत्ता, तजहा-पज्जत्तगाय अपज्जत्त गाय, तत्यण जेते अपज्जत्तगा तेणं असपत्ता तत्यण जेते पज्जत्तगा एतेसि वणादेनेण गधादेसेण रसादे सेण फासादेसेण सहस्सगसोविहाणाइ सखिज्जाइ जोणिप्पमुहसयसहस्साइ पज्जत्तगणिस्साए अपज्जत्तगाव क्कमति, जत्य एगो तत्य णियमा असखेज्जा । सेत्त खरवादरपुढाविकाइया । सेत्तवादरपुढाविकाइया ॥ सेत्तपु ढाविकाइया ॥ से कित्ति अप्पाउकाइया ? अप्पाउकाइया दुविहा पयत्ता, तजहा-सुज्जमअ्पाउकाइयाय वादर अप्पाउकाइयाय । से कित्ति सुज्जमअ्पाउकाइया ? सुज्जमअ्पाउकाइया दुविहा पयत्ता, तजहा-पज्जत्तसुज्जल

एवकोऽहं स्तुतिकलाहितावति ॥ मरकतमसारगल्ली पुज्जमोवकेन्द्रीली च ॥ ३ ॥ चन्दनगीरिक्कहसा पुलकसीगन्धिकेवधोद्वये ॥ चन्द्रमज्जवेडु यो जलकाल मयकान्त्य ॥ ४ ॥ ये चास्ये तथा प्रकारास्ते समासतस्तथा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-पर्याप्तका, अपर्याप्तका, तत्र ये एते उपर्याप्तकास्ते असमाप्ता । तत्र ये एते पर्याप्तका एते वणादेशेन गन्धादेशेन रसादेशेन स्पर्शादेशेन सहस्राद्यन्तो विधानाति सख्येयानि । योनिप्रमुखानि शतसु वस्त्राणि पर्याप्तनिग्रया अपर्याप्तका व्यूरकामन्ति, यत्रैकस्तत्र नियमा असख्येया । त एते खरवादरपूर्यधीकायिका । त एते वादरपूर्यधीकायि काः । त एत पूर्यधीकायिका ॥ अथ कतिविधा अप्पायिका ? । अप्पायिका द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-सूत्ताप्पायिका, वादराप्पायिका । अथ कतिविधा सूत्ताप्पायिका, ? । सूत्ताप्पायिका द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-पर्याप्त सूत्ताप्पायिका, अपर्याप्तसूत्ताप्पायिका । एते सूत्ताप्पायिका ॥ अथ कतिविधा वादराप्पायिका ? । वादराप्पायिका अनेकविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-अवश्याय, हिम, महिक, करको,

आउकाइया तेउकाइया वाउकाइया वणस्सइकाइया । से कितं पुढविक्काइया पुढविक्काइया दुविहा ५०,  
तजहा-सुज्जमपुढविक्काइया वादरपुढविक्काइया । से कितं सुज्जमपुढविक्काइया सुज्जमपुढविक्काइया दुविहा  
पणत्ता, तेजहा-पज्जत्तसुज्जमपुढविक्काइयाय अणत्तसुज्जमपुढविक्काइयाय, सेत्तसुज्जमपुढविक्काइया । से  
कितं वादरपुढविक्काइया वादरपुढविक्काइया दुविहा पणत्ता, तेजहा-सरहवादरपुढविक्काइयाय खरवादर  
पुढविक्काइयाय । से कितं सरहवादरपुढविक्काइया २ सत्तविहा पणत्ता, तेजहा-किण्हमत्तिया नीलमत्तिया  
लोहिमत्तिया हांलिहमत्तिया सुक्खिमत्तिया पणमत्तिया पणमत्तिया । सेत्तं सरहवादरपुढविक्काइया ।  
से कितं खरवादरपुढविक्काइया ? खरवादरपुढविक्काइया अण्णेगविहा पणत्ता, तेजहा-पुढवीयसक्खरावा  
लुमायउवल्लेसियायलोणसे । अयतवत्तउयसीस रुप्पसुवण्णेयवडरेय ॥ १ ॥ हरियालेहिगुलुण मणोसिलासा

द्विविधा प्रज्ञा । तथा-सूक्ष्मपृथिवीकायिका, वादरपृथिवीकायिका । अथ कतिविधा सूक्ष्मपृथिवीकायिका ? । सूक्ष्मपृथिवीकायिका  
द्विविधा प्रज्ञा । तथा-पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिका अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिका । तदेता सूक्ष्मपृथिवीकायिका । अथ कतिविधा वादर  
पृथिवीकायिका ? । वादरपृथिवीकायिका द्विविधा प्रज्ञा । तथा-शक्खवादरपृथिवीकायिका खरवादरपृथिवीकायिका । अथ कति  
विधा शक्खवादरपृथिवीकायिका ? । शक्खवादरपृथिवीकायिका सप्तविधा प्रज्ञा । तथा-कल्लसृत्तिका, नीलसृत्तिका, लोहितसृत्तिका  
हारिद्रसृत्तिका, शुक्रसृत्तिका पापदुसृत्तिका, पनकसृत्तिका । तदेता शक्खवादरपृथिवीकायिका । अथ कतिविधा खरवादरपृथिवीकायिका ? ।  
खरवादरपृथिवीकायिका अनेकविधा प्रज्ञा । तथा-पृथिवीशर्करावालुका उपला शिला लक्षणमयम् । अयस्तावन्नपुसोसकूप्यसुवर्णानि  
प्रतीतानि ॥ १ ॥ हरितालकहिंदुलके मन शिला सीसरुमज्जनप्रवालम् । अन्नपटलान्नवालुका वादरपृथिवीकायैस्त्वमीजेदा ॥ २ ॥ गोमंथक

मरगयमत्तारगह्ने न्युयमोयगइदनीलिय ॥ ३ ॥ चदणगेरुयहसे पुलएसोगीधिएयवोधहे । चदप्पन्नवेरुलिए ज  
 उरुतेसूरकतेय ॥ ४ ॥ जेयावणेयतहप्पगारा ते समासउ दुविहा पयत्ता, तजहा-पज्जत्तगाय अ्पज्जत्त  
 गाय, तत्यण जेते अ्पज्जत्तगा तेण अ्सपत्ता तत्यण जेते पज्जत्तगा एतेसि वयादेनेण गधादेसेण रसादे  
 सेण फासादेसेण सहस्सग्गसोविहाणाड सखिज्जाइ जोणिप्पमुहसयत्तहस्साइ पज्जत्तगणस्साए अ्पज्जत्तगाव  
 क्कमत्ति, जत्य एगो तत्य णियमा अ्सखेज्जा । सेत्त खरवादरपुढविकाइया । सेत्तवादरपुढविकाइया ॥ सेत्त पु  
 ढविकाइया ॥ से कित अ्पाउकाइया ? अ्पाउकाइया दुविहा पयत्ता, तजहा-सुज्जमअ्पाउकाइयाय वादर  
 अ्पाउमाइयाय । से कित सुज्जमअ्पाउकाइया ? सुज्जमअ्पाउकाइया दुविहा पयत्ता, तजहा-पज्जत्तसुज्जल

दुपकोउङ्क स्फटिकलोहितावडति ॥ मरकतमसारगह्वी पुज्जमोचकेन्दनीली च ॥ ३ ॥ चन्दनगैरिकहसा पुलकसीगन्धिकेचवोद्वये ॥ चन्द्रमन्त्रवहु  
 यो जलकाल मयकान्तय ॥ ४ ॥ ये चान्ते तथा प्रकारास्ते समासतस्तथा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-पर्याप्तका, अपयाप्तका, तत्र ये एते उपर्याप्तकास्ते  
 यसमाप्ता । तत्र ये एते पर्याप्तका एते वणोदेशेन गन्धादेशेन रसादेशेन रसस्वाग्रशो विधानाति सस्येयानि । योनिप्रमुखानि शतसु  
 पद्याणि पर्याप्तनिशया अपर्याप्तका व्युरक्कामन्ति, यत्रैकस्तत्र नियमा असस्येया । त एते खरवादरपूर्याप्तबीकायिका । त एते वादरपूर्याप्तबीकायि  
 का । त एत पूर्याप्तबीकायिका ॥ अय कतिविधा अप्कायिका ? । अ्पायिका द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-सूत्ताप्कायिका, वादराप्कायिका ।  
 अय कतिविधा, सूत्ताप्कायिका, ? । सूत्ताप्कायिका द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-पर्याप्त सूत्ताप्कायिका, अपर्याप्तसूत्ताप्कायिका । एते  
 सूत्ताप्कायिका ॥ अय कतिविधा वादराप्कायिका ? । वादराप्कायिका अनेकविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-अवश्याय, हिम, महिक, करको,





गाय अपज्जत्तगाय । सेत्त सुज्जमतेउकाडया । से कित वादरतेउकाडया ? अणंगविहा पणत्ता, तजहा इगालं जाला ममुरे अच्ची अल्लए सुछागणी उक्का विज्जु असणी णिग्घाए सघरिससमुठिए सूरकतसणिणि स्सिए, जेयावण तहप्यगारा ते समासत्त दुविहा पणत्ता, तजहा पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय, तत्यण जेते अपज्जत्तगा तेण असपत्ता, तत्यण जेते पज्जत्तगा एएसि वयादेसेण गधादेसेण रसाएसण फासादेत्तण सह रसग्गनोविहाणाइ सखिज्जाइ जोणिप्यमहसयसहस्साइ पज्जत्तगणिरसाए अपज्जत्तगा वक्कमति, जत्य एगो तत्य णियमा असखंज्जा ॥ सेत्त वादरतेउकाडया ॥ सेत्त तेउकाडया ? वाउकाडया ? वाउकाडया दुवि हा पणत्ता, तजहा सुज्जमवाउकाडयाय वादरवाउकाडयाय, से कित वाउकाडया ? सुज्जमवाउकाडया दुविहा पणत्ता, तजहा पज्जत्तगसुज्जमवाउकाडयाय अपज्जत्तगसुज्जमवाउकाडया ? सुज्जमवाउकाडया इया । से कित वादरवाउकाडया ? वादरवा० अणंगविहा पणत्ता, तजहा पाईणवाए पदीणवाए दाहि

कान्तमणिप्रसूत , ये वाप्यन्ये तथा प्रकारास्त समासतो द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-पर्याप्तका, अपर्याप्तकाश्च । तत्र ये एत अपर्याप्तकास्ते अस्य प्राप्ता । तत्र ये पर्याप्तकास्ते वणादेशन गत्यादेशन रसादेशन स्वर्णादेशन सहस्रायज्ञो विधानानि सख्येयानि । योनि प्रमृग्याणि शतसहस्राणि पर्याप्तकानि श्रया अपथामका व्युत्क्रामन्ति । यत्रैकस्तत्र नियमा असख्येया । तस्य वादरतेजकायिका । तमते तेज कायिका ॥ अथ कतिविधा वायुकायिका ? । वायुकायिका द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा--सूक्ष्मवायुकायिका वादरवायुकायिकाश्च । अथ कतिविधा सूक्ष्मवायुकायिका द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा पर्याप्तसूक्ष्मवायुकायिका , अपर्याप्तसूक्ष्मवायुकायिकाश्च । तस्यै सूक्ष्मवायुकायिका । अथ कति विधा वादरवायुकायिका । वादरवायुकायिका अनेकविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-प्राचीनवायु , प्रतीचीनवायु , दक्षिणवायु , उदीचीनवायु , ज

णवाए उदीणवाए उहुवाए अहीवाए तिरिवाए विटिसीवाए वाउज्जमेवा उक्कलिया वाचमंऊलिया उ  
क्कलियावाए मऊलियावाए गुजावाए ऊफावाए सबहुवाए घणवाए तणुवाए सुछवाए, जेयावन्ते तहप्यगा  
रा ते समासउ दुविहा पण्णत्ता, तजहा पज्जत्तगाय अण्णत्तगाय, तत्यणं जेतुं अण्णत्तगा तणं अण्ण  
त्ता, तत्यण जेतुं पज्जत्तगा एण्णत्तगा एण्णत्तगा एण्णत्तगा एण्णत्तगा एण्णत्तगा एण्णत्तगा एण्णत्तगा एण्णत्तगा  
सखिज्जाडु जण्णत्तगा एण्णत्तगा एण्णत्तगा एण्णत्तगा एण्णत्तगा एण्णत्तगा एण्णत्तगा एण्णत्तगा एण्णत्तगा  
रकेज्जा ॥ सेत्तं वादरवाउकाडया ॥ सेत्तं वाउकाडया ॥ सेत्तं वाउकाडया ॥ सेत्तं वाउकाडया ॥ सेत्तं वाउकाडया ॥  
तजहा सुज्जमवणस्सडकाडयाय वादरवणस्सडकाडयाय, से कित सुज्जमवणस्सडकाडयाय दुविहा पण्णत्ता,  
त० पज्जत्तसुज्जमवणस्सडकाडयाय अण्णत्तसुहुमवणस्सडकाडयाय । सेत्तं सुज्जमवणस्सडकाडया । से कित

ध्वंवायु, अथोवायु, तिर्यक्वायु, विटिक्वायु, वातोद्वासे, वातोत्कलिका, वातमण्णली, उत्कलिकावातो, मण्णलिकावातो, गज्जावा  
तो, सज्जावातो, सर्वपृष्ठातो, घनवाततनुवात, शुद्धवात ये वान्ये तथा प्रकारास्ते सर्वे द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-पर्याप्तका, अपर्याप्तका  
श्च । तत्र य स्ते अपर्याप्तकास्ते असम्प्राप्ता । तत्र य स्ते पर्याप्तकास्ते वर्णादेशेन गन्धादेशेन रसादेशेन स्पर्शादेशेन विधानानि सत्या  
नानि । योनिप्रमुखानि ज्ञातसहस्राणि पर्याप्तकानि श्रया अपर्याप्तका व्युत्क्रामन्ति । यत्रैक स्तत्र नियमा असंख्यया । तस्यैत वादरवायुकायिका ।  
तस्यैत वायुकायिका ॥ अथ कतिविधा वनस्पतिकायिका ? । वनस्पतिकायिका द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा--सूक्ष्मवनस्पतिकायिका, वादरवन  
स्पतिकायिका । अथ कतिविधा सूक्ष्मवनस्पतिकायिका ? । सूक्ष्मवनस्पतिकायिका द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा--पर्याप्तसूक्ष्मवनस्पतिकायिका  
अपर्याप्तसूक्ष्मवनस्पतिकायिका, तस्यैत सूक्ष्मवनस्पतिकायिकाः । अथ कतिविधा वादरवनस्पतिकायिकाः ? वादरवनस्पतिकायिका द्विविधा

वाटरवणरसडकाडया २ दुविहा पणत्ता, तजहा पत्तेयसरीरवाटरवणस्सडकाडयाय साहारणसरीरवाटरव  
णस्सडकाडयाय, से कित पत्तेयसरीरवाटरवणस्सडकाडया २ दुवालसविहा पणत्ता, तजहा रसकागुच्छा  
गुम्मा लतायवल्लीयपद्मगाचेव । तणवल्लयहरियत्तेसहि जलरुहकुहणायबोधत्ता ॥ १ ॥ से कित रुका २ दु  
विहा पणत्ता, तजहा एगठियाय वज्जवीयगाय, से कित एगठिया २ झुणेगविहा पणत्ता, तजहा निव  
वज्जुकोस वसालच्छकोल्लपेलुसेलूया । सल्लडमोयडमालुय वउलपलासेरजेय ॥ १ ॥ पुत्तजीवञ्जरिठे विज्जे  
एहरिण्णयनत्ताए । उवेन्नरियाखीरिणि बोधत्तेयडपियाले ॥ २ ॥ पुईयनिवकरए सण्हातहमीसवायच्चुस  
णेय । पुम्मागनगरुके सिरिवणीतिहञ्जसोनेय ॥ ३ ॥ जेयवन्ते तहप्पगारा एएसिणमूलाविच्चुससिज्जजीवि  
या कदावि सवावि तयावि सालावि पवालावि, पण्ठा झुणेगजीवा, फला एगठिया ॥

प्रश्ना । तद्यथा--प्रत्येकशरीरवाटरवनस्पतिकारिका, साधारणशरीरवाटरवनस्पतिकारिका । अथ कतिविधा प्रत्येकशरीरवाटरवनस्पति  
कारिकाः ? । प्रत्येकशरीरवाटरवनस्पतिकारिका द्वादशविधा प्रश्ना । तद्यथा--वृक्षा गुल्मा लता वल्लय पद्मगाद्येव ॥ तणवल्लयहरिती  
यकारिकाः ? । यकारिका अनेकविधा वृक्षा ? । वृक्षा द्विविधा प्रश्ना । तद्यथा--एकारिका यन्त्रीयकाद्य । अथ कतिविधा  
अकरजनेदात् ॥ १ ॥ पुत्रजीवकारिणा विनीतकहरीतकभल्लाता ॥ तस्येन्नरिकाक्षीरकी बोद्धकरीधातकीप्रयती ॥ २ ॥ पूतिकनिम्यकरज्जाः सल्ल  
सयाजिज्ञपाशननेदात् ॥ पुभागनागवृक्षी श्रीपणीचतयाशोकः ॥ ३ ॥ येषि चान्ये तयामकारा मतेया मूलानि असस्ययजीवकानि । कन्दा अपि  
रक्त्या अपि त्वधीपि ज्ञाया अपि मवाला अपि, पत्राणि प्रत्येकजीवकानि । पुष्पाण्यनेकजीवकानि । फलान्येकजीवकानि । उक्तो एकारिका ।

सेत्तं एगठिया ॥ से कितं वज्जवीयगा २ झुणंगविहा प०, तं० झुलियतेंदुकिठे झुवाणगमाउलिंगविह्वेय  
 झामलगफणसदालिम झुसोत्येउवरवणेय ॥ १ ॥ णगोहणदिरुक्के पिप्परिसयरीपिलुक्करुक्केय । काउंवरि  
 कुलुन्नरि वोधव्वादेवदालीय ॥ २ ॥ तिलएलउएच्छतो हसिरीसेसत्तवणदहिवन्ने । लोभधवचदणज्जुण णीमेकु  
 ण्णकयवेय ॥ ३ ॥ जेयावणे तहप्पगारा एणसिण मूलावि झुसखिज्जजीविया, कटावि खंधावि तयावि सालावि  
 पत्रालावि, पत्ता पत्तेयजीविया, पुप्फायझुणंगजीविया, फला वज्जवीया, सेत्त वज्जवीयगा ॥ सेत्त रुक्का ॥  
 से कित गुच्छा २ झुणंगविहा पसुत्ता, तजहा—वाडिगिण्णुल्लडपुण इयतहक्करीयजासुमणा । खूवीझाढ  
 डणीली तुलसीतहमाउलिगाय ॥ १ ॥ कुलुन्नरिपिप्पालिया झुतसीविह्वीयकायमाईय । चूसपणोलाकंदलि  
 वाउझावयुलंदरे ॥ २ ॥ पत्तउरसीयउरए हवइतहजवासएयवोधवे । णिगंफिञ्चुक्कतूवरि झाढईचेवतलउ

अथ कतिविधा बहुजीजका १ । बहुजीजका अनेकविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा—अस्थिकतिन्दुमकपित्था आम्बाटकमातुलिङ्गवित्वाद्य ॥ आमलकपन  
 सदाहिम मद्यत्योदुम्बरवटाद्य ॥ १ ॥ न्यग्रोधनन्दिवृक्षी पिप्पलीशतावरीमृदा ॥ कादुम्बारिकुसुम्भरी वोडुव्योदवदारुद्य ॥ २ ॥ तिलकालावुकच्छत्रा-  
 शोचित्रिरीपसम्पर्णदपिपर्णा ॥ लोप्रपवधन्दनार्जुन नीपकुठजकदम्बाद्य ॥ ३ ॥ यचान्ये तथाप्रकारा यतपा मूलानि असस्येयजीवकानि । कन्दा  
 अपि रक्त्वा अपि त्वचोपि शाखा अपि प्रवाला अपि, पत्राण्यपि प्रत्येकजीवकानि, पुष्पाण्यप्यनर्जावकानि फलान्यपि बहुबीजानि । उक्तो  
 बहुजीजका । उक्ता वृक्षा ॥ अथ कतिविधा गुच्छा १ । गुच्छा अप्यनर्कविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा—वृत्ताकसल्लकीवा यव नुकाञ्चनारिजकुसुमम् ॥  
 रूपी आढिकनीली तुलसीतयाविजोराय ॥ १ ॥ कुसुम्भरिपिप्पलिका अतसीविलीयकास्यामादि ॥ घूर्णटपेलीकन्दलिका वाठलिकावदरवृक्षी ॥  
 २ ॥ पत्रवृक्षोरस्युरजा-अत्रतितथायवासद्य ॥ निर्गुण्डाकनूवारिका आठकिथैवतलोडा ॥ ३ ॥ शणपाननागमर्दका ग्राटकसिन्दुवारस्या ॥ करम

५० ॥ ३ ॥ सणपाणकासमद्ग अश्वः ऋगसामसिदुवारिय । करमद्दृष्टरुसग करीरुरावणमहृत्ये ॥ ४ ॥  
 जाउलतमालपिरिली गयमारिणकुव्कारियानेही । जावडकेयइतहग जपाळडाडोसिच्चकोले ॥ ५ ॥ जेया  
 वखे तहप्यगारा सेत गुच्छा ॥ से कित गुम्मा २ अणगविहा पखत्ता, तजहा सेरियएणोमालिय कोरिठय  
 वत्युजीवगमणोज्जे । पीईयपाणकणडर कुज्जयतहसिदुवारिय ॥ १ ॥ जाईमोगरतहजू हिंयायतहमह्लियायवायु  
 ती । वत्युलकच्छुलसेवा लगठिमगदंतियाचेव ॥ २ ॥ चपगजाईणवणी डयायकुदेतहामहाजाई । एवमणेगगारा  
 हवतिगुम्मा मुण्येव ॥ ३ ॥ सेत गुम्मा ॥ से कित लयाउ लयाउ अणगविहाउ पणत्ताउ, तजहा-पउमल  
 यानागलया आसागचपयलयचूतलता । वणलतवासतिलता अइमुत्तयकुटसामलता ॥ १ ॥ जेयावखेत  
 हप्यगारा सेत लयाउ ॥ से कित वल्ली २ अणगविहाउ पखत्ताउ, तजहा-पूसफलीकालिगी तुवोतपुसीय

दांडूसास्या करवीररावणमहास्या ॥ ४ ॥ जाउलतमापिरलीगज मारणकुक्षकारिकाजिण्डी ॥ यावककेतिकिवृद्धी गणपालोप्यथः ढोल ॥ ५ ॥ ये  
 थाये तयाप्रकारास्ते गुच्छा । अथ कतिविधा गुहमा ? । गुहमा अप्यनेकविधा । प्रज्ञा । तद्यथा-सरिसनामानवमालिका कोरुणकवन्धुजीवकमनो  
 जा ॥ प्रीतिकरप्राणतरी करवीरकुज्जकीनिगुण्डी ॥ १ ॥ जातीमद्गुरयूथो मल्लिकाघतथावासन्ती ॥ वल्लुकरुखोलगुलभी जीवालगरिणमगदन्तिकया  
 थ ॥ २ ॥ धम्यकजातीनारद्गा मुचकुन्दस्तयामहाकाय ॥ यवमनेकाकारा जवन्तिगुलमाअनेकविधा ॥ ३ ॥ तमते गुहमा ॥ अथ कास्ता लता, ल  
 ता अनेकविधा प्रज्ञास्तद्यथा पटलतानागलता अशीकचम्यकलताद्यचूतलता । वनवासन्तीलतेस्त अतिमुक्तकुन्दयामलता ॥ १ ॥ याद्यान्या  
 स्तथाप्रकारास्ता लता । अथ कास्ता वल्लय, वल्लयीनेकविधा प्रज्ञास्तद्यथा-पुसकलीकालिङ्गी तुम्बीवपुसीतयैलवालुङ्गी । चोपातकीपटोली  
 पञ्जादुलकाट्यालीच ॥ १ ॥ कडूगुलताचकुटुकी ककोटकीकारियल्लकीमुजगा । कुयमाचवल्लुलीसा । त्यापावल्लीचदेवदावीका ॥ २ ॥ आस्तोटाचा

एलवालुंकी । घोसातईपडोला पचगुलिअयाणालीय ॥ १ ॥ कंगूलयाकडुडया कक्कोरुडकारियल्लईसुजगा ।  
कुचवायवागलीपा वावल्लीतहदेवडालीय ॥ २ ॥ अण्फोअाअइमत्तय नागलयाकरहसूरवल्लीय सघहसुमिण  
सात्रिय जासुमणकुविदवल्लीया ॥ ३ ॥ मुद्दियअवावल्ली वीरविरालीजियतिगोवालो । पाणीसामावल्ली गुजा  
वल्लीयवत्याणी ॥ ४ ॥ ससविदुगोत्तफुसिया गिरिकखइमालुयायअजणई । दहफुल्लयकोगलिमा गलीयतह  
अक्कोवोदीया ॥ ५ ॥ जेयावसे तहप्पगारा सेत वल्लीउ ॥ से कित पव्हागा २ अण्णंगविहा पसुत्ता, तजहा  
डरूयाडरूवळये वीरणातहडक्कोरुयमासेय । सुठेसरेयवेत्ते तिमिरेसतपोरगणले ॥ १ ॥ वसेवेलूकणए कंका  
वसेयववसेय । उटएकुरणविमए कळावेलूकक्काणे ॥ २ ॥ जेयावसे तहप्पगारा सेत पव्हागा ॥ से कित  
तणा ? तणा अण्णंगविहा पसुत्ता, तजहा-संक्रियगतियहोत्तिय दल्लकुसेपव्हाएयपोरुडला । अज्जुणअसाढए

तिमुक्तक नागलतेरुमसूरवल्लीये च । चयपंसुमनसोपि च जातसुमना कुविन्दवल्लीका ॥ ३ ॥ मुद्रिकाभ्यावल्लीये वीरविरालीजयर्नीगोपाली । पाणी  
व्यामावल्ली गुज्जावल्लीचवत्याणी ॥ ४ ॥ ओपउतीचिद्विगोत्रा फुरवीनिरिकियामालुकाज्जनकी । द्विपुप्पकागणिमोगरी तथैवचान्याकुर्वोदीका ॥ ५ ॥  
या चान्यास्तथा प्रकारास्ता वल्लय । अथ के ते पर्वगा पर्वगा अनेकविधा मज्झमास्तथा-इल्लूयाइलुवाटिका वीरणीतथाडकामासथ ॥ अण्ठी  
सरेपेत्रा तिमिरासतपोरगपालाथ ॥ १ ॥ वशोवेलूकणा ककायशस्तथैवपदवण ॥ उदरकुठकविमुक्ता कण्ठावेल्लयकल्याणी ॥ २ ॥ येधान्ये त  
थाप्रकास्ते पवगा ॥ अथ कानि वृणानि अनेकविधानि मज्झानि । तथा-एण्ड कुसुविन्द करकचसुण्ठोतथाविजङ्गथ ॥ मधुरवण्डु  
रज्जप्य जेदातवोप्ययज्जवण्डम् ॥ १ ॥ यानिचान्यानि तथा प्रकाराणि तानि वृणानि । अथ कतिविधा वलया ? वलया अनेकविधा मज्झमा ।  
तथा-तासस्तालतक्कोलो तट्कालितसारिकासारकल्याणा ॥ सरलजावित्रीकेतकी कदल्यस्तथापट्टवृक्ष ॥ १ ॥ झुतवृक्षोद्दिबुवृक्षो लवङ्गवृक्षमव

रो हियसिमुयवेयखीरनुसे ॥ १ ॥ एरंकेकुरुविदे करकण्ठुठेतहाचिन्नंगय । मज्जरतण्डुरयसिप्पिय बोधहे  
 सुफलतण्य ॥ २ ॥ जेयावखे तहप्पगारा सेत्त तणा ॥ से कित वलया २ झणंगविहा पणुत्ता, तजहा-ताले  
 तमालेतक्कलि, तेयालीसालिसारकल्लाने । सरलेजायतिकेयड, कडलितहपउमरुक्केय ॥ १ ॥ नुयुरुक्काहि  
 गुरुक्के, लवगरुक्केयहोडबोधं । पूयफलीखज्जुरी, बोयझानालिएरीय ॥ २ ॥ जेयावखे तहप्पगारा सेत्त  
 वलया । से कित हरिया ? हरिया झणंगविहा पणुत्ता, तजहा-झज्जोरुहवोदाणो, हरितगतहतदुल्लेज  
 गतणेय । वल्लुलपोरगमज्जा, रपोडवल्लीयपालक्का ॥ १ ॥ दगपिप्पलीयदही सोत्थियसाएत्तेहवमणुक्की ।  
 मूलगसरिसवझुविल, साएयजियतएचेव ॥ २ ॥ तुलसीकरहउराले फणज्जुएछज्जएयन्नयणए । चोरगदमण  
 गमरुयग सतपुण्फिणीवरयतहा ॥ ३ ॥ जेयावखे तहप्पगारा सेत्त हरिया । से कित उंसहीउ ? उंसहीउ  
 झणंगविहाने पणुत्ताउ, तजहा-सालीवीहीगोज्जम जवकलमसूरतिलमुग्गा । मासणिप्फावमुल्लय झलिसि  
 दसतीणएलिघा ॥ १ ॥ झयसीकुसुन्नकोद्व कगरालगवरट्ठोहुसा । सणसरिसमूलवीया जेयावखे तहप्प

तियोद्वय ॥ पूगफलखनूर बोद्वयोनारिकेल्ल ॥ २ ॥ येचान्ये तयाप्रकारास्ते वलया ॥ अथ कतिविधा हरितका । हरितका अप्यनेक  
 विधा । तद्यथा-अध्याकूढोबोहा हरिततन्दुलोजलगतानेक ॥ वल्लुलपोरगमज्जार पौडवल्लीवपालिकका ॥ दकपोपलिकादो स्वस्तिकाशा  
 कस्तयेवमण्डूको ॥ १ ॥ मूलकसरसवाम्बिल शाकद्वयन्तकथैव ॥ तुलसीक्योरालो अर्जुनन्नूचभेदेन ॥ चोरदकमनकरुचक शतपुष्पीन्दीउरचतया ॥  
 येचान्ये तयाप्रकारास्ते हरिता ॥ अथ कास्ता औपचय । औपचयो ऽनकविधा प्रज्ञा । शालोत्रीहीगोधूमा यवकलमसूरतिलमट्ठा ॥ मास  
 निप्पावकुल्लया अलसीदशतीणकालिङ्गा ॥ १ ॥ अयसीकुसुम्भकोद्व कङ्गरानमासकोद्वका ॥ अणुसरिसवमूलवीया येचान्ये तयाप्रकारास्ताओ



गारा सेतं नसहीनु । से कितं जलरुहा २ झुणेगविहा पसत्ता ; तंजहा-उदए झुवए पणए सेवालें कलें  
हटे कसेरूया कच्छुजाणी उप्पले पउमै कुमुदे णलिणे सुन्नए सोगधिए पोंफरीए महापोंफरीए सयवत्ते सह  
स्सवत्ते कलहारि कोकणदे झुरविदे तामरच जिसे ज़िसमुणाले पोस्सले पोस्सलच्छिलए जेयावसे तहप्प  
गारा सेत जलरुहा । से कित कुहणा ? झुणेगविहा पसत्ता , तजहा-झाए काए कुहणे कुणक्की  
दब्बहलिया झुफाए सज्जाए लत्तोए वसीणहिंया करए १ जेयावसे तहप्पगारा सेत कुहणा । णाणाविहस  
ठाणा रुक्काणएगजीवियापत्ता । खथोविणगजीवो तालसरलनालिएरीण ॥ १ ॥ जहमगलसरिसत्ताणं सिलेस  
मिस्साणवहियावहा । पत्तेयसरीराण तहहोतिसरीरसघाया ॥ २ ॥ जहवातिलपप्पफ़िया वज्जएहितिलेहि  
सहतासती । पत्तेयसरीराण तहहोतिसरीरसघाया ॥ ३ ॥ सेत पत्तेयसरीरवादरवणप्फ़डाडया । से कित

पपय ॥ अथ कतिविधा जलरुहा १ । जलरुहा अनेकविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-उदके अक्के पनके जीवाते कलम्युके त्तेहे ॥ कसेरुकच्छभागजा  
उत्पलपदकमुदनि ॥ १ ॥ नलिनसुन्नगसोगन्धिकपुण्डरीक शतपत्र सहस्रपत्रकङ्कारकोकनदारविन्दनामरस विसविसमुणाल पुकल पुफलजाल  
जेदात् । येधान्ते तथाप्रकारास्ते जलरुहा । अथ कतिविधा कुहणा । कुहणा अनेकविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-आप काय , गुणह ,  
कुणक , द्रव्यहलिका , अजाक , समज , सवाक , खत्राक , वसीणहित , कुहकरजेदात् । येवान्ते तथाप्रकारास्ते कुहणा । नानाविधसस्याना दृष्टा  
यकजीविकापत्रा । स्कन्धोप चैकजीवोत्पलसरलनारिकेलीनाम् ॥ १ ॥ यथासकलसपपाणा शोभमिश्राणा वर्तिकावृत्तम् । प्रत्येकगरीराणा तथाभव  
न्तिशरीरसघाता ॥ २ ॥ यथावातिलपपेटिका बहुनिस्सिलेस्सज्ञतासन्ती । प्रत्येकशरीराणा तथाअर्थात्तिशरीरसघाता ॥ ३ ॥ उक्ता प्रत्येकशरीर  
वादरवन्स्पतिकारिका । अथ कतिविधा साधारणशरीरवादरवन्स्पतिकारिका साधारणशरीरवादरवन्स्पतिकारिका अनेकविधा प्रज्ञप्ता ।

साहारणसरीरवादरवणस्सडकाडया ? २ अणुगविहा पण्हा, तंजहा-अवए पणए सेवाले लोहिणी निह  
 ल्यिजगा अस्सकणी सिहकणी सिउठातत्तोमुसदीय ॥ १ ॥ रुक्कुरहरियाजार, ठीरविरालीतहेवकिहीया  
 हलिहसिगवेरेय, अलुगमूलएड यकत्तुय कणकत्तुमज्जपोगलइतहेव मज्जसिणी विरुहा सप्पसुगधा ठि  
 न्तरुहा चेव वायरुहा पाढामयवालुकी मज्जरत्ता चेव रायवल्ली य पउमा य माढरी दत्ति वक्किहाति  
 यावरा मासपणी मुग्गपणि जीवियरिसिके य रेणुया चेव काउली खीरकानुली तथा जंगीणहईयाकिमिरा  
 सिनद्धमुल्याणगलइपेलुगाईय किणहे पउले य हडेहरतणुया चेव लोयाणी कण्हकदेवज्जे सूरणकं तहेव  
 खल्लूएए अणतजीवा जेयावणे तहाविहा ॥ तणमूलकदमूलो वसीमूलितियावरं । सखेज्ज मससिज्जा बोध  
 व्वाअणतजीवाय ॥ १ ॥ सिधाऊगस्सुगुच्छो अणुगजीवोउ होति णायव्वा । पत्ता पत्तयजिया दोसियजीवानु फले

तद्यथा-अनक, पनक, सेवाल, लोही, शीहू, स्तिजका । अद्यकणी सिहकणी सउण्डिततो, मुसुण्डो ॥ १ ॥ तरुक्कन्दकुन्दरिजितवीरविराली त  
 याघोक्ता । हारिद्रयद्वेरे अलमनीकम्बु कप्पकन्दमपुपोलेव ॥ २ ॥ मयुयद्वीविठ्ठी सर्वसुगव्यिच्छिन्नरुढा । अश्रुहावावाली मयुररसाचराज  
 सागुलेयवालुका च । कप्पपोलहृदग्रन्दी तथाहरतल्लोपाणी ॥ ५ ॥ कप्पकन्दवज्जकन्दो मूरणकन्द सल्लूक । यत्ते अनन्तजीवा ये वाप्यग्ये तथा  
 जूता ॥ ६ ॥ वृणमूल कन्दमूला वशीमूलास्तथाचपरं । सग्येया असस्येया दोदुयायतथापरं ॥ १ ॥ यद्विहट्ठसुगुच्छोप्य नेकजीवोन्नवतिविज्ञेय ।  
 पत्ता मत्थेकजीवा द्वीद्वीजीवोफलेविज्ञेयो ॥ २ ॥ यस्यमूलस्यजगनस्य समोभङ्गस्तुदृश्यते ॥ अनन्तलोवास्तन्मूले येवाप्यग्येतथाविधा ॥ १ ॥ यस्य  
 कन्दस्य जगनस्य समो जङ्गस्तु दृश्यते ॥ अनन्त जीवास्तन्मूले येवाप्यग्येतथाविधा ॥ २ ॥ यस्य कन्धस्य जगनस्य समो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ अनन्त जीवा

नृणि ॥ २ ॥ जस्समूलस्सन्नगस्स समोन्नगोयदीसए । अणतजीवेउसेमूले जेयावन्नेतहाविहा ॥ १ ॥ जस्सकंदस्स  
 न्नगस्स समोन्नगोयदीसई । अणतजीवेउसेकंदे जेयावन्नेतहाविहा ॥ २ ॥ जस्सखथस्सन्नगस्स समोन्नगोय  
 दीसई । अणतजीवेउनेखथे जेयावन्नेतहाविहा ॥ ३ ॥ जस्सतयाएन्नगाए समोन्नगोयदीसई । अणतजीवा  
 तयासाउ जेयावन्नातहाविहा ॥ ४ ॥ जस्ससालस्सन्नगस्स समोन्नगोपदीसई अणतजीवेउसेसाले जेयावन्ने  
 तहाविहा ॥ ५ ॥ जस्सपवालस्सन्नगस्स समोन्नगोपदीसई । अणतजीवेपवालसे जेयावन्नातहाविहा ६ ॥  
 जस्सपत्तस्सन्नगस्स समोन्नगोपदीसई । अणतजीवेउसेपत्ते जेयावन्नेतहाविहा ॥ ७ ॥ जस्सपुप्फस्सन्नगस्स  
 समोन्नगोपदीसई । अणतजीवेउनेपुप्फे जेयावन्नेतहाविहा ॥ ८ ॥ जस्सफलस्सन्नगस्स समोन्नगोपदीसई ।  
 अणतजीवेफलेसेउ जेयावन्नेतहाविहा ॥ ९ ॥ जस्सवीयस्सन्नगस्स समोन्नगोपदीसई । अणतजीवेउनेवीए  
 जेयावन्नेतहाविहा ॥ १० ॥ जस्समूलस्सन्नगस्स हीरोन्नगोपदीसई । परित्त जीवेउसेमूले जेयावन्नेतहाविहा १  
 जस्सकंदस्सन्नगस्स हीरोन्नगोपदीसई । परित्त जीवेउसेकंदे जेयावन्नेतहाविहा ॥ २ ॥ जस्सखथस्सन्नगस्स

स्तम्मूले यवाप्यन्ये तथाविधा ॥ ३ ॥ यस्य शाखा प्रजना च समो ब्रह्मो हि दृश्यते ॥ अनन्त जीवास्तच्छाया येषां व्यन्ये तथाविधा ॥ ४ ॥ यस्य लघ  
 स्तन्नगनाया समो ब्रह्मस्त दृश्यते ॥ अनन्त जीवास्तच्चतु येषां व्यन्ये तथाविधा ॥ ५ ॥ यत्प्रवालस्य जग्नस्य समो ब्रह्मस्त दृश्यते ॥ प्रत्य होतलनी  
 स्तु येषां व्यन्ये तथाविधा ॥ ६ ॥ यस्य पत्रस्य जग्नस्य समो ब्रह्मस्त दृश्यते ॥ अनन्त जीवास्तत्पत्रे येषां व्यन्ये तथाविधा ॥ ७ ॥ यत्त  
 भनस्य समो ब्रह्मस्त दृश्यते ॥ अनन्त जीवास्तत्पुष्पे येषां व्यन्ये तथाविधा ॥ ८ ॥ यत्फलस्य च जग्नस्य समो ब्रह्मस्त दृश्यते ॥ यत्त  
 येषां व्यन्ये तथाविधा ॥ ९ ॥ यस्य बीजस्य जग्नस्य समो ब्रह्मस्त दृश्यते ॥ अनन्त जीवास्तद्बीजं येषां व्यन्ये तथाविधा ॥ १० ॥ यस्य मूलस्य जग्न

हीरोन्नगेपदीसई । परित्तजीविउसेखंधे जेयावखेतहाविहा ॥ ३ ॥ जस्सतयाएन्नगाए ह्रीरोन्नगेपदीसई । परि  
तजीवातयासाउ जेयावखातहाविहा ॥ ४ ॥ जस्ससालस्सन्नगस्स ह्रीरोन्नगेपदीसई । परित्तजीविउसेसाले  
जेयावन्नेतहाविहा ॥ ५ ॥ जस्सपवालस्सन्नगस्स ह्रीरोन्नगेपदीसई । परित्तजीविपवालउ जेयावन्नेतहाविहा  
६ ॥ जस्सपत्तस्सन्नगस्स ह्रीरोन्नगेपदीसई । परित्तजीविउसेपत्ते जेयावखेतहाविहा ॥ ७ ॥ जस्सपुप्फस्सन्नग  
स्स ह्रीरोन्नगेपदीसई । परित्तजीविउसेपुप्फे जेयावन्नेतहाविहा ॥ ८ ॥ जस्सफलस्सन्नगस्स ह्रीरोन्नगेपदी  
सई । परित्तजीविउसेउ जेयावन्नेतहाविहा ॥ ९ ॥ जस्सवीयरस्सन्नगस्स ह्रीरोन्नगेपदीसई । परित्तजीविउसे  
वीए जेयावन्नेतहाविहा ॥ १० ॥ जस्समूलस्सकठानं वल्लीवहलतर्रीन्ने । छुणतजीवाउसावल्ली जायाव

स्य हीरोन्नगस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवास्तमूले ये वाप्यन्ये तथाविधा ॥ १ ॥ यस्य स्कन्दस्य जग्नस्य हीरोन्नगस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवा स्तस्कन्दे  
ये वाप्यन्ये तथाविधा ॥ २ ॥ यस्य स्कन्धस्य जग्नस्य हीरोन्नगस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवास्त तस्कन्ध य वाप्यन्ये तथाविधा ॥ ३ ॥ यस्य त्वचस्तु ज  
ग्नस्य हीरोन्नगस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवास्तु त्वचि ये वाप्यन्ये तथाविधा ॥ ४ ॥ यस्य शालस्य जग्नस्य हीरोन्नगस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवास्त  
जग्नस्य हीरोन्नगस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवास्तस्य हीरोन्नगस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवास्तस्य हीरोन्नगस्तु दृश्यते ॥ ५ ॥ यत्प्रवालस्य जग्नस्य हीरोन्नगस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवा स्तत्प्र  
वालस्य हीरोन्नगस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवा स्तत्प्रवालस्य हीरोन्नगस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवा स्तत्प्रवालस्य हीरोन्नगस्तु दृश्यते ॥ ६ ॥ यस्य पत्रस्य ज  
ग्नस्य हीरोन्नगस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवा स्तत्पत्रस्य हीरोन्नगस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवा स्तत्पत्रस्य हीरोन्नगस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवा स्तत्पत्रस्य हीरोन्नगस्तु दृश्यते ॥ ७ ॥ यस्य पुष्पस्य जग्नस्य हीरोन्नगस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवा स्तत्पु  
ष्पस्य हीरोन्नगस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवा स्तत्पुष्पस्य हीरोन्नगस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवा स्तत्पुष्पस्य हीरोन्नगस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवा स्तत्पुष्पस्य हीरोन्नगस्तु दृश्यते ॥ ८ ॥ यस्य फलस्य जग्नस्य हीरोन्नगस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवा स्तत्फलस्य हीरोन्नगस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवा स्तत्फलस्य हीरोन्नगस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवा स्तत्फलस्य हीरोन्नगस्तु दृश्यते ॥ ९ ॥ यस्य वीर्यस्य जग्नस्य हीरोन्नगस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवा स्तत्वीर्यस्य हीरोन्नगस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवा स्तत्वीर्यस्य हीरोन्नगस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवा स्तत्वीर्यस्य हीरोन्नगस्तु दृश्यते ॥ १० ॥ यस्य कन्दस्य काष्ठेभ्यास्तत्त्वक बहुला भवेत् ॥ अनन्तजीवास्त  
स्यचि या वाप्यन्या स्तथाविधा ॥ १ ॥ यस्य स्कन्धस्य काष्ठेभ्यो तत्त्वक बहुला भवेत् ॥ अनन्तजीवास्तत्त्वचि ये वाप्यन्ये तथाविधा ॥ २ ॥ यस्य शाल

स्थातहाविहा ॥ १ ॥ जस्सकदस्सकठान् तल्लीवहलतररीन्नेवे । अणंतजीवाउसातल्ली जायावस्सातहाविहा ॥ २ ॥  
 जस्सखधस्सकठान् तल्लीवहलतररीन्नेवे । अणंतजीवाउसातल्ली जायावस्सातहाविहा ॥ ३ ॥ जस्ससालाडुक  
 ठान् तल्लीवहलतररीन्नेवे अणंतजीवाउसातल्ली जायावस्सातहाविहा ॥ ४ ॥ जस्समूलस्सकठान् तल्लीतण  
 यरीन्नेवे । परित्तजीवाउसातल्ली जायावस्सातहाविहा ॥ १ ॥ जस्सकदस्सकठान् तल्लीतणयरीन्नेवे । परित्त  
 जीवाउसातल्ली जायावस्सातहाविहा ॥ २ ॥ जस्सखंधस्सकठान् तल्लीतणयरीन्नेवे । परित्तजीवाउसातल्ली  
 जायावस्सातहाविहा ॥ ३ ॥ जस्ससालाडुकठान् तल्लीतणयरीन्नेवे । परित्तजीवाउसातल्ली जायावस्सातहावि  
 हा ॥ ४ ॥ चक्कागन्नज्जमाणस्स गठीचुसुधणोन्नेवे । पुढवीसरिसएणनेदेण अणंतजीवविद्याणाहि ॥ १ ॥  
 गूढसिरागपत्त सच्छीरंजचहोइनिच्छीर । जपियपणठसंधि अणंतजीवविद्याणाणि ॥ २ ॥ पुप्फाजलयावलया

लस्य काष्ठेभ्य म्बल्लीतु बहुलार प्रवेत् ॥ अनन्तजीवास्तत्त्वपि या वाप्यन्या स्तथाविधा ॥ ३ ॥ यस्य मूलस्य काष्ठेभ्यो न्तरत्वक् तनुतरीमता ॥ प्रत्येक  
 जीवारत्वचि तु या वाप्यन्या स्तथाविधा ॥ १ ॥ यस्य कन्दस्य काष्ठेभ्यो न्तरत्वक् तनुतरीमता ॥ प्रत्येकजीवारत्वचित्तु यावाप्यन्यास्तथाविधा ॥ २ ॥  
 यस्य स्कन्धस्य काष्ठेभ्यो न्तरत्वक् तनुतरी मता ॥ प्रत्येकजीवास्तु त्वचि या वाप्यन्या स्तथाविधा ॥ ३ ॥ यस्य शालस्य काष्ठेभ्यो न्तरत्वक्तनुतरी म  
 ता ॥ प्रत्येक जीवास्तु त्वचि या वाप्यन्या स्तथाविधा ॥ ४ ॥ चक्राङ्गज्यमानस्य ग्रन्थिधूर्णकृताप्रवेत् ॥ पृथिवी सदृश जेदेना नन्त जीव विजा  
 नीयात् ॥ गूढ शिराक पत्र सक्षीरं यच्च नि क्षीरम् ॥ यदपि प्रमष्टसन्धि अनन्त जीव विजानीयात् ॥ पुष्पजलजस्यलज वृन्तवद्बन्धनालवद्वन्ध ॥ सङ्क्षेप  
 मसङ्क्षेप बौद्धज्यमनन्तजीवञ्च ॥ ३ ॥ येकेचिक्कालवद्वाः पुष्पा सख्येयजीविकाधस्यु । अणिताह्यनन्तजीवा येचाप्यन्येतयाविधाधस्यु ॥ ४ ॥ पटन्यु  
 त्यलिकन्दो वत्सरकन्दस्तथैवज्जिह्वी च । एतेह्यनन्तजीवा एकोजीवोविपमृशाले ॥ ५ ॥ पलायिद्रुनसुनकन्दो कटुककुलुम्बकीचबोद्धभ्यो । एतेप्रत्येक

विठवदासगालिविदाय । सखिज्जमसखेज्जा बोधव्वाणतजीवाय ॥ ३ ॥ जेकेडनालिमावदा पृष्ठासखेज्जाजी  
 विया । निज्जमाव्वाणतजीवा जेयावरोतहाविहा ॥ ४ ॥ पउमुप्पलिगीरुं दे सुवरकंदेनहेवज्जिधी य । एते  
 व्वाणतजीवा एगोजीवोन्निमणाले ॥ ५ ॥ पल्लूहसुणकंदंय कडलीयम्लुग । एणपरित्तजीवा जेयावन्नेत  
 हाविहा ॥ ६ ॥ पउमुप्पलणालिणाण सुजगसोगधियाणय । व्वाणविदकुक्कणाण सतवत्तमहस्सपत्ताण ॥ ७ ॥  
 विठवाहिरपत्ता यकणियाचेवएजीवस्स । व्वाणितरग्गपत्ता पत्तमकेसरमिजा ॥ ८ ॥ वेणुनलडक्कुवाळिय  
 समानडक्कुमडक्कुनेरुं । करकरसुठिविहगु तणागतहपन्नगाणच ॥ ९ ॥ व्वाण्णिम्लुपत्तिमा रुत्तमग्गन्सहो  
 तिजीवस्स । पत्तेयपत्ताइ पुष्पाडव्वाणगजीवाड ॥ १० ॥ पुत्तफलकालिग तुयनउनलुवालुरु । बोसालय  
 पळालं तिदूयचेवतिदूस ॥ ११ ॥ वंठमनकळाह एवाडव्वतिग्गजीवस्स । पत्तापत्ताड सक्कसरमनेसरमिजा  
 १२ ॥ सप्पाएसज्जाए उव्वेहलिया मकुहगकुडुक्के । एणव्वाणतजीवा कुडुक्केहोडव्वगणत्त ॥ १३ ॥ जोणिम्लुग्गीए

जीवा येचाप्ययेतयामकारा सु ॥ ६ ॥ पटोत्पन्नततिनाना गुन्नासीगन्धिकाना च दाटुक्कम् । अरविद्वजोकादागा अतपवसहस्रपत्रायाम् ॥ ७ ॥  
 वृत्तयगाद्यपत्राणि का चैकजीगानि । आस्यत्तरचपत्र कमरचैगमिज्जाच ॥ ८ ॥ वेणुगळुगटिकमनासपुक्कैराता । कररसुरिटिविहङ्ग  
 रत्तुणाणिपत्रगानि सु ॥ ९ ॥ व्वाणिवर्षयलिमो उक्कमेतमकवीवाति । पत्राणिचेकजीवान्य नेरुनीगानिपुप्पाणि ॥ १० ॥ पुप्पसलक लिङ्ग तुम्य  
 वपपमतचिचिटचैय । योपातकपटोल तिग्गुक्कचैगतिग्गुसम् ॥ ११ ॥ वृत्तसमासकटाह मनान्निजगल्लिचैकजीवस्य । प्रत्यक्षपत्राणि चकसराकसरा  
 मिज्जा ॥ १२ ॥ सप्पाएसज्जाग उव्वेहलियाच गुत्तनकुडुक्क । यत्तेत्ततलजीवा कण्डुकवज्जतिज्जाना च ॥ १३ ॥ वोजययानवृत्त जीवाध्यतानातिस्स  
 धान्यो वा । यापिचमूलजीव सापिदिपत्रेप्रथमतयेत ॥ १४ ॥ चर्भोपिकिसलय रलु मोद्धव्वनत्तकोत्राणत्त । चरवत्तमान प्रत्येकमनत्तजीवा

जीवोवक्त्रमडसोवच्यसोवा । जोविच्यमूलेजीवो सोविज्जपत्तेपढमयाए ॥ १४ ॥ सद्योविकित्तलनुखलु उग्गम  
माणोच्चणतनुंनणिनु । सोचेवविवहुतो होडपरिहोच्चणतोवा ॥ १५ ॥ समयंवक्कताणं समयंतसिसरीरणि  
छत्ती । समयच्याणग्गहण समयउस्सासनीसासो ॥ १६ ॥ एक्कस्सउजगहण वद्धणसाहारणाणतचेव । जवज  
याणगहण समासनुंतपिएगस्स ॥ १७ ॥ साहारणमाहारो साहारणमाणपाणगहणंच । साहारणजीवाणं सा  
हारणलस्खणएय ॥ १८ ॥ जहच्ययगोलोधतो जाततत्तवणिज्जसकासो । सद्योच्चगणिपरिणनु णिनुयजीवे  
तहाजाण ॥ १९ ॥ एगस्सदोएहतिरहव सखेज्जाणवपासिउसक्का । दोसतिसरीराइ णिनुयजीवाणणंताण २०  
लोगागासपएसं णिनुयजीवठवेहिएक्केक्कं । एवमविज्जमाणा हवतिलोयाच्चणतानु ॥ २१ ॥ लोगागासपदेसे  
परित्तजीवठविनुएक्केक्क । एवमविज्जमाणा हवतिलोगाच्चसखेज्जा ॥ २२ ॥ पत्तेयापज्जत्ता पयरस्सच्चसख  
त्तागमिन्नानु । लोगाच्चसखाच्चपज्जत्तयाणसाहारणमणता ॥ २३ ॥ एएहिहसरीरेहि पच्चरुक्तेपक्खविवाजीवा

वा ॥ १५ ॥ समकयुरकान्ताना समकतेपादारीरनिर्वृत्ति । समकप्राणापान ग्रहणवोच्छासनि द्यासो ॥ १६ ॥ मकस्यचयद्ग्रहण तच्चवद्दूनासाधारणा  
नाच । यच्चवद्दूनाग्रहण समासतस्तदपिचैकस्य ॥ १७ ॥ साधारणमाहार प्राणापानादिकभवेत् सर्वम् साधारणजीवाना साधारणलक्षणचेतत् ॥ १८ ॥  
यथायोगोलोत्सातो जातस्तप्तपनीयसङ्काश । सर्वोग्निपरिणत सलु बान्नीहिनिगोदजीवान्त्वम् ॥ १९ ॥ एकस्यद्वयोऽयाया सत्येयानानवोपल  
भ्यानि । गात्राण्ययदृश्यन्ते उन्तानानिगोदजीवानाम् ॥ २० ॥ लोकाकाशप्रदेशो निगोदजीवस्यापर्येकैकम् । एवन्तुमीयमाना प्रवन्तुमीयमाना प्रवन्तिलोकाश्चनन्ता  
स्तु ॥ २१ ॥ लोकाकाशप्रदेश मत्येकजीवस्यापर्येकैकम् । एवन्तुमीयमाना प्रवन्तिलोकाश्चसत्याता ॥ २२ ॥ पर्यस्तप्रत्येकजीवा प्रतस्यासङ्ख्यभागमि  
ता । असत्यलोकाश्चपर्याप्ताः साधारणाश्चनन्ताः ॥ २३ ॥ एति सलुवारीरे मत्स्यकृतेमरुपिताजीवा । मूत्समाश्चाद्याह्ता द्युनुस्पर्शनेत्येति ॥ २४ ॥

सुज्जमाञ्चणगिज्जा चक्कुप्फासनतेइति ॥ २४ ॥ जेयावखे तहप्पगारा ते समासत्तु दुविहा पयत्ता, त०  
 पज्जत्तगा य ञ्चपज्जत्तगाय, तत्थण जे ते ञ्चपज्जत्तगा तेण ञ्चसपत्ता, तत्थण जेतं पज्जत्तगा तेसिण वन्ना  
 देसेण गथादेसेण रसादेसेण फासादेसेण सहस्सगसो विहाणाड सखेज्जाइ जोणिप्पमुहसयसहस्साइं पज्जा  
 त्तगणिस्साए ञ्चपज्जत्तगा वक्कमति, जत्थ एगो तत्थ सिय सखिज्जा सिय ञ्चसखिज्जा सियञ्चणता एएसिण  
 इमात्तं गाहानं ञ्चणगतत्तानं तज्जा-कदायकदमूलाय रुक्कमूलाडयावरे । गुच्छायगुम्भवल्लीय वेलुयाणित्तणा  
 णिय ॥ १ ॥ पउमुप्पलसिचाने हट्ठेयत्तेवालकिण्हणए । ञ्चवएयकच्छन्नाणी कट्ठुक्केकणवीसडमे ॥ २ ॥  
 तयत्तल्लिपवालेसुय पत्तपुप्फफलेसुय । मूलग्गमज्जवीएसु जोणीकस्सडकेत्तिया ॥ ३ ॥ सेत्त साहारणसरीर  
 वादरवणस्सडकाडया । सेत्तवाटरवणस्सडकाडया ॥ सेत्त एगिटिया ॥ से कित वेइदिया ? वेइदिया ञ्चणेग  
 विहा पयत्ता, तज्जा-पुलाकिमिया कुच्छिकिमिया गळूयलगा गोलोमा णेउरा सोमगलगा वसीमुहा सू

येपिचान्ते तथाप्रकारास्ते समासतोद्विविधा प्रज्ञप्तास्तद्यथा-पर्योप्तकाश्चापर्योप्तकाश्च, तत्र यश्चपर्योप्तकास्ते ऽवस्मात्ता, तत्र ये पर्योप्तका स्तेषां  
 वर्णोद्देशेन गम्याद्देशेन रसाद्देशेन स्पर्शोद्देशेन सहस्राग्रशो विधानानि (त्रेदा) सख्येयानि योनिप्रमुखतस्तद्वस्त्राणि पर्योप्तकानिश्चया अपर्योप्तका  
 व्युत्क्रमन्ते, यत्रैकस्तत्र स्यात्सख्येया स्यात्सख्येया स्यादनन्ता । गतेषामिमा गाथा अनुगन्तव्या स्तद्यथा-कन्दाथकन्दमूलानि वृक्षमूलानिचाप  
 रे । गुच्छागुत्तमाद्यवत्तग्र्य वेणुकानितृणानिच ॥ १ ॥ पट्ठोत्पलट्ठ्ठाटकानि हट्ठसेवालकप्रपनकाश्च । अवनकाद्यकच्छन्नाणि कन्दुसगकोनविशतिक  
 ॥ २ ॥ त्वक्खल्लिपवालेषु पत्तपुप्फफलेषुच । मूलाग्रमध्यवीजेषु योनि कस्यापिकापिच ॥ ३ ॥ उक्ता साधारणशरीरयादरवनस्पतिकारिका । उ  
 क्ता यादरवनस्पतिकारिका । समाप्तानि एकैन्द्रियाणि । अथ के ते द्वौन्द्रिया द्वौन्द्रिया अनेकविधा प्रज्ञप्तास्तद्यथा पूति कपिका कुक्किहपि



इमंहा गोजलोया जलोया जालाउया संसा संखगगा पुत्ता खुत्ता खंधा वराळा सोत्तिया सोत्तिया कल्लुया  
वागा एगुवत्ता दुहवत्ता णदियावत्ता सबुत्ता माडवाहा सिप्पि सपुळा चढगा समुहल्लिक्का, जेवावसे  
तहप्पगारा सवे ते समुच्छिमा नपुसगा ते समानव दुविहा प०. त०-पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय एणसिणं  
एवमादिनाण वेडदियाण पज्जत्त पज्जत्ताण सत्तजाडुकलकोली जाणिप्पमुहसयसहस्सा नवतीति मल्लाय ॥  
सेत्त वेडदियनसारनमावणजीवपसुवणा ॥ से कित तेडदियससारसमावन्नजीवपसुवणा २ ? अपणंगविहा  
पणत्ता, तजहा-उवाडया रोहिणिया कुंथू पिपीलिया उहेसगा उहेहिया उक्कलिया उप्पाया उप्पळा तण  
हारा कठहारा पत्तहारा मालुया तणविटिया पत्तविटिया पृष्णवेटिया फलविटिया बीजविटिया तेषु  
णमिजिया तडमिमिजिया कप्पासठिमिजिया हिंसिया ज्जितिया किगिरा किगिरिळा वाळिया लळिया चु

का कण्डुया गोलोमा तकुला अमडुलगा वशीमुरा सुचीमुरा गोजतीका जलीका जललूना डोला शरनका मूला खुत्ता सटा कडा सी  
क्तित मौक्तित पुनापयासा यकीपयुक्ता, द्विओपयुक्ता नद्यावती डावुका मडोडा शक्तिका चन्दना समुद्रीशा येवाप्यन्य तथाप्रकारा  
सर्व ते समुच्छमा नपुममाले समावतो द्विविधा प्रक्षमा । तद्यथा-पर्याप्रका अवयामिकाय । यत्तप मेवमादोना द्विन्दियत्राद्याथा ययत्तापया  
प्रकादीना सर्वजातकुलकोटीर्ना योगिमुराणि ज्ञानसंस्थानि भवन्ति ज्ञातयाख्यातम् । तयत्त द्विन्दियसमापन्नजीवप्रज्ञापनाः ॥ अथ कर्तविधा  
सोन्द्रियसमापन्नजीवप्रज्ञापना । त्रीन्द्रियसमापन्नजीवप्रज्ञापना अनेकाविधा प्रक्षमा । तद्यथा-उत्पातिका रोचिणिका कन्थुना पिपीलिका  
उद्दगा उहेहा उहेहा उहेहा पत्तहा उहेहा पत्तहा मूलाहारा कट्टाहारा तणाहारा तणाहारी पुष्पवेटी फलवेटी बीजवेटी सूर्यनम  
जिता तजसमज्जिता कपासा अरियमिज्जी दल्लिका कल्लिका किगरिया कल्लिका तपुका सुनगा यौवलिक्का सुखविट । इन्द्रकेति

नगा सेवित्यां सुयवेष्टा इदकांइया इंदगोवया तुरंतंनगा कीत्यलवाहगा जूया हालाहलां पिसुया सत  
वाइया गोम्ही हल्यिसोला जैयावणे त० सहे ते समुच्छिमनपुसगा ते समासले दुविहा पणता, तजहा-  
पजात्तगाय अपजात्तगाय । एणसिण एवमाइयाण तेइदियाण पजात्तापजात्ताण अठजाइकुलकोमिजोणि  
प्यमुहसयसहस्मा हवतीति मस्काय । संत्तं तेइदियससा० । से कित चउरिदियससारसमावसजीवपसुव  
णा २ ? एणगेविहा पसन्ना . तजहा-अधिय पात्तिय मेच्छिय , मगसिरकीइं तहा पयगे य । ठकण कु  
कुळकुळुह , नडावत्तेय सिगिरिं । क्रिणहपत्ता नीलपत्ता लोहियपत्ता हालिदपत्ता सुक्लिपत्ता चित्तपरका  
विचत्तपरका उहजलिता जलचारिया गत्रीरा नीणिता ततवा अत्यिरोला अत्यिवेहा सारगा नेउरा दोला  
अमरा जरिली जइला तोम्मा विच्चुया पत्तविच्चुया क्काणविच्चुया जलविच्चुया पिगला कणगा गोमयकीडा  
जैयावन्ते तहप्यगारा सहे ते समुच्छिमा नपुनगा ते समासले दुविहा पसन्ना , तजहा-पजात्तगाय अप

का इन्द्रगोपा तुरंतुस्यगा कुलत्यवाहगा यूका हालाहला पिणुका सववापका कणाशिला इल्लिगका ये वाप्यन्य तथाविधास्ते सर्वे समुच्छि  
मा नपुनकीड्ढा त समानभा द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-पर्याप्तकाअपर्याप्तकाया । सतयामंभवमादिकाना वीन्द्रियाणा पर्याप्तपर्याप्तकानामष्ट  
जातकुलादिपानिप्रमुसगतमहस्त्राणि भवन्ति इत्याख्यातम् ॥ तएते वीन्द्रियग्राह्या ॥ अथ कतिविधागतारिन्द्रियससारसमापल्लोवप्रज्ञापना  
१ । यतारिन्द्रियगतारनमापल्लोवप्रज्ञापना अनेकविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-अधिकपुच्छिकमोचिक , मशकरीटास्तथापतद्वाय ॥ मत्तुरसकुलकुलकु  
रनप्राधान्यदिगिरकाय ॥ १ ॥ कणपत्ता नीलपत्ता लोहितपत्ता इरिद्रपत्ता अरुपत्ताश्विपत्ता त्वचिपत्ता त्वचिपत्ता त्वचिपत्ता त्वचिपत्ता  
निपतास्तत्तोत्तराहा आश्वेधा सारङ्गा नकुला दोला अमरा नमर्षा जतरुहा तोटा . द्युधिका . पश्यद्विका गोमयद्विका ततद्विधिका

जन्तुगाय । एतस्मिन् एवमाड्याणं चउरिंदियाण पञ्जतापञ्जत्ताणं नवजाडुकुलकोफि जोणिप्पमुहसयसह  
रसाड नवतीति मस्काय । सेतं चउरिंदियससारसमावखणीवपखवणा । से कित पचिंदियसंसारसमावख  
जीवपखवणा ? पचिंदियसंसारसमावखणीवपखवणा चउविहा पखत्ता, तजहा-नेरडयपचिंदियसंसारस  
मावखणीवपखवणा तिरिक्खजोणियपचिंदियससारसमावखणीवपखवणा मणुस्सपंचिंदियससारसमावख  
जीवपखवणा देवपचिंदियससारसमावखणीवपखवणा । से कितं नेरडया ? सत्तविहा पखत्ता, तंजहा  
रयणप्पन्ना पुढवीनेरडया सक्खरप्पन्नापुढविनेरडया वालुयप्पन्नापुढविनेरडया धूमप्पन्नापुढविनेरडया तम  
प्पन्नापुढविनेरडया तमतमप्पन्नापुढविनेरडया । ते समासत्तं दुविहा पखत्ता, तजहा-पञ्जत्तगा अण्णज्जत्त  
गाय । सेत्त णेरडया । से कित पचिंदियतिरिक्खजोणिया ? तिविहा पखत्ता, तजहा-जलयरपचिदि

प्रियगता कलगा गोमयकीटा ये वाप्यन्ये तथाप्रकारास्ते समुद्धिमा नपुसकास्ते समासतो द्विविधा प्रज्ञप्ता ॥ पर्याप्तका अपर्याप्तकाश्च ॥ एते  
यामेवमादीना चतुरिन्द्रिययाध्याना पर्याप्तपर्याप्ताना नवलकुलकोटिशतसरस्त्राणि भवन्ति इति आस्यातम् ॥ तस्ये चतुरिन्द्रियसमापन्न जी  
वप्रज्ञापना ॥ अथ कतिविधा पञ्चेन्द्रियससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना ? पञ्चेन्द्रियससारसमापन्नजीवप्रज्ञापनाद्यतुर्विधा प्रज्ञप्ता ॥ तद्यथा-ने  
रयिकपञ्चेन्द्रियससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना तिर्यक्योनिकपञ्चेन्द्रियससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना मनुष्यपञ्चेन्द्रियससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना दे  
वपञ्चेन्द्रियससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना । ते कतिविधा नैरयिका ? नैरयिका सप्तविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-रत्नप्रज्ञा पृथिवी नैरयिका शर्कर  
प्रज्ञा पृथिवीनैरयिका वालुकप्रज्ञापृथिवी नैरयिका धूमप्रज्ञापृथिवीनैरयिका तमप्रज्ञा पृथिवीनैरयिका तमस्तम प्रज्ञा पृथिवी नैरयिका ते समा  
सेत द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-पर्याप्त अपर्याप्तश्च । तस्ये नैरयिका । अथ कतिविधा पञ्चेन्द्रियपर्याप्त्योनिका ? पञ्चेन्द्रियपर्याप्त्योनिका

यतिरिक्कजोगिया थलयरपचिदियतिरिक्कजोगिया खहयरपचिदियतिरिक्कजोगिया । से कितं जलयरप  
चिदियतिरिक्कजोगिया २ ? पचविहा पन्नात्ता, तजहा मच्छा कच्छहा गाहा नगरा सुसुमारा । नकि त  
मच्छा २ ? धुणंगविहा पसन्ता, तजहा सरहमच्छा खवल्लमच्छा जुगमच्छा विज्जिक्कियमच्छा हलिहमच्छा  
मगरिमच्छा रोहिहयमच्छा हलोसागरा गागरा वक्का तिमिगिला पक्का तदुलमच्छा क  
गिक्कासच्छा सालिसच्छियामच्छा लज्जणमच्छा पक्कागाहपक्कागा । जेयावन्ने तहप्पगारा । सेत्त  
मच्छा । से कित कच्छन्ता २ दुविहा पसन्ता, तजहा छुठकच्छन्ता य मसकच्छन्ता य । सेत्त कच्छन्ता ।  
से कित गाहा २ ? पचविहा पसन्ता, तजहा देलीवद्धगा मुद्दया पुलगा सीमागारा । सेत्त गाहा ॥ से  
कित मगरा २ ? दुविहा पसन्ता, तजहा-सोऊमगरा मच्छमगराय । सेत्त मगरा । से कित सुसुमारा २

विधिपथा मससा तद्यथा-पतावरपञ्चेन्द्रियतियक्ष्णोनिक्का स्थलपरपञ्चेन्द्रियतियक्ष्णोनिक्का । अथ कतिविधा  
पतावरपञ्चेन्द्रियतियक्ष्णोनिक्का ? । पलवरपञ्चेन्द्रियतियक्ष्णोनिक्का पञ्चविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-मदस्या कच्छपा याहा मकरा जिज्ञुमा  
रु । अथ माता मया मदस्या २ । मदस्या योक्कविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-युद्धमदस्या सुतलमदस्या युगमदस्या वारिद्रमदस्या मक्क  
रामदस्या २ रोहिममदस्या २ सोममदस्या सागरमदस्या २ नगरमदस्या २ वठगरमदस्या २ तिमिमदस्या २ तिमिद्रुममदस्या २ नक्कमदस्या २ तन्दु  
तगरा २ जलममदस्या २ दारिममदस्या २ मापिकमदस्या २ लम्भामदस्या २ पताङ्कमदस्या २ पताकपताकमदस्या २ ये वाप्यग्ये तयाप्रकारास्त मदस्या ।  
अथ कतिविधा मदस्या २ ? मदस्या द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-अस्त्रिकच्छपा मासकच्छपाश्च । तपत्ते कच्छपा । अथ कतिविधा याहा २ ।  
अथ पञ्चविधा मससा विधिपथा-पुलगा धुणगा सीमागारा तपत्ते याहा । अथ कतिविधा मकरा ? । मकरा द्विविधा प्रज्ञप्ता शु

एगगारा प०, सेत सुसुमारा । जेयावन्ते तहप्पगारा ते समासन् दुविहा पणत्ता, तजहा-संमुच्छिमा य  
 गप्पवक्कतिया य तयण जे ते संमुच्छिमा ते सहे नपुसका, तयणं जे ते गप्पवक्कतिया ते तिविहा प०,  
 तजहा इत्थी पुरिसा नपुसगा । एतसिण एवमाइयाण जलयरपचिदियतिरिस्कजोणियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं  
 अण्ठंतरसजाडुलकोट्ठिणीप्पमुहसयसहस्सा भवंतीति मस्कायं । सेतं जलयरपचिदिय० । से कित थल  
 यरपचिदियतिरिस्कजोणिया २ ? दुविहा पणत्ता, तजहा चउप्पयद्यलयरपचिदियतिरिस्कजोणिया परि  
 सप्पथलयरपचिदियतिरिस्कजोणिया य । से कितं चउप्पथलयरपचिदियतिरिस्कजोणिया २ ? चउत्तिहा  
 पणत्ता, तजहा एगखुरा दुखुरा गलीपया सणप्फया । से कित एगखुरा २ ? अण्णेगविहा पणत्ता, त०  
 अस्सा अस्सतरा धांरुगा गद्वेता गीरस्करा कदलगा सिरिकदलगा व्यावत्ता । जेयावन्ते तहप्पगारा । सेत

गढामकरा मत्स्यमकराद्य । तयते मकरा । अथ कतिविधा जिजुमारा ? । जिजुमारा एकाकारा मज्झसास्तयते जिजुमाराः । ये वाप्यन्ते त  
 याप्रकारास्ते समासतो द्विविधा मज्झसा । समूर्च्छिमाद्य गर्भव्युत्क्रान्तिकाद्य । तत्र यएते समूर्च्छिमास्ते समासत मव नपुसका । तत्र यएते गर्ज  
 व्युत्क्रान्तिकास्ते त्रिविधा मज्झसा । स्त्रिय पुरुषा नपुसका । एतादृशानामेवमादीना जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाना पर्याप्तापर्याप्तानामर्धत्र  
 योदशजातिकुलकोटियोनिप्रमुखगतसदृशानि प्रवन्तीति आस्यातम् ॥ तएते चलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिका । अथ कतिविधा स्थलचरपञ्चेन्द्रि  
 यतिर्यक्योनिका ? । स्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिका द्विविधा मज्झसा । तद्यथा-चतुप्पदस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिका । परिसर्पतस्थलचर  
 पञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिका । अथ कतिविधाचतुप्पदस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिका ? । चतुप्पदस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिकाश्चतुर्विधा । मज्झ  
 सा । तद्यथा-एकसुरा द्विसुरा गगनोपदा सनखपदाश्च । अथ कतिविधा एकसुरा ? । एकसुरा अनेकविधा मज्झसा । तद्यथा-अद्या अद्यतरा

एगसुरा । से कितं दुखुरा २ ? झुणेगविहा पखत्ता, तजहा-उहा गोणा गवया रोज्जा समया सहिसां सवरा वराहा झ्या एलगा रुह सरन्न चमर कुरग गोकसुमाई सेत दुखुरा । से कित गनीपया २ ? झुणे गविहा पखत्ता, तजहा हत्यो हत्योयणा मकुणहत्यो खग्गा गद्दा । जेयावखे तहप्यगारा । सेत गनीपया । से कित सणफ्या २ ? झुणेगविहा पखत्ता, तजहा सीहा वग्घा टीविया झुच्छा तरच्छा परस्परा सिया ला सुणगा कोलवणगा (ग्रथा ५००) कोकतिया ससगा चित्तगा विह्वलगा । जेयावखे तहप्यगारा । सेत सणफ्या । तसमासनं दुविहा पखत्ता, तजहा समुच्छिमाय गप्पवक्कतियाय । तत्यण जे ते समुच्छिमा ते सखे णपुसगा, तत्यण जे ते गप्पवक्कतिया ते तिविहा पखत्ता, तजहा इत्थी पुरिसा नपुसगा । एएसिण एवमादियाण थलयरपचिदियतिरिस्कजोणियाण पज्जतापज्जत्ताण दसजाइकुलकोट्ठिजोणिप्पमुहु

घोटका गदना गौररा कन्दलका श्रीकन्दलका आवर्ताय । ये वाप्यन्ते तथाप्रकारा । तएते एकसुरा । अथ कतिविधा द्विसुरा ? । द्विसुरा अनेकविधा प्रज्जता । तद्यथा-उग्र गोणा गवया रोहा शयका सहिया शयका वराहा अजा एलका सरव शरजाश्चमरा कुरङ्गा गोकर्णदिका स्तपते उक्ता द्विसुरा । अथ कतिविधा गण्डीपदा ? । गण्डीपदा अप्यनेकविधा प्रज्जता । तद्यथा-इत्थी गण्डक मुकनइत्थी खद्दा गगहा येवाप्यन्ते तथाप्रकारा उक्ता गण्डीपदा । अथ कतिविधा सनसपदा ? । सनसपदा अनेकविधा प्रज्जता तद्यथा-सिहा व्याघ्रा द्वीपिनो ऋषा नरचव परशरा इयाला विराला द्यान कोला कोकतय सशका चित्रका विद्राला येवाप्यन्ते तथाप्रकारासर्वे सनखा । ते समासतो द्विविधा प्रज्जता । तद्यथा-समुच्छिमाय गर्मयुत्कान्तिकाय । तत्र ये समुच्छिमास्ते सर्वे नपुसका । तत्र यएते गजशूरक्रान्तिकास्ते त्रिविधा प्रज्जता । तद्यथा-रिप पुत्तपा नपुसका । एतेपामेवमादीना स्थलधरपल्वेन्द्रियतियेक्योत्तिकाना पर्यासापर्यासाना दशजातिकुलकोटियोनिप्रमु

सयसहस्रसा-हवतीति मरकाय । सेत चउप्यथलयरपचिदियतिरिक्कजोणिया । से कितं परिसप्यथलयर  
पचिदियतिरिक्कजोणिया २ ? दुविहा पसत्ता, तजहा उरपरिसप्यथलयरपचिदियतिरिक्कजोणिया जुय  
परिसप्यथलयरपचिदियतिरिक्कजोणिया य । से कित उरपरिसप्यथलयरपचिदियतिरिक्कजोणिया २ ? च  
उविहा पसत्ता, तजहा अही अयगरा आसालिया महोरगा । से कित अही २ दुविहा पसत्ता, तजहा  
दहीकरा य मंडलिणो य । से कित दहीकरा २ ? अणंगविहा पसत्ता, तजहा आसीविसा दिठोविसा  
उगगविसा भोगविसा तयाविसा लालाविना उरसासविसा गरुसप्या सेठसप्या कउदरा दझ  
पुप्फा कोलाहा मेलिमिदा सेसिदा जेयायसे तहप्यगारा । सेत दहीकरा । से कित मंडलिणो २ ? अणंग  
विहा पसत्ता, तजहा दिहागा गणसा कसाहीया वडला चित्ताणिणो मंडलिणो अही अहिसिलागा वाय

राजतसहस्राणि भवतीति आख्यातमुक्ताद्युत्पद्यस्यारचरपञ्चेन्द्रियतियक्योनिका । अथ कतिविधा परिसंपत्त्यलचरपञ्चेन्द्रियतियक्योनि-  
का २ । परिसंपत्त्यलचरपञ्चेन्द्रियतियक्योनिका द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-उर परिसंपत्त्यलचरपञ्चेन्द्रियतियक्योनिका जुनपरिसंपत्त्यल  
चरपञ्चेन्द्रियतियक्योनिकाद्य । अथ कतिविधाउर परिसंपत्त्यलचरपञ्चेन्द्रियतियक्योनिका २ । उर परिसंपत्त्यलचरपञ्चेन्द्रियतियक्योनि  
काद्यतुविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-अहप अनगरा आसालिगा महोरगा । अथ कतिविधा अहय २ । अहयो द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-दहीकरा  
य मुकुलिनद्य । अथ कतिविधा दहीकरा २ । दहीकरा अनेहाविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-आजोविपा, दद्वीविपा उग्रविपा जोगविपा त्यथाविधा  
लालाविपा उच्छ्वासविपा निदासविपा कणसपर्य एवठसपा कादुन्वरा दंष्ट्रपुप्फा कोलाहा मेलिमिदा सनिन्दा ये पाप्यस्ये तथाप्रकारा  
स्तरते दहीकरा । अथ कतिविधा मुकुलिन २ । मुकुलिनो अनेकविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-दिन्या गानसा कसाहीका बहुला चित्रालिन मयन

क्रागा । जेयावणे तहप्पगारा । सेत्त यडलिया । सेत्त झही । से कित्त झयगरा ? एगामारा पणत्ता ,  
 सेत्त झयगरा । से कित्त आसालिया ? कहिण भते । आसालिया समुच्छति ? गोत्रमा । अतोमणस्ससे  
 ते अहाडजेसु दीवेषु णिव्वाएण पणरससु कम्मजमीसु वाचातं पळ्ळ पचसु महाविदेहेसु चक्कवहीलथावा  
 रसु वासुटेवखधावारसु वलदेवसधावारसु मळलियसधावारसु महामळलियसधावारसु गामनिवेसेसु नगर  
 निवेसेसु निगमनिवेसेसु खेळनिवेसेसु मळनिवेसेसु टोणमहनिवेसेसु पट्टणनिवेसेसु आग  
 रनिवेसेसु आसमनिवेसेसु संवाहननिवेसेसु रायहाणिनिवेसेसु एएसिण चेत्र विणासेसु । एत्यण आसालिया  
 समुच्छति । जहन्नेण अगुलस्स असखिज्जङ्गागमितीए उगाहणाए, उक्कोसेण वारसजोयणाइ । तहाणुळ  
 व च ण विक्कन्नवाहणेण भूमिदालिहाण समुठेति । असली मिच्छदिठी अत्ताणी अतोमुज्जतदाउया

लिन अरप अहिण्डगाला वायुकुहागा । येचाप्यये तथाप्रकार । तपते मुकुलिता । उक्ता यदप । अथ कतिविधा अचगरा ? । अचगरा  
 एकाकारा प्रज्ञा तपते अचगरा । अथ कत्यासालिगा ? । कथ जदत्त । आसालिगा समुल्लि । गीतम । अत्तमंध्ये मनुष्यत्वेयस्याद्वयतीय  
 पु द्वीपसु निध्यांयात पळ्ळदशसु कम्मजमिपु पुनथ पळ्ळ मत्तादिदेषु चळ्ळत्तिरत्तथावारसु वामदेयरत्तथावारसु वलदेयरत्तथावारसु माणत्तनि  
 करत्तथावारसु महामाणत्तनिकरत्तथावारसु ग्रामनिवेजपु नगरनिवेजपु ग्रामनिवेजपु सेटनिवेजपु कयटनिवेजपु मउम्भनिवेजपु दोगमुरानि  
 वेजपु पत्तननिवेजपु आकरनिवेजपु प्राश्रमनिवेजपु सयापनिवेजपु राजधानीनिवेजपु पतेपामेव विनाजपु । पतेपु आजाडिना समुत्तनि । ज  
 ययताहुलस्या सस्येपजागमात्रया उवाहणया । उक्कपेत्तो हादज्ञापोनानि तथानुरूप च विक्रमवाहुस्या (विक्षारस्यूनत्वात्त्या) भूमि दलयित्वा  
 समुतिष्ठते । असिद्धिमिथ्यादृष्टि अद्यानी अत्तमुद्भूतायुरेव कारा करोति । तथे आसालिया । अथ कतिविधा मशोरगा ? । मशोरगा भनेज



चेव कालं करेइ । सेतं व्यासालिया । से कितं महोरगा २ ? अणुणेगविहा पसुत्ता ; तंजहा अत्येगइया  
अगुल पि अगुलपुहत्तिया वि वियच्छिवि वियच्छिपुहत्त पि रयणी पि रयणीपुहत्तिया पि कुच्छपि कुच्छ  
पुहत्तिया वि धणं पि धणपुहत्तिया वि गाउयं पि गाउयपुहत्तिया वि जोयण पि जोयणपुहत्तिया वि  
जोयणसय पि जोयणसयपुहत्तिया वि जोयणसहस्स पि तंण थले जाता जले विचरति थले विचरति ते  
णल्यि इहं बाहिरएसु दीवसमुहेसु हवति जेयावन्ने तहप्पगारा सेतं महोरगा । ते समासउ दुव्विहा प०,  
त०-सम्मच्छिमाय गप्पवक्कतिया य । तत्यण जेतं समुच्छिमा ते सव्वे णपसगा, तत्यण जेतं गप्पवक्कतिया  
तेण तिचिहा प०, त०-इल्यी पुरिसा नपुसगा, एसिण एवमाइयाणं वज्झत्ता २ णं उरपरिसप्पाण दसजा  
इकुलकोणीजोणिप्पमुहसयसहस्सा हवती ति मस्कायं । सेत उरपरिसप्पा । से कितं न्ययपरिसप्पा २ अणुणेग

विधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-सन्त्येके केचन अकुलमपि अकुलपृथक्कमपि वितस्तिमपि वितस्तिपृथक्क मपि अरविमपि अरविपृथक्कमपि कुक्षिमपि  
कुक्षिपृथक्क धनुरपि धनु पृथक्क गव्यतिमपि गव्यतिपृथक्क योजनमपि योजनपृथक्क योजनशतपृथक्क योजनसहस्र मपि तेन  
स्थलेजाता जलेविचरन्ति तनेह बाह्येपु द्वीपसमुद्रेपु प्रवर्तन्ति ये वाप्यन्ये तथाप्रकारा । तस्ये महोरगा । ते समासतो द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्य  
था-सम्मच्छिमाद्य गन्धवृत्कान्तिकाश्च । तत्र ये सम्मूर्ध्वमास्ते सर्वे नपुसका । तत्र ये गन्धवृत्कान्तिकास्ते त्रिविधा तद्यथा स्त्री पुरुषा नपुंसकलि  
ङ्गा । एतेपानेवमादीना पथोपापर्याप्तानामुर परिसर्पणा दशजातिकुलकोटियोनिप्रमुखशतसहस्राणि प्रवर्तन्तीति मयाख्यात । उक्ता उर परिस  
प्पा । अथ कतिविधा नृजपरिसर्पा १ मुजपरिसर्पा अनेकविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-नकुला सेहा. सरटा सहा सरटा सारा सरा परोडला  
विद्यमरा मूपा मङ्गसा पडला इला वीरविरापिला जाहा चतुष्पादिका ये वाप्यन्ये तथाप्रकारा । ते समासतो द्विविधा प्रज्ञप्ता । स

विहा पयत्ता, तजहा-णडला सेहा सरफा सहा सरठा सारा खारा घरोडला विस्संनरा मूसा मंगसा पड  
लाडया ल्यारविरालिया जाहा चडप्याडया जे यावळे तहप्यगारा। ते समासले दुविहा प०, त०-समृच्छि  
मा य गप्पवक्कतियाय, तत्यण जेते समृच्छिमा ते सव्हे नपुसगा, तत्यण जेते गप्पवक्कतिय तेण तिविहा  
पयत्ता, तजहा-डल्यो पुरिसा नपुसगा, एएसिण एवमाडयाण पज्जत्ता २ ण नुयपरिसप्पाण नवजाडुकुल  
कोफिजोणिप्पमुहसयसहस्साड हवतीति मरकाय। सेत्त नुयपरिसप्पथलयरपचेटियतिरिस्कजोणिया। सेत्त  
परिसप्पथलयरपचिदियतिरिस्कजोणिया। से कित खहरपचिदियतिरिस्कजोणिया २ चउविहा पयत्ता,  
तजहा-चम्मपरकी लोमपरकी समग्गपरकी वियतपरकी। से कित चम्मपरकी २ अण्णेगविहा प०, त०  
वग्गुली जलोया अफिहा नाररुपरकी जीवजीवा समुहवायसा कसुत्तिवा पस्किवेराली जेयावखे तहप्यगा  
रा ॥ सेत्त चम्मपरकी ॥ से कित लोमपरकी २ अण्णेगविहा प०, त० ढका कका कुरला वायसा चक्का

मूर्खिमाथ गर्त्यूटकान्तिकाथ। तत्र ये समूर्खिमास्ते सर्वे नपुसका। तत्र ये गर्त्यूटकान्तिकास्ते त्रिविधाः प्रज्ञाः। तद्यथा-स्थिय पुरुषा नपुस  
का। एतेपामेवमादीना पर्याप्तापर्याप्ताना नुजपरिसर्पाणा नवजानि कुलकाटियोनिप्रमुखान्तसहस्राणि भवन्तीति आख्यात। उक्ता नुजपरिसर्व  
दस्थलचरपण्डेन्द्रियतियक् योनिका। उक्तो परिसर्पस्त्यलचरपण्डेन्द्रियतियक् योनिकाः। अथ कतिविधा स्रचरपण्डेन्द्रियतियक् योनिकाः?। रा  
चरपण्डेन्द्रियतियक् योनिका चतुर्विधा प्रज्ञाः। तद्यथा-चर्मपक्षी लोमपक्षी समुद्रकपक्षी विततपक्षी। अथ कतिविधाद्यमपक्षिण, चर्मपक्षिणो  
नेकविधा प्रज्ञाः। तद्यथा-वकुला जलीका अगिदला नारगहपक्षी जीवजीवा समुद्रवायसा, कण्ठिया पक्षिविराली ये वाप्यन्ये तथाप्रकारा।  
तएते चर्मपक्षिण ॥ अथ कतिविधा लोमपक्षिण?। लोमपक्षिणोनेकविधा प्रज्ञाः। तद्यथा-ढुङ्गा कङ्गा कुरला वायसा चक्काङ्गा इत्या कुल

गा हंसां कलहंसा पायहंसा रायहंसा झुफ्ना सेह्रीवगा वलागा पारिष्यवाकुंचा सारसा मेसरा मसूरा मज्ज  
रा सतवच्छा गहरा पोळरीया कागा कामियुगा वजुलगा तित्तिरा वहमा लावगा कवीया कविजला पारे  
वया चिठ्ठा चासा कुकुठा सुगा वरहिणा मदनसला कोकिला सेरहा वरेल्लगमादी । सेत्त लोमपस्की । से  
कित समुगपस्की २ एगागारा प०, तेण नल्लि डहं वाहिरएसु दीवसमुहेसु जवति । सेत्तं समुगपस्की । से  
कित विततपस्की २ एगागारा प०, तेण नल्लि डहं वाहिरएसु दीवसमुहेसु हवति । सेत्त विततपस्की । तेस  
मासडे दुविहा प०, त० संमुच्छिमा य गल्लवक्कतिया य । तल्लणं जेते समुच्छिमा तेसवे नपुसगा तल्लणं  
जेते गल्लवक्कतिया तेण तिविहा प०, त० इल्लो पुरिसा नपुसगा । एसिण एवमाडयाणं खहयरपचिदि  
यतिरिक्कजोणियाण पज्जत्तापज्जत्ताणं वारसजाईकुलकोणिजोणिप्पमुहसयसहस्सा हवतीतिमस्काय, सत्तठ

हसा राजहसाः अह्रा सेहीयगा वकुला पारिषवा कुब्जा सारसा मेसरा मसूरा शतवत्सा गहरा पीयूरीका कागा कामि  
गा वज्जुलका तित्तिरा वर्तका लावकाः कपोता कपिञ्जलाः परिवका चटका चाशा कुकुटा शुका यंहिण मदनशरा कोकिलाः सेरहा  
वरल्लगा एवमादय तस्येते लोमपक्षिण । अथ कतिविधा समुद्रपक्षिण १ । समुद्रपक्षिण एकाकारा मज्जसा । तेनु वाद्येषु द्वीपसमुद्रेषु भवन्ति । त  
स्येते समुद्रपक्षिण । अथ कतिविधा वियतपक्षिण २ । वियतपक्षिण एकाकारा मज्जसा । तेनु वाद्येषु द्वीपसमुद्रेषु भवन्ति । तस्येते वियतपक्षि  
ण । ते समासतो द्विविधा मज्जसा समुच्छिमाद्य गर्भ्युत्क्रान्तिकाद्य । तत्र ययते समुच्छिमास्ते सर्वं नपुसका । तत्र ययते गर्भ्युत्क्रान्तिकास्ते  
त्रिविधा मज्जसा तद्याथा-खिप पुरुषा नपुसकाद्य । एतेपामेवमादीना खचरपण्ढेन्द्रियतिर्यक्योनिकानापार्याप्तापार्याप्ताना द्वादशजातिकुल को-  
टियोनिप्रमुखशतसहस्राणि भवन्तीति आख्यातम् ॥ सप्तजाति कुलकोटयो भवन्ति नवार्चत्रयोदशानि चैव ॥ दशदश च भवन्ति नवकास्तथा द्वा

जाडकुलक्रोडिज्जतिनवद्युष्टतेरसाहच । दसदसयहोतिणवगा तहवारसचेववोधव्या ॥१॥ सेत्त खहयरपचिदिद्य  
तिरिस्कजोणिया ॥ सेत्त पचिदियतिरिस्कजोणिया ॥ सेत्त तिरिस्कजोणिया ॥ से कित मणुस्सा २ दुविहा ५०,  
त० समूच्छिममणुस्सा य गप्पवक्कतियमणुस्सा य । से कित समूच्छिममणुस्सा, कहिण ज्ञते । समूच्छिम  
मणुस्सा समुच्छति १ गोयमा । अतो मणुस्सखेत्ते पणयालीसाए जोयणसयसहसेसु अहडजोसु दीवसमहेसु  
पखरससु कम्मज्जमीसु तीसाए अकम्मज्जमीसु तप्पन्नाए अतरदीवएसु गप्पवक्कतियमणुस्साण चेव उच्चारसु  
वा पासवणेषु वा खलेसु वा सिधाणएसु वा वत्तेसुवा पित्तसु वा पूएसुवा सुक्केसुवा सुक्कपोगलपरिसाहेसु  
वा विगयकलेवरेसु वा डल्यीपरिससजोएसु वा नगरनिठमणसु वा सहेसु चेव असुडएसु ठाणेषु एत्यण सम  
च्छिममणुस्सा समुच्छति, अगुलस्स असखिज्जनागमितीए उगाहणाए असन्ती मिच्छदिठी अन्नाणी  
सखाहि पज्जतीहि अपज्जत्तगा अतोमुज्जत्ताउया चेव काल करति । से कित गप्पवक्कतियमणुस्सा २

दश चेव बोद्धव्या. ॥ १ ॥ तएते खवरपचेन्द्रियतियक्योनिका । तएते पचेन्द्रियतियक्योनिका ॥ तएते तियक्योनिका ॥ अय कतिविधा मनु  
या ? । मनुया अप्यनेकविधा प्रज्जसा । तथाया-समूच्छिममनुया । गजव्युत्क्रान्तिकमनुया । अय कतिविधा समूच्छिममनुया । कस्मित्तु जद  
त्त । समूच्छिममनुया समूच्छन्ति । गौतमान्तमनुयहेत्ते पब्बचत्वारिंशत्तमे योजनशतसहस्रेषु सार्धदीपेषु द्वीपसमुद्रेषु पब्बदशासु कर्मजूमिषु त  
थीगकर्मजूमिषु पट्पब्बादशान्तरदीपेषु गज्युत्क्रान्तिकमनुयाणां चेव उच्चरेषु वा समीपेषु वा श्लेषसु वा शिघ्राण केषु ( नासामलेषु ) वा दान्त  
पु पित्तेषु वा पूर्येषु वा शुक्रेषु वा शुक्रपुद्गलपरिसाहेषु वा विगतकलवरेषु वा स्त्रीपुरुषसयोगेषु वा नगरनिष्ठमनेषु वा सर्वेषु चेवाशुचिषु  
स्थानेषु एतषु समूच्छिममनुया समूच्छन्ति । अहुलस्य असख्येयजागमावया अवगाहत्या असन्निध्यादृष्टिरज्ञानी सर्वोहि पर्याप्तमपर्याप्तका अन्त

गा हंसां कलहसा पायहंसा रायहंसा झुझा सेहीवगा वलागा पारिष्यवाकुंचा सारसा मेसरा मसूरा मऊ  
रा सतवच्छा गहरा पोंफरीया कागा कामियुगा वंजुलगा तित्तिरा वहमा लावगा कवीया कविजला पारे  
वया चिफगा चासा कुकुना सुगा वरहिणा मदनसला कोकिला सेरहा वरेल्लगमादी । सेत्त लोमपस्की । से  
कित समुगपस्की २ एगागारा प०, तेण नल्य डह बाहिरएसु दीवसमुद्देसु नवति । सेत्त समुगपस्की । से  
कित विततपस्की २ एगागारा प०, तेण नल्य डह बाहिरएसु दीवसमुद्देसु हवति । सेत्त विततपस्की । तेस  
मासडे दुविहा प०, त० समुच्छिमा य गप्पवक्कतिया य । तल्यण जेते समुच्छिमा तेसवे नपुसगा तल्यण  
जेते गप्पवक्कतिया तेण तिविहा प०, त० इल्यो पुरिसा नपुसगा । एएसिण एवमाडयाणं खहयरपचिंदि  
यतिरिक्कजोणियाण पज्जत्तापज्जत्ताण वारसजाईकुलकोणिजोणिप्पमुहसयसहस्सा हवतीतिमस्काय, सत्तठ

हसा रात्रहसा अहा सेहीवगा वकुला पारिष्यवा कुल्वा सारसा मेसरा मसूरा मयूरा शतवत्सा गहरा पीयठरीका. कागा कामियु  
गा वज्जुलका तित्तिरा वर्तका लावकाः कपोता कपिज्जला परिवका. चटका चाशा कुकुटा शुका. वरिंण मदनशला कोकिलाः सेरहा  
वरल्लगा एवमादय सएते लोमपक्षिण । अथ कतिविधा समुद्रपक्षिण ? । समुद्रपक्षिण सकाकारा. मज्झसा । तेनु वाद्येषु द्वीपसमुद्रेषु भवन्ति । त  
एते समुद्रपक्षिण । अथ कतिविधा वियतपक्षिण ? । वियतपक्षिण सकाकारा. मज्झसा । तेनु वाद्येषु द्वीपसमुद्रेषु नवन्ति । तएते विततपक्षि  
ण । ते समासतो द्विविधा मज्झसा समुच्छिमाश्च गर्जव्युत्क्रान्तिकाश्च । तत्र यएते समुच्छिमास्ते सर्व नपुसका । तत्र यएते गर्जव्युत्क्रान्तिकास्ते  
त्रिविधा मज्झसा तट्या-स्थिय पुरुषा नपुसकाश्च । एतेपामेवमादीना खचरपब्बेन्द्रियतियेक्योनिकानापार्याप्तापार्याप्ताना द्वादशाजातिकुल-को-  
दियोनिममुखातसहस्राणि नवन्तीति आख्यातम् ॥ सप्तजाति कुलकोटयो नवन्ति नवार्चयोदशानि चैव ॥ दशदश च नवन्ति नवकास्तथा द्वा

जाडकुलकोक्रिज्जतिनवव्युत्तरसाहच । दसदसयहोतिणवगा तहवारसचेववोधव्हा ॥१॥ सेत्त खहयरपचिदिय  
 तिरिस्कजोणिया ॥ सेत्त पचिदियतिरिस्कजोणिया ॥ सेत्त तिरिस्कजोणिया ॥ से कित मणुस्सा २ दुविहा प०,  
 त० समूच्छिममणुस्सा य गप्पवक्कतियमणुस्सा य । से कित समूच्छिममणुस्सा, कहिण भते ! समूच्छिम  
 मणुस्सा समुच्छति ? गोयमा । अतो मणुस्सखेत्ते पणयालीसाए जोयणसयसहसेसु अट्ट डजोसु दीवसमहेसु  
 पयारससु कम्मन्नमीसु तीसाए अकम्मन्नमीसु ठप्पन्नाए अतरदीवएसु गप्पवक्कतियमणुस्साण चेव उच्चारसु  
 वा पासवणेसु वा खलेसु वा सिधाणएसु वा वत्तेसु वा पितेसु वा पूएसु वा सुक्केसु वा सुक्कपोगलपरिसाहेसु  
 वा विगयकलेवरेसु वा इत्थीपरिससजोएसु वा नगरनिठमणसु वा सहेसु चेव असुडएसु ठाणसु एत्यण सम  
 च्छिममणुस्सा समुच्छति, अगुलस्स असखिज्जनागमितीए उगाहणाए असन्ती मिच्छदिठी अन्नाणी  
 सखाहि पज्जतीहि अपज्जाहगा अतोमुज्जाहया चेव काल करति । से कित गप्पवक्कतियमणुस्सा २

दश चेव बोद्धव्या ॥ १ ॥ तएते खवरपवेन्द्रियतियं क्योनिका । तएते पवेन्द्रियतियं क्योनिका ॥ तएते तियं क्योनिका ॥ अय कतिविधा मनु  
 य्या ? । मनुय्या अप्यनेकविधा प्रज्ञा । तद्यथा-समूच्छिममनुय्या गजव्युरक्रान्तिकमनुय्या । अथ कतिविधा समूच्छिममनुय्या । कस्मिन्नु जद  
 त । समूच्छिममनुय्या समूच्छन्ति । गौतमात्तमनुय्येके पञ्चवत्वारिंशत्तमे योजनगतसहस्रेण सार्धेहीपेण द्वीपसमुद्रेण पञ्चदशसु कर्मजूमिषु त  
 थैवाकर्मजूमिषु पट्पञ्चादशान्तरहीपेण गज्व्युरक्रान्तिकमनुय्याणां चेव उत्तरेण वा समीपेण वा श्लेषसु वा शिधाण केण (नासामलेषु) वा धान्त  
 पु पितेण वा पूयेण वा शुक्रेण वा शुकपुद्गलपरिसाहेण वा विगतकलेवरेण वा खीपुरुषसयोगेण वा नगरनिधुमनेण वा सर्वेषु चैवाशुचिषु  
 स्थानेषु एतेषु समूच्छिममनुय्या समूच्छन्ति । अहुलस्य असख्येयज्ञागमात्रया अवगाहनया असन्निध्यादृष्टिरज्ञानी सर्वोहि पर्याप्तमपर्याप्तका अन्त

गा हंसां कलहंसा पायहंसा रायहंसा अन्ना सेहीवगा बलागा पारिष्यवाकुंचा सारसा मेसरा मसूरा मऊ  
रा सतवच्छा गहरा पोछरीया कागा कामियुगा वजुलगा तित्तिरा वहमा लावगा कवोया कविजला पारे  
वया चिफगा चासा कुकुटा मदनसला कोकिला सरहा वरेहगमादी । सेत्त लोमपस्की । से  
कित समुगपस्की २ एगागारा प०, तेणं नल्य डह बाहिरएसु दीवसमुहेसु जवति । सेत्त समुगपस्की । से  
कित विततपस्की २ एगागारा प०, तेण नल्य डह बाहिरएसु दीवसमुहेसु हवति । सेत्त विततपस्की । तेस  
मासउं दुविहा प०, त० समुच्छिमा य गप्पवक्कतिया य । तल्यणं जेतं समुच्छिमा तेसंवे नपुसगा तल्यणं  
जेते गप्पवक्कतिया तेण तिविहा प०, त० इत्थी पुरिसा नपुसगा । एएसिण एवमाइयाणं खहरपचिदि  
यतिरिक्कजोणियाण पज्जत्तापज्जत्ताण वारसजाईकुलकोणिजोणिप्पमुहसयसहरसा हवतीतिमस्काय, सत्तठ

हसा राजहसा अहा सेहीयगा वकुला पारिहवा कुन्वा सारसा मेसरा मसूरा जतवत्सा गहरा पीणर्रीका. कागा कामियु  
गा वज्जुलका तित्तिरा वर्तका लावकाः कपोता कपिज्जला परिवका चटका चाशा कुकुटा शुकाः बहिंण मदनशला कोकिला. सरहा  
वरेहगा एवमादय सयंते लोमपक्षिण । अथ कतिविधा समुद्रपक्षिण ? । समुद्रपक्षिण एकाकारा प्रज्जसा । तेनु बाह्येषु द्वीपसमुद्रेषु भवन्ति । त  
एते समुद्रपक्षिण । अथ कतिविधा वियतपक्षिण ? । वियतपक्षिण एकाकारा प्रज्जसा । तेनु बाह्येषु द्वीपसमुद्रेषु भवन्ति । तएते विततपक्षि  
ण । ते समासतो द्विविधा प्रज्जसा समूर्द्धिमाथ गर्जब्बुत्कान्तिकाथ । तत्र यएते समूर्द्धिमास्ते सर्वं नपुसका । तत्र यएते गर्जब्बुत्कान्तिकास्ते  
त्रिविधा प्रज्जसा तद्यथा-स्थिय पुरुषा नपुसकाथ । एतेपामेवमादीना खरपष्केन्द्रियतियैक्योनिकानापार्याप्ताना द्वादशजातिकुल-को-  
टियोनिममुखसहस्रहाणि जयन्तीति आख्यातम् ॥ सप्तजाति कुलकोटयो प्रवन्ति नवार्धत्रयोदशानि धैव ॥ दशदश च जवन्ति नवकास्तथा द्वा

जाडकुलक्रोडिज्जतिनववृद्धतेरसाहच । दसदसयहोतिणवगा तहवारसचेवबोधवृद्धा ॥ १ ॥ सेत खहयरपचिदिय  
तिरिस्कजोणिया ॥ सेत पचिदियतिरिस्कजोणिया ॥ सेत तिरिस्कजोणिया ॥ सेत मणुस्सा २ दुविहा प०,  
त० समुच्छिममणुस्सा य गप्पवक्कतियमणुस्सा य । से कित समुच्छिममणुस्सा, कहिण भते ! समुच्छिम  
मणुस्सा समुच्छति ? गोयमा । अतो मणुस्सखेत्ते पणयालीसाए जोयणसयसहस्सेसु अट्ट डज्जेसु दीवसमहेसु  
पखरससु कम्मन्नमीसु तीसाए अकम्मन्नमीसु षण्णनाए अतरदीवएसु गप्पवक्कतियमणुस्साण चेव उच्चारसु  
वा पासवणेसु वा खलेसु वा सिधाणएसु वा वत्तेसु वा पित्तेसु वा पूएसु वा सुक्केसु वा सुक्कपोगलपरिसाहेसु  
वा विगयकलेवरेसु वा इत्थीपरिससजोएसु वा नगरनिठमणसु वा सहेसु चेव असुडएसु ठाणसु एत्यण समु  
च्छिममणुस्सा समुच्छति, अंगुलस्स असखिज्जनागमितीए उगाहणाए असन्नी मिच्छदिठी अन्नाणी  
सव्वाहि पज्जतीहि अपज्जत्तगा अतोमुज्जाउया चेव काल करति । से कित गप्पवक्कतियमणुस्सा २

दश चेव बोद्ध्या ॥ १ ॥ तएते खवरपचेन्द्रियतिर्यक्योनिका । तएते पचेन्द्रियतिर्यक्योनिका ॥ तएते तिर्यक्योनिका ॥ अय कतिविधा मनु  
ष्या ? । मनुष्या अप्यनेकविधा प्रज्जा । तद्यथा-समूहिममनुष्या । गज्ज्युत्तकान्तिकमनुष्या । अय कतिविधा समूहिममनुष्या । कस्मिन्नु जद  
न्त । समूहिममनुष्या समूहन्ति । गौतमात्तमनुष्येके पञ्चवत्वारिंशत्तमे योजनगतसहस्रेषु सार्धहीषेषु द्वीपसमुद्रेषु पञ्चदशसु कर्मजूमिषु त  
थैवाकर्मजूमिषु पट्पञ्चादशान्तरद्वीपेषु गज्ज्युत्तकान्तिकमनुष्याणां चेव उच्चरेषु वा समीपेषु वा शेषसु वा शिषाण केषु (नासामलेषु) वा वान्त  
पु पितृषु वा पूयेषु वा शुकुपुलपरिसाहेषु वा विगतकलेवरेषु वा स्त्रीपुरुषसयोगेषु वा नगरनिठमनेषु वा सर्वेषु चेवाशुचिषु  
स्थानेषु एतेषु समूहिममनुष्या समूहन्ति । अहुलस्य असख्येयजागमावया अवगाहनया असन्निध्यादुष्टिरज्जानी सर्वोद्दि पर्याप्तमपर्याप्तका अन्त



तिविहा पसन्ता, तंजहा-कम्मन्नूमिगा अंतरदीवया ? अंतरदीवया  
 अठावीसतिविहा पसन्ता, तजहा एगोरुया आहासिया वेसाणिया णगोली १ हयकन्ता गयकन्ता गोक  
 न्ता सक्कलिकन्ता २ आयंसमुहा मेढमुहा अयमुहा गोमुहा ३ असमुहा हत्थिमुहा सीहमुहा वग्घमुहा ४  
 आसकन्ता सीहकन्ता अकन्ता कखपाउरणा ५ उक्कामुहा मेहमुहा विज्जुमुहा विज्जादता ६ घणदंता लठ  
 दता गूढदता सुद्धदता ७ । सेत्त अंतरदीवगा । से कित अकम्मन्नूमिगा ? २ तीसतिविहा पसन्ता, तं०  
 पचहि हेमवण्हि पचहि हेरखवण्हि पचहि हरिवासेहि पचहि देवकुरुण्हि पचहि  
 जत्तरकुरुण्हि सेत्त अकम्मन्नूमिगा । से कित कम्मन्नूमगा ? २ पणसरसविहा पसन्ता, तंजहा पचहि ज़रहेहि  
 पचहि एरवण्हि पचहि महाविदेहेहि । ते समासउ दुविहा पसन्ता, तजहा आयरिया य मिलस्कु य । से

मुद्धतंकाथैव काल कुर्वन्ति । पय कतिविधा गर्जवुत्तकान्तिकमनुयाः ? १ गर्जवुत्तकान्तिकमनुया त्रिविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-कर्मन्नूमिगा अक  
 मन्नूमिगा अन्तरदीवयाद्य । अथ कतिविधा अन्तरदीवका ? १ अन्तरदीवका अष्टाविंशतिविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-गोसुका आमासिका वेसाणि  
 का तुन्दालिका हयकर्णा गजकर्णा गोकर्णा मकुलकर्णा अयमुखा गोमुखा अयमुखा इस्तिमुखा सिहमुखा व्याप्रमुखा अयकर्णा सिहकर्णा अककर्णा  
 कर्णपावरणा उल्कानुखा मेघमुखा विद्युन्मुखा विद्युद्दन्ता घनदन्ता लोष्टदन्ता गूढदन्ता शुद्धदन्ता । तपते अन्तरदीवगाः । अथ कतिविधा-अक  
 मन्नूमिगा ? १ अकर्मन्नूमिगास्त्रिंशद्विधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-पञ्चहिमवति पञ्चहिरगमे पञ्चहरिवासे पञ्चरम्यज्वासे पञ्चदेवकुत्तपु पञ्चउत्तरकुत्त  
 पु तपते अकर्मन्नूमिगा । अथ कतिविधा कर्मन्नूमिगा ? कर्मन्नूमिगा पञ्चदशविधाः प्रज्ञप्ता तद्यथा-पञ्चभिन्नरत्ने पञ्चरावते पञ्चमहाविदेहे  
 ते समासतो द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-आर्यमनुया स्रेष्ठमनुया । अथ कतिविधा स्रेष्ठमनुया अनेकविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-ज्ञ

कित मिलस्कू ? २ अणुगविहा पणत्ता, तजहा सगा जवण चिलाये सवर वहरकाय मुरुओहु अरुग णि  
 राग पक्कल णीय कुलस्क गोएहा सीहला पारस गोधअथ दमिल चिल्लल पुलिद हारीस दोववोक्काण गध  
 हारग वहलिय अज्जल रोम पास वउसा मलयाय वधुयाय सूयलि कुंकुणगमेअ पएहव मालव मगर  
 आआसिय कण वीरण रहासीस खसखासिय नेदूर मढ ओविलग लउस खउस क्कोक्कावा अरवागा ह्ण  
 रोमग नमस विलाय वासीन एवमादी ॥ सेत्तमिलस्कू से कित आयरिया ? आयरिया दुविहा पणत्ता,  
 तजहा इहिपत्तारिया य अणहिपत्तारिया य । से कित इहिपत्तारिया ? २ उविहा पणत्ता, तजहा—  
 अरहता चक्कवही वलदेवा वासुदेवा चारणा विजाहरा ॥ सेत्त हहिपत्तारिया ॥ से कित अणहिपत्तारि  
 या ? २ नवविहा पणत्ता, तजहा खेत्तारिया जानिअरिया कुलारिया कम्मरिया सिम्मरिया आसारिया  
 णाणारिया दसणारिया चरित्तारिया । से कित खेत्तारिया ? २ अठठवीसतिविहा पणत्ता, तजहा राय

का यवना विलाया शयरा ववरा काया अरुण्डा नडगा तीणगा पक्का नीपा कुलना गोएहा सीहला पारसा गोधअथा घमिला चि  
 ल्लगा पुलिन्दा हारीसा द्रोववकाणा नम्यहारका. वहलिया आयला रोमा पास वउसा मलवाया वधुवाया लउसा राउसा केकया अ  
 रवागा पूणा रोमगा नमस विलाया वासीया यवमादय । तएत्ते सेच्चा । अय कतिविधा आयका द्विविधा मच्चसा । अहिमन्त  
 अरुहिमन्तश्च । अय कतिविधा अरुहिमन्त अरुहिमन्त पट्टविधा मच्चसा । तद्यथा-आर्हता चक्रावर्त्ता वलदेवा वासुदेवा चारणा विद्याधरा  
 तएत्ते अहिमन्त । अय कतिविधा अरुहिमन्त ? । अरुहिमन्तो नवविधा मच्चसा तद्यथा-क्षेत्रायां जात्यायां कुलायां कर्मायां गिल्पायां प्रा  
 यार्यां नानायां दर्शनायां चरित्रायां । अय कतिविधा क्षेत्रायां क्षेत्रायां साद्वपञ्चविंशतिविधा मच्चसा तद्यथा-राजगृहनगरवम्याअङ्गमहता

गिहमगहचंपा अगमहतामलितिवगा य । कंचणपुरकलिंगा वाणारसि चैव कासीय ॥ १ ॥ साएयकोस  
 लागय पुरचकुसोरियकुसहा य । कंपिल पचाला अहिठत्ताजगलाचैव ॥ २ ॥ दारवतीयसुरठा मिहिलिचि  
 देहायवच्छकोसवी । नदिपुरसफ़िला नदिलपुरमेवमलया य ॥ ३ ॥ वइराऊवच्छवरणा अच्छातहमत्तियाव  
 डइसणा । सोत्तियमडयाचैदी वीडन्नयसिधुसोवीरा ॥ ४ ॥ मज्जरायसूरसेणा पावान्जगीयमासपुरिवहा ।  
 सावत्थीयकुलाणा कोठीवरिसंचलाढाय ॥ ५ ॥ सेयवियावियनगरी केयइअठ्ठचअरियन्नणिय । एत्थुप्प  
 त्तिजिणाण चक्कीणरामकण्हाणं ॥ ६ ॥ सेत्तखेत्तारिया ॥ से कित जाइअयारिया ? २ ठव्विहा पसत्ता,  
 तजहा—अवठ्ठायकलिदा विदेहावेदगाडय । हरियाचंचुणाचैव कएयाडप्पजाडनु ॥ ७ ॥ सेत्त जाइअपरि  
 याय ॥ से कित कुलारिया ? २ ठव्विहा पणत्ता, तजहा—उग्गा नोगा राइसा इस्कागा नाता कोरद्धा ।

वलिस्त्रिवद्गाथ । काञ्चनपुरकलिङ्गा वाराणसीचैवकाशीच ॥ १ ॥ साकेत कोसलका पुरचकुल सौरिककुशावर्त । काम्पिल्यपाञ्चाला अहिच्छत्राजा  
 म्नाथैव ॥ २ ॥ द्वारावतीचसुराष्ट्र मिथिलाविदेहावत्सकौशाभ्यो ॥ नन्दीपुरगण्डिहल्ये नदिलपुरमेवमल्लयाथ ॥ ३ ॥ वैराटमत्स्यवरणा अच्छा  
 तथासृत्तिकादशार्णो ॥ शोक्तिकावतीचचेटी वीतन्नयासिन्धुसोवीरा ॥ ४ ॥ मथुराचसूरसेना पापामङ्गीचमासपुरवहो ॥ श्रावस्तीचकुलाला कोटीव  
 पोचलाटाच ॥ ५ ॥ श्रुताम्यजावनगरी केकयस्यार्द्धमार्यामणतम् ॥ यस्मादेतेपुजिताना चकाशारामरुद्रानाम् ॥ ६ ॥ ते एते क्वेन्नार्यो ॥ अथ कति  
 विधा जात्यार्यो । जात्यार्यो पट्टविधा प्रज्जप्ता तद्यथा—आम्बष्टा कलिन्दा विदेहा वेदङ्गा हरिता वुत्तुणा पण्ठेता इज्जजातय । तस्ये जात्या  
 र्यो । अथ कतिविधा कुलार्यो । कुलार्यो पट्टविधा प्रज्जप्ताः । उया नोगा राजान इत्थाक्क ज्ञाता कीरवा । तस्ये कुलार्यो । अथ कतिवि  
 धा कर्मार्यो ? । कर्मार्यो अनेकविधा प्रज्जप्ताः तद्यथा—दोपिका सौप्तिका कापोंसिका सुत्तिवेयालिया भण्डवेयालिया कोलालिया नरवाहण

सेत्त कुलारिया ॥ से कित कम्मरिया ? २ अण्णेगविहा पसत्ता, तजहा-दोस्सिया सुत्तिया कप्पासिया मुत्तावेया जीया अरुवेयालिया कोलालिया नरवाहणिया जेयावसे तहप्पगारा । सेत्त कम्मरिया ॥ से कित सिप्परिया ? २ अण्णेगविहा पसत्ता, तजहा-तुसागा ततुवाया पहागारा देयका वरुका कठपाडयारा मज्जपाडयारा लत्तारा वत्तारा पप्पारा पोत्तारा लेप्पारा चित्तारा सखरा दत्तारा चत्तारा जिप्पगारा सेत्ता रा कोट्टिगारा जेयावन्ते तहप्पगारा ॥ सेत्त सिप्परिया ॥ से कित त्रासारिया ? २ जेण अरुमागहाए त्रा साए त्रासति, जल्यविय णं वत्तोलीवी पवत्तड वत्तीएण लिवीए अठारसविहे लेस्कविहाणे पसत्ते, तजहा वत्तीजवणाणिया दासापरिसा खरुही पुक्करसारिया भोगवडया पहराडया अत्तस्करिया अत्तरपुठिया वेणडया निरुहडया अत्तलिवी गणिवलिवी गधव्वलिवी अयासलिवी माहेसरी दोमिली पोलिदी ॥ १८ ॥ सेत्त त्रासारिया ॥ से कित नाणारिया ? २ पचविहा पसत्ता, तजहा-अग्निविबोहियनाणारिया सुचना

या ये वाप्ये तथाप्रकारा । अथ कतिविधा शिल्पाया । तुक्कागा तत्तुवाया पहाकरा देवका वरुहा काष्टपाटुकाकरा लवकारा वत्ताकरा प्रभाकरा पोत्तारा लथारा चित्रकरो शास्करा दत्तकरा प्रगडारा लिज्जमकारा ( कटकरा ) सेत्तारा कोट्टिकरा । ये वाप्ये तथाप्रकारा । तगते शिल्पाया । अथ कतिविधा ज्ञानाया ? । ज्ञानायां ये अर्द्धमागधीज्ञाया प्रापन्ते यत्रैय त्रास्सणीलिपि प्रवर्तते तस्यां त्रास्सण्या लिप्यामष्टादशविधे लेख्यविधाने प्रवर्तते । तद्यथा-ब्रह्मो यवनानी दासपुरुषाया खरुही पुक्करसारिका भोगवती अन्तरिक्षका अक्षरपुष्टिका वेणकीया निद्रिका अङ्कलिपि गणितलिपि गत्यवलिपि आदर्शलिपि माहेश्वरी दोमिलीलिपि पोलिन्दीलिपि तस्ये भाषायां । अथ कतिविधा ज्ञानायां ? । ज्ञानायां पञ्चविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-अभिनिदोषज्ञानायां श्रुतज्ञानायां अवधिज्ञानायां मन पर्यन्तज्ञानायां

णारिया नृहिनाणारिया मणपञ्जवनाणारिया केवलनाणारिया ॥ सेतं नाणारिया ॥ सेतं दंसणारिया ? २  
दुविहा पसुत्ता, तजहा-सरागदसणारिया य वोयरागदसणा ० । से कितं सरागदंसणारिया य ? २ दस  
विहा पसुत्ता, तजहा-निस्सगुवदेसरुई आणारुडसुत्तवीयरुडचेव । अन्निगमवित्थारुई किरियासंखेव  
म्सरुई ॥ १ ॥ नूयत्येणाडधियया जीवाजीवायपुसुपावच । सहस्समुडयासवस वरोयवेयडएसणिस्सग्गो २ ॥  
जाजिणदिठेत्तावे चउत्तिहेसहहाडसयमेव । एमेवणस्सहत्तिणायहो ॥ ३ ॥ एएचेव उत्तावे,  
उवदिठेजोपरेणसहह । उउमत्येणजिणेव उवएसरुडत्तिणायहो ॥ ४ ॥ जोहेउमयाणतो अणारोयएपव  
यणतु । एमेवणस्सहत्तिय एसोआस्सरुईनामा ॥ ५ ॥ जोसुत्तमहिज्जतो सुएणउगाहडउसम्मत्त । अणेणवा  
हिरेणव सोसुत्तरुडत्तिनायहो ॥ ६ ॥ एगपएणेगाड पदाइजोपसरुईउसम्मत्त । उदड्वत्तिस्सविदू सोवीयरुइ  
त्तिनायहो ॥ ७ ॥ सोहोडअन्निगमसरुई सुयनाणजस्स । अत्थत्तिदिठ एकारसअण्णाइ पडस्सगादिठिवात्तय ॥ ८ ॥

केवलज्ञानार्थोऽयं । अथ कतिविधा दर्शनार्थः द्विविधा प्रज्ञा । तद्यथा-सरागदर्शनार्थो वीतरागदर्शनार्थोऽयं । अथ  
कतिविधा सरागदर्शनार्थः ? सरागदर्शनार्थो दशविधा । तद्यथा-निसर्गोपदेशरुचिआज्ञारुचिब्रूतस्सुत्तवीयरुचयथ ॥ अन्निगमरुचि वि  
चाररुचि क्रियासत्त्वेषधर्मरुचय ॥ १ ॥ प्रुतार्थेनार्थगता जीवाजीवायपुसुपावच ॥ सहस्समत्थाश्रवसवरा एतेनिसर्गोविज्ञेया ॥ २ ॥ योजिनदृष्टान्  
प्राधान् चतुर्ध्वान् श्रद्धयातिस्वयमेव ॥ एवमेधनुवास्तीह निसर्गरुचिरितिज्ञातम् ॥ ३ ॥ एतानवचनावान् उपदिष्टान्य परंशसदिग्धे ॥ छट्ठस्ये  
नजिनेन उपदिष्टमतिस्सञ्जातथ्य ॥ ४ ॥ योहेतुमजानन्आद्यया रोचयत्तं प्रवचनतु ॥ एवमेधनुवास्तीह यथाज्ञारुचिर्नाम ॥ ५ ॥ योसूत्रमधीयानः  
श्रुतेनधावागृहतेसम्यक्त्तम् ॥ अह्नेनचसवाद्येन सूत्ररुचिस्तुविज्ञेय ॥ ६ ॥ एकपदेऽनेकानिपदानि य प्रसरतिसम्यक्त्तम् । उदकेद्वितिलिङ्गिदु सर्वोज

दद्यात्तस्यैवा सद्यप्यप्राणेहिजससउवल्लहा । सद्यैहिणयविहीहि वित्यारुडडित्तिनायवो ॥ १ ॥ दसणनाणच्च  
रित्ते तवविणएससमिडुगुतीसु जोकिरियाजावरुइसो खलुकिरियारुइनामा ॥ १० ॥ छुणत्तिगगहियकुदिठी  
सखेवरुडडित्तिहोडनायवो । छुविसारनुपवयणे छुणत्तिगगहिनयसेसु ॥ ११ ॥ जोअत्थिकायकम्म सुयधम्मखलु  
चरित्तयम्मच सहडडिजिणात्तिहिय सोधम्मरुडडित्तिनायवो ॥ १२ ॥ परमत्थसथवोवा सुदिठपरमत्थसेवणावा  
वि । वावत्तकुदसणवज्जाणाय सम्मत्तसदहणा ॥ १३ ॥ निसिकियनिक्कखिय णिव्वित्तिगिक्काअमूडडिठीय उववू  
हथिरीकरणे वच्छल्लपप्तावणेअण्ठ ॥ १४ ॥ सेत्त सरागटसणारिया । से कित वीयरगदसणारिया ? २ दु  
विहा पणत्ता , तजहा उससतकसायवीयरगटसणारिया खीणकसायवीतरागदसणारियाय । से कित  
उवसतकसायवीतरागटसणारिया ? २ दुविहा पणत्ता, तजहा पढमसमयउवसतकसायवीतरागदसणारि

रुविरित्तिज्ञातव्य ॥ १ ॥ समवत्थानिगमसहवि श्रुतज्ञानजनवतियस्य । अयतोदुष्टमेकादशाङ्गानि प्रकीर्णकादिदृष्टिवादश्च ॥ ८ ॥ द्रव्याणां सर्वज्ञावा  
सर्वप्रमाणेष्वप्यस्य उपलब्ध्या ॥ सर्वज्ञायनयविधिभि विस्ताररुधिरसविज्ञय ॥ ८ ॥ द्वातन्त्रानचरिते तपोविनयेमवसमितिगुप्तिपुत्र ॥ य दुर्योद्धाव  
रुव सखलुक्रियारुविनामा ॥ १० ॥ अनजिगुहीतकुदुष्टि सदैपरुविप्रवर्तिज्ञातव्य ॥ अत्रिसारप्रवचने अनजिगुहीतशोयेषु ॥ ११ ॥ योस्तिक्कायक  
मं श्रुतधर्मवचरित्रधर्मच ॥ अदृष्टातिजिनाभिहित सधर्मरुचिज्ञातव्य ॥ १२ ॥ परमार्यसल्लोवा सुदुष्टपरमार्यसेवनीवापि ॥ व्यापन्नकुदशोनवज ना  
चसम्पददशानाथ ॥ १३ ॥ तपते सरागदशानाथ । अथ कर्तविधा वीतरागदशानाथ ? १ वीतरागदशानाथ । तद्यथा-उपशान्त  
कपायवीतरागदशानाथ । वीतरागदशानाथ । अथ कर्तविधा उपशान्तकपायवीतरागदशानाथ ? १ उपशान्तकपायवीतरागदशानाथ । अथवा धरमत्तम  
नाथ द्विविधा प्रज्ञा । तद्यथा-प्रथमसमयोपशान्तकपायवीतरागदशानाथ । अथसमयोपशान्तकपायवीतरागदशानाथ । अथवा धरमत्तम

या अथपठमसमयउवसंतकसायवीतरागदंसणारिया, अहवा चरिमसयउवसंतकसायवीतरागदंसणारिया  
 य अथचरिमसमयउवसंतकसायवीतरागदंसणारिया य । से कितं खीणकसायवीतरागदंसणारिया ? २ दु  
 विहा पसुत्ता, तजहा लउमत्यखीणकसायवीतरागदंसणारिया केवलखीणकसायवीतरागदंसणारिया य ।  
 से कित लउमत्यखीणकसायवीतरागदंसणारिया ? २ दुविहा पसुत्ता, तजहा सयंवुछुलउमत्यखीणकसाय  
 वीतरागदंसणारिया बुद्धवोहियलउमत्यखीणकसायवीतरागदंसणारिया । से कित सयवुछुलउमत्यखीणक  
 सायवीतरागदंसणारिया सयवुछुलउमत्यखीण० दुविहा पसुत्ता, तजहा पठमसमयसयंवुछुलउमत्यखीणक  
 सायवीतरागदंसणारियाय अथपठमसमयसयंवुछुलउमत्यखीणकसायवीतरागदंसणारिया, अहवा चरिमसमय  
 सयवुछुलउमत्यखीणकसायवीतरागदंसणा० अथचरिमसमयसयवुछुलउमत्यखीणकसायवीतरागदंसणारिया

योपज्ञान्तकपायवीतरागदज्ञानार्यो अचरमसमयोपज्ञान्त कपायवीतरागदज्ञानार्यो ? । क्षीणकपा  
 यवीतरागदज्ञानार्यो द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-लुट्ठस्यक्षीणकपायवीतरागदज्ञानार्यो केवलक्षीणकपायवीतरागदज्ञानार्यो । अथ कतिविधा-  
 लुट्ठस्यक्षीणकपायवीतरागदज्ञानार्यो ? । लुट्ठस्यक्षीणकपायवीतरागदज्ञानार्यो द्विविधा प्रज्ञप्ता- स्वयदुल्लुट्ठस्यक्षीणरुपायवीतरागदज्ञानार्यो  
 बुद्धवोचितलुट्ठस्यक्षीणकपायवीतरागदज्ञानार्यो । अथ कतिविधा स्वयदुल्लुट्ठस्यक्षीणकपायवीतरागदज्ञानार्यो प्रज्ञप्ता ? । स्वयदुल्लुट्ठस्यक्षीण  
 कपायवीतरागदज्ञानार्यो द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-प्रथमसमयस्वयदुल्लुट्ठस्यक्षीणकपायवीतरागदज्ञानार्यो अथमसमयस्वयदुल्लुट्ठस्यक्षीणकपा  
 यवीतरागदज्ञानार्यो । अथवा चरमसमयस्वयदुल्लुट्ठस्यक्षीणकपायवीतरागदज्ञानार्यो अचरमस्वयदुल्लुट्ठस्यक्षीणकपायवीतरागदज्ञानार्यो । त  
 यते स्वयदुल्लुट्ठस्यक्षीणकपायवीतरागदज्ञानार्यो । अथ कतिविधा बुद्धवोचितलुट्ठस्यक्षीणकपायवीतरागदज्ञानार्यो । बुद्धवोचितलुट्ठस्यक्षीण





द्वमसमयसजोगिकेवलखीणकसायवीतरागदंसणारियाय । अहवा चरिमसमयसजोगिकेवलखीणकसायवीतरागदंसणारियाय अचरिमसमयसजोगिकेवलखीणकसायवीतरागदंसणारियाय । सेत्तं सजोगिकेवलखीणकसायवीतरागदंसणारिया । से कितं अजोगिकेवलखीणकसायवीतरागदंसणारिया ? २ दुविहा पसत्ता, तजहा पढमसमयअजोगिकेवलखीणकसायवीतरागदंसणारिया अपढमसमयअजोगिकेवलखीणकसायवीतरागदंसणारियाय, अहवा चरिमसमयअजोगिकेवलखीणकसायवीतरागदंसणारिया अचरिमसमयअजोगिकेवलखीणकसायवीतरागदंसणारिया य । नेत्त अजोगिकेवलखीणकसायवीतरागदंसणारिया । सेत्तं केवलखीणकसायवीतरागदंसणारिया । सेत्त खीणकसायवीतरागदंसणारिया । सेत्तं वीतरागदंसणारिया । सेत्तं दंसणारिया । से कितं चरित्तारिया ? २ दुविहा पसत्ता, तजहा—सरागचरित्तारिया वीतरागचरित्तारिया । से कित सरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पसत्ता, तजहा—सुज्जमसपरायसरगचरित्तारियाय वाय

वीतरागदर्शनार्थो द्विविधा. प्रज्ञप्ता तद्यथा-प्रथमसमयायोगिकेवलक्षीणकपायवीतरागदर्शनार्थो अग्रथमसमयायोगिकेवलक्षीणकपायवीतरागदर्शनार्थो अथवा चरमसमयायोगिकेवलक्षीणकपायवीतरागदर्शनार्थो अवरमसमयायोगिकेवलक्षीणकपायवीतरागदर्शनार्थश्च । तयत्ते अयोगिकेवलक्षीणकपायवीतरागदर्शनार्थो । तयत्ते केवलक्षीणकपायवीतरागदर्शनार्थो । तयत्ते क्षीणकपायवीतरागदर्शनार्थो । तयत्ते वीतरागदर्शनार्थो । अथ कतिविधाश्चरित्रार्थो ? चरित्रार्थो द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-सूक्ष्मसपरायसरगचरित्रार्थो वादरसपरायसरगचरित्रार्थो । अथ कतिविधा सूक्ष्मसपरायसरगचरित्रार्थो सूक्ष्मसपरायसरगचरित्राया द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-प्रथमसमयसूक्ष्मसपरायसरगचरित्रार्थो अग्रथमसमयसूक्ष्मसपरायसरगचरित्रार्थो अथवा सूक्ष्मसपरायसरगचरित्रार्थो द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-सूक्ष्मसपरायसरगचरित्रार्थो विज्ञादमानार्थो । तयत्ते

रसपरायसरागचरित्तारियाय । से कित सुज्जमसंपरायसरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णा, तंजहा-  
पढमसमयसुज्जमसंपरायसरागचरित्तारिया अपढमसमयसुज्जमसंपरायसरागचरित्तारिया य, अहवा चरिम  
समयसुहुमसंपरायसरागचरित्तारिया अचरिमसमयसुज्जमसंपरायसरागचरित्तारियाय । अहवा सुज्जमसंपरा  
यसरागचरित्तारिया दुविहा पण्णा, तजहा सकिउस्समाणाय विसुज्जमाणाय सेत्त सुज्जमसंपरायसरा  
गचरित्तारिया । से कित वायरसंपरायसरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णा, तजहा पढमसमयवायर  
संपरायसरागचरित्तारिया अपढमसमयवायरसंपरायसरागचरित्तारिया य अहवा चरिमसमयवायरसंपरा  
यसरागचरित्तारिया अचरिमसमयवायरसंपरायसरागचरित्तारिया य अहवा वायरसंपरायसरागचरित्तारि  
या दुविहा पण्णा, तजहा पण्णाई य अपण्णाई य सेत्त वायरसंपरायसरागचरित्तारिया सेत्त सरागचरि  
त्तारिया । से कित वीतरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णा, तजहा उवसतकसायवीतरागचरित्तारिया  
खीणकसायवीतरागचरित्तारिया य से कित उवसतकसायवीतरागचरित्तारिया ? २ दुविहा प०, तंजहा

सुल्लसंपरायसरागचरित्तार्या । अथ कतिविधा वादरसंपरायसरागचरित्तार्या वादरसंपरायसरागचरित्तार्या द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा प्रथमसमय  
वादरसंपरायसरागचरित्तार्या अथमसमयवादरसंपरायसरागचरित्तार्याश्च । अथवा चरमसमयवादरसंपरायसरागचरित्तार्या अचरमसमयवादर  
संपरायसरागचरित्तार्याश्च । अथवा वादरसंपरायसरागचरित्तार्या द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-प्रतिगातिका अप्रतिगातिकाश्च । तपते वादरसंपरा  
यसरागचरित्तार्या तपते सरागचरित्तार्या । अथ कतिविधा वीतरागचरित्तार्या ? १ वीतरागचरित्तार्या द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-उपशान्तक  
पायवीतरागचरित्तार्या क्षीणकपायवीतरागचरित्तार्या । अथ कतिविधा उपशान्तकपायवीतरागचरित्तार्याः २ । उपशान्तकपायवीतरागचरित्तार्या

पढमसमयउवसंतकसायवीतरागचरित्तारिया अउपढमसमयउवसतकसायवीतरागचरित्तारिया य अउहवा चरिम  
समयउवसतकसायवीतरागचरित्तारिया अउचरिमसमयउवसतकसायवीतरागचरित्तारिया य सेत उवसतक  
सायवीतरागचरित्तारिया । से कित खीणकसायवीतरागचरित्तारिया २ दुविहा पसत्ता , तजहा लउमत्य  
खीणकसायवीतरागचरित्तारिया केवलखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य से कित लउमत्यखीणकसायवी  
तरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पसत्ता , तजहा सयवुद्धउमत्यखीणकसायवीतरागचरित्तारिया वुद्धवो  
हियलउमत्यखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य से कित सयवुद्धउमत्यखीणकसायवीतरागचरित्तारिया ? २  
दुविहा प० , तजहा पढमसमयसयवुद्धखीणकसायवीतरागचरित्तारिया अउपढमसमयसयवुद्धउमत्यखी  
णकसायवीतरागचरिया य , अउहवा चरिमसमयसयवुद्धउमत्यखीणकसायवीतरागचरित्तारिया अउचरिम  
समयसयवुद्धउमत्यखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य । सेत सयवुद्धउमत्यखीणकसायवीतरागचरित्तारिया

द्विविधा प्रज्ञा । तद्यथा-प्रथमसमयोपशान्तकपायवीतरागचरित्रायां अथमसमयोपशान्तकपायवीतरागचरित्रायांश्च । अथवा चरमसमयोप  
शान्तकपायवीतरागचरित्रायां अथरमसमयोपशान्तकपायवीतरागचरित्रायांश्च । तपते उपशान्तकपायवीतरागचरित्रायां । अथ कतिविधा द्वीण  
कपायवीतरागचरित्रायां ? । द्वीणकपायवीतरागचरित्रायां द्विविधा प्रज्ञा । तद्यथा-लुटस्यद्वीणकपायवीतरागचरित्रायां केवलनीणकपायवीत  
रागचरित्रायांश्च । अथ कतिविधा लुटस्यद्वीणकपायवीतरागचरित्रायांश्च ? लुटस्यद्वीणकपायवीतरागचरित्रायां द्विविधा प्रज्ञा । तद्यथा-स्वयवुद्धल  
स्यद्वीणकपायवीतरागचरित्रायां युद्धवोचितलुटस्यद्वीणकपायवीतरागचरित्रायां अथ कतिविधा स्वयवुद्धलस्यद्वीणकपायवीतरागचरित्रायां  
द्विविधा प्रज्ञा । तद्यथा-प्रथमसमयस्वयवुद्धद्वीणकपायवीतरागचरित्रायां अथमसमयस्वयवुद्धद्वीणकपायवीतरागचरित्रायांश्च । अथवा चरमसमय



पठमसमयसजोगिकेवलखीणकसायवीतरागचरित्तारिया अथपठमसमयसजोगिकेवलखीणकसायवीतराग  
चरित्तारिया य, अथवा चरिमसमयसजोगिकेवलखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य अथचरिमसमयसजो-  
गिकेवलखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य। सेतं सजोगिकेवलखीणकसायवीतरागचरित्तारिया। से कितं  
अजोगिकेवलखीणकसायवीतरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पसत्ता, तंजहा—पठमसमयअजोगिकेवल-  
खीणकसायवीतरागचरित्तारिया य अथपठमसमयअजोगिकेवलखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य, अथवा  
चरिमसमयअजोगिकेवलखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य अथचरिमसमयअजोगिकेवलखीणकसायवीत-  
रागचरित्तारिया य सेत अजोगिकेवलखीणकसायवीतरागचरित्तारिया। सेतं केवलखीणकसायवीतराग  
चरित्तारिया। सेत खीणकसायवीतरागचरित्तारिया सेत वीतरागचरित्तारिया। अथवा चरित्तारिया पचद्वि-  
हा पसत्ता, तंजहा—सामाअयचरित्तारिया लेनुवठावणीयचरित्तारिया परिहारविसुध्दिरित्तारिया सुजम-  
सपरायचरित्तारिया अथस्कायचरित्तारिया य। से कित सामाअयचरित्तारिया ? २ दुविहा पसत्ता, तंजहा

तयते सयोगिकेवलखीणकपायवीतरागचरित्तार्यो। अथ कतिविधा अयोगिकेवलखीणकपायवीतरागचरित्तार्यो। अयोगिकेवलखीणकपायवीतरागचरि-  
त्रार्यो द्विविधा प्रज्ञप्ता। तद्यथा--प्रथमसमयायोगिकेवलखीणकपायवीतरागचरित्तार्यो अथप्रथमसमयायोगिकेवलखीणकपायवीतरागचरित्तार्यो। अ-  
थवा चरिमसमयायोगिकेवलखीणकपायवीतरागचरित्तार्यो अथचरिमसमयायोगिकेवलखीणकपायवीतरागचरित्तार्यो। तयते अयोगिकेवलखीणकपायवी-  
तरागचरित्तार्यो। तयते केवलखीणकपायवीतरागचरित्तार्यो। तयते खीणकपायवीतरागचरित्तार्यो। तयते वीतरागचरित्तार्यो। अथवा चरित्तार्यो प-  
चविधा प्रज्ञप्ता। तद्यथा--सामयिकचरित्तार्यो केदोपस्यानीयचरित्तार्यो परिहारविसुध्दिरित्तार्यो सुखमसपरायचरित्तार्यो अनार्यावचरित्तार्यो।

इतिरियं सामांइयचरित्तारियां अण्विकहियसामांइयचरित्तारियां थ । सेत्तं सामांइयचरित्तारियां । से कितं  
 तेनेवठावणीयचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तजहा-साडयारा तेनेवठावणीयचरित्तारिया निरुडयारा  
 तेनेवठावणीयचरित्तारियां । सेत्तं तेनेवठावणीयचरित्तारियां । से कितं परिहारविमुद्धियचरित्तारिया ? २  
 दुविहा पण्णत्ता, तजहा-निव्विस्समाणपरिहारविमुद्धियचरित्तारिया निव्विठकाडयपरिहारविमुद्धियचरित्तारिया  
 रियाय । सेत्तं परिहारविमुद्धियचरित्तारिया । से कितं सुज्जमसपरायचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता,  
 तजहा सकलिस्समाणसुज्जमसपरायचरित्तारिया विसुज्जमाणसुज्जमसंपरायचरित्तारियाय सेत्तं सुज्जमसपरा  
 यचरित्तारिया । से कितं अहस्कायचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तजहा ठउमत्थ अहस्कायचरित्तारिया  
 केवलिव्विअहस्कायचरित्तारियाय सेत्तं अहस्कायचरित्तारिया सेत्तं अणुण्हिपत्तारियां सेत्तं

अथ कतिविधा सामयिकचरित्रायां सामायिकचरित्रायां द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-इतरसामयिकचरित्रायां अथक्रियतसामयिकचरित्रायां थ । तय  
 ते सामयिकचरित्रायां । अथ कतिविधाअदोपस्थानीयचरित्रायां द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-सातिचारान्धेदोपस्थानी  
 यचरित्रायां निरतिचारान्धेदोपस्थानीयचरित्रायां । तय ते अदोपस्थानीयचरित्रायां । अथ कतिविधा परिहारविशुद्धिकचरित्रायां ? परिहारवि  
 शुद्धिकचरित्रायां द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-निर्वश्यमानपरिहारविशुद्धिकचरित्रायां निर्विदकायकपरिहारविशुद्धिकचरित्रायां थ । तय ते परिहारवि  
 विशुद्धिकचरित्रायां । अथ कतिविधा सूक्ष्मसपरायचरित्रायां सूक्ष्मसपरायचरित्रायां द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-उपेक्ष्यमानसूक्ष्मसपरायचरित्रायां  
 विशुद्धमानसूक्ष्मसपरायचरित्रायां थ । तय ते सूक्ष्मसपरायचरित्रायां । अथ कतिविधा यथास्यातचरित्रायां द्विविधा प्रज्ञप्ता  
 तद्यथा-कथ्यस्यास्यातचरित्रायां केवलचरित्रायां थ । तय ते यथास्यातचरित्रायां । तय ते चरित्रायां-तय ते अणुण्हिपत्तायां-तय ते व्यायां ।

आगरिया सेतं कम्पन्नमिगा सेतं गङ्गवक्त्रंतित्रा सेतं मणुस्मा से कितं देवा २ चउहिहा प०, तजहा नत्र  
 णवासी वाणमतरा जोडसिया वेमाणिया से कितं नत्रणवासी २ नत्रणवासी दसविहा पसत्ता, तजहा अतु  
 रकुमारा नागकुमारा सुवसुकुमारा विज्जुकुमारा अग्गिकुमारा दीवकुमारा उदहिकुमारा दिसाकुमारा वाड  
 कुमारा थणियकुमारा तेसमासनुदुविहा पसत्ता, तजहा—पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय सेतं नत्रणवासी से  
 कित वाणमतरा २ अठविहा प०, तजहा किन्नरा क्रिपुरिसा महोरगा गंयव्हा जस्का रस्कासा नत्रा पिसा  
 या ते समासनुदुविहा पसत्ता, तजहा पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय संत्त वाणमतरा। से कितं जोडसिया २  
 पंचविहा पसत्ता, तजहा चडासूरागहनस्कत्तातारा तेसमासनुदुविहा पसत्ता, तजहा पज्जत्तगाय अप  
 ज्जत्तगाय। से कित जोडसिया से कित वेमाणिया २ दुविहा पसत्ता, तजहा कप्पोवग्गाकप्पाईयाय से कितं

तएते कर्मभूमिगा तएते गजच्युत्कान्तिका । तएते मनुष्या ॥ अय कतिविधा देवाः २ देवाद्यनुविधा. प्रज्जसा तद्यथा-जवनवासिनः वानव्यन्त  
 रा ज्योतिषिका वेमानिका । अय कतिविधा जवनवासिन २ जवनवासिनो दशविधा. प्रज्जसा तद्यथा-असुरकुमारा नागकुमारा सुवर्णकुमारा  
 विद्युत्कुमारा अग्निकुमारा होपकुमारा उदधिकुमारा दिशाकुमारा वायुकुमाराः सन्निद्रकुमारा । ते समासतो द्विविधा प्रज्जसा पर्याप्तगा  
 द्यापर्याप्तगाश्च । तएते जवनवासिन । अय कतिविधा वानव्यन्तरा २ वानव्यन्तरा अष्टविधाः प्रज्जसा । तद्यथा--किनराः क्रिपुरया महोरगा-  
 गन्धर्वा यक्षा रक्षा जूना पिशाचा. तएते समासतो द्विविधा प्रज्जसाः तद्यथा--पर्याप्तगाश्च अपर्याप्तगाश्च । तएते वानव्यन्तरा । अय कतिवि  
 धा ज्योतिषिका ज्योतिषिका पञ्चविधा प्रज्जसा. तद्यथा--चन्द्रमयग्रहनक्षत्रतारा. । त समासतो द्विविधा. प्रज्जसा तद्यथा-पर्याप्तगाद्यापर्याप्त  
 गाश्च । तएते ज्योतिषिका । अय कतिविधा वेमानिकाः २ वेमानिका द्विविधा प्रज्जसा. तद्यथा--कल्पोपगा कल्पातीनाश्च । अय कतिविधा

कप्योवगा२ वारसविहा पणत्ता, तजहा सोहम्मा ईसाणा सणकुमारा माहिदा वज्जलीया लंतया महासुक्ता  
 सहस्सारा ध्याणया पाणया धारणा शुश्रूया तेसमासनु दुविहा पणत्ता, तजहा पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय  
 सेत्त कप्योवगा से कित कप्याईया २ दुविहा पणत्ता, तजहा गेविज्जगाय शुणत्तरोववाडयाय से कित  
 गेविज्जगा २ नवविहा पणत्ता, तजहा हिठिमहिठिमगेविज्जगा हिठिमज्जिमगेविज्जगा हिठिमउवरिम  
 गेविज्जगा मज्जिमहिठिमगेविज्जगा मज्जिम२ गेविज्जगा मज्जिमउवरिमगेविज्जगा उवरिमहिठिमगेविज्ज  
 गा उवरिममज्जिमगेविज्जगा उवरिम२ गेविज्जगा तेनमासनु दुविहा पणत्ता, तजहा पज्जत्तगाय अपज्ज  
 तगाय सेत्त गेविज्जगा । से कित शुणत्तरोववाडया२ पचविहा पणत्ता, तजहा विजया वंजयता जयंता  
 अपराजिया सहसिद्धा तेसमासनु दुविहा पणत्ता, तजहा पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय सेत्त शुणत्तरोववा

ल्योपणा २ कल्योपणा दादवविधा प्रज्ञता । तद्यथा--मौषमी भुंजाना मन्तरकुमारा माहेन्द्रा द्रान्तनोका तातका मद्राशुका मद्राशारा का  
 नता प्राणता धारणा अच्युता । ते समासतो द्विविधा प्रज्ञता तद्यथा--पर्याप्तगाथापर्याप्तगाथा । तपत कल्योपणा । अथ कतिविधा कल्या  
 तीता २ कल्यातीता द्विविधा प्रज्ञता तद्यथा--यैवंपकाः अनुत्तरविमानिका य । अथ कतिविधा यैवंपकाः यैवंपका नयविधा प्रज्ञता तद्यथा--  
 अथाचोयैवंपका, अथोनध्यमयैवंपका, अपउपरितनयैवंपका, मध्यमाया यैवंपका, मध्यममध्यमयैवंपकाः मध्यमोपरितनयैवंपका, उप  
 रितनाचोयैवंपका उपरितनमध्यमयैवंपका उपरितनोपरितनयैवंपका ते मगाचो द्विविधा प्रज्ञता पर्याप्तगाथापर्याप्तगाथा । तपत यैवंपका ।  
 अथ कतिविधा अनुत्तरविमानिका २ अनुत्तरविमानिका पचविधा प्रज्ञता । तद्यथा-विजया वंजयता प्रज्ञताः अपराजिता सार्थापनिद्धा ।  
 ते समासतो द्विविधा प्रज्ञता तद्यथा--पर्याप्तगाथापर्याप्तगाथा । तपते कर्मांश । तपते अनुत्तरविमानिका । तपते वैमानिकाः । तपते देवा ।



इया सेत्त कप्पाईया सेत्त वेमाणिया सेत्त देवा सेत्त पंचिदिया सेत्त संसारसमावसुजीवपन्तवणा सेत्त जीव  
पन्तवणा सेत्त पन्तवणा ॥ पन्तवणाए पढम पय समत्तं ॥ १ ॥ कहिणं जते ! वाटरपुढवि  
काडयाण पज्जत्तगाण-ठाणा पसत्ता ? गोयमा । सठाणेणं छठसु पुढवीसु तंजहा-रयणप्पन्नाए सक्करप्प.  
न्नाए वालुयप्पन्नाए पकप्पन्नाए धूमप्पन्नाए तमप्पन्नाए तमतमप्पन्नाए अहेसत्तमाए ईसिप्पन्नाराए अहोलोए  
पायालेसु जवणेसु जवणपत्थकेसु निरएसु निरयावलियासु निरयपत्थकेसु उढलोए कप्पेसु विमाणेसु वि  
माणावलियासु विमाणपत्थकेसु तिरियलोए टकेसु कूकेसु सिंहरीसु पज्जारेसु विजएसु वस्करेसु  
वासेसु वासहरपट्टएसु वा वेलासु वेडयासु दारेसु तोरणेसु दीवेसु समुद्देसु एत्थणं वाटरपुढवीकाडयाणं  
पज्जत्तगाण ठाणा पसत्ता, उववाएण लोयस्स अएखेज्जइन्नागे समुग्घाएण लोयस्स अएसखेज्जं सठाणेणं

तएते पब्बेन्द्रिया । तएते संसारसमायत्तजीवप्रज्ञापना । तएते जीवप्रज्ञापना तएते प्रज्ञापना ॥ इति श्रीमदुपाध्याय रामचन्द्र गणि शिष्य  
नानकचन्द्र विरचिते जीवप्रज्ञापना स्यप्रथमपदानुवाद ॥ ख ॥

कौसन् भदत्त । वाटरपुथिवीकायिकाना पर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि । गीतम ? स्वस्थानेनाष्टासु पुथिवीषु तद्यथा--रत्नप्रभाया शंकरप्रभा  
या बालुकप्रभाया पट्टप्रभाया धूमप्रभाया तम प्रभाया तमस्तम प्रभायामहसत्तमायामीयद्भाग्नारायासघोलोके पातालेषु जवनेषु जवनप्रस्तरेषु  
नरकेषु नरकावलिकासु निरयप्रस्तरेषु ज्वाल्लोके कल्पेषु विमानेषु विमानावलिकासु विमानप्रस्तरेषु तिर्यजलोके टङ्गेषु कूटेषु जालेषु प्राग्नारेषु  
विजयेषु वज्रारेषु वासेषु वासहरपर्यतेषु वा घेलासु घेदिकासु दारेषु तोरणेषु द्वीपेषु समुद्देषु मतेषु वाटरपुथिवीकायिकाना पर्याप्ताना स्थाना  
नि पर्याप्तानि । तत्रैव वाटरपुथिवीकायिकानामपर्याप्ताना स्थानानि पयाप्तानि । उपपातेनापि सबलोके समुद्घातेन सर्वलोके सस्थानेन लोकस्या

यस्म अस्मै जाडनागे । कहिणं नत्ते ! वादरपुढविकाडयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पणत्ता ? गोयमा !  
 ता, उववाएण सङ्गलीए समुग्घाएण सङ्गलीए सठाणेण लोयरस अस्संखेजाडनागे । कहिण नत्ते ! सुक्कम  
 जत्तगा ते सङ्गे एगविहा अविसेसा अनानत्ता सङ्गलीयपरियावत्तागा पणत्ता समणाउत्तो ! कहिणं  
 ! वादरङ्गाउकाडयाण पज्जत्तगाण ठाणा पणत्ता ? गोयमा ! सठाणेण सत्तसु घणोदधीसु सत्तसु घ  
 थिवलएसु अहोलीए पायालेसु नवणंसु नवणपत्त्यङ्गेसु उहुलोयकप्पेसु विमाणेसु विमाणावलियासु  
 सरेसु सरपतियासु सरसरपतियासु तलाएसु संरसु नदीसु दहेसु वावीसु पुक्करिणीसु दीहियासु गंजालि  
 समुदंसु सवेसु चैव जलासएसु जलठाणेसु जलनूमिङ्गासु एत्थण वादरङ्गाउकाडयाण पज्जत्तगाणं

ने । कस्मिन् भदत्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां पर्वतानामपर्याप्तकानां स्थानानि प्रचक्षन्ति । गौतम सूक्ष्मपृथिवीकायिकायं पर्याप्तगा य  
 ान्ते सर्वं एकविधा अधिज्ञेया अनानाता सर्वतोऽक्षपर्याप्तगाः प्रचक्षन् । अमङ्गायुस्मिन् कस्मिन् प्रदत्त वादरापृक्कायिकानां पर्याप्तगा य  
 नेषु विमानावलिकासु विमानप्रस्तरेषु तिर्यक्लोके अथ येषु तद्वागेषु सरस्सु नदीषु इदेषु वापीषु पर्वतलोके कल्पे  
 रक्तिषु विलपक्तिषु निर्भरेषु विषुवरेषु पर्वतलोके सन्ति ॥ प ॥

पञ्चाशत्तमं गीतं पठ्यामः ॥ पञ्चाशत्तमं गीतं पठ्यामः ॥ कहिणं जन्ते ! वादरपुढवि  
 काश्याणं पञ्चाशत्तमं गीतं पठ्यामः ॥ गीतमा ! सठाणं तजहा-रयणप्यन्नाए सक्करप्प  
 नाए श्रावणप्यन्नाए पंक्कप्पन्नाए तमप्यन्नाए तमतमप्यन्नाए इत्तिप्पन्नाए इत्तिहोए  
 मायालेयं दायणं नयणप्यन्नेसु निरणसु निरयावलियासु निरयप्यन्नेसु उहोए कप्पेसु विमाणेसु वि  
 माणाप्यन्नेसु विमाणप्यन्नेसु तिरियलोए टंकेसु कूकेसु संलेसु सिहरीसु पज्जारेसु विजणसु वक्करेसु  
 द्राणेसु दामत्तरपन्नसु या वंलासु वेड्यासु दारेसु तोरणेसु दीवेसु समुद्देसु एत्थण वादरपुढवीकाड्याणं  
 पञ्चाशत्तमं गीतं पठ्यामः, उवयाएणं लोमस्स अगखेज्जइत्तणे समुग्घाएण लोमस्स अगखेज्जं सठाणेणं

तथात पञ्चविंशत्तमं गीतं पठ्यामः । तस्य जीवप्रज्ञापनाः तपते प्रज्ञापना ॥ इति श्रीमदुवाच्याय रामचन्द्र गणि शिष्य  
 भागवतम् विरचिते जीवप्रज्ञापना म्यप्रथमपदानुवादः ॥ ५० ॥

कारणं भवति । आदरपुण्यिकापिकानां पर्याणानां स्थापना प्रज्ञापना । गीतमा ॥ स्थानेनाष्टासु पर्यायेषु तद्यथा--रत्नप्रभाया शंकरप्रभा  
 या मातृकाप्रभायां पद्मप्रभायां भूषणप्रभायां तमप्रभाया तमस्तमाः प्रजायायसत्तमायामीयदप्रज्ञारायामचीलोकं पातालेषु प्रवनेषु प्रवनप्रस्तरेषु  
 मरुतेषु नरकान्तर्लकासु तिरयप्रस्तरेषु कल्पलोक कल्पसु विमानेषु विमानप्रस्तरेषु तिर्यकलोकं दृष्ट्व कूटेषु जलेषु प्राङ्गारेषु  
 तिग्गारेषु मत्तारसु धामसु भागवत्परमतेषु या वेलासु वेदिकासु दारेषु भोरणेषु दीपेषु समुद्देशे समुद्देशे वादरपुण्यिकापिकानां पर्याणानां स्थाना  
 तं पर्याणानां । तत्रैव आदरपुण्यिकापिकानामप्यर्थानां स्थानानि पर्याणानि । उपपत्तेनापि सर्वलोकं समुद्देशेन सर्वलोकं सत्त्वानेन लोकस्या

लोयस्स असखेज्जन्नागे । कहिणं नत्ते । वाटरपुढविकाडयाण अपज्जत्तगाणं ठाणा पसत्ता ? गोयमा । जत्येव वाटरपुढविकाडयाण पज्जत्तगाण ठाणा पसत्ता, तत्येव वाटरपुढविकाडयाण अपज्जत्तगाण ठाणा पसत्ता, उववाएण सव्वलोए समुग्घाएण सव्वलोए सठाणेण लोयस्स असखेज्जन्नागे । कहिणं नत्ते । सुज्जम पुढविकाडयाण पज्जत्तगाण अपज्जत्तगाणयठाणा पसत्ता ? गोयमा । सुज्जमपुढविकाडया जेपज्जत्तगा जे अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अनानत्ता सव्वलोयपरियावत्तगा पसत्ता समणाउसो । कहिणं नत्ते । वाटरआउकाडयाण पज्जत्तगाण ठाणा पसत्ता ? गोयमा । सठाणेण सत्तसु वणोदधीसु सत्तसु व णोदविचलएसु अहोलोए पायालेसु न्नवणपत्यहेसु उट्ठलोयकप्पेसु विमाणेसु विमाणावलियासु विमाणपत्यहेसु तिरियलोए अगहेसु तलाएसु सरसु नदीसु दहेसु वावीसु पुस्करिणीसु दीहियासु गंजालि यासु सरसु सरपतियासु सरसरपतियासु विलपतियासु उज्जरेसु जिज्जरेसु चिल्लेसु पल्लेसु वप्पिणं सु दी वेसु समुदंसु सव्वेसु चेव जलासएसु जलठाणेसु जलनूमिआसु एत्थण वाटरआउकाडयाणं पज्जत्तगाण सत्थयन्नागे । कस्मिन् भदत्त सूत्तपृथिवीकायिकाना पर्याप्तानामपर्याप्तकाना स्थानानि प्रज्ञप्तानि, गौतम सूत्तपृथिवीकायिकाय पयांसगा य अपपर्याप्तगस्ते सर्वे यकविद्या अविशोया अनाद्याता सर्वतोक्कपर्याप्तगा प्रज्ञप्ता श्रमणायुस्मान् कस्मिन् प्रदत्त वादराप्कायिकाना पर्याप्तगा य ना स्थानानि प्रज्ञप्तानि । गौतम सत्थानेन समसु यनोदायसु समसु यनोदविचलयेसु अंधिलोके पावालासु जवनेसु भवनप्रस्तरसु उर्ध्वलोके कल्पे पु विमानेषु विमानावलिकासु विमानप्रस्तरसु तिर्यक्लोके अवटसु तट्टाणेषु सरस्सु नदीसु इदेषु वापीसु पुष्करणीसु दीर्घिकासु गुज्जालिकानु स रसु सर सर पक्तिपु विलपक्तिपु निर्फरेसु विहारेसु पत्तवलसु वप्पेसु हीपेसु समुद्रेसु सर्वेषु चेव जलाज्ञयेसु जलस्थानेषु मतेषु वादराप्कायिकाना

सत्थयन्नागे । कस्मिन् भदत्त सूत्तपृथिवीकायिकाना पर्याप्तानामपर्याप्तकाना स्थानानि प्रज्ञप्तानि, गौतम सूत्तपृथिवीकायिकाय पयांसगा य अपपर्याप्तगस्ते सर्वे यकविद्या अविशोया अनाद्याता सर्वतोक्कपर्याप्तगा प्रज्ञप्ता श्रमणायुस्मान् कस्मिन् प्रदत्त वादराप्कायिकाना पर्याप्तगा य ना स्थानानि प्रज्ञप्तानि । गौतम सत्थानेन समसु यनोदायसु समसु यनोदविचलयेसु अंधिलोके पावालासु जवनेसु भवनप्रस्तरसु उर्ध्वलोके कल्पे पु विमानेषु विमानावलिकासु विमानप्रस्तरसु तिर्यक्लोके अवटसु तट्टाणेषु सरस्सु नदीसु इदेषु वापीसु पुष्करणीसु दीर्घिकासु गुज्जालिकानु स रसु सर सर पक्तिपु विलपक्तिपु निर्फरेसु विहारेसु पत्तवलसु वप्पेसु हीपेसु समुद्रेसु सर्वेषु चेव जलाज्ञयेसु जलस्थानेषु मतेषु वादराप्कायिकाना

॥ मं ॥

ठाणा पयत्ता, उववाएण लोयस्स अस्खेज्जडन्नागे । कहिणं नत्ते ! वायरञ्चाउकाडयाणं अपज्जात्तगाण ठा  
णा पयत्ता ? गोयमा ! जत्येव वादरञ्चाउकाडयाण पज्जात्तगाण ठाणा तत्येव वादरञ्चाउकाडयाणं अप  
ज्जात्तगाण ठाणा पयत्ता, उववाएणं सव्वलोए समुग्घाएण सव्वलोए सठाणंण लोयस्स अस्खिज्जन्नागे ।  
कहिण सुज्जमञ्चाउकाडयाण पज्जात्तापज्जात्ताणं ठाणा पयत्ता ? गोयमा ! सुज्जमञ्चाउकाडया जेय पज्जात्तगा  
जे अपज्जात्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अनाणत्ता सव्वलोए परियावन्नागा प०, समणाउत्तो ! कहिणं  
नत्ते ! वादरत्तेउकाडयाण पज्जात्तगाण ठाणा पयत्ता ? गोयमा ! सठाणंणं अत्तोमणुस्सखेत्ते अहुडज्जेसु  
दीवसमुद्देसु निव्वाधाए पन्तरससु कम्मन्नमीसु वाचाय पढुच्च पचसु महाविदेहेसु एत्थण वादरत्तेउकाडयाण  
पज्जात्तगाण ठाणा पयत्ता, उववाएण लोयस्स अस्खेज्जडन्नागे समुग्घाएण लोयस्स अस्खेज्जडन्नागे,  
सठाणंणं लोयस्स अस्खेज्जडन्नागे । कहिण नत्ते ! वादरत्तेउकाडयाणं अपज्जात्तगाणं ठाणा पयत्ता ? गो  
यमा ! जत्येव वादरत्तेउकाडयाण पज्जात्तगाण ठाणा तत्येव वादरत्तेउकाडयाणं अपज्जात्तगाण ठाणा प०,

पर्याप्तकाना स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन लोकस्य असंख्येयजाने । कस्मिन् भदत्त वादराप्कायिकानामपर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उप  
पातेन सबल्लोके समुद्घातेन सर्वल्लोके सत्थानेन लोकस्यासंख्येयजाने । कस्मिन् ज० सूत्ताप्कायिकाना पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि गीतम  
नूत्ताप्कायिका ये च पर्याप्तगा ये अपयाप्तगास्ते सर्वे एकविधा अविज्ञेया अनाज्ञाता सर्वल्लोके पर्यापन्नगा प्रज्ञप्ता अमणायुभन्त कस्मिन् ज० दत्त ।  
वादरत्तेज कायिकाना पर्याप्तगाना स्थानानि प्रज्ञप्तानि । गीतम । स्वस्थानेन अन्तर्मनुष्येत्ते अद्वैतनीयपु द्वीपसमुद्देशु निर्व्याप्यते पञ्चदशसु कर्म  
भूमिषु व्याघात प्रसीत्य पञ्चसु महाविदेहेषु एतेषु वादरत्तेज कायिकाना पर्याप्तकाना स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन लोकस्य असंख्येयजाने

उववाएण लोयस्स दीसु उहुकवाळेसु तिरियलोयतहेसमुग्घाएण सव्वलोए सठाणेण लोयस्स अस्सखेज्जाइ  
 नागे। कहिण भत्ते । सुज्जमतेउकाडयाण पज्जत्तगाण अपज्जत्तगाणय ठाणा पणत्ता ? गोयमा । सुज्जमतेउ  
 काइयाण जे पज्जत्तगा अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अनाणत्ता सव्वलोयपरियावन्नगा पणत्ता  
 समणाउसो । कहिण भत्ते । वादरवाउकाडयाण पज्जत्तगा ठाणा पणत्ता ? गोयमा ! सठाणेण सत्तसु  
 घणवाएसु सत्तसु घणवायवलएसु सत्तसु तणवाएसु सत्तसु तणवायवलएसु अहोलोए पायलेसु नवणेसु  
 नवनपत्येसु नवणविहेसु नवणनिक्कहेसु निरएसु निरयावलियासु निरयपत्येसु निरयविहेसु निरयनि  
 खुहेसु उहुलोयकप्पेसु विमाणंसु विमाणावलियासु विमाणपत्येसु विमाणविहेसु विमाणनिक्कहेसु तिरि  
 यलोएसु पाईणदाहिणउदीणसव्वेसु चेव लोगागासविहेसु लोगनिक्कहेसुय एत्थण वादरवाउकाडयाणं प  
 ज्जत्तगाण ठाणा पणत्ता , उववाएण लोयस्स अस्सखेज्जेसु नागेसु समुग्घाएण लोयस्स अस्सखेज्जनागेसु

समुद्धानेन लोकस्यासख्येयज्ञाने स्वस्थानेन लोकस्यासख्येयभागे । कस्मिन् प्रदत्त । वादरतेज कायिकानामपर्याप्तकाना स्थानानि प्रज्ञप्तानि । गौ  
 तम । यत्रैव वादरतेज कायिकाना पर्याप्तकाना स्थानानि प्रज्ञप्तानि तत्रैव वादरतेज कायिकानामपर्याप्तकाना स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन  
 सर्वलोके समुद्धानेन सर्वलोके स्वस्थानेन लोकस्यासख्येयभागे । कस्मिन् प्रदत्त । सूक्ष्माष्कायिकाना पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि ?  
 गौ० । सूक्ष्माष्कायिका ये च पर्याप्ता ये चापर्याप्तास्ते सर्वे एकविधा अविशेषा अनाज्ञाता सर्वलोके पर्यापन्ना प्रज्ञप्ता अमणायुजन् कस्मिन्  
 भदत्त । वादरतेज कायिकाना पर्याप्तकाना स्थानानि प्रज्ञप्तानि, गौतम । स्वस्थानेन अन्तर्मनुष्यकेने अद्भुततोयेषु द्वीपसमुद्रेषु निव्याचात प  
 ल्वद्वीपेषु कमन्नमिषु व्याचात प्रतीत्य पञ्चसु महाविदेहेषु वादरतेज कायिकाना पर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन लोकस्यासख्येयता

सृष्टाणेनं लीयस्स अस्संखेज्जेसुं ज्ञागेसु । कहिणं ज्ञते ! अपज्जत्तवाटरवाउकाइयाण ठाणा पस्सत्ता ? गोय  
मा । जत्थेव वाटरवाउकाइयाणं पज्जत्तगाण तत्थेव वाटरवाउकाइयाण अपज्जत्तगाणं ठाणा पस्सत्ता ।  
उववाएण सव्वलोए समुग्घाएण सव्वलोए । सृष्टाणेण लीयस्स अस्संखेज्जेसुं ज्ञागेसु । कहिणं ज्ञते ! सुज्जम  
वाउकाइयाण पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पस्सत्ता ? गोयमा ! सुज्जमवाउकाइयाणं जे पज्जत्तापज्जत्ताण ते  
सव्वे एगविहा अविसेसा अनाणत्ता सव्वलीयपरियावन्तगा पस्सत्ता समगाउसो ! कहिणं ज्ञते वाटरवण  
स्सडकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा प० ? गोयमा ! सृष्टाणेण सत्तसु घणोदहोसु सत्तसु घणोदहिवलएसु अहो  
लोए पायालेसु नवणेसु नवणपत्थेसु उहलोए कप्पेसु विमाणेसु विमाणावलियासु विमाणपत्थेसु तिरिय  
लोए अगंठेसु तलागेसु नदीसु वावीसु पुस्करिणीसु दीहियासु गंजालियासु सरेसु सरसरपतियासु सरपं  
तियासु विलपतियासु उज्जरसु निज्जरसु चिल्लेसु पल्लेसु दीविसु समुद्देसु सव्वेसुचेव जलास  
एसु जलठाणेसु एत्थण वाटरवणस्सडकाइयाण पज्जत्तगाण ठाणा पस्सत्ता । उववाएण सव्वलोए, समुग्घा

ने समुद्धानेन लोकस्यासथ्येयज्ञागे स्वस्थानेन लोकस्यासथ्येयज्ञागे । कस्मिन् जटन्त । वाटरतेज कायिकानामपर्योपानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि ?  
गीतम । यत्रैव वाटरतेज कायिकाना पर्योपाना स्थानानि तत्रैव वाटरतेज कायिकानामपर्योपाना स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपत्तेन लोकस्य  
द्वयोर्लोकपाटयो तिर्यक्लोकतदेकसमुद्धानेन सर्वलोके स्वस्थानेन लोकस्यासथ्येयज्ञागे । कस्मिन् जटन्त । सूक्ष्मेनैव कायिकाना पर्योपानानाम  
पर्योपानकाना च स्थानानि प्रज्ञप्तानि । गीतम सूक्ष्मेनैव कायिकाना ये पर्याप्तका अपपर्याप्तकास्त सर्वे एकविधा अविवेका अनाज्ञातास्सर्वलोके  
पर्योपाना प्रज्ञप्ताः श्रमण आपुष्मन् । कस्मिन् ज० । वाटरवायुकायिकाना पर्योपाना स्थानानि प्रज्ञप्तानि ? गी० सप्तसु पनवातेषु सप्तसु घन







देसज्ञाने, तिरियलोए अगळेसु तलाएसु वावीसु पुकरणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरसु सरपतियासु सरसरपतियासु विलपतियासु उज्जरेसु निज्जरेसु चिह्लेसु पल्लेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुहेसु सहेसुचेव जला सएसु जलठाणसु एत्यण तेइदियाण पज्जापज्जाण ठाणा पखत्ता, उववाएण लोयस्स असखेज्जइन्नागे समुग्घाएण लोयस्स असखिज्जइन्नागे सठाणेण लोयस्स असखेज्जइन्नागे । कहिण नत्ते । चउरिदियाण पज्जापज्जाण ठाणा पखत्ता ? गोयमा । उहुलोए तदेकदेसज्ञाने, अहोलोए तदेकदेसज्ञाने, तिरियलोए रेसु उज्जरेसु चिह्लेसु पल्लेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुहेसु सहेसुचेव जलासएसु जलठाणेसु एत्यण चउरि दियाण पज्जापज्जाण ठाणा पखत्ता । उववाएण लोयस्स असखेज्जइन्नागे समुग्घाएण लोयस्स अस खेज्जइन्नागे, सठाणेण लोयस्स असखेज्जइन्नागे । कहिण नत्ते ! पचिदियाण पज्जापज्जाण ठाणा प०

तदेकदेसज्ञाने अथोलोके तदेकदेसज्ञाने तिर्यक्लोके अवटेपु तक्रांगेपु वापीपु पुकरणीपु दीपिकासु गुज्जालिकासु सरस्सु सर पइत्तिकामु सरस्सर पइत्तिकामु विलपइत्तिकामु उतम्भरेपु निम्भरेपु चित्तलेपु पल्लेपु वप्पिणेपु हीपेपु समुद्रेपु सर्वेपु चैव जलाशयेपु जलस्थानपु एतेषा अग्निद्याणा पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रपञ्चन्तीति । उपयातेन लोकस्यासह्ययभागे समुद्धान्तेन लोकस्यासह्ययभागे सस्थानेन लोकस्यासह्ययभागे । कस्मि न्न नटन् । चतुरिन्द्रियाणा पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रपञ्चन्तीति । गौतम । जल्लोके तदेकदेसज्ञाने अथोलोके तदेकदेसज्ञाने तिर्यक्लोके अवटेपु तक्रांगेपु वापीपु पुकरणीपु दीपिकासु गुज्जालिकासु सरस्सु सर पइत्तिकामु सरस्सर पइत्तिकामु निम्भरेपु चित्तलेपु पल्लेपु वप्पिणेपु हीपेपु समुद्रेपु सर्वेपु चैव जलाशयेपु जलस्थानेपु एतेषा चतुरिन्द्रियाणा पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रपञ्चन्तीति । उपयातेन लोकस्या

इन्नागे । कहिण जते । सुजमवणस्सडकाइयाणं पज्जत्तगाणं अपज्जत्तगाणय ठाणा प० ? गो० । सुजमवण  
स्सडकाइया जे पज्जत्तगा जे अपज्जत्तगा ते सहे एगविहा अविसेसा अनुाणत्ता सहेलोयपरियावसगा  
पसत्ता, समाणाउसो ! कहिण जते । वेइदियाण पज्जत्ता पज्जत्तगाण ठाणा पसत्ता ? गोयमा । उहलोए  
तदेकदेसनागे, अहोलोए तदेकदेसनागे, तिरियलोए अगळेसु तलाएसु नडीसु वावीसु पुस्करणीसु दीहियासु  
गंजालियासु सरसु सरपतियासु उज्जरसु निज्जरसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु टीवेसु स  
मुंहुसु सहेसुचेव जलासएसु जलठाणेसु, एत्थण वेइदियाणं पज्जत्तापज्जत्तगाण ठाणा पसत्ता । उववाएणं  
लागस्स असखेज्जइन्नागे, समग्घाएण लोयस्स असखेज्जइन्नागे सठाणेण लोयस्स असखेज्जइन्नागे । कहिणं  
जते ! तेइदियाण पज्जत्तापज्जत्तगाण ठाणा पसत्ता ? गोयमा ! उहलोए तदेकदेसनाए अहोलोए तदेक

गीतम । व दरवनरपतिकायिकाना पर्याप्तकाना स्थानानि तत्रैव वादरवनरपतिकायिकानामपर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपयातेन सर्वलोके स  
मुह्यतेन सर्वलोके सत्थानेन लोकस्यासुरयेयजागे । कस्मिन्नु भदन्त । पर्याप्तकानामपर्याप्तकाना च स्थानानि प्रज्ञप्तानि । गीतम । सूक्ष्मवत्सपति  
कायिका ये पर्याप्तगा ये अपर्याप्तगास्ते सर्वे एकविधा अविशेषा अनाद्याता सर्वलोकपर्याप्तगा प्रज्ञप्ता श्रमणा यप्सन् । कस्मिन्नु भदन्त हीन्दि  
याणा पर्याप्तापर्याप्तकाना स्थानानि प्रज्ञप्तानि । गीतम । काव्यलोके तदेकदेसनागे अधोलोके तदेकदेसनागे तिरियलोके, अवटपु तदानीपु नदीपु  
वापीपु पुष्करणीपु दीपिकासु गुञ्जालिकासु सरस्स सर पङ्क्तिनासु सर सर पङ्क्तिनासु उतभरेवु निभरेपु विसवलेपु पल्ललेपु पव्विणपु द्वीपेषु स  
मुद्रेपु सर्वेषु चैव जलाशयेषु जलस्थानेषु एतेषा हीन्दिवाणा पर्याप्तापर्याप्तकाना स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपयातेन लोकस्यासुरयेयभागे समुह्यतेन  
लोकस्यासुरयेयजागे सत्थानेन लोकस्यासुरयेयजागे । कस्मिन्नु भदन्त हीन्दिवाणा पर्याप्तापर्याप्तकाना स्थानानि प्रज्ञप्तानि । गीतम । काव्यलोके

देसन्नागे, तिरियलोए अगन्तु तलाएसु वावीसु पुस्करणीसु दीहियासु गुजालियासु सरसु सरपतियासु सरसरपतियासु विलपतियासु उज्जरेसु निज्जरेसु चिन्नलेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीव्रेसु समुद्देसु सव्वेसुचेव जला सएसु जलठाणंसु एत्थणं तेइदियाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पखत्ता, उववाएण लीयस्स अस्सखेज्जइन्नागे समुग्धाएण लीयस्स अस्सखेज्जइन्नागे सन्नागेण लीयस्स अस्सखेज्जइन्नागे । कहिण ज्ञते । चउरिदियाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पखत्ता ? गोयमा । उहुलोए तदेकदेसन्नागे, अहोलीए तदेकदेसन्नागे, तिरियलोए अगन्तु तलाएसु वावीसु पुस्करणीसु दीहियासु गुजालियासु सरसु सरपतियासु सरसरपतियासु निज्ज रेसु उज्जरेसु चिन्नलेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीव्रेसु समुद्देसु सव्वेसुचेव जलासएसु एत्थणं चउरि दियाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पखत्ता । उववाएण लीयस्स अस्सखेज्जइन्नागे समुग्धाएण लीयस्स अस्स खेज्जइन्नागे, सन्नागेण लीयस्स अस्सखेज्जइन्नागे । कहिण ज्ञते । पचिदियाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा प०

तदेकदेशभागे अधोलोके तदेकदेशभागे तिर्यक्लोकं अवटेषु तन्नागेषु वापीषु पुष्करणीषु दीर्घिकासु सरस्सु सर पङ्क्तिकासु सरस्सर पङ्क्तिकासु विलपङ्क्तिकासु उत्तमरेषु निम्नरेषु विश्वलेसु पल्ललेसु वप्पिणेषु दीपेषु समुद्रेषु सर्वेषु चैव जलाशयेषु जलस्थानेषु गतेषा त्रीन्द्रियाणा पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रपञ्चयन्ति । उपयातेन लोकस्यासख्येयभागे समुद्रातेन लोकस्यासख्येयभागे । कस्मि न्न जटल । बहुरिन्द्रियाणा पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रपञ्चयन्ति । गौतम । जल्लोक तदेकदेशभागे अधोलोके तदेकदेशभागे तिर्यक्लोकं अवटेषु तन्नागेषु वापीषु पुष्करणीषु दीर्घिकासु गुजालिकासु सरस्सु सर पङ्क्तिकासु सरसर पङ्क्तिकासु विलपङ्क्तिकासु उत्तमरेषु निम्नरेषु विश्वलेसु पल्ललेसु वप्पिणेषु दीपेषु समुद्रेषु सर्वेषु चैव जलाशयेषु जलस्थानेषु गतेषा बहुरिन्द्रियाणा पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रपञ्चयन्ति । उपयातेन लोकस्या

इज्ञागे । कहिण जते ! सुज्जमवणस्सड्काहुयाणं पज्जत्तगाणं अपज्जत्तगाणय ठाणा प० ? गो० । सुज्जमवण  
स्सड्काहुया जे पज्जत्तगा जे अपज्जत्तगा ते सहे एगविहा अविसेसा अनुाणत्ता सहेलौयपरियावसगा  
पसत्ता, समाणाउसो । कहिण जते । वेडडियाण पज्जत्ता पज्जत्तगाण ठाणा पसत्ता ? गोयमा । उहुलोए  
तदेकदेसज्ञागे, अहोलोए तदेकदेसज्ञागे, तिरियलोए अगळेसु तलाएसु नटीसु वावीसु पुक्करणीसु दीहियासु  
गुजालियासु सरसु सरपतियासु सरभरपतियासु उज्जरसु निज्जरसु चिल्लेसु पल्लेसु वप्पिणेसु टीवेसु स  
मुइसु सहेसुचेव जलासएसु जलठाणिसु, एत्थण वेडडियाणं पज्जत्तापज्जत्तगाणं ठाणा पसत्ता । उववाएणं  
लागस्स असखेज्जइज्ञागे, समुग्घाएणं लोयस्स असखेज्जइज्ञागे सठाणेण लोयस्स असखेज्जइज्ञागे । कहिण  
जते ! तेइडियाण पज्जत्तापज्जत्तगाण ठाणा पसत्ता ? गोयमा ! उहुलोए तदेकदेसज्ञाए अहोलोए तदेक

गीतम । व दरवन्नस्पतिकायिकाना पर्याप्तकाना स्थानानि तत्रैव वादस्वन्नस्पतिकायिकानामपर्याप्ता स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपयातेन सर्वलोके स  
मुहानेन सर्वलोके सत्थानेन लोकस्यासद्येयज्ञागे । कस्सित्थु भदन्त । पर्याप्तकानामपर्याप्तकाना च स्थानानि प्रज्ञप्तानि । गीतम । सूत्तवन्नस्पति  
कायिका ये पर्याप्ता ये अपर्याप्तास्ते सर्वे एकविधा अविशेषाः अनाद्याता सर्वलोकपर्याप्तगा प्रज्ञप्ता श्रमणा यस्मन् । कस्सित्थु भदन्त हीन्दि  
याणा पर्याप्तापर्याप्तकाना स्थानानि प्रज्ञप्तानि । गीतम । जख्वंलोके तदेकदेसज्ञागे अघोलोके तदेकदेसज्ञागे तियक्खल्लोके, अवट्टेपु तज्जागेपु नदीपु  
वापीपु पुक्करणीपु दीपिक्कासु गुञ्जालिकासु सरस्स सर पइत्तिककासु सर सर पइत्तिककासु उत्तभरेसु निभरेपु चिल्ललेपु पत्तलेपु पप्पिणपु द्वीपेषु स  
मुद्रेपु सर्वेषु चैव जलाशयेषु जलस्थानेषु एतेषा हीन्दियाणा पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपयातेन लोकस्यासद्येयभागे समुहानेन  
लोकस्यासद्येयज्ञागे सत्थानेन लोकस्यासद्येयज्ञागे । कस्सित्थु भदन्त हीन्दियाणा पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि । गीतम जख्वल्लोके

तमसा ववगयगहचदसूरनक्तजोडसपहा मेदवसापूयसुहिरमंसचिक्खलित्ताणुलेवगतला अउसुईवीसा परम  
 दुस्सिगधा काऊयगणिवन्तात्ता कक्कफासा दुरहिनासा असुना नरगा असुना नरएसु वेवणाउ एत्यण  
 नेरडयाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पसत्ता, उववाएण लोयस्स अससेज्जडनागे, समुग्घाएण लोलस्स अ  
 सखेज्जडनागे, सठाणेण लोयस्स असखेज्जडनागे, एत्यण वहवेनेरडया परिवसति काला कालाजासा ग  
 नीरलोमहरिसा नीमा उतासणगा परमकरहा वणेण पसत्ता, तेण तय णिच्च नीया णिच्च तया णिच्च  
 तसिया णिच्च उद्धिगा णिच्च परमसुत्तसवदनरगजय पच्चुण्णवमाणा विहरति। कहिण जते। रयणप्पन्ना  
 पुढवीनेरडयाण पज्जत्ता पज्जत्ता ठाणा प० ? ऋहिण जत। रयणप्पन्नापुढविनेरडया परिवसति ? गो० !  
 इमीसे रयणप्पन्नाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सयाहत्ताए उच्चिर एण जोयणसहस्ससोगाहिन्ता

दुरप्रस्थानस्थिता नित्यात्यकारतमसा व्यपगतग्रहचन्द्रमूयंतस्वत्योतिपमना मेदवसापूयसुधिरमासकंदंमलिपूभानुरापनतला अशुजा विस्त्रा  
 (आमगन्धिका) परमदुरजिगन्था कपोताग्निवर्णाजा (लोहंयममाने यादृशोने कृष्णोवणस्तदुदाजा येषामेव जूता) कंकशस्पर्शा दुर  
 ध्यासा अशुजा नरका अशुजाश्च नरक वदना। एतेषु नैरयिकाणा पर्याप्तापर्याप्ताना स्यान्तानि प्रद्वप्यन्तानि। उपयातेन लोकस्य असुरेष्वेय  
 भागे समुदयातेन लोकस्यासख्येयज्ञाने, एतेषु ग्रहवो नैरयिका परिवसन्ति काला कालाजासा गभीरलोमह  
 र्या उतासणगा परमकरहा वर्णेन प्रद्वप्यन्तानि। तेन तत्र नित्यनीता नित्यप्रस्ता नित्यवसिता नित्यमुद्दिता नित्यपरमाशुभसवदनरकजय पयन्  
 ज्ञयमाना विहरन्ति। कस्मिन्नु प्रदत्त रत्नप्रज्ञापर्यायवीनैरयिकाणा पर्याप्तापर्याप्ताना स्यान्तानि प्रद्वप्यन्तानि। कस्मिन्नु प्रदत्त रत्नप्रज्ञापर्यायवी  
 नैरयिका परिवसन्ति ?। गौतम। एतस्या रत्नप्रज्ञाया मृषियव्यामशीत्युत्तरज्ञातयोजनशतसहस्रबाहुल्यनोपर्येक योजनसहस्रनवगाद्याप्रत्येक योजन

१ गोयमा ! उहलीए तदेकदेसज्ञागे एहोलीए तदेकदेसज्ञागे तिरियलीए अगरेसु तलाएसु नदीसु दहेसु  
वावीसु पुरकरिणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरसपतियासु सरसपतियासु विलपतियासु उज्जरसु  
गिज्जरसु विह्वलेसु पल्लेसु वाप्येसु दीवसु समुदेसु सवेसु जलासु जलठाणसु एत्यण पच्चिदियाणं  
पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पणत्ता, उववाएणं लोयस्स असखेज्जडन्नागे, समुग्घाएण लोयस्स असखेज्जड  
न्नागे, सठाणंण लोयस्स असखेज्जडन्नाग । कहिणं नत्ते ! नेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पणत्ता ?  
कहिणं नत्ते ! नेरइया परिवससति ? गोयमा ! सठाणेण सत्तसु पुढवीसु तजहा-रयणप्पत्ताए सक्करप्पत्ताए  
वालुनप्पत्ताए पक्कप्पत्ताए धूमप्पत्ताए तमप्पत्ताए एत्यण नेरइयाण चउरसि निरयावास  
सयहस्साइ नवतीति अस्काय, तेण णरगा एतोवहा वाहिचउरसा एहे खुरप्पसठाणसठिमा निञ्चययार

संश्लेषभागे समुद्रघातेन लोकस्यासंश्लेषयज्ञागे सस्थानेन लोकस्यासंश्लेषयज्ञागे । कस्मिन्नु भटत् । पञ्चेन्द्रियाणां पर्यापन्नापर्यापत्तानां स्थानानि प्रज्ञा  
मानि ? । गौतम ऊच्यलोकं तदेकदेशज्ञागे अथोलोकं तदेकदेशज्ञागे तियन्लोकं तद्यदेषु तद्वर्गेषु नदीषु-हृदेषु वाचीषु पुष्करणीषु दीपिकासु गृज्जा  
लिकासु सरस्सु सर पङ्क्तििकासु सर सर-पङ्क्तििकासु विलपङ्क्तििकासु उत्तरपङ्क्तििकासु विलपङ्क्तििकासु विलपङ्क्तििकासु विलपङ्क्तििकासु विलपङ्क्तििकासु  
जलाशयेषु जलस्थानेषु यत्तेषां पञ्चेन्द्रियाणां पर्यापन्नापर्यापत्तानां स्थानानि प्रज्ञाप्यन्ति । उपयातेन लोकस्यासंश्लेषयज्ञागे समुद्रघातेन लोकस्या  
संश्लेषयज्ञागे सस्थानेन लोकस्यासंश्लेषयज्ञागे । कस्मिन्नु भटत् । नेरयिकाणां पर्यापन्नापर्यापत्तानां स्थानानि प्रज्ञाप्यन्ति ? । कस्मिन्नु भटत् । ने  
रयिका परिवसन्ति ? । गौतम सस्थानेन सपत्तसु पथिवीषु । तद्यथा-रत्नप्रभायां शकरप्रभायां बालुकप्रभायां पङ्कप्रभायां धूमप्रभायां तम प्र  
भायां तमस्तम-प्रभायाम् एतेषां नेरयिकाणां चतुरशीतिनरकावाचयत्तसहस्राणि भवन्तीत्याख्यातम् । तेन नरका अन्तर्बृत्ता बहिश्चतुरस्या अथ

नरगन्धय पद्मगुणवामाणा विहरति । कहिण ज्ञते । सकृरप्यन्नापुढविनेरइयाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पसत्ता ? कहिण ज्ञते, सकृरप्यन्नापुढविनेरइया परिवसति ? गोयमा ! सकृरप्यन्नापुढविणु वत्तीसुत्तर जीयणसयसहस्सवाहत्ताए, उवरि एग जीयणसहस्स उग्गाहित्ता हेठा वेग जीयणसहस्स वज्जित्ता मज्जे तीसुत्तरजीयणसयसहस्स एत्यण सकृरप्यन्नापुढविनेरइयाण पणवीस निरयावाससहस्सा हवतीति मस्कायम् तेण नरगा झुत्ती बट्टा वाहि चउरत्ता अहे खुरप्पसठाणसठिया णिच्चययारतमसा ववगयगहचटसूरणस्क सजोडसपहा मेयवसापूयपठलसहिरमसचिक्खल्लित्ताणलेत्रणतला असुईवीसा परमदुस्सिगधा काज्जगणि वसात्ता कस्सकफासा दुरहियासा असुत्ता नरगा असुत्ता नरगेसु वंयणात्त एत्यण सकृरप्यन्नापुढविनेरइ याण पज्जत्ता पज्जत्ताण ठाणा पसत्ता । उववाएण लोयस्स असखेज्जइन्नागे समुग्घाएण लोयस्स असखे ज्जइन्नागे सठाणंण लोयस्स असखेज्जइन्नागे । तत्यण बहवे सकृरप्यन्नापुढविनेरइया परिवसति । काला

पुण्यीनिरयिका परिवसन्ति ? गौतम शकरप्रजापुण्य्या द्वाविंशदुत्तरयोजनज्ञतसहस्रलायसुपरियंक योजनसहस्रमुद्रयाद्याच एक योजन सहस्र वर्जयित्वा मध्ये त्रिंशदुत्तरयोजनज्ञतसहस्रे गतेषु शर्करप्रजापुण्यीनिरयिकाणा पञ्चविंशन्ति निरयावासज्ञतसहस्राणि त्रयन्तीत्याख्यातम् । तत्र नरका अन्तर्गता यत्तिशतुरस्त्रा अथ शुरप्रसस्थानसंस्थिता नित्यान्यकारतमसा व्यपगतग्रहवन्त्सूर्यमन्दत्र ज्योतिषप्रजा मन्दवसापूयपटलसुधिर मासकर्मलिमानुलपनतला अशुन्ना विस्त्रा परमदुरभिगम्या कापूयग्निकर्णांजा कर्कशस्पर्शा दुरध्यासा अशुभा नरका अशुभा नरकेषु वेदना य । गतेषु शर्करप्रजापुण्यीनिरयिकाणा पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपवातेन लोकस्यासख्येयज्ञाने समुद्घातेन लोकस्यासख्येयज्ञाने सस्थानेन लोकस्यासख्येयज्ञाने । तस्मिन्नु बहव शकरप्रजापुण्यीनिरयिका परिवसन्ति । काला कालासा गम्भीरलोमस्पर्पा भीमा उत्तासनका



हेठाचेगं जीयणसहस्रं वज्जिता मज्जे अठ्ठहत्तरिजीयणसयनहस्से एत्यण रयणप्पन्नापुढविनेरडयाणं तीसं  
निरयावाससयसहसा जवतीति मक्काय, तेण नरगा अतो अहा वाहि चउरसा अहे खुरुप्पसठाणसठ्ठिया  
निञ्चधयारतमसा ववगयगहचदसूरनकत्तजोडसपहा मेडवसापूड्यपळलरुहिरमसचिक्कल्लित्ताणुलेवणतला  
असुईवीसा परमदुस्सिगधा काऊअणिवसात्ता कक्कफासा दुरहियासा असुन्ना णरगा असुन्ना नरगेसु वे  
दणात्ते एत्यणं रयणप्पन्नापुढविनेरडयाण पज्जत्ता पज्जत्ता ठाणा पसत्ता, उववाएण लोयस्स असखेज्ज  
डन्नागे, समुग्घाएणं लोयस्स असखेज्जडन्नागे, सठाणं लोयस्स असखेज्जडन्नागे । तत्थणं वहवे रयणप्प  
न्नापुढविनेरडया परिवसति । काला कालान्नासा गन्नीरलोमहरिसा चीमा उत्तासणगा परमकिरहा वन्तेण  
पसत्ता, समणाउसो ! तेणं णिच्चं जीया निच्च तस्या णिच्च तसिया णिच्च उट्ठिगा निच्च परममसुन्नसवरु

नसहस्र वर्जोपित्वा मध्येऽष्टसप्तति योजनशतसद्वस्त्रे सतेषु रत्नप्रज्ञापयित्रीनिरयिकाणां त्रिशन्निरयावासशतसद्वस्त्राणि जवन्तीत्याख्यातम् । तेन  
नरका अन्तर्गता वाद्ये चतुरस्त्रा अथ क्षुद्रप्रस्थानसंस्थिता नित्यान्धकारतमसा व्यपगतगृहचन्द्रसूर्यनवात्रयोतिषप्रभा मेदवसापूयपटलरु  
पिरमासकदमलिपूनात्तेपनतला अशुभा विस्त्रा परमदुरभियन्ता कपोताग्निवर्णात्ता कर्कशस्पर्शा दुरध्यासा अशुभा नरका नरकपु वेदना  
श्च । यतेषा रत्नप्रभापूयित्रीनिरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञपनानि । उपयातेन लोकस्यासह्ययभाग समुदयातेन लोकस्यासह्येय  
ज्ञाने सत्थानेन लोकस्यासह्ययभाग । तत्रनु वहवो रत्नप्रज्ञा पयित्रीनिरयिका परिउसन्ति । काला कालान्नासा गन्नीरलोमहरिणी चीमा चत्त  
सनका परमकफा वर्णेन प्रज्ञपत्ता अमणा युप्पन् । तेन नित्य जीता नित्य वत्ता नित्य वत्तिना नित्यमुट्ठिगता नित्य परमाज्ञाभवदुन्नरकजय  
पर्यनुन्नयमाना विहरन्ति । कास्सिनु जदत्त शर्करप्रज्ञापयित्रीनिरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञपनानि । कास्सिनु जदत्त शर्करप्रज्ञा

सखेज्जडन्नागे । सन्धानेण लोयस्स अस्सखेज्जडन्नागे । तत्थणं वहवे वालुयप्पन्नापुढवीणेइया परिवसंति  
 काला कालान्नासा गन्नीरलोमहरिसा श्रीमा उन्नासणगा परमकिण्हा वखेण प० समणाउसा । तेण निच्च  
 ज्ञीया निच्च तत्था निच्च तसिया निच्च उद्दिग्गा निच्च परममसुन्नसवद्ध गरगन्नय पच्चणुल्लवमाणा विहरति ।  
 कहिण न्नेते । पक्कप्पन्नापुढविणेइयाण पज्जन्नापज्जन्नाण ठाणा पसात्ता ? गोयमा । पक्कप्पन्नापुढवीए वी  
 सुत्तरजोयणसयसहससवाहत्ताए उवरि एग जोयणसहसस उग्गाहिन्ना हेठावेग जोयणससस्स वज्जिन्ना  
 मज्जे अठारसुत्तरे जोयणसयसहससे एत्थण पक्कप्पन्नापुढविणेइयाण दस निरयावाससयसहससा न्नवतीति  
 मस्काय । तेण गरगा अत्तो वहा वाहि चउरसा अहे खुरुप्पसन्धानसठिया निच्चत्रयारतमसा ववगयगह  
 चटसूरनस्कत्तजोइसपहा मेयवसापूयपफ़लसहिरेमसचिक्खिल्लित्तणुलेवणतला असुइवीसा परमदुष्पिग्गधा

ना स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन लोकस्यासल्येयभागे, समुत्तातेन लोकस्यासल्येयभागे सत्थानेन लोकस्यासल्येयभागे । तस्मिन् बहव वालु  
 कप्रमपुयिधीनैरियका परिवसन्ति । काला कालाभासा गम्भीरलोमहर्षा श्रीमा उन्नासणगा परमरुप्पा वरुणेन प्रज्ञप्ता श्रमणायुप्सन् । तेन  
 निरयत्रीता निरयत्रस्ता निरय त्रिसिता नित्यमुद्दिग्गा निरय परमाशुन्नसयइ नरकत्रय पयननूयमाना विहरन्ति । कस्मिन् प्रदत्त । पङ्कप्रन्नपुयि  
 वीरैरियिकाणा पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि ? । गौतम । पङ्कप्रन्नपुयिका विज्ञायुत्तरयोजनज्ञातसहस्रबहुलायामुपरि एक योजनसहस्र  
 मुद्ग्याद्याय एक योजनसहस्र वर्जयित्वा मध्ये अष्टादशोत्तरे योजनज्ञातसहस्रे गतेषु पङ्कप्रन्नपुयिधीनैरियिकाणा दशानिरयावास ज्ञातसहस्राणि नव  
 त्तीत्यास्यातम् । तेन नरका अन्तर्वृत्ता बहिश्चतुरस्ता अथ चतुरस्रस्थानसंस्थिता नित्यान्वकारतमसा व्यपगतग्रहचन्द्रसूयनक्षत्रल्योतिपप्रकाशा मे  
 दवसापूयपटलदधिरमासकदंमलिप्तानुलेपनतला अशुभा विद्या परमदुरजिगन्था कापूयाग्निवर्णोन्ना कर्कशरपशो दुरत्यया अशुभा मरका अशु

कालाच्चासा गत्रीरलोमहरिसा श्रीमा उत्तांसगगा परमकिरहा वखेणं पखत्ता । समणाउसी ! तेणं निच्चं जीता  
 निच्च तल्या निच्चं तसिया निच्च उट्ठिगा निच्च परममसुन्नसवट्ठु नरगन्नय पच्चणुप्पवमाणा विहरति । कहिणं  
 न्तं । बालुयप्पन्नापुढवीणेरइयाण पज्जत्ता पज्जत्ताणं ठाणा पखत्ता ? गोयमा । बालुयप्पन्नापुढवीए अठ्ठा  
 वीसुत्तरजीयणसयसहस्सवाहत्ताए उवरि एग जीयणसहस्स उग्गाहिता हेठा वेगजीयणसहस्सं वज्जित्ता मज्जे  
 वट्ठीसुत्तरजीयणसयसहस्से एत्यण बालुयप्पन्नापुढविणेरइयाण पखरसनिरयावासयसहस्सा न्ववतीति मरका  
 य । तेण नरगा अतो वहा वाहिं चउरसा अहे खुरप्पसठाणसठिया निच्चंघयारतमसा ववगयगहचंदसू  
 रणस्कत्तजोडसपहा मेयवसापूयपळलरुहिरमसचिक्खिलित्ताणलेवगतला अमुईवीसा परमदुस्सिगधा काज  
 अगणिवखाजा कक्कफासा दुरहियासा असुन्ना नरगा असुन्ना णरएसु वेयणा एत्यण बालुयप्पन्नापुढवीणे  
 रइयाण पज्जत्ता पज्जत्ताणं ठाणा पखत्ता । उववाएण लोयस्स असखेज्जाडनागे । समग्घाएणं लोयस्स अ

परमरुद्धा वण्णेन प्रज्ञप्ता श्रमणायुक्ता । तेन नित्यजीता नित्यव्रता नित्य व्रसिता नित्यमुद्दिता नित्य परमाशुनसद्यदुत्तरकमय पर्यंतुन्नू  
 माना विहरन्ति । अस्मिन् जदत्त । बालुकप्रभपयिधीनैरपिकाणा पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि । गीतम बालुक्रमप्रपयिख्यामष्टाविज  
 त्युत्तरयोजनज्ञातसहस्सबहुलायामुपरि एक योजनसहस्समुद्रास्याधपक योजनसहस्स वर्जयित्वा मध्ये पट्टविशायुत्तरयोजनज्ञातसहस्से एतेषु वा  
 लुकप्रभपयिधीनैरपिकाणा पञ्चदशानिरयावासज्ञातसहस्साणि प्रवर्त्तनीत्याख्यातम् । तत्र नरका अन्तर्ज्जा बाह्ये बहुरक्षा ग्रथ शुरुप्रवस्थानसंस्थि  
 ता नित्यान्वकारतमसा व्यपगतग्रहचन्द्रसूर्यनक्षत्रज्योतिर्यप्रकाशा भेदवसापूयपटलरुधिरमाधकर्मलिप्तानुलेपनतला अशुन्ना विस्वा परमदुरज्जि  
 गत्या काप्याग्निवर्णाना कर्कशरूपगो दुरध्यासा अशुन्ना नरका अशुन्ना नरकेषु वेदता । एतेषु बालुकप्रभपयिधीनैरपिकाणा पर्याप्तापर्याप्ता

तजोइसपहा मेयवसापूयपकलसहरिमसचिखलितानुलेवणतला असुईवीसा परमदुझिगधा काऊअगण  
 वखन्ना करकफासा दुरहियासा असुन्ना नरगा असुन्ना नरगेसु वेयणाने एत्यण धूमप्यन्नापुढविणेरइयाण  
 पज्जापज्जाण ठाणा पसत्ता । उववाएण लीयस्स असखेज्जइन्नागे, समुग्घाएणं लीयस्स असखेज्जइ  
 न्नागे, सठाणेण लीयस्स असखेज्जइन्नागे तत्यण वहवे धूमप्यन्नापुढविणेरइया परिवसति काला कालान्नासा  
 गतीरलीमहरिसा नीमा उत्तासणगा परमकिग्घा वसुण पसत्ता समणाउसो । तेण णिच्च नीया निच्च तत्या  
 निच्च तसिया निच्च उद्दिग्गा निच्च परमसुन्नसवन्नरगज्जय पच्चणुप्पवमाणा विहरति । कहिणं जते । तमा  
 पुढविनेरइयाण पज्जापज्जाण ठाणा पसत्ता ? गोयमा । तमापुढवीए सोलसुत्तरजीयणसयसहस्सवाह  
 लाए उवरि एग जीयणसहस्स उग्गाहिता हेठावेग जीयणसहस्स वज्जिता मज्जे चोइसुत्तरे जीयणसहस्स

ता नित्याथकारतमसा व्यपगतग्रहचन्द्रसूर्यनक्षत्रज्योतिषप्रज्ञा मेदवसापूयपटलरुधिरमासकर्मलिप्तानुलेपनतला अशुजा विज्ञा परमदुरभित्या  
 कापूयानिवर्णभा कर्कशरपशो अशुजा नरका अशुजा नरकेषु वेदनाश्च । एतेषु धूमप्रज्ञपृथिवीनिरयिकाणा पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्ता  
 नि । उपधातेन लोकस्यासथ्येयज्ञागे समुद्भातेन लोकस्यासथ्येयज्ञागे सत्यानेन लोकस्यासथ्येयज्ञागे । तत्रनु वहवो धूमप्रज्ञपृथिवीनिरयिका परिव  
 सन्ति । काला कालान्नासा गजीरलोमहर्षा नीमा उत्तासनका परमकथा वणेन प्रज्ञप्ता । तत्रनु वहवो धूमप्रज्ञपृथिवीनिरयिका निरयि  
 त्रसिता नित्यमुद्दिग्गा नित्यपरमाशुन्नसवन्नरकज्जय पयमूज्जयमाना विहरन्ति । कस्मिन्नु जदन्त । तम प्रज्ञपृथिवीनिरयिकाणा पर्याप्तापर्याप्ताना  
 स्थानानि प्रज्ञप्ता नि । गीतम । तम पृथिव्या पोकशुत्तरयोजनशतसहस्रबहुलायामुपरि एक योजनसहस्रमुद्गृहीत्वाथ एक योजनसहस्र वजोयि  
 त्या मध्ये चतुदशोत्तरे योजनसहस्रे एतेषु तम प्रज्ञपृथिवीनिरयिकाणामेकस्मिन्पञ्चोत्तरे नरकावासशतसहस्रे प्रयत्नीत्याख्यातम् । तेन नरका अन्त

काऊयगणिवसाना कक्कफासा दुरहियासा अत्तुना नरगा अत्तुना नरगेसुवेयणात्तु एत्थण प्पंकप्पन्नापुढवि  
णेरइयाण पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पणत्ता । उववाएण लीयस्स अस्सखेज्जडन्नागे, समुग्घाएणं लीयस्स  
अस्सखेज्जडन्नागे, सठाणेण लीयस्स अस्सखेज्जडन्नागे तत्थण बहव पक्कप्पन्नापुढविणेरइया परिवसत्ति, काला  
कालान्नासा गन्तीरलीमहरिसा न्नीमा उत्तासणगा परमकिण्हा वखेण पणत्ता समणाउसो । तेणं निच्चं न्नीया  
निच्च तत्था निच्च तसिया निच्च उव्विणा निच्च परममसुन्नसवद्धं नरगन्नय पच्चणवमाणा विहरति । कहि  
ण चत्ते ! धूमप्पन्नापुढविनेरइयाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पणत्ता ? गोयमा ! धूमप्पन्नापुढवीए अठा  
रसुत्तरजोयणसयसहस्सवाहत्ताए उवरि एग जोयणसहस्स उग्गाहिता हेठा वेग जोयणसहस्स वज्जित्ता मज्जे  
सोलसुत्तरे जोयणसयसहस्से एत्थणं धूमप्पन्नापुढवीणेरइयाण तिणि निरयावाससयसहस्सा हवतीतिमक्काय  
तेण नरगा अत्तो वहा वाहि चउरसा अहे खुरुप्पसठाणसठिया निच्चधयारतमसा ववगयगहचंडसूरनक्क

भा नरकेषु वदता एतेषु पङ्कमभा पृथिवीनैरयिकाणा पर्योषापयोषाणा स्थानानि प्रक्षप्तानि । उपवासेन लोकस्यासख्येयन्नागे समुद्घातेन लोकस्या  
सख्येयन्नागे सस्थानेन लोकस्यासख्येयन्नागे । तत्रनु यएव पङ्कमजपृथिवीनैरयिका परिवसन्ति । काला कालान्नासा गन्तीरलामहर्षो गोमा उ  
त्तासनका परमकप्पा वणन प्रक्षप्ता श्रमणायुस्सन् । तेन नित्य जीता नित्यवत्ता नित्यं वसिता नित्यमुद्दिग्ता नित्य परमाज्ञानसवदुनरक्क  
य पर्यन्तयमाना विहरन्ति । कास्सिन्नु जदन्त । धूममजपृथिवीनैरयिकाणा पर्योषापयोषाणा स्थानानि प्रक्षप्तानि ? । गीतम । धूममजाया पृथि  
व्यामष्टादशोत्तरयोजनज्ञातसहस्रबहुलायामपरि एक योजनसहस्रमुद्गृहीत्वा एक योजनसहस्र वर्जयित्वा मध्ये पोटशुत्तरे योजनज्ञातसहस्रे ए  
तेषु धूममजपृथिवीनैरयिकाणा त्रीणि निरयावाससहस्राणि त्रयन्तीत्याख्यातम् । तन नरकान्तर्धृता वाहिशुत्तरस्या अथ दुरप्रस्थानसंस्थि

हेठाचि अद्भुतवशजोयणसहस्र वज्रिज्ञा मज्जे तिखिजोयणसहस्रेसु एत्यणं तमतमापुढवीणेरडयाणं पज्जा  
त्तापज्जात्ताण पचदिंसि पच अणुत्तरा महडमहालगा महानिरया पसुत्ता, तजहा-काले महाकाले रोरुए म  
हारेरुए अपडठाणे, तेण नरगा अतो वहा वाहि चउरसा अहे खुरप्पसठाणसठिया निच्च धयारतमसा  
ववगयगहचटसूरनस्कत्तजोडसपहा मेयपूयवसारिहिरमसपलचिक्कल्लित्ताणुलेवणतला असुईवीसा परमडु  
प्रिगधा कक्कफासा दुरहिधासा असुत्ता नरगा असुत्ता नरगेसु वेदनानु एत्यण तमतमापुढविनेरडयाण  
ठाणा पन्तता, उववाएण लोयस्स असखेज्जइजाए समग्घाएण लोयस्स असखेज्जइजाए सठाणेण लोयस्स  
असखेज्जइजाए तल्यण वहवे तमतमापुढविनेरडया परिवसति काला कालान्नासा गभीरलोमहरिसा जीमा  
उत्तासणया परमकिण्हा वत्तेण पन्तता समणाउसो। तेण निच्च जीया णिच्च तत्या निच्च उद्धिग्गा निच्च  
परममसुन्नसवद्ध नगरत्तय पच्चणुप्लवमाणा विहरति ॥ असीतवत्तीस अठावीसचहोइवीसच । अठारससो

सरत्ताणुदुग्घीत्वाथोपि अद्भुतपच्चाशद्योजनसहस्राणि वर्जयित्वा मध्ये त्रियोजनसहस्रेषु एतपू तसस्तम पृथिवीनिरयिकाणा पर्यामापयो  
माना पब्बदशपच्चानुत्तरा महामहालया प्रज्ञप्ता तद्व्या-काले महाराजे रोरवे महारोरवे अप्रतिष्ठाने। तेन नरका अन्तर्गता य  
हियनरखा अय सुरमसस्थानसंस्थिता नित्यान्वकारतमसा व्यपगतग्रहचन्द्रसूर्यनक्षत्रज्योतिषप्रज्ञा संपूयवसारिधिरमासपलकदंमलिमानुलेपनत  
ता अशुना विस्वा परमदुरविगत्या कर्कशस्पर्शा दुरत्यया अशुना नरका अशुना नरकेषु वेदनाद्य, एतपू तसस्तम पृथिवीनिरयिकाणा स्थानानि  
प्रज्ञप्तानि । उपपातेन लोकस्यासद्येयज्ञाने समुद्घातेन लोकस्यासद्येयभागे सत्थानेन लोकस्यासद्येयपज्ञाने तत्रानु यत्तस्तमस्तम पृथिवीनिरयिका  
परिवसन्ति काला कालान्नासा गभीरलोमहर्षो जीमा उत्तासनका परमरुक्ता, वर्ज्येन प्रज्ञप्ता अमणायुसन् । तेन नित्य भीता नित्य वस्ता नि

एत्यणं तमप्पन्नापुढविणेरडयाणं एणं पंचूणे नरगायाससयसहस्से हवंतीति मस्कायं, तेणं नरगा झुंती बहा  
 बाहि चउरसा झहे खुरप्पसठाणसठिया निच्चधयारतमसा ववगयगहचदसूरनक्कत्तजोडसपहा मेदवसापूय  
 पढलसहिरमंसचिक्खिलित्ताणुलेवणतला झसुडंवीसा परमडुप्पिगंधा कक्कफासा दुरहिवासा झसुन्ना न  
 रगा झसुन्ना नरगेसु वेयगानु एत्यणं तमापुढविणेरडयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पस्सत्ता, उववाएणं  
 लोयस्स झसखेज्जडन्नागे समुग्घाएण लोयस्स झसखेज्जडन्नागे सठाणेण लोयस्स झसखेज्जडन्नागे, तत्यण  
 बहवे तमप्पन्नापुढीणेरडया परिवसति काला कालाज्जासा गंभीरलोमहरिसा जीमा उत्तासणगा परमकिण्हा  
 वणेण पस्सत्ता समणाउत्तो । तेण निच्च जीया निच्चं तत्या निच्च तसिया निच्च उट्ठिगा निच्चं परममसुन्नसंबद्धं  
 नरगन्नय पच्चणुप्पवमाणा विहरति । कहिणं जते । तमतमापुढविणेरडयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा प०,  
 ? गोयमा ! तमतमापुढवीए झुत्तरजोयणसयसहस्सबाहत्ताए उवरि झुत्तवसजोयणसहस्साइ उग्गाहिता

वृत्ता बहिश्चतुरखा अथ क्षुरप्रसस्थानसंस्थिता नित्यान्धकारतमसा व्यपगतग्रहचन्द्रसूयनक्षत्रज्योतिषप्रज्ञा भेटवसा पूयपटलरुधिरमासकदंमलिसा  
 नलेपनतला अशुजा विष्ठा परमदुरजिगम्या ककशास्पर्शो दुरत्यया अशुजा नरका अशुजा नरकपुषेदना एतेषु तम मज्जपूयिबीनिरयिकाणा पर्यो  
 मापर्यामाना स्थानानि प्रज्ञप्सन्ति । उपपातेन लोकस्यासख्येयभागे समुद्घातन लोकस्यासख्येयभागे सस्थानेन लोकस्यासख्येयभागे तत्रनु बहवस्त  
 म मज्जपूयिबीनिरयिका परिवसन्ति काला. कालाज्जासा गंभीरलोमहर्यो जीमा उरत्तासुनका परमरुद्धा वर्णेन प्रज्ञप्ता अमणायुप्सन् । तेन नि  
 त्यनीता नित्यवृत्ता नित्यवृत्तिता नित्यमुट्ठिना नित्य परमाशुन्नसवद्ध नरकजय पयन्नूयमाना विहरन्ति । कस्मिन्नु भदन्त । तमस्तम पर्यधि  
 निरयिकाणा पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्सन्ति ? । गोयम । तमस्तम. पर्याप्तामष्टोत्तरयोजनक्षतसहस्रबहुलायामुपरि ऋद्धेविपन्नाशयोजन

हेठावि अद्देवराजोयणसहस्र वज्रिहा मज्जे तिखिजोयणसहस्रेषु एत्यणं तमतमापुढवीनेरडयाणं पज्जा  
त्तापज्जात्ताण पचदिसि पच अणुत्तरा महडमहालगा महानिरया पसुत्ता, तजहा-काले महाकाले रोरुए म  
हारोरुए अपड्डाणे, तेण नरगा अतो वहा वाहि चउरसा अहे खुरप्पसठाणसठिया निच्च धयारतमसा  
ववगयगहचदसूरनस्कत्तजोडसपहा मेयपूयवसारुहिरमसपलचिक्कलित्ताणुलेवणतला असुइवीसा परमटु  
प्पिगधा कक्कफासा दुरहेयासा असुत्ता नरगा असुत्ता नरगेसु वेदनाउ एत्यण तमतमापुढविनेरडयाणं  
ठाणा पन्तता, उववाएण लोयस्स असखेज्जड्जाए तमुग्घाएण लोयस्स असखेज्जड्जाए सठाणेण लोयस्स  
असखेज्जड्जाए तत्यण वहवे तमतमापुढविनेरडया परिवसति काला कालाभासा गम्भीरलोमहरिसा नीमा  
उत्तासणया परमकिण्हा वन्तेण पन्तता समणाउसो। तेण निच्च जीया णिच्च तया निच्च उद्धिगा निच्च  
परममसुजसवद्ध नगरत्तय पच्चुप्पवमाणा विहरति ॥ असुतीतवतीस अथावीसचहोइवीसच । अठारससो

सहस्राणुदुहरीत्वाधोपि अद्धविपब्बाशद्योजनसहस्राणि वर्जयित्वा मध्ये त्रियोजनसहस्रेषु यतपु तमस्तम पण्यधीनिरयिकाणा पर्यामापया  
माना पब्बदशपब्बानुत्तरा महामहालया महानिरया मज्झसा तद्यथा-काले महाकाले रोरवे मणरीरवे अप्रतिष्ठाने, तेन नरका अन्तवृत्ता य  
हियनरस्ता अथ शुरमसस्थानसंस्थिता नित्यान्वकारतमसा व्यपगतशयन्दसूर्यनद्योज्योतिषपन्ना मंदपूयवसारुधिरमासपलकंदमलिमानुलेपत  
ला अशुजा विस्वा परमदुरजिगन्था कर्कशस्पर्शा दुरत्यया अशुजा रका अशुजा नरकेषु वेदनाश्च, यतपु तमस्तम पण्यधीनिरयिकाणा स्थानानि  
मज्झसानि । उपपातेन लोकस्यासुरयेयजाने समुदातेन लोकस्यासुरयेयजाने लोकस्यासुरयेयजाने तत्रनु वहवस्तमस्तम पण्यधीनिरयिका  
परिवसन्ति काला कालाभासा गम्भीरलोमहर्षा नीमा उत्तासनका परमठना, वर्णेन मज्झसा अमणायुप्पन् । तेन नित्य मीता नित्य वस्ता नि



लसग अटुत्तरमेवहेठिमया ॥ १ ॥ अटुत्तरंचवत्तीस लवीसचेवसयसहस्सतु अठारससोलसग चोदससहिंय  
तुलठीए । अटुत्तवन्नसहस्सा उवरिमहोवज्जिऊतोन्नणिय । मज्जेउतिसुसहस्से सुहोतिनरगतमतमाए । तीसा  
यपन्नवीसा पत्तरसदसेवसयसहस्साइ । तिन्निअपचूणेग पंचेवअणुत्तरानरगा ॥ ४ ॥ कहिण भते । पचिं  
दियतिरिक्कजोणियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा प० ? गो० ! उहुलोए तदेकदेसजाए अहोलोए तदेकदेस  
जाए तिरियलोएसु अगळेसु तलाएसु नदीसु दहेसु वावीसु पुक्करिणीसु दीहियासु गुजालियासु सरेंसु स  
रपतियासु सरसरपतियासु विलपतियासु उज्जरेसु निज्जरेसु चिल्लेसु पल्लेसु वप्पिणेसु दीविसु समुदेंसु स  
हेसुचेव जलासएसु जलठाणेसु एत्थण पचिदियतिरिक्कजोणियाणं पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा प० । उववा  
एण लोगस्स असखेज्जइन्नागे । समुग्घाएण लीयस्स असखेज्जइन्नागे ।

त्यमुद्विग्ना नित्य परमाशुन्नसबद्ध नरकभय पर्यनुन्नयमाना विहरन्ति । अशीतिद्वोत्रिंशत् अष्टाविंशतिर्विशतीच । अष्टादश षोडशकमष्टोत्तरमेवा  
वोधिमया ॥ १ ॥ अष्टोत्तर द्वात्रिंशत् पङ्क्तिविंशतिश्चतसहस्रतु ॥ अष्टादश षोडशक चतुर्दशसहित तु पट्त्रिंशत् । अष्टत्रिपञ्चाशत्सहस्र मुपरि  
महोवज्जि उतो मणितम् । मय्येतुत्रिपुसट्ठे पुनर्वल्लिनरकास्तमस्तमस ॥ त्रिंशत्चपञ्चविंशत् पञ्चदशीवशतसहस्राणि । त्रीणिचपञ्चोत्तरैक पञ्चैवा  
नृत्तरानरका ॥ ४ ॥ कस्मिन् जदत्त । पञ्चन्द्रियतियंक्क्योनिकाना पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि ? गौतम । ऊर्ध्वलोकं तदेकदेशज्ञाने  
अधोलोकं तदेकदेशज्ञाने तिर्यक्लोकेषु अष्टेषु तद्भागेषु नदीषु इदेषु वापीषु पुक्करणीषु दीर्घिकासु गुज्जालिकासु सरस्सु सर पङ्क्तिकासु सर  
सर पङ्क्तिकासु विलपणिकिकासु वत्थरूपे निम्भरूपे चित्तवलेषु पट्त्वलेषु द्वीपेषु समुद्रेषु सर्वेषु चैव जलाशयेषु जलस्थानेषु एतेषु पञ्चन्द्रियतियंक्क्यो  
निकाना पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि, उपवातेन लोकस्यासंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे सस्यानेन लोकस्यासंख्येयभागे ।

कहिण जते । मणस्साणं पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पं० । अतो मणस्सखित्ते पणयालीसाए जौयणसयसह  
स्सेसु अट्ठाईज्जेसु दीवसमुहेसु पन्नरससु कम्मज्जमीसु तीसाए अकम्मज्जमीसु तप्पन्नाए अतरदीवेषु एत्थणं  
मणस्साण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पं० । उववाएण लोयस्स अस्सखेज्जइज्जागे समुग्घाएण सब्बलोए सत्ताणे  
ण लोयस्स अस्सखेज्जइज्जागे । कहिण जते । जवणवासीण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पं० ? कहिणं  
जवणवासीदेवा परिवसति ? गो० । इमीत्ते रयणप्पन्नाएपुठवीए असीउत्तरजौयणसयसहस्सवाहत्ताए उ  
वरि एग जौयणसहस्स उग्गाहित्ता हेठाचेग जौयणसहस्स वज्जिन्ना मज्जे अट्ठत्तरिजौयणसयसहस्स ए  
त्यण जवणवासीदेवाण पज्जत्तापज्जत्ताण सत्तजवणकीणीत्ते वावत्तरिच जवणावाससयसहस्सा हवतीति  
मस्काय, तेण जवणा वाहि वह। अतो समचउरसा अहे पुरकरकन्नियासत्ताणसत्थिया उकिस्सतरविउलंगं

कस्सिन् जदत्त । मनुष्याणा पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि । अन्तर्मेनुष्यक्षेत्रे पञ्चचत्वारिंशत्तमेषु योजनज्ञातसहस्रेषु सार्द्धेद्वेषु द्वीपसमुद्रेषु  
पञ्चदशसु कर्मज्जूमिषु त्रिंशदकर्मज्जूमिषु पट्पञ्चागदन्तरद्वीपेषु यतेषु मनुष्याणा पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपवातेन लोकस्यासख्येय  
ज्ञाने समुद्रातेन लोकस्यासख्येयभागे सस्यानेन लोकस्यासख्येयभागे । कस्सिन् जदत्त । जवनवासिना देवाना पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि  
कस्सिन् जदत्त । जवनवासिनो देवा परिवसन्ति ? गौतम । एतस्या रत्नप्रज्ञपुण्यव्यामशीत्युत्तरयोजनज्ञातसहस्रवहुलायामुपर्येक योजनसहस्रमुद्गु  
लीत्याथस्तादेक योजनसहस्र वज्रयित्वा मध्येऽष्टसप्तति योजनज्ञातसहस्रमेतेषु जवनवासिदेवाना पर्याप्तापर्याप्ताना समजवनकोट्या द्विसप्ततिजव  
नवासज्ञातसहस्राणि जवनतोत्याख्यातम् । तेन जवनानि व्यास्यतो वृत्तानि अन्त समचतुरस्त्राणि अथ पुष्करकिंकासस्थानसंस्थितानि उत्कीर्णानि  
रविपुलगम्भीरतातपरिस्त्रानि प्राकाराहालककपाटोरणप्रतिहारदेशभागानि यन्नशतग्नीनुशुगढीपरिवारितानि आयोध्यानि सदामानि तानि

श्रीरखातफलिहा पागारहालयकवाकृतोरणपक्रिदुवारदेसन्नागा जंतसयग्निमुसंठिपरिवारिया अउज्जा सयाज  
 या सया अजेया सदा गुहा अऊयालकोठरडया अऊयालकवयणमाला खेमा सिवा किंकरा मरुकोवरकि  
 या लाउल्लोडयमहिया गोसीससरसरसत्तचदनदहरदिन्नपचगुलितला उवचियचदणकलत्ता चदणधरुसुकयतो  
 रणपक्रिदुवारदेसन्नागा आसत्तोसत्तिउलवहवग्धारियमत्तदामकलावापचवन्नसरससुरात्रिमूक्तपुण्णपुंजोवया  
 रकलिया (ग्र११००) कालागुरुपवरकुडुवक्तुसुक्तयूवमधतगधुठुहात्रिरामा सुगंधवरगधगधिया गंधव  
 हीन्नया अचूरगणसघसकिदा दिव्वतुन्नयसहसपन्नोदित्ता सत्तरयणमया अचुक्का सरहा लरहा घठा मठा  
 णीरया निम्मला निप्पका निक्काकळुक्काया सप्पन्ना सत्तिरिया सउज्जोया पासादीया दरिसणिज्जा अन्निरू  
 वा पक्रिहवा एत्थणं नवणवासीण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा प० । उववाएण लोगस्स अत्तखेज्जाइ

सदाजेयानि सदा गुमानि अष्टचत्वारिंशदकोटकरचितानि अष्टचत्वारिंशदलपमालानि क्षेमाणि शिवाणि किङ्करामरदयत्तकृतोपरिजितानि लाउ  
 ल्लोडय ( सेटिकागोमयादिभिरुल्लेपनसष्टीकरण ) महितानि गोशीपसरसरक्तचन्दनदंदरदत्तपञ्चाहुलितलानि उपचितचन्दनलतानि चन्दनघ  
 दस्तुकततोरणप्रतिहारदेशज्ञानानि आसक्तोत्सक्तविपुलवृत्तप्राधान्य ( प्रलम्ब्यन ) मात्यदामकलापानि पञ्चवर्णसरससुरात्रिमूक्तपुण्णपुंजोपचारक  
 लितानि कालागुरुपवरकुन्दरुफ्तुरुफ्तुपमयमयायमानगन्धोद्भूतानिरामाणि सुगन्धवरगन्धग्रन्थितानि गन्धवर्तनूतानि अष्टरोगणसघसकोशानि  
 दिव्यवृत्तितशब्दसम्प्रणादितानि सर्वरत्नमयानि अज्जानि शृङ्गानि घृष्टानि शृष्टानि नीरजांसि निरुपांसि निरुपांसि निरुपांसि निरुपांसि निरुपांसि निरुपांसि  
 नि सोद्योतानि प्रसादीयानि दर्शनीयानि अभिरूपाणि प्रतिरूपाणि मतेषु ज्ञानवासिना देवाना पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्जप्तानि । उप  
 वातेन लोकासात्तयेपज्ञाने समुद्यतेन लोकसात्तयेपज्ञाने सत्त्वानेन लोकसात्तयेपज्ञाने तत्रनु वद्दो नवणवासिदेवा परिवसन्ति । तद्यथा-

ज्ञागे समुष्वाएण लीयस्स अस्संखेज्जइन्नागे सन्नाणेणं लोगस्स अस्संखेज्जइन्नागे तत्थणं वहवे जवणवासीदे  
 वा परिवसति त-असुरानागसुवन्ता विज्जुअग्गीयटीवउहीय । दिस्सिपवणथणियणामा दसहाएएअवण  
 वासी ॥ चूळामणिमउरयणन्नसणा फणिगस्सलवडरपुण्णकलसकिउफेसा सीहमगरमंयकंअस्सवरवध्दमाणानि  
 जुत्तचिन्तचिधगता सुरुवा मंहिहिया महज्जुतिया महायसां महावला महाणन्नावा महासोस्का हारविंरंड  
 यवत्या कठगतुत्थियन्नियन्नुया अगटकुलमठगकतलकसपीठधारी विचित्तहत्यान्नरणा विचित्तमालामउ  
 लिमउळा कल्लाणगपवरवत्यपरिहिया कल्लाणगपवरमंल्लानुलेवणधरा ज्ञासुरवोदी पलंववणमालधरा दिव्वेणं  
 वस्सेण दिव्वेण गधेण दिव्वेण फासेण दिव्वेण सवयणंण दिव्वेण सन्नाणंण दिव्वाए ड्ढीए दिव्वाए जुत्तीए  
 दिव्वाए पन्नाए दिव्वाए च्छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेण तेएण दिव्वाए लेस्साए दसदिंसाउ उज्जीवेमाणो

असुरनागसुपणो विद्युदग्निहीपोदधय्य । दिशापवनस्तनिदास्या दग्नेतेभवनवासिनीक्षेया ॥ १ ॥ चूळामणिमुकुटरवज्रपूणा फणागठवज्रपूणे  
 कलशाङ्कितमुकुटा । सिंहाद्यगजवरमाणिक्य वद्धमाननियुक्ताद्यवक्रधरा ॥ २ ॥ सुरुपामहर्षिका मराद्युतिका मरायज्ञा महावला महानुज्जावा  
 महेश्वरा हारविराजितवत्स कटकटितस्तम्भितज्जुजा अङ्गदकुण्डलमृष्टगहत्तरुणपीठधारिणी विचित्तमालामोत्तिमगडला कल्याणकप्रधरवस्त्रपरि  
 हिता कल्याणकप्रवरमाल्यानुलेपतधरा ज्ञासुरवोन्द (शरीर) यो प्रलम्ब्यनमालाधरा दिव्येन वर्णेन दिव्येन स्पर्शेन दिव्येन सहननेन  
 दिव्येन सस्थानन दिव्यया दृष्ट्या दिव्यया युत्तया दिव्यया प्रभया दिव्यया व्यायया दिव्यया द्युत्या दिव्येन तेजसा दिव्यया लेवयया (देहवर्णमुन्दरत  
 या) दशदिशासूद्योतमाना प्रकाशमाना, तेन तत्र साण २ (वाक्पालङ्कारे) भवनवासिज्ञातसदस्त्राणा साण २ सामानिकसदस्त्राणा साण २ वय  
 स्त्रिगता साणं २ लोकपालाना साण २ अग्रमहिषीणा साण परिपदा साण अचिकारिणां मधिकारियतीना साण धार्यरुदेवसदस्त्राणा मन्थे

पन्नासेमाणा तेषं तस्य साणं २ नवगवाससयसहस्राणं साणं २ सामाणियसाहस्रीणं साणं २ तोयन्तीसाणं  
 साण २ लोगपालाण साणं २ अगमहीसीणं साण २ परियाणं साणं २ अणीयाणं साणं २ अणियाहिबईणं  
 साणं २ आयस्सकदेवसाहस्रीणं अन्नेसिच वल्लणं नवणवासीणं देवाणंय देवीणय अहेवच्च पोरेवच्च सा  
 मित्त न्हित्त महत्तरगत्तं अणार्हसरेसेणावच्च कारेमाणा पालेमाणा महयाहयनहगीमवाइयततीतलतालत्तुहि  
 यघणमइगपठुप्पवाइयरवेण दिट्ठाइ नोगन्नोगाइ न्रंजमाणा विहरति । कहिणं नते ! असुरकुमाराण दे  
 वाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पयत्ता २ कहिणं नते ! असुरकुमारादेवा परिवसंति २ गोयमा ! इमीसे  
 रयणप्पन्नाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सवाहत्ताए उवरि एग जोयणसहस्सं उग्गाहित्ता हेठावेगं  
 जोयणसहस्स वज्जिन्ता मज्जे अठहत्तरे जोयणसयसहस्से वाहत्ताए एत्थण असुरकुमाराणं देवाणं चोवठि  
 नवणावाससयसहस्सा नवतीति मस्काय, तेण नवणा वाहि वहा अतो चउरसा अहे पुक्करकस्सियासंठा  
 णसंठिया किन्नतरविउलगन्नीरस्कायफलिहा पागारहालयकवाफ्तोरणपण्डित्वादेसन्नागा जतसयग्घिमुस

या च वहूना नवनवासिना देवाना देवीनामाधिपत्य स्वामित्व नृपुंस्व महत्तराङ्गत्वमाद्भ्यसेनापत्यं कारयमाणा पालयमाना मरुताहवृत्त  
 गीतवादित्रतत्रीतलतालत्रुटितघनशृदङ्गपटुप्रवादित रवेणदिव्यानि न्रोगन्नोगानि न्रुज्जमाना विहरन्ति । कस्मिन् न्रदन्त । असुरकुमाराणा देवाना  
 पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि २ कस्मिन् न्रदन्त । असुरकुमारादेवा. परिवसन्ति गीतम् । एतस्या रत्नप्रज्ञाया पृथिव्यामशीत्युत्तरयोजनश  
 तसहस्रबहुलायामुपर्यंकोजनसहस्रमुद्गृहीत्वा ऽयस्सादेक योजनसहस्र वज्रयित्वा मध्ये ऽष्टसप्ततियोजनशतसहस्रबहुलायाम् गतेषु असुरकुमारा  
 णा देवाना चतुर्विंशतिनवनवासहस्त्राणि न्रवृन्तीत्याख्यातम् । तेन न्रवन्तानि वहिर्वृत्तानि अन्तश्चत्तरस्त्राणि मध्ये पक्करकज्जिक्कामस्साम्भज्जि

लमुसठिपरिवारिया अउज्जा सदा सया वलया सदा गुता अरुयाला कीठगरइया अरुयालकंयवन्तमाला  
खेमा सिवा किरामरुठोवरिकया लाउल्लोइयमहिया गोसीसरसरत्तचदणदहरदिन्नपचगुलितला उव  
चियचदणरुलसा चदणघरुसुकयतीरणपफिदुवारदेसन्नागा आसत्तोसत्ताविउलवहवग्धारियमल्लदामकलावा  
पचवन्नसरससुरन्निमुक्कपुक्कपुजोययारकलिया कालागुरुपवरकुदुरुक्कतुक्कतुक्कतधवमघतगधुत्तान्निरा  
मा सुगधवरगधिया गधवाहिन्नया अक्करगणसघसकिसा दिव्वतुन्नियसदसपन्तदिया सहरयणामया अ  
क्का सरहा घठा मठा नीरया निम्मला निप्पका निक्ककरुक्काया सप्पन्ना ससिरिया सउज्जाया पासाइया  
दरिसणिज्जा अन्निरुवा पफिरुवा एत्थण असुरकुमारण देवाणं पज्जातापज्जाताणं ठाणा पप्पत्ता । उववा  
एण लोयस्स असखिज्जइन्नागे समुग्घाएण लोगस्स असखेज्जइन्नागे सठाणेण लोगस्स असखेज्जइन्नागे त

नि वरकीर्णोत्तरविपुलगम्भीरस्यातफलिकानि प्राकाराट्टालकपाटोरणप्रतिहारदेशज्ञानागानि यन्त्रगतघ्नीमुसलज्जमुखिडपरिवारितानि आयोधनानि सदाजेयानि सदायलपानि सदागुमानि अष्टचत्वारिंशत्कोष्टकरचितानि अष्टधत्वारिंशद्दलयमालानि शिवाणि किङ्करामरदशभोरचितानि तां सल्लोदय मल्लितानि गोशीपसरक्तचन्दनदंदरदत्तपञ्चाङ्गुलितलानि उपचितवन्दनकलशानि घन्दनघटमुकतोरणप्रतिहारदशज्ञानागानि आस फोत्सक्तविपुलवृत्तमाया तिममाल्यदामकलापानि पञ्चवर्णसरससुरभिमुक्तपुष्पपुञ्जोपचारकलितानि कालागुरुप्रवरकुन्दरुफतरुफधूपमघमघाय मानगन्धोद्भूताग्निरामाण्य सुगन्धधरगन्धगन्धितानि गन्धवर्तिभूतानि अप्सरोगणसुघसकीर्णानि दिव्यव्रुटितगब्दस्रग्णादितानि सर्वरत्नमया नि अञ्जानि शङ्खानि पृष्ठानि सृष्टानि नीरजासि निष्पङ्गाणि निफण्टकञ्ज्यायानि सप्रजाणि समरीचीनि सोद्योतानि प्रसादनीयानि दशनीयानि अत्रिरूपाणि प्रतिक्रपाणि एतेषु असुरकुमाराणा देवाना पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रद्वष्टानि । उपपातेन लोकस्यासल्येयज्ञाने समुद्घातेन लोक

त्यण वहवे असुरकुमारादेवा परिवसन्ति काला लोहितस्का विंवोष्ठा धवलपुष्पदन्ता अस्यिकेसा वामेयकुं  
 ऋलधरा अद्भुतदणालितगता ईसीसिलिधपुष्पगसाइ असकिलठाइ सुज्जमाइं वत्याइं पत्रपरिहिद्या  
 वय च पठम समङ्कता विहय च असपत्ता ऋद्दे जोद्धेणे वहमाणा तलन्नंगयतुक्रियवरन्नसणनिस्मलनिर  
 यमणिरयणमक्रियन्तुया दसमुद्दामाक्रियगहत्या चूक्रामणिविचित्रचिधगता सुरूवा महिहीया महज्जुडया म  
 मायसा महव्वला महाणुजागा महासोस्का हारविराडयवत्या कवळयतुक्रिययन्तुया अगयकुळलमहगळ  
 यलकणपीठधारी विचित्रहत्यान्नरणा विचित्रमालामउलिमउष्ठा कल्लाणगपवरवत्यपरिहिद्या कल्लाणगपवर  
 मल्लाणलेवणधरा नासरवोदो पलववनमालधरा दिव्हेण वखेण दिव्हेण गधेणं दिव्हेण फासेण दिव्हेण संघय  
 णेण दिव्हेण सठाणेण दिव्हाए ड्ढोए दिव्हाए जुईए दिव्हाए पन्नाए दिव्हाए तायाए अच्चीए दिव्हेणं एएणं  
 दिव्हाए लेसाए दसदिसान् उज्जोवेमाणा पन्नासेमाणा तण तस्य साण २ न्नवणावाससयसस्साणं साण २

स्यासत्येयजाने स्यानेन लोकस्यासत्येयजाने । तत्रनु वरध असुरकुमारा देवा परिवसन्ति । काला लोहिताद्या विन्वोष्ठा धवलपुष्पदन्ता अ  
 सितकेशा वामेय ( एकवर्णावसक्त ) कुण्डलधरा अद्भुतदणालितगता इयच्छिलप्रपुष्पप्रकाशानि अस्मिन्निष्ठानि मूल्यानि वस्याणि प्रवरपरिधाना  
 वयस्य प्रथम समतिक्रान्ता द्वितीय चासप्राप्ता मध्ये यौवने वत्तमाना तलन्नङ्गयुदितवरन्नूपणा निर्मलमणिरवमखिदतनुजा- दशमुद्दामाणिडताग्रहस्ता-  
 चूक्रामणिविचित्रचिद्रूता सुकृपा मरचिका मरदुष्टा- महायसा महाधला मरानुजावा हारविराजितवक्त्रस्य कटकजुदितस्तस्मिन्निष्ठ  
 ना अद्भुतकुण्डलमद्गयकालकणपीठधारिणी विविधरहस्तान्नरणा विचित्रमालामोलिमगठला कल्याणकप्रधरव्यपरिहिता कल्याणकप्रवरमा  
 ल्यानुलेपनधरा नासुरवोदय ( नासुरवरीराः ) प्रलम्बयनमालाधरा- दिव्येन वर्णेन दिव्येन गन्धेन दिव्येन सघयणेन दिव्येन स

सामाणियसाहस्सीण साण २ तावत्तीसाणं साण २ लीगपाळणं साण २ अण्णमहिंसीण साणं २ परिसाणं  
 साण २ अणियाण साण २ अणियाहिर्वईण साण २ अयस्सदेवसाहस्सीण अण्णसि च वत्तण नवणवा  
 सीण देवाणय देवीणय अण्णवच्च पोरेवच्च सामित्त न्हित्त महत्तरगत्त अण्णार्इसरत्तेणावच्च करिमाणा पा  
 लेमाणा महयाहयनहगीयवाडयतीतलतालतुक्रियघणमुइगपफुप्पवाइयरवेण दिट्ठाइ भोगन्नोगाइ नुजमा  
 णा विहरत्ति, चमरवल्लिणो इत्य दुवे असुरकुमारिदा असुरकुमारयाणो परिवसत्ति काला महानीलस  
 रिसा नीलगुलियगवल्लयसिकुसुमप्पगासा वियसियसयवत्तनिम्मलसीसियरत्तत्रनयणा गरुडाययउज्जत्तंग  
 नासा उयचियसिलप्पवालवियफलसन्निहाहरोठा पफुरससिसगलविमलनिम्मलदहिघणसखगोखीरकुदुद  
 गरयमुणालिया धवलदत्तसेढी हुयवहणिद्धंतधोयतत्तवाणज्जारत्ततलतालुजीहा अजणघणकसिणरुयगरमाण  
 ज्जानिदुक्केसा वामेयकुलधरा अद्धचदणाणुलित्तगत्ता ईसीसिलिधपुप्फपगासाइ असकिलिठाइ सुज्जमाइ व

स्यानेन दिव्यया क्रथा दिव्यया युक्ता दिव्यया प्रत्रया दिव्यया लायया दिव्येन अर्चिषा एतेन दिव्येन दशदिशासूद्योतमाना प्रज्ञासी  
 मान तेन तत्र स्वेपा २ प्रवनावासशतसहस्राणा सामानिकसहस्राणा त्रयस्त्रिंशता लोकपालाना अग्रमहिषीणा परियदामधिकारिणा अधिकारि  
 यतीनामायरक्षकदेवसहस्राणामन्येषा च द्यूना देवाना देवीनामाविपत्य पीरपत्य स्वामित्व नर्तृत्व महत्तरकत्वमाद्भ्यश्चरसेनापरयच कारयमाणा  
 पालयमाना महताऽऽहृतनृत्यगीतवादित्रतन्त्रीतलतालतुक्रियघनसुदृढपटुप्रवादिदतरवेण दिव्यानि भोगन्नोगानि प्रज्जाना विहरत्ति । चमरवल्लि  
 नीशत्रोजे असुरकुमारैन्द्री असुरकुमारराजानी परिव सत काला महानीलश्रीपी नीलगुटिका गवलातसीकुसुमप्रकाशा विकसितशतपत्रनिर्मल  
 शीतरक्तताघनयना गरुडायसक्रनूतुङ्गनासा उपचितशिलाप्रवालविस्त्रवन्निम्राचरोष्टा पाशुरशशिसकलविमलानिमलदर्पिघनशखगीवीरकुन्दो



त्याह पवरपरिहया वयं च पढमं समझ्कंता विडयच व्यसंपत्तां नद्दे जीव्णे वहमाणा तलजंगयतुक्रियप  
वरन्नसणनिम्लमणिरयणमक्रियनुया दसमुद्दामक्रियगहत्या चूळामणिविचित्तचिधगता सुखवा महिह्दीया  
महज्जुया महायसा महव्वला महानुत्तागा महासोस्का हारविराडयवत्या कळयतुक्रियथन्नियनुया व्यंगदकुंळ  
लमठगळतलकणपीठधारी विचित्तहत्यान्नरणा विचित्तमालामउलिमउळा कळ्वाणगपवरवत्यपरिहिया कळ्वा  
णगपवरमह्वाणलेवणा न्नासुरवोदी पलववणमालधरा दिव्वेण वखेणं दिव्वेण गंधेणं दिव्वेण फासेणं दिव्वेणं  
सठाणेणं दिव्वाए इहीए दिव्वाए जुईए दिव्वाए न्नासाए दिव्वाए ळायाए दिव्वाए पहाए दिव्वाए व्यच्चीए  
दिव्वेण एणं दिव्वाए लेसाए दसदिसाउ उज्जोवेमाणा पन्नासेमाणा तेण तत्य साण २ न्नवणावाससयसहस्सा  
ण साण २ सामाणियसाहस्सीण साणं २ तावत्तीसाणं साण २ लोणपालाणं साणं २ व्यंगमहिसीणं साणं २

द करजसृणालिकापवलदत्तश्रेणयो हुतवहनिधर्मात्तथौततप्तपनीपरक्ततलतालुजिह्वा अज्जघनरुक्कप्रसृचिकरमणिस्त्रिगधकेद्या. वासेयकुणकधरा  
अद्वचन्दनलिप्तगात्रा इंपदीपब्धीलनप्रुप्पप्रकाशानि असंक्रिष्टानि सूक्ष्माणि वस्त्राणि प्रवरपरिहिता वयश्च प्रथम समतिकान्ता द्वितीय चासप्राप्ता  
नद्रेयीवने वर्त्तमाना तलनङ्गयतुडियवरजूपयणानिर्मलमणिरत्नमणिकतन्नुजा दशमुद्दामगिडतायहस्ता चूळामणिविचित्तचिद्रुगताः सुरूपा महधिका  
महद्युद्धा महायसा महाव्वला महानुभावा महासुखा हारविराजितवत्तस कळयतुडियस्ताम्भितन्नुजा अद्दकुण्डलसृष्टगळतलकणपीठधारिणो  
विचित्तहस्तान्नरणा विचित्तमालामोलिमुकुटा कल्याणकप्रवरवस्त्रपरिहिता कल्याणकप्रवरमाल्यानुलेपना न्नासुरवोन्दय प्रलम्बवन्नमालाधरा  
दिव्वेन वण्णेन दिव्वेन गन्धेन दिव्वेन स्पशेन दिव्वेन सस्यानेन दिव्वया क्रध्या दिव्वया युत्तया दिव्वया न्नासा दिव्वया ळायया दिव्वया प्रन्नया  
दिव्वेनार्चिषा दिव्वेन एतेन दिव्वया लेडयया दशदिशासुद्योतमाना प्रकाशयमाना तेन तत्र साण २ (स्थाने २) न्नवणावाससुतसहस्त्राणा साण २

परिसाण साणं २ अणियाणं साण २ अणियाहिर्वहणं साणं २ अयस्सकदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च वल्लणं  
 नवणवासीण देवाणय देवीणय अहिेवच्च पोरेवच्च सामित्त न्हित्त महत्तरगत्तं अहाईसरसेणावच्च कारे  
 माणे पालेमाणे महयाहनहगीयवाइयततीतलत्तुफियघणमुङ्गपफुप्पवाइयरवेण दिव्वाइ भोगभोगाइ नु  
 जेमाणा विहरति । कहिणं नत्ते ! दाहिणिह्वाण अस्सुरकुमारदेवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पसत्ता २ कहिण  
 नत्ते ! दाहिणिह्वाण अस्सुरकुमारा देवा परिवसति २ गोयमा ! जवुद्धीवे २ मदस्स पल्लयस्स दाहिणेण इमी  
 सेरयणप्पन्नाए पुढवीए अस्सीउत्तरजोयणसयसहस्सवाहत्ताए उवरि एगं जोयणसहस्स उग्गाहिता हेठावेग  
 जोयणसहस्स वज्जित्ता मज्जे अउत्तरजोयणसयसहस्से एत्थण दाहिणिह्वाण अस्सुरकुमाराण देवाणं देवी  
 णय चोत्तीस नवणावाससयसहस्सा हवतीति मस्काय तेणं नवणा वाहि वहा अतो चउरसा सोचेंव वस्सु  
 जाव पफिक्खा एत्थण दाहिणिह्वाण अस्सुरकुमारदेवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पसत्ता । तिसुवि लोगस्स

सामानिकसहस्साणा साण २ त्रयस्त्रिंशत्ताना साण २ लोकपालाना साण २ अयमहिणीणा साण २ अधिकारिणा साण २ अधिकारि  
 यतीनामात्सरकदेवसहस्साणामन्येया च बहूना भवनवासिना देवाना देवीना च आधिपत्य पुरपतित्व स्वामित्व प्रवृत्तत्वं मत्तरकत्वमाद्येश्वरसेनाप  
 त्य च कारयमाना पालयमाना महताइतनृत्यगीतवादित्रतन्त्रीतलतालतुक्रियनयदङ्गपटुप्रवादितरवेण दिव्यानि भोगभोगानि भुञ्जाना विहर  
 न्ति । कस्मिन् प्रदत्त । दाक्षिणादिशासुरकुमाराणा देवाना स्थानानि प्रज्ञप्तानि, कस्मिन् प्रदत्त । दाक्षिणादिशासुरकुमारादेवा परिवसन्ति । गी  
 तम् । जम्बुद्वीपे मन्दरस्य पर्वतस्य दाक्षिणेनतस्या रत्नप्रज्ञाया पुरियव्यामशीत्युत्तरयोजनशतसहस्रबहुलायामुपर्येक योजनसहस्रमुद्गृहीत्वाचस्ता  
 देक योजनसहस्र यजयित्वा मध्ये अष्टसप्ततियोजनशतसहस्रे एतेषु दाक्षिणात्यानामसुरकुमाराणा देवाना देवीना च वतुस्त्रिंशद्भवावासशतसह

असखेज्जइन्नागे, तत्पणं बहवे दाहिणिस्स आसुरकुमारदेवा देवीने परिवसंति काला लोहितस्का तहेव जाव  
 न्नेमाणे विहरति, एवं सव्वत्थ आणियच्च न्वणवासीणं, चमरे डल्य असुरकुमारिदे असुरकुमारया प  
 रिवसड काले महानीलसरिसे जाव पढासेमाणे सेण तल्य चउत्तीसाए न्वणवासासयसहस्साणं चउसठीए  
 सामाणियसाहस्सीण तावत्तीसाए तावत्तीसगाण चउरहं लोगपालाणं पचरह अग्गमहिसीणं सपरिवाणं  
 तिरह परिसाण सत्तरह अणियाण सत्तरह अणियाहिवईण चउरहं च चउसठीणं आयरस्कदेवसाहस्सीणं  
 अन्नेसि च वल्लणं दाहिणिस्साण देवाण देवीणय आहेवच्च पोरेवच्च जाव विहरंति । कहिणं न्ते ! उत्तरि  
 स्साण असुरकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पस्सत्ता । कहिण न्ते ! उत्तरिस्सा असुरकुमारा देवा  
 परिवसति ? गोयमा ! जवुदीवे दीवे मदस्स पव्वयस्स उत्तरेणं इमीसे रयणप्पन्नाए पुढवीए असीउत्तर

स्साणे न्ववन्तोत्याख्यातम् । तानि न्ववनानि बहिर्वृत्तानि अन्तश्चतुरस्त्राणि सोचैव वणंते यावत्प्रतिरूपा स्तेषु दाक्षिणात्यानामसुरकुमारदेवाना  
 पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि मच्चक्षानि । त्रिद्यपि लोकस्यासुर्ययज्ञाने तत्र नु बहवो दाक्षिणात्या असुरकुमारदेवा देव्यश्च परिवसन्ति काला लोहि  
 ताका तथैव यावद्भुज्जमाना विहरन्ति । एव सर्वत्र जावनीय न्वनवासिना चमरो ऽत्र असुरकुमारन्तो असुरकुमारराजा परिवसन्ति काले महा  
 नीलसदृशो यावत्प्रकाशमान तत्र चतुस्त्रिंशत्भवनावासयत्तसहस्त्राणा चतु पष्ठितमे सामानिकसहस्त्राणा त्रयस्त्रिंशो त्रयस्त्रिंशद्द्वाना चतुर्णा लोक  
 पालाना पञ्चानामग्रमहिषीणा सपरिवाराणा तिसृणा परिपदा सप्तानामनीकाधिपतीना चतुर्णा च चतु पष्ठिकानामात्मरक्षकदेव  
 सहस्त्राणामन्येषा च बहूना दाक्षिणात्याना देवाना देवीना चाधिपत्य पीरपत्य यावद्विहरन्ति । कस्मिन्नु भदत्त । औत्तराणामसुरकुमाराणा  
 देवाना पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि मच्चक्षानि । कस्मिन्नु भदत्त । औत्तरा असुरकुमारा देवा परिवसन्ति ? गोतम । जस्यद्दीप्ते दीप्ते मन्दरस्य

जीयणसयसहस्रबाह्वाए उवरि एग जीयणसहस्र उग्गाहिता हेठावेग जीयणसहस्र वज्जिता मज्जे  
 अण्हत्तरिजीयणसयसहस्रे एत्यण उत्तरिक्षाण असुरकुमाराणं देवाण देवीणय तीस न्नवणावाससयसहस्रा  
 न्नवतीति मक्काय तेण न्नवणा वाहि वहा अतो चउरसा सेस जहा दाहिणिस्सिण जाव विहरति, वली डल्य  
 वडरीयणिदे वडरीयणराया परिवसड, काले महानीलसरिसे जाव पन्नासेमाणे सेण तल्य तीसाए न्नवणा  
 वाससयसहस्राण सठीए सामाणियसाहस्सीण तावत्तीसाए तावत्तीसगाण चउरह लोगपालाण पचरह  
 अगमहिस्सीण सपरिवाराण तिरह परिसाण सत्तरह अणियाण सत्तरह अणियाहिर्वईण चउरह सठीण  
 आयरक्कदेवसाहस्सीण अस्सेसि च वल्लणं उत्तरिक्षाण असुरकुमाराण देवाणय देवीणय अणहेवच्च पोरेवच्च  
 जाव कुव्वमाणे विहरति । कहिण ज्ञते ! नागकुमाराण देवाण पज्जतापज्जत्ताण ठाणा पयसत्ता, कहिणं

पवतस्य उत्तरण एतस्या रत्नप्रभाया पृथिव्या अशीत्युत्तरयोजनज्ञातसहस्रबाह्व्या । उपर्येक योजनसहस्रमवगाह्यायक योजनसहस्र वजंयित्वा  
 मध्ये ऽपसप्ततियोजनज्ञातसहस्रे अत्र श्रीत्तराणामसुरकुमाराणां देवानां देवीनां च त्रिशङ्खधनावासज्ञातसहस्राणि प्रवर्त्ततीति मयाख्यातम् । तानि  
 प्रवर्त्तानि बह्विधृतानि अन्तश्चतुरस्त्राणि तेषु यथा दाक्षिणात्यबहिर्वहन्ति । वली अत्र वडरीचनेन्द्री वडरीचनराजा परिवसति कालो मरानील  
 सदृशो यावत्प्रकाशमानस्तत्र त्रिशङ्खं प्रवर्त्तयानासज्ञातसहस्राणि पष्ठिसय्याकसामानिकसहस्राणां त्रयस्त्रिंशत्तया त्रयस्त्रिंशत्तकानां चतुर्णां लोकपाला  
 ना पञ्चानामग्रमहिषीणां सपरिवाराणां तिसृणां परिपदा समानामनीकानां समानामनीकाधिपतीनां चतु पष्ठिकात्प्रवर्त्तकदेवसहस्राणामन्येषां  
 च यदूना मीत्तरिकाणामसुरकुमाराणां देवानां च देवीनां चाधिपत्यं पुरोवर्त्तत्वं यावत्तुर्ज्वाणां विहरन्ति । क्व भदन्त ! नागकुमाराणां देवानां  
 पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रवृत्तानि, क्व भदन्त ! नागकुमारा देवा परिवसन्ति । गीतम् । एतस्या रत्नप्रभाया पृथिव्या अशीत्युत्तरयोजनज्ञात

ऋते । नागकुमारा देवा परिवसति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्यन्नाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्स वाहल्लाए उवरिएग जोयणसहस्स वज्जिऊण मज्जे अठहत्तरिजोयणसयसहस्से एत्थण नागकुमाराण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण चुलसीडन्नवणावासयसहस्सा हवतीति मरुकाय , सेण न्नवणा वाहि वहा अतो चउरं सा जाव पफ़िरुवा तत्थण नागकुमाराण पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पसत्ता । तिसुवि लोगस्स अस्सखेज्जइ न्नागे तत्थण बहवे नागकुमारा देवा परिवसति, महिद्धिया महज्जुडया सेस जहा उहियाण जाव विहरति धरणन्नयाणदा एत्थ दुवे नागकुमारारायाणो परिवसति महिद्धिया सेस जहा उहियाण जाव विहरति । कहिणं ऋते ! दाहिणिस्सल्लानं नागकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पसत्ता । कहिणं ऋते ! दाहिणिस्सल्लानं नागकुमारादेवा परिवसति ? गोयमा ! जवूद्दीवे २ मढरस्स पव्वयस्स दाहिणेण इमीसे रयणप्यन्नाए पुढ वीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सवाहल्लाए उवरिएग जोयणसहस्सं उग्गाहिता हेठावेग जोयणसहस्स व

सहस्स वाहल्यायावपरि एक योजनसहस्स वजंयित्वा पुनर्मध्ये अप्सप्ततियोजनशतसहस्से अत्र नागकुमाराणा देवाना पर्याप्तापर्याप्ताना चतुरशी तित्रवनावासशतसहस्सालि प्रवलीत्याख्यातम्, तानि प्रवनानि वद्विद्वतानि अन्तश्चतुरस्त्रालि यावत्प्रतिरूपाणि तत्र नागकुमाराणा पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रच्छप्तानि । त्रिद्युपि लोकस्यासख्येयन्नाग तत्र बहवो नागकुमारदेवा परिवसन्ति, महद्दिका मग्गाद्युतिका अप यथीचिकाना यावद्विहरन्ति । धरणन्नूतानेन्द्रा वत्र द्वी नागकुमारराजानो परियसति सहयिकी अप यथीचिकाना यावद्विहरन्ति । क्व नदन्त ! दाक्षिणात्य नागकुमाराणा देवाना पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रच्छप्तानि, क्व नदन्त ! दाक्षिणात्यनागकुमारदेवा परिवसन्ति । गीतम । जम्बूद्वीपे द्वीपे मन्दरस्य पर्वतस्य दक्षिणेन एतस्या रत्नप्रन्नपृथिव्या अशीत्युत्तरयोजनशतसहस्स वाहल्याया उपर्येक योजनसहस्समवाह्या यस्मादेक योजनसहस्स

जिज्ञासा मज्जे अण्डहत्तरिजोयणसयसहस्रे एत्यणं दाहिणिस्त्राण नागकुमाराणं देवाण चोयालीस जवणावा  
ससयसहससा हवतीति मस्काय, तेण जवणा वाहि वहा जात्र पक्रिरुवा एत्यण दाहिणिस्त्राण नागकुमाराण  
पज्जहापज्जहाण ठाणा पयत्ता, तिसुवि लोगस्स अस्सेज्जइअगे एत्यण वहवे दाहिणिस्त्राण नागकुमारा  
देवा परिवसति महिहिया जात्र विहरति । धरणं एत्य नागकुमारिदे नागकुमाराया परिवसति महिहिए  
जाव पन्नासेमाणे सेण तल्य चोयालीसाए जवणावाससयसहसमाणं ठरह सामाणियसाहस्सीण तावहीसाए  
तावहीसगाण चउरह लोगपालाण ठरह अण्णमहिसीण सपरिवाराण तिरह परिसाण सत्तरह अणियाण  
सत्तरह अणियाहिबईण चउवीसाए अयसरकदेवसाहस्सीण अण्णेति च वल्लण दाहिणिस्त्राण नागकुमाराण  
देवाणय देवीणय अणेवच्च पारेवच्च जाव कुम्माणे विहरति । कहिण जते ! उत्तरिस्त्राणं नागकुमाराण दे

वर्जयित्वा मध्येष्टसप्ततिथोजनशतसहस्रे अत्र दाक्षिणात्याना नागकुमाराणा देवाना चतुश्चत्वारिण्यद्भवनवायाशतसहस्राणि प्रवत्तीत्याख्यातम् ।  
तानि जवनानि यद्विद्वृत्तानि यावदप्रतिरूपाणि अत्र दाक्षिणात्याना नागकुमाराणा पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रशस्तानि । त्रिवि लोकास्वस्ये  
यन्नाग, अत्र बहवो दाक्षिणात्या नागकुमारदेवा परिवसन्ति मष्टपिका यावद्विररन्ति । परण अत्र नागकुमारैन्त्री नागकुमारराजा परिवसति  
महद्विंशो यावदप्रकाशमान तत्र चतुश्चत्वारिण्यद्भवनवायाशतसहस्राणा पण सामानिकमहस्राणा वयस्त्रिंशत् त्रयाविंशताना चतुर्णां लोकपालाना  
पञ्चामयमहिरीणा सपरिवाराणा तिसृणा परिपदा सप्तानामनोकाना सप्तानामनीकाचिपतीना चतुर्विंशत्यात्मरदकदेवसहस्राणा मन्येया च य  
दूना दाक्षिणात्याना नागकुमाराणा देवाना च अचिपत्य पुरोधर्तित्व यावदकुर्वन्ता विहरन्ति । क्व प्रदत्त । श्रीसरिकाणा नागकुमाराणा  
देवाना पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रशस्तानि । क्व प्रदत्त । नागकुमारा श्रीत्तरिका दद्या परिवसन्ति ? गोविम ! जम्बूद्वीपे द्वीपे मन्दरस पर्वत

वाणं पज्जतापज्जत्ताण ठाणा पसत्ता, कहिणं नत्ते ! उत्तरिस्स नागकुमारा देवा परिवसंति ? गोयमा ! जंयद्दीवेर मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेण इमीसे रयणप्पन्नाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सवाहत्ताए उ वरि एग जोयणसहस्स उग्गाहिता हेठावेग जोयणसहस्स वज्जित्ता मज्जे अठ्ठहत्तरिजोयणसयसहस्स एत्यण उत्तरिस्सणा नागकुमाराणं देवाणं चत्तालीस नवणावाससयसहस्सा हवतीति मस्काय, तेण नवणा वाहि वहा सेस जहा दाहिणिस्सणां जाव विहरति, नूयानदे इत्य नागकुमारिदे नागकुमाराया परिवसड महि हिंए जाव पन्नासेमाणे सेण तस्य चत्तालीसाए नवणावाससयसहस्साण अहिेवस्स जाव विहरड । कहिणं नत्ते ! सुवणकुमाराण देवाणं पज्जतापज्जत्ताण ठाणा पसत्ता । कहिण नत्ते ! सुवणकुमारा देवा परिवसं ति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पन्नाए पुढवीए जाव एत्यण सुवणकुमाराण देवाणं वाचत्तरिन्नवणावाससय सहस्सा हवतीति मस्काय, तेण नवणा वाहि वहा जाव पफिरूवा तत्यणं सुवणकुमाराण देवाणं पज्जत्ता

स्य उत्तरेण एतस्या रत्नप्रज्ञाया पृथिव्या अशीत्युत्तरयोजनशतसहस्रवाक्कल्याया उपर्येक योजनसहस्रमवगात्या घत्तादेक योजनसहस्र वज्रयित्वा मध्येष्टसप्ततिर्योजनशतसहस्रे अत्र अतीतरिकाणा नागकुमाराणा देवाना चतुश्चत्वारिंशद्भवनानावासाशतसहस्राणि भवन्तीत्याख्यातम् । तानि प्रवृत्ता नि वरिचृत्तानि शेष यथा दाक्षिणात्याना यावद्विहरन्ति । नूयानन्दोत्र नागकुमारेन्द्रो नागकुमारराजा परिवसति । मर्हद्दुको यावत् प्रकाशमा न स तत्र चतुश्चत्वारिंशद्भवनानावासाशतसहस्राणा यावद्विहरन्ति । क्व भदन्त ! सुवणकुमाराणा पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि क्व प्रदन्त ! सुवर्णकुमारा देवा परिवसन्ति ? गीतम् । एतस्या रत्नप्रज्ञायाः पृथिव्या यावदत्र सुवर्णकुमाराणा देवाना द्विसप्तति प्रवृत्तावासाशतसहस्राणि नव त्तीत्याख्यातम् । तानि प्रवृत्तानि यद्विचृत्तानि यावदप्रतिक्रियाणि तत्र सुवर्णकुमाराणा देवाना पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रदत्तानि । त्रिष्वपि लो

पञ्जज्ञाण ठाणा पयुता । तिसुवि लोगस्स अस्सखेज्जडन्नागे, तत्थणं वहवे सुवन्तकुमारा देवा परिवसंति महिद्धिया सेस जहा उहियाण जाव विहरति, वेणुदेव वेणुदालीय इत्थ दुवे सुवस्सकुमारिदा सुवन्तकुमार रायाणो परिवसति महिद्धिया जाव विहरति । कहिणं ज्ञेते । दाहिणिज्ञाण सुवन्तकुमाराणं पञ्जज्ञापञ्जज्ञा णं ठाणा पयुता । कहिण ज्ञेते ! दाहिणिज्ञा सुवन्तकुमारा देवा परिवसति ? गोयमा ! इमीसे जाव मज्जे अठहत्तरिजोयणसयसहस्से एत्थण दाहिणिज्ञाण सुवस्सकुमाराण अठत्तीस जवणावाससहस्सा हवंतीति मस्काय, तेण जवणा वाहि वह्वा जाव पठिरुत्ता, तत्थण दाहिणिज्ञाण सुवस्सकुमाराण पञ्जज्ञापञ्जज्ञाण ठाणा पयुता, तिसुवि लोगस्स अस्सखेज्जडन्नागे, एत्थण वहवे सुवस्सकुमारा देवा परिवसति । वेणुदेवे इत्थ सुवन्तिदे सुवस्सकुमाराराया परिवसति सेस जहा नागकुमाराण । कहिण ज्ञेते ! उत्तरिज्ञाणं सुवन्तकु- माराण देवाण पञ्जज्ञापञ्जज्ञाण ! ठाणा पयुता । कहिण ज्ञेते ! उत्तरिज्ञा सुवस्सकुमारा परिवसति ? गोय

कस्यासल्लेयजागमत्र वहव सुपर्णकुमारा देवा परिवसन्ति महर्षिका ज्ञेय यथीचकाना यावद्विहरन्ति वेणुदेवो वेणुदालीच अत्र द्वी सुपर्णकुमा रेन्द्री सुवर्णकुमारराजानी यावत्परिवसत महर्षिकी यावद्विहरति । क्व जदन्त । दाक्षिणात्याना सुपर्णकुमाराणा देवाना पर्याप्तापर्याप्ताना स्या नानि प्रज्ञप्तानि । क्व जदन्त । दाक्षिणात्या सुपर्णकुमारदेवा परिवसन्ति ? गीतम । एतस्या यावन्मध्ये ऽष्टसप्ततियोजनशतसहस्र मत्र दाक्षिणा त्याना सुपर्णकुमाराणामष्टविंशद्भ्रवणावासशतसहस्राणि जवन्तीत्याख्यातम् । तानि जवनानि बहिर्वृत्तानि यावत्प्रतिरूपाणि तत्र दाक्षिणात्याना सु पर्णकुमाराणा पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि त्रिष्वपि लोकस्यासल्लेयजाग अत्र वहव सुपर्णकुमारादेवा परिवसन्ति । वेणुदेवोत्र सुपर्णन्द्री सुपर्णकुमारराजा परिवसति । ज्ञेय यथा नागकुमाराणाम् । क्व जदन्त । अतीतरिकाणा सुपर्णकुमाराणा देवाना पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञ



मा ! इमीसे रयणप्यन्नाए जाव एत्यणं उन्निरिह्वाण सुवसकुमाराणं वत्तव्वया ज्ञाणिया तथा सेसाणवि चोद  
सरह इंटाण ज्ञाणियव्वा नवरं ज्ञवणनाणत्त इदाणनाणत्त वस्सेण नाणत्त परिहाणनाणत्तं च डमाहि गाहाहिं  
अणुगतव्व-चोवठीअसुराणं चुलसीतीचेवहोडनागाणं । आवत्तारिसुवस्से वाउकुमाराणव्वसुउई ॥ १ ॥  
दीवदिसाउदहीण विज्जुकुमारिरदथाणियमग्गीणं । त्तरहपिजुवलयान तावत्तारिमोसयसहस्सा ॥ २ ॥ चोत्ती  
साचोयाला अठ्ठीसचहोइसयसहस्साइ । पस्साचत्तालीसा दाहिणउहोतिजवणाइ ॥ ३ ॥ तीसाचत्तालीसा  
चोत्तीसचेवसयसहस्साइ । तायालाठ्ठीसा उत्तरउहोतिजवणाइ ॥ ४ ॥ चउसठ्ठीसठ्ठीखलु वच्चसहस्सान  
असुरवज्जाण । सामाणियाउएए चउग्गुणाअ्यायरस्कानु ॥ ५ ॥ चमरेधरणेतहवे णुदेवहरिकंतअग्गिसीहेय ।  
पुस्सेजलकतेय अमियवेलेवघोसेय ॥ ६ ॥ वल्लिज्जुयाणदेवे णुदालीहरिस्सहेअग्गिमाणवविसिठे । जलप्य

मानि , कं जदन्त । अतीतरिकाः सुपर्णकुमाराः परिवसन्ति ? गीतम् । एतस्या रत्नमन्त्राया यावत् अत्र अतीतरिकाणा सुपर्णकुमाराणा वक्तव्यता ज  
णिता तथा ज्ञोपाणामपि चतुर्दशाना मिद्राणामपि ज्ञाणितव्या नवर ज्ञवनेनानात्वमिन्द्राणा नानात्व वर्णनानात्व परिधाननानात्व चैताज्जिर्गया  
जिरनुगन्तव्यम् । चतु पठिरसुराणा चतुरशीतिरेव ज्ञवतिनागानाम् । द्विसप्तति सुपर्णे वायुकुमारेषु पस्सवति ॥ १ ॥ द्वीपदिगुदधीना विद्युत्कुमारे  
न्द्र स्तनितमग्निनाम् पस्सामपियुगलकाना पट्सप्ततिमशतसहस्रम् ॥ २ ॥ चतुस्त्रिंशच्चतुश्चत्वारिंशत् अष्टत्रिंशच्चमवत्तिशतसहस्रम् । पचाशच्चतुश्चत्वारिंशत्  
चत्वारिंशत्तोज्ञवन्तिजवन्ति ॥ ३ ॥ त्रिंशच्चत्वारिंशत् चतुस्त्रिंशच्चतसहस्रम् । सामानिकास्तुपत्ते चतुर्गुणाश्रात्परकास्तु ॥ ४ ॥ चतु-  
पटि पटि खलुपट् सप्तसूर्यसुरवर्जणाम् । सामानिकास्तुपत्ते चतुर्गुणाश्रात्परकास्तु ॥ ५ ॥ चमरधरणीतथा वेणुदेवहरिकान्ताग्निशिक्षा । पूर्णाज  
लकान्दोवा मितवेलास्यकथोपाद्य ॥ ६ ॥ वल्लिज्जुवानेन्द्रेणुदालि हरिसिद्धेग्निमाणवविसिठे ॥ जलमनोऽमितवाहन मज्जनञ्चमहाधोष ॥ ७ ॥ अतीत

नेत्रमियवाहणे पन्नजणेमहाधीसे ॥ ७ ॥ उत्तरिक्षाण जाव विहरति, कालाञ्चसुरकुमारा नागाउदहीयपं  
 दुरादोवि । वरकणगणिहसगोरा होतिसुवस्पादिसार्थणिचा ॥ १ ॥ उत्तत्तकणगवन्ता विज्जुञ्जगीयहोति  
 दीवाय । सामापियगवस्पा वाउकुमारामुणेयद्या ॥ २ ॥ अ्सुरेसुहोतिरस्ता सिलिठपुप्फप्पन्नातहाउदही । अ्या  
 सासयवसणधरा होतिसुवस्पादिसार्थणिचा ॥ ३ ॥ नीलानुरागवसणा विज्जुञ्जगीयहोतिदीवाय । सज्जाणु  
 रागवसणा वाउकुमारामुणेयद्या ॥ ४ ॥ कहिण जते ! वाणमतराण देवाण पज्जन्तापज्जत्ताणं ठाणा  
 पणत्ता, कहिण जते । वाणमतरा देवा परिवसन्ति ? गोयमा । इमीसे रयणप्पन्नाए पुढवीए रयणमयस्स  
 कऊस्स जोयणसहस्सवाहस्स उवरि एग जोयणसय उग्गाहिन्ता हिठावि एग जोयणसय वज्जिन्ता मज्जे  
 अ्ठसु जोयणसएसु एत्थण वाणमतराण देवाण तिरियमसखेज्जाउ ज्रोमेज्जा नगरावाससयसहस्सा हवतीति  
 मस्काय तेण ज्रोमेज्जा पगरा वाहि चहा अ्थतो चउरसा अ्थहे पुरकरकवियासठाणसठिया उकिन्नतरवि

रिका यावद्दिहरन्ति । कालाञ्चसुरकुमारा नामोदधीपागदुरीहोस्त । वरकनकनिकसगोरा. अवन्तिसुपण्णदिक्कस्तनिता ॥ १ ॥ उत्तत्तकनकवर्णा वि  
 द्युदनीचनवन्तिहीपाथ ॥ इयामा मियकुवर्णा वायुकुमारार्थज्जातव्या ॥ २ ॥ असुरावन्तिरक्ता शिलीन्ध्रपुप्फप्रभास्तथोदय ॥ आशाशतवसन  
 परा भवन्तिसुपण्णदिक्कस्तनिता ॥ ३ ॥ नीलानुरागवसना विद्युदनीचनवन्तिहीपाथ ॥ सन्धानुरागवसना आयुकुमारानुमातव्या ॥ ४ ॥ क  
 मदत्त । वानव्यन्तराणा देवाना स्थानानि प्रज्जानि, क्व जदत्त । वानव्यन्तरा देवा परिवसन्ति ? गीतम् । एतस्मा रत्नप्रभाया पृथिव्या रत्नमय  
 स्य काण्हस्य योजनशतसहस्रमूढाहृत्यस्य उपर्पकं याजनसहस्रमूढाहृत्या उधस्तादेकं योजनसहस्रं वज्रयित्वा मध्ये ऽष्टसु योजनसहस्रेषु अथ वानव्य  
 न्तराणां देवानां त्रियगस्ययानि ज्रोमेज्जनगराथासशतसहस्राणि अवन्तीत्याख्यातम् । ते ज्रोमेया नगरां वर्धयन्ता अन्तश्चतुरस्रा अथ पुष्करकणिका

उलङ्गन्तीरखायफलिहो पागारहालयकवाम्नतीरणपक्रिदुवारदेमन्नागा जंतसयग्विमुसलंजसंहिपरिवारिया अ  
उज्जा सया जया सया गुता अन्धवालकुठरडयअन्धयालकयत्रसमाला खेमा सिवा किकरामरदकोवरिक  
या लाउल्लोडयमहिया गोसीसरसरत्तचंदणदददिसपचंगुलितला उवचियचदणकलसा चदणधऊसुकयनी  
रणपक्रिदुवारदेसन्नागा आसतोसत्तविउलत्रहवग्घारियमल्लदामिकलावा पंचवन्नसरसरजिमुक्कपुष्पपुंजीव  
यारकलिया कालागुरुपवरकदुरुक्कतुरुक्कधूमधमघतगधुधुयान्निरामा सुगधवरगधिया गंधवहिन्नुया अच्छ  
रणसघविकिया दिह्वतुठियसदसपन्तदिया पलागमालाउलान्निरामा सहरयणमया अच्छा सरहा लठा  
घठा मठा नीरया निम्मला निपका निक्ककळ्ळया सपन्ना सिसीया सउज्जाया पासादीया दरिसणिज्जा  
अन्निरूवा पक्रिदुवा एत्थणं वाणमतराणं देवाण पज्जात्तापज्जाणं ठाणा पसुत्ता । तिसुवि लोगस्स अस्सं

सुस्थानसंस्थिता उत्तकीर्णात्तरविपुलगम्भीरखातफलिका प्राकाराहालककपाटतीरणप्रतिद्वारदेशभागा यत्रशतप्रिमुसलंजशयिषपरिवारिता आयोप्या  
या. सदागुमा अष्टषत्वारिंशत्कोष्टकरचिताष्टषत्वारिंशत्कतवणमाला खेमा शिवा किङ्कराप्रदयकोपरंक्षिता. लाउल्लोडयमहिता गोत्री  
रक्तचन्दनदर्दरदत्तपञ्चाङ्गुलितला उपविशितचन्दनकलशा चन्दनघटसुक्रतोरणप्रतिद्वारदेशभागा आसक्तोत्सक्तविपुलवृत्तवग्यारियमात्यदा  
स पा पञ्चवर्णसरसरजिमुक्कपुष्पपुंजीवधारकलितला कालागुरुपवरकन्दरुत्तुरुत्तुधूमधमघमायमानगन्धूमान्निरामा सुगन्धवरगन्धिता गन्ध  
मा अप्सरोगणसङ्घविकीर्णा दिव्यवृत्तितनिनादसम्पन्नान्दिता पलाकमालाङ्गुलान्निरामा सर्वरत्नमया अच्छा. सद्दला लथा घृष्टा मृष्टा नीरजसा  
ला निप्यङ्गा निफाटकळ्ळया सप्रमा सश्रीका सोद्योता प्रामादीया दशानीया अन्निरूपा प्रतिकूपा अत्र बानध्यन्तराणा देवाना पर्याप्ता  
र्याप्ताना स्थानानि प्रदृशानि । त्रिधवि (स्थानेषु) लोकस्यासङ्ख्येयजाग' तत्र बहवो ब्रानध्यन्तरा देवा परिवसन्ति सद्यथा-पिशाचा-जना यद्वा

खेज्जडनागे तल्यण वहवे वाणमंतरा देवा परिवसति तजहा—पिसाया नूया जक्का रक्कसा किन्नरा किपु-  
 सा नूयगवतिणोय महाकाया गधहगणा य निउणगवह्वगीतरइणो अणवसियपणवन्तियडसिवाडयन्नूयवा  
 डय कडोय महाकटीय कोहणपयगदेवा ॥१॥ चवलचचलचित्तकीलणदवप्पिया गहिरहसियपिया गीयणि  
 चरती वणमालामेलमउलकुलसच्छुडविउड्विमान्नराचारुन्नसणधरा सद्योयसुरच्चिकुसुमसुरइयपलवसोहंत  
 कतवियसितचित्तवन्नमालरइयवच्छा कामकामा कामरूवदेहधरा नाणाविहवन्नरागवरवत्यलंतचित्तचिह्न  
 गणिवसणा विविहदेसीणेत्यगहियवेसा समुडयकटप्पकलहकेलिकोलाहलप्पिया हासबोलवज्जला असि  
 मोगरसत्तिकुतहत्या अणेमणिरयणविहनिजुतविचित्तचिधगयासुरूवा महिहिया महज्जुतिया महायसा  
 महायला महानुजागा महासोस्का हारविराडयवच्छा कण्ठगतुक्रियथन्नूया मगयकुंठलमठगजुयलक  
 णपीठधारी विचित्तहत्यान्नरा विचित्तमालामउलिकल्लानगपवरवत्यपरिहिया कल्लानगपवरमल्लानुलेवणध  
 रावसा किन्नरा किम्पुहवा पुजगपतयश्च महाकाया गम्यवंगणाश्च निपुणगम्यवंगीतरतय , अणपत्तीपणपत्ती ऋषिवादीचिवन्नूतवादी च । कन्दीध

महाकन्दी कोहणकोचैवपतकश्च ॥ १ ॥ गतेष्टी देवविशेषा , चलचपलचित्तकीलणदवप्पिया गभीरहसिप्रिया गीतुत्यरतयो वनमालापीठमुल्ल  
 टकुणलस्वच्छन्दविकुर्वितान्नराचारुन्नपणधरा सर्वतुक्कसुरच्चिकुसुमसुरचित्तमल्लयश्रीजमानकान्तविकसितचित्रवनमालरचित्तवन्नस कामकामा  
 कामरूपदेहधरा नानाविधवणारागवरवखचित्तचिह्नक ( देटीप्यमान इत्यर्थ ) निवसना विविधदेशीनेपय्यगृहीतवेया समुदितकन्दपंकलहकेलितो  
 लाहलप्रिया हासबोलवहुला अस्मिद्वरशक्तिकुल्लहस्ता अनकमणिरत्तावविधनयुक्तवित्तचिधगता सुरूवा महिहिका महाद्युतिका महद्यशसो  
 महद्वला महानुभावा महेशस्या हारविराजितवन्नस कटकत्रुटितस्तस्मिन्नूजा अङ्गदकुण्डलसुगण्डयुगलकणपीठधारिणी विचित्रहस्तान्नरा

रा त्रासुरवोदी पलंववणमालधरा दिव्येण वद्वेणं दिव्येणं गधेणं दिव्येणं फासेणं दिव्येणंसंठाणेणं दिव्याए इ  
 हीए दिव्याए जूईए दिव्याए पन्नाए दिव्याए एच्छायाए दिव्याए अच्चीए दिव्येण एएणं दिव्याए लेस्साए दसदि  
 साने उज्जीवेमाणा पन्नासेमाणा तेणं तल्य साण२ ओमेज्जाणगरावाससयसहस्साण अस्सखिज्जाणं साणं २  
 सामाणियसाहस्सीण साण२ अंगमहिस्सीणं साण२ सपरिवाराणं साण२ अणियाण साण२ अणियाहि  
 ईण साण२ अयायस्कदेवसाहस्सीणं अस्सेसि च वट्ठणं वाणमतराण देवाणय देवीणय अहिेवच्चं पोरेवच्चं  
 सामित्तं न्हित्तं महत्तरगत अणार्इसरसेणावच्च कारेमाणा पालेमाणा महाहायनट्टगीयवाइयतंतीतलताल  
 तुळियघणमुड्ढगपट्ठप्पवाडयवेणं दिव्याड ओगओगाइ जुजमाणा विहरति । कहिण नत्ते ! पिसायाणं देवाणं  
 पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा प० । कहिण नत्ते ! पिसायादेवा परिवसति ? गो० ! इमीसे रयणप्पन्नाए पुढवीए

विचित्रमालामुकटा कल्याणकप्रवरवस्त्रपरिहिता कल्याणकप्रवरमाल्यानुलेपनधरा त्रासुरवोन्दय प्रलम्बवनमालधरा दिव्येन वणेन दिव्येन गन्धे  
 न दिव्येन रपरीण दिव्येन सत्यानेन दिव्यया अद्या दिव्यया द्युत्या दिव्यया प्रजया दिव्यया द्वायया दिव्येनाचिंया दिव्येनीतेन दिव्यया लेदय  
 या दशा दिश उद्योतयन्त प्रज्जासयन्तस्ते तत्र स्वेपा २ भीमेयनगरावासशतसहस्राणा अस्त्येयाना स्वेपा २ सामानिकसहस्राणा स्वेपा अग्रमहि  
 यीणा सपरिवाराणा स्वेपा २ अनीकाना स्वेपा २ अनीकाधिपतीना स्वेपा २ आत्तरत्नकदेवसहस्राणामन्येपाञ्च दहूना दानव्यन्तराणा देवाना दे  
 वीनाञ्चाधिपत्य पुरोवर्तित्व स्वामित्य प्रभृत्त्व मरुत्तरकत्वमाद्यैध्वरत्व सेनापतित्व कुर्वन्त पालयन्तो मरुदाहृतनृत्यगीतवादिचतन्वीतलतालत्रुटित  
 चनसुदहृष्टप्रवादितरवेणा दिव्यानि ओगओगानि जुज्जानो विहरन्ति । क प्रदन्त । पिशाचाना देवाना पर्योपापर्योपाना स्थानानि प्रचक्षन्ति, क प्र  
 दन्त । पिशाचा देवा परिवसन्ति ? गीतम । अस्या रत्नप्रजाया. पुण्यव्या रत्नमपस्य काण्डस्य योजनसहस्रत्राहस्योपर्यंक योजनज्ञावमवगात्स्या

रयणामयस्स कस्स जोयणसहस्सवाहस्स उवरि एगं जोयणसय उग्गाहिता हिठावेग जोयणसय वज्जि  
त्ता मज्जे अथसु जोयणसएसु एत्यण पिसायाण देवाण तिरियमसखेज्जा ओमेज्जा नगरावाससयसहस्सा  
भवतीति मस्कायं तेण ओमेज्जा नगरा वाहि वहा जहा उहिले नवणवसुन तहा आणियव्वो जाव पफ़िरू  
वा, एत्यण पिसायाण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पसत्ता, तिसुवि लोगस्स अस्सखेज्जइज्जागे तत्यणं  
वहवे पिसाया परिवसति महिहिया जहा उहिया जाव विहरति, काला महाकाला इत्य दुवे पिसाय  
इदा पिसायरायाणो परिवसति, महिहिया महज्जुडया जाव विहरति । कहिणं जत्ते ! दाहिणिह्माण पि  
सायाण देवाण ठाणा पसत्ता । कहिण जत्ते ! दाहिणिह्मा पिसाया देवा परिवसति ? गो० । जवूदीवे २  
मटरस्स पव्वयस्स दाहिणंण डमीसे रयणप्पन्नाए पुढवीए रयणामयस्स कस्स जोयणसहस्सवाहस्स उवरि  
एग जोयणसय उग्गाहिता हिठावेग जोयणसय वज्जिता मज्जे अथसु जोयणसएसु एत्यणं दाहिणिह्माण

धर्मेक योजनशत वर्जयित्वा मध्येऽष्टसु योजनशतैश्च पिशाचानां देवानां तिर्यगसङ्ख्यानि भीमेयकनगरासशतसहस्राणि प्रवन्तीत्याख्यातम् ।  
ते भीमेया नगरा बहिर्वृत्ता यथोपिको जवनवणक स्तथा अणितथ्यो यावत्प्रतिरूपा, अत्र पिशाचानां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञ  
प्तानि । त्रिद्यपि लोकस्यासख्येयज्ञाग, तत्र बहव पिशाचा परिवसन्ति महर्दुका यथोपिका यावद्विहरन्ति, कालमष्टाकाली चात्र द्वौ पिशाचे  
न्द्री पिशाचराजानौ परिवसत, महर्दुकी महाद्युतिकी यावद्विहरत । क्व प्रदन्त ! दाक्षिणात्यानां पिशाचानां देवानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, क्व  
मदन्त ! दाक्षिणात्या पिशाचा देवा परिवसन्ति ? गोतम । जम्बूद्वीपे २ मन्दरस्य पर्वतस्य दक्षिणतोस्या रत्नप्रज्ञाया पृथिव्या रत्नमयस्य कारुड  
स्य योजनसहस्रत्राहस्योपर्येक योजनशतमवगाह्या धर्मेक योजनशत वर्जयित्वा मध्येऽष्टसु योजनशतैश्च दाक्षिणात्यानां पिशाचानां देवानां

एत्यणं छणवन्निया देवाणं ठाणा प०, उववाएलो० समुग्घाएलो० सठाणेणलो० तत्थणं छणवन्निया देवा  
परिवसति महिहिंया जहा पिसाया जाव विहरति सन्निहियसामाणा इत्य दुवे छणवन्निया छणवन्ति  
यकुमाररायाणो परिवसति महिहिंया जहा कालमहाकाला एव जहा कालमहाकालाणं दोरहपि दाहिणि  
स्साण उत्तरिस्साणय जणिंया तथा सनिहियसामाणाणं पि ज्ञाणियद्धा संगहणि गाहा—छणवन्नियपणवन्निय  
इसिवाइयन्नयवाइएचेव । कंदिममहाकदिय कुहळयपयगंदवाय डमे इंदा—सनिहियासामाणा धाडविधाएय  
इसीयइसिवाले ईस्सरमहेस्सरविंय हवडसुवत्येविसालिय ॥१॥ हासेहासरईविंय सेएयजवेतहामहासेए पयगेप  
यगपएविंय नेयद्धायाणपुर्वीए ॥२॥ कहिणं जते । जोडसियाण देवाणं पज्जत्ताण २ ठाणा प० ? कहिणं जते !  
जोडसिया देवा परिवसति ? गो० ! डमीसे रयणप्पन्नाए पुढवीए वज्जसमरमणिज्जाड भूमिजागानु सत्तणउ  
ड जोयणसए उहु उप्पइत्ता दसुत्तर जोयणसय वाहल्ले तिरियमसंखिल्ले जोडसविंसए एत्यणं जोडसियाणं

रन्ति । सन्निरहितसमानो चात्र द्वावणपन्निकेन्द्रावणपन्निकराजानो परिवसतो महर्द्धिको यथा कालमहाकाली एव यथा कालमहाकालयोद्धयो द्रो  
क्षिणात्ययो रीत्तरिकाशाण ( वक्तव्यता ) भाग्यता तथा सन्निरहितसामानिकयोरेपि जग्गितथा सङ्गहणिगाथा—अणपन्निकणपन्निका वृषिवादी चे  
वन्नूतवादी च । कन्दीवमहाकन्दी कोइगहीचेवपतकथ ॥१॥ इमे इन्द्राः सन्निरहित सामानो धावविधात्तपयथापैपाल । ईश्वरमहेद्वरीखलु ज्वति  
सुवखोविशालथ ॥२॥ हासोहास्यरत्तिखलु खेतज्जप्रवस्तथा महास्वेत । पतक पतकपदोपिच ज्ञातथा आनुपूर्व्याच ॥२॥ क भदन्त । ज्योति  
काणा देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रष्टसानि । क भदन्त । ज्योतिष्का देवाः परिवसन्ति ? गीतम । अस्या रत्तप्रजाया पुण्यथा यहुसमर  
मणीयाद् भूमिजागा तस्मन्नवतियोजनशतमूर्द्धं मृत्युस्य दशोत्तर योजनशत द्वाइत्य तिर्यगन्धर्व्य ज्योतिष्कविपयमन्न ज्योतिष्काणा देवाना तिर्यग

देवाण तिरियमसखिज्जा जोडसियविमाणावाससयसहस्सा हवंतीतिमस्काय तेण विमाणा अण्ठकविठ्ठ  
 सठाणसठिया सव्वाफालियामया अण्ठगयमुसियपहसियाइव विविहमणिक्कणगरयणन्नत्तिचिन्ता वाउठुत  
 विजयवेजयतीपफागाच्छन्नाडच्छत्तकलिया तगा गगनतलमहिंलघमाणसिहरा जालतरयणपजस्मीलियव्व  
 मणिक्कणथून्नियागा वियसियसयपत्तपोठरीया तिलगरयणध्वचदचित्ता नानामणिमयदामालकिया अतो  
 पफिरूवा एत्थण जोडसियाण पज्जन्ना २ ण ठाणा पण्णा, तिसुवि लोगस्स असखेज्जइन्नागे तत्थण वहवे  
 जोडसिया देवा परिवसति तज्जहा—वहस्सईचदासूरासुक्कासणिच्छराराज्जधूमकेतुवुधाअगारगा तत्ततवणि  
 ज्जक्कणगवन्ना जेगहा जोडसमि चार चरति केत्तयगतिरडया अण्ठावीसहविहाय नस्सक्ता देवयगणा ना  
 णासठाणसठियानुय पचवन्तानु तारयानु उवियलेस्साचारिणो अविस्साममण्णलगई पत्तेय णामंकपगणि

सख्येयानि ब्रवन्नावासज्जसहस्साणि भवन्तीति मयास्यातम्, तानि विमानानि अद्वैकपितृकसस्यानसस्थितानि सर्वस्तुतिकमयानि अभ्युद्गतोत्स  
 तप्रसूतप्रज्ञासितानि विविधमणिक्कणकरवन्नत्तिचिन्ताणि वातोदधून्विजयवेजयन्तीपताकच्छव्रातिच्छन्नकलितानि तुङ्गानि गगनतलानुलिखिस्स  
 राणि जालान्तररत्नपञ्जरोन्मीलितमिव मणिक्कणस्तूपिकानि विक्कसितज्जपत्रपुण्डरीकतिलकरत्तादुचन्द्रचित्राणि नानामणिमयदामालङ्कृतानि  
 अन्तर्द्विह्य शृङ्गाणि तपनीयशशिचरालुकाप्रस्तानि ज्ञानरपशोणि सश्रीकरूपाणि प्रासादीयानि दर्शनीयानि अन्निरूपाणि प्रतिकूपाणि अत्र ज्यो  
 तिकाणा पर्योसापर्यासाना स्थानानि मण्डपानि, त्रिवि लोकास्यासख्येय ज्ञाग तत्र यहवो ज्योतिरदेवा परिवसन्ति तद्यथा—युद्धरपतय यन्त्रा  
 सूर्यो ज्जुकाः शूनैश्चरा राहवु केतवो बुधा अङ्गारकास्तप्तपनीयकनकवर्णा ये ग्रहा ज्योतिष्यके चार वरन्ति केतवो गतिरविष्ठा अष्टाविंशतिविधा



यचिंधमउठा महिहिया जांव प्यन्नासमाणी तेणं तल्य साणं२ विमाणावाससयसहस्ताणं साणं२ सामाणि  
 यसाहस्सीण साण २ अगमहिसीण सपरिवाराण साण २ परिताण साण २ अणियाणं साणं २ अणि  
 याहिंवईणं साणं२ आयरस्कदेवसाहस्सीण अन्नंसिं च वल्लण जोडसियाणं देवाणय देवीणय आहेवच्चं जाव  
 विहरति चटिमसूरियाय एल्य दुवे जोडसिदा जोडसियगयाणो परिवसति महिहिया जाव पन्नासमाणा ते  
 ण तल्य साण २ जोडसियविमाणावाससयसहस्ताण चउण्ह सामाणियसाहस्सीण चउण्ह अगमहिसीण  
 सपरिवाराणं तिण्ह परिताणं सत्तण्ह अणियाण सत्तण्ह अणियाहिंवईण सोलसरह आयरस्कदेवसाहस्सी  
 ण जोडसियाण देवाणय देवीणय आहेवच्च जाव विहरति । कहिण ऋते । वेमाणियाणं देवाणं पज्जत्ता२  
 ण ठाणा प० ? कहिण ऋते ! वेमाणिया देवा परिवसति ? गो० ! इमीसं रयणप्पन्नाए पुढवीए वहुसमरम

(अष्टाविंशतिसत्याका भन्निजिनाद्या लोकप्रसिद्धा । नवया देवगणा नानासंस्थानसंस्थिताश्च पञ्चवर्णास्तारका (स्तारासूतेसंगेपि) अवस्थितलोदया  
 चारिणो ऽविश्राममण्डलगतिका प्रत्येक नामाङ्कप्रकटितविहूमुकुटा मद्दद्दुका यावत्प्रज्ञासयन्त स्ते तत्र स्वेषा २ यिमानावासशतसहस्राणा रवे  
 या २ सामानिकसहस्राणा स्वेषा २ अग्रमहिषीणा सपरिवाराणा स्वेषा २ पपदा स्वेषा २ अनीकाना स्वेषा २ अनीकाधिपतीना स्वेषा २ आत्सर  
 द्दकदेवसहस्राणा अन्येषां बहूना ज्योतिष्काणा देवाना देवीनां ध्यापत्य पुरोवर्तित्य यावद्विहरन्ति । सूर्यावन्धनसो चात्र द्वी ज्योतिकेन्द्री  
 ज्योतिकराजानीं परिउसत , मद्दद्दुको यावत्प्रज्ञासयन्तो ती तत्र स्वेषा २ ज्योतिकविमानावासशतसहस्राणा चतुर्णां सामानिकसहस्राणा ज्योतिष्काणामन्येषा  
 र्णामग्रमहिषीणा सपरिवाराणा त्रयाणा पर्यंदा समानामनीकाना समानामनीकाधिपतीना योद्धशानानास्मरत्तदेवसहस्राणा ज्योतिष्काणामन्येषा  
 बहूना देवाना देवीनां ध्यापत्य यावद्विहरत । क्व भदन्त । वेमानिकानां देवाना पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रकृतानि । क्व भदन्त । वेमानिका

णिज्जातं भूमिजागातुं उहुं चदिमसूरिगहनरक्ततारारूपाणं वज्रहं ज्ञोयणसर्पाइं वज्रहं ज्ञोयणसहस्सा  
इ वज्रगातुं ज्ञोयणकोहीतं वज्रगातुं ज्ञोयणकोहाकोहीतं उहु दूर उपपडता एत्यण सोहम्मीसाणत्तणकु  
मारमाहिदवन्नलोगलतगमहासुक्कमहस्सारआणयपाणयआणयअनुयगेविज्जाणुत्तरेसु तस्य एत्यण वेमाणि  
याण देवाण चउरासीइविमाणसयसहस्सा सत्ताणउईनवेसहस्सातुं तेवीस विमाणा हवतीतिमस्काय तेण  
विमाणा सधूरयणामया अक्खा सण्हा लठा घठा मठा नीरगा निम्मला निप्यंका निक्काकुरुक्खाया नप्पहा  
ससिरीया सउज्जीया पासादीना दारिसणिज्जा अतिरूवा पफिरूवा इत्यण वेमाणियाण देवाण पज्जत्ताप  
ज्जत्ताण ठाणा प० तिसुवि लोगस्स असखेज्जइनागे तस्यण वहेव वेमाणिया देवा परिवसति तं०-सोह  
म्मीसाणसणकुमारमाहिदवन्नलोगलतगमहासुक्कसहस्सारआणयपाणयआणयअनुयगेवेज्जगाणुत्तरोववाडया  
देवा तेण मियमहिसवराहसीहलगलददुहरहयगयवडनुयगखग्गउसज्जकविद्धिमपागक्रियचियमउका पसिद्धिल

देवा परिवसन्ति ? नीतम । अस्या रत्नमजाया पयिप्या यदुसमरमणीयादुन्ननिजागादुहं वन्दस्सुयंयहनद्वतारारूपाया वदूनि योजनज्ञानानि य  
हूनि योजनसदृस्याणि वज्रयो योजनकोट्यो वज्रयो योजनकोटीकोट्य कहु दूरमुत्पत्यात्र सीपमंज्ञानसनयकुमारमाहन्द्रप्रसलान्तकञ्जकसदृस्वारानत  
प्राणतारणाव्युत्तमैवेयकानुत्तरपु तत्रैतेया वेमानिकाना देवाना वतुरज्जातिविमानयतसहस्त्राणि सप्तवर्षातिसहस्त्राणि त्रयोविंशतिविमानानि प्रव  
त्तीति मयास्यातम् । तां विमानानि सर्वरत्नमणानि अज्वाण शक्तानि सप्तानि पुराणि सृष्टानि नीरजासि निर्मलानि निप्यङ्गानि निष्कण्टक  
च्छायानि सप्रज्ञानि सोद्योतानि प्रासादीयानि दशनीयानि अत्रिरूपाणि प्रतिकरूपाणि चतुर्वेमानिकाना देवाना पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रव  
सानि । त्रिद्विपि लोकस्यासम्बेय प्राग तत्र बहवो वेमानिका देवा परिवसन्ति तद्यथा-सीर्यमंज्ञानसनयकुमारमाहन्द्रप्रसलान्तकञ्जकसदृस्वारान

वरमउरुतिरीकधारिणो वरकुंरुलुज्जोइयाणणा मउरुदित्तिसिरया रत्तात्ता पउमंप्पहगोरा ज्ञासेया सुहवसंगं  
धफासा उत्तमवेउव्विणो पवरवत्यगधमल्लानुलेत्रणधरा महिहिया महज्जुइया महायसा महल्लला महाणुजा  
गा महासोस्का हारविराइयवत्या करुगतुक्रिययन्नियनुया अगदकुंरुलमठगळतलकसपीढधारी विचिंत  
हत्यान्नरणा विचित्तमालामउलिकल्लानपवरवत्यपरिहिया कल्लानगपवरमल्लानुलेत्रणा ज्ञासुरवोदो पलंत्रव  
णमालधरा दिव्वेणं वन्नेणं दिव्वेणं गंधेणं दिव्वेणं फासेण दिव्वेणं संघयेणं दिव्वेणं संठाणेणं दिव्वाए इहीए  
हिद्वेए जुईए दिव्वाए पन्नाए दिव्वाए च्छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेणं तेएण दिव्वाए लेसाए दसदिसाने उ  
ज्जोवेमाणा पन्नासेमाणा तेण तत्य साणं २ विमाणावाससयसहस्साणं साण २ सामाणियसाहस्सीणं सा  
णं २ तावत्तीसगाणं साण २ लीगपालाणं साण २ अगमहिंसीणं सपरिवाराण साणं २ परिसाणं साणं

तमाणतारणाव्युत्तयैवेयकानुत्तरोपपातिका देवा स्तेव भृगमहिषवराहसिहखलददुरहयजपतिनुजगखल्लपभाङ्गविडिमचिह्मुकुटा प्रक्षिथिल  
वरमुकुटकिरीटधारिणो वरकुणहलोद्योतितानना मुकुटदीप्ताशरसो रक्ताजा पट्टप्रमगोरा प्रास्वरा शुभ्रवर्णेत्यस्पशो वतमर्वकुर्विका प्रवरवस्त्र  
गन्धमाल्यानुलपनपरा मर्द्दङ्किका महाद्युतिका महायज्ञस महद्वला महानुजावा महेशाख्या हारविराजितवत्सवं कटकत्रुटितस्तम्भितनुजा अङ्गद  
कृत्तलमृष्टगण्डतलकणपीठधारिणो विचित्रहस्तानरणा विचित्रमालामीलिकत्याणकप्रवरवस्त्रपरिहृता कल्याणकप्रवरमाल्यानुलेपना ज्ञासुवोन्द  
य मलम्बवनमालधरा दिव्येन वर्णेन दिव्येन रत्नैर्गण दिव्येन सपयणेन दिव्येन सस्यानेन दिव्यया ऋच्या दिव्यया द्युत्यो दिव्यया  
प्रमया दिव्यया च्छायाया दिव्येनार्चिणा दिव्येनैतेन दिव्यया लेत्रया दज्ञ दिज्ञ उद्योतयन्ते प्रजासयन्त स्ते तत्र स्वेषां २ विमानावाससुतसहस्रा  
णा स्वेषां २ सामानिकसहस्राणा स्वेषां २ त्रायत्रिगुकाना स्वेषां २ लोकपालाना स्वेषां २ अयमहिषीणा सपरिवाराणा स्वेषां २ पर्षदो स्वेषां २

२ अणियाण साण २ अणियाहिचईण साणं २ आयरकदेवसाहस्सीणं अण्तेसिं च वल्लणं वेमाणियाणं देवाण देवीणय अण्हेवच्च पोरिवच्च पोरिवच्च सामित्तं जहित्तं महत्तरगत्तं आणाहंसरंमणावच्च करेमाणा पालेमाणा महायाहनहगीयवाइयततीतलतालतुक्रियच्चणमुहुगपुप्पवाइयरवेण दिव्वाइ भोगभोगाइ जुजमाणं विहरति । कहिणं भत्ते । सोहम्मगदेवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा प० कहिणं भत्ते । सोहम्मगदेवा परिवससति ? गो० ! जवूहीवे २ मदरस्स पव्वरस्स दाहिणंण इमीत्ते रयणप्पन्नाए पुढवीए वज्जसमरमणिज्जाउं नूमिन्ना गानुं उहु चटिमसूरियगहगणनस्कत्ताराण वल्लणि जोयणसयाइ वल्लणि जोयणसहस्साइ वज्जगानुं जोयणसहस्साइ वल्लणि जोयणसहस्साइ वज्जगानुं जोयणकोफीउं उहु दूर उप्पडत्ता एत्थण सोहम्मे ना म कप्पे पत्तत्ते, पाचीणपफीणायत्ते उदीगदाहिणविच्छिन्ने अरुचदसठाणसठिंए अच्चिमालिन्नासरासिवन्ता

अनीकाना स्वेषा २ अनीकाधिपतीना स्वेषा २ आत्तरत्तकदवसहस्राणा अन्येषा च यद्दूना वेमानिकाना देवाना च देवीना आधिपत्य पुरोवर्त्तित्वं स्वामित्वं प्रवृत्तं महत्तरकत्वमाक्षेष्टरसेनापत्तित्वं कुवन्त पालयन्तो विहरन्ति मरुताएतत्तत्त्वगीतवादित्रतन्तीतलतालतुक्रियच्चणमुहुगपुप्पवाइयरवेण दिव्वाइ भोगभोगाणि नुज्जानो विहरन्त । क्व प्रदन्त । सोधर्मकदेवाना पर्याप्तपर्याप्ताना स्थानानि प्रदत्तानि, क्व प्रदन्त । सोधर्मकदेवा परिवससति ? गो० ! जवूहीवे २ मन्दरस्य पवतस्य दक्षिणतो ऽस्या रत्नप्रज्ञाया पृथिव्या बहुधर्मरमणीयादुर्भूमिभागादूहं चन्द्रसूयग सगणनक्षत्रताराकूपेभ्यो बहुनि योजनज्ञातानि यद्दूनि योजनशतसहस्राणि यद्दूनि योजनकोट्यो यद्दूनि योजनकोटीकोट्य ऊहं दूरमुत्पत्त्यात्र सोधर्मं नाम कल्प प्रदत्त प्राचीनपतीचीनायतमटीचीनदक्षिणविक्षीणं अद्भुतचन्द्रसंस्थानसंस्थितमर्धिमौलाप्रासाराज्ञावर्णान्न असंख्येया योजनकोट्योऽसंख्येया योजनकोटीकोट्य आपासंविफभान्यामसंख्येया योजनकोटीकोट्य परिचयेण सर्वत्रमप मच्छ यावत्प्रतिरूप तत्र

ने-असखेज्जानु जोयणकोहीनु असखेज्जानु आयामविक्कजेण असखेज्जानु जोयण  
 कोहीनु परिकेवेण सहरयणामए अच्चे जाव पढिरूव तत्यणं सोहम्मगदेवाणं वत्तीस विमाणावास  
 सयसहस्सा हवतीतिमस्काय तेण विमाणा सहरयणमया अच्चा जाव पढिरूवा तेसिण विमाणाणं वज्ज  
 मज्जदेसनाए पचवठसएया पयात्ता, त०-असोगवठसए सतवत्तवठसए चपगवठसए चयवठसए मज्जे तत्य  
 सोहम्मवठसए तेणं वठसया सहरयणामया अत्था जाव पढिरूवा, एत्यणं सोहम्मगदेवाण पज्जत्ता २ णं  
 ठाणा ५०, तिसुवि लोगस्स असखेज्जहन्नागे तत्यण वहवे सोहम्मगदेवा परिवसति महिद्विया जाव पन्ना  
 सेमाणा तेण तत्थ साण २ विमाणावाससयसहस्साण साण २ अग्गमहिन्नीण साणं २ साम्पिण्यसाहस्सी  
 ण एव जहेव उहियाण तहेव एतेसिपि आणियन्नु जाव आयरस्कंदवसाहस्सीण अन्नेसिं च वट्ठण सोह  
 म्मगकप्पवासीणं वेमाणियाण देवाण देवीणय अहेवच्च पोरेवच्च जाव विहरति । सक्को इत्थ देविदे देव

सौधर्मकदेवाना हाविशदिमानावासशतसहस्राणि प्रवर्त्तन्तीति मयाख्यातम्, तानि विमानानि सर्वरत्नमयानि अर्चानि यावत्प्रतिरूपाणि तेषां वि  
 मानाना बहुमध्यदेशभागे पचावतसका. प्रज्ञप्तास्तद्यथा-अशोकावतसक सप्तपर्णावतसक्यम्पकावतसक्यतावतसको मध्ये तत्र सौधर्मोऽतसकस्ते  
 चावतसका सर्वरत्नमया अर्चया यावत्प्रतिरूपा . अत्र सौधर्मकदेवाना पर्याप्तपर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि, त्रिद्विपि लोकास्यासथेय प्राग तत्र  
 वहव सौधर्मकदेवा परिवसन्ति मन्त्रद्विका यावत्प्रज्ञासुपन्त स्ते तत्र स्वेषा २ विमानावासशतसहस्राणा स्वेषा २ अग्रमहिन्नीणा स्वेषा २ सामा  
 निकसहस्राणामेव यथैवीपिमाना तथैवेतेषामपि ज्ञानिन्वय यावदात्मरत्नदेवसहस्राणामन्येषा च वट्ठाना सौधर्मकल्पवासिना देवाना देवीना  
 चाधिपत्य यावद्विहरन्ति । शक्नोत देवेन्द्रो देवराज परिवसति यज्जगणि. पुरंदर शतक्रतु सहस्राद्योमयत्र पाककासनो दक्षिणधुलोकापि

राया परिवसह वज्रपाणी पुरदरे सयक्ताउ सहस्सस्के मधव पागसासणे दाहिणहुलीगाहिबई वत्तीसविमा  
णावाससयसहस्साहिबई एरावणवाहणे सुरिदे एरयवरवत्यधरे आलडयमालमउठे नवहेमचारुचिक्कचल  
कुल्लविलिहज्जमाणगळे मंहिहिण जाव पन्नानेमाणे सेण तल्य वत्तीसाण विमाणावासमयसहस्साण चउरा  
सीए सामाणियसाहस्सीण तावत्तीसाए तावत्तीसगाण चउरह लीगपालाण अठरह अग्गमहितीणं सपरि  
वाराण तिरह परिसाण सत्तरह अणियाण सत्तरह अणिगाहिबईण चउरहं चउरासीण आयरस्केदेवसाह  
स्सीण अन्नेसि च वल्लण सोहम्मरुप्पवामीण वेमाणियाण देवाणय देवीणय आहिबच्च पोरेवच्च कुल्लमाणे  
जाव विहरति। कहिण ज्ञते। ईसाणगदेवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा प०? कहिण ज्ञते। ईसाणगदेवा परि  
सति? गो०। जवूदीवे २ मटरस्स पट्टयस्स उत्तरेण इमीसे रयणप्पनाए पुढवीए वज्जसमरमणिज्जाउ जू  
मिन्नागाउ उहु चदिमसूरियगहगणनस्सत्तारारूवाण वल्लइ जोयणसयाइ वल्लइ जोयणसहस्साइ जाव

पति दांविज्जहिमानावासजतसरत्ताचिपति रैरावणवार्त्तन सुरेन्द्रोऽरजोम्यवत्तपर आलगतमालमकुटी नगहेमचारुचित्तचलकुल्लविलिग्य  
मानगणतो मद्धिंकी यावत्प्रजासयस तत्र दांविज्जहिमानावासजतसरत्ताणा वतुरशीत्याः सामानिकसहस्साणा वपस्त्रिगटसहस्साकाना वपस्त्रिज  
कदेवाना वतुणी लोक्पालाना अष्टानामयमहिपीणा सपरिवाराणा तिसृणा पर्यंटा सप्तानामनीकाना सप्तानामनीकाना वतुणा वतुरशी  
त्यात्तरत्तकदेवसहस्साणा अन्येषा च यदूना सीयमंक्त्पयासिदेवाना देवीना चाधिपत्य कुवत्य तपन् यावद्दुहरति। क्ष जदत्त। ईशानदेवाना प  
र्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रक्षप्तानि क्ष प्रदत्त। ईशानदेवा परिवसन्ति? गीतम। जम्युदीप द्वीपे मन्दरस्य पर्वतस्योत्तरोत्तरा रत्नप्रजाया प  
यिथ्या बहुसमरमणीयाद्भूमिप्रजागादूक्ष तन्द्रसूर्यग्रहगणनक्षत्रारारूपस्यो यदूनि योजनशतानि यदूनि श्रीजतशतसहस्साणि यावदुत्पत्यावेशान

उप्यइत्ता एत्यण ईसाणे नाम कप्पे पन्नत्ते. पाईणपणीणायए उदीणडाहिणविच्छिन्ने एवं जहा सोहम्मे जाव पफ़िसुरूवे तत्यणं ईसाणगटेवाण अण्ठावीस त्रिमाणावाससयसहस्सा हवतीति मरकाय तेण विमाणा सब्ब रयणामया जाव पफ़िरुत्ता, तेसिण बज्जमज्जेदेसत्ताए पच्च वफ़िसगा पसत्ता, अक्कवफ़िसए फ़लिहवफ़िसए रयणवफ़िसए जाव सरूववफ़िसए मज्जे इत्य ईसाणवफ़िसए, तेण वफ़िसया सब्बरयणामया जाव पफ़िरुत्ता एत्यण ईसाणाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पसत्ता । तिसुवि लोगस्स अउसखेज्जइत्तागे सेसं जहा सो हम्मगदेवाण जाव विहरति, ईसाणं इत्य देविंदे देवराया परिवसति सूलपाणी उसन्नवाहणे उत्तरहुलो गाहिवई अण्ठावीसविमाणावाससयसहस्साहिवई अरयव्रवत्यधरे सेस जहा सक्कस्स जाव पन्नांसमाणे तत्य अण्ठावीसाए विमाणावाससयसहस्साण अउसीतीए सामाणियसाहस्सीणं तावत्तीसाए तावत्तीसगाणं चउत्तएह लोगपालाण अण्ठएह अग्गमहिंसीण सपरिवाराण तिएह परिसाण सत्तएह अणियाणं सत्तएह अणियाण

नाम करप मज्झ, प्राचीनप्रतीचीनायत सुत्तरटद्धिणवित्तीणैमेव यथा सौधर्मा यावत्प्रतिरूप तत्रेज्ञानकाना दधाना अष्टाविंशति विमानावासा ज्ञातसहस्राणि प्रवक्तव्याख्यात । सानि विमानानि सवरत्नमयानि यावत्प्रतिरूपाणि, तेपा बहुमध्यदेशभागे पञ्चावतसका. मज्झिमास्तयथा-अह्मा वतसक स्फुटिकावतसको यावत्सुलपावतसको मध्ये त्रिशानावतसक स्तेचावतसका सर्वरत्नमया यावत्प्रतिरूपा अत्रेज्ञानाना दिवाना पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि मज्झाणि, विद्याप लोकासख्येयत्ताग शेष यथा सौधर्मेकदेवाना यावद्विहरन्ति । ईशानाश्चात्र देवेन्द्रो देवराज परिवसति शूल पाणिर्बृषजवाहन उत्तराद्गुलोकाधिपति रक्षाविशतिविमानावासज्ञातसहस्राधिपति अरजोन्म्वरवस्त्रधर, ज्ञाथ यथा ज्ञाकस्य (वस्त्रयतोक्ता तथा त्रा पि) यावत्प्रज्ञासयन्तवाष्टाविंशतिविमानावासज्ञातसहस्राणाम्मितीति सामानिकसहस्राणा त्रयस्त्रिंशत् त्रयस्त्रिंशत्काना चतुर्णां लोकपालाना च

यातिवईणं चउरहं छुत्तीतीणं छायरस्सदेवसाहस्सीणं छुत्तेसिं च वत्तण इंसाणकप्पवासीणं वेमाणियाणं देवाण य देवीण य छुत्तेवच्च पोरेवच्च कुत्तमाणे जाव विहरइ, कहिण न्ते । सणकुमारदेवाणं पज्जात्ता पज्जात्ताण ठाणा पसुत्ता । कहिण न्त । सणकुमारा देवा परिचसति ? गीयमा ! साहम्मस्स कप्पस्स उ प्पि सपरिक सपफिदिसि वज्जइ जोयणाड वत्तइ जोयणसयंसहस्साइ वज्जगानु जोय णकोफीनु वज्जगानु जोयणकोफाकोफीनु उहु दूर उप्पइत्ता एत्थण सणकुमारे नाम कप्पे पसुत्ते । पार्इण पफीणायए उदीणदाहिणविच्छिन्ने जहा सोहम्मं कप्पे जाव पफिरूवे, एत्थण सणकुमाराण देवाणं वारस विमाणावाससयसहस्सा हवतीति मस्साय, तंण विमाणा सव्वरयणामया जाव पफिरूवा तेसिण विमाणाणं वज्जमज्जेदसन्नागे पच वफिसगा पसुत्ता, तज्जहा—असंगवफिसए सत्तवसुवफिसए चपगवफिसए चूयवफि

धानामग्रमहिपोणा सपरिवाराणा तिसुणा पयटा समानामनीकाना समानामनीकाचिपत्तीना वसुणां चतुरशीतिसामानिकसहस्राणा मन्थेया च यदूना भीशानकल्पवासिदेवाना दवीना ब्वाचिपत्त्य पुरावर्तित्व कुवंत्यावद्दिहरति । कं नदत्त । सनत्कुमाराणा देवाना पर्योसापर्योसाना स्थाना नि प्रज्ञप्तानि, कं नदत्त । सनत्कुमारदेवा परिवसन्ति ? गीतम । सोधमच्च कल्पस्योपरि सपत्त सप्रतिदिक् यदूनि योजनानि यदूनि योजनइ तानि यदूनि योजनज्ञतसरस्त्राणि यदूयो योजनकोट्यो यदूयो योजनकाटोकाट्य ऊर्द्धे दूरमुत्पत्त्याव सनत्कुमार नाम कल्प प्रज्ञप्त, प्राचीनप्रतीची नायतमुत्तरदक्षिणवस्तीणं यथा सोधमं. कल्पो यावत्प्रतिरूप, तत्र सनत्कुमाराणा देवाना द्वादशविमानावासाज्ञतसरस्त्राणि त्रयस्तीति मयाख्या तम्. तानि विमानानि सर्वरत्नमयानि अल्लानि यावत्प्रतिरूपाणि तेषा विमानाना मध्ये यदुमध्यदेशजाने पल्लावतसुका प्रज्ञप्तास्तद्यथा-अज्ञो कावतसुक सप्तपर्णावतसुकथम्पकावतसुक द्यूतावतसुको मध्य तत्र सनत्कुमारावतसुक स्तथावतसुका सव्वरत्नमया अल्ला यावत्प्रतिरूपा स्तत्रसुन



सए मज्जे तल्य सणकुमारवडिंसए तेणं वडिंसया सवुरयणामया छच्छा जाव पफिरूवा तल्यणं सणकुमारदे  
वाणः पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पसत्ता । तिसुवि लीगरस अउसखेज्जडजागे तल्यणं वहवे सणकुमारा देवा  
परिवसंति महिद्धिया जाव पज्जनमाणा विहरति नवर अण्णमहिंसीने णल्यि , सणकुमार इत्य देविदे  
देवराया परिवसड अुरयवरवत्यधरे सेस जहा सक्कस्स सेण तल्य वारसरुहं विमाणावाससयसहस्साणा वात्र  
त्तरीए सामाणियसाहस्सीण सेस जहा सक्कस्स अण्णमहिंसीवज्ज नवर चउरुह वात्रत्तरीण अ्यायरक्कदेवसाह  
स्सीण जाव विहरइ । कहिण जते ! माहिदाण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पसत्ता । कहिण जते !  
माहिदगा देवा परिवसति ? गोयमा । ईसाणस्स कप्पस्स उप्पि सपक्कि सपफिदिंसि वज्जइ जोयणाइ जाव  
वज्जगाने जोयणकीफाकीफाीने उहु दूर उप्पइता तल्यणं माहिदे नामं कप्पे पसत्ते, पाईणपफ्णीणायए जाव  
एव जहेव सणकुमार, नवर अण्ण विमाणावाससयसहस्सा वरुंसया जहा ईसाणे नवर मज्जे तल्य माहिं

तकुमाराणा देवाना पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि, विधिपि लोकस्यासत्येय भाग तत्र वडव सनत्कुमारा देवा परिवसन्ति महर्द्धिका  
यावद्विहरन्ति नवरमयमहिष्यो नसन्ति, सनत्कुमाराश्च देवेन्द्रो देवराज परिवसन्ति अरजोव्यवस्वधर शेष यथा शक्रस्य स तत्र द्वादशाना  
विमानावावशतसहस्राणा द्विसमन्ति सामानिकसहस्राणा शेष यथा शक्रस्याग्रमहिषीवज्जं नवर चतुणा द्विसप्तत्यात्तरक्षकदवसहस्राणा यावद्वि  
हरन्ति । क्व प्रदन्त । माहेन्द्राणा देवाना पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि । क्व भदन्त । माहेन्द्रका देवा परिवसन्ति ? गीतम । ईशानस्य  
कल्पस्योपरि सपक्ष सप्रतिदिक् बहूनि योजनानि यावद्वह्ण्या योजनकोटीकोट्य ऊर्ध्वं दूर मुत्पत्य तत्र माहेन्द्र नाम कल्प प्रज्ञप्त प्राचीनप्रतीचीना  
यत यावदेव यथैव सनत्कुमार नवरसरो विमानावावशतसहस्राणि अवततसका यथा इजाने नवर मध्ये तत्र साहेन्द्रावतसक एव शेषं यथा स

दयलंसए एव सेस जहा सणकुमारदेवाण जाव विहरति माहिदे इत्य देविदे देवराया परिवसड् अरयंवर  
 वत्यधरे एव जहा सणकुमारे जाव विहरइ नवर अउणह विमाणावाससयसहसाणं सत्तरीए सामाणिय  
 साहस्सीण चउणहं सत्तरीण आयरकदेवसाहस्सीण जाव विहरइ । कहिण भत्ते । वन्नलोगदेवाणं पज्ज  
 ता २ णं ठाणा पन्नत्ता । कहिण भत्ते । वन्नलोगा देवा परिवसति ? गो० ! सणकुमारमाहिदाण कप्पा  
 ण उप्पि सपरिक सपप्पिदिसि वल्लइ जोयणाइ जाव उप्पडत्ता एत्थण वन्नलोए नाम कप्पे पाइणपल्लीणा  
 यत्ते उदीणदाहिणविक्खिने पप्पिपुन्नचदसठाणसठिए अच्चिमालीनासरसिप्पन्ने अउसेस जहा सणकुमा  
 राण नवर चत्तारि विमाणावाससयसहसा वरुसगा जहा सोहम्मस्स वरुसगा नवर मज्जे इत्य वन्नलोयव  
 रुसए एत्थण वन्नलोगाण देवाण ठाणा प०, सेस तहेव जाव विहरति । वन्ने इत्य देविदे देवराया परिवस  
 इ अरयवरवत्यधरे एव जहा सणकुमारे जाव विहरति नवर चउणह विमाणावाससयसहसाणं सठीए

नकुमारे कल्पे यावद्दिहरति नवरमष्टानां विमानावासशतसहस्राणा सति सामानिकसहस्राणा चतुणा ( चतुर्गुणाना ) सप्तस्यात्मरक्षकदेवसह  
 खाणा ( अशीत्यधिकशतहयात्मरक्षकदेवसहस्राणामित्यर्थ ) यावद्दिहरति । क प्रदत्त । ब्रह्मलोकदेवाना पर्याप्तपर्याप्ताना स्थानानि प्रदधानि,  
 नाम कल्प मज्जस प्राचीनप्रतीचीनायतमुत्तरदर्शिविस्तारं प्रतिपूजचन्द्रसंस्थानसंस्थित अचिर्भोतान्नाराशिप्रज अवशोय यथा सनत्कुमाराणा नव  
 र चत्वारि विमानावासशतसहस्राणि अवतसका यथा सौषमंस्थावतसका नवर मध्येत्र ब्रह्मलोकावतसकोत्र ब्रह्मलोकाणा देवाना स्थानानि प्र  
 दधानि शेष तथैव यावद्दिहरन्ति' ब्रह्मात्र देवेन्द्रो देवराज परिवसति अरजोत्थरवस्वधर एव यथा सनत्कुमारे यावद्दिहरति नवर चतुणा वि

सामाणियसाहस्सीणं चउरहसठीणं आयरस्कदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च वल्लणं जाव विहरड । कहिणं  
 न्ते ! लतगदेवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पसत्ता, कहिणं न्ते ! लतगदेवा परिवसति ? गोयमा !  
 वन्नलोगस्स कप्पस्स उप्पिं सपरिक्कय सपक्किदिसि वल्लइ जीयणसयाइ जाव बहुइत्तु जीयणकोळाकोळीउ  
 उहु दूर उप्पडत्ता एत्थण लतए नाम कप्पे पसत्ते, पाईणपफोणायते जहा वन्नलोए नवरं पन्नासाविमाणा  
 वाससहस्सा हवतीतिमस्काय, वरुसगा जहा ईसाणवरुसगा नवर मज्जे इत्थ लतगवरुसए देवा तहेव  
 जाव विहरति, लतए इत्थ देविदे देवराया परिवसड जहा सणकुमारं नवर पन्नासाए विमाणावाससह  
 स्साण पन्नासाए सामाणियसाहस्सीणं चउरहं पन्नासाण आयरस्कदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च वल्लणं जाव  
 विहरइ । कहिणं न्ते ! महासुक्काण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पसत्ता । कहिणं न्ते ! महासुक्कादि

मानावासशतसहस्राणां ससति सामानिकसहस्राणां चत्थेणां (चतुर्गुणानां) पट्ठयात्सरइन्देवसहस्राणां (चत्वारिंशदधिकशतद्वयदेवसहस्राणां)  
 अन्येषां चत्थेणां यावद्विहरति । क प्रदत्त । लान्तकदेवानां पर्योषापर्योषानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, क प्रदत्त । लान्तकदेवा परिवसन्ति ? गी  
 तम् । ब्रह्मलोकस्य कल्पस्योपरि सप्त सप्ततिदिक् बहूनि योजनशतानि यावदूरमुत्पत्यात्र लान्तक नाम कल्प प्रज्ञप्त प्राचीनप्रतीचीनायत यथा  
 ब्रह्मलोके नवर पञ्चाशद्विमानावासशतसहस्राणि भवन्तीति मयाख्यातम्, अतस्तस्मा यथा ईशानावतस्तस्मा नवर मध्येत्र लान्तकावतस्तस्मा देवा  
 स्तथैव यावद्विहरन्ति, लान्तकोत्र देवेन्द्रो देवराज परिवसति यथा सनत्कुमार नवर पञ्चाशद्विमानावासशतसहस्राणां पञ्चाशदसामानिकसहस्रा  
 णां चत्थेणां (चतुर्गुणानां) पञ्चाशदात्सरत्नकदेवसहस्राणां (लक्षद्वयात्सरत्नकदेवसहस्राणां) अन्येषां च चत्थेणां यावद्विहरति । क प्रदत्त । महा  
 सुक्काणां देवानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, क प्रदत्त । महासुक्का देवा परिवसन्ति ? गीतम् । लान्तकस्य कल्पस्योपरि सप्त सप्ततिदिक् यावदुत्प

वा परिवसति ? गीयमा ! लतस्स कप्पस्स उप्वि सपक्किं सपक्किदिंसि जाव उप्पडत्ता एत्यण महासुक्को  
नाम कप्पे पखत्ते, पाईणपणीणायते उदीणदहिणविच्छिन्ते जहा वन्नलोए नवर चत्तालीस विमाणावा  
ससहस्सा हवतीति मरुकाय, वरुसगा जहा सोहम्मवरुसगा नवर मज्जे तल्य महासुक्कवरुसए जाव विह  
रइ महासुक्को इत्य देविदे देवराया जहा सणकुमारे नवर चत्तालीसाए विमाणावाससाहस्सीणं चत्ताली  
साए सामाणियसाहस्सीण चउरह चत्तालीसाण झायररुद्धेयसाहस्सीण जाव विहरति । कहिण जत्ते !  
सहस्सारदेवाण पज्जत्ता २ ण ठाणा प० । कहिण जत्ते ! सहस्सारा देवा परिवसति ? गी० । महासुक्कस्स  
कप्पस्स उप्वि सपक्किं सपक्किदिंसि जाव उप्पडत्ता एत्यण सहस्सारे नाम कप्पे प०, पाईणपणीणायते  
जहा वन्नलोए नवर विमाणावाससहस्सा हवतीति मरुकाय देवा तहेव वरुसगा जहा ईसाणस्स वरुसगा  
नवर मज्जे इत्य सहस्सारवरुसए जाव विहरति, सहस्सारे इत्य देविदे देवराया परिवसड जहा सणकु

त्यात्र महाशुक नाम कल्प प्रज्ञप्तम् प्राचीनप्रतीचीनायतमुत्तरदक्षिणविस्तीर्णं यथा ब्रह्मलोको नवर चत्वारिंशद्दिमानायासदातसहस्राणि प्रवन्ती  
ति मयाख्यातमवतसका यथा सीपमवतसका नवर मध्ये तत्र महाशुक्रावतमको यावद्विहरति, महाशुक्रो देवेन्द्रो देवराजो यथा सनत्कुमारो  
नवर चत्वारिंशद्दिमानायासदातसहस्राणा चत्वारिंशत्सामानिकसहस्राणा चतुर्णा चत्वारिंशदात्तरज्जदेयसहस्राणा यावद्विहरति । क प्रदत्त ।  
सहस्रारदेवाना पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि, क प्रदत्त । सहस्रारदेवा परिवसन्ति ? गी० । महाशुकस्य कल्पस्योपरि सपद्य समति  
दिक् यावदुत्पत्यात्र सहस्रार नाम कल्प प्रज्ञप्त प्राचीनप्रतीचीनायतमुत्तरदक्षिणविस्तीर्णं यथा ब्रह्मलोको नवर पद्मविमानायासदातसहस्राणि ज  
वन्तीति मयाख्यात देवास्तथैवावतसका यथा ईशानस्यावतसका नवर मध्ये यत्र सहस्रारायतसको यावद्विहरति, सहस्रारो देवेन्द्रो देवरा

मारे नवरं ब्रह्मं विमाणावाससहस्राणं तीसां सामाणियसाहस्सीणं चउरहय तीसाणं आयरस्कदेवसाह  
स्सीण जाव अहेवज्जं कारेमाणे विहरति । कहिण नते ! आणयपाणयदेवानं पज्जत्ता २ णं ठाणा ५०  
कहिणं नते ! आणयपाणयदेवा परिवसति ? गीयमा ! सहस्सारस्स कप्पस्स उप्पि सपक्खि सपक्खिदि  
सि जाव उप्पडत्ता एत्थण आणयपाणयनोमेण दुवे कप्पा पन्नत्ता, पाईणपक्कीणायते उदीणदाहिणविच्छि  
न्ना अरुचदसंठाणसंठिया अच्चिमालीनासरसिप्पन्ना सेस जहा सणकुमारे जाव पक्खिवा तत्थणं आण  
यपाणयदेवानं चत्वारि विमाणावाससया हवतीति मक्काय जाव पक्खिवा, वरुसगा जहा सोहम्मै नवरं  
मज्जे पाणयवरुंसए तेण वरुसगा सव्वरयणामया अक्खा जाव पक्खिवा, एत्थणं आणयपाणयदेवाण पज्ज  
त्तापज्जत्ताण ठाणा पन्नत्ता, तिसुवि लोगस्स अस्सखेज्जइन्नागे तत्थण बहवे आणयपाणयदेवा परिवसंति

अ परिवसति यथा सनत्कुमारो नवरं यथा विमानावाससहस्राणा त्रिंशदस्मादनिकसहस्राणा चतुणां त्रिंशदास्मरजदेवसहस्राणां यावदापि  
त्य कुर्वन्निहरति । कं प्रदत्त ! आनतप्राणतदेवाना पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि मज्जसानि, कं भदन्त ! आनतप्राणतदेवा. परिवसन्ति ? गीतम् ।  
सहस्रारस्य कल्पस्योपरि सपक्व समप्रतिदिक् यावदुत्पत्यात्रानतप्राणतनामानो ह्रीं कल्पो मज्जसो मचीनप्रतीचीनायसो उत्तरदक्षिणचिस्तीर्णो ब्रह्म  
न्द्रसत्स्थानसस्थितौ अर्चिर्भोलाभाराणिसप्रभ्री शोप यथा सनत्कुमारो यावत्प्रतिरूपो तत्रानतप्राणतदेवानां चत्वारि विमानावासगतसहस्राणि न  
वन्तीति मयाख्यातम् यावत्प्रतिरूपो, अवतसका यथा सौचर्म नवरं मध्ये प्राणतावतसक स्तेषावतसकां सुवरत्नमया अक्खा यावत्प्रतिरूपा अत्रा  
नतप्राणतदेवाना पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि मज्जसानि त्रिद्युपि लोकस्यासख्यं जाग तत्र बहव आनतप्राणतदेवा परिवसन्ति महर्द्धिका याव  
त्प्रभासयन्त स्त तत्र स्वेषा २ विमानावासगताना यावद्विहरन्ति, प्राणतश्चात्र देवेन्द्रो देवराज. परिवसति, यथा सनत्कुमारो नवरं चतुर्णां वि

महिद्विया जात्रे पञ्चासेमाणा तेणं तस्य साणं विमाणावाससयाणं जात्रे विहरन्ति पाणए इत्य देविंदे देवरा  
या परिवसति जहा सणकुमारे णवर चउएह विमाणावाससयाण वीसाए सामाणियसाहस्सीणं असीतीए  
आयरकदेवसाहस्सीण अन्नेसि च वत्तण जाव विहरति । कहिण न्ते ! आरणञ्जुयाण देवाण पज्जहा  
ए ण ठाणा पसत्ता । कहिणं न्ते ! आरणञ्जुया देवा परिवसति ? गोयमा ! आणयपाणयाण कप्पाणं  
उप्पि सपरिक सपफिदिसि एत्थण आरणञ्जुयानाम दुवे कप्पा पसत्ता पाईणपफ्ठीणायगा उदीणदाहिणवि  
च्छिन्ता अष्टचदसठाणसठिया अस्सिमालीनासरासिवन्नान्ना अस्सखिज्जानु जोजयणकोफाकोफ्ठीनु आयामवि  
स्कन्नेणं अस्सखेज्जानु जोजयणकोफाकोफ्ठीनु परिकेवेणं सव्वरयणामया अच्चा सहा लठा घठा मठा नीरया  
निम्मला णिप्पका निक्ककळ्ळाया सप्पन्ना ससिरीया सउज्जीया पासइया दरिसणिज्जा अन्निरूवा पफ्ठि  
रूवा एत्थण आरणञ्जुयाण देवाण तित्ति विमाणावाससया हवन्तीति मस्काय , तेणं विमाणा सव्वरयणाम

मानावासगताना विवशति सामानिकसदसूणा अशीति आत्तरत्तकदेवसहस्राणामन्येषा च बहुना यावद्दहरति । क प्रदत्त । आरणच्युताना दे  
वाना पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रदत्तानि क प्रदत्त । आरणच्युतका देवा परिवसन्ति ? गौतम । आनतप्राणतयो कल्पयोरुपरि सपन्न सप्र  
तिदिक् अत्रानतप्राणतनामानो द्वौ कल्पौ प्रदत्तौ प्राचीनप्रतीचीनायतावुत्तरदर्शणविस्तीर्णौ अर्द्धचन्द्रस्थानसंस्थितौ अर्धमंगलाभाराद्विप्रप्रज्ञौ  
असंख्येया योजनकोटीकोट्य आयासविक्रमाज्या असंख्येया योजनकोटीकोट्य परिवक्षेण सर्वरत्नमयी अर्द्धो शस्त्रो लघौ घृष्टौ नीरजसौ  
निर्मली निष्पङ्को निष्फरकटच्चायौ सप्रभौ सश्रीकौ सोद्योतौ प्रासादोयौ दर्शनीयौ अभिरूपौ प्रतिकूपौ अत्रारणच्युताना देवाना त्रीणि विमाना  
वासगतानि जवन्तीति मयास्यात । वानि विमानानि सर्वरत्नमयानि सुखानि लघानि घृष्टानि नीरजांसि निर्मलानि निष्पङ्का



पन्नाचत्तालीसा तीसावीसादसहस्रा ॥ ३ ॥ एएचैव आयरस्का चउगुणा । कहिण ज्ञते । हिठिमगेविज्ज  
गदेवाण पज्जत्ता २ ण ठाणा पखत्ता २ कहिण ज्ञते । हेठिमगेविज्जगा देवा परिवसति २ गोयसा । आ  
रणञ्जुयाण कप्पाण उप्पि जाव उहु दूर उप्पइत्ता एत्थण हेठिमगेविज्जगाण देवाण ततो गेवेज्जविमाण  
पत्थला पन्नत्ता, पाईणपईणायगा उदीणदाहिणविच्छिन्ना पफ्फिपुन्नचदसठाणसठिया अच्चिमालीनासरासि  
वन्नान्ना सेस जहा वन्नलोगे जाव पफ्फिरुत्ता, तत्थण हेठिमगेविज्जगाण देवाण एक्कारसुत्तरे विमाणावास  
सए हवतीति मस्काय तेण विमाणा सवुरयणामया जाव पफ्फिरुत्ता, एत्थण हेठिमगेविज्जगाण देवाण  
पज्जत्ताण २ ठाणा पखत्ता, तिसुवि लोगस्स असखेज्जइन्नागे तत्थण बहवे हेठिमगेविज्जगा देवा परि  
वसति सव्वे सममहिदीया सव्वे ममज्जुतीया सव्वे समजसा सव्वे समवला सव्वे समाणुत्ताया महासोस्का अ  
णिदा अप्पेस्सा अप्पुरोहिया अहमिदा नाम ते देवगणा पखत्ता समणाउत्तो ! कहिण ज्ञते ! मज्झिमगाण

२ ॥ सामानिकवग्रहिगाथा-चत्तुरशीतिरशीति द्विससति सप्ततिश्चपष्टि । पचाणघत्वारिंशत् त्रिंशद्विंशदशसहस्राणि ॥ १ ॥ गते चैव चतुगुणा  
न्यात्तरत्ता । क्व भदन्त । अथस्तनग्रेवैयकदेवाना पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि, क्व प्रदन्त । अथस्तनग्रेवैयकदेवा परिवसन्ति २ गीतम् ।  
आरशाच्युतकृतपयोरुपरि सपत्न्य सप्रतिदिक् यावदूक्षुमुत्पत्यात्रा धस्तनग्रेवैयकाना देवाना ग्रेवैयकप्रस्तानि प्रज्ञप्तानि प्राचीनप्रतीचीनायतानि उत्त  
रदक्षिणवर्तीणानि प्रतिपूणचन्द्रसंस्थानसंस्थितानि अचिर्मालानाराशिवर्णानि श्रेय यथा ब्रह्मलोकं यावत्प्रतिरूपाणि, तत्राथस्तनग्रेवैयकदेवा  
ना मकादशोत्तर विमानावासशतं ज्ञातीति मयाख्यातम् । तानि विमानानि सर्वरत्नमयानि यावत्प्रतिरूपाणि, अत्राथस्तनग्रेवैयकाना देवाना  
पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि त्रिष्वपि लोकासां सख्येयं ज्ञागं तत्र यद्वैयकं धस्तनग्रेवैयका देवा परिवसन्ति सर्वे सममहिदीनाः सर्वे सम



गेविज्जगदेवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पसुत्ता । कहिणं ऋते ! मज्झिमगेविज्जगदेवा परिवसन्ति ? गोयमा !  
हेठिमगेविज्जगण उपिं सपरिक्क सपरिदिंसं जाव उप्पडत्ता एत्थणं मज्झिमगेविज्जगदेवाण तत्तोगेविज्जा  
गविमाणपत्थका पसुत्ता पाईणपणीणायता जहा हेठिमगेविज्जगण नवरं सत्तुत्तरे विमाणवाससए हवं  
तीति मस्काए, तेण विमाण जाव परिहत्ता एत्थण मज्झिमगेविज्जा देवाण जाव तिसुवि लोगस्स झुस  
खेज्जडन्नागे तत्थणं वहवे मज्झिमगेविज्जा देवा परिवसन्ति जाव झुहमिदा नाम देवगणा पसुत्ता । सम  
णाउसो । कहिण ऋते ! उवरिमगेविज्जा देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पसुत्ता । कहिण ऋते ! उवरिम  
गेविज्जा देवा परिवसन्ति ? गोयमा ! मज्झिमगेविज्जगदेवाण उपिं जाव उप्पडत्ता तत्थण उवरिमगेविज्ज  
गाण देवाण तत्तं गेविज्जगविमाणपत्थका पसुत्ता पाईणपणीणाउ सेस जहा हेठिमगेविज्जगण नवर

श्रुतिका सर्वे समयज्ञास सर्वे समवलाः सर्वे महानुभावा महेशास्या अनिन्द्रा अप्रिया अपुरोहिता अहमिन्द्रा नामत स्ते देवगणाः प्रज्ञप्ता अम  
ण । आयुप्सन् । कं प्रदन्त । मध्यमग्रेव्यकदेवाना पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि । कं प्रदन्त । मध्यमग्रेव्यकदेवा परिवसन्ति ? गौतम । अ  
पस्तनग्रेव्यकदेवानामुपरि सप्त सप्तदिक् यावदुत्पत्त्यात्र मध्यमग्रेव्यकदेवाना ग्रेव्यकप्रस्तदानि प्रज्ञप्तानि प्राचीनप्रतीचीनायतान्युत्तरदिशि  
विस्तीर्णानि यथा धस्तनग्रेव्यकाना नवर सप्तोत्तर विमानावासशत भवतीति मयास्यातम् । तानि विमानानि यावदप्रतिरूपाणि अत्रमध्यमग्रेवे  
यकाना देवाना स्थानानि यावच्चिष्यपि लोकस्यासंख्येय ज्ञाग तत्र वहवो मध्यमग्रेव्यका देवा परिवसन्ति यावदहमिन्द्रा नाम ते देवा प्रज्ञप्ता  
अमण । आयुप्सन् । कं प्रदन्त । उपरिमग्रेव्यकदेवाना पर्याप्ता स्थानानि प्रज्ञप्तानि कं प्रदन्त । उपरिमग्रेव्यकदेवा परिवसन्ति ? गौतम । म  
ध्यमग्रेव्यकदेवानामुपरि यावदुत्पत्त्य तत्रोपरिमग्रेव्यकाना देवाना ग्रेव्यकप्रस्तदानि प्रज्ञप्तानि प्राचीनप्रतीचीनायतानि शेष यथाधस्तनग्रेव्यका

एगे विमाणावाससए हवतीति मस्काए, संस तहेव ज्ञाणियत्तु जाव झहमिदा नाम ते देवगणा पणुत्ता समणाउसो । एकतरसुत्तरहे ठिमेसुसुत्तरचमज्जिमए । सयमेगउवरिमए पचेवञ्जुत्तरविमाणा ॥ १ ॥ कहिण ज्ञते । झणुत्तरोववाइया देवाण पज्जत्ता २ ण ठाणा पणुत्ता २ कहिण ज्ञते । झणुत्तरोववाइया देवा परिवसति १ गोयमा ! इमीसे रयणप्पन्नाए पुढवीए वज्जसमरमणिज्जाउ झूमिन्नागाउ उहु चदिमसू रियगहगणनस्कत्तारारुवाण वल्लड जोयणसयाइ वल्लड जोयणसयसहस्साइ वल्लड जोयणसयसहस्साइ वज्ज गाउ जोयणकीन्नीउ वज्जगाउ जोयणकीन्नाकीन्नीउ उहु दूर उप्पडत्ता सोहम्मीसाणसणकुमारमाहिदवज्ज लोगलतगसुक्कसहस्सारञ्छाणयपाणयञ्छारणञ्जुयकप्पा तिणियञ्छठारसुत्तरे गेविज्जविमाणावाससए वित्ती वहत्ता तेय परदूरगता णीरया निम्मला वित्तिमिरा विसुद्धा पचदिसि पच झणुत्तरा महतिमहालया महा विमाणा पणुत्ता, तजहा-विजये वेजयते जयते झपराजिए सव्वठसिद्धे । तेण विमाणा सव्वरयणाभया

ना नवर एक विमानावासशत जवतीति मयारयात्तम्, ओप तथैव भणितव्य यावदइमिन्द्रा नाम ते देवगणा प्रज्ञप्ता श्रमण । आयुस्सन् । एका दशोत्तरमय-स्तनेषु समीत्तरतुमाध्यमिके । शतमेकमीपरिमिके पञ्चेवानुत्तरविमाना ॥ १ ॥ क जदत्त । अनुत्तरोपपातिकाना देवाना पर्यासाप पर्यासाना स्थानानि प्र० क जदत्त । अनुत्तरोपपातिका देवा परिवसन्ति १ गीतम । अस्या रत्तमज्जाया, परिणया वहुसमरमणीयाहून्निष्ठागादूद्धे चन्द्रमयपद्मगणनक्षत्रारारुक्पाणा वहूनि योजनानि वहूनि योजनशतानि वहूनि योजनसहस्राणि यावदूद्धे दूरमुत्पत्त्या चौर्यमैदानसनत्तुमारमा हेन्द्रद्रहलात्तकञ्जकसरत्तारानतप्रमाणतारणाच्युतकल्पा खीणि चाष्टादशोत्तराणि गेवेयकविमानावासशतानि व्यतिग्रज्य (उल्लघ्य) तेभ्योपि पर दूर गता नीरजसो निम्मला वित्तिमिरा विजुद्धा पचसु दिवु पञ्चानुत्तरा महातिमहालया महाविमाना प्रज्ञप्ता स्वध्या-विजयवेजयतो जयतो

गेविज्जगदेवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पसुत्ता । कहिण ऋते ! मज्झिमगेविज्जगदेवा परिवसन्ति ? गोयमा ! हेठिमगेविज्जगाण उप्यिं सपरिक सपक्खिदिंसं जाव उप्पइत्ता एत्थणं मज्झिमगेविज्जगदेवाण तत्तोगेविज्जगदेवाण पसुत्ता पाईणपक्खीणायता जहा हेठिमगेविज्जगाण नवरं सत्तुत्तरे विमाणावाससए हवं तीति मरकाए, तेण विमाणा जाव पक्खीणा एत्थण मज्झिमगेविज्जगाण देवाण जाव तिसुवि लोगस्स अस्स खेज्जडन्नागे तत्थण वहवे मज्झिमगेविज्जगा देवा परिवसति जाव अहमिदा नाम देवगणा पसुत्ता । सम णाउसो ! कहिण ऋते ! उवरिमगेविज्जगा देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पसुत्ता । कहिणं ऋते ! उवरिमगेविज्जगा देवा परिवसन्ति ? गोयमा ! मज्झिमगेविज्जगदेवाण उप्यिं जाव उप्पइत्ता तत्थण उवरिमगेविज्जगाण देवाण तत्तो गेविज्जगदेवाणपसुत्ता पाईणपक्खीणाउं सेस जहा हेठिमगेविज्जगाण नवर

श्रुतिका सर्व समयशत सर्व समवता सर्व महानुज्जावा महेशास्या अनिन्द्रा अपुरोहिता अहमिन्द्रा नामत स्ते देवगणा प्रज्ञप्ता अमण । आयुप्सन् । क प्रदत्त । मध्यमग्रेव्यकदेवाना पर्याप्तपर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि । क प्रदत्त । मध्यमग्रेव्यकदेवा परिवसन्ति ? गीतम । अघस्तनग्रेव्यकदेवानामपरि सपक्ष समतिदिक् यावदुत्पत्त्यात्र मध्यमग्रेव्यकदेवाना ग्रेव्यकप्रस्तटानि प्रज्ञप्तानि प्राचीनप्रतीचीनायतान्युत्तरदक्षिण विस्तीर्णानि यथा घस्तनग्रेव्यकाना नवर समोत्तर विमानावासशत भवतीति मयाख्यातम् । तानि विमानानि यावदप्रतिरूपाणि अत्रमध्यमग्रेव्यकाना देवाना स्थानानि यावच्चिदपि लोकस्यासख्ये ज्ञागं तत्र वहवो मध्यमग्रेव्यका देवा परिवसन्ति यावदहमिन्द्रा नाम ते देवा प्रज्ञप्ता अमण । आयुप्सन् । क प्रदत्त । उपरिमग्रेव्यकदेवाना पर्याप्ता स्थानानि प्रज्ञप्तानि क प्रदत्त । उपरिमग्रेव्यकदेवा परिवसन्ति ? गीतम । मध्यमग्रेव्यकदेवानामपरि यावदुत्पत्त्या तत्रोपरिमग्रेव्यकाना देवाना ग्रेव्यकप्रस्तटानि प्रज्ञप्तानि प्राचीनप्रतीचीनायतानि शेष यथाघस्तनग्रेव्यका

बहुमज्जदसन्नाए अण्ठजोयणिए सेह्वे अण्ठजोयणाइ वाहल्लेणं पन्नह्वे, ततो अण्ठतरं चणं माताए २ पए सपरिहाणीए २ परिहायमाणी २ सव्वेसु चरिमतेसु मच्चियपत्तातो तणुयरी अणुलस्स सखेज्जइजागे वाहल्ले ण पणत्ता, इसीपप्पाराएण पुढवीए दुवालसनामधेज्जा पणत्ता, इसीतिवा इसीपप्पाराइवा तणूतिवा तणुयरीतिवा सिद्धीतिवा सिद्धालएतिवा मुत्तीइवा मुत्तालएइवा लोयग्गयून्नियतिवा लोय पाद्धियुक्कणाइवा सव्वपाणन्नयजीवसत्तसुहावहा वइवा । इसीपप्पाराण पुढवी सेता सखदलविमलसोच्चिय मुणालदगरयतुसारगोरक्कीरहारवन्ता उत्ताणयत्तसठाणसठिया सव्वज्जुणसुखमई अच्चा सगहा लग्हा घठा मठा णीरया निम्मला निप्पका निक्ककच्छाया सप्पन्ना ससिरीया सउज्जीया पासादीया दरिसणिज्जा अ निरुवा पद्धिरुवा इसीपप्पाराएणं नीसाए जोयणमि लोगतो तस्सणं जोयणस्स जेसे उवरिल्ले गाउए तस्सणं गाउयस्स जेसे उवरिल्ले तप्प्रागे एत्थण सिद्धा भगवतो सादिया अपज्जवसिया अण्णेगजातिजरामरणजो

ज्ञानरान्या परिहीयमाना सर्वेषु धरिमानेषु मद्दिक्कापत्रतोप्यतितन्वी अणुलासख्येयन्नाग वाहल्येन प्रज्ञा, इंपटमाग्गजाराया पृथिव्या द्वादश ना मवेयानि प्रवन्तीति तद्यथा-इंपदिति वा इंपटमाग्गजारेति वा तन्वीति वा तनुतीति वा सिद्धिरिति वा सिद्दालय इति वा सुत्तिरिति वा मुक्ता तप इति वा लोकाग्र इति वा लोकाग्रसूयिकेति वा लोकाग्रप्रतिवाहिनीति वा सर्वप्राणजुतजीवसत्त्वसुखायहा इति वा सविपतमाग्गजारा पृथिवी येता शङ्खदलविमलसौधस्तिकमृणालदकरजस्तुपारगोहीरहारघवला उत्तानकद्वयसंस्थिता सर्वज्जुनस्वर्गमयी अच्चा सत्त्वा लष्टा पृष्टा सुष्टा नीरजा निम्मला निप्पद्गा निक्कटकच्छाया समभा सत्रीका सोद्योता प्रासादीया दर्शनीया अन्निरूपा प्रतिकरूपा इंपटमाग्गजाराया पृथिव्या नि जे खिगत्या योजन लोकान्त स्तस्य च योजनस्य यदुपरितन गच्छूत तस्य गच्छूतस्य यदुपरितन पडुन्नाग यत्र सिद्धा भगवन्तः सादिका अप्रपर्यवसिता अनेकजा

अच्छा सगहा घटा मठा णीरया निम्नला निम्नका निक्कंठच्छाया सप्पन्ना सिंसिरीया सउज्जीया पासा  
दीया दरिसणिज्जा अन्निरुवा पन्निरुवा एत्थणं अणुत्तरोववाइयाण देवाणं पज्जतापज्जत्ताणं ठाणा प० ।  
तिसुवि लोगस्स अस्सखेज्जइन्नागे तत्थणं वहवे अणुत्तरोववाइया देवा परिवसति सखे सममहद्धिया सखे  
समवला सखे समाणुन्नावा महासोस्का अणिदा अप्पेस्सा अपुरोहिया अहमिदा ते देवगणा पस्सत्ता । स  
मणाउसो । कहिणं नत्ते ! सिन्ना ठाणा पस्सत्ता । कहिणं नत्ते ! सिन्ना परिवसति ? गोयमा ! सख्ठस्स  
महाविमाणस्स उवरिक्खानं थून्निग्रग्गानं दुवालसजोयणे उहु अवाहाए एत्थणं इसीपप्पारा नाम पुढवी प० ,  
पणयालीस जोयणसयसहस्साइ अयामविस्सक्केण एगंजोयणकोलीन वायालीस च सयसहस्साइ तीसं सह  
स्साइ दोन्ति य अणुणापन्ने जोयणसए किञ्चिविसेसाहिए परिस्सक्केणं पस्सत्ता । इसीपप्पाराएण पुढवीए

पराजित सर्वाथसिद्ध । ते विमाना सवरत्नमया अच्छा श्रद्धा पृष्टा सृष्टा नीरजसो निर्मला निष्पङ्का निष्कण्टकच्छाया सप्पन्ना सञ्जीका सोद्यो  
ता मासादीया दर्शनीया अन्निरुवा प्रतिरूपा अन्नानुत्तरोपपातिका देवाना पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रद्वप्तानि , त्रिद्यपि ( आलापक्षेप )  
लोकस्यासत्येय प्राग तत्र बह्वोत्तरोपपातिका देवा परिवसन्ति सर्वे समद्विका सर्वे समवला सर्वे समानुन्नावा महेशास्या अग्निन्द्रा अपुराहि  
ता अप्रया अहमिन्द्रा नाम ते देवगणा प्रद्वप्ता श्रमण । आयुष्मन् । क मदन्त । सिद्धाना स्थानानि प्रद्वप्तानि क मदन्त । सिद्धा परिवसन्ति ?  
गीतम । सर्वाथस्य महाविमानस्योपरिमाया स्तूपिकाया द्वादशयोजनान्यूर्ध्व अवाचया त्रैपटमाभारा नाम पृथिवी प्रद्वप्ता , पञ्चवत्वारिंशद्योजन  
शतसहस्राणि आयामविस्फम्भाभ्या मेकायोजनकोटी द्विचत्वारिंशच्चतसहस्राणि त्रिंशत्सहस्राणि द्वे एकोनपञ्चाशद्योजनश्च ते किञ्चिद्विशेषाधिक्य  
नि परिशेषेण प्रद्वप्ता , ईषट्पटमाभाराया पृथिव्या बहुमध्यदेशजगे ऽष्टयोजनिक क्षेत्रे अष्टौ योजनानि वारल्यन प्रद्वप्त ततोन्तर मंत्रिया २ मदे

तान्नवस्कयविमुक्ता । अन्तान्नसमोनाढा पुठासर्वेविलीयते ॥ ९ ॥ फुसहृष्ट्यणतेसिद्धे सद्यपएसेहिनिमसो  
 सिद्धा । तेविष्ट्यसखेजगुणा देसपदेसेहिजेपुठा ॥ १० ॥ अशरीराजीवघणा उवउत्तादसणेयनाणेय । सागा  
 रमणागारं लस्कणमेयतुसिद्धाण ॥ ११ ॥ केवलणणवउत्ता जाणतीसर्वभावगुणत्रावे । पासतिसद्युत्तखलु  
 केवलदिठ्ठीहिणताहिं ॥ १२ ॥ नविष्ट्यलिमानुसाणं तसोस्कनल्यिसद्युदेवाण । जसिद्धाणसुस्क अद्यावाहउवग  
 याण ॥ १३ ॥ सुरगणसुहसमत्त सद्युष्टापिफियष्ट्यणतगुण । नविपावडमुत्तिसुहणताहिवगगवगूहि ॥ १४ ॥  
 सिद्धस्ससुहोरासी सद्युष्टापिफिएजहविज्जा । सोनतवगगजइत्त सद्युगांसणमाइज्जा ॥ १५ ॥ जहनामको  
 डमिच्छो नगरगणजविहविजाणतो । जवएहपरिकहेउ उवमाएतहिष्ट्यसतीए ॥ १६ ॥ हयसिद्धाणसोस्क इ  
 णोवमनल्यितस्सत्तवम् । किञ्चिविसेसेणिती सारिस्कमिणसुणहवोत्य ॥ १७ ॥ जहसद्युकामगुणियं पुरिसो

अवगाहनयासिद्धा प्रवज्जिजाणेन भवन्तिपरिङ्गीणा । अस्थानमनित्यस्य यत्तरामरणविममुक्तानाम् ॥ ८ ॥ यत्रचैक सिद्ध स्तत्रानन्तान्नवद्ययविमुक्ता ।  
 अन्त्योन्यसमवगाढा स्पृष्टा ( लग्ना ) सर्वपिलोकात्ते ॥ ९ ॥ स्पृष्टाल्यनन्तान्नसिद्धान् सर्वमदेशीयेयमज्ञा सिद्धा । तेप्यस्येयगुणा देशमदेशेयेस्प  
 र्ष्टा ॥ १० ॥ अशरीराजीवघना उपयुक्तादर्शने तथाज्ञाने । साकारानाकार लक्षणमेतत्तुसिद्धानाम् ॥ ११ ॥ केवलज्ञानोपयुक्ता जानन्तिचसर्वज्ञावगु  
 णज्ञावान् । पश्यन्ति सर्वत खलु केवलदृष्टिजिरनन्तानि ॥ १२ ॥ नैवास्तिमनुयाणा ततसीत्यनान्ति सर्वदेवता । यरिसिद्धाना सीत्यमव्यावाचामुपग  
 तानाम् ॥ १३ ॥ सुरगणसुखसमस्त सर्वाद्वापिगितमनन्तगुणम् । नमामोतिमुक्तिस्तुल्य अनन्तैवेने श्रवणितसदपि ॥ १४ ॥ सिद्धस्यसुखराशि सर्वा  
 द्वापिगिततोपदि ज्ञवत् । सोनन्तवर्गनक्त सर्वा काशोनोमातितसीत्यम् ॥ १५ ॥ श्रेष्ठकश्चिन्नाम यथाहि विजानन्त्यद्वयगुणान् । परिकथयितुन  
 त्तो त्युपमायास्तत्रावाभात् ॥ १६ ॥ इविसिद्धानासीत्य मनुपमनास्ति तस्यसोपमम् । किञ्चिद्विशेषणतोस्य सादृश्य शृणुवद्व्यमशानिदम् ॥ १७ ॥

निससारकलकलीनावपुणप्लवगप्लवावसवसही एवंते समडक्कंता सासयमणागयद्धं काल चिच्छति, तत्थविद्यते  
 अवेदा अवेयणाणिम्ममा असगायससारविप्पमुक्का । पदेसनिवृत्तिसंठाणा ॥ १ ॥ कहिपफिहयासिद्धा कहि  
 सिद्धापड्ठिया । कहिर्वोदीचड्ठ्याण कहगतूणसिज्जड ॥ २ ॥ अलोएपफिहयासिद्धा लोयगेयपड्ठिया ।  
 डहर्वोदीचड्ठ्याण तत्थगतूणसिज्जड ॥ ३ ॥ दोहंवाहस्सवा जंवरिमन्नवेहविज्जसंठाण । तत्तोत्तिनागहीणा  
 सिद्धाणेगाहणान्निण्या ॥ ४ ॥ संठाणतुडह जवंचयतस्सचरमसमयम्मि । असीयपदेसधण तसंठाणतहि  
 तस्स ॥ ५ ॥ तित्तिसयातेत्तीसा धणुत्तिनागोयहोइनायधो । एसाखलुसिद्धाणं उक्कोसोगाहणान्निण्या ॥ ६ ॥ एगाय  
 चत्तारियरयणीने रयणित्तिनागूणिंयायवीधवा । एसाखलुसिद्धाण मज्जिमोगाहणान्निण्या ॥ ७ ॥ उंगाहणाएसिद्धा  
 होइरयणी अठेवयअगुलाइसाहियाईया । एसाखलुसिद्धाण जहन्तोगाहणान्निण्या ॥ ८ ॥ जत्थयएगोसिद्धो तत्थअणं  
 नन्नत्तिनागेणहोइपरिहीणा । संठाणमणित्थय जजरामरणविप्पमुक्काणं ॥ ९ ॥

तिजरामरणयोनिससारकलकलीनावपुनर्जन्मवर्गवसतिरेव च समतिक्रान्ता ज्ञाद्यवसनागताद्वा काल तिष्ठन्ति, तत्रापि च ते अवेदा अवेदना निर्ममा  
 असङ्गाद्य । ससारविप्रमुक्ता प्रदेशनिर्वृत्तस्थाना ॥ १ ॥ केनप्रतिहता सिद्धा केनसिद्धा प्रतिष्ठिता । क्वचर्वोदितथात्यक्ता गत्यासिच्चान्तिक्रान्तायते ॥ २ ॥  
 अलोकेप्रतिहता सिद्धा लोकाग्रेष्वप्रतिष्ठिता । इहैवर्वोदित्यक्ताते गत्वासिच्चान्तितत्रतु ॥ ३ ॥ दीर्घाग्रस्ववा यच्चरमन्वे अवेदसुसंस्थान । ततस्त्रि  
 प्रागेहीना सिद्धानामवगाहनाभाणता ॥ ४ ॥ यत्संस्थानमिह भवचत्यजतश्चरमसमयेव । आसीत्प्रदेशधन तत्संस्थान तत्रतस्यैव ॥ ५ ॥ त्रीणिशतानि  
 त्रयस्त्रि-शतानुखिनागो जवत्तिज्जातस्य , एपाखलुसिद्धाना मुत्तकटावगाहनाप्रणिता ॥ ६ ॥ चतस्रोत्तरय रत्तिविज्जिनागोनात्रोद्वया । एपाखलुसि  
 द्धाना मध्यमावगाहनाप्रणिता ॥ ७ ॥ एकावन्नवतिरिति रष्टावथवाहुलानिसाधिकानित्सु । एपाखलु सिद्धाना जपन्यावगाहना भक्तिता ॥ ८ ॥

या उत्तरेण विसेसाहिया , दिसानुवाएण सव्वत्योवा तेउकाडया दाहिणुत्तरेण पुरच्छिमेण विसेसाहिया पच्चच्छिमेण विसेसाहिया दिसानुवाएण सव्वत्योवा वाउकाडया पुरच्छिमेण पच्चच्छिमेण विसेसाहिया दाहिणेण विसेसाहिया उत्तरेण विसेसाहिया । दिसानुवाएण सव्वत्योवा पच्चच्छिमेण पुरच्छिमेण विसेसाहिया दाहिणेण विसेसाहिया उत्तरेण विसेसाहिया , दिसानुवाएण सव्वत्योवा तेइदिया पच्चच्छिमेण पुरच्छिमेण विसेसाहिया दाहिणेण विसेसाहिया उत्तरेण विसेसाहिया , एव चउरिदियात्रि, दिसानुवाएण सव्वत्योवा णेरडया पुरच्छिमपच्चच्छिमेण उत्तरेण दाहिणेण असखेज्जगुणा, दिसानुवाएण सव्वत्योवा रयणप्पन्नापुढविणेरडया पुरच्छिमपच्चच्छिमेण उत्तरेण दाहिणेण असखे

विशेषाधिका , दिगनुपातेन सर्वस्तोका अष्कायिका पश्चिमेन पूर्वेषु विशेषाधिका दक्षिणेन विशेषाधिका उत्तरेण विशेषाधिका , दिगनुपातेन सर्वस्तोका स्तेनस्कायिका दक्षिणेन पूर्वेषु विशेषाधिका पश्चिमेन विशेषाधिका , दिगनुपातेन सर्वस्तोका वायुकायिका पूर्वेषु पश्चिमेन विशेषाधिका दक्षिणेन विशेषाधिका उत्तरेण विशेषाधिका । दिगनुपातेन सर्वस्तोका वनस्पतिकायिका पश्चिमेन पूर्वेषु विशेषाधिका दक्षिणेन विशेषाधिका उत्तरेण विशेषाधिका , दिगनुपातेन द्वीन्द्रिया पश्चिमेन पूर्वेषु विशेषाधिका दक्षिणेन विशेषाधिका , दिगनुपातेन सर्वस्तोकास्त्रीन्द्रिया पश्चिमेन पूर्वेषु विशेषाधिका दक्षिणेन विशेषाधिका उत्तरेण विशेषाधिका , दिगनुपातेन पूर्वेषु पश्चिमेनोत्तरेण दक्षिणेनासख्यगुणा , दिगनुपातेन सर्वस्तोका रत्नमज्जपृथिवीरयिका पूर्वपश्चिमेनोत्तरेण दक्षिणेनासख्यगुणा , दिगनुपा



श्रीतूणजीयणंकोइ । तरहाबुहाविमुक्ती अचिज्जजहाअभियतिती ॥ १८ ॥ इयसव्वकालंतिता अउलंनि  
ह्वाणमुवगयासिद्धा । सासयमव्वावाह चिठ्ठातिसुहीसुहपत्ता ॥ १९ ॥ सिद्धत्तियबुद्धत्तिय पारगतत्तियपरंपर  
गतत्ति । उम्मुक्ककम्मकवया अजरअमराअसंगाय ॥ २० ॥ णिच्छिन्नसव्वदुक्का जातिजरामरणवधणवि  
मुक्ता । अवावाहसुक्कं अणुहोतीसासयसिद्धा ॥ २० ॥ वित्तिय पदं सम्मत्तं ॥ २  
दिसिगइदियकाए जीएवैएकसायलेसाय । सम्मत्तणाणदसण सजयउव्वलुगअाहारे ॥ १ ॥ आसगपरित्तप  
ज्जा त्सुज्जमसखीयज्जवत्तियसेचरिमे । जीवयखेत्तवधे पुगलमहदणुचेव ॥ २ ॥ दिसानुवाएणं सव्वल्योत्रा  
जीवा पच्चिच्छिमेणं पुरिच्छिमेण विसेसाहिया दाहिणेणं विसेसाहिया उत्तरेणं विसेसाहिया दिसानुवाएणं  
सव्वल्योत्रा पुढविकाडया दाहिणेण उत्तरेण विसेसाहिया पुरिच्छिमेणं विसेसाहिया पच्चिच्छिमेण विसेसा

ययासर्वकामगुणत पुरुषोन्नताथनोजन कोपि । वययाद्युपाविमुक्त स्तिष्ठतिसोयाह्यसुतवस ॥ १८ ॥ इति सर्वकालवसा ह्यतुलनिर्वोणमुपगता सि  
द्धा । आद्यतमव्यावाय तिष्ठन्ति सुखिन सुखमाप्ता ॥ १९ ॥ सिद्धादतिबुद्धा इति पारगता इति परम्परगताश्च । उन्मुक्तकर्मकवचा अजरा अमरा अस  
गाश्च ॥ २० ॥ निस्तीर्णसंबटु खा जातिजरा मरणवधनविमुक्ता । अव्यावायसीत्य मनुभवा त्तिशाश्वतसिद्धा ॥ २१ ॥ इति श्री रामचन्द्रगणि शिष्यता  
नकचन्द्रर्षि विरचिते मञ्जापनानुवादे द्वितीय पद समाप्तम् ॥ २

दिक्कचगतीन्द्रियकाया योगोवेदा कपायलेत्तपय्य । सम्यक्कज्ञानदर्शनं सयतोपयोगी तथाहार ॥ १ ॥ ज्ञापकपरीतपर्याप्तिसूक्ष्मसज्जीजवास्तिचरमा  
णि । जीव्य क्षेत्रय्य पुट्टलमहादयनकथस्यु ॥ २ ॥ दिगनुपातेन ( दिशोधिकृत्येत्यर्थः ) सर्वस्तीका जीवा पश्चिमेन पूर्वैश्च विपेक्षापिका दक्षिणेन  
विशेषापिका उत्तरेण विशेषापिका , दिगनुपातेन सर्वस्तीका पृथिवीकायिका दक्षिणेनोत्तरेण च विशेषापिका पूर्वैश्च विशेषापिका पश्चिमेन



जगुणा, दिसानुवाएणं सव्वत्योवा सक्करप्पन्नापुढविणेरइया पुरिच्छिमपच्चिच्छिमउत्तरेणं दाहिणेणं अस्सं  
 खेज्जगुणा । दिसानुवाएण सव्वत्योवा णेरइया वालुयप्पन्नापुढविपुरिच्छिमपच्चिच्छिमउत्तरेणं दाहिणेणं अस्सं  
 खिज्जगुणा । दिसानुवाएण सव्वत्योवा पक्कप्पन्नापुढविणेरइया पुरिच्छिमपच्चिच्छिमउत्तरेणं दाहिणेणं अस्सं  
 जगुणा । दिसानुवाएण सव्वत्योवा धूमप्पन्नापुढविनेरइया पुरिच्छिमपच्चिच्छिमउत्तरेणं दाहिणेणं अस्सं  
 गुणा । दिसानुवाएणं सव्वत्योवा तमप्पन्नापुढविनेरइया पुरिच्छिमपच्चिच्छिमउत्तरेणं दाहिणेणं अस्सं  
 दिसानुवाएण सव्वत्योवा अहे सत्तमापुढविनेरइया पुरिच्छिमपच्चिच्छिमउत्तरेणं दाहिणेणं अहे सत्तमापुढ  
 विनेरइएहिती वठीए तमाए पुढवीए नेरइया पुरिच्छिमपच्चिच्छिमउत्तरेणं अस्सं  
 खेज्जगुणा, दाहिणिखेहिती तमापुढविनेरइएहिती पचमाधूमप्पन्नाए पुढवीए नेरइया पुरिच्छिमपच्चिच्छिम

सेन सर्वस्तीका शकरप्रभपृथिवीनिरयिका पूर्वपश्चिमोत्तरेण दक्षिणेनासह्येयगुणा, दिगनुपातेन सर्वस्तीका नैरयिका वालुकप्रज्ञापृथिवीनैरयिका  
 पूर्वपश्चिमोत्तरेण दक्षिणेना सह्येयगुणा, दिगनुपातेन सर्वस्तीका पङ्कप्रज्ञपृथिवीनैरयिका पूर्वपश्चिमोत्तरेण दक्षिणेनासह्येयगुणा, दिगनुपातेन  
 सर्वस्तीका धूमप्रज्ञपृथिवीनैरयिका पूर्वपश्चिमोत्तरेण दक्षिणेना सह्येयगुणा, दिगनुपातेन सर्वस्तीका स्तम प्रज्ञपृथिवीनैरयिका पूर्वपश्चिमोत्तरे  
 ण दक्षिणेनासह्येयगुणा, दिगनुपातेन सर्वस्तीका अच सप्तमापृथिवीनैरयिका पूर्वपश्चिमोत्तरेण दक्षिणेनासह्येयगुणा पट्टया  
 स्तमोपा पृथिव्या नैरयिका पूर्वपश्चिमोत्तरेण सरपेयगुणा दक्षिणेनासह्येयगुणा, दक्षिणेनासह्येयगुणा, दक्षिणेनासह्येयगुणा पञ्चमाया धूमप्रज्ञा  
 या पृथिव्या नैरयिका पूर्वपश्चिमोत्तरेण सह्येयगुणा दक्षिणेनासह्येयगुणा, दक्षिणेनासह्येयगुणा, दक्षिणेनासह्येयगुणा पङ्कप्रज्ञाया पृ  
 थिव्या नैरयिका पूर्वपश्चिमोत्तरेण सह्येयगुणा दक्षिणेनासह्येयगुणा, दक्षिणेनासह्येयगुणा, दक्षिणेनासह्येयगुणा वालुकाप्रज्ञपृथिवी

सखेजगुणा दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा देवा सहस्सारे कप्पे पुरिच्छिमपच्चिक्खिमउत्तरेण दाहिणेणं अस्संखे ० तेण  
पर वज्जसमोववन्तगा समणाउत्तो ! दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा सिद्धा दाहिणउत्तरेण पुरिच्छिमेण सखेजगु  
णा, पच्चिक्खिमेण विसेसाहिया दार १ । एएसिण नत्ते । नेरइयाण तिरिस्कजोणियाण मणुस्साण देवाण  
सिद्धाणय पचगइसमासेण कयरे कयरेहिता अप्पावा वज्जयावा तुल्लावा विसेसाहिया वा ? गोयमा !  
सव्वत्थोवा मणुस्सा नेरइया असखेजगुणा देवा असखेजगुणा सिद्धा अण तगुणा तिरिस्कजोणिया अण  
तगुणा । एएसिण नत्ते ! नेरइयाण तिरिस्कजोणियाण तिरिस्कजोणियाण मणुस्साण मणुस्सीण देवाण  
सिद्धाणय अण्ठगतिसमासेण कयरे कयरेहिता अप्पावा वज्जयावा तुल्लावा विसेसाहिया वा ? गोयमा !  
सव्वत्थोवा मणुस्सीण मणुस्सा असखेजगुणा । नेरइया असखेजगुणा तिरिस्कजोणियाण असखेजगुणा

स्येयगुणा । दिगनुपातेन सर्वस्तोका देवा महाशुक्ले कल्पे पूर्वपश्चिमोत्तरेण दक्षिणेनासखेयगुणा । दिगनुपातेन सर्वस्तोका देवा सहस्सारे कल्पे  
पश्चिमोत्तरेण दक्षिणेनासखेयगुणा । तेन पर बहुसमोपपन्नका अमणायुप्पन् । दिगनुपातेन सर्वस्तोका सिद्धा दक्षिणोत्तरेण पूर्वेण सखेयगु  
मेन विजोपाधिका । द्वारम् । १ । एतेषा नदन्त । नेरयिकाणा तियग्योनिकाना मनुयाणा देवाना विद्वानाञ्च पञ्चगतिसमासेन कतरे  
का बहुका वा तुल्यावा विजोपाधिका वा ? गीतम् । सर्वस्तोका मनुया नेरयिका असखेयगुणा देवा असखेयगुणा सिद्धा अनन्त  
का अनन्तगुणा । एतेषा नदन्त । नेरयिकाणा तियग्योनिकाना तियग्योनिकाना मनुयाणा मानुयाणा देवाना सिद्धाना चाए  
गीतिसमासेन कतर कतरेज्योऽल्पा वा बहुका वा तुल्या वा विजोपाधिका वा ? गीतम् । सर्वस्तोका मानुयो मनुया असखेयगुणा नेरयिका अ  
। तियग्योनिकाना असखेयगुणा देवा असखेयगुणा देव्य असखेयगुणा सिद्धा अनन्तगुणा स्तियग्योनिका अनन्तगुणा । द्वारम् । २ ॥ ए

वाणमंतरादेवा पुरिच्छिमेणं पञ्चच्छिमेणं विसेसाहिया, उत्तरेणं विसेसाहिया, दाहिणेणं विसेसाहिया, दि  
सानुवाएण सव्वत्योवा जोइसिया देवा पुरिच्छिमपञ्चच्छिमेणं दाहिणेण विसेसाहिया, उत्तरेणं विसेसाहिया  
दिसानुवाएण सव्वत्योवा देवा सोहम्मे कप्पे पुरिच्छिमपञ्चच्छिमेणं उत्तरेणं असखेज्जागुणा, दाहिणेण विसे  
साहिया, दिसानुवाएणं सव्वत्योवा देवा इसाणेकप्पे पुरिच्छिमपञ्चच्छिमेणं उत्तरेणं असखेज्जागुणा दाहिणे  
णं विसेसाहिया, दिसानुवाणं सव्वत्योवा देवा सणकुमारेकप्पे पुरिच्छिमपञ्चच्छिमेणं उत्तरेण असखेज्जागु  
णा, दाहिणेण विसेसाहिया दिसानुवाएणं सव्वत्योवा देवा माहिदे कप्पे पुरिच्छिमेण पञ्चच्छिमेण, उत्तरेण  
असखेज्जागुणा, दाहिणेणं विसेसाहिया । दिसानुवाएणं सव्वत्योवा वन्नलोए कप्पे देवा पुरिच्छिमपञ्चच्छि  
मउत्तरेण दाहिणेण असखेज्जागुणा दिसानुवाएण सव्वत्योवा वन्नलोए कप्पे देवा पुरिच्छिमपञ्चच्छिमउत्त  
रेण दाहिणेणं असखेज्जागुणा । दिसानुवाएण लंतए कप्पे देवा पुरिच्छिमपञ्चच्छिम उत्तरेणं दाहिणेणं  
असखेज्जागुणा । दिसानुवाएणं सव्वत्योवा देवा महासुक्कै कप्पे पुरिच्छिमपञ्चच्छिमउत्तरेण दाहिणेण अस

का उत्तरेण विशेषाधिका दक्षिणेन विशेषाधिका । दिगनुपातेन सर्वस्तीका व्योतिष्ठा देवाः पूर्वपश्चिमेन दक्षिणेन विशेषाधिका उत्तरेण विशेषाधिका , दिगनुपातेन सर्वस्तीका देवा सीधर्मे कल्पे पूर्वपश्चिमोत्तरेणासह्येयगुणा दक्षिणेन विशेषाधिका , दिगनुपातेन सर्वस्तीका देवा ईशाने कल्पे पूर्वपश्चिमोत्तरेणा सस्येयगुणा दक्षिणेन विशेषाधिका , दिगनुपातेन सर्वस्तीका देवाः सनरकुमारि कल्पे पूर्वपश्चिमोत्तरेणासह्येयगुणा दक्षिणेन विशेषाधिका , दिगनुपातेन सर्वस्तीका देवा माहेन्द्रे कल्पे पूर्वपश्चित्त उत्तरेणासह्येयगुणा दक्षिणेन विशेषाधिका , दिगनुपातेन सर्वस्तीका त्रस्तदेवलोके देवा पूर्वपश्चिमोत्तरेण दक्षिणेनासह्येयगुणाः , दिगनुपातेन सर्वस्तीका देवा लान्त्वके कल्पे पूर्वपश्चिमोत्तरेण दक्षिणेनास

कयरेहितो अय्यावा वज्रयावा तुलावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सवत्योवा पज्जत्तगा चउरिदिद्या  
पचिदिद्या पज्जत्तगा विसेसाहिया, तेइदिद्या पज्जत्तगा विसेसाहिया, वेइदिद्या पज्जत्तगा विसेसाहिया,  
एगिदिद्या पज्जत्तगा अणत्तगा, सइदिद्या पज्जत्तगा संखेज्जगुणा । एएसिणं नत्ते ! सइदिद्याण पज्जत्ताप  
ज्जत्तगाण कयरे कयरेहितो अय्यावा वज्रयावा तुलावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सवत्योवा सइदिद्या  
अपज्जत्ता पज्जत्तगा सइदिद्या संखेज्जगुणा । एएसिणं नत्ते ! एगिदिद्याण पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे कयरे  
हितो अय्यावा ? गोयमा ! सवत्योवा एगिदिद्या पज्जत्तगा एगिदिद्या अपज्जत्तगा अय्सं० । एएसिणं नत्ते !  
वेइदिद्याण पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे कयरेहितो अय्यावा ? गोयमा ! सवत्योवा वेइदिद्या पज्जत्ता  
वेइदिद्या अपज्जत्ता अय्संखेज्जगुणा । एएसिणं नत्ते ! तेइदिद्याण पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहितो अ  
य्यावा ? गोयमा ! सवत्योवा तेइदिद्या पज्जत्तगा अपज्जत्तगा अय्संखेज्जगुणा । एएसिणं नत्ते !

सकाना कतरे कतरेज्ज्योऽल्पा वा बहुका वा तुल्या वा विशेषाधिका वा ? गीतम । सर्वस्तीका पर्याप्तकाद्यतुरिन्द्रिया पञ्चेन्द्रिया पर्याप्तका वि  
शेषाधिका द्वीन्द्रिया पर्याप्तका विशेषाधिका द्वीन्द्रिया पर्याप्तका विशेषाधिका एकेन्द्रिया पर्याप्तका अनन्तगुणा सेन्द्रिया पर्याप्तका सत्येय  
गुणा । एतेषा नदन्त । सेन्द्रियाणा पर्याप्तापर्याप्तकाना कतरे कतरेज्ज्योऽल्पा वा बहुका वा तुल्या वा विशेषाधिका वा ? गीतम । सर्वस्तीका  
सेन्द्रिया अपर्याप्तका, पर्याप्तकाः सेन्द्रिया सत्येयगुणा । एतेषा नदन्त । एकेन्द्रियाणा पर्याप्तापर्याप्तकाना कतरे कतरेज्ज्योऽल्पा वा ? गीतम ।  
सर्वस्तीका एकेन्द्रिया पर्याप्तका अपर्याप्तका असत्येयगुणा । एतेषा नदन्त । द्वीन्द्रियाणा पर्याप्तकापर्याप्तकाना कतरे कतरेज्ज्योऽल्पा वा ? गीत  
। सर्वस्तीका द्वीन्द्रिया पर्याप्तका अपर्याप्तका असत्येयगुणा, एतेषा नदन्त । त्रीन्द्रियाणा पर्याप्तकापर्याप्तका कतरे कतरेज्ज्योऽल्पा वा ? सर्वस्ती

ह । देवा अस्वेज्जगुणा । देवीनु संखेज्जगुणानु सिद्धा अणंतगुणा तिरिस्सज्जोणिया अणंतगुणा दारं २ ।  
 एएसिण ज्ञते । सइदियाणं एगिदियाणं वेइदियाणं चउरिदियाणं तेइदियाणं पचिदियाणं अणेदियाणय  
 कयरे कयरेहिती अण्पावा वज्जयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्योवा पंचिदिया चउरि  
 दिया विसेसाहिया तेइदिया विसेसाहिया वेइदिया विसेसाहिया अणदिद्या अणतगुणा एगिदिया अ०  
 सइदिया वि० । एएसिणं ज्ञते ! सइदियाणं एगिदियाणं वेइदियाणं चउरिदियाणं पचिदियाणं  
 अण्पज्जत्तगणं कयरे कयरेहिती अण्पावा वज्जयावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्योवा पचि  
 दिया अण्पज्जत्तगा चउरिदिया अण्पज्जत्तगा विसेसाहिया, तेइदिया अण्पज्जत्तगा विसेसाहिया, वेइदिया  
 अण्पज्जत्तगा विसेसाहिया, एगिदिया अण्पज्जत्तगा अणतगुणा, सइदिया अण्पज्जत्तगा विसेसाहिया । एए  
 सिण ज्ञते ! सइदियाणं एगिदियाणं वेइदियाणं चउरिदियाणं पचिदियाणं पज्जत्तगणं कयरे

तेषा ज्ञदत्त । सेन्द्रियाणामेकेन्द्रियाणा हीन्द्रियाणा चतुरिन्द्रियाणा पञ्चेन्द्रियाणामिन्द्रियाणा च कतरे कतरेऽप्योऽल्पा वा बहुका वा  
 तुल्या वा विशेषापिका वा ? गीतम । सर्वस्तोका पञ्चेन्द्रिया चतुरिन्द्रिया विशेषापिका हीन्द्रिया विशेषापिका अन्नि  
 न्द्रिया अनन्तगुणा एकेन्द्रिया अनन्तगुणा सेन्द्रिया विशेषापिका । एतेषा ज्ञदत्त । सेन्द्रियाणामेकेन्द्रियाणा हीन्द्रियाणा चतुरिन्द्रि  
 याणा पंचेन्द्रियाणामपयोसकाना कतरे कतरेऽप्योऽल्पा वा बहुका वा तुल्या वा विशेषापिका वा ? गीतम । सर्वस्तोका. पञ्चेन्द्रिया अपयोसका  
 चतुरिन्द्रिया अपयोसका विशेषापिका हीन्द्रिया अपयोसका विशेषापिका एकेन्द्रिया अपयोसका अनन्तगु  
 णा सेन्द्रिया अपयोसका विशेषापिका । एतेषा ज्ञदत्त । सेन्द्रियाणामेकेन्द्रियाणा हीन्द्रियाणा चतुरिन्द्रियाणा पंचेन्द्रियाणा पयो

याण पुढविकाडयाणं आउकाडयाणं तेउकाडयाण वाउकाडयाण वणस्सइकाडयाणं तसकाडयाण आकाइ  
 याण कयरे कयरेहिती आप्पावा ४ ? गोयमा । सव्वलोवा तसकाडया तेउकाडया असखेज्जगुणा, पुढवि  
 काडया विसेसाहिया, आउकाडया विसेसाहिया, वाउकाडया विसेसाहिया आकाइया अणतगुणा,  
 वणस्सइकाडया अणतगुणा, सकाडया विसेसाहियावा । एएसिण नत्ते ! सकाडयाण पुढविकाडयाण  
 आउकाडयाण तेउकाडयाण वाउकाडयाण वणस्सइकाडयाण तसकाडयाणय अपज्जत्तगण कयरे कय  
 रेहिती आप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वलोवा तसकाडया अपज्जत्तग, तेउकाडया अपज्जत्तग असखे  
 ज्जगुणा, पुढविकाडया अपज्जत्तग विसेसाहिया, आउकाडया विसेसाहिया, वाउकाडया  
 अपज्जत्तग विसेसाहिया, वणस्सइकाडया अपज्जत्तग अणतगुणा । सकाडया अपज्जत्तग विसेसाहिया

पर्याप्तका विशेषाधिक । हारम् । ३ । एतेषा प्रदत्त । सकायािकाना पृथिवीकायिकाना अष्कायिकाना तजस्कायिकाना वायुकायिकाना वन  
 स्पातिकायिकाना त्रसकायिकानामकायिकाना कतरे कतरेज्यो उत्प वा ४ ? गौतम । सर्वस्तीकास्त्रसकायिका स्तेजस्कायिका असखेयगुणाः पृथि  
 वीकायिका विशेषाधिका अष्कायिका वायुकायिका विशेषाधिका अष्कायिका अनन्तगुणा वनस्पतिकायिका अनन्तगुणा सकायिका  
 विशेषाधिका । एतेषा प्रदत्त । सकायिकाना पृथिवीकायिकाना अष्कायिकाना तजस्कायिकाना वायुकायिकाना वनस्पतिकायिकाना त्रसकायि  
 कानामपर्याप्तकाना कतरे कतरेज्योउत्प वा ४ ? गौतम । सर्वस्तीकास्त्रसकायिका अपर्याप्तका स्तेजस्कायिका अप० असखेयगुणा पृथिवीकायिका  
 अ० विशेषाधिका अष्कायिका अ० विशेषाधिका वायुकायिका अप० विशेषाधिका वनस्पतिकायिका अप० अनन्तगुणा सकायिका अपर्याप्तका  
 विशेषाधिका । एतेषा प्रदत्त । सकायिकाना पृथिवीकायिकाना अष्कायिकाना तजस्कायिकाना वायुकायिकाना वनस्पतिकायिकाना त्रसकायि



चउरिंदियाण पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरोहिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा चउरिंदिया पज्जत्त  
गा चउरिंदिया पज्जत्तगा अस्सखेज्जगुणा । एएसिणं ज्ञते ! पचेदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरोहिंतो  
अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पचेदिया पज्जत्तगा पचेदिया अपज्जत्तगा अस्सखेज्जगुणा । एएसिणं  
ज्ञते ! सइदियाणं एगिंदियाण वेइदियाणं तेइदियाणं चउरिंदियाणं पचेदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे २  
हिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा चउरिंदिया पज्जत्तगा पचेदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया , वेइ  
दिया पज्जत्तगा विसेसाहिया , तेइदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया , पचेदिया अपज्जत्तगा अस्सखेज्जगुणा  
चउरिंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया , तेइदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया , वेइदिया अपज्जत्तगा विसे  
साहिया , एगिंदिया अपज्जत्तगा अणत्तगुणा , सइदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया , एगिंदिया पज्जत्तगा  
सखेज्जगुणा , सइदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया दारं ३ । एएसिणं ज्ञते ! सकाइ

कास्सीन्द्रिया पर्याप्तका अपर्याप्तका असह्येयगुणा । एतेषा भदन्त । चतुरिन्द्रियाणा पर्याप्तं कतरेज्जोडत्था वा ४ गीतम । सर्वस्त्तोका चतु  
रिन्द्रिया पर्याप्तका अपर्याप्ता असह्येयगुणा । एतेषा ज्ञदन्त । पचेदियाणा पर्याप्तका पर्याप्तं कतरे ० एतेषा वा ४ गीतम । सर्वस्त्तोका पचेदिया  
पर्याप्तका अपर्याप्तका असह्येयगुणा । एतेषा ज्ञदन्त । सेदियाणास्केन्द्रियाणा द्वीन्द्रियाणा चतुरिन्द्रियाणा पचेदियाणा पर्याप्तापर्याप्ता  
ना कतरे ० एतेषा वा ४ गीतम । सर्वस्त्तोका चतुरिन्द्रियाणा पर्याप्तका पचेदियाणा द्वीन्द्रियाणा पर्याप्तका विशेषाधिका त्रीद्वि  
या पर्याप्तका विशेषाधिका पचेदिया अपर्याप्तका असह्येयगुणा चतुरिन्द्रिया अपर्याप्तका विशेषाधिका स्त्रीन्द्रिया अपर्याप्तका विशेषाधिका द्वी  
न्द्रिया अपर्याप्तका विशेषाधिका स्केन्द्रिया अपर्याप्तका अनन्तगुणा सेदिया अपर्याप्तका विशेषाधिका स्केन्द्रिया पर्याप्तका सह्येयगुणा सेदिया

गोयमा । सवृत्योवा वणस्सइकाइयाण पज्जत्ता २ ण

इया पज्जत्तगा, तसकाइया पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे कयरेहिती अप्पावा ४ गोय

इयाउकाइयाणं तेउकाइयाण वाउकाइयाण वणस्सइकाइयाण तसकाइयाण पज्जत्ता २ ण

हिती अप्पावा ४ ? गो० । सवृत्योवा तसकाइया पज्जत्तगा, तसकाइया अपज्जत्तगा अपसंखे

ज्जगुणा, तेउकाइया अपज्जत्तगा पुढविक्काइया अपज्जत्तगा विसंसाहिया, इयाउकाइया अप  
यिका अपपर्याप्तका पर्याप्तका सखेयगुणा । एतेपा जदत्त । वायुकायिकाना पर्याप्तापर्याप्तकाना कतरे कतरेज्योउत्ता वा ४ ? गीतम । सर्वस्तो  
का वायुकायिका अपपर्याप्तका पर्याप्तका सखेयगुणा । एतेपा जदत्त । वनस्पतिकार्यिकाना पर्या० २ ना कतरे २ ज्योउत्ता वा ४ ? गीतम ।  
सर्वस्तोका वनस्पतिकार्यिका अपपर्याप्तका पर्याप्तका सखेयगुणा । एतेपा जदत्त । असकायिकाना पर्याप्ता २ ना कतरे २ ज्योउत्ता वा ४ ?  
गीतम । सर्वस्तोकाअसकायिका पर्याप्तका अपपर्याप्तका सखेयगुणा । एतेपा जदत्त । सकायिकाना पृथिवीकायिकानामपकार्यिकाना तेजस्का  
यिकाना वायुकायिकाना वनस्पतिकार्यिकाना पर्याप्तापर्याप्तकाना कतरे कतरेज्योउत्ता वा बहुकावा तुल्या वा विजोपाधिका वा ?

एरुसिणं न्रते ! सकाडयाणं पुढविकाडयाणं अ्याउकाडयाणं तेउकाडयाणं वाउकाडयाणं वणस्सडकाडयाणं तसकाडयाणय पज्जत्तगाण कयरे कयरेहिंतो अ्प्यावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्योवा तसकाडया पज्जत्तगा, तेउकाडया पज्जत्तगा अ्सखेज्जगुणा, पुढविकाडया पज्जत्तगा विसेसाहिया अ्याउकाडया पज्जत्तगा विसेसाहिया, वाउकाडया पज्जत्तगा विसेसाहिया, वणस्सडकाडया पज्जत्तगा अ्णतगुणा, सकाडया पज्जत्तगा विसेसाहिया । एरुसिणं न्रते ! सकाडयाण पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अ्प्यावा वज्जयावा तुल्लावा सिसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्योवा सकाडया अ्पज्जत्तगा, सकाडया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा । एरुसिणं न्रते ! पुढविकाडयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अ्प्यावा वज्जयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्योवा पुढविकाडया अ्पज्जत्तगा, पुढविकाडया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा । एरुसिणं न्रते ! अ्याउकाडयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अ्प्यावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्योवा अ्याउकाडया अ्प

काना च पर्याप्ताना कतरे कतरेज्योऽल्पा वा ४ ? गीतम् । सर्वस्वोका स्वसकायिका पर्याप्तका स्तेजस्कायिका पर्याप्तं असस्येयगुणा पृथिवीका यिका विशेषाधिकका अक्कायिका विशेषाधिकका वायुकायिका पर्याप्तका विशेषाधिकका वनस्पतिकायिका पर्याप्तका अन्नगुणाः सकायिका पर्याप्तका विशेषाधिकका । एतेषा मदन्त । सकायिकाना पर्याप्तकापर्याप्तकाना कतरे कतरेज्योऽल्पा वा ४ ? गीतम् । सर्वस्वोका सकायिका अपर्याप्तका पर्याप्तका सस्येयगुणा । एतेषा मदन्त । पृथिवीकायिकाना पर्याप्तकापर्याप्तकाना कतरे २ ज्योऽल्पा वा ? गीतम् । सर्वस्वोका पृथिवीकायिका अपर्याप्तका सस्येयगुणा । एतेषा मदन्त । पर्याप्तं अपर्याप्तं अक्कायिकानां कतरे २ ज्योऽल्पा वा ? गीतम् । सर्वस्वोका अक्कायिका अपर्याप्तका पर्याप्तका सस्येयगुणा । एतेषा मदन्त । स्तेजस्कायिकाना पर्याप्तं अपर्याप्तं कतरे कतरेज्योऽल्पा वा ४ ? गीतम् । सर्वस्वोका स्तेजस्का

ज्जत्तगा, आउकाइया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा । एएसिणं नत्ते ! तेउकाइयाण पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे  
 कयरेहिती अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्योवा तेउकाइया अपज्जत्तगा, तेउकाइया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा  
 एएसिण नत्ते । वाउकाइयाण पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे कयरेहिती अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्योवा वाउ  
 काइया अपज्जत्तगा, वाउकाइया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा । एएसिण नत्ते । वणस्सइकाइयाण पज्जत्ता २ णं  
 कयरे कयरेहिती अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्योवा वणस्सइकाइया अपज्जत्तगा, वणस्सइकाइया पज्ज  
 तगा सखेज्जगुणा । एएसिण नत्ते । तसमाइयाण पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे कयरेहिती अप्पावा ४ गोय  
 मा ! सव्वत्योवा तसकाइया पज्जत्तगा, तसकाइया अपज्जत्तगा अप्पावा ४ ? गोयमा ! सकाइयाणं  
 पुढाविकाइयाण आउकाइयाणं तेउकाइयाण वाउकाइयाण वणस्सइकाइयाण तसकाइयाण पज्जत्ता २ ण  
 कयरे कयरेहिती अप्पावा ४ ? गो० । सव्वत्योवा तसकाइया पज्जत्तगा, तसकाइया अपज्जत्तगा अप्पावा ४  
 ज्जगुणा, तेउकाइया अपज्जत्तगा अप्पावा ४ ? गो० । सव्वत्योवा तसकाइया पज्जत्तगा विस्साहिया, आउकाइया अप

पिया अपपर्याप्तका पर्याप्तका सखेयगुणा । मत्तेपा नदत्त । वायुकायिकाना पर्याप्तपर्याप्तकाना कतरे कतरेज्योत्तपा वा ४ ? गीतम । सर्वस्तो  
 का वायुकायिका अपपर्याप्तका पर्याप्तकाः सखेयगुणा । मत्तेपा नदत्त । वनस्पतिकायिकाना पर्याप्त २ ना कतरे २ ज्योत्तपा वा ४ ? गीतम ।  
 सर्वस्तोका वनस्पतिकायिका अपपर्याप्तका पर्याप्तकाः सखेयगुणा । मत्तेपा नदत्त । त्रसकायिकाना पर्याप्त २ ना कतरे २ ज्योत्तपा वा ४ ?  
 गीतम । सर्वस्तोकात्रसकायिका पर्याप्तका अपपर्याप्तका असखेयगुणा । मत्तेपा नदत्त । शकायिकाना पृथिवीकायिकाना मत्तायिकाना त्रसका  
 यिकाना वायुकायिकाना वनस्पतिकायिकाना त्रसकायिकाना पर्याप्तपर्याप्तकाना कतरे कतरेज्योत्तपा वा षडुकाया तुल्या वा विक्षेपायिका वा ?

पञ्जतगा विसेसाहिया, वाउकाइया अण्पञ्जतगा विसेसाहिया, तेउकाइया पञ्जतगा संखेजगुणा, पुढवि  
काइया पञ्जतगा विसेसाहिया, अण्पकाइया पञ्जतगा विसेसाहिया, वाउकाइया पञ्जतगा विसेसाहिया,  
अण्पञ्जतगा वण० अण्पनन्त० पञ्जतगा संखेजगुणा, सकाइया अण्पञ्जतगा विसेसाहिया, सकाइया पञ्जत  
गा संखेजगुणा सकाइया विसेसाहिया। एण्पसिणं भते । सुजमाणं सुजमपुढविकाइयाणं सुजमअण्पकाइ  
याण सुजमतेउकाइयाण सुजमवाउकाइयाणं सुजमवणस्सइकाइयाणं सुजमणिइयाणय कयरे कयरेहिंते  
अण्पवा१ ? गोयमा ! सव्ह्योवा सुजमतेउकाइया, सुजमपुढविकाइया विसेसाहिया सुजमअण्पकाइया  
विसेसाहिया, सुजमवाउकाइया विसेसाहिया, सुजमनिगोदा अण्पसंखेजगुणा, सुजमवणस्सइकाइया अण्पत  
गुणा, सुजमा विसेसाहिया । एण्पसिणं भते ! सुजमअण्पपञ्जतगाण सुहुमपुढविकाइयाणं अण्पपञ्जतगाण सुज  
मअण्पकाइयाणं अण्पपञ्जतगाणं सुजमतेउकाइयाण अण्पपञ्जतगाणं सुजमवाउकाइयाणं अण्पपञ्जतगाणं सुजम

गीतम । सर्वस्वोकाखसकायिका पर्याप्तका अण्पयप्तका असख्येयगुणा स्तेजस्कायिका अण्पयप्तका असख्येयगुणा अण्पयप्तका वि  
शेषाधिकका अण्पकायिका अण्पयप्तका विशेषाधिकका वायुकायिका अण्पयप्तका विशेषाधिकका स्तेजस्कायिका पर्याप्तका सख्येयगुणा पण्पिबीकायि  
काः पर्याप्तका विशेषाधिकका अण्पकायिकाः पर्याप्तका विशेषाधिकका वायुकायिका पर्याप्तका विशेषाधिकका वनस्पतिकायिका अण्पत  
गुणा' पर्याप्तका- सख्येयगुणा सकायिका अण्पयप्तका विशेषाधिकका सकायिका पर्याप्तका सख्येयगुणा । एतेया भदन्त । सूत्तमाणा सूत्तपण्पि  
वीकायिकाना सूत्ताण्पकायिकाना सूत्तजस्कायिकाना सूत्तवायुकायिकाना सूत्तवनस्पतिकायिकाना सूत्तनिगोदाना च कतरे कतरेअण्पकायिका वा  
४ ? गीतम । सर्वस्वोका सूत्तजस्कायिका सूत्तपण्पिबीकायिका विशेषाधिकका सूत्ताण्पकायिका विशेषाधिकका विशेषाधिकका

वणस्सडकाइयाण अपज्जत्तगाण सुहुमनिगोदाणं अपज्जत्तयाणय कयरे कयरेहिंती अप्पावा४ ? गोयमा !  
 सव्वत्थोवा सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तया, सुज्जमपुढविकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सुज्जमअउका०  
 अपज्जत्तया विसेसाहिया, सुज्जमवाउकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया, सुज्जमनिगोदा अपज्जत्तगा अप  
 सखेज्जगुणा, सुज्जमवणस्सडकाइया अपज्जत्तगा अपणतगुणा, सुज्जमा अपज्जत्तगा विसेसाहिया । एणसिणं  
 न्ते ! सुज्जमपज्जत्तगाण सुज्जमपुढविकाइयपज्जत्तगाण सुज्जमअउकाइयपज्जत्तगाणं सुज्जमतेउकाइयपज्ज  
 त्तगाण सुज्जमवाउकाइयापज्जत्तगाण सुज्जमवणस्सडकाइयापज्जत्तगाण सुज्जमनिगोदपज्जत्तगाणय कयरे कय  
 रेहिंती अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुज्जमतेउकाइया पज्जत्तगा, सुज्जमपुढविकाइयापज्जत्तगा वि  
 सेसाहिया, सुज्जमअउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुज्जमवाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुज्ज  
 मनिगोदा पज्जत्तगा अपसखेज्जगुणा, सुज्जमवस्सडकाइयापज्जत्तया अपणतगुणा, सुहुमापज्जत्ता विसेसा  
 हिया दार ३ । एणसिणं न्ते ! सुहुमाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहिंती अप्पावा४ ? सव्वत्थोवा सुहुमा

सुहुमनिगोदा असत्थगुणा सुहुमवणस्सडकायिका अनन्तगुणा सुत्ता विशेषाधिक । एतेपा प्रदत्त । सुत्तापर्योपत्तकाना सुत्तपृथिवीकायिका  
 पर्योपत्तकाना सुत्ताप्यायिकापर्योपत्तकाना सुत्ततेजस्कायापर्योपत्तकाना सुत्तापर्योपत्तवन्स्सडकायिकाना सुत्तापर्यो  
 पत्तनिगोदाता कतरे २ ज्योत्तवावा ? गीतम । सर्वस्तीका सुत्तापर्योपत्ता स्तेजस्कायिका सुहुमपृथिवीकायिका अ० विशेषाधिक सुत्ताप्यायिका  
 अपर्योपत्तका विशेषाधिक सुत्तवायुकायिका अ० विशेषाधिक सुहुमनिगोदा अ० असत्थगुणा, सुहुमवणस्सडकायिका अ० अनन्तगुणा सुत्ता  
 अपर्योपत्तका विशेषाधिक । एतेपा प्रदत्त । सुहुमपर्योपत्तकाना सुहुमपृथिवीकायपर्योपत्तकाना सुहुमतेजस्कायिकपर्योपत्तकाना सु

अपज्जत्तगा सुहुमा पज्जत्तगा सखेज्जगुणा । एएसिणं ज्ञते ! सुहुमपुढविकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे २  
 हितो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्योवा सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तया , सुहुमपुढविकाइया पज्जत्तगा  
 सखेज्जगुणा । एएसिण ज्ञते ! सुहुमअण्डकाइयाण पज्जत्ता २ णं कयरे २ हितो अप्पावा ४ गोयमा ! सव्व  
 त्योवा सुज्जमअण्डकाइया अपज्जत्तया , सुज्जमअण्डकाइया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा । एएसिणं ज्ञते ! सुज्ज  
 मतेउकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरे हितो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्योवा सुज्जमतेउकाइया अप  
 ज्जत्तगा सुज्जमतेउकाइया पज्जत्तगा सखिज्जगुणा । एएसिण ज्ञते ! सुज्जमवाउकाइयाण पज्जत्ता २ णं कयरे २  
 हितो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्योवा सुज्जमवाउकाइया अपज्जत्तगा , सुज्जमवाउकाइया पज्जत्तगा ।

दमवायुकायिकपर्या०काना सुद्धमवनस्पतिकायपर्या०काना सुद्धमनिगोदप०काना च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तीका सुद्धमतेजस्का  
 यिका प० सुद्धमपृथिवीकायिका प० विज्ञोपायिका प० विज्ञोपायिका सुद्धमायुकायिका प० विज्ञोपायिका । सुद्धमनिगोदा. प०  
 असख्यगुणा सुद्धमवनस्पतिकायिका प० अनन्तगुणा सुद्धमा. पर्या०का. विज्ञोपायिका । द्वारम् । ४ ॥ एतेषा ऋदन्त । सुद्धमाणा पर्या०पर्या०प्ताना  
 कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तीका सुद्धमा अपर्या०का सुद्धमा पर्या०स्तका सख्येयगुणा । एतेषा भदन्त । सुद्धमपृथिवीकायिका  
 ना पर्या०पर्या०ना कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तीका सुद्धमपृथिवीकायिका अपर्या०का सुद्धमपृथिवीकायिका पर्या०का सख्येयगु  
 णा । एतेषा ऋदन्त । सुद्धमायानामपर्या०पर्या०ना कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तीका सुद्धमा अप्पायिका अप० पर्या०का स  
 ख्येयगुणा । एतेषा सुद्धमतेजस्कायपर्या०अप०काना कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तीका सुद्धमतेजस्कायिका अप० पर्या०का सख्यगु  
 णा । एतेषा सुद्धमवायुकायिकाना पर्या०प्राप्याप्ताना कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तीका सुद्धमापर्या०का वायुकायिका. पर्या०ता

संखेज्ज० । एएसिण नत्ते ! सुहुमवणस्सइकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहितो अण्णवावा ४ ? गोयमा !  
 सव्वत्थोवा सुज्जमवणस्सइकाइया अण्णत्तगा, सुज्जमवणस्सइकाइया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा । एएसिणं  
 नत्ते ! सुहुमनिगोदाणं पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहितो अण्णवावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुज्जमनिगोदा  
 अण्णत्तगा, सुहुमनिगोदा पज्जत्तगा सखेज्जगुणा । एएसिण नत्ते ! सुज्जमाण सुज्जमपुढविकाइयाण सुहुम  
 अण्णत्तगा सुज्जमतेउकाइयाण सुहुमवाउकाइयाण सुहुमनिगोदाणय पज्जत्ता २  
 ण कयरे कयरेहितो अण्णवावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुज्जमतेउकाइया अण्णत्तगा, सुज्जमपुढविकाइया  
 अण्णत्तगा विसेसाहिया, सुहुमअण्णत्तगा विसेसाहिया, सुज्जमवाउकाइया अण्णत्तगा  
 विसेसाहिया, सुहुमतेउकाइया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा, सुहुमपुढविकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुज्ज  
 मअण्णत्तगा पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुज्जमनिगोदा अण्णत्तगु

सखेयगुणा । एतेपा सूत्तवन्नस्पत्तिकारिकाना पर्याप्योत्ता कतरे कतरेज्योत्ता वा ४ ? गीतम ! सर्वस्लोकाः सूत्तवन्नस्पत्तिकारिका अपर्या  
 प्तका पर्याप्योत्ता सखेयगुणा, एतेपा सूत्तमनिगोदाना पर्याप्योत्ता कतरे कतरेज्योत्ता वा ४ ? गीतम ! सर्वस्लोकाः सूत्तमनिगोदा अपर्याप्यो  
 त्तका पर्याप्योत्ता सखेयगुणा । एतेपा नदत्त । सूत्तमाणा सूत्तमपथिवीकारिकाना सूत्तमज्जस्कारिकाना सूत्तमवायुकारिकाना सूत्तम  
 वन्नस्पत्तिकारिकाना सूत्तमनिगोदानाञ्च पर्याप्योत्ताना कतरे कतरेज्योत्ता वा ४ ? गीतम ! सर्वस्लोकाः सूत्तमतेजस्कारिका अपर्याप्योत्ता सूत्तम  
 पथिवीकारिका अपर्याप्योत्ता विज्ञेयारिका सूत्तमाप्तायिका अप्यो विज्ञेयारिका सूत्तमतेजस्कारिका अपर्याप्योत्ता सूत्तम  
 का सखेयगुणा सूत्तमपथिवीकारिकाः पर्याप्यो विज्ञेयारिका सूत्तमाप्तायिका अपर्याप्यो विज्ञेयारिका सूत्तम



णा, सुहृमा अपज्जत्तगा विसंसाहिया, सुहृमा यणस्सइकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, सुहृमा पज्जत्तगा विसंसाहिया । एएसिणं ज्ञते ! वादरगाण वादरपुठविकाइयाणं वादरअण्डकाइयाणं वादरतेउकाइयाणं वादरवाउकाइयाण वादरवणस्सइकाइयाणं पत्तेयसरीरवादरवणस्सइकाइयाणं वादरनिगोदानं वादरतसकाइयाणय कयरे २ हितो अप्पावा यज्जावा विसंसाहियावा ? गोयमा ! सध्ल्योवा वादरतेउकाइया वादरतेउकाइया असंखेज्जगुणा, पत्तेयसरीर वादरवणस्सइकाइया असंखेज्जगुणा वायरनिगोया असंखेज्जगुणा, वादरपुठविकाइया असंखेज्जगुणा, वादरअण्डकाइया असंखेज्जगुणा वादरवाउकाइया असंखेज्जगुणा वादरवणस्सइकाइया अणंतगुणा वादरा विसंसाहिया, एएसिणं ज्ञते ! वादरापज्जत्तगाणं वादरपुठवीकाइया अपज्जत्तगाणं वादरअण्डकाइया अपज्जत्तगाण वादरतेउकाइया अपज्जत्तगाणं वादरवाउकाइया अपज्जत्तगाण वादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगाणं पत्तेयसरीरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगाणं वादरनि

निगोदा अपठ असत्यगुणा सुहृमनिगोदा पर्यो० सद्धेयगुणा सुहृमवतस्पतिकायिका अपठका अनत्तगुणाः सुहृमा अपपर्यो०का विशेषाधिका सुहृम वतस्पतिकायिका पर्यो० सत्यगुणा सुहृमा पर्यो०का विशेषाधिका । एतेषा भदन्त । वादराणा वादरपृथिवीकायिकाना वादराष्कायिकाना वादरतेजस्कायिकाना वादरवायुकायिकाना वादरवतस्पतिकायिकाना प्रत्येकशरीरवादरवतस्पतिकायिकाना वादरनिगोदाना वादरत्रसकायिका ना च कतरे कतरेऽप्योऽलपा वा ४ ? गीतम । सर्वस्वोका वादरत्रसकायिका वादरतेजस्कायिका असंख्यगुणाः प्रत्येकशरीरवादरवतस्पतिकायिका असत्यगुणा वादरनिगोदा असत्यगुणा वादरपृथिवीकायिका अपठकायिका वादरवायुकायिका असत्यगुणा वादरवायुकायिका अपठकायिका वादरवतस्पतिकायिका अनत्तगुणा वादरा विशेषाधिका । एतेषा भदन्त । वादरपर्यो०काना वादरपुठवीकायिकाना वादरापर्यो० अपठकायिकाना

गोदा अप्पज्जत्तमाणं वादरत्तसकाडया अप्पज्जत्तमाणय कयरे कयरेहिती अप्पावा वज्जयावा तुल्लावा वि  
सेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वादरत्तसकाडया अप्पज्जत्तमा, वादरत्तेउकाडया अप्पज्जत्तमा अससेज्ज  
गुणा, पत्तेयसरीरवादरवणस्सडकाडया अप्पज्जत्तमा असखेज्जगुणा, वादरनिगोदा अप्पज्जत्तमा अससेज्ज  
गुणा, वादरपुढवीकाडया अप्पज्जत्तमा असखेज्जगुणा, वादरञ्चाउकाडया अप्पज्जत्तमा असखेज्जगुणा,  
वादरवाउकाडया अप्पज्जत्तमा असखेज्जगुणा, वादरवणस्सडकाडया अप्पज्जत्तमा अप्पज्जत्तमा, वादरञ्चप  
ज्जत्तमा विसंसाहिया ? । एएसिणं भत्ते ! वादरपज्जत्तमाण वादरपुढविकाडयाणं पज्जत्तमाणं, वादरञ्चाउ  
काडयाण पज्जत्तमाण वादरत्तेउकाडयापज्जत्तमाण वादरवाउकाडयापज्जत्तमाणं वादरवणस्सडकाडयाण पज्ज  
त्तमाण पत्तेयसरीरवादरवणस्सडकाडयापज्जत्तमाण वादरनिगोदपज्जत्तमाण वादरत्तसकाडयापज्जत्तमाणय  
कयरे कयरेहिती अप्पावा वज्जयावा तुल्लावा विसंसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वादरत्तेउकाडया प

वादराप० तेजस्कायिकाना वादरापयो० वायुकायिकाना वादरापयो०वनस्पतिकायिकाना वादरापयो० प्रत्यक्षरीखनस्पतिकायिकाना वादरनि  
गोदानामपयो०काना वादरापयो० व्रजकायिकाना कतरे ? ज्योऽल्पा वा ४ ? गीतम । सर्वलोका वादरव्रजकायिका अपयो०का वादरत्तेजस्कायि  
का अप० असखेयगुणा प्रत्यक्षरीरवादरवनस्पतिकायिका अप० अन्तरयेयगुणा वादरनिगोदा अपयो०का असखेयगुणा वादरपुयिबीकायिका  
अपयो०का असख्यगुणा वादराप्तायिका अप० असख्यगुणा वादरवायुकायिका अप० असख्यगुणा वादरवनस्पतिकायिका अपयो० अनन्तगुणा वा  
दरापयो०का विज्ञोपायिका । २ । यत्तेपा ३० । वादरपयो०काना वादरपुयिबीकायपयो०काना पयो०सवादराप्तायाना पयो० वादरत्तेजस्कायिका  
ना पयो०सवादरवायुकायाना पयो०सवादरवनस्पतिकायिकाना पयो०सप्रत्येक्षरीरवादरवनस्पतिकायिकाना पयो०सवादरनिगोदाना पयो०सवादरज्ज

जज्ञया, वादरतसकाडया पज्जत्तगा अस्सखेज्जगुणां । पत्तयसरीरवादरयणस्सडकाडया पज्जत्तगा अस्स  
खेज्जगुणा । वादरनिगोदा पज्जत्तगा सखेज्जगुणा । वादरपुढविकाडया पज्जत्तगा अस्सखेज्जगुणा । वादर  
अउकाडया पज्जत्तगा अस्सखेज्जगुणा । वादरवाउकाडया पज्जत्तगा अस्सखेज्जगुणा । वादरवणस्सडकाड  
या पज्जत्तगा अस्सखेज्जगुणा । वादरा पज्जत्तगा विस्सेसाहिया ३ । एएसिणं भत्ते ! वादराणं पज्जत्ता २ णं  
कयरे कयरेहिंती अप्प्यावा बज्जगावा तुल्लावा विस्सेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वादरा पज्जत्तगा । वा  
दरा अपज्जत्तगा अस्सखेज्जगुणा । एएसिण भत्ते ! वादरपुढविकाडयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंती  
अप्प्यावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वादरपुढविकाडया पज्जत्तगा १ । वादरपुढविकाडया अपज्जत्तगा अ  
स्सखेज्जगुणा । एएसिण भत्ते ! वादरअउकाडयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंती अप्प्यावा ४ ? गोयमा !  
सव्वत्थोवा वादरअउकाडया पज्जत्तगा अस्सखेज्जगुणा । एएसिणं भत्ते !

कायिकानां कतरे कतरेज्ज्योडल्या वा ४ ? गोतम । सर्वस्वोकाः पर्याप्तवादरत्रसकायिका असह्यगुणा पर्याप्तप्रत्येक  
शरीरवादरवनस्पतिकायिका असह्यगुणा पर्याप्तवादरनिगोदा असह्यगुणा पर्याप्तवादरपृथ्वीकायिका असह्यगुणा पर्याप्तवादराष्कायिका अ  
सह्यगुणा पर्याप्तवादरवायुकायिका असह्यगुणा पर्याप्तवादरवनस्पतिकायिका असह्यगुणा वादरा पर्याप्तका विज्ञोपायिका । ३ । एतेषां भद  
न्त । वादराणां पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कतरेज्ज्योडल्या वा ४ ? गोतम । सर्वस्वोका वादराः पर्याप्तका अपर्याप्त असह्यगुणा । एतेषां जद० । वा  
दरपृथ्वीकायिकानां पर्याप्तपर्याप्तानां कतरे कतरेज्ज्योडल्या वा ४ ? गोतम । सर्वस्वोका वादरपृथ्वीकायिकाः पर्याप्तका १ वादरपृथ्वीका  
यिका अपर्याप्तका असह्यगुणा । एतेषां जदन्त । वादराष्कायानां पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कतरेज्ज्योडल्या वा ? गोतम । सर्वस्वोका वादराष्का



एएसिण नते ! वादरतसकाइयाण पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहि तो अण्णवा ४ ? गोयमा ! सख्योवा  
वादरतसकाइया पज्जत्ता १ । वादरतसकाइया अण्णत्तया अण्णत्तया ४ । एएसिण नते ! वादराणं  
वादरपुढविकाइयाण वादरत्तुत्तकाइयाण वादरत्तुत्तकाइयाणं वादरत्तुत्तकाइयाणं वादरत्तुत्तकाइयाणं  
पत्तयसरीरवादरत्तुत्तकाइयाण वादरत्तुत्तकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहि तो  
अण्णवा वज्जयावा तुत्तयावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सख्योवा वादरत्तुत्तकाइया पज्जत्तया १ । वाद  
रतसकाइया पज्जत्तया अण्णत्तया २ । वादरत्तुत्तकाइया अण्णत्तया ३ । वादरत्तुत्तया  
वणस्सडकाइया पज्जत्तया अण्णत्तया ४ । वादरत्तुत्तकाइया पज्जत्तया ५ । वादरत्तुत्तकाइ  
या पज्जत्तया अण्णत्तया ६ । वादरत्तुत्तकाइया पज्जत्तया अण्णत्तया ७ । वादरत्तुत्तकाइया पज्ज

दाना पर्याप्तपर्याप्ताना कतरे कतरेज्जोत्तया वा ४ ? गीतम । सर्वस्तोका वादरत्तुत्तकाइया पर्याप्तका अपर्याप्तवादरत्तुत्तकाइया असह्यगुणा १ । एतेषा  
प्रदत्ता । वादरत्तुत्तकायाना पर्याप्तपर्याप्ताना कतरे कतरेज्जोत्तया वा ४ ? गीतम । सर्वस्तोका वादरत्तुत्तकाइया पर्याप्तका वादरत्तुत्तकाइया  
अपर्याप्तका असह्यगुणा ४ । एतेषा प्रदत्ता । वादराणा वादरत्तुत्तकाइया वादरत्तुत्तकाइया वादरत्तुत्तकाइया वादरत्तुत्तकाइया वादरत्तुत्तकाइया  
वादरत्तुत्तकाइया वादरत्तुत्तकाइया वादरत्तुत्तकाइया वादरत्तुत्तकाइया वादरत्तुत्तकाइया वादरत्तुत्तकाइया वादरत्तुत्तकाइया वादरत्तुत्तकाइया वादरत्तुत्तकाइया  
वा ४ ? गीतम । सर्वस्तोका वादरत्तुत्तकाइया पर्याप्तका १ । वादरत्तुत्तकाइया पर्याप्तका २ । वादरत्तुत्तकाइया पर्याप्तका ३ । वादरत्तुत्तकाइया पर्याप्तका ४  
सह्यगुणाः ३ । पर्याप्तवादरत्तुत्तकाइया असह्यगुणा ४ । पर्याप्तवादरत्तुत्तकाइया असह्यगुणा ५ । पर्याप्तवादरत्तुत्तकाइया असह्यगुणा ६ । पर्याप्तवादरत्तुत्तकाइया असह्यगुणा ७ । पर्याप्तवादरत्तुत्तकाइया असह्यगुणा ८ । पर्याप्तवादरत्तुत्तकाइया असह्यगुणा ९ ।

तृणा असखेज्जगुणा ८ । वादरतेउकाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा ९ । पत्तेयसरीरवादरवणस्सइका  
इया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा १० । वादरनिगोदा अपज्जत्ता असखेज्जगुणा ११ । वादरपुढविकाइया  
अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा १२ । वादरआउकाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा १३ । वादरवाउकाइया  
अप० असखेज्जगुणा १४ । वादरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा अणंतगुणा १५ । वादरपज्जत्तगा विसेसा  
हिया १६ । वादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा १७ । वादरा अपज्जत्तगा विसेसाहिया १९ ।  
वादरा विसेसाहिया २० । एएसिण भत्ते ! सुज्जमाण सुज्जमपुढविकाइयाण सुज्जमआउकाइयाण सुज्जमतेउ  
काइयाणं सुज्जमवाउकाइयाण सुज्जमवणस्सइकाइयाण सुज्जमनिगोदाण वादराण वादरपुढविकाइयाणं  
वादरआउकाइयाण वादरतेउकाइयाण वादरवाउकाइयाण वादरवणस्सइकाइयाणं पत्तेयसरीरवादरवण

अपर्याप्तप्रत्येकशरीरवादरवणस्पतिकारिका असह्यगुणा १० । अपर्याप्तवादरनिगोदा असह्यगुणा ११ । अपर्याप्तवादरपृथिवीकारिका असह्यगु  
णा १२ । अपर्याप्तवादराष्कारिका असह्यगुणा १३ । अपर्याप्तवादरवायुकारिका असह्यगुणा १४ । पर्याप्तवादरवणस्पतिकारिका अनन्तगुणा १५ ।  
पर्याप्ता वादरा विशेषाधिकारिका १६ । अपर्याप्तवादरवणस्पतिकारिका असह्यगुणा १७ । अपर्याप्ता वादरा विशेषाधिकारिका १८ । वादरा विशेषाधि  
कारिका १९ । एतेषा प्रदत्त । सूक्ष्माणा सूक्ष्मपृथिवीकारिकाना सूक्ष्माष्कारिकाना सूक्ष्मवायुकारिकाना सूक्ष्मवणस्पतिकार  
िकाना सूक्ष्मनिगोदाना वादराणा वादरपृथिवीकारिकाना वादराष्कारिकाना वादरवायुकारिकाना वादरवणस्पतिकारिका पादरवणस्पतिकारिय  
सकारिका १ । वादरतेजस्कारिका असह्यगुणा २ । प्रत्येकशरीरवादरवणस्पतिकारिका असह्यगुणा ३ । वादरनिगोदा असह्यगुणा ४ । वाद

एएसिण नते ! वादरतसकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिती अप्पावा ४ ? गोयमा ! सहुत्थोवा  
 वादरतसकाइया पज्जत्तगा । वादरतसकाइया अप्पज्जत्तगा असखेज्जगुणा ४ । एएसिण नते ! वादराणं  
 वादरपुढविकाइयाण वादरप्पाउकाइयाण वादरवाउकाइयाण वादरवणस्सइकाइयाणं  
 पत्तयसरीरवादरवणस्सइकाइयाण वादरनिगोदाण वादरतसकाइयाणं पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहिती  
 अप्पावा वज्जयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सहुत्थोवा वादरतेउकाइया पज्जत्तया १ । वाद  
 रतसकाइया पज्जत्तया असखेज्जगुणा २ । वादरतसकाइया अप्पज्जत्तया असखिज्जगुणा ३ । वादरपत्तेय  
 वणस्सइकाइया पज्जत्तगा असखेज्जगुणा ४ । वादरनिगोदा पज्जत्तगा असखेज्ज ० ५ । वादरपुढविकाइ  
 या पज्जत्तगा असखेज्जगुणा ६ । वादरप्पाउकाइया पज्जत्तगा असखेज्जगुणा ७ । वादरवाउकाइया पज्ज

दाना पर्याप्तापर्याप्ताना कतरे कतरेज्जोऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तीका वादरनिगोदा पर्याप्तका अपर्याप्तवादरनिगोदा असह्यगुणा । एतेषा  
 नदत्त । वादरवसकायाना पर्याप्तापर्याप्ताना कतरे कतरेज्जोऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तीका वादरवसकायिका पर्याप्तका वादरवसकायिका  
 अपर्याप्तका असह्यगुणा । ४ । एतेषा नदत्त । वादराणा वादरपरिचीकायिकाना वादराप्तायाना वादरतेजस्कायिकाना वादरवायुकायिकाना  
 वादरवनस्पतिकायिकाना प्रत्येकशरीरवादरवनस्पतिकायिकाना वादरनिगोदाना वादरवसकायिकाना पर्याप्तापर्याप्ताना कतरे कतरेज्जोऽल्पा  
 वा ४ ? गौतम । सर्वस्तीका वादरतेजस्कायिका पर्याप्तका १, वादरवसकायिका पर्याप्तका असह्यगुणा २ । वादरवसकायिका अपर्याप्तका अ  
 सह्यगुणा ३ । पर्याप्तवादरप्रत्येकवनस्पतिकायिका असह्यगुणा ४ । पर्याप्तवादरनिगोदा असह्यगुणा ५ । पर्याप्तवादरपरिचीकायिका अस  
 ह्यगुणा ६ । पर्याप्तवादराप्तायिका असह्यगुणा ७ । पर्याप्तवादरवायुकायिका असह्यगुणा ८ । अपर्याप्तवादरतेजस्कायिका असह्यगुणा ९ ।

॥ तृणा अस्खेज्जगुणा ८ । वादस्तेउकाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा ९ । पत्तेयसरीरवादरवणस्सइका  
इया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा १० । वादरनिगोदा अपज्जत्ता असखेज्जगुणा ११ । वादरपुढविकाइया  
अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा १२ । वादरअ्याउकाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा १३ । वादरवाउकाइया  
अप० असखेज्जगुणा १४ । वादरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा अणत्तगुणा १५ । वादरपज्जत्तगा विसंसा  
हिया १६ । वादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा १७ । वादरा अपज्जत्तगा विसंसाहिया १९ ।  
वादरा विसंसाहिया २० । एएसिण भत्ते ! सुज्जमाणं सुज्जमपुढविकाइयाण सुज्जमअ्याउकाइयाण सुज्जमत्तेउ  
काइयाण सुज्जमवाउकाइयाण सुज्जमवणस्सइकाइयाण सुज्जमनिगोदाण वादराणं वादरपुढविकाइयाणं  
वादरअ्याउकाइयाण वादस्तेउकाइयाण वादरवाउकाइयाण वादरवणस्सइकाइयाणं पत्तेयसरीरवादरवण

अपर्याप्तप्रत्येकशरीरवादरवणस्पत्तिकारिका असह्यगुणा १० । अपर्याप्तवादरनिगोदा असह्यगुणा ११ । अपर्याप्तवादरपृथिवीकारिका असह्यगु  
णा १२ । अपर्याप्तवादराप्ताकारिका असह्यगुणा १३ । अपर्याप्तवादरवायुकारिका असह्यगुणा १४ । पर्याप्तवादरवणस्पत्तिकारिका अनन्तगुणा १५ ।  
पर्याप्त वादरा विसंसाधिका १६ । अपर्याप्तवादरवणस्पत्तिकारिका असह्यगुणा १७ । अपर्याप्त वादरा विशेषाधिकारिका १८ । वादरा विशेषाधि  
कारिका १९ । एतेषा भदन्त ! सूक्ष्माण सूक्ष्मपृथिवीकारिकाना सूक्ष्मवायुकारिकाना सूक्ष्मवायुकारिकाना सूक्ष्मवणस्पत्तिकारि  
काना सूक्ष्मनिगोदाना वादराणा वादरपृथिवीकारिकाना वादरतेजस्कारिकाना वादरवायुकारिकाना वादरवणस्पत्तिकारि  
काना प्रत्येकशरीरवादरवणस्पत्तिकारिकाना वादरनिगोदाना वादरवणस्पत्तिकारिकाना वादरवाउकाइयाण वादरवणस्पत्तिकारिका असह्यगुणा १० । वाद  
रवाउकाइयाण वादरवणस्पत्तिकारिका असह्यगुणा ११ । वादरनिगोदा असह्यगुणा १२ । वादरवाउकाइयाण वादरवणस्पत्तिकारिका असह्यगुणा १३ । वादरनिगोदा असह्यगुणा १४ । वाद



एएसिणं नते ! वादरतसकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंती अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वादरतसकाइया पज्जत्तगा । वादरतसकाइया अप्पज्जत्तगा अप्पसखेज्जगुणा ४ । एएसिण नते ! वादराणं वादरपुठविकाइयाण वादरप्पाउकाइयाण वादरवाउकाइयाण वादरवणस्सइकाइयाणं पत्तयसरीरवादरवणस्सइकाइयाण वादरनिगोदाण वादरतसकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहिंती अप्पावा वज्जयांवा तुत्तावा विसेसाहिवावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वादरतेउकाइया पज्जत्तया १ । वादरतसकाइया पज्जत्तया अप्पसखेज्जगुणा २ । वादरतसकाइया अप्पज्जत्तया अप्पसखिज्जगुणा ३ । वादरपत्तय वणस्सइकाइया पज्जत्तगा अप्पसखेज्जगुणा ४ । वादरनिगोदा पज्जत्तगा अप्पसखेज्जगुणा ५ । वादरपुठविकाइया पज्जत्तगा अप्पसखेज्जगुणा ६ । वादरप्पाउकाइया पज्जत्तगा अप्पसखेज्जगुणा ७ । वादरवाउकाइया पज्ज

दाना पर्याप्तापर्याप्ताना कतरे कतरेज्जोडल्पा वा ४ ? गीतम । सर्वस्तीका वादरनिगोदा पर्याप्तका अपर्याप्तावादरनिगोदा असस्यगुणा । एतेषा जदत्त । वादरत्रसकायाना पर्याप्तापर्याप्ताना कतरे कतरेज्जोडल्पा वा ४ ? गीतम । सर्वस्तीका वादरत्रसकायिका पर्याप्तका वादरत्रसकायिका अपर्याप्तका असस्येयगुणा ४ । एतेषा जदत्त । वादराणा वादरपुथिवीकायिकाना वादराप्तायाना वादरतेज्जसकायिकाना वादरवायुकायिकाना वादरवनस्पतिकार्यायिकाना प्रत्यक्षशरीरवादरवनस्पतिकार्यायिकाना वादरनिगोदाना वादरत्रसकायिकाना पर्याप्तापर्याप्ताना कतरे कतरेज्जोडल्पा वा ४ ? गीतम । सर्वस्तीका वादरतेज्जसकायिका पर्याप्तका १ । वादरत्रसकायिका पर्याप्तका असस्यगुणा २ । वादरत्रसकायिका अपर्याप्तका असस्येयगुणा ३ । पर्याप्तावादरमत्येकवनस्पतिकार्यायिका असस्येयगुणा ४ । पर्याप्तावादरनिगोदा असस्येयगुणा ५ । पर्याप्तावादरपुथिवीकायिका असस्येयगुणा ६ । पर्याप्तावादराप्तायिका असस्येयगुणा ७ । पर्याप्तावादरवायुकायिका असस्येयगुणा ८ । अपर्याप्तावादरतेज्जसकायिका असस्येयगुणा ९ ।

जज्ञताण वादरथ्याउकाडयअपजज्ञताण वादरतेउकाडयाअपजज्ञताण वादरवाउकाडयअपजज्ञतायाण  
 वादरवणस्सइकाडयअपजज्ञतायाण पत्तेयसरीरवादरवणस्सइकाडयअपजज्ञतायाण वादरनिगोदा अपजज्ञ  
 तायाण वादरतसकाडया अपजज्ञतायाणय कयरे कयरेहिती अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वादरत  
 सकाडया अपजज्ञतागा । वादरतेउकाडया अपजज्ञतागा असखेज्जगुणा , पत्तेयसरीरवादरवणस्सइकाडया  
 अपजज्ञतागा असखेज्जगुणा ३ । वादरनिगोदा अपजज्ञताया असखेज्जगुणा । वादरपुढविकाडया अपजज्ञ  
 तागा असखेज्जगुणा । वादरथ्याउकाडया अपजज्ञतागा असखे० ६ । वादरवाउकाडया अपजज्ञतागा अस  
 खेज्जगुणा, सुज्जमतेउकाडया अपजज्ञतागा असखेज्जगुणा । सुज्जमपुढविकाडया अपजज्ञतागा विसेसाहिया ९  
 सुज्जमथ्याउकाडया अपजज्ञतागा विसेसाहिया १० । सुज्जमवाउकाडया अपजज्ञतागा विसेसाहिया, सुज्जम  
 निगोदा अपजज्ञतागा असखेज्जगुणा, वादरवणस्सइकाडया अपजज्ञतागा अणतगुणा, वादरा अपजज्ञतागा

वनस्पतिकायिकानामपर्याप्तवादरनिगोदाना मपर्याप्तवादरवसकायिकानास्व कतरे कतरेन्योऽएपा वा ४ ? गीतम । सर्वस्तीका अपपर्याप्तवा  
 दरवसकायिका १ । अपपर्याप्तवादरतेजस्कायिका असख्येयगुणा २ । अपपर्याप्तमत्तेकजरीरवादरवनस्पतिकायिका असत्यगुणा ३ । अपपर्याप्तवा  
 दरनिगोदा असत्यगुणा ४ । अपपाप्तवादरपृथिवीकायिका असत्यगुणा ५ । अपपर्याप्तवादराप्तायिका असत्यगुणा ६ । वादरवायुकायिका अप  
 पर्याप्तका असत्यगुणा अपपाप्तसूक्ष्मतेजस्कायिका असत्यगुणा अपपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिका विशेषाधिकका ७ । अपपर्याप्तसूक्ष्मवायुकायिका विशेषाधिकका ८ । अपपर्याप्तसूक्ष्मनिगोदा असत्यगुणा अपपर्याप्तवादरवनस्पतिकायिका अनन्तगुणा वा  
 दरा अपपर्याप्तका विशेषाधिकका अपपर्याप्तसूक्ष्मवनस्पतिकायिका असत्यगुणा अपपर्याप्तका सूक्ष्मा विशेषाधिकका २ । एतेपा भदन्त । सूक्ष्मपर्याप्तकाना

स्सइकाइयाणं वादरनिगोदाणं वादरतसकाइयाणय कयरे कयरेहिंती अप्पावा१ २ गोयमा ! सव्वत्थोवा  
 वादरतसकाइया १ । वादरतेउकाइया असखेज्जगुणा पत्तेयसरीरवादरवणस्सइकाइया असखेज्जगुणा ।  
 वादरनिगोदा असखेज्जगुणा । वादरपुढविकाइया असखेज्जगुणा ५ । वादरअउकाइया असखेज्जगुणा  
 वादरवाउकाइया असखेज्जगुणा । सुज्जमतेउकाइया असखेज्जगुणा विसेसाहिया ।  
 सुज्जमअउकाइया विसेसाहिया । सुज्जमवाउकाइया विसेसाहिया । सुज्जमनिगोदा असखेज्जगुणा ।  
 वादरवणस्सइकाइया अणतगुणा वादरा विसेसाहिया । सुज्जमवणस्सइकाइया असखेज्जगुणा १५ ।  
 सुज्जमायिसेसाहिया १ । एएसिणं न्ते ! सुज्जमअपज्जयाणं सुज्जमपुढविकाइयाणं अपज्जत्तयाणं सुज्जम  
 अउकाइया अपज्जत्तयाणं सुज्जमतेउकाइयाणं अपज्जत्तयाणं सुज्जमवाउकाया अपज्जत्तयाणं सुज्जमवण  
 स्सइकाइयाणं अपज्जत्तयाणं सुज्जमनिगोदा अपज्जत्तयाण वादरा अपज्जत्तयाणं वादरपुढविकाइया अप

रपृथिवीकायिका असस्यगुणा ५ । वादराप्कायिका असस्यगुणा ६ । वादरवायुकायिका असस्यगुणा ७ । सुत्तमतेज्जकायिका असस्यगुणा ८ ।  
 सुत्तमपृथिवीकायिका विज्ञेयाधिकं ६ । सुत्तमाप्कायिका विज्ञेयाधिकं १० । सुत्तमवायुकायिका विज्ञेयाधिकं ११ । सुत्तमनिगोदा असस्यगुणा  
 १२ । वादरवनस्पतिकायिका अन्नगुणाः १३ । वादरा विज्ञेयाधिकं १४ । सुत्तमवनस्पतिकायिका असस्यगुणा १५ । सुत्तमा विज्ञेयाधिकं १६ ।  
 एतेषा ज्ञेयत् । सुत्तामपर्याप्तकाना सुत्तपृथिवीकायिकाना अपर्याप्तकाना सुत्ताप्कायिकानामपर्याप्ताना सुत्तमवा  
 युकायिकानामपर्याप्ताना सुत्तवनस्पतिकायिकानामपर्याप्ताना सुत्तमनिगोदानामपर्याप्ताना वादरापर्याप्तकानामपर्योवादरपृथिवीकायिकानामपर्यो  
 सवादराप्कायिकाना वादरतेज्जकायिकानामपर्याप्तकानामपर्याप्तवादरवायुकायिकानामपर्याप्तवादरवनस्पतिकायिकानामपर्याप्तमत्येकज्ञरीर वादर

ज्जत्तयाण वाटरञ्चाउकाइयअपज्जत्तयाण वादरवाउकाइयअपज्जत्तयाण  
 वादरवणस्सइकाइयअपज्जत्तयाण पत्तेयसरीरवादरवणस्सइकाइयअपज्जत्तयाण वादरनिगोदा अपज्ज  
 त्तयाण वादरतसकाइया अपज्जत्तगाणय कयरे कयरेहिहो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्योवा वादरत  
 सकाइया अपज्जत्तगा । वादरतेउकाइया अपज्जत्तगा अपसखेज्जगुणा , पत्तेयसरीरवादरवणस्सइकाइया  
 अपज्जत्तगा अपसखेज्जगुणा ३ । वाटरनिगोदा अपज्जत्तया अपसखेज्जगुणा । वादरपुढविकाइया अपज्ज  
 त्तगा अपसखेज्जगुणा । वादरञ्चाउकाइया अपज्जत्तगा अपसखे० ६ । वादरवाउकाइया अपज्जत्तगा अपस  
 खेज्जगुणा , सुज्जमतेउकाइया अपज्जत्तगा अपसखेज्जगुणा । सुज्जमपुढविकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया ९  
 सुज्जमञ्चाउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया १० । सुज्जमवाउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया , सुज्जम  
 निगोदा अपज्जत्तगा अपसखेज्जगुणा , वादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अणतगुणा , वादरा अपज्जत्तगा

वनस्पतिकायिकानामपर्याप्तवादरनिगोदाना मपर्याप्तवादरवसकायिकानाव्व कतरे कतरेज्योत्तपा वा ४ ? गीतम । सर्वस्तोका अपपर्याप्तवा  
 दरवसकायिका १ । अपपर्याप्तवादरतेजस्कायिका असख्येयगुणा २ । अपपर्याप्तमत्सेकशरीरवादरवनस्पतिकायिका असत्यगुणा ३ । अपपर्याप्तवा  
 दरनिगोदा असत्यगुणा ४ । अपपात्तवादरपर्ययीकायिका असत्यगुणा ५ । अपपर्याप्तवादराप्कायिका असत्यगुणा ६ । वादरवायुकायिका अप  
 र्याप्तका असत्यगुणा अपपर्याप्तसूक्ष्मतेजस्कायिका असत्यगुणा अपपर्याप्तसूक्ष्मपर्ययीकायिका विशेषाधिका ९ । अपपर्याप्तसूक्ष्मायिका अप  
 धिका १० । अपपर्याप्तसूक्ष्मवायुकायिका विशेषाधिका ११ । अपपात्तसूक्ष्मनिगोदा असत्यगुणा अपपर्याप्तवादरवनस्पतिकायिका अनन्तगुणा वा  
 दरा अपपर्याप्ता विशेषाधिका अपपर्याप्तसूक्ष्मवनस्पतिकायिका असत्यगुणा अपपर्याप्ता सूक्ष्मा विशेषाधिका २ । एतेपा भदन्त । सूक्ष्मपर्याप्तकाना

स्सइकाइयाणं वादरनिगोदाणं वादरतसकाइयाणय कयरे कयरेहिंती अप्प्यांवा१० गोयमा ! सव्वत्थोवा  
 वादरतसकाइया १ । वादरतेउकाइया असखेज्जगुणा पत्तेयसरीरवादरवणस्सइकाइया असखेज्जगुणा ।  
 वादरनिगोदा असखिज्जगुणा । वादरपुढविकाइया असखेज्जगुणा ५ । वादरअयाउकाइया असखेज्जगुणा  
 वादरवाउकाइया असखेज्जगुणा । सुज्जमतेउकाइया असखेज्जगुणा । सुज्जमपुढविकाइया विसेसाहिया ।  
 सुज्जमअयाउकाइया विसेसाहिया । सुज्जमवाउकाइया विसेसाहिया । सुज्जमनिगोदा असखेज्जगुणा ।  
 वादरवणस्सइकाइया अणतगुणा वादरा विसेसाहिया । सुज्जमवणस्सइकाइया असखेज्जगुणा १५ ।  
 सुज्जमायिसेसाहिया १ । एएसिणं नते ! सुज्जमअपज्जयाण सुज्जमपुढविकाइयाणं अपज्जतयाणं सुज्जम  
 अयाउकाइया अपज्जतयाणं सुज्जमतेउकाइयाणं अपज्जतयाणं सुज्जमवाउकाया अपज्जतयाण सुज्जमवण  
 स्सइकाइयाण अपज्जतयाणं सुज्जमनिगोदा अपज्जतयाण वादरा अपज्जतयाणं वादरपुढविकाइया अप

रपृथिवीकायिका असस्यगुणा १ । वादराष्कायिका असस्यगुणा ६ । वादरवायुकायिका असस्यगुणा ७ । सुत्तमतेज्जकायिका असस्यगुणा ८ ।  
 सुत्तमपृथिवीकायिका विशेषाचिका ८ । सुत्ताष्कायिका विशेषाचिका १० । सुत्तवायुकायिका विशेषाचिका ११ । सुत्तमनिगोदा असस्यगुणा  
 १२ । वादरवनस्पतिकायिका अनक्तगुणा १३ । वादरा विशेषाचिका १४ । सुत्तवनस्पतिकायिका असस्यगुणा १५ । सुत्ता विशेषाचिका १६ ।  
 एतेषा नदन्त । सुत्तापर्याप्तकाना सुत्तमपृथिवीकायिकाना अपर्याप्तकाना सुत्ताष्कायिकानामपर्याप्ताना सुत्तमवा  
 युकायिकानामपर्याप्ताना सुत्तवनस्पतिकायिकानामपर्याप्ताना सुत्तमनिगोदानामपर्याप्ताना वादरापर्याप्तकानामपर्याप्ताना वादरपृथिवीकायिकानामपर्या  
 त्तवादराष्कायिकानां वादरतेज्जकायिकानामपर्याप्तवादरवायुकायिकानामपर्याप्तवादरवनस्पतिकायिकानामपर्याप्तमत्थेकद्वारी वादर

ज्जत्तयाण वाटरञ्चाउकाइयश्चपज्जत्तयाणं वादरतेउकाइयाश्चपज्जत्तयाण वाटरवाउकाइयश्चपज्जत्तयाणं  
 वादरवणस्सइकाइयश्चपज्जत्तयाण पत्तेयसरीरवादरवणस्सइकाइयश्चपज्जत्तयाण वादरनिगोदा च्चपज्ज  
 त्तयाण वादरतसकाइया च्चपज्जत्तयाणय कयरे कयरेहिती च्चप्पावा४ ? गोयमा । सव्वत्थोवा वादरत  
 सकाइया च्चपज्जत्तया । वादरतेउकाइया च्चपज्जत्तया च्चसखेज्जगुणा , पत्तेयसरीरवाटरवणस्सइकाइया  
 च्चपज्जत्तया च्चसखेज्जगुणा ३ । वादरनिगोदा च्चपज्जत्तया च्चसखेज्जगुणा । वादरपुढविकाइया च्चपज्ज  
 त्तया च्चसखेज्जगुणा । वादरञ्चाउकाइया च्चपज्जत्तया च्चसखे० ६ । वादरवाउकाइया च्चपज्जत्तया च्चस  
 खेज्जगुणा , सुज्जमतेउकाइया च्चपज्जत्तया च्चसखेज्जगुणा । सुज्जमपुढविकाइया च्चपज्जत्तया विसेसाहिया ?  
 सुज्जमञ्चाउकाइया च्चपज्जत्तया विसेसाहिया १० । सुज्जमवाउकाइया च्चपज्जत्तया विसेसाहिया , सुज्जम  
 निगोदा च्चपज्जत्तया च्चसखेज्जगुणा , वाटरवणस्सइकाइया च्चपज्जत्तया च्चणतगुणा , वादरा च्चपज्जत्तया

वनस्पतिकारिकानामपर्याप्तवादननिगोदाना मपर्याप्तवादनसकारिकानाव्य कतरे कतरेज्योत्तया वा ४ ? गीतम । सर्वस्त्रोका अपर्याप्तवा  
 दरवसकारिका १ । अपर्याप्तवादनतज्जकारिका असख्येगुणा २ । अपर्याप्तमत्तेयकशरीरवादनरवणस्पतिकारिका असख्यगुणा ३ । अपर्याप्तवा  
 दरनिगोदा असख्यगुणा ४ । अपर्याप्तवादनपर्याप्तवादनकारिका असख्यगुणा ५ । अपर्याप्तवादनकारिका असख्यगुणा ६ । वादरवायुकारिका अप  
 र्याप्तका असख्यगुणा अपर्याप्तसूक्ष्मतेज्जकारिका असख्यगुणा अपर्याप्तसूक्ष्मपर्याप्तवादनकारिका ७ । अपर्याप्तसूक्ष्मकारिका अप  
 र्याप्तका १० । अपर्याप्तसूक्ष्मवायुकारिका विशेषाधिका ११ । अपर्याप्तसूक्ष्मनिगोदा असख्यगुणा अपर्याप्तवादनरवणस्पतिकारिका अनन्तगुणा वा  
 दरा अपर्याप्तका विशेषाधिका अपर्याप्तसूक्ष्मवनस्पतिकारिका असख्यगुणा अपर्याप्तका सूक्ष्मा विशेषाधिका २ । एतेषा भदन्त । सूक्ष्मपर्याप्ताना

विसेसाहिया, सुजमवणस्सइकाइया अूपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा, सुजमा अूपज्जत्तगा विसेसाहिया २ । एएसिण नत्ते । सुजमपज्जत्तयाणं सुजमपुढविकाइयपज्जत्तगाण सुजमअप्पकाइयपज्जत्तगाणं सुजमतेउका इयपज्जत्तयाण सुजमवाउकाइयपज्जत्तयाणं सुजमवणस्सइकाइयपज्जत्तयाण सुजमनिगीयपज्जत्तयाणं वादरपज्जत्तगाण वादरपुढविकाइयपज्जत्तयाणं वादरत्तेउकाइयपज्जत्तयाणं वादरवाउकाइयपज्जत्तयाण वादरवणस्सइकाइयपज्जत्तयाणं वा दरनिगीदपज्जत्तयाण वादरतसकाइयपज्जत्तयाणद कयरै कयरैहिती अप्पावा ४ ? गोयमा ! सट्ठ्योवा वा दरत्तेउकाइया पज्जत्तगा । वादरतसकाइया पज्जत्तया असंखिज्जगुणा । पत्तेयसरीरवादरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । वादरनिगीदा पज्जत्तया असंखेज्जगुणा, वादरपुढविकाइया पज्जत्तया असं० वादरष्ठाउकाइया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा, वादरवाउकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । सुजमतेउकाइ

[illegible]





काड्याणं पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिती अण्णवा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वादरथाउकाइया पज्जत्तया  
 वादरथाउकाइय अण्णत्तया असखगुणा, सुज्जमथाउकाइया अण्णत्तया असखगुणा, सुज्जमथा  
 उकाइया पज्जत्तया सखगुणा । एणसिण भते । सुज्जमतेउकाइयाण वादरतेउकाइयाणय पज्जत्ता २ णं  
 कयरे कयरेहिती अण्णवा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वादरतेउकाइया पज्जत्तया, वादरतेउकाइया अण्ण  
 ज्जत्तया असखज्जगुणा, सुज्जमतेउकाइया अण्णत्तया असखगुणा, सुज्जमतेउकाइया पज्जत्तया सखेज्ज  
 गुणा । एणसिण भत ! सुज्जमवाउकाइयाणं वादरवाउकाइयाणय पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहिती अण्ण  
 वा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वादरवाउकाइया पज्जत्तया वादरवाउकाइया अण्णत्तया असखगुणा ।  
 सुज्जमवाउकाइया अण्णत्तया असखे० । सुज्जमवाउकाइया पज्जत्तया असखगुणा । एणसिण भते !  
 सुज्जमवणस्सइकाइयाण वादरवणस्सइकाइयाणय पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिती अण्णवा४ ? गोयमा !

यिका अपयो०वादाप्कायिका असखगुणा अपयो०सूद्धमाप्कायिका असखगुणा पयो०सूद्धमाप्कायिका सख्यगुणा । एतेपा नदत्त । सूद्धमतेजस्का  
 यिकाना वादरतेजस्कायिकाना पयो०पयो०ना कतरे कतरेज्यो०ल्पा वा ४ ? गीतम । सर्वस्तीका पयो०वादादरतेजस्कायिका अपयो०वादादरतेजस्का  
 यिका असख्यगुणा अपयो०सूद्धमतेजस्कायिका असख्यगुणा पयो०सूद्धमतेजस्कायिका सख्यगुणा । एतेपा नदत्त । सूद्धमवायुकायिकाना वादरवा  
 युकायिकाना च पयो०पयो० कतरे कतरेज्यो०ल्पा वा ४ ? गीतम । सर्वस्तीका पयो०वादादरवायुकायिका अपयो०वादादरवायुकायिका असख्यगुणा अ  
 पयो०सूद्धमवायुकायिका असख्यगुणा पयो०सूद्धमवायुकायिका असख्यगुणा । एतेपा नदत्त । सूद्धमवणस्सपत्तिकायिकाना वादरवणस्सपत्तिकायि  
 काना पयो०पयो०ना कतरे कतरेज्यो०ल्पा वा ? गीतम । सर्वस्तीका पयो०वादादरवणस्सपत्तिकायिका अपयो०वादादरवणस्सपत्तिकायिका असख्यगुणा

सह्योवा वादरवणस्सइकाइया पज्जत्तया, वादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तया असखिज्जगुणा, सुज्जम  
वणस्सइकाइया अपज्जत्तया असखिज्जगुणा। सुज्जमवणस्सइकाइया पज्जत्तया सखिज्जगुणा। एएसिण भत्ते!  
सुहुमनिगोदाण वादरनिगोदाणय पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहि तो अप्पावा १ गोयमा! सह्योवा वाद  
रनिगोदा पज्जत्तया, वादरनिगोदा अपज्जत्तया असखे ०, सुज्जमनिगोदा अपज्जत्तया असखिज्जगुणा,  
सुज्जमनिगोदा पज्जत्तया सखेज्जगुणा ४। एएसिण भत्ते! सुज्जमाणं सुज्जमपुढविकाइयाणं सुज्जमअण्डका  
इयाण सुज्जमतेउकाइयाण सुज्जमवाउकाइयाण सुज्जमवणस्सइकाइयाण सुज्जमनिगोदाण वादराण वादर  
पुढविकाइयाण वादरअण्डकाइयाण वादरतेउकाइयाण वादरवाउकाइयाण वादरवणस्सइकाइयाण पत्ते  
यसररीरवादरवणस्सइकाइयाण वादरनिगोदाण वादरतस्सकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहि तो अप्पा  
वा १ गोयमा! सह्योवा वादरतेउकाइया पज्जत्तया १। वादरतस्सकाइया पज्जत्तया असखगुणा २

अपर्याप्तसूक्ष्मवनस्पतिकारिका असख्यगुणा पर्याप्तसूक्ष्मवनस्पतिकारिका सहेयगुणा। एतेषा वदन्त। सूक्ष्मनिगोदाना वादरनिगोदाना पर्या  
प्तापर्याप्ताना कतरे कतरेज्जोत्त्वा वा ४? गोतम। सर्वस्वोका पर्याप्तका वादरनिगोदा अपर्याप्तवादरनिगोदा असख्यगुणा अपर्याप्तसूक्ष्मनिगो  
दा असख्यगुणा पर्याप्तसूक्ष्मनिगोदा सख्यगुणा। एतेषा वदन्त। सूक्ष्माणा सूक्ष्मपर्याप्तकारिकाना सूक्ष्माप्याना सूक्ष्मतेजस्कारिकाना सूक्ष्म  
वनस्पतिकारिकाना सूक्ष्मवायुकारिकाना सूक्ष्मनिगोदाना वादराणा वादरपर्याप्तकारिकाना वादरवाउकारिकाना वादरतेजस्कारिकाना वादरवा  
युकारिकाना वादरवनस्पतिकारिकाना प्रत्येकशरीरवादरवनस्पतिकारिकाना वादरनिगोदाना वादरत्रस्कारिकाना पर्याप्तापर्याप्ताना कतरे कत  
रेज्जोत्त्वा वा ४? गोतम। सर्वस्वोका वादरतेजस्कारिका पर्याप्तका १। पर्याप्तवादरवस्कारिका असख्येयगुणा २। अपर्याप्तवादरवस्कारिका

वादरतसकाइया अपजजत्तया असंखिजगुणा ३ । पत्तेयसरीवादरवणस्सडकाइया पजजत्तया असंखिजज  
 गुणा ४ । वादननिगोदा पजजत्तया असंखिजजगुणा ५ । वायरपुढाविकाइया पजजत्तया असंखिजजगुणा ६ ।  
 वादरच्याउकाइया पजजत्तया असंखिजजगुणा ७ । वादरवाउकाइया पजजत्तया असंखिजजगुणा ८ । वादरतेउ  
 काइया अपजजत्तया असंखिजजगुणा ९ । पत्तेयसरीवादरवणस्सडकाइया अपजजत्तया असंखिजज ० १० ।  
 वादननिगोदा अपजजत्तया असंखे ० ११ । वादरवाउकाइया अपजजत्तया असंखे ० १२ । वादरच्याउका  
 इया अपजजत्तया असंखे ० १३ । वादरवाउकाइया अपजजत्तया असंखे ० १४ । सुज्जमतैउकाइया अपजज  
 त्तया असंखेजजगुणा १५ । सुज्जमपुढाविकाइया अपजजत्तया विसेसाहिया १६ । सुज्जमच्याउकाइया अप  
 जजत्तया विसेसाहिया १७ । सुज्जमवाउकाइया पजजत्तया विसेसाहिया १८ । सुज्जमतैउकाइया पजजत्तया  
 ससि ० १९ । सुज्जमपुढाविकाइया पजजत्तया विसेसाहिया २० । सुहुमच्याउकाइया पजजत्तया विसेसाहिया २१  
 सुज्जमवाउकाइया पजजत्तया विसेसाहिया २२ । सुज्जमनिगोदा अपजजत्तया असंखे ० २३ । सुहुमनिगो

असस्येयगुणा ३ । पर्याप्तप्रत्येकद्वारीरवादरवनस्पतिकारिका असस्यगुणा ४ । पर्याप्तवादरनिगोदा असस्यगुणा ५ । पर्याप्तवादरपृथिवीकारिका  
 असस्येयगुणा ६ । पर्याप्तवादराप्ताकारिका असस्येयगुणा ७ । पर्याप्तवादरवायुकारिका असस्येयगुणा ८ । पर्याप्तवादरतेजस्कारिका असस्येयगु  
 णा ९ । अपर्याप्तप्रत्येकद्वारीरवादरवनस्पतिकारिका असस्यगुणा १० । अपर्याप्तवादरनिगोदा असस्यगुणा ११ । अपर्याप्तवादरपृथिवीकारिका  
 असस्येयगुणा १२ । अपर्याप्तवादराप्ताकारिका असस्यगुणा १३ । अपर्याप्तवादरवायुकारिका असस्यगुणा १४ । अपर्याप्तसूक्ष्मतैजस्कारिका असस्य  
 गुणा १५ । अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकारिका विद्योपाधिकारिका १६ । अपर्याप्तसूक्ष्मवायुकारिका विद्योपाधि

दा पञ्चतया सखि० २४ । वादरवणस्सडकाडया पञ्चतया अणंतगुणा २५ । वादरपञ्चत्ता विसंसाहिया २६ । वादरवणस्सडकाडया अपञ्चत्तगा असखिज्जगुणा २७ । वादरअपञ्चत्तया विसंसाहिया २८ । बादरा विसंसाहिया २९ । सुज्जमवणस्सडकाडया अपञ्चत्तगा असखि० ३० । सुज्जमअपञ्चत्तगा विसंसाहिया ३१ । सुज्जमवणस्सडकाडया पञ्चत्तगा सखे० ३२ । सुज्जमपञ्चत्तगा विसंसाहिया ३३ । सुज्जमा विसंसाहिया ३४ । दार ४ । एएसिण ज्ञते । जीवाण सज्जोगीण मणजोगीण वयजोगीण कायजोगीण अज्जोगीणय कयरे २ । हितो अप्पावा वज्जायावा तुल्लावा विसंसाहियावा ? गोयमा ! सद्धत्योवा जीवा मणजोगी वयजोगी अ सखेज्जगुणा अज्जोगीअणतगुणा कायजोगी अणतगुणा सजोगी विसंसाहिया , दार ५ । एएसिण ज्ञते ! जीवाण सवेदगाण इत्यिवेदगाण पुरिसवेदगाण नपुसगवेदगाण अवेदगाणय कयरे २ हितो अप्पावा ४

का १८ । पर्याप्तसूक्ष्मतेजस्कायिका सख्येगुणा १९ । पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिका विशेषायिका विशेषायिका २० । पर्याप्तसूक्ष्मायिका विशेषायिका २१ । पर्याप्तसूक्ष्मवायुकायिका विज्ञायिका २२ । अपर्याप्तसूक्ष्मनिगोदा असख्यगुणा २३ । पर्याप्तसूक्ष्मनिगोदा सख्यगुणा २४ । पर्याप्तवादरवनस्पति कायिका अनन्तगुणा २५ । पर्याप्ता वादरा विशेषायिका २६ । अपर्याप्तवादरवनस्पतिकायिका असख्यगुणा २७ । अपर्याप्ता वादरा विशेषायिका २८ । वादरा विशेषायिका २९ । अपर्याप्तसूक्ष्मवनस्पतिकायिका असख्यगुणा ३० । सूक्ष्मा अपर्याप्ता विशेषायिका ३१ । पर्याप्ता सूक्ष्मवन स्पतिकायिका सख्यगुणा ३२ । पर्याप्ता सूक्ष्मा विशेषायिका ३३ । सूक्ष्मा विशेषायिका ३४ । एतेषा प्रदत्त । जीवाना सयोगिना मनोयोगिना वाग्योगिना काययोगिना च कतरे कतरेऽन्याऽल्पा वा ४ ? गीतम् । सर्वस्वोका जीवा मनोयोगिनो वाग्योगिनोऽसरेय गुणा अयोगिनोऽनन्तगुणा काययोगिनो विशेषायिका । द्वारम् । ५ । एतेषा प्रदत्त । जीवाना सर्वेदकाना खीवेदकाना

१ गोयमा । सवृत्त्योवा जीवा पुरिसवेदगा इत्यीवेदगा संखेज्जगुणा, एवेदगा अणतगुणा नपुंसगवेदगा अणतगुणा सवेयगा वित्तंसाहिया, दार ६ । एएसिण जते । जीवाण सकसाईण कोहकसाईणं माणक साईण मायाकसाईण लोन्नकसाईण अणकसाईणय कयरे कयरेहितो अप्पावा १ ? गोयमा । सवृत्त्योवा जीवा अणकसाई माणकसाई अणतगुणा, कोहकसाई वित्तंसाहिया, मायाकसाई वित्तंसाहिया, लोन्नकसाई वित्तंसाहिया, सकसाई वित्तंसाहिया, दार ७ । एएसिण जते ! जीवाण सलेसाण किरहलेसाण नीललेसाण काउ लेसाण तेललेसाण पम्हलेसाण सुक्कलेसाण अणलेसाणय कयरे कयरेहितो अप्पावा १ ? गोयमा । सवृत्त्योवा जीवा सुक्कलेसा पम्हलेसा सखिज्जगुणा तेललेसा सखिज्ज ० अलेसा अणतगुणा काउलेसा अणतगुणा नील लेसा वित्तंसाहिया कणहलेसा वित्तंसाहिया, दार ८ । एएसिण जते ! जीवाण सम्मदिठीण मिच्छादिठीण

पुरुषवेदकाना नपुंसकवेदकानामवेदकाना च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गीतम् । सर्वस्तोका- जीवा पुरुषवेदका स्त्रीवेदका सख्यगुणा अवेदका अनन्तगुणा नपुंसकवेदका अनन्तगुणा- सवेदका विशेषाधिका दार ६ । एतेषा प्रदत्त । जीवाना सकपायिना क्रोधकपायिना मानकपायिना मा याकपायिना लोन्नकपायिना अकपायिना च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गीतम् । सर्वस्तोका जीवा अकपायिनो मानकपायिनो नन्तगुणा को यकपायिनो विशेषाधिका मायाकपायिनो विद्यापाधिका लोन्नकपायिनो विशेषाधिका सकपायिनो विशेषाधिका दारम् ७ । एतेषा प्रदत्त । जीवाना सलेयाना कणलइयाना नीललेयाना कापोतलेयाना तेजोलेयाना पट्टलेयाना अलेयाना च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गीतम् । सर्वस्तोका जीवा शुक्कलेयाना पट्टलेयाना सख्यगुणा स्तेजोलेयाना अलेयाना अनन्तगुणा कापोतलेयाना अनन्तगुणा नी ललेयाना विशेषाधिका कणलइया विशेषाधिका ! दारम् ८ । एतेषा प्रदत्त । सम्यग्दृष्टिना सम्यग्दृष्टिना सम्यग्दृष्टिना च कतरे कतरे



जीवा मणपज्जवनाणी उहिनाणी असंखेज्जगुणा, अग्निविबोहियनाणी सुयनाणीय दोवि तुल्ला विसेसाहि  
या विन्नगनाणी असंखेज्ज० केवलनाणी अणतगुणा मडअन्नाणी सुयअन्नाणीय दोवि तुल्ला विसेसाहि  
या, विन्नगनाणी असंखेज्ज०, केवलनाणी अणतगुणा मडअन्नाणी सुयअन्नाणीय दोवि तुल्ला अणतगु  
णा, दार १० । एएसिण भते । जीवाण चक्कुदसणीणं अचक्कुदसणीणं उहिदंसणीणं केवलदसणीणय क  
यरे कयरेहिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा । सव्वत्थोवा जीवा उहिदसणी चक्कुदसणी असंखेज्जगुणा, केवलदंस  
णी अणतगुणा अचक्कुदसणी अणतगुणा, दार ११ । एएसिण भते ! जीवाणं सजयाणं असजयाणं संज  
यासजयाण नोसजयाण नोअसजयाण नोसजया २ णय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा  
जीवा सजयासजया असजया असंखेज्जगुणा, नोसजता नोअसजता नोसजतासजता अणतगुणा, असज  
ता अणतगुणा, दार १२ । एएसिण भते ! जीवाण सागारीवउत्ताणं अणगारीवउत्ताणय कयरे २ हिंतो

गुणा मत्पच्चानिं शुताच्चानिनो द्वावपि तुल्यावनत्तगुणो । द्वारम् । १० । एतेषा भदन्त । जीवाना वल्लुदंशनिनामवचिदंशनिनां के  
वलदंशनिना च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गीतम् । सर्वस्तीका जीवा अधिदंशनिनश्चल्लुदंशनिनोऽसस्यगुणा केवलदंशनिनोऽनन्तगुणा अचल्लु  
दंशनिनोऽनन्तगुणा । द्वारम् । ११ । एतेषा भदन्त । जीवाना सयताना सयतसयताना नोसयताना नोअसयताना नोसयतासयत  
ना च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गीतम् । सर्वस्तीका जीवा' सयता सयतासयता असस्यगुणा., नो सयता नो असयता नो संयतासयता अ  
नन्तगुणा, असयता अनन्तगुणा । द्वारम् । १२ । एतेषा भदन्त । जीवाना साकारोपयोगयुक्तानामनाकारोपयोगयुक्ताना च कतरे कतरेभ्योऽ  
ल्पा वा ४ ? गीतम् । सर्वस्तीका जीवा अनाकारोपयोगयुक्ता, साकारोपयोगयुक्ता सख्येयगुणा । द्वारम् । १३ । एतेषां भदन्त । जीवानामाहार

अप्योवा ४ ? गोयमा ! सव्योवा जीवा अणुगारीवउत्ता सागरोवउत्ता संखिज्जगुणा, दारं १३ । एए  
 सिण भते । जीवाण अणुहारगाण अणुहारगाणय कयरे ? हितो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्योवा जीवा  
 अणुहारगा अणुहारगा असखिज्जगुणा, दार १४ । एएसिणं भते ! जीवाणं ज्ञासगाणं अणुज्ञासगाणय क  
 यरे कयरोहितो अप्पावा बज्जयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्योवा जीवा ज्ञासगा अणु  
 सगा अणुतगुणा, दारं १५ । एएसिणं भते ! जीवाण परिताणं अप्परित्ताणं नोपरित्ता नोअपरित्ताणय  
 कयरे कयरोहितो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्योवा जीवा परिता नोपरित्ता नोअपरित्ता अणुतगुणा  
 अप्परित्ता अणुतगुणा, दार १६ । एएसिणं भते ! जीवाण पज्जत्ताणं अप्परित्ताणं नोपज्जत्ता नोअपज्जत्ता  
 णय कयरे कयरोहितो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्योवा जीवा नोपज्जत्ताणोअपज्जत्ताण अणुतगुणा  
 अणुतगुणा पज्जत्तगा सखिज्जगुणा । एएसिणं भते ! सुज्जमाणं वादराण नोसुज्जमाण नोवादराणय कयरे ?

कानामनाहारकाना च कतरे कतरेज्योउत्ता वा ४ ? गोतम ! सर्वस्वोका जीवा अनाहारका आहारका अस्यगुणा । दारम् । १४ । एतेषा मद  
 त्त । जीवाना प्रायकानामनापकाना च कतरे कतरेज्योउत्ता वा तुल्या वा विद्योपायिका वा ? गोतम ! सर्वस्वोका जीवा प्रायका अमापका अ  
 नन्तगुणा । दारम् । १५ । एतेषा भदन्त । जीवाना परीतानामपरीताना नो परीताना नो अपरीताना च कतरे कतरेज्योउत्ता वा ? गोतम !  
 सर्वस्वोका जीवा परीता नोपरीता नो अपरीता अनन्तगुणा अपरीता अनन्तगुणा । दारम् । १६ । एतेषा भदन्त । जीवाना पर्याप्तानामपर्याप्ता  
 ना नोपर्याप्ताना नोअपर्याप्ताना च कतरे कतरेज्योउत्ता वा ४ ? गोतम ! सर्वस्वोका जीवा नोपर्याप्तका अपर्याप्तका अनन्तगुणा  
 पर्याप्तका सस्यगुणा । एतेषा भदन्त । मूत्साणा वादराणा नोसूत्साणा नोवादराणा च कतरे कतरेज्योउत्ता वा ४ ? गोतम ! सर्वस्वोका जीवा



हिंतो अय्यावा४ ? गोयमा ! सव्योवा जीवा नोसुज्जमा नोवादरा . वादरा अणंतगुणा सुज्जमा अणसंखे  
ज्जगुणा , दार १८ । एएसिणं भते ! जीवाणं सन्तीण अणसन्तीणं नोसन्तीणं नोअणसन्तीणय कयरे कयरे  
हिंतो अय्यावा४ ? गोयमा ! सव्योवा सन्ती नोसन्ती नोअणसन्ती अणतगुणा , अणसन्ती अणतगुणा ।  
दारं १९ । एएसिणं भते ! जीवाण नवसिद्धियाण अणवसिद्धियाणं नोअवसिद्धिनोअणवसिद्धियाणय  
कयरे कयरेहिंतो अय्यावा४ ? गोयमा ! सव्योवा अणवसिद्धिया नोअवसिद्धिया , नोअणवसिद्धिया  
अणतगुणा नवसिद्धिया अणतगुणा , दार २० । एएसिणं भते ! धम्मल्लिकायअधम्मल्लिकायअणस  
ल्लिकाय जीवल्लिकाय पुगल्लिकाय अणसमयाण दव्वठयाए कयरे कयरेहिंतो अय्यावा४ ? गोयमा !  
धम्मल्लिकाए अधम्मल्लिकाए अणसल्लिकाए एए तिव्विअ तुल्ला दव्वठयाए सव्योवा जीवल्लिकाए दव्व

नो मूत्तमा नो वादरा , वादरा अनन्तगुणा सूत्ता असल्लगुणा । दारम् १८ । एतेपा नदन्त ! जीवाना सल्लिनां असल्लिना नो सल्लिना नो  
असल्लिनाअ कतरे कतरेअयोअल्पा वा ? गोतम ! सर्वस्वोका सल्लिना नोसल्लिना नो असल्लिना नोअनन्तगुणा , असल्लिनाअनन्तगुणा । दारम् १८ ।  
एतेपा नदन्त ! जीवाना अणसिद्धिनामणवसिद्धिकाना नो अणसिद्धिकोअणवसिद्धिकाना च कतरे कतरेअयोअल्पा वा ४ ? गोतम ! सर्वस्वोका  
अणवसिद्धिका नोअणवसिद्धिका नो अणवसिद्धिका अनन्तगुणा अणवसिद्धिका अनन्तगुणा । दारम् २० । एतेपा नदन्त ! धर्मोस्तिकायाधर्मोस्तिकाया  
काशास्तिकायाजीवास्तिकायपुद्गलास्तिकायादासमयाना द्रव्यार्थतया कतरे कतरेअयो अल्पा वा ४ ? गोतम ! धर्मोस्तिकायाधर्मोस्तिकाय आकाशा  
स्तिकाय एते अण स्तुत्ता द्रव्यार्थतया सर्वस्वोका , जीवास्तिकायो द्रव्यार्थतयानन्तगुण पुद्गलास्तिकायो द्रव्यार्थतयाअनन्तगुणोअणसमयो द्रव्यार्थतया  
अनन्तगुण . । एतेपा नदन्त ! धर्मोस्तिकायाधर्मोस्तिकायाकाशास्तिकायपुद्गलास्तिकायादासमयाना प्रदेयार्थतया कतरे कतरेअयो

ठयाए अणन्तगुणेषुगल्लिकाए दव्वठयाए अणन्तगुणे अण्ठासमए दव्वठयाए अणन्तगुणे । एएसिणं ज्ञते !  
 धम्मत्थिकायअधम्मत्थिकायअगासत्थिकायजीवत्थिकायपोगल्लिकायअण्ठासमयाण पदेसठयाए कयरे  
 कयरेहिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा । धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए एएसिण दोवि तुत्ता पदेसठयाए सव्व  
 ल्योवा जीवत्थिकाए पदेसठयाए अणन्तगुणे पोगल्लिकाए पदेसठयाए अणन्तगुणे अण्ठासमए पदेसठ  
 याए अणन्तगुणा अगासत्थिकाए पदेसठयाए अणन्तगुणा । एएसिणं ज्ञते ! धम्मत्थिकायस्स दव्वठयाए पदे  
 सठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पावा वज्जयावा तुत्तावा विस्सेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वल्योवा एगे धम्म  
 त्थिकाए दव्वठयाए सोचेव पदेसठयाए अणन्तगुणा । एएसिणं ज्ञते ! अधम्मत्थिकायस्स दव्वठयपटे  
 सठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा । सव्वल्योव एगे अधम्मत्थिकाए दव्वठयाए सोचेव पदे  
 सठयाए अणन्तगुणे । एतस्सणं ज्ञते । अगासत्थिकायस्स दव्वठपदेसठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पावा ४  
 ? गोयमा ! सव्वल्योव एगे अगासत्थिकाए दव्वठयाए सोचेव पदेसठयाए अणन्तगुणा , एतस्सणं ज्ञते !

उत्तरा वा ? गीतम । धर्मास्तिकायाधर्मास्तिकायो द्वावप्येतौ तुल्यौ प्रदेशार्थतया सर्वस्तोको जीवास्तिकाय प्रदेशायतयानन्तगुणं पुद्गलास्ति  
 काय प्रदेशार्थतयाऽनन्तगुणो ऽद्वाऽसमय प्रदेशार्थतयानन्तगुण आकाशास्तिकाय प्रदेशार्थतयानन्तगुण । अस्य भदन्त । धर्मास्तिकायस्य च  
 द्रव्यायतया प्रदेशायतया कतरे कतरन्योऽत्तरा वा ४ ? गीतम । सबस्ताक एको धर्मास्तिकाय प्रदेशार्थतया स एवानन्तगुण । अस्य भदन्त ।  
 अधर्मास्तिकायस्य द्रव्यायतया प्रदेशार्थतया कतर कतरन्योऽत्तरा वा ४ ? गीतम । सर्वस्तोक एकोऽधर्मास्तिकायो द्रव्यायतया सग्व प्रदेशार्थतया  
 ऽवल्यगुण । एतस्य भदन्त । आकाशास्तिकायस्य द्रव्यायप्रदेशार्थतया कतरे कतरन्योऽत्तरा वा ४ ? गीतम । सर्वस्तोक एक आकाशास्तिकायो

जीवत्यिकायस्स दब्बठपदेसठयाए कयेरे कयेरोहितो अप्पावा४ ? गोयमा ! सत्त्व्योवे जीवत्यिकाए दब्ब  
ठयाए सोचेव पदेसठयाए असखिजगुणा , एतस्सणं जते ! पुग्गलित्तिकायस्स दब्बठपदेसठयाए कयेरे र  
हितो अप्पावा४ ? गोयमा ! सत्त्व्योवा पुग्गलित्तिकाए दब्बठयाए एसखिजगुणा अ  
द्दासमए ण पुच्छिज्जाइ पदसान्नावा । एएसिण जते । धम्मत्तिकाय अधम्मत्तिकाय आगासत्तिकाय जीव  
त्तिकाय पोग्गलित्तिकाय अद्दासमयाण दब्बठयाए पदेसठयाए कयेरे कयेरोहितो अप्पावा४ ? गोयमा !  
धम्मत्तिकार अधम्मत्तिकार आगासत्तिकार एएण तिव्वि तुह्वा , दब्बठयाए सत्त्व्योवा धम्मत्तिकार  
अधम्मत्तिकार एएण दोस्सिवितुह्वा पदेसठयाए असखेजगुणा , जीवत्यिकाए दब्बठयाए अणतगुणे सो  
चेव पदेसठयाए असखिजगुणे पोग्गलित्तिकार दब्बठयाए अणतगुणे सोचेव परसठयाए असखेजगुणे

द्रव्यायतया सग्व प्रदेशायतयाऽनन्तगुण । एतस्य नदन्त । जीवास्तिकायस्य द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया कतरे कतरेऽप्योऽल्पा वा ४ ? सर्वस्तोको जीवास्तिकाय एको द्रव्यार्थतया सग्व प्रदेशार्थतया ऽसंख्यगुण । एतस्य भदन्त । पुद्गलास्तिकायस्य द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया कतरे कतरेऽप्योऽल्पा वा ४ ? गीतम् । सर्वस्तोक पुद्गलास्तिकायो द्रव्यार्थतया सग्व प्रदेशार्थतया ऽसंख्यगुण । अद्वासमयो नपृच्छते प्रदेशाज्जावात् । एतेषा नदन्त । धर्मोस्तिकायाधर्मास्तिकायकाशास्तिकायजीवास्तिकायपुद्गलास्तिकायद्रव्यायतया द्रव्यायतया कतरे ? अप्योऽल्पा वा ४ ? गीतम् । धर्मास्तिकायो ऽपमर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय एते त्रयस्तस्या द्रव्यार्थतया सर्वस्तोका चर्मास्तिकायोऽपमर्मास्तिकाय एते द्वावपि तुल्यौ प्रदेशार्थतया ऽसंख्येयगुणौ । जीवास्तिकायो द्रव्यार्थतयानन्तगुण स ग्व प्रदेशार्थतया ऽसंख्यगुण । पुद्गलास्तिकायो द्रव्यार्थतयाऽनन्तगुण स ग्व प्रदेशार्थतया ऽसंख्यगुण । अद्वासमयो द्रव्यार्थप्रदेशार्थतयाऽनन्तगुणः । आकाशास्तिकाय प्रदेशार्थतयाऽनन्तगुणः । एतेषा नदन्त । जीवा

जीवाण चरिमाण अचरिमाणय कयरे कयरेहिती अण्पावा४ ? गोयमा । सव्योवा जीवा अचरिमा च  
 सव्यपज्जवा७ण कयरे कयरेहिती अण्पावा४ ? गोयमा । जीवाण पोगलाण अण्ठासमयाण सव्यदह्याण सव्यपएसाणं  
 मया अणतगुणा सव्यदह्या विसेसाहिया सव्यपदेसा अणतगुणा सव्यपज्जवा अणतगुणा अण्ठास  
 णवाएण सव्योवा जीवा उहुलोयतिरियलोए अहोलीय तिरियलोए विसेसाहिया तिरियलोए असखि  
 ज्जगुणा तेलुक्की असखेज्जगुणा उहुलोए असखेज्जगुणा अहोलीए विसेसाहिया, खेत्ताणुवाएणं सव्योवा  
 नेरइया तेलुक्की अहोलोगतिरियलोगे असखेज्ज० अहोलीए असखेज्जगुणा । खेत्ताणुवाएण सव्योवा

ना वरमाणा मवरमाणां च कतरे कतरेज्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका जीवा अचरमाद्यरमा अनन्तगुणा । द्वारम् २२ । एतेषा जदत्त ।  
 जीवाना पुद्गलानाम्हासमयाना सर्वद्रव्याणा सर्वप्रदेशाना सर्वपर्यवाना च कतरे कतरेज्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका जीवा पुद्गला अन  
 त्तगुणा अह्मासमया अनन्तगुणा सर्वद्रव्याणि विशेषाधिकानि सर्वप्रदेशा अनन्तगुणा सर्वपर्यवा अनन्तगुणा । द्वारम् २३ । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तो  
 का जीवा ऊर्ध्वलाकतियंगलाके अधोलोकतियंगलाके विशेषाधिकास्तियंगलाके असख्यगुणा खोलोक्यऽसख्यगुणा ऊर्ध्वलोकऽसख्यगुणा अधोलोकके वि  
 शेषाधिका क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका नैरपिकाखोलोकके अधोलोकतियंगलाके असख्यगुणा अधोलोकके असख्यगुणा । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोकाऽस्त  
 य

रातेन सर्वस्तोकास्तियंगलाके असख्यगुणा खोलोकके असख्यगुणा । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोकाऽस्त  
 य





जीवल्यिकायस्स दव्वठपदेसठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवे जीवल्यिकाए दव्वठयाए सोचिव पदेसठयाए असखिज्जगुणा, एनस्सणं नत्ते ! पुग्गलत्थिकायस्स दव्वठपदेसठयाए कयरे २ हिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पुग्गलत्थिकाए दव्वठयाए सोचिव पदेसठयाए असखिज्जगुणा अप्पासए ण पुच्छिज्जइ पदसान्नावा । एएसिण नत्ते । धम्मत्थिकाय अप्पासत्थिकाय अप्पासत्थिकाय जीवल्यिकाय पुग्गलत्थिकाय अप्पासत्थिकाय दव्वठयाए पदेसठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! धम्मत्थिकाए अप्पासत्थिकाए अप्पासत्थिकाए एएण तिव्वि तुल्ला, दव्वठयाए सव्वत्थोवा धम्मत्थिकाए अप्पासत्थिकाए एएण दोसिवित्तुत्ता पदेसठयाए असखिज्जगुणा, जीवल्यिकाए दव्वठयाए अप्पासत्थिकाए सोचिव पदेसठयाए असखिज्जगुणे पुग्गलत्थिकाए दव्वठयाए अप्पासत्थिकाए असखिज्जगुणे

द्रव्यायतया सम्यग् प्रदेशायतयाऽनन्तगुण । यतस्य नदत्त । जीवास्तिकायस्य द्रव्यार्थप्रदेशायतया कतरे कतरेऽप्योऽल्पा वा ४ ? सर्वस्तीको जीवास्तिकाय एको द्रव्यार्थतया सम्यग् प्रदेशायतया ऽसत्त्वगुण । यतस्य नदत्त । पुद्गलास्तिकायस्य द्रव्यार्थप्रदेशायतया कतरे कतरेऽप्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तीक पुद्गलास्तिकायो द्रव्यार्थतया सम्यग् प्रदेशायतया ऽसत्त्वगुण । अद्वासमयो नपच्यते प्रदेशान्नायात् । यतेपा नदत्त । यमोस्तिकायाधर्मास्तिकायकाशास्तिकायजीवास्तिकायपुद्गलास्तिकायाद्वासमयाना द्रव्यार्थतया प्रदेशायतया कतरे २ ज्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । यमोस्तिकायो ऽधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय एते त्रयस्तुल्या द्रव्यार्थतया सर्वस्तीका यमोस्तिकायोऽप्यमोस्तिकाय यतो द्वावपि तुल्यौ प्रदेशायतया ऽसत्त्वगुणौ, जीवास्तिकायो द्रव्यार्थतयाऽनन्तगुण । पुद्गलास्तिकायो द्रव्यार्थतयाऽनन्तगुण स सम्यग् प्रदेशायतया ऽसत्त्वगुण । अद्वासमयो द्रव्यार्थप्रदेशायतयाऽनन्तगुण । आकाशास्तिकाय प्रदेशायतयाऽनन्तगुण । द्वारम् २१ । एतया नदत्त । जीवा





तिरिस्कजोणिया उह्लोयतिरियलोए अहोलोगतिरियलोए त्रिसेसाहिद्या तिरियलोए असखेजगुणा, ते  
 लुक्के असखेजगुणा उह्लोए असखिज्ज० अहोलोए विसंसाहिद्या, खेत्ताणवाएणं सव्वत्योवा तिरिस्कजो  
 णिणीउ उह्लोए उह्लोयतिरियलोए असखेज्ज०, तेलुक्के असखेज्ज० अहोलोयतिरियलोए सखिज्जगुणानु  
 अहोलोए संखेज्जगुणानु तिरियलोए संखिज्जगुणानु खेत्ताणवाएणं सव्वत्योवा मणस्सा तेलुक्के उह्लोयतिरि  
 यलोए असखेज्जगुणा अहोलोयतिरियलोए संखिज्जगुणा अहोलोए संखेज्जगुणा तिरियलोए संखेज्जगुणा।  
 खेत्ताणवाएणं सव्वत्योवानु मणस्सीउ तेलुक्के उह्लोयतिरियलोए सखेज्जगुणानु अहोलोयतिरियलोए सखे  
 ज्जगुणानु उह्लोए सखेज्जगुणानु अहोलोए संखेज्ज० तिरियलोए संखेज्ज०, खेत्ताणवाएण सव्वत्योवा  
 देवा उह्लोए उह्लोयतिरियलोए असखेज्जगुणा तेलुक्के असखेज्जगुणा अहोलोए तिरियलोए असखेज्ज०

यगुणा अधोलोके सख्यगुणा स्तियंग्लोके सख्यगुणा । चेत्रानुपातेन सर्वस्तोका मनुष्या खोलोके ऊर्ध्वलोकतियंग्लोके उषस्यगुणा अधोलोकतियं  
 ग्लोक सख्येयगुणा अधोलोके सख्यगुणा स्तियंग्लोके सख्यगुणा । चेत्रानुपातेन सर्वस्तोका मानुष्य खोलोके ऊर्ध्वलोकतियंग्लोके सख्यगुणा अधो  
 लोकतियंग्लोके सख्यगुणा ऊर्ध्वलोके सख्यगुणा अधोलोके सख्यगुणा स्तियंग्लोके सख्यगुणा । चेत्रानुपातेन सर्वस्तोका देवा ऊर्ध्वलोके उह्लोकाति  
 यंग्लोके उषस्यगुणा खोलोके उषस्यगुणा अधोलोकतियंग्लोके उषस्यगुणा अधोलोके सख्यगुणा स्तियंग्लोके सख्यगुणा । चेत्रानुपातेन सर्वस्तो  
 का देवा ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकतियंग्लोके उषस्यगुणा खोलोके सख्यगुणा अधोलोकतियंग्लोके असख्यगुणा अधोलोके सख्यगुणा स्तियंग्लोके सख्यगु  
 णाः । चेत्रानुपातेन सर्वस्तोका प्रवनवासिदेवा ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकतियंग्लोके उषस्यगुणा अधोलोके सख्यगुणा स्तियंग्लोके सख्यगुणा । चेत्रानुपातेन सर्वस्तोका प्रवनवासिन्योदेव्य ऊर्ध्वलोके तियंग्लोके उषस्यगुणा खोलोके सख्यगुणा  
 यंग्लोक उषस्यगुणा । अधोलोके उषस्यगुणा । चेत्रानुपातेन सर्वस्तोका प्रवनवासिन्योदेव्य ऊर्ध्वलोके तियंग्लोके उषस्यगुणा खोलोके सख्यगुणा

अहोलीए सखिजगुणानु तिरियलीए सखिजगुणानु खेत्तानुवाएणं सव्वत्योवानु देवीनु उहलोय उहलोए  
 तिरियलीए असखेजगुणानु तेलुक्के सखेजगुणानु अहोलीयतिरियलीए असखेजगुणानु अहोलीए सखे  
 जगुणानु तिरियलीए सखिजगुणानु खेत्तानुवाएण सव्वत्योवा नवणवासीदेवा उहलोए उहलोयतिरियलीए  
 असखेजगुणानु तेलुक्के सखिजगुणानु अहोलीयतिरियलीए असखेजगुणा, तिरियलीए असखिजगुणा  
 अहोलीए असखेजगुणा, खेत्तानुवाएण सव्वत्योवा नवणवासिगानु देवीनु उहलोए तिरियलीए असखि०,  
 तेलुक्के सखेजगुणानु अहोलीए तिरियलीए असखेजगुणा, तिरियलीए असखिजगुणा अहोलीए असखिजगुणा  
 खेत्तानुवाएण सव्वत्योवा वाणमतरादेवा उहलोए उहलोयतिरियलीए असखिजगुणा, तेलुक्के असखिजगुणा  
 अहोलीए तिरियलीए असखेजगुणा अहोलीए सखेजगुणा तिरियलीए सखिजगुणा, खेत्तानुवाएण सव्वत्यो

अधोलोकतिरियलोकं असहयगुणास्तिरियलोकं असहयगुणा । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका धानव्यन्तरा देवा ऊहल्लोके ऊहल्लोके  
 तिरियलोकं असहयगुणा खल्लोके असहयगुणा अधोलोकतिरियलोकं असहयगुणा अधोलोकं सख्यगुणा । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तो  
 का धानव्यन्तर्पर्य्यं देव्य ऊहल्लोके ऊहल्लोके असहयगुणा खल्लोके सख्यगुणा अधोलोकतिरियलोकं असहयगुणा अधोलोकं सख्यगुणा स्तिरिय  
 लोके सख्यगुणा । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका ज्योतिष्का देवा ऊहल्लोके ऊहल्लोके असहयगुणास्तिरियलोकं असहयगुणा अधोलोकतिरियलोकं  
 असहयगुणा अधोलोकं सख्यगुणा स्तिरियलोकं असहयगुणा । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका ज्योतिष्कदेव्य ऊहल्लोके ऊहल्लोके असहयगुणा स्तिरिय  
 लोके सख्यगुणा अधोलोकतिरियलोकं सख्यगुणा अधोलोकं सख्यगुणा । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका ज्योतिष्का देवा ऊहल्लोके  
 लोके असहयगुणा अधोलोकतिरियलोकं सख्यगुणा अधोलोकं सख्यगुणा स्तिरियलोकं सख्यगुणा । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका ज्योतिष्का देवा ऊहल्लोके

वानु वाणमतरीनु देवीनु उहुलोए उहुलोयतिरियलोए असखिजगुणानु तेलुक्के संखिजगुणानु अहोलीए  
तिरियलोए असखिज० अहोलीए सखिज० तिरियलोए सखिजगुणानु खेत्ताणुवाएण सव्वत्योवा जोड  
सिया देवा उहुलोए उहुलोयतिरियलोए असखिज० तेलुक्के संखेजगुणा अहोलीए तिरियलोए असखिज  
गुणा अहोलीए सखेजगुणा तिरियलोए असखेजगुणा खेत्ताणुवाएण सव्वत्योवा जोडसिणीनु देवीनु  
उहुलोए उहुलोयतिरियलोए असखेजगुणानु तेलुक्के संखेजगुणानु अहोलीयतिरियलोए सखेज०, अहो  
लोए सखि० तिरियलोए असखे० खेत्ताणुवाएण सव्वत्योवा वेमाणिया देवा २००० उहुलोयतिरियलोए  
तेलुक्के सखेज० अहोलीयतिरियलोए सखिज० अहोलीए सखेजगुणा तिरियलोए सखेज० उहुलोए  
असखिज० खेत्ताणुवाएण सव्वत्योवानु वेमाणीनु देवीनु उहुलोयतिरियलोए तेलुक्के संखेजगुणानु अ  
होलीयतिरियलोए सखिज० अहोलीयसखेज० तिरियलोए सखेज० उहुलोए असखि० खेत्ताणुवाएण

पातेन सर्वस्वोका वेमानिक्यो देव्य ऊर्द्धलोकतियंग्लोके त्रैलोक्ये सख्यगुणा अघोलोकातियंग्लोके सख्यगुणा स्तियंग्लोके सख्य  
गुणा ऊर्द्धलोकके एसख्यगुणा । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्वोका एकैन्द्रिया जीवा ऊर्द्धलोकतियंग्लोके अघोलोकतियंग्लोके विशेषाधिकार स्तियंग्लोके एस  
ख्यगुणा खैलोक्ये एसख्यगुणा ऊर्द्धलोकके एसख्यगुणा अघोलोकके विशेषाधिका । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्वोका एकैन्द्रिया जीवा अपर्याप्तका ऊर्द्धलोक  
तियंग्लोके अघोलोकतियंग्लोके विशेषाधिकार स्तियंग्लोके एसख्यगुणा खैलोक्ये एसख्यगुणा अघोलोकके विशेषाधिका । क्षेत्र  
ानुपातेन सर्वस्वोका एकैन्द्रिया जीवा पर्याप्तका ऊर्द्धलोकतियंग्लोके अघोलोकतियंग्लोके विशेषाधिका स्तियंग्लोके एसख्यगुणा खैलोक्ये एसख्य  
गुणा ऊर्द्धलोकके एसख्यगुणा अघोलोकके विशेषाधिका । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्वोका द्वौन्द्रिया ऊर्द्धलोकके ऊर्द्धलोकतियंग्लोके एसख्यगुणा खैलोक्ये एस

सर्वस्योवा एगिदिया जीवा उहलोए तिरियलोए, अहोलीयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असं  
खेजगुणा, तेलुक्के असं, उहलोए असखेजगुणा, अहोलीए विसेसाहिया । खेत्ताणवाएण सर्वस्योवा  
एगिया जीवा अपजत्तगा, उहलोयतिरियलोए अहोलीए विसेसाहिया, तिरियलोए असं  
खेजगुणा, तेलुक्के असखेजगुणा, उहलोए असखिजगुणा, अहोलीए विसेसाहिया । खेत्ताणवाएण  
सर्वस्योवा एगिया जीवा पजत्तगा, उहलोयतिरियलोए अहोलीयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए  
असखेजगुणा, तेलुक्के असखेजगुणा, उहलोए असखेजगुणा, अहोलीए विसेसाहिया । खेत्ताणवाएण  
सर्वस्योवा वेइदिया उहलोए उहलोयतिरियलोए असखेजगुणा, तेलुक्के असं, अहोलीए तिरियलोए  
असखेजगुणा, अहोलीए सखेजगुणा, तिरियलोए सखेजगुणा । खेत्ताणवाएण सर्वस्योवा वेइदिया  
पजत्तया उहलोए । उहलोयतिरियलोए सखेजगुणा, तेलुक्के असखेजगुणा, अहोलीयतिरियलोए अस  
खेजगुणा, अहोलीए सखे०, तिरियलोए सखे० । खेत्ताणवाएण सर्वस्योवा वेइदिया पजत्तया उहलोए उ  
हलोयतिरियलोए असखेजगुणा, तेलुक्के असखेजगुणा, अहोलीयतिरियलोए असखेजगुणा, अहोली  
ए सखेजगुणा, तिरियलोए सखेजगुणा । खेत्ताणवाएण सर्वस्योवा वेइदिया उहलोए उहलोयतिरियलो

स्यगुणा अघोलोकतिर्यग्लोके असख्यगुणा अघोलोके सख्यगुणा । स्तिर्यग्लोके सख्यगुणा । वेवानुपातेन सर्वस्ताका द्वीन्द्रिया अपयोसका ऊर्ध्वलोक  
ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके सख्यगुणाखे लाक्ख असख्यगुणा अघोलोकतिर्यग्लोके असख्यगुणा अघोलोके सख्यगुणा । स्तिर्यग्लोके सख्यगुणा । वेवानुपातेन  
सर्वस्ताका द्वीन्द्रिया पयोसका ऊर्ध्वलोक ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके असख्यगुणा खे लोक्के असख्यगुणा अघोलोकतिर्यग्लोके असख्यगुणा अघोलोके सख्य



त्योवा चउरिदिना जीवा पज्जत्तगा उहुलोए उहुलोयतिरियलोए असखेज्जगुणा, तेलुक्के अउसखेज्जगुणा  
 अहोलीयतिरियलोए अउसखेज्जगुणा, अहोलीए सखेज्जगुणा, तिरियलोए सखे० । खत्ताणुवाएण सव्वत्थो  
 वा पचिदिया तेलुक्के उहुलोयतिरियलोए अउसखेज्जगुणा, अहोलीए तिरियलोए सखेज्जगुणा, उहुलोए  
 सखेज्जगुणा, अहोलीए सखेज्जगुणा । खत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा पचिदिया  
 अपज्जत्तगा, तेलुक्के उहुलोयतिरियलोए अउसखेज्जगुणा, अहोलीयतिरियलोए सखेज्जगुणा, उहुलोए  
 सखेज्जगुणा, अहोलीए सखेज्जगुणा तिरियलोए सखिज्जगुणा । खत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा पचिदिया पज्जत्ता  
 उहुलोए उहुलायतिरियलोए अउस०, तेलुक्के अउस०, अहोलीयतिरियलोए सखेज्ज० अहोलीए सखेज्ज०  
 तिरियलोए अउसखेज्ज० । खत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा पुढविमाडया उहुलोयतिरियलोए अहोलीयतिरियलोए

धोलीकतियक्कलोके असख्यगुणा अघोलीके सरयेयगुणा स्तियक्कलोके सखेयगुणा । तेवानुवातेन सर्वस्तोमाश्रुतारिन्द्रिया जीवा पर्याप्तगा ऊर्ध्व  
 लोके ऊर्ध्वलोकातियक्कलोके असख्यगुणा खोलीके असख्यगुणा अघोलीकतियक्कलोके असख्यगुणा अघोलीके सखेयगुणा तियक्कलोके सखेयगुणा ।  
 तेवानुवातेन सर्वस्तोमा पञ्चेन्द्रिया खोलीके उहुलोकातियक्कलोके असख्यगुणा अघोलीकतियक्कलोके सखेयगुणा ऊर्ध्वलोके सखेयगुणा । ति  
 यक्कलोके असखेयगुणा । तेवानुवातेन सर्वस्तोमा पञ्चेन्द्रिया अघोलीकतियक्कलोके असख्यगुणा अघोलीके सखेयगुणा अघोलीके सखेयगुणा  
 सखेयगुणा ऊर्ध्वलोके सखेयगुणा अघोलीके सखेयगुणा तियक्कलोके सखेयगुणा । तेवानुवातेन सर्वस्तोमा पञ्चेन्द्रिया अघोलीके  
 ऊर्ध्वलोकातियक्कलोके असखेयगुणा खोलीके असख्यगुणा अघोलीकतियक्कलोके असख्यगुणा अघोलीके सखेयगुणा अघोलीके सखेयगुणा  
 अघोलीकतियक्कलोके असख्यगुणा पृथिवीकायिका ऊर्ध्वलोकातियक्कलोके असख्यगुणा अघोलीकतियक्कलोके असख्यगुणा अघोलीके सखेयगुणा अघोलीके सखेयगुणा

विसेसाहिया, तिरियलोए असखेज्जगुणा, तेलुक्के असखेज्जगुणा, उहुलोए असखेज्जगुणा, अहोलीए  
 विसेसाहिया । खेत्ताणवाएण सव्वत्थोवा पुढविकाइया अपज्जत्तया उहुलोयतिरियलोए अहोलीयतिरिय  
 लोए विसेसाहिया, तिरियलोए असखेज्जगुणा, तेलुक्के असखेज्जगुणा, उहुलोए असखेज्जगुणा, अहो  
 लोए विसेसाहिया । खेत्ताणवाएण सव्वत्थोवा पुढविकाइया पज्जत्तया उहुलोए तिरियलोए तिरियलोयअ  
 होलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असखेज्जगुणा, तेलुक्के असखेज्जगुणा, उहुलोए असखेज्जगुणा, अहो  
 लोए विसेसाहिया । खेत्ताणवाएण सव्वत्थोवा अप्पुत्ताणवाएण उहुलोयतिरियलोए अहोलीयतिरियलोए वि  
 सेसाहिया तिरियलोए असखेज्जगुणा, तेलुक्के असखेज्जगुणा, उहुलोए असखेज्जगुणा, अहोलीए विसे  
 साहिया । खेत्ताणवाएण सव्वत्थोवा अप्पुत्ताणवाएण उहुलोयतिरियलोए अहोलीयतिरियलोए वि

असस्येयगुणा ऊर्द्धलोकं असस्येयगुणा अघोलोकं विशेषाचिका पर्याप्तमा सर्वस्वोमा पृथिवीकायिका अपर्याप्ता ऊर्द्धलोकतियंक्लोके अ  
 घोलोकतियंक्लोके विशेषाचिका तियंक्लोके असस्येयगुणा त्रैलोक्य असस्येयगुणा ऊर्द्धलोकं असस्येयगुणा अघोलोकं विशेषाचिका । क्षेत्रानु  
 वातेन सर्वस्वोमा पृथिवीकायिका पर्याप्ततया ऊर्द्धलोकं तियंक्लोके तियंक्लोकाधोलोक विशेषाचिका तियंक्लोके असस्येयगुणा त्रैलोक्ये अ  
 सस्येयगुणा ऊर्द्धलोकं असस्येयगुणा अघोलोकं विशेषाचिका । क्षेत्रानुवातेन सर्वस्वोमा अप्पुत्तायिका ऊर्द्धलोकतियंक्लोके अघोलोकतियंक्लो  
 के विशेषाचिका तियंक्लोके असस्येयगुणा त्रैलोक्य असस्येयगुणा अघोलोकं विशेषाचिका । क्षेत्रानुवातेन सर्वस्वोमा  
 अप्पुत्तायिका पर्याप्ततया ऊर्द्धलोकतियंक्लोके अघोलोकतियंक्लोके विशेषाचिका तियंक्लोके असस्येयगुणा त्रैलोक्ये असस्येयगुणा ऊर्द्धलोकं  
 असस्येयगुणा अघोलोक विशेषाचिका । क्षेत्रानुवातेन सर्वस्वोमा अप्पुत्तायिका पर्याप्ततया ऊर्द्धलोकतियंक्लोके विशेषाचिका अघोलोकतियंक्

सेसाहिया तिरियलोएँ असखेजगुणा, तेलोकेँ असखेजगुणा, उहलोएँ असखेजगुणा, अहोलोएँ विसे  
साहिया । खे त्ताणवाएण सव्वत्थोवा अउकाइया पज्जत्तया उहलोयतिरियलोएँ अहोलोयतिरियलोएँ वि  
सेसाहिया, तिरियलोएँ असखेजगुणा, तेलुक्क असखेजगुणा, उहलोएँ असखेजगुणा, अहोलोएँ विसे  
साहिया । खे त्ताणवाएण सव्वत्थोवा तेउकाइया उहलोयतिरियलोएँ अहोलोयतिरियलोएँ विसेसाहिया,  
तिरियलोएँ असखेजगुणा, तेलुक्क असखेजगुणा, उहलोएँ असखेजगुणा, अहोलोएँ विसेसाहिया । खे त्ताण  
वाएण सव्वत्थोवा तेउकाइया अपज्जत्तया उहलोयतिरियलोएँ अहोलोयतिरियलोएँ विसेसाहिया, तिरि  
यलोएँ असखेजगुणा, तेलुक्क असखेजगुणा, उहलोएँ असखेजगुणा, अहोलोएँ विसेसाहिया । खे त्ता  
णवाएण सव्वत्थोवा तेउकाइया पज्जत्तया उहलोयतिरियलोएँ अहोलोयतिरियलोएँ विसेसाहिया, तिरि

लोकेँ विशेषाधिकः । तियक्लोकेँ असखेयगुणा खेलोकेँ असखेयगुणा अघोलोकेँ विशेषाधिकः । सेवानुवातेन सर्वस्वो  
मास्तेज कायिका ऊर्ध्वलोकतियक्लोकेँ अघाकोकतियक्लोकेँ विशेषाधिकः । तियक्लोकेँ असखेयगुणा त्रैलोक्ये असखेयगुणा ऊर्ध्वलोकेँ अस  
खेयगुणा अघोलोकेँ विशेषाधिकः । सेवानुवातेन सर्वस्वोमा स्तेज कायिका अपर्याप्तया ऊर्ध्वलोकतियक्लोकेँ अघोलोकातियक्लोकेँ विशेषाधि  
का तियक्लोकेँ असखेयगुणा त्रैलोक्ये असखेयगुणा अघोलोकेँ विशेषाधिकः । सेवानुवातेन सर्वस्वोमास्तेज कायि  
काः पर्याप्तया ऊर्ध्वलोकतियक्लोकेँ अघोलोकातियक्लोकेँ विशेषाधिकः । तियक्लोकेँ असखेयगुणा त्रैलोक्ये असखेयगुणा ऊर्ध्वलोकेँ असखेय  
गुणा अघोलोकेँ विशेषाधिकः । सेवानुवातेन सर्वस्वोमा वायुकायिका ऊर्ध्वलोकतियक्लोकेँ अघोलोकातियक्लोकेँ विशेषाधिकः । तियक्लोकेँ  
असखेयगुणा खेलोकेँ असखेयगुणा ऊर्ध्वलोकेँ अघोलोकेँ विशेषाधिकः । सेवानुवातेन सर्वस्वोमा वायुकायिका अपर्याप्तया



विसेसाहिया, तिरियलोए असखेजगुणा, तेलुक्के असखेजगुणा, उहुलोए असखेजगुणा, अहोलीए  
 विसेसाहिया । खेत्ताणवाएण सब्ब्योवा पुढविकाइया अपजत्तया उहुलोयतिरियलोए अहोलीयतिरिय  
 लोए विसेसाहिया, तिरियलोए असखेजगुणा, तेलुक्के असखेजगुणा, उहुलोए असखेजगुणा, अहो  
 लोए विसेसाहिया । खेत्ताणवाएणं सब्ब्योवा पुढविकाइया पजत्तया उहुलोए तिरियलोए तिरियलोयअ  
 होलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असखेजगुणा, तेलुक्के असखेजगुणा, उहुलोए असखेजगुणा, अहो  
 लोए विसेसाहिया । खेत्ताणवाएण सब्ब्योवा अउकाइया उहुलोयतिरियलोए अहोलीयतिरियलोए वि  
 सेसाहिया तिरियलोए असखेजगुणा, तेलुक्के असखेजगुणा, उहुलोए असखेजगुणा, अहोलीए विसे  
 साहिया । खेत्ताणवाएण सब्ब्योवा अउकाइया अपजत्तया उहुलोयतिरियलोए अहोलीयतिरियलोए वि

असस्येयगुणा ऊद्धूलोक असस्येयगुणा अघोलोक विशेषाधिकार । सेवानुवातेन सर्वस्वोमा अपर्याप्ता ऊद्धूलोकतियक्लोक के अ  
 धोलोकतियक्लोक के विशेषाधिकार तियक्लोक के असस्येयगुणा त्रैलोक्य असस्येयगुणा ऊद्धूलोक के असस्येयगुणा अघोलोक के विशेषाधिकार । सेवानु  
 वातेन सर्वस्वोमा पृथिवीकायिका पर्याप्ततया ऊद्धूलोक के तियक्लोक काधोलोक तियक्लोक के असस्येयगुणा त्रैलोक्य अ  
 सस्येयगुणा ऊद्धूलोक के असस्येयगुणा अघोलोक विशेषाधिकार । सेवानुवातेन सर्वस्वोमा अपर्याप्ता ऊद्धूलोकतियक्लोक के विशेषाधिकार  
 तियक्लोक के असस्येयगुणा त्रैलोक्य असस्येयगुणा अघोलोक के असस्येयगुणा अघोलोकतियक्लोक के असस्येयगुणा  
 अपर्याप्ततया ऊद्धूलोकतियक्लोक के अघोलोकतियक्लोक विशेषाधिकार । सेवानुवातेन सर्वस्वोमा अपर्याप्ता ऊद्धूलोकतियक्लोक के असस्येयगुणा  
 अघोलोक के विशेषाधिकार । सेवानुवातेन सर्वस्वोमा अपर्याप्ता ऊद्धूलोकतियक्लोक के असस्येयगुणा अघोलोक के असस्येयगुणा अघोलोकतियक्लोक के असस्येयगुणा



यलोए असखे जगुणा, तेलुक्के असखे जगुणा, उहलोए असखे जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खे त्ता  
 णवाएण सवत्थोवा वाउकाइया उहलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया । तिरियलोए अ  
 सखे जगुणा, तेलुक्के असखिजगुणा उहलोए असखे जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खे त्ताणवाएण  
 सवत्थोवा वाउकाइया अपजत्तया उहलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया । तिरियलोए  
 असखे जगुणा, तेलुक्के असखे जगुणा, उहलोए असखिजगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खे त्ताणवाएण  
 सवत्थोवा वाउकाइया पजत्तया उहलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया । तिरियलोए  
 असखे जगुणा, तेलुक्के असखे जगुणा, उहलोए असखे जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खे त्ताणवाएण  
 सवत्थोवा वणस्सइकाइया उहलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया । तेलुक्के असखे जगुणा

ऊर्ध्वलोकतियक्लोके अधोलोकतियक्लोके विशेषाधिका, तियक्लोक असख्ययगुणा ऊर्ध्वलोके असख्ययगुणा अधोलोके  
 विशेषाधिका । जेतानुवातेन सबत्तामा वायुकायिका पर्याप्तया ऊर्ध्वलोकतियक्लोके अधोलोकतियक्लोके विशेषाधिका तियक्लोके असख्ये  
 यगुणा ऊर्ध्वलोके असख्ययगुणा ऊर्ध्वलोके असख्ययगुणा अधोलोक विशेषाधिका । जेतानुवातेन सर्वस्तोमा वनस्पतिकायिका ऊर्ध्वलोकतियक्लो  
 के अधोलोकतियक्लोके विशेषाधिका ऊर्ध्वलोके असख्ययगुणा ऊर्ध्वलोके असख्ययगुणा अधोलोक विशेषाधिका । जेतानुवातेन सर्वस्तोमा वनस्प  
 तिकायिका अपर्याप्तया ऊर्ध्वलोकतियक्लोके अधोलोकतियक्लोके विशेषाधिका तियक्लोके असख्ययगुणा ऊर्ध्वलोके असख्ये यगुणा ऊर्ध्वलोके  
 असख्ये यगुणा अधोलोक विशेषाधिका । जेतानुवातेन सर्वस्तोमा वनस्पतिकायिका पर्याप्तया ऊर्ध्वलोकतियक्लोके अधोलोकतियक्लोके विशेष  
 पायिका तियक्लोके असख्ये यगुणा ऊर्ध्वलोके असख्ये यगुणा अधोलोक विशेषाधिका । जेतानुवातेन सर्वस्तोमा वनस्प

उहलोए असखेजगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा वणस्सडकाडया अपज्जत्तया  
उहलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विनसाहिया, तिरियलोए असखिजगुणा, तेलुक्के असखिजगु  
णा, उहलोए असखेजगुणा, अहोलाए विसेसाहिया । खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा वणस्सडकाडया पज्ज  
त्तया उहलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विनसाहिया, तिरियलोए असखेजगुणा, तेलुक्के असखे  
जगुणा, उहलोए असखिजगुणा, अहोलाए विनसाहिया । खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा तस्सकाडया तेलुक्के  
उहलोयतिरियलोए असखिजगुणा, अहोलायतिरियलोए सखेजगुणा, उहलोए सखेजगुणा, अहोलाए  
सखेजगुणा, तिरियलोए असखिजगुणा । खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा तस्सकाडया अपज्जत्तया तेलुक्के उह  
लोयतिरियलोए असखेजगुणा, उहलोए सखिजगुणा, अहोलाए सखिजगुणा, तिरियलोए असखेज  
गुणा । खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा तस्सकाडया पज्जत्तया तेलुक्के उहलोयतिरियलोए असखिजगुणा, अहो  
लोयतिरियलोए सखेजगुणा, उहलोए सखिजगुणा, अहोलाए सखिजगुणा, तिरियलोए असखेजगु

कारिमा त्रैलोक्य ऊह्लोकातिथकलोके असत्येयगुणा अधालाकतिथकलोके सत्येयगुणा ऊह्लोकाके सत्येयगुणा अधोलोक सहेयगुणास्तियक्लो  
के असत्येयगुणा । चत्तानुपातेन सव्वत्तामाखसकारिमा अपयाप्तया त्रैलोक्य ऊह्लोकाकतिथकलोके असत्येयगुणा ऊह्लोके सहेयगुणा अधोलोके  
सहेयगुणास्तियक्लोके असत्येयगुणा । चत्तानुपातेन सर्वस्तोमाखसकारिमा पर्याप्तमा त्रैलोक्य ऊह्लोकाकतिथकलोके असत्येयगुणा अधोलोकांतय  
गलाके सत्येयगुणा ऊह्लोकाके सत्येयगुणा स्तियगुणा । चत्तानुपातेन सर्वस्तोमाखसकारिमा पर्याप्तमा त्रैलोक्य ऊह्लोकाकतिथकलोके असत्येयगुणा अधोलोकांतय  
कारिमा त्रैलोक्य ऊह्लोकाकतिथकलोके असत्येयगुणा अधालाकतिथकलोके सत्येयगुणा ऊह्लोकाके सत्येयगुणा अधोलोक सहेयगुणास्तियक्लो

यलोए असखे जगुणा, तेलुक्के असखे जगुणा, उहुलोए असखे जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेतो  
 णवाएणं सव्योवा वाउकाइया उहुलोयतिरियलोए विसेसाहिया । तिरियलोए अ  
 सखे जगुणा, तेलुक्के असखे जगुणा उहुलोए असखे जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणवाएण  
 सव्योवा वाउकाइया अपजत्तया उहुलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया । तिरियलोए  
 असखे जगुणा, तेलुक्के असखे जगुणा, उहुलोए असखे जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणवाएण  
 सव्योवा वाउकाइया पजत्तया उहुलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया । तिरियलोए  
 असखे जगुणा, तेलुक्के असखे जगुणा, उहुलोए असखे जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणवाएण  
 सव्योवा वणस्सइकाइया उहुलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया । तेलुक्के असखे जगुणा

ऊर्ध्वलोकतियक्कलोके अधोलोकातियक्कलोके विशेषाधिकार । तियक्कलोके असखेयगुणा ऊर्ध्वलोके असखेयगुणा अधोलोके  
 विशेषाधिका । क्षेत्रानुवातेन सर्वस्वमा वायकायिका पर्याप्तया ऊर्ध्वलोकतियक्कलोके अधोलोकतियक्कलोके विशेषाधिका तियक्कलोके असखेय  
 यगुणा ह्यलोके असखेयगुणा ऊर्ध्वलोके असखेयगुणा अधोलोक विशेषाधिका । क्षेत्रानुवातेन सर्वस्वमा वनस्पतिकार्यक्लो  
 के अधोलोकतियक्कलोके विशेषाधिका ह्यलोके असखेयगुणा ऊर्ध्वलोके असखेयगुणा अधोलोक विशेषाधिका । क्षेत्रानुवातेन सर्वस्वमा वनस्प  
 तिकार्यिका पर्याप्तया ऊर्ध्वलोकतियक्कलोके अधोलोकतियक्कलोके विशेषाधिका तियक्कलोके असखेयगुणा ह्यलोके  
 असखेयगुणा अधोलोक विशेषाधिका । क्षेत्रानुवातेन सर्वस्वमा वनस्पतिकार्यिको पर्याप्तया ऊर्ध्वलोकतियक्कलोके अधोलोकतियक्कलोके विशेष  
 पाधिका तियक्कलोके असखेयगुणा अधोलोक असखेयगुणा ऊर्ध्वलोक विशेषाधिका । क्षेत्रानुवातेन सर्वस्वमा वनस्प

उहलोए असखेजगुणा, अहोलीए विसेसाहिया । खेत्ताणवाएण सव्योवा वणस्सडकाडया अपज्जत्तया  
उहलोयतिरियलोए अहोलीयतिरियलोए विमंसाहिया, तिरियलोए असखिजगुणा, तेलुक्के असखिजगु  
णा, उहलोए असखेजगुणा, अहोलीए विमंसाहिया । खेत्ताणवाएण सव्योवा वणस्सडकाडया पज्ज  
त्तया उहलोयतिरियलोए अहोलीयतिरियलोए विमंसाहिया, तिरियलोए असखेजगुणा, तेलुक्के असखे  
जगुणा, उहलोए असखिजगुणा, अहोलीए विमंसाहिया । खेत्ताणवाएण सव्योवा तस्सकाडया तेलुक्के  
उहलोयतिरियलोए असखिजगुणा, अहोलीयतिरियलोए सखेजगुणा, उहलोए सखेजगुणा, अहोलीए  
सखेजगुणा, तिरियलोए असखिजगुणा । खेत्ताणवाएण सव्योवा तस्सकाडया अपज्जत्तया तेलुक्के उह  
लोयतिरियलोए असखेजगुणा, उहलोए सखिजगुणा, अहोलीए सखिजगुणा, तिरियलोए असखेजगु  
णा । खेत्ताणवाएण सव्योवा तस्सकाडया पज्जत्तया तेलुक्के उहलोयतिरियलोए असखिजगुणा, अहो  
लीयतिरियलोए सखेजगुणा, उहलोए सखिजगुणा, अहोलीए सखिजगुणा, तिरियलोए असखेजगु

कार्यका त्रैलोक्य ऊर्ध्वलोकानिपुणलोक असख्येयगुणा अधालाकतियक्लोक सख्येयगुणा ऊर्ध्वलोक सख्येयगुणा अधोलोक सख्येयगुणास्तियक्लोक  
के असख्येयगुणा । ज्ञानानुपातेन सर्वस्वामाखसकायिका अपयपतया त्रैलोक्य ऊर्ध्वलोकतियक्लोक असख्येयगुणा ऊर्ध्वलोक सख्येयगुणा अधोलोक  
सख्येयगुणास्तियक्लोक असख्येयगुणा । ज्ञानानुपातेन सर्वस्वामाखसकायिका पर्याप्तका खलोक ऊर्ध्वलोकतियक्लोक असख्येयगुणा अधोलोकतिय  
क्लोक सख्येयगुणा ऊर्ध्वलोक सख्येयगुणा अधालोक सख्येयगुणा । दारम् २४ । एतेषा जदत्त । जीवानामायुक्कमवत्य  
कायस्वसानामपर्याप्ताना पर्याप्ताना सुसाना जायता समवहत्तानामसमवहनाना सावावेदकानामसावावेदकानामिन्द्रियापयुक्ताना नो इन्द्रियो

णा । दार २४ । एएसिण नते । जावाण अण्डस्स कम्मस्स वधगाण अण्डधगाण अपज्जत्ताण पज्जत्ताण सुत्ताण जागराण समोहयाण असमोहयाण सातावेदगाण इदियउवउत्ताणं णोडदियउव उत्ताण सागारोवउत्ताण अणगागारोवउत्ताणय कयरे कयरोहितो अप्पावा वज्जावा तुत्तावा विसेसाहिया वा ? गोयमा । सव्वत्थोवा जीवा अण्डस्स कम्मस्स वधगा अपज्जत्तया सखिज्जगुणा, सुत्ता सखिज्जगुणा, समोहया सखिज्जगुणा, सातावेदगा सखिज्जगुणा, इदियउवउत्ता सखिज्जगुणा, अणगागारोवउत्ता सखिज्जगुणा, सागारोवउत्ता सखिज्जगुणा, नोडदियउवउत्ता त्रिनंसाहिया, असातावेदगा विसंसाहिया, असमोहिया विसंसाहिया, जागरा विसंसाहिया, पज्जत्ता विसंसाहिया, अण्डस्स कम्मस्स अण्डधगा विसंसाहिया, दार २५ । खेत्ताणवाएण सव्वत्थोवा पोगला तेलुक्की उहलोयतिरियलोए अणतगुणा अहो

पयुक्ताना साकारोपयुक्तानामनाकारोपयुक्ताना कत्तरे २ अत्थावा बहुला वा तुल्या वा विशेषाहिता वा ? । गीतम् । सर्वस्त्वोमा जीवा आयुप क मंथो बन्धका अपयोपका सख्येयगुणा सुत्ता सख्येयगुणा जायत सख्येयगुणाः समवर्ता सख्येयगुणा सातावेदका सख्येयगुणा इन्द्रियोपयु क्ता सख्येयगुणा अनाकारोपयुक्ता साकारोपयुक्ता सख्येयगुणा नो इन्द्रियोपयुक्ता सख्येयगुणा विशेषाहिता । असातवेदकाः विशेषाहिता असमोहिता विशेषाहिता जायतो विशेषाहिता जायतु कर्मण अवयवका विशेषाहिता । दारम् २५ ॥ दोत्रानुवातेन सर्वस्त्वोमा पुद्गला खलोक्ये कद्धलाकर्तियक्लोके अनन्तगुणा अधालोकितियक्लोके विशेषाहिता, तिर्यक्लोक असख्यगुणा अधो लोके विशेषाहिता । दिशानुवातेन सर्वस्त्वोमा पुद्गला कद्धदिशायामधोदिशायां विशेषाघका उत्तरपुवंस्या दक्षिण पश्चिमाथ च द्वयोरेपि तुल्या असख्येयगुणाः । दक्षिण पूयस्यामुत्तरपश्चिमाया च द्वयोरेपि तुल्या विशेषाहिता पूवस्या मसख्यगुणा पश्चिमाया विशेषाहिता दक्षिणेन

लोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असखेज्जगुणा उहुलोए असखेज्जगुणा अहोलोए विसेसाहिया  
 दिसाणवाएण सव्वत्योवा पोगला उहुदिसाए अहोदिसाए विसेसाहिया उत्तरपुरिच्छिमेण दाहिणपच्छि  
 मेणय दोवि तुल्ला असखेज्जगुणा। दाहिणपुरिच्छिमेण उत्तरपच्छिमेणय दोवि तुल्ला विसेसाहिया पुरिच्छि  
 मेण असखेज्जगुणा पच्छिच्छिमेण विसेसाहिया दाहिणेण विसेसाहिया उत्तरेण विसेसाहिया खेत्ताणवाएण  
 सव्वत्योवा दव्वाड तेलुक्कं उहुलोयतिरियलोए अणतगुणाइ अहोलोयतिरियलोए विसेसाहियाइ उहुलोए  
 अससंज्ज० अहोलोए अणतगुणाइ तिरियलोए सखिज्जगुणाड दिसाणवाएणं सव्वत्योवा दव्वाइ अहदि  
 साए उहुदिसाए अणतगुणाइ उत्तरपुरिच्छिमेण दाहिणपच्छिच्छिमेण दोवि तुल्लाइ असखेज्जगुणाड दाहिण  
 पुरिच्छिमेण उत्तरपच्छिच्छिमेणय दोवि तुल्लाइ विसेसाहियाइ पुरिच्छिमेण असखेज्जगुणाड पच्छिच्छिमेण वि  
 सेसाहियाइ दाहिणेण विसेसाहियाइ उत्तरेण विसेसाहियाइ। एएसिणं ज्ञते। परमाणुपोगलाण सखेज्जप

विशेषाहिता उत्तरेण विशेषाहिता। ज्ञेवानुवातेन सर्वस्त्वोमानि द्रव्याणि त्रैलोक्ये ऊर्द्धलोकतियक्लोकं अनन्तगुणानि अधोलोकतियक्लोकं विशे  
 पाहितानि ऊर्द्धलोकं असह्येयगुणानि अधोलोकं अनन्तगुणानि तियक्लोकं असह्येयगुणानि दिशानुवातेन सर्वस्त्वोमानि द्रव्यानि अथोदिश्याया  
 मूर्द्धदिश्यायामनन्तगुणानि उत्तरपूर्वस्या दक्षिण पश्चिमाया द्वयोरपि तुल्यान्यसह्येयगुणानि दक्षिण पूर्वस्यामृत्तपरपश्चिमाया द्वयोरपि तुल्यानि वि  
 शेषाहृतानि। एतया जटन्त। परमाणु पुद्गलानां सह्येयमादेशिकानामसह्येयमादेशिकानां च रक्त्यानां द्रव्यायतया प्रदेशा  
 यतया द्रव्यायप्रदेशायतया कतरे०?। गौतम। सर्वस्त्वोमा अनन्तप्रदेशिका रक्त्या द्रव्यायतया परमाणु पुद्गला द्रव्यायतया अनन्तगुणा सह्ये  
 यप्रदेशिका रक्त्या द्रव्यायतया सह्येयगुणा असह्येयगुणा प्रदेशायतया सर्वस्त्वोमा अनन्तप्रदेशिका रक्त्या



देसियाण अस्खिज्जपदेसियाणं अणंतपदेदियाणय खधाण दव्वठयाए पएसठयाए दव्वठ पदेसठयाए  
 कयरे २ हितो अप्पावा ४ गो ० । सव्वल्योवा अणंतपदेसिया खधा दव्वठयाए परमाणुपोगला दव्वठयाए अ-  
 णतगुणा सखेज्जपदेसिया खधा दव्वठयाए सखेज्जगुणा असखेज्जपदेसिया खधा दव्वठयाए असखेज्जगुणा  
 पदेसठयाए सव्वल्योवा अणंतपदेसिया खधा पदेसठयाए परमाणुपोगला अणतगुणा सखेज्जपदेसिया  
 खधा पदेसठयाए सखेज्जगुणा असखेज्जपदेसिया खधा पदेसठयाए असखेज्जगुणा दव्वठपदेसठयाए सव्व-  
 ल्योवा अणतपदेसिया खधा दव्वठयाए अणतगुणा परमाणुपोगला दव्वठपदेसठयाए  
 अणतगुणा सखिज्जपदेसिया खधा दव्वठयाए सखिज्जगुणा तेचेवय पदेसठयाए सखिज्जगुणा असखिज्ज-  
 पदेसिया खधा दव्वठयाए असखिज्जगुणा तेचेव पदेसठयाए असखेज्जगुणा । एएसिण जंत ! एगपदेसो  
 गाढाण सखेज्जपदेसोगाढाण असखिज्जपदेसोगाढाणय पांगलाण दव्वठयाए पदेसठयाए दव्वठपदेसठयाए

त्या प्रदेशार्थतया परमाणुपुद्गला अनन्तगुणा असंख्येयप्रदेशिका रक्त्या प्रदेशार्थतया अस-  
 न्येयगुणा द्रव्यार्थप्रदेशायतया सर्वस्वोभा अनन्तप्रदेशिका रक्त्या द्रव्यार्थतया ते चैव प्रदेशार्थतया अनन्तगुणा परमाणुपुद्गला द्रव्यार्थप्रदेशार्थ-  
 तया अनन्तगुणा असंख्येयप्रदेशिका रक्त्या द्रव्यार्थतया सख्येयगुणा तत्रैव च प्रदेशायतया असंख्येयगुणा असंख्येयप्रदेशिका. रक्त्या द्रव्यार्थतया अ-  
 संख्येयगुणा तत्रैव प्रदेशायतया असंख्येयगुणा । एतथा जदन्त । एकप्रदेशावगाढाना सख्येयप्रदेशावगाढानामसंख्येय प्रदेशावगाढाना च पुद्ग-  
 लाना द्रव्यार्थतया प्रदेशायतया द्रव्यप्रदेशार्थतया च कतरे ० ? । गीतम । सर्वस्वोभा एकप्रदेशावगाढा पुद्गला असंख्येयप्रदेशावगा-  
 ढा पुद्गला द्रव्यार्थतया असंख्येयगुणा प्रदेशार्थतया सर्वस्वोभा एकप्रदेशावगाढा पुद्गला-

कयरे २ हितो अप्यावाः ? गोयमा । सवृत्योवा एगपदेसोवगाढा पोगला दवृठयाए सखेज्जपएसोवगाढा पोगला दवृठयाए सखिज्जगुणा असखिज्जगुणा पोगला दवृठयाए असखिज्जगुणा पदेसठयाए सवृत्योवा एगपदेसोवगाढा पोगला पदेसठयाए सखिज्जगुणा अप्पसखेज्जपदेसोवगाढा पोगला पदेसठयाए असखेज्जगुणा दवृठपदेसठयाए एगपदेसोवगाढा पोगला दवृठपदेसठयाए सखेज्जगुणा पोगला पदेसठयाए सखेज्जगुणा तंचेव पएसठयाए सखेज्जगुणा असखिज्जपएसोवगाढो पोगला दवृठयाए असखेज्जगुणा तंचेव पएसठयाए असखिज्जगुणा । एएसिण जते । एगसमयठितीयाण सखिज्जसमयठितीयाण असखिज्जसमयठितीयाणय पोगलाण दवृठयाए-पदेसठयाए दवृठपदेसठयाए कयरे २ हितो अप्यावाः ? गोयमा । सवृत्योवा एगसमयठिइया पोगला दवृठयाए सखेज्जसमयठितीया पोगला दवृठयाए सखेज्जगुणा असखिज्जसमयठिइया पोगला दवृठयाए

प्रदेशायतया सखेयप्रदेशावगाढा पुद्गला प्रदेशायतया असखेयगुणा असखेयगुणा द्रव्यप्रदेशायतया सवस्तोमा एकप्रदेशावगाढा पुद्गला द्रव्याणप्रदेशायतया सखेयप्रदेशावगाढा पुद्गला द्रव्यद्वयप्रदेशावगाढा पुद्गला द्रव्यायतया सखेयगुणा ते चैव प्रदेशायतया असखेयगुणा असखेयगुणास्ते चैव प्रदेशायतया असखेयगुणा । एतेषा प्रदत्त । एकसमयस्थितिकाना सखेयसमयस्थितिकाना पुद्गलाना द्रव्यायतया प्रदेशायतया द्रव्यायप्रदेशायतया कतरे ० ? गोयमा । सर्वस्तोमा एकसमयस्थितिका पुद्गला द्रव्यायतया सखेय समयस्थितिका पुद्गला द्रव्यायतया सखेयगुणा असखेयसमयस्थितिका पुद्गला द्रव्यायतया असखेयगुणा प्रदेशायतया सवस्तोमा एकसमयस्थितिका पुद्गला प्रदेशायतया सखेयसमयस्थितिका

अस्खिज्जगुणा पदेसठयाए सव्वत्थोवा एगसमयठिईया पोगला पदेसठयाए सखेज्जसमयठिईया पोगला  
 पपसठयाए सखिज्जगुणा अस्खिज्जसमयठिईया पोगला पदेसठयाए अस्खिज्जगुणा दव्वठयपदेसठयाए  
 सव्वत्थोवा एगसमयठिईया पुगला दव्वठपएसठयाए सखेज्जसमयठिईया पोगला दव्वठयाए सखेज्जगुणा  
 तेचं पदेसठयाए सखेज्जगुणा अस्खिज्जसमयठिईया पोगला दव्वठयाए अस्खिज्जगुणा तेचं पदेस  
 ठयाए अस्खिज्जगुणा । एएसिण नत्ते ! एगगुणकालगाण सखिज्जगुणकालगाण अस्खेज्जगुणकालगाण  
 अणत्तगुणकालगाण पोगलाणं दव्वठयाए पदेसठयाए दव्वठपदेसठयाए कयरे कयरेहिता अप्पावा ४  
 ? गोयमा ! जहा परमाणुपोगला तहा नाणियव्वा, एव सखेज्जगुणकालयाणवि, एव सेसाणवि वसुरस  
 गथा नाणियव्वा, फासाण कस्सकमउयगस्यलज्जाणं जहा एगपदेसोगाढाण नाणिय तहा नाणियव्व अत्र  
 सेसा फासा जहा वसा नाणिया तहां नाणियव्वा दार २६ ॥

का पुद्गला प्रदेशार्थतया सस्येयगुणा असस्येयसमयस्थितिका पुद्गला प्रदेशार्थतया असस्येयगुणा द्व्यार्थप्रदेशार्थतया सर्वस्वोभा एकसमयस्थि  
 तिका पुद्गला द्व्यार्थप्रदेशार्थतया सस्येयसमयस्थितिका पुद्गला द्व्यार्थतया सस्येयगुणा तस्य प्रदेशार्थतया सस्येयगुणा असस्येयसमयस्थि  
 तिका पुद्गला द्व्यार्थतया असस्येयगुणास्तएव प्रदेशार्थतया असस्येयगुणा । एतेषां प्रदत्त । एकगुणकालकाना सस्येयगुणकालकानामसह्ये  
 यगुणकालकानामनन्तगुणकालकाना च पुद्गलाना द्व्यार्थतया प्रदेशार्थतया द्व्यार्थं प्रदशायतया कतरे ० ? । गीतम् । यथा परमाणु पुद्गला  
 स्तथा नाणितव्या यव सस्येयगुणकालका अपि, एव दोषा अपि वर्णरसगत्या भणितव्या । यव स्पर्शाना ककशा मृदुकगुरुकलघुकाणा यथैकप्रदेशा  
 वगाढाना भणित तथा भणितव्या अवशिष्टा, स्पर्शाः । यथा वर्णां भणितता स्तथा भणितव्या द्वारम् । २६ ॥

अह जते ! सर्वजीवप्यज्ञ महादण्य वत्तइस्सामि सव्वत्थोवा गप्पवक्कातियमणस्सा मणस्सीत्तं सखेज्जगुणान्ने  
 वादरत्तेउकाइयापज्जत्तया अस्सखिज्जगुणा अणुत्तरोववाइया देवा अस्सखेज्जगुणा उवस्सिमगेवेज्जगा देवा  
 सखेज्जगुणा मज्जिमगेवेज्जगा देवा सखेज्जगुणा हेठिमगेवेज्जगा देवा सखेज्जगुणा अणुएकप्ये देवा सखे  
 ज्जगुणा आरणे कप्ये देवा सखेज्जगुणा पाणए कप्ये देवा सखेज्जगुणा आणएकप्ये देवा सखिज्जगुणा अहे  
 सत्तमाए पुढवीए णेरइया अस्सखेज्जगुणा ठ्ठीए तमाए पुढवीए णेरइया असं सहस्सारे कप्ये देवा अ  
 सखिज्जगुणा महासुक्के कप्ये देवा अस्सखिज्जगुणा पचमाए धूमप्पन्नाए पुढवीए णेरइया असं लतए कप्ये  
 देवा अस्सखेज्जगुणा, चउत्थीए पकप्पन्नाए पुढवीए णेरइया अस्सखेज्जगुणा बत्तलीए कप्ये देवा अस्सखेज्ज  
 गुणा तच्चाए वालुयप्पन्नाए पुढवीए णेरइया अस्सखेज्जगुणा माहिदे देवा अस्सखिज्जगुणा सणकुमारि कप्ये

अथ प्रदत्त । सर्वजीवात्प बहुत्व महादण्यक वर्तयिष्यामि सर्वस्तोमा गर्जच्छ्रुक्कान्तिकमनुष्या मानुष्य सख्यातगुणा द्वादरतेज कारिका पर्याप्ततया  
 असस्येयगुणा अनुत्तरोपपातिनो देवा असस्येयगुणा उपरितनग्रीवयका देवा सस्येयगुणा मय्यमग्रीवयका देवा सस्येयगुणा अयस्तनग्रीवयका देवा  
 सस्येयगुणा अच्युते कल्पे देवा सस्येयगुणा आरस्ये कल्पे देवा सस्येयगुणा पानये कल्पे देवा सस्येयगुणा आनते कल्पे देवा, सस्येयगुणा  
 अथ सप्तमाया पृथिव्या नैरयिका असस्येयगुणा यष्टमाया पृथिव्या नैरयिका असं सहस्वारं कल्पे देवा असस्येयगुणा, महाशुक्लं कल्पे देवा अ  
 सस्येयगुणा पञ्चमाया धूमप्रजाया पृथिव्या नैरयिका असस्येयगुणा लात्तके कल्पे देवा असस्येयगुणा चतुर्थ्या पङ्कप्रभाया पृथिव्या नैरयिका  
 असस्येयगुणा ब्रह्मलोकं कल्पे देवा असस्येयगुणा तृतीयस्या वालुकप्रजाया पृथिव्या नैरयिका असस्येयगुणा माहेन्द्रे देवा असस्येयगुणा, सन  
 रकुमारि कल्पे देवा असस्येयगुणा द्वितीयस्या शकंरप्रभाया पृथिव्या नैरयिका असस्येयगुणा असस्येयगुणा ईशानं कल्पे देवा

देवा असखेज्जगुणा दोच्चाए सक्करप्पन्नाए पुढवीए णेरइया अस० संमुच्चिममणस्सा असखेज्ज० ईसाणे कप्पं देवा अस० ईसाणं कप्पे देवीनु सखे०, सोहम्मं कप्पे देवा सखेज्ज० सोहम्मं कप्पे देवीनु सखेज्जगुणात्तु नवणवासीदेवा असखेज्जगुणा नवणवासिणीनु देवीनु सखिज्जगुणात्तु । इणीसे रयणप्पन्नाए पुढवीए णेरइया अमसखिज्जगुणा खहचरपचिदियतिरिस्कजोणिगया पुरिसा असखेज्जगुणा खहचरपचिदियतिरिस्कजोणिणीनु सखिज्जगुणात्तु थलयरपचिदियतिरिस्कजोणिगया पुरिसा असखेज्जगुणा थलयरपचिदियतिरिस्कजोणिणीनु सखिज्जगुणात्तु जलयरपचिदियतिरिस्कजोणिगया पुरिसा सखेज्जगुणा जलयरपचिदियतिरिस्कजोणिणीनु सखिज्जगुणात्तु वाणमतरा देवा सखेज्जगुणा वाणमतरीनु देवीनु सखेज्ज० जोइसिया देवा सखेज्जगुणा जोइसिणीनु देवीनु सखिज्जगुणात्तु खहयरपचिदियतिरिस्कजोणिगया नपुसया सखिज्ज० थलयरपचिदियतिरिस्कजोणिगया नपुसया सखेज्ज० चउ

अस० इच्छाने कल्पं दध्य सख्येयगुणा सौधर्मे कल्पं देवा . सख्येयगुणा सौधर्मे कल्पं देव्य सख्येयगुणा नवनवासि देवा असख्येयगुणा नवनवासि देव्य सख्येयगुणा । यतस्सा रत्नप्रज्ञाया पण्यका नैरायिका असख्येयगुणा सचरपञ्चेन्द्रिय तिर्यक्योनिक्का . पुरुषा असख्येयगुणा सचरपञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिक्का ( स्थिय ) सख्ये० स्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिक्का पुरुषा असख्येयगुणा स्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिक्का . ( स्थिय ) सख्ये० जलचरपञ्चेन्द्रियात्यग्योनिक्का पुरुषा सख्येयगुणा जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिक्का ( स्थिय ) सख्ये० वाणमतरादेवासख्येयगुणा वाणमतरादेव्य सख्येयगुणा व्यीतिपिका देवा सख्ये० व्यीतिपिका देव्य सख्ये० सचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिक्का नपुसका सख्ये० सचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिक्का नपुसका सख्ये० चतुरिन्द्रिया पर्याप्ततया सख्येयगुणा पञ्चेन्द्रिया पर्याप्ततया

रिदिया पञ्चतया सखेज्ज० पदिया पञ्चतयात्रिसेसाहिया वेडदिया पञ्चतया त्रिसेसा । पचिदिया अपञ्च  
तया असखिज्जगुणा चउरिदिया अपञ्चतया त्रिसेसाहिया वेडदिया अपञ्चतया त्रिसेसाहिया वेडदिया  
अपञ्चतया त्रिसेसाहिया पत्तेयसरीरवादरवणस्सइकाइया पञ्चतया असखेज्जगुणा वादरनिगोदा पञ्च  
तया असखेज्जगुणा वादरपुढासिकाइया अपञ्चतया असखेज्जगुणा वादरअउकाइया पञ्चतया असखिज्ज  
गुणा वादरवाउकाइया पञ्चतया असखिज्जगुणा वादरतेंउकाइया अपञ्चतया असखेज्जगुणा पत्तेयसरी  
रवादरवणस्सइकाइया अपञ्चतया असखिज्जगुणा वादरनिगोदा अपञ्चतया सखिज्जगुणा वादरपुढावि  
काइया अपञ्चतया असखेज्जगुणा वादरअउकाइया अपञ्चतया असखिज्जगुणा वादरताउकाइया अप  
ञ्चतया असखेज्जगुणा सुज्जमंतेंउकाइया अपञ्चतया असखेज्जगुणा सुज्जमपुढाविकाइया अपञ्चतया त्रिसे

[illegible]

साहिया सुज्जमव्याउकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया सुज्जत्तया अपज्जत्तया विसेसाहिया सुज्जम  
 तेउकाइया पज्जत्तया असखिज्ज० सुज्जमपुठविकाइया पज्जत्तया विसेसाहिया सुज्जमव्याउकाइया पज्जत्त  
 गा विसेसाहिया सुज्जमवाउकाइया पज्जत्तया विसेसाहिया सुज्जमणिगोदा अपज्जत्ता असखे० सुज्जमणि  
 गोदा पज्जत्तया सखिज्जगुणा अन्नवसिद्धिया अणंतगुणा पफ़िवत्तिय सम्मदिठ्ठी अणंतगुणा सिद्धा अणंत  
 गुणा वादर वणस्सइकाइया पज्जत्तया अणंतगुणा विसेसाहिया वादरवणस्सइकाइया अप  
 ज्जत्तया असखिज्जगुणा वादरपज्जत्तया विसेसाहिया वादरा विसेसाहिया सुज्जमवणस्सइकाइया अपज्ज  
 तया असखेज्जगुणा सुज्जमा अपज्जत्तया विसेसाहिया सुज्जमवणस्सइकाइया पज्जत्तया संखेज्ज० सुज्जम  
 पज्जत्तया विसेसाहिया सुज्जमा विसेसाहिया न्नवसिद्धिया विसेसाहिया निगोदा जीवा विसेसाहिया वण  
 स्सइजीवा विसेसाहिया एगिदिया विसेसाहिया तिरस्कजोणिया विसेसाहिया मिच्छदिठ्ठी विसेसाहिया  
 अविरया विसेसाहिया लउमत्या विसेसाहिया सजोगी विसेसाहिया ससारत्या विसेसाहिया सव्वजीवा वि  
 सेसाहिया ॥ पखवणाए न्नगवईए वज्जवत्तव्यपद सम्मत्तं ॥ ३ ॥

निगोदा पर्याप्तगा सखे० अन्नवसिद्धिका. अन्नत्तगुणा प्रतिपतितसमदृष्टिका अन्नत्त० सिद्धा अन्न० वादरवणस्पतिकायिका पर्याप्तगा अन्न० वाद  
 रपर्याप्ता विशेषाहिता वादरा विशेषाहिताः सूक्ष्मवणस्पतिकायिका अपर्याप्ता अस० सूक्ष्मा अपर्याप्ता विज्ञो० सूक्ष्मवणस्पतिकायिका. पर्याप्ता  
 सखे० सूक्ष्मपर्याप्ता विशेषाहिता सूक्ष्मा विशेषा० न्नवसिद्धिका विशेषाहिता निगोदा जीवा विज्ञा० वणस्पति जीवा विज्ञो० एकेन्द्रिया विज्ञो० ति  
 यन्व्याप्तिका विज्ञो० मिथ्यादृष्टयो विज्ञोपा० अविरतयो विज्ञा० लउमत्या विशेषा० सयोगयो विज्ञो० ससारत्या विज्ञो० सर्व जीवा विज्ञोपाहिताः ॥  
 मञ्चापनाया भगवत्या श्रीमदुपाध्याय रामचन्द्रगोबिन्दे ज्ञाय अपि नानकचन्द्र विरचितो बहुवक्तव्यपदानुवादो ऽफ़ाणीत् ॥





द्विनिर्जगन्मिषः सयमाध्यति यथागमः सम्यक् प्रवृत्तिः मातन्वते प्रवृत्तानां च समयप्रकरणं वशात् उपजायते सकलकर्मक्षया निश्रेयसावाप्तिरिति उक्तं  
 घ-सम्यग्भाषपरिज्ञानाद्विरक्ताप्रवृत्तौ जनाः । क्रियासक्तास्तद्विघ्नेन गच्छन्ति परमागतिमिति ॥ १ ॥ अन्विधेय जीवा जीवस्वरूपं तच्च प्राक्प्रदर्शितना  
 मव्युत्पत्तिसाम्यं मात्रा दत्तगतः सम्यग्यो द्विधा उपायोपेयनाजलक्षणो गुरुपर्वकमलक्षणश्च तत्राद्यः साकानुसारिणः प्रति तद्विधा-वचनरूपाय तत्र प्रक  
 रणमुपायः स्तत्परिज्ञानं चोपेयः, गुरुपर्वकमलक्षणः केवलश्रद्धानुसारिणः प्रति तद्विधेयं स्वयमेव सूत्रं दक्षिणास्यति इदञ्च प्रज्ञापनास्य मुपाङ्गं सम्यग्  
 ज्ञानहेतुत्वात् दत्तएव परस्परया मृत्तिपदप्रापकत्वात् श्रेयोभूतं मतो मानू दत्र विघ्न इति विघ्नविनायकोपगन्ताय शिष्याणां मङ्गलबुद्धिपरिग्रहाय  
 स्वतो मङ्गलभूतस्याप्यस्यादिमध्यावसानेषु मङ्गलमन्त्रिधातव्यं सादिमङ्गलं ह्यविघ्नेन शास्त्रपारमनार्थं मध्यमङ्गलं भवगृहीतज्ञास्त्रस्थिराकरणाथ  
 मन्तमङ्गलं शिष्यप्रशिक्षणपरम्परया ज्ञानस्याऽव्यवच्छेदनाय मुक्तत्वं-तमगलमाहं मङ्गलं पञ्जतमयसत्यस्य । पदमसत्यस्याविगच्छं पारमगणायनिहि  
 तं ॥ १ ॥ तस्मैवपथिज्ज्ञात्यं मङ्गलमयमतिमपितस्मैव अत्योच्छिन्निमिषं मिस्सपसिस्साहवससः ॥ २ ॥ तत्र प्रथमपदगतं ॥ यवगयजरमरणत्रये त्यादि

प्रणाम्यश्रीमहाबौद्धं नतानेपमुरेवगम् प्रज्ञापनाख्यसूत्रस्य वक्ष्यलोकभाषया ॥ १ ॥ सतिसूरिबृहद्वेका द्योत्पद्यामनाहारा स्तथास्वपरिगणयानां वि  
 नोटाद्यैर्कराम्यहम् ॥ २ ॥ सद्गुरुबहिद्वन्द्वत्वा विनयाहिमलाभिधम् स्वरस्याकबोधाय स्तवकानिब्यतेमया ॥ ३ ॥ अरिहता १ असरीर २ आचार्य ३ उपा  
 ध्याय ४ मुनि ५ ण्डना आदि अक्षरा पाषा ओंकार नीपजे तिके पञ्चहीने नमस्कारकरौजीकैः सास्वतापदं विक्रान्ते । णमोअरिहताण । अरिहताभणो  
 नमस्कारं हृद्यो माहरो खेत्तव १२ गुणं सहितरक्षा गुणं विवमहित । णमोमिहाण । मिहाभणो नमस्कारं हृद्यो गुणं ८ रक्तवर्णं मुखे नपे विधसहित ।  
 णमाआगरियाण । नमस्कारं हृद्यो आचार्याभणो सौवर्णवर्णं ३६ गुणं गलामादि ध्यानकरं विधिसहित । णमोउवचक्षायाण । नमस्कारं हृद्यो उपाध्यायाभणो  
 नौलवर्णं दिशामादि ध्यानकरं चिन्तारो २५ गुणसहित । णमोलीएसवसाहण । नमस्कारं हृद्यो सर्वगुणसहित साधुकैः जिकामणो स्थामवर्णं २७ गुणस

ना ॥ दिमगल मिष्टेयतास्तवस्य परममङ्गलत्वात्, उपयोगपदगतेन कहविहेणजते । उवायोगे पत्रते ॥ इत्यादिना मध्यमङ्गल मुपयोगस्य स्वरूपत्वात् ज्ञानस्य कमद्यप्रति प्रधानकारणतया मङ्गलत्वात् नच कमत्यप्रति प्रधानकारणता तस्य नप्रसिद्धा तस्या साक्षादगमे ज्ञियाना स्रयाचाग म अग्रत्राणीकस्य मयइवदुपाहिवासकोटीहि ॥ तनाणीतिहिगुतो खवेइकसासभिनेण ॥ १ ॥ तथासमुद्घातपदगतेन केअलिसमुद्घातपरिसमास्य लरभालज्जाविना सिद्धाधिकारप्रतिबद्धेन निच्छिन्नसमुद्घात जाइजरामरणयथविमुक्ता सासयनिद्वावाह चिठतिसुहीसुपत्ता ॥ १ ॥ इत्यादिना उत्तरानमङ्गल मधुना दिमङ्गलसूत्र व्याख्यायते ॥ ववगयइत्यादि ॥ सित वद्ध मष्टप्रकार कर्मधन ध्यात दग्ध जाउवत्यमानशुक्रध्यानानलेन येस्ते निरुक्तविधिना सिद्धा, अथवा, पिपूयती सेधतिसम अणुनरावृत्त्या निर्वृत्तिपुरी मगच्छन्, यदिया, पिपसरद्धी सिच्यन्ति स्म निष्टितार्थो जवन्ति स्म यद्वा, पिपूयच्छे माङ्गल्येव सेधतेस्म शासितारो उत्तवन् मङ्गल्यरूपता यानुजवन्तिस्मेति सिद्धा, अथवा, सिद्धा नित्याअपयंवसानस्थिति कत्वात् प्रख्यातावाजक्यै रूपलश्रुणसन्दोहत्वात् उक्तच - ध्यातसितयेनपुराणकस्य योवागतोनिर्वृत्तिसौधमूढि स्यातोऽनुशास्तापरिनिष्टितार्थो य सोऽस्तुसिद्ध कृतमङ्गलोमे ॥ १ ॥ सिद्धाथ नामादिजेदतो नेकधा ततो ययोक्तसिद्धप्रतिपत्त्यर्थं विशेषण माह-व्यपगतजरामरणजनयान्, जरावयोहा निलक्षणा मरणप्राणत्यागरूप भयमिह लोकादिजेदा त्सप्तप्रकार मुक्तञ्च-इहपरलोकादाण मकन्हाआजीवमरणभसिलोय ॥ इति विशेषतोऽपुन ज्ञांधत्यागरूपतया अपगतानि ज्ञापानि जरामरणजनयानि येच्यस्ते तथा तान् त्रिविधेन मनसा वाचा कथेन अनेन योगत्रयव्यापारविकल द्रव्यवन्दन भित्याह अजिवन्द्य अजिमुख वन्दित्वा प्रणम्येत्यर्थं, अनेन समानकर्तृकतया पूर्वकाले क्ताप्रत्ययविधानात् नित्यानिर्त्यैकान्तपक्षव्यवच्छेद

ववगयजरमरणज्ञाण सिद्धेअजिवदिऊगतिविहेण । वंदामिजिणवविदं तंलोक्तागुरुमहावीर ॥ १ ॥

चारिवगुण रक्षाहे जिके तानशगे विधमहित पाचपन्ने नमू, दिवे ववगजरमरणभए सिद्धेअभिवादिऊगतिविहेण । वदामिजिणवविदं तिनानाकगुरु मनाजोर ॥ १ ॥ चरन तोयंतर ग्रामन पत्तमान तेहभणो नमस्कारकरोजेइ व्यपगत जयगयाइ जरामरण ण कर्मरूपवेरी ते आठकर्मरुपावी सिद्ध

माह एकान्तनित्यानित्यपक्षे क्लृप्तप्रत्ययस्या सम्भवात् तथा ह्य प्रच्युतानुत्यक्तस्थिरैरक्षस्त्राव नित्य तस्य कथ त्रिज्जकालक्रियाद्वयकृतृत्वोपपत्ति  
राकाल मेकस्त्रज्ञावत्वे ने कस्याएव कस्याश्चित् क्रियाया सदाज्ञावप्रसङ्गात् अनित्य मपि प्रकृत्यैकलक्षणस्थितिधर्मक तत स्तस्यापि त्रिज्जकालक्रिया  
द्वयकृतृत्वयोगो वस्थानाभावा दित्यल विस्तरेण न्यत्र सूचयितत्वात्, क्लृप्तप्रत्ययस्यो त्तरक्रिया सापेक्षत्वा दुत्तरा क्रिया माह-वदामिजिज्ञावरि  
दमित्यादि ॥ सूत्रवीरविक्रान्तो वीर्यतिस कपायादिशब्दून् प्रति विक्रामतिस्मेति वीर महाश्यासी वीरश्च महावीर इदञ्च महावीर इतिनाम  
कृतं किंतु यथावस्थित मनन्यसाधारण परीयहोपसर्गोदिविषय वीरत्वमपेक्ष्य सुरासुरकृत मुक्तञ्च - अयलेत्रयजेरवाण खतिसमेपरीस  
देवेहि कए महावीरे इति, अनेना पायापगमातिशयो ध्वन्यते तदयत्रत मित्याह जिनवरेन्द्र जयन्ति रागादिशब्दू नञिजवन्ति  
भूतविंशा स्तथाया श्रुतजिना श्रवधिजिना मन पर्यायजिना केवलजिना स्तत्र केवलजिनत्वप्रतिपत्तये वरग्रहण जिनाना वरा उ  
वद्भाविनावस्वप्नावावजासिकैवलज्ञानकलितत्वात्, जिनवरा स्तेचा तीर्थकरा अपि सत सामान्यमेवलिनो भवन्ति तत स्तीर्थङ्कुरत्वप्र  
मेन्द्रग्रहण जिनवराणा मिन्द्रो जिनवरेन्द्र प्रकटपुण्यरूपरूपतीर्थकरनामकर्मोदया तीर्थकर इत्यर्थे, अनेन ज्ञानातिशय पूजातिशय  
शयमन्तरेण जिनेषु मध्ये उत्तमत्वस्य पूजातिशयमन्तरेण जिनवराणांमपि मध्ये इन्द्रत्वस्या योगात् तपुन किञ्चूत मित्याह-त्रैलो  
ति यथावस्थित प्रवचनार्थमिति गुरु त्रैलोक्यस्य गुरु त्रैलोक्यगुरु स्तथाच प्रगवान् अधोलोकिनिवासिजवनपतिदेवेभ्य स्तिर्यग्लो  
सिध्यन्तरनरपशुविद्याधरज्योतिर्केन्य ऊर्ध्वलोकिनिवासिदेवैर्मानिकदेवेभ्यश्च धर्म दिदेश त अनेन वागतिशय माह एतेचा पायापगमातिशयादय  
परोप्यतिशया देहसीगन्ध्यादीना मतिशयाना मुपलक्षण तानन्तरेणै तेषामसम्भवा तत द्युत्थिज्ञ दतिशयोपेत जगवन्त महावीर वन्दे इत्युक्त

इति तद्भाषा साहसा धर्मे वाढौने मन वचन कायायेकरो सिद्धाने वादूकु सामान्यकेवलीमाहि प्रधान इन्द्रसमान ते जिनेद्र श्रिरित केइवोळे वीर

द्रष्टव्य माह ननुऽप्यजादीन् व्युदस्य किमर्थं जगवतो महावीरस्य वदनं ? उच्यते वर्तमानतीर्थोधिपतित्वेना सन्नोपकारित्य दर्शयति ॥ सुयय  
 गेत्सादि ॥ अत्र प्रज्ञापनेति विशेष्य, ज्ञेय सामानाधिकरण्येन वैयधिकरण्येनच विशेषण ॥ जिनवरणाति ॥ जिना सामान्यकेवलिन स्तेषामपि वर  
 उत्तम स्तीर्यकृत्वात् जिनवरस्तेन सामर्थ्यान् महावीरेणा न्यस्य वर्तमानतीर्थोधिपतित्वाभावात्, इह वृद्धास्यक्षीणमोहजिनापेक्षया सामान्यकेवलि  
 नोपि जिनवरा उच्यते ततः स्तत्कल्पमाज्ञासी द्विनेयजन इति तीर्थकृत्प्रतिपत्तये विशेषणान्तर माह जगवता जग समग्रैश्वर्यादिरूप उक्तच-ऐश्व  
 र्यस्यसमग्रस्य रूपस्यपगस्य श्रिय ॥ चमस्यायं प्रयत्नस्य यथाज्ञा इतीहना ॥ १ ॥ जगो स्यास्तीति जगवान्, अतिशयने वतुप्रत्ययो ऽतिशयायीच जगो  
 वर्तमानस्यामिन ज्ञेयप्रमाणिणापेक्षया त्रैलोक्याधिपतित्वात् तेन भगवता परमार्हस्यमहिमोपेतेने त्वर्थं, पुन कथञ्जतेने त्याह-ज्यजननिर्वृत्तिकरे  
 ण भव्य सत्थाविधानादिपरिणामिकत्वावात् सिद्धिगमनयोग्य सचासी जनश्च ज्यजन, निर्वृत्तिनिर्वाण स्रुलकर्ममलापगमनेन स्वस्वरूपलाभत  
 परमस्वास्थ्य तदेतु, सम्यक्दर्शनाद्यपि कारणैकार्योपचारा त्रिवृति सात्करणीलो निर्वृत्तिकर भव्यजनस्य निर्वृत्तिकरो ज्यजननिर्वृत्तिकर स्तेन  
 आह ज्यग्रहण मनव्यव्यवच्छेदार्थं मन्यथा तस्य नैरर्थक्यप्रसङ्गात् तत इदं मापतित प्रव्यानमेव सम्यग्दर्शनादिक करोति नाप्रव्याना नयेत दुप  
 पन्न जगवतो वीतरागत्वेन पक्षपातासम्भावात् नैतत्सार सम्यग्वस्तुतत्त्वापरिज्ञानात्, जगवान् हि सचितव प्रकाश मविज्ञोपेण प्रवचनार्थं भातनोति  
 केवल मन्त्रव्याना तथास्वाप्नाद्या देव तामससङ्कुलानामिव सूर्यप्रकाशो नप्रवचनार्थं उपदिश्यमानोपि उपकाराय प्रभवति तथाचाह यादिमुख्य -  
 सदुर्मयीजवपनानयकौशलस्य यज्ञोक्त्यान्वयवतवापिखिलान्यनूयन् ॥ तन्नाहुतसङ्कुलेपुहितमसेषु सूर्याश्वोमभुकरौचरणावदाता ॥ १ ॥ ततो ज्यव्या

### सुययणनिहाणजिण वरेणन्नविथजणिण्हुइकरेण ।

वर्षमान तान भोक्तो गुरुकै ते महावीरस्वामी प्रति शासनाधोस प्रति ॥ १ ॥ सुययणतिहाण जिणवरणभविथजणिण्हुइकरेण । उवटसियाभगवया  
 पणुयणसुवभायाण ॥ २ ॥ सिंहातरन्न तेहनो निधान वरकै ते भगवत वीवीतरणि भविकजीवने मोज सुखनोदेणहार कक्षा भगयते अरिहते प्रज्ञा

नामेव जगद्रचना दुपकारी जायते इति जगज्जननिवृत्तिकरेणे त्युक्त किमित्याह ॥ उवदसियत्ति ॥ उपसामीप्येन यथाश्रोत्राणां भटिति यथावस्थित वस्तुतत्वायधोषो जयति तथा स्फुटवचने रित्यर्थं , दर्शिता श्रवणगोचरनीता उपदिष्टा इत्यर्थ , का सी प्रज्ञापना ? प्रज्ञाप्यन्ते जीवादयो ज्ञावा अतया गुणसङ्गत्या इतिप्रज्ञापना , किंविशिष्टे त्यत आह-श्रुतरत्ननिधानं ' इह रत्नानि द्विविधानि प्रयन्ति तद्यथा द्रव्यरत्नानि ज्ञावरत्नानि तत्र द्रव्यरत्नानि वैष्णवमरुतेन्द्रनीलादीनि ज्ञावरत्नानि श्रुतव्रतादीनि तत्र द्रव्यरत्नानि नतात्विकानीति ज्ञावरत्नैरिहाधिकारस्तत स्वसमास श्रुतान्यवरत्नानि श्रुतरत्नानि ननु श्रुतानिषरत्नानिच नापि श्रुतानि रत्नानीवेति कुत इतिचे ? दुव्यते प्रथमपदे श्रुतव्यतिरिक्तैर्द्रव्यरत्नैरिहाधिकाराज्ञावात् , द्वितीयपदे श्रुतानामेव तात्विकरत्नत्वात् शेषरत्नैरुपमाया अयोगा क्रियानमिव निधानं श्रुतरत्नाना निधानं श्रुतरत्ननिधानं कया प्रज्ञापने त्यत आह सर्वभावाना सर्वेष ते ज्ञावाद्य सर्वज्ञावा जीवाजीवाश्रवद्यस्यसवरनिर्जराभोक्षा , तथा ह्यस्या प्रज्ञापनाया पट्त्रिंश त्पदानि तत्र प्रज्ञापनाद्युक्तव्य विशेषषरमपरिणामसङ्गेपु पथसु पदेषु जीवाजीवाना प्रज्ञापना , प्रयोगपदे क्रियापदेवाश्रवस्य कायवाङ्मन कर्मयोग आश्रव इतियचनात् कर्मप्रकृतिपदे द्यन्यस्यप्ररूपणा , समुद्घातपदकेवलिसमुद्घातप्ररूपणाया सवरनिर्जराभोक्षाया शेषेषु स्यानादिषु पदेषु क्वचि तस्यचिदिति अथवा सर्वभावाना मिति द्रव्यक्षेत्रकालभावाना भेदव्यतिरेकेणा न्यस्य प्रज्ञापनीयस्या ज्ञावात् , तत्र प्रज्ञापनापदे जीवाजीवद्रव्याणा प्रज्ञापना , स्थानपदे जीवाधारस्य क्षेत्रस्य , स्थितिपदे नारकादिस्थितिरूपणात् कालस्य , शेषपदेषु सत्याज्ञानादिपर्यायव्युत्क्रातुच्छ्वासादीना भावाना मिति , अस्याश्च गाथाया अक्कपणमिणचित्तमित्यनया सङ्गजिसम्बन्ध केवलयेनेय सत्यानुग्रहाय श्रुतसागरादुद्गता असाव प्यासकतरोपकारित्या दस्मद्विधाना नमस्काराहं इति तन्नमस्कारविषय मिदमपान्तरालएवा न्यक्तृक गाथाद्वय-वायगवरवसाउ इत्यादि ॥ वाचका पूर्वविदो वाचकाश्च तेवराश्च वाचकवरा

उवदसियाजगवया पन्नवणाससुज्जावाणं ॥ २ ॥

पना जगवया सर्वभाज जीवा जीवादिपदार्थ ॥ २ ॥ वायगउरवसानो ते वीसइमेणधोरपुरिसेण । दुवरवरेणमुणिणा पुव्वमुयसमिडबुरोणं ॥ ३ ॥ यरच

याचक्रप्रधाना स्तोपा वशा प्रवाहो याचक्ररवण स्तोस्मिन् मूत्रेच पचमीनिर्दृश प्राकृतत्वात्, प्राकृतेहि सर्वासुविभक्तिषु सर्वांश्चपि विभक्तयो यथा योग प्रवर्तन्ते, तथाचाह पाणिनि स्वप्राकृतव्याकरणे-ध्यत्यथोप्यासाभिति, त्रयोविशतितमेन तथाच सुधमस्वामिनि आरभ्य जगवानार्यश्याम स्वयो विशतितमस्य, किञ्चतेन धीरपुरुषेण, धीरुद्वि स्तया राजत इतिधीर धीरथासौ पुरुषश्च धीरपुरुष स्तन, तथा दुर्द्वराणि प्राणातिपातादिनिवृत्ति तत्त्वानि पञ्चमहात्रतानि धारयतीति दुर्द्वरधर स्तन, तथा मन्यते जगत्स्त्रिकालावस्था मिति मुनि स्तेन विणिष्टसवित् समन्वितेनेत्यथ, पुन कथभूतेनेत्याह-पूर्वश्रुतसमुद्भुद्भिना, पूर्वोणिच तत्तश्रुतच पूर्वश्रुत तेन समुद्भा वृद्धिमुपागता वृद्धि यस्य स पूर्वश्रुतसमुद्भुद्भि स्तेन, आह यो वा चक्ररवज्ञान्तर्गत स पूर्वश्रुतसमुद्भुद्भिरेव भवति तत किमनन विज्ञोपणेन? सत्यमतत् किन्तु पूर्वविदोपि पटस्थानकपतिता प्रवर्तन्ति, तथाच व तुदगपूर्वविदामप्य धिकृत्य पटस्थानक वक्ष्यति तत आधिक्यप्रदर्शनार्थं निद विशपण मित्यदोप, समिद्धवृत्तीत्यत्र गाण्डव्यस्य इत्यत्र द्विश वदस्यव दीर्घता आपत्वात्, तथा श्रुतमनर्वाक्पारत्वा त्सुजापितरत्नयुक्तत्वाच्च सागरइव श्रुतसागर, व्याघ्रादिभि गौणि स्तदुगानुक्ताधितिसमा स, तस्मात् ॥ विएज्जति ॥ देशीयचनमेतत् साम्प्रतकालीनपुरुषयोग्य वीनयित्वाइत्यर्थं येनेद प्रज्ञापनारूप श्रुतरत्न मुहम प्रधान, प्राधान्यच न ज्ञेयश्रुतरत्नापेक्षया किन्तु स्वरूपतो, दत्त शिष्यगणाय तस्मै भगवते ज्ञानैश्वर्यधर्मादिवते, आरात् सर्वैश्वर्यधर्मभ्यो यात प्राप्तो गुणै रित्यार्य सचासौ श्यामश्च आपश्याम स्तस्मै, सूत्रचपट्टी चतुर्थ्यर्थे द्रष्टव्या ॥ छठिविभ्रत्तीसज्जइवतत्प्रीतिवचनात्, अधुनोक्तसर्वधेय गाय ॥ अज्जयणमित्यादि ॥

वायगवरवसाजं तेवीसइमेणधीरपुरिसेण । दुद्धरधरेणमुणिणा पुव्वसुयसमिद्धवृद्धीण ॥ ३ ॥ सुयसागराविणु  
ज्जण जेणसुययणमुत्तमदिस्स । सीसगणस्सज्जगवणु तस्सणमोच्चज्जसामस्स ॥ ४ ॥ अज्जयणमिणचित्त सुय

क प्रधान वशानक्रमे सुर्मास्वामो आरभ्य तेवोसमा धीर पुरुष स्वामाचार्य दुर्द्वर महात्रतना धरणहार मुनि तिण पूर्वरूप श्रुत तिणे साहचर्ये वृद्धिजि  
षातो ॥ ३ ॥ सुयपागराभिणेज्जण जसुगरणमुत्तमदिस्स । सीसगणस्सभगवधो तस्मन्मोच्चज्जसामस्स ॥ ४ ॥ श्रुत सागरमाहिथो वीणने काव्यो जिणेण

अध्ययनमिदं प्रज्ञापनास्य, ननु यदीयमध्ययनं क्रियित्यस्यादा वनुयोगादिद्वारीपन्यासो न क्रियते २ उच्यते नायनियमो यदवश्यं मध्ययनादा वृष क्रमाद्युपन्यासः क्रियत इति, अनियमोपि कुतोयसीयत इति चेत् १ उच्यते नग्यध्ययनादि षडक्षणात्, तथा चित्रार्थोपिकारयुक्तत्वाच्चित्रश्रुतमेव रत्नश्रुतरत्नदृष्टिवादस्य द्वादशास्याङ्गस्य नित्यन्दइव दृष्टिवादमित्यन्द् 'सूत्रेनपुसक्तानिर्देशा प्राकृतत्वात्, यथावर्णितं भगवता श्रीमन्महावीरवद्वंसा नस्वामिना इन्द्रजित्प्रभृतीनां मध्ययनार्थस्य वर्णितत्वात्, अध्ययनं वर्णितमित्युक्तं अहमपि तथा वर्णयिष्यामि ग्राह-क्यमस्य लट्स्यस्य तथा वर्णयितुं शक्तिः १ नैपदोप सामान्येना त्रिषेयपदार्थवर्णनमात्रं अधिकृत्यैव मभिधानात्, तथाच अष्टमपि तथा वर्णयिष्यामीति किमुक्तमवति तदनुसारेण वर्णं यिष्यामि नस्वमनीपिकयेति, अस्याच प्रज्ञापनाया पट्विशत्यदानि भवन्ति पदं प्रकरणं मर्थोपिकारइति पर्याया, स्तानिच पदान्यमूनि ॥ पदव गेत्यादि गाथाचतुष्टये ॥ तत्र प्रथममप्यदं प्रज्ञापनाविषयं प्रश्नमधिकृत्य प्रवृत्तत्वात् प्रज्ञापना १ १। एवं द्वितीयं स्थानानि १ २। तृतीयं वरुवक्तव्यं १ ३। चतुर्थं स्थितिः १ ४। पञ्चमं विज्ञोप १ ५। षष्ठं व्युत्क्रान्ति व्युत्क्रान्तिलक्षणाधिकारयुक्तत्वात् १ ६। सप्तमं मुच्छास १ ७। अष्टमं सज्जा १ ८।

रयणंदिष्टिवायणीसद ॥ जहवसिष्यन्नगत्रया अहमवितहवसडस्सामि ॥ ५ ॥ पसवणा १ ठाणाइ २, वज्जव  
त्तहं ३ ठिडं ४ विसेसाय ५। वक्कंती ६ उस्सास, ७ सखा ८ जोणीय ९ चरिमाइ १० ॥ १ ॥ जासा ११ सरीर १२

इवा श्रुतसागर मांदिष्टौ श्रुतरत्न उत्तमदीक्षा शिष्य समूहने भगवत त्रिष्य आर्यं व्यामाचार्यने नमस्कारं करुणू ॥ ४ ॥ अज्जगणमिणचित्तं सुवरगणं दिष्टिवायणीसद ॥ जहवसिष्यन्नगत्रया अहमवितहवसडस्सामि ॥ ५ ॥ अध्ययनं प्रज्ञापनानामे अनेकाधिकारं युक्तं श्रुतरत्नं दृष्टिवादं वारहं अगमो रहस्यं रसभूतं जिमं वर्णयो भगवन्ते दोतरागे चू निचै तेहने अनुसरि तिम वर्णयस्यु १ २ ॥ पणवणाठाणाई वडुवत्तवठिडं निसेसाय १ वक्कंती वक्काससणीजो योउचरमाई ॥ ६ ॥ जीवादि प्रज्ञापनापद १ तेहनों ठामनो वोजोपद २ अण्वदुल ३ कइणी, तेहनों स्थितिपद ४ तेहनों विधेयपद प्रकपणा ५ व्युत्क्रान्ति लक्षणाधिकारपद ६ उतवासपद ७ सज्जाहारपद ८ योनिपद ९ चरमउहेगौने प्रवर्त्तवो १० ॥ ६ ॥ भासासरीरपरिणा मकसाएइ दिग्गपमंगेय १ निसे

गीम । १३ । चतुर्दश कपाय । १४ । पञ्चदश मिन्द्रिय । १५ । षोडश प्रयोग । १६ । सप्तदश लेण्या । १७ । अष्टादश कायस्थिति । १८ । गकोनविंशतितम सम्यक्क्रम । १९ । विंशतितम सन्तक्रिया । २० । एकविंशतितम भवगाहनास्थान । २१ । द्वविंशतितम क्रिया । २२ । त्रयोविंशतितम कम । २३ । चतुर्विंशतितम कर्मणो द्यम्बक ' तस्मिन् हि ययाजीय कर्मणो द्यम्बको जवति तथा प्ररूप्यत इति तथानाम । २४ । मय पञ्चविंशतितम कर्मवेदक । २५ । षड्विंशतितम वेदस्य द्यम्बकइति वेदस्ते ऽनुजवतीति वेद स्तस्य द्यम्बग्व द्यम्बक ' किमुक्तम्भवति कति प्रकृती र्येदपमानस्य कतिप्रकृतीना द्यम्बो जवतीति तत्र निरूप्यते तत स्तेदस्य द्यम्ब इति नाम । २६ । एव का प्रकृति वेदयमान कतिप्रकृती र्वे दयत इत्ययंप्रतिपादक वेदयेदकनाम सप्तविंशतितम । २७ । अष्टाविंशतितम माहारप्रतिपादकत्वा दाहार । २८ । एव मेकोनत्रिंशत्तम मुंपयोग

परिणा, म १३ कसाय १४ इटिय १५ प्युगेय १६ । लेसा १७ कायठिइया १८, सम्मत्ते १९ अतकिरियाय २०  
॥ २ ॥ उगाहणसठाणा २१, किरिया २२ कर्मेय २३ कम्मस्स । वधए २४ कम्मवेयए २५, वेयस्सवधए २६  
वेमवेयए २७ ॥ ३ ॥ ज्याहारे २८ उवउगे २९, पासणया ३० सखि ३१ सजमे ३२ चेव । उही ३३ पविचारण ३४

कायडिइया सम्मत्तैअतकिरियाय ७ ॥ तेहनो भाषापद ११ शरीरकारणपद १२ परिणामपदाधिकार १३ कपायपद १४ इन्द्रियपद १५ प्रयोगद्वारपद  
१६ नेयापद १७ कायस्थितिपदद्वार १८ सम्यक्क्रानामपद १९ अतक्रियाधिकारपद २० ॥ ७ ॥ उगाहणसठाणे किरियाकम्पेइयावरेकम् । सवधएकम्मस्सवेयए  
वेयस्सवधए वेगवेयए ॥ ८ ॥ भवगाहनास्थानपद २१ क्रियापद २२ कर्मपद २३ कर्मरे जीवरे वधकिमयाय जीव कर्मने किमवाधे २४ कर्मनो वेदवो भोगवो  
२५ वेदव्यक्त कंतनीप्रकृतियाधे २६ वेदनो केतना वज्जकरे कर्मप्रकृतिकरे, वेदने वाधीने वेदकिम २७ ॥ ८ ॥ आहारिउवउगे फासणयासणिमजमेचेव । ओही  
पविचारणवेयणागतताममुवाए ॥ ९ ॥ आहारपद २८ उपयागपद २९ फरसवो जवो ३० सजायद ३१ सयमपद ३२ निचै अवधिज्ञानपद ३३ प्रविचारणापद ३४



॥ टीका ॥

॥ २६ ॥ त्रिशतम पासणयन्ति दर्शनता । ३० । एकत्रिशतम सञ्जा । ३१ । द्वित्रिशतम संयम । ३२ । त्रयस्त्रिशतम सवधि । ३३ । चतुस्त्रिशतम प्रविचारणा । ३४ । पञ्चत्रिशतम वेदना । ३५ । षट्त्रिशतम समुद्घात । ३६ । तदेव मुपन्यस्तानि पदानि ॥ साम्प्रत यथाक्रम पदगतानि सूत्राणि वक्तव्यानि तत्र प्रथमपदगत मिद मादिम सूत्र-संकेत पञ्चगणा इति ॥ अथास्य सूत्रस्य क प्रस्ताव ? उच्यते प्रश्नसूत्रमिदमेतच्चादा बुपन्यस्त मिदं ज्ञापयति पृच्छतो मथस्यबुद्धिमतो र्थिनो भगवदहं दुपदिष्टत्वप्ररूपणाकार्यो नञोपस्य तथा चोक्त-मध्यस्थोद्युद्भिमानर्थो श्रोतापात्रमितस्मृत । तत्र सेगञ्जो मागयदेशीप्रसिद्धनिपात स्तत्र शब्दार्थं अथवा अथशब्दार्थं सच वाक्योपन्यासायं , किमितिपरमश्रे , तन्ति तावदितिदृष्टव्य , तच्च क्रमो द्योतने , तत एष समुदायार्थं , तिष्ठन्तु स्थानादीनि पदानि प्रष्टव्यानि वाच क्रमवर्तित्वात् प्रज्ञापनानन्तरञ्च तेषा मुपन्यस्तत्वात् , तत्र तावदे तावत् पृच्छामि किमप्रज्ञापनेति ? अथवा प्राकृतशैल्या अन्निर्धेयवसिद्धयचनानि योजनीयानीति न्याया देवन्द्रष्टव्य । तत्र काताव तप्रज्ञापनेति ? एव सामान्येन केनचि त्पत्रे कृतेसति भगवान् गुरु शिष्यवचनानुरोधेना दरायं किञ्चि च्छिष्योक्त प्रत्युच्चायां - पञ्चवणादुविहा पञ्चहाइति ॥ अने नचागृहीतशिष्याभिधानेन निर्वचनसूत्रेणैतदावष्टेन सर्वमेवसूत्र गणधरप्रश्नतीर्थकरनिर्वचनरूप किन्तु किञ्चिदन्यथापि बाहुल्येनतु तथारूप यत उक्त-अतथप्रासङ्ग्यरहा सुतगयतिगणहरानिष्ठण मित्यादि ॥ तत्र प्रज्ञापनेति पूर्ववत् द्विविधा द्विप्रकारा प्रज्ञप्ता प्रस्तुप्ता यदा तीर्थकराएव निर्वक्तार स्तदा यमर्थो वसेयो अन्यैरपि तीर्थकरै र्यदा पुन रस्य कश्चि दाचार्यं स्तन्मतानुसारी तदा तीर्थकरगणधरै रिति , द्वैविध्यमेवो पदर्शयति तज्जहा जीवपञ्चगणाय अजीवपञ्चगणाय ॥ तद्यथेति वक्ष्यमाणज्जेदकथनप्रकाशनायं , जीवन्ति प्राणान् धारयन्तीति जीवा , प्राणाश्च द्विधा द्रव्यप्राणा वे, यणा ३५ यततोसमुष्माणु ३६ ॥ ४ ॥ से कित पसुवणा ? पसुवणा दुविहा पंसुता , तंजहा-जीवपसुव

वेत्तापट ३५ तिवारेपक्का समुद्घातपट ३६ । सक्तिपसुवणा २ दुविहापसुता तंजहा । ते कुण ते ३६ द्वारप्रज्ञापना उत्कट्ट जितायणा जाणपणाराभेट दोयप्र कारे कक्षा तेकिम । जीवपसुवणा यजीवपसुवणा । जीवरो जाणपणो ते जीवप्रज्ञापना, यलो अजीवो ते अजीवप्रज्ञापना । सेकित अ

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥



अरूप्यजीवप्रज्ञापना दशविधा दशप्रकारा प्रज्ञा अरूप्यजीवाना दशविधत्वात् तत्प्ररूपणादिदशविधीक्ता, तदेव दशविधत्व दर्शयति-तज्ज्ञेत्यादि ॥ तद्यथेति वक्ष्यमाणजैदक्यनोद्योतनार्थं, त इशविधत्व यदिवा तदि त्यव्यय मर्मातिङ्गवचनेषु, सा दशविधा अरूप्यजीवप्रज्ञापना यथाप्रवति तथादर्यते ॥ धम्मत्तिकायइति ॥ जीवाना पुद्गलानाञ्च स्वप्नावतएव गतिपरिणामपरिणताना तत्स्वभावधरणात् तत्स्वप्नावधोषणा द्वर्मे अस्त्येष्टेह प्रदेशा स्तेषा काय सङ्घात, गणकायनिकाये स्वधेवगतेर्ह्वरासीय इतिवचनात् ॥ अस्तिकाय प्रदेशसङ्घात इत्यर्थं, धर्मश्चासी अस्तिकायधर्मोस्तिकाय, अनेनच सकलमेव धर्मोस्तिकायरूप भवयविद्रव्यमाह, अवयवीनाम अवयवाना तथारूपसङ्घातपरिणामविशेषयव नपुन रययव द्रव्येभ्य पृथगर्थान्तरद्रव्य तथानुपलम्भात् तन्तव एवहि आतानवितानरूप सङ्घातपरिणामविशेषमापन्ना लोके पटव्यपदेशजा उपलभ्यन्ते न तदतिरिक्त पटाख्यनाम उक्तञ्चान्येऽपि-तन्त्वादियतिरेकेण नपटाद्युपलम्भन तन्त्वादयोविशिष्टाहि पटाद्रिख्यपदेशिन ॥ १ ॥ कृत प्रसङ्गेना न्यत्र चिन्तितत्वा देतद्वादस्य, तथाधर्मोस्तिकायस्य देशइति तस्यैव धर्मोस्तिकायस्य बुद्धिविकल्पितो ह्यादिप्रदेशात्मको विभाग ॥ धम्मत्तिकायस्सपदे सा इति ॥ धर्मोस्तिकायस्य प्रदेशा इति प्रकृष्टा देशा प्रदेशा निर्दिष्टागात्रागा इतिभाव, स्तेषा सङ्घेया लोकाकाशप्रमाणात्वा तेषां, अतएवव बुवचन, धर्मोस्तिकायप्रतिपत्तज्जुतो ऽधर्मोस्तिकाय किमुक्त भवति जीउद्गलाना स्थितिपरिणामपरिणताना तत्परिणामोपपत्तको मूर्त्तोऽसङ्घात प्रदेशसङ्घातात्मको ऽधर्मोस्तिकाय, अथधर्मोस्तिकायस्य देश इत्यादि पूर्ववत्, तथा आहिति मर्यादया स्वस्वजावाऽपरित्यागरूपया काज्ञाने स्व

**धम्मत्तिकोपा धम्मत्तिकायस्सपेसा, धम्मत्तिकोपा धम्मत्तिकायस्सपेसे धम्मत्तिकोपा**

क्तञ्च—कारणमेव नदत्य सूक्ष्मो नित्यधभवतिपरमाणु। एकरसगन्धवर्णो हिम्यर्णो कार्यनिगय ॥ १ ॥ सेकितअरूपिअजीवणवण्णा २ दमविहापणत्ता तज्ज्ञा। ते कुण यजौवप्रज्ञापेना अरूपेना दशमेद कक्षाद्धि, ते जिम शियने गरु कहैत्थे—धम्मत्तिकोपा धम्मत्तिकायस्सपेसा। ३। धर्मोस्तिकाय पुह लादिमध्ये गमनकारता साहाज्यदे ते धर्मोस्तिकाय, देशसमय सर्वदेयनो जेकोदे विभाग ते देशकहिदे, हिचे प्रदेश धर्मोस्तिकायनो प्रदेश निर्वाणभाग सूक्ष्म

रूपेण प्रतिज्ञामन्ते स्मिन् उपस्थिता पदार्था इत्याकाशः यदात्यन्निविधावाद् तदा ग्राहिति सर्वज्ञावाञ्जिव्यास्या काशते इत्याकाशः, अस्त  
य प्रदेशा स्तेषा कायो स्तिकाय, आकाशश्च तत् अस्तिकाया आकाशास्तिकाय, आकाशास्तिकायस्य इत्यादि पूर्वव नवर प्रदशा ग्रनन्ता द्रष्टव्या,  
अनोरुस्या नन्तत्वात् ॥ अद्वेति ॥ कालस्यास्या, अद्वाचासी समयश्च अद्वासमय, अथवा, अद्वाया समयो निर्विन्नागोन्नाग, अथञ्च एकएव यत्ते  
मान परमायत मन्ना तीतानागता समया स्तेषा यथाक्रम विनष्टानुत्यक्त्येना सत्त्वात् तत कायत्याज्ञावइतिदेशप्रदंशकल्पनाविरह, आयलि  
काटयत्तू पूरममयविरोधैर्नोतरसमयसद्भावइति, तत नमुदयसमित्याद्यसम्भवेन व्यवहारार्थमेव कल्पिता इति द्रष्टव्य, तथा मीया मित्य क्रमोपन्या  
से किप्रयाजन ० मुच्यते इह धर्मास्तिकाय इतिपद मङ्गलभूत मादौ धर्मशब्दान्वितत्वात्, पदार्थप्ररूपणाच सम्प्रतिप्रथमत उल्लिषा वत्तते ततो  
मङ्गलाय मादौ धर्मास्तिकायस्यो पाठान, धर्मास्तिकायप्रतिपन्नतद्वा धर्मास्तिकाय स्तदनन्तर धर्मास्तिकायस्य 'द्वयोरेपि चानयो राधारभूत  
मानाशनिमिति तदनन्तर मानाशास्तिकायस्य, तत पुन रजीवसाधर्म्या दद्वा समयस्य, अथवा, इह धर्माधर्मास्तिकायौ विभू नभवत स्तद्विभूत्ये  
तत्सामर्थ्यतो जीपुद्गलाना मस्सलितप्रचारप्रवृत्तौ लोकोलोकव्यवस्थानुपपत्ते, रस्तिच लोकोलोकव्यवस्था तत्र २ प्रदेशे सूत्रे साक्षाद्दर्शनात्, ततो  
यावत्तिनेत्र व्यगाढौ तावत्प्रमाणोलोक शेषस्त्वलाक इति सिद्ध मुक्तच-धर्माधर्मविभूत्यात् सर्वत्रचजीवपुद्गलविचारात् । नालोक कश्चिरस्या न्नच  
सम्मतमेतदायाम् ॥ १ ॥ तस्मादुर्माधर्मो व्यवगाढौव्याप्यलोकसर्व ॥ एवमिपरिच्छिन्न सिचतिलोकस्तदविभूत्यात् ॥ २ ॥ ततएव लोकोलोकव्यवस्था

## कायसपएसा आगासत्यिकाए आगासत्यिकायस्सदेसे आगासत्यिकायसप्यदेसा अष्टासमए१० सेतअरुवि

प्रदेग कर्त्तव्ये । अधर्मास्तिकाए अधर्मास्तिकायस्सदेसे अधर्मास्तिकायस्सपएसा ६ । धर्मास्तिकायनो प्रतिपन्नो ते अधर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकायनोदेग इम  
अ र्मास्तिकायनाप्रदेग असब्ब्यात साकाजागप्रमाण प्रदशकहिंये । आगासत्यिकाए आगासत्यिकायस्सदेसे आगासत्यिकायस्सपएसा ४ । आकाशास्ति  
काय स्वभावै शाभे ते इमहोज ते आकाशास्तिकायनादेग इमहोज आकाशास्तिकायनो प्रदेग । अष्टासमए १० । कालसमय १० ॥ सेत अरुविअजीव

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

हेतु धर्मधर्मोत्तिष्ठाया वित्पनयो रादावुपादान, नत्रापि माहूलिकत्वात् प्रथमतो धर्मोत्तिष्ठायात् ततो ऽधर्मोत्तिष्ठायात्, ततो लोकोक्त्यापित्वा दाकाशास्त्रिकापस्य, तदनन्तर लोके समयासमयेवैव्ययस्याकारित्वा दृष्टा समयस्य, एव मागमानसारेणा न्यदपि युक्त्यनुपाति यक्त्य मित्यल प्रमद्वेन, प्रकृतोपसहारमाह-मेतत्तत्तद्विज्जीवपन्नवणा ॥ सैषा अरूप्यजीवप्रज्ञापना' पुन राह विनेय-चेकितनित्यादि ॥ अथकामा रूप्यजीवप्रज्ञापना? मूरि राह-रूप्यजीवप्रज्ञापना चतुर्विधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-स्कन्धा' स्कन्दन्ति श्रुयन्ति धीयन्तेष पुण्यन्ते पुद्गलाना विचटनेन चटनेनवेति स्कन्धा' पुषीदरादय इतिरूपनिष्पत्ति, अत्रबहुवचन पुद्गलस्कन्धाना मानन्त्य ख्यापनायं च, न चा नन्त्यमनुपपन्न मागमे जिघाना, तथा च वक्ष्यन्ति-द्वैतीयपुण्यसात्त्विकादृष्ट्यादि ॥ स्कन्धदेशा स्कन्धानामेव स्कन्धत्वपरिणाममजहन्तो बुद्धिपरिकरिपता ह्यादि प्रदेशालम्बका विज्ञाणा, अत्रापि बहुवचन मनन्तप्रादेशिकेषु तथाविधेषु स्कन्धेषु प्रदेशानन्तत्वसम्भावनायं स्कन्धाना स्कन्धत्वपरिणामपरिणताना बुद्धिपरिकल्पिता प्रकृष्टादेशा निविज्ञाणाज्ञाणा परमाणु इत्यर्थ, स्कन्धप्रदेशा अत्रापि बहुवचन प्रदेशानन्तत्वसम्भावनायं, परमाणुपुद्गला इति परमाद्यते अणवश्च परमाणवो निर्विज्ञाणद्रव्यरूपा स्ते च ते पुद्गलाश्च परमाणुपुद्गला, स्कन्धत्वपरिणामरहिता केवला परमाणव इत्यर्थ, तेस

अजीवपस्यत्रणा ॥ सेकित रुविज्जीवपस्यत्रणा रुविज्जीवपस्यत्रणा चउविहा पस्यता तजहा-खधा खंधदे  
मा खधप्यएसा परमाणुपोगला ४ । तेसमाननु पचविहा पस्यता, तजहा-यस्यपरिणया गधपरिणया रस

पस्यत्रणा । ते जिम अरूपो अजीव प्रजापना जाणवो । सेकित त रूजीवजीवपस्यत्रणा चउविहा पस्यता तजहा । ते मिथकहे कुण रूपी जिम अजीवप्रज्ञा पना चटि गुनकहे, अजीव प्रजापनारा चारभेट कद्या ते जिम कहकु । खधा खधदेया खधप्यसा परमाणुपुगला ४ । खध ते समस्तयसु, देय ते को इणज विभाग, पदेय ते कहिये निविभाग सख्ख ते पदेय, परमाणु ते निविभागरूप अनन्तप्रदेशे निष्पन्न ते परमाणुपुद्गल कहिये । ते समामओ पचविहा पस्यता तजहा । ते परमाणुपुद्गल पाचेप्रकारेकज्जा ते पचप्रकार जिम कहकु-यस्यपरिणया गधपरिणया रसपरिणया फासपरिणया सठाणपरिणया ५ ।

मामर्शइत्यादि ॥ तेरुन्यादयो यथासम्भव समासत सङ्ख्येण पञ्चविधा प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-वर्णपरिणता वर्णत परिणता यथाभाज इत्यर्थ , एव गन्धपरिणता , रसपरिणता , स्पर्शपरिणता , स्थानपरिणता , परिणता इति अतीतकालनिर्देशो वर्तमानागतकालोपलक्षण , वर्तमानागतत्वमन्तरेणा तीतत्वस्या सम्भवात् , तथार्था-यावत्तमानत्व मसिक्कान्त सोतीतो भवति' यत्तमानत्व च्च सो नुजयति योनागतत्व मतिक्रान्तवानुक्तञ्च-अग्रतिसनामातीतो य प्राप्तीनामवर्तमानत्व ॥ एष्यथनामसन्नवति य प्राप्स्यतिवर्तमानत्वम् ॥ १ ॥ ततो वर्णपरिणता इति वर्णरूपतया परिणता परिणमन्तीति परिणमिष्यन्तीति द्रष्टव्य , मेव गन्धरसपरिणता इत्याद्यपि परिज्ञावनीय ॥ जेवस्वपरिणता इत्यादि ॥ येवर्णपरिणता स्ते पञ्चविधा प्रज्ञप्ता , स्तद्यथा-रूपवर्णपरिणता कज्जलादिवत् , नीलवर्णपरिणता नीत्यादिवत् , लोहितवर्णपरिणता हिङ्गुलकादिवत् , हरिद्रव्यपरिणता हरिद्रादिवत् , शुक्रवर्णपरिणता-शङ्खुदिवत् , योग्यपरिणता स्ते द्विविधा प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-सुरजिगन्धपरिणताश्च दुरजिगन्धपरिणताश्च चञ्चली परिणामभजन प्रति विज्ञेयानावस्यापनार्थो तथाहि-यथाकथंचिदवस्थिता सामग्रीवशत सुरजिगन्धपरिणाम भजन्ते तथा कथञ्चिदवस्थि

परिणया फासपरिणया सठाणपरिणया । जेवस्वपरिणया ते समासते पचविहा पसुता , तजहा-कालवस्वपरिणया नीलवस्वपरिणया लोहियवस्वपरिणया सुक्खिवस्वपरिणया । जे गधपरिणया

वर्णपरिणया वर्णपरिणाम भाज इत्यर्थ , स्तथास्कन्दतिशुष्यति १ गन्धपरिणत २ रसपरिणत ३ स्पर्शपरिणत ४ स्थानपरिणत ५ । जेवस्वपरिणया ते पचविहा पसुता तजहा । द्विवे जे वर्णपरिणतके तिके पाचप्रकारना कक्षा ते जिम कहैकै-कालवस्वपरिणया नीलवस्वपरिणया लोहियवस्वपरिणया ह्यनिद्रवस्वपरिणया मक्खिवस्वपरिणया ५ । कृष्णार्णपरिणत ते काजनोपरे स्थामवर्ण परिणयो, नीलवर्ण परिणत जगलनीपरे, रक्तवर्णपरिणत हिङ्गलूनीपरे, पौतवर्ण परिणत नलड नीपरे, स्वेवर्ण परिणत शख नीपरे । जेगधपरिणया ते दुग्धिहा पसुता तजहा । जिके गधपरिणत ते दुग्धा दोवभेटकक्षा ते कहैकै-सुभिगधपरिणया दृढिभगधपरिणया । सुगन्ध परिणत जोखुडनीपरे, दुर्गन्धपरिणत समुननीपरे । जेरसपरिणया ते पचविहा पसुता तज

ता अत्र मामग्रीप्रज्ञतो दुरन्निगन्धपरिणाम मपीति, दुरन्निगन्धपरिणता अथ ययाश्रीखण्डादयः, दुरन्निगन्धपरिणता लशुनादिवत्, येरसपरिणता स्त पञ्चविधा प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-तित्तरसपरिणता कोशातक्यादिवत्, कटुकरसपरिणता शुण्ठ्यादिवत्, कपायरसपरिणता अपक्वकपित्यादिवत्, आन्तरसपरिणता आसवेतसादिवत्, मधुररसपरिणता शकरादिवत् ॥ ये स्पशपरिणता स्ते अष्टविधा प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-कर्कशस्पशपरिणता पायाणादिवत्, मृदुस्पशपरिणता हसस्तादिवत्, गुरुकस्पशपरिणता वज्रादिवत्, लघुकस्पशपरिणता अकंतलादिवत्, शीतस्पशपरिणता मृणालादिवत्, उष्णस्पशपरिणता वद्यादिवत्, स्निग्धस्पशपरिणता घृतगदिवत्, रूक्षस्पशपरिणता जस्मादिवत् ॥ ये सस्यानपरिणता,

ते दुविहा पशुता, तजहा-सुस्निग्धपरिणया दुस्निग्धपरिणया ते पचविहा पशुता तजहा तित्तरसपरिणया कटुयरसपरिणया कसायरसपरिणया अविहरसपरिणया मज्जरसपरिणया । जेफासपरिणया ते अष्टविहा पशुता, तजहा-रूक्षफासपरिणया मउयफासपरिणया गरुयफासपरिणया लज्जयफासपरिणया सीयफासपरिणया उसिणफासपरिणया गिद्धफासपरिणया लुक्फासपरिणया । जेसठाणपरि

हा । जे रस परिणतछे तेदना पाच प्रकारकक्षा तेनीज कहैछे-तित्तरसपरिणया कटुयरसपरिणया कसायरसपरिणया अविहरसपरिणया मज्जरसपरिणया । तोवरस परिणतछे कोमातकोपरे कुसिजण ज्यु कोसात ते कुलिजन, कटुकरस परिणत सूठनीपरे, कसायरस परिणत काची कोख नोपरे, अविहरस परिणत आवलवेतनीपरे, मधुररस साकरनीपरे । जेफासपरिणया तेअष्टविहा पशुता तजहा । जिके फारमयको परिणम्याछे तेदना न भेटतछा ते जिम कहैछे-रूक्षफास प० मउयफास प० गरुयफास प० लज्जयफास परिणया । कर्कश स्पशं पायाणनौपरे, मृदु कोमल स्पशं हस नोपरे, गुरुयग परिणत वज्रनौपरे, गिम लघुस्पशं परिणत अकंतलनौपरे । सीयफास प० उसिणफास प० लुक्फास प० लुक्फास परिणया । गीत स्पश परिण । मृणाननौपरे, उष्णस्पशं परिणत अग्निनौपरे, स्निग्ध सचिकणस्पशं परिणत छानानौपरे, रूक्षस्पशं परिणत भक्षनौपरे । जे सठाण प

स्ते पञ्चविधा मङ्गला स्तथा-परिमङ्गलसंस्थानपरिणता यत्पयत्, यत्तसंस्थानपरिणता कुलालचक्रादिवत्, अस्त्रसंस्थानपरिणता शङ्खाटकादिवत्, चतुरस्त्रसंस्थानपरिणता कुम्भिकादिवत्, आयतसंस्थानपरिणता दण्डादिवत्, गतानिच परिमङ्गलादीनि संस्थानानि घनप्रतरज्रेने द्विविधानि प्रयन्ति, पुन परिमङ्गल मयहाय शोपाणि उज प्रदेशजनितानि युग्मप्रदेशजनितानि इति द्विधा, तत्रोत्कृष्ट परिमङ्गलादि सर्वमनन्ताणु निष्यन्न मसङ्ख्यप्रदेशावगाढ चेति प्रतीतमेव, जपन्य तु प्रतिनियतमङ्गपरमाण्वात्मक मतो नानिर्दिष्ट ज्ञातु शक्यते इति विनियजनानुग्रहाय तदुप पदयते-तत्रो ज प्रदेशप्रतरयुत पञ्चपरमाणुनिष्यन्न पञ्चाकाशप्रदेशावगाढञ्च तद्याथा-गक परमाणुमध्ये स्थाप्यते चत्वार क्रमेण पूर्वादिषु तचष्ट्यु दिनु, युग्मप्रदेशप्रतरयुत द्वादशपरमाण्वात्मक द्वादशप्रदेशावगाढञ्च तत्र निरन्तर चत्वार परमाणव यतुर्थाकाशप्रदेशेषु रुच काकारेण व्यवस्थाप्यन्ते तत स्तत्परिलेपेण शोपा श्रष्टी ॥ उज प्रदेशचनरुत सप्तपरमाण्वात्मक सप्तप्रदेशावगाढञ्च तच्चैव-तत्रैव पञ्चप्रदेशे प्रतरयुतमय्य स्थितस्य परमाणो रुपरिष्टा दयस्ता च मर्ककोणु रवस्थाप्यते तत एव सप्तप्रदेश प्रवति ॥ युग्मप्रदेश चनरुतद्वात्रिशत्प्रदेश द्वात्रिंशत्प्रदेशावगाढञ्च तच्चैव-पूर्वाक्तद्वादशप्रदेशात्मकस्य प्रतरयुतस्योपरि द्वादश ततउपरिष्टा दयथा न्येचत्वारयुत्वार परमाणव इति ॥ उज प्रदेश प्रतरयुतस्य त्रिम देश त्रिमप्रदेशावगाढञ्च तच्चैव-पूर्व निर्यणुद्वय न्यम्यते तत आद्यास्या ध मर्ककोणु ॥ युग्मप्रदेशप्रतरयुतस्य षट्परमाणुनिष्यन्न षट्प्रदेशावगाढञ्च तत्र तियर्निरन्तर त्रय परमाणव स्थाप्यन्ते तत आद्यास्या ध उपर्यधोन्नावेना गुद्वय द्वितीयस्याध मर्ककोणु स्थापना ॥ उज प्रदेश पनत्रयस्य पञ्चत्रि

गना ते पञ्चविहा पण्डिता, तजहा-परिमङ्गलसंस्थानपरिणया बहुसंस्थानपरिणया तससंस्थानपरिणया चउर

रिणया ते पञ्चविहा पण्डिता तजहा। त्रिके संस्थान परिणत तेहना पाचप्रकार कथा तेहीन कहैकै-परिमङ्गलसंस्थान प० षट्संस्थान प० तससंस्थान प० चउरमसंस्थान प० आययसंस्थान परिणया। परिमङ्गलसंस्थान परिणत बलयनीपरे, सुतसंस्थान परिणत कानलचकनीपरे, श्यग त्रिखूणो संस्थानपरिणत सवाडानोपरे, चतुरस्र चौखूणो संस्थानपरिणत कुम्भापरे, आयतसंस्थानपरिणत दण्डोपरे, पञ्चपरमाणु निष्यन्न पचाकाशप्रदेशावगाढ इस सर्व



शत्रुपरमाणुनिष्पन्न पञ्चविंशप्रदेशावगाढञ्च तच्चैव - तिर्यग् निरन्तरा पञ्चपरमाणव स्याप्यन्ते तेषा बाधोप क्रमेण तिर्यगेव चत्वार उपो हा  
वेकद्येति पञ्चदशात्मक प्रतरोजात स्थापना ॥ अस्मैव प्रतरोसोपरि सबद्धोक्तिषु अन्त्यान्त्यपरित्यागेन दश ॥ १ ॥ तथैव तदुपर्युपरि पद त्रय  
एकद्येति क्रमणा शब्द स्याप्यन्ते स्थापना गतेभीलिता पञ्चविंश द्भवन्ति ॥ युग्मप्रदेशा घनत्रयस्य चतु परमाणवात्मक चतु प्रदेशावगाढ ञ्च तत्र प्रत  
रअस्मैव त्रिप्रदेशात्मकस्य सम्बन्धिन एकस्याणो रूपयैकोणु स्याप्यते ततो भीलिता द्यत्वारो जयन्ति ॥ उज प्रदेशा प्रतरोचतुरस्त्रनवपरमाणवात्मकं  
नवप्रदेशावगाढञ्च तत्र तिर्यग्निरन्तर त्रिप्रदेशा स्तिस्य पङ्क्तय स्याप्यन्ते युग्मप्रदेशा प्रतरोचतुरस्त्रं चतु परमाणवात्मक चतु प्रदेशावगाढञ्च तत्र  
तिर्यग्प्रदेशो द्वेपङ्क्ती स्याप्येते, उज प्रदेशा घनचतुरस्त्र समविंशतिपरमाणवात्मक समविंशतिप्रदेशावगाढञ्च तत्र नवप्रदेशात्मकस्यैव पूर्वोक्तस्य प्रत  
रस्या घनपरिच नवप्रदेशा स्याप्यन्ते तत समविंशतिपरमाणवात्मक भोज प्रदेशा घनचतुरस्त्र जयति स्थापनासैव, युग्मप्रदेशा घनचतुरस्त्र मष्टपरमा

णवात्मक मष्टप्रदेशावगाढञ्च तच्चैव - चतु प्रदशात्मकस्य पूर्वोक्तस्य प्रतरोसोपरि चत्वारोर्न्य परमाणव स्याप्यन्त इति ॥ उज प्रदेशा आयत त्रिपर  
माणु त्रिप्रदेशावगाढञ्च तत्र तिर्यग्निरन्तर त्रय स्याप्यन्ते ॥ युग्मप्रदेशाश्रेण्यायत द्विपरमाणु द्विप्रदेशावगाढञ्च तथैवा गुट्टय स्याप्यते ॥ उज  
प्रदेशा प्रतरायत पञ्चदशपरमाणवात्मक पञ्चदशप्रदेशावगाढञ्च तत्र पञ्चदशप्रदेशात्मिका स्तिस्य पङ्क्तय स्याप्यन्ते ॥ युग्मप्रदेशा प्रतरायतं  
पदप्रदेशात्मक पदप्रदेशावगाढञ्च तत्र त्रिप्रदेशा पङ्क्तिद्वय स्याप्यते स्थापना, उज प्रदेशा घनायत पञ्चवत्वारिशतपरमाणवात्मक ताव त्रप्रदेशावगाढ  
ञ्च तत्र पूर्वोक्तस्यैव प्रतरायतस्य पञ्चदशप्रदेशात्मकस्याघनपरि तथैव पञ्चदशपरमाणव स्याप्यन्ते ॥ युग्मप्रदेशा घनायत द्वादशपरमाणवात्मक  
द्वादशप्रदेशावगाढञ्च तत्र प्रागुक्तस्य पदप्रदेशस्य प्रतरायतसोपरि तथैव तावन्त परमाणव स्याप्यन्ते ॥ प्रतरोपरिभग्नल विंशतिपरमाणवात्म  
क विंशतिप्रदेशावगाढञ्च तच्चैव - प्राच्यादिषु षतसुपु दितु प्रत्येक चत्वारश्चत्वारो शब्द स्याप्यन्ते विदिद्विच प्रत्येक मैकेकोणु स्याप्यते ॥ घनप

रिमगल चत्वारिंशत्प्रदेशावगाढं ब्रुत्वारिंशत्परमायत्मात्मकं च तत्र तस्या एव विशते रूपरितना तथैवाभ्याविशति रवस्थाप्यते इत्यचैषा प्ररू  
पण मितोरिय न्यूनप्रदेशताया यथोक्तसस्यानात्मावात्, एतत्सङ्ग्राहिका श्रे मा उत्तराध्ययननिर्णयुक्तिगाथा -परिमल्ले य वहे, तसे चउरसत्राय  
ए चेव ॥ घणपयर पदमवज्ज, उजपएसे य जुक्केय ॥ १ ॥ पघयारसगखलु, सत्तगवत्तीसगच वहमि ॥ तियळक्क पचतीसा, चत्तारियहोति तस  
मि ॥ २ ॥ नय बेउतहाचउरो, सत्तावीसाय अठ चउरसे ॥ तिगदुग पत्तरसेवय, खवेवय आयएहोति ॥ ३ ॥ पणयाला यारसग, तह चेवय आ  
ययमि सउण ॥ वीसाचत्तालीसा परिमल्लएयसउण ॥ ४ ॥ इति ॥ सम्येतैपा मेव वणादीना परस्परसम्बन्धमाह-जेवत्ततोइत्यादि ॥ येरऊ  
न्यादयो वर्णतो वणमाश्रित्य कालवर्णपरिणताश्चपि भवन्ति ते सुरन्निगन्धपरिणताश्चपि ॥ किमुक्त भवति ? गन्ध  
मधिकृत्य ते प्राज्या कंचित्सुरन्निगन्धपरिणता भवन्ति कंचिदुरन्निगन्धपरिणता, नतु प्रतिनियतैकगन्धपरिणामपरिणताइति, एवञ्चरसत रूप

ससंठाणपरिणया आयतसंठाणपरिणया ॥ जे वखनु कालवखणपरिणया ते गधनु सुन्निगधपरिणयावि दुन्नि  
गधपरिणयावि, रसनु तित्तरसपरिणतावि कसुयरसपरिणतावि अविळरसपरिणता  
वि मज्जरसपरिणतावि, फासनु कक्कफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुयफासपरिणतावि लज्ज  
यफासपरिणतावि सीतफासपरिणतावि उंसिणफासपरिणतावि णिळफासपरिणतावि लुक्कफासपरिणतावि

व्यापनायेरय क्का, द्विवे परस्पर वर्णादि सबवभाङ्गा कहैछे—जे कानवखणपरिणया । जे वण्यो कानवर्ण परिणतहुवे तथा । तेगधको । ते गन्धको । स  
भिभय दुन्निगधपरिणयावि । सुगन्ध तथा दुर्गन्धगन्धे परिणतहुवे । रसको । तित्तरसप० कहुयरसप० कसुयरसप० अविळरसप० मज्जरसपरि  
णयावि । तिक्करसपरिणतहुवे कोइ कटुकरस परिणतहुवे कोइ कषायरस परिणतहुवे कोइ मधुरस परिणतहुवे । फासको क  
कउत्तासप० मउयफासप० गरुयफासप० लज्जफासप० उंसिणफासप० सीयफासप० षड्भिणफासप० लुक्कफासपरिणया । स्पर्शको कर्कय परिणतहुवे

दीप्त मस्यानतश्च वाच्या , तत्र द्रोगथो . पञ्चरसा , अष्टीस्पर्शा , पञ्चसस्यानानि , एतेषु गीलिता विशतिरिति ॥ कर्मवर्णपरिणता गतावन्ती भङ्गान्मभन्ते २७ , यव नीलवर्णपरिणताऽपि २७ , लोहितवर्णपरिणता अपि २७ , ह्यस्मिन्वर्णपरिणताऽपि २७ ,

मठाणनु परिमळलसंठाणपरिणतावि वट्सठाणपरिणतावि तससठाणपरिणतावि चडरससंठाणपरिणतावि  
 ज्यायतसठाणपरिणतावि । जेवखनु नीलवस्त्रपरिणता ते गधनु सुस्निग्धपरिणतावि दुस्निग्धपरिणतावि,  
 रसनु तित्तरसपरिणतावि कळुरसपरिणतावि कसायरसपरिणतावि अ्विलरसपरिणतावि मञ्जररसपरिण  
 तावि, फासनु कक्कळफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुयफासपरिणतावि लज्जयफासपरिणतावि  
 सीतफासपरिणतावि उसिंगफासपरिणतावि णिळफासपरिणतावि लुरकफासपरिणतावि, सठानु परिमळल

यशुभपदेगो माटे, काई सुदुस्मर्ग परिणतहुवे गुनस्मर्ग परिणत काई लघुस्मर्ग परिणतहुवे श्रोतस्मर्ग परिणत उष्णस्मर्ग परिणतहुवे स्निग्धपरिणत काई छत्तस्मर्ग परिणतहुवे । सठाणशोपरिमडनसठाणपरिणया । मस्यानयको काई परिमपडल सस्यान परिणतहुवे । बहसठाण प० तंससठाण प० चडर मसठाण प० आयाससठाणपरिणया । काई वत्तमस्यानपरिणतहुवे अग्रसस्यान परिणतहुवे काई चतुरस्सस्याने परिणतहुवे पायतसस्यान परिणत हुवे । जेवणभाणोनवकापरिणया । जिकेउणथको नोनवणे परिणतहुवे । तेगधशोसुविभगध प० दुग्धिभगध परिणयावि । ते गन्धघकी सुगन्ध परिणतहुवे सुगं परिणतहुवे कपायरस परिणतहुवे आविलरस परिणतहुवे मौठारस परिणतहुवे । फामशो । रपर्णयकी । कक्खडफास प० मउयफास प० गरुवफा म प० लहयफास प० सोयफास प० उमिणफास प० णिडफास प० लुक्खफास प० कसायरस प० कडयरस प० कडयरस प० भंजिरस प० महुररसपरिणया । तिक्करस परिणत हुवे कट्टक तहुवे नधुररगपरिणतहुवे श्रोतरगपरिणत हुवे उयारगपरिणत हुवे स्निग्धरगपरिणतहुवे रूणस्मर्गपरिणतहुवे । सठाणशो परिमडलसठाणपरि



सपरिणतावि उसिणफासपरिणतावि णिद्धफासपरिणतावि, सठाणनु परिमंलसठाण  
 परिणतावि वहसठाणपरिणतावि तससठाणपरिणतावि चउरससठाणपरिणतावि अ्यायतसठाणपरिणतावि  
 जेगंधन सुप्पिगंधपरिणता ते वसुन कालवसुपरिणतावि नीलवसुपरिणतावि लोहितवसुपरिणतावि हालि  
 द्वसुपरिणतावि सुक्खिवसुपरिणतावि, रसुन तित्तरसपरिणतावि कहुयसपरिणतावि कसायसपरिणता  
 वि अचिलरसपरिणतावि मज्जरसपरिणतावि, फासुन कक्कफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुय  
 फासपरिणतावि लज्जफासपरिणतावि सीतफासपरिणतावि उसिणफासपरिणतावि णिद्धफासपरिणतावि  
 लुक्कफासपरिणतावि, सठाणनु परिमंलसठाणपरिणतावि वहसठाणपरिणतावि तंससठाणपरिणतावि च  
 उरससठाणपरिणतावि अ्यायतसठाणपरिणतावि जेगंधन दुप्पिगंधपरिणता ते वसुन कालवसुपरिणतावि

गायत् जिहालगे रूक्षरपगं परिणतहुवे इमहोज आठवार कहवां । सठाणओपरिमंलसठाणपरिणता । सस्यानयकी परिमंलसस्यान परिणत हुवे । जा  
 वआयमठाणपरिणतावि । यावत् जिहालगे आयतसस्यानपरिणतहुवे ॥ जे गंधओ सुग्धिगंध परिणता । जे गंधयकी सुगंध परिणतहुवे । ते वसुओ  
 कालवसुपरिणतावि नीलवसु प० लोहितवसु प० सुक्खिवसुपरिणतावि । ते वर्णयकी कोइ कालिवर्ण परिणतहुवे कोइ नीलवर्ण परि  
 णतहुवे रतैवर्ण परिणतहुवे पोलैवर्ण परिणतहुवे कोइ स्वेतवर्ण परिणतहुवे । रसओ तित्तरस प० जावमहुसरसपरिणतावि । रसयकी तित्तरस परिणत  
 हुवे गायत् पचम मधररस परिणतहुवे । फासओ कक्कडफास प० जावलुत्तफास परिणतावि । रपययकी कर्कशरपगं परिणतहुवे यावत् जिहालगे कोइ  
 रूक्षरपगं परिणतहुवे । सठाणओ परिमंलसठाण प० जाव आययसठाणपरिणतावि । सस्यानयकी कोइ परिमंलसस्यान परिणतहुवे इम यावत्  
 पचम आयनसस्यानलगे परिणत पिणहुवे ॥ जे गंधओ दुग्धिगंध प० । जे गंधयकी दुरगंध परिणतहुवे । ते वसुओ कालवसु प० जावमुक्खिवसुपरिण

जेवखण हलिदुवखपरिणता ते गधने सुझिगंधपरिणतावि दुझिगंधपरिणतावि, रसने तित्तरसपरिणता  
 वि कहुयरसपरिणतावि कसायरसपरिण्यावि अविहरसपरिणतावि मज्जरसपरिणतावि, फासने कस्कर  
 फासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लज्जफासपरि० सीयफासपरि० उसिणफासपरि० णिठफास  
 ठाणपरि० लुक्कफासपरिणतावि, सठाणने परिमळलसठाणपरि० वहसंठाणपरि० तससठाणपरि० चउरसस  
 परिणतावि, रसने तित्तरसपरि० कहुयरसपरि० कसायरसपरि० अविहरसपरि० मज्जरसपरिणतावि,  
 फासने कस्करफासपरिणतावि मउयफासपरिण्यावि गरुयफासपरिण्यावि लज्जफासपरिणतावि सीयफा

गंध परि० । सुगन्ध दुरगन्ध परिणतहुवे । रसओ । रसयको । तित्तरस प० कहुयरस प० कसायरस प० अविहरस प० मज्जरसपरिण्यावि ।  
 तित्तरस परिणत हुवे कटकरस परिणतहुवे कसायरस परिणतहुवे अविहरस परिणतहुवे मज्जरस परिणतहुवे । फासओ कस्करफास प० मउयफास  
 प० गरुयफास प० लहुयफास प० सोयफास प० उसिणफास प० लुक्कफासपरिण्यावि । स्पर्शयको कर्कययपय प० अदुस्पर्श प० गुरुस्पर्श  
 प० लघुस्पर्श प० शोतरस्पर्श प० उणस्पर्श प० स्त्रिधस्पर्श परिणत हुवे । सठाणओ परिमळल स० वट स० तस स० चउरस स० आययसठा  
 ण परिणतहुवे । सस्थानयको परिमडनसस्थान परिणतहुवे कोइ वससस्थान परिणतहुवे कोइ वयस सस्थान प० कोइ चउरससस्थान प० कोइ आयत  
 रगंध परिणतहुवे । रसओ तित्तरस प० कहुयरस प० कसायरस प० अविहरस प० मज्जरसपरिण्या । रसयको तित्तरस प० कटकरस प० क  
 सायरस प० आविहरस प० मज्जरस परिणत हुवे । फासओ कस्करफास परिण्यावि । स्पर्शयको, कोइ कर्कययपयपरिणत हुवे । जावलुक्कफास प०

नीलवस्त्रपारणतावि लोहितवस्त्रपारिणतावि हालिद्ववस्त्रपारिणतावि, रसनु तित्तरसप  
रिणतावि कुरुयस्त्रपारिणतावि कसाथरसपारिणतावि अथिलरसपारिणतावि मञ्जररसपारिणतावि, फासनु क  
रुक्कफासपारिणतावि मउयफासपारिणतावि गरुयफासपारिणतावि लङ्कयफासपारिणतावि सीतफासपारिणता  
वि उसिणफासपारिणतावि णिरुफासपारिणतावि लुक्कफासपारिणतावि, सठ्ठाणनु परिमळलसठ्ठाणपारिणता  
वि बहुमठ्ठाणपारिणतावि तंससठ्ठाणपारिणतावि चउरससठ्ठाणपारिणतावि अयतसठ्ठाणपारिणतावि । जेरस  
नु तित्तरसपारिणता ते वस्त्रनु कालवस्त्रपारिणतावि नीलवस्त्रपारिणतावि लोहितवस्त्रपारिणतावि हालिद्ववस्त्र  
पारिणतावि सुक्किल्लवस्त्रपारिणतावि, गधनु सुप्पिणधपारिणतावि दुप्पिणधपारिणतावि, फासनु करुक्कफासप  
रिणतावि मउयफासपारिणतावि गरुयफासपारिणतावि लङ्कयफासपारिणतावि सीतफासपारिणतावि उसिण  
ते । ते वस्त्रयको कोइ कपायणो परिणतल्ले

यावि । ते वर्ण्यको कोइ कण्ठ्यणे परिणतहुवे दम यायत कोइ शुक्लवर्ण परिणतहुवे । रसभो तिसरस प० जाव महुररसपरिणयावि । रसयको तित्तरस परिणतहुवे दम यावत् कोइक मधुररसपरिणतहुव । फासभो कखडफास प० जावलुखफासपरिणयावि । स्पंथकी कंकयस्पंथ परिणतहुवे यावत् रूखस्पंथ परिणतहुवे । सठाणभो परिमडनसठाण प० जाव आदयसठाणपरिणयावि । सस्थानथकी परिमडनसस्थान परिणतहुवे यावत् प्रायतसस्थान परिणतहुवे । जे रसभो तित्तरसपरिण्या । जे रसयको तित्तरस परिणतहुवे । तेवसभो काकवण जावसकिन्नवसपरिण्या । ते वर्ण्यकी कालवर्ण परिणतहुवे दम यावत् शुक्लवर्ण परिणतहुवे । गंधभो सदिग्धगंध दुग्धिगंध परिणयावि । गंधयकी सुगंध दुरगंध परिणतहुवे । फासभो कखडफास जावनुख फास परिणयावि । कंकयस्पंथ परिणतहुवे दम यावत् रूखस्पंथ परिणतहुवे । सठाणभो परिमडनसठाण प० जाव प्रायसठाणपरिणयावि । सस्थानथ

अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि ८ एव रसत ५ स्पर्शत ८ सस्यान्त ५ एतेच मीलिता खयोयिगति रिति सुरजिगन्धपरिणता खयोविशति नङ्गान्त्वन्ते, एव दुरजिगन्धपरिणता अपि २३ ततो गन्धपदेन सख्या भङ्गाना यद्वा ख्यारिशत्, रसमधिकृत्याह-ये रसतो रसमधिकृत्य तित्करसपरिणता स्तो वणेत ५ गन्धत २ स्पर्शत ८ सस्यान्त ५ एते सर्वेपि एकत्र मीलिता विजतिरिति ॥ तित्करसपरिणता विजतिभङ्गा स्मन्ते २०, एव कटुकरसपरिणता २०, कषायरसपरिणता २०, अम्लरसपरिणता २०, मधुररसप

फासपरिणतावि णिष्ठफासपरिणतावि लुक्फासपरिणतावि, सठाणन् परिमल्लसठाणपरिणतावि वहसठाणपरिणतावि तससठाणपरिणतावि चउरससठाणपरिणतावि आयतसठाणपरिणतावि। जेरसन् कटुकरसपरिणता ते वखन् कालवखपरिणतावि नीलवखपरिणतावि लोहितवखपरिणतावि हालिद्वखपरिणतावि सुक्लिन्नवखपरिणतावि, गधन् सुस्निग्धपरिणतावि दुस्निग्धपरिणतावि, फासन् कस्करफासप० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीयफासपरि० उसिणफासपरि० णिष्ठफासप० लुक्फासपरिणतावि, सठाणन् परिमल्लसठाणपरि० वहसठाणपरि० तससठाणपरि० चउरससठाणप० आयतसठाणप

को परिमल्लसस्यानपरिणतहुवे इम यावत आयतसस्यान परिणतहुवे ॥ जे रसभा कटुकरसपरिणता । जिके रसयको कटुकरस परिणतहुव। तैवसुओ कालवखपरिणतावि । ते वर्णयको काई कालेवर्ण परिणतहुवे । जावसक्लिन्नवखपरिणतावि । यावत कोई शुक्लवण परिणतहुवे । गधभो सुभिगध प० दुग्धिगध परिणतावि। गन्धयको सुगन्ध गध परिणत हुवे दुग्ध परिणत हुने । फासभो कस्करफास प० जावकुक्कफास परिणतावि । स्पर्शयको कर्कय रपयपरिणत हुवे इम यावत रुक्मरपर्णपरिणतहुवे । सठाणओ परिमल्लसठाण प० जाव आयतसठाणपरिणतावि । सस्यानयको परिमल्लसस्यान परिणत पिणहुवे यावत गधे जिह्वालगे आयतसस्यान परिणत सस्यान हुवे ॥ जे रसभो कषायरस अविश मधुररस परिणता । जे रसयको कषायरस आ



पञ्चत्रि वर्णलिख्यं त्रय १००, गन्धमधिकृत्याह-जेगन्धुइत्यादि ॥ ये गन्धतोगन्धमधिकृत्य सुरत्रिगन्धपरिणामपरिणता स्ते वर्णत कालवर्णपरिणता

नीलवस्त्रपरिणतावि लोहितवस्त्रपरिणतावि हालिद्ववस्त्रपरिणतावि सुक्लिप्तवस्त्रपरिणतावि, रसनु तित्तरसपरिणतावि कद्रुयसपरिणतावि कसायसपरिणतावि झुत्रिलरसपरिणतावि मञ्जरसपरिणतावि, फासनु कस्कृफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुयफासपरिणतावि लज्जयफासपरिणतावि सीतफासपरिणतावि उसिणफासपरिणतावि णिष्ठफासपरिणतावि लुक्कफासपरिणतावि, सठाणनु परिमल्लसठाणपरिणतावि बहुसठाणपरिणतावि तससठाणपरिणतावि चउरससठाणपरिणतावि झुयतसठाणपरिणतावि । जेरसनु तित्तरसपरिणता ते वस्त्रनु कालवस्त्रपरिणतावि नीलवस्त्रपरिणतावि लोहियवस्त्रपरिणतावि हालिद्ववस्त्रपरिणतावि सुक्लिप्तवस्त्रपरिणतावि, गधनु सुस्निग्धपरिणतावि दुस्निग्धपरिणतावि, फासनु कस्कृफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुयफासपरिणतावि लज्जयफासपरिणतावि सीतफासपरिणतावि उसिणवि । ते वर्ग्यथको कोइ कणवण परिणतइये इम मणवण कोइ

यावि । ते वर्ण्यको कोई कणवण परिणतहुवे इम यावत् कोई शुक्लवर्ण परिणतहुवे । रसभो तित्तरस प० जाव मधुररसपरिणयावि । रसयको तित्तर स परिणतहुवे इम यावत् कोईक मधुररसपरिणतहुव । फासभो कखडफाम प० जावसुखफासपरिणयावि । रसगयको कर्कशरसपरिणतहुवे यावत् रुचरसपरिणतहुवे । सठाणभो परिमडनसठाण प० जाव आदयसठाणपरिणयावि । सस्यानयको परिमडनमस्यान परिणतहुवे यावत् आदयसस्यान परिणतहुवे ॥ जे रसभो तित्तरसपरिणया । जे रमयको तित्तरस परिणतहुवे । तेवसभो कासवण जावसुखवणपरिणया । ते वर्ण्यको कासवर्ण परिणतहुवे इम यावत् शुक्लवर्ण परिणतहुवे । गंधभो सुगंध दुग्धिगंध परिणयावि । गंधयको सुगंध दुरगंध परिणतहुवे । फासभो कखडफाम आनलुख फास परिणयावि । कर्कशरसपरिणतहुवे इम यावत् रुचरसपरिणतहुवे । सठाणभो परिमडनसठाण प० जाव आदयसठाणपरिणयावि । सस्यानय

अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि ८ एव रसत ५ रसज्ञात ८ सस्यानत ५ एतेषु मीलिता खयोविशति रिति सुरजिगन्धपरिणता खयोविशति अङ्गान् लज्जते, एव दुरजिगन्धपरिणता अपि २३ ततो गन्धपदेन लब्ध्या भङ्गाना पट्टे च स्वारिज्ञात्, रसमधिकृत्याह-ये रसतो रसमधिकृत्य तित्करसपरिणता स्ते वर्णत ५ गन्धत २ रसज्ञात ८ सस्यानत ५ एते सर्वेपि एकत्र मीलिता विशतिरिति ॥ तित्करसपरिणता विशतिभङ्गा लभन्ते २०, मय कटुकरसपरिणता २०, कपायरसपरिणता २०, अम्लरसपरिणता २०, मधुररसप

फासपरिणतापि निष्ठफासपरिणतापि लुक्फासपरिणतापि, सठाणने परिमल्लसठाणपरिणतापि वहसठाणपरिणतापि तप्तसठाणपरिणतापि चउरससठाणपरिणतापि ज्ञायतसठाणपरिणतापि। जेरसने कटुरसपरिणतापि ते वसाने कालवसपरिणतापि नीलवसपरिणतापि लोहितवसपरिणतापि हालिहवसपरिणतापि सुक्लिप्तवसपरिणतापि, गधने सुस्निग्धपरिणतापि दुस्निग्धपरिणतापि, फासने कक्कठफासप० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीयफासपरि० उसिणफासपरि० निष्ठफासप० लुक्फासपरिणतापि, सठाणने परिमल्लसठाणपरि० वहसठाणपरि० चउरससठाणपरि० ज्ञायतसठाणपरि०

को परिमण्डनसम्यानपरिणतहुवे इम यावत यायतसम्यान परिणतहुवे ॥ जे रसभा कटुरसपरिणता । जिके रसयको कटुकरस परिणतहुव । तेवसुओ कालवसपरिणतापि । ते वर्णयको कार्द कालेवर्ण परिणतहुवे । जावत कोर्द शुक्लवण परिणतहुवे । गधओ सुधिगध प० दुधिगध परिणतापि । गन्धयको सुगन्ध गन्ध परिणत हुवे दुर्गन्ध परिणत हुवे । फासओ कक्कठफास प० जावसुक्कठफास परिणतापि । रसययको कर्कय रसयपरिणत हुवे इम यायत रुचेरसपरिणतहुवे । सठाणओ परिमल्लसठाण प० जाव ज्ञायतसठाणपरिणतापि । सम्यानयको परिमल्लसम्यान परिणत पिणतहुवे यावत गधदे जिह्वालगे यायतसम्यान परिणत सम्यान हुवे ॥ जे रसओ कसायरस अविस्त मधुररस परिणता । जे रसयको कपायरस आ

रिणतावि । जे रसनु कसायरसपरिणता ते वसुन कालवसुपरि० नीलवसुपरि० लोहितवसुपरि० हालि  
 सुक्लिबवसुपरिणतावि, गधनु सुस्निग्धपरिणतावि दुस्निग्धपरिणतावि, फासनु कस्ककफा  
 यफासपरि० गरुयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीतफासपरि० उसिगफासपरि० गिद्धफासपरि०  
 रिणतावि, संठाणनु परि मल्लसु णपरि० वहसठाणपरि० तंससठाणपरि० चउरससंठाणपरि०  
 णपरिणतावि ।

सपरि०, गधनु सुस्निग्धपरिणतावि दुस्निग्धपरिणतावि, सीयफासपरि० उसिगफासपरि०  
 । सठाणनु परिसकलसठाणपरि० वहसठाणपरि० तंससठाणपरि०  
 परिणतावि । जे रसनु मज्जरपरिणता ते वसुन कालवसुपरि० नीलवसुपरि०  
 प रे०  
 लज्जयफासपरि०  
 सुस्निग्धपरिणतावि दुस्निग्धपरिणतावि  
 लज्जयफासपरि० सी

परिणतावि

रिणता २०, स्य रमप-कसयोगे लब्ध जङ्गकाना ज्ञात १००, स्पर्धोमधिकृत्याह-ये फासतोऽस्त्रकफासपरिणयादित्यादि ॥ ये स्पर्शत कर्कशस्पर्शपरि  
 फासपरि० णिद्रफासपरि० लुक्फासपरिणतावि, सठाणनु परिमल्लसठाणपरि० वहसठाणपरि० तसस  
 ठाणपरि० चउरससठाणपरि० ज्ञायतसठाणपरिणतावि ॥ जे फासनु कर्कशफासपरि० ते वसुनु कालव  
 खापरि० नीलवखापरि० लोहितवखापरि० हालिद्ववखापरि० सुक्लिन्नवखापरिणतावि, गधनु सुस्निगधपरि०  
 दुस्निगधपरिणतावि, रसनु तित्तरसपरि० कसुयरसपरि० कसायरसपरि० अविहरसपरि० मज्जरसपरिण  
 तावि, फासनु गरुयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्रफासपरि० लुक्  
 फासपरिणतावि, सठाणनु परिमल्लसठाणपरि० वहसठाणपरि० तससठाणपरि० चउरससठाणपरि०  
 ज्ञायतसठाणपरिणतावि । जे फासनु मउयफासपरि० ते वसुनु कालवखापरि० नीलवखापरि० लोहितवखा  
 वायवसठाणपरिणयावि । परिमल्लसस्थानयको परिणत पिणहुवे यावत् भायतसस्थानपरिणत पिणहुवे ॥ ज फासभो कदखडफास प० ते वसुभो  
 जानयसप० । जे स्पर्गयको ककय परिणतहुवे ते वर्णयको कालिद्वर्णे परिणत पिणहुवे । जावसुक्लिन्नवखापरिणयावि । यावत् शुक्लवर्ण परिणत हुवे । ग  
 धया सुभिगध प० दुग्भिगध परिणयावि । गरुधयको सरभिगध परिणतहुवे दूरभिगध परिणतहुवे । रसभो तित्तरस प० जायमहुररस परिणयावि । रस  
 यको तित्तरस परिणतहुवे यावत् मधुररस परिणत हुवे । फासभो गरुयफास प० लज्जयफास प० सीयफास प० उसिणफास प० णिद्रफास प० सुद्वखा  
 सपरिणयावि । स्पर्गयको मुरवर्ग परिणतहुवे लघुवर्ग परिणत हुवे श्रोतस्पर्ग परिणत हुवे उच्छरस्पर्ग परिणतहुवे स्निग्धस्पर्ग परिणतहुवे रूक्षस्पर्ग परि  
 णतहुवे । सठाणभो परिमल्लनसठाण प० जाव भायतसठाणपरिणयावि । सस्थानयको परिमल्लसस्थानपरिणत पिण हुवे यावत् भायतसस्थानपरिण  
 तहुवे । लेफासभो मउयफास प० । जे स्पर्गयको मउस्पर्ग परिणतहुवे । ते वसुभो कालवखा प० जाव सुक्लिन्नवखा परिणयावि । ते वर्णयको कालिद्वर्ण परिण

रिणतावि । जे रसने कसायसपरिणता ते वखने कालवखपरि० नीलवखपरि० लोहितवखपरि० हालि  
 दवखपरि० सुक्लिबवखपरिणतावि , गधने सुस्निग्धपरिणतावि दुस्निग्धपरिणतावि , फासने कक्कफा  
 सपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीतफासपरि० उंसिणफासपरि० णिद्धफासपरि०  
 लुक्कफासपरिणतावि , सठाणने परिमळलसठाणपरि० वहसठाणपरि० तससठाणप० चउरससठाणप०  
 अ्यायतसठाणपरिणतावि । जे रसने अ्याविलरसपरिणता ते वखने कालवखपरि० नीलवखपरि० लोहितव  
 खपरि० हालिद्ववखपरि० सुक्लिबवखपरिणतावि , गधने सुस्निग्धपरिणतावि दुस्निग्धपरिणतावि , फासने  
 कक्कफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीयफासपरि० उंसिणफासपरि०  
 णिद्धफासपरि० लुक्कफासपरिणतावि । सठाणने परिमळलसठाणपरि० वहसठाणपरि० तंससठाणपरि०  
 चउरससठाणपरि० अ्यायतसठाणपरिणतावि । जे रसने मज्जरपरिणता ते वखने कालवखपरि० नीलवखप०  
 लोहितवखपरि० हालिद्ववखपरि० सुक्लिबवखपरिणतावि , गधने सुस्निग्धपरिणतावि दुस्निग्धपरिणता  
 वि , फासने कक्कफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीतफासपरि० उंसिण

विलरस मधुरस परिणतहुवे । ते वखनो कासवख प० आव सुक्लिबवखपरिणतावि । ते वखनो कोसवख परिणत पिणहुवे यावत् शुक्लवर्ण परिणत  
 हुवे । गधनो सुस्निग्ध प० दुस्निग्धपरिणतावि । ते गरुयको सुगन्धपरिणत पिणहुवे । फासनो कक्कफास प०  
 जाव नुक्कफासपरिणतावि । रपयको कर्कशपरिणत पिणहुवे यावत् रुचरपरिणत पिणहुवे । सठाणनो परिसळलसठाण प० आव

२३. श्रीवत्सर्गोपरिष्कृता २३, उत्तरपक्षोपरिष्कृता २३,

નૈઋત્યવંશપરિણતા રૂપતાવન્ત્યથદુસ્વપ્નપરિણતા રૂપાલયુરુપવંશપરિણતા રૂપ  
ફાસપરિણતાવિ ડસિગફાસપરિં ગિષ્ઠફાસપરિં લુક્કફાસપરિણતાવિ , સઠાળને પરિમઢલસઠાળપરિં  
વહસઠાળપરિં તસસઠાળપરિં ચડરસસઠાળપરિં આયતસઠાળપરિણતાવિ । જેફાસનુંલજાયફાસપરિ  
ળતા તે વચ્ચન કાલવચ્ચપરિં નીલવચ્ચપરિં હોહિતવચ્ચપરિં હાલિદ્વચ્ચપરિં સુક્ષિલ્લવચ્ચપરિણતાવિ,  
ગધનું સુખ્નિગધપરિં દુઃખ્નિગધપરિણતાવિ , રસનું તિત્તરસપરિં કઠુનરસપરિં કસાયરસપરિં અવિલર  
સપરિં મજારસપરિણતાવિ , ફાસનું કર્કઠફાસપરિં મડયફાસપરિં સીતફાસપરિં ડસિગફાસપરિં  
ગિષ્ઠફાસપરિં લુક્કફાસપરિણતાવિ , સઠાળને પરિમઢલસઠાળપરિં વહસઠાળપરિં તસસઠાળપરિં ની  
ચડરસસઠાળપરિં આયતસઠાળપરિણતાવિ । જે ફાસનું સીતફાસપરિણતા તે વચ્ચન કાલવચ્ચપરિં ની

चउरससठाणपरि० आयातसठाणपरिणतावि । ज फासय आयातसठाणपरिणतावि । सठाणथो प  
लुहफासपरिणयावि । रपर्यको कर्कशरपर्य प० सुदुरपर्य प० श्रोतरपर्य प० चणरपर्य प० काई स्त्रिधरपर्य प० रूतारपर्य परिणतहुवे । सठाणथो प  
रिमेलसठाण प० जात्र आयातसठाणपरिणयावि । सस्थानयको परिमलसस्थान प० यावत् आयातसस्थानपरिणतपिणहवे ॥ जेफासथो दह्म फास  
प० ते वषको कानवस प० जावसक्लिषसपरिणयावि । जे रपर्यको लघुपर्य परिणतहुवे । ते रपर्यको कालवर्ण प० यावत् शुक्लवर्णपरिणतहुवे ।  
गधथो मुदिगध दुदिगध परिणयावि । गधथको मुगन्ध दुगन्ध परिणतहुवे । रसथो तितरस प० जाव म्हुसरसपरिणयावि । रसथको तितरस प०  
यावत् मधुररस परिणतहुवे । फासथो कश्चुडफास प० मउयफास प० सौयफास प० समिणफास प० णिहफास प० नृलफासपरिणयावि । रपर्य  
को ककशरपत्र प० सुदुरपर्य प० श्रोतरपर्य प० चणरपर्य प० काई स्त्रिधरपर्य प० रूतारपर्य परिणतहुवे । सठाणथो परिमलसठाण प० जावआययस  
ठाणपरिणयावि । सस्थानयको परिमलसस्थान प० यावत् आयातसस्थान परिणतपिणहवे ॥ जेफासथो सौयफास प० ते वषको कालवर्ण प० जावसुक्लिष

कता स्ते वर्णत ५ गन्धत २ रसत ६ प्रतिपक्षस्पर्शयोगाभावात्, सस्यानत ५ एते सर्वे एतन्ममीलिता स्वयोविश्रुति, एतावन्तो अङ्गाश्च भन्ते  
परि० हालिह्वस्पर्शपरि० सुक्लिप्तवस्पर्शपरिणतावि, गन्धं सुस्निग्धपरि० दुस्निग्धपरिणतावि, रसं तित्तर  
रसपरि० कद्रुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० मञ्जरसरसपरि० फासं गन्धफासपरि०  
लज्जफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिष्ठफासपरि० लुक्कफासपरिणतावि, संठाणं परि  
मज्जलसंठाणपरि० वहसंठाणपरि० तप्तसंठाणपरि० चउरससंठाण० आयतसंठाणपरिणतावि । जे फासं  
गन्धफासपरिणता ते वस्पर्शं कालवस्पर्शपरि० नीलवस्पर्शपरि० लोहितवस्पर्शपरि० हालिह्वस्पर्शपरि० सुक्लिप्त  
वस्पर्शपरिणतावि, गन्धं सुस्निग्धपरि० दुस्निग्धपरिणतावि, रसं तित्तरसपरि० कद्रुयरसपरि० कसायरस  
परि० अंबिलरसपरि० मञ्जरसरसपरि० फासं कर्कशफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि सीय

त ह्वे । यावत् शुक्लवस्पर्शपरिणतह्वे । गन्धं सुस्निग्धं परिणतह्वे । गन्धं सुस्निग्धपरिणतह्वे । गन्धं सुस्निग्धपरिणतह्वे । रसं तित्तर  
स प० जावमञ्जररस परिणतह्वे । रसं तित्तरस परिणतह्वे । गन्धं सुस्निग्धपरिणतह्वे । गन्धं सुस्निग्धपरिणतह्वे । रसं तित्तर  
उसिणफास प० णिष्ठफास प० लज्जफास प० कद्रुयरस प० कसायरस प० अंबिलरस प० मञ्जरसरस प० फास प० गन्धफास प०  
कोइ रूक्षस्पर्शं परिणतह्वे । संठाणं परिमज्जलसंठाण प० जाव आयतसंठाणपरिणतह्वे । सस्यानत प० परिमज्जलसस्यान परिणतह्वे । यावत् आयतस  
स्यान परिणतह्वे । जे फासं गन्धफास प० ते वस्पर्शं कालवस्पर्शपरिणतह्वे । गन्धं सुस्निग्धपरिणतह्वे । गन्धं सुस्निग्धपरिणतह्वे । रसं तित्तर  
यायत शुक्लवस्पर्शं परिणतह्वे । गन्धं सुस्निग्धपरिणतह्वे । गन्धं सुस्निग्धपरिणतह्वे । रसं तित्तरस प० जाव मञ्जररस परि  
णतह्वे । रसं तित्तरस प० यावत् मञ्जररस परिणतह्वे । फासं कर्कशफास प० मउयफास प० सीयफास प० उसिणफास प० णिष्ठफास प०

परि० वहसठाणपरि० तससठाणपरि० चउरससठाणपरि० आयतमठाणपरिणतावि । जे फासनु णिछ  
 फासपरिणया ते वणुनु कालवणपरि० नीलवणपरि० लोहितवणपरि० हालिद्ववणपरि० सुक्लित्रवणप  
 रिणतावि, गधनु सुप्रिगधपरि० दुप्रिगधपरिणतावि, रसनु तित्तरसपरि० कहुउरसपरि० कसायरसप०  
 अंबिलरसपरि० मज्जरसपरिणतावि, फासनु करुफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लज्जय  
 फासपरि० सीयफासपरि० उसिणफासपरिणतावि, सठाणनु परिमळलसठाणपरि० वहसठाणपरि० तस  
 सठाणपरि० चउरससठाणपरि० आयतसठाणपरिणतावि । जे फासनु लुक्फासपरिणता ते वणुनु काल  
 वणपरि० नीलवणपरि० लोहितवणपरि० हालिद्ववणपरि० सुक्लित्रवणपरिणतावि, गधनु सुप्रिगंधप०

फास प० णिद्धफास प० लुखुफास परिणयावि । रपययको कर्कगरपर्यहुवे सदरपर्य प० गुरुपर्य प० लघुपर्य प० रूप्तरपर्य परिणत  
 हवे, सठाणओ परिमडलसठाण प० जाव आयसठाणपरिणयावि । सस्यानयको परिमडलसस्यान यावत् आयतसस्यानपरिणतहुवे ॥ जेफासओ णिद्धफा  
 स प० ते वणुओ कालवण प० जावमुक्लित्रवणपरिणयावि । अथवा जे रपर्यको खिम्भपर्य परिणतहुवे ते वणुओ कान्वरण प० यावत् गुल्लरण परि  
 णतहुवे । गधओ सन्निगध दुधिमगधपरिणयावि । गधउको मृगय तर्गभपरिणतहुवे । रमओ तित्तरम प० चाव नहुररमपरिणयावि । रमयको तित्त  
 रम प० यावत् मधुररसपरिणतहुवे । फासओ कण्डुफास प० मउउफास प० गरुयफास प० मपुउफास प० सीयफास प० उसिणफासपरिणयावि ।  
 सययको कर्कगस्यगपरिणतहुवे सदुस्सर्गपरिणतहुवे गुरुपर्य प० सवपर्य प० श्रौतपर्य प० उणपर्य परिणतहुवे । सठाणओ परिमडलसठाण प० जा  
 व आयतसठाणपरिणयावि । सस्यानयको परिमडलसस्यान परिणतहुवे यावत् आयतसस्यानपरिणतहुवे ॥ जेफासओ लुक्फास प० ते वणुओ काल  
 वण प० चावमुक्लित्रवणपरिणयावि । जे रपर्यको रुद्धपर्य परिणतहुवे यावत् गुल्लवणपरिणतहुवे । गधओ सुप्रिभ



लवसपरि० लोहितवसपरि० हालिद्वसपरि० सुक्लिप्तवसपरिणतावि, गधने सुस्निग्धपरि० दुस्निग्धपरिणतावि, रसने तित्तरसपरि० कस्यरसपरि० अचिलरसपरि० मज्जरसपरिणतावि, फासने कक्कफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लज्जफासपरि० णिष्ठफासपरि० लुक्कफासपरिणतावि, सठाणने परिमलसठाणपरि० बहसठाणपरि० तससठाणपरि० चउरससठाणपरि० अयातसठाणपरिणतावि । जेफासने उसिणफासपरि० ते वसने कालवसपरि० नीलवसपरि० लोहियवसपरि० हालिद्वसपरि० सुक्लिप्तवसपरिणतावि, गधने सुस्निग्धपरि० दुस्निग्धपरिणतावि, रसने तित्तरसपरि० कस्यरसपरि० कसायरसपरि० मज्जरसपरि० अचिलरसपरि० फासने कक्कफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लज्जफासपरि० णिष्ठफासपरि० लुक्कफासपरिणतावि, सठाणने परिमलसठाण

परिणतावि । जे स्पग्धको शोतस्पग्धपरिणत ते वर्ण्यको कालेवण प० यावत् शुक्लवर्णं परिणतहुवे । गधया सुभिगध दुर्भिगधपरिणतावि । गधयको सुगध दुर्गध परिणतहुवे । रसयो तित्तरसपरिणता जाव मज्जरसपरिणतावि । रसयको तित्तरस प० यावत् मधुररसपरिणतहुवे । फासओ कक्कफास प० मउयफास प० गरुयफास प० लज्जफास प० णिष्ठफास प० सुक्लिप्तवसपरिणतावि । रसयओ कर्केयरपणं प० मउयपणं प० सुदरपणं प० लवसपरिणतहुवे । सठाणओ परिमलसठाण प० जाव आययसठाणपरिणतावि । रुस्यानयको परिमलसस्थान प० ते वर्ण्यको कालेवर्णं प० यावत् शुक्लवर्णं परिणतहुवे ॥ जेफासओ उसिणफास प० तेवणओ कालवस प० जाव सुक्लिप्तवसपरिणतावि । जे स्पग्धको उष्णस्पग्ध प० जाव मज्जरसपरिणतावि । रसयको तित्तरस प० यावत् मधुररस परिणतहुवे । फासओ कक्कफास प० मउयफास प० गरुयफास प० लज्जफास प० णिष्ठफास प० सुक्लिप्तवसपरिणतहुवे ।



त्रिभयसंपूर्णता २३' रुद्रस्पर्शपरिणता २३' एतेषा मेकत्रनीलिने जात जङ्गमाना चतुरशीत्यधिकं ज्ञात १८४, सख्यानमधिकृत्याह-जेसठाणउं प रिमण्डलसठाणपरिणयाइत्यादि ॥ ये सख्यानत परिमण्डलसख्यानपरिणता स्ते वर्णित ५ गन्धन २ रसत ५ स्पर्शत ८ एते सर्वेव्येकत्र नीलिता

दुस्त्रिगंधपरिणतावि, रसने तित्तरसपरि० कफुयरसपरि० अण्विलरसपरि० मज्जररसपरिण तावि, फासने करकफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीतफासपरि० उंसिण फासपरिणतावि, सठाणने परिमण्डलसठाणपरि० बहुसठाणपरि० तससठाणपरि० चउरससठाणपरि० आयतसठापरि० । जे सठाणने परिमण्डलसठाणपरिणता ते वसने कालवसपरि० नीलवसपरि० लोहित वसपरि० हालिहवसपरि० सुक्लिहवसपरिणतावि, गंधने सुस्त्रिगंधपरिणतावि दुस्त्रिगंधपरिणतावि, र सने तित्तरसपरि० कफुयरसपरि० कसायरसपरि० अण्विलरसपरि० मज्जररसपरिणतावि, फासने करकफा सपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीतफासपरि० उंसिणफासपरि० णिण्डफास

गव दुग्धिगंधपरिणतावि । गन्धको सगन्ध दुग्धवपरिणतहुवे । रसको तित्तरस प० जावमहुररस परिणतावि । रसको तित्तरसपरिणतहुव यावत् मधुररसपरिणतहुवे । फासको कक्कडफास प० मउयफास प० गरुयफास प० लज्जफास प० उंसिणफास परिणतावि । रसको कर्कश रस प० गुनरस प० लसपस्य प० गोतरस प० उणरस परिणतहुवे । सठाणको परिमण्डलसठाण प० जात्र आयसंठाणपरिणतावि । सख्यानको परिमण्डलसख्यानपरिणतहुवे यावत् आयतसख्यानपरिणतहुवे ॥ जे सठाणको परिमण्डलसठाण प० ते वसको कालवस प० जाव सुक्लिहवस परिणता वि । ते वसको कालिहवपरिणतहुवे यावत् स्वेतवर्ण परिणतहुवे । गंधको सुस्त्रिगंध दुग्धिगंधपरिणतावि । गंधको सुस्त्रिगंध दुग्धपरिणतहुवे । रसको तित्तरस प० यावत् महुररसपरिणतावि । रसको तित्तरस यावत् मधुररसपरिणतहुवे । फासको कक्कडफास प० मउयफास प० गरुयफास प० लज्ज

विशति २० सतायन्तो नृङ्गान् परिमण्डलसंस्थानपरिणता लज्जते, एव युत्तसंस्थानपरिणता २० ॥ मन्त्रसंस्थानपरिणता २०, चतुरस्रसंस्थान  
परिणता २०, त्रायतसंस्थानपरिणता २० ॥ श्रीमदीया चैक्यमीनेन लज्ज नृङ्गकाना ज्ञात, एषाच वर्णगन्धरसपञ्चासस्यामाना मुक्तालज्जसुहृन्ने

परि० लुक्कफासपरिणतावि । जेसठाणने बहुसठाणपरि० ते वखने कालवखपरि० नीलवखपरि० लोहि  
तवखपरि० हालिद्ववखपरि० सुक्लिषपरिणतावि, गधने सुस्निग्धपरि० दुस्निग्धपरिणतावि, रसने ति  
त्तरसपरि० कङ्कुरसपरि० कसायरसपरि० अण्डिलरसपरि० मञ्जररसपरिणतावि, फासने कक्कफासप०  
मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिम्बफासपरि० लुक्क  
फासपरिणतावि । जेसठाणने तससठाणपरि० ते वखने कालवखपरि० नीलवखपरि० लोहितवखपरि०  
हालिद्ववखपरि० सुक्लिषवखपरिणतावि, गधने सुस्निग्धपरिणतावि दुस्निग्धपरिणतावि, रसने तित्तर  
सपरि० कङ्कुरसपरि० कसायरसपरि० अण्डिलरसपरि० मञ्जररसपरिणतावि, फासने कक्कफासपरि०

यफास प० सोयफास प० उमिणफास प० णिम्बफास प० लुक्कफास परिणतावि । रसगन्धको कर्कशपर्यपरिणतहुवे चतुरपर्यपरिणतहुवे गुरुपर्यपरिण  
तहुवे लघुपर्यपरिणतहुवे शीतरपर्यपरिणतहुवे उष्णपर्यपरिणतहुवे शिथिलपर्यपरिणतहुवे रुचरपर्यपरिणतहुवे ॥ जे सठाणथो यटसठाणपरिणतावि  
जे संस्थानथो युत्तसंस्थानपरिणत ते पिण तेवखथो कालवखप० जायसुक्लिषवखपरिणतावि । ते वर्णयको कालेवर्णपरिणतहुवे यावत् मुक्तावर्णपरिणत  
हुवे । गधथा सन्निग्ध दुस्निग्धपरिणतावि । गधयको सुगध दग्धपरिणतहुवे । रसथो तित्तरस जाव मञ्जरसपरिणतावि । रसयको तित्तरस जाव  
च मधुरसपरिणतहुवे । फासथो कक्कफास प० जाव लज्जफासपरिणतावि । रसपर्यको कर्कशपर्यपरिणतहुवे यावत् रुचसपरिणतहुवे ॥ जेसठाण  
थो तससठाण प० ते वखथोकालवख प० जाय सुक्लिषवखपरिणतावि । जे संस्थानयको रसगन्धको कालेवर्णपरिणतहुवे यावत्

स्निग्धस्पर्शपरिणता २३' क्लृप्तस्पर्शपरिणता २३' एतेषां भेदब्रवीमहे जातं ब्रह्मकानां घटुरशीत्यधिकं ज्ञात १८४, मस्यान्तमधिकृत्याह-जैसंठाणउप  
रिमणलसंठाणपरिणताइत्यादि ॥ ये सस्यान्त परिमणलसस्यान्तपरिणता स्ते वर्णत ५ गम्यत २ रमत ५ स्पर्शत ८ गते सर्वे व्येकत्र मीलिता

दुस्निग्धपरिणतावि, रसउ तित्तरसपरि० कसायरसपरि० अण्विलरसपरि० मज्जरसपरिण  
तावि, फासउ कक्कफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीतफासपरि० उस्सिण  
फासपरिणतावि, सठाणउ परिमंळलसठाणपरि० चट्टसठाणपरि० तंसंठाणपरि० चउरससठाणपरि०  
अयतसठापरि० । जे संठाणउ परिमंळलसठाणपरिणता ते वसुउ कालवसुपरि० नीलवसुपरि० लोहित  
वसुपरि० हालिद्वयपरि० सुक्किल्लवसुपरिणतावि, गंधउ सुस्निग्धपरिणतावि दुस्निग्धपरिणतावि, र  
सउ तित्तरसपरि० कक्रुयरसपरि० कसायरसपरि० अण्विलरसपरि० मज्जरसपरिणतावि, फासउ कक्क  
फासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीतफासपरि० उस्सिणफासपरि० णिठ्ठफास

गव दुग्धिगन्धपरिणतावि । गन्धको सुगन्ध दुर्गन्धपरिणतहुवे । रसको तित्तरस प० जावमहुरस परिणतावि । रसको तित्तरसपरिणतचुव यावत्  
मधुररसपरिणतहुवे । फासको कक्कडफास प० मउयफास प० गरुयफास प० लज्जयफास प० सीतफास प० उस्सिणफास परिणतावि । स्पर्शको कर्कश  
स्पर्श प० गुनस्पर्श प० लघुस्पर्श प० श्रोतस्पर्श प० उग्रस्पर्श परिणतहुवे । संठाणको परिमंळलसठाण प० जाव आययसठाणपरिणतावि । सस्यान्तको  
परिमंळलसस्यान्तपरिणतहुवे यावत् आवतसस्यान्तपरिणतहुवे ॥ जे संठाणको परिमंळलसठाण प० ते यण्णो कालवसु प० जाव सुक्किल्लवसु परिणता  
वि । ते वण्णको कालेवर्णपरिणतहुवे यावत् स्वैतवर्ण परिणतहुवे । गंधको सुस्निग्ध दुग्धिगन्धपरिणतावि । गन्धको सुगन्ध दुर्गन्धपरिणतहुवे । रसको  
तित्तरस प० यावत् मधुररसपरिणतावि । रसको तित्तरस यावत् मधुररसपरिणतहुवे । फासको कक्कडफास प० मज्जरफास प० गरुयफास प० लज्ज

विशति २० मतायन्तो जङ्गान् परिमण्डलस्थानपरिणता लभन्ते, एव वृक्षसंस्थानपरिणता २० ॥ मृगसंस्थानपरिणता २०, चतुरन्त्रगस्यान परिणता २०, आश्वतथसंस्थानपरिणता २० ॥ अमीषा चैकप्रतीनेन लब्ध जङ्गकानां शत, एषा च वर्णगन्धरसपञ्चसंस्थानानां समलनद्गुसङ्गानां

परि० लुक्कफासपरिणतावि । जेसठाणने वहसठाणपरि० ते वखने कालवखपरि० नीलवखपरि० लोहि तवखपरि० हालिद्ववखपरि० सुक्लिखपरिणतावि, गधने सुप्रिगधपरि० दुप्रिगधपरिणतावि, रसने ति त्रसपरि० कद्रुयसपरि० कसायसपरि० अचिलरसपरि० मज्जरसपरिणतावि, फासने कक्कफासप० मउयफासपरि० गुसयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० गिन्दफासपरि० लुक्क फासपरिणतावि । जेसठाणने तससठाणपरि० ते वखने कालवखपरि० नीलवखपरि० लोहितवखपरि० हालिद्ववखपरि० सुक्लिखपरिणतावि, गधने सुप्रिगधपरिणतावि दुप्रिगधपरिणतावि, रसने तित्तर सपरि० कद्रुयसपरि० कसायसपरि० अचिलरसपरि० मज्जरसपरिणतावि, फासने कक्कफासपरि०

वफाम प० सोउफाम प० उमिणफाम प० गिदफाम प० लुक्कफाम परिणतावि । रमयको कर्कगरमर्गपरिणतहुवे मृदुरमर्गपरिणतहुवे गुररमर्गपरिण तहुवे लदुरमर्गपरिणतहुवे भोतरमर्गपरिणतहुवे उण्णमर्गपरिणतहुवे विम्वरमर्गपरिणतहुवे रुचरमर्गपरिणतहुवे ॥ जे सठाणभो वटसठाणपरिणतावि जे संस्थानवको वृत्तसंस्थानपरिणत ते पिण तेवक्कभो कालवखप० जावसुक्लिखपरिणतावि । ते वर्णवक्को कालेवर्णपरिणतहुवे यावत् युक्कवर्णपरिणत हुवे । गधका सुभिगध दुभिगधपरिणतावि । गधपको सुगध दुर्गवपरिणतहुवे । रसभो तित्तरस जाव मज्जरसपरिणतावि । रमयको तित्तरस जाव त मधुररसपरिणतहुवे । फासभो कक्कफाम प० जाव लसक्कफामपरिणतावि । रमर्गपको ककायमर्गपरिणतहुवे यावत् रुचसमर्गपरिणतहुवे ॥ जेसठाण भो तससठाण प० ते वण्णभोकानवक्क प० जाव सुदिक्कवखपरिणतावि । जे संस्थानवको भग्यसंस्थानपरिणतहुवे ते वर्णवक्को कालेवर्णपरिणतहुवे यावत्

जातानि त्रिशदधिकानि पञ्चदशानि । इह यद्यपि द्वादरेषु स्मर्येषु पञ्चापि वर्णा द्वावपिगन्धौ पञ्चापिरसा प्राप्यन्ते ततोवधीकृतवर्णादिव्यति  
रेकेणा शीपवर्णोद्विजिरपि नङ्गा सम्भवन्ति तथापि तेष्वेव द्वादरेषु स्मर्येषु व्यवहारत केवलकृत्त्रागर्णोद्युयेता अपान्तरालस्कन्धा यथादेहस्कन्धस्यैव  
लोचनस्कन्ध कृत्स्न स्तदन्तर्गतस्य कश्चिद्विहितोऽन्य स्तदन्तर्गतस्य शुक्लइत्यादि ते इहविवक्ष्यन्ते तेषाम्चा न्यद्वर्णान्तरादि नसम्भवति, स्पञ्चचिन्ताया

मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिष्ठफासपरि० लु  
रुक्तासपरिणतावि । जे सठाणजे चउरससठाणपरिणता ते वखनु कालवखपरि० नीलवखपरि० लोहि  
यवखपरि० हालिद्ववखपरि० सुक्लिबवखपरिणतावि, गधनु सुस्निगधपरि० दुस्निगधपरिणतावि, रसनु  
तितरसप० कद्रुयरसप० कसायरसपरि० झुविलरसपरि० मज्जरसपरिणतावि, फासनु कस्करुफासपरि०  
मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिष्ठफासपरि० लुक्क  
फासपरि० । जे सठाणजे झायतसठाणपरिणता ते वखनु कालवखपरि० नीलवखपरि० लोहितवखप०

स्वतवर्णपरिणतह्वे । गधनो सुभिगध दुभिगधपरिणतावि । गवयको सुगन्ध दुर्गन्धपरिणतह्वे । रसओ तितरस जाव मङ्गुररसपरिणतावि । रस  
यको तितरस यावत् मङ्गुररसपरिणतह्वे । फासओ कस्करुफास प० जाव लूखफासपरिणतावि । स्रग्धको कर्कयस्यं प० रुक्मस्यंपरिणतह्वे ।  
जे सठाणओ चउरससठाणपरिणतावि । जे संस्थानयको चउरससंस्थानपरिणतह्वे । ते वखओ कालवखपरिणता जाव सुक्लिबवखपरिणतावि । ते वर्ण  
ओ कालेनर्णपरिणत यावत् यक्कवर्णपरिणतह्वे । गधओ सुभिगध दुर्भिगधपरिणतावि । रसयको सुगधदुर्गधपरिणतह्वे । रसनो तितरस प०  
जाव मङ्गुररसपरिणतावि । रसयको तितरस यावत् मङ्गुररसपरिणतह्वे । फासओ कस्करुफास जाव लूक्मफासपरिणतावि । स्रग्धको कर्कयस्यं  
परिणतह्वे यावत् रुक्मस्यंपरिणतह्वे । जे सठाणओ झायतसठाणपरिणता । जे संस्थानयको झायतसंस्थानपरिणतह्वे । ते वखओ कालवख प०





र्थ, तेचते जीवाश्च तेषां प्रज्ञापनां ससारसमापन्नजीवप्रज्ञापनां नसंसारोऽसंसारो मोक्षस्तसमापन्ना अससारसमापन्ना, मुक्ता इत्यर्थ, तेचते जीवाश्च तेषां प्रज्ञापनां अससारसमापन्नजीवप्रज्ञापनां, चक्षुर्दो प्राग्वत् तत्राल्पवक्तव्यत्वात्प्रथमतोऽससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना मन्त्रिचित्सुस्तद्विषयप्रश्नसूत्रमाह-सेकितमित्यादि ॥ अथ कासा अससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना? सूरिराह-अससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-अनन्तरसिद्धाऽससारसमापन्नजीवप्रज्ञापनाच परम्परसिद्धाऽससारसमापन्नजीवाश्च अनन्तरसिद्धाऽससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना स्तेचते सिद्धाऽनन्तरसिद्धा, सिद्धत्वप्रथमसमये वर्तमाना इत्यर्थ, स्तेचते अससारसमापन्नजीवाश्च अनन्तरसिद्धाऽससारसमापन्नजीवा स्तेषां प्रज्ञापना अनन्तरसिद्धाऽससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना, चक्षुर्द स्वगतानेकनेदसूचक, स्तथा विवक्षिते प्रथमेसमये यस्मिन् स्तस्य यो द्वितीयसमयसिद्ध सपर स्तस्यापि यस्तृतीयसमयसिद्ध सपर एव मन्त्रेपिवाच्या, परंचपरंचेति वीर्याया, वृषोदरादय इति परम्परशब्दनिष्पत्तिः,

समावण्णजीवपण्णवणा अण्णसारसमावण्णजीवपण्णवणा दुविहा पण्णत्ता, तज्जहा-अण्णंतरसिद्धअण्णसारसमाव  
ण्णजीवपण्णवणा परपरसिद्धअण्णसारसमावण्णजीवपण्णवणा । से किंत अण्णंतरसिद्धअण्णसारसमावण्णजीवपण्ण

अजीवप्रज्ञापना जाणपणे' कही ॥ १ ॥ सेकितजीवपण्णवणा जीवपण्णवणा दुविहा पण्णत्ता तज्जहा । हिंवे अठा आगि अजीवराभेदकक्षा पळे जीवरो जाणपणो ग्रियपूळेके जीवप्रज्ञापनानाभेद गुणकहे-ते जीवप्रज्ञापना दोयप्रकारे तेजिम । ससारसमावण्णजीवपण्णवणा । ससारप्राप्त ते समारीजीव ससारमाहिरहेके ते जीवप्रज्ञापना । अससारप्राप्त असमारीजीव ते सिद्धका जीव कर्मरहित ते असमारसमापन्नजीवप्रज्ञापना । सेकितअससारसमावण्णजीवपण्णवणा २ दुविहा पण्णत्ता तज्जहा । ते जिमहे तिम अससार मन्त्राप्त जीवप्रज्ञापनाना दोयभेदकक्षा तेहीजकहे-ससारसमावण्णजीवपण्णवणा । ते ससारस्य जीवप्रज्ञापना । अससारसमावण्णजीवपण्णवणा । अससारम्य जीवप्रज्ञापना सेकितअससारसमावण्णजीवपण्णवणा । ते कुण अससारप्राप्त जीवप्रज्ञापना । अससारसमावण्णजीवपण्णवणा दुविहा पण्णत्ता तज्जहा । अससार ससार

परम्पराद्य तसिद्धाश्च परम्परसिद्धा विवक्षितसिद्धस्य प्रथमसमायात्राप्रक् द्वितीयादिसमये श्रुतीताया यद्वर्तमाना इति ज्ञातव्यं, स्तेषु ते असंसारसमापत्ताय च परम्परसिद्धासंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना, अत्रापि च शब्द स्वगतानेकानन्दसूक्ष्म ॥ संकितमित्यादि ॥ अथ का सा अनन्तरसिद्धाऽसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना ? सूरि राह-अनन्तरसिद्धासंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना पञ्चदशविध सुपाधिभेदतः पञ्चदशविधत्वात्, तदेव पञ्चदशविधस्वतंत्र्याभावे-तज्ज्ञेत्यादि ॥ तद्यथेति । पञ्चदशभेदो पदार्थानुसूचक, तीर्थसिद्धा तीर्थते संसारसागरोऽनेनेति तीर्थं यथावस्थितमकलजीवाजीवादिपदार्थसायं प्ररूपक परमगुरुप्रणीत प्रवचन, तच्च निराधार नञयती तिसृषु । प्रथमगणधरोवा येदित्यत्र, उक्तच-तिरथत्रतेतिरथ तिरथकरेतिरथ गो ? आरिहाताय तिरथकरे तिरथ पुण चाउद्यलो सम गणधरो पठमगणधरो वा इति, तस्मिन्नुत्पन्ने ये सिद्धा स्ते तीर्थसिद्धा । १ । तथा तीर्थस्या प्रावोऽतीर्थ, तीर्थस्या आवाद्या नुत्पादोऽपान्तराले व्यवच्छेदो वा, तस्मिन् ये सिद्धा स्तेऽतीर्थसिद्धा स्तत्र तीर्थस्या नुत्पाद सिद्धा मरुदेवीप्रजृप्तय, नहि मरुदेव्यादिसिद्धिगमनकाले तीर्थं नुत्पन्न मासीत्, तथा तीर्थस्य व्यवच्छेद सुविधत्वाभ्यापान्तरालेषु तत्र य जातिस्मरणादिना उपवगमार्गमवाप्य सिद्धा स्ते तीर्थव्यवच्छेदसिद्धा । २ । तथा तीर्थं करा सन्तो ये सिद्धा स्ते तीर्थकरसिद्धा । ३ । सामान्यकेवलिन सतो ये सिद्धा स्तेऽतीर्थकरसिद्धा । ४ । स्वयम्बुद्धा सतो ये सिद्धा स्ते स्वयम्बुद्ध सिद्धा । ५ । प्रत्येकबुद्धा सतो ये सिद्धा स्ते प्रत्येकबुद्धसिद्धा, अथ स्वयम्बुद्धप्रत्येकबुद्धानां क प्रतिविज्ञोप उच्यते बोध्यपथिश्रुतलिङ्गकृतो विज्ञोप, तथा हि-स्वयम्बुद्धा बाल्यप्रत्यय मन्तरंैव निजजातिस्मरणादिना बुद्धा स्वयम्बुद्धा इति व्युत्पत्ते, ते च द्विधा तीर्थकरा स्तोयंकरव्यतिरिक्ताश्च

वणा ? अगतरसिद्धासंसारसमापन्नजीवपस्रवणा पसरसविहा पस्रता, तजहा-तित्यसिद्धा १ अतित्य सिद्धा २ तित्यगरसिद्धा ३ अतित्यगरसिद्धा ४ सयबुद्धसिद्धा ५ पत्तेयबुद्धसिद्धा ६ बुद्धबोहियसिद्धा ७

नीपरे ते प्रत्येकबुद्ध ६ एकपदाधरूप सचेतन तथा अचेतन देखोजातिरमरण भ्रान्त्यो करकहूनमिन्नगार बुद्धवाधितसिद्ध ७ आचार्यैरणधरेपतबोव्या

इहतीर्णकरव्यतिरिक्ते रधिकार आहव नन्यथयनचूणिर्कृत-दुविहा सयबुद्धा तितययरा तितययरा इति, प्रत्येकबुद्धा स्तु बाह्यप्रत्यय मपेत्य प्रत्येक याह्य वृषत्रादिक कारण मभिसमीत्य बुद्धा प्रत्येकबुद्धा इतिव्युत्पत्ते, तथाच श्रूयते बाह्यप्रत्ययसापेक्षा करकद्वीदीना योपि, वरि प्रत्यय मपेत्य च तेबुद्धा सती नियमत प्रत्येक मेव विहरन्ति न गच्छवासिनइव सदृता, आहव नन्यथयनचूणिर्कृत-पतेय बाह्य वृषमादिक कारण मभिसमीत्य बुद्धा वहि प्रत्ययप्रतिबुद्धाना पतेय नियमा विहारो जम्हातम्हाय ते च पतेयबुद्धा इति, तथा स्वयम्बुद्धाना मुपधि ह्रादशविषयव पात्रादिक, प्रत्येकबुद्धानातु द्विधा जघन्यत स्तथो तर्कपतय, तत्र जघन्यतो द्विविध, उत्कर्षतो नवविध प्रावरणवर्ज, उक्तच-पतेयबुद्धान जहन्नेण दुविहो उक्तीषेण नवविहो नियमा पाउरणवर्जो अवइ ति, तथा स्वयम्बुद्धाना पूगंपीत श्रुत भव ति वानवा यदिजवति ततो लिङ्ग देवतावा प्रयच्छति गुरुसन्निधीवा गत्या प्रतिपद्यते, यदिचै काकी विचरणसमयं इच्छाया तस्य तयारूपा जा

यते तत एकाकी विहरति, अन्यथा गच्छवासे ऽवतिष्ठते, अथ पूर्वोपीत श्रुत तस्य सन्नवति तर्हि नियमा गुरुसन्निधी गत्या लिङ्गप्रतिपद्यते गच्छ  
 १ वश्य नमुञ्चति, तथाषोक्त-पुष्पादीय मुय से इयइ वान वा जइ से नरिथ तो निग नियमा गुरुसन्निधि पन्निवज्जिय गच्छेय विहरइति  
 अर पुष्पाधीय सुयसमवो अरिथ तो मेलिग देवया पविच्छइ गुरुसन्निधेवा पन्निवज्जइ जइ य रगविहारविचरणसमयो इच्छावा से तो एको  
 सेव विहरइ अन्नहा गच्छे विहरइति । प्रत्येकबुद्धानातु पूर्वोपीत श्रुत नियमतो भवति, तच्च जघन्यत एकादशाङ्गान्यु त्कपत किञ्चिन्न्यूनानि  
 दशपूर्वाणि, तथा लिङ्ग तस्मै देवता प्रयच्छति, लिङ्गरहितोवा कदाचि जवति तथाषोक्त-पतेयबुद्धान पुष्पादीय सुय नियमा इवइ जहन्नेण एका  
 रसअगा उक्तीषेण भिन्नदसपुद्दी लिगच से देवया प्रयच्छइ लिगवज्जिजे वा जवइ जउ नणिप रूप्य पतेयबुद्धा इति । ६। तथा बुद्धा आचार्यो स्ते  
 वीथिता सती ये सिद्धा स्ते शुद्धधीपितसिद्धा । ७। एतेच सर्वेपि केचि र्कोलिङ्गसिद्धा त्रिपालिङ्ग स्त्रीलिङ्ग पतज्जणमित्यपे, तच्च त्रिया

वेदं गरीरनिर्गुंति नेपथ्यं च तत् इह शरीरनिर्गुंत्या प्रयोजनं न वेदनेपथ्याभ्यां वेदे सति सिद्धत्वाभावात्, नैपथ्यस्य चा प्रमाणात्वात्, आह च-  
नन्ध्याप्यनचूर्णिरुत्-इत्यथीय लिंग इत्यथिलिङ्ग इत्यथीय लयलक्षणाति वृत्तं प्रवद, त च तिविह वेदो शरीरनिर्गुंतीए नेपथ्ये च इह शरीरनिर्गुंतीय  
श्रद्धिगारो न वेदनेपथ्ये हि तत् तत् स्मिन् निर्द्वयवत्तमाना सती ये सिद्धा स्ते स्त्रीलिङ्गसिद्धा, एतेन यदाहु राशाबरा नस्त्रीणानिर्वाणमिति  
तद पास्त द्रष्टव्य, स्त्रीनिर्वाणस्य साक्षा दनेन सूत्रेण ज्ञियानात्, त एतत्तिवेधस्य युत्वनुपपन्नत्वा तथाहि-मुक्तिपथो ज्ञानद्वयनचारित्राणि, स  
म्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्ग इतिवचनात् सम्यग्दर्शनादीनि पुरुषाणामिव स्त्रीणां म प्यविकलानि दृश्यन्ते तथाहि-दृश्यन्ते स्त्रियोपि सक  
लमपि प्रवचनाय मभिरोच्यमाना ज्ञानते च परावश्यककालिकोदकालिकादिभेदजिन श्रुत परिपालयन्ति समदर्शप्रकार मकलङ्क सयम धारय  
न्ति च देवामुराणामपि दुर्धरं ब्रह्मचर्यं तप्यते च तपसि मासलपणादीनि तत कथं भिन्नतसा मोक्षसज्जव ? (नग्न प्राह) स्या देतद स्ति स्त्रीणां सम्यग्

दर्शनं ज्ञानं वा न पुनश्चारित्रं सयमाज्ञावात्, तथाहि-स्त्रीणां मवश्यं वस्त्रपरिजोगेन भवितव्यं मन्यया विवृतांग्यं स्ता स्तिर्यक्स्त्रियइव पुरुषाणां  
मज्जिभवनीया प्रवेयु, लोके च गृहार्थं पजायते ततो वश्यं तां ज्ञि वस्त्रं परिजोक्तव्यं, वस्त्रपरिजोगे च सपरिग्रहता, सपरिग्रहत्वे च सयमाज्ञाव  
इति, (सैद्धान्तिक) तदसमीचीनं सम्यक् सिद्धान्तापरिज्ञानात्, परिग्रहो हि परमार्थतो मूर्च्छां जिघीयते, मूर्च्छा परिग्रहो वृत्तो इतिवचनात्, तथा  
हि-मूर्च्छाराहितो भरत धकवर्ती सान्त् पुरो प्या दर्शं कृष्टे वतिष्ठमानो निष्परिग्रहो गीयते, ग्रन्थयाकेयलोत्पादो न सज्जयेत्, अपि च-यदिमूर्च्छाया  
अनार्वेपि वस्त्रसंसर्गमात्रं परिग्रहो भवे ततो जिनकल्पप्रतिपत्तस्य कस्यचि त्साधो स्तुपारङ्गणानुपक्ते प्रपतति ज्ञीते केना प्यविपक्ष्यो पनिपात मद्य  
ज्ञीत मिति विज्ञाय धर्माधिना शिरसि वस्त्रे प्रक्षिप्ते तस्य सपरिग्रहता ज्ञवेत् नवे तदिष्ट तस्मा न वस्त्रसंसर्गमात्रं परिग्रह, किं तु मूर्च्छां सा  
च स्त्रीणां यत्नादिपु न विद्यते धर्मापकरणमात्रतया तस्यो पादानात्, न खलु ता वस्त्र मतरंणा त्मानं रक्षयितुं भीशते नापि ज्ञीतकालादिपु

वाग्दशाया स्वाध्यायादिकं कर्तुं, ततो दीर्घतरस्यमपरिपालनाय यतनया वस्त्र परिजुञ्जाना न ता परिग्रहयत्य, अयो ध्येत सन्नवति नान स्त्री  
णा अपि सम्यग्दशनादिकरत्नत्रय पर न तत्सन्नयमात्रेण मुक्तिपदप्रापकं ब्रवीति, किं तु प्रकर्मप्राप्तं मन्मथादीक्षानन्तर मेव सर्वेषां मध्य विज्ञेया  
मुक्तिपदप्राप्तिप्रसक्तिः, सम्यग्दर्शनादिरत्नत्रयप्रकर्षं च स्त्रीणां मसम्भवी ततो न निर्वाण मिति, तदप्युक्तं स्त्रीपुरत्नत्रयप्रकर्षं स्सम्भवति, स  
म्भयग्राहक प्रमाणं विजृम्भते देशकालविमर्शेऽप्युक्तप्रत्यक्षस्याप्रवृत्तः, स्तदप्रवृत्तीचा नुमानस्याप्यसम्भवात्, नापि तासु रत्नत्रयप्रकर्षां सम्भयप्रति  
पादक को प्यागमो विद्यतः प्रत्युतसम्भयप्रतिपादक स्थाने २ स्ति, यथा इदमेव प्रस्तुतं सूत्रं ततो न तासां रत्नत्रयप्रकर्षासंज्ञा, उच्यते अन्यथा स्वभाव  
तएवा तपेनेव छाया विरुध्यते स्त्रीत्वेन सह रत्नत्रयप्रकर्षं, स्ततस्तदसंज्ञा नुमीयत, तदयुक्तं मुक्तं युक्तिविरोधात्, तथाहि-रत्नत्रयप्रकर्षं स उ  
च्यते ततो नन्तर मुक्तिपदप्राप्तिः, स चा योग्यवस्था चरमसमयभावी अयोग्यवस्था चा स्मादुग प्रत्यक्षा तत कथं विरोधगतिः ? नहि अदृष्टेन स

ह विरोध प्रतिपत्तुं शक्यते, माप्रापत् पुरुषेष्वपि प्रसङ्गं (नग्नं) ननु जगति सर्वोत्कृष्टपदप्राप्तिः सर्वोत्कृष्टेनाध्यवसायेना वाप्यते ना न्यथा, एतच्चो ज्ञ  
यो रप्या वयो रागमप्राभाष्यश्रुतं सिद्धं सर्वोत्कृष्टदुःखस्थानं सर्वोत्कृष्टसुखस्थानं च, तत्र सर्वोत्कृष्टदुःखस्थानं सप्तमनरकपृथ्वी अत पर परमदुःखस्था  
नस्या ज्ञावात्, सर्वोत्कृष्टसुखस्थानं तु नि श्रेयस, तत्र स्त्रीणां सप्तमनरकपृथिवीगमन मागमे निषिद्धं, नियेषस्य च कारणं, तद्वनयोग्यतया विधेयसर्वो  
त्कृष्टमनोवीर्यपरिणत्य ज्ञाय स्ततः, सप्तमपृथिवीगमनवत्यान्नावात् समूर्च्छिमादिवत्, अपि च यासां वादलब्धौ विमुक्तेश्चादिलब्धौ पूर्वगतश्रुताधिग  
तो च न सामर्थ्यगति स्तासां मोक्षगमनसामर्थ्यं नित्यं तितु श्रेष्ठेय (सैद्धान्तिकं) तदेतदयुक्तं, यतो यदि नाम स्त्रीणां सप्तमनरकपृथिवीगमनप्रति सर्वो  
त्कृष्टमनोवीर्यपरिणत्य ज्ञाय, स्तत एतावता कथं भवसीयत नि श्रेयसमपि प्रति तासां सर्वोत्कृष्टमनोवीर्यपरिणत्य ज्ञावो नहि यो भूमिकर्मणादिकं क  
र्मकर्तुं न शक्नोति स ग्रास्याख्यप्य वगाढं न शक्नोतीति प्रत्येत्तु शक्यं प्रत्यक्षविरोधात्, अयं समूर्च्छिमादियुक्तं नयत्रापि सर्वोत्कृष्टमनोवीर्यपरिण

त्यज्ञावोदृष्ट स्ततो वा वसीयते, ननु यदि तत्र दृष्ट स्तर्हि कथं मन्त्रावसीयते, न खलु बहि व्याप्तिमात्रेण हेतु गमको जवति कि त्वन्तर्व्याप्त्या, ऽन्तर्व्याप्तिश्च प्रतिबन्धयनेन, न वा त्र प्रतिबन्धो विद्यते, न खलु सप्तमपृथिवीगमन निर्वाणगमनस्य कारण, नापि सप्तमपृथिवीगमनाविनाभावो निर्वाणगमन चरमशरीरिणा सप्तमपृथिवीगमन मन्तरणैव निर्वाणगमनाभावात्, न च प्रतिबन्ध मन्तरण एकस्याभावे न्यस्या वश्य मन्त्रावो माप्राप्यत् यस्य तस्य वा कस्याचिद् ज्ञावे सर्वस्या ज्ञावप्रसङ्ग, यद्येव तर्हि कथं समूर्च्छिमादिषु निर्वाणगमनाभाव इति? उच्यते-तथात्रवस्वाज्ञाव्यात्, तथाहि-समूर्च्छिमादयो ज्ञवस्वाज्ञावतएव न सम्यग्दर्शनादिक यथाव तप्रतिपत्तुं शक्यन्ते, ततो न तेषा निर्वाणसन्निवृत्तिः, स्त्रियस्तु प्रागुक्तप्रकारेण यथाव त्सम्यग्दर्शनादिरत्नत्रयसम्यग्योग्या स्तत स्तासा न निर्वाणगमनाज्ञाय, अपि च भुजपरिसर्या द्वितीया मेव पृथिवी याव द्रुच्छन्ति न परत परपृथिवीगमनहेतुस्तथास्तपमनोवीर्यपरिणत्यज्ञावात्, वृतीयायावत्पक्षिण, श्रुतुयी चतुष्पदा, पञ्चमी मुरगा, अथ च सर्वं प्यु द्वं मुत्कपंत सहस्रार याव द्रुच्छन्ति तत्रा धोगतिविषय मनोवीर्यपरिणतियेपम्यदर्शना दूढंगताव पि च न त द्वेपम्यु ग्राह च-विषयगतयो प्यथस्ता दुपरिष्टा तुल्यमासहस्रार। गच्छन्तिचतियेष्व स्तदधोगत्यनताहेतु ॥ १ ॥ तथाचसति सिद्ध, स्त्रीपुसा मधोगतिवेपम्ये पि निर्वाण सम, यद प्यु क्त मपि च यासा वादलब्ध्या वित्यादि तद प्यक्षील वादिविकुवणत्वादिलब्धिविरहे पि विग्रिष्टपूर्वगतश्रुताभावे पि मानुषादीना निश्रेयसपदाधिगमश्रवणा दा हच-वादविकुवणत्वाल्लिग्गिरहे श्रुते कनीयसि च जिनकल्पमन पर्यविरहे पि न सिद्धिविरहो स्ति अपि च यदि वादादिलब्धभावावत् नि श्रेयसाभावो पि स्त्रीणा मन्त्रविषयत् तत सत्यैव सिद्धाते प्रत्यपादयिष्यत्, यथा जडयुगो दारात् केवलज्ञानाभावो न च प्रतिपाद्यते, तस्मा दु

इत्थील्लिगसिद्धा ८ पुरिसलिगसिद्धा ९ नपुसकलिगसिद्धा १० सलिगसिद्धा ११ अखलिगसिद्धा १२ नि

उपदेशेयैकरी जडवत्। इत्थील्लिगसिद्धा ८। स्त्रीलिगेनिवर्त्तनीयरीर तेष्वीमिह। पुरिसलिगसिद्धा ९। पुरुषविहसिद्धिज्ञा गणधरसाधुलपाध्याय। नपुसक लिगसिद्धा १०। कविम कीर्तीगानपुसक तेषिह इवा। सलिगसिद्धा ११। स्वलिगोनिष्ठपामेते। अखलिगसिद्धा १२। अख्येयैकरोमिह। गिहिलिगसिद्धा १३।

पपद्यते स्त्रीणा निर्वाणं भितिं कृतं प्रसङ्गेन ॥ तथा पुच्छिङ्गे शरीरनिर्वृतिरूपे व्यवस्थिता सन्ती के सिद्धा स्ते पुच्छिङ्गसिद्धा, एव नपुंसकलिङ्गसिद्धा ॥ १० ॥ तथा स्वलिङ्गे रजोहरणादिरूपे व्यवस्थिता सती ये सिद्धा स्ते स्वलिङ्गसिद्धा ॥ ११ ॥ तथा अन्यलिङ्गे परित्राजकादिसम्यधिनि वल्लक लक्षापायादिरूपे द्रव्यलिङ्गेव्यवस्थिता सती ये सिद्धा स्ते अन्यलिङ्गसिद्धा गृहलिङ्गसिद्धा मरुदेवीप्रजृतय, तथा एकस्मिन् समये एकभाएवसन्त सिद्धा एकसिद्धा ॥ अनेकसिद्धा इति ॥ एकस्मिन् समये अनेके सिद्धा अनेकसिद्धा, अनेके च एकस्मिन् समये सिद्धान्त उत्कर्षंतीं ऽष्टोत्तरशतसङ्ख्या वेदितव्या, यस्मा दुक्त-वृत्तीसा अक्रयाला, सही यावत्तरीय बोधव्या ॥ धुलसीइ क्लृप्तं, दुरहियमदुत्तरसय च ॥ १ ॥ अस्या विनेयजनानुग्रहाय व्याख्या-अष्टौ समयान् यावत्तिरन्तरं मेकादयो द्वात्रिंशत्पर्यन्ता सिद्धान्त प्राप्यन्ते, किं मुक्तं प्रवर्तते? प्रथमे समये जचन्वन्त एको द्वौ वा उत्कर्षंती द्वात्रिंशत्पर्यन्त प्राप्यते, द्वितीये पि समये त्रयस्य एको द्वौ वा उत्कर्षंती द्वात्रिंशत्, एव यावदष्टमे पि समये एको द्वा वृत्तर्षंती द्वात्रिंशत्, तत परम वश्य मन्तर, तथा त्रयस्त्रिंशदादयो दृष्टत्वारिंशत्पर्यन्ता निरन्तर सिद्धान्त सप्तसमयान् यावत्प्राप्यन्ते परतो नियमा दन्तर' तथा एकोनपञ्चाशदादय पष्टिपर्यन्ता निरन्तर सिद्धान्त पदसमयान् यावद् वाप्यन्ते परतो अवश्य मन्तर' तथा एकपञ्चाशदयो द्वि सप्ततिपर्यन्ता निरन्तर सिद्धान्त उत्कर्षंती पञ्चसमयान् यावद् वाप्यन्ते तत परम मन्तर, त्रिसप्तत्यादयश्चतुरशीतिपर्यन्ता निरन्तर सिद्धान्त उत्कर्षंती चतुर समयान् यावत्तत्तत्कर्षं मन्तर, तथा पञ्चाशीत्यदय पण्यति पर्यन्ता निरन्तर सिद्धान्त उत्कर्षंती स्त्रीनसमयान् यावत्परतो नियमा दन्त र. तथा सप्तनवत्यादयो द्युत्तरशतपर्यन्ता निरन्तर सिद्धान्त उत्कर्षंती द्वौ समयौ परतो वश्यमन्तर, तथा अ्युत्तरशतादयो ऽष्टोत्तरशतपर्यन्ता सिद्धान्तौ नियमा देकमेवसमय यावद् वाप्यन्ते, न द्विव्य. दिसमयान्, तदे व मेकस्मिन् समये उत्कर्षंतीं ऽष्टोत्तरशतसङ्ख्या सिद्धान्त प्राप्यन्ते इत्य

**हिलिगसिद्धा १३ एगसिद्धा १४ अंगगसिद्धा १५। सेतं अण्णतरसिद्धससारसमात्रसजीवपसुवणा । से कि**

एहस्वलिगसिद्धं प्रथमं चिन्तनात्तामरुदेवीपरे । एगसिद्धा १४। एकेसमेसिद्धा इवा ते एकसिद्ध । अण्णसिद्धा १५। अनेकसिद्ध एकेसमेसिद्ध ते । सेसपसुवत्तरसिद्ध





उत्सारसमापन्नजीवप्रज्ञापना ? सूरिराह-परम्परसिद्धाससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना श्रमेकविधा प्रज्ञा, परम्परसिद्धाना मनेकविधत्वा, स देवा नेकविधत्वा साह-तजहे त्यादि ॥ तद्यथे त्यनेकविधत्वोपदर्शने, अग्रथमसमयसिद्धा इति, न प्रथमसमयसिद्धा अग्रथमसमयसिद्धा परम्परसिद्धविशेषाग्रथमसमयवर्तिन सिद्धत्वसमया द्वितीयसमयवर्तिन इत्यर्थे, आदिपुत्रसमयेषु द्वितीयसमयसिद्धादप उच्यते-यद्वा सामान्यतः प्रथम समयसिद्धा इत्युक्तं, तत एत द्वितीयतो व्यास्ये, द्विसमयसिद्धा, क्षतु समयसिद्धा इत्यादि, यावच्छब्दरूपात् पञ्चसमयसिद्धादप परिरुच्यन्ते सेतमित्यादिनिगमनद्वयसुगम, तदेव मुक्ता असारसमापन्नजीवप्रज्ञापना । सम्प्रतिससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना पञ्चविधा प्रज्ञा, तद्यथा-एकंन्द्रियससारमेकितमित्यादि । अथ का सा ससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना ? सूरिराह-ससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना पञ्चविधा प्रज्ञा, तद्यथा-एकंन्द्रियससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना इत्यादि । तत्रै क स्पष्टानलक्षणमिन्द्रिय मेपान्ते एकंन्द्रिया, पृथिव्यभ्युत्तेजीवायुवनरश्पतयो बह्ममाणस्वरूपा स्ते घते ससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना इत्यादि ।

समयसिद्धा शृणुतसमयसिद्धा, सेत परपरसिद्धाससारसमापन्नजीवप्रज्ञा । सेतं अ्ससारसमापन्नजीवप्रज्ञावपणवणा । से कित ससारसमापन्नजीवप्रज्ञावणा ? संसारसमापन्नजीवप्रज्ञावणा पंचविहा पणत्ता तंजहा एगिदियससारसमापन्नजीवप्रज्ञावणा वेहुंदियससारसमापन्नजीवप्रज्ञावणा तेहुंदियससारसमापन्नजीवप्रज्ञावणा

मयसिद्धा । अग्रथमसमयसिद्ध मध्यमसमययो आगैममवै सोधाते अप्रथमसमयसिद्ध । दुममयसिद्धा । इमवैजासमयनासिद्ध । तिसमयसिद्धा । तीजासमयनासिद्ध । चउममयसिद्धा । इमवैजासमयनासिद्ध । जावसविज्जममयसिद्धा । इमयायत् सव्यातसमयनासिद्ध । पणत्तरपसखिज्जममयसिद्धा । इमथनतरसमयनासिद्ध असव्यातसमयनासिद्धा । सेतपरपरसिद्ध ममसारसमापन्नजीवप्रज्ञावणा । तजिमहेतु परपरयैसिद्ध पञ्चमारसमापन्नजीवप्रज्ञापना कही ॥ सेतअमसारसमापन्नजीवप्रज्ञावणा । तेतिमएतलेअससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना कही इतिसपूर्णा ॥ सेकितससारसमापन्नजीवप्रज्ञावणा पंचविहापतं । इहिवैपठा आगैमिगिय गहे कु ग तिनममारसमापन्नजीवप्रज्ञापना २ पचै गकारै केहो तेतिम । एगिदियससारसमापन्नजीवप्रज्ञावणा । एकेदियससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना एक

मायनपीयाय तेषामपना एकेन्द्रियससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना, एव सर्वपदे दृढरघटना कार्या, नवर, हेरषर्शनरसनालक्षणे इन्द्रिये येषां ते  
द्वीन्द्रियाः अक्षुक्षुक्तिकादयः, त्रीणि र्पर्शनरसनग्राहणलक्षणाणि इन्द्रियाणि येषां ते त्रीन्द्रियायूकामरकुणादयः, दृष्टारि र्पर्शनरसनाग्राहणचक्षुर्लक्ष  
णानि इन्द्रियाणि येषां ते चतुरिन्द्रिया दशमज्ञकादयः, पञ्च र्पर्शनरसनग्राहणचक्षुःश्रोत्रलक्षणाणि इन्द्रियाणि येषां ते पञ्चेन्द्रिया मरस्यमकरमनु  
ज्ञादयः, शरीराब्जैः कादि सुहृन्ना मिन्द्रियाणां र्पर्शादीनां मसव्यधराराशे रारभ्य प्रायोनेनैव क्रमेण लाज इति सम्प्रत्ययार्थं मित्य क्रमेणै  
केन्द्रियाद्युपन्यासः, इन्द्रियाणिषड्विधा-द्रव्येन्द्रियाणि भावेन्द्रियाणि च, तत्र द्रव्येन्द्रियाणि निर्धृत्युपकरणरूपाणि तानि च सविस्तरं, नन्वध्ययनदी  
क्षाया व्याख्यातानीति नञ्प्रयोगो व्याख्यायते, भावेन्द्रियाणि क्षयोपज्ञमोपयोगरूपाणि तानि चा नियतानि, एकेन्द्रियाणामपि क्षयोपज्ञमोपयो  
गरूपं भावेन्द्रियपञ्चकमभव केषांश्चित्तत्फलदशानात्, तथाहि-बहुलादयो मत्तकामिनीगीतच्यनिश्रवणसविज्ञासकटाक्षनिरीक्षणमुखद्विस्तसुरागणरूप  
गुणाग्राणरसाद्यादपदाद्यवयवरर्पणत प्रमोदभावेनकालोप मुपलभ्यन्ते पुष्पफलादिप्रयच्छन्ते उक्तञ्च - जकिरखउलाइण दीसइसेसदिउवलजोवि  
तेणित्यतदावरण करउयसमसनयोतेचि ॥ १ ॥ ततो नन्वावेन्द्रियाणि लोकिक्कव्यवहारपथावतीर्णकेन्द्रियादिव्यपदेशनिवन्धन किन्तु द्रव्येन्द्रियाणि,  
तथाहि-येयामेक वाह्य द्रव्येन्द्रियरर्पणलक्षणमस्ति ते एकेन्द्रिया, येषां हे तेद्वीन्द्रिया एव यायत् येषां पञ्च तेपञ्चेन्द्रिया, आइच-पचिदिउयि

णा चउरिदियससारसमावसुजीवपसत्रणा पचिदियससारसमावसुजीवपसत्रणा । से कित एगिदियससार  
समावसुजीवपसत्रणा ? एगिदियससारसमावसुजीवपसत्रणा पचित्रिहा पसत्रा , तजहा — पुढविकाइया

[illegible]

बडलो नरोवसुविसोवलनाउ तहविनन्नलइपे दिउतिवज्जिदियाजाया ॥ सेकितमित्यादि ॥ अथ कासा एकेन्द्रियसमारसमापन्नजीवप्रज्ञापना ?  
 सूरिराह-एकेन्द्रियसमारसमापन्नजीवप्रज्ञापना पञ्चविधा प्रज्ञप्ता, एकेन्द्रियाणा पञ्चविधत्वात्, तदेवपञ्चविधत्वमाह ॥ तजहेत्यादि ॥ पृथिवी  
 काठिन्यादिलक्षणा प्रतीता सर्व काय शरीर येपाते पृथिवीकाया एव पृथिवीकायिका, स्वार्यइकप्रत्यय, अपो द्रवा स्ताश्च प्रतीता एव  
 ता काय शरीरयेपान्तेअप्काया अप्काया एव अप्कायिका, तेजो वक्ति स्तदेवकाय शरीरयेपा ते तेजस्काया तेजस्कायिका,  
 वायु पवन सएव कायो येपान्ते वायुकाया वायुकायाएव वायुकायिका, वनस्पतिलंतादिरूप सएव काय शरीर येपान्ते वनस्पतिकाया व  
 नस्पतिकायाएववनस्पतिकायिका, इहसर्वज्ज्ञताधारत्वात् पृथिवीकायिकाना प्रथममुपादानं, तदनन्तर तत्प्रतिष्ठितत्वा दप्कायिकाना, अप्कायि  
 काश्च तेज प्रतिपन्नूता स्तदनन्तर तेजस्कायिकाना मुपादान, तेजश्च वायुसम्पर्कत प्रवृद्धिमुपयाति, तत एतदनन्तर वायुकायिकग्रहण, वायुश्च दूर  
 स्थितो वृक्षशारादिकम्पनतो लक्ष्यते, तत स्तदनन्तर वनस्पतिकायिकोपादान, सम्प्रातिपृथिवीकायिक मनवबुध्यमान स्तद्विषय क्षिय प्रश्न करी  
 ति-सेकितमित्याह-अथ के ते पृथिवीकायिका ? सूरिराह-पृथिवीकायिका द्विविधा प्रज्ञप्ता, स्तद्यथा-सूक्ष्मपृथिवीकायिकाश्च याटरपृथिवीकायि

आउकाइया तेउकाइया वाउकाइया वणस्सडकाइया । से कित पुढविकाइया पुढविकाइया दुविहा प०,  
 तजहा-सुज्जमपुढविकाइया वादरपुढविकाइया । से कित सुज्जमपुढविकाइया सुज्जमपुढविकाइया दुविहा  
 पणत्ता, तजहा-पज्जतसुज्जमपुढविकाइयाय अपज्जतसुज्जमपुढविकाइयाय, सेतसुज्जमपुढविकाइया । से

विजाइया आउकाइया तेउका० वाउकाइया ० । पृथुकाइयाजीव १ अप्कायनाजीव २ तेज्जकाइयाजीव ३ वाउकाइयाजीव वनस्पतिकाइया ५ । सेकितपुढवि  
 काइया २ । तेगिअपुढपुण्णकायनभेदकेतलेप्रकार । दुविहापत० । गुरुकहेदोयप्रकारे । सुद्धमपुढविकाइया । सूक्ष्मपृथ्वीकाय । वाटरपृथ  
 वीकाय २ ॥ सेकितसुद्धमपुढविकाइया ० । ते गिअपुढपुण्णसम्पन्नभेद कैया तिम गुरुकहे । दुविहा पणत्ता तजहा । दोयप्रकारना ते कहे पन्न तसुद्धमपुढवि

काय, मून्मनामकर्मदयारमून्मा वादरनामकर्मदयाद्वादरा 'कर्मोदयजनिते खल्येते सूक्ष्मवादरत्वे' ना पेशके वदरामलकयो रिव, सूक्ष्माद्य ते पृथिवीकायिका य मून्मपृथिवीकायिका, चडाद् खगलपयासाऽपयोऽनेदसूक्ष्म, वादरा य ते पृथिवीकायिकाश्च वादरपृथिवीकायिका, अत्रापिषडाद् खगलकांरायालुकादिनेदससूक्ष्म, तत्रसूक्ष्मपृथिवीकायिका समुद्रकपयोऽप्रतिमगन्थावयववत् सकललोकव्यापिनो, वादरा प्रतिनियतदेशचारिण सत्प्रतिनियतदेशधारित्व द्वितीयपक्षेप्रकटयिष्यन्ते, तत्र सूक्ष्मपृथिवीकायिकाना स्वरूप जिज्ञासु रिदमाप्त-संकिर्तिमित्यादि ॥ अथ केतेमून्मपृथिवीकायिकाः १ मूरिराह-सूक्ष्मपृथिवीकायिका द्विविधा प्रज्ञा स्तद्यथा-पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिका या पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकाश्च तत्रप्रयत्तिनाम, आहारादिपुद्गलग्रहणपरिणमनहेतु रात्मन शक्तिर्विशेष, स च पुद्गलोपचया दुपजायते, किं मुक्त भवति - उत्पत्तिदेशभागतेन प्रयमममये ये गृहीता पुद्गला लोपा तथा लोपा म पि प्रतिसमय गृह्यमाणाना त त्सम्पकृत स्तदुपतया जाताना य शक्तिर्विशेष आहारादिपु

द्गलनलरमरूपतापादनहेतु यथो दरान्तर्गताना पुद्गलविशेषाणा भारारपुद्गललरसरूपतापरिणमनहेतु सा च पर्याप्ति पोढा-आहारपर्याप्ति, ग्रहीरव्याप्ति, रिद्रियपर्याप्ति, प्राणायानपर्याप्ति, मन पर्याप्ति इ, तत्र यथा याध्यमाहारमादाय खलरसरूपतया परिणमयति साह्यरपर्याप्ति, यथा रवीन्द्रतमाहार रमासगमासमेदास्त्यमज्जशुक्ललक्षणसमधातुरूपतया परिणमयति साञ्जरीरपर्याप्ति, यथा धातुरूपतया परिणमिता माहार मिद्रियरूपतया परिणमयति सा इन्द्रियपर्याप्ति, अपञ्जस्तसुहुमपुढविकाइयाय, तथा चा य मर्योऽन्यत्रा पि जग्यतरणो क्त, पञ्चा ना मिन्द्रियाणा प्रायोग्यान् पुद्गलान् गृहीत्वा ऽनाजोगनिर्वर्तितेन वीर्येण तद्भावयनयनशक्ति रिद्रियपर्याप्ति रिति, यथा पुन रुच्छासप्रायोग्यान् पुद्गलाना दायो ज्वासरूपतया परिणमय्या नव्य च मुञ्चति सा उच्छासपर्याप्ति, यथा तु भाषाप्रयोग्यान् पुद्गला नादाय प्रापात्वेन परिणमय्या नव्य च मुञ्चति सा भाषापर्याप्ति, यथा पुन मन प्रायोग्यान् पुद्गलानादाय मनस्त्वेन परिणमय्या लव्य च मुञ्चति सा मन पर्याप्ति, एता इ

यथाक्रम मेकैन्द्रियाणां सञ्चिवर्जानां द्वीन्द्रियादीनां सञ्चिनां षट् पञ्च पट् सङ्गा जवन्ति, उक्तान् प्रज्ञापनामूलटीकारुता-एकैन्द्रियाणां षतस्रो विकलेन्द्रियाणां पञ्च सञ्चिना पठि ति' उत्पत्तिप्रथमसमयएव ता यथातथसर्वां अपियुगपन्निष्पादयितुं मारज्यन्ते, क्रमेण च निष्ठामु पयान्ति, तद्यथा-प्रथम माहारपर्याप्ति स्तत आरीरपर्याप्ति स्तत, इन्द्रियपर्याप्ति रित्यादि, आहारपर्याप्ति य प्रथमसमयमेव निष्यसि मपद्यते, शोषा स्तु प्र त्येक मन्तर्मुहूर्तन कालेन, अयाहारपर्याप्ति प्रथमसमय एव निष्यद्यते इति कथं मन्सीयते ? उच्यते-यत आहारपदे द्वितीयोद्देशके सूत्रे निदि, आहारपञ्जतीए अपकृतएण जते कि आहारए अणाहारए गो० नोआहारए अणाहारए इति, तत आहारपर्याप्त्या अपर्याप्तिविग्रहगता यथा यप द्यते नो पपातक्षेत्र मागतो पि, उपपातक्षेत्र मागतस्य प्रथमसमय एया हारकत्वात् तत एकसामायिकी आहारपर्याप्तिनिर्वृति, यदि पुन उपपात क्षेत्रमागतो पि आहारपर्याप्त्या पर्याप्त स्या तत एव सति व्याकरणसूत्र मित्य ज्ञेयत् "सियआहारएसियग्रणाहारए, यया शरीरादिपर्याप्तिषु सि यआहारएसियग्रणाहारए इति, सर्वसाम पि च पर्याप्तिना परिसमाप्तिकालो तन्मुहूर्तप्रमाण, पर्याप्तयो विद्यन्ते येषान्ते पर्याप्ता यन्त्रादिन्य इ ति मत्वर्थायो उपत्यय' पर्याप्तका य तेमूलमपृथिवीकायिकाय पर्याप्तकमूलमपृथिवीकायिका, य आदौ सन्धिपर्याप्तकरणपर्याप्तकूपस्यगतजेदद्वयसूच को, ये पुन स्वयोग्यपर्याप्तिपरिसमाप्तिकला स्ते उपर्याप्ता अपर्याप्ता य ते मूलमपृथिवीकायिका य अपर्याप्तमूलमपृथिवीकायिका, य ग्रए करण सन्धिनिययनस्वगतजेदद्वयसूचक, तथा छि-द्विविधा मूलमपृथिवीकायिका अपर्याप्ता, स्त द्यथा-लब्ध्या करणै य, तत्र ये अपर्याप्तका एव सती य

कितं वादरपुढविकाइया वादरपुढविकाइया दुविहा पणता, तजहा--सण्हादरपुढविकाइयाय खरवादर पुढविकाइयाय । से कित सण्हादरपुढविकाइया २ सत्तविहा पणता, तजहा--किण्हमत्तिया नोलमत्तिया

काइया अपलत्तसुहुम० २ । एकैन्द्रियपर्याप्ता सूक्ष्मपृथिवीकाय अपर्याप्त मूलमपृथिवीकाय २ । सेतमुहुमपुढविकाइया ते तिमहीज सूक्ष्मपृथिवीकायना दोयभेद कञ्जा तिम, द्विविवादरना । सेकितवायरपुढविकाइया २ दुविहा पणता । द्विवि ते यियपूके गुणपत्ते कुण ते वादरत्ते, वादर पृथिवीकायना दोयभेदकञ्जा ते

यते ते लज्ज्यऽपयोंसका ये पुन करणानि शरीरेन्द्रियादीनि न ताव निवर्तयति अथ वा वक्ष्य निवर्तयिष्यति ते करणाऽपयोंसा, उपसहार माह-सेतमित्यादि ॥ त गत सूक्ष्मपृथिवीकायिका स्तदे य सूक्ष्मपृथिवीकायिकानभिधाय सप्रति वादरपृथिवीकायिका नन्निधिस्तु स्तद्विषय प्रश्नसूत्र माह-सेकितमित्यादि ॥ अथकते वादरपृथिवीकायिका ? सूरि राह-वादरपृथिवीकायिका द्विविधा प्रज्ञास्तथा-शक्त्यादादरपृथिवीकायिकाश्च सरवादरपृथिवीकायिकाश्च, ततश्चक्षुषा नाम घृणितलोष्टकल्पा मृदुपृथिवी तदात्मका जीवा अ प्युपचारत शक्त्या स्ते च ते वादरपृथिवीकायिकाश्च शक्त्यादादरपृथिवीकायिका, अथवा शक्त्याचसावादरपृथिवीचसाकाय शरीरेयाते शक्त्यादादरपृथिवीकाया स्तगद्य स्वार्थिके क प्रत्यय विधानात् शक्त्यादादरपृथिवीकायिकाश्च शब्दे वक्ष्यमाणान्वगत नेकेभेदसूचकः सरा नाम पृथिवीसङ्घातविशेषद्वारित्यविशेष ज्ञा यन्ना तदात्मकाजीवा अपि सरा स्ते च ते वादरपृथिवीकायिकाश्च सरवादरपृथिवीकायिका अथवा पूर्ववत् प्रकारान्तरण समासश्च शब्द स्वगतवक्ष्यमाणान्वत्त्वारिशब्दे दसूचक ॥ सेकितमित्यादि ॥ अथ के तश्चक्षुषादादरपृथिवीकायिका ? सूरिराह-शक्त्यादादरपृथिवीकायिका, सप्तविधा प्रज्ञास्त देवसप्तविधत्व तद्यत्यादिनो पदशयति-कामसृत्तिका कृष्णसृत्तिका रूपा यवनीलसृत्तिका लोहितसृत्तिका चारित्रसृत्तिका शुक्रसृत्तिका, इत्यवर्णनेन पञ्चविधत्वमुक्तम्, पाण्डुसृत्तिकानाम दशविशेषपयाधूलिरूपासतीपाण्डूइति प्रसिद्धा तदात्मकाजीया अप्यनेदेपचारात् पाण्डुसृत्तिकेत्युक्ता ॥ पण्यमर्हियति ॥ नद्यादि

लोहितमन्त्रिया हलिहमन्त्रिया सुक्लिष्टमन्त्रिया पण्यमन्त्रिया । सेत ससहवाटरपुठविकाडया ।

गुप्त-हैरे, मण्डवाटरपुठविकाडया खरवायरपुठविकाडया । मूक्षानामकर्मोदयथौ मुकमालवाटरपृथिवीकाय पृथिवीकाय कठिननामकर्मोदयथौवाटर तेखरवाटरपृथिवीकाय । सेकितसगङ्गाटरपुठविकाडया मत्तपिहाम तजहा । वाटरपृथिवीकायनाम कतेनेप्रकारेगुरुकहेते सातप्रकारेकहनातेकहैरे, किण्डमट्टिगोलन लोहितम लोहितम मूक्षिम पडुन पण्यमर्हिया । कालोमट्टो १ नौलोमट्टो २ रा तौमट्टो ३ पालोमट्टो ४ ध लौमट्टो ५ खेतर्कदेय विथोपाटाधन पनकन टो ० । मत्तपिह वाटरपुठविकाडया तेतिमहौ न कोमलनादरकायनामेदकहा । सेकितखरवायरपुठविकाडया २ अण्येगविहा

पूरप्तावितेदेशे नद्यादिपूरऽपाने यो जूमी शक्त्यदुरूपो चलमलापरपर्याय पट्ट सापनकयुक्तिः तदात्मकालीना अणजेदोपचारात् पनकयुक्तिः  
का, निगमनमाह-नेतसाहवायरपुढविकाइया॥ सुगम, सेकितमित्यादि॥ अथ के ते खरवाटरपृथिवीकायिका २ सूरिरार-खरवाटरपृथिवीकायिका  
अनेकविधा प्रज्ञसा अत्यारिगद्देदा मुख्यत प्रज्ञसा इत्यर्थ, तानेवचत्वारिंशद्देदाना इ-तज्जहा पुढीवीय इत्यादिगाथाचतुष्टय, पृथिवी ति ज्ञामा  
सत्यनामावत् शुद्धपृथिवी नदीतटभित्यादिरूपा चक्षुषतत्त्वजेदोपेक्षया समुच्चये शर्करा लघूपलशकलरूपा । २ । वालुका मिक्ता । ३ । उपल  
पट्टकाद्युपकरणपरिकर्मणायोग्य पाषाण । ४ । शिला घटनयोग्या देवकुलपीठाद्युपयोगी महान्यापाणविज्ञेय । ५ । लवणसामुद्रादि । ६ । ऊ  
पोपद्मशादूप्तेत्र । ७ । अयस्ताम्रपुसीसरूप्यसुवर्णानिप्रतीतानि । १३ । वज्रोत्तीरक । १४ । हरितालचिह्नलकमन शिला प्रतीता, सीसग  
पारदन । १८ । अज्जन सीवीराज्जनादि । १९ । प्रवाल विदुम । २० । अन्नपटल स्मसिद्ध । २१ । अन्नवालुका अन्नपटलमिश्रावालुका । २२ । वायरका  
ये इति॥ वाटरपृथिवीकाये अमी भेदा इति शेष, मणिविहाणा इति च ज्ञाप्य गम्यमानत्वात् मणिविधानानिचमणिजेदाश्च वाटरपृथिवीकायजेद

से कित खरवाटरपुढविकाइया ? खरवाटरपुढविकाइया अणेगविहा पसता, तंजहा-पुढवीयसक्षरावा  
लुयायउत्रलेसिलायलोणसे । अयतंवतउयसीसे रूप्यसुवसेयवइरेय ॥ १ ॥ हरियालेहिगुलुए मणोसिलासास  
गजणपवाले । अन्नपटलस्रवालुय वाटरकाएमणिविहाणा ॥ २ ॥ गोमिज्जएयरुयए अक्केफलिहेयलोहियकेय

प त । ते द्विवे कृणते कपैक्के, खरपृथिवीकठिनवाटर पृथिवी ते किम, खर कठिनवाटर पृथिवीकायना अनेकभेदकह्या ते कपैक्के, पुढवीयमकरावा लुगायउ  
वनोसिलायलोणसे । अयतंवतउयसीसे रूप्यसुवसेयवइरेय ॥ १ ॥ पृथिवी काकरामहित १ वालू २ उपल टाकवायोग्य ३ शिलाघडवायोग्य ४ लेण ते मोटापाषाण  
विग्रम ५ अत्र नाहपाति ६ ताको ७ तरुगोदसोसो ८ रूपो १० मंनो ११ वज्र ते होरा १२ ॥ ११ ॥ हरियालेहिगुलुए मणोसिलाभासगजणपवाले । अन्नपटलम  
यानुवाटरकाएमणिविहाणा ॥ २ ॥ हरिताल १३ चीगलू १४ मणसिल १५ पवालो अम्भक नाम भोउल पटल अम्भेज्जुए वाटर पृथिवीकायकहो २ ।





पूरुषादितेदेशे नरादिपूरेऽपगतं यो जुषीं शरज्जुदुस्तपो गलमतापरपर्योय पक्कं सापनकयति ता तदात्मतावीया यपानेदोपचारात् परकयुचि  
ता, निगमनमाह-सेतमाहजागरपुढविकाइया ॥ सुगम, सेकितमित्यादि ॥ अथ के ते सरवादरपृथिवीकायिका ? सूरिराह-सरवादरपृथिवीकायिका  
अनेकायिषा प्रप्राप्ता भृत्यारिगद्देदा मुख्यत प्रप्राप्ता इत्यर्थ, तानेयपत्वारिगद्देदाना ह-तज्जहा पुढीवीय इत्यादिगणानस्तुष्टय, पृथिवी ति ज्ञात्मा  
सत्यतामागत् गुडुपृथिवी नदीतटाभित्यादिरूपा चडाएउतरनेदायेशया समुच्चये शर्करा लपुपलज्ञकलरूपा । २ । यालुका सिकता । ३ । उपल  
दुङ्कलाद्युपकरलपरिकर्मणायोग्य पापान् । ४ । शिला पटनयोग्या देवगुत्तपीठाद्युपयोगी मरापापालविशेष । ५ । लवयसामुदादि । ६ । ऊ  
पोयदुशादूरसेत्र । ७ । अयस्तायवपुसीसरूप्यसुवर्णान्निप्रतीतानि । १३ । यजोष्टीररू । १४ । हरितालद्विहुलक्रमन शिला प्रतीता, सीमग  
पारदग । १८ । अज्जान सौग्रीराज्जनादि । १६ । प्रयाल विद्रुम । २० । अन्नपटल अमसिद्रु । २१ । कन्यायालुका अन्नपटलमिषायालुका । २२ । व्यागरका  
ये इति ॥ वादरपृथिवीकाये अमी भेदा इति शेष, मणिविहाणा इति च शापस्य गम्यमानत्वात् मणिविधानानिषमणिनेदाद्य वादरपृथिवीकायनेद

से किंतं सरवादरपुढविकाइया ? सरवादरपुढविकाइया अणुगेविहा पयता . तंजहा-पुढवीयसक्करावा  
लुयायउचलेसिंहायउणूसे । अयतवतउयसीसे रूप्यसुवसेयवइरेय ॥ १ ॥ हरियालेहिगुलुए मणोसिलासास  
गजगपवाले । अण्णपल्लस्रवालय वादरकाएमणिविहाणा ॥ २ ॥ गोमिज्जाएयस्यए अक्केफलिहेयलोहियसकेय

ये त । ते डिरे रूपते अहेइ, सरपृथिवी कठिनवादरप्रतिघी ते किम, सर कठिनवादर पृथिवीकायना पने कभेद कक्षा ते अहेइ, पुढवीयसक्करावा लुयायउ  
च-भित्तायवोणूदे । अयतवतउयसीसे रूप्यसुवसेयवइरेय ॥ १ ॥ पृथिवी का कतरासहित १ वालू २ उपल ठांकरायोग्य २ शिलाघटवायोग्य ३ मेणु ते मोटापापाण  
विमा ५ ५७ वाहुगानि ६ तांवे ७ ७ कुरोदसोसो ८ ढपो १० भापो ११ यजे होरा १२ १३ १४ हरियालेहिगुलुए मणोसिलासासगजगपवाले । अथमपल्लम  
मानुशवादरकायमलिदिद्विहाणा २ २ ३ हरिताल १२ ३ पीमलू १४ मज्जसिल १५ पयावो अमरक नाम भोटल पटन अमरजलू प वादर पृथिवी कायफटो २१

त्वेन नातव्या , ताये व मणिविधानानि दजयति-गोमज्जग इत्यादि॥ गोमेद्यक २३ च समुच्चये रुचक २४ अक २५ स्फटिक २६ च पूर्ववत्, लोहि-  
तान्न २७ मरकत २८ मसारगल्ल २९ नुजमीचक ३० इन्द्रनीलश्च ३१ चन्दनो ३२ गैरिको ३३ एसगज ३४ पुलक ३५ सौगधिकश्च ३६ चन्द्रप्रज्ञो ३७ वै-  
रूपा ३८ जलकान्त ३९ सूर्यकान्तश्च ४० तदेव साद्यगाथया पृथिव्यादयउक्ता शतदंशजेदा, द्वितीयाथया ५४० हरितालादय, स्तृतीयगाथया गो-  
मेद्यकादयो नव, तुयगाथया नवे तिसहस्रा शत्वारिशत्, जेयावनेतहप्यगाराइति॥ ये पि वा न्ये तथा प्रकारा मणिजेदा पट्टरागादय स्ते पि  
खरधादरपृथिवीकायत्वेन वेदितव्या ॥ तैसमासउइत्यादि॥ तैसामान्यतो वादरपृथिवीकायिका समासत सङ्क्षेपेण द्विविधा प्रज्ञप्ता, स्तद्यथा-पर्याप्त  
का अपर्याप्तका च, तत्र ये उपर्याप्तका स्ते स्वयोग्या पर्याप्ती साकत्येना सम्प्राप्ता इति, अथवा असम्प्राप्ता इति विशिष्टान् वर्णादीन् अनुपगता  
स्तथाहि-वर्णादिजेदविवक्षाया मेते न शक्यन्ते कृत्रादिवर्णभेदेन व्यपदेशु, किकारणमि ति चेत्? उच्यते इहशरीरादिपर्याप्तिषु परिपूर्णसु सतीषु  
वादराणा वर्णादिविज्ञाग प्रकटो भवति नापरिपूर्णसु, ते चा पर्याप्ता उच्छ्वासपर्याप्त्याऽपर्याप्ता एव स्थित्यन्ते ततो न स्पष्टतरवर्णादिविज्ञाग इत्य

मरगयमसारगल्ले नुयमीयगइदनीलंय ॥ ३ ॥ चदणगेरुयहसे पुलएसौगधिएयवोधहे । चदप्पन्नवेरुलिण ज  
लरुंतसूरकंतय ॥ ४ ॥ जेयावसेयतहप्यगारा ते समासउ दुविहा पसत्ता , तजहा — पज्जत्तगाय अपज्जत्त

द्विवे मणिनाम भेदः कहिके—गोमेज्जगइदनीलंय ॥ ३ ॥ गोमेदमणि १ रुचकमणि २ अ-  
कमणि ३ स्फटिकमणि ४ लोहिताजमणि ५ मरकतमणि ६ मसारगल्ल ७ नुजमीचकरत्न ८ इन्द्रनीलरत्न ९ ॥ ८ ॥ चदणगेरुहसे पुलएसौगधिणयवोधवे । चद-  
पमवेरलिण जलकान्ते सूरकतेय ॥ ४ ॥ चन्दनरत्न १० गैरिकरत्न ११ पुलकरत्न १२ सौगन्धिकरत्न १३ एहवैनामे जाणवा चन्द्रप्रभरत्न वै हूर्य जलकान्तरत्न  
मूवकान्तरत्न ॥ ४ ॥ जेयावणेतहप्यगारा तसमासओ दुविहा पसत्ता तजहा । जेहवा अनेराहो तथा प्रकारना ते मच्चैपयकी टोउभेदे कक्षा ते कहिके ।  
पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय, तत्तण जेते अपज्जत्तगा तेण असपत्ता तत्तण जेते पज्जत्तगाय । पर्याप्ता अपर्याप्ता तथा तिहा जो पयाप्ता एतलोभद नथो

सम्प्राप्ता इत्युक्तं ननु कस्मा दुष्प्राप्तस्यै वा उपयोक्ता म्रियन्ते नो वाक् शरीरेन्द्रियपर्याप्तिर्या मपर्याप्ता अपि उच्यते तस्मा दागामिज्जवा  
 मु रंद्वा म्रियन्ते सव गव देहिना ना वध्वा, तच्च शरीरेन्द्रियपर्याप्तिर्या पर्याप्ताता वक्ष्यमा यान्ति ना न्यथा इति, अन्ये तु व्याचक्षन्ते सामा  
 न्यतो वर्णादी तसम्प्राप्ता इति, तच्च न युक्तं यत शरीरमात्राविनो वर्णादय, शरीरं च शरीरपर्याप्ता सज्जात इति ॥ तस्य य जे ते पज्जते  
 गा इत्यादि ॥ तत्र ये ते पर्याप्तका परिसमाप्तस्य योग्यमस्तपर्याप्तय एतेषा वर्णादेशेन वर्णादेशेन वर्णादेशेन वर्णादेशेन वर्णादेशेन  
 सहस्रसङ्ख्याविधानानि जेदा, स्तद्व्या-वर्णा कस्यादिदेदात्यन्त, गन्धो सुरभीतरज्रेदा द्वी, रसा स्तिक्तादय पञ्च, स्पर्शो मृदुकर्केशा  
 दयो ऽष्टौ, एकैस्मि श्र वर्णादी तारतम्यज्रेदेना नेके वातरज्रेदा स्तथाहि-ज्वरकोकिलकज्जलादिषु तरतमज्जवा दित्यादिरूपतया ऽनेके कष्ट  
 ज्रेदा' एवमीलादिषु प्या योज्य, तथा गन्धरसस्पर्शेषु पि तथा परस्पर वर्णाना मयोगतो धूसरकर्चुरत्वादयो नेके सङ्ख्यज्रेदा' एव गघादीनाम  
 पि परस्पर गथादिभि समायोगा दतो जवन्ति वर्णाद्यादेशो सङ्ख्याग्रणो ज्रेदा ॥ सखेज्जाइ जीणिप्पमुहसयसहस्साइ इति ॥ सङ्ख्यानि योनिप्रमु  
 खाणि योनिद्वाराणि ज्ञातसहस्त्राणि तथाहि-एकैस्मिन् वर्णे गन्धे रसे स्पर्शे च सवृतायोनि पृथिवीकायिकाना, सा पुन स्त्रिया, सचित्ता अचिह्ता

साणि योनिद्वाराणि ज्ञातसहस्त्राणि तथाहि-एकैस्मिन् वर्णे गन्धे रसे स्पर्शे च सवृतायोनि पृथिवीकायिकाना, सा पुन स्त्रिया, सचित्ता अचिह्ता

गाग्र, तत्पण जेने अुपज्जतगा तेण अुसपत्ता तत्पण जेते पज्जतगा एतेसिं वखादेसेणं गधादेसेणं रसादे

सेण फासादेसेण सहस्सग्गसोविहाणाइ सखिज्जाइ जीणिप्पमुहसयसहस्साइ पज्जतगणिस्साए अुपज्जतगवा

पाम्या विगिण्ट वर्णं गध रस स्पर्श ए पयाप्त पुरौ यथाविना न प्रगट् । तेभिण वग्गाएसेण । तिणामाहि वर्णादेशेकरो । गघाणसेण रसाएसेण । गघा  
 देशेकरो रमादेशेकरो । फासाणसेण सहस्सगसोविहाणाइ सखिज्जाइ । स्पर्मादेशेकरो वर्णा देशेकरो सहस्सयो भेदह्वे वर्णादि २५ भेदना वर्णादि तर  
 तमभेदे यनेकभेदह्वे ते किन प्यामवणेह्वे भ्रमर कोकिल तेहयको कज्जल इम म्याम सधलभेदे वधता २ कहिवान सख्याते भेदह्वे । जीणिप्पमुहस  
 यसहस्साइ पज्जतगवाइसाए अुपज्जतगावकममिति । नाचु गोतिग्रतसहस्सकहता लाखगमेह्वे पर्याप्ताता निर्याधे अुपर्याप्ताउपजे ते फेरगागासु कहैले ।

मिश्रा च, पुन रैकैकान्विधा, शीता उष्ण शीतोष्ण, शीतादीना मपि प्रत्येक तारतम्यभेदा दनेकभेदत्व ' केवल मेव विशिष्टवर्णादियुक्ता सस्याऽ  
तीता अपि स्वस्थाने व्यक्तिभेदेन योनयो जातिमधिकृत्य केव योनि गण्यते, तत सङ्ख्यानि सप्तपृथिवीकायिकाना योनिशतसहस्राणि भवन्ति  
तानि च मूलमवादरगतसर्वसङ्ख्या सप्त ॥ पञ्जसगनिरसाए इत्यादि ॥ पर्याप्तनिश्रया अपर्याप्तका व्युत्क्रामन्ति उत्पद्यन्ते, कियन्त इत्या ह-यत्रै क पर्याप्त  
स्तत्र नियमा तन्निश्रया असङ्ख्या सङ्ख्यातीता अपर्याप्तका, उपसहारमाह-सेत मित्यादि ॥ निगमनत्रय मुगम' तदेव मुक्ता पृथिवीकायिका ' स  
स्मृत्य प्कायिकप्रतिपादनायमाह-से कि त मित्यादि मुगम' उसा इत्य वक्ष्याय ब्रह्म ' हिम स्स्यानोदक, महिका गर्भमासेषु सूक्ष्मवर्प' करको घ

क्षामति, जत्य एगो तत्य णियमा असखेज्जा । सेतवादरपुढविकाइया ॥ सेतपु  
ढविकाइया ॥ से कित आउकाइया ? आउकाइया दुविहा पन्तता, तजहा-सुजमआउकाइयाय वादर  
आउकाइयाय । से कित सुजमआउकाइया ? सुजमआउकाइया दुविहा पन्तता, तजहा-पज्जत्तसुजम  
आउकाइयाय अपज्जत्तसुजमआउकाइयाय ॥ से कित सुजमआउकाइया ? वादर

जत्य एगो तत्य णियमा असखेज्जा । जिहा एकजोवपर्याप्ता उपजे तिहा निचे असख्याता अपर्याप्ता उपजे । सेतखरवायरपुढविकाइया । ते कहैहै । कठि  
नवादर पृथिवीकाय । सेतवादरपुढविकाइया । एतले वादर पृथिवीकायनाभेद कक्षा ॥ सेतपुढविकाइया ॥ एतले सर्वपृथिवीकायना भेदकक्षा हिंवे ।  
अप्काय कहैहै । सेकित अप्काय २ दुविहा पणत्ता तजहा । ते शिष्य पछे कुण अप्काय गुरु कहैहै-हेमहानुभाव । अप्काय दोयभेदकही ते कहै  
है-हरत्राउकाइया वायर आउ० । सूअ अप्काय १ वादरअप्काय २ हिंवे । सेकित सुहमआउकाइया २ दुविहा पत । ते कुण ते कहो स्वामीजी स  
अपरमाय तिहा गुनकहैहै-हेदेवानुप्रिय । महानुभाव दोयकारि कक्षा ते कहैहै-पज्जत्तसुहमआउकाइया । पर्याप्ता सूक्ष्मअप्काय १ । अपज्जत्तसुह  
मआउकाइया । अपर्याप्ता सूक्ष्मअप्काय कक्षा ॥ अठा आगे वादरकहैहै-सेकित वायरआउका

नोपल, हरतनु यौ नृग सुद्विद्य गोधूसामुद्रुत्तृणायादिषु बहु विन्दु रूपजायते, शुद्धोदक मन्तरिक्षसमुद्भव नद्यादिगत च, तच्च स्पर्शरसादिभेदा दनेकभेदः, तदेवा नेकभेदत्वदर्शयति-शीतोदक नदीतलागावटवापीपुष्करियादिषु शीतपरिणामः उष्णोदक स्वप्नावत एव क्वचि निर्भरारादा वृक्षपरिणामः क्षारोदक मीपल्लवणस्वप्नाव, यथा लाटदेशादौ कंपुचिदवटेषु, सहीदक मीपदक्षपरिणामः, अक्षीदक मतीवस्वप्नावत एवा मृपरिणाम काञ्जिकवत्, लवणोदक लवणसमुद्भूतः, वारुण वारुणसमुद्भूतः, क्षीरोदक क्षीरसमुद्भूतः, क्षोदोदक मिक्षुसमुद्भूतः, रसोदक पुष्करवरसमुद्गादिषु, ये पि चा न्ये तथा प्रकारा रसरूपशीर्दिजेदभिन्ना घृतोदकादयो वादराष्कायिका स्ते सर्वे वादराष्कायिकतया प्रतिपत्तव्याः स्ते समासतो इत्यादि

अण्डकाद्या अणुगविहा पञ्चत्ता, तजहा-उसाहिमए महिया करए हरतणू सुष्टोदए सीतोदए उंसिणोदए खारोदए खोदए अंबिळोदए लवणोदए वारुणोदए खीरोदए रसोदए जेयावखेतहप्यगारा तेसमा सत्तुविहा पञ्चत्ता, तजहा-पञ्जत्तगाय अपज्जत्तगाय, तत्थण जेतै अपज्जत्तगा तेण अप्संपत्ता, तत्थण जेतै पञ्जत्ता एतेसिणवसादेसेण गथादेसेण रसादेसेण फासादेसेण सहस्सग्गसोविहाणाइ सखेज्जाइ जोगिप्यमु

इया २ अणुगविहा प त । ते हि वे कुण वादरथकाय अनेकप्रकारकहेहै-तिकोही दरसावेहै । उसाहिमएमिहिया । ठार मध्यवेह १ हिम २ धूहर ३ नरग हरतणु सुष्टोदण सौवटण । गढानोपाणी ४ हरौनेअणीये जलविन्दु वरसातनो ५ शुद्धपाणी ६ शीतजल ७ । उंसिणोदए खारोदए सुष्टोदए अवि लादए लवणोदण वरुणोदए खीरोदण घञ्जोदण इक्खोदण रसोदण । उणजल ८ खाटो १० आविलरसपाणी ११ लूण जेहवो १२ वारुणीसम दनी पा गो ट जेहवो १३ दूमसरोखापाणी १४ घृतमरोखापाणी १५ इच्चुरस सेव्हडोरम १६ रम पटरम तेहवोपाणी १७ । जेयावखेतहप्यगारा ते स मासओदविहा प त । जे एहवा अनैरा तथा प्रकारना तेह सर्वं सत्तेपयी दीयप्रकारि कट्ठातेकहेहै-पज्जत्तगा अपज्जत्तगाय । पर्याप्ता १ अपर्याप्ता २ । तत्थण जेतै पपज्जत्तगा । जेतै अपर्याप्ता । तेण अपसंपत्ता । तेणे नहोपाम्या वर्षादिनथी कहता ते । तत्थण जेतै पज्जत्तगा । तिहा जेतै पर्याप्ता । एएसिणवसा

प्राण्यत् नवर, सहेयानि योनिप्रमुखाणि शतमहस्त्राणी त्यत्रापि ममवेदितव्यानि, उक्ता अष्कायिका, सप्रति तेजस्सायिकान् प्रतिपिपादयिषु राह-सेकितमित्यादि ॥ सुगम, नवर, मद्गारी विगतधूम, उवालो चाउजल्यमान, रगादिरादिज्वाला लसन्महदादीपविरले त्यन्ये, मुमुर फुफ्फुका

हसयसहस्साइ पज्जत्तगणिस्साए अपज्जत्तगा वक्कमत्ति, जल्य एगो तल्यनियमा असखेज्जा । सेत्त वाटर आउकाइया ॥ सेत्त आउकाइया ॥ से कित तेउकाइया ? तेउकाइया दुविहा पणत्ता, तजहा—सुज्जमेतेउकाइयाय वादरतेउकाइयाय, से कित सुज्जमेतेउकाइया सुज्जमेतेउकाइया दुविहा पणत्ता, तजहा—पज्जत्त गाय अपज्जत्तगाय । सेत्त सुज्जमेतेउकाइया । से कित वादरतेउकाइया २ अण्णेगविहा पणत्ता, तजहा डगाले जाला मुमुरे अच्ची अच्चाए सुद्धागणी उक्ता विज्जू असणी णिग्घाए सवहरिससमुठिए सूकतमणिणि

० भेण गधाणसेण रसाएसेण फासाएसेण । इयारा वणटियेकरो गधाटियेकरो रमादेयेकरो फरसादेशकरो । सहस्रमगसोविहाणाइ । सहस्राय एतले नाख एहवेनामे । मविज्जाइ जाणिप्पमहससहस्साइ । मव्याता सतसहस्रगानिप्रमुखसुत्रे । पज्जत्तगणोसाए । पर्याप्तानो नित्याये । अपज्जत्तगावक्कमत्ति अपर्वाप्ता आवी उपजे । जल्यएगोतल्यनियमाअसखेज्जा । जिहा एकजोव तिहा नित्याये अमव्याताजोव कहवा । सेत्तवाग्गआउकाइया । ते वाटर अक्कायना भेटकह्या । सेत्तआउकाइया । एतले ते सून्यवाटर सर्वअक्काय कह्या ॥ हिंवे सेकित तेउकाइया २ दुविहा प त । तेकजाय पूछैगिय कुण ते तट गुर कहै णोपकारि कह्या तेकहेछै—सुद्धमेतेउकाइया वागते० । सूद्धमेतेउकाय १ वायरतेउकाय २ । सेकितसद्धमेतेउकाइया २ दुविहा प त । हिंवे गिय कहै कुण तेगुरकहे सूद्ध तेउकाय तेइना दोगभेटकह्या तेगुरकहेछै—पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय । पर्याप्ता १ अपर्वाप्ता २ । सेत्ततुद्धमेतेउकाइया । ते तिम सूद्धमेतेउकाय ॥ सेकितवागरतेउकाइया २ अण्णेगविहा प त । गियपूछै कुणवाटर तेउकाय गुरकहे अनेकप्रकारेकह्या तेकहेछै—इ गाले जालमुमुरे । अगारा वभूतरहित १ ज्वालादोपसिखा अग्नि पतिउउ २ वभूतमित्या अग्नि कण । अचो प्रभाग्गसहायण । अप्रतिवड्ज्वाला सुद्धग्नि । उक्ता विज्जू । उक्ता

दी अस्मिन्निश्रिताग्निक्वणरूप , अर्चि रत्नलाप्रतिवद्वाज्वाला, आलात मूलुक, शुद्धाग्नि रय पिग्हादी, उल्का बुहुली, विद्युत्प्रतीता अशानि राकाशो पतदग्निमय कण , निर्घातो वैक्रियाद्यनिप्रपात , सहस्रसमुपस्थितो उरसादिकावनिर्भयनसमुद्रुत , सूर्यकान्तमणिनिस्तुत सूर्यखरकिरणसम्पक्कं सूर्यकान्तमणे यं समुपजायते ॥ जेयावन्नेतहृष्यगारा इति ॥ ये पि चा न्ये तथाप्रकारा एवम्प्रकारा स्नेजस्कायिका स्ने पि वादरस्नेजरकायिकतया वे दितव्या, स्नेसमासतो इत्यादिप्राग्वत्, नवर मन्त्रापि सङ्केयानि योनिप्रमुखाणि शतसहस्राणि ससंयदितव्यानि, उक्ता स्नेजस्कायिका , सम्प्रतिवायु

स्ति ए, जेयावन्नेतहृष्यगारा ते समासन् दुविहा पणत्ता, तजहा-पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय, तत्थण जेतो अपज्जत्तगा तेण अपसपत्ता, तत्थण जेतो पज्जत्तगा एणसि वसादेसेण गधादेसेण रसाएसेण फासादेसेण सह स्सग्गसोविहाणाड सखिज्जाड जोणिप्पमुहसयसहस्साइं पज्जत्तगणिस्साए अपज्जत्तगा वक्कमति, जत्थएगो तत्थणियमा अपसखिज्जा ॥ सेत्त वादरतेउकाइया ॥ सेत्त तेउकाइया ॥ से किंत वाउकाइया ? वाउकाइया दुवि

पात वीजनी । अग्निगान्गिग्वाण । आकाशे अग्निमयो कण वैक्रियअग्नि । मधरिससमुद्रुप । धरणोयादिकथकौ कपनी । सूरिकातमणिनिस्मिण । मयने तापेकरी ऊपजे मणिथौ ऊपजे ते अग्नि । जेयावन्नेतहृष्यगारा ते समासयो दुविहा प त । जे वनी पहावा पनेरा तथा प्रकारनाभेट तेसर्व स जेपथौ दीयप्रकारेकक्षा ते कहेहे-पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय । पर्याप्ता अपर्याप्ता । तत्थण जेतो अपज्जत्तगा तेण पसपत्ता । तिहा जेतो अपर्याप्ता वर्णादि केनथौ पाय्या पूरा । तत्थण जेतो पज्जत्तगा । तिहा जेतो पर्याप्ता । एसिण वसाएसेण गधाएसेण रसाएसेण फासाएसेण । इयारा वर्णादिगेकरी गन्धादेशे करी रसादेशेकरी स्सर्गादेशेकरी । सहस्रगणसोविहाणाड , सहस्राप एतने सातलाख भेदेकरी । सखिज्जाड जोणिप्पमुहसयसहस्साड पज्जत्तगणीसाए माहयाता मतमहस्सयोनि प्रमुख ऊपजे पर्याप्तानौनिययि । अपज्जत्तगावक्कमति । अपर्याप्ता उपजे । जत्थण गोतत्थणियमा । जिह्वां एकजीव तिहा नि द्ये । असखिज्जा । असएगातजौय उपजे । सेत्तवायरतेउकाइया । एतने वादर तेउकाय । सेत्ततेउकाइया । ते सर्व तेउकायकक्षा । सेकितवाउकाइया २ दु

कायिकप्रतिपादनार्थं माह-संकिंतेमित्यादि ॥ प्रतीत, नवर ॥ पार्श्ववाण इति ॥ य प्राथ्यादिश समागच्छति वात समाधीनवात, यय प्रतीचीनवातो दक्षिणवात उदीचीनवातश्च वक्तव्य, ऊर्ध्वद्वच्छन् यो वाति वात सस ऊर्ध्ववात, एव मधोवात तिर्यग् वातावपि परिज्ञावनीयो, विदिग्यातोयो विदिग्यो वाति वातो द्वाभौ ऊनवस्थितौ वातो वातोत्कलिका समुद्रस्येव वातोत्कलिका, यातमडली वातोली, उत्कलिकायातउत्कलिकाञ्चि प्रधुरतराञ्चि सम्मिश्रितौ यो वातो मडलिकावातो, मडलिकामि मूलत एारस्य प्रधुरतराञ्चि समुत्थो यो वात, गुल्जावातो यो गुल्जनगच्छ कुर्वन्

हा पसुता, तजहा-सुज्जमवाउकाइयाय, से कित सुज्जमवाउकाइया ? सुज्जमवाउकाइया दुविहा पसुता, तजहा-पज्जतगसुज्जमवाउकाइयाय अपज्जतगसुज्जमवाउकाइयाय । सेत्त सुज्जमवाउकाइया । से कित वादरवाउकाइया ? वादरवा० अण्णगविहा पसुता, तजहा-पार्श्ववाण पदीणवाण दाहिणवाण उदीणवाण उहुवाण अहोवाण तिरियवाण विदिसीवाण वाउज्जामेवा उक्कलिया वायमंठलिया उ

विहा प त । शिथ्यप्पे कुणगुरकहे वाउकायना टायभेटकञ्चा ते कहेछे-सुहुमवाउकाइया । मूक्षमवाउकाय । वायरवाउकाइया । वादरवाउकाय । सेकितसुहुमवाउकाइया २ दविहा प त । हिवे कुण मूक्षमवाउकाय तेहना दायभेट कञ्चा ते कहेछे-पल्लत्तसुहुमवाउकाइया अपल्लत्तसुहुम वा० । पर्याप्ता मूक्षगाउकाय अपर्याप्ता मूक्षवाउकाय । मेत्तसुहुमवाउकाइया । एतले मूक्षवायुकायना भेटकञ्चा ॥ सेकितवायरवाउकाइया २ अण्णगविहा प० त० । हिव वादर वाउकायना भेटकहेछे-अनेकप्रकारे कञ्चा वाउकायवाटरना ते कहेछे-पार्श्ववाण पार्श्ववाण उदीणवाण । पूर्वदिशिनी उपनो पश्चिमदिशिनी उपनो दक्षिणदिशिनी उपनो वायु उत्तरदिशिनी उपनो वायु । उट्टवाण अहोवाण तिरियवाण विदिसीवाण वाउभाण । ऊर्ध्वदिशिनीउपज्ज्या नोर्ध्वदिशिनी वायु तिरिहोदिशिनी विदिगिवायु ऊर्ध्वममोवायु । वाउक्कलिया वायमडलिया । उत्कलियायु समुद्रनो मण्डलिकावायु गोल । उत्कलियवाण मडलियवाण । वेत्त उत्कलीपाडे मण्डलावत्तवायु । गुल्जावाण भ्रमावाण सवट्टवाण घणवाण तण्णवाण सुहुवाण ।



वाति, ऊक्तायात सगृष्टि, रज्जुभनिष्ठुर इत्य न्ये' सम्प्रतंकयात स्तृणादिसवत्तनस्त्रवाव, घनवातो घनपरिणामो रत्नप्रभापृथिव्याद्य घोवती, तनुवा तो विरलपरिणामो घनवातस्या घ स्थायीशुद्धवातो मदस्तिमितो, वस्त दृत्यादिगत इत्य न्ये ॥ त समासतो इत्यादि प्राग्वत्, अत्रा पि सङ्ख्यानानि धोनिप्रमग्नाणि ज्ञतनहस्त्राणि सप्ता वसेयानि, उक्ता वायुकायिका, सम्प्रति वनस्पतिकायिकप्रतिपादनार्थं माह-सेकितमित्यादि ॥ सुगम, यावत् से

कालियावाए मरुलियावाए गुजावाए ऊजावाए सवहवाए घणवाए तणुवाए सुधुवाए, जेयावन्ने तहप्पगा रा ते समासने दुविहा पयसत्ता, तजहा-पज्जत्तगाय, तत्थण जेते अपज्जत्तगा तंण असप त्ता, तत्थण जेते पज्जत्तगा एतेसिण वणाटेसेण गधाटेसेण फासादेसेण सहस्सग्गसोविहाणाइ सखिज्जाइ जोणिप्पमुहसयसहस्साइ पज्जत्तगणिरसाए अपज्जत्तगा वक्कमति, जत्थ एगो तत्थ नियमाअसं रेज्जा ॥ सेत्त वाटरवाउकाइया ॥ सेत्त वणस्सइकाइया वणस्सइकाइया दुविहा प०,

गुजारव चीनतो अशुभ अनिष्टवायु सवत्तंवापु ढणउडावे ते वायु घनवात तनुवायु पक्खे रत्नप्रभा हेठे शुद्धवायु । जेयावन्नेतहप्पगारातिमासओ दुविहा प० त० । जे ण्हवा अनेरा नथा प्रकारनावायु ते सचेपयनी दोगप्रकारिकद्धा ते कहैछे--पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय । पर्याप्ता । तत्थणजेतेत्रप ज्जत्तगा तेण यसपत्ता । तिहा जेते अपर्याप्ता ते वर्णाटिकने अणपामवैकरो । तत्थणजेते पज्जत्तगा णसिण । तिहाजेते पर्याप्ता इणारा । वणाएसेण गगएसेण फासाएसेण । वर्णाटिगे गन्धाटिगे रप्याटिगे । सहस्सगसोविहाणाइ । मतसहस्स एतले सातलाखु चीनने भेदेकरी । सखिज्जाइ जोणिप्पमुहस यसहस्साइ । सातेलाखे सव्याताथोनिविर्ष । पज्जत्तगनोसाण । पर्याप्तानी नियाये । त्रपज्जत्तगापक्कमति । अपर्याप्ता उपजे । जत्थएगोतत्थणियमाअस खेज्जा । त्रिहा एकजीव तिहा निधे असय्याता । सेत्तनाउरवाउकाइया । ते तिमक्खो त्रिम वाउकाय । सेत्तवाउकाइया । एतले सर्व सूहमवाटर वायु भेदेकरी कद्धा ॥ से कित वणस्सइकाइया २ दुविहा प० त० । त्रिवे वनस्पतिकायना भेदकहेछे, दोगिथ । दोगप्रकारे कहैछे, तोकिम ।

त सुदुमवणस्सइकाइया ॥ सेकितमित्थादि ॥ अथ के ते वाटरजनस्पत्तिकायिका २ द्विविधा प्रज्ञप्ता स्त यथा—प्रत्येकशरीरवाटरजनस्पत्तिकायिका य साधारणशरीरवाटरजनस्पत्तिकायिका य, तत्रै क मेक जीव स्मातिगत म्प्रत्येक शरीर येयान्ते प्रत्येकशरीरा, स्ते च ते वाटरजनस्पत्तिकायिका य प्रत्येकशरीरयाटरजनस्पत्तिकायिका, य इए स्वगतानेकभेदसूचक, समान न्तुल्य प्राणापानाद्युपयोग ययानवति, एव आसमत्ता देहीजावेनान न्ताना जन्तूना साधारण सङ्ग्रहण येन त त्साधारण शरीर येया ते साधारणशरीरा स्ते च ते वाटरजनस्पत्तिकायिका य साधारणया टरजनस्पत्तिकायिका, च शब्दो वा पि स्वगतानेकभेदसूचक ॥ सेकितमित्थादि ॥ अथ के त प्रत्येकशरीरवाटरजनस्पत्तिकायिका - मूरि राह-प्रत्ये

तजहा—सुज्जमवणस्सइकाइयाय वाटरवणरसइकाइयाय, से कित सुज्जमवणस्सइकाइया २ दुविहा पणत्ता,  
तं०—पज्जत्तसुज्जमवणस्सइकाइयाय अपज्जत्तसुज्जमवणरसइकाइयाय । सेत्त सुज्जमवणस्सइकाइया । से कित  
वाटरवणस्सइकाइया २ दुविहा पणत्ता, तजहा—पत्तेयसरीरवाटरवणस्सइकाइयाय साहारणसरीरवाटरव

सुहमवणस्सइकाइया । सूहमवनस्पत्तिकाय । वाटरवणस्सइकाइया १ । वाटरवनस्पत्तिकाय २ । सेकितसुहमवणस्सइकाइया २ दुविहा प० त० । हि वे ते मि  
थ्यत्ते गुरू ममभविहे सूहमवनस्पत्तिकायना दोगप्रकार कक्षा ते कहेहे—पज्जत्तसुहमवणस्सइकाइया । पर्याप्ता सूहमवनस्पत्तिकाय । अपज्जत्तसुहम  
वणस्सइकाइया । अपर्याप्ता सूहमवनस्पत्तिकाय । एतले सूहमवनस्पत्तिकाय कक्षा । सेकितवाटरवणस्सइकाइया २ दुविहा प  
त० । ते गिय्यक्के कण वाटरवनस्पति कहो स्सामोजो तटगर कहेहे—हे गिय्य । दोगप्रकारेकक्षा ते कहेहे—पत्तेयसरीरवाटरवणस्सइकाइया । प्रत्येक  
गरीर वाटरजनस्पत्तिकाय पहिलो । साहारणसरीरवाटरवणस्सइकाइया । दूजो साधारणशरीर वाटरवनस्पत्तिकाय । सेकित पत्तेयसरीरवाटरवणस्स  
इकाइया २ द्वालसविहा प० त० । गिय्यत्ते गुरूप्रति कहै कण ते प्रत्येकगरीर वाटरवनस्पत्तिकाय गिय्यत्ते गुरूकहेहे—प्रत्येकगरीर वाटरवनस्पत्तिकायना  
१२ वारे भेत्तकक्षा ते कहुकु । रुखागुच्छागुम्मा लयाउवली उपलयावेव । तणवल्लयहरियांसहि जलरुहुकुहायवोधव्वा १ ॥ वृत्त आम्मादि १ गुच्छावृत्ता

कशरीरवादरवनस्पतिकार्यिका द्वादशविधा प्रज्ञप्ता स्त द्यथा-स्कन्धेत्यादि ॥ वृक्षा धृतादयः, गुच्छा धृताकीप्रचृतयः, गुल्मानि नवमालिकाप्रचृतीनि लताश्चपलतादयः, इह येषां स्कन्धप्रदेशे विविक्षितोद्भृग्वैकशाखाव्यतिरेकेणा न्यत् शाखान्तर परिस्थूर न निर्गच्छति ते लता विज्ञेयाः, स्ते च घम्प कादय इति, यत्न्य कूष्माक्षीत्रपुष्पीप्रचृतयः, पर्वणा इत्यादयः, तृणानि कुशशुक्रार्जुनादीनि, वलयानि केतकीकदल्यादीनि, तेषां त्वचावलयका रेषा व्यवस्थिते ति, हरितानि तन्दुलीयकस्तुलप्रचृतीनि, उपयः फलपाकान्ता, स्ते च शाल्यादयः, जले रुहन्तीति जलरुहा, उदकावकपनकाद यः, कुटुणा भूमिस्फोटा जिघाना स्ते च यकायप्रचृतयः, तत्र यथोद्देश निर्देश इति न्यायात् प्रथमतो वृक्षप्रतिपादनार्थमाह-से किं त मित्या दि ॥ अथ के ते वृक्षा ? सूरि राह-वृक्षा द्विविधा प्रज्ञप्ता, स्त द्यथा-एकास्थिका य यहुवीजका य, तत्र फल २ प्रतियुक्त मस्य येयान्ते एकास्थि का' य शब्दो वक्ष्यमाणस्यगतानेकमेदसूचकः, तथा प्रायो स्थिवन्ध मन्तरेणै व फलान्तर्वर्तीनि यद्गुनि बीजानि येयान्ते यहुवीजका, शोषाद्दे ति क प्रत्ययः, अत्रापि च शब्दो वक्ष्यमाणस्यगतानेकमेदसूचकः, तत्रै कास्थिकप्रतिपादनार्थमाह-से किं त मित्यादि ॥ अथ के त एकास्थिका अ

णस्सड्काइयाय, से किंत पत्तेयसरीरवादरवणस्सड्काइया २ दुबालसविहा पसत्ता, तजहा-रुस्कागुच्छा गुम्मा लतायवल्लीयपह्णगाचेव । तणवलयरहरियनसहि जलरुहकुहणायवोधह्णा ॥ १ ॥ से किंत रुस्का २ दु विहा पसत्ता, तजहा-एगण्ठियाय वज्जवीयगाय, से किंत एगण्ठिया २ अण्णेगविहा पसत्ता, तजहा निव

कादि २ नवमालिकादि ३ लता चपकवृक्ष ४ नागरवेन ५ मेरुहृष्टै ६ निचै लण्णाल ७ वल्लयकेतकी ८ हरिमास ९ शोषधि १० पाणीमाहिजगे ११ भूप्पोड १२ जालिवा । सेकितरुक्का २ दुविहा प० त० । गिय कुणसा भेदकक्षा वचना गुणकहै हे गिय । दोयभेद कक्षा ते कहेहै-एगण्ठियाय वहुवीया य । एकस्थिता एकबीज अने बहुबीजा २ । सेकितएगण्ठिया २ अण्णेगविहा प त । ते हिंवे एकबीजवालाना अनेभेदकक्षा ते कहैहै-णिवज्जवुकोस व सानअकोसपीलुमेलय । सत्तदमोदयमानुय बडलपलासेकरजेय ॥ १ ॥ नौव १ आय २ जदू ३ कोसव ४ सानउध ५ अकोठ ६ पीनू ७ निसोडा ८ साल

ने त्रविधा प्रज्ञा स्त द्याया-निवधे इत्यादि ॥ गाथा त्रय, तत्र नियायत्रयम् शोधाया प्रतीता, गान सजं ॥ अमोक्षति ॥ ग्रङ्कोट प्राकृतत्वा रमूरे च  
ठकारस्य लादेश, ग्रङ्कोटैल्ल इति वचनात्, पीलु प्रतीत, गोलु अमान्तक, शालकी गनप्रिया' मोचिकीमालकी देशविशेषप्रतीतो, यकुल केसर, प  
लाग किशुक, करजो नक्तमाल, पुत्रजीवको देशविशेषप्रतिग्रह, अरिष्ट पिशुमन्द, विज्जीतकोक्ष, ररीतक कोङ्कणदेशप्रसिद्ध कपाययदुल, भस्मात  
को यस्य त्रिल्लतातन्निधानानि फलानि लोकप्रसिद्धानि, उम्बेन्नरिकाक्षीरणीधातस्त्रीप्रियालपूतिकरजश्चक्षुक्षिशोषागणपुन्नायनागत्रीपर्यंशोका  
लोकप्रतीता, जे या वल्ले तहप्यगारा इति ॥ ये पि सा न्ये तथाप्रकारा गत्र स्मकारा स्तत्रदेशविशेषमविन स्त सर्व प्ये कास्थिका वेदितया, एते  
या मेकास्थिकाना मूलान्य प्य सङ्ख्यजीवकानि, असङ्ख्यप्रत्येकशरीरजीवात्मकानि ॥ एवं कन्दा अपि स्तन्था अपि त्वचो पि शाया अपि प्रवाला

वज्रवृक्षोस वसालञ्चक्रोक्षपेलुसंलया । सत्तुहमोयडमालुय वउलपलामेकरजेय ॥ १ ॥ पुत्तजीवञ्चरिठे विन्नेल  
एहरिणयन्नत्ताए । उवेन्नरियाखीरिणि बोधवैयायडपियले ॥ २ ॥ पूडंयनिवकरए मण्हातहसीसवायञ्चस  
णंय । पुणागनागरुक्के सिरियणीतहञ्चसंगेय ॥ ३ ॥ जेयावन्तेनहप्यगारा एत्तेसिणमूलाविञ्चसखिज्जजीविया  
कडावि खधावि तयावि सालावि पवालावि, पत्तापत्तेयजीविया, पुष्पाञ्जणेगजीवा, फला एगण्डिया ॥ सेत्त

र ८ भावको १० सालक ११ कसर १२ पलास कसभ १३ कणगच १४ पुत्तजीवञ्चरिठे विन्नेलएहरिणयन्नत्ताए । उवेन्नरियाखीरिणि बोधवैयायडपिया  
ने ॥ १ ॥ जोवापातो देगोभाया अगरो यो कांठानोबोली आरोठो वहेडा हरहे भिनामा उवेन्नरिका खीरणो जाणिवा धातकी प्रियाण ॥ २ ॥ पूडंय  
निवकरजे सण्हातहसीमवायचमणाय । पुणागनागरुक्के सिरिवणोतहञ्चसंगेय ॥ ३ ॥ पूतिका नीव करन सेल्हा मगधदेग प्रसिद्ध तिम शोगम टीव  
क पवागहच नागधुच योपणी तिम अगोक्कच ॥ ३ ॥ जगवणेतहप्यगारा । जे पहावा अनरा तयाप्रकारना । एएसिणमूलानि असखिज्ज जीविया । एह  
ना मूलनविपे प्रमस्याता यउल्लानाजीवहुवे । कदावि खधानि तयावि सालावि । मूलसधि हेउना उपरिना कट स्तन्थेयउल त्वचा सालप्रमुगु । पनाला

अपि प्रत्येक नसहस्रप्रत्येकशरीरजीवका, तत्र मूलानियानिरुद्धस्या पक्षाद्रूपे रत्न प्रसरन्ति तेषां मुपरि बन्दा स्ते च लोकाप्रतीताः, रुक्म्या  
स्थुहा, त्वच खल्य, शाला शाला, प्रवाला पल्लवाङ्कुरा ॥ पक्षापसंयजीवयति ॥ पक्षाणि प्रत्येकजीवकानि, एकैक पत्र मेकैकेन जीवेना धिष्ठित मि  
ति प्राच, पुष्पाण्य नैकजीवानि प्राय प्रतिपुष्पपत्र जीवप्राचा, तफलान्ये कास्थिकानि, उपसहारभाष-से त गगद्विया ॥ सुगम, बहुवीजकप्रतिपा  
दनायमाह-सेकितमित्यादि ॥ अथ के ते यदुजीका ? मूरि राह-बहुवीजका अनेकविधा प्रक्षमा स्त द्यथा-अत्येजेत्यादिगायात्रय ॥ एते च अस्थि  
नियत्याम्याक्रममातुनिहू विन्नामलकपनसदाक्रिमाद्यत्योदुम्वरवदन्ययो धनन्दियुतपिप्पलीजतावरीप्रलजकादुम्वरि कुसुमरिदेयदालितिलकाल  
रीपमसपणंक्षिपणलोप्रधवचन्दनार्जुननीपकुटजकदम्बकाना मध्ये केचिदतिप्रमिगु केचिद्देशविज्ञोपतो वेदितव्या, नवर मिहा  
पठेया ॥ से कित वज्रयोयगा २ अङ्गगत्रिहा पणता, तजहा-अत्ययतेऽकविठे अवाहगमाउलिगविह्वेय

गफणसदालिम अशोत्येउवरवळेय ॥ १ ॥ गमोहणदिरुक्के पिप्परिमयरीपिलुकरुक्केय । काउवरि  
रि बाधह्वादेवदालीय ॥ २ ॥ तिलपलउएच्छतो हसिरीसेमन्नवसदहिवन्ने । लोम्यत्रचदणज्जुण गीमेकु

तापतरजीविया परफाअणगजावा कलाएयाह्वया । प्रवाल प्रमुख अङ्कुरा पत्रप्रमुख प्रत्येकजावच्छेदे एकैकपत्रे एकैकजात्र एवे एकफले एकजोबहुवे फू  
गेये अनेकजोबहुवे । मत्तरगद्विगा । एतले एकस्थिता जोव कक्षा । सेकितबहुवीयगा २ चमेगत्रिहा पणत ॥ द्विवे गिण्य कहे गुरुप्रते कुण बहवोज तद  
हे बहुवीजना अनेकभेदकै ते कक्षा तिम । अत्यिपतिदुकाण्डे । अन्तिकनामाह्व १ तिटुकवुचर कोठ । अवाहगमाउलिगविह्वेय । अवाहगवीजोरा  
स । आमलगफणमटाडिम आमात्येउवरवळेय ॥ १ ॥ आसला फाणस दाडिम अगल्य पोपर वट । निगोह नदिगक्के पिप्परिमयरीपिलुकरुक्केय ।  
काउवरि कुयुभरि वावच्चा देवदालीय ॥ १ ॥ त्यायोध मटिह्वच पोपर सतावर लजवहच कादवरी धणिग्या साणिग्या देवदाल ॥ १ ॥ तिलपलउएच्छतो  
वमिरोनेसति वणदक्षिणसे । लोहधमचरणज्जुण निवे कुहुए कवयेय । तिलकटी आलावह चण

मलकादयो न लोके प्रसिद्धा प्रतिपत्तया स्तेषा भेकास्थिरकृत्यात्, किन्तु देगविडोपप्रसिद्धा यदुद्योजका गव केचन ॥ अं या वलं तहप्य  
गारति ॥ ये चा न्य तथाप्रकारा एव प्रकारा स्त पि यदुद्योजका भन्तय्या, गतेषा मपि मूलकन्दरन्ध्रत्वकृशाया प्रयाला प्रत्येक मसर्द्धेय  
प्रत्येकशरीरजीवका, यन्त्राणि प्रत्येकजीवकानि, पुष्पाण्य नेकजीवकानि, फलानि यदुद्योजकानि, उपसर्गरमाह-से त मित्यादि ॥ निगमनह

ऋणकयवेय ॥ ३ ॥ जयावसे तहव्यगारा एतंसिणमूलावि अस्सखिज्जजीविया, कदावि खयावि तयात्रिसालात्रि  
 पत्रालावि, पत्ता पत्तेयजीविया, पुफायअणेगजीविया, फलावज्जवीया, सेत्त वज्जवीयगा ॥ सेत्त रुक्का ॥  
 से कित गुच्छा २ अणेगविहा पसत्ता, तजहा—वाडगिणिअल्लडपुण्ण ईयतहकच्छरीयजासुमणा । खूवीअ्याढ  
 इणीली तुलसीतहमाडलिगाय ॥ १ ॥ कुत्तुन्नरिपिप्पलिया अत्तसीविह्वीयकायमाईय । चुसपफोलाकडलि  
 वाउव्हावत्तुलेवदरे ॥ २ ॥ पत्तउरसीयउरए हवडतहजवासएयवोधेव । णिगगिणिअल्लतूवरि अ्याढईचेवतलउ

अर्जुन नाव कुटज कटववृक्ष । जगवन्तहृष्यगाराणमिणमूलाविभ्रसिञ्जिजीविया । जे वनी अनेरा तथाप्रकारना एहना मूलपिण असम्यातजीवमहि  
त हवे काइवजनामून अनन्तजीवहवे । कदावि खटावि तगवि मानावि पवानावि । कटनेविपे खयनेविपे त्वचानेविपे शाखानेविपे प्रवान पञ्चपनेवि  
पै । पता पतेवजोविया फला बहुवीया । पवनविपे प्रत्येकजीवहवे प्रभमे बहुजोहवे तेहनभिटकथा । भक्तबहुवोद्यगा । एतने बहुबीजनाभेट कथा ।  
सेतनला । ते निम हन ॥ सक्तिगच्छा २ अणेगविहा प त । हिवे, गुच्छानभिड गियाफेके गरुकेहे—गुच्छानाभेट अनैक प्रकारे कथा ते कहैके—  
बाइ गिणिद्वपण अतश्चक्षुरीयजामुमगा । क्वीआटशीली तुलसीतहमारलिगीय ॥ १ ॥ वैगण रौद्रगी सक्षकी तिम कक्षुरोना गुच्छा जाणिवा रूपा  
आटी नीलफहो तुलसी तिम बीजोरा सतीरण ॥ १ ॥ कट्युभरिपिप्पलिया अयमीवस्रोकायमाइव । चुणपडालाकटनियावाघायावयुनिवयेर ॥ २ ॥  
कटुरो पोपरण अनमो वनीयकाश्यामाटि चुभ पटोल कटनिका वारनिका वाथलो बदरवृक्ष ॥ २ ॥ पत्तटरसीवउए हवइतहजवासएयोवव्वे ।

य सुगम, मस्मति गुच्छप्रतिपादनायमाह-सैकि त मित्यादि ॥ एते गुल्मादिदेदा प्राय स्वरूपत एव प्रतीता, केचि द्वेणविजोपा दवगन्त  
या, अत्र वृक्षादिषु यस्यै कस्य नाम गृहीत्वा परत्रापि त त्नाम गृहीत तत्रा न्यो त्रिजजातीय सद्गुं नामा प्रतिपत्तव्य, अथवा, एकोपि क

॥ ३ ॥ सणपाणकासमद्गुं अण्घाफुगसामसिदुवारंय । करमहुअहत्सग करोरएरावणमहत्ये ॥ ४ ॥  
जाउलतमालपिरिली गयमारिणिकुव्वकारियात्रेणी । जावडकेयडतहग जपाफुलादासिअकोल्ले ॥ ५ ॥ जेया  
वणे तहप्पगारा सेत्त गुच्छा ॥ सै कित गुम्मा २ अण्णेगविहा पसुत्ता, तजहा-सेरियएणोमालिय कोरिठय  
वयुजीवगमणोज्जे । पीडंयपाणकणडर कुज्जयतहसिदुवारंय ॥ १ ॥ जाईमोगरतहज्जु हियायतहमस्त्रियायवा  
ती । वयुलकच्छुलसेवा लगंठिमगदंतियाचेव ॥ २ ॥ चपगजाईणवणी इयायकुदंतहामहाजाडं । एवमणेगागारा

गिगुडिप्रकटूवरि आढरंचेतलआडा ॥ ३ ॥ पववृच उरसो उरज हुये तिम जवास जाणिया निर्गुडो अक आढ तवरकोनिधै तेलोडावृच ॥ ३ ॥ सण  
पाणकाममद्गुं अण्घाडगसामसिदुवारंय । करमहुअहत्सग करोरएरावणमहत्ये ॥ ४ ॥ सण पान काममहुवृच आघाडो स्याम सिदुवार कर अडू  
सा कैर कटालो रावण ॥ ४ ॥ जाउनतमानपरिलो गयमारिणिकुव्वकारिया भेडो । जायइकेयडतहग जपाडनादासिअकोले ॥ ५ ॥ जाउल तमाल परि  
लो मडेगमिगेय गजनारणो कुव्वकारिआ भोडो यावत् केनको तिम गडपाडल एहवा अकोले ॥ ५ ॥ जेयावणेतहप्पगारा । ज अनेरा तथाप्रकारना ।  
मेत्त गुच्छा । ते तिम गुच्छाकक्षा ॥ सैकित गुम्मा २ अण्णेगविहा प त । ते कुण गुल्म गुरुकहै ते अनेकप्रकारे कक्षा ते कहैहै-सेरियए  
णामालिय कारेवधजोगमणोज्जे । पौडपाणकणरर कुज्जयतहसिधवारंय ॥ १ ॥ सेरीयनामा नवमालिका कोरटक वधुजीवक विपधुरिया  
फुन सनाजनामा गुल्म प्रौतिकर प्राणतर प्रसिड कणवर कुव्वजननामा तिम निर्गुडो ॥ १ ॥ जाईमुग्यरतहज्जु हियाउतहमस्त्रियाययासती । वयुलकच्छुल  
सेया लगंठिमगदंतियाचेव ॥ २ ॥ जायनाफुन मागरा तिम जूने तिम मानतीगुल्म वासतो गत्युन कच्छालगुल्म सेवालगुल्म गठिमगनामे दतिमग ॥ २ ॥

हवतिगुम्नामुण्यद्वा ॥ ३ ॥ सेतु गुम्ना ॥ से कित लयानु लयानु अणुगविहानु पणत्तानु, तजहा—पउमल  
यानागलया अणुसोगचपयलयलायचूतलता । वणलतवासतिलता अणुमुत्तयकुंदसामलता ॥ १ ॥ जेयावसेत  
हप्पगारा सेतु लयानु ॥ से कित वल्लीनु २ अणुगविहानु पणत्तानु, तजहा—पूसफलीकालिगी तुंवीतपुसीय  
एलवालुकी । घोसालंडपफोला पचगुलिअ्याणालीय ॥ १ ॥ कगूलयाकदुइया कक्कोरुडकारियल्लईसुन्नगा ।  
कुयवायवगलीपा वावल्लीतहदेवढालीय ॥ २ ॥ अण्फोअ्याअणुइमुत्तय नागलयाकण्हसूरवल्लीय सघहसुमिण  
सावि जायसुमणकुविदवल्लीया ॥ ३ ॥ मुद्दियअ्यावल्ली वीरविरालीजियतिगोवाली । पाणीसामाचल्ली गुंजा

चपमजाडणउणा याउकुदातदामहाजाई । एवइणेगागारा इवतिगुम्नामुण्यद्वा ॥ ३ ॥ चपक जातो नवरगौ मचकन्द तिम महाकाय इम अनेअभेद  
आकारकै गुण्य नातिअणिवा ॥ ३ ॥ सेतुगुम्ना सेकित लयार अणेगविहान प तजहा । ते तिम गळ ॥ ते हिवे गिय लताजातिपूछेगुरू है हेमहानुभाव ।  
नाजाति अनेक प्रकारनो कहौ तेकरै—पउमलनागलया अमोगचपयलयामूलया । वनलयवासतिलया अणुमुत्तयकुंदसामलया ॥ १ ॥ पयलता  
नागलता अगोकलता चपकलता भूतलता वनलता वासतीलता अतिमुक्तलता कुटलता श्यामलता ॥ २ ॥ जयावणेतहपगारा । जे पणि और तथा  
प्रकारना ते नता कहिये । सेतलताओ । लता वनस्पति कहौ ॥ सेकित वल्लीओ वल्लीओ अणेगविहाना पउ तउ । हिवेगियपूछे कृण ते वल्ली वल्ली अनेक  
प्रकारनो कहौ तेकरै—पूसफलीकालिगी तुंवीतपुसीय गलीओ । घोसालंडपफोला पचगुलिअ्याणालीय ॥ १ ॥ कगूलाकडुया ककोलाकरियल्लईसु  
न्ना । कुयवायवगलीपा वावल्लीतहदेवढालीय ॥ २ ॥ अण्फोअ्याअणुइमुत्तय नागलताकण्हसूरवल्लीय । सण्डसुमिणमावि जामवणकुविदवल्लीय ॥ ३ ॥ मु  
द्दियअ्यावल्ली वीरविरालीजियतिगोवाली । पाणीसामाचल्ली गुंजा । घोसालंडपफोला पचगुलिअ्याणालीय ॥ ४ ॥ सेसिविदुगोत्तफमिया गिरिकण्हसामलयायअजण्ड । टहफुल्लयको  
गलिमा गलीयतदप्रकडोदोया ॥ ५ ॥ पूसफलीका लिगौ मनो तीउसी एल्लची चौभडो घोसातकी पटोल पचागुलौ नालिका ॥ १ ॥ कगू कटुकी ककोडा



थि दनेकजातीयको जवति यथानालिकेरीतर रेकास्थित स्वचो यलयाकारत्वा च वलय स्ततो नेकजातीयत्वा दनेकत्वा दपि त नाम निर्दिश्य

वल्लीयवत्याणी ॥ ४ ॥ ससविदुगोत्तफुसिया गिरिकसडमालुयायञ्जणइं । दहफुल्लयकागलिमा गलीयतह  
 अक्कन्नोदीया ॥ ५ ॥ जेयावसे तहप्यगारा सेत वल्ली ॥ से कित पव्वा २ अणुणगविहा पसत्ता, तजहा—  
 डस्कयाडस्कुरुये वीरुगतहडक्कनेयमासेय । सुठेसेरेवेत्ते तिमिरेसतपोरगणले ॥ १ ॥ वसेवेल्कणए कका  
 वसेयववसेय । उदएकुलएविमए ककावेल्कणए ॥ २ ॥ जेयावसे तहप्यगारा सेतं पव्वा ॥ से कित  
 तणा ? तणा अणुणगविहा पसत्ता, तजहा—सेक्रियगनियहोत्थिय दप्पकुसेपव्वाएयपोळडला । अणुणअप्साटए  
 रो हियसिसुवेयखोरजुसे ॥ १ ॥ एरुकेकुलविंदे करकरसुठेतहाविवग्गय । मज्जरतणतुरयसिप्पिय बोधवे  
 सुकलितणेय ॥ २ ॥ जेयावसे तहप्यगारा सेत तणा ॥ से कितवल्या २ अणुणगविहा पसत्ता, तजहा—ताले

करेना मभगा क्वथा वागला पवेका तिमच टेवडालो ॥ २ ॥ अपाक अतिमुक्का नागरवल कण्वल्ला सवय समनमा जासपणं कुविटवल्ली ॥ ३ ॥ मुट्टि  
 का अवा विराली जयतो गोपानो वाणो सामावलो गुजावली वत्याणो ॥ ४ ॥ सेमवती दुगोवा फरसो गिरिकणीं मालुका अजना द्रहो फालिका क  
 गणी मांगरो तिम अक्कावीटो ॥ ५ ॥ जेयावसे तहप्यगारा सेतवलीओ । जे अन्य पिण तथा प्रकारना तेवलोकिइये णत्तेवलीकही ॥ सेकित पव्वा २  
 अणुणगविहा प० त०—तेकुण पर्वग पर्वग अनेक प्रकारनाकक्षा तेकहेक्के—सेण्डी इज्जुवाटिका वीसणो इकड मासो सुठ तमरिस पोसण वसि सेष्ठक  
 णा ककावसो वाववसो उटक कुठक विमुक कठेवन कम्पाणो ॥ १ ॥ जेया० । जेएइवा अनेरा पिण ते पर्वग कहिये । सेत पव्वा । एतले पर्वग कक्षा ॥  
 सेकित तणा तथा अणुणगविहा प० त० । तेकुण तण तण अनेकप्रकारना कक्षा ते कहेक्के । सेठियगति ॥ सेटित भूतिका हांतिक डाम कुय पर्वग पोडल  
 अर्जुन आयाट रोहिंस सुग्गक खोरभुम ॥ १ ॥ एरुड कुवविट करकच सुठ विभग्ग मधुरतण खुरक सिप्पच गुल्लतण ॥ २ ॥ जेया० । अन्यपिण एइवा ते

मान न विरुप्यते, साम्प्रतमुक्तानुक्तार्थसङ्ग्रहार्थमिदमोह-नोणोविहेत्यादि ॥ नानाविधं नानाप्रकारं संस्थान आरुतियेया तानि नानाविधस

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

तमालेतक्कलि, तेयालीसालिसारकक्षाणे । सरलेजात्रतिकेयइ, कदलितहपउमरुकेय ॥ १ ॥ नुयसरुक्रहि  
गुरुके, लवंगसकेयहोडवोधवे । पूयफेलीखेजुरी, बोधव्वानालिपरीय ॥ २ ॥ जेयात्रखे तहप्पगारा सेत्ते  
वलया । से कित हरिया ? हरिया अण्णगचिहा पसत्ता, तजहा-अज्जीरुहवोदाणो, हरितगेतहतदुलेज्ज  
गतणय । वल्लुलपोरगमज्जा, रंपोइयत्थीयपालक्का ॥ १ ॥ दगपिप्पलीयट्ठी सौल्लियसाएतहेवमरुक्की ।  
मूलगसरिसवअविल, साएवजियंतएचेव ॥ २ ॥ तुलसीकरहउराले फणज्जुएअज्जएयअण्णए । चोरगदमण

जे एहवा अनेरा तथाप्रकारेना लणकहिवा देगोभापाये । सेत्ततथा । ते तिस लण कहवा । सेकित वलया २ अण्णगचिहा प० त० । तेमिय पूहे कुण य  
नय भेट, तद गुणे वलयनाभेट अनेकप्रकारे कक्षा ते कहै-ताल तमालेतहलि तेवलिसालियसारकर्त्तणे सरलेजावदकयइ कदलितहवमरुकेय । १ ।  
तानहच तगालहच तल्लालित सालिका पारकक्षाण सरले जावत्री केतकी कटली तथा धर्महच । भुगवक्खहिगुरुवेत्ते लवंगरुक्खहीदोधवे पुण्णली  
खज्जरीवोधवा नालिपरीय । २ । भूतहच हीगहच लवङ्गहच एहवनाम ते जाणिया पुण्णल खिल्लुरो जाणिवी नालिकार । २ । जयावखेतहप्पगारा ।  
एहवा पर्णा तथाप्रकारे अनेरा । सेतवखवा २ सेकित हरिया अण्णगचिहा प० त० । एतले वनम्पतीना वनयानभिट कक्षा त हिचे हरितनाभेट पूहे मि  
य तद गुणकहै हरितसेद तिम हेमियल हरितभेट अनेकप्रकारे कक्षा तेकहै-अज्जीरुहवोडाणे हरियमतहट्टलिज्जा तणेय वल्लुलपारगमज्जार पोणव  
सोउपालयका । १ । अज्जीरुहवोडाण हरित तथा तदुल लणवच्छेद पौर सालार पाववती पालका । २ । दगपपलियादव्वा सालीयसएततहेवमरुक्की  
मूलगसरिसवअविल सौयवजियतिएचेव । १ । दगपौवल ठवी सौल्लिका तिमहीच सेटुकी मूलग सरसव अविट सौगत जयती निखे । तुलसीकरहउ  
राले फण्णिएअज्जएयअण्णए चोरदगमणमरुचग सयपुष्पादेवरेयतहा । २ । तुलसा लण उदार फण्णज्ज अज्जुन भुचन चोरदग सेतक रुवेज सय

धि दनेकजातीयको प्रवर्तति यथानालिङ्गेतिरु रेकास्थिरु स्त्वचो यलपाकारत्वा च वलय स्ततो नैकजातीयत्वा दर्नेकत्वा दपि त न्नाम निर्दिश्य

वल्लीयवत्याणी ॥ ४ ॥ ससविदुगोत्तफुसिया गिरिकसडमालुयायञ्जणइ । दहफुल्लयकागलिमा गलीयतह  
 अक्कवोदीया ॥ ५ ॥ जेयावसे तहप्पगारा सेत्त वल्लीउ ॥ से कित पव्वग २ अणुणेगविहा पसत्ता, तज्जहा—  
 डस्कूयाइस्कुवन्नये वीरुणातहडक्कन्नियमासेय । सुठेसरेयवेत्ते तिम्मिरसतपोरगणले ॥ १ ॥ वसेवेलूकणए कक्का  
 वसेयववसेय । उदएकुणएविमए कक्कावेलूयकक्काणे ॥ २ ॥ जेयावसे तहप्पगारा सेत्तं पव्वग ॥ से कित  
 तणा ? तणा अणुणेगविहा पसत्ता, तजहा—सेन्नियगतियहोत्तिथ दप्पकुसेपव्वएयपोळडला । अज्जुणञ्जसाठए  
 रो हियसिसुयवेयखीरज्जुसे ॥ १ ॥ एरुक्कुरुविंद करकरसुठेतहाविज्जगूय । मज्जरतणतुरयसिप्पिय बोधव्वे  
 सुंकलितणेय ॥ २ ॥ जेयावसे तहप्पगारा सेत्त तणा ॥ से कितवलय २ अणुणेगविहा पसत्ता, तजहा—ताले

करेना मभगा कुववा वागला पवेको तिमज देवडाला ॥ २ ॥ अपोक्क अतिमुक्का नागरवल कण्वज्जा सवय ममनमा जासपुणं कुविटवल्ली ॥ ३ ॥ मुट्टि  
 का अवा विराली जयतो गोपालो वाणी मामावद्धो गुजायद्धो वत्याणो ॥ ४ ॥ सेसवती दुगांचा फरसो गिरिकर्णो मालुक्का अजना द्रहो फालिका का  
 गलो मांगरो तिम अक्कावोदो ॥ ५ ॥ जेयावसे तहप्पगारा सेत्तवलोओ । जे अन्य पिण तथा प्रकारना तेवलोक्किये णत्तेवलोक्कहो ॥ सेज्जित पव्वग २  
 अणुणेगविहा प० त०—तेकुण पर्वग पर्वग अनेक प्रकारनाकक्का तेक्कहे—सेन्ही इक्कवाटिका धीरुणो इक्क मासो सुठ तमरिस पोरगण वसि सेव्वक  
 णा कक्कावसो वाववसो उदक कुठक विमुक्क कठवेन कत्थाणो ॥ १ ॥ जेया० । जेएववा अनरा पिण ते पर्वग कहिये । सेत्त पव्वग । एतले पर्वग कक्का ॥  
 सेकित तणा राणा अणुणेगविहा प० त० । तेकुण तृण तृण अनेकप्रकारना कक्का ते कहिये । सेठियगति ॥ सेटित भूतिका होतिक डाम कुय पर्वग पोतल  
 भर्जुन आपाड रोहिस सुग्गक खोरभुत्त ॥ १ ॥ एरुड कुएविद करकच सुठ विभगू मधुरतृण कुरक सिप्पव गुल्लतृण ॥ २ ॥ जेया० । अन्यपिण एववा ते

एकजीव एकजीवाधिष्ठित कि सर्वेषां मपि न त्वाह-तालसरलनालिकेरीणा तालसरलमुपलक्षण तेना न्येपा मपि यथागम मेक जीवाधिष्ठितत्वं इत्यस्य प्रतिपत्तव्य, अन्येषां तु स्कन्धा प्रत्येक मनेकप्रत्येकशरीरजीवात्मना इति सामर्थ्यो दवसेय ॥ खन्याविश्रणगजीविया इति पूर्वमभिधानात्, अथ यदि प्रत्येकमनेकशरीरजीवाधिष्ठिता स्तत कथं मेकस्यैकशरीराकारा उपलभ्यन्ते इति, तदऽवस्थानस्वरूपमाह-जडसगले त्यादि ॥ यथा सकलसपपाणा श्लेष्मभिश्चाणा श्लेष्मद्रव्यविमिश्रिताना वलितावतिरेकरूपा भवति, अथ ते सकलसर्पेषा परिपूर्णशरीरा सन्त पृथक् स्वस्वायगाएनया तिष्ठन्ति तथा नया एवो पमया प्रत्येकशरीरिणा जीवाना शरीरसङ्घाता पृथक् स्वस्वायगाहना भवन्ति, इति इह जीवा

स्सवन्ते कटहारे कोरुणदे अरविदे तामरमे त्रिमे त्रिसमुगालो पोखले पोखलिच्छ्लए जेयात्रसे तहप्य गारा सेत जलरुहा । से कित कुहणा ? कुहणा अण्णगविहा पसत्ता, तजहा-आए काए कुहणे कुणक्के दव्हलिया अफ्फाए सज्जाए वसोए वसीणहिया कुरए १ जेयात्रसे तहप्यगारा सेत कुहणा । पाणाविहस ठाणा रुक्काणएगजीवियापत्ता । खधोविण्णगजीवा तालसरलनालिएरीण ॥ १ ॥ जहसगलसरिसत्राण सिलेस

सेकित कुणहा २ अण्णगविहा प० त० । कुण गुरुकहे ते प्रनेकप्रकारे कहेछै, कुणहानामा वनस्पतीनाभेदछै तिके गुरु भिन्न कहेछै जहो । आपकाएकहणे क कण्ठेदव्वइलिया सपभाएसेत्ताए छत्तोएवसोणहियाकहरए । भाय काय कइण कण क द्रयहलिका सप्रभ सेत्ताक छ्वाक वसोणहित कुहरकनामा । जेगावण्णतइयगारा सेत कुणहा । जे अनैरा तथाप्रकारे सर्व कुण्ह कइये । पाणाविहसठाणाएगजीविया पसत्ता । नानाप्रकारे सस्थान न नेकपाकारे वृक्षादिकना सर्वपचाटि एकजीवछै तेकक्षा-खधाविण्णगजीवा तालसरलनालिएरीण जहसगलसरिसयाण सिलेनमिच्छापवट्टियावट्टी । खु न्य पिय एकजीवछै ताल खज्जूरो नानैरो सदेहट लवा गाथा कहेछै, जिम सकल सरसव स्तम्भ द्रव्य वीकणोद्रय तेणे मित्रभीधा एकठायाय जिम । पसेवसरीराण तहहोतिसरीरसधाया जहवातिलपयडिया बहुएहिलिहिसवधानती । प्रत्येक गरीरप्रते तिमहुवे गरीरसधात एकठाछै जिम तिलपा

पिन्नादे सौम्यस्यानीये रागद्वेयीपचितं तथाविधं कर्म सकलसंपत्त्यानीया प्रत्येकशरीरा सकलसंपत्त्येव संपदेवैवित्त्यप्रतिपत्त्या पृथक् स्व  
स्यायादकप्रत्येकशरीर्यैवित्त्यप्रतिपत्त्यं, अत्रैव दृष्टान्तान्तर माह-जह्वेयादि ॥ वाञ्छ्यो दृष्टान्तान्तरसूचने यथा तिलशङ्खलिका तिलप्रधाना  
पिष्टमयी छापिका बहुनि स्तिलै मिश्रिता सती यथा पृथक् २ स्वस्वावगाहतिलात्मिका प्रवर्ति, कयन्वि देकरूपा च, तथा अनयै वो पनया  
प्रत्येकशरीरिणा जीवाना शरीरसङ्घाता कथं चि देकरूपा पृथक् स्वस्वावगाहना श्रु प्रवर्ति, उपसहारमाह-सहमित्यादि ॥ युग्म ॥ स अस्मि  
त्तत्त्वाचारणवनस्पतिकार्यिकप्रतिपादनायेमाह-चेकितमित्यादि ॥ अथ के तं साधारणशरीरवादनस्पतिकार्यिका अनेकविधा प्रक्षेपा स्तद्व्या-श्रव  
ादि ॥ एतेषु केचिदतिप्रसिद्धत्वा केचि देशविशेषत स्वयं मेव ज्ञातव्या ॥ ज्ञेयाननेतराविहादिति ॥ ये पि वा न्ये उक्तव्यतिरिक्तो स्या प्रका

मिस्साणवहियात्रहा । पत्तेयसरीराण तहोतिसरीरसधाया ॥ २ ॥ जहवातिलपप्पक्रिया वज्जएहितिलेहिं  
सहतासती । पत्तेयसरीराणं तहोतिसरीरसधाया ॥ ३ ॥ सेत्त पत्तेयसरीरवादनवणफडकाइया । से कित  
साहारसरीरवादनवणस्सडकाइया ? १ अणुगविहा पण्णा, तजहा-अणु पणए सेवाले लोहिणी निन्न  
स्यिन्नागा अस्सकणी सिहकणी सिउठाततोमुसडीय ॥ १ ॥ सुसकुणहरियाजारु, तीरविरालीतहेवकिहीया ।

पडी बहुतित्ता एकठय,दे याकेव्वे । पत्तेयसरीराण तहोतिसरीरसधाया सेत्तपत्तेयसरीर वायरवणस्सडकाइ । प्रत्येकशरीर तिनएव शरीरसधाया  
मेलो पतले तिन प्रत्येकशरीर वादन वणफटोकाउगा भेदकक्षा । सेकित साधारणसरीरवादनवणस्सडकाइया २ अणुगविहा प ० त ० । ते हिंवे साधारण  
शरीर वनस्पतीनाभेद केतला, तट मुक्कडे साधारणशरीर वादनवणस्सडीना अनेकभट कक्षा ते केहेहे-अवपणपणसेगले नोहिणोमिहणीहप्पिभगा  
प्रमौकणिसोवकणो सिउठनतोमसुडीय वणकुडारिया । अवक पनक सेगले नोहिणो मिघुनी न रक्षभगाअगेकणी सिउकणी सज्जटित्तमंजन्द मुसट न  
नन्द कुन्दरो । जोरुवोरविरालो ततथज्जिहावहासिदसिगवरे याउलउयामूलकनू कमुकदेसुमहनापावलदेएतहेव । लोरो वोरविरालो तिमहाज लो

तन्निर्द्देशिगवरेण, अलुगंमूलएइ यकटूय कणकठतंमज्जपोगलडंतेहव मज्जसिगी विरुहा सप्यसुगधा डि  
 त्वारुहा चेव वायरुहा पाढामियवालुकी मज्जरसा चेव रायवल्ली य पउमा य माठरी दति वळिकिहाति  
 यावरामासपणी मग्गपणि जीवियरिसिके य रेणया चेव कालली खीरकालली तथा जगीणहाईयाकिमिरा  
 सिन्नहमुस्याणगलडंतेपलुगाईये किरहे पउले य हेठहरतणया चेव लोयाणी कंगहंकदेवज्जे सूरणकंठे तहव  
 ससूळे एए अणतजीवा जेयावणे तहाविहा ॥ तणमंलंकदमूलो वसीमूलित्तियावरे । सखेज्जा मसखिज्जा बोध  
 छाअणतजीवाय ॥१॥ सिंधाऊगंसुगुच्छो अणगजीवोउ हाति पायहो । पत्ता पत्तियजिया टोणियजीवानु फले

टो दानिद्र यक्कनेर आलू रक्तालू मल्लो कण्णकन्द मधुआं पोलिव तिमहोज । मुहसिगीविरुहा सप्यसुगधाछिन्नरुहाचेव वीयदहापाठाभियवालूकोम  
 हरसचेय । मधुसिगी विरुटो सपेनाखन्या छिन्नरुहा निरै वीजरुहा पाठारुहा मितयालुका मधुरस निरै । रायवल्लीयपउमाय माठदताच्छोकि  
 टित्तियवराए नासपणिमुगपण्णो जोवियरसेयेरेणयाचेव । रायबेल पद्मा नाठरी दातो चखो किंविभक्तिभरं मापपर्णी मुग्दपर्णी जीविकरसस रेणुका  
 निरै । काआलिखीरकाठलो तहमगोचिपनिहोएव किमरासिभदमुच्छाण गुणइएगिलोयपिल्लण । काठलो चोरकाठलो तह तिम भाग निरै क्रमरा  
 णि भद्रमोय गुलो गिलीय वलुवा । किण्णपसलेहडे हरतचेयाचेवलोयहणीकरडे कंदेवलीमूरण कंदेतेहेवखसूर । कण्णपटाल वडकन्द हरततु त्रिये लावा  
 णो कण्णकन्द वलुकन्द सूरणकन्द तितहीज खिलोडा । ए अणतजीवा जेयावणेतहाविहाण । इणा कदाभादि अनत्तजीवहे जे एइवा अनराहोज तथा  
 प्रकारया । तणमूलक-मूले वसीमूलित्तियावरे सखिज्जा मसखिज्जा बोधव्याणतजीवाय । तणमूल कन्दमूल वगीमूल इणामादि सख्याता नमरयाता जा  
 णिवा मनन्ताजीन । सिंधाऊगसगुच्छो अणगजीवोउहोइणायलो पत्तापत्तियजिया दोणियजोवाफलभणिया । सिंधोडानो जे गुच्छहुवे तेहमादि ननेक  
 लोव जाणिया हुने पतले २ मत्वके वेवे जोयहुवे फलमादि कक्षा । लसमूलखभगस्य समाभगीयदीसदे अणतजीवेउसमूल जेयावणेतहाविहा २१ ।

धिकारं शेषाद्रव्यस्यानौये रागद्वेषीपर्यन्तं तथावैधं कर्म संकलसर्पपस्थानीया प्रत्येकशरीरा संकलसर्पग्रहण सर्पपवैवित्त्यप्रतिपत्त्या पृथक् स्व स्वावगाहकप्रत्येकशरीरवैवित्त्यप्रतिपत्त्यर्थं, अत्रैव दृष्टान्तात्तर माह-जह्वेत्यादि ॥ वाशब्दो दृष्टान्तात्तरसूचने यथा तिलशुक्लिका तिलप्रधाना पिष्टमयी व्युत्पन्निका बहुवृत्ति स्तिलैर् निश्रिता सती यथा पृथक् २ स्वस्वावगाहतिलात्मिका प्रवर्तते, कथञ्चिद्विदेकरूपा च, तथा अन्ये यो पदं यो प्रत्येकशरीरिणा जीवाना शरीरसङ्घाता कथं चिद्विदेकरूपा पृथक् स्वस्वावगाहना य प्रवर्तते, उपसहारमाह-संज्ञमित्यादि ॥ युग्म ॥ य स्मृति साधारणवत्तरपत्तिकार्यकप्रतिपादनायेमाह-चेकितमित्यादि ॥ अथ के ते साधारणशरीरवाद्गवन्तरपत्तिकार्यिका अनेकविधा प्रज्ञेया स्तद्यथा-श्रव रत्यादि ॥ एतेषु केचिदतिप्रसिद्धत्वा एकेचिद्देशविशेषत स्वयं मेव ज्ञातव्या ॥ ज्ञेयावन्तैराविष्टादिति ॥ ये पि वा न्ये उक्तव्यतिरिक्ता स्तथा प्रका

भिरसाणंवाहियात्रहा । पक्षेयसरीराण तहहोतिसरीरसघाया ॥ २ ॥ जहवातिलपम्पक्रिया वज्रगृहितिलेहि  
सहतासती । पक्षेयसरीराणं तहहोतिसरीरसघाया ॥ ३ ॥ सेतं पक्षेयसरीरवादरवणम्फडकाइया । से कित  
साहारसरीरवादरवणरसइकाइया ? १ व्युत्पन्नगविहा पसुता, तजहा-अत्रए पणए सेवाले लोहिणी निह  
स्थिन्नगा व्युत्पन्नकणी सिंहकणी सिंठाततोमुसडीय ॥ १ ॥ रुसकुणहरियाजारु, लीरविरालीतहेवकिहीया ।

पडो वहततिला एकठयये याकेहवे । पक्षेयसरीराण तहहोतिसरीरसघाया सेतपक्षेयसरीर वायरवणम्फडकाइया । प्रत्येकशरीर तिमसुवे परीरसघात  
भेनो पतते तिम प्रत्येकशरीर वाटर वनसतौकाउगा भेदकणी । से कित साहारसरीरवायरवणम्फडकाइया २ प्रणेगविहा पं० त० । ते हिंवे सावारण  
ग्रोर वनसतौनाभेद केतला, तद युक्ते साधारणशरीर वादरवणसुनोना अनेकभट कणी ते कहेंछे — अत्रपणएसेगाले लोहिणीमिहंणीहच्छिभगा  
असोकणिमोहकणी सिंठ ठेनतोमसुडीय रुसकुडारिया । अत्रक पनक सेवान रोहिणी मिर्धनो द रेसुभाप्रमोकेणी सिंठकणी सजटितसकन्द मुसठ न  
रुकन्द कुन्दरो । जोरुवीरविरालो तहवजहावहानिहसिगवरे माउसउयामूनएकत कणकुदसुम्फापावसइएतहेव । औरो वीरविरालो तिमहोज लो

ग्रन्थानि तथाप्रकाराणि अधिकृतमूलभनसमप्रकाराणि तान्यप्यनन्तजीवानि ज्ञातव्यानि, एवं कन्दरुम्यत्यम्नायाप्रयालपत्रपुष्पफलबीजवि  
पया अपि नत्र व्याख्या 'सम्प्रति प्रत्येकक्षरीरलक्षणाभिधानार्थं गाथादशकमाह-जसस्त्यादि ॥ यस्य मूलस्य जनस्य सतो जह्नु जह्नुप्रदश हीरो

जससपत्तस्सन्नगस्स समोज्जगोपदीसई । अणतजीविउसेपत्ते जेयावन्नेतहाविहा ॥ ७ ॥ जससपुप्फस्सन्नगस्स  
समोज्जगोपदीसई । अणतजीविउसेपुप्फे जेयावन्नेतहाविहा ॥ ८ ॥ जससफलस्सन्नगस्स समोज्जगोपदीसई ।  
अणतजीविफलेसेउ जेयावन्नेतहाविहा ॥ ९ ॥ जससबीयस्सन्नगस्स समोज्जगोपदीसई । अणतजीविउसेबीपु  
जेयावन्नेतहाविहा ॥ १० ॥ जससमूलस्सन्नगस्स हीरोज्जगोपदीसई । परित्तजीविउसेमूले जेयावन्नेतहाविहा १  
जससकदस्सन्नगस्स हीरोज्जगोपदीसई । परित्तजीविउसेकदे जेयावन्नेतहाविहा ॥ २ ॥ जससखधस्सन्नगस्स

साभगा० अणतजीवपदार्थमे जेयावणेतहाविहा । जे सासभागेशके समाभग दोसै तेमाल अनन्तजीवम हवे जे पड्या अनरा तगप्रकरे । जसपत्तस  
भगस्य समंभ० अणतजीविसेपत्त जेयावणेतहाविहा । जिण पातडे भागतायका सम भग दोसे ते पत्र अनन्तजीव हवे जे अनेरा पिण तिणप्रकारे  
जाणिया । जसपुप्फस्यभगरस समोभगोयदोसर अणतजीविउसेपुप्फे जेयावणेतहाविहा । जिण फूललागेशके समोभ० हवे दोसे ते अनन्तजीव हवे फूल  
जे अनेरा तथाप्रकारे । जसफलसरसभ० रस समोभ० अणतजीविउफलसेण जेयावणेतहाविहा । जिणफल भागतेउके समाभग दोसै ते फल अनन्तजीवमे  
हवे जे पड्या तथाप्रकारे । जसबीयरसभगरस समोभ० अणतजीविउसवण जेयावणेतहाविहा । जे बीज भागेशके समाभग दोसै ते अनन्तजीव नीज  
अनेराप्रकारे तथाविधे हवे । जसमूलसरसभगरस होराभाउदोसर परित्तजीविउसमूल जेयावणेतहाविहा । जेमूल भागेशके विपनभग दोसै ते मूल प्रले  
क जीवसहित कहिये जे अनरा तथाप्रकारे । जसकदसरसभगरस होराभाउदोसर परित्तजीविउसेकदे जेयावणेतहाविहा । जे कदभागेशके विप  
नभग दोसे ते कन्दमाहि प्रलेक जीवमाह हवे जे अनेरा तथाप्रकार । जसखधसरस होरोभ० परित्तजीविउसेखध जेयावणेतहाविहा । जे



रा उक्तप्रकारा स्तेष्व नन्तजीवा ज्ञातव्या ॥ तथेत्यादि ॥ तृणमूल कन्दमूलय चा पर वशीमूल एतेषां मध्ये क्वचि ज्जातिभेदतो देशभेदतो वासह्य ता जीवा क्वचिदसह्यता क्वचि दनन्ता च ज्ञातव्या ॥ सिंघाढगस्तेत्यादि ॥ शृङ्गाढस्य यो गुच्छ सो उनेकजीवो जयति ज्ञातव्य । त्वक्शखादी नामनेकजीवाल्लकत्वात् केवल तत्रापि यानि पत्राणि तानि प्रत्येकमेकैकस्मिन् द्वौ २ जीवौ ज्ञातिनौ ॥ जस्समूलस्सेत्यादि ॥ यस्यमूलस्य प्रग्नस्य सत समसकान्तरूप श्रृङ्गाकारो ब्रह्म प्रकर्षेण दृश्यते तन्मूलमनन्तजीवमवस्य ॥ जेयावन्नेतहाइति ॥ यास्य अपि चान्यानि

ज्जाणिया ॥ २ ॥ जस्समूलस्सन्नगस्स समोन्नगोयदीसए । अणतजीविउसेमूले जेयावस्सेतहाविहा ॥ १ ॥ जस्सकदस्स न्नगस्स समोन्नगोयदीसई । अणतजीविउसेकदे जेयावन्नेतहाविहा ॥ २ ॥ जस्सखधस्सन्नगस्स समोन्नगोय दीसई । अणतजीविउसेखधे जेयावन्नेतहाविहा ॥ ३ ॥ जस्सतयाएन्नगाए समोन्नगोयदीसई । अणतजीवा तथासाउ जेयावन्नातहाविहा ॥ ४ ॥ जस्ससालस्सन्नगस्स समोन्नगोपदीसई अणतजीविउसेसाले जेयावन्ने तहाविहा ॥ ५ ॥ जस्सपवालस्सन्नगस्स समोन्नगोपदीसई । अणतजीविपवालेसे जेयावन्नातहाविहा ६ ॥

द्विव साधारण प्रत्येकरो लक्षण हुवे जिणमूलभागे थके समोन्नग दीसै ते मूल अनन्तजीव ते जाणिवो जे वल्लो अनेरा तथाप्रकारे इम १० । जस्सकदस्स मूलस्य समोन्नगोयदीसई अणतजीविउसेकदे जेयावन्नेतहाविहा ११ । जिण कन्दमूल समोन्नग समोन्नगोयदीसै ते कन्दमे अनन्तजीव हुवे ते कन्दनेविये जे अनेरा तथाप्रकारता तेकन्द जाणिवो । जस्सखधस्सन्नगस्स समोन्नगोयदीसै ते खधे जेयावन्नेतहाविहा । जिण स्तम्भभागे थके समोन्नगोयदीसै ते स्तम्भ अनन्तजीव मिश्रहुवे इम स्तम्भ जिने अनेराप्रकारता जाणिवो । जोसेतइयाएभागापसमोन्नग अणतजीवतयासाओ जेयावन्नेतहाविहा । जिण नौ त्वचा भागथके भाजता समोन्नग दीसै ते त्वचा अनन्तजीवने हुवे एहवी अनेरौत्वचा जाणिवो तथाप्रकारे । जस्ससाखस्सन्नगस्स समोन्नग अणतजीविउ सेसाले जेयावन्नेतहाविहा । जेह प्रवानटोची भागथके समोन्नग दीसै ते प्रवान अणतजीव दीसै जे एहवा अनेरा तथाप्रकारे । जस्सपवालस्सन्नगस्स स

या, यव कन्दरश्मशामाविषया अपि तिष्ठो गाथा परिगावनीया, अधुना तामामेव लक्ष्मीना प्रत्येकजीवत्यपरिहानाय नानामाह-नर्ममसू  
लस्सेत्यादि ॥ गापाचतुष्टय यस्य मूलस्य काष्ठात् मध्यसारात् सखी धरुलरूपा तनुतराजगति सा परित्तजीवा प्रत्यक्षशरीरजीवात्मिका द्रष्टव्या,  
जयावलेतहाइति ॥ या पि सास्या अधिष्ठतया प्रत्यक्षशरीरजीवात्मकत्वेन निश्चितया छत्या समानरूपा लक्ष्मी सा पि तथाविधा प्रत्येकशरीर  
जीवात्मिका अवगन्तव्या, यव कन्दर्पादिविषया अपि तिष्ठो गाथा सावनीया, यदुक्त-नर्ममसूलस्सजद्रुस्ससमोजद्रुपदीसद् ॥ इत्यादि तदेव लक्षण

स्म हीरोन्नगेपटीसई । परित्तजीवेउसेपुण्णे जेयावणेतहाविहा ॥ ८ ॥ जरुनफलरसजगस हरीरोन्नगेपटीस  
इ । परित्तजीवेफलेनेउ जेयावणेतहाविहा ॥ ९ ॥ जरुसवीररसजगसर हरीरोन्नगेपटीसई । परित्तजीवेउसे  
वीए जेयावणेतहाविहा ॥ १० ॥ जरुसमूलरसकठाने लक्ष्मीवहलतरीनवे । झुणतजीवाउसातल्ली जायाव  
णातहाविहा ॥ ११ ॥ जरुसमूलरसकठाने लक्ष्मीवहलतरीनवे । झुणतजीवाउसातल्ली जायावणातहाविहा २ ॥

जे फल भागतायका, समाभगदोसे ते फल अनन्तजीवम हुवे ते घनेरा नानाप्रकारे ते पिण जाणिया । लक्ष्मफलमभाम् समोभंगीपटीसर अथतोजेवे  
उमलेमे जेगावणेतहाविहा । जे फल भाकतेयके समोभगदोसे ते फल घनत्तचौसे हुवे जे एडवा घनेरा तथा नानाप्रकारे रम जाणवा । लक्ष्मवीथस  
भगम समोभगायटोसद अणतजीवेउसेवीए जेयावणेतहाविहा । जे वोलाभागतायका समोभग दोसे तेवीच घनेरा नानाप्रकारना तेपिण रमहोज  
जाणिया । जरुसमूलरसमभगस हीरोन्नगेउटोसए परित्तजीवेउसेमूले जेगावणेतहाविहा । दिवे मूलभागेयका विषमभग दोसे ते मूल प्रत्येकजीव माहि  
ते कहिये घनेरा तथाप्रकारना तेपिण रमानाणिया । जरुसकदरसभगरस हीरोन्नगेउटोसए परित्तजीवेउसेकटे जेगावणेतहाविहा । जे कन्तनाजेपके  
विषमभग दोसे तेकन्दमाहिः प्रत्येकजीव हुवे जे घनेरा तथाप्रकारना ते पिण रम जाणिया । जरुसखगरसमभगरम हीरोन्नगे० परित्तचौवेउसेखुधे जेगा  
यणेतहाविहा । खोखम्यालेयक विषमभगदोसे ते खगध प्रत्येकशरीर कहिये एडवा घनेरा तथाप्रकारना ते पिण रम जाणिया । जोसेतइयाएभाए

विषम्वेदमुद्गतरा प्रदुष्यते प्रकपणं स्पष्टरूपतया लक्ष्यते ततो मूल परित्तजीव प्रत्येकशरीरजीवात्मकं ज्ञातव्यं ॥ ज्ञेयवन्नेतराविज्ञाति ॥ या  
न्यपि चा न्यानि अजगन्तानि तथाप्रकाराणि अधिष्ठतुसहोरमभनमूलसदृशानि मूलानि ता न्यपि प्रत्येकशरीरजीवात्मकानि मन्तव्यानि एव कन्द  
दिविषया अपि नव गायानावनीया , यत्र कुत्रापि लिङ्गव्यत्यय स प्राक्तलक्षणाद उच्यते , अथुना मूलादिगताना वस्तरूपाणा लक्ष्मीनामन  
न्तर्भावपरिज्ञानांलक्षणं माह-अस्ममूलसंस्त्यादिगायावतुष्टय ॥ यस्य मूलस्य काष्ठात् मध्यसारात् लक्ष्मीवस्तरूपा बहलतरा नवति सा अनन्त  
जीवा ज्ञातव्या ॥ नैयावल्बहति ॥ यापि चा न्या अधिकृतया अनन्तजीवत्वेन निश्चितया समानरूपा लक्ष्मी सापि तथाविधा अनन्तजीवात्मका ज्ञात

हीरोन्नगेपदीसई । परित्तजीउसेखंधे जेयावसेतहाविहा ॥ ३ ॥ जस्ततयाणजगणए हीरोन्नगेपदीसई । परि  
त्तजीवातयासाउ जेयावसेतहाविहा ॥ ४ ॥ जस्तसालरमजगस्स हीरोन्नगेपदीसई । परित्तजीउसेसाले  
जेयावसेतहाविहा ॥ ५ ॥ जस्तपवालेरसेजगस्स हीरोन्नगेपदीमई । परित्तजीउपवालेज जेयावसेतहाविहा  
६ ॥ जस्तपत्तस्तजगस्स हीरोन्नगेपदीमई । परित्तजीउसेपत्ते जेयावसेतहाविहा ॥ ७ ॥ जस्तपुफ्तस्तजग

खुदभाजेपके विपमभग दोस ते खूब प्रत्येकशरीर कहिये पढ़वा जे अनैरा तथाप्रकारे ते पिण जाणिवो । जौसितेवाणभगण हीरोभगो परित्तजीवो  
तयासाया जेयावसेतहाविहा । जेहोने त्वचा भोजतोयका विपमभगदोसै त्वचा प्रत्येकजौवमे कहिये पढ़वा जे अनैरा ते पिण इस जाणवा । जस्तसा  
नस्तमभगस हीरोभगो परित्तजीवोउसेसाले जेयावसेतहाविहा । जे सालभाजेथके विपमभग दोसै ते साल प्रत्येक जौवमे हवे जे पढ़वा अनैरा पिण इ  
महोच जाणिवो तौणप्रकारे । जस्तसालमभगस हीरोभगो परित्तजीवोपवाले जेयावसेतहाविहा । जे साल भागेथके विपमभग दोसै तेसाल प्रत्येक  
जोममे हवे पढ़वा जे अनैरा ते पिण इसहोच जाणवा । जस्तपत्तस्तमभगस समोभगोउदोसई अणतजौवसेपत्ते जेयावसेतहाविहा । जेपच भागताठका  
समाभग दोसै तेपच अनन्तजौवमे हवे जे अनैरापिण इसहोच जाणिवो । जस्तपुफ्तस्तमभगस समोभगोयदोसई अणतजावेउसेपुफ्त जेयावसेतहाविहा ।

जीवाउसाठही जायावणातहाविहा ॥ २ ॥ जससधस्सकठानुं ठहीतणुयरीचवे । परित्तजीवाउसाठही जायावणातहावि जायावणातहाविहा ॥ ३ ॥ जससालाडकठानुं ठहीतणुयरीचवे । परित्तजीवाउसाठही जायावणातहाविहा ॥ १ ॥ हा ॥ ४ ॥ चक्कागजजमाणस्स गठीचुण्णघणोचवे । पुढवीसरिसणुणत्तेदेण अणतजीवविवाणाहि ॥ १ ॥

हिरलो छाल जाडोहवे ते छालिमाहि अनन्ताजोध छाल बहुतजाडोहवे-अनन्तजीवमे हुवे इम अनेरा तथाप्रकारे पिय कहवा । जसकदस्सकडुआं छहीवहनतरोभवे अणतजीवाउसाठही जायावणतहाविहा । जकण्टनो काटनोख न जाडोहुवे तेइने अनन्तजीव इमे जेवनी अनेरा तथाप्रकारे तेपिय इमडोल कहवा । जसकदस्सकडुआं छहीवहनतरोभवे अणतजीवाउसाठही जायावणतहाविहा । जे कण्ट काटछालजाडो हुवे ते छालमे अनन्ता जोवहुवे जे छही अनेरा तथाप्रकारे इमडोल जाणिया । निसेसानाएकडुआं छहीवहनतरीभवे अणतजीवाउसाठही जायावणतहाविहा । जे सालना काटनो छाल जाडोहवे वाकून रूप हुवे ते छाला अनन्तजीवमे कहिये तथाप्रकारे । जोसेसानाएकडुआं छहीवहनतरोभवे अणतजीवाउसाठही जायावणतहाविहा । जेसाल काटन छालजाडोहवे तेसालमे अनन्तजीव कहिये एहवा अनेरा पिय इमडोल जाणिया । जसमूनसकडुआं छहीतणुयरीभवे परित्तजीवाउसाठही जायाव । जेमलना काटनाटल घणी हुवे वाहिरलो छाल पातली हुवे ते प्रत्येकरूप जाणियो जे एहवा अनेरा पिय इमडोल जाणिया । जसकदस्सकडुआं छहीतणुयरीभवे परित्तजावाउसाठही जायाव । जेकण्टना काटनो छाल पातलीहवे त छाल प्रत्येकगरीरमे कहिये ए इमडोल । जसकधरमडुआं छहीतणुयरीभवे परित्तजीवाउसाठही जायावणतहाविहा । जे स्मग्ध काटनो छाल प्रत्येकगरीरमे क हिचे एहवा अनेरा पिय इमडोल । जेसालनाएकडुआं छही जायाव । जे सालना काटनो छाल पातलीहवे तेछाल प्रत्येकजीवमे कहिये एहवा जे अनेरा पिय इमडोल । चक्कागजमाणस्स गठीचुण्णघणीभवे पटवीसविसेणभेएण अणतजीवविवाणाहि । जे भाजनेघ के चक्काकार हुवे समाजदस्यानकमून कण्टादिक हुवे ज गाठभाजते चूण्णघित हुवे प्रधियोनीपरे पच वर्णभेदे रगहुवे ते पिय अणतजीवमे हुवे ते फून

स्पष्ट प्रतिपिपादयिषु रिदमाह-चक्षागमित्यादि ॥ चक्षुः चक्षाकारमेकात्मनेन समं जङ्गस्थान यस्य जङ्गमानस्य मूलरुन्दरुत्पत्त्यक्शासापत्रपुष्पादे  
र्भवति तन्मूलादिकमनन्तजीवविजानीहि इति सम्यग्य, तथागटीचुसुघणोन्नवेतिग्रयि, पर्वसामान्यतो जङ्गस्थान वा स यस्य जङ्गमानस्य  
वृष्टेन रजसा घनो व्याप्तो भवति अथवा यस्य पत्रादे जङ्गमानस्य चक्षाकार जङ्गरजसा ग्रन्थिस्थाने व्याप्ति च विना पृथिवीसदृशेन भेदेन जङ्गस्या

जस्सखंथस्सकठानं वल्लीवहलतरीन्नवे । अणंतजीवाउसावल्ली जायावस्सातहाविहा ॥ ३ ॥ जस्ससालाडक  
ठानं वल्लीवहलतरीन्नवे । अणंतजीवाउसावल्ली जायावस्सातहाविहा ॥ ४ ॥ जस्समूलस्सकठानं वल्लीतणु  
यरीन्नवे । परित्तजीवाउसावल्ली जायावस्सातहाविहा ॥ १ ॥ जरसकदस्सकठानं वल्लीतणुयरीन्नवे । परित्त

नीरो. परित्तल्लोमीतगासाग्रे जयावणेतहाविहा । जेहनी तवाभागता विपमभगदोसै तवा प्रत्येकजीवमे कहिये एहवा जे अनैरा पिण इमहोज  
जाणिवा । जरमसालस्सभगस्स होरोभः परित्तल्लोवेडसेमाले जेगविसेतहाविहा । जेसाल भाजेयके विपमभग दोसै ते साल प्रत्येकजीवमे हुवे जे एह  
वा अनैरा तेपिण इमहोज जाणवा । जस्सपवानस्सभगस्स होरोभः परित्तल्लोविपवालसे जेयावणेतहाविहा । जे प्रयालभागेयके विपमभग दोसै ते  
प्रयाल प्रत्येकजीवमे कहिये जे अनैरा तथाप्रकारे इमहोज जाणिवा । जस्सपत्तभगस्स होराभोगीयदोसइ परित्तल्लोवेडसेपत्तेजेगायसेतहाविहा । जे प  
त्र भागेयके विपमभग दोसै ते पत्र प्रत्येकजीवमे हुवे एहवा जे अनैरा ते पिण इमहोज जाणिवा । जस्स पुष्पभगस्स होरोभः परित्तल्लोवेडसेपुष्पके जे  
गावणेतहाविहा । जे फूल भागेयके विपमभग दोसै ते फूल प्रत्येकशरीरमे कहिये जे एहवा पिण तिमहीज जाणिवा । जस्सफलभगस्स होरोभः  
परित्तल्लोवफलेमे जगावणेतहाविहा । जे फल भागतायका विपमभग दोसै प्रत्येकफल कहौजे जे अनैरा पिण तथाप्रकारे जाणिवा इमहोज । जस्स  
वायस्सभगस्स होरोभः परित्तल्लोवेडसेमोए जेयावणेतहाविहा । जेजौज भागतायका विपमभग दोसै ते बीज प्रत्येकशरीरमे कहौजे एहवा अनैरा पिण  
तथाप्रकारे जाणवा । जस्समूलकठानं वल्लीवहलतरीन्नवे अणंतजीवाउसावल्ली जगावणेतहाविहा । जे मूलनां काठनांमाहिस्सो गर्भदल घोडा अनेव

जीवाउसाठही जायावणातहाविहा ॥ २ ॥ जस्ससधस्सकठाउं ठस्सोतणुरीचवे । परिस्सजीवाउसाठही जायावणातहाविहा ॥ ३ ॥ जस्मसालाडकठाउं ठस्सोतणुरीचवे । परिस्सजीवाउसाठही जायावणातहाविहा ॥ १ ॥  
हा ॥ ४ ॥ चक्कागज्जामाणस्स गठीचुण्णघणोचवे । पुढवीसरिस्सणुणजेदेण सुणतजीवविवाणाहि ॥ १ ॥

हिरलो काल जाडोहवे ते छाजिमाजि अनत्ताजोव छान धुतजाडोहवे-अनत्तजोवमे हुवे इन अनेरा तथाप्रकारे पिय कहवा । लक्खकम्मदशापो छत्तोवदलतरीभवे अणतजीवाउसाठही जोगावणतहाविहा । जकन्दनो काटनोछ न जाडोनुवे तेरने अनत्तानोव हुवे जेवलो अनेरा तथाप्रकारे तेपिय दमडोज कहवा । लक्खकटसरकड्डाया छत्तोवदलतरीभवे अणतजीवाउसाठही जोगावणतहाविहा । जे कन्द काटणालनाडी हुवे ते छातमे अनत्ताजोवहुवे जे छनी अनेरा तथाप्रकारे दमडोज जाणिया । जिसेसानाएकड्डाया छत्तोवदलतरीभवे अणतजीवाउसाठही जोगावणतहाविहा । जमानना काटनो छाल जाडोहवे वाकुल रूप हुवे ते छाना अनत्तजोवमे कहिये तथाप्रकारे । जोसेसानाएकड्डाया छत्तोवदलतरीभवे अणतजीवाउसाठही जोगावणतहाविहा । जेसालकाष्टमे छानजाडोहवे तेसानमे अनत्ताजोव कहिये पडवा अनेरा पियेदमडोज जाणिया । जसमूदरसकड्डाया छत्तोवदलतरीभवे अणतजीवाउसाठही जोगावणतहाविहा । जेसालकाष्टमे छान पातलो हुवे ते प्रत्येकरूप जाणिवो सेण्डवा अनेरा पियेदमडोज जाणिया । जसकटसरकड्डाया छत्तोवदलतरीभवे अणतजीवाउसाठही जोगावणतहाविहा । जेकन्दना काटनोछाल पातलोहुवे त छाल प्रत्येकगरोरमे कडिये पडवा अनेरा पियेदमडोज । जससुधरसकड्डाया छत्तोवदलतरीभवे अणतजीवाउसाठही जोगावणतहाविहा । जेकन्द काटनोछाल पातलोहुवे तेछाहिये पडवा अनेरा पियेदमडोज । जिसेसानाएकड्डाया छत्तोवदलतरीभवे अणतजीवाउसाठही जोगावणतहाविहा । जेमाना काटनोछाल पातलोहुवे तेछाल प्रत्येकजोवमे कहिये पडवा जे अनेरा पियेदमडोज । पक्काम जमानसरस गठोचुण्णघणोभवे पटभोमविसेषभेएण अणतजीवावणाविहा । जेभाजनेध के पक्काकार हुवे समोक्कटखानकमूल कन्ददिक हुवे ज गाठभाजते चुण्णपित हुवे पयिबोनीपरे पच वर्यभदे रगहुवे ते पिण्ड अनत्तजोवमे हुवे ते फूल

न भवति सूर्यकरनिर्गमप्रतकेदारतरिकाप्रतरखरुस्ये व सभो ब्रह्मो प्रवतीति भावस्तमनस्तकाय विजानीहि ॥ पुनरपि लक्षणात्तरमाह-गूढसि  
रागमित्यादि ॥ यत्तत्र सत्तीर नि लीवम्वा गूढसिराकमलस्यमाणशिराक्षिपेय यदपि च प्रनष्टसन्धि सर्वथा नुपलस्यमाणपत्रादुदयसधि तदऽनन्त  
जीव विजानीहि, सम्प्रतिपुष्पादिगत विक्षपमन्निधिदसु राह-पुष्पाणि चतुर्विधानि तद्यथा-जलजानि सहस्रपत्रादीनि स्थलजानि क्षोरण्टकादीनि  
एताव्यपिच प्रत्येक द्विधा तद्यथा-कानिचित् वृन्तबहुनि अतिमुक्तप्रवृत्तीनि कानिचिन्नालबहुनि जातिपुष्पप्रवृत्तीनि अत्र तेषा मध्ये कानिचि

गूढसिरागपत्तं सच्छीरजंचहोडनिच्छीरं । जपियपणष्ठसधि अणतजीविवियाणाहि ॥ २ ॥ पुष्पाजलयाथलया  
विटवद्वायणालिवद्वाय । ससिजमसखेज्जा बोधव्वाणतजीवाय ॥ ३ ॥ जेकंदनलियावद्वा पुष्पासखेज्जजी  
विया । णिज्जयाअणतजीवा जेयावखेतहाविहा ॥ ४ ॥ पउमुप्पलिणीकडे अतरकदेतहवज्जिह्मी य । एतं

फलं पचनो । गूढसिरागपत्तं 'सच्छीरचचहोयनिच्छीर' जपियपणष्ठमधि अणतजीविवियाणाहि । गूढ सिरगधि होसेनही कीरसहित हुवे जे चीरविना  
'हुवे जेइनो प्रतिष्ठा गुमसधिहुवे ए लक्षणेकरी अनगतकायना जीव जाणिया , दिवे फूल फलनोसख्यालक्षण कहेकै--पुष्पाजलयाथलया विटवद्वाय  
णालिवद्वाय सखिजामसखिज्जा बोधव्वाणतजीवाय । 'फूल चारभेदहुव अन्न कमलादि धलज चपकाटिक एहवा केभट हुवे बोटवद्वा चपकाटिक तालव  
'जाइजूर' थाटिक एहोवैयै हव्यातोनीव पिगहुने असख्याता पिगहुने पनस्तजीव पिण जाणिया । जेकंदनलियावद्वा पुष्पासखिज्जजीवियाभणिगाह  
'निहुगाअणतजीवा जेयावखेतहाविहा । जे केई नालवह जाइ जूरे आदिहु ते फूल सख्यात जीवातक कत्था कीतरागे सिन्ध फूलमे अनस्तजीव हुवे ए  
हुवा अनरा पिण एहुवे-लक्षणे सर्व जाणिया । पउमुप्पलिणीकडे अतरकदेतहवज्जिह्मी एणोलीवांसिसुणाले । पद्यनोनामकड सत्यल  
नामकड 'अन्तरकड जलवनसती तिमहीज जलकार वनसती' संयजीव अनत्ता जाणिया पद्यनीनेविदे नृणालनेविपे एगलीव । पनहुहसणकदेय कद  
नीयकुडवए 'एएपरित्तजीवा जेयावखेतहाविहा । पडलोकड सहसनकड वनस्यो कटवेवनस्यो निविपेय एसवं प्रलेकजीवाकक जाणिया अनेरा पिण

स्वप्नादिगतजीवापेक्षया सङ्ख्येयजीवानि कतिचिद् सङ्ख्येयजीवानि यथागम बोद्धव्यानि, अत्रैकविंशतिशेषमात्र-जेकेष्टव्यादि ॥  
यानि कानिचित् नालिकावद्गुणानि पुण्याणि जात्यादिगुणानि तानि सर्वाण्यपि सङ्घातजीवकानि जगितानि तीर्थकराण्यथै, सिद्धू सिद्धपुष्प पु  
नरनन्तजीव यान्यपि चान्यानि स्निग्धपुष्पकल्यानि तान्यपि तथाविधानि अनन्तजीवात्मकानि ज्ञातव्यानि ॥ पञ्चमुष्यलिलीकदेत्यादि ॥ पञ्चिनी  
कन्द उत्पलिलीकन्द अक्षरकन्दजलजवनस्पतिविशेष कन्द जिह्विका वनस्पतिविशेषा, एते सर्वव्यन्तजीवा नगर पञ्चिन्यादीनां विभो शृणाले  
चमकजीवात्मके विसृष्टाले इति ज्ञाव ॥ पल्लवइत्यादि ॥ पल्लवइत्युक्तं ननु नन्द कन्दुको वनस्पतिविशेष, कुस्तुम्यको ज्येष्ठमत्र एत सर्वे पि प  
रित्तजीवा प्रत्येकशरीरजीवात्मका प्रतिपत्तव्या, ये पि चान्ये एव प्रकारा अनन्तजीवात्मकलक्षणविरहितास्त पि तथाविधा प्रत्येकशरीरजीवा  
त्मका वेदितव्या, पञ्चमुष्यलेत्यादिगायत्र्य ॥ पट्टानां मूलानां नलिनानां सुत्रगानां सौगन्धिकानां अरिन्दिनां कौकनदानां शनपत्राणां सह  
स्रपत्राणां प्रत्येक यद्वन्त प्रसज्यन्त यानि च बाह्यपत्राणि प्रायो हरितरूपाणि पत्रकणिका पत्राधारभूता एतानि त्रीण्यप्यकजीवात्मकानि या

अणतजीवा एगोजीवोन्निसमुणाले ॥ ५ ॥ पल्लवइत्युक्तं कदलीयफुल्लपत्र ॥ एणपरित्तजीवा जेयावन्नेन  
हाविहा ॥ ६ ॥ पञ्चमुष्यलणालिण सुत्रगसौगन्धिकण सतवत्तसहस्रसपत्ताण ॥ ७ ॥  
विटवाहिरपत्ता यकणियाचेवएगजीवरस अण्णितरगपत्ता पत्तेयकेसरमिजा ॥ ८ ॥ वेणुनलड्डुक्कुवाद्धिय

तथाप्रकारे प्रत्य ज्ञापिवा । पञ्चमउष्यलनलिण सभासौगन्धिकणाय परविट्वाकणाय सपत्तसहस्रपत्ताण । पञ्च उष्यल नलिन सुभग सौगन्धिक  
परविट् कौकण वनस्पतौविशेष गतपत्र सहस्रपत्र । विटवाहिरपत्ता यकणियाचेवएगजीवरस अण्णितरगपत्ता पत्तेयकेसरमिजा । पट्टानां सहस्र वा  
स्रपत्र प्रागे रुपसञ्चित कणिका ए विण्णनेविषे एकजोयद्वे वाह्यपत्र कणिकाविषे एकजीव ज्ञापिवा माहिलोपध पाचुडो केरामिजो एत ॥ गत्येकजो  
वह्वे । वेणुनलड्डुक्कुवाद्धिय मयमासदत्तुइकउरडे करकचमूठविहिदू वणागतपत्र वगाण्य । वेणुवग इत्युक्तादि तत्र ननपतो पण्डत्यादि चत्ताका



नि पुरस्वत्तराणि पत्राणि यानि च केसरणि यानि शमिष्ठा फलानि मतानि प्रत्येक भेदेक जीवाधिष्ठितानि ॥ वेणुनतडत्यादिगाथादयः ॥ वेणु र्वञ्जो नरु वृणयिषोप इत्यु वाक्रियादयो लोकेत प्रत्येत्या , तथानि दुर्वादीनि यानि च पवगानि पर्वापेतानि सतपा यदृष्टि यच्च पर्व यच्च बलिमोहउति-  
पर्वपरिवेष्टन चक्राकार एतानि एकजीवस्य सम्यर्थीय भवन्ति एकजीवात्मकानि भवन्तीति ज्ञात , पत्राणि गतया सेकजीवाधिष्ठानानि पुष्पाख्य  
नेकजीवात्मकानि ॥ पुष्पाभिमित्यादि ॥ पुष्पफला एव कालिग तुय नपुप ॥ खिलवालुत्ति ॥ खिलटविशेषरूप वातुक खिलट तथा घोपातक पटोल त  
न्दुक तिदूत ख्व य रफला मतपु प्रत्येक वृत्त सम ॥ सकटाहति ॥ समास सगिर तथा कटाह गतानि त्रीण्ये कस्य जीवस्य भवन्ति एकजीवात्मका  
न्येतानि त्रीणि भवन्तीत्यर्थं , तथा एतेषा मेव पुष्पफलादीना तद्वत्कृपयत्नाना पत्राणि पुष्पक प्रत्येक भिति प्रत्येकशरीराधिष्ठिता न्येकैकजीवाधिष्टि

समासइस्कूयइक्षरैरु । करकरसुठिचिहनु तणागतहपह्मगाणच ॥ ९ ॥ अष्टिपञ्चपलिमो रुद्रयएगस्सहो  
तिजीवस्स । पत्तयपत्ताइ पुष्पाइण्णंगजीवाड ॥ १० ॥ पुस्सफलकालिग तुवतउसेलुवालुक । घोसालयं  
पळोल तिदूयचेवतिदूस ॥ ११ ॥ वेटमसकहाह एयाइहवतिएगजीवस्स । पत्तयपत्ताइ सकेसरमकेसरमिजा

र इवे ते सर्वजीव एसग्घो रक जाणिया । इम लण तथा पव करी सहित । अष्टिपञ्च पलिमो लज्जणगस्सहोतिजीवस्स पत्तयपत्ताइ पुष्पयमभेगजी  
वाड । अष्टिपञ्च चक्राकार रुवे एहेने एकजीव इवे प्रत्येकपत्र एकजीवाधिष्ठित एन अनेकजीवाधिष्ठित इवे । पुष्पफलकालिग तुवतउसेलुवालुक  
वामाडपटोल तिदूयचेवतिदूस । पुष्पफल कोहलो कालिगडा तूयो चिर्भट घापातक फलविशेष पटोल तिदुक टिडसो । विटमसकहाह एयाइह  
तिगजीवसम पत्तयपत्ताइ सकेसरमकेसरमिजा । सम समास गिर कटाह पत्र मिने एकजीवहुन केगरा प्रकेगरा एकै जीवादिहत्त । सफासितज्जाए  
उजेहलियायकुदणकटुके एण्णतजौवा कटुकेहादनयणाए । मख्यात सज्जातको उवेहलिका कुहण कटुक वनस्पती अनत्ताजौवात्मक कटुकहुवे भ  
जनये वनस्पतीविशेष एसवं अनत्तजाय । जाणिअग्घोए जीवावकमइसोविशण्णोना जीविग्गमत्तजौवा सोधियपत्तयपटमाए । जिवाए जीवयोनि नव

तापीत्यर्थं , तथा उक्तेसरा स्मकेसरा वा मिज्जावीजानि प्रत्येक मेकैकगीताधिष्ठितानि ॥ मरुत्तापृत्यादि ॥ गते कुङ्कणादिवनस्पतिप्रशया लोका  
त प्रत्येतया , एते वा नन्तजीवात्मका नवर ऋदुक्ते जजना अ हि का पि देशविजोपा दन्तोऽनतजीवो भवति को वा स्रुपेपीतात्मक इति  
आह-कि वीजजीव गव मूलादिजीवो जयति वता अन्य स्मसि त्पुपकान्ते इत्यद्यते इतिपरप्रमाशस्वात-वीपजोक्षिदूतत्वादि ॥ योयं योनि  
भूते योन्यवस्था प्राप्ते योनिपरिणाम मुञ्जरतो ति नाव , वीनस्य हि द्विविधा उपस्था तद्यथा-योपवस्था न्योन्यवस्था च तत्र मरा वीन यो  
न्यवस्थान ज्ञापति अथर्षो म्भित जन्तुना तदा तत् योनिभूत मित्यभिधीयते , उम्भित इव जन्तुना निययतो ना वगन्तु ज्ञायते ततो ऽतिशायिना  
मुम्रति सचेतन सचेतन वा अविध्यस्तयोनि योनिभूत मिति व्यग्रिप्यते विध्यस्तयोनि तु नियमा दचेतनस्या दयोनिभूत मिति , अथ योनिरिति  
किम अभिधीयत उच्यते-जजन्तोस्त्यात्तिस्थान मविध्यस्तशक्तिक तत्रत्यजीवपरिणमनशक्तिमन्मन मितिज्ञात , तस्मिन् वीचे योनिभूते बीवो व्युत्प  
मति उच्यते स गव पूर्वङ्को वीजजीवो ऽन्यो वा , आगत्य तत्रो स्तद्यते कि मुक्त भवति तदा योनिनिर्गतेन पीयेन स्थायुष क्षयात् बीजपरित्याग  
रुतो जयति तस्य च वीनस्य पुन रस्युक्तालाऽऽनिसयोगरूपसामग्रीमभज स्तदा कदाचि रस गव प्राक्तनो वीजोपवो मूलादिनामगोत्र नियथा  
तत्रा न्त्य परिणमति कदाचि दन्य पृथिवीकायिकादिबीव या पि च नूते जीव इति य गव मूततया परिणमते जीव से पि पने प्रथमतये  
ति ॥ स एव प्रथमपत्रतया पि च परिणमते इत्येकबीवकर्तृकमूलप्रथमपत्रे इति आह-यद्येय ॥ सर्वोपि किमनुत्तरु उगमसमाप्तोऽप्यनुत्तरु ॥

१२ ॥ सप्फाएसज्जाए उव्वेहलियायकुहणकुडुक्को । एएञ्जणतजीवा कुडुक्कोहोइज्जगणाने ॥ १३ ॥ जाणिप्पूएचीए  
जीवोवक्खमइसोवञ्जणोवा । जोविञ्जमूलेजीवो सोविज्जपत्तेपढमपाए ॥ १४ ॥ सव्वोविक्खिसरुत्तरु उगमम

स्मितकाही तिहा ते पूर्वजीव सा गारण जीव चनेने प्रनेजोपमा चागीथा तेपने मूनसाधारण हुं पछे एकजीव । सव्वोविक्खिसरुत्तरु उगमसमाप्तो  
अणतथाभिणिनो सोवेवविषडुडुतो दोरपरत्ताअणतोवा । मव्वं किमनुत्तरु निच जगता अनन्ताकाय कदिचे तेहीज वडतेयक्के पछे अन्तमुद्धरं पछो प्रत्येक

इत्यादि बह्यमाण कथं न विरुध्यते ? उच्यते-इह्यजीजीओ ओन्वो वा चीनमूलत्वेनो त्वद्य तदुत्सुनायस्या शरीरि तत सा उदन्तर आदिनी किं सलयावस्या नियमतो अनन्तालोवा कुर्वन्ति पुन य तेषु स्थितिज्ञया त्परिणामेषु अत्रा त्रेव मूलजीओ अनन्तजीवतनुं स्वशरीरतया परिणमय्य ताव दृढंते याव तप्रथमपत्रमिति न विरोधः । अन्ये तु व्याचक्ष्यन्ते-प्रथमपत्रमि ए या सो यीजस्य सम्बुद्धेनायस्या तेन एकजीवकर्तृके मूलप्रथमपत्रे इति किं मुक्तं भवति-मूलसमुच्छूनावस्थे एकजीवकर्तृके एत च नियमप्रदशनायं मुक्तं मूलसमुच्छूनावस्थे एकजीवपरिणामिते एत शेष तु किञ्चनपादिना उच्यय मूलजीवपरिणामावि प्रोवितमिति तत ॥ सर्वो ऽवि किसलयो सन्तु उगममारो अगततु भणिउ ॥ इत्यादि बह्यमाणमभिक्रुतं, मूलसमुच्छूनावस्थानिवर्तनारम्भकाले किसलयत्वाभावा दिति आह-प्रत्येकशरीरेवतस्पर्तिकापिज्ञाना सर्वकालशरीरावस्थामधिकृत्य किं प्रत्येकशरीरित्यमु त कस्मिंश्चिदवस्थाविशेषे अनन्तजीवत्वमपि सम्भवति, तथा साधारणवतस्पर्तिकापिज्ञानमपि किं सर्वकालमनन्तजीवत्वमुत कदापि तदवयवशरीरत्वमपि भवति तत आह-सर्वोवि किसलयतइत्यादि ॥ इह सर्वग्राह्यो परिशेषमाधी सर्वोपि वतस्पर्तिकाय एवैकशरीर साधारण एव किसलय यावस्थामुपगत सन् अनन्तकाय स्तीयकरणधरे भणित स एव किसलयपरूप अनन्तकापिक प्रवृद्धि गच्छन् अनतो वा भवति परितोवा कथं ? उच्यते-यदि साधारण शरीर निवंच्यते तदसाधारण एव भवति, अथ प्रत्येकशरीर तत प्रत्येक इति, किञ्चित काला दृष्टं प्रत्येको भवति । इति च दुच्यते-अन्तर्मुहूर्ता स्तथाहि निगोदाना मुत्कपतो ऽप्यन्तर्मुहूर्तं काल यावत् स्थिति तत्का ततो तन्मुहूर्तो त्वरतो विद्यतेनान प्रत्येको भवती ति सम्प्रति साधारणलक्षणमाह-समयमित्यादिगाथाद्वय ॥ समय युगपद्युत्कान्ताना भुत्वाना सता तेषा साधारणजीवाना समकमेककाल शरीर

माणोद्युणतउभणिउ । सोचैवविबहुनो होडपरिहोद्युणतोवा ॥ १५ ॥ समयंवह्नुताण समयतोसिसरीराणि

प्रत्येक हुवे साधारण ते साधारण हुवे साधारणजीव तेसमे समकान क्षपैतवके । समयवह्नुताण समयतेसिसरीरनिबन्तो सतयप्राणगुहण समयऊसाग लोसाने । सायवकौ तेइनाग्ररीरनो निहृतिहुवे समयकाले सासोश्वास ग्रहण करे समकाने कसाय लोसास सकवो करे । रस्यमोजगुहण वरणि

निर्दिष्टं भवति समक च प्राणापानग्रहणं प्राणापानयोग्यं पुद्गलोपादानं ततः समकमेककालं तदुत्तरकालत्राविता बुद्ध्याधनिश्चासौ तथा एकस्य यदापरादिपुद्गलानां ग्रहणं तदेव बहूनां मापि साधारणजीवानां मवसेयं । किमुक्तं भवति यदापरादिकं मेको गृह्णाति शोया अपि तच्छरीराश्रिता बद्धोऽपि तदेव गृह्णाति तथा च यद्वहूनां ग्रहणं तत्सहेपा देकशरीरे समावेशात् एकस्यापि ग्रहणं, सम्प्रत्युक्तार्थोपसर्गमाह-साधारणेत्यादि ॥ सर्वेषामप्येकशरीराश्रितानां जीवानामुक्तप्रकारेण यत्साधारणं साधारणसूत्रे नपुंसदतानिर्देशं आर्पित्वा दाहाराद्योन्यपुद्गतोपादानं यच्च साधारणं स्याणापानयोग्यपुद्गलोपादानं उपलक्ष्य मेतत् यी साधारणवृक्षसन्निधासौ याव साधारणशरीरनिर्द्युतिरिति तत् साधारणजीवानां लक्षणं, सम्प्रति यद्ये कस्मिन् निर्गोदशरीरे अनन्ता जीवा परिणता मतीति पय मत्तरन्ति तथा प्रतिपादय न्नाह-जहग्रयगोलोदृत्यादि ॥ यथा-अप्यागोली भ्यात सन् स तत्तत्पनीयसङ्काशं सर्वोक्तिपरिणतो भवति तथा निर्गोदजीवान् जानीरि निर्गोदरूपे ष्ये केकस्मिन् शरीरे तच्छरीरात्मा

द्विती । समयज्जाणग्रहणं समयउत्सासनीसासो ॥ १६ ॥ एकस्सउजगहणं बहूगसाहारणाणतचेत्त । जज्जयाणगहणं समासत्तत्तपिपुगस्स ॥ १७ ॥ साहारणमाहारो साहारणमाणगहणच । साहारणजीवाणं साहारणलस्कणएय ॥ १८ ॥ जहग्रयगोलोघतो जानत्तत्तवणिज्जसकासो । सद्योअणपिपरिणत्तं णिज्जज्जिजे

साधारणाणितचेत्त जहग्रयणाणग्रहणं समासत्तत्तपिपुगस्स । इकलो याजाहारं प्रतिग्रहणं करे समकालात्कं यथा साधारणतो तिनहीज निपजाओ यो यस्यो तेहनो यथा आहारादिजगहणं ते निर्गोदोपाजीव ते समास एकठी रटिवा किमहुये सञ्चानसत्तीने तेहने ग्रान्तगरीर एककायाये किस र हेहे तिहा जहा अगोलोघतो उगाथा स्युमर्थ करिवा । साहारणमाणगहणं साहारणजीवाणं जहग्रयगोलोघतो । अकार यात्रागीनो साधारणयाहारं सर्वजीवमेहे साधारणहे अनुपान सास.स्वासो नेयो सर्वजीव साधारण एकठाहे प साधारणनो लज्जककथा इवे दृष्टात कहेहे - जिम लोहनी गोलो वस्योथको थाय तत्त तपनीय राता सोत्तरसत्तीखो ते एवं ग्रान्तकरो परिणत्तहुये । जाओत्तत्तवणिज्जसकासो सद्योअण

कतया अनन्तान् जीवान् जानीहि एव स्वसति ॥ एगस्सेत्यादि ॥ एकस्य द्वयो रमाणा याव त्सहेयाना वा शब्दादसहेयाना वा निगोदधीवा  
ना शरीराणि त्रु न शक्यानि कुत इति चे दुच्यते-अन्नावा त्रये कादिजीवग्रहीतानि अन्नकवनस्पतिशरीराणि सन्ति अन्नन्तजीवपिण्डात्मकत्वा  
त्तया कथं तत्तु पतन्मानीत्युत आह-दीसतीत्यादि ॥ दृश्यन्ते शरीराणि निगोदजीवाना वादरनिगोदजीवाना अनन्ताना ननु सूक्ष्मनिगोदजीवा  
ना तेषा शरीराणा मन्नन्तजीवसङ्घातात्मकत्वे उप्य नुपलभ्यस्वप्नावत्वात्, तथा सूक्ष्मपरिणामपरिणतत्वात्, अथ कथमे तदवसीयते निगोदरूपश  
रीर नियमा दन्नन्तजीवपरिणामाविर्भावित भवतीति उच्यते २ जिनवचना तच्चेद ॥ गोयलाग्रसखेज्जा होंतिनिगोया अससयागोले । एकैको य  
निगोद, अणतनीगो मुणेयद्वी ॥ १ ॥ सम्प्रत्ये तेषा मेव निगोदजीवाना प्रमाणमभिधिस्तु राह-लो-गागावेत्यादि ॥ एकैकस्मिन् लोकाकाशप्रदेशे  
एकैक निगोदजीव स्यापय एव मेकैकस्मिन् आकाशप्रदेशे एकैकजीवरचनया मीयमाना अन्नन्तलोकाकाशप्रदेशप्रमाणा निगोदजीवा भवन्ति सञ्जति  
प्रत्येकवत्तरपतिजीवप्रमाणमाह-लोगागासपएसेइत्यादि ॥ एकैकस्मिन् लोकाकाशप्रदेशे एकैक प्रत्येकवनस्पतिजीव स्यापय एव सुक्ष्मप्रकारेण मीय

तहाजाण ॥ ११ ॥ एगस्सदीरहतिरहव सखेज्जाणवपासिउसक्का । दीसंतिसरीराह् निनुयजीवाणताण २०  
लोगागासपएसे निनुयजीवठवेहिएक्केक्का । एवमविज्जमाणा हवतिलोयाञ्चणतानु ॥ २१ ॥ लोगागासपट्टेसे  
परिसजीवठवित्तुएक्केक्का । एवमविज्जमाणा हवतिलोगाञ्चसखेज्जा ॥ २२ ॥ पत्तेयापज्जत्ता पयरस्सञ्चसख

णिपरिणयो निगायजौबोतहाजाण । तरतम भेदेकरो व्यातिहवे तिष्ठे दृशते हेणिप निगोदजीव जाणरा । एगस्सदीरहतिरहव सखिज्जाणविपासिञ्चो  
सक्का दीसतिसरीराह् निगीयजीवाणताण । एक वे त्रिण सख्याता जीवना गरीरना देखीनजौ वादरनिगोदना पिण्डनथी दीसता, एद्वी निगोदना  
जीव मत्ता अनन्ताप्रमाण कहेक्के-लोगागासपएसे निगीयजीवठवेहिइक्के एवमविज्जमाणा हवतिलोयाञ्चसखिज्जा । एकैको लोकाकाशप्रदेशे एकैको  
निगोदजीव व्यापये इम वापतावज्जा हवे अनन्तलोकाकाशप्रदेशे मरीज्जा । एनेजाणताण

माना प्रत्येकतरुजीया प्रसङ्गे लोकाकाशप्रदेशप्रमाणा भवन्ति, सम्प्रतिपर्याप्ताऽपर्याप्तभेदेन प्रत्येकसाधारणजनस्पतिजीवानां प्रमाणमात्र-पक्षेयाप  
ज्जात्ताइत्यादि ॥ पर्याप्ता प्रत्येकवनस्पतिजीवा घनीकृतस्य लोकस्य सम्यन्धिन प्रतरस्य असङ्ख्यतमे ज्ञाने यावत् आकाशप्रदेशा स्तावत् प्रमाणा ज्ञा  
न्ति अपर्याप्तानां पुन प्रत्येकतरुजीवानां मसङ्खेया लोका परिमाण पर्याप्तापर्याप्तानां च साधारणजीवानामनन्तलोका, किं मुक्तं ज्ञयति असङ्ख्येयलोका  
काशप्रमाणा अपर्याप्ता प्रत्येकतरुजीवानां अनन्तलोकाकाशप्रमाणा पर्याप्ता अपर्याप्ता य साधारणजीवा इति ॥ ज्ञेयावन्तेतएति ॥ यपि चान्ये ऽनुक्तरूपा  
स्तथाप्रकारा प्रत्येकतरुका य ते पि वनस्पतिकार्यत्वेन प्रतिपत्तया, ते समासउद्भवादि प्रागुक्तं नगर यत्र लोका यान्तरपर्याप्तं स्तत्र तत्रिज्या  
अपर्याप्ता कदाचि त्सङ्खेया कदाचिद नन्ता । प्रत्येकतरुव सङ्खेया असङ्खेया या, साधारणा स्तु नियमा दनन्ता इति ज्ञाय ।

ज्ञानमिहाह । लोकाश्च सखाश्च पञ्च ज्ञातयाणसाहारणमणता ॥ २३ ॥ एतद्दिशसिरेहि पञ्चस्कने पञ्चत्रिज्याजीवा  
सुज्जमाद्याणागिज्जा चक्रुष्कासनतेइति ॥ २४ ॥ ज्ञेयावन्ते तहप्पगारा ते समासन्तु दुविहा पयत्ता, तं  
पञ्चज्ञगा य अपञ्चज्ञगा य, तत्पण जेतते अपञ्चज्ञगा तेण अप्सपत्ता, तत्पण जेतते पञ्चज्ञगा तेसिण वन्ता

हारणमणता । पर्याप्त अपर्याप्त साधारणजीव इव एकैके लोकाकाशप्रदेशे प्रत्येकलोच एकैक व्यापिते तथापि ये प्रतरना अमत्यातभागो माया ॥ २३ ॥  
थापतायका प्रमथ्यात लोकाकाशप्रदेशे यावत् असंख्यातानां लोकाकाश इव पर्याप्त प्रत्येकजीव वनस्पतीनां च तावत्तलोच प्रतरने असंख्यातमेव जेतना  
याकाश प्रदेशमान अपर्याप्ता प्रत्येक तत्र अनगताकाश प्रदेशप्रमाण पर्याप्ताअपर्याप्तता साधारणजीविति, लोकाकाश प्रसरयाता अपर्याप्तमाहे साधा  
रणे अनगत्जीव । एतद्दिशसिरेहि पञ्चखते पञ्चविज्याजीवा सुहमाअणायगिज्जा चक्रुष्कासनतेइति । एवैव अनगत्परारे करो एव प्रत्येकजीव प्रमथ्या  
हे मस्य एवैव अनागिज्जाका वस्तु ते ग्राह्य नचात्र नेत्रे दाने नही । ज्ञेयावन्तहप्पगारा ते समासन्तु दुविहा पं० तं । जे एवैव अनेरा तथाप्रकारे  
ते सखेपदकी दीपकारे कद्या ते कहैहै—पञ्चज्ञगा य अपञ्चज्ञगा य । पर्याप्त पञ्चज्ञगा तेण अप्सपत्ता । तत्पण जेतते पञ्चज्ञगा तेसिण वन्ता

ममसिगमिन्यादि ॥ गतेषां साधारणप्रत्येकतरूपाणां वनस्पतिविशेषाणां वक्ष्यमाणानामिमां विशेषप्रतिपादिकवक्ष्यमाणां गाथा अनुगन्तव्या प्र  
तिपत्तव्या स्तां यथाह-तजहा-कदायेत्यादि ॥ गाथाय, कन्दां सूरगान्दादय कन्दमूलानि वृक्षमूलानि वनस्पतिविशेष गुच्छां गुन्मां वल्लयश्च  
प्रतीता वेणुका वशां स्तव्या न्यजुनादीनि पद्मोत्पलशृङ्गादकानि प्रतीतानि, हृष्टो जलजनस्पतिविशेषं सवाल प्रसिद्धं कृष्णक पनक जवनक  
कच्छनाणि कन्दुका साधारणवनस्पतिविशेषा गतेषां मेकोनविशतिसङ्ख्यानां त्वगादिषु मध्ये कस्यापि कापि योनिः, किमुक्तं भवति-कस्यापि  
त्वक् योनिः कस्यापि वल्ली याव तस्यापि मूलं कस्या प्यग कस्यापि नध्य कस्यापि व्रीजमिति, संतमित्यादिनिगमनवत्पुण्य सुगम ॥ तदेव मु

देसेण गथादेसेण रसादेसेण फासादेसेण सहस्सगसो विहाणाइ सखेज्जाइ जीणिप्पमुहसयसहस्साड पज्ज  
तमणिस्साए अणुपज्जत्तगा वक्कमति, जत्थ एगो तत्थ सखिज्जा सिय अणुसखिज्जा सियअणुगता एणसिणं  
इमानु गाहानु अणुगतत्तानु तजहा-कदायकदमलान रुक्कमूलाइयावरे । गुच्छायगुम्भवल्लीय वल्लुयाणितणा  
णिय ॥ १ ॥ पउमुप्पलसिवाळे हदेयसेवालकिण्हएणए । अणुएयकच्छनाणी कदुक्कोकूणवीसडेमे ॥ २ ॥

पुन ए नयो पाम्या वर्णीटिक । तत्थण जेतो पजत्तगा तेषवणाएसेण गवाएसेण रसादेसेण फासादेसेण सहस्सगसोविहाणाइ सखिज्जाइ । तिहा जे प  
यांपुता वर्णीटिगे गम्यादेगे रसादेगे रपग्गोदेगे अतसहस्र प्रमवु णतले नाम । जायणणमहसउसहस्रार पज्जत्तनोसाए अणुपज्जत्तगावक्कमति । प्रत्ये क व  
नस्पतौ दग्गनाखोणि साधारण १४ नाख पर्वापुतानियावे जपजो अपर्शोपुत । जत्थएगो तत्थ मिउसखिज्जा सियअणुसखिज्जा मिउ अणुगता एणमिण्ह  
माओ गाहाओ अणुगतत्तवाओ । जिह्वा एकजोव तिहा हुने सख्याता किवारे अणुसख्याता किवारे अनन्ता इवे द्विये साधारण वनस्पतौ ओलखवाकाजो  
कवळे तेकिम तेजिम । कदायकदमलान रुक्कमूलाइयावरे गुच्छायगुम्भवल्लीय वेणुयाणितयाणिय । कट सूरणकट कटमूल वनमूल एहया वीज गु  
च्छा गुनम वेणुका वया । पउमुप्पलसिवाळे हदेयसेवालकिण्हएणए अणुएअणुसखिवाणी कदुक्कोकूणवीसडेमे । त्थण पत्त उत्तल सयाडा वुड संजाल छ

क्ता गच्छेन्द्रिया सम्प्रतिहीन्द्रियप्रतिपादनार्थं माह-संक्षिप्तमित्यादि ॥ अथ के ते हीन्द्रिया १ मूरिराह-हीन्द्रिया अनेकविधा प्रपञ्चा, तद्यथा पु  
लाकिमियादित्यादि ॥ पुलाकिमियानाम पायुप्रदेशात्पञ्चा कस्य कुम्भिप्रदेशोत्पन्ना इहा समुद्रोद्भवा प्रतीता गङ्गनया स्त स्व तपत्र युक्ता  
युक्ता सुक्ता तपत्र शृङ्गा सामुद्रशङ्काकारा वराटा कपटका ॥ सिम्पिसपुष्पि ॥ सम्यक्कृपा शुक्तय चन्दका अत्रा यथास्तु यथासम्प्रदाय  
वाच्या ॥ जेयावत्तहाप्यगारादिति ॥ य पि चा न्ये तथा प्रकारा मय प्रकारा मतकप्रवरमभूतकस्यादय ते सर्वे हीन्द्रिया ज्ञातव्या तेसम्प्रति

तयत्तत्त्वित्पचालेसुय पत्तपुष्पफलेसुय । मूलगमज्जवीएसु जोणीकरमडकेत्तिया ॥ ३ ॥ सेत्त माहारणसरीर  
वाटरवणस्सडकाडया । सेत्तवाटरवणस्सडकाडया ॥ सेत्त एगिटिया ॥ से कित वेडिटिया १ वेडिटिया अणंग  
त्रिहा पणत्ता, तजहा-पुलाकिमिया कुच्छिकिमिया गडूगलगा गोलोमा जंतरा मोमगलगा वनोमुहा सू  
ईमुहा गोजलोया जलोया जालाउया सरा सखणगा धुत्ता खुत्ता सया वराळा सोत्तिया मोत्तिया कल्लुया  
वासा एगनवत्ता दुहनवत्ता णदियावत्ता सवुक्का माइवाहा सिम्पि सपुष्पा चटणा समुदल्लिरका, जेयावसो

एवका पत्रक पचवणं फूलण प्रवय कल्लभाणो २ एहमे कटुका ए १८ । तत्तत्त्वित्पचालेस पत्तपुष्पफलेसय मूलगमज्जवीएसु जोणीकरमडकेत्तिया । त्वचा  
छाल कोट्टीपवात्त पान फूल फल मूलाग्र कोट्टीमय योज यानिकड्वी कट्टा । सेत्त साहारणसरीरवायरमणस्सडकाडया । ते एहवी साधारणपत्ररप  
तो फर वाटरवत्तरपति पिणकडो । सेत्त वायरवण० सेत्त वण० सेत्त एगिटिया ॥ सेकित वेडिटिया २ अणंगविहा प०त० । ते एतले टीग वनरपतीनभेट  
साधारण वाटरनाभेट आदिकार कल्लो पाचो एल्लिट्टिवत्ताति ह्यित्थाटि कट्टा, इहि शिथ वेडिट्टियको विवरी पूछेत्ते, ते वेडिट्टिना अनेकभेटत्ते ते कहेत्ते  
गुण । पुलाकिमिया कुच्छिकिमिया गडूगलगा गोलीमा येडरोसा मूलगा वनोमुहा । पलाकमिका कुच्छिकिमिका गडूग गोलीमा निजरास मगल वशी  
मुख । मूरमुहा गोलीनोया कल्लोया नूजन्नाओ अन्नपा सखणगा । सवीमुख गोलीनोक कल्लोका जलनूगए सपुनक । पुष्पा खुत्ता कथा वरडा सोत्ति



मा समुच्छिन्मत्या देव नपुसगा समुच्छिन्मानाम उवथ नपुसकत्वात्, नारकसमुच्छिन्मा नपुसका इतिवचनात् ॥ तसमासञ्ज्ञे इत्यादि ॥ ते  
 द्वीन्द्रिया समासत सङ्क्षेपेण द्विविधा प्रज्ञा साक्षा-पर्याप्तना धार्याप्तका अग्रवर्त्तौ योनिकुलनेदेन स्वगतानेकतेदसूचकौ, गतेषा द्वीन्द्रियाणां  
 मेवमादीना पुलकम्पादीना द्वीन्द्रियाणां पर्याप्तपर्याप्तादीना सर्वसङ्ख्या सर्वजातिकुलकोटीना योनिप्रमुसानि योनिप्रमाहानि योनिशतसहस्राणि  
 जगन्ति सप्तजातिकुलकोटिलक्षा प्रवन्तीतिज्ञाव, इत्याख्यात तीर्थकृद्भिर्मेकारो लक्षणिक, इयमत्र ज्ञावना इह-जातिकुलयोनीना परिज्ञानार्थं  
 निद परिस्फुर मुदाहरण पूर्वाचार्य रुपदर्शित तद्यथा-जातिरिति किल तिर्यग् गति तस्या कुलानि कमिकीटवृत्तिकोटीनि इमानि च कुना  
 नि योनिप्रमुसानि तथा ह्ये कस्या मेव योनी अनेकानि कुलानि भवन्ति यथा खगलयोनी कमिकुल कीटकुल वृत्तिकुल मित्यादि अथवा जाति  
 कुल मित्ये क पद जातिकुरापोन्यो अथ परम्पर विशेष एकस्या मपि योनी अनेकजातिकुलसम्भवात् यथा एकस्या मेव योनी रुमिजातिकुल कीट  
 जातिकुल वृत्तिकुल मित्यादि एव च एकस्यामेव योनाववात्तरजातिनेदनावाद् अनेकानि योनिप्रवाद्याणि जातिकुलानि सम्भवन्तीत्यु पप  
 जातिकुल वृत्तिकुल मित्यादि

तहप्यगारा सञ्ज्ञे ते समुच्छिन्मा नपुसगा ते समासञ्ज्ञे दुविहा प०, त०-पञ्जतगा य अथपञ्जतगा य एणसिण  
 एवमादियाण वेइदियाण पञ्जता पञ्जताण सत्तजाडकुलकीलीजोणिप्पमुहसयसहस्सा अवन्तीति मस्काय ॥

या मुत्तिवा कलुयावासा । पुत्ता खत्ता खगा कडा सोत्तिक भौत्तिक कलुगावासा । एगभावत्ता दुदभावत्ता नदिगावत्ता । एगोपयुत्ता द्विओपयुत्ता  
 नद्यावत्ता । सबुक्का माइवाहा सिप्पिसपुडा चट्ठाण समुन्निक्खा । गज्जा नाइवाहा सौप चटना समुत्तलीण । जेगावत्तेतदणगारा सञ्ज्ञे ते समुच्छिन्मा  
 नपुसगा ते समासञ्ज्ञो दुविहा प० त० । जे जनेरा तयाप्रकारना सर्व ते समुच्छिन्न नपुसकलिणी ते सञ्ज्ञेपवकी दोवप्रकारे कडा तेकहे—पल्लत्तगा  
 य अथपञ्जतगाय । पर्वापत्ता अथर्वापत्ता । एणसिण एवमादण वेइदियाण पल्लत्तापल्लत्ताण सत्तजाडकुलकीली । इणाय इणतरे आदिदेरे वेइन्द्रजोव  
 पर्वापत्ता अथर्वापत्ता सातलाख कुलकीली । जोणिदमुहसयसहस्सा अवन्तीति मस्काय । वेलाए योनि एहनी उत्पत्तिस्थानक ह्ये जिम खाणाना अनेन

द्यन्ते द्वीन्द्रियाणां सप्तजातिकुतकोटीनां शतसहस्राणां सुपसहारमाह-सेतमित्यादि ॥ से पा द्वीन्द्रियससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना, सञ्जाति ग्रीन्द्रियससारसमापन्नजीवप्रज्ञापनार्थं माह-सेकितमित्यादि ॥ अथ का सा त्रीन्द्रियससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना २ तत्रावानाह-त्रीन्द्रियससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना अनेकविधा प्रज्ञा ॥ तानेव तद्यथेत्यादिनो पदशयति-यते च श्रीपचविक्रमप्रयुतय स्त्रीन्द्रिया दशविशेषतो लोकोक्तं या वगन्त्या ' नमः ॥ ग्रीष्मीकणसियानिया जेपावलेतहृष्यगारा ॥ ये पि वा न्ये तथा प्रकारा से सर्वे त्रीन्द्रिया ज्ञातव्या इति शेष ॥ तैसर्वैसमुच्छ्वसनपुसकाइत्यादि ॥

सेत वेद्विन्द्रियससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना ॥ से कित तेद्विन्द्रियससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना २ ? ज्येष्ठादिहा पञ्चत्वा, तजहा-उवाड्या रोहिणीया कुतू पिपीलिया उद्धसगा उद्धेहिया उक्कलित्ता उप्पाया उप्पन्ना तण हारा कठहारा पत्तहारा मालुया तणविटिया पत्तविटिया पुप्फवेटिया फलविटिया वीयविटिना तेपुरु णमिजिया तउसिमिजिया कप्पासठिमिजिया हिक्खिया ज्जिक्खिया किगिरिना वाज्जया लज्जया सु नगा सोवत्थिया सुयवेठा इदकाड्या इदगोवया तुरुत्तवगा कोत्थलवाहगा जूया हालाहला पिसुना सत

कुलकोडि उवे तिम जाणिये ते एतने । सेत वेद्विन्द्रियससारसमापन्नजीव प्रज्ञापना । सेकित तेद्विन्द्रियससारसमापन्नजीव प्रज्ञापना २ ज्येष्ठादिहा पञ्चत्वा ५० तं । द्विवेतेन्द्रियनाभेद एके कुण युरुक्कहे तेद्विन्द्रिय ससार सप्तास्तजीव प्रज्ञापना ते गनेकप्रकारे कथा ते कहवै । उवाड्या रोहिणीया कथ पिक्खिवियाथो उद्धसगा उद्धेहिया उक्कलिया उप्पाया चोण्डा । उत्पातिका रोहिणीया कट्टुवा पिप्पलित्ता उद्धसगा उद्धेहो व ल्खित्ता उप्पन्ना उप्पन्नानाम । तणादारा काट्टादारा मूनादारा पत्तादारा । तणवेटिया पत्तवेटिया पुप्फवेटिया फलवेटिया वीयवेटिया ते मुरणमिनिया । तणवेटो पुप्फवेटो फलवेटो वीयवेटो मूरणाभिजिता । तथोसिमिजिया कप्पा सठिमिजिया । तेथोसमजिता कर्मास थस्सिमिज्यो । हसिया भक्खिया भिगरिया किगरिडा । हसिका भसिका भिगरिया वड्डया लहुया

मा समुच्छिन्मत्या देवच नपुसका समुच्छिमानाम ऽवश्य नपुसकत्वात्, नारकसमुच्छिन्मा नपुसका इतिवचनात् ॥ ते  
 हीन्द्रिया समासत सङ्गेन द्विविधा प्रज्ञा स्तद्यथा-पर्याप्तका व्याप्याप्तका अशब्दौ योनिकुलजेदेन स्वागतानेकजैदसूचकौ, एतेषा हीन्द्रियाणा  
 मेवमादीना पुलकम्यादीना हीन्द्रियाणा पर्याप्तपर्याप्तादीना सर्वमहुया सर्वजातिकुलकोटीना योनिप्रमुसानि योनिप्रवाहानि योनिशतसरस्वारि  
 भवन्ति सप्तजातिकुलकोटिलङ्गा प्रवन्तीतिभाव, इत्याख्यात तीर्थकृद्भिर्भकारो लाक्षगिक, इयमत्र प्रावता इह-जानिकुलयोनीना परिज्ञानार्थ  
 मिद परिस्थूर मुदाहरण पूर्वाचार्यै रुपदर्शित तद्यथा-जातिरिति किल तिर्यग् गति तस्या कुलानि कमिकीटवृश्चिकादीनि इमानि च कुला  
 नि योनिप्रमुसानि तथा एते कस्या मेव योनी अनेकानि कुलानि भवन्ति यथा लङ्गणयोनी कमिकुल कीटकुल वृश्चिककुल मित्यादि अथवा जाति  
 कुल मित्ये क पद जातिकुलयोव्यो अ परस्पर विशेष सकस्या मपि योनी अनेकजातिकुलसम्भवात् यथा सकस्या मेव योनी कमिजातिकुल कीट  
 जातिकुल वृश्चिकजातिकुल मित्यादि एव च एकस्यामेव योनाववात्तरजातिजैदनावाद अनेकानि योनिप्रवाहानि जातिकुलानि सम्भवन्तीत्यु पप

तहप्यगारा सवे ते समुच्छिन्मा नपुसगा ते समासत दुविहा प०, त०-पञ्जातगा य अ्यपञ्जातगा य एणसिण  
 एवमादियाण वेइदियाण पञ्जाता पञ्जाताण सत्तजाडकुलकोटीजोणिप्यमुहसयसहस्सा अवतीति मरुकाय ॥

या मुत्तिया कलुयावासा । धुला खला खया कडा सोत्तिक मीत्तिक कलुयावासा । एगओवसा दुदओवसा नदियावता । एगोपयुता द्विधोपयुता  
 पन्थावन्ती । सबुका माइवाहा सिप्पिसपडा चट्ठाण समन्निवत्ता । ग्रवका नाइवाहा सोप चटना समद्वलीख । जेगावखेतहप्यगारा सवे ते समुच्छिन्मा  
 नपुसगा ते समासयो दुविहा प० त० । जे अनेरा तथाप्रकारना सर्व ते समुच्छिन्म नपुसकम्बिणी ते सचेपधकी दोयप्रकारे कट्टा तेकहेहै-पल्लत्तगा  
 य अपपञ्जत्तगाय । पर्यापना अपर्यापता । एणसिण एवमादण वेइदियाण पञ्जातापल्लत्तगा सत्तजायकुलकोटी । इणाण इणतरे भाटिदेइ वेइन्द्रियजीव  
 पर्यापिता अपर्यापिता सातलाख जुनकोडो । जोणिप्यमुहसयसहस्सा भवतित्ति मरुकाय । वेलाख योनि एहनी हत्पत्तिस्थानक हने जिम छाथाना अनेक

मित्यादि ॥ उक्ताचतुरिन्द्रियससारसमापत्रजीवप्रज्ञापना । सम्प्रति पञ्चेन्द्रियससारसमापत्रजीवप्रज्ञापना मार्ह-चेकितमित्यादि ॥ अथ का सा पञ्चेन्द्रियससारसमापत्रजीवप्रज्ञापना १ सूरिराह-पञ्चेन्द्रियससारसमापत्रजीवप्रज्ञापना चतुर्विधा प्रज्ञा तद्यथा-निरयित्यादि ॥ अयमिष्टफलकम् निगमय यस्य स्त्री निरया नरकावाशा स्तुपुत्रवानरयिका स्तेचतेपञ्चेन्द्रियससारसमापत्रजीवा य नैरयिका पञ्चेन्द्रियससारसमापत्रजीवा

रुद्र कुक्षुह, नटावत्ते य सिगिरिन्नि । म्रिहपत्ता नीलपत्ता लोहियपत्ता हलिहपत्ता सुक्लिपत्ता चित्तपत्ता  
विचित्तपत्ता उहजलिया जलचारिया गन्धौरा नीणिया ततवा झुत्तिरोक्ता झुत्तिरोक्ता सारगा नेउरा डोला  
नमरा नरिली जसला तोक्ता विञ्जुया पत्तविञ्जुया लाणविञ्जुया जलविञ्जुया पिगला कणगा गोमयकीका  
जेयावन्ते तहप्पगारा सहे ते समुच्छिमा नपुसगा ते समासने दुविहा पणत्ता, तजहा-पज्जत्ता य झुप  
जत्तगा य । एएसिण एवमाइयाण चउरिठियाण पज्जत्तापज्जत्ताण नवजाडकुलकीणि जोणिप्पमुहसयसह

उतहायगेय डटपककडकुक्कह नटावत्तेयसिगिरिन्नि । अविउ पच्छिक्क माखी ससा कौडा तिम पतङ्ग डटग ककड ककड नग्यावत्तं सिगरहा । किरह  
पत्ता नीलपत्ता लोहियपत्ता हलिहपत्ता सुक्लिपत्ता चित्तपत्ता विचित्तपत्ता । कणपाखा नीलपाखा रातोपाखा वयलोपाखा चित्रपा  
खा विचित्रपाखा । उहजलिया जलचारिया गन्धौरा नीणिया ततवा अच्छमेहा सारगा नेउरा डोला नमरा नमरा भमरिली । उधननिक जलचारो  
गभीरनियत ततव अविचित्र सारग नेउरा डोला नमरा भमरो भमरिली । जलकहा तोटा । वरुणिया पत्तविञ्जुया पत्तविञ्जुया जलविञ्जुया पिग  
ला कणगा गोमयकीका । जलकहा तोटा । विञ्जुका पत्तविञ्जुका छ पत्तविञ्जु जलविञ्जु पिगल कतक गावरनाकोडा । जेयावन्तेतहप्पगारा सवे ते स  
मुच्छिमा नपुसगा । एहवा जे अनेरा तथापकारना ते सर्व समुच्छिमा नपुसक । ते ससारया दुविहा प० त० । ते ससारया का टोयभेट कहवा ते कहहे ।  
पज्जत्ताय थपज्जत्ताय एसिण एवमाइयाण । पर्याप्ता अपर्याप्ता ए आदिदेह । चउरिठियाण पज्जत्तापज्जत्ताण नवजाडकुलकीणि जोणिप्पमुहसयसह

॥ ८ ॥  
 पूर्वेवत् ॥ एतेसिद्धिमित्यादि ॥ एतेषा त्रीन्द्रियाणां भेदादिनामीपचयिकप्रवृत्तीनां पर्यायाऽपर्याप्तानां सर्वसङ्ख्या अष्टौ जातिकुलकोटीनां यावान् प्रमुसानि योनिप्रवाहाणि शतसहस्राणि भवन्ति अष्टौ कुलकोटिलक्षा ज्ञयन्तीति ज्ञाय , इत्यास्यात् तीर्थरुद्रि , उपसर्गारमाह-सेतुनित्यादि ॥ तद्वै मुक्ता त्रीन्द्रियसत्तारसमापन्नजीवप्रज्ञापना ॥ सम्प्रतिवर्तु रीन्द्रियसत्तारसमापन्नजीवप्रज्ञापना माह-सेतुनित्यादि ॥ एते पि चतुरिन्द्रिया लोकात् प्रत्येतव्या एतेषा च पर्यायाऽपर्याप्तानां सर्वसङ्ख्या जातिकुलकोटीनां नवलक्षणा जयति , शोषाक्षरगमनिका प्राग्वत् , उपसर्गारमाह-सेतु

वाड्या गोम्ही हल्यिसोफा जेयावखे त० सवे ते समूच्छिमनपुसगा ते समासले दुविहा पसुत्ता , तंजहा-पज्जत्तगा य अप्पज्जत्तगा य । एएसिण एवमाइयाणं तेइदियाण पज्जत्तापज्जत्ताण अण्ठजाडकुलकोटिजोणि प्पमुहसवसहस्सा हवतीति मस्काय । सेत्त तेइदियससा० । से कित चउरिदियससारसमावसुजीवपसुत्त पा० ? अप्पणेगविहा पसुत्ता , तजहा-अपिधिय पोत्तिय मेच्छिय , मगसिरकीटि तहा पयगे य । ठरुण कु

सभगा मोवत्थिया सुवेटा इ दक्कइया इ दगोवया । बाह्या लहुगा सुभग सौवस्थित सुखविट इन्द्रकेतिका इन्द्रगोपा । तुक्कतुवगा कुलव्याहगा जूगा हात्ताहन्ना पिसुगा सउवाइया गोम्ही हल्यिसोफा । तुक्कतुवगा कुलव्याहगा जूगा हात्ताहल पियक मतवायक कानसिनाइ हस्तिसीउ । जेयावखेतद्वय गारा सवे ते समूच्छिमा नपुसगा । जे धनेरा तथाप्रकारे सवे ते समूच्छिम नपुसक ज्ञाणिया । ते ममासओ दुविहा प० त० । ते सजेपयकी दोप्रका र कक्षा ते कहेछे-पज्जत्तगाय अप्पलत्तगाय । पर्याप्ता उपर्याप्ता । एसिण एवमाइयाण तेइदियाण पज्जत्तापज्जत्ताण । इया ने इमेणाटि तेइदियकुल कोटि पर्याप्ता उपर्याप्ता । चट्टज्जार्ककुलकोटि जोणिप्पमुहसवसहस्सा भवतिस्सिमस्सा भवतिस्सिमस्सा । आठनाउ कुलकोटि हुवे वेलाक्ख गोनि सत्पत्तिस्थान हुवे । से तेइदिय सत्तारसमानज्जजीव पसुत्तगा । एतले तेइदियससार सप्पात्तलीय प्रज्ञापना कहौ । सेकि त चउरिदिय सत्तारसमावसुजीव पसुत्तगा २ अयेगवि हा प० त० । ते चउरिदिय भेदपूछे यिय्थ, युक्क दमकहै चउरिदिय समाप्पजीव प्रज्ञापना अनेकप्रकारि कक्षा तेकहेछे-अपिधियपुच्छियच्छिय मद्दगाको



स्तेषां प्रज्ञापना तथाच-गज्जती तिरोन्व तीति तिर्यन्व , तिरस तिर्योदिश , तेषां योनिहृत्विम्वान तिर्यंयोनि स्तत्र गज्जस्तिर्योनिना तेच पञ्चेन्द्रियसन्तारसमापनजीवा य तेषां प्रज्ञापना स्तिर्यायोनिकपञ्चेन्द्रियसन्तारसमापनजीवप्रज्ञापना तथा ननुप्यज्ञाया सन्प्रज्ञाया यया राज्ञो राज्ञ्यानिधायिक, मनोर उपत्यानि मन्या सनायाणीवद्यति य प्रत्यय प्रकारया उगम य य य प्रत्ययो जाता यिति ननुप्यज्ञाया जाति याची राज्ञ्यज्ञायात्, ते च ते पञ्चेन्द्रियसन्तारसमापनजीवा य तेषां प्रज्ञापना ननुप्यपञ्चन्द्रियसन्तारसमापनजीवप्रज्ञापना, नया दीअन्ति स्तब्ध या कीदन्ति इतिदवा जवनपत्यादय , ते च त पञ्चेन्द्रियसन्तारसमापनजीवा य तेषां प्रज्ञापना देवपञ्चन्द्रियसन्तारसमापनजीवप्रज्ञापना, तत्र

रनाडु नवतीति मस्काय सत्त चउरिन्द्रियमभममात्रणजीवपणवण । से कित पचिन्द्रियसन्तारसमावख जीवपणवण ? पचिन्द्रियसन्तारममात्रणजीवपणवण चउविहा पणवण, तजहा-नेरडयपचिन्द्रियसन्तारस मात्रणजीवपणवण तिरिक्कजोणियपचिन्द्रियसन्तारममावखजीवपणवण मगुम्मपचिन्द्रियसन्तारसमावख जीवपणवण देवपचिन्द्रियमभममात्रणजीवपणवण । से कित नेरडयार ? सवविहा पणवण, तजहा

आदे भवतिस्ति मस्काय । चौरिन्द्रियजोत्र पणवण नवनाखकनकोडि योनिपणवण गनसक्कस हवे ० हवो तौर्ध नरे कणा । सेत चउरिन्द्रिय सन्तारसमावखजीव पणवण । पतले चउरिन्द्रिय भमारो सप्राप्तजोव प्रज्ञापना, हिब पचिन्द्रिय पणवणे तड गुरुवोल्या । सेकित पचिन्द्रिय सन्तारसमावख जीव पणवण २ चउविहा प ० त ० । पचेन्द्रियममार सप्राप्तजोव प्रज्ञापना चारप्रकारे कणा ते कहेदै-नेरार पचिन्द्रिय सन्तारसमावखजीवपणवण । नारकीपचेन्द्रिय ममारनप्राप्तजोव प्रज्ञापना । तिरिक्क पचिन्द्रियममारसमावखजो ० मखपणवचिन्द्रिय स ० देवपचिन्द्रिय स ० । तिर्यं पचिन्द्रिय स नारसमावखजीव प्रज्ञापना २ मनुष्य पचेन्द्रिय सन्तार सप्राप्तजोव ३ ड ३ पचेन्द्रिय स ० ४ । सेकित नेरडय २ मस्तपिहा प ० त ० । हिब नारको प्रयन पणवणे, नारको उातप्रकारे कणा तेकहेदै-रगणपमपुडिणरडया सकरपमपु ० यामुपमपु ० धूमपमपु ० तमपमपु ० तम २ पमपु ० । र

जलवरपञ्चन्द्रियतियंघोनिका समासत सङ्घेपेण द्विविधा प्रज्ञा-सम्मूर्च्छिमा च गञ्ज्युत्क्रान्तिना च मूर्च्छा मोहसमुद्भाययो यस्मा तत्सम्पूर्णा  
 तसम्मूर्च्छं स सम्पूर्णा ऽकस्मरीति ज्ञाय यञ् प्रत्यय , गञ्जोपपातव्यतिरेकेण स्वमेव प्राणिना मृत्याद इतिज्ञाव स्तेन निपुंता सम्मूर्च्छिमानाया दिन  
 इति इममन्यय , गञ्जं व्युत्क्रान्ति सत्यति येषा , व्युत्क्रान्तिश्चार्थो ऽत्रो त्यतिवाची तथा पूर्वोचायमसिद्धे य दि वा गज्ञां दुर्ज्ञोवासात् व्युत्क्रान्ति  
 निःक्रमण येषान्ते गजव्युत्क्रान्तिका , ज्ञोपादिति कच् समासान्त चणञ्चै प्रत्येक सागतानेकभेदसूचकौ , तत्र ये ते सम्मूर्च्छिमा स्ते सर्वे नपुसका  
 सम्मूर्च्छिमन्नावस्य नपुसकत्वा ऽविना प्रावितत्वात् , य तु गञ्ज्युत्क्रान्तिका स्ते त्रिविधा प्रज्ञा स्तद्यथा-स्त्रिय पुरुषा नपुसका , एतया चो  
 प्रयेया मपि शरीरावाहनादिषु य चिन्तन य च गञ्ज्युत्क्रान्तिकाना स्त्रीपुनपुसकाना परस्पर मत्पयदुल्वचिन्तन त ज्जीवाग्निगमटीकाया कृत

से कित गाहा २ ? पचविहा पण्हा , तजहा देलीविठगा मुहुया पुलगा सीमागरा । सेत्त गाहा ॥ से  
 कित मगरा २ ? दुविहा पण्हा , तजहा-सोळमगरा मच्छमगराय । सेत्त मगरा । से कित सुसुमारा २  
 एगागरा प० , सेत्त सुसुमारा । जेयावन्ते तहप्पगरा ते समासत्ते दुविहा पण्हा , तजहा-समुच्छिमा च  
 गप्पवक्कतिया य तत्थण जे ते समुच्छिमा ते सब्बे नपुसका , तत्थण जे ते गप्पवक्कतिया ते तिविहा प० ,

कना पाचभेद कक्षा ते कहै । दिहौ बिटगा सदया पुलगा सीमानारा । दिहौ बाटका मुठ पुलका सीमागरा । सेत्तगाहा सेकित मगरा २ दुविह  
 प० त० । एतले ग्राहक कक्षा, दिवे मगरना ते मगरना दीयभेट कक्षा ते कहै । सोळमगरा मष्टमगरा । सेत्त मगरा सेकित  
 मुसमारा २ एगागरा प० त० । एतले मगर कक्षा, दिवे सुसुमारनो एकभेट कक्षा तेकिम । सुसमारा सेत्तसुसमारा । सुसमारा एतले सुसमार कक्षा ।  
 जेयावन्तेहरपगारा ते समासन्नो दुविहा प० तनह । जे चनेरा तथाप्रकारे ते सत्तेपथो दीयप्रकारे ते । समुच्छिमाय गभवक्कतियाग । समुच्छिम गर्भ  
 ऊपचै गर्भज पिण । तत्थण जेते समुच्छिमा ते सब्बे नपुसका । तिहा जेते समुच्छिम तेसर्व नपुसक । तत्थण जेते गभवक्कतियाय ते तिविहा प० त० ।



च सुहवरा इति सूत्रे पाठः, तत उक्त यत्रापि पञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिकशब्देन सह विशेषणसमासः 'सेकितमित्यादि ॥ अथ के ते जलचरपचेन्द्रियतिर्यग्योनिका ? मूरि राह-जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका पञ्चविधा प्रज्ञायाः, तदेवपञ्चविधत्वं तद्यथेत्यादिभ्यो पदज्ञायति मत्स्या कच्छपा मूत्रे प्रकारस्य प्रकारं प्राकृतत्वात् ग्राह्य ३ मकराः 'शिशुमारा ५ प्राकृतत्वात्सूत्रसुसुमारा इतिपाठः' मत्स्यादीनां च विज्ञायाः साकतो वेदितव्या नवरमऽस्थिकच्छपा मानसकच्छपा इति, येऽस्थिबहुना कच्छपा स्तेऽस्थिकच्छपा, येमासबहुना स्ते मासकच्छपा ॥ ते समासउ इत्यादि ॥ ते

चिन्द्रियतिरिक्तजोणिया २ ? पचविहा पन्तहा, तजहा मच्छा कच्छहा गाहा नगरा सुसुमारा । सेकि त मच्छा २ ? छुणेगविहा पयाहा, तजहा सरहमच्छा खवत्तमच्छा जुंगमच्छा विज्जिज्जियमच्छा हलिदुमच्छा मगरिमच्छा रोहियमच्छा हलीसागरा गागरा वज्जा तिमिगिला गच्छा तदुलमच्छा कणिक्का मच्छा सालिसिक्कियामच्छा लज्जणमच्छा पकागा पकागाइपकागा । जेयावन्ते तहप्पगारा । सेत्तं मच्छा । से कित कच्छना २ दुविहा पयाहा, तजहा छुठिकच्छना य मंसकच्छना य । सेत्त कच्छना ।

अथेगविहा प० त० । द्विवे मच्छना अनेकभेदे कहेछे, तेमच्छ अनेकभेदे कछा तेकहेछे । मगहमच्छा खुत्तलमच्छा युगमच्छा चिम्भिडियमच्छा हानिदु मच्छा मगरमच्छा रोहियमच्छा । सन्हुमच्छा खुत्तलमच्छा युगमच्छा चिम्भिडमच्छा हानिदुमच्छा मगरमच्छा रोहितमच्छा । हल्लो सागरा गागरा चहा व जगरा गभया वसगरा तिमितिमिगला । हल्लोमच्छा सागरमच्छा गागरमच्छा वज्जामच्छा वठगरा गर्भज्जारि जसगरा तिमितिमगला १५ । नक्का तदुल मच्छा कणिक्का सालि मच्छा लभणमच्छा पयग पहागाई । नक्त तदुलमच्छा कनकमच्छा सालि मच्चि न लभन पतक पताकानामे २३ । जेमावसेत इरपगारा सेत्तकच्छा । पहाया जे अनेराहो ज तथायकारे ते कछा । सेकित कच्छा दुविहा प० त० । द्विवे ते कच्छना दोवभेद कछा ते कहेछे । अठिक कछा मायकच्छा । अठिककच्छम हाएवपाने मासकच्छभो मासघणेने । सेत्त कच्छया सेकित गाहा पचविहा प० त० । ते कच्छप कछा, द्विवे गाहा

कनैदसूचकी । तदेवानेकजैदत्य क्रमण प्रतिपिपादायिपु राह-सैकितमित्यादि ॥ अथ के ते चतुष्पदस्यलवरपञ्चिन्द्रियतयैग्योनिका सूरिराह-  
चतुष्पदस्यलवरपञ्चिन्द्रियतयैग्योनिका अतुविंधा प्रज्ञा स्तथा-एगसुरा इत्यादि ॥ तत्र प्रतिपद मेक सुर शफो यया नो एकसुरा अथाद  
य ' द्वी २ सुरी प्रतिपद येपात्ते द्विसुरा उप्पादय स्तथा च-एकैकस्मिन् पदे द्वी द्वी शफो दृश्यते गगनी च सुअंकाराधिकरणिस्थान मिव पद

पखात्ता, तजहा एगसुरा दुखुरा गझीपया सणफ्फया । से कित एगसुरा २ ? अण्णेगविहा पखात्ता, त०  
अस्सा अस्सतरा घोळगा गद्वजा गोरकरा कदलगा सिरिकदलगा अथात्ता । जेयावन्ते तहप्पगारा । सेत्त  
एगसुरा । से कित दुखुरा २ ? अण्णेगविहा पखात्ता, तजहा-उट्ठा गोणा गवया रोज्जा ससया महिसा  
सवरा वराहा अया एलगा रुरु सरत्त चमर कुरग गोकणमाई सेत्त दुखुरा । मे कित गझीपया २ ? अण्णे  
गविहा पखात्ता, तजहा हल्यो हलीयणा मकुणहल्यो खग्गा गझा । जेयावणे तहप्पगारा । सेत्त गझीपया

कछा ते कहै ॥ एगसुरा दुखुरा गझीपया सणोपया । एकसुरा अथादि द्विसुरा आद्र दय गखोपद गजादि सन्तोपद व्याव्रटि ४ । सेकित एगसुरा  
२ अण्णेगविहा प० त० । द्विवे एकसुराना अनेकभेद कछाहै ते सुणा - अछा अस्सतरा घाडभा गद्वजा गोरखरा कदलगा । सिरिकदलगा पञ्चत्ता । घोडा  
अखतर घोटक गर्भ गोचुर कन्दलग औकन्दल आवत्त । जेयावणेतहप्पगारा सेत्त एगसुरा । एहवा जे अनरा तयाप्रकारे ते एकसुरा कछा । सेकित  
दुखुरा २ अण्णेगविहा प० त० । द्विवे ते दुयसुरा कहैहै ते अनेकप्रकारे कछा ते सुणो । उट्ठा गोणा गवया रोज्जा ससया मझिघा सवरा वराहा आ  
या एलगा रुरु सरभ चरम कुरग गोकणमाइ । कट गाण गवय राभ गय मझिप सवर वराह छालो गाडर चमरौगाय म्हा गार्कये । सेत्त दुखुरा सेकि  
त गझीपया २ अण्णेगविहा प० त० । एतसे वेखरानाभेट कछा, द्विवे गझापदना पुननेकभेद कछा ते कहैहै-हल्यो पूणया मकुणहल्यो खग्गा । हादो  
गैछा मुक्कनहावो खग्गा । जेयावणेतहप्पगारा सेत्तगझापया । ज अनरा तयाप्रकारना गखोपद जणिघा । सेकित सखापया २ अण्णेगविहा प० त० ।

मिति ततो उपचार्य ॥ गमसिगमित्यादि ॥ गतेषा मेव सादिकाना मुपदर्शिनप्रकारादीना जलचरपञ्चेन्द्रियतियग्योनिदाना पयोताऽपयोहाना  
सवसहेया ऽदृवयादशजातिकुलकोटीना योनिप्रभुभ्यानि योनिप्रवाहानि ज्ञातमहस्त्राणि ज्ञातमहस्त्राणि स्तौयकरे , उपसहारमार-मेन  
मित्यादि ॥ तदेव मुक्ता ललचरपञ्चेन्द्रियतियग्योनिना सम्प्रतिस्थलचरपञ्चार्द्रपतियग्योनिनामन्निधिराष्ट-सकितानित्यादि ॥ पत्न्यादि पदा  
नि येषा न्ते चतु पदा , अष्टादश स्ते च ते स्थलचरपञ्चेन्द्रियतियग्योनिना च चतुष्यन्पञ्चेन्द्रियतियग्योनिना , अस्मा युशाभ्याश्च परिलुपेतीति  
वर परिषर्पा , अजपरिषर्पा अहिमकुलादय , स्तत पूववत् स्थलचरपञ्चन्द्रियतियग्योनिनापदेन तन् विमोपसन्नाय , चक्षुर्द्वौ प्रत्येक स्वगताने

तजहा इत्यौ पुरिसा नपुमगा । पुनंसिण एवमाहुयाण जलयरपचिद्वियतिरिस्कजोगियाणं पज्जत्तापज्जत्ताण  
अधत्तेरसजाहुकुलकोफिजोणीप्पमुहसथसरसा जवतीति मग्कायं । सेत जलयरपचिद्विय ० । से कित थल  
यरपचिद्वियतिरिस्कजोगिया २ ? दुविहा पणत्ता , तजहा चउप्पयत्तुथयरपचिद्वियतिरिस्कजोगिया परि  
सम्पथलयरपचिद्वियतिरिस्कजोगिया य । से कित चउप्पयत्तुथलयरपचिद्वियतिरिस्कजोगिया २ ? चउविहा

तिहा जेते गर्भेन तेहना ३ भेदे कक्षा ते कहँहे—इत्यौ पुरिसा नपुमगा । स्तौ पूरुप नपुमक । एगसिण एवमाहुयाण । एहता इतररे यादिदिदे । जल  
यर पचेद्विय तिरिस्कजोगियाण । जलचर पचेद्विय तिरिस्कजोगिया । पज्जत्ता अपज्जत्ताण । पगीण अपगीता । चवत्तेरसजाति कुलकोडी जोगीपुहु  
मासहम्मा भवतिन्तिमन्नाय । सादेमारलाय कुलकोडिप्रमुख ज्ञातमहस्त्र ह्ये । दम तोर्यकरे कक्षा । सेत जलयर पचेद्विय तिरिस्कजोगिया । एतले जल  
चर पचेद्विय कक्षा तिरिस्कजोगिया । सेकित घनयर पचिद्विय तिरिस्कजोगिया २ दुविहा प ० त ० । द्विवे घनचर ते घनचर पचेद्विय तिरिस्कजोगिया  
दोवप्रकारे कक्षा ते कहँहे—चउपयधनयर पचेद्वियतिरिस्कजोगिया परिसण घनयर पचेद्विय ति ० । चउपयधनयर पचेद्विय तिरिस्कजोगिया डरपर  
पचेद्विय तिरिस्कजोगिया । सेकित चउपयधनयर पचेद्वियतिरिस्कजोगिया ० चउविहा प ० त ० । द्विम चोपयधनयर पचेद्विय तिरिस्कजोगिया चारिसे

स्त्रिमतीकातो वेदितव्य ॥ सेतचउप्यवस्थादि ॥ सेकितमित्यादि ॥ अथ के ते परि। पर्यन्तचरपरचेन्द्रिया ० तैर्यग्योनिका प्रत्यक्षा ० सूरिराष्ट-  
परितपस्थलचरपचेन्द्रियतियग्योनिका द्वित्रिया द्विप्रकारा प्रकृता मन्त्र्या-उरपरिमर्पत्यादि ॥ उरमा परिसुपन्नीति उरपरिसुपां रो ० ते  
र्यलचरपचेन्द्रियतियग्योनिका य उरपरिसुपस्थलचरपचेन्द्रियतियग्योनिका, जुनान्मा परिसुपन्ति तुगपरिगपां त य ते र्यलउरपरपरिन्द्रिय  
तैर्यग्योनिका य जुनपरिमर्पस्थलचरपचेन्द्रियतियग्योनिका, यद्वद्वी प्रत्येक स्वतागतकनटमूत्रकी ॥ तयो र परिसुपस्थलचरपचेन्द्रियतैय  
यानिककदातु पदिदशोपिपु रिद माह-सेकितउरपरिसुपेत्यादि ॥ अथ के ते उर परिसुपस्थलचरपचेन्द्रियतियग्योनिका ० सूरिराष्ट-उर परि  
पस्थलचरपचेन्द्रियतैर्यग्योनिका यतुविवा मन्त्र्या मन्त्रेरगा गतेया सेय जेदागा गगनाय मन्त्रनिययनमू

एएसिण एत्रमादियाण थलउरपचिदियनिरिस्कजोगियाण पज्जत्तापज्जत्ताण दसजाडुकलकोट्टिजोगिप्पमुह  
सत्रसहस्समा हवतीति मरकाय ॥ नेत्त चउप्यथलउरपचिदियनिरिस्कजोगिया ॥ से कित परिसुपथलउर  
पचिदियनिरिस्कजोगिया २ ० दुविहा पयात्ता, तजहा उरपरिसुपथलउरपचिदियनिरिस्कजोगिया जुन  
परिसुपथलउरपचिदियनिरिस्कजोगिया य ॥ से कित उरपरिसुपथलउरपचिदियनिरिस्कजोगिया २ ० च  
उविहा पयात्ता, तजहा एही अयगरा यासालिगा मन्त्रेरगा ॥ से कित एही २ दुविहा पयात्ता, तजहा

द थनचर पचेन्द्रिय तियेचयोगिया कक्षा ॥ सेकित परिसुप थलउर पचेन्द्रिय तिरिगुठजोगिया २ दुविहा प० त० ॥ डिबे उरपरिमर्प थलचर पचेन्द्रिय  
तियेचवानिक प० मा दोगमेद कक्षा ॥ उरपरिसुप थलउर पचेन्द्रिय तिरिगुठजोगिया भुजपरिसुपथलउर ० ॥ उरपरिमर्प थलचर पचेन्द्रिय तियेचयोगि  
क युजपरिमर्प थलचर भुजावाचाने ते ॥ सेकित उरपरिसुप थलउर पचेन्द्रियनिरिस्कजोगिया ० चउविहा प० त० ॥ डिबे उरपरिमर्प थलचर पचेन्द्रिय  
तियेचयोगियाना ४ मेद कक्षा ते कहव्हे—यही अयगरा यनसिगा मन्त्रेरगा ॥ सपं ययगर यनसीगा मन्त्रेरगा ॥ सेकित अही दुविहा प० त० ॥ दिवे

येषां ते गणनीयदा इत्यादयस्तथा सनत्तानि दीर्घनस्यरिक्कितानि पदानि येषां ते सनत्तपदा द्वादश , प्राकृतान्त्रायमणस्ययाइतिसूत्रनिर्देश , प्रयुनायमानेव सकुरादीन् जदत लमण प्रतिपिपादयिषु रिदमाह-संफितमित्यादि ॥ सुगम' नगर ये केचि ज्जीवजेदा अप्रतीता स्ते लोकतो वेदितव्या ॥ तेसमासु दुविहा प इत्यादि सूत्र ॥ प्राग्ब्रह्मवनीय , नवरमत्र जातिकुलकोटीना योनिप्रमृत्ताणि शतसहस्राणि दश भवन्तीति वेदि तय मत्रापि च सम्मुखिमाना गजव्युत्कान्तिकाना च प्रत्येक य च्छरीरादिषु द्वारषु चित्तन य च स्त्रीपुनपुनमाना परस्पर मल्पमहुत्व तजीवा

से कित सगणफया २ ? शुणंगविहा पणत्ता , तजहा सीहा वग्घा दीत्रिया शुच्छा तरच्छा परस्सरा सिया ला सुणगा कोलसुणगा ( ग्रंथा ५०० ) कांकतिया ससगा चित्तगा विह्वलगा । जेयावसे तहप्पगारा । सेत्त सगणफया । तेसमासु दुविहा पणत्ता , तजहा सम्मुखिमाय गप्पवक्कतियाय । तत्थण जे तं सम्मुखि मा ते सव्वे णपुसगा , तत्थण जे तं गप्पवक्कतिया ते तिविहा पणत्ता , तजहा इत्थी पुरिमा नपुसगा ।

दिवे सज्जोपट भेट कक्षा ते भेट ननेकप्रकारना कह्खे—सोहा वग्घा टाविना अक्खा अरक्खा परस्सरा सियाला विराला मणगा कोलमणा कोकिति या मणगा चित्तगा । सिह व य चौता अक्खा अरक्खा परामर स्याल विराल खान कोल कोकिति सगना चित्तक । जेयावनेतहपगारा सेत्त सणोपग त समानसो दुविहा प० त० जे अनेरा तथाप्रकार ते सज्जोपट कहिये ते सज्जोपशको दोयप्रकारे कक्षा ते कह्खे । सम्मुखिमाय गप्पवक्क तियाय । सम्मुखि स गर्भज । तत्थण जेते सम्मुखिमा ते सव्वे णपुसगा । तिहा जेते सम्मुखिम तिके सव्वे नपुसक । तत्थण जेते गप्पवक्क तियाय ते तिविहा प० त० । तिहा जे गर्भजका तोनभेट कक्षा ते कह्खे—इत्थी पुरिमा नपुसगा णसिण णवमाइण । स्त्रा पुनप नप सक इणा इणतरे याइदिद । यनयर पचिदिम ति रिक्खजाणिगाण । यलचर पवोइम तिवेषयोत्रिया यलचरपवेइम । पञ्जात्तचपज्जत्ताय । पयोत्ता अपयोत्ता । एसजातिक्खकोडि कोणिपमइमम सव्वणा भयतौतिमसयाय । दग्गनाख कुलकोटि वानि गतसइस्स व्वे तीर्थकर कक्षा । सेत्त चउमपय थलयर पचिदिम तिरिक्खवोणिगा । एतने चउप

गीतमप्रश्न भगवत्त्रिवचनरूप सूत्रमस्ति-तदेवागमवदुमानत पठति ॥ कहिण जते ॥ इत्यादि ॥ कथं यमिति वाक्यालङ्कारे प्रदत्त । परमकल्याणयोगिन् आत्मालिका समूच्छेति ? गप्ता हि गर्जना न प्रवति किंतु सम्बुच्छिमेव, तत उक्त सम्बुच्छिमेव-गीयमेत्यादि ॥ गीतम । अन्तर्मध्ये मनुष्यदेशस्य बहिरेतावता मनुष्यक्षेत्रा द्वारि रस्या सत्त्वादा न प्रवतीति प्रतिपादित तत्रापि मनुष्यक्षेत्रे सवन्न न प्रवति कित्वा दृष्टतीयेषु दीपेषु ग्रहं दृतीय येयान्ते उद्भूततीया अयमेव विग्रह समुदाय समासार्थ स्तेषु, एतावता लक्षणसमूह कालोदे समुद्रे वा न प्रवतीत्या वेदित, निर्व्याघातेन व्याघातस्या ज्ञावो निव्याघात तेन यदि पञ्चसु प्ररतेषु पञ्चस्यैराधतेषु सुयमसुपमादिरूप य कालो व्याघातहेतुत्वात् व्याघातो न प्रयति तदा

विहा पशुत्ता, तजहा दिव्यागा गीणसा कसाहीया वडला चित्तलिणो मरुलिणो अही अहिंसिलागा वाय  
फागा । जेयावणे तहप्यगारा । सेत्त अही । से कित्त अयगारा ? एगागारा पणत्ता,  
सेत्त अयगारा । से कित्त असासालिया ? कहिण जते ! असासालिया समुच्छति ? गीयमा ! अतोमणुसमखे  
से अह्माइजेसु दीविसु णिह्मावाएण पणसरससु कम्मजमीसु वाघात पणुच्च पचसुमहाविदेहेसु चक्कावहीसधावा

निणो २ अणेमविद्वा प० त० । दिव्ये मुक्कवफपाता अनेकभट्ट कक्षा ते कहेछे—दिव्यागा गाणसा कसाहीया यदशला चित्तलिणो मरुलिणो मरुलिणो अही  
अहिसलगा वायडग । दिव्य गीणस कसाहारक वडल विवलीमाडलिन मानणीसये सनाकसर्प । जेयावणे तहप्यगारा सेत्त मरुलिणो सेत्त अही ।  
जे अनेरा तथाप्रकारे ते णले मज्जलनाभेत्त कक्षा । सेकित्त अयगारा २ एगागारा प० त० । दिव्ये ते अजगरनो एकभेट्ते—सेत्त अयगारा सेकित्त  
अलसीया । एतले अजगर दिव्ये ते अलसियानो एकभेट । कइणभते अलसीया समुच्छति । किम जपने हेमगवन् आत्मसीया गीतम पूछेछे व०—गो  
यमा अतोमणुसखेत्त अह्माइजेसु दीविस णिव्यावाएण पणसरससुकम्मजमीसु वाघात पडय । हेगीतम मनुष्यक्षेत्रमादि अह्माइहीपनेविदे निर्व्याघात पनरे  
भूमि कम्मभूमेनेविदे व्याघात न जपने । पचसु महाविदेहेसु चक्कावहीसधावावेसु वासुदेवखगवावेसुवा । पच महाविदेहसेवनविदे पक्कवर्तीरा खधा

आशाह-सेकितमित्यादि ॥ अथ के ते अहयो गुरुराह-अहयो द्विविधा प्रज्ञा स्तथा-द्वौकरा अ मुकुलिनश्च । तत्र द्वौवद्वौकरातत्करणशी  
ला द्वौकरा , मुकुल फणा विरहयोग्या शरीरावयवविशेषाकृति सा विद्यते येषान्ते मुकुलिन , फणाकरणशक्तिविकता इत्यथं अत्रापि च श  
ब्दौ स्वगतानेकमदसूचकौ । तत्र द्वौकरप्रेदान निधित्सु राह-सेकितमित्यादि ॥ आशयो दम्प्रा स्तासु विप येषान्ते आशीविपा , उक्त च-आशीदा  
हा तमगमहाविषा आसीविषा मुख्यत्वा इति , दृष्टौ विप येषान्ते दृष्टिविपा , उग्र विप येषा न्ते उग्रविपा , भोग शरीर तत्र विप येषा न्ते  
भोगविपा , त्ववि विप येषा न्ते त्वग्विपा , प्राकृतत्वा च तयाविषाहृतिपाठ लाला मुखाश्राव तत्र विप येषा न्ते लालाविपा , नि श्वासे  
विप येषान्ते नि श्वासविपा , कथमर्षादयो जातिप्रेदा लोकत प्रतिपत्तव्या , उपसर्गरमाह-सेत द्वौकरा । मुकुलिन प्रतिपिपादयिपुराह-से  
कितमित्यादि ॥ एतेपि लोकतो वसेया , अजगराणामग्रान्तरजातिप्रेदा न विद्यन्ते तत उक्तमेकाकारा अजगरा प्रज्ञाः ॥ आशालिगम निधि  
त्सु राह-सेकित आशालिग ॥ अथ का आशालिग ? एव शेषेण प्रश्ने कृते सति प्रगवान् आंशयामो यदेव ग्रन्थातरेषु आशालिगप्रतिपादिक

द्वौकरा य मउलिणो य । से कितं दवौकरा ? अणंगत्रिहा पसता , तंजहा असीविषा दिठीविषा  
उगविषा भोगविषा तयाविषा लालाविषा उस्सासविषा कणहसप्या सेठसप्या कउदरा दम्प्रा  
पुप्फा कोलाहा मेलिमिदा सेसिदा जेयावसे तहप्यगारा । से कितं मउलिणो ? अणंग

संपना दागभेद कक्षा ते कहैछै—दवौकराय मउलिणोय । सेकित दवौकरा अणंगत्रिहा प० त० । द्विवे दर्धौफषाना अनेकभेद  
कक्षा ते कहैछै । आसीविषा दिठ्ठाविषा उगविषा भोगविषा तयाविषा लालाविषा उस्सासविषा नोसासविषा । आसीविप दाडेविप नेवेविप दृष्टि  
विप उगविप आकराविप भागविप त्वचाविप लालाविप उच्छासविप नोस्सासविप । कणहसप्या सेठसप्या काउदरा दम्प्राफा कोलाहा मेलिमदा ।  
कण्ठसर्प संखसर्प काटुदरा दर्भपुष्प कालाह मौलिनद । जगवणेतहप्यगारा सत्त दवौकरा । जे एहना अनेकभेदे ते दर्धौकण भेदकक्षा । सेकितं मउ

मुखं वाहुभ्यो जलनिर्गमप्रवेक्षे ॥ आकरो हिरण्याकरादि , आश्रम स्तापसावसथोपलक्षित , आश्रय सत्राधो यात्रासमागतप्रजननिवेश , राजा  
घानी राजाधिष्ठान नगर ॥ गगसिणमित्यादि ॥ एतेषा चक्रात्तिस्कन्धावारादीना मव विनाशोपु पस्थितपु ॥ गत्युति ॥ एतेषु चक्रवर्तिस्कन्धावा  
रादिषु स्थानेषु आशालिका समूच्छति , सा च जघन्यतो हुलासहेयजागमात्रया अत्रागहनया समुत्तिष्ठतीति योग , गतद्योत्पादप्रथमसमयो यदि  
तस्य , उत्कपतो द्वादशयोजनानि , तदनु रूप द्वादशयोजनप्रमाणेऽप्यनु रूप ॥ विक्रमव. ह. लोपति ॥ विक्रम च दारत्य च विक्रमवाङ्मत्य समाहा  
रो द्वद स्तन विक्रमो विस्तारो वाहल्य स्थूलता ॥ भूमिदार्तितायति ॥ विदाम उपतिष्ठति , स चक्रवर्तिस्कन्धावारादीना मवसा जुमे रत रूप  
द्योते इतित्राव , सा चा सज्जिनी अमनस्कावसूच्छिमत्वात् , मिथ्यादृष्टि सास्वादनसम्पत्तस्यापि तस्या असम्पत्तात् अत यथा उद्यानिनी अतर्मु  
त्तयो रेव काल करोति , तदेवग्रथातरगत सूत्र पठित्वा सूत्रं त्वप्रत्यु पसहारमाह-चतस्रासालिया ॥ सत्रतिमरीरगानभिपिहृगह । सकित

समुच्छति । जहन्तेण अगुलस्स अस्सखिज्जन्नागमितीए उगाहणाए , उक्कोसेण वारसजोवणाइ । तहाणुरु  
व च ण विरकन्नवाहल्लेण भूमिदानिज्ञाण समुठोते । असन्नी मिच्छदिठ्ठी अज्जाणी अतोमुज्जत्तछाउया  
चेव काल करेइ । सेत्त अ्पासालिया । से कित महोरगा २ ? अणंगविहा पणत्ता , तजहा अलेगउया  
अगुल पि अगुलपुहत्तिना त्रि विग्रिच्छिपि विग्रिच्छिपुहत्त पि रयणी पि रयणीपुहत्तिना पि कुच्छपि कुच्छ

गाइणाए । जघन्यवको अवगाहना अगुलने अचन्यातमेभागे प्रमाणे । उक्कोसेण वारसजोवणाइ तणाकवचण । उट्ठये १२ याजन अवगाहना पातलाग्र  
रोर घबोउप । निक्खनवाइल्लेण भूमिदानिज्ञाण समुहइ । विक्कथ नाउपय १२ याजन भूमिदिदारी सधाम रतो इठ्ठनीभूमेतो ऊपलै मनभिता उपयी ।  
अवणीमिच्छदिठ्ठी अज्जाणी अनामुहत्तंतावचव कालकरेइ । असन्नी मनरुहत्त मिथ्य दृष्टो अनानो अत्तमुहत्तं आउत्ताकाल निये कान्करे । चेत्त य  
लसिया । एत्त अलसियो कल्लो । सेकित महोरगा २ अणंगविहा प० त० । दिवे ते गिय पक्के ऋण महोरग तटगु महोरगनभिइ अनेकप्रकारे



पञ्चदशभूतकर्मभूमिषु समुच्छति' व्यापात प्रतीत्य किं मुक्त प्रवति ? यदि पञ्चसु भरतेषु पञ्चस्वरवतेषु यथोक्तलूपो व्यापातो भवति तत्र पञ्चसु मन्त्राविदेहेषु समुच्छति, गतावता मिश्रत्य प्य कर्मभूमिषु नो पजायते इति प्रतिपादित, पञ्चदशसु कर्मभूमिषु पञ्चसु यामणाविदेहेषु न सर्वत्र समुच्छति किंतु चक्रवर्तिस्कन्धावारेषु वा शब्द स्यत्रापि विकल्पार्थो द्रष्टव्य, यलदेवस्कन्धावारेषु, भाकलिक क्षामान्वराज्ञा, अत्यदिनो नामाना यकलिक स यथा नेरुदशाधिपति तत स्कन्धावारेषु ग्रामनिवेशेषु इत्यादि, प्रवति दुश्चादीन् गुणानिति ग्राम यदि च गम्य' शास्त्रप्रसिद्धानां शास्त्रज्ञानां करणा मिति ग्राम, निगम प्रभूततरवणिग्धर्मोयासः, प्राक्तप्राकारनिगद शब्द' सुल्लमाकारवेष्टितकवेष्ट, अदृष्टतीयव्युत्पत्तान्नामान्तररहितं मरुव ॥ पहनति ॥ पहन पत्तन वा उजयव्रपि प्राकृतत्वेन निर्देशस्य समानत्वात्, तत्र य नोभि रेव गम्य त स्पष्टन, य त्पुन अकटे वीं दकै नोनि यो गम्य तत्पत्तन, तथा अगुकच्छ, सक्त ष-पत्तन शब्दे गम्य चोदकै नोनि रेव च। नोनि रेव तु यद्गम्य पहन तदप्रवक्ष्यते ॥१॥ द्वीप

रेसु वासुदेवखधाचारिसु बलदेवखधाचारिसु मरुलियखधाचारिसु महामरुलियखधाचारिसु गामनिवेशेसु नगर  
निवेशेसु निगमनिवेशेसु खेरनिवेशेसु कहरनिवेशेसु मरुत्रनिवेशेसु ढोणमुहनिवेशेसु पहरनिवेशेसु झग  
रनिवेशेसु व्यासमनिवेशेसु सबाहननिवेशेसु रायहानिनिवेशेसु एणसिण चेत्र विणासेसु । एत्थण व्यासालिया

वार कश्चिजै कटक वासुदेवना कटकनविषै । बलदेवखुधायाँरसुवा मडालियखुधायाँरसुवा । वलभद्रना कटकनेविषै यथास  
गुलीकना कटकनविषै । गामनिवेसेसु नगरनिवेसेसु निगमनिवेसेसु । ग्रामनिवेसनविषै करविना नगर ते नगरनिवेसेसु कच्छडनिवे  
सेसु मउवनिवेसेसु । धूनगढ ते गुडनिवेसेसु विषै कच्छडनेपि मडानेविषै । टोणमहनिससु पट्टणनिवेसेसु आसमनिवेसेसु । टाणसुल  
लपत्य ते निवेसेसु विषै धातुआगर ते निवेसेसु विषै आयसानेविसेसु । सवाहनविसेसु रउहाणिनिवेसेसु । सवाध साधाराखानेविषै राजधानेनिवेसेसु ।  
पतेसिण चैव पिणासेसु पत्यत्रलसिया समुच्छति । ३ ग म्यानके रिनायथकै रहा अलसियाजीव कपनै । अन्वणेण अगुलस्य नसिखुजानागमिचीए ३

पा महीरगा इत्त मानुपत्तेने न त्यहितमन्तिकिन्तुवाप्तेषु द्वीपसमुद्रेषु मत्तवन्ति समुद्रेषुपि च पर्यतदेवनगर्यादिषु स्थलेषु त्यज्यते । न जलेषु स्थलघरत्वात्, तत इह न दृश्यन्ते जयावलेतहृष्यगारा इति ये पि चा य अनुनटगमादि शरीरावगाहमाना स्तथा प्रकारा सन्ति ते पि न ओरगा चासव्या, उपसहारनाह-सेतमित्यादि ॥ तेसमाभउडत्यादिप्राग्बुद्धावनीय, सतपा अपि दशगतिनुनहोटीना योनिप्रमुखाणि शतसहस्राणि सतेपा अपि च य च्छरीरादिषु द्वारेषु चिन्तन य च स्त्रीपुत्रपुसुज्ञाना मत्वग्रुत्य तज्जीवातिगगटीकातो ज्ञात्रनीय, उर परिसर्प-उक्तयतोपसहारमाह-सेतउर परिसर्पा, अधुना ज्ञजपरिसराना मन्निधिस्तुराह-सकितमित्यादि ॥ सुगम नवरय नुजपरिउपपा अप्रतीता स्ते लोकतो यस

त०-सम्पुच्छिमाय गप्पवक्कतिवा य । तत्यण जेते समुच्छिमा ते मत्ते णपुमगा, तत्यण जेने गप्पवक्कतिना तेण तिविहा प०, त०-इत्थो पुरिसा नपुमगा, णपिसिण पवमाडयाण पज्जत्ता२ ण उरपरिसप्याण दनजा इकुलकीनीजोणिप्पमहसयसहस्सा हवन्ती ति मरकाय । सेत्त उरपरिसप्या । से किन ज्ञयपग्गिसप्या २ चुण्णग

मे विचरे । ते तस्य हवाहिरिण्णु दावसममेमहवति । इण मन्थयेवमे नहो वाहिरला होपममद्रमाहि इवेहै । जोगवणे तद्वयगारा सेस महीरगा ते समासयो दुविहा प० त० । ने अनेरा तद्याप्रकारे कट्ठा त एतत्त महीरगा ते मत्तमपको टागप्रकारे कथा ते कहेहै-समुच्छिमाय गप्पवक्कतिवाय । समुच्छिमे गर्भज । तत्यण जेते समुच्छिमा ते सवे नपमगा । तिहा ज समुच्छिमे ते सर्व नपमकान्ताओ इये । तत्यण जेने गप्पवक्कतिवा तेण तिविहा प० त० । तिहा ज गर्भज ते तीनप्रकारे कट्ठा ते कहेहै, इत्थो परिसा नपुमगा । स्था पुरुष नपुमक । एउमिण पवनारायाण पत्न्यास अपज्जसाण वरपरिसप्या ण दमचाति कलकोडि जोणिपमुदमयसहसा हवन्तीति मत्तवाय । एहने इणतरे आन्दिरे पवर्गसा अपउर्याया उरपरिसर्प दग्गलाख कलकोडिय, निप्रभुसु गवसहस्र दग्गनाख बीतरागे कट्ठा । सेत्त उरपरिसप्या । एतत्ते उरपरिसर्प कट्ठा । सेकित भयपरिसप्या २ अणे विहा प० त० । ते दिवे भयपरिसर्प तेह ना अनेकमेद कट्ठा ते कहेहै-एउल सेहा सरडा सप्पा सरता सारापरा घरीइना विसमरा म्मा दुग्गा पयलाइया छोरिरीरानिया काहा चउपद

मित्यादि ॥ युगम नगर पितृन्ति द्वौ दशाबुलप्रमाणा रतिरिति हन्ति कुत्ति विंशतमानो भवतु हन्ति गच्छत द्विचतुर्दश प्रमाण । चत्वारिगच्छतानि भोजन इह ह्य पितृहत्यादि उच्छ्रयागुलापेक्षया द्रष्टव्य शरीरप्रमाणस्य परिचिन्त्यमानत्वात् । तथा-अस्तीति नियातो अ बहुत्वान्निधायो प्रतिपदश्च सूक्ष्मयते ततो यमर्थे सन्त्य क्ते कचन मन्त्रेणा ये अद्बलमपि शरीरावगाहनया नवन्ति तथा सन्त्ये क्ते केन य अद्बलपृथक्शिका अपि अद्बलपृथक्शिका प्रियोते येवान्ते अद्बलपृथक्शिका प्रतो नेरुस्वरदि ती क प्रत्यय ते पि शरीरावगाहनया भवन्ति अद्बलपृथक्शिकान् शरीरावगाहना अपि न वन्तीति प्राय , यव शेषमूत्राण्यपि जावनीयानि , तथा मित्यादि ॥ ते अनन्तरोदितस्वरूपा मन्त्रेणा स्थलवरपिडापत्वात् स्थले जायन्ते स्थले च जाता सन्तो जलपि स्थलइव चरन्ति तथा भावस्थानायात् , यद्येय किं तास्मा दिह नदृश्यत इत्याज्ञायाभावा-तैनत्थि-नित्यादि ॥ ते यथोक्तम्वरत

पुहृत्तिया वि धणु पि धणपुहृत्तिया वि गाउय पि गाउयपुहृत्तिया वि  
जोयणसय पि जोयणसयपुहृत्तिया वि जोयणमहस्स पि तेण थले विचरति थले विचरति ते  
णल्यि इह वाहिरएसु दीवसमुहेमु हवति जेयावन्थे तहप्पगारा । सत्त महारगा । तं समासन् दुविहा प० ,

कक्षा ते कहे—अथाहं गमलपि अगलपहसिगापि विहरयपि निहत्यपहसिगापि । केनलागक सहाय्य भगवन्तो अगगहना केतलागक म  
गुन प्रयक्तनो कहवलो केतलागक वैदहन । अगगहना हुने केतलागक विहत प्रयक्तनो अगगहना । रयणपिरयणपहुसिगापि । केहे हागनो के  
इ हाय प्रयक्तनो अगगहना । कथपि कथपहसिगापि धनु पधणपहसिगापि । केहे वेहे हायनो केहे वेहाथ प्रयक्तनो केहे वनपनी केहे धपपुत्रक  
त्वनी । गा-यपि गाउपहसिगापि । केहे गाऊनी केहे गाऊप्रयक्तनो । जोगपि जोगपहसिगापि । केहे योजननो केहे योजनप्रयक्तनो । जो  
यण सपसपि जोगमपहसिगापि । केहे योजन सयनी केहे याजन सपुत्रकत्वनी । यिजोग महसपि जोगमहसपहसिगापि । केहे वेगोजनस  
हसनी केहे महसयोजन प्रयक्तनो । तेण थलजाया थल विचरति जलेजाया जले विचरति । तिहा थलमे जपना थलमे विचर जलमे जगमे जन

पा मरीरगा इन् मानुषक्षेत्रे न स्थितिगन्तिकिन्तुमात्रेषु द्वीपसमुद्रेषु समावन्ति समुद्रेषु च पर्वतदेवनगरादिषु स्थलेषु त्यज्यन्ते । न जलेषु स्थलचरत्वात्, तत इह न दृश्यन्ते जयावन्ततप्यगारा इति ये पि वा न्य ग्रामलक्षणादि शरीरावगन्तमाना स्तथा प्रकारा सन्ति ते पि न नीरगा चातव्या, उपसङ्गारमाह-सेष्ठमित्यादि ॥ तेषामपुष्ट्यादिप्रगृह्यावनीय, सतपा मपि दक्षचार्त्तिकुगोदीना योनिप्रमुखानि शतसहस्राणि सतपा मपि च य च्छरीरादिषु द्वारेषु चिन्तन य च स्त्रीपुत्रपुषकाणा मत्यग्रतुल्य तज्जीवातिगमटीकातो प्राप्तीय, उर परिसर्पवस्तव्यतोपसहारमाह-सेतउर परिसर्पा, अधुना नृजपरिसर्पा मन्निवित्तुराह-सकितमित्यादि ॥ सुगम नवर य नृजपरिजिज्ञापा अप्रतीता स्ते लोकातो वस

त०-सम्पुच्छिमाय गङ्गवक्त्राति या । तत्पण जेते समुच्छिमा ते महें गपुमगा, तत्पण जेते गङ्गवक्त्राति या तेण तिविहा प०, त०-इत्यो पुरिसा नपुमगा, गण्मिण एवमाड्याण पज्जत्ता २ ण उरपरिसप्याण दत्तजा इकुलकीनीजोणिप्पमुहसयसहस्सा हवती ति मरकाय । सेत उरपरिसप्या । से किन नृयपरिसप्या २ अणुणेग

मे विचरे । ते ताल्याऽद्याहिरिणमु दावममहेमहवति । इण मनुष्येष्वेवमे नहो वाहिरला होपममद्रमाहि हवेहै । जेगवक्त्रे तहप्यगारा मेक महोरगा ते समामयो दुविहा प० त० । जे अनेरा तथाप्रकारे कट्ठा त एतल महारगा ते मञ्जेपज्जको दावमकारे कट्ठा ते कहेहै-समुच्छिमा २ गङ्गवक्त्राति या । समुच्छि म गभञ्ज । तत्पण जत समुच्छिमा ते सखे गपुमगा । तिहा ज समुच्छि म ते सर्व नपमकान्नी हवे । तत्पण जे गङ्गवक्त्राति या तेण तिविहा प० त० । तिहा च गभञ्ज ते तीनप्रकारे कट्ठा ते कहेहै, इत्यो पुरिसा नपुमगा । स्या प्रत्य नपुमक । एण्मिण एवमाड्याण पज्जत्त यपज्जत्ता ण उरपरिसप्या ण दत्तजाति कपकोडिजाणिप्पमुहसयसहस्सा हवतीति मरकाय । एहने इणतरे आदिदेई पर्वता अपज्जत्ता उरपरिसर्प दग्गलाख कुलकोडिया निमम्बु गतसहस्र प्यनाख बोतरागे कट्ठा । सेत उरपरिसप्या । सेत उरपरिसप्या । सेकित भयपरिसप्या २ अणुगविहा प० त० । ते दिवे भनपरमर्प तेह ना अनेकमेद कट्ठा ते कहेहै-एतल सेहा सरडा सत्ता सरता सागप, ग घरीइला निसभरा मन्ना दुग्गसा पयलाइगा छोरिविराणिगा जाहा चउपद

या , श्रीमीपा च नवजातिकुलकोटीना योनिप्रमुशानि शतसरस्त्राणि भवन्ति , य त्पुन शरीरादिषु चिन्तन स्त्रीपुत्रपुस्रजाना मल्यबहुत्व तज्जीवा भिगमटीजातो वेदितव्य ॥ सेतमिन्यादि ॥ सम्प्रतिखरपञ्चन्द्रियैर्यग्योनिका मन्त्रिचिरसुराह-संकितमित्यादि ॥ अथ के ते खरपञ्चन्द्रियैर्यग्योनिका सूरिराह-खरपञ्चन्द्रियैर्यग्योनिका द्युतर्विधा प्रजसा-स्तद्यथा-वस्मपक्तीइत्यादि ॥ चर्मोत्सकी पक्षी ॥ मंषपक्षीतो विद्योते येपान्ते चर्मपक्षिण लोमात्सकी पक्षी तोमपक्षी तद्वन्तो लोमपक्षिण तथा गच्छता नापि समुद्रकवत् स्थितीपक्षीसमुद्रकपक्षीतद्वन्त समुद्रकपक्षिण वित्त चर्मपक्षिणो नैकविधा तद्यथा-वरगु

विहा पण्हा , तजहा--णडला सेहा सरफा सत्ता सरंठा सारा खारा घरोइला विस्संजरा मूसा मंगुसा प इलाइया स्थीरचिरालिया जाहा चउप्पाडया जेयावन्तेतहप्यगारा । तंसमासन्ते दुविहा प० , त०--समुच्छि मा य गप्पवक्कतियाय , तत्थणं जेते समुच्छिमा ते सहे नपुंसगा , तत्थणं जेते गप्पवक्कतिया तेण तिविहा पण्हा , तजहा--इत्थी पुरिसा नपुसगा , एएसिण एवमाडयाण पज्जहार ण भुयपरिसप्पाण नवजाडकुल

या । नौन सेहना सट सत्त सरत्त सारस्वार वरोएला विसनर ममा दुगस प्रचलाटि छोरिविरालौ जांधा चउपट देयविशेष । जेयावणे तहप्यगारा ते समासन्तो दुविहा प० त० । एहवा जे अनेरा तथाप्रकारे ते सहेपयकौ ढोंगप्रकार कक्षा ते कहेछे--समृच्छमाय गप्पवक्कतियाय । समृच्छिम गर्भज । तत्थण जेते समृच्छिमा तेमये नपुसगा । तिहा समृच्छिम सर्व सटा नपुमकल्लि । तत्थण जेते गप्पवक्कतिया तेण तिविहा प० तंजहा । तिहा जे ग भंज तेहना तोनभेद कहै । "त्थी पुरिमा नपुसगा । स्त्री पुनप नपुमक । एणमिण एवमाइवाण पज्जत्ता अपज्जत्ताण भुयपरिसप्पाण नवजाडकुलकोडो जोणोपमह सबसइच्छा इवतोतिमक्काय । एहने इणतरे आदिदेइ पर्यासा अपर्यासा भुजपरसर्प नवजाति कलकोडि योनिप्रमुख भतसइत्त इहे वीत रागे कक्षा । सेत भुयपरिसप्पथलयर पाचिटियु तिरिच्छजोणिपा । ते एतने भुजपरिसर्प थलचर पचेइय तिर्यच कक्षा । सेत परिसप्पथलयर पाचिटिय

लीत्यादि-मते च त्रेधा लोकतो वसेया, जेयावन्नैतदप्यगाराउत्ति ॥ ये पि चा न्ये तथा प्रकारा एव रूप्या स्ते चर्मपक्षिणो द्रष्टव्या, उपमत्तारमा  
ए-सेतचम्मपक्खी । लोमपक्षिप्रतिपाटनाथमाह-सकितमित्यादि ॥ एते च लोमपक्षिजेदा लोकतो वेदितव्या, समुद्वपक्षिप्रतिपादनार्थमाह-संकित  
मित्यादिपाठसिद्ध ॥ गव विततपक्षिमू मापि ते समासतो इत्यादि प्राग्बद्धावनीयम्, मतेषा द्वादशजातिकुलकोटीना योनिप्रमुखाणि शतसह

कोटिजोगिप्पमुहसयसहरसाइ हवती तिमस्काय । सेत्त जुयपरिसप्पथलयरपचेदियतिरिक्खजोगिया । सेत्त  
परिसप्पथलयरपचेदियतिरिक्खजोगिया । से कित्त खहयरपचेदियतिरिक्खजोगिया २ चउविहा पसुत्ता,  
तजहा-चम्मपक्खी लोमपक्खी समुग्गपक्खी त्रियतपक्खी । से कित्त चम्मपक्खी २ झुण्णगविहा प०, त०  
वग्गुली जलोया झुण्णिहा चारुपक्खी जीवजीवा समुद्दवायसा कसुत्तिया पस्किवेराली जेयावण्णेतहप्पगा  
रा ॥ सेत्त चम्मपक्खी ॥ से कित्त लोमपक्खी २ झुण्णगविहा प०, त० टका कक्का कुरला वायसा चक्का

ति० । एतत्ते उरपरिसर्प थनवर पचेदिय कक्षा । सेकित्त खहर पचेदिय तिरिक्खजोगिया २ चउविहा प० त० । द्विवे खहयरपक्खी पचेदो तिर्यचयो  
नि तेइना ४ भेटकक्षा ते कहैछे-चम्मपक्खी लोमपक्खी समुग्गपक्खी त्रियतपक्खी । चर्मपक्षी लोमपक्षी समुद्दकपक्षी वितनपक्षी विस्मरीपाख । सेकित्त च  
म्मपक्खी श्रणगविहा प० त० । द्विवे चर्मपक्षी, ते चर्मपक्षी अनेकप्रकारे कक्षा ते कहैछे-वग्गुली जलोया अटला भारहपक्खी लोपजीवा समुद्दवायसा ।  
वागुल जलोका अडिल भारहपक्षी जोपजीवा समुद्दवायस । कणत्तिया पक्खिविरालीया । जेयावण्णेतहप्पगारा सेत्त चम्मपक्खी ।  
जे एहवा अनेराहीज तथाप्रकारे जाणिया द्विवे ते चर्मपक्षी कक्षा । सेकित्त लोमपक्खी २ अण्णगविहा प० त० । द्विवे लोपपक्षीनाभेट अनेकप्रकारे क  
क्षा ते कहैछे-टका कका कुराला वायसा चक्कागा इसा कलहसा पायइना राउइसा अट्टासेही वग्गा वल्हागा । टट्टपक्षी कक कराला कागली  
चक्का इस कलहस पादहस अट्टासेहो वग वालग । पारिप्पाया कुवासारसा मेसरा मसूरा सववत्ता गहरा पीडरीया कागा कानिज

स्यामि श्रीपा माप शरीरादिपु द्वारेपु चिन्तन स्त्रीपुमपुमकाना मल्पयुत्व च जीवाभिगमटीकात प्रतिपत्तय मिदुतु ग्रथीरवन्नया न लिख्यते,  
 श्रयुना चित्तयजनानुग्राय द्वीन्द्रियप्रवृत्तिजातिकुलकोटिशतसहस्रसङ्ख्याप्रतिपादिका सद्गुह्यणिगाया माह-सत्तत्तज्ञाङ्कुलका हिलम्बयदुननेरसा  
 दप । दससयहोतिनगा तद्धारसचेवयोधवा ॥ १ ॥ अत्र द्वीन्द्रियस्य यथाउद्भूत सङ्ख्यापटयोजना, सा चैव-द्वीन्द्रियाणा सहजातिबुलकाटिराज्ञा

गा तमा कलहसा पायहसा रायहसा अक्षा सेन्नीवगा वलागा पारिष्यवा कुंचा सारसा मेसरसा मसूरा मऊ  
 रा सतवच्छा गहरा पोळरीया कागा कामियुगा वजुलगा तित्तिरा बहुसा लावगा कचोत्रा कविजला पारे  
 वया चिन्ना चाना कुकुन्ना सुगा वरहिणा मढगसला कोकिला सेगहा वरेल्लग माढी । सेतु लोमपस्की । से  
 कित समुगपस्की २ एगागारा प०, तेण नल्यि इह वाहिरएसु दीवसमुद्देसु नवति । सेतु समुगपस्की । से  
 कित चिततपस्की २ एगागारा प०, तेण नल्यि इह वाहिरएसु दीवसमुद्देसु हवति । सेतु चिततपस्की । तेस

गा विज्जनागा । पारिगता कीच साय मेसर मसूरो मसूर यतवच्छ गहर पायडरक काग कामजुगा विज्जलगा । तित्तिरा बहुसा लावगा कचोत्रा क  
 विना पारिव्या चिन्ना चासा कुकुन्ना सुगा वरगाहरिणा । तीतर वडक नावक कपोत कवच्छन यारेया विटक नीलचास कुकुन्ना सवा वगला । मय  
 णसिलागा कारना सेहा चरिल्लगमाई । मयणपची सलाक कादल सेहो चाल्लग इत्यादि । सेतु लोमपस्की सेकित समुगपस्की २ एगागारा प० त० ।  
 अनेरा लोमपची तयापकारे दिवे समुद्रकपचीनो एकहीज भेट्ठे पची सोममानयी । तेण तल्यि इह वाहिरएसु दीवसमुद्देसु हवति । इण दीपामादि  
 नहीछे वाहिरला दीपममद्रानाहि छेछे । सेतु समुगपस्की सेकित विवतपस्की २ एगागारा प० त० । एतले समुद्रकपची कक्षा दिवे ते विवतपची  
 ते विवतपचीनो एकहीज भेट्ठे । तेण तल्यि इह वाहिरएसु दीवसमुद्देसु हवति । ते इणा अष्टाईसोप ते अष्टोप धातको पच्छराई सही वाहिरला  
 दीपसमुद्रमादि छे । सेतु विवतपस्की ते समासत्रां दुविहा प० त० । एतले विवतपची ते सेवेपयकी दामकारे कक्षा ते तदेछे-समुच्छिमाव यम यकी

किं, त्रीन्द्रियाणां सटी, चतुरिन्द्रियाणां नय, जलचरपञ्चेन्द्रियाणां मद्देवयोदशानि, चतुषदस्यलचरपञ्चेन्द्रियाणां दश, उरपरिसंस्थलचरपञ्चेन्द्रियाणां दश, त्रिजपरिसंस्थलचरपञ्चेन्द्रियाणां नव, सचरपञ्चेन्द्रियाणां नव, सचरपञ्चेन्द्रियाणां द्वादशेति' उपसर्गारमाह-संज्ञमित्यादि ॥ तदेव मुक्ता पञ्चन्द्रियते यग्योक्तिका, संज्ञातिमनुष्यान् त्रिचिह्नु राह-संज्ञातिमित्यादि ॥ अत्रापि समूच्छिममनुष्यविषयं प्रवयवधुमानत त्रिप्याणामपि च साक्षाद्भूय

मासत्तु दुविहा प०, त० समुच्छिमा य गङ्गावक्त्राति य । तत्पण जेते समुच्छिमा तेसहे नपुंसगा तत्पण जेते गङ्गावक्त्राति य तेष त्रिविहा प०, त० इत्यो पुरिसा नपुंसगा । एतसिण एवमादयाण खहयरपचिदि यतिरिस्कजोणि याण पज्जहापज्जहाण वारसजार्दकुलकोफिजोणिप्यमुहमयनहस्सा हवतीतिमस्काय, सत्तठ जाडकुलकोफिजतिनवचुत्तेरसाइय । दसदसयहोतिणवगा तद्वारसचेवत्रोयहा ॥१॥ सेत्त खहयरपचिदि यतिरिस्कजोणि या ॥ सेत्त पचिदि यतिरिस्कजोणि या ॥ से कित मणुस्सा २ दुविहा प०,

नियाम । समूच्छिम गभंन । तत्पण जेते समुच्छिमा ते नपुंसगा । तिहा जे समूच्छिम ते सर्व नपुंसक । तत्पण जेते गभंनयतिगत तत्पण ति विहा प० त० । तिहा जे गभंन ते तौनभेदे कक्षा ते कहै—इत्यो पुरिसा नपुंसगा । सो पुनप पपुंसक । एतासण पपुंसकायाण खहयरपचेदि यतिरिस्कजोणि याण पज्जहापचत्ताण वारसजार्दकुलकोफिजतिमहसदस्सा हवतीतिमस्काय । खहयरपचो पचिदि यतिरिस्कजोणि या कर्णियानिप्रमुस व रैलाय हुने कक्षा बौतरागे—सत्तठ जाडकुलकोफिजतिमहसदस्सा इत्येवमस्काय तद्वारसचेवत्रोयहा ॥ ये इत्येते सा तलाखकुलकाटा तेदि यथाठलाख चौरिन्द्रिय तत्रलाख जलचर पचोइय १० ॥ लाय चोपट जलचर पचोइय १० लाय उरपरसर्प दसयरपचोइय दमला य कलकोफिज मुजपरसर्प ८ लाय खहयर पचि दिव्य दव्यतिरिस्कजोणि या । एतले खहयर पचोइय त्रिचिचार्ता न जाणया । नेत्त तिरि खहयाणि या संज्ञित मणुस्सा २ दुविहा प० त० । दिवे त्रिचिचार्ता निहा कक्षा ते दिवे मणुस्सा, भेद पूरुहे, ते मणुस्सा दायम कक्षा ते कहै—समुच्छि





द्वीपा स्तादृशा गय ताय तप्रमाणा स्ताव दपान्तराता स्तत्रामान गय शिसरिपर्वतपर्यापरिदिग्व्यवस्थिता अपि तती त्यन्तसदृशतया व्यक्तिभेद मनपेक्ष्य अन्तरद्वीपा अष्टाविंशतिविधा गय विवक्षिता इति तज्ज्ञाता मनुष्या अपि अष्टाविंशतिविधा उक्ता स्तानेव नामग्राहसु पदज्ञंयति-तज्ज्ञा गयोक्तया इत्यादि ॥ गत सप्तचतुष्का अष्टाविंशतिसङ्ख्ये त् गते च प्रत्येक हिमजति शिसरिणि तत्र रिमयद्रुततयावाद्वाच्यन्ते इह जम्बूद्वीपे ज्वरतस्य हीमवतस्य च क्षेत्रस्य सीमाकारी भूमिनिमग्नपञ्चविंशतिभोजनयोजनशतोच्छ्रयपरिमाणो भरतक्षत्रापक्षयादिगुणविफ्रतो हेममय धीनपट्टपर्यानानावश

वा विगयकलंवरसु वा इथीनुरिससजोएसु वा नगरनिष्ठमणंसु वा सहेसुचेव असुडएसु ठाणंसु एत्यण समुच्छिसमणस्सा समुच्छति, अगुलस्स असुसिज्जानाणमितीए उगाहणाए अमन्ती मिच्छदिठी अन्ताणी सद्वाहि पज्जतीहि अपज्जत्तगा अतोमुज्जताउगा चेव काल करति । से कित्त गल्लवक्कतियमणस्सा २ तिविहा पणत्ता, तज्जहा-कम्मनूमिगा अकम्मन्मिगा अन्तरदीवगा मे कित्त अन्तरदीवगा २ अन्तरदीवया अन्तावीसतिविहा पणत्ता, तज्जहा एगोरुया अ्याहासिया वेसाणिगा णगोली १ हयकत्ता गयकत्ता गोक

राधविधौ साणित रत्तमाहि गुक्कमाहि सूक्कापुहलनो नाखवा तेइनेविधौ जीवविता कयारमाहि । धौ परिमसचोणसुना नगरिडमणेमुवा गामनिडमणे मुवा सज्जेमुचेव अम-एसठाणेषु । त्वो पुनप सयोगमाहि नगर खान्माहि ग्याम खान्माहि अपविवाइ स्थानकमाहि । १-त्यण समुच्छि मा मणत्ता समुच्छति । इहा समुच्छिम मनुष्य कपलै । अगुलम्मा असुखिल्लभार्गमितोण १ गगाइणाए । प्रथमसमै अगुलने अमत्थातमाने अन्नगइना । अमणो निच्छादिठो अणाणी सव्वाहि पज्जतीहि अपज्जत्तगा अतोमुहत्ताउगाचव कालकरति । असक्खी मिथाइयो अणानौ सर्वपर्याउ अपपण्णि अन्तर्मे देत्तं याज्जया निचै कालकरे । सेत्त समुच्छिममणत्ता । ते समुच्छेममनुष्य कहिये । सेकित्त गमवक्कतियमणम्मा २ तिविहा प० त० । डिवे ते गर्भजमनु वु पूछै गिय गुत्तकहे, ते गभनननुथया तौनभंद कट्ठा तेकइयै-कयभूमिगा १५ अकम्मभूमिगा १० अन्तरदीवगा २ अन्तावीसापिहा प० त० । कम्मभू

विशिष्टयुतिमिनिकरपरिमिहितोन्नयपार्थ सर्वत्र तुल्यविस्तारी नगनमहलोऽहोसि रत्नमये कादशकूटोपधीभितो वल्लभयेतलविधिमिनिजनकम  
हिततन्नागदशयोजनागगण्डपूयपश्चिमयोजनसरस्त्राधामदक्षिणोत्तरपञ्चयोजनशतविस्तार पट्टदहशोन्नितशिरोमथ्यन्नाग सर्वत कल्पपादपनेशिर  
मणीय पुर्यापरपर्यन्तास्या लवणोदार्शवजलसरपक्षी रिमवत्वामपर्वत स्तस्य लवणोदार्शवजलसरपर्शादारग्न्य पूवस्या पश्चिमाया च दिशि प्रत्येक द्वे  
द्वे गजदत्ताकारे दन्त्रे विनिगते तत्र ऐशान्यादिदिश या विनिगता द्वा द्वौ तस्या चिम्बत पयस्तादारग्न्य त्रीणि योजनशतानि लवणमयगह्वाऽत्रान्त  
रे योजनशतत्रयायामत्रिक्रमः । त्रिभिन्वन्यूनैकोनपञ्चाशदधिकनवयाजनशतपरिरय एकोलकनामाद्वीपोवर्तते-अथञ्च पञ्चयन् शतप्रमाणात्रिक्रमया

न्ता सक्कलिकन्ता २ आयसमुहा मंठमुहा अयमुहा गोमुहा ३ अ्यसमुहा हल्यमुहा सौहमुहा वग्घमुहा ४  
आसकन्ता सीहकन्ता अकन्ता कसपाउरणा ५ उक्कामुहा मेहमुहा विज्जुमुहा विज्जादत्ता ६ घणदत्ता लठ  
दत्ता गूढदत्ता सुद्धदत्ता ७ । सेत्तं अत्तरदीवगा । से कित अक्कम्मज्जुमिगा ? २ तीसतिविहा पयुत्ता , त०  
पचहि हेमवण्हि पचहि हेरयवण्हि पचहि हरिवासेहि पचहि रम्मगवासेहि पचहि देवक्रुण्हि पचहि

मिमा १५ अकर्मभूमना ३० ५६ अत्तरदीपमाहि मनय २८ भेटे कक्षा ते कहैछे—एगदगा अभसिया वेसागिया तदोलो ४ । एलोक्क अभसिक वेसा  
णो तदोलो । हयकणा गयकणा गोकणा नकुलिकणा ८ । हयकर्ण गजकर्ण गार्कण मकुलकर्ण । पावसमुहा मटमहा अयमहा गोमुहा अभिमहा ह  
ल्यमुहा सौहमुहा वग्घमुहा १६ । आटगमन्ना मेयमुख । अयनत्वा गोमुख अश्वमुख हासामञ्च सिंहमुख व्याघ्रमुख । अस्सकणा सौहकणा अजणा कण्णा  
वरणा २० । अश्वकर्ण मिहकर्ण अकण कण्णावरण । सक्कमहा मेहमुहा विज्जुमुहा २३ । उक्कामुख मेवमुख विद्यग्मुख । विज्जदत्ता घणदत्ता लठदत्ता गू  
ढदत्ता सुद्धदत्ता । वत्ताऽया २८ । विद्यदत्ता घनदत्ता लठदत्ता गूढदत्ता चित्तथाटि ७ २८ ते । सेत्त अत्तरदीवगा । अत्तरदीप २८ अयरोपर्वत  
परिमै २८ जीवाभिगम टीकामाहि विस्तरपण्णे । सेकित अक्कम्मज्जुमिगा २ तोसद्विहा प० त० । हिवे अकर्मभूमिना तीसभेद्वे ते कहैछे—पचहि हेमवण

द्विगण्यतोच्छ्रितया पट्टजरवेदिकाया संवत् परिमण्डित तस्या श्रु पट्टधरवेदिकाया वण्को जीवाभिगमटीकाया निव वेदितव्य , सा पि च पट्टो  
वरवेदिका स्रजत सामरत्येन वनस्रजपरिचिता वता च वनस्रजस्या ऽय विज्ञेय , प्रायो वरूना समानज्जातीयाना नुत्तमाना मरीरुणाणा समुदायो  
वन यथा ऽशीरुवा चम्पकजनमिति , अनेकजातीयाना नुत्तमाना मरीरुणाणा समूहो नवस्रज , उक्त च जीवाभिगमसूताटीकाया-स्रजजाडगरि  
रुमेति घण अणैरजाडगहि उत्तमेहि वणस्रजे इति । तस्य च वनस्रजस्य चक्रवालतया विफमो देशोने द्वे योजने परिपे पट्टजरवेदिकाप्रमाणा  
अस्य च वनस्रजस्यवर्णक प्रतिपादितोस्ति स चा तीव्रगरीयानिति नो पदञ्चित ॥ केवल जीवाभिगमटीकातो वसेय , तस्यैव रिमजत पवतस्य  
पयत्तादारज्य दक्षिणपूर्वस्या दिशि त्रीणि योजनशतानि तवणसमुद्र मधगाध्य द्वितीयदन्द्वाया उपरि रकोरुक्कद्दीपप्रमाण आन्नासिकनामद्दीपो  
वसते , तथा तस्यैव हिमवत पश्चिमाया दिशि पर्यता दारज्य दक्षिणपश्चिमाया नैन्तकोण इत्यथ , त्रीणि योजनशतानि तवणसमुद्र मधगाध्य

दन्द्वाया उपरि यथोक्तप्रमाणो वेपाणिकनामा द्वीप , तथा तस्यैव हिमवत पश्चिमाया दिशि पयत्ता दारज्य पश्चिमोत्तरस्या दिशि वायव्यकोणे  
इत्यथ , त्रीणि योजनशतानि तवणसमुद्रमध्ये दन्द्वामतिक्रम्या आन्तरे पूर्वोक्तप्रमाणा नागोलिकनामा द्वीप एव मेते चत्वारो द्वीपा हिमजत अत  
सद्यपि विदिशु तुल्यप्रमाणा अवतिष्ठते , उक्त च-बुद्धरिमवतपुत्रा वरख्यविदिसासुसागरनिसिण । गतूणतरदीवा तिसिणग टुति चिच्छिन्ना ॥ १ ॥  
अथणापत्तनवस्य किपूणपरिहि तेसि मे नामा एगारुय आन्नासिय वेसाणिय चैव नगूली ॥ २ ॥ तत एया मेकोरुक्कद्दीना वतुणा द्वोपाना परतो  
यथाकन पूर्वोत्तरादिविदिशु प्रत्येक चत्वारि २ योजनशतान्य तिकस्य वतुयोजनशतायामविक्रजा किचिन्न्यूनपचपरिगुणितद्वादशयोजनशतपरि  
द्वेपा यथोक्तपट्टजरवेदिकावनस्रजमङ्कितपरिसरा जम्बूद्वीपवेदिकात शतयुज्जनशतप्रमाणान्तरा ह्यपकणगजकणगोकर्णशकुलीकणनामानचत्वारो  
द्वीपा स्तद्वया-एकोरुक्कस्य परतो ह्यकर्ण , आन्नासिकस्य परतो गोकर्ण , नागोलिकस्य परत शकुलीकणं इति , तत

एतेषा मपि दयल्लार्दीना परत पुन रपि यथाक्रम पूर्वोत्तरादिविदिशु प्रत्येक पञ्च २ योजनशतानि व्यतिक्रम्य पञ्चयोजनशतायामविक्रमा स्या  
शीन्व्यचिरपञ्चदशयोजनशतपरिक्षेपा पूर्वोक्तप्रमाणपट्टवरवेदिकावनखण्डमणिकतवाद्यप्रदेशो जम्बूद्वीपवेदिकात पञ्चयोजनशतप्रमाणानरा आ  
दशमुख १ मेढमुख २ अयोमुख ३ गोमुख ४ नामानद्यत्वारोद्वीपा स्तद्यथा-तयकणस्य परत आदशमुखो गजकणस्य पुरतो मेढमुख गोक्रणस्य  
परतो ऽयोमुख शङ्खुनीकाणस्य पुरतो गोमुख इति' एवं भयपि ज्ञावना कार्यः, एतेषा मप्य दशनुगादीना चतुर्णा द्वीपाना परतो भूयो पि  
यथाक्रम पूर्वोत्तरादिविदिशु प्रत्येक पट्टयोजनशतान्य तिक्रम्य पट्टयोजनशतायामविक्रमा सप्तनवत्यधिकाष्टादशयोजनशतपरिक्षेपा यथोक्तप्रमा  
णपट्टवरवेदिकावनखण्डमणिकतपरिसरा जम्बूद्वीपवेदिकात पट्टयोजनशतप्रमाणानरा अथमुगदस्तिमुखसिद्धमुखव्याघ्रमुखनामान द्यत्वारो द्वीपा ,  
एतेषा मप्य ऽवमुगादीना चतुर्णा द्वीपाना परतो यथाक्रम पूर्वोत्तरादिविदिशु प्रत्येक सप्तयोजनशतान्य तिक्रम्य सप्तसप्तयोजनशतायामविक्रमा

खयोदशाधिकद्वाविंशतियोजनशतपरिरया पूर्वोक्तप्रमाणपट्टवरवेदिकावनखण्डमगूढा जम्बूद्वीपवेदिकात सप्तयोजनशतप्रमाणानरा अथमुग  
दरिकाण्यकण्डकावरणनामान द्यत्वारो द्वीपा स्तत एतेषा मद्यकणोदीना चतुर्णा द्वीपाना परतो यथाक्रम पूर्वोत्तरादिविदिशु प्रत्येक मष्टा वष्टो  
योजनशतान्य तिक्रम्याष्टयोजनशतायामविक्रमा एकोनत्रिंशदधिकपञ्चविंशतियोजनशतपरिक्षेपा यथोक्तप्रमाणपट्टवरवेदिकावनखण्डमणिकतपरि  
सरा जम्बूद्वीपवेदिकातोऽष्टयोजनशतप्रमाणानरा चत्वारमुखेचमुखविद्युत्सविद्युदुक्तात्रिधाना द्यत्वारो द्वीपास्ततो ऽभीपा मप्युत्कानुगादीना  
चतुर्णा द्वीपाना परतो यथाक्रम पूर्वोत्तरादिविदिशु प्रत्येक नवनयोजनशतानि व्यतिक्रम्य नवनवयोजनशतायामविक्रमा पञ्चचत्वारिंशदधिक  
ष्टाविंशतियोजनशतपरिक्षेपा यथोक्तप्रमाणपट्टवरवेदिकावनखण्डमगूढा जम्बूद्वीपवेदिकातेनवयोजनशतप्रमाणानरा घनदन्तलष्टकगूदन्त  
शुद्धदन्तनामान द्यत्वारो द्वीपा एव मेते हिमयति पर्वते चतस्रपु विदिशु व्यवस्थिता सर्वस्यया अष्टाविंशति , एव हिमवन्तुलपार्श्वेप्रमाणे पञ्च

द्रुमप्रमाणायामविक्रान्तावगाढपुणरीकद्रुहोपशोभिते गिरारण्यपि पर्वते लवणोदार्णवजलसम्पर्शोदारम्य यथोक्तप्रमाणात्तरासु घतस्यु घटितु  
व्यवस्थिता एकोरुकादिनामाना 'तृणापान्तरालायासविक्रान्ता अष्टाविंशतिमह्ना द्वीपा यत्तथा सबसह्यया पट्पञ्चाशदन्तरद्वीपा , गतेद्रुता मनुष्या  
अप्ये तन्नामान उपचारा द्रवन्ति घतात्स्थानात्तद्वपदशो यया पञ्चालदशानिवाग्निन पुरुषा पञ्चाला इति, तेचमनुष्या वज्रपमनाराचसहनिन  
कककुक्षिपरिणामा अनुलामवायुयगा समचतुरस्त्रसंस्थाना स्तद्यथा-सुप्रतिष्ठितकूचचारुणा सुकुमालशस्त्रप्रथिरलोमकुक्षिविन्दुत्तनहु यगला  
निगूढसुबटुसन्धिजानुप्रदशा करिकरसमयुतोरेव कठीरवसहस्रकटीप्रदशा शक्रायुधसममध्यनागा प्रदर्शितावत्तनाजिमण्डला श्रोत्रसुताच्छित्त  
विशालमासलजक्षस्थला पुरपरियानुकारिर्दोषवाह्य सुसिद्धमणिदन्त्या रक्तोत्पलपत्रानुकारिणामणिपाटता चतुरङ्गुलप्रमाणसमयुक्तकत्रुग्री  
वा शारदगशाकसामगदना श्वन्नाकारिशिरसो अस्फुटितस्निग्धकान्तिश्रद्धमद्भुता कमण्डलुमूलगमपस्तूपावीध्यनपताकासीजस्त्रिजयजमस्य मरु  
रकूमरयवरस्थाताशुकाष्टापादाकुशसुप्रतिष्ठमयूरश्रीदामाग्निपकतोरणमोदनीजलधिपरजनादशपर्वतगजपुत्रभसि चामररूपप्रज्ञासोत्तमद्वयिज्ञाज्ञान

उत्तरकुरुणिहि सेत अरुमन्मगा । ने कित कमन्मगा ? २ पणरसविहा पणता , तजहा पचहि जरहेहि  
पचहि एरवणिहि पचहि महाविदेहेहि ते समासन् दुविहा पणता , तजहा आउरिया य मिलरू य । से

हि पचहिरण्यवणिहि पचाह हिरण्यवासेहि पचहि रम्यगवासेहि पचहि टक्कुराहि पच ३ उत्तरकराह । पाच इमवत्त सेवकरो पांच हिरण्यपर्वन सेवे  
रो पाच हिरण्यवर्प चत्रकरो पाच रम्यकसेवकरो पाच टक्कुरा चत्रकरो । सेत अरुमन्मगा मेकित अरुमन्मगा २ पणरम  
विहा प० त० । ते अरुमन्मगि कहिये दिवे कर्मभूमि पछ गुदकहे १५ प्रकार कक्षा ते कहछे - पाहि भरहहि पचहि ऐरवणिहि पचहि महाविदेहेहि  
० ते समानश्री दुविहा प० त० । पाच भरतेकरी ५ ठीरवते करो ५ महाविदेहेकरी ० मन्मपथको दायप्रकारे कक्षा तेकहेछे - आउरियाव मन्मिन्  
य । आचमनुष दूगा म्तेच्छमनुष । सोकत मिसकू २ अणेगविहा प० तजहा । दिवे म्ने च्छमनुष ते पनेकप्रकारे कहे । जयना चिनाया सवरा नञ्च

परा, स्थियोपि सुतातनवांस्तुन्दयं समस्तमहिनागुत्तमचिता सहताग्लिपद्भलवत् सुकुमारकर्मसम्यान्मनोहारिचरणा रोमरहितप्रज्ञस्तला  
 क्षणोपेतजट्टायुगला विगृहमासलजानुप्रदशा कदलीस्तम्भानिभीषत्सुकुमारपीत्रोरुका वदनायामप्रमाणांगगुमासलविगालजघनधारिण्य स्त्रिय  
 न्निमुचिभक्तशङ्करोमराजय प्रदक्षिणावत्तराजगरनाग्निमयदला प्रज्ञतराक्षणापतद्भुक्तय सङ्गतपाथी कनककलशोपसृतात्युन्नतुत्ताकृतिपीत्र  
 मयाधरा नुजुनारवाहुलतिका सौवस्तिक्कज्जुचक्राद्याकृत्तिलालकृतपाणिपादतला वटनग्निगोच्छिनमानलम्बयत्रीया प्रज्ञस्तलवृणोपेतमासल  
 मुक्तिभ्या दाग्निमोपुष्पानुकारिशोणिमाथरीपु रक्तोत्पलतालुजिह्वा विमलसितकुलपयायतकाल्लोलोचना आरोपितचापपृष्ठाकृतिसुमङ्गलनता  
 पञ्चललाटफलका सुस्त्रिगधकाल्लक्ष्मशिशोस्तथा पुत्तपय किञ्चिदू नोच्छ्राया रज्ज्जावतउदारशृङ्गारचारुवपा प्रहृष्ट्य एवसितजगित  
 परमनेपुण्योपेता, स्तथा मनुष्या मानव्यं च स्वप्नावत मय सुरनिवदना प्रतर्क्योपमानयायाताना नन्नोपिणो निरुद्यवचा माद  
 यत्ना नस्यपि मनोदरिणि मणिजनकमैरक्तिकादी ममत्वकारण ममत्वान्नितिवशरहितेन तवयाऽपगतवैराग्यया इत्यथ्यकरतूगोमनि  
 त्वपि तत्परिज्ञोने पराङ्मुख्य पादविहारिणा उपरादिरागयत्तनुतपिशाचादिग्रहमारिव्यनोपनिपातविकृता परस्परप्रत्यप्रपन्नतापर

मिलस्कू १ २ चुण्णंगविहा पसात्ता, तजहा मग जवण चिलाय सवर वज्जर कात्र मुहुकोट्ट जक्रगणि  
 राग पक्ष्णणीय कुलस्कू गोण्ह सीहला पारस गोथय्यय दमिल चिन्नल पुलिड हारोम दात्रयोक्ताण मध

। कात्र मरडा डभङ्गणि । पक्ष्णि । उव्वनदगना चिन्नातदगना मयदंगना वच्चरदंगना काउदंगना मरुदंगना उभउगदगना तौर्णगदेगना पण्ण  
 गना । कुलुव गोड सौहल पारस कोव अडड दमि । चिन्ना मधहारग वज्जित पञ्जल नामा पामा पडना मम  
 पात्र वधगाय । कुलपुदगना रेडना मिहभना पाण्णना क्रौवना अडडना दमिलता । चल्लणा पल्लिदमा डारासना टोपना वकाणना गत्थाहारना वट  
 लना अज्जलना रामना पार्श्वना पद्मना मलयना ववुना । मूगलि कोक्कण मंगण्णद्वया मालव मगर मभासिया कण्ठोर दहासोय खगा खासउ नेडर

दितत्त्वा दऽमित्रा , तेषां पृष्टकरणकानि चतुःपष्टिमह्नाजानि चतुर्थातिक्रमेण चाचार्यज्ञां पितृशाल्यादिधायिष्यन्न कित एव  
 वीमृत्तिज्ञा कल्पदुमाणा पुष्पफलाणि च , तथा हि जायन्त रतु तत्रापि त्वश्रमा तं गव आनिगो वृषमापमुद्गादीनि धान्यानि परं न तानि मनुष्या  
 णां सुपन्नोग गच्छन्ति या तु पृथिवी सा शूलरातोऽप्यनतगुणमाधुर्या यं कल्पदुमपुष्पफलाणां मास्त्रादं स चतुर्वर्त्तिनोजना दप्य धिक्नुण ,  
 तथा चोक्त-तसिण भत पुष्पफलाण कश्चि प्रासाग पन्नत गा० , स जहा नाम ग्रन्तो चाउरतस्सचक्राद्विस्स कल्लाण जायणनाम सपरमवरा  
 रसुनिष्यन् वत्ताउवेगधोउधगरमोउधमफासोववेग आसायाकिज्जाद्वप्यणिज मयागिज्जा विगिज्जा सव्विदियगायपत्तायागिज्जाश्रामागग पन्नत गतो  
 इठनराग चउ पन्नते तत पृथिवीकल्पदुमपुष्पफलानि च तेषां मात्तार तयाज्जुत मात्तार प्रमाटादिसस्याना ये गृहकारा कल्पदुमा  
 म्पु ययासुरम वतिष्ठन्त , न च तत्र कृत्र दशमशूक्यामत्तकुणभल्लिकादय आरीरोपट्टवकारिणो जन्तउ उपजायन्त ये ऽपि तायन्ते जूनगव्याघ्रसि  
 तादय तं पि ननुष्याणां न वाचायै प्रवति नापि ते परम्पर दिव्यहिमकन्नाव वत्तन्ते श्वानुजावतो रौद्रानुनाउरहितत्वात् , मनुष्ययुगराणि  
 च पयवसागसमय युगल प्रसजते तच्च युगलम कोनाशीतिहिमनि पारामन्ति तथा आरीरोज्जयो ऽष्टौ धनु ज्ञातानि पत्योपना सह्यनागप्रमाण मा  
 यु रक्तच ग्रतरदीउमु गरो धनुसुयमहुस्मिया सया मुट्या । पालति तुगवत्स पल्लस्सयसरजागाक ॥ १ ॥ पउमवीपिठकरद्वयाणि मज्जयाण तेसि  
 माहारो । नत्तस्मयउत्थस्सय गुगवीइदिणाणि पालणया ॥ २ ॥ स्तोकरूपायतपास्तोक्कप्रमानुउभ्यतयात्वं ऽते सत्त्वा दिव सुपसपति मरण च तेषां

हारग वहलित्त्वा ज्जाल रोम पाम वउसा मलत्राय वधुत्राय सूत्रलि कुकुरगमेज्ज परहव मालत्र मग्गर  
 ज्जात्रामिय कण वीरण रण्हाभीय खसखानिय नेटूर मड ण्हाविल्लग लउस खउम क्काज्जा अउरत्रागा ज्जग

मट ढोविल्ल गल उमल वउस क्कोउ घरवा गहण रोम गहण रोमग मत्त मत्त विमयवाभीय उधमाई । मूलना कीरणना कनकना मेट्टा ।  
 मालवना मगरना प्रभासिकना कणवोरना वडासिना वउना ग्यासिव नेउरना मटना दोवियना गनना उउसा वउसा क्कोवना याना गोण



अनकाकागनुतादिमात्रव्यापारपुरस्सर प्रवति न शरीरपीकारभपुरस्सर मिति, तदिव मुक्ता यन्तरद्वीपगा सम्प्रति अकर्मन्त्रमिकप्रतिपादनार्थं  
माह-संक्षिप्त मित्यादि ॥ अथ क ते अकर्मन्त्रमिका ? सूरिराह-अकर्मन्त्रमिकास्त्रिशद्विधा प्रज्ञप्ता-तद्यन्त्रिशद्विषयक्षेत्रभेदात्-तथा वाह-तजहा  
पवहिहेमवतगहिइत्यादि ॥ पञ्चभिर्हिमवतै पञ्चभिर्हिरण्यवतै पञ्चभिर्देवकुरुभि पञ्चभि रसुरकुरुभि त्रिंश  
माना त्रिंशद्विधा भवन्ति यथा पञ्चाना त्रिंशत्सङ्ख्यात्सकत्वात्, तत्र पञ्चसु हिमवतेषु मनुष्या गव्यतप्रमाणशरीरोच्छ्रया पत्योपमायुयो वज्रपंज  
नाराचसन्निन समधतुरस्त्रसस्याना चतुर्पाष्टपृष्ठकरकका द्युतयोतिक्रमज्जिन एकोनाशीतिदिनान्यपत्यपालका उक्तच-गाउयमुच्चा पलिने व  
माउणो वज्ररिससपयणा । ह्रमवग्रत्नवग् अहमिदनरा मिहुगवासी ॥ १ ॥ चउसकीपिठकरकया शमशुयाण तेसि माहारी । अतस्सचउत्यस्सय  
गुणसिद्धिमिणवधपालकया ॥ २ ॥ पञ्चसूरिवर्षेषु पञ्चसुरस्यकपुट्ठिपत्योपमायुपो द्विगव्यतप्रमाणशरीरोच्छ्रया वज्रपञ्जनाराचसहनिना समचतुर  
स्त्रसस्याना पष्टमक्तातिक्रमाहारयाहिणो ऽष्टाविंशत्यधिकशतसङ्ख्यापृष्ठकरकका द्युतु पष्टिदिनान्य पत्यपालका, आह च-हरिवासरस्यसु आउप  
माण सरीरमुस्सेहो । पलिनेवमाणि दोलिय दोलियकोसुस्सिया जणिया ॥ १ ॥ छठस्सय आहारी चउसठिदिणाणि पालणा तेसि । पिठकरका

संसग नमस् त्रिलाय वासीय एवमादी ॥ सेतमिलस्कु ॥ से कित आयरिया दुविहा पणत्ता,  
तजहा ड्हिपत्तारिया य अण्हिपत्तारिया य । से कित ड्हिपत्तारिया ? २ ठविहा पणत्ता, तजहा-

ना रामना गौणना रामना भक्कना मरुक्कना चिन्नातना इणा देयावागो इणतर आटिदेई । सेत मिलक्कु । म्लिच्छदेय कट्टिये । सेकित आयरिया दु  
विहा पणत्ता त० । हिंवे आर्पदय केत्ताप्रकारे टायप्रकारे कट्टा तेकट्टे-इडु टपत्तापरिया अण्हिडुटपत्तायरिया । अट्टिअन्त आर्यमनुष्य अट्टिअिना  
आर्पविना मणुष्य । सेकित इडुटपत्तायरिया २ कट्टिइहा पणत्ता त० । हिंव अट्टिअवत् आर्यमनुष्य छपकारे कट्टा ते कट्टेहे-अरिहता चकवट्टो वसोटेवा  
वामट्टेवा चारणा विद्याहरा । अहगत् चक्कत्त वल्लदेव वासुदेव चारण विद्यावर यमण । सेत इडु टपत्तायरिया । एतन्नेभेदे अट्टिअवत्त कट्टा आर्य ।

शमय अठावीस मुणेष्व ॥ २ ॥ पञ्चमुदेगुरुषु पञ्चस्तुत्तरकुरुषु त्रिपत्योपमाथुपो गव्यतयप्रमाणशरीरोच्छया समवेतुरस्त्रसंस्थान वज्रपतनाराचसे  
हृनिन , पटपचाशदधिकशतद्वयप्रमाणपट्टकरगठका अष्टमन्नक्तातिक्रमाहारिण एकोनपचाशद्दिनाम्यपस्यपालका , तथोक्तच-दासृविकुरुसुमण्णाया  
तिपल्लपरमाउणोत्तिकोसुधा । पिठकरगठसयाइ दीखप्पन्नाइमण्णायाण ॥ १ ॥ सुसमसुसमाणुभाव अनुज्जमाणाणयच्चगोवज्जया । अउत्तापन्नादिणाइ  
अठमन्नतस्स आङ्गारो ॥ २ ॥ एतेषु सर्वेष्विदंघ्रन्तरद्दीपेष्विज मनुष्याणा मुपयागा कल्पद्रुमसम्पादिता नवर मन्तरद्दीपापेक्षया पञ्चमु हेरगय  
तपुमनुष्याणा मुत्यानवलवीयादिक कल्पपादपफलानामास्यादोऽन्नमेमाधुर्यमिरयेवमादिकाजावा पर्याया नधिकृत्या नक्तगुणा द्रष्टव्या , तेभ्यो ऽपि  
पञ्चसुहरिवर्षेषु मज्जसु रम्यकवर्षेषु अनन्तगुणा स्तेभ्यो ऽपि पञ्चसु देवकुरुषु पञ्चसू त्रकुरुषु नक्तगुणा , तदेव मुक्ता अक्रमभूमिका सम्प्रतिक  
र्मज्जूमिकप्रतिपादनायमाह-सकित्तमित्यादि अय के ते कमज्जूमिका सूरिराह-कमज्जूमिका पञ्चदशविधा प्रज्ञा स्तच्च पञ्चदशविषयत्वज्ञेज्जेदात्  
तथा चाह-पचहि जरतहि इत्यादि । पञ्चभिन्नरते पञ्चभिन्निरावर्ते पञ्चभिन्निरावर्ते जिद्यमाना पञ्चदशविधा भवन्ति , ते च पञ्चदशजिघा

अरहता चक्षुःनही बलदेवा वासुदेवा चारणा बिज्जाहरा ॥ सेत्त इह्णिपत्तारिया ॥ से क्कित्ति अण्णिह्णिपत्तारि  
या ? २ नवविहा पणत्ता , तजहा खेत्तारिया जात्तिअारिया कुलारिया कम्मारिया सिप्पारिया ज्ञासारिया

संस्कृत अण्णिह्णिपत्तारिया २ नवविहा प० त० । हिंवे कुण मनक्कहि , भायं नवप्रकारे कक्षा तेकहेछे—खित्तआयारया जात्तिआयारिया कुलआयारि  
या कम्मआयारिया मिप्पआयारिया भासागरिया नाणयारिया दिसणआरिया चारिप्ताआरिया । चेत्तायं तौघकर कपजे ते तौघकरसेन जात्तिआयं जेह्णो  
जात्तिप्रानिह कुलवत्तम ऊपना कलानं कर्मविज्ञानविषे छाहा सिल्लविषे आयं भायाआयं बोलवैषायं ज्ञानेआयं दग्गनेकरोआयं चारिवैकरोआयं । मेक्कि  
त खित्तारिया २ अहक्कळीस तिावहा प० त० । हिंवे चेत्तायना २५१ आठापचवीस भेटकक्षा तेकहेछे—रायगिह्णिमगुच्चया अगतत्तातामल्लित्तवगा  
२ कच्चलपरकलिग बाणारिसिचवकासीया । राजगृही नगरी मगधदेय चम्पानगरी अगदेय तिम तामलित्तानगरी वगदेय कच्चनपुरो कलिगदेय वा

समासतीर्थ्या प्रप्ता स्तथा-आर्यां स्त्रेष्वा घ तत्रात् ऐवधर्मन्यो याता प्राप्ता उपादेयधर्मरित्यार्या उपोदरादय इति रूपनिष्पत्ति  
 स्त्रेष्वा अव्यक्तज्ञापासमाचारा मृच्छकत्यक्ताया वाचि इति वचनात् प्रापाग्रहण चोपलक्षणा तत्र शिष्टा, समत सकलव्यवहारा स्त्रेष्वा इति प्रति  
 पत्त्य, तत्रा ल्यवक्तव्यत्वात् प्रथमतो स्त्रेष्ठवक्तव्यतामाह-संक्षितमित्यादि ॥ अथ के त स्त्रेष्वा मिलक्त्, इतिनिदेश प्राठनत्वा दापत्वा च  
 सूरिराह-स्त्रेष्वा अत्रकविद्या प्रज्ञाया तच्चा नकविद्यत्व शक्यवन्नचिलातशयवरादिदज्ञज्ञदात्-तथाचाह तज्ज्ञा संगत्यादि शक्यदज्ञानिगजिन  
 ज्ञाका यवनदेशनिवासिनोपवना एव सर्वत्र नवर ममी नातादेशलोकतो विज्ञया । आर्यप्रतिपादनाथनाह-संक्षितमित्यादि ॥ सुगम नवर रायगि  
 हेत्यादि ॥ राजगृह नगर माधाननपट एव सर्वत्राप्यन्तरसरकारीप्रियेय प्रावायस्त्वय संगधपुत्रनपदप राजगृह नगर १ अंगपचपा २ दगयुता  
 मलिती ३ कलिंगपुष्पावनपुर ४ काशीपु वाणारसी ५ कोसलासु साकत ६ कुत्तपु गजपुर ७ कुसावत्तपु सौरिक ८ पञ्चालपु काम्पिल्य ९ जङ्गलेपु  
 अहिच्छता १० सुराष्ट्रेपु द्वारावती ११ विदेहेपु मिथिला १२ वत्सेपु कोशाम्बी १३ श्यामिल्यपु नन्दिपुर १४ मन्थपु जह्ननपुर १५ वत्सेपु वैराट

गाणारिया दसगारिया चरितारिया । से कित खेत्तारिया ? २ अष्टज्ज्ञीसतिविहा पयता, तज्ज्ञा राय  
 गिहमगहचपा अणामहतामलित्तिवगा य । कचणपुरकलिगा वाणारसि चैव कासीन ॥ १ ॥ साएयकोस

राणसौनगरी निचै काशी । माग्यकोमलागाय पुरचकरसौरिकुमदाय कार्पमपवासे आहृष्टाजगलाचिव । साक्षितनगर कोशलदेश गजपुर कुत भोरो  
 नगर कग कापिननगर पट्टालदेश अहिक्खानगरी आर्यमा जङ्गनटग निचै । डारवश्यमरुहा मिहिलविदेहायवत्य नोमवी नटोपरसडिक्का भदिलपुरचे  
 वमलगाय । डारिकानगरी सारठदेश मिथिलागरी विदेहदेश कोसवी नगरी वच्छदेश नान्दपुर सागुलदेश भदिलपुर निचै मलउदेश । वडराडि च्छ  
 वरणा अच्छातहमित्तिवविटकणा सात्तिमसरादेवी वीतभवसिधसौबीरा । वैराटदेश मच्छनगर वरणदेश वच्छपुरो मृत्तिकावतीनगरी टगारणदेश  
 सात्तिकानतीनगरी विदेहदेश वीतभवमगर सिधुदेश सोनारदेश । मन्थरायमरुमणा पावाभगीयमासपुरवडा सादत्याककुला काटियारिसावलाट, य ।

पुर १६ वरुणपुर १७ दशरूपपुर १८ चेदिपुर शक्तिकाजती १९ वीतजय सिन्धुपुर २० सीधीरेपुर मयुरा २१ सुरसेनेपुर पापा २२  
जङ्गपुर मासपुरिवहा २३ कुलातपुर श्रावस्ती २४ लाटासु कोटीजं २५ श्रुतम्बिका नगरी कैरवजनपदस्याङ्गं यतायदं द्वेपद्विशक्तिजनपदात्पक्र द्वात्र  
माय प्रशित, कुत इत्याह-जत्युप्यतिइत्यादि ॥ यस्मा दत्र एतेषु श्रद्धापूर्वविजितिसङ्गु जन्तपदेषु उत्पत्तिं जिनानां तीर्थकराणां पञ्चपत्तिना रामाणां  
वलदेवानां इत्यानां वासुदेवानां तत आर्यं गते न केनार्यानांयव्यवस्थिता दक्षिणा, यत्र तीर्थकरादीनां मुत्पत्तिं स्तवार्थं शेषमनार्यमिति, उक्ता  
इत्यायां सम्प्रतिजात्यायप्रतिपादनाय माह-सकितमित्यादि सुगम ॥ नवर यद्यपि गाराक्षरेषु नैकजातय उपवश्यन्ते तथापि लोके गता गय एष्य  
एकलिन्दबिंदवदङ्गहरितचुम्बुणरूपा इत्यजातयो ज्यवनीया जाताय प्रसिद्धा स्तत एतानि जातिनि रूपता जात्यायां न श्रेयतातिनि ॥ तल्लागा  
इत्यादि ॥ तुलाका मृच्यालीजिन तन्तुवाया कुविन्दा पहकारा पहकुरकुविन्दा देयका हतिकाया वरुहा विच्छिका जविका कटादिकारा ॥ कहपाउ

लागय पुरचक्रसोरियकुरुहा य । कपिलपचाला अहिठहाजगलाचित्र ॥ २ ॥ दारवतीयनुरठा निहिलवि  
देहायवच्छक्रोसवी । नटिपुरसन्निहा नदिलपुग्मेवमलया य ॥ ३ ॥ बडराफवच्छरगा अच्छातहमत्तिमात्र  
उदनखा । सोत्तियमइयाचदी वीडनयसिधुसोवीरा ॥ ४ ॥ मऊरायसूरसेणा पावाजगीयप्पसपुरिवहा ।  
सावत्थीयकुलागा कीलीवरिसचलाढाय ॥ ५ ॥ संयवियावियनगरी कंउअउचअरियजगिय ॥ एत्थुय्य

मयुराजगरी मूमेनेडेग पावानगरी मूइडग मासपुर साठ्योनगरी कणालदेग कोटिर्पंगरी लाटदेग । संयवियावियनगरी को. अइचवहाइयापरिउ  
त्यर्त्तजिणाण चकाणरामकण्डाण । स्वताम्बकानगरी विनाता कोर अउमग्गे के क अईवे चार्पे इणा उगानरात्ताति जित च ने वलदेव छय । मेस  
ख पाउरिया । तम ट च्चेवचांउग । सेकिण जातचाउरिया २ छ च्चहा प० त० । द्विवे जातिमाग्गे कइछे—ते जातिमाग्गे क्काकरि कक्षा ते कइछे । प्र  
धाराक लडा ई देहामनेगारम हरियाचुगचे, क्कागाइमजारा । प्रदान न कालपान, म विदेइताने चउगाइयनाम चरेननाम चम्पुगनाने ०

यारा ॥ काष्टपादुकाकारा गव ॥ मुजपाठयारा छतारा ॥ छत्राकारा गव शोपाण्यपिपदानि ज्ञावनीपानि, जन्नीजयणाशियाइत्यादि ॥ ब्राह्मी यवनानी  
त्यादयो लिपिर्जेदा स्तु सम्प्रदाया दवसया, उक्ता ज्ञापार्यो सम्प्रतिज्ञानायानाए-संकिर्तमित्यादि सुगम ॥ अथ के ते दर्शनायां मूरिराह-दर्शनायां  
द्विविधा प्रज्ञा स्तथा-सरागदर्शनायां वीतरागदर्शनायां य तत्र सराग मरूपाय सदृशन तेनायां सरागदर्शनायां, वीतराग मरूपाय मरूपायनीक  
पाय वा य दर्शन तेनाया वीतरागदर्शनायां, तत्र सरागदर्शनायप्रतिपादनाय माह-संकिर्तमित्यादि ॥ अथ के ते सरागदर्शनायां मूरिराह-  
सरागदर्शनायां दर्शविधा प्रज्ञा स्तथा-निसगुण्यसित्यादि ॥ अथ रुचिशब्द प्रत्येकम निसगुण्यते ततो निसगुण्यचि रिति द्रष्टव्यं तत्र निस  
र्ग स्वभाव स्तेन रुचि जिनप्रणीततत्त्वानिलापहृया यस्य स निसगुण्यचि, उपदर्शो गुर्वोदिना वस्तुतत्त्वकथन तेनरुचि रुक्तस्वरूपा यस्य स उपदे  
शरुचि, आद्या सर्वज्ञवचनात्मिका तस्या रुचिरो ऽनिलापो यस्य स आद्यारुचि, जिनाश्चैव संतत्त्व न शोप युक्तिज्ञातमिति यो जिमन्यते स आ

तिजिणाण चक्कीणरामकरहाण ॥ ६ ॥ संतखेत्तारिया ॥ से कित जाडुआयरिया ? २ ठव्हिहा पणत्ता,  
तजहा-बुवठ्ठाथकलिदा विदेहावेदगाडुय । हरियाचुचुगाचेव ठपयाडुपुजाडुते ॥ ७ ॥ सेत्त जाडुआरि  
याय ॥ सं कित कुलारिया ? २ ठव्हिहा पणत्ता, तजहा-उग्गा जोगा राडुसा इस्कागा नत्ता कोरद्धा ।  
सेत्त कुलारिया ॥ से कितं कम्मारिया ? २ बुण्णगविहा पणत्ता, तजहा-टोस्सिया सुत्तिया कप्पासिया

छज्जाति थारं कडिये । सत्तचाति आगरिया । ए ज ति थारं कड्या । संकित कुलथायरिया २ छेव्विहा पत्तं । हिंवे कुलथायं कड्ढे, ते कुलथायं छ  
प्रकारे कड्या ते कड्ढे-उग्गाभोगारण्णा रत्तागातायाकारत्वा । उग्गकुल भोगकुल राजकुल ६ । सत्तकुलथायरिया  
१ छमट्ठ थारंकुल । संकित कम्मारिया २ थण्णगविहा पत्तं । इति, हिंवे कम्मथायं कड्ढे त थणेकप्रकारे कड्या ते कड्ढे-टोस्सिया सुत्तिया कप्पा  
सौया मुत्तिवेयालिया भडवेयालिया कासासिया नरवाडुविया । दासिका जातिविमेष सौत्तिका कर्पोसिया भक्तिवैतालिका भण्डवेलु ६ । जातिविमेष

कारुचि रिति ज्ञाद्यर्थं, सुतदीयरुयमेयति ॥ अत्रापि रुचिष्य प्रत्येकम त्रिसयप्यते सूत्रमा चाराङ्गाद्यङ्गप्रतिष्ठे अङ्गयाध्य आयश्यकदेशवैका  
लिकादि तन रुचि यंस्य स तथा सूत्रमा चारादिक मङ्गप्रतिष्ठे अङ्गयाध्यवा छावप्यकादिक मन्निधीयमानो य सम्पन्न मन्नाङ्गे प्रसन्न २ तत्राप्य  
वसायश्च नवति स सूत्ररुचि रिति भावाय, कीज मिय यीज य देक मय्यनंकायप्रयोधोत्पादक यथ स्तन रुचि यस्य स थीजरुचि- अनयोश्च पद  
यो समाहारी द्वन्द्व तेन नपुसकानिर्देश इतिसमुच्चये, अङ्गिमवित्यारुरुहति ॥ अत्रापि रुचिष्यस्य प्रत्येक मन्निधायो पिंगमस्तविविस्तररुचि  
श्च तत्रा पिंगमो विधिष्ठे परिज्ञान तेनरुचि यस्या सा वचिगमरुचि विस्तारी व्यास सकलदादशागस्य नये पर्यालोचन मितिज्ञाव तेनो, पयुति  
ता रुचियंस्य स विस्ताररुचि, किरियाससवधमरुहति ॥ रुचिष्यस्य उत्रापि प्रत्येकसम्बन्धात् क्रियारुचि सङ्गपरुचि रिति द्रष्टव्य-तत्र

मुत्तविया जीया नरुवेयालिया कोलालिया नरवाहणिया जेयावय्ये तहप्यगारा । सेत्त कम्मरिया ॥ से कित  
मिप्पारिया ? २ ज्जणेगविहा पणत्ता, तजहा-तुण्णागा ततुवाया पहागारा देयन्ता वरुन्ता कठपाउयारा  
मजपाउयारा वत्तारा वत्तारा पप्पारा पेल्लारा लेव्वारा चित्तारा सखारा दत्तारा जत्तारा जिप्पगारा सेत्ता  
रा कोळिगारा जेयावन्ते तहप्यगारा ॥ सेत्त सिप्पारिया ॥ से कित ज्ञासरिया २ जेग ज्जम्हमागहाए मा

काञ्चादिक नरवाहनिका । जेयावय्ये तहप्यगारा । ज येनेरा तथाप्रकारे । सत्त कम्मरिया । ते कर्माणि कक्षा । सेकित सिप्पारिया २ अण्णेगविहा प०  
त० । दिवे । ग्रन्थार्थं विज्ञाननाशार्थं तेहना पिंग यनकभेटे कक्षा ते कहेछे-तुण्णागा ततुवाया पहागारा देवहा वरुन्ता कठपाउयारा मुचपाउयारा  
वत्तारा वत्तारा पप्पारा चित्तारा सखारा दत्तारा भट्टारा जेभगारा । सत्तारा कोळिगारा । तुत्तारा वक्कर पट्टाकारा देण्ड कोट्ट डिग्गविग्गे  
प सिप्पारा विक्कारा शखारा दत्तारा । जेयावय्ये तहप्यगारा सेत्त सिप्पारिया । जे येनेरा पट्टवा तथाप्रकारेण ते गिन्पार्ये कक्षा । सेकित भासाय  
रिया २ अण्णेगविहा प० त । दिवे भाषार्थनाभेद कहेछे-तहना यनेकभेट जाणिया । जण य्हमागहाए भासति । जे य्हमागधोभाषा बाने । जल

क्रिया सम्यक् समानुष्ठानं तत्र रुचि यस्य विस्तारार्थोपरिज्ञानात्सन्नेपरुचिर्धर्मश्चास्ति काये धर्मश्चतुर्धर्मादी वा रुचि यस्य स धर्मरुचि रिति गायत्रा सन्नेपर्यं तु मूलरुदेव स्वत आह भूयत्यरा इति । प्रावप्रधानो निर्देश स्ततो य मयं - ज्ञातव्यत्वन समुद्भूता श्री पदार्था इत्यत्र रूपेण यस्या धिगता परिज्ञाता जीवा जीवा पुण्यपाप मागजसम्बरश्च शब्दः द्रव्यादयश्च कथ मधिगता इत्याह सहस्रमुद्रया इति ॥ आप्तत्वा द्विज्जिलापाञ्चसहस्रतत्त्वासाक्षात्मना या सहता मति सा सहस्रमति स्तया कि मुक्त भवति परोपदेशनिरपेक्षया जातिस्मरणप्रतिज्ञादिरूपया मत्या न केवल मधिगता किमु तान् जीवादीन् पदार्थान् वेदयते नुरोधयति - य तत्स्वरूपतया आत्मसा त्परिज्ञा । मयति चेति ज्ञाव , गप निर्गो निसगरुचि विज्ञेय इति ज्ञाप , अमु मेवा यंस्यष्टतर मन्निवितसु राह - जो जिगदिष्ठ भावे इत्यादि ॥ यो जिनद्रष्टान् ज्ञावन् द्रव्यहेनकालज्ञावनेदतो नामादिमेदतो वा बहुविधान् स्वय मेवा पदशनिरपेक्ष श्रद्धयाति केनो ज्ञावन् श्रद्धयाति तत्र आह - एवं मेव एत जीवादि यथा जिनै दृष्ट ना न्यथेति च समुच्चये एव निसर्गंरुचि रिति ज्ञातव्य , उपदेशरुचि माह - गय चेत् इत्यादि ॥ यतानेव जीवादीन् ज्ञावान् य परेण ब्रह्मस्यन जिनेन वा उपदिष्टान् श्रद्धयाति एव उपदेशरुचि ज्ञातव्या , आज्ञारुचि माह - जो ऐत्त मयाणतो इत्यादि ॥ यो हेतु वि

साए ज्ञासति, जत्यविय ण वनीलित्री पवत्तइ वनीएण लित्रीए अठारसविहे लेखकविहाणे पसुत्ते, तजहा वनीजवणाणिया दासापुरिसा खरुही पुकरसारिया जोगवइया पहराइया अतस्करिया अकरपुठिया वेणइया निरुइया अरुलित्री गणियन्त्रित्री गधत्तुलित्री अयासलित्री माहेसरी दोमिली पोलिदी ॥१८॥

विद्येण वनीलित्री पवत्तइ । निहा ण ज्ञातो लिपि पवत्तइ । वनीएण निवाण अठारसविहे लिपिनिहाणे प० त० । ते ज्ञातो लिपि तेहेन विपै पवत्तइ १८ पकारे लिपिविधान कख्या ते कहेहे - वनी जवना लिता दासा पुरिया चुराटो पुकरसारिय भोगवइयाइय अतरिक्खिया अकरपुठिया वेणइया निरुइया अरुलित्री गणियान्त्रित्री गधत्तुलिपी अयासलिपी माहेसरी दोमिली पोलिदी १८ । ज्ञातो लिपि यवना लिपि निखलिपि दासा पुरिका चुराटो पुकर

वक्षिणार्थमत्र मयानान प्रयत्न मांशयेत् तु शब्द स्वकारार्थं, केवलाचरोचते कथमि त्याह—एव मेतत् प्रवचनीक्त मयोज्ञात ना न्ययेति एष आद्या रुचि नांम, सूत्ररुचिमात्र-जीसुत मित्यादि ॥ य सूत्र मद्रूपविष्ट मद्रुवाह्य वा अधीयान स्तेन श्रुतनाङ्गप्रविष्टेना द्रुवाद्येन वा 'सम्यक्त्वम वगाहते स सूत्ररुचि रिति ज्ञातव्य, योजरुचि माह-एगपयणाद् इत्यादि ॥ एकेन पदेन प्रकृता जीवादिना अनेकानि पदानि प्राकृतत्वेन विभक्तित्वेन त्वयाद् नेकेषु जीवादिषु पदेषु य सम्यक्त्वमिति धर्मार्थमणो रज्जदोषचारात् सम्यक्त्वान् आत्मा प्रसरति तु शब्दो वधारणार्थं प्रसरत्येव कथमि

सेत्त ज्ञासारिया ॥ से क्तिता नाणारिया ? २ पचविहा पयत्ता, तजहा—अग्निनिबोहियनाणारिया सुनना णारिया उहिनाणारिया मणपज्जवनाणारिया केवलनाणारिया ॥ सेत्त नाणारिया ॥ से क्तिता दसणारिया ? २ दुविहा पयत्ता, तजहा—सरागदसणारिया य वीयरगदसणारिया य ? २ दसा त्रिहा पयत्ता, तजहा निस्सग्गुवदेसरुई ज्ञाणारुइसुत्तवीयरुइचेव । अग्निगमचित्थारुइ किंरियासखेवध

सारिका भोगवती अस्तरिजका अचरपुष्टिका वेणकोया निर्हिका अकल्लिपि गणितविपि गम्यवर्त्तलिपि आटर्गलिपि डामलीलिपि पुलिन्दो १८ । सेत्त भासायारिया । ते एतले भाषायां । सेक्तिता नाणारिया २ पचविहा प० त० । द्विवे ज्ञानार्थं कष्टे, ते ज्ञानार्थं पचयकारे कष्टा ते कष्टे है । आभिनिबोहियनाणारिया सुयनाणारिया श्रीहियनाणारिया मणपज्जवनाणारिया केवलनाणारिया । मतिज्ञानार्थो श्रुतज्ञानार्थो अत्र धिज्ञानार्थो मनपयवज्ञानार्थो केवलज्ञानार्थो । सेत्त नाणारिया । एतले ज्ञानार्थं कष्टा । सेक्तिता दसणारिया २ दुविहा प० त० । द्विवे दर्शनार्थं ते द गतार्थनाभेद दोषप्रकारे कष्टे । सरागदसणारिया वीयरगदसणारिया । सरागदर्शनार्थं वीतरादर्शनार्थं । सेक्तिता सरागदसणारिया २ दसविहा प० त० । एतले सरागदर्शनार्थनाभेद तेजना १० प्रकार कष्टे—निस्सग्गुवदेसरुई आणारुइसुत्तवीयरुइचेव अमगमवित्थारुइ किंरियासखेवधर १ । २ । निस्सग्गुवदेसरुईचेव आणारुइसुत्तवीयरुइचेव अमगमवित्थारुइ किंरिया सखेपयवि धर्मरुचि । भूत्वेणाद्विगया लोकाजो



त्याह उदक इव तैलविन्दु किमुक्त प्रवति यथा उदकेऽनूदेवागतो ऽपि तैलविन्दु समस्त मुदक माक्रामति तथैकदेशोत्पन्नरुचि रप्यात्मा तथावि  
चक्षुषीपशमनावा दक्षोपेषु तत्वेषु रुचिमान् भवति स एवाविद्यो बोधरुचि रिति ज्ञातव्य । अधिगमरुचि माह-सो होइ इत्यादि ॥ यस्य श्रुतज्ञान

स्मरुई ॥१॥ न्यून्येणाडधिगया जीवाजीवायपुष्पापावंच । सहस्समुडयासवस वरोयवेयइएसणिस्सगो २ ॥  
जोजिणदिठेनावे चउव्विहेसदहासयमेव । एमेवणसुहत्तिय णिसगरुइत्तिणाडवो ॥ ३ ॥ एएचेव उन्नावे,  
उवदिठेजोपरेणसदहइ । ठउमत्येणजिण्णव उवएसरुइत्तिणायवो ॥ ४ ॥ जीहेउमयाणतो अण्णाएरीयएपव  
यणतु । एमेवणसुहत्तिय एसोअ्याणारुईनामा ॥ ५ ॥ जोसुत्तमहिज्जतो सुएणउगाहंडउसम्मत्त । अण्णेगवा  
हिरेणव सोसुत्तरुइत्तिनायवो ॥ ६ ॥ एगपएणंगइ पदाइजोपसरईउसम्मत्त उदडव्वित्तिल्लविट्टु सोचीयरुइ  
त्तिनायवो ॥ ७ ॥ सोहोइअन्निगमरुई सुयनाणजस्स अत्यउदिठं एकारसअ्यागइ पइयागादिठिवालेय ॥८॥

वेयपुष्पावच सहस्रमदआसवस वरेयहांआसणिसको । २ । भूनायंपणारा भवकरिके उठोछे वुद्धि जे पदार्थोरा जाखा जोवाजोव पुष्प पाप सहस्र  
सति प्रायव सम्वर तेहने निसर्ग कहिये । जोजिणदिठेभावे चवव्विहेसदहासयमेव एमेवणसुहत्तिय निसर्गोसर्गसिणायवो । ३ । जेजिन दोठाछे भा  
व द्रव्यभाविकरी ते सदहे खरीकरी माने पातेनी निसर्गपणे सदहे ते निसर्गकहिय तव निसर्ग सुभावलेनरुचि जिनप्रणीतत्वाभिनापरूपोययस्ससमि ।  
एएचेवउभावे चवःहुंजोपरेणसदहइ छउमत्येणजिण्णव उवएसरुइत्तिणायवो । ४ । हिवे उपदेशरुचि कहैछे, ते जोव चजोवादिनाभाव जे उपटिठ प  
रने कहैथके साचो सबे छद्वल्लेकछो ते तथाभावन्ते कछानी परमाण ते उपदेशरुचि कहैछे, हिवे अन्नानरुचिकोभेट कहैछे —कोहेवमयाणतो अण्णाए  
राएएपवयणतु एमेवणत्तइत्तिए एसोअ्याणारुईनामाए ५ । जे हेतु सिद्धान्तना कछा अर्थछे ते अण्णजाणतोयको प्रवचननी आआ तेरुचि मनसू घ ी शुभ  
वस्तुनोपर वल्लभलागे एज सिद्धान्तमादि कछा ते नन्यग हुवे नही एहवेभावै प्रवसै ते आआरुचि कहिये । जोसुत्तमदिज्जतो सुएणउसगाइमउसम्मत्त अगे

मयंतो दृष्ट मेकादशाङ्गानि प्रकीर्णं क मित्यत्र जाता वेकचन-ततो यमर्थं प्रकीर्णानि उत्तराध्ययनादीनि दृष्ट्याद थ शब्दादुपाङ्गानि च सु मत्र  
त्यपिगमरुचि , विस्ताररुचि मार-दद्यात् त्यादि ॥ द्रव्याणां यमोस्तिज्ञायादीनां मन्त्राणां मपि सर्वं भावा पर्याया यथायोग सर्वप्रमाणे प्रत्य  
क्षादिभि सर्वेषु नयविधिभि र्गमादिनयप्रकारे उपलब्धा स्म विस्ताररुचि रिति ज्ञातय ॥ सर्ववस्तुपर्यायप्रपञ्चावगमेन तस्या रुचे रतिमि  
मलरुपतया ज्ञावात् ॥ क्रियारुचिमाह-दसगत्यादि ॥ दशन च ज्ञान च चारित्र च दशनज्ञानचारित्र समाटारी दृढ स्तस्मिन् तथा तपसि मि  
य च तथा सथासु समित्तपु दुयासमित्यादिषु सर्वासु च गुप्तिषु मनोगुप्तिप्रवृत्तिषु या क्रियाज्ञावा रुचि क्रि मुक्त भवति यस्य ज्ञावतादजानाया  
चारानुष्ठाने रुचि रस्ति सखलु क्रियासंचिनांम, सनुपलुचिमाह-अक्षिन्नगपित्यादिना ॥ अगुह्योता कुरिसता दृष्टि यैन सो अनभिगृहीतशुद्धि रति

दञ्ज्ञाणसखनावा सखपमाणेहिजस्सउवल्लछा सखाहिगयत्रिहोहि वित्यारुइत्तिनायव्वो ॥ ९ ॥ दसगनाणच  
रित्ते तत्रविणएसवसमिडुगुत्तीसु जोकिरियान्नावरुइसो खलुकिरियारुइनामा ॥ १० ॥ अणमिगमहिक्कुदिठ्ठी

णवाङ्गिरेणवा सोसत्तरइत्तिनायव्वो इ । जे मूत्र सिहात्ता भणतोयको युतते अगवाडो सम्यक्ककरोने भणै अगमविट आचारागादि अगवाड्या उत्तराध्ययना  
दि तेजने मूत्र रवि कहिये । एगपणणेगाइ पया चापगणयममत्त उटववत्तिविटू सावोउरुवेत्तनायव्वो ७ । एक पट्टेकरो अतक पटनाभाय अनुक्रमे  
पमरै विस्तरे एक जोवाटिक पट्टाये सम्यक्काटि अनेकपावेजिम पाणाऊपर तेनविट्टुवा विस्तारपामे तहने वोजरवि कहिय । सोडाइअभिगमरुइ स  
नाणनव्वय दुपाटुइ इमारसअमाइ प जगटिठ्ठुगोय ८ । निणै युतज्ञानेय्तीरो दोधा अर्थजणै अर्थकरो ११ अना पकाणै उत्तराध्ययनादिक दृष्टि  
वा उपागाट तहनायर्थ मनस्य उ ते अभिगमरावि कहिये । दव्वाणसव्वभावा मअपमाणहिजसुववा सव्वाद नयत्रिहोहि वित्यारु स्तिनायव्व १८  
हिंवे विस्तारराव कह्छे-द्वयादि धमा स्त तायाट ६ वीजा याकता अनेक सर्व भावपर्याय ययाग्यप्रमाण प्रवच समप्रकार उपनव्य पाभ्याहै भव  
नेगादिकनयनानधकरो समभव छैतविस्तारुव कहिय । दमणणायचारते तवविषयसुचसमिडुगुत्तीसु जोकिरियामाभु सासुत्तिकिरियाचरनामा १० ।



न गते परमायसतादिभिः सम्यक् मस्तीति श्रद्धीयते इत्यर्थे , अस्य च दर्शनाया चारा अष्टौ ते सम्यक् परिपातरीया तदतिक्रमे दर्शनस्या  
 उप्यतिक्रमभावात् अतः स्तानुपदर्शयितुं माह-निससकिय इत्यादि ॥ ज्ञातुं शङ्कितं दर्शनाङ्काः स्वशङ्काः च त्वर्थे , निगतं शङ्कितं यस्मां दसौ नि-  
 शङ्कितौ दर्शस्यगङ्गारितं इति प्रावार्यं , तत्र दर्शनाका ममाने जीतत्वं कथं मज्जो भय्योऽपरस्य प्रथम इति स्वशङ्काः प्राकृतनिवृत्त्या तस्मिन्  
 मवदं प्रवचनं परिकल्पितं त्रिपिप्यतीति न चेय दर्शनाङ्काः स्वशङ्काः वा युक्ता यत इति द्विद्विधा नावास्तद्व्या अहेतुग्राह्या जीवास्ति  
 त्यादयः स्तत्संयत्प्रमाणसङ्गावात् अहेतुग्राह्या अज्ञव्याख्यादयः अस्मादाद्युपक्षया तत्साधकत्वेनना मसम्भवात् प्रकृतज्ञानगोचरत्वा तद्वतूनामिति प्रा-  
 कृतोऽपि च निजस्य प्रवचनस्य बालाद्युपक्षाय उत्तम-बालाद्यी मृदुमूर्त्योणा दृष्ट्या चरित्रकारिद्वया ॥ अनुग्रहार्थं तत्त्वज्ञे सिद्धान्तं प्राकृत  
 स्मृतं ॥ १ ॥ अपि च प्राकृतो वि निवस्य प्रवचनस्य दृष्ट्याऽपिरोषी ततः कथं मवास्तपरिकल्पना शङ्काः स्वज्ञानं स्तराण्यस्य दृष्ट्याऽपिरोषवच  
 नासम्भवात् निगुह्यत इति जीव मवा लब्धासनप्रतिपत्तो दर्शनाचरणा तत् प्राधान्यविवक्षाया दर्शनाचार उच्यते-मतेन दर्शनदर्शनिनो कथञ्चि  
 नुदं माह-यज्ञानानेदं त्व दर्शनिन इव तत्फला योगतो मोक्षान्नावप्रसङ्गं मव मुत्तरैरपि त्रिपुपदेषु प्राजनाकायां, तथा नि काङ्कित इति काङ्कण काङ्कित

वि । वाचन्तमुदसगवज्जाणाय समस्तसद्वहणा ॥ १३ ॥ निसकियनिक्ताखिय गिह्वितिगिच्छाव्यमूहदिष्टीय उवयू  
 हथिरीकरणे वच्छलपन्नावणञ्च ॥ १४ ॥ सेत्त सरागदमणारिया । से कित वीयरगदसणारिया ? २ दु

इति कायादिकं सत्यं च भावश्चुधर्मे वेधमं भगवन्तना जेधमं साचाकरा अहं ते धमनचि कद्विय, प निसर्गं दग्धेदे कचिरुप दर्शनकक्षो, द्विवि ज्ञिण  
 लगे प जपनाछे तं लि । उपदिश्य । देहकाचा । दग्धस्वरान्दिदगनानि ग्राभितानि इति । परमत्यमश्रवोवा मृदुपरमत्यमश्रवणावा वि वावपुक्तदमणवज्ज  
 नाऽसम्भवनसद्वहणा ॥ १३ ॥ परमतत्त्वनाश्रयं कौवाटिकं ते परमार्ये तेहना सम्वचन पल्लवोवागुण कृडारौति परमार्यं जीवादिक्कडो टाठा जेहनो सेवता  
 मुहटि परमार्यं ॥ सेवनाकरे विगये २ कुदार्गंत वेपाते कुदर्शना ते जाव च्छव्यज्जनो यष्टवणा करवी, द्विये सव्यज्जना द अतोच, र कहळे-प्रवचनजो देश

शारद प्रयत्ने जिनप्रणीते शेषेषु च कपिलादिप्रणीतेषु प्रयत्नेषु अत्रिनिर्णीतो न विद्यते अत्रिमुख्येन उपादेयतया गीनु श्रुता मस्यैत्यनभि  
युहीत यूय मनश्चित्तीकृदृष्टि रित्यनेन परदशानात्तरपरिग्रह प्रतिपिपा नैन परदशानपरिज्ञानमात्र मपि निषिद्ध मिति जिज्ञेप ' न इत्यनूत  
सनपमचि रिति ज्ञानव्य , धमरुचिमाह ॥ जोअर्थिकायस्यादि ॥ य सत्तु जीवो त्तिकायाया धमं गत्युपपत्त्याकृत्वादित्यना  
व श्रुतधम चारिवधर्म च जिनाभिहित श्रुत्वाति सधमरुचि ज्ञातव्य , तदव निसर्गाद्युपाधिनेदा दृग्या सचिरूप दर्शनमुक्त-अस्य ते ये लिङ्गे  
रिट सत्यल मस्तीति निश्चीयते तानि तिङ्गास्य पदशेषत्वाह-परमत्यसयवो इत्यादि ॥ परमा ध्य तात्विका ध्य ते ऽयां ध्य जीवादय स्ते परमार्या  
स्तपु सस्तव परिचय तात्पर्येण बहुमानपुरस्सर जीवादिपदाया वाभावाभ्यास इति यावत् वा शब्द समुच्चये सुषु सम्यग्रीत्या दृष्टा परमार्या  
जीवादयो ये स्ते सुदृष्टिपरमार्या स्तेषा सुवन पर्युपास्ति सुदृष्टिपरमार्यसवन स्तोत्य प्राकृतत्वाद्वा शब्दो नुक्तमनुचये मद्याशक्ति त द्रव्यावृत्त्य  
प्रवृत्ति ध्य अपि समुच्चय तथा ॥ वावत्कुरुदशर्गात् ॥ दर्शनशब्द ' प्रत्येक मज्जिमस्यथ्यते व्यापक विनष्ट दर्शन येषान्ते व्यापनदर्शना निनयादय , तथा  
कुरुदशत दर्शन येषान्ते कुरुदशना आक्यादय स्तेषा वजन व्यापककुरुदर्शनवर्तनम् अत्रापि स्तीत्व प्राकृतत्वात् ॥ सम्यक्त्वप्रवृत्ता

सरोवरवृद्धिर्होडनायवो अविसारनुपवयणे अणुअणिगहिनुत्रसेंसु ॥ ११ ॥ जोअर्थिकायकम्म सुयधम्मखलु  
चरित्तधम्मच सद्वहडजिगान्निहिय सोधम्मरुहत्तिनायवो ॥ १२ ॥ परमत्यसयवोवा सुदिठपरमत्यमेवणावा

अर्थन ज्ञान चरित्त तप विनय सस्य समिति गुणि ऽ वेहवो क्रिगानिविपे भाववृत्ते ते भावरचि कर्हिणे नित्ये क्रिगाद्वि कर्हिण्णै—अणभरुहोउत्तुदिष्टा  
मखेवदु-तिङ्गाऽनायवो अविसारआपवयणे अणभिरगहिअयसेंसम ११ । अविष्टहोता कलतादृष्टा, नगहो लेणे माठीदृष्टि कर्हिण्णैट कर्हिण्णैट प्रणीत प्रव  
चन ते मज्जिपिणं ते दृष्टने मज्जिपकचि कर्हिणे मज्जिपसमद तवकाचवस्य मविम्व्णाप परिणाना मज्जपकचि अविसार प्रवचनविपे मज्जल्ल अपरत्तर्गन पर  
ज्ञानविपे त मज्जपकचि कर्हिणे । जोअर्थिकायकम्म सुयधम्मखलु उरित्तधम्मच सद्वहडजिगान्निहिय सोधम्मरुहत्तिनायवो १२ । जे जीव अस्मिकाव धर्मा

उक्त सम्प्रतिगुणप्रधान माह-उद्यवूहेत्यादि ॥ उपवृहण च स्थिरीकरण च उपवृहणस्थिरीकरणे तत्रो पवृहण नाम समानधार्मिकाणा रुद्रप्रशसनेन तद्वृट्करण धर्माद्विपीदता तत्रैव स्थापन, वाञ्छल्य च प्रज्ञावना च वाञ्छल्यसमानधार्मिकाणा प्रीत्या उपकारकरण प्रज्ञा वना धर्मकथादिभिः स्तौत्रप्रस्थापना अथ च गुणप्रधानो निर्देशो गुणगुणिनो कथाचिद्भेदस्यापनार्थं अन्यथा एकान्ता जेदे गुणनियुतौ गुणिनोपि नियुते शून्यतापत्ति एते ऽष्टौ दक्षनाचारा स्त देव मुक्ता सरागदक्षानन्रदा स्तदभिधानाच्चा भिहिता सरागदर्शनायभेदा, सम्प्रति वीतरागद नाथादिज्ञेदानाह-संक्षिप्तमित्यादि सुगमा यावत् अथवा चरितारिया पञ्चविहा प० त० सामाह्यचरितारिया इत्यादि ॥ नवर पट्टमसमय अपट्ट

य अचरिमसमयउवसतकसायवीतरागदसणारिया य । से कित खीणकसायवीतरागदसणारिया ? २ दु विहा पणत्ता, तजहा ठउमत्यखीणकसायवीतरागदसणारिया य । से कित ठउमत्यखीणकसायवीतरागदसणारिया ? २ दुविहा पणत्ता, तजहा सयवुठ्ठउमत्यखीणकसाय वीतरागदसणारिया बुद्धवोहियठउमत्यखीणकसायवीतरागदसणारिया । से कित सयवुठ्ठउमत्यखीणक

वीतरागदर्शनार्थाना दोउभेद कक्षा ते कहैछे—पट्टमसमयउवसतकसाय वीतरागदसणारिया । प्रथमसमय वर्त्तना उपयान्तकपाय वीतराग दर्शना यरिया । अपट्टमसमय उवसतकसाय वी० । द्वितीयाटिकसमय वर्त्तता उपयान्तकपाय वीतराग दर्शनार्थाना भेद कक्षा । अथवा चरमसमयउवसत कसाय वी० । अथवा ते उपयान्तकपायने अन्तसमय वीतराग दर्शनार्थ कहिये । अचरमसमयउवसतकसाय वी० । द्विती बौजममय वर्त्तता सामायिक चरित्रादिके वर्त्तता ते उपगतकपाय दर्शनार्थ कहै । सेकित खीणकसाय वीतरागदसणारिया २ दुविहा प० त० । हिंवे खीणकपाय वीतराग दर्शनार्थाना दोउभेद कक्षा ते कहैछे—छउमत्यखीणकसाय वी० । छउमत्यखीणकसाय वी० । छउमत्यखीणकसाय वी० । केवलखीणकसायवौ० । केवल खीण कपाय वीतराग दर्शनार्थ कहिये । से कित छउमत्य खीणकसाय वीतराग दसणारिया २ दुविहा प० त० । हिंवे खीणकपाय वीतराग द

निर्गतं काङ्क्षितं यस्मात्तस्यै नि काङ्क्षितो देशः सर्वकाङ्क्षारहित इत्यर्थः । तत्र देशकाङ्क्षा एक दिग्बरादिद्वेन मन्त्रिकाङ्क्षिते सर्वकाङ्क्षा सर्वार्थे व  
 दशानां शोभनानि इत्येव मनुचितं इयं च द्विधा प्युक्ता शपदशनेषु पदार्थानि कायपीडाया अक्षररूपणाया च ज्ञावात् । तथा विचिकित्सा  
 मतिविश्राम फलप्रति सगय इत यावत् । निगता विचिकित्सा यस्मात्तस्यै निर्विचिकित्सः । साध्यं व जिनशासनं किं तु प्रयत्नस्य सतो ममा स्मा  
 त्फलं अविष्यति न वा क्रियाया रूपीजलादिषु उज्जयया ऽप्यु पलब्ध्यं इति विकल्परहितं न ह्य विकल्प उपायउपयवस्तुप्रापको न जयतीति स  
 जातनिश्चयो निर्विचिकित्स इति श्राम । गतावताशनं नि शङ्कितं नित्यं । यद्वा निश्चिदुच्छो इति ॥ निर्विद्वज्जुगुप्स साधुजुगुप्सा ररित इत्यर्थ  
 उदाहरणं च विद्वज्जुगुप्साया आवकदुहिता तथा ॥ अमूददिधीयति ॥ बालतपस्वितपोविद्यातिगयद्वेनै नं मूढा स्वप्नावा द्यन्तिता दृष्टिं सम्यग्द  
 ज्ञानरूपा यस्या सा वमूददृष्टिः । श्रोत्रोदाहरणं सुलसाश्राविका सा ह्य वक्रपरिश्राजकसृष्टौ रूपलभ्यापि न समोह गता तदव गुणिप्रधान आचार

विहा पयता । तजहा—उससतकसायवीयरागदसणारिया खीकसायवीतरागदसणारियाय । से कित  
 उवसतकसायवीतरागदसणारिया ? २ दुविहा पयता । तजहा पढमसमयउवसतकसायवीतरागदसणारि  
 या अउपढमसमयउवसतकसायवीतरागदसणारिया । अहवा चरिमसमयउवसतकसायवीतरागदसणारिया

यका सर्वगका काचा देगकाचा सर्वकाचारहित । निष्काकियनिकिन्विय पिण्वितियिच्छाअमूददिक्षोय उवेवूधिरौकरणे वक्कलपभावणेअड्ड १४ । साधु  
 नौ जगुप्सापरहित प्रवर्त्त कुटर्गननौ महिसाथौ माटो दृष्टेकरवा जिन सलसायापिकाये अमूदपरित्ताजकने कल्लो सट्टह नंपामो कुनिगीसाधे परि  
 चउ नकरवा पधर्मविपै थिरताभाव साहमौनो प्रमसाकरवौ माहमौने उपगारकरवा वने धर्मनो प्रभावनाकरवौ । संत्तरागदसणायारिया । ए मराग  
 दर्गनार्था कहिणे । सेकित वीयरागदसणायारिया २ दुविहा प० त० । द्विजे वीतरागदर्शनआर्वाना उोगभट्ट कल्लोहे ते कहिहे — उवसतकसायवीयराग  
 दसणायारिया । उपयातकपाय वातराग दशनार्थमेत ए । खाणकसायवौ० सेकित उवसतकसायवीयरागदसणायारिया २ दुविहा प० त० । धोणकसाय

उक्त सम्प्रतिगुणप्रधाना माह-उद्ययूहेत्यादि ॥ उपपत्त्य च स्थिरीकरण च उपपत्त्यस्थिरीकरणे तत्रो पपत्त्य नाम समानधार्मिकाणा बहुगुणप्रधानेन तद्वृत्तिरूप धर्मोद्विषीदता तत्रैव स्थापन , वाञ्छल्य च प्रज्ञावना च वाञ्छल्यसमानधार्मिकाणा प्रीत्या उपकारकरण प्रज्ञा यना धर्मकयादिभि स्तोत्रप्रस्थापना अय च गुणप्रधानो निर्देशो गुणगुणिनो कथञ्चिद्भेदस्यापनार्थं अन्यथा एकान्ता जेदे गुणनिवृत्तौ गुणिनोपि निवृत्ते शून्यतापत्ति एते ऽष्टौ दशनाचारा स्त देव मुक्ता सरागदशान्नदा स्तदभिधानाच्चा भिहिता सरागदशानायभेदा , सम्प्रति वीतरागद नायार्दिनेदानाह-संक्रितमित्यादि सुगमा यावत् अहवा चरितारिया पचविंश प० त० सामाह्यचरितारिया इत्यादि ॥ नवर पट्टमसमय अपट्ट

य अचरिमसमयउवसतकसायवीतरागदसणारिया य । से कित खीणकसायवीतरागदसणारिया ? २ दु विहा पणत्ता , तजहा ठउमत्यखीणकसायवीतरागदसणारिया य । से कित ठउमत्यखीणकसायवीतरागदसणारिया ? २ दुविहा पणत्ता , तजहा सयवुद्धउमत्यखीणकसाय वीतरागदसणारिया बुद्धवोहियउमत्यखीणकसायवीतरागदसणारिया । से कित सयवुद्धउमत्यखीणक

वीतरागदर्शनार्थाना दोउभेद कक्षा ते कहिछे—पट्टमसमयउवसतकसाय वीयरगदसणाउरिया । प्रथमसमय वर्त्तना उपयान्तकयाउ वीतराग दर्शना यरिया । अपट्टमसमय उवसतकसाय वी० । द्वितीयाटिकसमय वर्त्तता उपयान्तकयाउ वीतराग दर्शनार्थाना उभेद कक्षा । अहवा चरमसमयउवसत कसाय वी० । अथवा ते उपयान्तकयाउने अन्तसमय वीतराग दर्शनार्थ कहिये । अचरमसमयउवसतकसाय वी० । दूजे अंजममय वर्त्तता सामाधिक्य चरित्रादिके वर्त्तता ते उपयान्तकयाउ दर्शनार्थ कहै । सेकित खीणकसाय वीयरगदसणाउरिया २ दुविहा प० त० । हिंवे खीणकयाउ वातराग दर्शनार्थाना दोउभेद कक्षा ते कहिछे—छउमत्यखीणकसाय वी० । छउमत्यखीणकसाय वी० । छस्य खीणकसाय वी० । केवलखीणकसायवो० । केवल खीण कयाउ वीतराग दर्शनार्थ कहिये । से कित छउमत्य खीणकसाय वीयरग दसणाउरिया २ दुविहा प० त० । हिंवे खीणकयाउ वीतराग द



ममस्य इति ये तेषां भोगे पशान्तकृपायत्वादीनां विशेषाणां प्रथमसमये वर्तन्ते ते प्रथमममया स्ततो द्वितीयादिषु समयेषु वर्तमाना अग्रथमसमया तथा चरमसमय अचरमसमय इति ये तेषां संवोपशान्तकृपायत्वादीनां विशेषाणां अत्यसमये वर्तन्ते तच्चरमसमया ये ततो उर्गोक् द्विचरमसमयत्रिचरमादिषु समयेषु वर्तन्ते ते उचरमा सामायिक्तादीनां च चारित्र्याणां स्वरूपमिदं-समो रागद्वपरहितत्वा दयामन समाय उपचा न्यासामपि साधुक्तियाणां मुपलक्षणं सर्वसांसा मपि साधुक्रियाणां रागद्वेपरहितत्वात्, समाय न निर्वृत्त समाय भव वा सामायिक यद्वा समाना ज्ञानदर्शनचा विवक्षा मायो लाघ्र समाध सा ॥ माय एव सामायिक विनयादे राकृतिगताया विनयादिभ्य इत्यनेन स्वार्थिक इक्षणं तच्च संवसावद्य विरति

सायत्रीचरागदनगारिया सयबुद्धउमत्यखीण० दुविहा पणत्ता, तजहा—पढमसमयसयबुद्धउमत्यखीणक  
सायत्रीतरागदसगारियाय अ०पढमसमयसयबुद्धउमत्यखीणकसायत्रीतरागदसगारिया, अ०हवा चरिमसमय  
सयबुद्धउमत्यखीणकसायत्रीतरागदसगारिया अ०चरिमसमयसयबुद्धउमत्यखीणकसायत्रीतरागदसगारिया  
य । सत्त सयबुद्धउमत्यखीणकसायत्रीतरागदसगारिया । से कित बुद्धोहियउमत्यखीणकसायत्रीत

प्रानादना केतनाभेदछे उ० हे गीतम दोउभेट कछा ते कहैछे—सयबुद्धछउमत्य खीणकसायवी० । सयनुइ छद्मस्य खीणकपाय वीतराग दर्शना दोउभेट  
कछा । बुद्धिबोहिय खीणकसायवी० । प्रतिबोधकरी बूझा छद्मस्य वीतराग दर्शनार्थ । सेकित छउमत्य खीणकसाय वीतराग दसणायगिया २ दुविवा  
प० त० । हिबे स्वगुइ छद्मस्यपणे वीतराग दर्शनार्थ ते किम गीतम दोउभेट कछा ते कहैछे—पठमसमय सयबुद्ध छउमत्यखीणकसायवी० । प्रथमसम  
य वर्त्तता स्वगुइ छद्मस्य खीणकपाय वीतराग दर्शनार्थ ए प्रथमभेट । अणठमसमयसयबुद्ध छउमत्य खीणकसायवी० । दूजे तीजेसमय वर्त्तता स्वगुइ छ  
द्मस्य खीणकपाय वीतराग दर्शनार्थ ए २ भेट । यहवा चरमसमयसयबुद्ध छउमत्यखीणकसाय वी० । अथवा चरमसमय वर्त्तता छद्मस्य खीणकपाय वीत  
राग दर्शनार्थ । अचरनसमय सयबुद्ध छउमत्य खीणकसायवी० । अचरमसमयदूजे तीजेसमय खीणकपाय वीतराग दर्शनार्थ । सेत सयबुद्ध छउमत्य खी

रागदसुणारिया ? २ दुविहा पसुता, तजहा पढमसमयधुवोहियलउमत्यरीणकसायत्रीतरागदसुणारिया  
या अणपढमसमयधुवोहियलउमत्यखीणकसायत्रीतरागदसुणारिया, अहवा चरिमसमयधुवोहियलउम  
त्यखीणकसायत्रीतरागदसुणारिया अचरिमसमयधुवोहियलउमत्यसीणकसायत्रीतरागदसुणारिया । संत  
धुवोहियलउमत्यखीणकसायत्रीतरागदसुणारिया । संत लउमत्यखीणकसायत्रीतरागदसुणारिया । से कि  
त केवलखीणकसायत्रीतरागदसुणारिया ? २ दुविहा पसुता, तजहा सजोगिकेवलखीणकसायत्रीतराग  
दसुणारिया अजोगिकेवलखीणकसायत्रीतरागदसुणारियाय । से कित सजोगिकेवलखीणकसायत्रीतराग

णकसायत्री । पतल मयधुवोहियलउमत्यखीणकसायत्रीतरागदसुणारिया । संकित वडवाहिय अउमत्य खीणकसायत्रीतरागदसुणारिया २ दुविहा प  
त । तकिम हेगोतम तेहनाटावभन्हे ते कहेछे—पढमसमयधुवोहियलउमत्य खीणकसायत्रीतराग । पढिनाममयना वडवाधना लउमत्य खीणकसा  
य वीतराग दर्शनाये ए पथमभट । अपढमसमयधुवोहियलउमत्य खीणकसायत्रीतरागदसुणारिया । दुजे वीजेममय पवसंता वडवाधिय भूला । लउमत्य खीणकसायत्री  
तराग दर्शनाये ए दुजाभट । अहवा चरिमसमयधुवोहियलउमत्य खीणकसायत्रीतरागदसुणारिया । पथम चरिमसमयधुवोहियलउमत्य खीणकसायत्रीतरागदसुणारिया  
यी । अपथमसमयधुवोहियलउमत्य खीणकसायत्रीतरागदसुणारिया । अपथरिमसमयधुवोहियलउमत्य खीणकसायत्रीतरागदसुणारिया । मत्त छ मत्त छ लउमत्य खीणकसायत्री  
य जो । हिब लउमत्य खीणकसायत्रीतरागदसुणारिया । संकित लेवल खीणकसायत्रीतरागदसुणारिया दुविहा पत । हिब केवल खीणकसायत्रीतरागदसुणारिया  
रीना वभट कछा । त कहेछे—सजोगीकानो खीणकसायत्रीतरागदसुणारिया । सजोगी गुणठाने वसंता केवल खीणकसायत्रीतरागदसुणारिया । पथमभट । अवागा  
कवला खीणकसायत्रीतरागदसुणारिया । अजोगीगुणठाने वसंता केवल खीणकसायत्रीतरागदसुणारिया । संकित सजोगीकानो खीणकसायत्रीतरागदसुणारिया  
२ दुविहा पत । हिब सयागा कवला खीणकसायत्रीतरागदसुणारिया । संकित पथमसमयधुवोहियलउमत्य खीणकसायत्रीतरागदसुणारिया ।

दण्णारिया १ २ दुविहा पणत्ता, तज्जहा पढममसयसजोगिकेवल्लिखीणकमायवीतरागदसणारिया अण  
दममसयसजोगिकेवल्लिखीणकसायवीतरागदसणारियाय । अहवा चरिममसयसजोगिकेवल्लिखीणकसायवी  
तरागदणारियाय अचरिममसयसजोगिकेवल्लिखीणकमायवीतरागदणारियाय । संत्त सजोगिकेवल्लिखीण  
कसायवीतरागदसणारिया । से कित्ता अजोगिकेवल्लिखीणकमायवीतरागदसणारिया ? २ दुविहा पणत्ता  
तज्जहा पढमसयसजोगिकेवल्लिखीणकमायवीतरागदणारिया अणपढमसयसजोगिकेवल्लिखीणकमायवी  
तरागदसणारियाय, अहवा चरिमसयसजोगिकेवल्लिखीणकसायवीतरागदसणारिया अचरिमसयसजोगि

[illegible]

गिम्नेत्रलिप्तीणम्सायवीतरागदम्पणारिया । सेत्तञ्जोगिकेयलिप्तीणकसायवीतरागदम्पणारिया । सेत्त  
केवल्लिप्तीणकसायवीतरागदम्पणारिया । सेत्त स्पीणकसायवीतरागदम्पणारिया । सेत्त वीतरागदम्पणारिया ।  
सेत्त ढसणारिया । से कित चरित्तारिया ? २ दुविहा पणत्ता, तजहा सरागचरित्तारिया वीतरागचरित्त  
ारिया । से कित सरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पणत्ता, तजहा सुज्जमसपरायसरागचरित्तारियाय व्या  
रसपरायसरारगचरित्तारियाय । से कित सुज्जमसपरायसरारगचरित्तारिया ? २ दुविहा पणत्ता, तजहा—  
पढमसमयसुज्जमसपरायसरारगचरित्तारिया अणपढममयसुज्जमसपरायसरारगचरित्तारिया य, अण्णवा चरिम  
सम्यसुज्जमसपरायसरारगचरित्तारिया अण्णचरिमसमयसुज्जमसपरायसरारगचरित्तारियाय अण्णवा सुज्जमसपरा

त चरित्तारियाय २ दुविहा प० त० । द्विवे चरित्तार्य कहेते तहना टायभट कछा ते कहैछे । सरागचरित्तार्या वीतरागचरित्तार्या । सराग चरि  
यभेट वीतराग चरिच य २ । सेकित सरागचारित्तार्या २ दुविहा प० त० । द्विवे सरागचरित्तार्या टायप्रकारे कछा ते कहैछे—सुहमसपराय सरा  
गचरित्तार्या वीतरागसपराय च० । मत्तमपराय सराग चरित्तार्य वाटरमपराय सरागचरित्तार्य । सेकित सहमसपराय चरित्तार्या २ दुविहा  
प० त० । द्विवे मत्तमपराय सरागचरित्तार्य टायभेट कछा ते कहैछे—पढममयसुहमसपराय चरित्तार्या वीतरागचरित्तार्या । प्र  
ममय मत्तमपराय सरागचरित्तार्य अण्णचरिमसमय मत्तमपराय सरागचरित्तार्य । अण्णवा चरिमसमय मत्तमपराय सरागचरित्तार्य । अण्णवा चरिमसमय मत्त  
सराग चरित्तार्य । अण्णचरिमसमय मत्तमपराय सराग चरित्तार्य । अण्णवा सुहमसपराय सराग चरित्तार्या दु  
विहा प० त० । अण्णवा मत्तमपराय सराग चरित्तार्या टायभेट कछा ते कहैछे—सेकित मत्तमपराय विमुहमाणाय । सेकित मत्तमपराय चरित्तार्य  
य विमुहमान मत्तमपराय सराग चरित्तार्य । सेत्त सुहमसपराय सराग चरित्तार्य । एतेले मत्तमपराय चरित्तार्य कछा । सेकित वाटर सपराय सराग

दमणारिया ? २ दुविहा पशता, तजहा पढमममयसजोगिकेवलखीणकमायवीतरागदंसणारिया एउ  
 दममममजोगिकेवलखीणकसायवीतरागदसणारियाय । एउहवा चरिमममयसजोगिकेवलखीणकमायवी  
 तरागदमणारियाय एउचरिमसमयसजोगिकेवलखीणकमायवीतरागदमणारियाय । सेत सजोगिकेवलखीण  
 कसायवीतरागदसणारिया । से कित एउजोगिकेवलखीणकमायवीतरागदसणारिया ? २ दुविहा पशता  
 तजहा पढमसमयएउजोगिकेवलखीणकमायवीतरागदमणारिया एउपढमममयएउजोगिकेवलखीणकमायवी  
 तरागदसणारियाय, एउहवा चरिमसमयएउजोगिकेवलखीणकसायवीतरागदमणारिया एउचरिमसमयएउजो

पहिलेमम सगंगी केवली चोणकपाय वीतराग दर्शनाय । अपढममम सगंगी केवली खोणकसाय वी० । अपढमसमय सगंगी केवली चोणकपाय  
 वातराग दर्शनाय । अहवा चरिममम सगंगी केवली चोणकपाय वी० । अथवा चरिमसमय सगंगी केवली चोणकपाय वीतराग दर्शनाय । अचरमस  
 मसगंगी केवली खोणकसाय वी० । अचरममम सगंगी केवली चोणकपाय वीतराग दर्शनाय । सेतमगंगी केवली खोणकसाय वी० । एतल मगो  
 गी केवली चोणकपाय वीतराग दर्शनाय त कहै—सेकित मगंगी केवली खोणकसाय २ दुविहा प० त० । हिने मगंगी केवली चोणकपाय वीतराग द  
 र्शनायना दोयभ कछा ते कहै—पढममम सगंगी केवली खोणकसाय वी० । पहिलमम अयोगी केवली चोणकपाय वीतराग दर्शनाय । अपढ  
 मसमय मगंगी केवली खोणकसाय वी० । सेजे च चमम सगंगी केवली चोणकपाय वीतराग दर्शनाय । अहवा चरिमसमय अयोगी केवली खोण  
 कपाय वीतराग दर्शनाय । अचरमसमय मगंगी केवली खोणकसाय वी० । अचरममम सगंगी केवली चोणकपाय वीतराग दर्शनाय । सेत मगो  
 गी केवली खोणकसाय वी० । एतल मगंगी केवली चोणकपाय वीतराग दर्शनाय कछा, एतले चोणकपाय दर्शनाय कछा । सेत केवल खोणक  
 पाय वी० । सेत खोणकसाय वी० सेत वी० सेत दमणारिया । एतले केवली चोणकपाय वीतराग दर्शनाय कछा दर्शनायने अधिकार कछा । सेक

पढमसमयउवसतकसायवीतरागचरित्तारिया अपढमसमयउवसतकसायवीतरागचरिया य झुहवा चरिम  
समयउवसतकसायवीतरागचरित्तारिया झुचरिमसमयउवसतकसायवीतरागचरित्तारिया य सेत उवसतक  
सायवीतरागचरित्तारिया से कित खीणकसायवीतरागचरित्तारिया २ दुविहा पखत्ता, तजहा ठउमल्य  
खीणकसायवीतरागचरित्तारिया केवलखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य न कित ठउमल्यसीगकसायवी  
तरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पखत्ता, तजहा सयबुछठउमल्यसीगकसायवीतरागचरित्तारिया बुछबो  
हियठउमल्यखीणकसायवीतरागचरिया य से कित सयबुछठउमल्यखीणकसायवीतरागचरित्तारिया ? २  
दुविहा पखत्ता, तजहा—पढमसमयसयबुछखीणकसायवीतरागचरित्तारिया झुपढमसमयसयबुछठउमल्यखी

[illegible]

यमरागचरित्तारिया दुविहा पसत्ता, तजहा—सकिलिस्समाणाय विसुज्जमाणाय सेत्तं सुज्जमसपरायसरा  
गचरित्तारिया से कित वायसपरायसरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पसत्ता, तजहा—पढमसमयवायर  
सपरायसरागचरित्तारिया अपढमसमयवायरसपरायसरागचरित्तारिया य अहवा चरिमसमयवायरसपरा  
यसरागचरित्तारिया अचरिमसमयवायरसपरायसरागचरित्तारिया य अहवा वायरसपरायसरागचरित्तारि  
या दुविहा पसत्ता, तजहा—पडिवाई य अपडिवाई य सेत्त वायरसपरायचरित्तारिया सेत्त मरागचरि  
त्तारिया से कित बीतरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पसत्ता, तजहा—उवसतकसायबीतरागचरित्तारिया  
खीगकसायबीतरागचरित्तारिया य से कित उवसतकसायबीतरागचरित्तारिया ? २ दुविहा प०, तजहा

व० । गतल हिव वाटरसपराय चारनाय टोयभेट कल्लाहे । सेकित वायरसपराय मरागचरित्तारिया २ दुविहा प० त० । हिवे वाटरसपराय चरि  
वना टोयभेट कल्ला तेकइहे—पढमसमयवायरसपराय मराग व० । प्रथमसमय वाटरसपराय सराग चरित्तार्य । अपढमसमय वायरसपराय सराग  
चरित्तार । अप्रथमसमय वाटरसपराय मरान चरित्तार्य । अहवा चरमसमय वाटरसपराय मराग व० । प्रथवा चरमसमय वाटरसपराय सराग चरि  
त्तार्य । अचरमसमयवायरसपराय मराग व० । अचरमसमय मरागवाटर चरित्तार्य । अहवा वाटरसपराय मरागचरित्तारिया दुविहा प० त० । अ  
थवा वाटरसपराय मराग चरित्तार्यना टोयभेट कल्ला तेकइहे—पडिवाइया अपडिवाइयाय । प्रातर्वातिक अप्रतिवार्तिक । सेत्त वायरसपराय वाय  
मपराय रमराग व० । गतल वाटरसपराय चरित्तार्य कल्ला । मत्त मराग चरित्तार । हिवे बीतराग चरित्तार्यना । सेकित बीतराग चरित्तारिया दुवि  
हा प० त० । हिवे बीतराग चरित्तार्यना टोयभेट कल्ला तेकइहे—पढमसमयउवसतकसायबीतराग व० । प्रथमसमय उपयान्तकपाय बीतराग दर्शना  
य । अपढमसमय उवसतकसाय बी० । अप्रथमसमय उपयान्तकपाय बीतराग चरित्तार्य । अहवा चरमसमय उवसतकपाय बी० । अथवा चरमसमय

[illegible]

दुविहा पणता, तजहा सजोगिकंवलखीणकसायवीतरागचरित्त्वारिया अजोगिकेवलखीणकसायवीतरागचरित्त्वारिया य । से क्रित सजोगिकंवलखीणकसायवीतरागचरित्त्वारिया ? २ दुविहा पणता, तजहा—पढमसमसजोगिकंवलखीणकसायवीतरागचरित्त्वारिया अपढमसमसजोगिकंवलखीणकसायवीतराग

चह्ना । द्विवे केवलौ क्षौणकपाय वीतराग चरित्रायना दाउभेट कछ्हा ते कछ्हे—सयागो केवलौ खापकसाउपोउराग चरित्रापरिया अगगो कयलो ग्गोणनसय याउराग चरित्रापरिया । द्विवे सयागो काला क्षाणकपाय वीतराग चरित्राय । साकत स मयागो कश्चा खापकसाय याउराग चरित्रायरिया २ दुविला पणत्ता तचह्ना । द्विवे सयागा कवला क्षाणकपाय वीतराग चरित्राउना दाउभट कछ्हा ते कछ्हे—पठतममउमयागा कालो खाणकसाय वाउराग चरित्राउराग । प्रथममय मयागो कालो खाणकपाय वीतराग चरित्राय । उपठममयमय मोकाला खोपकसाय वीतराग चरित्राय सयागा कवला क्षाणकपाय वीतराग चरित्राय । प्रथयनसमय सयागा कवला क्षाणकपाय वीतराग चरित्राय । अइरा चरमसमय मयागो केवलौ वीराण



णकसायत्रीतरागचरित्तरिया य, अहवा चरिममयसयवुठउमत्यखीणकसायत्रीतरागचरित्तरिया अचरिम  
 समयसयवुठउमत्यखीणकसायत्रीतरागचरित्तरिया य । सेत सयवुठउमत्यखीणकसायत्रीतरागचरित्तरिया  
 रिया । से कित वुठवोहियठउमत्यखीणकसायत्रीतरागचरित्तरिया ? २ दुविहा पसत्ता, तजहा पढम  
 समयवुठवोहियठउमत्यखीणकसायत्रीतरागचरित्तरिया अउपढमसमयवुठवोहियठउमत्यखीणकसायत्रीतरा  
 गचरित्तरिया य, अहवा चरिमसमयवुठवोहियठउमत्यखीणकसायत्रीतरागचरित्तरिया अचरिमसमयवु  
 ठवोहियठउमत्यखीणकसायत्रीतरागचरित्तरिया य । सेत वुठवोहियठउमत्यखीणकसायत्रीतरागचरित्तरिया  
 रिया सेत ठउमत्यखीणकसायत्रीतरागचरित्तरिया । से कित केवलखीणकसायत्रीतरागचरित्तरिया ? २

चौणकपाय चरित्तरिया । अहवा चरिममय सयवुठ खीणकसाय वी० च० । अथवा चरिमसमय सयवुठ चौणकपाय वीतराग चरित्तरिया । अचरिमसमयस  
 यवुठ खीणकसाय वी० च० । अचरिममय सयवुठ छद्मस्य चौणकपाय चरित्तरिया । सेत छउमत्य खीणकपाय वी० । एतेले सयवुठ छद्मस्य चौणकपाय  
 चरित्तरिया । सेकित वीठवोहिय खीणकपाय वी० च० दुविहा पसत्ता तजहा । दिव वीठवोहिय छद्मस्य चौणकपाय वीतराग चरित्तरिया ना टावमेठ कछा  
 ते कंछ - पढममय वुठवोहिय छउमत्य खीणकसाय वी० चरित्तरिया । प्रथममय वुठवोहिय लक्ष्य चौणकपाय वीतराग चरित्तरिया । अउपढमस  
 मय वुठवोहिय छउमत्य खीणकसाय वीतराग । प्रथममय वुठवोहिय छद्मस्य चौणकपाय वीतराग चरित्तरिया । अहवा चरिमसमयवुठवोहिय छउमत्य  
 खीणकसाय वीतराग । अथवा चरिममय वुठवोहिय छउमत्य खीणकपाय चरित्तरिया । अचरिमसमय वुठवोहिय छउमत्य खीणकपाय वीतराग चरित्तरिया ।  
 सेत वीठवोहिय छउमत्य खीणकसाय वीतराग चरित्तरिया । एतेले वुठवोहिय छउमत्य चौणकपाय वीतराग चरित्तरिया कछा । सेत छउमत्यखीणकसा  
 य वीतराग चरित्तरिया । दिव छउमत्य चौणकपाय वीतराग चरित्तरिया । साकत केवल खीणकसाय वीतराग चरित्तरिया २ दुविहा पसत्ता त

रूप, यद्यपि च सर्वमपि चारित्र्यमविशेषतः सामायिकं तथापि श्रद्धादिविशेषं विशेष्यमाणा मयंत शब्दान्तरतश्च नानात्वं प्रवर्तते प्रथमं पुनरविशेष्यतात् सामान्यशब्दं गवा वृत्तिरुते, सामायिका मिति तच्च द्विधा इत्वर यावत्कथिकं च तत्रे त्वर जर्तरीरावतेषु प्रथमपश्चिमतीक्ष्णतीक्ष्णयोरनारोपितमन्यव्रतस्य शौचकर्म्यं विधेयं यावत्कथितं प्रख्याप्रतिपत्तिकालादारभ्योपरागोपरमात् तत्रजर्तरीरावतन्नाविमध्यद्वारविशोत तीक्ष्णकर्तार्यान्तरगतानां च विदत्ततीक्ष्णकर्तार्यान्तरगतानां च साधूनां मयस्य तया मृपस्यापनाया अत्रावात् उक्तं सत् मिश्र सामर्थ्यं लयाइविसमिप सुग विनिज्ज । अत्रिषमइसामइयं चियमि ए सामन्नसत्ताए ॥ १ ॥ सावज्जजोगावरइति तस्य सामाथ्यं दुत्ता त च इत्तरमावकइतिय पढमपढमतिय मज्जिणाण तित्यसु अणाराविअं वयस्स मरस्सथोवकालीय ॥ १ ॥ सेसाणमावअइयं तित्यसु विदइयाण च । ननु चत्वरमपि सामायिकं करामि न दत्त सामायिकं यावज्जीयं मित्ययं यावदायं रागहोत तत्त उत्थापनाकारा तत्परित्यज्यत कथं न प्रतिष्ठापनं उच्यते ननु प्रागवाक्तं सुवमवदं चा

दुविहा पणता, तजहा सजोगिकेवलिसीणकसायवीतरागचरित्तारिया अजोगिकेवलिसीणकसायवीतराग  
चरित्तारिया य । से कित सजोगिकेवलिसीणकसायवीतरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पणता, तजहा—  
पढमसमसजोगिकेवलिसीणकसायवीतरागचरित्तारिया अपढमनमयसजोगिकेवलिसीणकसायवीतराग

नञ्हा । द्विवे केनलो औणकपाय दोतराग चरित्तायना दायभेद कक्षा ते कहछे—सयागो केवलौ खौणकमाययागराग चारत्तायरिया भयागौ कयना खौणकस य वायराग चरित्तायरिया । द्विवे सयागो कालो खौणकपाय दोतराग चरित्ताय । साकत म सयागौकथना खाणकसाय वायराग चरित्तायरिया २ दुविङ्ग पणता तचहा । द्विवे सयागौ कयना खौणकपाय दोतराग चरित्तायना टायभट कया त कहछे—पठममभययागा कालो खौणकस य वायराग चरित्तायराय । प्रथममय सयागौ ताला खौणकपाय वातराग चरित्ताय । प्रपठममयसय भोकायना खौणकसाय वातराग चरित्तायराय । प्रप्रथमसय सयागौ केवलौ खौणकपाय वातराग चरित्ताय । यद्वना चरमसय सयागौ केवलौ खौण

गकसायत्रीतरागचरित्रा य, अहवा चरिमममययुद्धतउमत्यखीणकसायत्रीतरागचरित्रारिया अचरिम  
 समप्रसययुद्धतउमत्यखीणकसायत्रीतरागचरित्रारिया य । सेत सययुद्धतउमत्यखीणकसायत्रीतरागचरित्रा  
 रिया । मे मितं युद्धवोहियतउमत्यखीणकसायत्रीतरागचरित्रारिया ? २ दुविहा पसत्ता, तजहा पढम  
 समययुद्धवोहियतउमत्यखीणकसायत्रीतरागचरित्रारिया अउपढमसमययुद्धवोहियतउमत्यखीणकसायत्रीतरा  
 गचरित्रारिया य, अहवा चरिमममययुद्धवोहियतउमत्यखीणकसायत्रीतरागचरित्रारिया अचरिमममययु  
 द्धवोहियतउमत्यखीणकसायत्रीतरागचरित्रारिया य । सेत युद्धवोहियतउमत्यखीणकसायत्रीतरागचरित्रा  
 रिया सेत तउमत्यखीणकसायत्रीतरागचरित्रारिया । से कित केवलखीणकसायत्रीतरागचरित्रारिया ? २

जोणकपाय चरित्रार्य । अहवा चरिमममय युद्ध खीणकसाय वो० च० । अथवा चरिमममय स्वयं खीणकपाय वीतराग चरित्रार्य । अचरिममयय  
 युद्ध खीणकसाय वा० च० । अचरिमममय स्वयं खीणकपाय चरित्रार्य । सेत छउमत्य खीणकपाय वा० । एतले स्वयं खीणकपाय  
 चरित्रार्य । मे कित वडिवोहिय खीणकपाय वो० च० दुविहा । प्रसत्ता तजहा । द्विव विधाना । छउमत्य खीणकपाय वीतराग चरित्रार्यना टोयमेड कछा  
 ते कछ — पढनमन वडिवोहिय छउमत्य खीणकसाय वो० चरित्रार्यरिया । प्रथमममय वडिवोध जइय खीणकपाय वीतराग चरित्रार्य । अउढमस  
 म वडिवोहिय छउमत्य खीणकसाय वीतराग । प्रथमममय वडिवोध छउमत्य खीणकपाय वीतराग चरित्रार्य । अहवा चरिमममययुद्धवोहिय छउमत्य  
 खीणकसाय वीतराग । अथवा चरिमममय वडिवोध छउमत्य खीणकपाय चरित्रार्य । अचरिमममय युद्धवोहिय छउमत्य खीणकपाय वीतराग चरित्रार्य ।  
 सेत वडिवोहिय छउमत्य खीणकसाय वीतराग चरित्रार्यरिया । एतले वडिवोध छउमत्य खीणकपाय वीतराग चरित्रार्य कछा । सेत छउमत्यखीणकसा  
 य वीतराग चरित्रार्यरिया । द्विवे छउमत्य खीणकपाय वीतराग चरित्रार्य । सात केवल खीणकसाय वीतराग चरित्रार्यरिया ? दुविहा पणत्ता व

रूप, यद्यपि च मूढमपि चारिण मविशोपत सामायिक तथापि ध्वेदादिप्रशोपे विंशोपमाण मयंत शब्दान्तरतश्च नानात्व भजते प्रथम पुन रविशेषणात् सामान्यशब्द गद्या वतिष्ठते, सामायिका मिति तच्च द्विधा इत्वर यावत्कयिक च तत्रे त्वर प्ररतैरावतेषु प्रथमपश्चिमतीयऋतीर्थेय नारोपितमन्त्रतस्य शोचकस्य विचयेय यावत्कयित प्रज्ञाप्रतिपत्तिकालादारभ्योप्राणोपरमात् तच्चनरतैरावतप्रविमथ्यद्वारविशोत तीर्थकरतीया न्तरगताना च विद्वत्तीर्थकरतीयान्तरगताना च साधूना मवसय तेषा मूपस्थापनाया अत्रावात् उक्तच सद्य मिश सामश्य छयाइविसिधिय पुन विनित्य । अत्रिसमइमामश्य चियमि ए सामन्नसन्नाय ॥ १ ॥ सावज्जोर्गविरइति तस्य सामाडय दुःख त च इत्तरमावकइतिय पट्टमपट्टमतिथ मज्जिणाग तित्यसु अणारोविअ वयस्स भरस्सयोवकालीय ॥ १ ॥ सेसाणाभावअइय तित्यसु विदइयाण च । ननु चत्वरमपि सामायिक कराभि न दत्त सामायिक यावच्चोप मित्यव यावदायु रागृहीत तत् उत्थापनाकात तत्परित्यज्यत कथ न प्रतिज्ञान्न उच्यते ननु प्रागवाक्त सवमवद चा

दुविहा पणत्ता, तजहा सजोगिकेवल्लिखीणकसात्रवीतराग  
चरित्तारिया य । से कित सजोगिकेवल्लिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया २ दुविहा पणत्ता, तजहा—  
पट्टमसममजोगिकेवल्लिखीणकसात्रवीतरागचरित्तारिया अपट्टमसमसजोगिकेवल्लिखीणकसायवीतराग

पडा । द्विये केवल्लो छोणकपाय दोतराग चरित्तारिया दावमेव कच्छा ते कहछे—सयागो केवल्लो खाणकसायवोतराग चारत्तावरिया अगो कालो  
खोणकसाय वायरग चरित्तारिया । द्विये सयागो केवल्लो खाणकपाय वातरा । चरित्तारि सयागो केवल्लो खाणकपाय वातराग चरित्तारि । साकत स  
सयागो कइया खाणकसाय वायरग चरित्तारिया २ दुविहा पणत्ता तजहा । द्विये सयागो केवल्लो खाणकपाय वातराग चरित्तारिना टाउभट्ट कछा  
त कहछे—पट्टमसममयागो केवल्लो खाणकसाय वायरग चरित्तारिना टाउभट्ट । प्रथमसममयागो केवल्लो खाणकपाय वातराग चरित्तारि । अपट्टमसममयाग  
गो केवल्लो खाणकपाय वायरग चरित्तारिना टाउभट्ट । प्रथमसममयागो केवल्लो खाणकपाय वातराग चरित्तारि । तजहा चरित्तारिना टाउभट्ट । अपट्टमसममयागो केवल्लो खाण

रितमविनेपत सामायिक सर्वथापि माउद्योगविरतिमदायात सेवतच्छेदादि विजिज्ञिगीषे विज्ञेयमण मयंत ज्ञाद्यान्तरत थ नागत्य जज्ञते  
तता यथा यावत्कथिक सामायिक छंदोपग्यान वा परमजिज्ञादिजिज्ञासपरयायादिचारित्रावाप्ती न नङ्ग मास्कन्दति तथे त्वरमपि सा  
मायिक जिज्ञाद्विषयपक्षच्छेदोपस्थापनावाप्ती । यदि हि प्रज्ज्यापरित्यज्यते तच्चितद्रङ्ग आपद्यत न तस्यैव विजिज्ञायावाप्त्यै उक्तच-उल्लिख्य  
मतेभगो जीपुणतच्चियजरेड । सुदयर मन्नामेतविमिष्ठ सुदुमपिउतन्मकोनङ्गा ॥१॥ तथा छन्द पूवपर्यायस्य उपन्यापना च समाव्रतपु यस्मिन् चारित्रे  
तत् छंदोपस्थापन तत्र द्विधा सातिचार निरतिचार च तत्र निरतिचार च यत् इत्यरसामायिकगत शैलकस्यारोप्यत तीथान्तरसकालौ वा यथा

चरित्रारिया य, अहवा चरिमममममजोगिकेवल्लिखीणकसायवीतरागचरित्रारिया य अचरिमसमयमजो  
गिकेवल्लिखीणकसायवीतरागचरित्रारियाय । मस्य सजोगिकेवल्लिखीणकसायवीतरागचरित्रारिया । न किंत  
अजोगिकेवल्लिखीणकसायवीतरागचरित्रारिया ? २ दुविहा पस्यहा , तजहा पढमममयअजोगिकेवल्लि  
खीणकसायवीतरागचरित्रारिया य अजोगिकेवल्लिखीणकसायवीतरागचरित्रारिया य, अहवा

कषाय वीतरागचरित्रारिया । यथा चरमममममजोगीकवल्लो खीणकषाय वातराग चरित्रारिया । अचरमममममजोगी कवल्लो खीणकषाय वीतराग चरि  
त्रारिया । यचरममममममजोगीकवल्लो खीणकषाय वातराग चरित्रारिया । मस्य सजोगी केवल्लो खीणकसाय वातराग चरित्रारिया । एतल्ल सजोगी क  
वल्लो खीणकषाय वीतराग चरित्रारिया । मस्य सजोगीकवल्लो खीणकसाय वातराग चरित्रारिया । २ दुविहा पस्यहा पस्यहा । द्विवे यथा १ केवल्लो खी  
णकषाय वातराग चरित्रारिया टाउभेड कहेछे—पढमममममममजोगीकवल्लो खीणकसाय वातराग चरित्रारिया । प्रथममममममजोगीकवल्लो खीणकषा  
य वीतराग चरित्रारिया । यचरममममममजोगीकवल्लो खीणकसाय वातराग चरित्रारिया । अचरममममममजोगीकवल्लो खीणकषाय वीतराग चरित्रारिया ।  
अहवा चरममममममजोगीकवल्लो खीणकसाय वातराग चरित्रारिया । यथा चरममममममजोगीकवल्लो खीणकषाय वीतराग चरित्रारिया । अचरिमम

पात्राश्रयार्थं दृढमाननीयं नक्रामत पथयामप्रतिपत्तौ सातिचार यन्मलगुणघातिन पुनर्नैतीचारण उक्त च-सेरसम् निरटयारसम् तित्यतरसम्  
 मत्र त द्वाज्जा । मूलगुणघातशोभा इयारमनुय च हियमप्यो ॥ १ ॥ उन्नय चतिसातिचार निरतिचार च स्थितकल्प इति प्रथमपद्यितीर्थं करतीयका  
 न तथा परिहार तपोधिगप तन विशाद्वियस्मिन् चारित्रे तत्परितारविशद्विद्रु तद्यद्विधा निविशमानक निविष्टकार्यिक च तत्र निविशमानका  
 विविक्षितचारित्रासंयका निविष्टमायका आसंविताचारित्रका तद व्यतिरिक्ताचारित्र मप्येव मुख्यते इह नवको गण श्रुत्यारोनिर्विशमानका श्रुत्यार  
 शानुचारण मक्र कल्पस्थितो वाचनाचार्यो यद्यपि च सर्वपि गुणातिगपसम्भवा तथापि कल्पत्वात् तपः मक्र कार्ये तत्कल्पस्थितो वस्याप्यते  
 निविशमानकानाख्याय परिहार , परिहारियाणउ तयो जन्ममज्जो तदय उक्लोसो । मोउदृष्टयासकाल जगिउ वीरि पसेय ॥ १ ॥ जस्य जट्ठत्वा नि  
 म्भ चउत्थदृष्ट तू णइमज्जिमउ । अठममिहउक्कासो यत्तोत्तिमिर पवक्तामि ॥ २ ॥ निमिरे उन्नत्ताइ द्वाइ दममचरिमगो णइ । दासासु अठ  
 माइ वारसपज्जतगोनउ ॥ ३ ॥ पारणागआयास पचसु अगणो दासु अज्जिगणो निवत्ते । कप्पटियापडिटिण करित ममेवआयास ॥ ४ ॥ उवत्तम्मा  
 सतव चरिउपरिहारणाअणुचरति । अणुरमे परिहारिण पडिटिण जाव द्वासा ॥ ५ ॥ कप्पटिगविगव द्वासासतव करइ सेसाउ । अणुपरि  
 रिगणाव चयति कप्पटिगस च ॥ ६ ॥ ययसोअठार समासपमाणा उगखिउ कप्पो । सरेवउ विससा विममसुत्ताउ नायवो ॥ ७ ॥ कप्पसमतीए  
 तय णिणकप्प वा वयिति गच्छ वा । पक्खिज्जमाणगा पुण जिणस्सगासे पवज्जति ॥ ८ ॥ तित्ययरसमीवास वगसपास वनोउअत्तस्स । एससि

चरिमममयञ्जुजोगिकेवलखीगकसायवीतरागचरित्त्वारिणा य अचरिमसमयञ्जुजोगिकेवलखीगकसायवीत  
 रागचरित्त्वारिणा य सत्त अजोगिकेवलखीगकसायवीतरागचरित्त्वारिणा । सेत्त केवलखीगकसायवीतराग

मय श्रयागौकान्नी खीगकसाय वीतराग चरित्त्वारिणा । अचरिमसमय प्रयागौकवली दौणकपाय वीतराग चरित्त्वारिणा । सेत्त अजोगिकेवली गौणकसाय  
 वीतराग चरित्त्वारिणा । एतल्ले श्रयागौ कौवली दौणकपाय वीतराग चरित्त्वारिणा । सेत्त केवलखीगकसाय वीतराग चरित्त्वारिणा ।



उत्तरपक्षप्रसंगीरूपे तु चतुर्थोक्तप्रतिज्ञायकात् न सम्भवति मत्प्रतिज्ञेनैव तेषां मत्प्रज्ञात्, चारित्रद्वारे-समस्यानद्वारेण सांगत्या तत्र सामाधिक्यस्य छेदोपस्थापनस्य च चारित्रस्य यानि जयन्त्यानि समस्यानानि परस्परतुल्यानि समानपरिणामत्वात् ततोऽनुद्भूयतो जाका ज्ञानप्रज्ञप्रमाणानि समस्यानान्य तिक्रम्योद्भूतं यानि समस्यानानि तानि परिहारविशुद्धिकयोग्यानि ताव्यपि च केंद्रलिप्रज्ञया परिज्ञायमानानि असह्यलोककाकाज्ञानप्रज्ञप्रमाणानि, तानि प्रथमद्वितीयधाराविरोधीनि तेष्वपि सन्नयात्, तत जडं यानि सस्यातीतानि समयस्थानानि तानि नूत्नसम्पराययथाख्यायचारित्र्यो यानि उक्तच-तुल्ला जहन्नाशे समयठागुणपटमविडयाण । ततो अससलोप गतु परिहारिपठाना ॥ १ ॥

-इत्तरियसामाडयचरित्तारिया अणवकहित्यसामाडयचरित्तारिया य । नेत्त सामाडयचरित्तारिया । से कित तेनेवठावणीयचरित्तारिया ? २ दुविहा पणत्ता, तजहा-साडयारा तेनेवठावणीयचरित्तारिया निरडयारा तेनेवठावणीयचरित्तारिया । सेत्त तेनेवठावणीयचरित्तारिया । से कित परिहारनिवृद्धियचरित्तारिया ? २ दुविहा पणत्ता, तजहा-निवृत्तसमाणपरिहागविसुद्धियचरित्तारिया निवृत्तकाडयपरिहारत्रिसुद्धियचरित्तारिया

कहेहे-इत्तरियसामाडय चरित्तारिया आशकहित्यसामाडय चरित्तारिया । तिहा ज कल्पसमीभते गच्छनेविषे पक्षे इतर सामाधिक्यचरित्तारिया ज दुत्तरचारित्र्यप्रते सपसंगं नक्रपले अवकथिक ते कल्पसमाप्ते जिनकल्प पडिले सपसंगीटि खेमे एतले सामाधिक्य चरित्तारिया । सेकित छेआट्टावणिया चरित्तारिया २ दुविहा प० त० । द्विवे छेआपस्थापनीय चरित्तारिना दोगभेट कछा ते कहेहे - सारयार छेआठ्ठावणिय च० निरडयार जडोअठ्ठावणिय च० । अतोचार कोइनागा हवे सातोचार छेआपस्थापनीय चरित्तारिया निरतिचार निगार अतोचारनगान हुन छेओपस्थापनीय चरित्तारिया । सेत्त छेओ अठ्ठावणिय च० । एतले छेआपस्थापनीय कछा । सेकित पारहारविससि च० दुयडा प० त० । द्विय परिहारविगिडिकना दोगभेट कछा ते कहेहे -- नि विद्यमाण पारहारविसुद्धिय च० निवृत्तकाडय परिहारविसुद्धिय च० । निवृत्तसमानक निविटकायक एहवा परिहारविगुड चउय अठ्ठम जवन्य मध्य



ज चरण परिहारविमुक्तियुत तु ॥ ६ ॥ अथै ते परिहारविमुक्तिका कस्मिन् क्षेत्रे जाते वा प्रवर्तते १ उच्यते-उह क्षेत्रादिनिरूपणार्थं विशतिद्वारा  
णि तद्यथा-क्षेत्रद्वार १ कालद्वार २ चारित्रद्वार ३ तीर्थद्वार ४ पर्यायद्वार ५ आगमद्वार ६ वेदद्वार ७ कल्पद्वार ८ लिंगद्वार ९ लयाद्वार १० ध्या  
नद्वार ११ गणद्वार १२ अन्नियद्वार १३ प्रव्रज्याद्वार १४ मुद्रापनाद्वार १५ प्रार्थयित्तविधिद्वार १६ कारणद्वार १७ नि प्रतिश्रमताद्वार १८ जिनादा  
र १९ वयद्वार २० । तत्र क्षेत्र द्विधा मागणा जन्मत सद्भावतश्च, यत्र क्व जात स्तन जन्मतो मागणा, यत्र कल्प स्थिता वसते तत्र सद्भावत ।  
उक्तच-खल्लेदुर्लभगण जन्मणुचैवमसतिजावय । जन्मणुचैवमसतिजावय ॥ १ ॥ तत्र जन्मत सद्भावतश्च पञ्चसु अरतपु पञ्चस्यै  
रावतेषु न तु महाविद्वेषु न चे तेषा सहस्रण मस्ति यत्र जनकल्पिका इव सहस्रणत सवासु कमज्जुनि प्रकमज्जुमिषु वा प्राप्यन्, उक्त च-मि  
त्तजरहरवय सुहोतिसहरणवज्जियानियमा । कालद्वारे-अयमसिपण्या तृतीय वतुर्थे वारके जन्मसद्भाव, पञ्चमपि उत्सर्पण्या द्वितीये तृतीये वतु  
थे वा जन्मसद्भाव, पुन स्वतृतीय वतुर्थेवा उक्तच-उत्सर्पण्याविधारेण जन्मणुचैवमसतिजावय ॥ १ ॥

रित्तारिया । सेत स्त्रीगकसायवीतरागचरित्तारिया सेत वीतरागचरित्तारिया । अहवा चरित्तारिया पचवि  
हा पणत्ता, तजहा-सामाडयचरित्तारिया लेनेवठावणी यचरित्तारिया परिहारविसुद्धिचरित्तारिया सुखम  
सपरायचरित्तारिया अहस्कायचरित्तारिया य । सेकित सामाडयचरित्तारिया ? २ दुविहा पणत्ता, तजहा

भक्त वीतराग चरित्तारिया । एतत्ते लीणकपाय वीतराग चरित्तारिया कल्या । अहवा च रत्तायारिया पचविहा पण  
त्ता तजहा । अथवा चारवार्य पावभट कल्या ते कहेके-सामाडयचरित्तारिया छत्रोवठावणी च परिहारविमर्श च सहस्रमपराय च अहत्वाय  
चरित्तारिया । सामाडयक चरित्तारिया केनापम्यापनाय चारिव परिहारविमर्श चारिव सत्तामपराय चारिवाये मूळ लोभना उदयन गथाख्यात चारिवा  
य निष्क य । सेकित सामाडय चरित्तारिया २ दुविहा पणत्ता । ए चारिवार्य कदिय, द्विय सामाविक चारिवाये तेहना टायभट कल्या ते

उत्तरार्णवस्यैव तत्तु चतुर्थोक्तप्रतिज्ञाकाले न सम्भवति मत्ताविदेहत्वेन तेषां ममत्वात्, चारित्रद्वारे-सयमस्थानद्वारेण मार्गेणा तत्र सामायिकस्य छेदोपस्थापनस्य च चारित्रस्य यानि लयन्यानि सयमस्थानानि तानि परस्परतुल्यानि समानपरिणामत्वात् ततो ऽनुद्बुध्यलोकाकाशप्रदेशप्रमाणानि सयमस्थानान्य तिरक्योद्देयानि सयमस्थानानि तानि परिहारविशुद्धिकयोग्यानि तान्यपि च केवलप्रज्ञया परिज्ञायमानानि त्रसद्बुध्यलोकाकाशप्रदेशप्रमाणानि, तानि प्रथमद्वितीयधारित्राविरोधीनि तेष्वपि सनवात्, तत्र ऊर्ध्वे यानि सत्यातीतानि सयमस्थानानि तानि नूतनसम्पराययास्याधारित्रयोग्यानि उक्तच-तुल्या जहद्वहाणो सयमहागुणपटमविडयाण । ततो अस्सलोय गतु परिहारियहाणा ॥ १ ॥

—उत्तरियमामाडयचरित्तारिया आवाकहियसामाडयचरित्तारिया य । मेत्त सामाडयचरित्तारिया । से कित्ते उन्नवठावणीयचरित्तारिया ? २ दुविहा पणत्ता, तजहा—साडयारा लेन्नवठावणीयचरित्तारिया निरडयारा लेन्नवठावणीयचरित्तारिया । सेत्त लेन्नवठावणीयचरित्तारिया । से कित्ते परिहारविशुद्धियचरित्तारिया ? २ दुविहा पणत्ता, तजहा—निव्विस्समाणपरिहारविशुद्धियचरित्तारिया निव्विठकाडयपरिहारविशुद्धियचरित्तारिया

कहेछे—इत्तरियमामाडय चरित्तारिया आवाकहियसामाडय चरित्तारिया । तिहा जे कयसमोभते गच्छनेविदे पडुचे इतर सामायिकचरित्तारिया कहे ज दुत्तरचरित्रप्रते उपसर्गं नकपले अवकाशिकते कल्पसमाप्ते जिनकल्प पडिक्केली उपसर्गादि खमं एतले सामायिक चरित्तार्ये । सेकित्तेछेआव्वावणिया चरित्तार्यारिया २ दुविहा प० त० । इवे छेदोपस्थापनीय चरित्तार्येता दोगभेद कछा ते कहेछे—साडयार छेआव्वावणिय च० निरडयार छेआव्वावणिय च० । प्रतीचार कोइलागो इवे सातोचार छेदोपस्थापनीय चरित्तार्ये निरतिचार निगार अतोचारलगान हुव छेदोपस्थापनीय चरित्तार्ये । सेत्तेछेआव्वावणिय च० । एतले छेदोपस्थापनाय कछा । सेकित्ते पारहारविसुद्धि च० दुविहा प० त० । इव परिहारविगठिकना दोगभेद कछा ते कहेछे—निव्विस्समाण परिहारविशुद्धिय च० निव्विठकाडय परिहारविशुद्धिय च० । निव्विस्समाणक निव्विठकायक एडवा परिहारविशुद्ध चउत्त अठ्ठम नववत्त मध्य

न चरण परिहारविमुद्रिय त तु ॥ ६ ॥ अद्ये ते परिहारविमुद्रिका कस्मिन् क्षेत्रे काले वा प्रवर्तते-उक्त केनादिनिरूपणार्थं विवक्षितद्वारा  
णि तद्यथा-क्षेत्रद्वार १ कालद्वार २ चारित्रद्वार ३ तीर्थद्वार ४ पयायद्वार ५ आगमद्वार ६ वेदद्वार ७ कल्पद्वार ८ लिङ्गद्वार ९ लश्याद्वार १० ध्या  
नद्वार ११ गणद्वार १२ अन्नियज्ञद्वार १३ प्रव्रज्याद्वार १४ सुक्रापनाद्वार १५ प्रायश्चित्तार्थविधिद्वार १६ कारणद्वार १७ नि प्रतिक्रमताद्वार १८ ज्ञिज्ञादा  
र १९ वेद्यद्वार २० । तत्र जगत् द्विधा मागशा जन्मत सद्भावतश्च, यत्र द्वाज जात स्तन जन्मतो मागशा, यत्र च कल्प म्यिता वृत्तते तत्र सद्भावन ।  
उक्तच-संक्षेपेणैवमगण जन्मणुवेचमत्तिज्ञावय । जन्मणुवेज्जाज्ञातो सतीज्ञावाञ्जिकप्यो ॥ १ ॥ तत्र जन्मत मुद्भावतश्च पञ्चसु प्ररतपु पञ्चस्यै  
रावतपु न तु महाविदेषु न च तेषा सहरण मस्ति यत्र जिनकल्पिका इव सहरणत मग्रासु कमन्नामिषु वा प्राप्यन्, उक्त च-सि  
त्तनरहरण्य मुद्रैतिसहरणवज्जियानिपमा । कालद्वारे-प्रउर्ध्वपया तृतीय चतुर्थ्यं वारके जन्मसद्भाव, पञ्चमपि उत्सर्गपण्या द्वितीये तृतीये चतु  
र्थे वा जन्मसद्भाव, पुनः तृतीये चतुर्थ्येण उक्तच-उत्सर्गप्यिणोर्गदासु जन्मण उतीमुमति ज्ञावण । उत्सर्गप्यिणिविवरीते जन्मणुवेसतिज्ञावैय ॥ १ ॥

रित्तारिया । सेतु स्वीणकसायवीतरागचरित्तारिया सेतु वीतरागचरित्तारिया । अहवा चरित्तारिया पचवि  
हा पणत्ता, तजहा-सामाडयचरित्तारिया लेनुवछावणीयचरित्तारिया परिहारविमुद्रिचरित्तारिया सुल्लम  
सपरायचरित्तारिया अहस्कायचरित्तारिया य । संकित सामाडयचरित्तारिया ? २ दुविहा पणत्ता, तजहा

सेतु वीतराग चरित्तारिया । एतले चौणकपाय वीतराग चरित्तारिया कल्ला । अहवा च रत्तायगिया पचविहा पण  
त्ता तजहा । अथवा चारत्तार्य पाचभट्ट कल्ला ते कहै-सामाडयचरित्तारिया छयावडुवणिग च परिहारविमोचि च महम्मपराय च अहत्तवाय  
चरित्तारिया । सामागिक चरित्तारिया केनापस्यापनाय चारिव परिहारविगार चारिव मूलापपराय चारित्तारिया लेनुवछावणीय चारित्तारिया  
न निष्कय । संकित सामाडय चरित्तारिया २ दुविहा पणत्ता तजहा । ए चारित्तारिया कहिय, सिम सामागिक चारित्तारिया तजहा टायभट्ट कल्ला ते

अलेखुषि होज्ज पुष्टपङ्क्तिः । तेषु वि बहो सो तीतनय पप्य वुचतीउ ॥ ३ ॥ तीर्थद्वारे-परिहारविशुद्धिर्को नियमत स्तोत्रप्रवर्तमान यव सति भवति न तच्छब्दे नानुत्पत्त्या वा तदज्ञावे जातिस्मरणादिना, उक्तप-तित्यसि नियमसोश्चिय होइमतिरयमिनउणतदज्ञावे । विगमणुप्यन्नेवा ज्ञादं सरणाइमरितु ॥ १ ॥ पर्यायद्वारे-पयायो द्विधा गृहस्थपर्यायो यतिपर्यायश्च, गम्भीकोपि द्विधा जघन्यत उरुहृतश्च, तत्र गृहस्थपयाया नचन्यत मकोनत्रिशद्वयाणि यतिपर्याया विद्यन्ति द्वाउपि घोरकपतो दशानपूर्वकोटीप्रमाणो उक्त च-मगसमुपसनेठ गिल्परियाउञ्जलगुणीया । जइपरि याउवीसा दोसुविउक्कोसदसणो ॥ १ ॥ आगमद्वार-ग्रपूव मागम स गधीने यत्ता त रकल्प मधिहृत्य प्रगृहीतोवितयोगाराधनतप्य स उतठत्यता नजत, पूर्वाधीत तु विश्रोतसिक्काक्षयनिमित्त नित्यमवैकाग्रमना सम्पद् प्रायो नुस्सरति, आरुच एपुष्टनज्जिः आगमसोपद्रुक्कप्य । जमुच्चिय पगइयजोगा राइणउचवकियकिद्या ॥ १ ॥ पुद्वाहीयतुहयया यग्रदुतइनिगमवेन मगमगोसत्त विस्सोयसिगाययएउ ॥ २ ॥ वडद्वारे-नित्यप्र यतिकाले वदपुरुपयेडा नवत् नपुसकवेदा वा न खोवद रिया परिहारविशुद्धिर्कल्पप्रतिपत्तमुज्जात्, अतीत नय मधिहृत्य पुग पूगप्रनिपत्त श्रित्यमान तवदो वा उवेदो वा तत्र सर्वेद अणिप्रतिपत्त्यज्ञावे उपशमश्रेणिप्रतिपत्तो त्य वेद इति, उक्त-घटोगवितिकाले इत्योज्जाउडाउमग यरो । पुष्टपङ्क्तिजगोपुण हाज्जसवेदाअवेदाया ॥ १ ॥ कल्पद्वारे-स्थितकल्प गगाय नान्यनकल्प टियकल्पमियनियमा इति गानात्, तथा च गज्वादिपु दशस्वपि स्थानपु ये स्थिता माधव स्तरकल्प स्थितकल्प उच्यते य पुगयतुये शय्यातरपिकथे वाउस्थितपु कल्पपु न्यिता जेयेपु या चलस्यादिपु पदसु अस्थिता स्तरकल्पो स्थितकल्प, उक्तच-टियश्रुतिउपकल्पो आचराउकाउगमुठाणसु । सउमुविटिवापटमो चउठियउनुअठिया धीउ ॥ १ ॥ आचलकाटीनिच दशस्थानान्यमूनि । आचलकुट्टासिय मिज्जायररायपिक्काकयकम् । वयजेठपकिक्कण मसपज्जोमुउकप्पा ॥ १ ॥

णवासी वाणमतरा जोडनिया वेमाणिया से कित नवगत्रानी ? नवगवासी दसविहा पणना, एजहा सुसु

सा मणुसा ये.कित दया २ उउ.वेदा प० त० । ए.न.कर्मप्रामा. कक्षा. ७ तण. भे.न. २. द्या एतन्ने सर्व मनुष्य कक्षा, दिव उरताना ४ भट कक्षा ते कडे

ते वि अससतोगा प्रतिन्दिगा चेव पढमविद्याया उवचिचित्तोऽतस्या संयमठागाउदोऽपि ॥ २ ॥ तत्र परिहारविशुद्धिरुक्त्यप्रतिपत्ति म्यकीये  
धेव सयमल्यानेपु वत्तमातस्य भवति न शोषेपु' यदा त्वतीतनय मधिकृत्य पूर्वप्रतिपत्तो विवक्ष्यत तदा शोषेपि सयमल्यानेपु नवति परिहारवि  
शुद्धिरुक्त्यसमाप्त्यनन्तर मन्वेपि चारित्र्येपु सज्जघान्, तेद्यपि च वत्तमानस्या तीतनय मपेक्ष्य पूर्वप्रतिपत्तत्वापिरोधात्, उक्तच-सठाणे वक्रियती

रियाय । सेतु परिहारविशुद्धिचरित्तारिया । से कित सुज्जमसपरायचरित्तारिया ? २ दुविहा पयसत्त, तज  
हा-सकिलिरसमाण सुज्जमसपरायचरित्तारिया विसुज्जमाण सुज्जमसपरायचरित्तारियाय सेतु सुज्जमसपरा  
यचरित्तारिया से कित अहस्कायचरित्तारिया ? २ दुविहा पयसत्त, तजहा तउमत्य अहस्कायचरित्तारिया  
कंवलिअहस्कायचरित्तारियाय सेतु अहस्कायचरित्तारिया सेतु चरित्तारिया सेतु अणहिपत्तारिया सेतु अण  
यरिया सेतु कम्मन्नूमिगा सेतु गप्पवक्कलिया सेतु मणुस्सा से कित देवा २ चउद्धिहा पयसत्ता, तजहा भव

म वट्कट्ट तपज्जे । न-इत्तयक परिहारविशुद्ध चरित्तार्यं । सेतु परिहारविशुद्धि चरित्तार्यं कक्षा । सेकित मुहुनसप  
राय चरित्तारिया दुविहा प० त० । द्वि मूक्षमपराय त म्य सूक्ष्म लाभायचोण अय वीवाळे तेह दोउभेदळे । सकिलिन्धमाण सहसमपराय च० । स  
क्षेयमाण मूक्षमपराय चरित्तार्यं ते उपगमयाण अपितथोणयनो पाडत ह्ये । विमूक्षमाणमुहुनसपराय च० । विमूक्षमाण मूक्षमपराय चरित्तार्यं ते  
उपगमयाण अपितथोणयनो पाडत हुवे । सेतु मुहुनसपराय च० । एतने मूक्षमपराय चरित्तार्यं कक्षा । साकत अहस्कायचरित्तारिया दुविहा प०  
त० । द्वि ये यथाख्यात चरित्तार्येना दोउभेद कक्षा त केहे-उउमत्य अहस्काय च० । कक्षा यथाख्यात चरित्तार्यं ते उपगमना  
दुगुणठाण चाणमोहगुणठाण हुवे केवनायथाख्यात चरित्तार्यं ते भवाग गगगुणठाण हुवे । सेतु अणहिपत्तारिया  
सेतु तारिया । एतल यथाख्यात चरित्तार्यं कक्षा एतने अणहसिमाण आसन्नार्यं कक्षा । सेतु कम्मन्नूमिगा सेतु गप्पवक्कलिया से

[illegible]

णवासी बाणमतरा जोडनिया वेमाणिया सं कित नवगवासी ? नवगवासी दसविहा पणना, गजहा जुहु

स ननु सा से कत दया २ उ, व, वा पं तं । ए. न् अर्मभू, नरा कदा, पतन भं । न रा एतेभ्यं भगव नद्य, दिव दधना ४ भः ज्ञाना ते ५३

चत्वारः सायस्यिता कर्पादमे सेज्जापरिप्लव्णी चाउज्जामेयपुरिसंज्ञंय । किङ्कमस्सयकरणे पत्तारिअश्रद्धियाकप्पा ॥ २ ॥ लिगद्वारे-नियमितो द्विउत्थेपि लिगे ज्वात तद्यथा-द्रव्यलिगे जाउलिगे च एकोनापि विना विवर्तितकल्योचितसामाद्यायोगात्, लेइयाद्वारे-तेज प्रभृतिकासू त्तरा सु तिसुपु जिगुदामु तेइयासु परिहारविशुद्धिक रूप प्रतिपद्यते पूवप्रतिपन्न पुन सर्वास्वपि कय चि द्रुवति तत्रापो स्वराविशुद्धिलश्यासु जात्य लमक्किष्टासु गत तथानूतासु यत्तमानोनप्रज्ञतकालमद्यतिष्ठते किंतुलोक यत् स्ववीयशशात् भटित्येउ ज्ञान्योव्यावृत्तते अथ प्रथमत एव कस्मा त्प्रवृत्तं उच्यते कमगक्षात् उक्तञ्च लेसासु विमुद्वासु पद्धिद्वज्जउतीसु नउत्तमेसासु पद्धिपद्धिवल्लउपुण होज्जासद्योमुत्तिरुचिचि ॥ १ ॥ गद्यतसो कलिहासु योवजातावचानश्चयेनदिइयरासु चित्तकम्पाणाइ तद्वाविर्वीरियफलदेइ ॥ १ ॥ ध्यानद्वार-धमय्याने न प्रवृत्तमानतपरिहारविशुद्धिकप्रतिपद्यते प् प्रतिपन्न पुनरात्तरीद्वयोरपिप्रवति कवल प्रायेण निरनुवध आइ च भाणस्मिन्निय मण पद्धिद्वज्जइमा पवण्णयोगेण इयरसुविभागासु पुत्रप

वको नपडिसिटो ॥ १ ॥ एवचझाणजागे उट्टामतिव्वकस्सपरिणामा रोइइसुत्तिजावो इमस्सपायनिरुद्यथो ॥ २ ॥ गणनाद्वारे जघन्यत स्त्रयो गणा प्रतिपद्यन्त उरकपत ज्ञातसङ्ख्या पूवप्रतिपत्ता जघन्यत उररुष्टो वा ज्ञातज्ञ पुरुषगणनया जघन्यत प्रतिपद्यमाना समविशति रुक्कपत सहस्र पूवप्रतिपत्तका पुनजघन्यत ज्ञातज्ञ उरकपत सहस्रज्ञ आइ च गणउत्तिलउगणा जहन्नपद्धिवर्तितसयस उक्कोसा उक्कोसज्जनेण मयमाचियपुत्रप दिउत्ता ॥ १ ॥ सत्तावीसजहन्ना सस्समक्कोसउयपद्धिवर्ती सयसोसहस्ससोउ पद्धिवल्लज्जइउक्कोसा ॥ २ ॥ अन्य च यदा पूवप्रतिपत्तरूपमध्या देको निगच्छति अन्य प्रविशति तदो नप्रकपे प्रतिपत्तो कदाचि दकोपि भवति पृथक्क वा पूवप्रतिपन्नो प्येव प्रजनया कदाचिदेक प्राप्यते पृथ क्क वा उक्तञ्च पद्धिद्वज्जमागमयणाए होज्जयक्कोत्तिजणपक्खे पुद्धपद्धिउत्तयविय जहयाएक्कोपुत्तवा ॥ १ ॥ अन्नियत्तद्वारे-अन्नियत्तद्वा यत्तुर्विधा स्तद्यथा द्रव्यान्नियत्तद्वा चत्तन्नियत्तद्वा कालान्नियत्तद्वा य एते चा न्यत्र चपित्ता इति न ज्ञूयंथ्यते तत्र परिहारविशुद्धिकस्ये ते भिय

इति न प्रवृत्तिर्यस्मादेतस्य कल्पस्य यथोदितरूपो त्रिगुणो वर्तते उक्तञ्च दद्यादंश्रितगृहं विचित्रस्तृत्वननर्ततिपुणकेइं गयस्सचीयज्जप्यो कप्पोच्चियं  
 त्रिगुहाज्जेष ॥ १ ॥ गयमिगोयराड् निययानियमणनिरयवादाय तप्पालणवियपर गयस्सचिसुट्टिठाणत् ॥ २ ॥ प्रव्रज्याद्वार-ना सा वन्य प्रव्राज  
 यति कल्पस्यति रेपेति कृत्वा आहच पद्यावेड न गसो अन्नकप्पठिहिनिकाज्जणैः उपदेश पुन यथाशक्ति प्रयच्छति मुक्तापनद्वारेपि ना सा वन्य  
 मुद्रयति अथ प्रव्रज्यानन्तर नियमतो मुग्धनमिति प्रव्रज्याग्रहणैः तद्दृष्टोत्तमिति क्रियय पुणरुद्धार तद युक्त प्रव्रज्याद्वार नियमतो मुग्धनस्या  
 सम्भयात् अयोग्यस्य कथञ्चिद्दृष्टान्तमिति प्रव्रज्याया पुनरयोग्यतापरिधाने भगवतायोगादत पुनरिदद्वारमिति प्रापिश्रितविधिद्वारे । मनसापि  
 सूक्ष्ममप्यतिवारमापन्नस्य नियमत शतृगुरुक प्रायश्चित्तमस्य यत गप कल्प गङ्गाग्रताप्रधान स्तत स्तद्गङ्गे गुरुतरदोप इति कारणद्वारे तथा कारण  
 नाम आलम्ब्य य त्पुन सुपरिबुद्ध जानादिक तत्रा स्य न विद्यते येन तदाश्रित्यापवादपदसविता स्यात् यप न्नि सर्वत्र निरपन क्रिष्टकर्मवपनि  
 भित्त प्रारथ्य मेव स्य काप यथोक्तविधिना समापयन् मन्त्रात्मा वर्तते उक्तञ्च कारणमालम्ब्यमोह पुणराणादयमुपरिसुदृ गयस्समतनविज्ञड उचि  
 यतपसाद्वर्णोपाय ॥ १ ॥ मध्वत्यानिरवयक्तो आढत्तचिददसमाणतो बहुद्वगसगद्वप्या किलिठकम्पययनिमित्त ॥ २ ॥ नि प्रतिकमताद्वारे यप मया  
 त्मा नि प्रतिकमशरीरो अन्नमलादिक मपि कदाचि न्ना पनयति न च प्राणातकपि समापतिते व्यसने द्वितीयपट सेत उक्तञ्च निष्पन्निकमज्ञा  
 रीरो अञ्चिमलाहविनाउण्डसया पाणति ए वियमज्ञा वसणभिनगृह्ययी ॥ १ ॥ अप्यग्रहुतालोपण विसयादीमुत्तरीयसति अस्यामुद्भावासे यहु  
 गपयचियमस्स ॥ २ ॥ भिलाद्वारे-यतदेवचारित्र तथा विहारक्रम थ तृतीयस्या पौरुष्या भवति ज्ञापसु च पौरुषीपु कायोरसर्गो निद्रापि चा

रकुमारा नागकुमारा सुवर्णकुमारा विज्जुकुमारा अग्निकुमारा दीवकुमारा उदहिकुमारा दिसाकुमारा वाउ

हे—भवणपत्नीया वाणमन्तरा जो, सिया वमाणिया । भवनपती वानच्यन्तर ज्योतिषो वैमानिक । संकित भवणवामो दमविज्ञा प० त० । द्विवे भवनप  
 तो दगभेद कक्षा ते कहके—असुरकुमार नागकुमार सुवर्णकुमार विज्जुकुमार अग्निकुमार दीवकुमार उदहिकुमार दिसिकुमार वाञ्छकुमार घण्टि



चत्वारणांम्यता कल्पपादमे संज्ञायपरिपक्षमी चाउज्जामेयपुरिसंज्ञेह्य । किङ्कल्मश्मयकरौ चत्वारिश्वाहियाकष्या ॥ २ ॥ लिङ्गद्वारे-नियमितो द्वित्रिषेपि लिङ्गे ज्ञात तद्यथा-द्रव्यतिङ्गे ज्ञात्रलिङ्गे च स्फोर्नापि विना विविक्षितकृत्योचितसामाचाययोगात्, लेख्याद्वारे-तेज प्रकृतिकासू तस्य सु तिसृषु विशदामु लेख्यामु परिहारविज्ञादिक कल्प प्रतिपद्यते पृथप्रतिपन्न पुन सर्वास्त्रापि कथ चि द्रवति तत्रापि स्वराविज्ञादितृणयासु नात्य कामक्षिष्टासु गत तयाद्रूतासु वत्तमानो न प्रसूतकालमप्रतिष्ठते कितुस्तोक यत स्वीयगशात् भट्टित्येव नाज्योव्यावसते अथ प्रथमत एव कस्मा तप्रव सते उच्यते कमगशात् वक्तव्य लेसामविमुद्गाम् पद्मिबज्जतीसुतउणमेसाम् पुष्टपदिवत्तलेपुण होज्जासद्यन्मुविक्किद्विचि ॥ १ ॥ अथतसक्किणिठामु योवकातचजानथयेनदिइयरामु चित्तकम्माणाहु तज्जाविवीरियफत्तदेइ ॥ १ ॥ व्यानद्वार-थमज्जान न प्रवर्द्धमाननपरिहारविज्ञाद्विकप्रतिपद्यत प् यंप्रतिपन्न पुनरात्तरोदयोपरिपन्नवति कवल प्रायण निरनुवध आह च भाणम्मिचित्तय मण पद्मिबज्जात्तसो पवन्त्तमाणेण इयस्सुविक्काणम् पुष्टप

वन्तो नपिद्विसिद्धौ ॥ १ ॥ एवचद्वागजोगे सद्दामतिवृक्ष्मपरिणामा रोदहमुविजावो इमस्सपायनिरणुद्यधो ॥ २ ॥ गगनाद्वारे जघन्यत स्त्रयो गणा प्रतिपद्यन्ते उररूपत ज्ञातसङ्गा पूवप्रतिपत्ता जघन्यत उररुष्टी वा ज्ञातज्ञा पूरुपगगनया जघन्यत प्रतिपद्यमाना समविशति सररूपत सहस्र पूवप्रतिपत्तका पुनजघन्यत ज्ञातज्ञा उररूपत सरस्सज्ञा आह च गगनुतिन्नवगणा जहन्नपद्रिवतिमयस उक्कोसा उक्कोसजहन्नेण मयसाच्चियपुष्टप द्विप्रत्ता ॥ १ ॥ सत्तावीसजहन्ना सहस्समुक्कोसोऽप्यपिद्विप्रत्ती समयोसहस्समोऽग पद्रिवन्नजहन्नउक्कोसा ॥ २ ॥ अन्य च यदा पूर्वप्रतिपत्तकरूपमध्या देको निगच्छति अन्य प्राविशति तदो नप्ररूपं प्रतिपत्ती कदाचि दकोपि भवति पृथक्क वा पूवप्रतिपत्तो प्येव जजनया कदाचिदक प्राप्यते पृथ क्क वा उत्तन्न पद्रिवज्जमागभयणाए होज्जमक्कोटिकगपक्खे पुष्टपद्रिवन्नयाविय जहयाएक्कोपुष्टवा ॥ १ ॥ अग्निग्रहद्वारे-अग्निग्रहा श्रुतुविधा सद्यथा द्रव्याग्निग्रहा क्षत्राग्निग्रहा कालाग्निग्रहा ज्ञावाग्निग्रहा च एते वा न्यत्र वचिता इति न झूय थर्क्यते तत्र परिहारविशुद्धिक्खे ते भिग

वा कैवलिक सज्जोगि कैवलिनम यो गिकैवलिनम च सैतमित्याद्यु पसुहार कदवक मूत्र सुगम तदेव उक्ता मनुष्य सप्रति देवप्रतिपाटनायेमात् ॥  
 सेकितमित्यादि ॥ अथ के ते देवा सूरिराष्ट्र देवा द्युतुविधा प्रज्ञप्ता स्तथा-प्रथमवासिनो ? व्यन्तरा २ ज्योतिष्का ३ धीनानिका ४ तत्र प्रवनेषु  
 वसन्तीत्येव शीला प्रथमवासिन गतद्वादुल्यतो नागकुमाराद्यपेक्षया द्रष्टव्य, ते हि प्रायो प्रवनेषु वसन्ति कदाचिदाजासुपु असुरकुमारा प्राशुर्यणा  
 वासुपु कदाचि द्रवनेषु अय भवनानामा वासानाम्बक प्रतिविज्ञाप उच्यते जगानि वसिष्ठज्ञान्यन्त समचतुरस्याणि अथ पुनरुक्तार्थिका सस्याना  
 नि आवाता कायमानस्यानीया महामग्नया विविधमणिरत्नप्रदीपप्रनाम्बितसक्तदिक्चक्रगतादिति । अन्तर नाम अवकाश त च्चरा अयत्न  
 द्रष्टव्य विविध जगन्नगरायासरूपम न्तर येषां व्यन्तरा स्तत्र भग्नानि रत्नप्रज्ञाया प्रथमे रत्नकाश उच्यते य प्रत्येक भोजनशतमपहाय जाये  
 ऽष्टयोजनशतप्रमाणे मध्यभागे प्रवन्ति नगराण्यपि तिर्यंग्लोके तत्र तिर्यंग्लोके यथा जम्बूद्वीपद्वाराधिपतं विजयपदयस्या न्यस्मिन् जम्बूद्वीपे द्वा

दशयोजनसहस्रप्रमाणा नगरी आवासा शिष्टपि लोकेषु तत ऊर्ध्वलोके पण्डकजनादायिति अथवा विगतमन्तर मनुष्येभ्यो येषां व्यन्तरा तथाहि  
 मनुष्यान्पि चक्रवर्तिषामुदवप्रवृत्तीन् नृत्यवदु पचरति केचि द्व्यन्तरा इति मनुष्येभ्यो विगतान्तरा यदि वा विविधम न्तर शैलान्तर धनान्तर वा  
 आश्रयरूप येषां व्यन्तरा प्राकृतत्वा च सूत्रे वाणमन्तरा इति पाठ यदि वानमन्तरा इति पदसंस्कार तत्रेय व्युत्पत्तिवनानाम न्तराणि वना  
 न्तराणि तेषु प्रवा वानमन्तरा पृथोदरादित्वा दुजयपदपदान्तरालवर्तिमकारागम , तथा द्योतयन्ति प्रकाशयन्ति जगदिति द्योतीति विमातानि  
 औष्णादिकीशब्दव्युत्पत्ति तेषु प्रवा ज्योतिष्का अथात्मादिभ्य इती कण् तर्धवर्णविशदोमिसुसङ्गते इहण् आदि रित्नास्य तोप जननिवासा न न  
 चानाव यदि वा द्योतयन्ति शिरोमुकुटोपगृह्णि प्रज्ञामग्नलक्षणे सूर्यादिमण्डले प्रकाशयन्तीति ज्योतिषो दवा सूर्यादय स्तथा हि मयंस्य  
 सूर्याकार मुकुटाग्रभागे चिह्न चद्रस्य चद्राकार नक्षत्रसनक्षत्राकार ग्रहस्य ग्रहाकार तारकस्य तारकाकार ते प्रकाशयतीति आद च तत्प्रायज्ञा

स्या स्या द्रष्टव्या यदि पुन कथमपि जगद्बलनस्य परिशील ज्ञवति तथा ष्वे पो विहरन् पि मन्त्राज्ञो न द्वितीयपदना पद्यते किन्तु तत्रैव यथा कल्पमा लीय योग विदधातीति उक्तञ्च तद्व्यासपरिशील भिक्वलाकाराविहारकालोऽसंसासुऽउम्भस्यो पायग्रप्पायनिन्दति ॥ १ ॥ जघावलिमि खीणे अविहरमाणो विनवरमावर्जे तस्येवग्रहाकापगुणद्वजोगमन्त्राज्ञो ॥ १ ॥ एते च परिहारविशुद्धिका द्विविधा तद्यथा-इत्तरा यावत्कथि काश्च तत्र ये कल्पसमाप्त्यनन्तर तमेव कल्प गच्छवाप्त मुपयास्पति तेऽत्तराय पुन कल्पसमाप्त्यनन्तरमप्यवधानेन जिनकल्प प्रति पदस्यन्ते ते या उत्तरकथिका, उक्तञ्च-इत्तरिपथरूपप जिह्वकपेऽभावकहिपति अत्र स्थविरकल्प ग्रहण उपलक्षण म्यकल्प चेतिद्रष्टव्य तत्रे त्वराणा कल्पप्रज्ञावा हेव मनुष्यतैर्योऽनिरुता उपसर्गं सद्योयातिन आतङ्क अतीवा विपद्वा य विदना न प्रादु सन्ति यावत्कथिकाना सुक्तययुरपि ते हि जिनकल्प प्र तिपरस्यमाना जिनकल्पप्रज्ञावम नुविदधति जिनकल्पिकाना वो पसर्गादय सम्भवतीति उक्तञ्च इत्तरियाणवसुग्गा आतकावेयणापनत्तवति आ तकरियाणवज्ञया इति तथा सूक्ष्मो लोभाशावशेप सम्पराय कपायोदयो यत्र तत्सूक्ष्मसम्पराय त च द्विधा विमुच्यमानक सक्तिरूपमानक च तत्र विमुच्यमानक क्षपकशणिमुपशमयेणिव समारोहत सक्तिवयमान तू पशमन्त्रेणित प्रव्यवमानस्य अथाख्यातमिति अथ गृह्यो यथार्थं आह अमिबिधौ यथातथ्यन अन्निविधिना वा यत्स्यात कथित अकपाय चारित्र मिति तदा स्यात, उक्तञ्च अत्रसद्दोषहत्य आङ्गान्निविहीरुक्तहिमम ख्वाय चरणकसायमुदय तमहक्कलायजस्तथा ॥ १ ॥ यथास्यातमिति द्वितीयमम तस्या य मन्त्रार्थं । यथा सप्तस्मिन् जीवलोक स्यात प्रसिद्ध अक पाय ज्ञवति चारित्र मिति तथैव यत् यथास्यात तच्च द्विधा आद्यास्थिक कैवलिक च तत्र आद्यास्थिकमुपज्ञान्तमोह गुणस्यानके क्षीणमोहगुणस्यानके

कुमारा थणियकुमारा तंसमासमुद्विहा पश्यता, तजहा-पञ्चतगाय अपञ्चतगाय सेत अत्रगवाली से

कुमार १० । अमुरजनार नागजनार सार्णकुमार विद्यकुमार अर्णकुमार होयकुमार इटिकमार डिणिकुमार वायकमार स्तान्कुमार १० । एते स नासथा दुविहा प० त० । ए सच्चपथो दीयभेद कथा त कहेछे-पञ्चतगाय अपञ्चतगाय । पर्वता अपर्याता । सेत भवणवाद्यो । एतल भवनपती क

१०, गधर्वाद्वादेशविधा तद्यथा-हाहा १ हू २ तुम्हय ३ नारदा ४ श्रुतिगदिका ५ भूतवादिका ६ कादम्बा ७ महाकादम्बा ८ रेवता ९ जिज्ञावसव १० गीतरतयो ११ गीतयशस १२, यत्ता खयोदशधा स्तव्या-पूजनद्रा १ मार्गिजद्रा २ द्योतजद्रा ३ हरितजद्रा ४ सुमनोजद्रा ५ व्यतिपातिजद्रा ६ सुजद्रा ७ सर्वतोजद्रा ८ मनुष्यपक्षा ९ वनाचिपतयो १० वनाशरा ११ रूपयक्षा १२ यक्षोत्तमा १३ राक्षसा समुद्रिधास्तव्या-प्रीमा १ महान्नीमा २ विद्या ३ विनायका ४ जलराक्षसा ५ राक्षस ६ राक्षसा ७, भूतानवविधा स्तव्या-सुरूपा १ प्रतिरूपा २ श्रुतिरूपा ३ भूतोत्तमा ४ रुक्मिका ५ महास्कन्दका ६ महावगा ७ प्रतिष्ठिता ८ आकाशगा ९, पिशाचा योऽन्यविधा स्तव्या-कूष्माण्डा १ पदका २ जापा ३ श्रुटिका ४ काला ५ महाकाला ६ चोला ७ आचोला ८ तालापिशाचा ९ मुररपिशाचा १० अधस्तारका ११ देश १२ विदे

पचविहा पणता, तजहा चदासूरागहनरुक्तातारा तेममासले दुविहा पणता, तजहा पज्जत्तगाय झुप जत्तगाय से कित जोडसिया स कित वेमणिया २ दुविहा पणता, तजहा कप्पोवग्गाकप्पाईयाय सेकित कप्पोवग्गा २ वारसविहा पणता, तजहा सोहम्मा डसाणा सणकुमारा माहिदा वनलोया लतया महासुक्का सहरसारा ज्ञाणया पाणया झारणा झुचुया तेसमासले दुविहा पणता, तजहा पज्जत्तगाय झुपजत्तगाय

क-पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय । पयासा अपयासा । सत्त जाडसिया सक्ति वमाणिया दुवहा प० त० णत्त ज्योतिपो कक्षा, हिंवे वेमानिक दायपका र कक्षा ते कहै-कप्पोवग्गा कप्पाईया । कप्पोत्पत्त कप्पातोत्त । सक्ति कप्पावग्गा २ वारसविहा प० त० । हिंवे कप्पात्पत्तना २ भेट कक्षा ते कहै । माडगा डसाणा सणत्तकमारा माहडा वमालाया लतया सुद्धा सहम्मा रा ज्ञाणया पाणया झारणा पणता त समामया दुविहा प० त० । सौधम इगा त सनत्तुमार माहन्ट वल्लोकोक लात्तक शुक्क सहस्यार ज्ञानत्त झारण अच्यत्त ते सचपयको दायपकारे कक्षा ते कहै-पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय । पयास्ता अपयास्ता । सेत्त कप्पावग्गा सक्ति कप्पाईया २ दुविहा प० त० । ए कप्पात्पत्त कक्षा, हिंवे कप्पातोत्तना दायभेट कक्षा ते कहै-गोमज्ज

प्यक्त द्योतयते इति द्योतीति विमानानि तेषु प्रवा द्योतिका यदत्राज्यीतियो देवा ज्योति रिव ज्योतिष्का मुकुटे शिरो मुकुटोपगृह्णन्ति प्रजा मगलानि सज्जन्तौ सुयचद्रग्रहनक्षत्रारकाणा मगलानि यथा स्वविज्ञै विराजमाना द्युतिमतो ज्योतिष्का ज्ञवन्तीति तथा विविध मन्यते उपप्लव्यन्ते पुण्यवद्भिर्जीवै रिति विमानानि तेषु प्रवा विमानिका , सम्प्रत्ये तेषा मंब कर्मणज्जनानभिषित्सुराह-संकिंतन्नवणावासी इत्यादि ॥ असुराश्च ते कुमारश्च असुरकुमारः एव नागकुमारा इत्याद्यापि ज्ञावनीय अथकस्मा दंतं कुमार इति व्यपदिश्यति उच्यते कुमारवर्चोष्ठनात् तथाहि-कुमारायै तेषु कुमारमृदुमधुरललितगतय शृंगारोन्मिद्रादकृतविशिष्टविशिष्टतरोत्तररूपक्रिया कुमारव चो द्रुतरूपवेष ज्ञापान्नरूपप्रहरणाचरण यान वा हन कुमारचोत्तराणां क्रीडनपराश्च तत कुमार इव कुमार इति , किन्तरा इत्यादि किन्नरा दशविधा स्तद्यथा किन्नराः किपुरुषा २ किपु रूपोत्तमा ३ किन्नरोत्तमा ४ हृदयगमा ५ रूपशालिन ६ अनिदिता ७ मनोरमा ८ रतिप्रिया ९ रतिश्रेष्ठा १० किपुस्तपा दशविधा स्तद्यथा पुरु पा १ सत्पुरुषा २ महापुरुषा ३ पुरुषपटुपत्ना ४ पुरुषोत्तमा ५ अतिपुरुषा ६ महादेवा ७ मरुत ८ मेरुप्रतिभा ९ यशस्वन्त १०, महोरगा दश विधा स्तद्यथा नुजगा १ भोगशालिन २ मरुकाया ३ अतिकाय ४ रुच्यशालिन ५ मनोरमा ६ महावीरा ७ सप्तययदा ८ मेरुकाता ९ भास्वत

कित वाणमतरा २ झुठविहा प०, तजहा किन्नरा किंपुरिसा महोरगा गधव्हा जस्का रस्कसा न्याया पिसा या ते समासनुदुविहा पणत्ता, तजहा पज्जत्तगाय सेत्त वाणमतरा से कित जोंइसिया २

द्या । संकिंत वाणमतरा २ अष्टविहा प० त० । द्विवे वानव्यन्तर देवताना ८ भेट कक्षा ते कहैछे—किन्नरा किंपुरिसा महोरगा गधव्हा जस्का राखसा भूया पिसाया एतै समासन्नो दुविहा प० त० । किन्नर किंपुस्तप महोरग गन्धर्व यत्त रावस भूया पिसाच ए सद्यपयकौ दोंयभेटे कक्षा ते कहैछे—पल्लत्त गाथ यपपत्तगाय । पर्वाभा अपर्गति । सेत्त वाणमतरा संकिंत जोगमित्रा २ पचविहा प० त० । तै एतल वानव्यन्तर कक्षा, द्विवे ज्योतिषोना ५ भेट कक्षा त कहैछे—चट्टा सूर गहा नखता तारा एतै समासन्नो दुविहा प० त० चल्त सूर्य मन्द नचन तारा ५ । ए सद्यपयकौ दोंयप्रकारे कक्षा ते कहै

१०. गपथाद्वाटशविधा तयथा-हाणा १ हूहू २ तुम्यरव ३ नारदा ४ ऋषिपिडादिका ५ भूतवादिका ६ कादम्बा ७ महाकादम्बा ८ रेवता ९ विद्यावसव १० गीतरतयो ११ गीतयशस १२, यत्ता खयोदशधा स्तद्यथा-पूजन्नद्रा १ माणिप्रद्रा २ द्योतन्नद्रा ३ हरितन्नद्रा ४ सुमनोन्नद्रा ५ व्यतिपातिरुन्नद्रा ६ सुन्नद्रा ७ संवतोन्नद्रा ८ मनुष्यपक्षा ९ वनाचिपतयो १० वनारारा ११ रूपयक्षा १२ यक्षोत्तमा १३ राक्षसा सप्तविधास्तद्यथा-प्रीमा १ महानीमा २ विप्रा ३ विनायका ४ जलराक्षसा ५ राक्षस ६ राक्षसा ७, भूतानवविधा स्तद्यथा-सुरूपा १ प्रतिरूपा २ अतिरूपा ३ तूतोत्तमा ४ रुक्मिका ५ महारुक्मिका ६ महावगा ७ प्रतिच्छन्दा ८ आकाशगा ९, पिशाचा योक्तृशविधा स्तद्यथा-कूप्सायदा १ पदका २ जापा ३ आदिक्का ४ काला ५ महाकाला ६ बाक्षा ७ आचोक्षा ८ तालपिशाचा ९ मुररपिशाचा १० अथस्तारका ११ देहा १२ विदे

पचविहा पणत्ता, तजहा चदासूरागहनरुक्तातारा तेममासु दुविहा पणत्ता, तजहा पज्जत्तगाय अप्प ज्जत्तगाय से कित जीडसिया न कित वेमागिया २ दुविहा पणत्ता, तजहा कप्पोवग्गाकप्पाईयाय सेकित कप्पोवग्गा २ बारसविहा पणत्ता, तजहा सोहम्मा डसाणा सणकुमारा माहिदा वनलोया लतया महासुक्का सहरसारा आणया पाणया आरणा अञ्जुया तेसमासु दुविहा पणत्ता, तजहा पज्जत्तगाय अप्पज्जत्तगाय

छ-पज्जत्तगाय अप्पज्जत्तगाय । पवाता अपवाता । सत्त जाइसिया सक्ति वमाणया दुवहा प० त० पतले ज्योतिपो कक्षा, डिब वेमार्निन दायप्रका र कक्षा ते कहै—कप्पोवग्गा कप्पाइया । कप्पोवग्ग कल्यातीत । संकित कप्पावगा २ बारसविहा प० त० । हिबे कल्यात्यन्नना १२ भेट कक्षा ते कहै । माइया । समाणा सणत्तकमारा माइदा वमालाया लतया सुक्का सहसारा आणया पाणया आरणा अञ्जगा त समासया दुविहा प० त० । सोधम इया न सनत्तुमार माइन्द तत्तगोक लात्तक शुक्क सहसार आनत्त प्राणत्त आरण अञ्जुत्त ते सत्तपथको दायप्रकारे कक्षा ते कहै—पज्जत्तगाय अप्पज्जत्तगा य । पवाता अपवाता । सेत्त कप्पावग्गा सक्ति कप्पाइया २ दुविहा प० त० । ए कल्यात्यन्न कक्षा, हिबे कल्यातीतना दांगभेट कक्षा ते कहै—गावज्ज

शा १३ महाविदेह १४ तूष्णीका ५ वनपिशाचा १६ इति ॥ कप्योत्रगा कप्यालीयति ॥ कप्याचार स चे ह इन्द्रमामानिकस्त्रयस्त्रिशादिग्रहद्वाररूप  
स्मृपुगता सौधर्मज्ञानादिदयराकनिवाचिन ययोक्तरूप कल्पमतीता अतिक्रान्ता कल्पातीता अधस्तनाधस्तनगैवेयकादिनिवासिन स्तेरि सर्वेप्य  
रमिन्द्रा स्तती नयन्ति कन्यातीता , कल्योपगान् दज्ञयति-सोहस्त्रीषाणादुत्पादि ॥ सौधर्मदेवतोकनिवासिन सौधर्मा , इशानदयलोक्तनिवासिन

सेतु कप्योत्रगा से कित कप्याईया २ दुविहा पणत्ता , तजहा गेविज्जगाय अणुत्तरोववाडयाय से कित  
गेविज्जगा २ नवविहा पणत्ता , तजहा हिठिमहिठिमगेविज्जगा हिठिममज्जिमगेविज्जगा हिठिमउवरिम  
गेविज्जगा मज्जिमहिठिमगेविज्जगा मज्जिम २ गेविज्जगा मज्जिमउवरिमगेविज्जगा उवरिमहिठिमगेविज्ज  
गा उवरिममज्जिमगेविज्जगा उवरिम २ गेविज्जगा तंसमासनु दुविहा पणत्ता , तजहा पज्जन्तगाय अणुज्ज

गाय अणुत्तरोववाडयाय । ८ नव गैवेयक ५ अणुत्तरविमान । सेकित गविज्जगा २ नवविहा प० त० । हिवे गैवेयक वासीना नवभेद कक्षा ते कहैछे ।  
हठिम २ गे रज्जगा हेठिममज्जिमगेविज्जगा हेठिमउवरिमगेविज्जगा मज्जिमहठिमगेविज्जगा ४ । प्रथम गैवेयकनो हेठनोगैवेयक प्रथम विकनो उपरि  
लोगैवेयक प्रथम विकनो मध्यगैवेयक होतिय विकनो प्रथम गैवेयक होतिय विकनो मध्यमगैवेयक । मज्जिम २ गे० मज्जिमउवरिम गे० उवरिमहेठि  
म गे० उवरिममज्जिम गे० उवरिम २ गेविज्जगा ५ । होतिय विकनो वाओ गैवेयक तीजा विकनो प्रथमगैवेयक तीजा विकनो मध्यमगैवेयक तीजा  
विकनो अपरिलोगैवेयक । एते समासथा दुविहा प० त० । ए सधपै टायणकारे कक्षा तेकहेछे । पज्जन्तगाय अणुज्जन्तगाय । पणत्ता अपणत्ता ।  
सेतु गेवेज्जगा । एतले गैवेयकदेवता कक्षा । सेकित अणुत्तरोववाडया २ पचविहा प० त० । हिवे अणुत्तरवासीना पाचभेदे कहैछे ।  
विज्जगा वचयता जवता अपराजिया सब्बुसिहा एते समासथो दुविहा पणत्ता तजहा । विज्ज गेज्जन्त जयन्त अपराजित सर्वाथिसिष्ठण सज्जेपे टाय  
भेदेछे । पज्जन्तगाय अणुज्जन्तगाय । पर्यत्ता अपणत्ता । सेतु अणुत्तरोववाडया सेतु कप्याइया सेतुवेमाणिया । एतले अणुत्तरवासी कक्षा एते कल्पा

द्वयानां , यवसवत्रापिभावनीय ॥ तत्र तारण्या तद्वपदेक्षो यथापञ्चालदेशनिजामिन पञ्चाला इति ॥ इतिश्रीमलपिगिरिविचिताया प्रज्ञापना टीकाया प्रथम प्रज्ञापनाख्य पद समर्थितमिति ॥ १ ॥ यथाग्र १२२५ ॥ त दय व्याख्यात प्रथम पद सम्प्रति द्वितीय मारभ्यते । तस्य चा य मन्त्रिसम्बन्ध प्रथमपदे पुण्यिबीकायिकाटय प्र रूपिता इह तु तेया मय स्थानानि प्ररूप्यते तत्र चेद मादिसूत्र-कणिण जते इत्यादि ॥ कश्चि ॥ कस्मिन् शमगन्धोवाख्यालकारे ॥ प्रदत्तति ॥ परममुद्रामन्त्रण , वादरपुण्यिबीकायिकानां पयाप्तानां स्थानानि स्वस्थानादीनि प्रज्ञप्तानि प्ररूपितानि यव गी

ज्ञगाय मेत्त गेविज्ञगा सं क्ति अणुत्तरोवद्याडया २ पचविहा पसन्ना , तजहा विजया वैजयता जयता  
अपराजिया स्रुठसिद्धा तेसमासन् दुविहा पयज्ञा , तजहा पज्जत्तगाय अणुत्तरोववा  
इया संत्त कप्पाड्या संत्त वेमाणिया संत्त देवा संत्त पचिटिया संत्त ससारममावणजीवपन्तवणा संत्त जी  
वपन्तवणा संत्त पन्तवणा पन्तवणाए पठमपयसम्भत्त ॥ १ ॥ कहिण ज्ञन । वादरपुठविकाड  
याण पज्जत्तगाण ठाणानिगणा प० ? गोयमा ! सठाणिण अणुत्तपुठवीसु तजहा-रयणप्पन्नाए सक्करप्प

तोत्त कक्षा वैमानिक कक्षा । संत्त देवा संत्त पचेटिय ससारममावणजीव पणुत्तणा संत्त जीव पणुत्तणा संत्त पणुत्तणा पणुत्तणाए भगवडए पठ  
न पय सम्भत्त । एतले देवता कक्षा एतले पचेटिय कक्षा एतले ससारममावणजीव प्रज्ञापनानो अधिकार कक्षा पहिले पद पुण्योकायाटिक कक्षा,  
हिबे दूजपट जीवने ऊपज्जयानो ठाम कहिल्ले—एतले पन्तवणा भगवतीनी प्रथमपट समारत्त ययो ॥ १ ॥ कहणभत्ते वायरपट्टीका  
रयाण पन्तत्तगाण प० । किङ्गा हेभगवन् वादर पुण्योकायना पर्याप्तानां धानक कक्षा ८० । गोयमा सठाणिण अणुत्तपुठवीसु त रयणप्पभाए सक्करप्प  
१। १० पकप्प० धूम० तम० तमतमण० ईसिण० ८ । रत्तनप्रभा यर्करप्रभा बालुकप्रभा पङ्कप्रभा धूमप्रभा तमप्रभा तमतमप्रभा जघीशिलासिद्धकी ८ ।  
पङ्गोलीए पायाने सुभवेणसु भवणपट्टिडसु णिरपसु णिरयावलिद्यासु णिरयपट्टिडसु इडट्टीयकप्पेसु विमानेसु । पुण्योलीगे अधोक्षिके पातालकलशे भुव



तमस्याभिना प्रप्रेरते प्रगवानाए वदमानस्वामी गो० सहाणेगमित्यादि । ननु गीतमोपि प्रगवा नुपचितकुशलमूलो गणधर तीर्थकरनापितमावृका पदप्रथममात्रावाप्तप्ररुद्रश्रुतज्ञानावरणक्षयोपशम श्रुतदशपूर्ववित् सर्वाक्षरसन्निपाती विवक्षिताग्रप्रतिज्ञानसमन्वित एव तत किमर्थं पृच्छति न हि चतुर्दशपूत्रिद सर्वात्कष्टश्रुतलब्धिसमन्वितस्य निश्चितप्राप्तापनीयम विदितमस्ति यतस्त-ससाहसगविज्वे साहसजवापुरोत्रपेच्छेज्जा । नयणगणा दमसी धियागर्ह्यमखडमत्या ॥ १ ॥ सत्य मेतत् केवल जानन्नय गीतमस्वामी प्रगवान न्यत्र विनयेत्य प्रतिपाद्य तत्सम्प्रत्ययनिमित्त विवक्षिता यं पृच्छति यदि वा प्राप्य सवत्र गणधरप्रश्रुतीयकरनिवचनरूप मूत्रमतो भगवाना यथासौ पीत्यमव सूत्र रचयति, अथवा सम्भवति तस्यापि गणधृतो गीतमस्याभिना ०नाप्राग खटस्थत्वात् उक्तय-न हि नामा नाजोग खटस्थस्येह कस्य चिन्ना स्ति । ज्ञानावरणीय हि ज्ञानावरणप्रकृति कर्म ॥ ततो जातसगय सन् पृच्छतीति न कश्चि द्वेप, गोयमा इति लोकप्रथितमहाविशिष्टगोत्रात्रिधायकोपमामन्नध्वनि हेगौतम ! गीतमगोत्रे ति भावाय ॥ सहाण इति ॥ स्वस्थान यत्रा सुते यादरपृथिवीकायिका पर्योमा आसना युवणादिविज्ञागेना दसु शक्यन्ते तत्स्वस्थानमिति प्राव स्वस्थानग्रहण मुपपातसमुद्भातस्थाननिवृत्त्यर्थं तन स्वस्थानेन स्वस्थानम द्नीकृत्येति ज्ञाव ' अष्टासु पृथिवीषु सबत्र यादरपृथिवीकायिकाना पर्योमा

न्नाए वालुयप्पन्नाए पकप्पन्नाए धूमप्पन्नाए तमप्पन्नाए अहेसत्तमाए इंसीप्पन्नाए अहोलीए  
पायलेसु नवणंसु नवणपत्यन्नेसु निरएसु निरयावलियासु तिरयपत्यन्नेसु उहुलीए कप्पेसु विमाणंसु वि

मस्य नके भवनपनिनिवासै नरकप्रकीर्णरूपे नरकावास आवलौकेण नरकने पाथळे कहर्लोके कल्पदेयलोके सौधर्मादिके विमान । विमायबलिए वि मायपत्यन्नु तिरियलोण टुकेसु कूडसु मनेसु सिद्धोसु वक्खारेसु वक्खारेसु वासहरपच्चएसु वेलासु वेइयासु वारेसु तोरणेसु ठोवेसु समइसु इत्थण पावरपुटवोकाऱयाण पल्लत्तगाण ठायाण सव्वाएणठाणा । विमानआवलिका विमानेनामे विमान ते प्रतरे तिरिक्खेलोके छिद्दू रूपवतणे कूटै सिद्धायत र कूटयेपपवत जिउरसहित पर्वत तेनामे प्राम्मार विजये कच्छादि वच्चत्कार विद्युण्णमाद प्रवर्त्त वर्यधरपर्वत हिमवत्तादि पेलमुद्रादि वेदिक जव्दीप

ना स्थानानीति योग , ताएवा एषे पृथिवीनामग्राह माह-तज्ज्ञेत्यादि ॥ तद्यथा रत्नप्रज्ञाया यावदष्टम्या भीपत् प्राग्भाराराया तथा ऽधोलोके पातालपु  
पातालकलशेषु वलयामुसप्रभृतिषु ज्वनेषु ज्वनपतिनिकायावासरूपेषु इह ज्वनग्रहणेन भवनानामेव क्षेत्रलानाग्रहण ज्वनप्र  
स्तटग्रहणेन तु ज्वनानामपान्तरालस्यापि तथा नरकेषु प्रकीर्णकरूपेषु नरकावासेषु नरकावस्थितेषु नरकावासेषु नरकप्रस्त

माणावलियासु विमाणपत्यन्तेसु तिरियलोपु टर्केसु कून्तेसु सिलेसु सिहरीसु पज्जारिसु विजयेसु वखारिसु  
वासंसु वासहरपद्मसु वा वेलासु वेइयासु दारिसु तोरणसु दीवंसु समुहेसु एत्यण वादरपुठवीकाडयाणं

दि जगतोद्वार विजयादि तोरणधारादिसवधौ घर्णे स्युः सर्वहोप समुद्रपते ठामे पूर्वोक्तस्थानके जे पर्याप्ता आऊछो भोगवै तेलेवा केतलाएक इमकहे  
पृथ्वीकायना असलगतिना लेवा पर्याप्ताना ठामकछा ऊपजवो सर्वलोक । लोयस्य असखिज्जःभागे समुद्राएण लोयस्य असखिज्जःभागे सङ्गणेण । लो  
क ते असख्यातमेभागे समहातथात्री लोकने असख्यातमेभागे स्तस्थान रत्नप्रभा अन्तरालगे जेते । लोयस्य असखिज्जःभागे कहिणभते वायरपुठवीका  
इयाण अपल्लत्तगाण ठाणाण प० । लोकने असख्यातमेभाग ठामहुवै, हिंवे किइ भागवन् वादर पृथ्वीकाइयाना नपर्याप्ताना ठामकछा । गोयमा जत्थे  
व वायरपुठवीकाइयाण पल्लत्तगाण ठाणा । हेगौतम जिइ वादरपृथ्वीकाइया पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकछा । तत्थेव वायरपुठवीकाइयाण अपल  
त्तगाण ठाणा प० । तिइ वादर पृथ्वीकाय अपर्याप्ताना ठामकछा । उववाएण समुद्राएण सबलोए सङ्गणेण लोयस्य असखिज्जःभागे । ऊपजयो स  
मुहात सर्वलोके मरणसमहातने वस्यहुवै स्तस्थानलोकने असख्यातमेभागे । कहिणभते समुद्रपुठवीकाइयाण पल्लत्ता अपल्लत्तगाण ठाणा प० । किइ भा  
गवन् मूला पृथ्वीकाय पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकछा । गोयमा समुद्रपुठवीकाइया पल्लत्ता जे अपल्लत्ता ते सत्थे एगविइ अविसेसा अणाणसा ।  
हेगौतम मूलपर्याप्ता अपर्याप्ता पृथ्वीकायने सर्वनी एकविधकै विजेयरहित जिम पर्याप्ता तिम जाणिवा । सखलीय परियावखगा प० । स  
र्वनाक व्यापारद्वाकै रहवो कछो । समणाउघो । अहो अमण आउकाइयाण पल्लत्तगाण ठाणा प० । किइ भा

तमस्यामिना प्रप्रेरते जगवानाह वदमानस्यामी गो० सहाजोमिष्यादि । ननु गीतमोपि जगता नुपधितकुगान्तो गगपरः तीर्थरुजनापितमायुक्ता पदश्रवणायावाप्तप्ररुद्रुतज्ञानावरणयोगमम द्रुतदृष्टापुयचित् मत्रापरमस्त्रिपातो विविदितापं प्रतिज्ञानमस्मिन्वित मय तत किमयं पृच्छति न हि चतुदश पूत्रविद सर्वादिद्रुतनत्थिसमन्वितस्य किन्विद्रमात्रापीयन विदितमस्ति यतवक्त-मुनापुयवितयं साङ्गद्वयापुरोउपेष्टेष्टा । नयनत्रया इमसी विद्यागङ्गमउभय ॥ १ ॥ सत्य नेतत् केवल ज्ञानत्रय गीतमन्वामी जगवान न्यत्र विनयेन्य प्रतिपाद्य तरुमस्त्ययनिमित्त विविदिता ये पृच्छति यदि वा प्राय सवत्र गगपरप्रतीत्यकरियपगुरुप मुमतां जगवाना यगपातो यीत्यमय सूत्र रचयति, अथवा मुमयति तस्यापि गगजतो गीतमस्यामिती उनाज्ञाग छद्मस्थयात् उक्तय-न हि गाना नां ग दृष्टस्त्वय्ये कस्य पिथा स्मि । ज्ञानावरणाय हि प्रागावरणमरुति रुमं ॥ ततो गीतसगय सन् पृच्छतीति न कश्चि दोष, गीतमा इति लोकप्रचितमश्वायिज्ञादृष्टगोत्रागिपायकोपमानमशब्दानि प्रेगीतम । गीतमगीत्र ति ज्ञावाय ॥ सहाजो इति ॥ स्वस्यान यत्रा सते पादरपुयिपीकापिता पर्याप्ता सवर्गादियिनामेना दसु गस्यत तस्मस्यानिति प्राप स्वस्यानग्रहण मुपपातसमुद्गातस्थाननियुक्त्यं तन स्वस्यानम ह्रीकृत्यति नाय । यथासु पुचित्रीपु मयत्र पादरपुयिपीकापिपाना पर्याप्ता

ज्ञाए बालुयप्पन्नाए परुप्पन्नाए धूमप्पन्नाए तमप्पन्नाए अहेरत्तमाए उन्नीप्पन्नाराए अहोलोए पायालिसु नवणेसु नवणपत्थकेसु निगणसु निरयावडियासु तिरयपत्थकेसु उहलोए कप्पेसु त्रिमाणेसु वि

तस्य नके भवनपतिनिवामे नरकप्रकीर्णरूपे नरकावास पावनोयेण नरवने पाथहे प्पहंभोके कम्पदेवलोके कोथमोदिंके पिनात । विनायअमिए वि नाणपत्थकेसु तिरिउलोए टुकेसु कूडसु मंत्तेसु मिदरासु यभारेसु पिचएसु यभारेसु बासएरपमएसु पेत्तासु तेरासु गारेसु तोरेसु डोरेसु ममेरेसु इत्य एउरपटवोकादयाण पल्लसगाण ठाणाण उववाएणठाणा । विनायनपावनिका विमानेनामे विमान ते प्रतरे तिरिउलोके क्खट्ठपमिसे ष्टे मिहायत । हट्ठयेयपन्नं मिगुरसहित पवेत तेनामे माभार विजय कप्प्यादि यप्पत्तार विगुप्रभादि मवत्ते यथप्रपंपत विमवत्तादि धेनमुद्रादि वेदिंके जयुरोप

प्राग्भारेषु इंपत्कुञ्जेषु विजयंषु कच्छादिषु वल्लभकारेषु विद्युत्प्रभादिषु पर्यतेषु वर्षेषु भरतादिषु वर्षेषु हिमवदादिपर्वतेषु वेलासु समुद्रादिषु नीयरमणजूमिषु वेदिकासु चम्बूद्वीपजगत्यादिसम्यान्विनीषु द्वारेषु विजयादिषु तौरणेषु द्वारादिसम्यन्त्रिषु किम्यदुना सामस्यन सर्वेषु समुद्रेषु ॥ एत्य णमित्यादि ॥ अत्र गतेषु स्थानेषु वादरपृथिवीकायिकानां पयासानां प्रज्ञप्तानि मया अन्यैरपि तीर्थकृद्भिः ॥ उववाएणमित्यादि ॥ उपपातो वादरपृथिवीकायिकानां पयासानां यदनन्तरं मुक्तं तं त्प्राप्त्यान्निम्यस्य मिति ज्ञाव स्तेनो पपातमनोल्येति ज्ञातः, लोकस्य चतुर्दशरज्जालकस्या सहस्रजागे अत्रै के व्याचक्षते-अजुसूत्रयो विचित्रं स्ततो यदा परित्यक्त्वाजुमन्त्रयदज्ञानेन वादरपृथिवीकायिका पर्याप्ता स्थित्यन्त तदा ये स्वस्थान प्राप्ता आहारादिपयासि परिसमाप्ता विविष्टविपाक्तो वादरपर्याप्तपृथिवीकायिकार्युर्वेदयन्ते तं गव द्रष्टव्या नापान्तरालगता अपि तदानीं वि पाकायुर्वेदना सन्नात्रात् स्वस्थानं स्वतःपारत्नप्रज्ञादिकं समुदितमपि लोकस्यासहस्रजागेऽस्ते तत उपपातनापि लोकस्यासहस्रजागाता वदितव्या अयेत्यनिदधति पयासा हि नाम वादरपृथिवीकायिका स्वस्तोका स्तत स्तः उपातरालगतावपि परिगृह्यमाणा लाकस्या सहस्रयन्नाग यवति न कश्चिद्दोषः तथा च समुद्रातेऽपि लाकस्या सहस्रयन्नाग यव वहत्यन्ते अन्यथा समुद्रातावस्थायानपि स्वास्थानातिरेकेण क्षत्रान्तरवर्तत्यसम्भवादः सहे

जल्यत्र वादरपृथिवीकाडयाण पञ्जत्तगाण ठाणा पसुत्ता, तत्येव वादरपृथिवीकाडयाण उपज्जत्तगाण ठाणा पणत्ता, उववाएण सव्वलोए समुग्घाएण सव्वलोए सठाणंण लोअस्स अस्सखंज्जडन्नागे कट्ठिण नत्ते । सुज्जम पुढविक्काडयाण पञ्जत्तगाण उपज्जत्तगाणयठाणा पसुत्ता ? गोयमा । सुज्जमपुढविक्काडया जेपज्जत्तगा जे

हेमवदन् वातरन्त्रकात्र अपर्णीगाने ठाम कहवो । गोयमा जत्थे । वाधरधाउकारगाण पज्जत्तगाण ठाया तत्थेव वाधरधाउकाडयाण अपज्जत्तगाण ठाणा प० । हेमोतम जिहा वातर चरकाया पर्याप्तानां ठाम कच्छा तिहा वादर चरकात्र अपर्णीगानां ठाम कच्छा । उववाएण सव्वलोए समुग्घाएण सव्वलोए सठाणंण । अपचचा सबल के समुद्रात सर्वनाके । सठाणंण नीयस्स भसखिज्जडन्नागे । स्वस्थानक लोकन भसख्यातेमे भागे । कहिस्स भने सुहुमन्ना

तेषु नरकभूमिरूपेषु अनापि नरकनरकावलिकाग्रहणेन केवला गव नरकावाभा परिगृह्यते, नरकप्रस्तदग्रहणेन तु नरकापालराल मपि ऊर्ध्वलोकं कल्पेषु सीधमिकादिकल्पेषु, अनेन द्वादशदेवलोकपरिग्रहविमानेषु ग्रीवयकसम्बन्धिषु प्रमीर्णकल्पेषु विमानावलिकासु आवालिकाप्रविष्टेषु ग्रीवय कादिविमानेषु विमानप्रस्तदेषु विमानभूमिकारूपेषु अत्रापि प्रस्तदग्रहण विमानात्तरालज्जाविना मपि यथासम्भवज्जाविना वाटरपर्यामपर्यायवीका यिकाना स्थानपरिग्रहाय तयापि तिथ्यंलोकं दृक्पु खिन्नटकेषु सिद्धायतनकूटप्रवृत्तिषु शैलेषु शिखरिषु शिखरयुक्तेषु पर्वतेषु

पञ्जतगाण ठाणा पसुता, उववाएण लोयस्स अस्सखेज्जङ्गाणि समुग्घाएण लोयस्स अस्सखेज्जङ्गाणि सठाणेण लोयस्स अस्सखेज्जङ्गाणि । कहिण भते ! वाटरपुढविकाइयाण अपज्जतगाण ठागा पसुता ? गीयमा !

नगवन् वाटरभस्काय पर्याप्तान ठामकक्षा । गायमा सङ्गाण सजसु चणादहो वनिएस । हेगौतम स्वस्थानआओ सप्त पृथिवीये वनोदधि ठामे सात वनोदधिना वनयनेठामे । अङ्गालोए पायालेम भवणस भवणपल्लस । अधोलोके पातालना भवनविषे भवनना पायडाविषे । उड्डनोए कपेसु विमाने सु विमाणवलियाएसु । ऊर्ध्वलोके कल्प वारैद्वेलोके विमाननी अणोविषे । विमाणपल्लडेसु तिरियलोए अगडेसु उमनइणसु दहेसु वावीसु पुखरिणीसु । विमान प्रतरविषे तिरिखलोके तलावपानविषे नदो गङ्गादिकविषे ब्रह्मविषे पञ्चाद्रहादि वावडोविषे पक्करणोविषे । दीहियासु गुज्झालियाएसु सरसु । दीर्घिको गुज्झालिकावाव विषे सरावरविषे । सरपतिएसु सरसरपतिया विलपतियास उज्झारेसु विल्लसेसु वण्णेषु टोवस समेसु । सरोवरनीपाती पा पाणवन्ध विषे विलपल्लिविषे जलस्थानके विल्लणीनामे पाणीना वज्जारविषे वणी सु वीपने समुद्रादि जलठामे । सखेसुवेव जलासएसु जलठाणेषु । सर्व जलभाओ जलस्थानक कक्षा थाक्ती भावना पाख्खनीपरे । इत्थण वायरआउक्काइयाण पज्जताण ठाणा प० । इहा वाटर अरकायना पर्याप्ताना ठाम काणा । उववाएण लोयस्स असखिज्जङ्गाणि । समुग्घाएण लोयस्स असखिज्जङ्गाणि । समुद्दातलीकने असख्यातमे भाग दुवे । सठाणेण लोयस्स असखिज्जङ्गाणि । स्वस्थानके लोक्कने असख्यातमेभाग दुवे । कहिण भते वायर आउक्काइयाण अपज्जतगाण ठाणा प० । किहा

प्राग्जारेषु दुर्गपदेषु विज्ञेय कृच्छादिषु वक्षस्कारेषु विद्युत्प्रभादिषु पर्यतेषु वर्षेषु प्ररतादिषु वर्षेषु हिमयदादिपर्वतेषु वेलासु समुद्रादिषु  
नीयरमणजूमिषु वेदिकासु जम्बूद्वीपजगत्यादिसम्यन्थनीषु द्वारेषु खजयादिषु तोरणेषु द्वारादिसम्यन्थिषु किम्यहुता सामस्यन सर्वेषु समुद्रेषु ॥ सत्य  
गमित्यादि ॥ अत्र गतेषु स्थानेषु वाटरपृथिवीकायिष्ठाना पयासानि प्रज्ञप्तानि मया अन्यैरपि तीर्थकृद्भिः ॥ उववाएणमित्यादि ॥ उपपातो  
वाटरपृथिवीजायिकाना पयासाना यदनतर मुक्त त दमास्यान्निमुख्य मिति प्राव स्तेनो पपातमगोकृत्येति ज्ञाय , लोकस्य चतुर्दशरज्ज्वाल्मजस्य  
पशुयाने अग्ने के व्याचक्षते-प्रजुसूत्रयो विचित्र स्ततो यदा परिस्वरश्चजुमत्रायदज्ञानेन वाटरपृथिवीकायिका पर्याप्ता स्थित्यन्त तदा ये स्वस्थान  
भागा आसारादिपयसि परिसमास्या विनिष्ठविषाकतो वाटरपयासपृथिवीकायिकायुर्वेदयन्ते त गव द्रष्टव्या नापान्तरालगता अपि तदानी वि  
पाकाभ्यनता सतायाग् स्वस्थान ज्वतपारत्नप्रजादिक समुदितमपि लोकस्यासह्यज्जागंउत्तते तत उपपातनापि लोकस्यासह्यज्जागता वदितव्या  
अन्तेत्यभिप्रेयति पयासा नि नाम वाटरपृथिवीकायिका खंस्तोका स्तत स्त उपातरालगतावपि परिगृह्यमाणा लाकस्या सह्यज्जाग गवति न  
भाष्ये क्षीया सभा य समुत्पन्नमपि लाकस्या सह्यज्जाग एव वक्ष्यन्ते अन्यथा समुद्रातावस्थायापि स्वस्थानातिरेकेण क्षात्रात्तरवर्तत्यसम्भवाद सह्ये

पयसाही , तय सपुण्ड्रं सहास्रेषु भागुराण सखलोए सठाणं लोअरम अ्सखंजडनागे कहिण नत्ते । सुजम  
सुअनिहंदिनाणं पज्जनागणपत्ताणा पयसा ? गोयसा । सुजमपुढविकाडया जेपज्जत्तगा जे

पयसाहं वाटरपृथिवीकायिकायुर्वेदयन्ते त गव द्रष्टव्या नापान्तरालगता अपि तदानी वि  
पाकाभ्यनता सतायाग् स्वस्थान ज्वतपारत्नप्रजादिक समुदितमपि लोकस्यासह्यज्जागंउत्तते तत उपपातनापि लोकस्यासह्यज्जागता वदितव्या  
अन्तेत्यभिप्रेयति पयासा नि नाम वाटरपृथिवीकायिका खंस्तोका स्तत स्त उपातरालगतावपि परिगृह्यमाणा लाकस्या सह्यज्जाग गवति न  
भाष्ये क्षीया सभा य समुत्पन्नमपि लाकस्या सह्यज्जाग एव वक्ष्यन्ते अन्यथा समुद्रातावस्थायापि स्वस्थानातिरेकेण क्षात्रात्तरवर्तत्यसम्भवाद सह्ये

इ यठादोष ७ ,

यन्नामवर्तिता नो पपद्यतेति तस्य पुन केवलिनो विदति विंशतिश्रुतविदो वा तथा समुच्चाणलोगरससंज्ञेज्ज्ञानेति ॥ समुद्धान्तेन समुद्धान्तमधिकृत्य  
लाकस्य उमह्वयज्ञाग इय मत्र ज्ञावना यदा वादरपर्याप्तपृथिवीकायिका सोपक्रममायुषा निरुपक्रमायुषो वा विन्नागाद्यज्जायायुष परत्रविज्जमा  
युवङ्गा मारणान्तिकसमुद्धान्तन समवहस्यन्ते तदा ते विनितात्प्रदादज्ञावना अपि लोकस्यासह्येतमे गव ज्ञागे वर्तते स्ताकत्वात्, वादरपर्याप्तो  
कायिकपर्याप्ताय द्या द्या प्य लीणमिति पर्याप्तवादरपृथिवीकायिका अपि लज्यन्ते इहपूर्वपृथिव्यादिषु स्वस्यानमात्रमूर्त्तमिदानीं स्वस्यानेनापि किं  
यतिलाकस्यज्ञागवर्त्ततेति निरूपयति सहाणलोगरस अस्यज्ज्ञागइति ॥ स्वस्यान रत्नप्रज्ञादि त स नमुदितमपि लोकस्यासह्येतज्ञावति तथा  
ति रत्नप्रज्ञा अशीतियोजनसत्स्वाधिकलक्षप्रमाणपि सन्नज्ञावा गवजोपा अपि पृथिव्य स्व २ घनज्ञावेन वक्तव्या पातालकलशा अपि योजनलक्षावगा  
हा नरकावासा स्त्रिसन्स्त्रयोजनोच्छ्रया विमानान्मापि द्वाविंशद्योजजज्ञावदुल्लानि तत सर्वेषामपि परमितभावात्, समुदितानाम प्य सह्येषमा  
गवतिर्नैवति वादरापर्याप्तपृथिवीकायिकमूत्र उवज्जागण सध्वलोमइति ॥ इहा उपर्याप्ता वादरपर्याप्तोकायिका अपान्तरालगतता  
वपि स्वस्यानपि चा पर्याप्तवादरपृथिवीकायिकायु विंशतिपृथिवीकायिकत्वत तथा दवर्त्तैरयिकर्जस्य ज्ञापसर्वज्ञायस्य द्यो पपद्यन्ते उहृता अपि  
च दवर्त्तैरपि रुजंये ज्ञापेषु सर्वेषां स्थानेषु गच्छन्ति ततो ऽपान्तरालातावपि वत्तमाना णमो गृह्यन्ते इति, प्रज्ञताश्च स्वज्ञावतो पीत्यु पपातेन  
समुद्धान्तन च सवलोकैवर्त्तते, अस्यत्व अभिदधति स्वज्ञावत एवा मीजहव इति, उपपातेन समुद्धान्तन च मयलाकव्यापिन तत्रो पपात कंपा च्चि दृक्क  
त्या तत्र ऋजुगति सुप्रतीताय कस्यापना ष्वेव अत्र यदेव प्रथम वक्रमे क सहरति तदेवा परं तद्वत्कदशमा पूरयन्ति एव द्वितीयवत्कदश सहरणेपि तत्रो

अपज्जतगा ते सध्वे एगविहा अविसेसा अनाणत्ता सध्वलोएपरियावन्नागा पयत्ता, समगाउसो कविहा

उक्तादगाण पज्जत्त अपज्जत्तगाण ठाणा प० । किंहा हेमगवन् मूल्याककायना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठाम कक्षा । गोयमा सहस्रभाउकादया जे पज्जत्त  
गा जे अपज्जत्तगा ते सध्वे एगविहा अविसेसा अनाणत्ता । हेगोतन मूल्याककाय अपर्याप्ता अपर्याप्ता तेसव एक्कमेद्वे दोजा अविशेष कविहा । सखलो

त्यक्तावपि प्रवाहतो निरन्तर सापूरण भावनीय सद्भावेणगीर्गहस अमन्वेज्जदन्तागे इति॥ यथा पर्याप्तानां श्रावित तथा अर्पणोप्तानामपि प्रावनीय तन्नि  
 श्यै स्तयामु त्यादज्ञावात मूलपृथ्वीकायिकपर्याप्तपयाप्रसूत्रे जेपल्लज्ञाश्रापल्लज्ञाता ते मध्ये गगविज्ञा अनागतासद्वलागपरियावन्नाइति॥ सूक्ष्मपृथिवी  
 सायिकाये उपयाप्ता गव पर्याप्ता त सर्वेष्व कविधा गवप्रकारा प्राकृत स्वस्थानादिविधार मधिकृत्य प्रदाभावात् अविज्ञापाविज्ञापरन्तिता यथा पयाप्ता  
 स्तथ तरपि इति भाग , अनानात्वा नानात्वयजिता दशन्नदना लक्षितनानात्वा इत्यथ , किमुक्तं प्रगति यथा धारजृतेषां काज्ञाप्रदज्ञाये के ते प्र  
 व तरे पी ति सवलाकपपापक्षा सर्वलोक्रयापित उपपातसमुद्घातस्वस्थाने प्रज्ञाप्रमया अन्ये च अप्रभादिनि स्नीयंरुद्धि अनेना गमस्य कयचि  
 न्नित्य मावेदित ह्यक्रमण हे श्रायुष्मन् ! आस्रगमिदं जगत्प्रयुक्त गीतमस्य गवमव्कायिकसूत्रायपि यादरमूलमविषयाणि , नगर पर्याप्तवादराव्का  
 यिकमूत्रे सप्तसु चणादहितागमुति सप्तचोदयिलयानि श्व २ पृथ्वीपयंतवेदिकाणि , अश्लोपपायालेमुति पातानकलसेषु यल  
 यामुपप्रचलितेषु तद्यपि द्वितीय त्रिभागे दशत तृतीय त्रिभाग सधात्मना जलज्ञावात् भवनेषु कल्पेषु त्रिमाणेषु चतुल वाप्यादिषु विमानादीनि  
 चात्र कल्पगतानि वदितव्यानि ग्रंथयकादिषु । वापीना मसम्भवतो जलासम्भवात् , अत्रा कूपा स्तनागानि प्रतीतानि नद्यो गद्गासिधुप्रवृत्तयो

नते । वादरच्छाउकाडयाण पल्लतगाण ठाणा पयात्ता ? गोयमा । सठाणेण सत्तसु घणोदधोसु नत्तसु घ  
 णोदधिवलएसु छुहोलीए पायलेसु जयणपत्यरुमु उहोलीए कप्पेसु विमाणेसु त्रिमाणावलियासु  
 विमाणपत्यरुसु तिरियलीए छुगळेसु तलाएसु सरेसु नदीसु दहेसु त्रावीसु पुस्करिणीसु दीहियासु गुजालि

ए परिवावणगा प० । सर्वलोकने व्यापोरुद्ध छै इमकक्षा । समथाउभा । इयन १ बाजपायत्तो । कटिणनत यावर तउकाडयाण पल्लतगाण ठाणा प० ।  
 किष्ठा हेभगवन बादर तेजकायना पर्याप्ताना ठामकक्षा । गोयमा सठ्ठणेण अनामणसु खेत्तेप्रवट्टादल्लेसु दौवममट्टेसु । हेगीतम स्वस्थाने मनुष्यलोका  
 माहि प्रवट्टादोप समुद्रविये । पिक्वाघाएण पण्णरमु कयमभूमीसु । व्याघातरहितथके १५ कसेभूमिविये । सत्त्वाघायपट्टन पचममहाविदेहेसु । व्याघात चि



द्रहा पट्टद्रहादप वाप्य धुतुरस्याकारा ता गव वृत्ताकोशः पुकरिण्य यदि वा पुकराणिपट्टानिविद्यन्ते यासु ता पुकरिण्यो दीर्घिका ऋजु  
लघुनद्य स्ता गव वक्रा गुञ्जालिका वनूनि क्षेत्रलक्षेणानि पुष्पावकीर्णानि सरासी त्युच्यन्ते, तथा वनूनि सरासि गुरुपत्तया व्यवस्थितानि च  
र पक्ति स्ता वक्तव्य सर पक्त्य तथा यपु सरस्तु पत्तयाव्यवस्थितेषु मूपादक प्रणालिकया सञ्चरति सा सर सर पक्तिस्ता वक्तव्य सर २ पक्त्य

यासु सरेसु सरपतियासु सिलवतियासु उज्जरसु गिज्जरसु चिल्लेसु पल्ललेसु वेप्पिणसु दी  
वेसु समुदेसु संवसु चंत्र जलासएसु जलठाणंसु जलनूमिञ्जासु एल्यग वादरञ्चाउकाडयाण पज्जत्तगाण

ततो जलस्थानकविना पञ्च महाविट्ठमाह सदात्र ऊपलै। एल्य वादर तउकाइयाण पज्जत्तगाण ठाणा प०। इहा वादर तेउकाय पर्याप्तानो ठ म  
कक्षा। उववाएण लोयस्स असंखुज्जइभागे समुवाएण लोयस्स अस०। ऊपज्जो लोकेण असंख्यातंभागे समुधातलोकने असंख्यात  
मंभाग स्वस्थान लोकेने असंख्यातंभागे। कडिणभते वायरतेउकाइयाण अपज्जत्तगाण ठाणा प०। किंहा हेमगवन् वायर तेउकायमे कक्षा अपर्याप्ताना  
ठाम कक्षा। गोउमा जत्थेव वायरतेउकाइयाण पज्जत्तगाण ठाणा प०। हेमौतम जिहा वादर तेउकाय पर्याप्ताना ठामकक्षा। तत्थेव वायर तेउका  
इयाण अपज्जत्तगाण ठाणा प० उववाएण। तिहा वादरतेउकाय अपर्याप्ताना ठामकक्षा कि पर्यंत अठरिसेयाजन वाहुच्य समस्त तिर्यक्कोक कहिये इ  
म तेजस्काय अपर्याप्ताना उपज्जवाना ठामकक्षा विस्तार गत्यात्तरयको जाणिवा ऊपज्जो। नोगस्स दोमसु कवाडन् तिरियलाण तट्ठ समुवाएण  
मज्जलोण सह गेण लोउस्स असंखुज्जइभागे। लोकेने अठाइहोपरिर्माण वाहिर पूर्वापर दर्शितोत्तर स्वभूमणपर्यंत जे पाट केउल समहात कपाटनो  
परं ऊहअधीलाकाल्त्त सट ते ऊहकपाट तथा तिरियलाणत्ति, तट्ठस्स लरूप तिर्यक्कोक तट्ठ स्वभूमणवद समहात सकलनाक पूर एक्का पर्याप्तानो  
तेवाये असंख्याता अपर्याप्ता ऊपलै स्वस्थभवपर्यंत मरण तपसमहात करे इम सकलनाक परौआ स्वस्थानके लोकेने असंख्यातंभागे मावाये हुवे। क  
डिणभते मुहुम तेउकाइयाण पज्जत्त अपज्जत्तगाणय ठाणा प०। किंहा हेमगवन् मूळ तेजस्काय पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकक्षा। गोयमा मुहुम ते

विलासीय यिनानि स्वनाथनिष्पन्ना जगत्यादिषु कृपिका स्तोपा पत्स्यो धिलपत्स्य उक्तरा गिरिस्थजसा प्रश्रयवा स्त गव सदा वस्यायिनो नि  
भरा विस्तराणि अयाता स्तोत्रजलाश्रयनूता जूप्रदेशा गिरिप्रदेशा वा पत्स्यानि अयातानि सरासि वामा केदारा किम्यन्तुना सर्वेधे वजलाशयेषु

ठाणा पणता, उववाएण लोयस्स अस्सखेज्जज्ञागे कहिण जते ! वायरञ्चाउकाडयाण अपज्जत्तगाणं ठा  
णा पणता ? गोयमा । जत्थेव वाटरञ्चाउकाडयाण पज्जत्तगाण ठाणा तत्थेव वाटरञ्चाउकाडयाण अप

उक्ताइया जे पज्जत्तगा अपज्जत्तगा ते सब्बे एगविहा प० अविसेसा अणाणत्ता । इंगीतम स्मृतेजम्भाय जे पर्याप्ता ते सर्वना एकहीजभद  
यावगेय सब्बे कहिवा । सब्बसाय परियावणगा प० । सर्वलोक व्यापी रत्ताकै । समणाउसो । अहो यमणो आयुपावत्तो । कहिणभते वायर वाटरकाइया  
ण पज्जत्तगाण ठाणा प० । किदा हेभगवन् वाटरवाउकाय पर्याप्ताना ठाम कछा । गोयमा मट्टाणेण सत्तमघणवाएण सत्तसुवणवायवलणस सत्तसुतणुदा  
णम् सत्तसु तणवाय वलणम् । स्वस्थानके सात धनवातना बलणनेस्थानक वली सात तनुवातनावलय ठिकाणै । अहोलीए पायालिसु भवणेषु भवणपट्ठ  
सु भवण छुट्टेसु भवणविखुडम् निरणम् निरयावर्नियणस । अधोलोक पातालनाभुवन धानके पायडाविषे अवकाय ठामै भवनविषे टूकस्थानके नरको न  
रकना वलणनेविषे । निरणपट्ठेसु निरयाछुट्टेसु निरणनिधुट्टेस । नरकनेछिट्टे नरकखूणै । उडुडुनीए कण्ठविमाणेस विमाणवलियाणसु विमाणपय  
डेसु विमाणछुट्टेस । उर्ध्वलोक कल्पविमान अवलोकविमाने विमानप्रतरै विमानछिट्टे । विमाणनिक्खुडसु तिरियनीए पाइण पइठ दाहिणवटीण सत्ते  
सुवैर । विमाणखूणै तिरिक्खुलोके पूर्व पश्चिम दक्षिण उत्तरै सब्ब । लोकाकाश छेहले खूणै एहवे ठामै । एत्थण वायर  
वाटरकाइयाण पज्जत्तगाण ठाणा प० । वाटरवाउकाय पर्याप्ताना ठामकछा । उववाएण लोयस्सजसाखलणभागेसु ममुग्घाण लोयस्सजस० । जपज  
वी लोकेने असस्य्यातमेभागे समुत्तातलोकेने असस्य्यातमेभागे । मट्टाणेण लोयस्स असखेज्जज्ञागे । स्वस्थान लोकेने असस्य्यातमेभागे । कहिणभते अपज्जत्त  
वायरवाउकाइयाण ठाणा प० । किदा हेभगवन् अपर्याप्ता वाउकाइयाण ठाणा पज्जत्तगाण ठाणा प० ।

द्रष्टा पद्मद्रष्टादय वाप्य ध्रुतरत्नाकारा ता यव वृत्ताक्षरा पुष्करिण्य यदि वा पुष्कराणिपट्यानिविद्यन्ते यासु ता पुष्करिण्यो दीर्घिका ऋजु  
तापुनय स्ता यव वका गुञ्जालिमा बहूनि कंजलक्रेवताचि पुष्पायकीर्णानि सरासी त्युच्यन्ते, तथा बहूनि सराचि सराचि गुरुपत्त्या व्यवस्थितानि स  
र पक्ति स्ता वर्य सर पक्त्य तथा यपु सरस्सु पत्त्याव्यवस्थितयु कूपादक प्रणालिकया सञ्चरति सा सर सर पक्तिस्ता वर्य सर २ पक्त्य

यासु मरेसु सरपतियासु सरसरपतियासु चिलचतियासु उज्जरेसु णिज्जरेसु चिल्लेसु पल्लेसु वंप्पिणंसु दो  
वेसु समुद्देसु सवेसु चंन जलासएसु जलठाणंसु जलनूभिञ्जासु एल्य ग वादरञ्चाउकाडयाण पज्जवगाण

ततो जनस्थानकविता पञ्च महाविट्ठमाह सटाव कपलै। एल्य वादर तउकाइयाण पज्जत्तगाण ठाणा प०। इहा वादर तेउकाय पर्याप्तानो ठ म  
कक्षा। उववाएण लीयस्स असखुल्लरभागे समुवाएण लीयस्स अस०। कपजवो लोकणे असख्यातमेभागे समुद्धातलोकने असख्यात  
मेभाग स्वस्थान लोकने असख्यातमेभागे। कट्ठिणभते वायरतेउकाइयाण अपज्जत्तगाण ठाणा प०। किहा हेभगवन् वायर तेउकायमे कक्षा अपर्याप्ताना  
ठाम कक्षा। गोयमा जत्थेव वायरतेउकाइयाण पज्जत्तगाण ठाणा प०। हेगौतम जिहा वादर तेउकाय पर्याप्ताना ठामकक्षा। तत्थेव वायर तेउका  
इयाण अपज्जत्तगाण ठाणा प० उववाएण। तिहा वादरतेउकाय अपर्याप्ताना ठामकक्षा कि पर्यंत अठारेसेगजन वाहुव्य समस्स तिर्यल्लोक कट्ठिहे इ  
म तेजस्साय अपर्याप्ताना उपज्जवाना ठामकक्षा विस्तार गत्यान्तरयको जाणिवा कपजवो। लागस्स दोसु कवाडम् तिरियनोए तट्ठ समुवाएण  
मन्वलोण सट्ठेण लीयस्स असखुल्लरभागे। लाकने अठाइंदोपरिपरिमाण वाहिर पूर्वापर दांजिणात्तर खगभूरमणपर्यंत जे पाठ केवल समहात कपाटनो  
परे ऊइअधीनाकाल्त्त स्पट ते ऊइकपाट तथा तिरिज्जनाणस्सि, तट्ठस्स लक्ष्ण तिर्यल्लोक तट्ठ खगभूरमणवद समहात सकललोक पर एकेका पर्याप्तानो  
तेपाये असख्याता अपर्याप्ता कपलै स्वस्थभवपर्यंत मरण तपसमहात करे इम सकललोक परीया स्वस्थानके लोकने असख्यातमेभाग मावाजे इवे। ऊ  
टिणभते सुहम तेउकाइयाण पज्जत्त अपज्जत्तगाणय ठाणा प०। किहा हेभगवन् नूस्स तेजस्साय पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकक्षा। गोयमा सुहम ते

स्या इतरीय समुद्राणां नविद्यते इतीदं विशेषं द्वीपानां द्रष्टव्यं, द्वीपा य समुद्रा य द्वीपसमुद्रा तेषु निर्व्याघातेन व्याघातस्या ज्ञावो निर्व्याघात  
तेन निर्व्याघातन तृतीयाया इति पाक्षिका मादशाभावः व्याघाताज्ञावेने त्यय, पञ्चदशसु कमभूमिषु पञ्चन्नरतप्यैरावतपञ्चमज्ञाविदेहरूपसु  
व्याघात प्रतीत्य व्याघाते सतीति ज्ञात, पञ्चसुमहाविदेहेषु, इय मत्र ज्ञावना-व्याघातो नामा तिस्त्रिंशो तिक्तता वा काल तस्मिन् सत्य ग्नि  
व्यवच्छेदा नतो यदा पञ्चसु भरतषु पञ्चस्वरावतषु सुरमसुरामा सुरमसुरामा सुसमसुरामा दु समदु यमाया वा तिक्तज्ञ  
इत्य ग्निव्यवच्छेद तस्मिन्सति पञ्चसु महाविदेहेषु जपकाल पञ्चदशस्त्रापि कमभूमिषु ॥ एत्यगमित्यादि ॥ अत्र मतषु स्थानेषु वारदतेजरकायिका  
ना स्थानानि प्रज्ञप्तानि ॥ उद्योगगमित्यादि ॥ उपपातन यथोक्तस्थानप्राप्त्या भिमुखना पाल्लरारागता वर्षति ज्ञाव, चिन्त्यमाना लोकस्या सहेय  
नाम स्तोत्रत्वात् समुद्रातेनापि चिन्त्यमाना लोकस्या सहेयनाग मारणातिक्रमसमृद्धातवज्ञतो विक्षिप्तात्सप्रदशदशानामपि स्तोत्रतया लोकासत्यय  
ज्ञागमागयापित्वात् स्वस्थानन लोकस्या सत्ययनागे मनुष्यकृत्रस्य पञ्चवत्वारिशो जललक्षप्रमाणायामविक्रमभतया लोकासत्ययभागमात्रत्वात्

पञ्चतगाण ठागा पणत्ता, उववाएण लोयस्स अससंज्जडन्नागे, समुग्घाएण लोयस्स अससंज्जडन्नागे,  
सठाणण लोयस्स अससंज्जडन्नागे । कहिण ज्ञनं । वाटरतज्जफाडयाण अपज्जत्तगाण ठाणा पणत्ता ? गा  
यमा ! जत्थंन वादरतेउकाडयाण पज्जत्तगाण ठाणा तत्थेव वाटरतेउकाडयाण अपज्जत्तगाण ठाणा प०,

असंज्जडन्नागे इति शब्दो गुणान्वितः स सरपतिगामु विलपतिगामु उअरेम निअरेम । तिरछेलाके कूप तलाव नदी द्रवविषे वीर्ये पुं  
रथो दाघभावे गजानिकाये मरावेरे सरपातिवपे विलपातिविषे पाणाठामे निअरेणे । चिल्लेसु पल्लेसु वणिणेषु दोवसु ममदसु सवेसु च । चो कथोठा  
न पलानमर ठामे होप समद सधलठामे । जलणणं जलण्णं वाटरवणल्लोदकाडयाण पज्जत्तगाण ठाणा प० । जलनाडामनविषे इहा वाटरव  
नस्पतोकाया पर्याप्ताना ठामकल्ला । उववाएणसव्वसाण समुग्घाएणसव्वसाण । जपजवा सर्वलोके समुद्रात सर्वलोके । सञ्जाण लोयस्स अससंज्जडन्नागे

मत्तदेव व्याचष्टे जलस्थानेषु गोपन्नावननाप्राग्बत् । अधुनावाटरपर्याप्तेशरकापिकस्थानानि पृच्छति कहिण जते वायरतेउकाइयाणमित्यादि प्रश्नसूत्र  
सुगम भगवानाह-गोयमेत्यादि । गौतम स्वस्थानेन स्वस्थानमङ्गीकृत्या तमनुष्यङ्गय मध्य इत्यर्थं अर्हुततीय येपान्त अर्हुततीया स्तत्रान्तमनुष्यलोत्र

ज्जत्तगाण ठाणा पसात्ता, उववाएण सव्वलोए समुग्घाएण सव्वलोए सठाणेण लोयस्स अस्सखिज्जन्नागे ।  
कहिण सुज्जमअउकाइयाण पज्जत्ता अपज्जत्ताण ठाणा पसात्ता ? गोयमा ! सुज्जमअउकाइया जेय पज्ज  
त्तगा जे अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अनाणत्ता सव्वलोए परियावन्तगा प०, समगा ! कहिण  
जते ! वाटरतंतउकाइयाण पज्जत्तगाण ठाणा पसात्ता ? गोयमा ! सठाणेण अतोमगुरसखेत्ते अर्हुतज्जेसु  
दीवसमुहेसु निवावाए पत्तरससु कम्मन्मीसु वाग्घाय पळ्ळु पचसु महाविट्ठेसु एत्थण वाटरतंतउकाइयाण

हेगौतम जिहा वाटरवाउकाइया अपर्याप्ताना ठामकह्या । तथेव वायरवाउकाइयाण अपज्जत्तगाण ठाणा प० । जिहा वाटरवाउकाय वाटरनिगाट  
आत्थी । उववाएण सव्वलोएसमुग्घाएण सव्वलोएसठाणेण लोयस्स अससुज्जन्नाभागे । ज्जपज्जानोठाम सर्वलोके सुस्थानके लोकनाशसख्यातमभागे हुवे ।  
कहिणभते मुहमवाउकाइयाण पज्जत्तअपज्जत्तगाण ठाणा प० । किहा हेभगवन् सुक्खवाउकाय पर्याप्ताना ठामकह्या । गोयमा सुहमवा  
उकाइया जे पज्जत्तगा जे अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा भणात्ता । हेगौतम सुक्खवायुकाय पर्याप्ताना अपर्याप्ताना तेसर्व एकभेदे अवियेय स  
र्व पाळनौपर । सव्वलोए परियावन्तगा प० । सर्वलोके व्यापारह्याक्के । समणाउसा । अहो यमणोआयुपावत्तो । कहिणभते वायरवणस्सइकाइयाण प  
ज्जत्तगाण ठाणा प० । किहा अहोभगवन् वाटर वनस्सतोकाय पर्याप्ताना ठामकह्या । गोयमा सट्ठाणेण सत्तसुवणोदहेसु सत्तसुवणोदहिवलएसु । हेगौ  
तम स्वस्थानके घनोदधि घनोदधिनावलयविषे । अहोलोए पायात्तासु भवणेम् भवणपल्लेस । अधोलोके पाताल भवनविषे भवनपायडाविषे । उट्टलोए  
कप्पेसु विमाणेषु विमाणवल्लिएसु विमाणपल्लेसु । उट्टलोके कल्पविमाने विमानपायडाविषे विमानपायडाविषे । तिरियलोए अगळेसु तडगेसु नरेएसु

स्या द्वेवतीय समुद्राणां नञ्जिते इतीदं विशेषं द्वीपानां द्रष्टव्यं, द्वीपा यं समुद्रा यं द्वीपसमुद्रा तेषु निर्यापतेन व्याघातस्या ज्ञावो निर्याप्यात तेन निर्याप्यतेन तृतीयाया इति पार्श्विका मादशाभावः व्याघातान्नावेने त्यय, पञ्चदशसु कर्मभूमिषु पञ्चन्नरतपश्चैरावतपञ्चमहाजिदेररूपासु व्याघात प्रतीत्य व्याघाते सतीति ज्ञात, पञ्चसुमहाविदर्षेषु, इयं सत्र द्वावना-व्याघातो नामा तिस्रिगो तिरुतो वा कात तस्मिन् सत्यं निन व्ययच्छदा ततो यदा पञ्चसु भरतपु पञ्चस्वरावतपु सुखसुरामा सुखसुरामदु समा वा घतते तदा, तित्तिग्यमालो दु समदु यमाया वा तिरुन् इत्यं निनयवच्छद तस्मिन्सति पञ्चसु महाजिदर्षेषु अपकाल पञ्चदशस्थायि कर्मभूमिषु ॥ गत्यगमित्यादि ॥ अत्र यतपु स्थानेषु वारदतेजस्क्रायािका ना स्थानानि प्रचक्षन्ति ॥ उवगागमित्यादि ॥ उपपातन यथोक्तस्थानप्राप्त्या भिमुखतो पालरालगता वर्षीति ज्ञाव, चिन्त्यमाना रोकस्या सह्येय नाग स्तोत्रत्वात् समुद्रातेनापि चिन्त्यमाना लाकस्या मह्यपनाग मारणातिक्रममुद्गातउशतो विजिप्तप्रदशदग्नानामपि स्तोक्तया लाकासत्यय जगमात्रयापित्वात् सस्थानन लोकस्या सत्ययज्ञागे मनुष्यद्वयस्य पञ्चचत्वारिंशद्योगिनलनप्रमाणायामधिकम्भतया लोकासत्ययभागमात्रत्वात्,

पञ्चतृगाण ठागा पणता, उववाएण लोयस्स अससेज्जइन्नागे समुग्घाएण लोयस्स अससंज्जइन्नागे,  
सठाणेण लोयस्स अससेज्जइन्नागे । कहिणं ज्ञेन ! वाटरतज्जमाडयाण अपज्जत्तगाण ठाणा पणता ? गा  
यमा ! जत्थेव वाटरतं उकाडयाण पज्जत्तगाण ठाणा तत्थेव वाटरतं उमाडयाण अपज्जत्तगाण ठाणा प०,

इदं वावोसु पक्ववर्णसु दोहियाम गुणानियं स सेरम सरपतिगामु विलपतिगामु उक्करेम निज्जरेम । तिरुत्तेनाके कूप तलायनतो द्रवपिपे न.वो पुक्क रणो दावेकादि गजानिकयि सरावेर सरपातिवपे विलपातिवपे पाणाठामे निज्जरणे । चिज्जलेसु पल्ललेसु वपिणेषु दोवसु समदसु सर्वेसुत्तेव । चोक्कणोठा म पल्लालमर ठामे होप समद्रे सघनठामे । जनासणम जलठुणेम एत्थण वाटरवणमोदकादगाण पज्जत्तगाण ठाणा प० । जलनाडामनविपे इहा नादरव नत्थतोकादया पर्याप्ताना ठामकल्ला । उववाएणसब्बसाण समुग्घाएणसबबोए । जपजवा सर्वनाके समुद्गात सर्वलोके । सट्ठाण लायस्य यससेज्जइन्ना

गतदेव व्याचष्टे जलस्थानेषु शोषज्जावनानां प्राग्वत् । अधुना वाटरपर्याप्तते अस्मादिकस्थानानि पृच्छति कहिण भते वायरते उक्ता इयाणि मित्यादि प्रश्नमूत्र  
सुगम भगवानाह-गोयमेत्यादि । गौतम स्वस्थानेन स्वस्थानमङ्गीकृत्या तमनुष्यकृत्र मध्य इत्यर्थं अद्वैतीय येपान्त अद्वैततीया स्तत्रात्तमनुष्यत्वेन

ज्जत्तगाण ठाणा पसात्ता, उववाएण सव्वलोए समुग्घाएण सव्वलोए सठाणेण लोयस्स अस्सखिज्जानागे ।  
कहिण सुज्जमअण्डाडयाणं पज्जत्ता अपज्जत्ताण ठाणा पसात्ता ? गोयमा ! सुज्जमअण्डाडया जेय पज्ज  
त्ता जे अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अनाणत्ता सव्वलोए परियावत्तगा प०, समणा ! कहिण  
भत्ते ! वाटरतउकाडयाण पज्जत्तगाण ठाणा पसात्ता ? गोयमा ! सठाणेण अतोमगुरसखेत्ते अट्टाडंज्जेसु  
दीवसमुहेसु निहाघाए पन्तरससु कम्मसूमीसु वाग्घाय पळुस पचसु महाविदेहेसु एत्थग वाटरतउकाडयाण

हे गौतम निहा वाटरवाडकाडया अपर्याप्तानां ठामकक्षा । तथैव वायरवाडकाडयाण अपज्जत्तगाण ठाणा प० । निहा वाटरवाडकाय वाटरनिगोट  
आचो । उववाएण सव्वलोएसमुग्घाएण सव्वलोएसठाणेण लोयस्स अससुज्जमभागे । अपज्जवानोठाम सर्वस्वार्क स्थानके लोकनाशसख्यातमभागे बुद्धे ।  
कहिणभते सुज्जमवाडकाडयाण पज्जत्तअपज्जत्तगाण ठाणा प० । किहा हे भगवन् सुज्जवाडकाय पर्याप्तता अपर्याप्तानां ठामकक्षा । गोयमा सुज्जमवा  
डकाडया जे पज्जत्तगा जे अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अनाणत्ता । हे गौतम सुज्जवाडकाय पर्याप्तता अपर्याप्तता ते सव्वे एकभेदे अवियेण स  
र्व पाळलोपरि । सव्वलोण परियावत्तगा प० । सर्वलोके व्यापारकाळे । समणाउसा । अहो यमणोआयुपावत्तो । कहिणभते वायरवत्तवाडकाडयाण प  
ज्जत्तगाण ठाणा प० । किहा अहो भगवन् वाटर वनस्पतीकाय पर्याप्तानां ठामकक्षा । गोयमा सट्टाणेण सत्तमुग्घादहेसु सत्तमुग्घादहेवलएसु । हे गौ  
तम स्वस्थानके घनोदधि घनोदधिनानवलपविषे । अट्टोलोए पायालासु भवणेम भयणपल्लहेस । अधोलोके पाताल भवनविषे भवनपायडाविषे । उट्टोत्रोए  
कप्पेसु विमाणेषु विमाणवलएसु विमाणपल्लहेसु । उट्टोलोके कल्पविमाने विमानानवलपविषे विमानपायडाविषे । तिरियलोए अगट्टेसु तडागेसु नरेसु

पाटे के प्रतिममृदातकपाटउत्तु ऊंमपितोकातमृष्टे ते ऊर्ध्वकपाटे तयो मूर्ध्वकपाटयो मन्था ॥ तिरियतोयतेयति ॥ तह स्याल तियंग्लोकेतहमि  
तियक्लोकतह तास्स श्रवणमृगसमृद्धेदिजापयत अष्टादशयोजनशतवाहस्य समस्ततियंग्लोके चेत्थय , उपपातेन वादरवाउकाइयाण पयो  
माना स्यानानि प्रज्जसानि केचित्-तिरियलोयतह इति पठन्ति २ यं व्याचव्हते तयो कपाटयो रियत तस्य तियंग्लोके आ मी तदस्य अ नि  
यंग्लोकाकतस्य तयोर्ध्वकपाटयो रत्तवेत्ती तियंग्लोके इत्थय , तस्मिन्किमुक्त भवति द्वयो रूढकपाटयो ययोक्कपययो स्तियालोकापि च तथा

अवनपत्यंरुं सु अवनविद्दुं सु अवननिरुं सु निरएसु निरवावलिआसु निग्यपत्यंरुं सु निरयविद्दुं सु निरयनि  
रुं सु उहुलोयकपं सु विमाणं सु विमाणवलियासु विमाणपत्यंरुं सु विमाणविद्दुं सु विमाणनिरुं सु तिरि  
यलोएसु पाईणदाहिणउत्तीणसहेसु चैव लोगागासविद्दुं सु लोगनिरुं सु एत्थण वादरवाउकाइयाण पज्ज  
त्तगाण ठाणा पणत्ता , उववाएण लोयस्स अंसंरंजं सु आगेसु अंसंरंजं सु आगेसु  
सठाणेण लोयस्स अंसंरंजं सु आगेसु । कहिण अत । अपज्जत्तवादरवाउकाइयाण ठाणा पणत्ता ? गोय

पर्याप्ताना ठ मकच्छा । गोयमा उहुलोए तदेकदेसभागे अडोलीए तदेकदेसभाग तिरयलोए अगुस तलावेम जाव दोवेसु समुं सु सवेसुचैव जल्लास  
णम् जकडु णम् । हेगौतम ऊर्ध्वलोकाकत देगभागे मरदादि अधोलोकाकत देगभागे ग्राम क्षप तहागादि तिरिक्लोकै कूप तलाव वावत् दीपे समुद्रे न  
चलतामे । एत्थण वेत्थिय पज्जत्त अपज्जत्तगाण ठाणा प० । इहा वेत्थिय पर्याप्ता पपर्याप्ताना ठामकच्छा । उववाएण लोयस्स अंसंरंजं सु आगेसु अंसंरंजं सु आगेसु  
पलायस्स पम० मरदाणेण लोयस्स अम० । अपज्जत्त लोकाकत देगभागे समख्यातमेभागे समख्यातमेभागे समख्यातमेभागे समख्यातमेभागे समख्यातमेभागे  
पज्जत्ता अपज्जत्तगाण ठाणा प० । किहा हेमगवन् तेत्थिय पर्याप्ताना ठामकच्छा । गोयमा उहुलोए तदेकदेसभागे अडोलीए तदेकदेसभाग तिरिय  
लोए । हेगौतम ऊर्ध्वलोकाकत देगभागे अधोलोकाकत देगभागे तिरिक्लोकै । अगुसु तलाएसु जाव दोवेसु समुद्रेसु सवेसुचैव जल्लासणम् जल्लासणम् य



अपर्याप्तवादरतेनरुकायिकस्थानानि पृच्छति-कहिण भतेइत्यादिसूत्रगतार्थं, जगवानाह-गीतमेत्यादि-गीतम् । यत्रैव वादरतेनरुकायिकानां पर्याप्तानां स्थानानि तत्रैव वादरतेनरुकायिकानां सपर्याप्तानामपि स्थानानि प्रज्ञप्तानि पर्याप्तनिश्चया पर्याप्तानामवस्थानात् ॥ उवाच ॥ लोचनं दोषं उक्तकर्तुं निरिच्छलोचनं य इति ॥ इहा दृष्टनीयदोषसमुद्रनिष्ठते अदृष्टनीयदोषसमुद्रनिष्ठते अदृष्टनीयदोषसमुद्रनिष्ठते अदृष्टनीयदोषसमुद्रनिष्ठते ये क

उवाचाण लोचस्स दोषु उहुक्काळसु तिरिच्छलोचनं सधुआण सधुलोए सधुआण लोचरस अउसखेज्जिह्व  
नागे । कहिण भते ! सुज्जमनेज्जकाडयाण पज्जत्तगाण अउपज्जत्तगाणय ठाणा पसत्ता ? गोयमा । सुज्जमनेज्ज  
काडयाण जे पज्जत्तगा अउपज्जत्तगा ते सहे एगविहा अउविनेसा अनागत्ता सधुलोए परिचावत्तगा प० ,  
समणाउसो ! कहिण भते ! वादरवाउकाडयाण पज्जत्तगाण ठाणा पसत्ता ? गोयमा । सधुआण सधुसु  
धगवाएसु सत्तसु धणवायवत्तसु सत्तसु तणवाएसु सत्तसु तणवायवत्तसु अहोलोए पायालेसु जवणसु

गे । स्वस्थाने लोकने असख्यातेभोगे । कहिण भते व दवरवणस्सकाडया अपज्जत्तगाण ठाणा प० । किहां पडो भगवन् वादरवनस्पतीकाय अपर्याप्तानां ठा  
म ॥ इहा । गोयमा कत्येव वायरवणस्सकाडयाण पज्जत्तगाण ठाणा प० । हेगीतम् जिहा वादरवनस्पतीकाय पर्याप्तानां ठामकक्षा । तत्थेववायरवण  
स्सकाडयाण अपज्जत्तगाण ठाणा प० । तिहा वादरवनस्पतीकाय अपर्याप्तानां ठामकक्षा । उवाचाण सधुलोए समुवाण सधुलोए सधुलोए लोचस्स  
पर्याप्तभोगे । अपज्जत्तगाण ठाणा प० । अपज्जत्तगाण ठाणा प० । अपज्जत्तगाण ठाणा प० । अपज्जत्तगाण ठाणा प० । अपज्जत्तगाण ठाणा प० ।  
जिहा हेभगवन् सूक्ष्मवनस्पतीकाय पर्याप्ता अपर्याप्तानां ठामकक्षा । गोयमा सहमवणस्सकाडया ज पज्जत्तगा जे सधुए एगविहा अवि  
सेमा चणाणसा । अहो गीतम् सूक्ष्मवनस्पतीकाय पर्याप्ता अपर्याप्ता ते सर्व एकादे कक्षा अविशेष प, कुलीपरे । सधुलोचपरियावसा प० । सर्वलोक  
यापो रक्षाहे । समणाउसो । अहो गीतम् आयुपावत्तो । कहिण भते वेद दियाण पज्जत्तअपज्जत्तगाण ठाणा प० । किहा हेभगवन् वेदमिदं पर्याप्ता अ

पाटे के प्रलिप्तमृदातकपाटवत् ऊर्जमपि नोकास्तस्पृष्टे ते ऊर्जकपाटे तयो रूद्रकपाटयो स्तथा ॥ तिरियतोपतयेत्यङ्गिति ॥ तद्द स्यात् तिरियग्लोकेतद्वहमिज  
तिपक्वलोक्ततद् तस्मि यस्त्वयचूरमगसमुद्रवेदिकापयत अष्टादशयोजनं शतवाहस्य समस्तातियग्लोके चेत्स्य , उपपातेन वादरतजस्कायिजानाम पयो  
माना स्यान्तानि प्रज्ञप्तानि केचित्-तिरियलोयतद् इति पठन्ति २ यव व्याचक्षत तयो कपाटयो स्थित तदस्य तिरियग्लोकाश्च सो तदस्य अति  
यंग्लाकतास्य तयो रूद्रकपाटयो रत्नवर्धनी तिरियग्लोके इत्यय , तस्मिन्किमुक्त भवति द्वयो रूद्रकपाटयो ययोक्तव्यरूपयो स्तिरियग्लोकेति च तथा

अवनपत्यङ्गं सु अत्रणविद्गुं सु अवननिरुक्तं सु निरए सु निरयावलिधासु निरयपत्यङ्गं सु निरयविद्गुं सु निरयनि  
रुक्तं सु उह्लोयक्यं सु विमाणं सु विमाणावलियासु विमाणपत्यङ्गं सु विमाणविद्गुं सु विमाणनिरुक्तं सु तिरि  
यलोएसु पाईणदाहिणउडीणसह्ये सु चैव लोगागासविद्गुं सु लोगनिरुक्तं सु एत्यण वादग्वाउकाइयाण पज्ज  
त्तगाण ठाणा पणत्ता , उववाएण लीयरस अ्ससंज्जे सु चागे सु समुघाएण लीयरस अ्ससंज्जे सु चागे सु  
सठाणेण लीयरस अ्ससंज्जे सु चागे सु । कहिण अन्न । अपज्जत्तवादग्वाउकाइयाण ठाणा पणत्ता ? गोय

पर्याप्ताना ठ मकच्छा । गोयमा उह्लोए तदेकदेसभागे अहोलीण तदेकदेसभाग तिरयलोण अगहं सु तत्तावेस जाव दोवें सु समवेसचेव जल्लास  
एस जल्लुणं स । हेगौतम ऊर्ध्वलोकात्तक देगभागे मन्दरादि अधोलीकैक देगभागे गाम कूप तड्यागदि तिरयेलीकै कूप तत्ताव यावत् हीपे समुद्रे न  
चलठामे । एत्यण वेद दिव पज्जस अपज्जत्तगाण ठाणा प० । इहा वेदिय पर्याप्ताना अपर्याप्ताना ठामकच्छा । उववाएण लोयस अ्ससंज्जे भागे समुघाए  
ण लायस अ्स० मट्ठाणेण लोयस अ्स० । अपज्ज लोकां ने अ्सख्ख्यातमेभागे समुघातमेभागे अ्ससंज्जे भागे । कहिणमते तेरिदि ।  
पज्जत्ता अपज्जत्तगाण ठाणा प० । किहा हेभगवन् तेदिय पर्याप्ताना ठामकच्छा । गोयमा उह्लोए तदेकदेसभागे अहोलीण तदेकदेसभागे तिरिय  
तोए । हेगौतम ऊर्ध्वलोकातकदेगभागे अधोलीकातकदेगभागे तिरिक्खलोके । अगहं सु तत्ताए सु जाव दोवें सु समुद्रे सु जल्लासए सु जल्लुणं सु य

रेव कपाटयो रत्नगते नान्यत्र शेषतिर्यग्लोकव्यवच्छेदनपरमेतद्वाक्यं त विधानपर विधानस्य कपाटग्रणेनैव सिद्धत्वात्, तत्त्व पुन केवलित्वा विविदिष्टयुतविदा वा गम्य, इयमत्र प्रावना-इए त्रियावाटरपयाप्ततेजस्कायिका स्तद्यथा सरुभविक्का बहुयुपो त्रिमुखातामगोत्रा श्य तत्रयेगकस्मा द्विद्यताविद्भवात् अनन्तर वाटरपयाप्ततेजस्कायिकत्वेन उत्पत्त्यगते ते एकत्रविक्का, ये तु पूर्वप्रवत्रिजागादिसमये बहुवाटरा पर्याप्ततेजस्कायिकायुप स्त यद्वायुपो यं पुन वाटरा पर्याप्ततेजस्कायिकायुर्नामगोत्राणि पूज्यवमोचनानन्तरसाक्षाद्दयन्ते अत्रिमुगनामगोत्रा तत्र एकत्रविक्का बहुयुप श्य द्रव्यतो वाटरा पर्याप्ततेजस्कायिकानन्नावत स्तद् युर्नामगोत्रवेदनाज्ञावात् ततो नते रिहा यिकार, कित्वभिमुखतामायुर्गोत्रं स्तेपामेवोपपातस्य स्वस्थानप्राप्त्या त्रिमुख्यलक्षणस्य लभ्यमानत्वात् । तत्र यद्यपि ऋजुमूत्रनयदशनेन वाटरा पर्याप्ततेजस्कायिका युर्नामगोत्रवेदनात् यथोक्तकपाठद्वय

मा ! जल्येव वाटरवाउकाइयाण पज्जत्तगाण पज्जत्तगाण ठाणा पणत्ता ।  
उववाएण सव्वोए समुग्घाएण सव्वलोए । सठाणेण लोयस्स अस्सखेज्जेसु नागेसु । कहिण भन्ते । सुज्जम  
वाउकाइयाण पज्जत्ता अपज्जत्ताण ठाणा पणत्ता ? गोयमा ! सुज्जमवाउकाइयाण जे पज्जत्ता अपज्जत्ताण

कूप तलाव यावत् द्वीपे समुद्रे सर्व जलायत्र जननेठामे । एत्थण तेऽदिय पज्जत्तमाय ठाणा प० । इहा तेऽदिय पर्याप्ताकक्षा तिणाना ठामकक्षा । उव  
वाएण लोयस्स अस० समुग्घाएण लायस्स अस० सव्वाएणलायस्स अस० । कालवा लाकने असव्यातमेभाग समुहातलोकने असव्यातमेभागे स्वस्थानलोक  
ने असव्यातमेभागे । कहिणभन्ते वडरिआटय ण पज्जत्त अपज्जत्तगाण ठाणा प० । किहा हेभगवन् चौरिदिय पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकक्षा । गोउमा  
उट्टनोए तदेकदेसभागे अट्टानाए तदेकदेसभागे तिरिउनाए । हेभोतम कडलोकातक देसभागे अधोलोकातक देसभागे तिरिछेलोके । अगडेसु तला  
एम्माव दोवेसु समडे स स्वस्सुच जलामएसु जलठाणेस । कूप तलाव यावत् द्वीपममद्र सर्व जलामे जलठामे । एत्थण वडरिदिय पज्जत्त अपज्जत्त  
गाण ठाणा प० । इहा चौरिदिय पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकक्षा । उववाएणलोयस्स अस० समुग्घाएणलोयस्स अस० सव्वखेज्जभागे ।

तियग्लोक्याव्यवस्थिता अपि आदरा पर्याप्तं जस्मात्प्रपदेशे लभते । तया च न व्ययहारनपदगोत्रानुगमात् ये २ स्वस्थानममश्रेयिक पादद्वय व्यवस्थिता ये तु स्वस्थानानुगते तियग्लोक प्रविष्टा गत्र आदरपर्याप्तं जस्मात्प्रपदेशे लभते । तया च न व्ययहारनपदगोत्रानुगमात् ये २ स्वस्थानममश्रेयिक विषमस्थानवत्तित्वात् तन ये प्रद्यापिकपादद्वयनप्रविष्टा नापि तियग्लोक ते किल पूज्यवाक्यस्या गद्येति न गम्यते, उक्तञ्च-पण्णपातनकरपिण्डुला दुनिकवाक्रायद्धिसिपुणा । लोगतेतेसितो जेतकेतेउचिप्यति ॥ १ ॥ तत उक्त ॥ उद्यवाणु दोमुउत्तुक्रमात्तमु तिरियलोपतहेय इति । त्यापना, तदेव मिद सूत्र व्ययहारनपदज्ञानेन व्याख्यात तया सम्प्रदायात्, युक्त चैतत्-विचित्रात्तत्रस्पगति रिति वचनादिति ॥ समुद्यापण सद्यलोप इति ॥ २ ॥ २ ॥

ते सहे एगविहा अत्रिसेसा अनाणत्ता सद्यलोपपरिवाचनागा पणत्ता समणाउसो ! कहिण जने वाटरवण स्सडमाडयाण पज्जत्तगाण ठाणा प० १ गो० । मठाणेण नत्तसु वणोदहीसु सत्तसु घणोदहिचलएसु अहोलीए पायालेसु नवणेसु नवणपत्यन्तेसु उहलीए कप्येसु विमाणेसु विमाणावलित्रासु विमाणपत्यन्तेसु तिरियलोए

अपजवो लोकने सत्तग्यातमेभागे सम्मत्तातलोकने पस० । स्वस्थानलोकने पस० । कहिणभते पचिदिय पल्लत्त अपन्नसगाण ठाणा प० । किहा हेभगवन् पचेदिय पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकक्षा । गायमा उट्टनाण तदेकदमभागे अहोलाकतदेकदमभागे तिरियलोए । हेगौतम कर्होकातक देगभागे अथोलाकातक देगभागे तिर्होलीकाटके । अगडेम तल्लविसु जावडोयेसु समुद्वेस सर्वमेव च जलामणमु जलठाणेसु । कूप तलाव वावत् वीपसमुद्र सर्व जलामणे जलठामे । एत्थण पचेदिय पल्लत्त अपज्जत्तगाण ठाणा प० । इहा पचेदिय पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकक्षा । उधवाणं न यम च० समग्वा एण लोयम्य स० मग्वाण लोउरम असवेन्नभागे । अपजवो लोकने पस० सम्मत्तातलोकने पस० । स्वस्थानलोकने पस० । कहिणभते येर-य, य पल्लत्त अपज्जत्तगाण ठाणा प० । किहा हेभगवन् नारका पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकक्षा । कहिण येरदया परिवसति । किहा नारकी वसेहे । गोउमा सग्वाण सत्तमुपटवीसु प० । हेगौतम स्वस्थान साते पयिवाविहवे तेकहेहे—रयण्यभाए सक्कर० वातुय० पक० धूम० तम० तमतम० ७ । ररनप

रेव कपाटयो रत्नगते नान्यत्र शेषतिर्यङ्गलोकव्यवच्छेदनपरमेतद्वाक्यं त विधानपर विधानस्य कपाटग्रहणेनैव सिद्धत्वात्, तत्त्व पुन केवलित्वा विशिष्टश्रुतिविदा वा गम्य, इयमत्र ज्ञानता-इह त्रिवादादरपथाप्ततर्जस्कायिका स्तथथा मज्जविका वद्वायुपो त्रिमुखनामगोरा श्रु तत्रयगकस्मा द्विधताक्षिद्वात् श्रमन्तर वादरपथाप्ततर्जस्कायिकत्वेन उत्पत्त्यगते ते मज्जविका, ये तु पूज्यवन्निगादिमयै वद्वादरा पर्याप्ततर्जस्कायिकायुप स्ने वद्वायुपो य पुन वादरा पर्याप्ततर्जस्कायिकायुर्नामगोत्राणि पूज्यवमोचनानन्तरसाक्षाद्दयन्ते अत्रिमुखनामगोत्रा तत्र एकत्रविका यद्वायुप श्रु स्ने वद्वायुपो य पुन वादरा पर्याप्ततर्जस्कायिकानन्नावत् स्तद युर्नामगोत्रवदनाकावात् ततो नतै रिहा यिकार, कित्वन्निमुखनामायुर्गोत्रे स्नेपामेवोपपातस्य द्रव्यतो वादरा पर्याप्ततर्जस्कायिकानन्नावत् स्तद युर्नामगोत्रवदनाकावात् ततो नतै रिहा यिकार, कित्वन्निमुखनामायुर्गोत्रे स्नेपामेवोपपातस्य स्वस्थानप्राप्त्या त्रिमुखलक्षणस्य लभ्यमानत्वात् । तत्र यद्यपि ऋजुमूत्रनयदशनेन वादरा पर्याप्ततर्जस्कायिका युर्नामगोत्रवदनात् यथोक्तकपाटद्वय

मा । जल्येव वादरवाउकाडयाण पज्जत्तगाण पज्जत्तगाण ठाणा पणत्ता ।  
उत्रवाएण सव्वलोए समुग्घाएण सव्वलोए । सठाणं लोयस्स अस्सखेज्जेसु मागेसु । कहिण भते ! सुज्जम  
वाउकाडयाण पज्जत्ता अपज्जत्ताण ठाणा पणत्ता ? गोयमा ! सुज्जमवाउकाडयाण जे पज्जत्ता अपज्जत्ताण

कूप तलाव यावत् होपे समुद्रे सर्व जलाशय जलनेठामे । एत्थण तेऽदिय पज्जत्तगाण ठाणा प० । इहा तेऽदिय पर्याप्ताकक्षा तिणाना ठामकक्षा । उव  
वाएण नायस्स अम० समरवाएण लायस्स अस० सठाणलायस्स अस० । ऊज्जवा लाकने अमख्यातेमेभाग समुहानलोकेने यमव्यातमेभागे स्वस्थानलोके  
ने अमव्यातमेभागे । कहिणभते चउरिाटय ण पज्जत्त अपज्जत्तगाण ठाणा प० । किहा हेभगवन् चोऽरिद्वि पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकक्षा । गोयमा  
उठलोए तदेकदेसभागे अहानाए तदेकदेसभागे तिरिउलाए । देवोतम ऊज्जलोकातक देगभागे अलोकातक देगभागे तिरिउलोके । अगडेसु तला  
णसु जाव दाविमु समदेस सव्वसुवेच जलामएसु जलठाणेस । कूप तलाव यावत् द्वोपममद्व सर्व जलामे जलठामे । एत्थण चउरिद्वि पज्जत्त अपज्जत्त  
गाण ठाणा प० । इहा चोऽरिाद्व पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकक्षा । उववाएणलायस्स अस० समुग्घाएणलायस्स अस० सठाणलायस्स अस० सखेज्जभागे ।

पात्तरालगतो यत्तमाना इति समुद्रघातगताश्च सुकललोकमा पुरयन्ति, उक्तञ्च-समद्घातेन सुखलोकैरेति । अन्येत्वं निदिधति-अतिवर्ण्य खलु वा दूरा पयाप्तैर्जरकायिका एषैक पर्याप्तितिप्रया अस्यययानामपयाप्ताना मुत्यादात् ते च सूक्ष्मेऽपि स मुत्यद्यन्ति सूक्ष्माश्च सब्र विद्यन्त इति वादरा पयाप्तैर्जरकायिका स्व २ भवनपर्यन्ते कृतमारणान्तिकसमुद्रघाता सन्त सकलमपि लोक मापूरयन्तीति न कश्चिद्दीप, अपि तु निरुपच रिततजरकायिकसमुद्रघातप्ररूपणागुणस्यापनस्थस्यानेनलोकस्यासुखयज्ञाने इति पर्याप्तितिप्रया अपयाप्तानामु त्यादात्, पर्याप्ताना च स्यान् मनुष्यक्षेत्र त च लोकास्यययतमज्ञागमात्रमिति, सूक्ष्मपयाप्तैर्जरकायिकसूत्र सूक्ष्मपयाप्तपयाप्तपृथिवीकायिकमृत्रव द्वायनीय, गद्य वायुकायिकजन

ठाणा पण्यत्ता १ गीयमा । जत्येत्र वादरवणस्सडकाडयाण पज्जत्तगाणं ठाणा तत्येत्र वादरवणस्सडकाड याण अपज्जत्तगाण ठाणा पण्यत्ता । उववाएण सव्वलोए समुग्घाएण सव्वलोए सठाणेण लोयरस अउसखेज्ज डन्नागे । कडिणन्नते । सुज्जमवणस्सडकाडयाण पज्जत्तगाण अपज्जत्तगाणय ठाणा प० १ गो० । सुज्जमवण स्सडकाडया जे पज्जत्तगा जे अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेमा अण्णाणत्ता सव्वलोयपरियावणगा

अपज्जत्तगाण ठाणा प० । इणांठामे नारकीपर्याप्ता अपर्याप्ताता ठामकक्षा । एववाएण लोयरस अस० समुग्घाएण लोयरस अस० सह गेण लोयरस अस० । अपज्जत्ता लोकेने यस० समुग्घातलाकने अस० संख्यत्तामेभागे । तत्थण बडवे नेरइयापरिवसति । तिहा नारकी वसेके । कानाभा मागमोर लाम हरिसाभौमा उववाएण परमाकिण्णाण पत्ता । कालोत्राभा कातिजेइती भयनेवमे उत्तरामके जेइता परम उट्टकट्ठण कक्षा । तेण तत्थ निव्वभौया निव्वभौया निव्ववसिया निव्ववगा निव्वपरमसुद्धमवधनरगभयं पद्युग्घात्तमाणा विहरति । तिहा नित्य च'स पास्य के परमाधार्मिक यकी नि त्य च से माहासाहि नित्य खडिग्नके नित्य परमअशुभ देखुने सबध गरक्कामय भागवता विचरै । कडिणभने रयणवपुड्ढो यर याण पज्जन अपज्ज साण ठाणा प० । किहा इभगवन् रत्तनपमानारको पर्याप्ता अपर्याप्ताता ठामकक्षा । काडिणभने रयणवपुड्ढो निरया परिवसति । किहा इभगवन्

कपाटयो यंयोक्त स्वरूपयो र्थान्य पातरालानि तेषु ये सूक्ष्मपृथिवीकायिकादयो यादरपर्याप्ततेजस्कामिकेषु त्वद्यमानमारणान्तिकसमुद्भातेन सम वहता स्ते किल विक्रमव्याहृत्याभ्या शरीरप्रमाणमात्रत्वात् आधामत उत्कर्षतो लोकान्तयावत् आत्मप्रदेशान् विनिपत्तिं तया चा वगाहनासम्प्राप नपदे वक्ष्यति पुढविकाइयस्सण भते मारणातिक्रमगुण्यण समोहयस्स तेयासरीरस्स कैमहालिया सरीरोगाहणा पन्नता गो० सरीरपमाणमे त्त विक्रमवाहल्यण आधामेण जहन्नेण अगुलस्स असखेज्जइजाग उक्कोसेण लोगाउ लोगतो इति, तत स्ते सूक्ष्मपृथिवीकायिकादय उत्पत्तिदश याय त् विविदिहात्मप्रदेशदशना अपान्तरालगती वतमाना यादरापर्याप्ततेजस्कामिकायुयंदनाल्लब्धबादरापयोप्ततजस्कामिकव्यपदेशा समुद्घातगततायवा

अग्रेषु तल्लोकेषु ढडीसु दहेसु वावीसु पुष्करिणीसु दीहियासु गुजालियासु सरेसु सरपत्तियासु सरपत्तियासु पत्तियासु विलपत्तियासु उज्जरेसु निज्जरेसु चिक्खलंसु पल्ललंसु दीवंसु समुद्देसु सल्लसुचेत्र जलस एसु जलठाणेसु एत्थण वादरवणस्सइकाइयाण पज्जत्तगाण ठाणा पसुत्ता । उच्चवाएण सल्लोए, समग्घा एण सल्लोए सठाणेण लोगस्स अस्सखेज्जइजागे । कहिण जते ! वादरवणस्सइकाइयाण अपज्जत्तगाण

भा सर्करप्रभा बालुगभा पङ्कपभा धूमप्रभा तमप्रभा तमप्रभा । एत्थण गेरदयाण चउरासिप्ति णियावास सयसदरसा भवतिप्ति मक्खाय तेण णिर या । इहा नारकौना द४ लाख नरकावासोक्के इम तीर्थकरे कल्लो तेकक्के — अतोवट्टायाहि चउरसा । माहि वाटनाकरिक्के वाहिर चीखूणो । अहे क्लुर प्य सठाणसठिगा । नोचै खुरणसस्थाने सस्थित्थे । निखिवियारतमसाववगय गह चट मर नक्खस जोरसि पहाय । नित्य अन्यकार तमसा गह चन्द स यं नचत् ज्योतिपीनो प्रभारहित्थे । वसा पूयपडिह नहिर मस चिक्खिल्लिप्ताणुनिवणतला । सभावे मेट वसा नधूत मास तिणे लीया हायपय । असु ई बीसा परमदुग्गिगधाकाथो अगणिवक्काभा । एतावता अपचित्थे महादुग्गव्यगरीर अग्निजलतो सरीग्वी अभावक्के जेहनी । कक्कडाफासा दुरहिया सा अमुमानरगा मुभानरएसु वेज्जथाथो । कर्कगस्यं असिपवपरे एदधा पाळा नगरताठामे अतीव अगुभवैदना भोगवैक्के । एत्थण गेरदयाण पज्जत्तगा

पाप्मनानगती यत्तमाना इति समुद्रघातगताः शुक्ललोकमा धुरयन्ति, उक्तञ्च-समुद्रघातेन शुद्धलोकैरेतः । अन्ये तु त्रिदधति-अतिवहव खलु वा दरा पर्याप्तैर्जरकायिका र्णैक पर्याप्तनित्रया असुख्ययानामपर्याप्ताना मुत्पादात् ते च सूक्ष्मेष्टपि स मुत्पद्यन्ति सूक्ष्माश्च सवत्र विद्यन्ते इति वादरा पर्याप्तैर्जरकायिका स्त्र २ भवनपर्यन्ते एतमारणान्तिक्कसमुद्रघाता सन्त सकलमपि लोक मापूरयन्तीति न कश्चिद्दोषः, अपि तु निरुपच रिततत्परकायिकसमुद्रघातप्रकृपणागुणस्यापनश्यन्नेनलोकस्यासुख्ययज्ञाने इति पर्याप्तनित्रया अपयाप्तानामुत्पादात्, पर्याप्ताना च स्थान मनुष्येभ्यः त च लाकासत्येयतमज्ञानमिति, मूलापयाप्तौ जरकायिकसूत्र सूक्ष्मपर्याप्तपयाप्तपृथिवीकायिकसूत्रवद्भावनीयः, गव वायुकायिकवन

ठाणा पणत्ता ? गोयमा । जत्येन वादरवणस्सडकाडयाण पज्जत्तगाण ठाणा तत्येन वादरवणस्सडकाड याण अपज्जत्तगाण ठाणा पणत्ता । उववाएण सव्वलोए समुग्घाएण सव्वलोए सठाणेण लोयरस अप्सखेज्ज डतागे । रुहिण जते । सुज्जमवणस्सडकाडयाण पज्जत्तगाण अपज्जत्तगाणय ठाणा प० ? गो० ! सुज्जमवण स्सडकाडया जे पज्जत्तगा जे अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अप्विसेमा अप्पनाणत्ता सव्वलोयपरियावयागा

अपवर्त्तनगाण ठाणा प० । दणाठामे नारकीपर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकक्षा । उववाएण लोयरस अस० समुग्घाण लोयरस अस० सह णेण लोयरस यम० । अपज्जत्ता लोकाकने यम० समुग्घातलाकने अस० स्सखत्तामेभागे । तत्थण बहवे नेरइयापरिवसन्ति । तिहा नारकी वसैक्के । कानाभा स गयीर लाम रुहिसाभोमा उमणगा परमाकिण्णपत्ता । कालोवाभा कातिजेइती भग्नेवसे उक्कट्टामक्के जेइना परम उक्कट्टवण कक्षा । तेण तत्थ निव्वभीया निव्वन्त्या निव्वन्मिया निव्वजगा निव्वपरमसुहसवधनरगभयं पच्चुग्घावसाणाविहरति । तिहा न स पास्ये परमाधामिक यकी नि त्य च मे मीहामीह नित्य मज्झिक्के नित्य परमअग्गुभ दक्खन्ते मक्कध जरक्कनाभय भागवता विसरे । रुहिणभने रयणप्पपुठ्ठो यर वाण पज्जत्त अपज्ज ताण ठाणा प० । किहो हभगवन् रत्तपमानारकी पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकक्षा । काहणभने रयणप्पपुठ्ठो निरया परिवसन्ति । किहा हभगवन्



रपनिजायिकमत्राण्यपि प्रत्येक त्रीणि २ ज्ञावनीयानि । तत्र वादरपयसिवायुनायिकसूत्रे भवनच्छिद्राणि स्रजानामवकाशान्तराणि भवनानि कुटा गजालादिकल्पा कचन भवनप्रदेशा नरकच्छिद्राणि नरकानि कुटा गजालादिकल्पा नरकावागुप्रदेशा भवविमानच्छिद्राणि विमानानि कुटा श प्रतिपक्ष्या , उवजाणलीगस्मयसस्रजेमृन्नागिनिशुत्यादि ॥ वायवोरपि पयासा अतिवह्यो यतो यत्र सपिण्ड तत्रवायु सपिण्डतुल्यनोक्त इति त्रिष्वप्यपतादिषु लोकास्या सख्येषु ज्ञानेषु त्यक्त अपयासादरगायुनायिकसूत्रे उवजाण समुगाणनवलीगति ॥ इह देवनारकजर्जल्य शपका यस्य सर्वज्ञा यादरापयासायुकायपु समुत्पद्यन्ते यादरापयासाश्चा उपान्तरालगतावपि लभ्यन्ते यद्गुनि च स्वस्थानानि वादरपयासापयसिगायुका

पयसा , समणाउसो । कहिण जते ! वेइदियाण पज्जात्ता पज्जात्ता ठाणा पयसा १ गोयसा ! उहुलोए तदेकदेसज्जागे , झुहोलोए तदेकदेसज्जागे , तिरयलोए झुगळेनु तलाएसु नदीसु वात्रीसु पुस्करणीसु दीहियासु गुजालियासु सरसु सरपतियासु सरसरपतियासु उज्जरेसु निज्जरेसु चिन्नलेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवसेसु स महेसु सवेसुवेव जलासएसु जलठाणेसु , एत्थण वेइदियाण पज्जात्तापज्जात्ताण ठाणा पयसा । उववाण लोगस्स झुसखेज्जागे , समग्घएण लोयस्स झुसखेज्जागे सठाणेण लोयस्स झुसखेज्जागे । कहिण

रतपभा नारकौ कह्ये—गायसा इमासेरयण्यनाण पडवीए असौउत्तर लोणसहरस वाहणाण उवरी ० ग जायपसहरस उगहिंसा हृष्ट चगचावण सहरम वज्जिता मर्कट चट्टत्तरे लोयणसयमहरसे । हेमोतम ए रतनप्रभाप्रधिवासे ८० योजन जाहपणे पवाधारे जपरि हजारयोजन म कोन हेठने ह नार मज्जेने मध्यविषे १००१०८ एककाख अठात्तरसस्र योजनपरिमाण । इत्थण रयण्यपुडवी केरियाण तोस निरयावाम सयमहसा हवतिंति मक्काय । तिहा रतनप्रभानारकौ तीसलाख नरकावासेरहेइ इम तीर्थकरे कक्षा । तेणनरगा अतीवडा वाहिचउरम अहेसुरण्यसठाणसठिगा । तेनरका वासामाहि बटकाकारे वाहिर चउरस नौच खुरयस सखानहे । निचधियार तमसा ववगय गह चउर नकुत्त जोयासपडा मय वसा पय पडल

विज्ञाना ततो व्यग्रारनयमतेना प्युपपातमधिकृत्य सकललोकव्यापिता घटते इति न कान्चित् क्षितिः, समुद्घातेन सकललोकव्यापिता सुप्रतीतिव सर्वेषु मूलेषु सवत्र च ताक तपा समुत्पादसम्भवात्, यादरापर्याप्तवनस्पतिकार्यिकसूत्र उद्यवागुणसङ्घलोगद्वयादरपयाप्तवनस्पतिकार्यिकाना स्व स्थान घटादध्यादि । तत्र यादरनिगादाना सवालादीना सम्भवात् मूलमनिगोदाना अवस्थितिरन्तर्मुद्रुत्त ततस्त यादरनिगोदेषु पर्याप्तपु समुत्पद्यमाना यादरनिगोदपयाप्तायुरनुन्नवन्त सुविज्ञादुत्पन्नमग्रनयदज्ञानन्युपगमन लब्धयादरपर्याप्तवनस्पतिकार्यिकव्यपदज्ञा उपपातेन सकलकाल सर्वे लाक व्याप्नुवति, तत उक्त-उपपातेन सवलोकै इति समुग्यागुण सङ्घलाय इति ॥ यदा यादरनिगोदा मूलमनिगोदेषु आयु वद्धा पर्यन्ते मारणा तिकसमुद्घातेन समवर्त्ता आत्मप्रदज्ञानुत्पत्ति दज्ञायावत् विक्षिपन्ति तदा यादरनिगोदपयाप्तायुरध्याप्य क्षीणमिति वादरपर्याप्तनिगोदा एव

ज्ञते । तद्विदियाण पज्जत्तापज्जत्तागाण ठाणा पयात्ता ? गोयमा ! उहुलोए तदेकंदेसत्ताए अहोलोए तदेक देसत्तागे, तिरियलोए अगळेसु तलाएसु वावीसु पुस्करणीसु दीहियासु गुजालियासु सरसु सरपतियासु सरमरपतियासु विलपतियासु उज्जरेसु निज्जरेसु चिप्तलेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु टीवेसु समुद्देसु सहेसुचेव जला सएसु जलठाणंसु एत्थण तद्विदियाण पज्जत्तापज्जत्तागाण ठाणा पयात्ता, उववाएण लोयस्स अस्सखेज्जइत्तागे समग्घाएण लोयस्स अस्सखिज्जइत्तागे सठाणंण लोयस्स अस्सखेज्जइत्तागे । कहिण ज्ञते ! चउरिदिदियाण पज्जत्तापज्जत्तागाण ठाणा पयात्ता ? गोयमा ! उहुलोए तदेकंदेसत्ताए, अहोलोए तदेकंदेसत्तागे, तिरियलोए

गहिर मम चिक्खिअमूमितलानिज्जानिज्जानेवत्तना । नित्य अग्घकार रहितत्वे गृह वद्र मयं नक्षत्र ज्योतिषोक्तौ प्रभा रहितत्वे मेढ वशा अधूत पहल क विर माम तणकरो चाकणात्ते हाय पग यरौर जेहना एतावता । अमरवासा परमदुर्भागधा काउय अगणिक्ख भा । अयविक्ख परमदुर्गंधकाय अग्नि वणं बलतौकातिक्के । कच्छउप्पासादुरहियासा अमभानरगा अमभानरएसु वेयणाओ पचणअवभाणाविहरति । कर्कयस्सयं दुखसहिवा एदवा माठानगर

समुद्गातगताद्यमज्जललोकयापिनद्येति समुद्गातेन सर्वलोकं स्वस्थानेन लोकस्यासत्येतमे जागे घनोदध्यादीना सर्वेषामपि समुदिताना लोकस्या  
सत्ययनागमात्रादित्वात् ग्रथाग्र २००० ओपसुगम एव ह्रीन्द्रियघ्नोन्द्रियचतुरिन्द्रियसामान्यत पञ्चन्द्रियसूत्राण्यपि ज्ञावनीयानि नवर द्वीन्द्रियादयो  
वत्तयो जलसम्भूता शृङ्गप्रप्लवत इति सर्वेष्वपि सूत्रेषु स्थानान्य वटादौनि शक्तानि, तथा जललोक तदेकदेशज्ञागे मन्दरादि वाप्यादिषु अधोलोके  
तदेकदेश अधोलोकिक्कयामकूटतटागादिषु ओपेषु पयुज्य स्वय परिज्ञावनीय, अधुना पर्याप्तापर्याप्तनैरयिक्कयानप्ररूपण, ये माह-कट्टिणभतेनेरया  
यमित्यादि ॥ कस्मिन् प्रदेशे नदत्तनैरयिकाणा पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रच्छन्ति यथान्ये प्यवयुध्यन्ते, कहिणमिति ॥

अगर्हसु तलाएसु वावीसु पुष्करिणीसु दीहियासु गुजालियासु सरसु सरपतियासु सरसरपतियासु णिज्ज  
रेसु उज्जरेसु चिन्नलंसु पल्ललंसु समुदंसु दीवंसु समुदंसु जलासएसु जलठाणंसु एत्थण चउरि  
दियाण पज्जत्ता पज्जत्ताण ठाणा पयत्ता । उववाएण लीयस्स अस्सखेज्जइन्नागे समुग्घाएण लीयस्स अस्स  
खेज्जइन्नागे, सठाणेण लीयस्स अस्सखेज्जइन्नागे । कहिण भते ! पचिदियाण पज्जत्ता पज्जत्ताण ठाण प०

नेठामै तिहा माठोवेटना भांगवताथका विचरैकै । एत्थण रयण रयण पुठवी येरइयाण पज्जत्तपज्जत्ताण ठाणा प० । एणै प्रकारे रतनप्रभा नार  
कोना पर्याप्ता अपर्मासा रहैकै । उववाएण लीयस्स अस० समुग्घाएण लीयस्स अस० । जपजवां लोकने अस० समुद्गातलोकने अस०  
स्वस्थानलोकने अस० । तत्थण वइवै रयणपम पुठवाणरइया परिवसति । तिहा घणा रतनप्रभा नारको वसेकै ते केइवाकै । कालाकालाभासा गभीरको  
महरिसा भीमा उत्तासणगा परमकिण्वणण पत्ता पणत्ता । कालाकाली आभाकै प्कटरोमकै जेइना वासताथका परमकालेवणकह्या । समणावसो ।  
पडाअमणो आयुपावत्तो । तेण निच्चभौया निच्चत्त्या निच्चत्तिसया निच्चवणा निच्चपरमसुहसवधनरगभय पच्चणभवमाणा विहरति । नित्य वीहता नि  
त्य वासयाकै नित्य वहिरनकै नित्य परमअसुसववी नरकना भयप्रते भांगवता विचरै । कहिणभते सकरपमपुठवीयेरइयाण पज्जत्ताण अपज्जत्ताण

एकस्मिन् प्रदेशे यमिति वीर्यालङ्कृतौ नैरयिता परिग्रसन्ति । जगवानाह-गीतम स्वस्थानेन सप्तपृथिवीषु ता एव नामग्राह माह-तजरा ॥ रय  
 शप्यन्नागइत्यादि ॥ गतायं गत्यगमित्यादि ॥ अत्रै तासु पृथिवीषु सप्तसु पृथिवीषु नैरयिकाणां सप्तसङ्ख्या चतुरशीतिनरकावाप्तसप्तसहस्राणि न  
 वन्ति तथाहि-रत्नप्रभाया त्रिशन्नरकावासप्तसहस्राणि जयन्ति शक्रप्रभाया पञ्चविंशतिशतसहस्राणि बालुकप्रभाया पञ्चदशलक्षा पट्टप्रभाया  
 दशलक्षा धूमप्रभाया त्रीणिशला तप्तप्रभायामेक शतसहस्र पञ्चोत्तमस्तप्तप्रभाया पञ्चोत्तमस्तप्तप्रभाया चतुरशीतिलक्षा नरकावासानां  
 मित्याख्यात मया शीर्षे य तीयकङ्क्षि । तेनरकावासाऽऽद्यादि ॥ तेनरकावासाऽऽद्यादि । सर्वेपि प्रत्येकम लम्बेयजाने वृत्ताकारा  
 बहिर्भागे चतुरस्रा चतुरस्राकारा इदञ्च पीठोपरिवत्तन मध्यभागम धिष्ठित्य प्रोच्यत सकलपीठाद्यपेक्षया त्वा वलिका प्रविष्टा वृत्तत्र्यस्रचतुरस्र

? गोयमा । उट्टलोए तटेकटेसन्नागे अहोलीए तटेकटेसन्नागे तिरिग्रलोए अग्रफेसु तलाएसु नदीसु दहेसु  
 वावीसु पुस्करिणीसु दीहियासु गुजालियासु सरसपतियासु विलपतियासु उज्जरेसु णि  
 ज्जरेसु चिन्नलेसु पल्लंसेसु वप्पिणंसेसु दीवेसु समुहेसु सवेसुचेव जलासएसु जलछाणेसु एत्थण पचिदियाण  
 पज्जत्ता पज्जत्ताण ठाणा पसत्ता, उववाएण लोयस्स अस्सखेज्जइन्नागे, समुग्धाएण लोयस्स अस्सखिज्जइ  
 न्नागे, सत्ताणेण लोयस्स अस्सखेज्जइन्नागे । कहिण जते । नेरइयाण पज्जत्ता पज्जत्ताण ठाणा पसत्ता ?

ठाणा प० । किंवा हेभगवन् शर्करप्रभाप्रस्थिवीना नारकीना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठाम कक्षाकै । कहिणभते सक्करप्पभपुट्ठी केरइया परिवसति । कि  
 हा ते भगवन् रत्नप्रभानारकी रत्नाकै । गोयमा सक्करप्पभाए पट्ठीए वत्तीसत्तरजावणसप्तसहस्रबाहस्राए उवरिएगजोवणसप्तसहस्र उग्याहिता द्विद्विवेग  
 जीवणसप्तस वज्जिप्ता । हे गौतम शर्करप्रभाना पृथिवीये एकलाख वत्तीसहजार जाडपणे तेइने जपर एकहजारजीवन मूकीने हेठले एकसहस्रगोज  
 न मूकीने । मग्गे तीसत्तरजोवणसप्तसहस्र वज्जिप्ता । मध्य एकलाख वत्तीसहजार जाडपणे । एत्थण सक्करप्पभपुट्ठी केरइयान पणवोस तिरियावासस

नस्थाना प्रतिपत्तव्या कर्मगुरूप्यसंठाणसंठियाइति ॥ अघोर्जूमितले शुरप्रस्थेव प्रहरणविघोषे तस्मान्नमाकारविघोषे स्तीक्ष्णतालक्षण स्तेन स स्थिता, स्तथाहि-तेषु नरकावासेषु भूमितले मष्टणत्वाजावत शकारिल पादेषु न्यस्यमानेषु शकारमात्रमस्पर्शीपि शुरप्रणेव पादा-कृत्यंत, निचुच यारतमसाइति ॥ नित्यान्यकारा उद्योताजावतो य तम स्तदिह तम उच्यते तन तमसा नित्य सवकालमन्यकारा स्तत्रा पवरकादिष्विव नामान्य कारा स्ति केवल वहि सूप्रकाशो मन्दतमो भवति नरकेषु तीर्थंकरजन्मदोक्षादिकालव्यतिरेकणा न्यदा सवकालमपि उद्योततोगस्या प्य जावतो जात्यन्यस्मेव मेयच्छब्दकालादुरावद्वा तीव्र वहलतरो वत्तत तत उक्त तमसा नित्यान्यकारा तम य तत्र सदावस्थित मुद्योतकारिणाम सत्त्ववात्

कहिण भते । नेरइया परिवसति ? गोयमा । सठाणेण सत्तसु पुढवीसु तजहा-रयणप्पन्नाए सक्करप्पन्नाए वालुयप्पन्नाए पक्कप्पन्नाए धूमप्पन्नाए तमप्पन्नाए तमतमप्पन्नाए एत्थण नेरइयाण चउरासि निरयावास सयहरसाइ भवतीति अस्काय, तेण णरगा अतोवहा वाहिचउरसा अहे खुरप्पसठाणसंठिया निच्चययार तमसा ववगयगहचदसूरनरक्तजोइसपहा मेढवसापूयसुहिरमसचिक्खल्लित्ताणुलेत्रणतला अुसुईवीसा परम

यमहस्या भवतीति मत्वाय । इहा शर्करप्रभा पृथिवीनानारको पचवीसत्ताए नरकावासे वसहे इम तीर्थंकरे कच्छोक्ते स्वयमुखे प्रहृष्ट्या । तेण नरगा अ तावटावाहि चउरसा अहेसुरप्पसंठिया । त नरकावासामाहि वाटला वाहिर चौरगहे नीचे खुरप्प सठाणेक्के । निचुधियार तमसा ववगयसरचदगहन खत्त जासिसियमनामेयवसापूयपडलरुहिरमासचिक्खल्लित्ताणसेवणतला । नित्य अन्यकारे तमकरके गयाहे सूर्य चद्र गृह नक्षत्र ज्योतिषीनो प्रभ प्रभ, ख मेढ वणा पूतपडल रुधिर मास तेणकरो चोक्काहे हाय पगना तला । अगुर वीसा परमदुधियगवाकांशो अगणिवसाभा । अपविच दुग्गेवकाय लो डा धमनो जहेनेहव तेहवो आभा बाली छट्ठो सातमौवर्जी कक्खडफामा दुराडिगसा असभानरगावासा असभानरगसेवणा । कर्कयस्सगळे दुखे अहि वासयवोव्या एहवसाठा नगरना । एत्थण सक्करप्पनपुढो नेरइयाण पल्लतअपत्तगाण गठा प० णिहा शर्करप्रभापृथिवीना नारको पगोपता प्रपवोपता

तथाचाच ववगयगवदसूरमक्षसजोडसिधपत्ता ॥ व्यपगत परिणहो ग्रन्थस्वसूरनररुपाणामु पलक्षणमे तत्ताराकपाणा ह्य ज्योतिष्काणा पन्थाना  
गा यन्त्य स्मे व्यपगतग्रहचद्रमयनतवत्यातिक्रमण्या तथासमग्रमापूरुषाधिरमसचिकित्सालित्तानुलवणतलाइति ॥ स्वन्नावसपत्ने मंदोवसापूतिरुधि  
रमासै यथिस्थित कटम तेन लिप्तमु पदिश्य अनुलेपनन सुरुक्षितस्य पुन पुन सप्तपन्नन तलभूमिका यथा त भटोवशापूतिरुधिरमासचिप्रित  
ह्रितिसानुनपन्नतना अतगया शुचयो पवित्रा बीभटमा दक्षनप्याति जुगुप्सात्यस क्षचित् बीसा इति पाठ सात्र विद्या आनान्तिका परमदुरभिगधा

दुष्प्रिगधा काञ्जयगणिवत्तात्ता कररुक्तात्ता दुग्धियासा अस्सुन्ना नरणा अस्सुन्ना नरपुसु वेयगासु पत्यग  
नरइयाण पज्जत्ता पज्जत्ताण ठाणा पयात्ता, उववाएण लीयस्स अस्सखेज्जइजाण, समग्धाएण लोउरस अ  
सखेज्जइजाणे, सठाणेण, लीयस्स अस्सखेज्जइजाणे, एत्थण वहवे नेरइया परिवसति काळा कालाज्जामा म  
नीरलोमहरिसा जीमा उत्तानगगा परमकरहा वणेण पयात्ता, तेण तस्य णिच्च नीया णिच्च तत्ता णिच्च  
तसिया निच्च उव्विग्गा णिच्च परममसुन्नसवच्छनरगज्जय पच्चणुस्रवमाणा विहरति । कहिण ज्ञते । रयणप्पज्जा  
पुढवीनेरइयाण पज्जत्ता पज्जत्ताण ठाणा प० ? म्हिण ज्ञते ! रयणप्पज्जापुढविनेरइया परिवसति ? गो० !  
इमीने रयणप्पज्जाए पुढवीए असीउत्तरजीयणसयसहस्सवाहत्ताए उविरि एग जोयगमहस्समोगाहिता

ना ठानकज्जा । उववाएण लायस्स यस० समग्धाएण नीया यस० सठाणएणाउम्म य० । उपज्जवालाकमे य० स्वयानलोकेने य० सम० न् ० प्यातमेभागे ।  
तत्थण वहवे सक्कर पभपटो नेरया पारवसात । तिहा वणा गकरप्रभाता नारनी वसेक्क । कालाकालाभासा गनीरलामहरिसा भोमाओसासणगा पर  
सक्तिहा वण्ण प० । त स्थानक कालाकाला यभाक्के ज्ञदने भवन्न वमे उत्कटरामक्के ज्ञदना भय तरा कपक्के वरकट वण्णे परमकाला दुत्ताक्के । नमणा  
इया । इहायमपा अयुपावत्ता । तथए ते नच । या नच । या निववसिया तिच्चुवग्गा निवपरममसुन्नसवच्छनरगभय पच्चणुभमाणा विहरति । ति

मृतगादिकेवरेभ्यो एव तीव्रा निष्टदुरागिन्या ॥ काजग्रगणिवलाज्ञा इति ॥ लोहे धम्ममाने यादृक् कपोतो दधुरुजस्तपो गे वंशं किमुक्त जवति  
यादृशी यदुक्रान्तग्रन्थे अग्निवलाज्ञा विनिर्गच्छतीति तादृशी आज्ञा आकारो यथा ते कपोताग्निवर्णाज्ञा धम्ममानलोहाग्निवलाज्ञा इति ज्ञा  
व , नारकोत्पत्ति स्थानव्यातिरकणा न्यत्र सद्यथा एव एतदुपलब्धतात एतच्च यत्पुस्तकमेव यथीवज्जम वनय , तथा च वक्ष्यति नवर ॥ छत्तसत्तमोमुक्ताज  
गणिवलाज्ञानमवति ॥ तथा ककशा एतदु सहो सिपत्रस्यैव स्पर्शयिषु ते ककशाभ्यर्णा , अत गत दुरागिन्या इति ' दुरागिन्यास्यन्ते सत्त्वान्त दुरागिन्यासा

हेठाचेग जोयणसहस्स वज्जिज्ञा मज्जे अठहत्तरिजोयणसयसहरसं एत्थण रयणप्पन्नापुढविनेरडयाण तीस  
निरयावासासयसहस्सा नवतीति मस्काय , तेण नरगा अतो वहा आहि चउरसा अहे खुहप्पसठाणसठिया  
निच्चययारतमसा ववगयगहचदसूरनस्कत्तजोडसपहा मंदवसापूडयपळलसहिरमसचिक्कल्लित्ताणुलेवणतला  
असुइवीसा परमदुस्सिगधा काजअग्निवन्ताज्ञा कस्करासा दुरहियासा असुन्ना गरगा असुन्ना नरगेसु वे  
दणां एत्थण रयणप्पन्नापुढविनेरडयाण पज्जिज्ञा पणत्ता , उववाएण लोयस्स अस्सखेज्जा

ज्ञा ते नित्य वो-है परमाधामायेकरो नित्य चाख्या नित्य चदिग्ग नित्य परमभसखवधी नरकनाभय भोगवतायका विचरे-है । कदिग्गभते वालुयपभपु  
दवीयेरडयाण पज्जत्त अपज्जत्ताण ठाणा प० । किहां हेभगवन् वालुकपभापृथिवी नारको पर्याप्ता अपर्याप्ता ना ठामकथा । गोयमा वालुगपभापु  
दवीये अट्टादीमत्तर जागणसयसहस्स बाहलाए चवरि पण्णायण सहरम चरगादिता । हेगौतम वालुकप्रभा पृथिवीये एकलाख अट्टावीसहज्जार लाड  
पणे बाह्य तेहमांहि एकसहस्रयांजन ऊपरमूकोने । विट्ठविगजोयणसहरम वज्जिज्ञा मज्जे अट्टावीसहस्रयसहरसे । हेठे एकयांजन सहस्र मूको  
ने मध्य विचे एकलाख अट्टावीसहज्जारो अवकाय । एत्थण वालुगपभपुढवी केरडयाण पसरनिरयावासासयसहस्साभवतिमक्खाय । तिहा वालुकप्रभा  
पृथिवीना नारकोना पनरेलाख नरकावासाके केवलाज्जानीये कक्षांहे । तेणनरगा यतोवडा बाहि चउरसा लाव असुभानरगा असुभानिरएसु येयणा

अज्ञाना दर्शनतो नरका स्तथा गय्यरसपञ्चशब्दे रज्जुभा श्रीतीवा सातरूपा नरकेषु घेदना ॥ सत्यमिन्त्यादि ॥ यावत् सत्यगव्यवेनेरयापरिवसन्ति  
कालादित्यादि ॥ काला कृष्णा तत्र कोपि नि प्रतिपद्यतया मन्द कृष्णोपि भवति तत् स्तदा शक्यवच्छेदार्थं विशेषणान्तरमाह-कालावभासा का  
त कृष्णा घनास प्रतिप्राविनिर्गमो यस्य स्तो कालावभासा कृष्णप्रज्ञापटनोपचिता इति ज्ञाव , अत यत् गम्भीरलोमहृषा गम्भीरो उत्तीवो रक्तो

इज्जागे, समुष्ठाण लोउस्स अ्सखेज्जइज्जागे, सठाणेण लोयस्स अ्सखेज्जइज्जागे । तत्थण वहंवे रयणप्प  
ज्जापुढविनेरइया परिवसति । काला कालान्नासा गम्भीरलोमहरिमा ज्ञीमा उत्तासणगा परमकिण्हा वत्तेण  
पणत्ता , समणाउसी । तेण णिञ्जु ज्ञीया निञ्जु तस्या णिञ्जु तसिया णिञ्जु उज्झिगा निञ्जु परममसुन्नसव्थ  
नरगज्जय पञ्चणुस्रवमाणा विहरति । कहिण ज्ञंत । कहिण ज्ञंत । सक्करप्पन्नापुढविनेरइयाण पज्जत्ता पज्जत्ताण ठाणा  
पणत्ता ? कहिण ज्ञंत , सक्करप्पन्नापुढविणेरइया परिवसति ? गोयमा ! सक्करप्पन्नापुढविणेर वत्तीसुत्तर  
जोयणसयसहस्सवाहत्ताए । उवरि एग जोयणसहस्स उग्गाहिता हेठा वेग जोयणमहस्स वज्जित्ता मज्जे

यो । ते नरकावासासाहि हत्ताकार वाहिरचौरस यावत् अग्रुभ नरकावासा अग्रभनरकौ वेदना भोगवता । पत्थण बालुण्णभपटवौणेरइयाण पज्जत्त  
अपज्जत्ताण ठाणा प० । इण्ठामे बालकप्रभा नारकीना पर्याता अपर्याताना ठामकक्षा । उववाभोलोयस्स अस० समुष्ठाणलोयस्स अस० सहाण  
लायस्स असख्खलभागे । कपज्जोलाकने असत्वातलोकने अस० स्वयानलोकने अस० । तत्थणवहवेवालुयपभपटवौणेरइया परिवसति ।  
तिहा घथा बालकप्रभाना नारकी बमैहे । कानाकालोभासा जाव निञ्जु परममसहस्रवन्नरगभय पत्थणभवमाणा विहरति । कालाग्रौरे कालीश्राम  
के यावत् नित्य परमपसखसवधी नरकनाभय प्रतिभोगवता विचरेहे । कहिणभते पकापभपटवौ केरइयाण पज्जत्त अपज्जत्ताण ठाणा प० । तिहा हे  
भगवन् पद्मप्रभानारकी पर्याता अपर्याताना ठामकक्षा । पकापभपटवौण वीसुत्तरलोयणसयसहस्सवाहत्ताए उवरि एगजोयणसहस्स उग्गाहिता । हे



लोमएर्षा लोमोदुर्वीजययणात् येन्य स्ते गज्जीरलोमएर्षां किमुक्त प्रवर्ति एव नम कृताः कृताधमासा पे दर्शनमात्रेपि शोपनारकजन्तना जयसपा  
इनन मात्रातिग लोमहपमु त्यादय क्तीति, अत गव जयानका ज्ञीनत्वा देव उत्रासनका उत्रास्यस्त शोपनारजा जन्तव यन्नि रित्युत्रासन उत्रासना  
गव उत्रासनका किम्बहुना वर्णेन वक्ष्यमपि कृत्य परमरुता यत ऊर्द्धे न किमपि कृतम स्ति जयानकवा वष्टकप्रमातरुस्तवर्णां प्रज्जप्ता मया अपि

तीमुत्तरजोयगमयसहस्रे ऐत्यण सक्करप्पज्जापुढवी नेरडयाण पगधीसं निरयावासासहससा हवतीति मरकाय  
तेण नरगां अतो वहा वाहि चउरसा अहे खुरप्पसठाणसिठ्ठिया णिन्नुअयारत्तमसा ववगयगहचदसूरणरक  
त्तजोडनपहा मेयवसापूयपफलरुहिरमसचिखिक्खलित्ताणुलेवणतला असुडंवीसा परमदुम्विगधा काळञ्चुगणि  
वसाज्जा करकफासा दुरहिवासा असुज्जा नरगा असुज्जा नरगेसु वयणात्तु ऐत्याण सक्करप्पज्जापुढविणेरड  
याण पज्जत्ता पज्जत्ताण ठाणा पणत्ता । उचवाएण लायस्स असखेज्जडजागे समुच्चाएण लोयस्स असखे  
ज्जडजागे सठाणंण लोयस्स असखेज्जडजागे । तत्याण वहवे सक्करप्पज्जापुढविणेरडया परिवसन्ति । काला

गीतम पङ्कप्रभाषयिषीये एकलाख बीसहजारगोजन बाह्य कपरिनेपासं एकहजारगोजन छाडोने । हिड्ड वेग जायगसहस्र वज्जिन्ता मज्जे यद्वारमुत्तर  
नीयणमयसहस्रे । इठे पिण एकहजारगोजन छाडिडे विचे पकलाख चठारैरहजार अवकाये । ऐत्यण पकपभ पुढनी णेरडयाण दस निरयावाससवस  
इस्स भवतीति सखाय । इहा पङ्कप्रभाषयिषीयाना दशलाख नरकावासा भगवन्ते कल्ला इम । तेण नरगा अतोवहा वाहि चउरस जाव यसहा निर0स  
वेगणां । ते नरकावासाभादि बाटलाकारै नाहिर चउरग यावत् अयभनरकनी वटना भागवेळे इम । ऐत्यण पकपभपुढनी णेरडयाण पल्लसयपल्ल  
साठठाणा प० । इहा पङ्कप्रभानारकी पयात्ताअपर्यात्ताना ठा.मकल्ला । उचवाएणलोयस्स अस्स सड्याण अस्स । ऊपजवोलीकने  
यमव्यात्तसगागे, समुद्घातलाकने असव्यात्तमेभागे स्सयात्तकलाकने अस० । तत्याण वहवे पकपभपुढवीणेरडया परिवसन्ति । तिहा घणा पङ्कप्रभा नार

अतोयमरे ऐवमग ॥ ऐवयुष्मन् ॥ तेण निचज्जीया इत्यादि ॥ ततो नैरविक्कायमिति वाञ्छालकारे, नित्य सर्वकाल जेअल्लजायअनितसहा निवद्वान्यनार  
द्वगनसो ज्ञीता नित्य सबकाल तत्ता परमाधामिकपरसरोदीरितदु क्लृप्तस्यातत्रया दयपि नासमु पपत्ता नित्य सबकाल परमाधामिके पर  
स्पर ना अगमिता ॥ अथ आरितः तथा नित्य सबकाल यथायोग परमदुस्सहशीतोत्प्रेदनानुभवत परमाधामिकपरसरोदीरितदु सानुभवत द्यो

कालोन्नासा गन्तीरलोमहरिमा ज्ञीमा उत्तासणगा परममिग्गहा वखेण पस्सत्ता । समणाउसो ! तेण निच्च ज्ञीता  
निच्च तत्या निच्च तसिया निच्च उहिग्गा निच्च परममसुअसवद्ध नरगंअय पच्चणप्पवमाणा विहरति । कहिण  
अने । वालुयप्पन्नापुढवीणेरइयाण पज्जत्ता पज्जत्ता ठाणा पस्सत्ता ? गोयमा । वालुयप्पन्नापुढवीए अण्ठा  
वीसुत्तरजोअणसयमहसंमवाहत्ताए उवारे एग जोयणसहस्स उग्गाहिता हेठा वेगजोयणसहस्स वज्जित्ता मज्जे  
तद्धीसुत्तरजोयणनयसहस्से एय्यण वालुयप्पन्नापुढविणेरइयाण पस्सरसनिरयावाससयहस्सा अन्नवतीति मस्का  
य । तण नरगा अतो बहा वाहि चउरसा अणे सुअप्पसठाणसठिधा निच्चधवारतममा ववगयगहचटसू

को यमेहे । कालाकोलोभासा जाव निच परममसहसवद्ध नरगभव पच्चणभवाणा विहरति । कालाकालो आभा दावत् नित्य परमअसुसवधी नर  
कोभय प्रतिभ गता विचरहे । कहिणभते धूमपमं पढवो णेरइयाण पज्जत्त अपलत्ताण ठाणा प० । किन्ना हेभगवन् धूमप्रभानोनारको पर्याता अ  
पवातागठाम कच्छाहे ते कहैहे । गोयमा धूमपभाए पुढवीए अण्ठारसुत्तरजायणसयसहस्सकावइहाए । हे तम धूमप्रभानानारको एकल्लाए अठारिइजा  
र याजनप्रमाण लाउपणे । अवर एगजोयण सहरस वगारहिता । जपरि एकइजारजोअन मू को तेकहेहे । हिक्कावेगजोयणसहरस वज्जित्ता । एकइजा  
रयाचन बज्जिने । मअल सालससर कोयणमयसहस्से । विचाले एकल्लाखसोलइजारनाहि पिडहे । एय्यधूमपमपढवोणेरइयाण तिअनिरयावाससयसा  
इहा भवोतात्तमत्ताय । इहा धूमपभाएपिबो नारकोना तीनल्लाख नरकावासा कहवा तीर्थसरेकच्छाके । तेणनरगा अतोबहा वाहि चउरसा जाव

इत्यादिगतायां ॥ तिर्यग्पञ्चिन्द्रियमत्र प्राग्वत् नवर ऊर्ध्वलोके तदेकदेशे तिर्यक् पञ्चेन्द्रिया मत्स्यादयो मन्दिरादि वाप्यादिषु अधोलोके तदे

लमग अष्टुत्तरमेवहेठिमया ॥ १ ॥ अष्टुत्तरचवत्तीस तृतीसचैवसयसहस्ससु अष्टारमसोलसग चोद्दसमहिंय  
तुठ्ठीए । अष्टतेवन्सहस्सा उवरिमहोन्नज्जितोन्नणिय मज्जेउतिसुसहस्से सुहोतिनरगातमतमाए । तीसा  
यपत्तवीना पत्तरसदसेवसयसहस्साइ । तिन्नियपचूणेग पचेवअणुत्तरानरगा ॥ ४ ॥ कहिण जने ! पचि  
दियतिरिक्कजोणियाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा प० ? गो० ! उहुलोए तदेकदेशमाए अहोलोए तदेकदेश  
माए तिरियलोएसु अगगेसु तलाएसु नदीसु दहेसु वावीसु पुक्करिणीसु डीहियासु गुजालियासु सेरेसु स

रपिण्ड गर्फरपभानो एकलाख वसोसहजार एकलाख वसोसहजार एकलाख वसोसहजार एकलाख सौलहजार एकलाख ८  
हजार पमर्व पृथिवीनो पिण्डकक्षा, द्वि नरकनो भवकायमान कह्ये—अष्टुत्तरचतुस कृत्तीसचैवसयसहस्ससु अष्टारससोलसग चउदसमहिंयतुच्छो २ ।  
एकलाख अठहसरहजार रतनपभा एकलाख तीसहजार श० एकलाख कृत्तीसहजार बा० एकलाख अठारहजार धू० एकलाख सौलहजार प० एकला  
खचौदेहजार त० प्र० छठोपृथिवीनो । अष्टतिवणसहसा उवरिमहवज्जिज्जणतोभिणिय मज्जे तिसयसहस्से सुहुतिहृनरगातमतमाए ३ । साढावावनहजार  
र सातमोयोजन ऊपर मूकीने साढावावनहजारर्योजन छेठे मूकीने मध्यत्रिचै तीनहजारर्योजन भवकाय तमतमापृथिवीये हवे । ३ । तीसायपण  
वोसा पणसरदसेवसतसहसाइ तिणियपचूणे पचेवअणुत्तरानरगा । ४ । द्वि नरकावासानो सख्या कह्ये, ३००००० तीमलाख नरकावासा पचवो  
सलाख नर० पनैलाख नर० दशलाख ४० तीमलाख नरकावासा पचे जन एकलाख नरकावासा तमप्र० । ४ । कहिणभते पचेदियतिरिक्कजोणिया  
ण पज्जत्ताअपज्जत्ताण ठाणा प० । किंइा द्वि हेभगवन् पचेदिय तिउचोनिगाना पर्याप्ता भयर्वाप्ताना ठामकक्षा । गोयमा उहुल्लोणतदेकदेशमाए  
अहोनीएतदेकदेशमा० तिरियलोए । हेभोतम उर्ध्वलोके एकदेशभागे अधोलोके एकदेशभागे तिरिक्केलोके । अगगेसु तलाएसु नदीएसु दहेसु वावीसु पुक्कर

रपतियासु सरसरपतियासु विलपतियासु उज्जरेसु निज्जरेसु चिह्लेसु पल्लेसु दीवेषु समुद्देसु स  
 हंसुचेव जलासएसु जलठाणेषु एत्थण पचिदिमतिरिक्खजोणियाणं पज्जतापज्जत्ताण ठाणा प० । उववा  
 एण लंगरस झसखेज्जइन्नागे । समुग्घाएण लोयस्स झसखेज्जइन्नागे । सठाणेण लोयस्स झसखेज्जइन्नागे ।  
 कहिण जने । मणुस्साण पज्जतापज्जत्ता ग ठाणा प० । झुत्तो मणुस्ससिखित्ते पणयान्नीसाए जोउणसयसह  
 स्सेसु झुह्वाइजेसु दीवसमुद्देसु पन्नरससु कम्मन्नूमीसु तीसाए झुकम्मन्नूमीसु लप्पन्नाए झुतरदीवसु एत्थण  
 मणुस्साण पज्जतापज्जत्ताण ठाणा प० । उववाएण लोयस्स झसखेज्जइन्नागे समुग्घाएण सख्खोए सठाणे  
 ण लोयस्स झसखेज्जइन्नागे । कहिण जने ! जवणवासीण देवाण पज्जतापज्जत्ताण ठाणा प० ? कहिण

लोम नीहियासु गुह्यालियासु मरेस सरपतियास विनपतियास । वूपे तलावे नदी द्रह वावि पुष्करणे दोर्वित्ता गुह्यालिका सर सरपातिनेविपे विनपा  
 तावयै उज्जरेस निज्जरेसु विल्लस पल्लस पल्लस दीवेषु सम-स सखेसुचेव जलाससु जलठाणेषु । सर्वविपे पवत पाणोनीभरणे चीकण्ठामे पालरपा  
 णीठामे हीपे समुद्दे सर्व जलायये जलठामे । एत्थण पचेदियतिरिक्खजोणियाण पज्जत्तअपज्जत्ताण ठाणा प० । इहा पचेदिय तिथेवगोनियाना ठाम प  
 यरिता अपर्याप्ता कक्षा । उववाएण लायस्स अ-स समुग्घाएण लायस्स अ-स सठाणेण लोयस अ-स । अपज्जवोलीकने अ-स समुद्दे तलोकने अ-स स्खानलोकी  
 असव्यातामेभागे । काहणभते मणुस्साण पज्जत्तअपज्जत्ताण ठाणा प० । किहो हेमगवन् मनुप्पना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकक्षा । गोयमा प्रतोमण  
 सखित्त पणयालीमाए जोयणसहरसेसु । हेमोतम मनुत्थज्जवनादि ४५ लाखोजनविपे । अउट्टाऽल्लोसु दीवसमुद्देसु पन्नरसकम्मन्नूमीसु तामाए अकम्मभूमा  
 सु छपद्वाएअतरदीवस । अउट्टाइह पविपे समुद्दे दीप १५ कर्मभूमिपे नोस पकर्मभूमिपे ५६ पतरदीपे । एत्थण मणुस्साण पज्जत्त अपज्जत्ताण ठाणा  
 प० । इहा मनुत्थ पर्याप्तो अपर्याप्तो कक्षा । उववाएण लोयस्स अ-स समुग्घाएण लोयस्स अ-स सठाणेण लोयस्स अ-स । अपज्जवो लोकीने असव्यातामेभागे रम

कदेशे अयोतोकिग्रामादिषु मनुष्यसुत्रमपि मृगम, नगर ॥ समुद्यागमधृतोपइति ॥ केवलिसमुद्रातमधिरुत्य सम्रातिजननपरितस्थान प्रतिपादनाय  
मार-कारिण अत भवणवासीगदवाणमित्यादि ॥ असीउत्तरजोगनयमहरसवाएलायइति ॥ अशीत्युत्तर अशीतिसहस्राधिक्योजनगतसन्ख याह  
त्य यस्या सा तथा तस्या ॥ सप्तत्रवणकोलीउ वावत्तरिभवणवासमयसहरसप्तत्रवलीति मफलायमिति ॥ असुकुमाराणा हि चतु पष्टिशतसहस्राणि  
त्रवनाना तत सबसह्या यथोक्त त्रवनसह्यान त्रवति ॥ तेण अत्रागइत्यादि ॥ तानि ण मिति वाक्पालङ्कारे पुस्त्य प्राकृतत्वात् त्रवनानि बहिर्  
स्तानि वृक्षाकाराणि अत समचतुरस्याणि अधस्तनभागे पुकरकर्णिंसासस्थानसस्थितानि कणिकानाम उन्नतसमचित्रविन्दुकिनी ॥ वकिन्नतरविउलगभी

अत्रणवासीदेवा परिवसंति ? गो० । डमीने रत्रणप्यत्रापुढवीए असीउत्तरजोगनयसहस्रसवाहस्राए उ  
वारि एग जोगनसहरस उगाहिता होचेठाग जोगनसहरस वज्जिता मज्जे अठुहत्तरिजोगनयसहस्र ए  
त्यण अत्रणवासीदेवाण पज्जितापज्जत्ताण सप्तत्रवणकोलीनु वावत्तरिच अत्रणावासयसहस्रा हवतीति  
मस्काय, तेण अत्रणा वाहि वहा अतो समचउरसा अहे पुस्करकन्निवासठाणसठिना उकिस्सतरविउलग

ह । लाकन अ० स्स्थानलाकने अ० । कहिसमत भवणवइदवाण पज्जत अपज्जत्ताण ठाय, प० । किहा हेभगवन् नानयासौदेव पर्याता अपर्वासाना स्थान  
कथा । कहिसमत भवणवासीदेवा परिवसति । किहा हेभगवन् भवनपतीदेवता वसेक्के । गोगमा इमोसेरयणभाणपुढवोए असौउत्तरजोगनयसहस्र  
व इस्साण । हेमोतम ए रत्तमप्रभापृथिवीने एकलाख असीयोजन प्रमाणमाहि । उवारि एगजोगनसहस्रम त्रगाहिता हिष्ठाएगजोगनसहस्रम वज्जिता । ज  
पर एकजजारयोजन प्रमाण मूकोने हेठे एकजजारयोजन मूकोने । मज्जा अठुत्तरजोगनसहस्रसे । विचाने एकलाख ७८ हजार योजन । तत्थण भवण  
वासोदेवाण सप्तभवणकोलीआ । तिहा भवनपती देवताना सातकोडा ऊपर । वावत्तर भवणवासयसहस्रा हवतीतिमक्याय । ७२ लाख भवनपती  
मयाहे तीर्थनरै कथ्यो । तेण भवणावाहिबहा अतोसमचउरसा अहेसु पुस्सरकणिया सठाणसठियाओ । ते भवनपतीना भवन वाहिर बाटलाकार मा

रसायफलित्वाद्वाति ॥ उदकीण मित्रो रकीण मतीव व्यक्तमित्यर्थः, उदकीर्णमन्तरयासा सातपरिसाणा ता उदकीर्णान्तरा क्रिमुक्त प्रवति साताना च परिसाणा च स्पष्टवत्त्वयोर्मीलनार्थं सपात्तराले महती पाली समस्तीति सातानि च परिसा थ सातपरिसा उदकीर्णान्तरा थिपुना थिलीणां गम्भीरा अलब्धमध्यन्नागा सातपरिसा यया भवनाना परित स्तानि उदकीर्णान्तरविपुलगभीरसातपरिसानि सातपरिसाणा चाय प्रतिविज्ञाय परिसा वपरिविज्ञाला अथ सङ्कुचिता, खात तू भयत्रापि सममिति ॥ पागारहाल कपाठ तोरण पङ्क्तिद्वारदेसन्नागाइति ॥ प्रतिप्रजनप्रकारेषु ज्ञा लामुग्रहालककपाटतोरणप्रतिद्वाराणि अहालककपाटतोरणप्रतिद्वाररूपदेशन्नागा देशविशेषायेषु तानि प्राकाराहालककपाटतोरणप्रतिद्वारदेशन्ना गानि तत्र अहालका प्राकारस्योपरि ज्ञत्याग्रयविशेषा, कपाटानि प्रतोलीद्वारसक्तानि गतन प्रतोत्य सवत्र सूचिता अन्यथा कपाटानाम सभवा त् तोरणानि प्रतोतीद्वारेषु प्रतिद्वाराणि स्थूलद्वारापात्तरालवर्तीनि लघुद्वाराणि तथा ॥ जतसयग्निमुसलमुसद्विपरिवारिया इति ॥ यत्राणि नानाप्र काराणि जतयन्यो महायष्टयो महाशिला वा या पतिता सत्य पुरुषाणा ज्ञतानि भ्रन्ति मुसलानि प्रतोतानि मुसद्वय प्रपरणविशेषा स्ते परिवा रितानि समततो वंष्टितानि अत एवा योष्यानि परैर्योद्धमशक्वानि अयोध्यत्वा दव च सदाजयानि सर्वजातं जयो येषु तानि सदाजयानि स यकाल जयवन्ती त्यथ, तथा सदा सवकाल गुप्तानि प्रहरणै पुरुषै थ योद्धृनि सवत समन्ततो निरन्तरपरिवारिततया परैर्यामसहमानाना म

त्रीरखातफलिहा पागारहालयकवाकूतोरणपङ्क्तिद्वारदेसन्नागा जतसयग्निमुसद्विपरिवारिया अग्रज्जा सत्राज या सया अग्रजेया सदा गुप्ता अग्रयालककोष्ठरडया अग्रयालकवयणमाला संमा सिवा किकरा मरुक्कोचरसिक

दि वडरम सम डेटे कमलनो कर्णिका मस्यानि एतले मन्त्रसर्ग । उद्विन्नरविउल्लगभीर क्वायफलिहा पागारहालय कवाड तोरण पङ्क्तिद्वारदेसन्नागा । जवा विस्तीण फिटकमय प्रकार कपाटवहित तोरण मोटाहार तेमा छ ट बारणैयुक्त । जतसयग्निमुसलमुसद्विपरिवारियाथ अक्रासया अजयास गगुप्ता । यचनाग्रनक्के जिहा मुगल प्रहरण विशेषपणे म्मे परिवेष्टित ध्यातक्के चफासेकरो सदा जीपताक्के सदा गुप्तक्के । अडयालकूटगरदया अडया

नागपि प्रवेशासम्भवात् ॥ अक्षयालकोष्ठरुडया इति ॥ अष्टचत्वारिंशद्देवताविच्छिन्निकलितता कोष्ठका अपरका रचिता स्वयमेव रचना प्राप्ता येषु तानि अष्टचत्वारिंशत्कोष्ठकरचितानि सुखादिदशानां स्याद्विकी निष्ठान्तस्य परनिपातः, तथा अष्टचत्वारिंशद्देवताविच्छिन्निकलितता कृतवनमाला येषु तानि अष्टचत्वारिंशत् कृतवनमालानि, अन्येत्यत्र निदधति अक्षयालशब्दो देवीवचनत्वात् प्रशस्तसावाची ततो यमये प्रशस्तकोष्ठकरचितानि प्रशस्तकृतवनमालानीति तथा क्षेमाणि परकृतोपद्रवरहितानि शिवाणि सदा मङ्गलोपतानि तथा किङ्करभूता ये उमरा स्ते दण्डे कृतोपरिचितानि सवत समन्ततो रक्षितानि किङ्करामरदण्डोपरिचितानि ॥ लावण्यै उल्लोडयमहिया इति ॥ इयनामय द्रुमे गोमयादिना उपलपन उल्लोडयः, कुड्यानां मालस्य च सेटिकादिभिः सम्पृष्टीकरणे लाड उल्लोडयाभ्यां महितानि पूजितानि लाड उल्लोडयमहिया इति, तथा गोशीर्षेण गोशीर्षनामकचन्दनेन रक्तचन्दनेन चदरेण वहलेन चपेटाप्रकारेण वा दत्ता पञ्चाहुलयस्तला हस्तका येषु तानि गोशीर्षसरस्वतचन्दनदर्दरतप्तपञ्चादुल्लिखितानि, तथोपस्थिता निवेदिता चन्दनकलशा माङ्गल्यकलशा येषु तानि उपचितचन्दनकलशानि ॥ चन्दनचक्रसुखतोरणपण्डितुवारदेसज्ञागा इति ॥ चन्दनचटै चन्दनकलशैः सुकृतानि सुकृतानि शोचनानीति तात्पर्यं, यानि तोरणानि तानि चन्दनचटसुकृतानि तोरणानि प्रतिद्वारदेशज्ञागद्वारदेशज्ञागे येषु तानि चन्दनचटसुकृततोरणप्रतिद्वारदेशज्ञागानि तथा ॥ असतो सत्तविउलवहवर्गारियमल्लदामकलावा इति ॥ आश्रवाद् अघोभूभौ

या लाड उल्लोडयमहिया गोशीर्षसरस्वतचन्दनदर्दरतप्तपञ्चादुल्लिखितता उपचितचन्दनकलशा चदणचक्रसुकृततोरणपण्डितुवारदेसज्ञागा अशतो सत्तविउलवहवर्गारियमल्लदामकलावा पचवन्तसरससुरनिमुक्षुपुष्पपुञ्जोवया

नकयवणनाला । अडतालीमेभेदे कोटरचनाकौधीकै अडतालीसभेदे कोटरचनाकौधीकै अडतालीस फूलमालासहित । खेमासिवा किङ्करा मरदण्डोवर किङ्करा लाड उल्लोडय महिया गोशीर्षसरमरसचटणा । क्षेमपरिकृतनी तथा उपद्रव तिष्ठे रक्षित किङ्करभूत जे देवता तेषां राख्योके जेवर सालखण्ड गण खडिये धवल्पकै गोशीर्षनाम चन्दन रक्तचन्दन । दर्दरदिव पचागुलितनामोय चियचदण कनसाचदण वडमुकय तोरण पण्डितुवारदेसभागा । दर्दरदी

सक्ता ग्रामक्तो भूमोत्तम इत्यर्थः । उक्तं सक्तउत्सक्त उल्लोकितले उपरिसम्यदु इत्यर्थः , विपुलीवि स्त्रीर्णो वृत्तो वर्तते वगचारियइति प्रलक्षितो माल्यदाम कलापः पुष्पमालासमूहो येषु तान्य सक्तोत्सक्तविपुलवृत्तप्रलम्बितमाल्यदामकलापानि तथा पचवर्णेन सुरजिणा मुक्तेन निसेन पुष्पपुञ्जलक्षणे पचारणं पूजया कलितानि पञ्चवणसुरजिमुक्तपुष्पपुञ्जोपचारफलितानि ॥ कालागुरुपवरकुन्दुरुक्ततुरुक्तधूवमघमपतगधुदूयाजिरामेइति ॥ कालागुरु मन्दिरं प्रवर प्रधान कुन्दुरुक्त धीरु तुरुक्तसिंहक कालागुरु य प्रवरकुन्दुरुक्ततुरुक्तचकालागुरुप्रवरकुन्दुरुक्ततुरुक्तानि तेषा धूपस्य यो मघमघायमानो गधवद्भुत इतस्त्रो विप्रसृत स्तेना जिरामाणि रमणीयानि कालागुरुकुन्दुरुक्ततुरुक्तधूपमघमघायमानगधोद्भूतानिरामाणि । तथा शोभनो गधो ये पाते सुगन्धा त च ते वरगन्धा द्वासा सुगन्धवरगन्धा स्तेषा गन्ध स एव स्त्रीति सुगन्धवरगधगधिकानि अतोनेकस्वरदितीकप्रत्यय , अत एव गन्धवर्तिभूतानि गौरस्यातिगया द्रव्यगुटिकाकल्पानीति प्राय , तथा अप्सरोगणानां सद्य समुदाय स्तेन सम्यक् रमणीयतया चिकीर्णानि व्यासा नि अप्सरांगणसहविकीर्णानि तथा दिव्यानां भूटिताना मातोद्यानां धेनुवीणासृदगादीनां ये शब्दा स्त्री सम्प्रणादितानि सम्यक् श्रोतृमनोहारितया प्रकर्षणं सर्वकाल नदितानि शब्दवति स्वरत्रमयानि सर्वात्मना सामर्थ्येन नत्वे कदेशेन रत्नमयानि वा अच्छानि आकाशस्फटिकरत्नवदति स्वच्छानि सरसानि शृङ्गपुद्गलक्षधनिष्यन्नापि शृङ्गदलनिष्यन्नपटवत् ॥ लयहानि ॥ मसृणानि घुटितपटवत् ॥ घटाइति ॥ घृष्टानीवघृष्टानि सरशानया पापाण

रकलिया (ग्र१४००) कालागुरुपवरकुन्दुरुक्ततुरुक्तधूवमघमघतगधुदूतानिरामा सुगधवरगधगधिया गधव  
होद्भूया अच्चेरगणसधसकिन्ना दिव्यतुङ्गियसदसपन्तटित्ता सहरयणमया अृच्छा सरहा लरहा घठा मठा

भाक्ते पद्मागुलीनां घण्टा जिह्वा उपस्थितयाप्याक्ते मङ्गलौकमय चन्दननाकलशो मूढ सोभित कौषाक्ते तोरण प्रतिहार देसभाग जिह्वा । आसक्तोसर्तार यो लहवगधारियमङ्गदामकलिया । भूमि ऊपर बाध्या विस्तोर्णं फूलमाला पञ्चवर्णं सस्य सुगन्ध पुष्प मूलाक्ते पञ्चनीपरे । पचवणसरससरहिमुक्त पक्क पुजोत्रया रकलिया कालागुरु पवरकुन्दुरुक्ततुरुक्तधूवम घमघत गधदूया भिरामे । विखेराक्ते जिह्वा फूलकली तथा कण्ठागर प्रधानकन्दरु चौट सेरहा



प्रतिमावत् ॥ सदा इति ॥ गृष्टानि सुकुमारज्ञानया पापाण्यप्रतिमेव अत एव नीरजासि स्वान्नाविभरजोरहितत्वात् निर्मलानि आगतु कमलाभावात्  
निष्पङ्कानि कलङ्कविकलानि कदमरहितानि वा निककठच्छादति । नि कङ्कटानि नि कवचा निरावरणानिरुपधातेति तावार्थं , छायादीनियेपा  
तानि निष्कङ्कटच्छायायानि सप्रज्ञानि स्वरूपत प्रज्ञावन्ति समरीचीनि यद्विविनिर्गतकिरणजालानि सोऽगोतानि यद्विध्यं वस्थितवस्तुस्त्रोमप्रकाशनकरा  
णि प्रसादीयानि मन प्रसादाय मन प्रसत्तये हितानि प्रसादीयानि मन प्रसत्तिकाराणि इति ज्ञाव , तथा दर्शनीयानि दर्शनयोग्यानि यानि पश्यत य  
स्तुपी न श्रम गच्छत इति तात्पर्यार्थं , अभिरूपा इति अन्निसर्वपा द्रष्टृणा मन प्रसादानुकूलतया अन्निसुर रूप येपान्तानि अन्निरूपाणि अत्यन्तकन  
नीयानि इत्यर्थं , अतएव पङ्क्तिवा इति । प्रतिविशिष्ट रूप यंया तानि प्रतिरूपाणि अथवा प्रतिक्षण नव नवमिव रूप येपान्तानि प्रतिरूपाणि

णीरया निमला निष्पका निष्ककठच्छाया सपन्ना ससिरिया सउज्जोया पासादीया दरिसणिज्जा अन्निरू  
वा पङ्क्तिरूवा एत्यण नवणवासीण देवाण पज्जातापज्जाताण ठाणा प० । उववाएण लोगस्स अस्ससिज्जड

रस जेहना धूपने ढरोगन्व तेषेकरी अद्भुत मधमवायमानकै गन्ध जिह्वा । सुगन्धवरगाधिया गन्धवाट्टमया अच्छारगण सप्तसर्वागणा दिव्यतुडियमहसप  
याणादिया । सगन्ध प्रधानकै गन्धजेहनी गन्धनीवान गोलोभूत सौगन्धनो अतिशय कट्टो अस्सरना गणसमूह तिणे सकोणकै चुटितवेणु मृदङ्गादि सर्  
अनवायोग्य मनोहरलागे साम्भलै षके सुखुऊपलै । सञ्चरणमया अच्छा सणा लड्डा वड्डामड्डा नीरया निमला निष्पका निककणच्छाया । सर्व रत्नमयक  
याकाशनीपरे निर्मलकै सुकमल सूक्ष्मपद्मन निपटके घुटतनीपरे निर्मलकै सुकमल सूक्ष्म घटारा मठाराकै पापाणनीपरे निर्मल उपधानादिकेकरी  
पयी । सपन्ना ससिरिया ससिरिया पङ्क्तिरूवा सउज्जोया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूपा पङ्क्तिरूवा । सप्रभा मोतीनीपरे ओयेकरी मोलायमानकै प्र  
तिरूप ज्वयारूप दीसकै उद्योतसहित मननी प्रसादकारी देखवायोग्य अभिरूप रूपजाणु साहिमो आवै । एत्यण भवणवासीण दशण पज्जत्त अपज्ज  
त्ताण ठा० प० । एहवै नामै भवनपतीना देवारा पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठानकट्टा । उववाएणलीयस्स अ० समुवाएणलीयस्स अ० सठाएणलीयस्स अ० ।

॥ टीका ॥

॥ मन् ॥

॥ भाषा ॥

गते ॥ नवगवासी त्यादि ॥ गतेऽनन्तरीक्षा असुरकुमारादयो भवनधासिनी यथाक्रम ब्रूहामणिर्नाम मुकुटे रत चिह्नमृत येषाते तथा नागकुमारा ब्रू  
 पणनियुक्तनागस्फटारूपाचिह्नधरा मुकुटरत्नब्रूपणनियुक्ता नागस्फटादिचित्रचिह्नधरा अथ तथा हि असुरकुमारभवनवासिनश्चूनामणिमुकुटरत्ना ॥ १ ॥  
 ब्रूहामणिर्नाम मुकुटे रत्न चिह्नमृत येषाते तथा नागकुमारा ब्रूपणनियुक्तनागस्फटारूपाचिह्नधरा ॥ २ ॥ सुपर्णकुमारा ब्रूपणनियुक्तगन्धर्वचिह्न  
 धरा ॥ ३ ॥ विद्युत्कुमारा ब्रूपणनियुक्तवज्ररूपाचिह्नधरा ॥ ४ ॥ अग्निकुमारा मुकुटनियुक्तपृष्णकलशरूपाचिह्नधरा ॥ ५ ॥  
 द्वीपकुमारा ब्रूपणनियुक्तसिंहरूपाधरा ॥ ६ ॥ उदधिकुमारा ब्रूपणनियुक्तहयवररूपाचिह्नधरा ॥ ७ ॥ दिक्कुमारा ब्रूपणनियुक्तगजरूपाचिह्नधरा ॥ ८ ॥  
 घातुकुमारा ब्रूपणनियुक्तमकररूपाचिह्नधरा ॥ ९ ॥ स्तनितकुमारा ब्रूपणनियुक्तवरहृमानरूपाचिह्नधरा ॥ १० ॥ वद्धमाननारायणस्मृत अक्षर  
 गमनिकात्वेव ब्रूपणेषु नागस्फटागरुहवज्राणि येषाते ब्रूपणनागस्फटागरुहवज्रा पृष्णकलशोनाङ्कितउष्णसो मुकुटो येषाते पृष्णकलशाङ्कितोष्णसो

नागे समुग्धाएण लीयस्स अस्सखेज्जइन्नागे सन्नाणेण लीगस्स अस्सखेज्जइन्नागे तत्थण वहवे न्नवणवासीदे  
 वा परिवसति त-असुरानागसुवन्ता विज्जुअग्गीयदीवउट्ठीय । दिसिपवणयणियणामा दसहाएअवण  
 वासी । चूनामणिमउत्तरयणन्नसणा फणिगरुलवड्डरपुण्णकलसकिउप्फेसा सीहमगरमथकअस्सवरवध्दमाणनि

ऊपत्रर्षालोकने प्र० समुद्घातलोकने अ० स्वम्यान्नाकने असख्यातेमभागे । तत्थण वहवे भवणवासी देशा परिवसति त० । तिहां वणां भवनपत्तो देयता  
 रहस्ये तेहनानाम कक्षा । असुरानागसुवन्ता विज्जुप्रमोउदोवउट्ठिय । दिसपवणयणियणानामा दसहाएअभवणवासी ॥ १ ॥ असुरकुमार नागकुमार स  
 वणं विद्यत अग्नि द्यौप उदधि दिग्गि पवन स्थानित ए नामह्ये द्यौपकारे भवनपत्तो ॥ १ ॥ ब्रूहामणिमउत्तरयण भूषणा नागफण गयल वड्डर पुण्ण कलस  
 किउप्फेसा सीह हयवरया अक्षमगर वड्डमान निज्जुत्तविगहचिधयया मरुवा महउट्ठया महकाया सहायसा महाबला नद्यागुभागा महासुक्खा । चू  
 णामणि रत्नविन्द मुकुटे ग्रामे असुरकुमारानो विह नागकुमारानो विह कलय सिंह अग गज मगर सरावसपुट १० ए चिह्नेस

तथा सीङ्गययगजा अङ्गा अर्थानूपणेषु येषाते सीङ्गययवजाङ्गा तथा मकरवद्धमानिके निपुक्ते नूपणेषु नियोजिते चित्रे आश्चर्यजनते चित्रे गते स्थिते येषाते मकरवद्धमाननियुक्तचित्रचिह्नधरा स्तत पूर्वपदद्वंद्व समास , पुन सर्व कथन्नता इत्याह-सुरूपा गोनन रूप येषाते तथा अत्यन्त कमनीयरूपाइत्यर्थ , तथाभरिहियाइति ॥ मरुती ऋद्धि जवनपरिवारादिका येषाते मरुट्टिका , तथा मरुती द्युति शरीरङ्गता आनरणगता च येषाभिंति महाद्युतय , तथा महत् बल शारीरप्राणायेषाते महाबला , तयामहद्वश स्याति येषाते महायशस , महान् अनुनागा सामर्थ्य शापा नुग्रहविषय येषान्ते महानुभागा तथा ॥ मत्स्यकलाइति ॥ महान्द्वश ईश्वर इत्यास्यात प्रसिद्धिर्येषाते महेश्वरस्या अथवा ईशान भीमो जावे घञ्प्रत्यय संध्यमित्यर्थ , इण्येथर्येइतिवचनात् , तत इशमे द्युयमा त्मनास्यान्ति अन्तर्गतशयंतया स्यापयन्तीति ईशाख्या , महान्त द्य ते ईशास्या द्य महेश्वास्या , क्षिचिन्मासोऽस्माइतिपाठ , तत्रमहत्सौस्य प्रभूतसद्वोधयवशाद्येषान्ते महासौख्या , अन्येपठन्ति महासक्ता इति ॥ तत्रायशब्दसंस्कारो महाद्याक्षा इय चात्रपूर्वसूरिप्रदर्शिता व्युत्पत्ति आश्रुगमनाद द्यो मन अक्षाणि इन्द्रियाणि स्वविषयव्यापकत्वात् अथ द्य अक्षाणि वेत्याद्याक्षाणि महान्ति अद्याक्षाणि येषान्ते महाद्याक्षा ॥ हारविराडयवत्या इति ॥ हारं विराजित वक्षो येषाते हारविराजितवत्स ॥ कर्णतुक्रियथजियज्रुया इति ॥ कटकानि कलाचिकान्नरणानि द्रुटितानि बाहुरत्नका स्ते स्तम्भिता विव स्तम्भितौ प्रजौ येषान्ते कटकद्रुटितस्तम्भितजुजा , तथा अङ्गदनि बाहुशोषान्नरणविशेष पक्षपाणि कुगलै कर्णान्नरणविशेषरूपे तथा मृष्टौ मृष्टौ कर्णौ गण्ठौ कर्णौ येषां स्तानि मृष्टगण्ठानि कण्ठपीठानि कर्णान्नरणविशेषरूपाणि धारयन्ती

जुतचित्तिचिंधगता सुरूवा महिद्विया महजुतिया महायसा महाबला महानुनावा महासोस्का हारविराइ  
यवत्या कणगतुन्निथयन्नियन्नुया अगदकुंलमठगल्लकणपीढधारी विचित्तहत्यान्नरणा विचित्तमालामउ

द्विज रूपवन्त महाशिवन्त महायतिवन्त महायशवन्त महावली महाभारयवन्त महामुखी । हारविराट् वत्या कलगतद्विपदभियभा । हारोकरो विरान  
मानहोयो जेहनो कडा बहोरखा तिषे यथा समछे भुजा । गगयकुदनमडगगतणकण पौदधारी विचित्त हत्याभिरणा । अगद कुण्डन कर्णभरण धारा

त्वेव शीना ॥ अद्भुदगुणलसृष्टगगनकर्णपीठधारिण तथा विचित्राणि नानारूपानि हस्तान्नरूपानि येषां विचित्रहस्तान्नरूपा तथा ॥ विचित्रमाताम  
सलिमउठा विचित्रा माला कुसुमसूक्ष्म मौली मस्तके मुकुट च येषां विचित्रमालामौलिमुकुटा ' तथा कल्याण कङ्कल्याणकारि प्रवर वस्त्र परिहित ये स्ते  
कल्याणकप्रवरवस्त्रपरिहिता , सुखादिदंडानां लिष्टान्तस्यात्र पात्रिकपरनिपात ' तथा कल्याणक कल्याणकारि यत्प्रवरमाल्यपुष्पदाम यच्चानुलेपन तटुर  
तीति कल्याणकप्रवरमाल्यानुलेपनधरा तथा भास्वरा ददीप्यमाना योन्दि शरीरयेषान्त ब्राह्मरवोन्दय तथा प्रताम्य इति प्रलम्बा या वनमाला ता  
धरतीति प्रलम्बवनमालाधरा ॥ दिव्येण सचयणेति ॥ शक्तिविशेषम पत्न्य सहननेन न तु साक्षात्सहननेन देवाना सहननाऽसम्भवात् सहनन  
रि अस्थिरचनात्मक न च देवानामस्थीनि सति तथा चोक्त जीवाजिगमे-देवाग्रसचयणी जम्हा तेषि नेवही नेय सिरा इत्यादि ॥ दिव्या ए इन्डो ए इति  
दिव्यया प्रधानया क्रद्धा परिवारादिकया दिव्यया द्युत्या इष्टार्थसंप्रयोगलक्षणया , द्युश्चाजिगमने इति वचनात् दिव्यया प्रज्ञया प्रवनावासगतया  
दिव्यया च्छायाया समुदयक्षोभया दिव्येना चिंया शरीरस्थरत्नादितेजोज्वालाया दिव्येन तेजसा शरीरप्रज्ञयेन दिव्यया वा लेख्यया देहवर्णसुरतया

लिमउठा कक्षाणगपवरवत्यपरिहिया कक्षाणगपवरमङ्गानुलेवणधरा भासुरवोदी पलववणमालधरा दिव्येण  
वखेण दिव्येण गधेण दिव्येण फासेण दिव्येण सचयणेन दिव्येण सठाणेण दिव्या ए इन्डो ए दिव्या ए जुत्ती ए  
दिव्या ए पन्ना ए दिव्या ए च्छाया ए दिव्या ए अच्ची ए दिव्येण तेणं दिव्या ए लेस्सा ए दसदिसानु उज्जीवेमाणा  
पन्नासेमाणा तण तत्य साण २ नवणवाससयसहस्साण साण २ सामाणियसाहस्सीण साणं २ तायत्तीसाण

यका विचित्रहायना आभरण । विचित्रमानामलमाला कक्षाणग पवर वत्य परिहिया । विचित्रमाना मस्तके कल्याणमङ्गनौकनाकारक वस्त्र प  
दिहिया है । कक्षाणगपवरमङ्गानुलेवणधरा भासुरवोदीपलववणमालधरा । मङ्गनौकनाकारक विलेपनकीधा है देदीप्यमानगररे नावीमाला धरी है । दि  
व्येण वखेण दिव्येण गधेण दिव्येण फासेण दिव्येण सचयणेण दिव्येण सठाणेण दिव्या ए इन्डो ए । दिव्यवर्णदिव्यगन्ध दिव्यसचयणविशेष दिव्यसया

दशदिशा उद्योतयत ॥ प्रकाशवंतप्रासितमाणा इति ॥ सोऽन्नमाना स्ते स्रवनवासिनी देवाणामिति वाक्यालङ्कारे तत्र स्वस्थाने साण २ मिति स्त्रिया २ मास्तीयानामित्यर्थ ॥ आहृद्यपोरवचमित्यादि ॥ अधिपते कर्म अधिपत्य रक्षा इत्यर्थः, सा च रक्षा सामान्येना रक्षकेणैव क्रियते तत आह-पुरस्यपति पुरपति तस्य कर्म पौरपत्य सर्वपामा स्तीयानामग्रेसरत्वमिति ज्ञाव, तच्चाग्रेसरत्व नायकत्वमतरणापित्वनायकानियुक्त तयाविधगृहचित्तकृतसामान्यपुरुषस्येव प्रवति ततोनायकत्वप्रतिपत्त्यर्थमाह-स्वामित्व स्वमस्यास्तीति स्वामी तद्भाव स्वामित्वनायकत्वमित्यर्थः, तदपि च नायकत्व कस्यचि त्योय कत्व मन्तरणापि भवति यथा हरिणाधिपति हरिणस्य तत आह-प्रवृत्त्य अतएव महरत्तरकत्व कस्यचिदा ज्ञाविकलस्यापि सद्यधि प्रवति यथाऽस्य चिद्वृत्तिज स्वदासीधर्मप्रति तत आह-आष्टादशरसेणावध ॥ आद्याया ईश्वर आज्ञेश्वर सेनाया पति सेनापति आज्ञेश्वर द्या सी सेनापति इत्य आज्ञेश्वरसेनापति सस्य कर्म आज्ञेश्वरसेनापत्यस्वसैन्ये प्रत्यद्रुत द्याज्ञाप्रधान्यमिति ज्ञाव, कारयतो न्यैर्नियुक्तैर्पुरुषै पालयन्त स्वयमेव महतारवेषे

साण २ लोमपालाणं साण २ अग्गमहिंसीण साण २ परियाण साण २ अण्णीयाणं साण २ अण्णिवाहि वड्डेणं साण २ आयरक्खदेवसाहस्सीण अण्णेत्तिसिच वड्डेण जवणवासीण देवाणय देवीणय अणेवच्च पोरिवच्च सा मित्त न्हित्त महत्तरगत्त अण्णाईसरसेणावच्च कारेमाणा पालेमाणा महयाहयनह्मीयवाड्डयततीतलतालत्तुत्ति

न दिव्य ऋद्धिः । दिव्याणं जुराण दिव्याणं पभाण दिव्याणं छावाण दिव्याणं अक्षौण दिव्येण तेण दिव्याणं लेखाण । दिव्यद्युति दिव्यप्रभा दिव्यकाया दिव्य भवित दिव्यतेज दिव्यलेख्या । दसदिसान्ना उल्लोणमाणा पभासेमाणा । दग्गदिग्गनेवैपै उज्जवानो करता । तेण तस्य साण २ भवणवासयसहसाण । ते तिहा पोताना भवन नाखेकरी । साण सामाणियसाहस्सीण साण २ तायत्तीसगाण । आपणा सामानिक देवेकरी आपणा चापविण्णेकरी । साण २ लोमपालाण साण २ अग्गमहिंसीण परिसाण साण अण्णिदाण । आपणे लोकापालेकरी आप आपणा अग्गमहिंणीयेकरी आपणा कटकेकरी । साण २ अण्णिवाहि वड्डेण साण २ आयरक्खदेवसाहस्सीण अण्णेत्तिसिच वड्डेण भवणवासीण देवाणय देवीणय । आप आपणा कटकनाधणीये करी आपणा आत्तर

ति योग ॥ अहयति ॥ आस्थानमप्रतिष्ठाति यदिवा अस्तानि प्रव्याहृतानि नित्यानुययीति ज्ञाय, ये नात्यगीते नाट्य नृत्त गीते गान यानि च वादितानि ततीसलतालपुटितानि तत्र तन्त्री वीणा तली हस्ततली ताल कसिका त्रुटितावादित्राणि तथा यद्य घनसुदहपटुनापुसुपेणाप्रवादि त तत्र घनसुदहोनामपनसमाप्तख्यनिर्घोषसुदहस्त एतेषा दृढ स्तेषा रघेण दिव्यान् दिवि प्रधान् प्रधानमिति ज्ञाय, जोगाहो जोगा शब्दादयो

॥ टीका ॥

यद्यणमुडगपटुप्पवाडयरवेण दिष्टाद् जोगजीगाद् भुजमाणा विहरति । कहिण भते ! असुरकुमाराण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पणत्ता ? कहिण भते ! असुरकुमारादेवा परिवसति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पन्नाए पुटवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सवाहत्ताए उवरि एग जोयणसहस्सं उग्गाहित्ता हेठावेगं जोयणसहस्स वज्जित्ता मज्जे अउत्तरे जोयणसयसहस्से वाहत्ताए एत्थण असुरकुमाराण देवाण चोवठि भवणावासयसहस्सा भवतीति मस्काय, तेण भवणा वाहि वहा अतो चउरसा अहे पुरस्सरकसियासठा

॥ मन् ॥

चक ट्वकरो अनरा घणा भवनवासो देव देवायताना अधिपति । आदेवश्च पोरंश्च सामित्त भट्टिस्स महत्तरगत्त । रथपालपणी पुरागामिपणी स्वामी पणी पोषकपणो बडाइपणो । आणाइसरसेणवच्च करिमाणा पालेमाणा मण्वाइय नट्ठगीय वाइयरवेण ततो तलतानतुडिय घणमुग्ग पटुम्प वाइयरवे ण दिव्वार भोगमानाद् भुजमाणा विहरति । आन्नापालता पलावता करताकरावता मोटावाजा वजावता नृत्य गीत वादिच्च तवी तलताल चूटत वा सुदग्ग मोटागच्छे तित्थेकरो दिव्य देवताना भोग भोगवता विचरेत्तै । कहिणभते अस्सरकुमार देवाण पज्जत्ता पज्जत्ताण ठाणा प० । किंहा हेभगवन् अस्सरकुमार देवताना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकत्ता । कहिण भते अस्सरकुमारदेवा परिवसति । किंहा हेभगवन् असुरकुमारदेवता वरेत्तै । गोयमा रयणभागपुटवीण त्रसोउत्तरजोयणसयसहस्सवाहत्ताए उवरि जोयणसयसहस्स उग्गाहिता । हेगीतम एरत्तनप्रभाने एकलासु त्रसोउत्तरजोयनन जाड पणे तेहनाहि जपर एकहजारजोयनमकीने । दिष्टाएगू जोयणसहस्स वल्लित्ता मज्जे अउत्तरेजोयणसयसहस्से । हेठलो एकसहस्सजोयन वज्जिनेवि

॥ भाषा ॥

नोगन्तो ग स्तान् भुञ्जमाना विहरन्त्या सते, असुरकुमारसूत्रे काला कम्पवर्णा ॥ लोहितकृशविम्बोष्ठा ॥ लोहिताक्षरतवत् विम्बीफलमचण्डोष्ठी येपान्ते लोहिताक्षविम्बोष्ठा श्रारक्तोष्ठा इति त्राय , धवला पुष्पवत्सामर्थ्यात् कुन्दकलिका इव दन्ता येपाते धवलपुष्पदन्ता अज्ञिता रुष्णा केशा येपाते

णसन्धिया किन्तन्तरविउलगनीरस्कायफलहा पागारहालकवाफुत्तोरणपफिटुवारटेसन्नागा जतसयग्धिमुस  
लमुसद्विपरिवारिया झुंज्जा सदा सया वलयया सदा गुत्ता गुत्ता झुंज्जाला कोष्ठगरइया झुंज्जालकयवन्तमाला  
खेमा सिवा किकरामरुफोवरस्त्रिकया लाउल्लोइयमहिंया गोसीसरसरत्तचदणदहरिदिन्मपचगुलितला उव  
चियचदणकलसा चदणधरुसुकयतोरणपफिटुवारदेसन्नागा आसत्तोसत्तविउलवहवग्धारियमल्लदामकलावा  
पचवन्तसरसरनिमुक्कपुफ्फुजोत्रयारकलिया कालागुरुपवरकुटुकुक्कतुक्कफुज्जतधूवमधमघतगधुधुयान्निरा

वालै एकलाख अष्टदत्तरहजारयोजन । एत्यण असुरकुमाराण देवाण चउसद्धिभवणवाससयसदस्सा हयतिमक्काय । इहा असुरकुमारना ३४ दक्षिण ३० उत्तर ६४ भवनसत्था हुवे भगवते कल्लो । तेण भवणावाहिबद्धा अतो समचउरसा । ते भवन बाहिर वाटनाकै माहिनो चौखुणाकै । अहेपुत्तरकस्सिया सठाणमठिया उक्खितर विउलगभीर खायफलिहा पागारहानय किवाहत्तोरण पडिदुवारदेसभागा । हेठे कमलनो कर्णिकाने सत्थाने राखित उक्कीणं विचै पिहुनी गभीर फिटकमयी प्राकारउपरि कियाड तोरण हारमोटा तेहना नान्नाद्वार रुडो देगभागा । जतसयग्धि ममलमसद्वि परियाय रिया आओक्कासया जयासया गुत्ता । मूसलप्रहरणादिके वेठितकै साहमी देखवा समर्थनहो सदाजोपताकै सटा गुम्फै । अडयानकुहुगरइया । ४८ दे ग्रीभापाये प्रससा वसन । अडयालकयवणमाला खेमा सिवा किकरा मरदलोवरस्त्रिकया । ४८ भेदेकरी फूलमाला कल्याणकारी उपद्रवाविना किद्धरभूत जे देवता तेणैराख्योके जे भुवन । लाउल्लोइय मडियागोसोस सरस रत्तचटन दहरटिउ पचागुलि तला उवधियचटणकलसा । लोप्याकै मणादिकनापर मादि गोपीर्प चन्दन रत्तचन्दनादिके ददरदोभाकै पचागुलिना ह्याथा उपचित थाप्याकै चन्दनकलय । चदणधरुमुकय तोरणपडिदुवार देसभागा । च

आसितकेना दत्त केशा द्या मीपा वैक्रिया द्रष्टव्या न स्वात्ताविका वैक्रियशरीरत्वात् वामेयकुण्डलधरा मकरणवसक्तकुण्डलधारिण तथा आद्रे  
गसरसेनचन्दनेनानुलिप्तगात्रयेस्ते आद्रचन्दनानुलिप्तगात्रा , तथा इषत् मनाक् शिलिप्रुप्पप्रकाशानि शिलिप्रुप्पसदृशवर्णानि इंपद्रक्तानीत्यर्थे अ  
सक्तिष्टानि अत्यन्तसुसजनकतयासनागपिपिक्तेशानुत्पादिकानि सूक्ष्माणि मृदुलपुष्पशोन्मज्जानि चैतिजाव , वखाणि प्रधराणि अत्र सूत्रे विभक्तिलोप

मा सुगधवरगंधिया गंधवह्निद्रुया अच्करगणसचसविक्रिया दिव्यतुक्रियसहस्रपन्तटिया सहरयणामया अ  
च्छा सखा घठा मठा नीरया निम्मला निष्पका निक्ककळच्छाया सप्पन्ना ससिरिया सउज्जोया पासाडया  
दरिसणिज्जा अन्निरुवा पफिरुवा एत्यण असुरकुमाराण देवाण पज्जयापज्जत्ताण टाणा पणत्ता । उववा  
एण लोयस्स असखिज्जइन्नागे समुग्घाएण लोगरस्स असखेज्जइन्नागे सठाणेण लोगरस्स असखेज्जइन्नागे त  
त्यण बहवे असुरकुमारादेवा परिवसति काला लोहितरक्का विवोठा धवलपुष्पदत्ता असियकेसा वामेयकुं  
ळलधरा अद्रचदणाणुलित्तगत्ता ईसीसिलिधपुष्पगसाइ असकिलठाइ सुज्जमाइ वत्याइ पवरपरिहिया  
वय च पढम समउक्कता विडय च असपत्ता नदे जोव्वणे बहमाणा तलन्नगयतुक्रियवस्त्रमणनिम्मलानिर  
यमणिरयमक्रियद्रुया दसमुद्दामक्रियगहत्या चूळामणिविचित्तचिधगत्ता सुरूवा महिहोया महज्जुडया म  
हायसा महल्लला महाणुन्नागा महासोस्का हारविराइयवत्या कवळयतुक्रियथंजियत्तुवा अगयकुंळलमहगळ

न्दनकलेणे कडा शाभनकाधाळे तारणना प्रतिहार देगभागळे । आसत्तासत्तविडलवद्धधरारिय मल्लदानकत्ताया पचअसुरसमरुहिमुहुपुष्पपूजाव्या  
रकलिर । जिहा यासत्तोसत्तभूमि अट्टा ऊपर बोध्या विपुलविस्तीर्णे प्रनाम्बित्त मान्य कामना कलापसमूह तिहा पचवर्ण सरस सुरभिगधळे जेहनो  
यभिगधनो वाटसहित । कालागुरुपवरक्षरुक्ष तुरुक्ष धूमधमघत गत्रसुयाभिरामा सुगधवरगंधिया गंधवह्निभगा । कल्याणर प्रधानकृत सेवहारमे क



प्राकृतत्वात्परिहितापरिहृतवन्त तथा वयं प्रथमं कुमारत्वज्ञानं तिकात्ता स्तत्पर्यवर्तमानं इति ज्ञाय , द्वितीयञ्च मध्यमलक्षणं वयोऽस्तस्मात्प्रा-  
 यतदेवव्यक्तीकरोति नद्रे अतिप्रशस्ये नद्रे यौवने वक्ष्यमाना ॥ तलजद्रुयतुक्रियवरचमणनिम्नलमणिरयममक्रियज्जयाइति ॥ तलजद्रुका वाद्वाभरणविशेषा  
 स्तुटितानि बाहुरक्षिका छत्यानि च यानि वराणि नूपणानि वाद्वाभरणानि येषु ये निमला मणय द्यन्द्रकात्ताद्या यानि रत्नानि इन्द्रनीलादीनि  
 ते मंहिती नुकी हस्ताग्री येषाते तथा , तथा दशजिर्मद्राजिमंहितो भुजो ग्रयस्त्री येषाते दशमद्रामिहताग्रहस्ता ॥ चूनामणिचित्तचिधयगयाइति ॥

यलकसुपीठधारी विचित्तहत्याभरण विचित्तमालामउलिमउका कल्लाणगपवरपरिहिया कल्लाणगपवर  
 मल्लाणलेवणधरा न्नासरवोदी पलववनमालधरा दिव्वेण वखेण दिव्वेण गधेण दिव्वेण फासेण दिव्वेण सधय  
 णेण दिव्वेण सठाणेण दिव्वेण इहोए जुईए दिव्वेण पन्नाए दिव्वेण वयाए अच्चीए दिव्वेण एएणं  
 दिव्वेण लेसाए दसदिसान उज्जोवेमाणा पन्नासेमाणा तेण तल्य साण २ नवणावाससयसहस्साणं साण २  
 सामाणियसाहस्सीणं साण २ तावत्तीसाण साण २ ज्जग्गमहिस्सीण साण २ वल्लण नवणावा  
 साणं २ ज्जणियाण साण २ ज्जणियाहिवईण साण २ ज्जायरक्खदेवसाहस्सीण ज्जन्नेसि च वल्लण नवणावा  
 सीण देवाणय देवीणय ज्जाहेवच्च पोरेवच्च सामित्त न्हितं महत्तरगत ज्जाणाईसरसेणावच्च कारेमाणा पा

रो मघमवायमान सुगन्ध प्रधानगन्ध लङ्घनो धातिगन्धनो वाटमहित अमुराना । गणसघसविगणा टिचतुडियसदसपण्डया सब्बरणमया । गणसमूह  
 तिणकरो सहित घटङ्गादि शमशब्द सामलता सर्व रतनमयकै । अज्जासणा लुहा घडा मद्दा नीरया निगला निपंका निककल्लया सयभा सस्रिरिया ।  
 याख्याक घटङ्गाकै मठाराकै निरल निर्मल निमकम्भ निर्कण्टक प्रभासहित । सल्लोया पासाऽया टरसणिजा अभिरुवा पडिक्खा । उथोतसहित टण  
 नो क अभिरूप प्रतिकूप । एत्थण अमुरकुमार देवाण पज्जता २ ण ठाणा प० । इहांठामे अमुरकुमार देवता वत्तेहे पर्याता अपर्याताना ठामकल्ला ।



शुद्धं ननु सग्याकालनायारक्त शशिसकल चद्रखगल तदपि च कथमूतमित्याह-विमल रजसा रहित कलङ्कविकला वा तथा निर्मलो यो दधिघनश्च  
हो गोक्षीर यानि कुन्दानि कुन्दकुसुमानि दकरज पानीयकणा मृणालिका च तद्वत् घवला दन्तश्रेणि येषां तथा विमलशब्दस्य विशेषा त्वरति

ज्जानिष्ठकेसा वामेयकुष्ठलधरा अद्दचंढाणुलिङ्गता ईसीसिलिधपुष्पगसाइ असकिलिठाइ सुज्जमाइ च  
ल्याइ पवरपरिहिया वय च पढन समइक्षता विइयच असपत्ता नहे जोव्वेण वहमाणा तलजंगयतुङ्गियप  
वरजूसणनिम्मलमणिरयणमणियनुया दसमुद्दामणियगहल्या चूणामणिविचित्तचिधगता सुरूवा महिहिया  
महज्जुया महायसा महल्ला महाणुनागा महासोस्का हारविराइयवत्या कण्ठयतुङ्गियथन्नियनुया अण्णदकुळ  
लमण्णगलतलकसपीढधारी विचित्तहल्यात्तरणा विचित्तमालामउलिमउत्ता कल्लाणगपवरवत्यपरिहिया कल्ला  
णगपवरमल्लाणुलेवणा ज्ञासुरवोदी पलववणमालधरा दिव्वेण वन्नेण दिव्वेण गधेण दिव्वेण फासेण दिव्वेण

तानभगयतुङ्गियपवरभूषण निम्मलमणि रयणमण्डिय भुयादसमुद्दामाडिवगहल्या । तात्सभग दावत् आभरणविशेष भूषण निर्भन मणिरत्नेश्वरी मण्डित  
भुज जेहनो दण मण्डो येसोनेहाय । चूणामणि विचित्तचिगया सुरूवा महडुट्टिग महज्जुया महायसा महल्ला महाणुभावा महासुक्खा । चूणाम  
णिनामे चिहेसहित स्वरूप महाइवत्त महायतिवत्त महायवत्त महावलवत्त महानुभाव महामुत्तो । हारविराइयवत्या कण्ठयतुङ्गियथन्नियभुया । हा  
रेकरो विराजमानसौयो कण्ठोव्वहारखा तिणे यथाहै भज्ज । अण्णदकुळ गडगल तणकण पीडधारी । अण्णद कुण्डलकाने कपोलाभरण पोतधराहै ।  
विचित्तहल्याभरणा विचित्तमालामउलि कल्लाणगपवर वत्यपरहिया । विचित्तहाय आभरण विचित्तमालाहै मस्तके कल्याणकारी प्रवरवत्त पहिराहै ।  
कल्लाणगपवरमल्लाणुलेवणधराभासुरवोदी पलववणमालधरा । कल्याणकारक प्रधानविलेपन धाराहै देदीप्यणरोर मालाधरता । दिव्वेणवणेण दिव्वेण  
गधेण दिव्वेण फासेण दिव्वेण सघयण दिव्वेणसठाणेण । दिव्वेण दिव्वेणसौकरी दिव्वसवये दिव्वसखाने । दिव्वपरडुट्टोप दिव्वार्जुण

पात प्राकृतत्वात् तथा हुतवहेन वेद्यानरेण निर्धामत सत् यद् जायते धीत निर्मल तप्तमुत्तम तपनीयमा रक्त सुवर्ण तद्वत् रक्ताणि हृतपादत  
लानि तालुजिह्वे च येपा ते हुतवहनिर्धामतधीततप्ततपनीयरक्ततलतालुजिह्वा , तथा अञ्जन सौवीराञ्जन घन प्रायट्कालमाजी मेघ स्रष्टु कृत्मासु  
चकवत् रुचकरत्नवत् रमणीया स्त्रिग्याश्च केशा येपा ते अञ्जनघनकृत्नरुचकरमणीयस्त्रिग्यकेशा ॥ तिसुखिलोगश्च असंख्येन्द्राग्रे इति ॥ स्वस्थानो

संस्थानेण दिवाए इहीए दिवाए जुईए दिवाए त्रासाए दिवाए दिवाए पहाए दिवाए अञ्जीए  
दिवेण एएण दिवाए लेसाए दसदिसान् उज्जीवेमाणा पन्नासेमाणा तेण तत्थ साण २ नवणावाससवसहस्ता  
ण साण २ सामाणियसाहस्सीण साण २ तावत्तीसाण साण २ लोणपालाण साण २ अण्णमहिंसीण साण २  
परिसाण साण २ अण्णियाण साण २ अण्णियाहिर्वईण साण २ आयरक्खदेवसाहस्सीण अण्णेसि च वल्लण  
नवणवासीण देवाणय देवीणय अहेवच्च पोरेवच्च सामित्त महत्तरगतं अण्णाईसरसंसावच्च कारे  
माणे पालेमाणे महयाहयनहणीयवाडयततीतलतुक्रियघणमुङ्गपपुप्पवाडयरवेण दिवाइ भोगभोगाइ नु

दिवाए पभाए दिव्वाएक्कायाए दिव्वाए अञ्जीए दिव्वेणतेण दिव्वाएनेक्काए । देवतानीत्तहि देवतानी युति देवतानीप्रभासै दिव्वाक्कायाये दिव्वाक  
रणे दिव्वेणते जे दिव्वेणियाये । दसदिसाओ उज्जीएमाणा पभासेमाणा । दयदिया उद्योतकरता तिहा गोभतायका । तेण तत्थ साण २ भवणाण वासाण  
सउसहक्काण साण २ सामाणियसाहस्सीण साण २ तायलोसगाण २ साण २ लोणपालाण साण २ अण्णमहिंसीण । ते तिहा आप आपणे भवने लाख  
गमे आप आपणे सामानिक सहस्सेकरो आप आपणा आयनिसकेकरो आप आपणा लाकपालेकरो आप आपणा अण्णमहिंसेकरो । साण २ अण्ण  
याण साण २ परिसाण साण २ अण्णियाहिर्वईण साण २ आयरक्खदेवसाहस्सीण अण्णेसिचवट्ठण भवणवासीण देवाणय देवीणय । आप आपणे अण्णे  
काधिवेकरो आपणो २ परपदाकरो आपरो अण्णेकाधिवेकरो आपरा आपरा आत्तरक्खेकरो अनेरा भवनवासी देवता देवागनानो । अहेवस पोरे

पपातसमुद्घातकूपेषु त्रिष्यपि स्थानेषु लोकस्या सङ्केयतमे ज्ञाने वक्तव्यानि ॥ चोवहीअसुराणसि त्वादि ॥ गाथाद्वयं ॥ सामान्यतो असुरकुमारादीना अय नसङ्गाप्रतिपादक सुगम ॥ चोतोसाचोपालाहत्यादि ॥ गाथा दाक्षिणात्यानाम सुरकुमारादीना अवनसङ्गाविधायिका स्तस्या व्याख्या-दाक्षिणतो असुरकु माराणा अवनानि चतुस्त्रिंशत्सहस्राणि नागकुमाराणा चतुश्चत्वारिंशत् सुवणकुमाराणाम षट्त्रिंशत् वायुकुमाराणा पञ्चाशत् द्वीपदिगदधिवि द्युत्स्तनिताग्निकुमाराणा प्रत्येक चत्वारिंशत्शतसहस्राणि अवनानामिति ॥ तोसा चत्तालीसा इत्यादि ॥ उत्तरत उत्तरस्या दिशि असुरकुमाराणा अ

जेमाणा विहरति, कहिणं भते ! दाहिणिंल्लानं असुरकुमारदेवाण पज्जतापज्जत्ताण ठाणा पयात्ता ? कहिणं भते ! दाहिणिंल्लानं असुरकुमारा देवा परिवसति ? गो० ! जवुद्धीवे ? मदरस्स पव्वयस्स दाहिणेण इमी सेरयणप्पन्नाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सवाहल्लापु उवरि एण जोयणसहस्स उग्गाहिता हेठावेग जोयणसहस्स वज्जित्ता मज्जे अउत्तरजोयणसयसहस्से एत्थण दाहिणिंल्लानं असुरकुमाराणं देवाण देवी णय चोत्तीसं अवणावाससयसहस्सा हवतीति मस्काय तेण अवणा आहि वहा अंतो चउरसा सोचिव वसन्ते जाव पफिरूवा एत्थण दाहिणिंल्लानं असुरकुमारदेवाणं पज्जतापज्जत्ताण ठाणा पयात्ता । तिसुवि लोगस्स असुखेज्जइत्तागे, तत्थणं वहवे दाहिणिंल्लानं असुरकुमारदेवा देवीउ परिवसति काला लोहियस्का तेहेव जाव

वच्च सामित्त भट्टित्त महत्तरगत आणाईसर सेणावच्च करिमाणे पालिमाणे । अधिपतिपणो पौराधिपपणो स्वामीपणो पोपकपणो मोटापणो आआ पानता पन्नावता करता । मइया हयनट्ठगीयवाइयं ततोतल ताडतुडिय चणमद ग पडयवाइयं रवेण टिब्बाइ भोगभोगार भुजमाणाविहरति । मोटा प्रव्दना नृत्य वादिव तवी ताल तालोटा चटित घनमदग पडइमद्व तिण्णकरी देवताना भोग भोगवता विचरे चमर वणिणो इत्थंवे चमरकुमारसवा णोपरिवसति । चमरेन्द्र वलेन्द्रनमेक्के असुरकुमारना जीव वसेक्के । कालामपानीनसरिसा नीलगुलियगलव अयविकुसुमपुग्गासा । कालेवर्णं मइानोल

भुजसाणि ब्रह्मरात, एव सद्यैत्य न्नाणयद्भु न्नवणवासाणि, नमर इत्य अंसुरकुमारया प  
रिवसड काले महानीलसरित्ते जाव पहासेमाणे सेण तत्य चउत्तोसाए न्नवणावाममयमहम्माण चउसुठोए  
सामाणियसाहस्सीण तावत्तीमाए तावत्तीसगाण चउरह लोणपालाण पचरह अगमहिंसीण सपरिवाराण  
तिरह परिसाण सत्तरह अणियाण सत्तरह अणियाहिंवड्ढण चउरह च चउसठीण आयररुदेवनाहस्मीण  
अन्नेसिं च वल्लण दाहिणिस्साण देवाण देवीणय अहेवच्च पेरिवच्च जाव विहरति । कहिण व्रते ! उत्तरि  
स्साण असुरकुमाराण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पणत्ता । कहिणं व्रते ! उत्तरिस्सा असुरकुमारा देवा  
परिवसति ? गोयमा ! जवुद्धोवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं इमीने रयणप्पन्नाए पुट्ठवीए असीउत्तर

कर वल्लुन सरोखा नोलगुलीनोपरे स्थान विवध्वतपचनोपरे निर्मल । धियसियमउपत्त निगमनरिमिधिततयनयणा । मशानिमेन राताहे नेव लहना ।  
गुरुत्तादयडल्लसुगनासा उवचिउसिभपवात्तविवक्कन सर्विद्वधकक्षा । गुरुठनोपरे साउगीनात्त मिदक्कन समच्छाठ । पउरसमिसालविनन  
निगलसखगोळीरकुट्टदग्गयमुणालिय धवलदत्तमठीहुयवहनिधतथायत्ततवचिक्क करतल्लनत्ताणुओडा । गउ गाओर क्खु पाणोनाक्क कम्मत्ताभात्त  
या धवलाटातनी यणो धीत निर्मल एववा राते सुवर्णेनोपरे छाव पग तत्ता जीभ जिणरी तथा । येवणपव कसिक्कगउयरमणिअ निडक्केत्ता । गज्ज  
सावारानननादिके कोधाहे काला वोक्कणाक्कग । वामेयक्कहनधरा अरचदपागलित्तारिमिधिमिध पणपयासाद । वामेकाने कण्ठन दाट्टवउत्ते नोप्याहे  
गान तथा निगारेक्क पुणवर्ण केडवा । असकिनिहारा सुमुमाद वत्ताद पवरपरजिहार । पससिड पल्लत्तम्भ वमिक्करो पदिग्गा हे । पउरपटमनउत्त  
ता वी यत्त असपता भट्टे जुट्टणे वडमाणा । पडिलोवउ कौटोने वीजो खगवी पाय्या योवनकमारवणे पाम्याहे । तनभगयत्तडिउ पवरभूण निगमन  
मणि रउयसडिउभुग दसमुट्टिया साउयगइत्या । एतल्ल तल्लभग वाहता आभरण वीहरपापमग्ग पउरउपव निमेल मणिरनेक्करो नाय हे नउत्त



वाससः सप्तहस्ताः सप्ताष्टः सामाण्यसाहस्रमात्रं तावत्तासाष्टौ तावत्तासगाण चउग्रहः लग्नापालाण पचग्रहः  
 शुग्गमहिंसीण सपरिवाराण तिरुहः परिंसाण सत्तग्रहः शुणियाण सत्तग्रहः शुणियाहिंवर्द्धण चउग्रहः सप्तीण  
 व्यायरस्मदेवसाहस्सीण शुणोसिच वल्लण उत्तरिंक्षाण अमुरकुमाराण देवाणय देवीणय शुहिंवर्द्धण पोरेवर्द्ध  
 जात्र कुट्टमाणे विहरति । कहिण नते ! नागकुमाराण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पयुत्ता, कहिण

णिवडोपणे । नणाइसर सेणावच्च करिमाणे पालिमाणे । आन्नापलावताथका करावतायका । मड्याहाय नट्ट गोयवाइव ततोतल्लताल घणमुग पडुय  
 वापरवेष । माटाग्रह्द नट्टोत वर्जित ततो ताल तलेटा सृट्ठम माटा पड्डगण्ठे । टिल्लाइ भोगमाणा विहरति । टिल्ल भोग भोगवता  
 विचरेत्ते । कहिणभते दाहिणिंक्षाण अमुरकुमारदेवाण पज्जत्ता पज्जत्ताण ठाणा प० । किंहा हेभगवन् दाहिणिंदिगिता असुरकुमारदेवता पर्याप्ता अ  
 पर्याप्ता ठामकक्षा । कहिणभते दाहिणिंक्षा अमुरकुमारदेवा परिवसति । किंहा हेभगवन् दाहिण असुरकुमारदेवता वसेत्ते । गायमा जवूदीवे र भ  
 टरम् पववयम् दाहिण्ण । हेगौतम जवदीप मेरुपर्वतघो दाहिणदिगे । इमौसेरयणभाएपट्टवीए असीउत्तरजोयणसहस्र वाइल्लाए उव्वरि एगजोउण  
 महरम लग्गाहिंसा । ए रतनवभा पृथिवीनेविपै एकल्लाव असीउत्तरजोयण जाउण्णे ते ऊपर एकसहस्र योजन लग्गदीने । डिट्ठाएगजायणमहरम  
 वल्लिंत्ता । नीचे एकयोजन सहस्र मूकीने । मज्जे अट्टवत्तरे जोयणसहस्रसे । विचे अठत्तरहजार एकल्लाखोजन । एत्थण दाहिणिंक्षाण असुरकुमाराण  
 देवाण चउत्तीस भवणवास सयसहस्राहिंवत्तिमक्खाय । इत्था दाहिणना अमुरकुमारदेवताना ३४ लाख विभुवन् भगवत्तेकक्षा । तेण भयणायाहिंवट्टा  
 अतो चउत्तरमा सोचिव वण्णो जाव पडिक्खा । ते भवन वाहिर याटलाछे मांदि चौखूणात्ते । वण्णव सर्व पाकुलोपर जालुगै प्रतिकूप । एत्थण दाहिणि  
 ण्णाण असुरकुमाराण देवाण पज्जत्ता अपज्जत्ताण ठाणा प० । तिंहा दाहिणना असुरकुमार देवताना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकक्षा । तिसविलोयम् अ  
 सविल्लिंभाणे प० । तीन वीनल्लोकेने असव्यातसेभागे हुवुं । एत्थण वहवे दाहिणिंक्षा अमुरकुमारदेवदेवीषो परिवसति । तिंहा वणा असुरकुमारना दे





सा जाव पक्रित्वा तत्यण नागकुमाराण पज्जत्तापज्जाणाण ठाणा पसुत्ता । तिसुवि लोगस्स झुसखेज्जड  
 नागे तत्यण वहवे नागकुमारादेवा परिवसति, महिहिवा महज्जुड्या सेस जहा उहिवाण जाव विहरति  
 धरणन्नूयाणदा एत्थ दुवे नागकुमारयाणी परिवसति महिहिवा सेस जहा उहिवाण जाव विहरति कहिण

जोयणसहरस वल्लिता । हेठे एकयोजनसहय मूकोने । मग्गे अट्टइत्तरजोयणसयसहरसे । विचै एकलाख अठहत्तरसहय । एत्थण उत्तरित्ताण असुर  
 कुमाराण देवाण तीसभयणावाससयसहरस हवतित्तिसक्खाय । तिहा कत्तरता असुरकुमारदेवताना वोसलाए भुवन कक्षाछे तोयकरे कक्षा । तेण भव  
 ण वाहिवट्टा अतोचहरसा सेसजहा दाहिणिस्साण जाव विहरति । ते भुवन वाहिर बाटलाछं मध्यं चौखूणछे ग्रेप जिम टाक्षिणनौपरे यावत् विचरेछे ।  
 इत्थ बलि वदरीयणदे वदरीयणराया परिवसति । इहा वलेन्दनामे रोहणी राजा वसेछे । काले महाणोससरिसे जाव पभासेमाणा । कालेवर्ण महा  
 नोलवस्तुनौपरे यावत् ग्रांभतारहेछ । सेण तलतीसाए भयणवाससयसहस्साण । ते तिहा तोसलाए भवनेकरो । सट्ठेण सामाणियसाहस्त्राण तायत्ती  
 साए तायत्तीसगाण । साठसहय सामानिकदेवैकरो चायजिगकदेवैकरी । चउवह लोगपालाण पवणह अगमहिस्सोण सपरिवाराण तिस परिसाण ।  
 चार लोकपालेकरो पच अगमहिप्पयेकरी परिवारेसहित तीन परपट्टयेकरी । सत्तरह अणूयाण सत्तरह अणियाहिवट्टेण । सात अतीकेकरी ९ अनी  
 काधिपतिकरी । चउवह सट्ठेण आयरक्खेवसाहस्त्रोण अणेसिचवड्डण उत्तरित्ताण अमुरकुमाराण देवाणय देवीणय आह्वेवध पारेवड्ड जाउमाणे विह  
 र । साठचौगुणाकृता ढोयलाख चानोसहजार देवता आकरलक और दूजा घणा उत्तरदिगि असुरकुमारदेवता देवीनो अधिपतिपणी पौरपणी  
 विचरे । कहिण भते नागकुमाराण देवाण पज्जत्तापज्जाणा ठाणा प० । किहा हेभगवन् नागकुमारदेवना पर्याना अपर्यासानो ठामकक्षा । कहिण भ  
 ते नागकुमारादेवा परिवसति । किहा हेभगवन् नागकुमारदेवता वसेछे । गायमा इमीसियणपभाएपुट्ठवीण असीठकरे जोयणसयसहय वाहलाए ।  
 हेमोतम एरत्तमभाष्टथिनीने एकलाख असौहजारयोजन जाडपणी । भवरि एगजोयणसहरस उगाहिता । ऊपर एकयोजन सहय उगाहीने । इतिहा

नते ! नागकुमारादेवा परिवसति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पन्नाए पुढवीए असीउत्तरजीयणसयसहस्से वाहन्नाए उवरि एग जीयणसहस्स वज्जिऊण मज्जे अछहत्तरिजीयणसयसहस्से एत्थणं नागकुमाराण देवाण पज्जातापज्जात्ताण चुलसीइन्नवणावाससयसहस्सा हवतीति मस्काय, तेण न्नवणा वाहि वहा अतो चउर

यता देवो वसेछे काला नोदियक्खा तहेव जाव भुजमाणा विहरति । कालोवणं रातीआख्या तिमहीज यावत् भोग भोगवता विचरैछे । एणसि तहेव तावत्तिस-लोगपालाभवति । एहने तिमहीज चावत्तिसक देवता लोकपाल । एव सब्बत्थ भाणियव्व भवणवासीए । इणतरे सयं पाछनो परे कहिवा भवणवासो ते । चमरे असुरकुमारेदे असुरकुमारराया परिवसई । चमरचचा राजधानोये असुरकुमारनामै इन्द्र वसेछे । काले महानीलसरिसे जाव पभासेमाणे । कालेवणं महानील वल्लुविणय तेहनोप्रभा करता विचरैछ । मण तय चउतीसाए भवणवाससहस्साण चउसठ्ठए सामाणियसाहस्यो ण । तिहा चउतीसलाख भवनेकरो ६४००० सामानिक देवताकेरौ । तावत्तीसाए ताउत्तीसगाण चउण लोगपालाण । चावत्तियक देवेकरो ४ लोक पालेकरो । पचपह अगमहिणीण सपरिवाराण । पाच अगमहिणेकरो परिवारसहित । तिण परिमाण सत्तण अणियाण सत्तण अणियाइवइण चउण चउसठ्ठोणं आयरक्खइयसाहस्योण । तीन परिपदा करौ ७ अनिकेधिपति करौ बीसठ बीगुणाकरता दायलाख छणनइजार आत्मार चक देवेकरो । अग्नेसिववह्मण टाहिणिह्माण देवाणय देवीणय आहिंइव्व पोरेव्व जाव विहरति । अनेरा घणा टब्बिणवासौ ठउता देवागना अविपतिप ो पीराधिपणी यावत् विचरे । कहिणभते उत्तरिह्माण असुरकुमाराण पज्जात्ता पज्जात्ताण ठाणा प० । किहा हेभगवन् उत्तरना असुरकुमारना पर्यासा अपर्याप्ताना ठामकक्षा । कहिण भते उत्तरिह्माण असुरकुमारादेवा परिवसति । किहा हेभगवन् उत्तरना असुरकुमारदेवता वसेछे । गोयमा ज्वूणीये र मटरस्य पब्बयप्प उत्तरेण । हेमीतम ज्वूणीपनाम होप ते ज्वूहोपने, मेरुपर्वतयको उत्तरे । इमीत्तरयणप्पभाए पुढवीए असोउत्तरजीयणसयसहस्स वाइ ह्माए । ए रतनप्रभाअग्निवीने एकलाख असोइजार योजन जाइपणे । उवरि एगजीयणसहस्स उगाहिता । ऊपर एकयोजनसहण उगाहीने । दिहाएग

सा जाव पन्तिरुवा तत्यण नागकुमाराण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पयत्ता । तिसुवि लोगस्स अस्सवेज्जड  
 ज्ञागे तत्यण बहवे नागकुमारादेवा परिवसति, महिहिंया महज्जुडया सेस जहा उहिंयाण जाव विहरति  
 धरणन्नूयाणदा एत्थ दुवे नागकुमारायाणी परिवसति महिंया सेस जहा उहिंयाण जाव विहरति कहिण

जोयणसहरस वल्लिता । हेठे एकयोजनसइय मकूने । मउक्के अट्टइत्तरजोयणसयसहरसे । विचे एकनाय अठहत्तरसइय । एत्थण उत्तरिणाण अमुर  
 कमाराण देवाण तीसभवणावाससयसहरस इवतित्तिमस्त्राय । तिहा ऊत्तरना असरकमारदेवताना वोमलाय भवन कक्षाछे तीर्थकरे कक्षा । तेण भन  
 ण बाहिबद्धा अतोवसरसा सेसजहा दाहिणिप्पणा जाव विहरति । ते भवन बाहिर बाटलाक्खं मय्यं चौखूणाक्खे येप लिम टाच्चिणनोपरे यावत् विचरेहे ।  
 इत्थ वलि वदरोयणिदे वदरोयणराया परिवसति । इहा वलेट्टनाम रोहणी राजा वसेहे । काले महाणोलसरिसे जाव पभासेमाणा । कालेवणं मज्जा  
 नोलवसुनोपरे यावत् गोमत्तारहेक्ख । सेण तत्थतीसाए भयणवाससयसइच्छाण । ते तिहा तीसलाख भवनेकरो । सट्ठेण सामानियसाइच्छाण तात्ती  
 साए तात्तीसगाण । साठसइय सामानिकदेवकरो जायवियकदेवकरो । चउवइ लोगपालाण पचवइ अगमहिंसोण सपरिवाराण तिण परिसाण ।  
 चार लोकपालिकरो पच अगमहिंयावेकरो परिवारेसहित तीन परपटोयेकरो । सत्तवइ अणोयाण सत्तवइ अणियाहिंवइण । सात अनोकेकरो ७ अनो  
 काधिपतिकरो । चउवइ सट्ठाण आयरकुदेवसाइस्त्रीण अणेसिचइण अमुरकुमाराण उत्तरिणाण अमुरकुमाराण देवाणय देवीणय त्राहेवइ पारेइव लायमाणे विह  
 र । साठचीगुणाकरता दीवलाख् चानोसइहार देवता आत्तरलक थोर दूजा घणा उत्तरटियि अमुरकुमारदेवता देवीनो अधिपतिपणी पोरपणी  
 विचरे । कहिण भते नागकुमाराण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा प० । किहा हेभगवत् नागकुमारदेवना पर्याता अपर्यात्ताना ठानकक्षा । कहिण भ  
 ते नागकुमारादेवा परिवसति । किहा हेभगवन् नागकुमारदेवता वसेहे । गोयमा इमीसेरयणभाएपटथीण अमीउत्तरे जोयणसयसइय याइलाए ।  
 हेमौतम एरत्तप्रभाएथिचीने एकनाख अत्तीहजारोजन जाउपणी । इवरि एगनायणसहरस उगाहिता । ऊपर एकयोजन सइय उगाहोने । इइहा

नते ! नागकुमारादेवा परिवसति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पन्नाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्से वाहन्नाए उवरि एग जोयणसहस्सं वज्जिजण मज्जे अउहत्तरिजोयणसयसहस्से एत्यणं नागकुमाराण देवाण पज्जन्तापज्जन्ताण चुलसीइन्नवणावाससयसहस्सा हवतीति मस्काय, तेणं नवणा वाहि बहा अतो चउरं

वता देवो वसेछे काला लोहिक्खा तहेव जाव भुजमाणा विहरति । कालोवणं रातीआख्यां तिमहीज यावत् भोग भोगवता विचरेछे । एएसि तहेव तावतिस-लोगपालाभवति । एहने तिमहीज वायधिसक देवता लोकपाल । एव सख्य भाणियव्व भवणवासोण । इणतरे सयं पाळ्ळो परे कहिवो भवणवासो ते । चमरे असुरकुमारेदे असुरकुमारराया परिवसई । चमरचवा राजधानोये असुरकुमारनामै इन्द्र वसेछे । काले महानीलसरिसे जाव पभासेमाणे । कालेवणं महानील वसुविणेष तेहनोप्रभा करता विचरेछ । सेण तय चवतीसाए भवणवाससहस्साण चउसठ्ठण सामाणियसाइछो ण । तिहा चउतीसलाख भवनेकरो ६४००० सामानिक दवतायेकरो । तावत्तीसाए ताउत्तीसगाण चउथ लोगपालाण । चाउविगक देवेकरो ४ लोक पालेकरो । पचवइ अगमहिंसीण सपरिवाराण । पाच अगमहिंसेकरो परिवारसहित । तिण परिसाण सत्तण अणियाण सत्तण अणिउहिंवईण चउथ चउसठ्ठीण आयरक्खइससाइछोण । तीन परिपदा करो ७ अनिकेधिपति करो चौसठ चौगुणाकरता दांयलाव छप्पनइजार आत्तर छक देवेकरो । अणुसिचवइण दाहिणिह्माण देवाणय टेवोणय आह्वेवच्च पोरेवच्च जाव विहरति । अनरा घणा टच्छिणवासो दवता देवागना अविपतिप णो पौराधिपणी यावत् विचरे । कहिणभते उत्तरिह्माण असुरकुमाराण पज्जसा पज्जसा ठाणा प० । किहा हेभगवन् उत्तरना असुरकुमारना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्मा । कहिण भते उत्तरिह्मा असुरकुमारादेवा परिवसति । किहा हेभगवन् उत्तरना असुरकुमारदेवता वसेछे । गोयमा जवूहीये २ मटरच्छापव्वय्य उत्तरेण । हेगौतम जवूहीपनामै होप ते जवूहीपने, मेरुपर्वतयको उत्तरे । इतीसेरयणप्पन्नाए पुढवीए असोउत्तरजोयणमयसहस्स वाहन्नाए । ए रत्नप्रभापुयिथीने एकलाख असोइजार योजन जाडपणे । उवरि एगजोयणसहस्स उगाहिता । ऊपर एकजोजनसहस्स उगहोते । हिडाएग

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

यनानि त्रिशतगुणसंख्याणि नागकुमाराणां चत्वारिंशत् वस्तुत्रिशत् सुवर्णकुमाराणां पट्चत्वारिंशत् द्वीपदिगुदधिबिद्युत्स्नानिताग्निकुमाराणां प्रत्येकं पट्त्रिशद्वनशतसहस्राणि ॥ सम्प्रति सामानिकालसरजमदेवसङ्गस्यार्थमाह-चउसदीसहोसपु इत्यादि ॥ दानिणात्यस्याऽमुसुमारोदस्य

ससप्तसहरसा हवतीति मस्काय, तेन त्रवणा वाहिवहा जाव पक्रिहवा एत्यण दाहिणिह्वाण नागकुमाराणं पज्जत्तापज्जन्ताण ठाणा पणत्ता, तिसुवि लोगस्स अ्सखेज्जडजाणे एत्यण वहवे दाहिणिह्वाण नागकुमारा देवा परिवसति महहिंया जाव त्रिहरति । धरणे एत्य नागकुमारिदे नागकुमारया परिवसति महहिंए जाव पन्नासेमाणं सेण तत्य चौत्रालीसाए त्रवणावाससयसहरसाण ठरह सामाणियसाहरसीण तावत्तीसाए तावत्तीसगाण चउरह लोगपालाण ठरह अगमहिंसीण सपरिवाराण तिरह परिसाण सत्तरह अणियाण सत्तरह अणियाहिर्वईण चउवीसाए अणयरस्कदेवसाहरसीणं अन्तंसि च वल्लण दाहिणिह्वाणं नागकुमाराण

मारदेवताहे । चामालोस भवणावाससहसा हवतीति मस्काय । चौबालोसनाख भवन इम तौर्धकर कछो । तेण भवणावाहिवहा अतो चउरसा जाव पक्रिहवा । तमवत वाहर व ठना मोहि चौरस यावत् प्रतिरूप । एत्य दाहिणिह्वाण नागकुमाराण पज्जत्ता पज्जत्ताण ठाणा प० । इहा दक्षिणना गजमारना पर्गप्ता अर्पयाप्ताना ठामकछा । तिसुखिलाउस त्रसखिज्जइभाग । त ते बाललाकने अमय्यातमेभाग । एत्य वहवे दाहिणिह्वा नागज नारदेवा परिवसति । इहा वणा दक्षिणना नागकुमारदेवता वसेहे । मदिहुंठया जाव विहरति । म ठोक्कहि यावत् विचरे । धरणे इत्य नागकुमारिदे नागकुमारयाणो परिवसति । धरणनाम नागकुमारामे इत्थ नागकुमारराजा वसेहे । मड्डुडया जाव पभासमाणे । मांठोक्कहि प्रभासहि त । मेण तत्य चउत्रालीसाए भवणावाससयाण ठरह सामाणियसाहस्योण । ते तिहा चौमालोसताअ भवननीसय्या कही कसइय सामानिके करी । तावत्तीसाए तावत्तासगाण चउरह लोगपालाण ठरह अगमहिंसाण सपरिवाराण । तानहजार चौबानियके करी चारलानापलकरा अगमदिशवे करी

ज्ञेते ! दाहिणिह्वाणनागकुमाराण देवाण पज्झत्तापज्झाणं ठाणा पसत्ता । कहिण ज्ञेते ! दाहिणिह्वाण  
नागकुमारादेवा परिवसति ? गोयमा ! जबूदीवे २ मटरस्स पव्वयस्स दाहिणेण डमीने रयणप्पजाए पुढ  
वीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सवाहत्ताए उवरि एग जोयणसहस्स उग्गाहिता हेठावेग जोयणसहस्स व  
ज्जित्ता मज्जे अण्हत्तरिजोयणसयसहस्से एत्थण दाहिणिह्वाणं नागकुमाराण देवाण चोयालीसं भवणावा

एग जोयणसहस्स वज्जित्ता । नीचे एकजोनसहय मूकोने । मज्जे अण्हत्तरि जायणसयसहस्से । विचे १०८००० परिमाण । एत्थण नागकुमाराण दे  
वाण पज्झत्ता अपज्झत्ताण ठाणा प० । इहा नागकुमार देवताना पर्याप्ता अपर्माप्ताना ठामकक्षा । चुनसति भवणावासमयसहस्स इवतिस्समत्ताय ।  
८४ लाख भुवनसख्या इवे भगवते कथो । तेण भवणावाहिबद्धा अतो चट्ठसा जाव पडिक्खा । ते भयन वाहिर बाटनाकारे माहि चौरस इमसं  
यावत् प्रतिरूप । तत्थण नागकुमारा देवाण पज्झत्ता २ ण ठाणा प० । तिहा नागकुमारदेवताना पर्याप्ता अपर्माप्ताना ठामकक्षा । तिसुविनोयस्स  
असखिज्जइभागे । तीनलोकने असख्यातमेभाग हुवे । तत्थण वहवे नागकुमारा देवा परिवसति । तिहा वणा नागकुमार देवता वसेछे । महडुटिग  
महज्जुःयासेसज्जहा आहिमण जाव विहरति । मोटोक्कडि मोटो खुतिकरौ अपथाक्तो लिस ओवनो आलाओ यावत् विहरै । कहिणभते दाहिणि  
ह्वाण नागकुमाराण देवाण पज्झत्ता २ ण ठाणा प० । किहा हेभगवन् दाहिणिदिगिना नागकुमारदेवताना पर्याप्ता अपर्माप्ताना ठामकक्षा । कहिण  
भते दाहिणिह्वा नागकुमारादेवा परिवसति । किहा हेभगवन् दाहिणिदिगिना नागकुमार वसेछे । गोयमा जबूदीवेतोवे मटरस्सपव्वयस्स दाहिणेण । हे  
भौतम जबूदीप रं मेरुपर्वतयको दाहिणिदिगि । इमीमेरयण्णभाएपुठभौए असीउत्तरजोयणसयसहस्स वाहत्ताए । ए रत्तमभापृथिवीये एकनाख असोइ  
जार योजन-खाडपणे । उवरि एगजोयणसहस्स उग्गाहिता दिहा एगजोयणसहस्स वज्जित्ता । ऊपर एकहजार उगाहीने नीचे एकजोनसहस्स मूको  
ने । मूक्तप्रहत्तरजोयण समसहस्से । विधाले एकनाख पठातरसहय । एत्थण दाहिणिह्वाण नागकुमाराण देवाण । इहां दाहिणिदिगिना नागकु

यनानि त्रिशतगुणसंख्यानि नागकुमारानां चत्वारिंशत् षतुस्त्रिंशत् सुवर्णकुमाराणां पट्चत्वारिंशत् द्वीपदिगुट्यधिकविशुद्धस्तनिताग्निकुमाराणां प्रत्येक पट्त्रिंशद्भवनशतसंख्यानि ॥ सम्प्रति सामानिकालमरुददेवसङ्घासयस्यार्थमाद-घउयसीसहोसलु इत्यादि ॥ दानिनात्यस्या ऽगुरकुमारिद्रस्य

ससयसहस्रा हवतीति मस्काय, तेषां नवणा द्याहिबहा जाव पक्रुवा एत्यण दाहिणिह्वाण नागकुमारानां पज्जत्तापज्जन्नाण ठाणा पणत्ता, तिसुवि लोगस्स अ्सखेज्जइयागे एत्यण बह्वे दाहिणिह्वाण नागकुमारा देवा परिवसति महहिंया जाव विहरति । धरणे एत्य नागकुमारिदे नागकुमारया परिवसति महहिंए जाव पन्नासेमाणे सेण तस्य चौयालीसाए नवणावाससयसहरसाण ठरह सामाणियसाहरसीण तावत्तीसाए तावत्तीसगाण चउरह लोगपालाण ठरह अण्णमहिंसीण सपरिवाराण तिरह पणिसाण सत्तरह अणियाण सत्तरह अणियाहिंवईण चउवीसाए अणयररुदेवसाहरसीण अण्णेत्तिसि च वल्लण दाहिणिह्वाण नागकुमारानां

मारदेवताहै । चामालोस भवणावाससहस्रा हवतिस्तिमस्काय । चौवालोलमनास भवन इम तौधंकर कल्लो । तेषां भवणावाहिउट्ठा अतो चउरसा जाव पक्रुवा । तभवन वाहिर व ठना मोहि चोरस यावत् पत्तिरुप । एत्यण दाहिणिह्वाण नागकुमारया पज्जत्ता पज्जत्ताण ठाणा प० । इहा दक्षिणना गजमारना पर्गीत्ता अयर्थापत्ताना ठामकल्ला । तिसुखिलान्ण असखिज्जइभाग । त ते नालनाकने अमत्थातमेभाग । एत्यण बह्वे दाहिणिह्वा नागकुमारदेवा परिवसति । इहा घणा दक्षिणना नागकुमारदेवता वसेहै । महिउट्ठा जाव विहरति । म ठोक्कहि यावत् विचरे । धरणे इत्य नागकुमारिदे नागकुमारया णोपरिवसति । धरणेनामे नागकुमारनामे इन्द्र नागकुमारराजा वसेहै । महउट्ठा जाव पभासेमाणे । मोटोक्कहि प्रभासहि त । सेण तस्य चउयानौसाए भवणावाससयाण ह्वाह सामाणियसाहस्राण । ते तिहा चौमालोसलाय भवननीसख्या कही उसइय सामानिके करी । तावत्तीसाए तावत्तीसगाण चउपह लागपालाण ह्वाह अण्णमहिंसाण सपरिवाराण । तानहजार चायनियकेकरा चारलोकवलेकरा यग्नमहिंयायेकरा



सामानिकादवा पतु पापमरुद्वाणि श्रीक्षराहस्य पष्टिमहस्त्राणि अमरवर्जानाम मुरकुमारैद्वयर्जाना सर्वेषा नपि दाक्षिणात्याना भीक्षराहाना च  
षट् २ सप्तस्त्राणि प्रत्येक सामानिषाउ एतेऽनन्तरोक्तसस्याकाटय सामानिका ज्ञातव्या आत्मरत्नका पुन सर्वत्रापि सामानिकवर्तुर्गुणा प्रतिप

देवाण्य देवीण्य अहेवच्च परेवच्च जात्र कुक्षमाणे विहरति कहिणं ज्ञते ! उत्तरिक्षाण नागकुमाराण दे-  
वाणं पञ्जानापञ्जाना ठाणा पण्णत्ता, कहिण ज्ञते ! उत्तरिक्षा नागकुमारा देवा परिवसति ? गोयमा !  
जवहीत्रे २ मटरस पण्यस्स उत्तरेण इमीसे रयणप्यन्नाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सवाहत्ताए उ  
वारि एग जोयणसहस्स उग्गाहिन्ता हेठावेग जोयणसहस्स वज्जिन्ता मज्जे अण्हत्तरिजोयणसयसहस्से एत्थण  
उत्तरिक्षाण नागकुमाराण देवाण चत्तालीस जवणावासयसहस्सा हवतीति मस्काय, तेण जवणा वाहि  
वहा सेस जहा दाहिणक्ष्णाण जात्र विहरति, नूयाणदे इत्थ नागकुमारया परिवसइ मह

परिहारमहित । तिण परिसाण सत्तह अणियाण त्रणोगाहिबइण चउवीसाण आयरक्खदेवसाहकौण । तीन परपटासहित सात अनौकेकरो सात अ-  
नौकाधिपति करो चौवीससहस्र आकरक्क देवेकरी । अणिसिचवहूण दाहिणिक्षाण नागकुमारा देवाणउ देवीण्य अहेवच्च परिवच्च जावमाणे विहर-  
ति । अनैरा घणा दक्षिणना नागकुमारदेवता देवागमा अधिपतिपणा पालता पिचरेक्के । कहिणभते उत्तरिक्षाण नागकुमाराण देवाण पञ्जतापञ्जत्त  
गाण ठाणा प० । किइा हेभगवन् उत्तरना नागकुमारदेवता पर्गधता अपर्गधिताना ठामकन्ना । कहिणभते उत्तरिक्षा नागकुमारदेवा परिवसति ।  
किइा हेभगवन् उत्तरना नागकुमारदेवता वसेक्के । गोयमा । जवहीवे २ मटरस उत्तरेण इमीसे रयणप्यन्नाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्स वा  
हत्ताण । हेगौतम जवहीपे २ मेरुपर्वतयकी ए रत्नप्रभा पुथिहीने एकनाख यसीहजारजोवन जाउपके । उवरि एगजायणसहस्स उग्गाहिन्ता । ऊपर  
एकहजारजोवन उग्गाहीने । विहाएगजोयणसहस्स वज्जिन्ता । हेठे एकहजारजोवन वहीने । मध्मे अण्हत्तर जोयणसयसहस्से । माहि एकनाख अ

तस्या इदानीं दाक्षिणात्यानां मोक्षरक्षणानां चासुरकुमारादीनां यथाक्रमं मित्रादीन् निर्दिशति परमेष्वपि इत्यादि दाक्षिणात्यानां मयूरकुमाराणां धिपतिं यमरोनाकुमाराणां परमं सुवर्णकुमाराणां वेष्मदयं विद्युत्कुमाराणां परिकालं अभिभुमाराणां भिमिन् द्वीपकुमाराणां पू-

हिण् जाव पद्मासेमाणे सेण तस्य चत्तालीसाए न्नवणावामन्नसहस्सणाणं व्युहिवच्च जात्र विहरत्त । कहिणं न्नत्तं । सुवर्णकुमाराण देवणा पज्जत्तापज्जत्ताणां ठाणा पणत्ता । कहिणं न्नत्तं ! सुवर्णकुमारादेवा परिवसंति ? गोयमा । इमीसि रयणप्पन्नाए पुढवीण् जात्र एत्थण सुवर्णकुमाराण देवणा आवत्तरित्तवणावामन्नसहस्सा हवतीति मरुकाय, तेण न्नवणा वाहि वद्दा जात्र पफिग्गवा तत्थण सुवर्णकुमाराण देवणा पज्जत्ता पज्जत्ताणां ठाणा पणत्ता । तिसुत्ति लोगस्स व्युसस्सेज्जन्नागे, तत्थण वद्दवे सुवन्नकुमारा देवा परिवसन्ति महिहिंया सेस जहा उहियाण जाव विहरत्ति, वण्णदेव वण्णटालीय इत्थं दुवे सुवर्णकुमारिद्दा सुवन्नकुमार

ठात्तरवत्तार । एत्थण वत्तरिक्खाण नागकुमारदेवाण पत्ताभोम भवणावामं महरमा वृथतिथिं मज्जाय । इहा वत्तरदिग्गिता नागकुमारना यान्भोमज्जा व भवननोसब्बा क्कही वोत्तरगे क्कहो । तेणभवणावादिवद्दा सेस जहा दाक्षिणात्याणं न्नायं विहरत्ति । ते भवनं याद्विहं वाटन्ना जेव मये दन्तिव दिग्गिनोपरे यावत् विचरे । भूयाण्णदे इत्थं नागकुमारिदे नागकुमारराया षो परिवसन्ति । भूतानन्तं नागकुमारनामिं सावा गमेके । मण्ण्डेय न्नाय प भासेमाणे । मोटो स्सहि यावत् प्रभासहिता । सेण तत्थं वत्ताभोमाए भवणवाममयमादम्भोणं पक्खेवण जात्र विहरत्त । ते तिहा यान्भोमनाय भवन नोसब्बा दुवे वधिपतिपथो विचरेके । कद्विण्णभत्ते मवण्णकुमाराण देवाण पणत्ता पणत्ता ठावा प० । किंवा नुभगन्नं मण्णकुमारदेवता पग्गिमा अप यत्तिताना ठामक्कहा । कद्विण्णभत्ते मवण्णकुमारदेवता परिवसन्ति । किंवा उभगन्नं मण्णकुमार वमेके । गोयमा इमी रयणवामाण पण्डवोए नाय पत्ता य मण्णकुमाराण देवाण यावत्तारि भवणावासं मरुसहस्सा वृथतिथिं मज्जायं । ऐगीतण ए रत्त प्रमाद्विषोवे यावत् रत्तं मण्णकुमारदेव वमेके प०

ये उदधिकुमाराणां जलकान् दिक्कुमाराणाम् मित वायुकुमाराणां वेलम्ब्य स्तनितकुमाराणां घोष ॥ वतिनूग्रणदेहत्वादि ॥ चहरदिग्बत्ति नामसुरकुमाराणामिन्द्रोद्यलि नागकुमाराणां नूतानन्द सुपर्णकुमाराणां वेलुदालि विद्युत्कुमाराणां हरि सह अग्निकुमाराणामग्निमाणव द्वीप कुमाराणां विक्षिप्त उदधिकुमाराणां जलप्रपन्न दिक्कुमाराणाम् मितवाहन वायुकुमाराणां प्रसन्न स्तनितकुमाराणां महाघोष सम्प्रतिवर्ण

रायाणो परिवसति महहिषा जात्र विहरति । कहिण जते ! दाहिणह्वाण सुवन्तकुमाराणं पज्जत्तापज्जत्ता  
ण ठाणा पखत्ता । कहिण जते । दाहिणह्वा सुवन्तकुमारा देवा परिवसति ? गोयमा ! इमासे जात्र मज्जे  
अठ्ठहत्तरिजोयणसयसहस्से एत्थण दाहिणह्वाण सुवण्णकुमाराण अठ्ठत्तीस जवणावाससहरसा हवतीति  
मस्काय, तेण जवणा वाहि वहा जात्र पफ़िरुवा, तत्थण दाहिणह्वाण सुवण्णकुमाराण पज्जत्तापज्जत्ताण  
ठाणा पखत्ता, तिसुवि लोणस्स अस्सखेज्जाइन्नागे, एत्थण बहवे सुवण्णकुमारा देवा परिवसति । वेणुदेवे  
इत्थ सुवन्तिदे सुवण्णकुमाराया परिवसति सेस जहा नागकुमाराण । कहिण जते ! उत्तरिह्वाणं सुवन्तकु

त्तरनाखु भवनकक्षा दक्षिणदिशि ३८ लागु उत्तरदिशि ३४ लाखु तीर्थकरे कक्षो । तेण भणणावाहिदटा जात्रपडिब्बा । ते भवन वाहिर यावत् प्रति  
रूप । तत्थण सुवण्णकुमाराण देशण पज्जत्ता २ ण ठाणा प० । तिहा समर्णकुमारना ठामकक्षा । तिसुविनोगस्य पसिगुज्जरभागे । तीन्ने वोल्लोकिन  
प्रसख्यातमेभागे । तत्थण बहवे सवण्णकुमारा देवा परिवसति । तिहा षणा सुवर्णकुमारना देवता वस्से । सेस जहा आदिद्याण जात्र विहरति । ग्रंथ  
आवना आन्नावनीपरे विचरै । वेणुदेव वेणुदालिग इत्थदेव सुवण्णकुमारेवा सुवण्णकुमाराया णो परिवसति । वेणुदेव वेणुदाली ए दीय सुवर्णकुमार  
ना रात्रा जाणवा राजापणे विचरै । कहिणभते दाहिणह्वाण सुवण्णकुमाराण पज्जत्ता २ ण ठाणा प० । किहा हेभगवन् दक्षिणना सुवर्णकुमारना  
पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकक्षा । कहिणभते दाहिणह्वा सुवण्णकुमारा देवा परिवसति । किहा हेभगवन् दक्षिणना सुवर्णकुमार वस्से । गोयमा इमासे

सयस्यमाह-कालाग्रसुरकुमारादित्यादि गाथादय एगुरकुमारा सर्वेपि काला कष्टवर्णां रागकुमाराउदयिकुमारार्थेते उन्नयेपि पाण्डुरा धेत  
वणा वर जात्य यत्कनक तस्य निवप कस पट्टकंरेयातादृत् गौराग्रवति सुवर्णकुमारा दिक्कुमारा स्तनितकुमारा य तथा विद्याकुमारा अग्नि  
कुमाराद्वीपकुमारा य भयत्युत्तमकनकवर्णा इतिभाव वायुकुमारा वयामा इमान्त्वमेवस्पष्टयति प्रियवृवर्णा सश्रितिवरगतवर्णम

माराण देवाण पञ्जतापञ्जत्ताण ठाणा पणत्ता । कहिण नते ! उत्तरिस्त्वा सुवर्णकुमारा परिवसति ? गोय  
मा । इमीसे रयणप्पन्नाए जाव एत्थण उत्तरिस्त्वाण सुवर्णकुमाराण वत्तवया न्निणया तथा सेसाणवि चोढ  
सरह इढाण न्नाणियन्हा नवर न्नवणनाणत्त इढाणनाणत्त वयणं नाणत्त परिहणनाणत्त च डमाहि गाहाहि  
अनुगतव्व-चोवठिअसुराण चुलसीतीचेंवहोडनामाणं । वावत्तरिसुवर्णे वाळुमाराणत्तणउत्ति ॥ १ ॥  
दीवदिसाउदहीण विज्जुमारिदयिणियमग्गीण । तण्हपिजुवत्तयाण तावत्तरिमोसयसहरसा ॥ २ ॥ चोत्ती  
साचोयाला अठ्ठीसचहोइसयसहस्साइ । पणाचत्तालीसा दाहिणउत्तेतिन्नवणाइ ॥ ३ ॥ तीसाचत्तालीसा

जाव मज्जे अट्टद्वारे नीयणसयसहस्से । हेगौतम ए यावत् मादित्ते एकलाख अठोत्तरइद्वार । एत्थण दाहिणिस्त्वाण सुवर्णकुमाराण अठतीस भवणावाम  
मयसहस्सा हयतिन्तिमक्खाव । इहा टच्चिणा सुवर्णकुमारदेवताना इन् न्नाख भवन हुवे तीर्थकरेकणो । तेण भवणावाहिइहा जान पडिइवा । ते भवन  
वाहिर बाटला यावत् प्रतिरूप । एत्थण दाहिणिस्त्वाण सुवर्णकुमाराण पञ्जत्ता २ ण ठाणा प० । इहा टच्चिण सुवर्णकुमारना पयोमा अपयोमाना ठा  
मकक्षा । तिसुविलोका असखिस्त्वाभमे । तीन वाललीकने असत्त्यातमेभमे हुवे । एत्थण वहवे सुवर्णकुमारा देवा परिवसति । इहा घणा सुवर्णकुमा  
र देवता वसेछै । बिण्णुदेवेय इत्य सुवर्णकुमारिटे सुवर्णकुमारारायाणं परिवसति । येण देवताने सुवर्णकुमारनो राजा वसेछै । सेम जहा नागकुमारा  
ण । थाकतो ग्रप नागकुमारनीपरे । कहिण भते उत्तरिस्त्वाण सुवर्णकुमाराण देवाण पञ्जत्ता २ च ठाणा प० । किहा हेभगवन् उत्तरना सुवर्णकुमारदेव

तिपादनार्थमात्र-अमुरेसुहोतिरस्ता इत्यादिगाथाद्वय ॥ अमुरेव सुरकुमारेषु प्रपन्ति वस्त्राणिरक्तानि नागकुमारेषु उदधिकुमारेषु च शिलिप्रपुष्प  
प्रप्राणिनीलजर्णो नीत्ययं सुवर्णकुमारा दिक्कुमारा स्तनितकुमाराश्च अद्यास्यगवसनधरा अद्यास्यमुसस्रध्यास्य तत्र गतो य फेन सोद्यास्यगत  
स्वद्वत् घञल यद्वलं तदुरन्तो त्वद्यास्यगवसनधरा बाहुल्येन द्येववस्त्रपरिधानशीलाइत्यर्थं विद्युत्कुमारा द्वीपकुमारा अग्निकुमाराश्च नीलानुराग

चोत्तीसचेवसयसहस्साइ । ठायालावन्तीसा उत्तरन्तर्होतिन्नवणाइ ॥ ४ ॥ चउसठीसठीखलु वञ्चसहस्साउ  
असुरवज्जाणं । सामाणियाउणु चउगुणाअयारक्काउ ॥ ५ ॥ चमरेधरणंतहवे णुदेवहरिकतअग्गिसीहेय ।  
पणंजलकंतय अम्मियवेलेवयोसेय ॥ ६ ॥ दालिन्नूयाणदेवे णुटालीहरिस्सेहेअग्गिमाणवविसिठे । जलप्प  
अम्मियवाहणे पन्नजणेयमहाघोसे ॥ ७ ॥ उत्तरिस्त्वाण जाव विहरति, कालाअसुरकुमारा नागाउदहपीप  
हुसादीवि । वरकणगणिहसगोरा होतिसुवखादिसाथणिया ॥ ९ ॥ उत्तत्तकणगवन्ता विज्जुअग्गीयहोति  
दीवाय । सामापियंगुवखा वाउकुमारामुणेयत्ता ॥ २ ॥ असुरेसुहोतिरस्ता सिलिठपुप्फआयणाउदही । अया

पर्याप्ता प्रपर्याप्ताना ठामकह्या । कदिणमते उत्तरिस्त्वा सुवर्णकुमारादेवा परिवसति । किंवा इभगवन् उत्तरना सुवर्णकुमारदेयता वसेछे । गोउमा  
इमीसे रणणभाए जाव पयण उत्तरिस्त्वाण सुवर्णकुमाराण चवत्तीस भवणावाससयसइच्छा हवतित्तिमक्काय । हेगौतम ए रत्नप्रभाते यावत् इहा च  
त्तरना सुवर्णकुमारना २४ लाख भवननी सव्याकही तीर्थकरे कल्लो । तेण भवणा जाव पयण वडवे उत्तरिस्त्वा सवर्णकुमारादेया परिवसति । ते भवन  
यावत् इहा घणा उत्तरना सुवर्णकुमारना देवता वसेछे । महड्डाट्या जाव विहरति । महच्चिक यावत् विवरैछे । वेणुदानिय इत्य सुवर्णकुमारदे सु  
वर्णकुमारराया यो परिवसति । वेणुदाली इहा सुवर्णकुमार सुवर्णकुमारनामेराजा वसेछे । महड्डाट्या सेस जहा नागकुमाराण एव जहा सुवर्णकुमा  
राण वसत्तया भणिया । महच्चिक येप जिम नागकुमार इम जिम सुवर्णकुमारनी कदिणी कहौ । तहा सेसाणनि चउदसयइ इहाण भाणियच्च । ति

स मेव पितृ चोद्रेन्दुनो वक्तव्यता । तत्र भवणाणस्तं दृष्ट्वा गणेशं शरीराणस्तं परिहरणाणस्तं इमां गौडां शरीरगतम् । एतन्निविशेय भवननी सप्या  
 जून्तमानाम जूर्णप्रधान जूयत्पके गौडेश्वरी समभवा ते कहेहे—चउसाउउ अमुराग चुलसीतहचवहोऽगमाग । दावत्तरासुवणि वाउकुमाराण  
 गउउ ॥ १ ॥ ६४ लाव भवन अमरकुमारना ८४ लाव भूवन नागकुमारना ७२ लाव सुवर्णकुमारना १०८ लाव वायुकुमारना १॥ दौवटिसाउदहोण  
 विजयमारोदयणेण एणमपिजगन्निशाण छावभरिमोसयमरुक्का ॥ २ ॥ १२ इरुना एतले ६ युगलाका भवन ॥ २ ॥ चउतोसाचउवत्ता गडुनौसचसयसह  
 पण पणचसाम्भोमा द.दिणआहुतभगण ॥ ३ ॥ चमरेरु ३४ धरणेरु ४४ वेणुदेव हरिकन्त अन्तिमिगु पूर्ण ३८ यतसहय लज्ज जनकन्त अमित ५०  
 वेदम्यक घाप ४० ४६०००० ॥ ३ ॥ तामाचतालोमा चउतोमचेवममरुक्का ॥ ४ ॥ वलेरु ३० लाख भूनानेरु  
 हरिम वेणुनाभो ४० लाव अगित माणव बालहा ३४ लाव जनप्रभ अमितवाहन ४६ लाव प्रभञ्जन महाघोप ३६ लाख उत्तरअगिरा इन्दिरा भवन

अगिथा ३६६०००० ॥ ४ ॥ चउमडीमडागुलु हर्षमरुक्का ॥ ५ ॥ ६४ हजार चमरेरु ६० हला  
 र वनरु ६ हजार धरणेरा एणक अमरवर्जिन सामागकथो चौगुणी करतो आत्मरजकदेवता जागिथा ५ ॥ चमरधरणतुर्वेणु देवहरिकन्तत्रिग  
 माधेय पुननकजतप याममनेलनगघासेय ॥ ६ ॥ चमरेरु धरणेरु जिम वेणुदेव हरिकन्त अग्निनीसीहा पूर्ण जलकन्त अमित वसथक सोपा १० इति ह  
 निजयणी । व.नग भूगण्डिरे वेणुगालि हरमाहे अगिमाणेववासिहे । वलेरु भूतागेरु वेणुगाला उरियाव अग्निमाणव वसिष्ट । जलपट्ट तट्ट प्रमितवा  
 हर्ष पभनयेय महाघासे आगरिहाणु लाव विहरति । जलप्रभ अमितवाहन प्रभञ्जन महाघोप २० उत्तरदिशिना यावत् विचरेरु । कासा अमरकुमा  
 रा नागो वटधिय पाटरावावि । अमरकुमार काला नागकुमार ए दाय पाटुरा । पवरकणम निहसगाराहोति । प्रवर सर्वणवसे कण्ठाटिगे जहवो  
 न । मथपादिस.घाणवा । सुवर्णकुमार निगिकुमार सुनितनुमार ३ । उत्तमअणववणा विज्जुनगोयहृतिदोवाप । सामापिउगुवणा पाठकुमारामणि

सासयत्रतणधत्र होंतिसुवणादिसाथणिया ॥ ३ ॥ नीलाणुरागवसणा विज्जुण्णीयहोनिदीवाय । सज्जाणु  
 रागवसणा वाउकुमारामुण्यह्वा ॥ ४ ॥ कहिण नत्ते ! वाणमतराण देवाण पज्जतापज्जत्ताण ठाणा  
 पण्णा, कहिण नत्ते ! वाणमतरा देवा परिवसति ? गोयमा ! इसीसे रयणप्पजाए पुढवोए रयणमयरस  
 ककरस जोयणसहस्सवाहस्स उवरि एग जोयणसय उग्गाहिता हिठावि एग जोयणसय वज्जिहा मज्जे  
 झुठसु जोयणसएसु एत्थण वाणमतराण देवाण तिरियमसखेज्जाउ नोमेज्जा नगरवाससयसहस्सा हवतीति  
 मस्काय तेण नोमेज्जा नगरा वाहि वहा झुतो चउरंसा झुहे पुक्खरकन्निघासठाणराठिया उकिन्ततरवि  
 उलगन्नीरखायफलिहा पागारहालयकवाकत्तोरणपफ्फिदुवारदंसन्नागा जतसयग्घिमसलमुसुठिपरिचारिया  
 झुउज्जा सया जया सया गुत्ता झुठयालकुठरइयझुठयालकयवस्समाला खेमा सिवा किकरा मरदोवरस्सि  
 या लाउव्हीइयमहिया गोसीयसरसरत्तचदणदह्दरदिसपचगुलितला उवचियचदणकलसा चदणवधसुकयतो

यथा ॥ १ ॥ तप्यासांता सेहवा विद्युल्लनार अगिक्कुमार हीपकुमार स्यात्तुं प्रियव्रतोपरे वायुकुमारमो वर्यं जाणिवो । कहिणभते आउकुमारा वाणम  
 तराण पण्णा २ ण ठाणा प० । किहा वायुकुमार हेमवन् वाणमत्तर पर्गीणा अपर्थाभाना ठामकह्या । कहिणभते वाणमतरा देवा परिवसति ।  
 किहा हेमवन् वाणमत्तरदेव वमेह्मे । गाउमा इसीसे रागणभाए पुढवोए रागमयस्स कइस्स जोयणसहस्स वाहस्स झ । हेगौतम ए रतनप्रभानो ऊपर  
 लो रतनमयकाण्ड याजननहस्सने जाहपणे । उवरि एगजोयणसय उग्गाहिता । ऊपर एकयोजन ग्रत उगाहोमे । विद्याणगजोयण सयवज्जिता । हेठे ण  
 कसौगंजन यवकाण्डे । मज्जे षष्ठजोयणसण्णु । माहि विचै ८०० योजन । एत्थण वाणमतराण देवाण तिरियमसखेज्जा । इहा वाणमत्तर तिरिच्छा न  
 सव्यातगुणा । भोमिज्जानगरावाससयउह्वाहयतिचिमक्काय । भूमि रुइवोपरे नगरसा काखागमे भरिहते कछो । तेण भोमिज्जानगरा बाहिवह्वा

वसना वायुममारा सध्यापरागवसना धानमतरसूत्रे तिसुविलोगसश्रसरोज्जज्ञाने इति ॥ स्वस्थानोपपातसमुद्घातरूपेषु त्रिध्वि स्थानेषु लोक  
म्या सङ्केपज्ञाने वक्तव्यानि तथा नृगजयणोमहाकाया महोरगा कि विशिष्टा ते इत्याह-नृगजपतय गन्धवगगा गन्धवसमुदाया कि विशिष्टा  
स्ते इत्यादि-निपुणगन्धवगीतरतयो निपुणा परमकौशलोपेता यगन्धवजातीया देवा स्तेषा यद्वीत तत्र रति येषा त तथा एते व्यन्तराणाम धी

रणपङ्क्तिदुवारटेसन्नागा आसत्तोसत्तविउलवहवघारियमल्लदामकलावा पचत्रन्मरसरसुरजिमुक्तापुष्पपुजोव  
यारकलिया कालागुरुपवरक्कुदुरुक्कुतुरुक्कुधूमधमवतगधधूसान्निरामा सुगधवरगविया गधवहीन्नूया अक्कु  
रणसधविक्रणा दिव्वुत्तन्धियसहसपन्तदिया पन्नागमालाउलान्निरामा सव्वरणमया अक्कु सगहा लहा  
घठा मठा नीरया निम्मला निप्पका निक्ककळ्ळया सप्पन्ना ससिरीया सउज्जीया पासादीया टरसणि

प्रतीचउरमा । ते नगर बाहिर बाटना नाहि चौरसा । अहे पुक्खरकर्णगाण सठाणमठिया । नोचे कमलनो कर्णिकाने आकारे । उक्किणतर विहल्लग  
भोरक्खाय फल्लिहा पागारट्टालय कवाउतोरणपडिदुवारदेसभागा । उक्कोणं विचे पिह्लो गभोर फिटकमयो प्राकार ऊपर कपाठ तीरण द्वार मोटा  
तेहमा नाश्वादार । अतस मवधि मुमने मुसटिपरियरिया । रुडांदिगभाग मुमलप्रहरणाटिके परिवेदित्थे । अशोभ सगा जगसवा गुत्ता अडयालकट्ट  
गराया अडगाल कयवणमाला खमासवा कि करा मरदडावरक्खिया । साहमा देवुवा समर्थनहो मटा गुप्त ४८ देशीभाषाये प्रससाना  
वचन ४८ भेदेकरो फूलमाला कन्याएकारी उपट्टावविना किहुर भूतजदेवता तेणे राख्वाकै घर । साउल्लोऽयमडिया गोमोसरत्तचट्टणा दहरदिक्क पचा  
गुनितना पोपविय चट्टणकलमा । ४८ भेदेकरो फूलमाला कन्याणकारी उपट्टावविना किहुरभूत जेदेवता तेणे राख्वाकै लीप्य क्खे मणादिकनीपरे मड  
गाणीं रक्कदने दर्दर दीधकै पच्च गुनोनाहाय उपचित थाप्याकै चन्दनकलया । चट्टणकय तीरण पडिदुवारदेवभागा । चन्दनकलये रुडा शोभन  
कोधोके । आसत्तोसत्तविउलवघारिय सल्लदामकलावा । आसत्तो सरतभूमि अल्लपर वाध्या विपुलविस्तोणं दामना कला । पचवण सरससुरहिमुक्क



मन्त्रेदा इमे चान्ये ऽप्यन्तरज्जेदा अष्टौ ॥ अगपन्तिपट्यादि ॥ कथं भूता एते योऽनशोपि त्यतश्चाह-चलचलचपलपिप्तलीलणदर्विप्या चञ्चला अ नवस्थितचिता स्तथा चलचपलम तिगयेन चपल य क्रीडन यथ चित्तद्रव्य परिहास स्तौ प्रियो यथा ते चलचपलचित्तक्रीडनद्रवप्रिया ततश्चञ्चल ज्ञादैन विशेषणसमास तथा गहिरहसियगीयणचरणरतो ॥ गम्भीरपु हसतिगीतनहनेपु रति र्यथा ते तथा ॥ वणमालामलमउलकुलसञ्चद्वित्र विद्यान्नरणवाकून्मृगपरादिति ॥ वनमालामयानि यानि आमेलमुटकुण्डलानि आमलइति ॥ आपीदज्ञाव्यस्य प्राकृतलदगवणत आपीड डोखरक

ज्ञा व्यन्निरुत्वा पङ्क्तिरुत्वा एत्यण वाणमतराण देवाण पञ्जतापञ्जज्ञाण ठाणा पसुत्ता । तिसुवि लीगसरस  
अससेज्जहन्तागे तत्यण वहन्ने वाणमतरा देवा परिवसति तज्जहा-पिसाया नूया जस्का रस्कासा किन्नरा  
कि पुरिसा न्रयगत्रतिणीय महाकाया गधवृगणा य निउणगधवृगीतरड्ढणो व्युगवसिपणवन्नियइसिवा

पुरफ पुजोवगारकलियार । ७ पाच वर्ण सरस सुगन्ध मूक्या पूजनांक कलो ७ परिवज्जा । कानागुत्त पञ्चकुट्टक तुक्कडज्जन धूम घमघत गवधगा भिरामा सुगधवरगधिया गधवार्द्धभूया । कानागर पञ्चप्रधान कुट्टरुत्त तुक्क सत्तहारसेकरी मघमघात्तमान सुगन्ध तिणेकरी गन्धनी वाट इइहे । अक्खार गणसव सकिणा टिब्बतु डय सहसपणइया । अस्सरानासमूहनीये करीसइति । पडागलानाडलाभिरामा सच्च रयणामया अत्थासणा । सुट्ठा टि साअलता मनोहरगन्द सर्व रतनमय आच्छाहे । घट्टा मट्टा नीरया निम्बला निम्बका निककड्ढाया । घट्टाछे मठारगाछे नीरज निर्मल निम्बकम्भ नि अकण्ठक प्रभासइति । सण्णहा सस्मिरीया सउज्जाया पासाइया दरसणिज्जा अभिरुत्वा पङ्क्तिरुत्वा । सद्यात दर्शनोक्के टुखवायोग्य अभिरूप प्रतिक्रम । एत्यण वाणमतराण देवाण पञ्जता पञ्जताण ठाणा प० । इणा वाणव्यत्तर देवताना पर्माणा अपर्याप्ताना ठामकज्जा । तिसुविलीगन्ध अससिञ्जइ भागे । तीने बोललोक्कने अमब्ब्यात्तेभागे हुवे । तत्यण वहन्ने वाणमतरादेवा परिवसति त० । तिहा घणा वाणयत्तर टवता वसेहे तेकहेहे-विसाया भूया जस्का रस्कासा किन्नरा किन्नरा किन्नरा भुजपति महोरग महकन्त । गधव्य गणाय

तथा स्वेच्छं विभ्रुविभ्रानि यानि २ आभरणानि ते यत् चारुनृपण मग्नन तदुरतीति वनमालापीठमुकुटकुण्डरा स्वेच्छन्दविभ्रुविभ्रानाभरणधारुनू  
पणधरा तथा स्वयंते सवर्तुनविभ्रि मुरन्निद्रुमे सुरचिता सुष्टु निवर्तिता तथा प्रलम्बते इति प्रलम्बा योजते इति शीघ्रमाना कान्ता  
कमनोया यिकमन्ती अमुकुनिता स्यात्पुष्पमयीचित्रा नानाप्रकारावयनमाला रचिता वक्षसि येस्ते सर्वे सुसुरन्निद्रुमरचितप्रलम्बशीघ्रमानकान्तविक्र  
मपित्रवतनानारचितवक्षस तथा काम स्वेच्छया गमो येषा ते कामगमा स्वेच्छाधारिण क्वचित्कामकामाङ्गतिपाठ तत्र कामेन स्वेच्छया कामो  
मैयूनमेया येषान्ते कामकामा ॥ अनियतकामा इत्यर्थ ॥ तथा काम स्वेच्छया रूप येषान्ते कामरूपदेहा स्तान् धरन्ती  
त्वं शीला कामरूपदेधारिण स्वेच्छाविकृतवतनानारूपदेहधारिण इत्यर्थ तथा नानाविधैर्बर्णै रागो रक्तता येषा तानि नानाविवर्णराग  
णि वराणि प्रधानानि चित्राणि नानाविधानि अद्भुतानि वा चित्तुगानि देशीवचनात्, देदीप्यमानानि नियसशाणि परिधानानि येषा ते नाना  
विषयण रागधरयस्त्रिचलकनिवसना तथा विविधैर्दर्शनेष्वर्प्यं गृहीता येषा ये स्ते विविधदेशीनेष्वर्प्यगृहीतवेषा तथा समुद्रयक्रन्दप्लवङ्गकैलि  
कोलाहलाप्रयाङ्गति कदप कामोद्दीपन चेष्टा च कलहो राटी कैलि क्रीडा कोलाहलो योल कदपकलहकैलिकोलाहल प्रिया येषा ते कदपकल

इयन्नयवाडय महाकटिय कीहरूपयगदेवा चत्रलचत्रलचित्तकीलणटवप्पिया गहिरहसियपियागीयणि  
चुरती वणमालामेलमउल्लङ्कलसच्छदविडडिडियान्नराचरुन्नसणधरा सद्योयसुरन्निद्रुसुमसुरडयपलवसोहत

निउणगोतररणा । गन्धर्वगण समुदाय निपुण यध्वनेनावै गीत रतिना । अणवर्णाय पणवर्णाय भूवाडय कोटिय महाकटियाय कहळे पय  
गट्टेया चवलचलपथलचित्त कीलणटवप्पिया । अणपन्नो पणपन्नो कटपिवादी भूवादी कन्दो महाकन्दो कीहडो पतक १७ एडवैनामै चवल विसस्यन  
के फोडारामनेविये । गहिरह सियपिग गीयनचरणर । गहिरगभोर पियगीत नृत्तविये वचिक्के । वणमालामेलमउल कुडल सच्छद विडडिगा भरण  
चारुभणपधरा सद्योयसुरन्निद्रुसुम पलवसोहतकत विडसतिचित्त वणमालरदयथा । वनमालेकरी मस्तक सांभळे पातानो छायाये निकस्येष्टि धामरण

एकैलिकोलाहलप्रिया तत समुदितशब्देन सह विशेषणसमास ॥ हासबोली बहुलाव तिप्रज्ञती अस्मिमुद्रशक्तिरुता हस्ते  
येपातेहासबोलबहुला तथा ॥ अस्मिमुद्रशक्तिरुताहस्ता ॥ अण्गमणिरयणविविहनिजुसचित्तचिन्त्यगयाइति ॥ मणय शब्दज्ञानाद्या रत्नानि  
कर्कतनादीनि अन्तर्क मणिरतै विविध नानाप्रकार नियुक्तानि चित्राणि नानाप्रकाराणि चिह्नानि गतानि स्थितानि येया ते तथा शेष सुगम  
नवर कालेयमहाकाले इत्यादि ॥ दक्षिणोत्तराणा पिशाचाना यथाक्रममिन्द्रो कालमहाकाली जूताना सुरुपपतिरूपी यक्षाणा पूर्णजहमाणिमद्री रा  
क्षसा श्रीममहाभ्रोमौ किन्नराणा किन्नरकिंपुसपौ किंपुरुषाणा सत्पुरुषमहापुरुषौ महोरगाणाम उतिकायमहाकायी गन्धर्वाणा गीतरतिगीतयशसी  
ज्योतिष्मसूत्रे अदृक्कविठगसठाणसठियाइ अद्वै कपित्यस्या दैक्कपित्य तेन सस्थितानि अत्रा लेपपरिहारी चन्द्रप्रज्ञप्तिटीकाया चाजि  
ह्तिताविति ततो वधायी सव्वफालियामया इति सर्वात्मना स्फटिकमयानि तथा अज्युद्रता आग्निमुस्येनसर्वतोविनिगता उदरुता प्रवलतया सर्वासु

कतवियसितचित्तवन्मालरुडवच्छा कामकामा कामरूवदेहधरा नाणाविहवन्नरागत्रवच्छललतचित्तचित्त  
गणियवसणा विविहदेसिनेवत्यगहियेवसा समुडरुदप्पकलहकलिकोलाहलप्पिया हासा बोलवज्जडा अस्मि  
भोगरसत्तिकुतहत्या अण्गमणिरयणविविहनिजुसचित्तचिन्त्यगयासुरूवा महिडिया महज्जुतिया महायसा

धार मनोहररूप धराहै सुरभिक्षू प्रलम्ब लहिकता गोमता यमनीय विकसित नानाप्रकारनौ विभूषारचना कोषाहै । कामकमा कामरूवदेह  
धारी नाणाविहवन्नरागवत्यचिह्नग विचित्ररुपा नियसणा विविहदेसे नेवत्यगहियावासा । होयाविषे कामातुरथक देहधारी अनेकविध विचित्ररु  
पना चित्ररूप अनेकदेयता पद्मास्त्रना गच्छाहै वेग जेणे । कंदपकोनिकोलाहलप्पिया हासबोलवहना । प्रमदित हर्ष पामौहै कन्दपचेष्टा कौडा को  
लाहल प्रियहै वासना बोल बहलहै । अस्मिगरसत्तिकुतहत्या । अस्मिसव्वहै हाथनेविषे । अण्गमणिरयणविविहनिजुसचित्तचिन्त्यगया सुरूवा । म  
अन्तर्क मणिरतन विविध विचित्रमहित चिह्नहै सुकूपहै । महड्डिया महज्जुया महायसा महामन्य महाणुभागा महासुक्खा द्वारविशारदवत्या । म

महात्रता महाणुतागा महासोस्त्रा हारिविराडयावच्छा कळगनुक्रिययुया मगयकुंलमठगळजयलक  
गपीठधारी विचित्रहत्यानरणा विचित्रमालामउलीकृष्णगपवरवत्यपरिहया कक्षाणगपवरमह्वाणुलेवणध  
रा नामुरयोदी पलवधनमालधरा दिव्येण वन्तेण दिव्येण गधेण दिव्येण फासेण दिव्य सठाणेण दिव्याए ड  
ह्रीए दिव्याए जूईए दिव्याए पन्नाए दिव्याए च्छायाए दिव्याए अञ्चीए दिव्येण एएण दिव्याए लेस्साए दसदि  
साउ उज्जोवंमाणा पन्नानमाणा तेण तत्य साण २ ओमेज्जाणगरावाससयसहस्सा अस्सखिज्जाण साण २  
सामाणियमाहस्सीणं साण २ अण्णमहिंसीण साण २ सपरिसाण साण २ अणियाण साण २ अणियाहिं

पुत्रिकगन्त माटे नति महाउग मयाउल मयाभाण्य महायुद्धा हरिकरा गोभित्ते होयो । कडपतुडिउद्यभिपभरा अ । यकुडनमहुगउलन कणपोठधारी ।  
कडा धरिहरणा तिणे यणोन भज्जा यगन् ब्राह्मणार्पानरण धियाप कुडल गान पोठनविपै । विचित्रहत्याभरणा विचित्रानालामउलि कक्षाणगपवरवत्यप  
राउता कक्षाणगपवरमह्वाणुलेवणधरा भामुरवीटिपनवधनमालधरा विचित्रहत्यानरणाए । विचित्रमाला मुकुटके मङ्गलौक वस्त पहिराके तथा मग  
भाभ भेवणधाराके जेअन देदिणमान म भा धारीके । दिव्येण दिव्येण गधेण दिव्येण फासेण दिव्येण सघाणेण दिव्येण सठाणेण । देवसवधो दिव्य  
मा करो ि छ म्पगे करो दिव्य मपणकरा दिव्यगस्यनेकरो । दिव्याएउड्डाए दिव्याएपद्दाए दिव्याए छायाए अञ्चीए । दिव्य गृहहो करी दिव्य  
प्रभाकरो दिव्य छायाकरो दिव्य किरणेकरो । दिव्यण तेण दिव्याएलसाण दत्तन्तिसाचा उज्जोणमाणा पभासेमाणा । दिव्य तेजे नरी दिव्य लयाये  
करो उगणिगा अण्णगकरतायको रडे । तेण तत्य माण २ भान्तिजनगरा वामसउसहम्माण । ते तिहा नाप यापणा भूनि नगरगा लावु गमेकरी । सा  
ण २ गामानियताइमोण माण २ अण्णमहिंसीण साण २ पारिसाण साण २ अणियाण साण २ अणियाहिंवरण । आपयापणा सामाभिक सहचेकरी ।  
यापयापणी अण्णमहिंसीणको यापयापणी वण्णिकरी यापयापणी वनोकेकरी आप नापणे अतोताधिपतिवैकरी । आपरखटेवसावृक्षीण अन्नेमि

हुं साणं २ अयस्कदेवताहस्सीणं अणोसिं च ब्रह्मं वाणमंतराणं देवाण्य देवीण्य अहिबच्चं पोरिवच्चं  
 सामितं भठितं महतरगतं अणाइसरसेणावच्चं कारमाणा पालेमाणा महयाहयनहृगीयवाइयतंततीतलताल  
 तुफ्रियघणमुंडंगपुप्पवाइयरवेणं दिव्वाइं जोगजोगाइं जंजमाणा बिहरंति कहिणं जंत ! पिसायाणं देवाणं  
 पज्जाहाणं ठाणा पणुत्ता । कहिणं जते ! पिसायादेवा परिवसंति ? गोयमा ! इमोसं रयणप्पन्नाए पुढवी  
 ए रयणामयस्ककठस्स जोयणसहस्सवाहस्स उवरिएणं जोयणसयं उग्गाहिता हिठावेगं जोयणसयं वज्जि  
 ता मज्जे अणुसु जोयणसएसु एत्यणं पिसायाणं देवाणं तिरियमसंखज्जा जोगेज्जा नगरावाससयसहस्सा  
 जवंतीति मस्कायं तणं जोगेज्जा नगरावाहिं वहा जहानुहिउन्नवणवखनु तहा नाणियव्वी जात्र पफिह

ववङ्गण वाणमंतराणं देवाण्य देवीण्य अणोसिं च ब्रह्मं वाणमंतराणं देवाण्य देवीण्य अहिबच्चं पोरिवच्चं सामितं भठितं महतरगतं अणाइसरसेणावच्चं कारमाणा पालेमाणा महयाहयनहृगीयवाइयतंततीतलताल  
 ता देवता देवी अधिपतिपणे पौरयपणो स्सामोपणो धारता वडाइपणे । आणाइसर सेणावच्चं कारमाणा पालेमाणा । आणा इक्षरपणे धारता करा  
 वता पालता । महयाहय नदगीयवाइयं तंततीतलताल तुडिय घणमयंग पण्डवाइयरवेणं । सोढावाजा नल्य गीत वाजिच तवी ताल वृटित वाजिचवि  
 जेय पंडुने गच्छेकरी । दिव्वाइं भोगभोगाइं भंजमाणा बिहरंति । देवतानां भोगभोगवता विचरेत्ते । कहिणभते पिमायाणं देवाणं पज्जाता २ ण ठा०  
 पं० । किड्वां इभगवन् पिमाचदेवता वसेत्ते पयांति पय्यातामा ठामकक्षा । कहिणभते पिमायाइवा परिवसंति । किड्वां इभगवन् पिमाचदेवता व  
 सेत्ते । गोयमा इमोसं रयणप्पन्नाए पुढवीए रयणामयस्क कठस्स जोयणसहस्सवाहस्स उवरिएणं जोयणसयं उग्गाहिता हिठावेगं जोयणसयं वज्जि  
 ता मज्जे अणुसु जोयणसएसु एत्यणं पिसायाणं देवाणं तिरियमसंखज्जा जोगेज्जा नगरावाससयसहस्सा जवंतीति मस्कायं तणं जोगेज्जा नगरावाहिं वहा जहानुहिउन्नवणवखनु तहा नाणियव्वी जात्र पफिह

वा, एत्यणं पिसायाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पयत्ता, तिसुवि लोगस्स अुसंखेज्जहन्तागे तत्यणं  
 वहवे पिसाया परिवसंति मह्हिया जहा उहिया जाव विहरंति, काला महाकाला इत्य दुवे पिसाया  
 इंदा पिसायरायाणो परिवसंति, मह्हिया महाज्जुइया जाव विहरंति । कहिणं जेत ! दाहिणिह्वाणं पि  
 सायाणं देवाणं ठाणा पयत्ता । कहिणं जेत ! दाहिणह्वा पिसाया देवा परिवसंति २ ग्गेयमा ! जंबूद्वी  
 वे २ मंदरस्स दाहिणेणं इमीसे रयणप्पत्ताए पुढवीए रयणांमयस्स कंठस्स जायणसहस्सवाहत्ता उवरि एगं  
 जोयणसय उग्गाहिता हिठावेगं जोयणसय वज्जित्ता भज्जे अुठसु जोयणसएसु एत्यणं दाहिणिह्वाणं पि

हे तिरछा असंख्याता मुहरानीपरं नगर तेहना लाखागमे तोधिकरे कह्यो । तेणंभोमंजाननगरावाहिबट्टा एवं जह्वाओहियभवणवणओ तथा भाणियव्वा  
 जाव पाडिहवा । ते भुवण नगर केहवाके वाहिर वाटलाकारे इम जिम ओघतोमवू जिमकह्यो तिम कहवणो यावत् प्रतिरूप । एत्यणं पिसायाणं देवा  
 णं पयत्ताणं ठा० प० । इहां पियाच देवी देवता पर्याप्ता प्रपयोत्ताना ठामकह्या । तिसुविओयम्मा असंखिज्जहन्तागे । तीने बोलेलोकने असंख्यातमे  
 भागे हवे । तत्यण वडवे पिसायादेवा परिवसंति । तिहां घणं पियाचदेवता वसेके । महडुट्टिया जहा ओहिया जाव विहरंति । मोटीकट्टि जिम  
 ओघतोत्तानाओ यावत् विचरे । काले महाकालिय इत्यदुवे पिसायरायाणो परिवसंति । कालेवणु महाकालनामे इहां दीय पियाचनामे राजा वसेके ।  
 महडुट्टिया जाव विहरंति । महडिकं यावत् विचरे । कहिणंभंते दाहिणिह्वाणं पिसायाणं देवाणं पयत्ता २ णं ठा० पं० । किहां हेभगवन् दाचिणना  
 पियाच पर्याप्ता प्रपयोत्ताना ठामकह्या । कहिणंभंते दाहिणिह्वा पिसाया देवा परिवसंति । किहां हेभगवन् दाचिणनापियाच देवता वसेके । गोय  
 मा जंबूद्वी २ मंदरस्स पञ्चयस्स दाहिणेणं । जंबूद्वीपनामे होपमांडि मेरुपर्वत दाचिणपाने । इमीसेरयणप्पमाए पुढगोए रयणमयज्जकांडक्क त्थेयणमह  
 का वाहल्लस । ए रतनप्रभानामे पृथिवीविपे रतनमय कांडनो योजनसदस्र जाल्लपणेमांडि । उवरि एगंजोयणसय उग्गाहिता । जपरिलो एकसौयं ज

सायाणं देवाणं तिरियमसंखिज्जा नोमेज्जा नगरावाससयसहस्सा हवंतीति मत्कार्यं, तेषं नवणा जहा  
 उहिन्ने नवणवणुने तहेव न्नाणियहो जाव पङ्कित्वा एत्थणं दाहिणिल्लानं पिसायाणं देवाणं पज्जत्तापज्जा  
 त्ताणं ठाणा पणत्ता । तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइत्तागे तत्थणं वहवे दाहिणिल्लापिसाया देवा परिवसंति  
 महहिंया जहा उहिंया जाव विहरंति काले जत्थ पिसायइंदे पिसायराया परिवसंति महहिंए जाव पज्जा  
 सेमाणे सेणं तत्थ तिरियमसंखेज्जाणं नोमेज्जा नगरावाससयसहस्साणं चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं चउण्हं  
 अग्गमहिंसीणं सपरिवाराणं तिरहं परिसाणं सत्तरहं अणियाहिंवईणं सोलसरहं अण्य

नउगाहीने । दिक्काण्णज्जायणसय धज्जिज्जा मज्जे अद्धमु ज्जायणसणसु । हेठे एकसौयोजन वर्ज्जने मध्ये आठसौयोजन विषे । एत्थणं दाहिणिल्लानं पिसा  
 याणं देवाणं तिरियमसंखिज्जाणं । इहां दक्षिणना पिगाचेवताना तिरक्कादिणे असंख्याता । भोमेज्जानयरावाससयसहस्सा हवतित्तिमव्वाय । भोम  
 ता नगरना लाखगमे कट्ठा वीतरागे । तेषं भवणा जहा ओहिंयभवणवणुओ तहा भाणि० जाव पङ्कित्वा । तेभवन् जिन ओघनो आलावो तिम कह  
 वो यावत् प्रतिक्रय । एत्थणं दाहिणिल्लानं पिसायाणं देवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पं० । इहां दक्षिणदिगिना पिगाचेवता पर्याप्ता पर्याप्ताना ठाम  
 कट्ठा । तिसंविनीगस असंखिज्जइत्तागे । तोने वोल्लोकने असंख्यातमेमाणे । तत्थणं वहवे दाहिणिल्लापिसायादेवा परिवसंति । इहां षण्णां दक्षिणना  
 पिगाचेवता वसैहे । महडुट्टिया जहा ओहिंया जाव विहरति । महविं क जिन ओघनो आलावो तिम । कालेव इत्थ पिसादे पिसायरायाणो प  
 रिवसंति । कालिनामे पिचाचनो रत्ताराजापणे वसैहे । महडुट्टिए जाव पभासेमाणे । महडिक्क यावत् पभासहित । सेण तत्थ तिरियमसंखेज्जाणं भो  
 मेज्जानगरावाससयसहस्साणं चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं चउण्हं अग्गमहिंसीणं सपरिवाराणं । ते तिहां तिरक्कालोक असंख्याता भोमनगर  
 वाससहय लाखागमे हवे चारहजार सामानिक देवतासहित चारहजार अग्गमहिंसीणं सत्तरहं अणियाणं सत्तरहं अण्य

रस्कदेवसाहस्सीणं झुन्नासिंच वल्लणं दाहिस्सणं वाणमंतराणं देवाणयदेवीणय झुहेवच्चं जाव विहरंति । उत्तरिस्सणं पुच्छा गो० ! जहेव दादिणस्सणं वत्तव्या तहेव उत्तरिस्सणं पि नवरं मंदरस्स पण्डयस्स उत्तरे णं महाकाले जल्य पिसायइदे पिसायराया परिवसंति जाव विहरंति एवं जहा पिसायाणं तथा झूयाणंपि जाव गंधव्याणं नवरं इंदेसु नाणत्तं नाणियच्चं इमेणंपि विहिणा झूयाणं सुरूवपफिरूवा जस्काणं पुसज्जह माणिज्जह रस्कसाणं श्रीममहानीमा किन्तराणं किन्तरकिंपुरुसा किंपुरिसाणं सप्पुरिसमहापुरिसा महोर गाणं झुइकायमहाकाया गंधव्याण गीतरइगीतजसा जावगीयजसे विहरंति—कालेयमहाकाले सुरूवपफि

यादिधइणं । तीन परिपदा ७ अनीकैकरी ७ अनीकाधिपतेकरी । सोलसगहं आयरक्ख देवमाहरमौणं अणेसिंच वल्लणं दादिणिस्सणं वाणमंतराणं देवा णय देवीणय आहिचसं परिवसं जाव विहरंति । सोल्लेहजार आत्तरज्जकैकरी श्रीर घणां दच्चिणदिग्गिना वाणमंतर देवता देवो अधिपति पौरपति या यत् विहर । उत्तरिस्सणं पुच्छा । उत्तरदिग्गिना प्रज्ञ । गायमा जहेव दादिणिस्सणं वत्तव्या तहेव उत्तरिस्सणं वि भाणि० । हेगीतम जिम दच्चिणदि गिनी कछो तिम उत्तरदिग्गिनी विशेष कहवो । नवरं मंदरस्स उत्तरेणं महाकांसिय । एतलो मेरुने उत्तरपासे महाकालनामै इन्द्र । इत्य पिसाऽदे पि मावरायाणी परिवसंति ससत्तेवेव जाव विहरंति । पिगाचनोराना तिहां वसेक्खे तिम शेष जाणवो । एवं जहापिसायाण तथा भूयाणंपि भाणि० । इ म जिम पिगाचने तिम भूतनेग्गने । जाव गंधवाणवि भा० । यावत् आठमो गंधर्वनिकायलगे कहिये । नवरं इंदेसु णाणत्तं भाणियस्स । एतलोविशेष इन्द्रतानामतो विशेष कहिवो । इमेणं विहिणाभूयाणं सुरूव पफिरूवा । इणे विधेकरी भूतने स्वरूप प्रतिकर । जक्खणं पणभंइ नागभद्राणं भीम महा भीमा । यच्चनिकावे पूर्णभद्र मानभद्र, २ राक्षसने भीम महाभीम २ । किस्सराणं किंपुरुसा । किन्नर किंपुरुष ४, । किंपुरुसाणं सप्पुरिस महापुरिसा । किंपुरिपने सपुषप महापुषप, २ । महाराणाणं अइकाय महाकाय । महारगने अतिकाय महाकाय, २ । गंधवाणं गीयरइ गीयजसा २ । गंधर्वने गी



रूचपुष्पसद्देय । अमरवद्भागजद्दे श्रीमेयतहामहाश्रीमि ॥ १ ॥ किन्नरकिंपुरिसेखलु सप्पुसिसेखलुतहामहा  
पुरिसे । अडकाएमहाकाए गीयरतिचेवगीयजसे ॥ २ ॥ बिहरति कहिणं जंते ! अणवन्तियाणं देवाणं ठा  
णा पं० । कहिणं जंते ! अणवन्तिया देवा परिवसंति गो० ! इमीसे रयणप्पजाए पुढवीए रयणामयस्स  
कंऊस्स जोयणसहस्सवाहस्स उवरि हिठायणं जोयणसयं वज्जिता मज्जे अठसु जोयणसएसु अत्थ  
णं अणवन्तियाणं देवाणं तिरियमसंखिज्जा ज्वणा वाससयसहस्सा हवंतीतिमस्कायं तेण जाव पफिळ्ळावा  
एत्थणं अणवन्तिया देवाणं ठाणा पं० । उववाएलो समुघाएलो सठाणेणलो तत्थणं अणवन्तिया देवा  
परिवसंति महिहिया जहा पिसाया जाव बिहरंति सन्निहियसामाणा इच्छ दुवे अणवन्तिंदा अणवन्ति

तरति गीतयग । जाव गीयजसा बिहरंति गाहा । यावत् गीतयग विचरे गाथा—कालेयमहाकाले मुरवपडिरूवमाणभदेय अमरवन्तिमाणभदे भीमेय  
तहामहाभीमे ॥ १ ॥ काल महाकाल मुरप प्रतिरूप पूर्णभद्र अमरपति माणभद्र भीम तिम महाभीम ८ ॥ १ ॥ किन्नरकिंपुरिसेखलु सप्पुसिसेखलुतहा  
महापुरिसे अइकायमहाकाए गीयरइंचेवगीयजसे ॥ २ ॥ किन्नर किंपुनप निचै सत्त्वपुरुष तिम महापुनप अतिकाय महाकाव गीतरति गीतयग १५ ॥ २ ॥  
कहिणंभते अणपखियाणं देवाणं पल्लता २ ण ठा० पं० । किहां हेमगवन् अनेरा व्यन्तरना देवताना ठामकछा । कहिणं भते अणवन्तियादेवा परिवस  
ति । किहां हेमगवन् अनेरा व्यन्तर किहां वसे । गोयसा इमीसे रयणप्पभाए पढवीए रयणामयसकउरम जोयणमयस वाहत्तम । हेगीतम ए रतन  
प्रभापुथिथीने रतनमयकांड योजनसहय जाडपणे । उवरि जाव अट्टम जोयणसरस । ऊपरला अट्टगतवालम छांडीने तेमांदि १०० योजन अवलाय ।  
पटयणं पणियाणं देवाणं तिरियमसंखिज्जाणगरावाससयसहरसा ज्वंतिंति मस्कायं तेण जाव पडिळ्ळावा । ममांदि इहां अनेरा व्यन्तरदेवता तिरिछा  
असंख्याता भूहरानोपरे नगर लाखेगमा कछा तीर्थकरे यावत् प्रतिरूप विचरे । एत्थणं अणवन्तियाणं देवाणं पल्लता २ ण ठाणा पं० । इहां अनेरा व्य

य कुमाररायाणो परिवर्तन्ति महद्द्विया जहा कालमहाकाला एवं जहा कालमहाकालाणं दोरुहं पि दाहिणि  
 द्वाणं उत्तरिणाणय जणिवा तहा संनिहियसामाणाणं पि जणिथव्हा संगहणि गाहा—अणवन्निपपवन्नि  
 य इंसिवाइयज्जयाइएव । कंदिममहाकंदिय कुहंरुयपयंगदेवाय । इमे इंदा—संनिहियासामाणा धाइविधाए  
 यइसीयइसियाले इंससरमेहेस्सरंविद्य हवइसुवत्यविसालेय ॥१॥ हासेहासरइविद्य सेएयजवेतहामहासेए पयमेप  
 यगपएविज नेयव्हाअणपुव्हीए ॥२॥ कहिणं नंत ! जोइसियाणं देवाणं पज्जत्ताणं २ ठाणा पन्नत्ता ? कहिणं

भारता पर्यस्ता यपुर्यास्ताना ठामकव्हा । तिसुधिलोचरम असंखिअःभागे । तीन बालोक्कने असंख्यातमेभांगहुवे । तत्थणं बहव अणवणिया देवा प  
 रिशंसति महुत्तुटिया जहा पिसाया जाव विहरंत । तिहा वणां अनेरा व्यत्तरोक देवता वसेहं महद्विक जिम पिगाय तिम विचरेहं । सन्निहिय सा  
 मानिय इत्य अणवणेदा अणवणिक्कुनाररावाणां परिवर्तन्ति । सन्निहित सामानिक एवेन्द्र अने राजा वसेहं । महत्तुटिया जहा काल महाकाला  
 एवं जहा काल महाकाला । महद्विक जिमकाल महाकालनोपर वेहो उत्तरदक्षिणकव्हा । एवं जहा दुग्गहपि दाहिणिक्काण उत्तराणव भाणिय  
 र्वा । इम जिम सन्निहित सामानिक दक्षिणमवंधो उत्तरसवंधो कव्हा । तहा सन्निहिय सामानियाणं पि भाणियवं । तिम सन्निहित सामानिक भ  
 णिवा ते प्रमाणे सामानिक जाणवा । इमा संघयण गाहा । ए संघयण गाथाकद्विये । अणवणिक्पणयसिक्ख इंसिवाइयभूयवाइयासेव । कंदिममहाकंदि  
 य कंसुडपवइयादेवा ॥ १ ॥ अणपत्तो पणपत्तो कट्ठिवादो भूतवादो निये कटो महाकन्धो कोहणो पतकट्ठे । कंदिममहाकंदि  
 दि०सामाणि ए धोरविपाइयतइयइसियाले इंसरमहेसरंविद्य हवइसुवत्यविसाले ॥२॥ सन्निहित सामानिक धाता विधाता तिम कट्ठि पणपाल इ  
 मर महेत्तर हवे सुवत्य विगाल १० । हासेहासरइविद्य से०यभवतहामहासेण पयमेपयगपणविद्य नायव्हाआणुपुव्हीए ॥ १ ॥ दास्य हास्यरति स्वेत  
 एवं तिम महास्त्र पतक पतकापंत ० १६ इन्द्रपुत्तमे । कहिणं भते जोइसियाणं देवाणं पज्जत्ताणं २ ठाणा पं० । तिहा हेभगवन् ज्योतिपोदेवताना ठा

रूचपुण्यदेय । अमरवद्भाग्यदेहे श्रीमेयतहामहात्रीमि ॥ १ ॥ किन्नरकिंपुरिसेखलु सप्युरिसेखलुतहामहा  
पुरिसे । अडकाएमहाकाए गीयरतिचेवगीयजसे ॥ २ ॥ विहरति कहिणं ज्ञते ! अणवन्तियाणं देवाणं ठा  
णा पं० । कहिणं ज्ञते ! अणवन्तिया देवा परिवसंति गो० ! इमीसे रयणप्पजाए पुढवीए रयणामयरस  
कंऊरस जोयणसहरसवाहत्तस उवरि हिठायणं जोयणसयं वज्जिता मज्जे अठसु जोयणसएसु अत्य  
णं अणवन्तियाणं देवाणं तिरियमसंखज्जा जवणा वाससयसहस्सा हवन्तीतिमस्कायं तेण जाव पफिरूवा  
एयणं अणवन्तिया देवाणं ठाणा पं० । उववाएलो समुघाएलो सठाणेणलो तत्यणं अणवन्तिया देवा  
परिवसंति माहिहिया जहा पिसाया जाव विहरंति सन्निहियसामाणा इच्छु दुवे अणवन्तिंदा अणवन्ति

तरति गीतयग । जाव गीयजसा विहरति गाहा । यावत् गीतयग विचरे गाथा—कालियमहाकाले सुखपडिरवमाणभेय अमरवत्तिमाणभे भीमेय  
तहामहाभीमे ॥ १ ॥ काल महाकाल मुरूप प्रतिरूप पूर्णभद्र अमरपति माणभद्र भीम तिम महाभीम ८० १ ॥ किन्नरकिंपुरिसेखलु सप्युरिसेखलुतह  
महापुरिसे अदकायमहाकाए गीयरतिचेवगीयजसे ॥ २ ॥ किन्नर किंपुरप निच्छैसत्यपुरुष तिम महापुरुष अतिकाय महाकाय गीतरति गीतयग १५ ॥ २ ॥  
कहिणंभते अणपणियाणं देवाणं पल्लता २ ण ठा० पं० । किहां हेभगवन् अनेरा व्यत्तरना देवताना ठामकत्ता । कहिणं भते अणवन्तियादेवा परिवस  
ति । किहां हेभगवन् अनेरा व्यत्तर किहां बसे । गोयसा इमीसे रयणप्पभाए पडवीए रयणामयककडरम जोयणसयरम काहत्तमं । हेगीतम ए रतन  
प्रभायिबोने रतमेयकांड योजनसहय जाडपणे । उवरि जाव अठम जोयणसएसु । ऊपरला अठगतयोजन कांडीने तेमांदि १०० योजन अवकाश ।  
पठयणं यणियाणं देवाणं तिरियमसंखिजाणगरावाससयसहरमा हवन्तिसि मस्कायं तेण जाव पडिह्वा । ममांदि इहो अनेरा व्यत्तरदेवता तिरिह्वा  
यसंख्याता भहरानोपरे नगर काखेगमा कक्षा तीर्थेकरे यावत् प्रतिरूप विचरे । एदयणं अणवन्तियाणं देवाणं पल्लता २ ण ठाणा पं० । इहो अनेरा व्य

वननिर्गमेषु लोके प्रतीतानि तदन्तरेषु विशिष्टशोभितानि विचित्रत्वानि यथा तानि तथा पञ्जरात् तन्मोलितमिव दृष्टिपूर्वकतमिव पञ्जरोन्मीलि-  
तवत् तथाहि किल किमपि वस्तु पञ्जरात् यंशादिमपप्रच्छादवशिष्यात् दृष्टिपूर्वकतमत्वायत्वात् शोभते तथा तान्यपि विमाना-  
नीति प्रायः, तथा मणिकनकानां सम्यग्धनी स्तूपिका शिखरं येषां तानि मणिकनकस्तूपिकाकानि ततः पूर्वपदान्यां सह विशेषणसमासः, तथावि-  
कसितानि यानि शतपत्राणि पौण्डरीकानि च द्वारादौ प्रतिकृतिस्त्वेन स्थितानि तिलकाश्च नित्यादिषु पुंद्वाणि रत्नमया द्या हुंचंदाद्वारादिषु  
तैश्चित्राणि विकसितशतपत्रपुण्डरीकतिलकरत्नाद्वेचन्द्रचित्राणि, तथा नानामणिमयीनि दामनि रत्नकृतानि नानामणिमयदामालंकरणानि, तथा  
अन्तर्यहिय शस्त्रानि मष्टणानि तथा तपनीयं सुवर्णविशेष स्तम्भया रुचिराया वालुकायाः प्रसूतः प्रचरो येषु तानि तपनीयरुचिरवालुकाप्रसूत

त्रिजयवेजयंतीपद्माच्छत्ताइच्छत्तकलिया तुंगा गगनतलमहिलंघमाणसिहरा जालंतररयणपंजरुम्मीलित्यद्वा  
मणिकणगयून्निवागा वियसियसयपत्तपौण्डरीया तिलगरयणरुचंदचिन्ता नानामणिमयदामालंकिकया झुंती  
बहिं च सगहा तवणिज्जरुहलवालुया पच्छुका सुहफासा ससिरीयरूत्रा पासाईया दरसणिज्जा झुन्निरूत्रा

तेष्वेकरी धवलीप्रभा विस्तरीकै सधले अनेक मणिकणकना रत्नना भाययंकारी भौते चिन्ताम अहते वाते प्रेरी इत्तायो विजय अभ्युदय तेहनी कर  
तार विजय वेजयंती पाण्डकर्मिकानामे पताकाकै तिहां । छत्ताइच्छत्तकणिया तुंगा गगनतल मभित्तवमाणसिहरा जालंतर रयणपंजरुम्मी-  
लित्यद्वा मणिकणयूभिवागा । छत्र ऊपर छत्रसहितकै कंचा गगनतल लघता एहवा कंचा गिखरकै जेहना तथा जालांतर पांजरा वांगनोजालो म  
णिमय गवाच । वियसियसयवत्त पौण्डरीया तिलगरयणचंदलित्ता नाणामणिमयदामालंकिकया । विकस्या शतपत्रमरीचो भौतकै जिहां तिलकरन  
यष्टचंद्राकार हारे एहवा चिन्तामकै जिहां अनेकमणिमय अलंकृतकै चिन्तामकै लिहां अनेक अलंकृतकै मरिंहि । झंतीवाहिष मगहा । वाहिर मुकमाल  
कै । तवणिज्जरुहलवालुया पय्ठां सुहफासा ससिरीया सरुवा पासाईया दरसणिज्जा अभिरूत्रा पडिरूवा । तपनीय झानानीपरे मनोहर प्रतर

दिशु प्रसृता याः प्रज्ञा दीप्ति स्तया नितानि धवलानि अद्भुततुल्यप्रज्ञातितानि, तथा विविधानां भगिजनकरालानां या नक्तयो विच्छिन्नविशेषा  
 पा स्तानि शिवाणि आश्चर्ययुतानि विविधभगिजनकनक्तिचित्राणि ॥ वाशुद्वयविलयवेज्यतीपद्मागच्छततिच्छतकलिया वातोदुता वायुकम्पिता धि  
 जयोन्मुदय स्तत्संस्विका वैजयंत्यन्निधाना याः पताका अथवा विजयइति वैजयंतीनां पार्श्वकिर्णिका उच्यते तदप्रधाना वैजयंत्यः पताका स्ता एव  
 विजयवैजयंत्यः पताकाः क्वातिच्छत्राणि उपर्यपरि स्थितानि क्वाणि तैः कलितानि वातोदुतविजयवेज्यंतीपताकाट्वातिच्छत्रकलितानि तुल्लानि  
 उच्यन्ति तथा गगनतलमं वरतलं अनुलिखन् अत्रिलङ्घयन् शिखरं येषां तानि गगनतलानुलिखिच्छिराणि तथा जालानि जालकानि तानि च ज

नन्ते! जोडसिया परिवसंति? गो०! इमीसे रयणप्पन्नाए पुढवीए वज्जसमरमणिज्जानुं नूमिन्नागाडु सत्तणउ  
 ए जोयणसए उहुं उप्पइत्ता दसुत्तरं जोयणसयं वाहल्ले तिरियमसंखिजे जोडसविसए एत्थणं जोडसियाणं  
 देवाणं तिरियमसंखिज्जा जोडसियविमाणावाससयसहस्सा हवंतीतिमस्कायं तेषं विमाणा अरुक्कविठग  
 संठाणसंठिया सव्वफालियामया अड्ढगयमुसियपहसियाडव विविहमणिक्कणगरयणअत्तिचित्ता वाउरुत

मकच्छा । अदिणं भंते जोडसिया देवा परिवसंति । किम हेभगवन् ज्योतिषोदेवता धमेके । गोयमा इमोनेरयणप्पन्नाएपुढवीए वज्जसमरमणिज्जायां भूमि  
 भागायां सत्तनवएजोयणसएउड्ड उप्पइत्ता । हेगौतस ए रत्नप्रभाधुविबोधकी वणी रमणोक्क भूमिभागके तेद्वक्को सातसे नेअयोजन कंधाके । दसुन  
 रजोयणमणं वाहल्ले तिरियमसंखिजे जोडसिविसए पं० । ते तिहुं १० योजनमंहि चिह्ना असंख्याता ज्योतिषीना दासाकच्छा । एत्थणं जोडसियाण  
 देवाणं तिरियमसंखिज्जा जोडसियविमाणावाससयसहस्सा हवंतीतिमस्काय । इहो ज्योतिषोदेवना तिरिहः असंख्याताना ज्योतिषीनाविमान साग्वांगमे  
 तोधकरे क्का । तेषु विमाणा अरुक्कविठगसंठाणसंठियाणं सव्व फलिइमया । तेदुतांविमान अरुक्कोठ संस्थान संस्थितके सर्वकिटक्क रत्नमयके तथा । अ  
 भगवयमुसियपहसियाडव विविहमणि कणगरयण भत्तिचित्ता भायाडुयविजयवैजयंतोपद्मागा । आसीक्कणं विनिर्गतं प्रवर सव्वत्तो दियिसंयधोके दीप्ति

मुकुटे येषां ते प्रत्येकं स्थानं माङ्गप्रकटितचिह्नमुकुटाः किमुक्तं भवति चंद्रस्य स्वमुकुटे चंद्रमण्डलं लाञ्छनं स्थानां माङ्गप्रकटितं सूर्यस्य सूर्यमण्डलं ग्रहस्य ग्रहमण्डलं नक्षत्रस्य नक्षत्राकारं तारकस्य तारकाकारमिति । वैमानिकसूत्रे चतुरशीतिविभागलक्षणानि सप्तनवतिर्विमानचक्राणि त्रयोविंशतिविमानानीति ॥ बत्तीसश्रद्धावीसा वारसश्रद्धा वररोसयसहस्राइत्यादि ॥ सख्यामीलनेन परिभाषनीयानि ॥ तेषां भिन्नमहिसेत्यादि ॥ सौर्यमंदेवासुररूपप्रकटितचिह्नमुकुटाः ईशानदेवामहिषरूपप्रकटितचिह्नमुकुटाः, सनत्कुमारदेवा वराहरूपप्रकटितचिह्नमुकुटाः, माहेंद्रदेवाः सिंहरूपप्रकटितमुकुटाः, ब्रह्मदेवलोकाः षड्गलरूपप्रकटितमुकुटाः, लांतकदेवा दुरुरूपप्रकटितमुकुटाः, शुक्रकल्पदेवा हयमुकुटाः, सहस्रारकल्पदेवा गजपतिमुकुटाः, आनतकल्पदेवा जुजगमुकुटाः, प्राणतकल्पदेवाः खड्गश्चतुष्पदविशेष आटव्याः आरणकल्पदेवा युपत्रमुकुटाः, अच्युतकल्पदेवा विद्धिममुकुटाः, वरकुण्डलज्जोघियाण्णाइति ॥ वराभ्यां कुण्डलाभ्यामुद्योतितं आस्वरीकृत माननं येषां ते तथा शेषं सुगमं-सौर्यमंकल्पसूत्रं । अविमालीनासिवन्नाभे इति ॥ वज्रपाणी इति ॥ वज्रं पाणावस्य इति वज्रपाणिः असुरादिपुराणां दारणात् पुरंदरः ॥ सय

यचिंधमउना महिहिया जावप्यनासेमाणा तेषां तस्य साणं २ विमाणावाससयसहसाणं साणं २ सामाणि  
यसाहस्सीणं साणं २ अगमहिसीणं सपरिवाराणं साणं २ परिसाणं साणं २ अणियाणं साणं २ अणि

एतन्ने सूर्यमण्डलं लक्षणं सर्वं ते काह्वी स्योभाव चन्द्रनो चन्द्रमण्डलनो मुकुटचिह्नैः सहस्रैकं यावत् प्रभासहितं ते । तेषां तस्य साणं विमाणावाससयसहसाणं । तिस्रां आप आपणेविमाने लाखागमैकरो । साणं २ सामाणियसाहस्यौणं । आप आपण सामानिकसहस्रैकरो । साणं २ अमनाद्विषीणं सपरिवाराणं । आप आपणी अगमहिषीयैकरो सपरिवारे । साणं २ परिसाणं साणं २ अणियाणं साणं २ अणियाहिवर्धनं साणं २ आचरकदेवसाहस्यौणं । आप आपणे परपदासहित आप आपणां अनौकैकरी आप आपणी अनौकाधिपते तिणैसहित आप आपणे आत्तरचक्रदेव सहस्रैकरो । अणिसिंघ वल्लणं जावसियाणं दशाण्य देवौण्य आह्वय जाव विहरंति । अनेरा वणां ज्योतिषीनां देवताना देवीनो अधिपतिपणां यावत् विवरैके । चंद्रमसू

तानि तथा सुखस्पर्शानि शुभ्रस्पर्शानि वा ज्ञेयं प्राग्वत् यावत् बहसइचंदा ॥ बृहस्पतिचंद्रमयशुक्लशर्नश्चरशुद्धमकेतुव्यांगारकाः कथंभूता इत्याह-तप्तपनीयकनकवर्णा इंपद्रक्तवर्णाः तथा ये ग्रहा उक्तव्यतिरिक्ता ज्योतिष्के ज्योतिष्कं चारं चरंति कंतत्रा ये च गतिरतिका ये चाष्टा विंशतिविधा नद्यत्रा देवगणा स्ते सर्वेपि नानासंस्थानसंस्थिता ध्व चशब्दातप्तपनीयकनकवर्णाः एते च सर्वेपि स्थितलेइया नामांकन स्त्र २ नामांकन स्त्र २ नामांकन प्रकाटितं चिह्नं

पद्मिह्वा एत्यणं जोइसियाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पं०, तिसुविलीगस्स अस्संखेज्जाइत्ताणे तत्थणं वहवे  
जोइसिया देवा परिवसंति तं०-वहस्सईचंदासूरासुक्कासणिच्चराराज्जधूमकेत्तुवुधाअंगारगा तत्ततवणि  
ज्जकणगवन्ता जेगहा जोइसंमि चारं चरंति केत्तूयगतिरइया अठ्ठावीसइविहाय नस्सक्ता देवयगणा ना  
णासंठाणसंठियानुय पंचवन्ताने तारयाउ नुवियलेस्साचारिणो अविस्साममंऊलगई पत्तेयं णामंऊपगमि

अत्यन्तसुख स्वरूपे सञ्जीवके सुरूपदेवता देववायोग्य अभिरूप समुख प्रतिकूप । यत्नं जोहसिथाणं देवाणं पञ्जसाणं ठा० पं० । इहां ज्योतिषीना प  
यांता अपवांताना ठामकक्षा । तिसलीयस असंखिज्जइभागे । तौन धोलोक्कने असंथातमेभागे हुंघ । तत्पणवव्वे जोहसिथा देवा परिवसंति तं० ।  
तिहां घणाज्योतिषीदेवता वसेके तकवैहै । वहसइ चहासरा सुक्का सणिसरराहु धूमकेठ वहा अगारका तत्ततवणिज्ज कणगवसाभा । इहथिति चद्र  
मयं शुक्ल ग्रनेयर राहु धूमकेतु बुध मंगल बले केहवाके तरत तपनीय कनकवणछै । जेयगहा जेयसमि चारचरंति कइवाइतगयरइया । जे गह  
ज्योतिषीचार चालै गतिकरी सुखमानेहै एहवा । अठ्ठौसइविहाय नक्खत्त देवगणाओ नाणासंठाणसठियाओ । २८ नक्षत्र आदिदेवताना आदिसमू  
ह आकार अनेकसंस्थितहै । पंचवणाओ तारायाओ तेयलंसचारिओ । तारा पञ्चवणकरी अवस्थितहै तथा ते चाररतहै । अविद्यामामंडल गइपसंयता  
संकीर्ण पण्डितचिपमउडा मंडलटवा जाव पभासमाण । ते विसामादिना मंडलानौगति फिरता प्रत्येक रस्सनामाहित प्रकट मुकुट चिन्हकै जेइने

णिज्ज्ञानं भूमिनागानु उहुं चंदिमसूरियगहनस्कृतारारूवाणं वज्रइं ज्ञोयणसयाइं वज्रइं ज्ञोयणसहस्सा  
इं वज्रगानु ज्ञोयणकीक्रीनु वज्रगानु ज्ञोयणकीक्रीनु उहुं दूरं उप्पइत्ता एत्थणं सोहम्मसीसाणसणंक्रु  
मारमाहिंदवंन्नलोगलंतगमहासुक्कसहस्सारअणयपाणयअणयअणयअणयअणयअणयअणयअणयअणयअणय  
याणं देवाणं चउरासीविमाणसयसहस्सा सत्ताणउइंनवेसहस्सानु तंवीसं विमाणा हवंतीतिमस्कायं तेषां वि  
माणा सत्वरयणामया अत्था सग्हा लछा घछा मछा नीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकरुच्छाया सप्पहा  
ससिरीया सउज्जीया पासादीया दरिसणिज्जा अग्निरूवा पक्रिहवा इत्थणं वेमाणियाणं देवाणं पज्जत्ताप  
ज्जत्ताणं ठाणा पं० तिसुवि लोगस्त अस्संखेज्जइन्नागे तत्थणं वहवे वेमाणिया देवा परिवसंति तं०—साह

दूरं उप्पइत्ता । घणां वाजतनी कीडाकीडो जंघा उपाडो जाय । एत्थणं सोहम्मसीसाणं सणकुमार माहेद्वंमलोय लातग महासुद्धस सहस्मार आणय  
पाणय आरण अस्सय गेविल्ल अणुत्तरं । इहां सोधमं ईगान सनल्लुकार माहेद्वं ब्रह्मलोक लांतक महागुक्क सहस्सार आनत प्राणत आरण अच्युत मे  
वेयक ८ अणुत्तर ५ । एत्थणं वेमाणियाणं देवाणं चउरासीतिविमाणायासयसहस्सा सत्ताणउवंपससतिवीस विमाणाहवंतिसिमक्खाय । तिहां वैसा  
निकदेवताना ८४ लावविमान ऊपर सताणुहजार अन्नं वलै ते वीस एतलो विमाननीमग्घा कहौं वै वीतरागे कछो । तेषविमाणा सत्वरयणामया ।  
तेविमान सर्वं रत्नमयकै । अत्था सग्हा घट्टामगुा नीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकरुच्छाया सप्पहा सक्खिरीया सउज्जीया पासादया दरसणिज्जा अभि  
रूवा पडिहवा । मल्ल घटाराया मटाराया नीरजा निर्मल निःपद्ध कचरानो प्राप्ति नयो प्रभासहित सयोक उद्योतसहित ननप्रसन्नकारी कोयवायंग्य  
अभिरूप प्रतिक्रिय । एत्थणं वेमाणियाणं देवाणं पज्जत्ताणं २ ठा० पं० । इहां वेमानिकदेव पर्वाप्ता अपर्वाप्ता ठाम कछा । तिसुविमोयस्य अस्संखि  
ज्जत्ताणं । तीन वीजलोकं अस्सत्तामभागं । तत्थणं वहवे वेमाणिया देवाणं परिवसंति तं० । तिहां घणां वेमानिकदेवता वसेकै । सोहम्मसीसाण स



याहिबईणं साणं २ आयररकदेवसाहस्सीणं जौडसियाणं देवाणय देवीणय आहिबच्चं जाव  
विहरंति चंदिमसूरियाय एत्थ दुवे जौडसिंदा जौडसियरायाणो परिवसंति महिहिया जाय पन्नासेमाणा ते  
णं तत्थ साणं २ जौडसियविमाणावाससहस्साणं चउरहं सामाणियसाहस्सीणं चउरहं अण्णमहिस्सीणं  
सपरिवाराणं तिरहं परिसाणं सत्तरहं अणियाणं सत्तरहं अणियाहिबईणं सोलसरहं आयररकदेवसाहस्सी  
णं जौडसियाणं देवाणय देवीणय आहिबच्चं जाव विहरंति । कहिणं जंत ! वेमाणियाणं देवाणं पज्जता २  
णं ठाणा पं० २ कहिणं जंत ! वेमाणियादेवा परिवसंति ? गं० । इमीसे रयणप्पन्नाए पुढवीए वज्जसमरम

याय इत्थदुवे जौडसिंदा जौडसियरायाणो परिवसंति । चन्द्रमा सूर्य एदोय इहां ज्योतिषीदेवतारो राजपणी वसेहं । सहडुंठया जाव पभासेमाणा ।  
सहर्षिक यावत् प्रभासहितयका । तेण तत्थसाणं जौडसियविमाणावास सयसहस्साणं । ते तिहां आपणा ज्योतिषीनाविमान लाखागमेकरो । चउ  
रहं सामाणियसाहस्सीणं चउरहं अण्णमहिस्सीणं सपरिवाराणं तिरहं परिसाणं सत्तरहं अणियाणं सत्तरहं अणियाहिबईणं सोलसरहं आयररक दे  
वसाहस्सीणं अण्णोसिंचवहणं जौडसियाणं देवाणय देवीणय आहिबच्चं जाव विहरंति । चार अण्णमहिस्सीदेकरी सपरिवारो नोतिपरिपट्टावेकरी ० चनो  
केकरी ० चनोधिपतिवेकरी सोलैइजार आत्तरचदेवेकरी अनेराषणां ज्योतिषीना देय देवीना अधिपतिपणं यावत् विचरे । कहिणं भते वेमाणियाणं  
पज्जता २ णं ठा० प० । किहां हेमगवन् वेमातिक पयाता तपर्याधाना ठामकह्या । कहिणं भते वेमाणियादेवा परिवसंति । किहां हेमगवन् विमान  
वासो वसेहं । गोयमा इमीसे रयणप्पन्नाए पुढवीए चउरहं चंदम सूरय गहणणखत्ततारारुक्काणं । हेगीतम ए रत्न  
प्रभावे वणी समोरमणोक्क भूमिभागघी जंखो चन्द्र सूर्य गृहण नत्त तारारूप वणां योजननासेकडा । वह्हि जौयणसहसा २ वह्हि जौयणसयस  
इसरार वह्हि जौयणकीडीसा । वणां योजनना सेकडा वणां योजननो गतसहच साखे वणां योजननो कीडी । बहुगीआ जौयणकीडाकीडीयो सहडुं

णिज्ज्ञाने भूमिज्ञागान् उहं चंदिमसूरियगहनस्कत्ततारारूवाणं वज्रहं ज्ञोयणसयाहं वज्रहं ज्ञोयणसहस्सा  
 इं वज्रगान् ज्ञोयणकीक्रीत वज्रगान् ज्ञोयणकीक्रीत उहं दूरं उपपइत्ता एत्यणं सोहम्मीसाणसणं कु  
 मारमाहिंदवंतलोगलंतगमहासुक्कसहस्सारब्धाणयपाणयब्धाणयग्निज्ज्ञानेरेसु तत्य एत्यणं वेमाणि  
 याणं देवाणं चउरासीविमाणसयसहस्सा सत्ताणउईन्नवेसहस्सात्तं तवीसं विमाणा हवंतीतिमस्कायं तेणं वि  
 माणा सत्वरयणामया अत्त्या सहा लछा घछा मछा नीरया निम्मला निप्पका निक्कंकरुच्छाया सप्पहा  
 ससिरीया सउज्जोया पासादीया दरिसणिज्ज्ञा अन्निरूवा पन्निरूवा इत्यणं वेमाणि याणं देवाणं पज्जत्ताप  
 ज्ज्ञानाणं ठाणा पं० तिसुवि लोगस्स अस्संखेज्ज्ञाने तत्थणं वहवे वेमाणि या देवा परिवसंति तं०—साह

दूरं उपपत्ता । घणां याजननी कोडाकोडो लंघा उपाहो जाय । एत्यणं सोहम्मीसाणं सणकुमार माहेद्वंभलोय लातग महासुदरस सहस्मार आणय  
 पाणव आरण अयय गेविल्ल अणुत्तरं । इहां सोधमं ईगान सनल्लकार माहेद्वं वल्ललोक लांतक महायुक्क सहस्मार आनत प्राणत आरण अणुत्तरं मे  
 वेयक ८ अनुत्तर ५ । एत्यणं वेमाणि याणं देवाणं चउरासीतिविमाणायासयसहस्सा सत्ताणउयंयससक्तिवीस विमाणाहवंतीतिमस्काय । तिहां वेमा  
 निकदेवताना ८४ लाखविमान ऊपर सताणुइजार अन्नं वल्ले ते वीस एतलो विमाननीसत्था कहौछे वीतरागे कछो । तेणविमाणा सत्वरयणामया ।  
 तेविमान सर्वं रत्नमयकै । अत्त्या सपहा घट्टामट्टा नोरया निग्गमा निप्पका निक्कंकरुच्छाया सप्पमा सक्किरीया सउज्जोया पासादीया दरिसणिज्ज्ञा अभि  
 रुवा पहिरूवा । मल्ल घठारा मटारा नोरजा निमंज निःपक्क कचरानो प्राप्ति नवो प्रभासहित सयोक उद्योतसहित गनप्रसन्नकारी जोयवायोग्य  
 अभिरूप प्रतिकप । एत्यणं वेमाणि याणं देवाणं पज्जत्ताणं २ ठा० पं० । इहां वेमानिकदेव पर्याप्ता अय्याप्ता ठाम कछा । तिसुविलोयस अस्संखि  
 ज्ज्ञाने । तीन वीसलोकने अस्संख्यातमेभागे । तत्थणं वहवे वेमाणि या देवाणं परिवसंति तं० । तिहां घणां वेमानिकदेवता वसेकै । सोहम्मीसाण स

म्मीसाणमणकुमारमाहिंदवंतलीगलंतगमहासुक्लसहरसारआणयपाणयआरणअसुयगेवज्जगाणुत्तरोववाइया  
देवा तेणं मिथमहिस्वराहसीहललददुहहययवइसुयगखगउसन्नकविहिमपागक्रियचियमउठा पसठिल  
वरमउठत्तिरीरुधारिणो वरकुंठुज्जोइयाणणा मउठदित्तिसिरया रत्तात्ता पउमपहगोरा त्रांसया सुहवणगं  
धफासा उत्तमवउठ्ठिणो पवरवत्यगंधमत्ताणुलेवणधरा महिहिवा महज्जुइया महायसा महाबुला महाणजा  
गा महासोस्का हारविराइयवच्छा कळगत्तुक्रियथंनियमुया अंगदकुंठलमठगंठलकखपीठधारी विचिचत्त

णकुमार नाहेटवभलोग लांतग महासुक्ल सहरसार आणय पाणय आरण अश्या गंवज्जगाणुत्तरोववाइया देवा । सौधमं इंगान मनलमारमाहेट्ट वज्ज  
लोक लांतक महासुक्ल सहरार आनत प्राणत आरण अशुत गेवेयक अमत्तरोपपातिक देवता समैके । तेण मिग महिम वराह सौह छगल दाटुर ह  
यगय भुवग पुग उसभ कविडि पगडिय चिंधनठडा । तेठना चिण कहैके — मृग महिष वराह सौह छग दट्टुर यज्ज गज भुज्जग खज्जा वृषभ खोकडा  
प १२ ऐवलो कना प्रधान चिह । सठिअचरमउठ तिरोठधारणा वरकुंठल ठळावद्याणणा । ठनकना प्रधानमकुट तिरोठमाह आभरण धर्या कुंठलेक  
री उद्योग जेठना । मउठदित्तिसिरयारत्ताभा वउमणभमगोरासेयासुवख गंध फामा । मकुटकरी मस्तकरता पझनीपरे गौरदेह स्वेत शुभवर्ण गंधस  
य । उत्तमविडवणपवरवत्यगंध मलालकारेण । उत्तमरुडो विकवण जेठनो प्रवरयस्त गंधमालाविलेपनना धरणहार । मउठडिया महायसा मडाणु  
भागा महासुक्ला हारविरायवत्या कळयतुडियभियभुया । मरुहिक महायज्जवत्त मडाभागी मष्टासखी हारेकरी विराजमान होयो कडा वहारखा  
तिणेकरी थभ्याहे भुज । अगयकुंठलमठगडपौठधारी विचिसहलाभरण विचित्तनाला मउल कक्षाणगपवर वत्य परिहिया । अंगदवांडाभरेणकुंठल तिणे  
करी कर्णपौठधारता यिचिव आभरणे धर्याहे विचियमाला मकुट कक्षाणभाकारक वख पडिर्याहे । कक्षाणग पवरमत्ताणलेयणा भासुरवीदीपल्लव व  
णमालधरा । कक्षाणकारी विलेपनकोधके भासुरदेदीपमानवोदी प्रलंबमाला धारीहे । दिव्वेणं गंधेण दिश्वेणं वणेणं दिश्वेणं फासेण दिश्वेणं सवयेणं

हत्यान्तरणा विचित्रमालामउलीकक्षाणपत्रवच्छुपरिहिया कक्षाणगपत्रमत्तणलेवणा नासुरोदीपलंघव  
णमालधरा दिव्हेण वन्तेण दिव्हेण गंधेण दिव्हेण फासेण दिव्हेण संघयणेण दिव्हेण संठाणेण दिव्वाए इहीए  
दिव्वाए जुईए दिव्वाए पन्नाए दिव्वाए च्छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वाए लेसाए दसदिसासु उ  
ज्जोवेमाणा पन्नासेमाणा तेणं तस्य साणं २ विमाणावाससयसहस्साणं साणं २ सामाणियसाहस्सीणं सा  
णं २ तावत्तीसगाणं साणं २ लोगपालाणं साणं २ अंगमहिसीणं सपरिवाराणं साणं २ परिसाणं साणं  
२ अणियाणं साणं २ अणियाहिबईणं साणं २ आयरक्कदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च वत्तणं वेमाणियाणं

दिव्हेणं मठाणेणं । दिव्यगंध दिव्यस्पर्शकरो दिव्यसंघयणेकरो दिव्यसंस्थानेकरो । दिव्वाणइच्छोए दिव्वाएज्जए दिव्वाएपभाए दिव्वाएफायाए दिव्वाएप  
चोए दिव्हेणतेएण दिव्वाएलेखाए । दिव्यच्छादिकरो दिव्यद्युतिकरो दिव्यप्रभावेकरो दिव्यच्छायायेकरो दिव्याकरणेकरो दिव्यतेलेकरो दिव्यलेख्यायेकरो ।  
दसदिसासो च्छाएमाणा पन्नासेमाणा । दस दिव्यनेविपे उद्योतकरता प्रभाकांत विस्तारतायका । तेणं तस्यसाणं विमाणस्सवाससयसहस्साणं । ते ति  
हां आपआपणाविमाने लोखगमेकरो । साणं २ सामाणियसाहस्सीणं साणं २ तावत्तीसगाणं साणं २ लोगपालाणं साणं २ अंगमहिसीणं सपरिवारा  
णं । आपआपणां सामानिकसंश्लेषेकरो आपआपणां दायविंश्लेषेकरो आपआपणां लोकपालेकरो आपआपणा अंगमहिपायेकरो सपरिवारे । साणं २ परि  
साणं साणं २ अणियाणं साणं २ अणियाहिबईणं साणं २ आयरक्कदेवसाहस्सीणं । आप आपणी परिपटायेकरो आप आपणी अनोकेकरो आप आप  
णी अनोकाधिपतेकरो आपआपणां आकरसकसंश्लेषेकरो । अणोसिंचवहणं वेमाणियाणं देवाणं देवीणय आह्वेवच परेवशं सामित्तं भट्टिसं मंदसरगतं ।  
पनेरापणां वैमानिकदेवता देवीना अधिपतिपणे पौराधिकपणीं स्वामीयका बह्मरंधरतायका । आणाईसरसेनायच कारेमाणा पालेमाणा । आणा ई  
वरपणे पलावता करता पालता । महयाहयनटगोयवाईयतंतीतलतालतुडिय पणमयंग पडुण्णवार्गरवणं दिग्गारं भोगभोगारं भुंजमाणा विहरंति ।

देवाणं देवीण्य ऋहेवञ्चं पेरिवञ्चं सामित्तं न्हित्तं महत्तरगतं अणार्इसरसेणावञ्चं कारेमाणा पालेमाणा  
महयाहनहगीयवाइयतंतीतलतालतुळियघणमुङ्गपळुप्पवाइयरवेणं दिव्वाइं जोगजोगाइं अंजमाणे विह  
रंति । कहिणं नंतं ! सोहमग्गदेवाणं पं० कहिणं नंतं ! सोहमग्गदेवा परिवसंति ?  
गो० ! जंबूहीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं इमीसे रयणप्पनाए पुढवीए वज्जसमरमणिज्जाउ न्नुमिन्ना  
गाउ उहुं चदिमसूरियग्गहगणनक्कत्तराणं वल्लणि जौयणसयाइं वल्लणि जौयणसहस्साइं वल्लणि जौयण  
सयसहस्साइं वज्जगाउ जौयणकोफ्फीउ वज्जगाउ जौयणकोफ्फाकीफ्फीउ उहुं दूरं उप्पइत्ता एत्थणं सोहममे ना  
मं कप्पे पन्नत्ते पातीणपफ्फीणायते उदीणदाहिणविच्छिन्ने अरुचंदसंठाणसंठिए अच्चिमालिन्नासरासिवन्ता

मं० ठानव्व गौत वाजिच तंचौ तल ताल भुटत घणसुदङ्क पपट वाजिचने अट्ठेकरी दिव्य भोगवतायका विचरेत्ते । कहिणंभते सोहमग्गदेवाणं पज्जत्ता २  
खं ठाणा पं० । किहां हेभगवन् सौधमदेवताना पर्यासा अपर्याप्ताना ठामकक्षा । कहिणंभते सोहमग्गदेवा परिवसंति । किहां हेभगवन् सौधमदेवता व  
सेत्ते । गोयमा जंबूहीवे २ मंदरस्सपव्वयस्स दाहिणेणं । हेगौतम जंबूडोपनामा वीपनेविपे मेरुपर्वत दक्षिणपारसे । इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए वहु स  
मरमणिज्जाओ भूमिभागाओ । ए रत्नभापृथिवीयकौ घणो समारमणीक भूमिभागयकौ जंचा । चंदासरियाओग्गहगणक्कत्ततारारुक्काणं । चन्द्र सू  
ग्गहगण नज्ज तारा रूपवी । वल्लणि जौयणसयाइं जाव बहुगौओ जौयणकोडाकोडोओ उहट्टदूरं उप्परत्ता । योजनतासय जांनगे यावत् घणां योजननी  
कोडाकोडो कंचा उपाडो जे । एत्थणसोहमग्गनामज्जे पं० । तिहां सौधमनामे कल्पकक्षा । पाइए पडोणाइं उदीणदाहिणविच्छिणे अरुसंठाण सठिया ।  
पूवं पथिमलांवा उत्तर दक्षिण पिहलेत्ते अरुवन्ट्रसंस्थाने संस्थितत्ते । अच्चोमालो भाविरासिवग्गाभि । किरणनीयणो सट्ठितत्ते भासुरासने वणने तेजसरी  
खोत्ते । असंखिज्जाओ जौयणकोडोओ अखिज्जाओ जौयणकोडाकोडोओ । असंख्यातायोजननी कोडो असंख्यातायोजननी कोडा

ने अस्वेज्जानु जीयणकोहीनु अस्वेज्जानु अयामविस्संनेणं अस्वेज्जानु जीयण  
 कीकाकोहीनु परिकेवेणं सहरयणामए अत्ये जाव पपिक्खे तत्थणं सोहम्मगदेवाणं वत्तीसं विमाणावास  
 सयसहस्सा हवतीतिमस्कायं तेणं विमाणा सहरयणमया अत्था जाव पफिक्खवा तेसिणं विमाणाणं व  
 जमज्जेदेसनाए पंचवक्रंसएया पं० ते—असोगवक्रंसए सतवन्नवक्रंसए चंपगवक्रंसए चूयवक्रंसए मज्जे तत्थ  
 सोहम्मवक्रंसए तेणं वक्रंसया सहरयणमया अत्था जाव पफिक्खवा, एत्थणं सोहम्मगदेवाणं पज्जत्ता २ णं  
 ठाणा पं०, तिसुवि लीगस्स अस्वेज्जइन्नागे तत्थणं वहवे सोहम्मगदेवा परिवसंति महिहिया जाव पन्ना  
 सेमाणा तेणं तत्थ साणं २ विमाणावाससयसहस्साणं साणं २ अगमहिंसीणं साणं २ सामाणियसाहस्सी

कोही न्नावपणे पिहुलपणे । असंखिज्जाओ जीयणकोहाकोहीओ परिकेवेणं पं० । असंख्यातायोजननो कोहाकोही परिकेवे चोकर । सहरयणामए  
 प्रत्ये जाय पडिक्खे । सर्वं रत्नमयकै निर्मल जालगे प्रतिकरूप । तत्थणं सोहम्मगदेवाणं वत्तीसं विमाणावाससयसहस्साहवतीतिमक्खायं । तिहां सोधर्मना  
 मदेवताना ३२ लाखविमान तीर्थेकरे क्खो । तेणंविमाणं सहरयणमया अत्था जाव पडिक्खवा । ते विमाणा सर्वरत्नमयकै निर्मल यावत् प्रतिकरूप ।  
 तेणं विमाणाणं बहुमज्जेदेसमाए पंचवक्रंसिया पं० । ते विमानने घणो मध्यदेशभागे मोटा पांच वतंशकविमान केहे—असोगवक्रंसए सयवक्ख व० चप  
 गय० चय व० मज्जे इत्थ सोहम्मव० । अयोक्कवतंगक सत्तपणं व० चम्पक व० चूतवतंगक विचै इहां सोधर्मावतंगक ५ । तेणंवडिंसिया सहरयणामया  
 अत्था जाव पडिक्खवा । ते वतंगकविमान सर्वं रत्नमय निर्मल यावत् तेहने तुल वीकोरूपनथी । एत्थणं सोहम्मग देवाणं पज्जत्ता २ ठाणा पं० । इहां  
 सोधर्मदेवताना पर्यास्ता अपर्यास्ताना ठामकत्था । तिसुविलोयस्स असंखिज्जइन्नागे । तीन बालोकेने असंख्यातमेभागे । तत्थणं वहवे सोहम्मगदेवाण  
 परिवसंति । तिहां घणां सोधर्मदेवता वसेक्के । महच्छुटिया जाव पभासेमाणे । महदिक यावत् प्रभासहित । तेणं तत्थ साणं २ विमाणावाससयसहस्सा

कृतु इति ॥ शतं कृतनां प्रतिमानाम त्रिग्रहविशेषाणां श्रमणीपासकपल्वमप्रतिमारूपाणां वा कार्तिकश्रेष्ठिनवापेक्षया यस्या सौशतकतुः ॥ सहस्रसकल इति ॥ सहस्रमस्त्रां यस्या सौ सहस्राद्याः षट्स्य हि किलमंत्रिणां पञ्चशतानि संति तदीयानां चाक्ष्णा मिंद्रप्रयोजनव्याकृततया इन्द्रसंयचित्वेन विद्यमानात् सहस्राक्षत्वं निर्द्वय ॥ मयमहामेधा स्ते यस्य यज्ञो संति समयधाम् तथा पाको नाम बलवान् रिपुः स शिष्यते निराक्रियते येन सः पाकगासनः ॥ अर्यंवरवत्यधरे ॥ अरजांसि रजो रहितानि स्वच्छतया अंशराणि वस्त्राणि धारयतीति अंशवरस्त्वधरः ॥ आलङ्घयमालमउरु इति ॥ माला च मुकुटश्च मालामुकुट मालागित माविदं मालामुकुटं येन स आलङ्घितमालामुकुटं ॥ नवहेमचारुषित्तचंदलकुण्डलविलिहिज्जनागंगं ॥ नवमिय अत्युत्कटचारुवर्णतया प्रत्यग्रमिय हेम यत्र ते नवहेमनी नवहेमज्यां चारुचित्राज्यां चंदलाज्यां कुण्डलाज्यां विलिख्यमानां गंङ्गी यस्य स तथा स

णं एवं जहेन उहियाणं तहेव एतेसिंपि त्राणियहं जाव आयरस्कदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च वल्लणं सोह  
अगकप्पवासीणं वेमाणियाणं देवाणं देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं जाव विहरति । सक्के इत्य देविदे देव  
राया परिवसइ वज्जपाणी पुरंदरे सयक्कउ सहस्सस्के मधवं पाकसासणे दाहिणहुलागाहिबइवह्नीसविमा  
णवाससयसहस्साहिबइ पुरावणवाहणे सुरिदे अर्यंवरवत्यधरे आलङ्घयमालमउरु नवहेमचारुचित्तचंदल

यं माण २ सामाणियसाहस्योण एवं जहेय आहियाणं तहेव एतेसिंपि भाणि० । ते इहां आपआपणं विमानना लाखगमे करी आपआपणं सामानि  
कसइअकरी रम जिन ओधनेविपे कळो तिम सर्व इहां कहिवा । जाव आयरस्कदेवसाहस्योणं अणोसिंवइणं साहमाकणवासीणं वेमाणियाणं देवाण  
य देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं जाव विहरति । यावत् आत्तरस्सकगा सहय अनेरावणां सौधर्मकत्ततावासी वेमानिय अनेक देवता देवीना अधिपतिपणे  
यावत् विचरे । सक्के इत्य देविदे देवरायाणी परिवसंति । अक तिहां देवतारी राजादेवेन्द्र वसेक्के वज्जपाणी पुरंदरे सयक्कउसइअल्ले । वल्लकरी पुरंदर अ  
सुखं करविदरै ते शतकतु कार्तिकसेठभने सोवार प्रतिमा घूर सहयनेयधणी सइयाच । मयव पाकसासणे दाहणउटसोगादिबइ वसीवविमाणा

ननुकुमारकल्पे-सपत्नं सपत्नित्वं सपत्नित्वं ॥ समाः पत्न्याः पूर्वापरद्विजोत्तररूपाः पार्था यस्मिन् दूरसु त्यतने तत्सपत्नं समानस्य धर्मादिषु चेति स  
मानस्य सजावः ॥ सपत्नित्वं सति ॥ समाः प्रतिदिशो यदिदो यत्र तत्सपत्नित्वं सामानिकसंग्रहणियाया-चउरासीइत्यादि ॥ सौधर्मद्रस्य घतुर  
श्रीतिसामानिकसहस्राणि वंशानेद्रस्या शीतिः सनत्कुमारस्य द्वासप्ततिः माहेन्द्रदेवराजस्य सप्ततिः ब्रह्मलोकैद्रस्य यष्टिः लांतकैद्रस्य पंचाशत् महा  
शुक्लैद्रस्य चत्वारिंशत् सहस्रारैद्रस्य त्रिंशत् आनतप्रणेतैद्रस्य दशसामानिकसहस्राणि ॥ अथतंसकाशातिदेशोक्ताइति दुरवधोधा स्ततो विने

कुंठलविलिहज्जमाणगंठे महिहिणु जात्र पन्नासमाणे सेणं तस्य वत्तीसाए विमाणवाससयसहस्साणं चउरा  
सीए सामाणियसाहस्सीणं तावत्तीसाए तावत्तीसगाणं चउराहं लोणपालाणं चउराहं अण्णमहिहीसीणं सपरि  
वाराणं तिरहं परिसाणं सत्तरहं अण्णियाहिंवडं चउराहं चउरासीणं अण्णरक्कदेवसाह  
स्सीणं अण्णेसिं च वल्लणं सोहम्मकप्पवासीणं वेमाणियाणं देवाण्य देवीण्य अण्णेवच्चं पोरिवच्चं कुञ्जमाणे

वाससयमहस्साहिवरं । मयवी पाकयासन देवताना वस्यकौता दक्षिणां सोकाधिपति ३२ लाखिविमाननाधणो । ऐरावणवाहनमरेदु अरयंववत्य  
धर । ऐरावण वाहनके जेहने मरेदु रजविना गगनपरे निर्मलपल्लवारो । आलंयमालमण्डं नवहेमचारुचित्तचंचल कुंडल विलिहज्जमाणगंठे । व्याप्य  
कै रुटमकुट नवा हेमनाचातु विचित्र कुण्डलेकरो विलपमान गल्लखल्लै जे इन्दुना । महिउटिण लाव पमासमाणे । मद्धिक्क यावत् सर्वेउज्जवालो कर  
ता । तस्य वत्तीसाए विमाणवाससयसहस्साण चउरासीए सामाणिय साहस्सीणं तावत्तीसाए तावत्तीसगाण चउराहं लोणपालाण अण्णमहिहीसीणं  
सपरिवाराण । तिहां ३२ लाखिविमाननो खामो ८४ सत्तय सामानिकेकरो पावजिगक पूज्जोकेदेवतावे करो ४ लाकपाले ८ भग्गमाहपोवेकरो सपरि  
रिम के सत्तयहं अणियाण सत्तय ३ अणियाहिवरण । तौन परपदावे ७ अनाककरो ७ अनाकाधिपतेकरो । चउण्ह चउरासोणं आयरक्क  
३३ लाखकप्पवासीणं वेमाणियाणं देवाण्य देवीण्य अण्णेवच्चं पोरिवच्चं कुञ्जमाणे ८४ हजार अ. त्वरशेकरो अने





नत्कुमारकल्पे-सपक्वं सपदिदिसंति ॥ समानाः पक्षाः पूर्वोपरदक्षिणोत्तररूपाः पार्श्वा यस्मिन् दूरमु त्यतने तत्सपक्षं समानस्य धर्मोदिपु चेति स मानस्य सन्नावः ॥ सपदिदिसंति ॥ समानाः प्रतिदिशो विदिशो यत्र तत्सप्रतिदिक् सामानिकसंयहणियाया-चउरासीइत्यादि ॥ सोयमैद्रस्य चतुर श्रुतिसामानिकसहस्राणि ज्ञानैन्द्रस्या श्रुतिः सनत्कुमारस्य द्वासप्ततिः माहेंद्रदेवराजस्य सप्ततिः ब्रह्मलोकैन्द्रस्य पष्ठिः लांतकैन्द्रस्य पंचाशत् मष्टा शुक्लैन्द्रस्य चत्वारिंशत् सहस्रारैन्द्रस्य त्रिंशत् आनतप्राणैतैन्द्रस्य दशसामानिकसहस्राणि ॥ अथतंसकाशातिदेशोक्तोक्ताडति दुरवयोधा स्ततो विने

कुंक्रलविलिहज्जमाणगंठे महिहिण् जात्र पन्नासेमाणे सेणं तस्य वत्तीसाए विमाणवाससयसहस्साणं चउरा सीए सामाणियसाहस्सीणं तावत्तीसाए तावत्तीसगणं चउरहं लोमपालाणं झण्ठरहं झग्गमहिसीणं संपरि वाराणं तिण्हं परिसाणं सत्तरहं झणियाणं सत्तरहं झणियाहिवडणं चउरहं चउरासीणं झायरस्कदेवसाह स्सीणं झुन्नंसिं च वल्लणं सोहम्मकप्पवासीणं वेमाणियाणं देवाणय देवीणय झोहेवच्चं पोरेवच्चं कुव्वमाणे

वाससयसहस्साहिवरं । नवमे पाकयासन देवताना वस्यकौता दधिणाइं लोकाधिपति इर लाखाविमाननोधणौ । ऐरावणवाहनमेरेदे अरयंवरदत्त धरे । ऐरावण वाहनकै जेहने सुरेद्र रजविना गगनपरे निर्मलवस्त्रधारौ । आलंयमानमण्ड नवहेमचारचित्तचंचल कुंडल विलिहज्जमाणगले । धाप्या कै रुड मंजुट नवा हेमनाचान् विविच कुण्डलेकरी विलपमान गल्लसल्लकै जे इन्द्रना । महिडुण्डिण जाय पमासमाणे । महिडिञ्चा यावत् सवेउज्जवालौ वर ता । तस्य वत्तीसाण विमाणावासमयसहसाण चउरासीए सामाणिय माहसीणं तावत्तीसाए तावत्तीसगण चउरहं लोमपालाण अद्रुगह झग्गमहिसीणं सपरिवाराण । तिहा इर लाखविमाननो स्वासो ८४ सहस्र सामानिकेकरी वायविगक पूजनीकदेवताये करो ४ लाकपाले ८ झग्गमहिपोवेकरी सपरि रे । तेष र रमाणं सत्तरहं झणियाण सत्तरहं झणियाहिवरणं । तौन परपदये ७ अनांकेकरी ७ अनांकाधिपतेकरी । चउगह चउरासौणं आयरकुड सहस्र सोदयकप्पवासीणं वेमाणियाणं देवाणय देवीणय ओहेवच्च जात्र विहर । चारदिग्गिने ८४ हजार अत्तरखेकरी अने

कतुइति ॥ शतं कृतनां प्रतिमानाम त्रिग्रहविशेषाणां श्रमणीपासकपञ्चमप्रतिमाकूपाणां वा कार्सिकश्रेष्ठिनवापेक्षया यस्या सौशतकतुः ॥ सहस्रसकले इति ॥ सहस्रमक्ष्णां यस्या सौ सहस्राक्षः इन्द्रस्य हि किलमंत्रिणां पञ्चशतानि सन्ति तदीयानां चाह्ला मिन्द्रप्रयोजनव्यावृत्ततया इन्द्रसंयचित्वमिव विवक्षणात् सहस्राक्षत्वमिन्द्रस्य ॥ मघवंइति ॥ मघामहाभेदा स्ते यस्य यदो सन्ति समपवाभू तथा पाको नाम बलवान् रिपुः स क्षियते निराक्रियते येन सः पाकशासनः ॥ अरयंवरवत्यधरे ॥ अरजांसि रजोरहितानि स्वच्छतया अंशराणि वच्छाणि धारयतीति अंशरयच्छधरः ॥ आलइयमालमउठेइति ॥ माला च मुकुटय मालामुकुट मालगित भाविदं मालामुकुटं येन स आलगितमालामुकुटं ॥ नवहेमचारुवित्तयंचलकुण्डलधिलिहिज्जमाणगंठे ॥ नवमिव अस्तुत्कटवारुवर्णतया प्रत्यग्रमिव हेम यत्र ते नवहेमनी नवहेमभ्यां चंचलाभ्यां कुण्डलाभ्यां विलिख्यमानौ गंठौ यस्य स तथा स

णं एवं जहेव जेहियाणं तहेव एतेसिंपि ज्ञाणियहं जाव अयारखदेवसाहस्सीणं अयन्तेसिं च वल्लणं सोह  
अगकप्पवासीणं वेमाणियाणं देवाणं देवीणय अहेवच्चं पोरेवच्चं जाव विहरति । सक्को इत्य देविदे देव  
राया परिवसइ वज्जपाणी पुरंदरे सयक्कउ सहस्सस्के मघवं पाकसासणे दाहिणहुलोगाहिबईवत्तीसविमा  
णवाससयसहस्साहिबई एरावणवाहणे सुरिदे अरयंवरवत्यधरे अलइयमालमउठे नवहेमचारुवित्तयंचल

णं माणं २ सामान्यविशेषादस्मिन् एवं जहेव जेहियाणं तहेव एतेसिंपि भाषि० । ते इहां आपथापणां विमानना साखगमे करी आपथापणां सामानि  
कसहचकरी इमं जिन अधेनविपे कक्षी तिमं सर्वं इहां कहिवो । जाव आयरखदेवसाहस्सीणं अणेसिंचवट्टणं सोहअगकप्पवासीणं वेमाणियाणं देवाण  
य देवीणय अहेवच्चं पोरेवच्चं जाव विहरति । यावत् आत्तरचकनां सइय अनेरावणां सौवंमकल्पनावासी वैमानिक अनेक देवता देवीमो अधिपतिपणे  
यावत् विवरे । सक्को इत्य देविदे देवरायाणी परिवसंति । यक्क तिहां देवतारी राजादेवेन्द्र वसेक्के वज्जपाणी पुरंदरे सयक्कसहस्सउठे । वल्लेकारी पुरंदर अ  
सुरेवज्जकरविंदारै ते यत्तकतु कार्तिकसेठभवे सोत्तार प्रतिमा यूरं सहचनेनधणीं सउत्तार । मघवं पाकसासणे दाहणहुदुलोगाहिबई वत्तीसविमाणा



जात्र विहरति । कहिणं जंते ! ईसाणगदेवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पं० ? कहिणं जंते ! ईसाणगदेवा परिव  
 संति ? गो० ! जंबूदीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं इमीसे रयणप्पन्नाए पुढचीए वज्जसमरमणिज्जाउं नू  
 मिन्नागाउं उहुं चंदिमसूरियगहगणनकत्ततासारूवाणं वल्लइं जोयणसयाइं वल्लइं जोयणसहस्साइं जात्र  
 उप्पट्ता एत्थणं ईसाणं नामं कप्पे पत्तत्ते, पाईणपणीगायए उदीणदाहिणविच्छिन्ने एवं जहा सोहम्मे जात्र  
 पफ़िसुरूवे तत्थणं ईसाणगदेवाणं ज्युठावीसं विमाणावाससयसहस्सा हवतीति मस्कायं तेणं विमाणा सत्तु  
 रयणामया जात्र पफ़िहूवा, तंसिणं वज्जमज्जदेसन्नाए पंच वल्लंसगा पणत्ता, ज्युंक्कवळंसए फ़लिहवळंसए

रा। पणं भीधर्मं कल्पनावासो वैमानिकदेवता देवी अधिपतिपत्नीं यावत् विचरे । कहिणं भंते ईसाणगदेवाणं पज्जत्ता २ णं टा० पं० । किंहां हे भगवन्  
 ईशान देवलोक्ता पर्वता चर्यागता ना ठामकक्षा । कहिणं भंते ईसाणगदेवा परिवसंति । किंहां हे भगवन् ईशानदेवता वसेहे । गोयसा जंबूदीवे २  
 मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं । हे गौतम जंबूदीपनामाद्वीप विषे मेत्तपवत्त उत्तरपासे । इमौ सरयण्णभाए पुट्ठीए वज्जसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ । ए र  
 जमभाए ध्याओ घण्ठीं संमोरमणौक भूमिभागाओ । उळुटं चंदिमसूरियगहगणनकत्तताराकूवा ण । कंचा चम्पू गृहगण नत्तत्त ताराकूपथी । वज्जणि  
 जोयणसयाइं जात्र उप्पट्ता । घण्ठीं योजनना सौकडाम् यावत् कोडाकोळी जवा जाय जे । एत्थणं ईसाणं नामं कप्पे पं० । इहां ईशाननामा कल्पकक्षा ।  
 पाईणपण्डिणायए उदीणदाहिणविच्छिणं पवं जहा सोहयो जाव पफ़िहूवे । पूर्व पथिम लोकोके उत्तररत्थिणे पिहूलोके इमं जिम सोधर्मनोपर यावत्  
 पतिरूप । तत्थणं ईसाणगदेवाणं ज्युठावीसविमाणावाममयमहरमा हवंदिस्सिमक्कायं । तिहां इशान देवतारा २८ लाखविमाननी संख्याकही तीर्थे करे  
 कक्षा । तेणं विमाणासभरयणामया जाव पफ़िहूवा । ते विमानं सर्व रत्नमय यावत् प्रतिरूप । तेमिणं वज्जमज्जदेसभाए पचवळेसि पं० तं० । तिहां घणो  
 मय्य विचाले ५ भवतंगकविमानहे ते कसेहे—अकवडिमण फ़लिहव० रयणव० जायूरुवव० । अकवतयक पव्व द्वाचणे स्फुटिकावतंशक रत्नावतंशक याव

यजनानुग्रहायै धीवित्त्वेन मूलत आरज्यो पदव्यये-सीधर्म पूर्वस्यां अशोकावतंसको दक्षिणतः सप्तपर्णायतंसकः पयिमायां चंपकावतंसकः उशरत  
श्रुतावतंसकः मध्ये सीधर्मावतंसकः एव पूर्वोदिकमेण ईशाने अङ्गावतंसकः स्फाटिकावतंसको रतावतंसको जातरूपावतंसकः मध्ये ईशानावतंसकः  
सनरजुमारे अशोकः सप्तपर्णः चंपकः चतुः सनरजुमारावतंसकः माहेन्द्र अङ्गुस्फाटिकरवजातरूपमाहेन्द्रावतंसकाः अशोकसप्तपर्णचंपकचतुः

रयणवक्रंसए जात्र सरूववक्रंसए मज्जे इत्य ईसाणवक्रंसए, तेषं वक्रंसया सञ्चरयणामया जात्र पङ्क्तिरूवा  
एत्यणं ईसाणाणं देवाणं पज्जन्नापज्जन्नाणं ठाणा पणत्ता । तिसुवि लोगस्स अस्संखेज्जइत्तणि सेसं जहा सो  
हम्मगदेवाणं जात्र विहरंति, ईसाणं अत्य देविदे देवराया परिवसति सूळपाणी वसन्नवाहणे उत्तरहुलो  
गाहिवई अण्ठावीसविमाणावाससयसहस्साहिवई अरयंवरवत्यधरे सेसं जहा सक्कस्स जात्र पन्नासेमाणे  
तस्य अण्ठावीसाए विमाणावाससयसहस्साणं असीतीए सामाणियसाहस्सीणं तावतीसाए तावतीसगाणं

वृत्तपवातगक । मज्जे इत्य ईसाणवक्रंसए तेषं वक्रिमिया सञ्चरयणामया जात्र पङ्क्तिरूवा । विचे इहा ईशानावतंसकं ते वतंगक मध्व रत्नमय यावत् प्रतिरूप । एत्य  
णं ईसाणदेवाण पज्जन्ता २ ठाणापे० । इहा ईशानदेवता पर्वा ता चर्पणीताना ठामकक्षा । तिसुविस्त्रीयसम अमंविस्त्राभागे सेमं जहा सांङ्गदेवाणं जात्र  
विहरंति । तौन बोल्लोकेन प्रसव्यातेमभागे हुवे चाकतां जिम मौधर्मद्वता यावत् विचरेण् । ईगाणे इत्यदेविदे देवरायाणो परिवसंति । ईगः ननाभे  
इन्द्राज्जावमैके । मूलपाणिवसभवाहणे । धिगुले छायेमे जेह्वते । उत्तरहुल लोमाहिवई । उत्तराई लोकनोधवौ । अश्वीसविमाणावासमयसहस्साहिव  
ई । २८-लाख विमाननो धणी अतिरिक्त । अरयंवरवत्यधरे सेसं जहा सक्कस्स जात्र पन्नासेमाणे । रत्नरहित वस्त्रधारक चाकतां जिम गक्रनोपरे यावत्  
प्रभामंडित । सेणं तस्य अश्वीसविमाणावासमयसहस्साणं अमिंदए सामाणियसाहस्सीणं तावतीसगाणं । ते तिहा २८ लाख विमानं  
करी सहित ८०००० सामानिकेकरी सहित २२ अयविंगकेकरी । चउयहंतीगपानाणं अउयहं प्रगमहि सोणं सपरियाराणं । ४ लोकापल्लेकरी ८ अयमहि



पद्मोणाग्रं उदीणदाहिणविच्छिन्ने जहा सोहम्मे कप्पे जाव पङ्कित्वे, तत्थणं सणकुमाराणं देवाणं वारस विमाणावाससयसहस्सा हवन्तीति मस्कायं, तेणं विमाणा सहरयणामया जाव पङ्कित्वा तेसिणं विमाणा णं वज्जमज्जदेसनागे पंच वरुंसगा पणत्ता, तंजहा-असोगवरुंसए संत्तयणवरुंसए चंपगवरुंसए चूयवरुंसए मज्जे जल्य सणकुमारवरुंसए तेणं वरुंसया सहरयणामया अच्छा जाव पङ्कित्वा तत्थणं सणकुमारदेवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पणत्ता । तिसुवि लोगस्स अस्सखेज्जइत्तागे तत्थणं वहवे सणकुमारा देवा परिवसन्ति महिद्धिया जाव पन्नासमाणा विहरन्ति नवरं अगमहिसीन् णत्थि, सणकुमारे इल्य देविंदे देवराया परिवसइ अरयंवरवत्थधरे सेसं जहा सक्तास्स सेणं तत्थ वारसरहं विमाणावाससयसहस्साणं वाव

लो जिम मौधर्म यावत् प्रतिरूप । एत्थणं सणकुमाराणं देवाणं वारसविमाणावाससयसहस्साहवन्तीति मस्कायं । इहां सनत्कुमारना १२ लाख विमानकक्षा तीर्थकरे । तेणं विमाणा सहरयणामया जाव पङ्कित्वा । ते विमान सर्व रतनमय यावत् प्रतिरूपने । तेसिणं विमाणाणं बहुमज्जदेसभाए पंचवरुंसया पं० तं० । विमानने वर्षी मध्येदेगभाग विचाले पल्ल अवतगकाविमान कक्षा । असोगवरुंसए सयवणव० चंपकय व० चूय व० मज्जे इल्य सणकुमार व० तेणं वरुंसया सहरयणामया अस्सा जाव पङ्कित्वा । अगोक्कवतंगक पूव सत्तपणं वतंगक दाक्षिणे चपकवतंगक पश्चिमे चूतवतंगक उत्तरे विचै सनत्कुमारावतंगक ते वतंगक सर्व रतनमय यावत् प्रतिरूप । एत्थणं सणकुमाराणं देवाणं पल्लत्ताणं ठाणा पं० । इहां सनत्कुमारना पर्याप्ताअपर्याप्ता ना ठामकक्षा । तिसुविलोगस्स असंखिज्जइत्तागे । तीन वालोकेने अस्सख्यातमेभाग हवे । तत्थणं वहवे सणकुमारादेवा परिवसन्ति । तिहां घणां सनत्कुमारदेवता वसेछे । मज्जइत्तिया जाव पभासेमाणा विहरन्ति । महर्णि क यावत् प्रभासहित विचरेछे । नवरं अगमहिसीन् नत्थि सणकुमारे इल्य देविंदे देवरायाणं परिवसति । एतलोविगेष अगमहिपी नहो सनत्कुमारनामे देवेद्र देवराजा वसेछे । अरयंवरवत्थधरे सेसं जहा सकस । रजरहित गगन



जातरूपसद्वस्त्रारवतंसकाः प्राशते अशोकसमपणचंपकचूतप्राणावतंसकाः अच्युते अङ्गुस्फटिकरत्नजातरूपाच्युता अवतंसका इति ॥ शैवेयकसूत्रे-सम  
न्दिष्याइति ॥ समा ऋद्धि र्येषांते समद्विंकाः एयं ॥ समुज्जुहया इत्याद्यपि ज्ञावनीयं ॥ अणिदाइति ॥ नविद्यते इन्द्रो अधिपति र्येषांते अनिन्द्राः ॥  
अपेस्वा इति ॥ नविद्यते प्रेयः प्रेयस्त्वं येषांते अप्रेयाः ॥ अपुरोहिषाइति ॥ नविद्यते पुरोहितः शांतिकर्मकारी येषामशांतेरन्नाधात् ते अपुरोहिताः

तरीए सामाणियसाहस्सीणं सेसं जहा सक्कस्स झग्गमहिसेवज्जं नवरं चउरहं वावत्तरीणं ज्ञायरस्कदेवसाह  
स्सीणं जात्र विहरइ । कहिणं जंते ! माहिदाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पयत्ता । कहिणं जंते !  
माहिदगा देवा परिवसंति ? गोयमा ! ईसाणस्स कप्पस्स उप्पिं सपक्किं सपक्किदिसिं वज्जइं जोयणाइं जात्र  
वज्जगाइं जोयणकोफाकोफ्रीउं उहं दूरं उप्पइत्ता तत्थणं माहिंदे नामं कप्पे पयत्ते, पाइणपप्पीणायए जाव  
एवं जहेव सणकुमारे, नवरं झुठ विमाणावाससयसहस्सा वणंसया जहा ईसाणं नवरं मज्जे तत्थ माहिं

वत्त्वस्वधारी गेपजिम गक्कनीपेर । सणंतल्यवारसव्हविमाणावाससयसहस्साणं । तिहर १२ लाखविमानिकरी । वावत्तरीए सामानिकदेवसाहस्सीणं जहा स  
क्कस्स अगमहिसेयं वज्जा । ७२ सामानिकसहस्सीकरी जिम गक्कनीपेर अगमहिपी विना । नवरं चउरहं वावत्तरीणं ज्ञायरस्कदेवसाहस्सीणं जाव वि  
हरंति । एतलोविशेष ७२ चौगुणाकरता २२७ आत्तरंषक सहस्सीकरी यायत्त विचरे । कहिणं भंते माहेददेवाणं पज्जत्ता २ यं ठाणा पं० । किहां हेमगवन्  
माहेददेव पर्याता अपर्याताना ठाम कल्हा । कहिणं भंते माहिंददेवा परिवसंति । किहां हेमगवन् माहेददेवता बरंते । गोयमा ईसाणस्स कप्पस्स  
सपिं सपिंस्सं सपिदिदिसिं वल्लहिं जोयणाइं जाव वड्ढीयां जोयणकोफाकोफ्रीओ उहं दूरं उप्पइत्ता । हेगौतम ईगानकत्थने जपर पत्तसहितं सर्व  
दिग्गिस्सिं येषां योजनना वावत्त येषां योजननी कोफाकोफ्री जावो जाय । यत्थणं माहेदनामे कप्पे यं० । तिचारे तिहां माहेदनामे देवलोका कल्हो । पा  
ईण पडिणायए उदोण दाहिणविक्किणे । पूर्व दिसात्तांओ उत्तर दक्षिण पिइत्तो । एवं जइय सणकुमारं नवरं अट्टविमाणावाससयसहस्सा । इमं सर्वं





उहं दूरं उप्यइत्ता एत्यणं लंतए नामं कप्पे पणत्ते पाईणपणीणायते जहा वंनलोए नवरं पन्नासाविमाणा वाससहस्सा हवंतीतिमक्कायं, वरुंसगा जहा ईसाणवरुंसगा नवरं मज्जे अत्य लंतगवरुंसए देवा तहेव जाव विहरंति, लंतए अत्य देविदे देवरायां परिवसइ जहा सणकुमारि नवरं पन्नासाए विमाणावाससहस्साणं पन्नासाए सामाणियसाहस्सीणं चउण्हं पन्नासाणं आयरक्कदेवसाहस्सीणं अणेसिंच वल्लणं जाव विहरइ । कहिणं नंते ! महासुक्काणं देवाणं पज्जापज्जाणं ठाणा पणत्ता । कहिणं नंते ! महासुक्कादे वा परिवसंति ? गोयमा ! लांतस्स कप्पस्सउप्पिं सपक्किं सपक्किदिसिं जाव उप्यइत्ता एत्यणं महासुक्के

जाय । एत्यणं लंतणनामं कप्पे पं० । इहां लात्तकनामा कल्पकच्छो । पाईणपणीणायए एवं जहा वंनलोए । पूर्वपश्चिम लांवा इम जिम ब्रह्मलोक । गवरं पणासं विमाणावाससहस्रमाहिवदं वहेसगा जहा ईसाणवरुंसगा । एतलोविशेष ५० सहस्र विमानकक्षा यतंगक जिम ईयाननोपरे । नयरं मक्के इत्यलंतगवरुंसए देवा तहेव जाव विहरंति । एतलोविशेष इहां लांतकावतंगकदेव तिमहीज यावत् विचरे । लंतए इत्य देविदे देवरायाणो परि वसंति । लांतक देवेन्द्र देवराजा वसेक्के । एवं जहा सणकुमारि नवरं पणासाए विमाणावास सहस्राणं पणासाए सामाणियसाहस्सीणं । इम जिम सनत्कुमार एतलोविशेष ५० लाख विमान ५० हजार सामानिकसहस्रैकरी । चउण्हं पणासाणं आयरक्क देवसाहस्सीणं अणेसिंच वल्लणं जाव वि हरंति । ५० हजारने चौगुणां आत्तरचक देवतायेकरी अनंता घणादेव यावत् विचरे । कहिणं भंते महासुक्का देवा परिवसंति । किहां इमगवन् महागज्जदेवता वसेक्के । गोय मा लंतक्क कणक्क चापिं सपक्किं सपक्किदिसिं जाव उप्यइत्ता । इगौतम लांतककल्पयो कपर पचमहित यावत् कंचाजाव । एत्यं महासुक्केनामं कप्पे पं० । इहां महागुक्कनामं कल्पकच्छो । पाईणपणीणायए उदोणदहिणविच्छिण्णे एवं जहा वंनलोए । पूर्व पश्चिमे लांयो उत्तरदक्षिणे पिण्डुलो इम ते जि

नामं कप्ये प्रणत्ते । पाईणपळीणायते उदीणदाहिणविच्छिन्ने जहा वंजलीए नवरं चत्तालीसं विमाणावा  
ससहस्सा हवन्तीति मस्कायं, वळंसगा जहा सोहम्मवळंसगा नवरं मज्जे तस्य महासुक्खवळंसए जाव विह  
रइ महासुक्खे इत्य देविदे देवराया जहा सणकुमारे नवरं चत्तालीसाए विमाणावाससाहस्सीणं चत्ताली  
साए सामाणियसाहस्सीणं चउरहं चत्तालीसाणं ज्ञायरक्खदेवसाहस्सीणं जाव विहरंति । कहिणं जंत !  
सहस्सारदेवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पं० । कहिणं जंत ! सहस्सारदेवा परिवसंति ? गो० । महासुक्खस्स  
कप्पस्स उप्पिंसपस्सिंसपत्तिदिसिं जाव उप्पइत्ता एत्थणं सहस्सारे नामं कप्पे पं० । पाईणपळीणायते ज

म त्रल्लोकी नवरं चत्तालीस विमाणावाससहस्सा हवन्तीति मस्कायं । एतलोविणर ४० हजारविमानकच्छा तीर्थकरे । वडंसगा जहा सोहम्मवडंस  
गा नवरं मज्जे इत्य महासुक्खवडंसए जाव विहरति । वतयक जिम सौधमनीपरे एतलोविणेष विचै इहा महाशुक्कनामावतणक यावत् विवरै । महा  
सुक्खे वडंसए जाव विहरति । महाशुक्कनामै । महासुक्के इत्य देविदे देवरायाणो परिवसंति । महाशुक्कनामै देवदे देवराजा वसैस्सै । एवं जहा सणकुमा  
रे नवरं चत्तालीसाए विमाणावाससहस्साणं चत्तालीसाए सामाणियसाहस्सीणं । इम जिम सनत्कुमार एतलोविणेष ४० हजार विमानसंख्याहुये ४०  
हजार सामानिकसहयेकरो । चउरहं चत्तालीसाणं ज्ञायरक्खदेवसाहस्सीणं जाव विहरति । एकलोख साठहजार देवता आत्तरक्क हुवे यावत् विवरै ।  
कहिणं भन्ते सहस्सारदेवाण पज्जत्ता २ णं ठाणा पं० । किहां हेमगवन् सहस्सारदेवताना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकच्छा । कहिणं भन्ते सहस्सारदेवा  
परिवसंति । किहां हेमगवन् सहस्सारदेवतो वमैक्ख । गोयमा महासुक्का कप्पस्स उप्पिंसपस्सिं जाव उप्पइत्ता । इतोतम महाशुक्क कल्पने  
ऊपर पचसहित यावत् ऊंचा जाईते । एत्थणं सहस्सारनामं कप्पे पं० । इहां सहस्सारनामं कल्पकच्छो । पाईणपळीणायए जहा वंजलीए । पूर्व पाईम  
सांवा जिम ब्रह्मलोका । कविमाणावाससहस्सा हवन्तीति मस्कायं देवातहेव वडंसगा जहा इसाणं नवरं मज्जे इत्य सहस्सवडंसए जाव विहरति ।

हा वंजलोए नवरं ठविमाणवासासहस्सा हवतीति मस्कायं देवा तहेव वंजसगां जहा ईसाणस्स वंजसगा  
नवरं मज्जे जत्थ सहस्सारवज्जं ए जाव विहरंति, सहस्सारि इत्थ देविदे देवराया परिवसइ जहा सणकु  
मारे नवरं ठण्हं विमाणवासासहस्साणं तीसाए सामाणियसाहस्सीणं चउण्हय तीसाणं आयरस्कदेवसाह  
स्सीणं जाव आहेवज्जं कारेमाणे विहरंति । कहिणं नंते ! आणयपाणयदेवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पं०  
? कहिणं नंते ! आणयपाणयदेवा परिवसंति ? गो० ! सहस्सारस्स कप्पस्स उप्पि सपस्सिक्कं सपस्सिदि  
सिं जाव उप्पइत्ता एत्थणं आणयपाणयनामेणं दुवे कप्पा पन्तत्ता पाईणपणीणायते उदीणदाहिणविच्छि  
न्ना अण्ठचंदसठाणसंठिया अच्चिमालीनासरसिप्पन्ना सेसं जहा सणकुमारे जाव पप्पिस्सुवा तत्थणं आण

एतलोविग्गेप छ हजाराविमाम केवलीकच्छा वतंयक जिमाई गाननौपरे एतलोविग्गेप विचे इहां सइयावतंयक यावत् विचरे । सहस्सारि इत्थदेविदे दे  
वरायाणी परिवसंति । सइयारनामे देवेद्रेवराजा यसैके । जहा सणकुमारे नवरं छण्हं विमाणवासासहस्साणं तीसाए सामाणियसाहस्सीणं । जिम  
सनकुमार एतलोविग्गेप छहजार विमान । तीसाएसामाणियसाहस्सीणं वउण्हं तीसाए आयरस्कदेवसाहस्सीणं जाव आहेवज्जं कारेमाणे जाव वि  
हरंति । ३० हजार सामानिकेकरो एकसौविसहजार आत्तरचकेकरी यावत् अधिपतिपणे विचरे । कहिणंभते आणयपाणयकप्पणं देवाणं पज्जत्ता  
२ णं ठाणा पं० । किहां विमगवन् आनंत प्राणतदेवताना पर्याता अपर्याताना ठामकच्छा । कहिणंभते आणयपाणयाणं देवाणं परिवसंति । किहा हे  
भगवन् आनंत प्राणतदेवता यसैके । गोयमा सहस्सारस्स कंप्पस्स उप्पि सपस्सिक्कं सपस्सिदिसे जाव उप्पइत्ता । हेगोतम सइयारकल्लयो उपरि प्रतिदि  
से जालिगे कं वा जांजे । एत्थणं आणयपाणयनामं दुवेकप्पा पं० । तिहां आनंत प्राणतनामे दायकल्ल कच्छा । पारं णपडोणायया उदीणदाहिणवि  
च्छिन्ना अण्ठचंदसठाणसंठिया । पूर्वपथिम लांती उत्तरदक्षिण पिहुलो अहं चंद्रमाने संस्थाने संस्थितके । अच्चोमालो भासरासिसमपभा सेसंजहासंकु

यपाणयदेवाणं चत्वारि विमाणावाससया हवन्ती मखायं जाव पङ्क्तिवा, वरुसगा जहा सोहम्मे नवरं म  
ज्जे पाणयवरुसए तेणं वरुसगा सखरयणामया अच्चा जाव पङ्क्तिवा, एत्थणं अणयपाणयदेवाणं पज्ज  
तापज्जत्ताणं ठाणा पत्तत्ता तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइत्ताणे तत्थणं बहवे अणयपाणयदेवा परिवसन्ति  
महद्धिया जाव पत्तासेमाणा तेणं तत्थ साणं २ विमाणवाससयाणं जाव विहरन्ति पाणएत्थ देविदे देवसा  
या परिसन्ति जहा सणकुमारि नवरं चउरहं विमाणावाससयाणं वीसाए सामाणियसाहस्सीणं अससीतीए  
अयसरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च बत्तणं जाव विहरन्ति । कहिणं जन्ते ! अरणञ्जुयाणं देवाणं पज्जत्ता

नरि जाव पङ्क्तिवा । किरणने समूहे प्रभादिक येप जिम सनत्कमारतीपरे जांप्रतिरूप । तत्थणं आणयपाणयदेवाणं चत्वारि विमाणावाससया हव  
तितिमखायं जाव पङ्क्तिवा । तिहां आनत प्राणत देवताना चारविमाननानासैकहा तीर्थकरे कक्षा यावत् प्रतिरूप । वेडसगा जहा सोहम्मे नवरं मरुमे  
इत्थ पाणयवरुसए तेणविमाणा सखरयणामया अच्चा जाव पङ्क्तिवा । यतंयक जिमसोधर्म ए विग्गेप विचै प्राणावतंयक ते विमान सव रत्तमयइ याव  
त् प्रतिरूप । पत्थणं आणयपाणयदेवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पं० । इहां आनतप्राणतदेवताना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकक्षा । तिसुविशोयस्सा असं  
खिज्जइत्ताणो । तीन बाल्लोक्कने असंख्यत्तेमभागे हुवे । तत्थणं बहवे आणयपाणयदेवा परिवसन्ति महद्धिया जाव पभासेमाणा । तिहां वणां आनत  
प्राणतदेवता वसैहे महद्धिक यावत् प्रभासद्धित । तेणं तत्थ साणं २ विमाणावाससयाणं जाव विहरन्ति । ते तिहां आप आपणे विमानना सैकहाये वि  
चरे । पाणएनामं एत्थ देविदे देवताया परिवसन्ति जहासणुकं मारि । प्राणतनामैइहां इन्द्राजा वसैहे जिम सनत्कुमार । नवरं चउरहं विमाणा  
वाससयाणं वीसाएसामाणिय साहस्सीणं असीइ आयरक्ख देवसाहस्सीणं अणसिंखेवहणं जाव विहरन्ति । एतलोविग्गेप चारसै विमानिकरी वीसहजा  
र सामानिक देवतायेकरो ८० हजार आल्लरक्केकरी अनैरा वणां देवतायावत्तु विचरे । कहिणं जन्ते अरणञ्जुयाणं देवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पं० ।

२ णं ठाणा पणत्ता । कहिणं जते ! अरणञ्चुया देवा परिवसंति ? गीथमा ! अणयपाणयानं कप्पाणं  
उप्पिं सपक्खिं सपक्खिदिसिं एत्थणं अरणञ्चुयानाम दुवे कप्पा पणत्ता । पाईणं पफ्फाणायगा उदीणदाहिणवि  
च्छिन्ना अण्णचंदसंठाणसंठिया अच्चिमालीनासरासिवन्नात्ता अणसखिज्जाणु जोयणकोफ्फाकोफ्फाणु अयामवि  
रक्कनेण अणसखेज्जाणु जोयणकोफ्फाकोफ्फाणु परिस्सकेवेणं सव्वरयणामया अच्चा सरहा लठा घठा मठा नी  
रया निम्मला णिप्पंका निक्कंकरक्काया सप्यत्ता ससिरीया सउज्जीया पासईया दरसणिज्जा अच्चिरूवा  
पफ्फिरूवा एत्थणं अरणञ्चुयाणं देवाणं तिन्नि विमाणावाससया हवंतीति मस्कायं, तेणं विमाणा सव्वरय

किहो हंभगवन् अरण अच्युतदेवताना पयोस्ता अपयोस्ता । कहिणं भते अरणअच्युतदेवा परिवसति । किहो हंभगवन् अरणअच्युत दे  
वता वसेत्ते । गोयमा अणयपाणयानं कप्पाण उप्पिंसपक्खिं सपक्खिदिसिं उप्पत्ता । हं गीतम आनतपाणत ऊपर सपय चौक्करादिये । एत्थणं अरणअ  
च्युतानां दुवे कप्पा । इहां अरण अच्युत दायकत्थ कक्षा । पाईणपडोणाःया उदोणदाहिणं विच्छिन्ना अण्णचंदसंठाणसंठिया अच्चिमाली भासिरासि व  
साभा । पूर्व पायिमे लांबा उसरदच्चिणे पिहूला अण्णचंदेन सस्थितमस्थान किरणनीमालाये संभित देदोप्यमानवर्ण । अणसखिज्जायां जोयण कोडाको  
डोयां आयामविकळभेण । असंख्यातायां जन्ननो कोडाकोडो लांबा पिहूलात्ते । अणसखिज्जायां जोयणकोडाकोडो परिक्खेवेणं पं० सव्वरयणामया । असं  
ख्यातायां जन्ननो कोडाकोडो प्रमाण परिधिके सर्वरत्नमय । अत्यासगहा लहावड्डा मड्डा नीरया निम्मला नि पक्का निक्कंकरक्काया । आच्छा हविकरी ध  
रात्ते मसत्थात्ते रजरजित निर्मल निकप कचरादिकेरहित । सूपभा सक्कारिया मउज्जीया पासईया दरसणिज्जा अभिरुवा पण्डिक्का । प्रभासांडित  
सद्योक्क सयातसंहित प्रसन्नकारी देखवायोय्य अभिरुप प्रतिकप । एत्थण अरणअच्युत देवाणे तिग्गि विमाणावाससया हवत्तिमित्तमसत्थाय । इहां आ  
रण अच्युतनामं देवताना तीनसंविमान केवल्लोये कक्षा । तेणं विमाणासव्वरयणामया । तं विमान सर्वरत्नमय । अत्यासगहा घड्डा मड्डा नीरया निम्मला



गामया अच्छा सहा लठा घठा मठा नीरया निम्लठा निप्यंका निष्कांक्रच्छाया सप्पन्ना ससिरीया सउ  
 जीया पासादीया दरसणिज्जा अचिरुवा तेषिणं त्रिमाणं वज्जमज्जदिसन्नाए पंच वरुंसवा पयत्ता, तं०—  
 अंक्रवन्सए फलिहवन्सए रयणवन्सए जाव रुववन्सए मज्जे जल्य अच्युवन्सए, तेषं वरुंसया सव्वरय  
 णामया जाव पफिरुवा, एत्थणं अरणञ्चुयाणं देवाणं पज्जतापज्जत्ताणं ठाणा पयत्ता। तिसुवि लीगस्स  
 असंखेज्जइत्तागे तत्थणं बहवे अरणञ्चुया देवा जाव विहरति, अच्युए तल्य देविदे देवराया परिवसइ।  
 जहा पाणए जाव विहरति नवरं तिण्हं विमाणावाससयाणं दूसण्ह सामाणियसाहस्सीणं चत्तालीसाए

जाव पडिक्का। निर्मनसूनिमल यावत् प्रतिरूप। एत्थणं आरण्यञ्चुयाणय देवाणं तिण्हविमाणावाससया इवतित्तमसत्ताय। इहां आरण्य अच्युतदेव  
 ताना तौनसेविमान कवल्लोये कल्ला। तेषिणं करपाणं वरुंसवा पंचवडिमगा पं० तं०। तिहां सूच्यापहले नीपना विमानने घणे मध्यविचल्ले पचवत्तंय  
 कविमान कहेछे। अंक्रवन्सए फलिहवन्सए रयणवन्सए जाव रुववन्सए मज्जे इत्य अच्युवन्सए। अंक्रवत्तंयक स्फुटकवन्सए रत्तवन्सए जातिरूपवन्सए विचै इहां अच्युतव  
 तयक। ते वडिवा सव्वरयणामया जाव पडिक्का। ते वत्तगक मर्व रत्तमय यावत् प्रतिरूप। एत्थणं आरण्यञ्चुयाणं देवाणं पज्जत्ता २ णं ठां० प०।  
 इहां आरण्य अच्युतदेवतारा पयत्ता अपर्याप्तिरा ठामकक्षा। तिसुविस्त्रीयस्स अमंविज्जइभागे। तौन वोल्लोक्कने पसंख्यातेभागे इवै। तत्थणं वडि  
 आरण्यञ्चुयाणदेवा परिवसति जाव विहरति। तिहां घणां आरण्य अच्युतदेवता यमैके यावत् विचरै। यच्चए इत्य देविदेवरायाणो परिवसंति।  
 अच्युतनामै इहां देवद्रे देवराजापणे वसैछे। जहा आणए जाव विहरति। जिमं आमतनीपरे यावत् विचरै। नवरं तिण्हविमाणावाससयाणं दूसण्ह  
 सामाणियसाहकाणं चत्तालीसाए आयरसुखदेवसाहकाणं आहवेषं कुब्बमाणं जाव विहरति। एतल्लोविशेष तौमसैविमान कल्ला टगहजार नामानि  
 कदं वता ४० इज्जार आत्तरथक देवकरो भांधिपतिपणे यावत् विचरै—वत्तौसुहावीया वारसयववरसयसइक्काय पण्णावत्तालीसा क्ववसइक्कासहरमा

आयरस्कदेवसाहस्सीणं अहेवञ्चं जाव कुव्वेमाणे विहरति, वतीसञ्चुठवीसा वारसञ्चुठचउरीसयसहस्सा  
पन्नाचत्तालीसा ठच्चसहस्सासहस्सरि ॥ १ ॥ अणायपाणयकप्पे चत्तारिसंयारणञ्चुएतिणि । सत्तविमाणस  
साइ चउसुविएएसुकप्पेसु ॥ २ ॥ सामाणियसंगहणीगाहा—चउरासीइअसीति वावत्तरिसत्तरीयसठीए ।  
पन्नाचत्तालीसा तीसावीसादसहस्सा ॥ ३ ॥ एएचव अयस्का चउगुणा कहिणं नंत ! हिठिमगेविज्ज  
गदेवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पणत्ता ? कहिणं नंत ! हेठिमगेविज्जगा देवा परिवसंति ? गोयमा ! अण  
रणञ्चुयाणं कप्पाणं उप्पिं जाव उहं दूरं उप्पइत्ता एत्थणं हेठिमगेविज्जगाणं देवाणं ततो गेवेज्जविमाणा

॥ १ ॥ सोधमं ३२ इगाने २८ संतरकुमारि १२ माहेद्व ८ तत्तदे ४ गतसहय सांतके ५० सहय गृके ४० हजार सहयारि ६ ॥ १ ॥ आणयपाणयकप्पे  
वत्तारिसवारणाचुएतिणं सत्तविमाणसयाइं चउसुविएएसुकप्पेसु । आनत प्राणत कल्प ४०० आरण अर्युते पड्डिनीविके १११ दि० विके १०७ ट० वि  
के १०० पंचानुरे ५ एवं सर्वं ३२३ इवे ॥ २ ॥ सामाणियाणगाहा । दिवे सामानिकदेवता संघयननी गाथायेइ — चलभोतिअभीदवावत्तरि सत्तारिसठी  
यपणवत्ताला तीसावीसादसहस्सा एएसिंआयरस्कचउगुणिया ३ । चीरामोसहयसौधमं इगाने ८० सहय सनत्कुमारि ७२ सहय माहेद्वे ७० सहय द  
आद्वे ६० सहय सांतके ५० सहय गृके ४० सहय सङ्गार २० सहय आनतमाणते २० सहय आरणअर्युते १० सहय रणारा ए आत्तरचकदेवता जा  
णवा । कहिणंभते हिठिमगेविज्जगाणं देवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा प० । किंहा हेभगवन् हेठला गेवेयकना पर्याणा अपर्याणाना ठामकक्षा । कहिणं  
भते हेठिमगेविज्जगा देवा परिवसंति । किंहा हेभगवन् हेठला गेवेयकदेवता यसैके । गोयमा आरणअश्याणं कप्पाणं उप्पिं जाव उहं उप्पइत्ता । हे  
गीतम आरण अर्युत कल्पयौ कवाजाइजे ऊपरि यावत् । एत्थणं हिठिमगेविज्जगाणं देवाणं तत्रोगेविज्जगंविमाण पण्डा प० । इहां हेठला गेवेयक  
ना देवता यसैके विणं गेवेयकना प्रतर कक्षा । पार्थणपड्डोणाययाउदोणदाइणंविस्सिका पड्डिणुणचद सठाणसंठिया । पूर्वपड्डिमे लोवा उत्तरदच्चिण

पत्यक्षा पन्नत्ता पाईणपईणायगा उदीणदाहिणविच्छिन्ना पन्निपुत्तचंदसंठाणसंठिया अच्चिमालीनासरसि  
वन्नन्ना सेसं जहा वंनलीगे जाव पन्निरूवा, तत्थणं हेठिमगेविज्जगाणं देवाणं एक्कारसुत्तरे विमाणावासा  
सए हवंतीति मस्कायं तणं विमाणा सव्वरयणामया जाव पन्निरूवा, एत्थणं हेठिमगेविज्जगाणं देवाणं  
पज्जत्ताणं २ ठाणा पसत्ता । तिसुवि लोगस्स अणसंखेज्जइत्तागे तत्थणं बहवे हेठिमगेविज्जगा देवा परि  
वसंति सव्वे सममहिद्दीया सव्वे समज्जुतीया सव्वे समजसा सव्वे समवला सव्वे समाणुत्तावा महासोस्का अणु

पिडुत्ता पूर्णचंद्र संस्थाने संस्थिते । अच्चिमाली भासिरासि वस्त्राभा सेसं जहा वंनलीए जाव पन्निरूवा । किरणनौत्रेणीकरी आभासहित जिन वृत्तलीक  
तिमं यावत् प्रतिरूप । तत्थणं हेठिमगेविज्जगाणं देवाण इक्कारसुत्तरविमाणावासासए हवति तिमस्कायं । तिहां हेठली गुं वेयकनादेवता एकसोऽग्यारह  
विमाननौसंस्थाकं हो तीयेकरे । तेणं विमाणा सव्वरयणामया जाव पन्निरूवा । ते विमान रत्नमय यावत् प्रतिरूप । तत्थणं हेठिमगेविज्जगाणं देवाण प  
ज्जत्ता २ णं ठाणा पं० । तिहां हेठला गुं वेयकदेवताना पर्याप्ता अपर्याप्ताता ठामकक्षा । तिसुविलोगस्स असंखिल्लइभागे । तीन वोललीकने असंख्या  
तेमभागे हवे । तत्थणं वहवे हेठिमगेविज्जगा देवा परिवसंति । तिहां घणं हेठलागुं वेयकनादेवता वसेत्ते । सव्वेसमहड्डिवा सव्वे समज्जया सव्वे सम  
ज्जमा सव्वेसमज्जला सव्वेसमाणुभावा । सर्व महर्षिक समस्तदि समयुतिकरी सर्वसरोखे यगे वल्लेसरोखा सर्वसरोखेभावे । महासक्खा अणेदा अपेसा  
अपुरादिद्या । महासखी इंद्र केहनेन हो केहने दासनयो पुरोहितनयो । अहमेदानाम तहवगणा पं० । सबला इद्रनीपरे रह्थे ते देवगण कक्षा । सम  
णाउसा । यही समणो आयुपावत्तो । कहिणंभंते मज्झिमगेवज्जगदेवाणया परिवसंति । किहां हेभगयन् मज्झमगुं वेयकनादेवता वसेत्ते । गोयमा हिंदु  
मगेविज्जगाणं लरिप सपक्खि सपडिदिस् जाव सपत्ता । हेगौतम हेठला गुं वेयकथौ केपर जंवा फेर यावत् जाइये । एत्थणं मज्झिमगेविज्जगदेवाणं त  
थो पज्जत्ता २ णं ठाणा पं० । तिहां मज्झम गुं वेयकदेवताना पर्याप्ता अपर्याप्ताता ठामकक्षा । कहिणंभंते मज्झिमगेविज्जगादेवा परिवसंति । किहां

णिंदा अपेस्साञ्चपुरोहिता अहमिंदा नामं ते देवगणा पश्यन्ता । समणाउसो ! कहिणं ज्ञते ! मज्झिमगाणं गेविज्जगदेवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पश्यन्ता । कहिणं ज्ञते ! मज्झिमगेविज्जगदेवा परिवसन्ति ? गोयमा ! हेठिमगेविज्जगाणं उप्पिं सपक्खिं सपक्खिदिस्सिं जाव उप्पडत्ता एत्थणं मज्झिमगेविज्जगदेवाणं ततो गेविज्जगदेवाणपत्थन्ना पश्यन्ता पाईणपणीणयता जहा हेठिमगेविज्जगाणं नवरं सत्तुत्तरे विमाणावाससए हवं तीति मस्काए, तेणं विमाणा जाव पक्खिन्ना एत्थणं मज्झिमगेविज्जगाणं देवाणं जाव तिसुवि लोगस्स अस्स खेज्जइत्तागे तत्थणं वहवे मज्झिमगेविज्जगा देवा परिवसन्ति जाव अहमिंदा नामं देवगणा पश्यन्ता । समणाउसो ! कहिणं ज्ञते ! उवरिमगेविज्जगा देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पश्यन्ता । कहिणं ज्ञते ! उवरिम

हमगवन् मध्यम गेव्यकना देवता वसैहे । गोयमा हिठिमगेविज्जगाणं उप्पिंसपक्खिं सपक्खिदिस्स जाव उप्पडत्ता । हेठिम हेठला गेव्यकयको ऊपर जंवा चौफेर यावत् जारजे । एत्थणं मज्झिमगेविज्जगदेवाणं तत्रागेविज्जविमाणपत्थन्ना पं० । तिहां मध्यमगेव्यकना देवता तीनगेव्यकना प्रतरहे । पाईण पाईणयया एवं जहा हिठिमगेविज्जगाणं नवरं सत्तुत्तरे विमाणावाससए हवतिस्सिक्खाय तेणं विमाणा जाव पडिक्खा । पूर्वपाईमे लोवा उत्त जिम हेठलागेव्यकनोपर एतलोविशेष एकसोसात विमान तीर्थकरे देवेकछो तेविमान यावत् प्रतिरूप । एत्थण मज्झिमगेविज्जगाणं जाव तिसुविलोग एवमखिलरभागे । इहां मध्यमगेव्यकना देवताकै यावत् तीन बोललाकने असंख्यातमेभागे हुव । तत्थणं वहवे मज्झिमगेविज्जगदेवा परिवसन्ति । तिहां वणां मध्यम गेव्यकना देवता वसैहे । जाव अहमिंदानामे तदेवगणा पं० । यावत् अहमिंदानामापदक कछा । समणाउसो ! अहोयमण चायुया यत्तो । कहिणंभते उवरिम गेविज्जगदेवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पं० । किहो हमगवन् ऊपरला गेव्यकना देवता पर्यापत्ताना ठामकछा । कहिणंभते उवरिमगेविज्जगादेवा परिवसन्ति । किहां हमगवन् ऊपरला गेव्यकना देवता वसैहे । गोयमा मज्झिमगेविज्जगाणं जाव उप्पडत्ता । हेठिम

किन्त्या पुनस्ते इत्याह अत्र मिद्वानाम ते देवगणा प्रज्ञसा २ हेअमण हेअपुअन् । सिट्ठसूत्रे सगाजीयणकोलीइत्यादि ॥ परिरयपरिमाण विष्णु भवगदहगुणोत्पादि ॥ करणवशा तस्य मानंतव्य सुगमत्वात् हेअसमासटोका या परिज्ञावनीया तत्र पंचघत्वारिणल्लनप्रमाणविक्रममनुयन्तेत्रपरि रयस्य एतावत्प्रमाणस्य सविस्तर प्रावितत्वात् तस्याद्य ईपत्तगग्नाराया पृथिव्या बहुमध्यदेशज्ञाने अष्टयोजनिकमायामविक्रान्त्याम अष्टयोजन

गेविज्जगा देवा परिवसति १ गोयमा ! मज्झिमगेवेज्जगदेवाण उपि जाव उप्पइत्ता तस्यण उवरिमगेवेज्ज गाण देवाण तनु गेविज्जगविमाणपत्थहा । पाईणपत्तीणानु सेस जहा हेठिमगेविज्जगाण नवर एगे विमाणवाससए अवतीति मस्काए, सेस तहेव ज्ञाणियह जाव अहमिदा नामं ते देवगणा पस्सत्ता समणाउसो ! एक्कारसुत्तरहे ठिमएसुसत्तुत्तरचमज्झिमए । सयमेगउवरिमए पचेवअणुत्तरविमाणा ॥ १ ॥ कहिण नते ! अणुत्तरोववाडयाण देवाण पज्जत्ता २ णं ठाणा पस्सत्ता २ कहिण नते ! अणुत्तरोववाड्यया

म मध्यमगुर्वेवकथो जचा यावत् जचा । एत्थण उवरिमगेविज्जगाण देवाण तथोगेविज्जविमाणपत्थहा प० इहा अपरिलागुर्वेवकना देवताछे तीन विमानना प्रतरछे । आइण पत्तीणाइया सेस जहा हिठिमगेविज्जगाण । पूर्वपश्चिम लावा अथ सर्व जिम नीचलागुर्वेवकनीपर । नवर एगेविमाणवासासए हवतिस्मिस्खाय सेसत्तेव भाणि० जाव अहमिदानामे तदेवगणा प० । एतन्नाविशेष एकसौविमानछे तिथिकरे कश्चो अथ तिमडोज कहवो यावत् अहमिद नामदेवता समूहकक्षा । सनणाउसोगाहा भोजमणा प्रायुपावत्तो गाथा । इक्कारसत्तरहि इममसत्तत्तरचमज्झिमए । सयमेगउवरिमए पचेवअणुत्तरविमाणा ॥ १ ॥ हेठलागुर्वेवकनेविषे एकसौःग्यारहविमान मध्यमगुर्वेवक पाचविमान अनुत्तरविमाने । कडिणभते अणुत्तरोववाड्यदेवा परिवसति । किहा हेमगवन् अनुत्तरवासो देयता वसेछे । गोयमा इमौसे रयणपुपुभाएपुटवौण बहुसुमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ । हेगौतम ए वटनप्रभा पृथिवीथो घणो समोरमणीक भूमसायधक्को । उट्टकुदिम सूरिय गहगणक्खत्ततारारूपाण । जचा मयं चंद्र गृहगण नल्लन तारारूपथो । बहुइकोन्नयस ।

देवा परिवसति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्यन्ताए पुठवीए वज्रसमरमणिज्जानु भूमिनागानु उहु चटिमसू  
रियगहगणनस्कत्ततारारूवाण वल्लइ जोयणसयाह वल्लइ जोयणसहस्साइ वल्लइ जोयणसयसहस्साइ वज्ज  
गानु जोयणकोफीनु वज्जगानु जोयणकोफीनीनु उहु दूर उप्पइत्ता सोहम्मीसाणसणकुमारमार्माहिदवन्न  
लोगलतगसुक्कसहस्सारय्णायपाणयय्णारणय्णय्णकप्पा तिखियय्णठारसुत्तरे गेविज्जविमाणावाससए विती  
वड्ढा तेण पर दूर गता णीरया निम्मला वितीमिरा विमुत्ता पचदिसि पच य्णुत्तरा महतिमहालया महा  
विमाणा पसत्ता, तजहा—विजये वेजयते जयते य्परजिए सत्तसिद्धे । तेण विमाणा सत्तरयणामया  
य्च्छा सरहा घठा मठा णीरया निम्मला निप्पका निक्ककळ्ळाया सप्पन्ना सिसिरीया सउज्जोया पासा

याइ वड्ढे जावणसयसहस्साइ बह्मीभा जोयणकोढोशो बहुगोशो जायणकोढाकाढोशो । घणां याजनना सैकढा घणां याजनना सहय घणा या  
जननीक ढो घणांयाजननी कोढाकाढो । घट्ट जाय वणइत्ता । कचा जाइजे । सोहम्मीसाणसणकुमार माहद वभनीग लांतग सकसहस्सार आणय  
पाणय थारण य्णय कप्पा । सौधर्म इमान सनत्कुमार माहद वल्ल लांतक युक्त सहयार आणत प्राणत थारण य्णयुत । तिखिय य्णठारसुत्तरे गेविज्जवि  
माणावाससए वीइवत्ता । जपर तीनसे अठ्ठारह गेवयकताविमान मूकीने जचाजानजे । तेण परदूर गया नौरयावि तिमिरा विमुत्ता । तिहायकी  
दूरगया रजरहित अवाररहित गइ । पचदिसि पच य्णुत्तरा मठइमहालया महाविमाणा प० त० । पाचेदिश पच य्णुत्तर वट्ठढा मोटाथोमोटा  
विमान कक्षा ते कइछे—विजए वजयते जयते य्परजिए सत्तसिद्धे । विजय वेजयत जयत य्परजित सर्वार्थसिद्ध ५ । तेण विमाणा सत्तरयणाम  
या । ते पाचविमान सर्व रत्तनयक्के । अत्था सरहा लड्ड घड्डा मड्डा नौरया निम्माना निरपका निक्ककळ्ळाया । आछा सूख्ख इल्लनोपना ह्वायवया म  
मया रजविता तिमिल कचरेरहित । सप्पभा सत्तिरीया सउज्जोया पासाइथा दरसणिज्जा अभिरूपा पडिरूवा । प्रमासाइत सत्थाक लयातसहित प्रस

प्रमाण क्षेत्र चाष्टी योजनानि बाहुल्येन बोधत्वेनो वैस्त्वेनेति ज्ञाव मन्त्रसा तदनन्तरं सर्गसु दिक्षु विदितु च मात्रया स्तोत्रया २ प्रदेशप्रदान्या

दीया दरिसणिज्जा अन्निरुवा पक्रिन्वा एत्यण अणुत्तरोववाइयाणं देवाण पज्जात्तापज्जात्ताणं ठाणा प० ।  
 तिसुवि लीगस्स असखेज्जइजागे तत्थणं वहवे अणुत्तरोववाइया देवा परिवसति सहे समसहट्ठिया सहे  
 समवला सहे समाणन्नावा महासोस्का अणिदा अप्पेस्सा अणुरोहिया अहमिदा ते देवगणा पस्सत्ता । स  
 मणाउसो ! कहिण नत्ते ! सिद्धाण ठाणा पस्सत्ता । कहिण नत्ते ! सिद्धा परिवसति ? गोयमा ! मत्थस्स  
 महाविमाणस्स उवरिस्सालं थून्नियग्गालं दुवालजोयणे उहु अन्नाहाए एत्यण इसीपप्पारा नाम पुढवी प०,  
 पणयालीस जोयणसयसहस्साइ अणायामविरुक्केण एगजोयणकोलीउवायालीस च सयसहस्साइ तीसं सह

त्रकारो दुखवायोग्य अभिरूप प्रतिरूप । एत्यण अणुत्तरोववाइयाण देवाण पज्जात्ता २ ठा० प० । इहा अणुत्तरमासीदेवता पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठाम  
 कक्षा । तिसुविलोयस्स अर्धच्छिन्नाभागे । तीने बोल्लोक्केने अस्य्यातमेभागे । तत्थण वहवे अणुत्तरोववाइया देवा परिवसति । तिहा चणा अणुत्तरवा  
 सोदेवता वसैह । सये समइहण्डिया मत्तेसमवला सयेसमहाणुभावा मझामुक्खा । सर्व महहिक्क सये समवला सर्व महानुभाव मझासुक्खी । अणेदा  
 अपेसा अपरोहिया अहमेदानाम देवगणा प० । इन्द्रनवी प्रेषानवी पुरोहितनवी सर्व अहमिद्वनामे देवकक्षा । समणाउसो ! भायमण आयुषावन्तो ।  
 कहिणभते ठाणा प० । किहा हेभगवन् सिद्धना स्थानक कक्षा । कहिणभते सिद्धा परिवसति । किहा हेभगवन् सिद्ध वसैह । गोयमा सयसहस्सविमाण  
 स्स उवरिस्सालं थून्नियगाभा दुवालस जोयण उच्छट्ठ अर्धाहाए । हेगौतम सर्वधम्मिह महाविमान कपरलो धूमिकायको १२ योजनप्रमाण ज्वो चान्ना  
 भाये । इत्यण इसौपधारानाम पुढवी प० । तिहा मनुष्यनी अपेक्षये मविस्सरभाव माटे इपप्राभापरिधिवी कहो । पणयालीस जोयणसयसहस्साइ या  
 यामविस्समेण । ४५ लाख्योजन लावपणे पिडुलपणे, हिते परिधि कहै - एग जोयणकोली वायालीसचयसहस्साइ । एककोली योजन ४२ लाखे

परिहीयमाना सर्वेषु चरमातेषु मस्तिष्कापत्रतो ऽप्य तितन्वी अगुनासख्येयनाग बाह्व्येन प्रप्राप्ता स्थापना ईसिद्धेति पदैकदेशे पदसमुदायोपचारात् ईषरमाग्नारा इति वा तत्कृतिवा तन्वीवा ओपपृथिव्येयना अतितनुत्वात् तनुतगुतिवाडिति ॥ तनुभ्योपि अगतप्रसिद्धेभ्य स्तन्वी मस्तिष्कापत्रतोपि पर्यंतप्रदेशेति तनुत्वात् तनुतन्वी सिद्धिरिति वा सिद्धेयस्य प्रत्यासन्नत्वात् सिद्धालय इति वा इति सिद्धेयस्य प्रत्यासन्नतयोपचारात् सिद्धानामा लय सिद्धालय एव मुक्ति रिति वा मुक्तालय इति चेत्यपि परित्रावनीय तथालोकाग्रयंतमानत्वात् लोकाग्रमिति लोकाग्रस्य स्तूपि

स्ताइ दोन्ति य अउणापन्ने जोयणसए किचिविमसाहिए परिस्केत्रेण पणत्ता । इसीपन्नाराएण पुढवीए वज्जमज्जदेसनाए अउजोयणिए खेत्ते अउजोयणाड बाह्व्येण पन्नेत्ते , ततो अणतर चण माताए २ पए सपरिहाणी २ परिहायमाणी २ सवेसु चरिमंतसु मच्छियपत्तातो तणुयरी अगुलस्स ससेज्जज्जागे बाह्व्येण पणत्ता , इसीपन्नाराएण पुढवीए दुवालसनामधंज्जा पणत्ता इसीपन्नाराइवा तणुतिवा तणु

योजन । दोणियओणा पणजोयणसएहि किचिविसेसाहिए परिस्खिवेण प० । दोहजारयोजननेविधैदगुणपचास योजन काईकविशेषाधिक परिधि क हिये । इसिपन्नाराएण पुढवीए वज्जमज्जदेसमाए अउजोयणिणखेत्ते अउजोयणाड बाह्व्येण प० । इम चैवसमासनो टीकाधो सर्वे विस्तर जाणवो ईपत्ता गारा पृथिवीनो पर्थो मध्यदेशभागे ऽ योजन बाह्व्य कचापणे एतलो कहिवो । तथाणतरचण मायाए सपरिहाणीए परिहाय माणी २ । तिवारपच्छो सवलीदिगि विदिगिमात्राये २ प्रदेशे परिहरिमान वटत २ थकी । मउवेसु चरिमते समस्खियपत्ताउतणवरो अगुलस्य असवि ज्जभागे बाह्व्येण प० । सवलानि केह्वे माखीनो पाखुही पिण पातलो अगुलनो अमआतमेभागी मात्राये बाह्व्यपणे कही । ईमिपुभाराण पुढवी ऽ दुवालनामधंज्जा प० त० । ईपत्रागभारा पृथिवीना १२ नामकक्षा तैकहेक्के । इमिणभाराण ताणइवा सिद्धइवा मिहानएत्तिवा मत्तोइवा मुत्तालण तिवा लोयणेत्तिवा लोयगाथुभिणइवा लोयगपडिवज्जाणाइवा । एकदिगि पातली तेमाटे ईपत्रागभार मोटोपणेत्ते तेमाटे वैसो पातलोत्ते पातलोस पा



केव लोकाग्रस्तूपिका तथा लोकाग्रेण प्रत्युह्यते इति लोकाग्रप्रतिवादिनी सव्यमाणन्यूजीवसत्सुहावहा इति ॥ प्राणा द्वित्रिचतुरिन्द्रिया इति श्रूता स्ररक्षो जीवा पञ्चेन्द्रिया ज्ञाया प्राणिन सत्वा उक्तञ्च प्राणाद्वित्रिचतु प्रोक्ता श्रूता अ तरव स्मृता । जीवा पञ्चेन्द्रिया ज्ञेयाः शेषा सत्वा उ दीरिता ॥ १ ॥ सर्वेषा प्राणभूतजीवसत्त्वाना सुसावहा उपद्रवकारित्वाज्ञाया त्सवप्राणश्रूतजीवसत्त्वसुसावहा सा च इपत्प्राग्भारा पृथिवी श्रूता श्रुतत्वमेवो पमया प्रकटयति सखदलविमलेत्यादि शङ्खदलस्य शङ्खदलचूर्णस्य विमलोनिर्मल स्वस्तिक शङ्खदलविमलस्वस्तिक स च मृणाल च द करज अ तुषार च हिम च गोक्षीर च हार अ तेषा मित्र वर्णो यस्या स्या तथा उत्तानकमु त्तानीकृत यत् ख्य तस्य य त्सस्यान येन सस्थिता उत्तानक्यसस्यानसस्थितत्व च प्रागुपद्रवित्तस्यापनातोनाथनीय ॥ सव्यजुणसुवन्नमयी सर्वात्मनाद्येतसुवर्णमयी इसीपद्माराणमित्यादि इंपरप्राग्ज्ञा

तण्वरीतिवा सिद्धिर्तिवा सिद्धालएतिवा मुत्तीडवा मुत्तालएडवा लोयगोतिवा लोयगथून्रियातिवा लोय पक्रिबुज्जणाइवा सव्यपाणन्यूजीवसत्सुहावहा वडवा । इसीपद्माराण पुढवी सेता संखदलविमलसोच्छ्रिय मुखालदगरयतुसारगोखीरहारवन्ना उत्ताणयलत्तसठाणसठिया सव्यजुससुवस्यमई अक्का सरहा लरहा घछा मछा णीरया निम्मला निप्पका निक्ककरुक्काया सप्यन्ना ससिरीया सउज्जीया पासादीया दरसणिज्जा अ

तलो सिद्धान्तय सिद्धत्वात् मूलिकर्मणा मुक्तित्वात् मुत्तानयनोभावना ए ४ नाम गुणफलकै लोकेनेम्य लोकेनेयमिकानोपरे लोकाग ८ प्रतिवृत्त्वात् । सव्यपाण भूय लोव सत्त सहाइवा । सर्व प्राण भूत लोव सत्त्वेने तिहाजाय तेहने सुखदाई । इंसिप्यभाराण पठवो सेय सखदल विमलसोत्थिय मृणाल टगरय तसार गोखीरहारवन्ना । ० १२ नोनान इंपप्याम्मरप्यो कहवोके स्वततो प्रोपमा यद्धल जिंसो निमल स्वस्तिक मृणाल कमलपत्र जलपरे जल नौरज स्वतगोच मोतीनाहार कज्जलो जेहवो दूधसन । उत्ताणयलत्तसठाणसठिया सव्यजुण सुवर्णमई अ । उत्तान क्वत्तेने सस्याने सस्थितके सर्व अ जूने स्वेन स्वर्णमय । अत्ता सयहा लड वड्डा मछा नारया निम्मला निप्पका निक्ककरुक्काया । आळा मूखपुद्गल निप्पत्र घटारा मठारा नौरज निमल

राया पृथिव्या ऊर्ध्वं सीयाए इति नि श्रेणिगत्या योजने लोकातो ज्ञवति तस्य च योजनस्य य दुपरितन गध्युत धतुयं तस्य गव्यतस्य य सर्वो परितनो य द्वागो ऽवमितिवाक्यालकारे सिद्धान्तवत सादिका कर्मक्षयानतर सिद्धत्वावात् एतेन अनादिवुदुरुपप्रधादप्रति पक्षे आवेदितो द्रष्टव्य अपयवसिता रागाद्यन्नावेन प्रतिपातासन्नवात् रागादयो हि सिद्धत्वा द्यावयितु प्रवविम्बवो न च ते जगवता सति तेषा निर्मलकापक पितृत्वात् न च निर्मूलकापकपिता अपि नूय प्रादु भवति बीजानावादिति तथा नैकै जीतिजरामरणजन्मजरामृत्युजि र्यथ तासु योनिषु ससार ससरण तेन च य कलकलोभाध कदयमानता य य दित्यसुखमनुप्राप्ताना मपि पुनर्भव ससारे गर्भवसति प्रपञ्च तो समतिक्राता अत एव शा

निरुवा पठिरुवा इसीपञ्चाराण सीताएजोयणमिलीगतीतस्सण जोयणस्स जेसे उवरिह्वे गाऊए तस्सण गाउयस्स जेसे उवरिह्वे तप्पणे एत्यण सिद्धा जगवतो सादिया अप्पज्जवसिया अप्पणेगजातिजरामरणजो निससारकलकलीज्जावपुणप्पवगप्पवासवसही एवच समइक्कता सासयमणागयद्ध काल चिठ्ठति, तत्थवियंतं

नि पद्ध निर्वककटछाया । सण्णभा सक्खिरिया सल्लोया पासाईया दरसण्णिज्जा अभिरुवा पठिरुवा इं सियभाराण मायाए । प्रभासहित सञ्चीक यो भायमान द्योतसहित मनप्रसन्नकारी देखवायांग्य अभिरुप इं पत्थाग्भारनी माचा । जोयणम्मिजोयतो तस्सण जोयणस्स जेसे उवरिह्वेगाउण तस्सण गाउयस्स जेसे उवरिह्वे क्खभागे । योजने लोकाते ते योजने जते जपरिलोगाज क्खनो ते गाऊनो जे जपरिलोगाऊनो क्खभागा । एत्यण सि द्दाभयवतो साईया अप्पज्जवसिया । तिहा सिद्ध भगवगत सोधाकर्मचये अनादिपरुपे दोठा क्ख्हा अपयवसित रागादिजन अभाव पाक्को जपजवो । अप्पणेगजादजरामरण जोपिससार कलकलीभाव पुण्णन्न गम्भवाससही । अनेकजाति जरामरणानि ससार तेहनो कलकली कदर्थभाव मूको दिव्यसख पाय्या पुनर्भवससारे गर्भनो वसति प्रपचेकरीनेवसे । एवच समयके तासासयमणागयद्धकाल चिठ्ठति । इम समय तिका ते तेणे दुखआकम्पनयो एतले गालत अनागतकालपरयत रक्षाकै तिहाथो तेठामनो चयनथो । तत्थवियंतं अवेया अवयानानिमल्ला । तिहा सिद्धेच पट्टाकै भगवगत ते वेदरहित

युतम नागत काल तिष्ठति ॥ तत्प्रविपते श्रवेया इत्यादि ॥ तत्रापि च सिद्धमेव गता संत स्ते प्रगवतो ऽवेदा पुरुषयेदादिदेवरहिता श्रवेदना सा तासातावेदनात्रावात्, निर्ममाममत्वराहिता श्रसगा बाह्याभ्यन्तरसङ्गरहिता, कस्मादेवमतश्चाह-ससारविप्रमुक्ता हेतो प्रथमा यत ससारादि प्रमुक्ता स्तस्मादेवेदा श्रवेदना निर्ममा श्रसगाश्च, पुन कथंभूता इत्याह-पद्मनिवत्संस्थाना अत्र शिष्य पृच्छन्नाह-कहिपदिहयासिद्धा इत्यादि ॥ कहि इत्यत्र पि सर्वात्मना त्यक्तत्वात्, निर्वृत निष्पन्न संस्थान येपाते प्रदेशनिर्वृतसंस्थाना अत्र शिष्य पृच्छन्नाह-कहिपदिहयासिद्धा इत्यादि ॥ कहि इत्यत्र सप्तमी तृतीयायामा कृतत्वात् ॥ यथा तिसुतिसुश्रुतकियापुढवी इत्यादि ॥ ततोयमर्थ-केन प्रतिहता केन सूचलिता सिद्धा मुक्ता स्तथा क्व कस्मिन्

श्रवेदा श्रवेयणा निम्नमा श्रसगाय ससारविप्रमुक्ता पदेसनिवृत्तिसंस्थाणा । कहिपदिहयासिद्धा कहिसि  
द्धापडिष्ठिया । कहिवोदीचइत्ताण कत्यगतूणसिज्जइ ॥ १ ॥ अलोएपदिहयासिद्धा लोयगोयपडिष्ठिया ।  
इहवोदीचइत्ताण तत्यगतूणसिज्जइ ॥ २ ॥ दीहवाहस्सवा जवरिमन्नवेहविज्जासठाण । ततोतिन्नागहीणा  
सिद्धाणोगाहणांजाणिया ॥ ३ ॥ सठाणंतुइहं जवचयतस्सचरमसमयम्मि । आसीयपदेसघण तसंठाणतहिं

वेदनारहित ममताराहित । ससगाय ससारविप्रमुक्ता एएसनिवृत्तिसंस्थाणा २ । बाह्याभ्यन्तर सगरहित ससारथीमुक्ताणा आत्मप्रदेये बाह्यपुढल ५ यरो  
र संस्थान रहितकै । कहिपदिहयासिद्धा कहिसिद्धापयडिग्ग कहिवोदिहचइत्ताण कत्यगतूणसिज्जइ ॥ १ ॥ शिष्यपूछै किणे प्रतिहत केणे सकनितकै सिद्ध  
किद्धा सिद्धरत्ताकै किद्धा बोधयरोर मज्जीने किद्धा जार्दने सोभे —अलोएपदिहयासिद्धा लोयगोयपयडिग्ग इहिवोदिहचइत्ताण तत्यगतूणसिज्जइ ॥ २ ॥  
अनोक्ककरो खुत्ताकै धर्मास्ति कायादिकनो अभाव लोकागे रत्ताकै इहा मनय्पनोक्क यरोरत्ताडोने तिहा जार्दने सोभे —दीहवाहस्सवा जवरिममवे  
वविक्खसठाण ततोतिन्नागहीणा सिद्धाणोगाहणांजाणिया ॥ ३ ॥ दीव ५०० धनुप इत्थ एक्कहाय प्रमाणे जे केहलेमवे संस्थाने हुवे ते संस्थानयकी विभाग  
हीनपणे सिद्धनी श्रवणादना कही, दिवे सट देखाकै —जमठाणतुइहं भवचयतस्सचरमसमयम्मि असौयएणसघयण तसठाणतहितस्स ॥ ४ ॥ जे इहा म

स्थाने सिट्वा प्रतिष्ठिता अउस्थिता । तथा क्व कस्मिन् क्षेत्रे यौदि स्तनु शरीरमित्यनर्थान्तरं तां त्यक्त्वा क्व गत्या सिञ्चन्ति निष्ठितार्थो ज्ञवति । सिञ्चन्त्यत्रानुस्वारलोपो द्रष्टव्यः । अथप्येकत्रचनोपन्यासापि सूत्रशैल्या न विरोधजाक् तद्याचान्यत्राप्येव प्रयोगः - यस्ययधमलकार इत्युत्तरेषु सयथाश्रियः । अथदाजननुचति नसेवाइतिवृत्तर्ह इति । यव शिष्येण प्रश्नं कृते मूर्तिराह-अलोपपरिहारायसिद्धादित्यादि ॥ अत्रापि सप्तमी तृतीयाथं, लोकेन केवलाकाशास्तिकायकूपण प्रतिहता रसलिता सिट्वा इह तत्र यमोक्तिकायाद्यन्नावा तदानतर्थावृत्तिरेव प्रतिस्खलनं नतु स्वधपसति विधातोऽप्रतिषत्वात्, समतिष्ठानार्ति सयधंसति विधातो नान्यथाभिति । तथा लोकस्य पञ्चास्तिकायात्मकस्य अग्रं मूर्धेनि प्रतिष्ठिता अपुनरागत्या व्ययस्थिता इह मनुष्यनोके यौदि तनु त्यक्त्वा तत्र लोकाग्र समयान्तरप्रदशान्तरास्पर्शनेन गत्या सिञ्चन्ति निष्ठितार्थां नवन्ति, सम्प्रति तनगतानां यत्सुखानमानं तदर्धनिधित्सु राह-र्धाहस्मवाइत्यादि ॥ दीर्घं वा पञ्चपनु शतप्रमाणं इत्यत्र वा इहस्मद्वयप्रमाणं, वा शब्दात् मध्यमत्रा विधित्त य शरमन्त्रये पश्चिमन्त्रये जवेत् सुस्थानं तत् सत्समा चिन्नागर्हीना वदनोदरादिरध्रपूरणेन वृत्तीयनं ज्ञानेन हीना सिट्वा नामवगाहना अवगाहन्ते अस्मामित्यवगाहना स्वावस्थीयं नतिता तीर्थकरगणधर्हरिति, अत्र गतं सुस्थानं प्रमाणापेक्षया चिन्नागर्हीनं तत्र सुस्थानमिति ज्ञाव, एतदव स्पष्टतरमुपदर्शयति-जसटाणतु इह इत्यादि ॥ यत्सुस्थानं यावत्प्रमाणं सुस्थानं इह मनुष्यजन्तु आसीत् तदत्र, भवति प्राणिनः कमवशवृत्तिनोऽस्मिन्निति ज्ञव शरीरं त्यज्यत परित्यज्यत काथयोगं परिरज्जिहानस्यति भावः, धरमसमये सूक्ष्मक्रियाप्रतिपातिथ्यानवलनं वदनोदरादिरध्रपूरणाचिमागेन हीनं प्रदशयनमासीत् ॥ तदव च प्रदशयनं मूलप्रमाणापेक्षया चिन्नागर्हीनप्रमाणां सुस्थानं तत्र लोकाग्रे तस्य सि

तत्त्वं ॥ ४ ॥ तित्तिसयान्तस्तीसा धणुत्तिज्जागोयहोडनायहो । एमाखलुसिद्धाण उक्कोसोगाहणाज्जिण्या ॥ ५ ॥  
चत्तारिपरशणीनु रवणित्तिज्जागूणियायवोधत्ता । एसाखलुसिद्धाण मज्जिमोगाहणाज्जिण्या ॥ ६ ॥ एगाय

नयनवे भस्य नहुवे तमेभये कर्मेभये यरोरए उीने केवलमममे सूक्ष्मक्रियाध्यानं वदनादिरध्रपूरं कश्चित् घनत्रासीत् ह्येते प्रदश्य घनमूलं प्रमाणपेक्षावे

दस्य ना न्यदिति । साप्रतमुत्कृष्टावगाहनादिभेदभित्ताम जिधितसु राह-तिक्षिप्तयातिहीसाहत्यादि ॥ श्रीणिगतानि त्रयस्त्रिंशानि त्रयस्त्रिंशदधिकानि धनुस्त्रिभागश्च भवति योऽहं विदुष्य एषाखलु सिद्धाना मुत्कृष्टावगाहना ज्ञाणिता तीर्थकरगणधरे सा च पञ्चधनु शततनुकानाम वसेया, ननु मत्तदेवा नात्रिकुनकरपत्नी नात्रे च पञ्चविंशत्यधिकानि पचधनु शतानि शरीरप्रमाण पदेवच तस्य शरीरमान तदेव मरुदेवाया छापि, सचयण सठाण उच्च त चैव कुलगरेहिसममितवचनात्, मरुदेवाच जगवती सिद्धा तत स्तस्या दहमानस्य त्रिज्जाने पातिते सिद्धावस्याया सादुर्निनी श्रीणि धनु शता न्येवाजगाहना प्राप्नोति कथ मुक्तप्रमाणा उत्कृष्टावगाहना घटते १ इति नैपदाय मरुदेवाया नात्रे किंचिदूनप्रमाणात्वात्, स्त्रियोऽन्यतमसस्याना उत्तमस्यानेन्य पुरुषेन्य स्व २ कालापेक्षया किंचिदूनप्रमाणा भवन्ति ततो मरुदेवापि पचधनु शतप्रमाणेति न कश्चिदोप, अपिच हस्तिस्त्रय्या थिरूढा सकुचिताणी सिद्धा तत शरीरसंकोचनभावा लायिकावगाहनासन्न इत्यविरोध, आह च प्राप्यकृत्-कहमरुदेवामाण नात्रीतोत्राणिकिच

## होडर्यणी अठेवय्यगुलाइसाहियाईया । एसाखलुसिद्धाण जहन्नीगाहणाज्जाणिया ॥ ७ ॥ जुगाहणाएसिद्धा

त्रिभाग हीनरुस्थानहवे, हिवे ५०० धनुषपेक्षाये ३३३ धनुष ऊपर धनुषनो चीजोभाग सिद्धनो भवगाहना हवे-ति-मस्यतेत्तीसा धनुषतिभागोहो इनाज्जा एसाखलुसिद्धाण सकासांगाहणाभणिया ॥ ४ ॥ ५०० धनुषनो कायाये सिद्धहवे तेहनो ए निचै सिद्धनो उत्कृष्टप्रजगाहना कहो । चत्तारियरय पोषो रयणतिभागूणिवायनोभेवा एसाखलुसिद्धाण मज्झिमोगाहणाभणिया ॥ ७ ॥ हिवे ७ हाथनो भवगाहना हवे तेहनो सिद्ध यणि एतलो भवगाहना ४ हाथना वाजोभाग ऊणोहवे जहवो ७ हाथ देहहव ए निचै सिद्धनो मध्यमकहो भवगाहना — एगायहोदरयणो अठेवय्यगुलाइ साहिईया एसाखलु सिद्धाणजहणीगाहणाभणिया ॥ ८ ॥ हिवे साठेनोहाथनो देहीहवे तेहनो भवगाहना कहवे एक ऊपर हाथ आठगुणो कहवे साठा तोन ए ऊण हाथ देहीहवे ए निचै सिद्धनो जयन्यवगाहना भगवन्तिकहो-उगाहणाजसिद्धा भवत्तिभागणहुतिपरहोण सठाणमणेकथा जरासर पाविणमुहाण ॥ ९ ॥ जहन्नी भवगाहनाये सिद्धा तेहनो भवगाहनायको विभागवदनादरादि पूर्णकहिचे पूर्णकरो हीन हुये सस्थान भनकेकरो खुवे

दूणासा तोकिरपचसयसिय अहवासकोघतोसिद्धा ॥ चतारियरयणीउं इत्यादि ॥ चतस्रोत्तपो रत्विद्य त्रिजागोना च ॥ साद्योषद्याससाखुसिद्धाना  
मयगाहना प्रणिता मय्यमा आह-अपन्यपद स' तोच्छित्ताना मागमे सिद्धि रक्ता तत एषा जघन्या प्राप्नोति कथ मय्यमा तदयुक्त वस्तुतत्त्वाप  
रिज्ञानात्, जपन्यपदेदि सप्तहस्ताना सिद्धि ता तीर्थकरापक्षया सामान्यकवलाना तु हीनप्रमाणानामपि जवति इदमपि चावगाहनामान चित्य  
ते सामान्यसिद्धापेक्षया ततो न कश्चिदपि, एगायनीयइत्यादि ॥ एकारत्वि परिपूर्णा ग्रंथौ चागुलान्यधिकानि एषा जवति सिद्धा नामवगाहना  
जपन्या साध कूर्मापुत्रादीना द्विहस्तानामवसेया, यदिवा सप्तहस्तोच्छित्तानामपि यन्त्रपीलनादिना स्वतित्तशरीराणा मात्तव ज्ञाप्यकृत-जेठालेपच  
धनुसय मज्जायसत्तहस्यस ॥ देहर्तित्तजगहीणा जहन्निजाजविहस्यस ॥ १ ॥ सत्सिधसुसिद्धी जहन्ततोऽरुमिहविहस्यसु साकिरतित्यपरसु संसागसि  
क्कमाणाय ॥ २ ॥ तेषुण्होञ्जाविहस्य कुम्मापुत्तादयोजहन्नेण । अजसुयस्सिद्धयसत्त हस्यसिद्धस्सहीणत्ति ॥ ३ ॥ साप्रतमुक्कानुधादेनैव लक्षण सिद्धानाम  
निधित्तसुराह-उगाहणाइत्यादि ॥ सुगम, नवर-अन्नत्यत्यमिति ॥ इद प्रकारमापन्नमित्य इत्य तिष्ठतीति इत्यस्य न इत्थस्य अतित्यस्य वदना  
दिशुपिरप्रतिपूर्णेन पूर्वोकारान्ययात्वप्रावतो अनियताकारमितिज्ञाव, योपिच सिद्धादिगुणेषु, सिद्धेनदीहेनहस्सेइत्यादिना, दीघत्वादीना प्रति  
पच सोपि पूर्वोकारापेक्षया सस्यानस्यानितयस्यत्वा रप्रतिपत्तयो नपुन संवया सस्यानस्यान्नायत आहच ज्ञाप्यकृत-सुसिरपदिपूर्णाउ पुद्गामार  
नहावययतातो । सठाणमणितयत्थ जंजणियश्रणिययागार ॥ १ ॥ सत्तोच्चियपत्तिसेहो सिद्धाङ्गुणेषुदीहयाईण जमणितयत्थपुद्गा गाराविक्रयायना  
जावो ॥ नन्येतिसिद्धा परस्पर देशजेदेन व्यवस्थिता उमति नेति तद्द्रूम कस्मादितिचेत् ॥ जत्ययइत्यादि ॥ यत्रैव देशे च ज्ञाब्दस्य गवकाराय

नवत्तिन्नागेणहोइपरिहीणा । सठाणमणितयत्थ जजरामरणविष्यमुक्ताण ॥ ८ ॥ जत्ययगोसिद्धो तत्यञ्चुण

राटि प्रवेकगे जरामरण विप्रमृक्तपणेकरो सिद्धयाय—जत्ययगोसिद्धो तत्यञ्चणताभवक्खयविमुक्ता अणाणसमोगाढा पुद्गामव्वेविलोगते ॥ १० ॥ जिद्धा  
एक सिद्धे तिद्धा अनन्तासिद्ध भक्कययको मूकाणा निव्वस्वभावे करोरक्षाकै पिण किम भन्नोत्थ समवगाटपणे अचित्तपरिणाम भणो धर्म्मोद्धिकायनोप

त्यात्, एक सिद्धो निर्वृत्त स्तत्रानन्ताप्रवक्ष्यविमुक्ता अत्र प्रवक्ष्यग्रहणेन स्वेच्छया प्रवावतरणशक्तिमत्सिद्धयवच्छेदमाह-अन्योन्यसमवगाढा स्तथा विधाचिन्त्यपरिणामत्वा इमांस्त्रिकायादिवत्, तथा स्पृष्टा लभ्या सर्वेपि लोभाते फुसइत्यादिरुपशान्तनान् सिद्धान् सर्वप्रदेशे रालसवधिनि यमज्ञ सिद्ध तथा तेषां सिद्धा सबप्रदेशस्पृष्टस्यो ऽसत्यगुणा वसन्ते ये देशप्रदेशे स्पृष्टा कथमिति चे दुष्यते, इहैकस्य सिद्धस्य यदवगाढनक्षत्र तत्रैकस्मिन्नापि परिपूर्णं अवगाढा अन्यप्यनन्ता सिद्धा प्राप्यते अपरतु ये तस्य क्षेत्रस्य एकैक प्रदेशमाक्रम्यावगाढा स्तेपि प्रत्येकमनता एव द्वि त्रिचतु पञ्चादिप्रदेशवृत्त्या ये ऽवगाढा स्तेपि प्रत्येकमनता स्तथा तस्य मूलक्षेत्रस्य एकैक प्रदेश परित्यज्य ये ऽवगाढा स्तेपि प्रत्येकमनता एव च सति प्रदेशवृद्धिरानिभ्या ये समवगाढा स्ते परिपूर्णैकदेशावगाढेभ्यो ऽसत्येयगुणा प्रवन्ति अवगाढप्रदेशाना मसङ्ख्यातत्वात्, आहच-एगेखेत्तेणता पणसपरिवुन्नीहणितं ततो । इति असत्येज्जगुणा असत्यपरसोजमवगाढो ॥ सम्प्रति सिद्धानेव लक्षणत प्रतिपादयति-असरीरा इत्यादि ॥ अविद्यमानज्ञ

तानवश्यकयविमुक्ता । अन्योन्यसमोगाढा पृष्ठासखेत्रविलीयते ॥ ९ ॥ फुसडञ्चणतेसिद्धे सद्यपएसेहिनियमसो सिद्धा । तेषां सखेत्रजगुणा देसपदेसेहिजेपुष्ठा ॥ १० ॥ असरीराजीवघणा उवउत्ताडसणेयनाणेय । सागा

रे फरस्वाह्ये लोगतान्तकलमे करोने फरसे अनन्तासिद्ध सर्वप्रदेश ते आत्मासबधौ ते सिद्ध सर्वप्रदेश सार्थार्थकौ असख्यातगुणा ज प्रदश फरसा किम कहि य एक सिद्धनौ जे प्रवगाहनाचैव एक प्रतिपूर्ण अवगाढै अनन्तासिद्ध इवे बीजालेन एकैक प्रदेशअवगाढने प्रत्येके अनन्ता तथा —फुसग्रणतेसिद्धे सबव पणसहितियमसिद्धो तेषां सखेत्रजगुणां देसपणसेहिजेपुष्ठा ॥ ११ ॥ जिम विणचार प्रदगहदि जे अवगाहना ते प्रत्येके अनन्ता तथा मूलक्षेत्र एकैक प्रसिद्ध प्रदेश पतियागअवगाढ ते अनन्ता इमहै ३ । ४ प्रदगहीनने अनन्ताप्रदेश हविहान कहै गाथा—कहमकदेवामाणतो नामौतोकिविट्ठणमाणासा किरप चासयविय अहवामेकावतोसिद्धा ॥ १ ॥ मगदेवो ५२५ गरोरसिद्धो ३३३ एवेमयाट सकोचलात् प्रमाण बीदारिकगरोर पाच रहितजीव घणा बट नादिरग्ध पूरणादिक उपयागसहित दर्यनकरी ज्ञाने सामान्यविषय दर्यनविशेष ज्ञान साकारीपयोग अनाकारीपयोगसहित सुखसिद्धांमे हिने केवल

रीरा अशरीरा श्रीदारिकादिपञ्चविधशरीररहिता इत्यर्थे , जीवाश्च ते घनाश्च वदनोदरादिगुणपूरणात् जीवघना , उपयुक्तादर्शने केवलदर्शने  
ज्ञाने च केवलज्ञाने यद्यपि सिद्धत्वप्रादुर्भावंसमये केवलज्ञानमिति ज्ञान प्रधान तथापि सामान्यसिद्धलक्षणमेतदिति ज्ञापनार्थं मादौ सामान्यालम्बन  
दर्शनमुक्त , तथाच सामान्यविषय दर्शन विशेषविषय ज्ञानमिति , तत साकारानाकार सामान्यविशेषोपयोगरूपमित्यर्थ , सूत्रे भकारी लाक्षाणि  
को लज्ज तदन्यव्यावृत्तिस्वरूप मेतत् अन्तरीक्त तु शब्दो वक्ष्यमाणनिरुपमसुखविशेषणार्थ , सिद्धाना निष्ठितार्थाना मिति , सम्प्रति केवलज्ञा  
नदर्शनयो रशेषविषयता सुपदज्ञायति- केवललक्षणवत्ता इत्यादि ॥ केवलज्ञानेनोपयुक्ता नत्वन्त करणेन तदज्ञावादिति , केवलज्ञानोपयुक्ता ज्ञात्य  
यगच्छन्ति , सर्वज्ञावगुणज्ञावान् सर्वपदार्थगुणप्रयायान् प्रथमो ज्ञावशब्द , पदार्थवचनो द्वितीय पर्यायप्रवचन , गुणपर्याययो स्त्वय विशेष-सत्  
घटिनी गुणा ऋमवत्तिन प्रयाया इति , तथा पश्यति सर्वत सलु सलुशब्दस्या वधारणात् , सवतम्ब केवलदृष्टिनि रनतानि रनतै केवलद  
र्शने रित्यर्थ , केवलदर्शनाना धानतता सिद्धानामनतत्वात् , इहादौ ज्ञानग्रहण प्रथमतया तदुपयोगस्या सिद्धान्तोति ज्ञापनार्थ , सम्प्रति निरु  
पमसुखराज स्ते इति दर्शयति-नविशत्यित्यादि । नैवास्ति मनुष्याणा वक्रवर्त्यादीनामपि तत्सौख्य नैव सर्वदेवाना मनुत्तरपर्याप्तानामपि य

रमणागार लस्कणमेयतुसिन्धाण ॥ ११ ॥ केवललक्षणवत्ता जाणतीसर्वज्ञावगुणज्ञावे । पासतिसर्वज्ञलु  
केवलदिष्टीहिणताहि ॥ १२ ॥ नविश्यत्यिमाणुसाण तसोस्कनल्यिसर्वदेवाण । जसिन्धाणसुखं च्छावावाहउ

ज्ञान दर्शननाविषेय देखाहेके-असरीराजीवघना उवत्तादस्येयनाणेउ सागारमणागार लक्खणेमेउतुसिन्धाण ॥ ११ ॥ केवलज्ञानेसहित जाणवा सर्वगु  
णतापर्याय सहस्रवर्त्ती गुणकर्मवर्त्ती पर्याय तेहन देखै सकलखलुगुब्बस्य अवधारणार्थे केवलदीठो अनत केवलदर्शन अनन्तादर्शन सिद्धवर्त्ती इहा प्रथम  
ज्ञानगृहण उपयाग पिणसीभे इम जाणवो अर्थे निरुपम सुखभाजनकै ते देखाहेके केवल दीवानोअर्थे कल्लोनथी सूक्ष्म मनुष्यने चक्रवर्त्तीटिककै-केव  
लनाणुवत्ता जाणतीसर्वभावपासती सुखेणसर्वश्रोखलु केवलदिष्टीअणताहि ॥ १२ ॥ नविशत्यिमाणुसाण तसुक्खनविउसर्वदेवाण जेसिन्धाणसुखं च्छावावाहउ



रिसद्धानां सौख्यमज्यायाधामपगतानां न विविधा अन्नाया प्राप्ताया ता मपसामीप्येन गतानां प्राप्ताया यथा नास्ति तथा जग्योपदेशंयति-सुरगणसुहृदमित्यादि ॥ सुरगणसुखं देवसपातसुरसं समस्त संपूर्णं अतीतानागतवर्त्तमानकालोद्भवमित्यर्थः, पुन सर्वोद्भापिपिहितं सर्वकालसमयगुणितं तथा नतगुणमिति, तदेव प्रमाणं किलासकल्पनया सूक्तिकाकाशप्रदेशे स्थाप्यते, इत्येव सकलाकाशप्रदेशपूरणेन यद्याप्यनतं प्रवति तदनन्तरमप्यनतैर्वर्गैर्वर्गितम् तथाप्यप्रकर्षगतमपि मुक्तिसुखं सिद्धिसुखं न प्राप्नोति, अतदेव स्पष्टतरं जग्यतरं प्रतिपादयति-सिद्धस्सुहोरासी इत्यादि ॥ सुराणां राशिं सुखराशिं सुखसङ्घातं सिद्धस्य सुखराशिं सिद्धसुखराशिं सर्वोद्भापिपिहितं सबया साध्यपर्यवसितया अद्वया यत्सुखं सिद्धं प्रति समयमनुभवति तदेकत्र पिण्डीकृतं मितिनाय, सोनतवर्गंजक्तो अनतैर्वर्गमूलैः स्तोत्रदपवर्त्तितो यावत्सर्वोद्भालक्षणेन गु

वगयाण ॥१३॥ सुरगणसुहृदसम्पन्नं सद्योपि क्रियञ्चणतगुणं । न विपावद्भुमन्ति सुहृन्ता हि विवग्वग्वग्गूहि ॥१४॥  
सिद्धस्सुहोरासी सद्योपि क्रियञ्चणतगुणं । सोणतवर्गंजक्तं सद्योपि सणमाइज्जा ॥ १५ ॥ जहनामको

वाहवगयाण ॥ १४ ॥ नथो सुखं तेहवो देवताना इन्द्रादिकन जेहवो सद्योपि सिद्धे नथो कार्दवाधो जे सिद्धेने अपसमो गतिछे—सरगणसुहृदसम्पन्नं सद्योपि पाण्डियप्रणतगुणं न विविधयमुत्ति सुहृदं अथ ते हि वग्वग्वग्गूहि ॥ १५ ॥ देवतानासद्यातं सद्योपि सणमाइज्जा नथो जे तलामुखं सर्वासापि पण्डित सर्वकालसमय गुणितं यन्तगुणने प्रमाणे च सखल्यनये एकं एकाकाशप्रदेशं यापये इमं सखल्योकाकाशप्रदेशं शरीरे जे अच्युथाय ते अनन्ता गिरिण्ये ते गिरितायकानि अत्रगाढ ते परिपूर्णं जेवावगाढंयको असख्यातगुणा हुवे अत्रगाढप्रदेशं असख्यातवर्त्ती उक्तं—० गेखेत्तणता अपपसपरि वट्टेद्वान्निधो वत्तोहान्निधो तत्तोहवति असखिल्लगुणा असखपसो जमवगाढो, हिंवे सिद्धो न चण कहेछे—सिद्धस्सुहोरासी सद्योपि पाण्डियोजहव विज्जा सोणतवर्गंजक्तो सद्योपि सणमाइज्जा ॥ १६ ॥ सिद्धना सुखनीराणि सर्वासापि पण्डित सर्वसादि अपर्पवसितपणे मोचनासुखं समवड तथा हिंवे स्य एपणेभाण देखाडिछे, तेसिद्धं सद्योपि सणमाइज्जा तेषु भवते एकठाको जे ते गुणाकारं यन्तवर्गं भजिये तो सर्वं सोकानाग्रमनाने, हिंवे एहनासुखं अन्ताछे—ज

एकारेण गुणने यदधिक जात तस्य सर्वस्याप्युत्तरे सिद्धत्वा च समयत्राविमुखमात्रता प्राप्त इति ज्ञाय , सर्वोकाशो न माति सतायन्मात्रेपि सर्वो काशो न माति सबस्तु दूरापास्तप्रसर गवति ज्ञापनार्थ , पिण्डयित्वा पुनरपवत्तन सुसराशे , इयमत्रावचना-इह किल विशिष्टाह्लादरूप सुस प रिगृह्यते ततश्च यत आरभ्य शिष्टानां सुखशब्दप्रवृत्ति स्तमाह्लादमधिकृत्य एकैकगुणवृद्धितारत्त्येन तावदसावाह्लादो विशिष्यते यावदनल्लगुण वृद्ध्या निरतिशयनिष्ठा मृपगत सोय मत्यतापमातीतेकातौरसुखविनिवृत्तिरूप स्तिमिततमकल्प क्षरमाह्लाद सदा सिद्धाना यस्मा चारत प्रथमा चाद्रुमपातरालवर्तिनी ये गुणा स्तारतम्यना ह्लादविज्ञापरूपा स्ते सर्वोकाशप्रदेशेभ्यो प्यतिभूयास स्त किलोक्त-सद्वागासेनमाह्लाज्जा इति ॥ अन्यथा तत्सवाकाशो न माति , तत्कथमकस्मिन् सिद्ध मायादिति पूजसूरिसप्रदाय ' साम्प्रत मस्य निरुपमता प्रतिपादयति-जहनामेत्या दि ॥ यथा नाम कश्चिन्मृच्छो नगरगुणान् गृहनिवासादीन् बहुविधान् श्रमेकप्रकारान् विचानन् श्रयस्यागत सन् अन्यमृच्छेत्यो न शक्नोति परिक थयितु कस्मा त्रशक्नोतीत्यत आह-उपमाया तत्रासत्या निमित्तकारणहेतुषु सवासा विप्रकीर्णा प्रायो दशनमिति न्यायात् हेतो सप्तमी' तत्र च उपमाया श्रवावादिनिद्रपृथ्य , एषगायाक्षरार्थ , ज्ञावाथ कथानकादवसयस्तच्चद-गगोमत्तरखगामी मिच्छो रणे चिहति इतोय रगोराया आसेण

इमिच्छो नगरगुणत्रयजिजाणतो । गत्रएडपरिक्रहेउ उवमाएतहिच्युसतीए ॥ १६ ॥ इयसिद्धाणसोखञ्च  
णोत्रमनल्यितस्ससुवमम् । किचिचिमंसणितां सारिक्कमिणसुणहोत्य ॥ १७ ॥ जहसह्मकामगुणिय पुरिसो  
नोत्तणनोयणकोड । तरहलुहाविमुक्को ण्णिक्खिज्जजहाण्णमियतितो ॥ १८ ॥ इयसह्मकालतिहा ण्णुलनि

इत न नार्मिच्छो नगरगुणवृद्धिविविद्याणतो नवप पक्खिहन्ता उवमाणतहिप्रसतीए ॥ १७ ॥ जिम नगरनोवासो म्लेच्छनगरना गुणवणा ते वनवासो  
म्लेच्छ आगले अण्णजाणता आगनकहेतो ते कडो नसकै नगरना चूर्ण न कारिमकै अ पमा वनमाहसो कडो देखाडे, अण्णतावती एतोवसु वनमे का  
ई नटासे ए ट्टाते करी -- इयसिद्धाणसु अणोत्रमनल्यितस्सआवम । किचिचिमंसणिता सारिक्खिमिणमयोइत्य ॥ १८ ॥ एहवा सिद्धनासुख उपमारहित

अपहरितो त उरुपि पवेनतो तेन दिवो सकारेरुण जगाम नोतो रनावि सो नगर पच्छा उवगारिनि गाढमुपचरितो जना राया चिह्न उधल  
घराहुंभोगं वि चासा कालेण रसु सरिअमारहो रत्ना विसिज्जुं ततो राणेगा पुत्थन्ति केरिसु नयरति सो वियाणतो वि तंयोपनाज्जावा न न  
क्षेत्त नयरगुं परिकेत्त एस दिहत्तो अयमर्थपिनय ॥ इयसिदुणमित्यादि ॥ इति, एत सिदुणा सौख्यमनपम वसंते किमिति तत आन-यतो  
नारिस्स तस्यौपम्य तथापि वालजनप्रतिपत्तय किञ्चिद्विशेषण ॥ इतो ॥ इति आपत्वा दस्येत्य, सादृश्य मिद् वहरनाय शुण्णत ॥ न-मद्वेन्द्र्यादि ॥  
यस्येदुदाहरणोपदर्शनाय, जुज्यते इति भोजन समकामुणित सकलनौन्द्यसरहत कोपि पुरुषो भुक्ता शुभ्रद्विमुक्त सन् यथा असुतत्तम तथा  
तिष्ठति ॥ इयइत्यादि ॥ इति, एव निर्वाण मोक्षमुपगता सिदुा सबकाल नाद्युपयवमित काल तस्मा नर्वयोत्सुत्यविनियुत्तिज्जावत परममतो  
पमधिगता अतुलमनन्यसदृश मुपमातीतत्वात्, ज्ञाद्यत प्रतिपातान्नावात्, धय्यावाय लज्जातोपि व्यावायाया असम्भवात्, सुग प्राप्ता, अत एव  
सुखिन स्तिष्ठति, एतदेव सर्वशेषतर ज्ञाययति-सिद्धीत्तियइत्यादि ॥ मित यदुमएप्रकार कर्म भ्यात वस्सीकृत ये स्ते भिद्वा एपोदरादय इति  
रूपनिष्पत्ति, निदर्शानेनप्रवकर्मधना इत्यर्थ, तच्च सामान्यत कर्मादिसिद्धान् अरपि प्रवन्ति, यत उक्त-कस्सेसिप्पयविज्जाग मतेओगेयआगमे ।

द्वाणमुवगयासिद्धा । सासयमहावाह चिठ्ठिसुहीसुहपत्ता ॥ १९ ॥ सिद्धत्तियबुद्धत्तिय पारगतत्तियपरपा  
 गतत्तिय । उम्मुक्ककम्मकवया झजराझमराझसगाय ॥ २० ॥ णिच्छिन्नसहसुक्का जातिजराभरणबध्धणवि

तद्वशा मुखनौ आपमा इहा मनुष्यमानयौ तौही पिण वालजनने सनभावांने अथ स्या इत्यामान वज्रनाण अणतो पृथ्वी जी तयाकक्षो ते साभल—अ  
हस्यकामगुणिय परिमोभक्षणजायणकोइ तगहोक्खुवाविमसा अज्झिज्जनाअसियतत्ता ॥ १८ ॥ तिम सर्वकामगुणित सकलसौन्दर मज्जा एइयाभान  
न कीइपस्य जीमोत्त भाजनन्नान लया लुगये मूषाणाय का इणिय अमतेण का जिमरइ—एउसखकालतित्ता याउलनिवधणमुगयानित्ता नानसयन  
वमावाइ विदुत्तिसुखामुहपत्ता ॥ २० ॥ इम सर्वकाल विवसादि पपयवसित कालनगे लसयका परनसताप पास्या अतुल अन्नान्यैवरंग्गा सुखपा स्या

अन्तर्गताश्रयिण्याय तत्वेकमवलगद्वय ॥ १ ॥ तत कर्मोदिसिद्धिं व्यपोहयाए-वद्वायति ॥ अज्ञाननिद्राप्रशुप्तेऽजगत्प्ररोपदेशेन जीनादिरूप तत्त्व  
शुद्ध्यतो यद्वा सधनमवर्दाशस्वनावत्रोधरूपा इतिज्ञाव , गतेपिच ससारनिवाणान्नयपरित्यागेन स्थितवत , कैथिदिप्यते-ससारे न च निर्वाणे ,  
स्थितो युयुत्सुनय अचिन्त्य सर्वलोकाणां , चित्तरत्नाधिर्कोमहाति तिउचमात् , तत स्तान्निरासायमाह-पारगताइति ॥ पार पयत ससारस्य प्रयो  
जनात्तस्य वा गता पारगता , तथा प्रव्यत्याक्षितसुक्लप्रयोजनसमास्या निरवत्रेपकत्तं व्यशक्तिविप्रमुक्ता इतिज्ञाव , इत्यज्ञूता अपि कैथित् य  
दृष्ट्यावादिनिरक्रमसिद्धत्वनपि गीयते , तथोक्त-नैकादिसङ्ख्यकमतो चित्तप्रान्तिनियोगत । दरिद्राज्यासिसमा तदनुस्ति क्षीचिकि ॥ १ ॥ तत  
स्तन्नतयपोहयाए-परस्परगता इति ॥ परस्परया ज्ञानदज्ञानचारित्र्यरूपया भिष्यादृष्टिसासादनसम्यग्भिमय्यादृष्टविदितिसम्यग्दृष्टिदेजाविरतिप्र  
मत्तनिश्चयनितृप्तिवाटरसम्यरायसूक्ष्मसम्यरायोपशाक्तमाह-क्षीणनोद्वययोगिकजल्ययानिकवलिंगुगस्थानज्ञेदज्ञियया गता , गतव कैथि तत्त्वतो नुन्नु  
क्तमक्तवा अज्युपगम्यन्त तीर्यनिकारदज्ञानादिहागच्छतीति वचनत पुन ससारान्नतरणान्नुशगमा दत स्तन्मतापाकरणायमाह-उन्मुक्तकर्मकवचा  
उदप्राययना पुनजगत्पतया मुक्त परित्यक्त कर्मकवचमिव कमकवच ये स्ते उन्मुक्तकर्मकवचा , अत गव अजरा शरीराज्ञावतो जरसोऽनावात् ,  
अमरा अक्षरीरत्वादव प्राणत्यागासमायत् , उक्तस्त्व-वयसोहोहोहोरा पाक्याश्रुयमरणमादिष्ठ । सदृष्टमितदुनय तदनावेनकस्सेव ॥ १ ॥ अ

निर्वाण पोंढता सिद्ध साम्यतो प्रतिपातयप्रभाव प्रबाधो निगारप्रवाधा नहो जिह्वा तले सुपुपास्या तले तखैरहेकै, द्विवे विगेषपणे वखाणेकै-मि  
इतिउचयति पारगतिवपरपरमक्तिव समकजन्मकवया अजराप्रमराप्रमराय ॥ २१ ॥ सौधाकम म्मकराने प्रय ननिद्रा गूनी जाण्य के ससारनोपार  
पाम्याकै परपरये भिष्यात् १ सास्वादत २ जा कैदिसो ययोगीगुण्टाणे परपरविचढाने मीयाकै म्ब्याकै कर्मनाकवच बले दग्धपणेकरी बले म्ब्याकै  
कर्मकवच गरीरभावे जनानोप्रभाव प्रमर् अगरीरोम टे बाह्याभ्यन्तरमगरहित-निच्छिक्कन-उदक्का जारजरामरणवधयानिमुक्का अर्वावाटमुक्ख अ  
णुद्वदसासयसिद्धा ॥ २२ ॥ कै निच्छिक्कण सर्वदुखयको नायित्कै जाति करारमरण कर्मभावन्धनयो मुक्काणा प्रबायाविना सुपुप्रति पाम्या एहवा सास

सुखा बाह्याभ्यन्तरसद्गुरुरित्तत्वात् ॥ निच्छिन्नेत्यादि ॥ निस्तीर्णं लङ्घित सर्वं दुरा ये स्ते निस्तीर्णसर्वदुःखा ' कुत इत्याह-जातिजरामरणवयवविमुक्ता ॥ जाति जन्म जरा वयोहानिलक्षणा मरण प्राणत्यागरूप दान्यनानि तल्लिख्यरूपाणि कर्माणि ते विज्ञोपतो निज्ञोपागमनेन मुक्ता जाति जरामरणवयवविमुक्ता, हेताविय प्रथमा, यतो जरामरणवयवविमुक्ता स्ततो निस्तीर्णसर्वदुःखा कारणान्नावात्, ततो व्यादाय सौख्यं शाश्वतं सिद्धिं अनुज्जयन्ति ॥ इति श्रीमलयगिरिविरचिताया प्रज्ञापनाटीकाया द्वितीय पद समाप्त ॥ २ ॥ व्याख्यात द्वितीयपदं मधुना तृतीय मारज्यते-तत्सचाय मज्जिसम्बन्ध, इह प्रथमे पदे पृथिवीकायिकादय प्रज्ञप्ता, द्वितीये ते मय स्वस्थानादिना चिन्तिता अस्मिन्नु तया दिग्गतागादिना अल्पवस्तुत्वादि निरूप्यते, तत्रेदमादौ द्वारसप्तगृहादय-दिशिगड्ढदियकागड्ढत्यादि ॥ प्रथम दिग्द्वार १ तदनन्तर गतिद्वार २ तत इन्द्रियद्वार ३ तत कायद्वार ४ ततो योगद्वार ५ तदनन्तर वेदद्वार ६ तत कयायद्वार ७ ततो लेश्याद्वार ८ सम्यक्कद्वार ९ तदनन्तर ज्ञानद्वार १० ततो दर्शनद्वार ११ तत समयद्वार १२ तत उपयोगद्वार १३ तत आहारद्वार १४ ततो ज्ञापकद्वार १५ तत परित्त इति, परीता प्रत्येकशरीरिण शुक्लपाचिका अतद्वार १६ तदनन्तर पर्याप्तिद्वार १७ तत सूक्ष्मद्वार १८ तदनन्तर सञ्जिद्वार १९ ततो ॥ नववर्त्ति ॥ अत्रचिद्विद्वार २० ततो स्तोति

मुक्ता । अन्नावाहसुखं अणुहोतीसासयसिद्धा ॥ २१ ॥ त्रितिय पदं सम्मत्त ॥ २ ॥  
दिसिगड्ढदियकाए जोएवैएकसायलेसाय । सम्मत्तणाणदसण संजयउवउलगञ्जाहारे ॥ १ ॥ आसणपरित्तप

ता सत्त्वप्रति पात्या तेहवानसु अनुभवकै ॥ पणवणाण्ठाणपणवित्तिसस्यत्ता २ ॥ इति चौप्रज्ञापनाख्याना पञ्चवणाउपागेदितोउपट मसाप्तथगो देवता मत्तुथ नारकौ तिवरत्त उत्यातस्यानक विउपरा ॥ २ ॥ दिसिगड्ढदियकाए जोएवैएकसायलेसाय सम्मत्तणाणदसण संजयउवउलगञ्जाहारे ॥ १ ॥ दिसिगड्ढदियकाए जोएवैएकसायलेसाय सम्मत्तणाणदसण संजयउवउलगञ्जाहारे १४-आमापरित्तपञ्जत्त महेम्ममौभवत्याए चरिमेजोवैउपुत्तवधे पुणत्तमद्वद्वण्णचैव २० द्वार दिसाणवणाएण । भापाद्वार प्रत्येकशरीर शुक्लपञ्च ध्याउ पर्याप्ता सूक्ष्म सन्नो नव

पुस्तिकायद्वार २१ तत धरमद्वार २२ तदनन्तर जीवद्वार २३ तत पुद्गलद्वार २४ ततो बन्धद्वार २५ ततो महादशरुक् २७ इति  
संबन्धया सप्तविंशतिद्वाराणि ॥ तत्र प्रथमद्वार मन्निधिद्वारं राह-दिसाणवाएण सव्वत्थोवा जीवा पच्चत्थिमेण भित्थादि ॥ इत् दिश प्रथमे आचा  
राय्मे अगे अनेकप्रकारा व्यावर्णिता स्तत्रेह क्षेत्रदिश प्रतिपत्तया स्तासा नियतत्वा दितरासाच प्रायो अनवस्थितत्वा दनुपयोगित्वाच्च, क्षेत्रदि  
शाच प्रभव स्तियग्लोकमध्यगतदष्टप्रदेशका दुवकात्, यत उक्त-अठपएसोरुयगो तिरिपलोपस्समज्जियारस्मि । एस्सपज्जवोदिसाण एस्सेवज्जवे अणु  
दिसाणमिति ॥ १ ॥ दिशा मनुपातो दिगनुसरण तेन दिशो धिरुत्थेति तात्पर्याथ, सर्वस्तोका जीवा पच्चिमेन पच्चिमाया दिशि कथमिति चेत्  
-उच्यते-इदं हलप्ययुत्य वादरानधिरुत्य द्रष्टव्य नसूत्राणा सर्वलोकापन्नाना प्राय सर्वत्रापि समत्वात्, वादरेष्वपि मध्ये सर्ववहवो वनस्पति

ज्जत सुज्जमसणीयन्नवत्थिसेचरिमे । जीवयत्तवधे पुग्गलमहदरुक्चेव ॥ २ ॥ दिसाणवाएण सव्वत्थोवा  
जीवा पच्चिक्खिमेण पुरिक्खिमेण विसेसाहिया दाहिणेण विसेसाहिया उत्तरेण विसेसाहिया दाहिणेण सव्व  
त्थोवा पुढविक्काडया दाहिणेण उत्तरेण विसेसाहिया पुरिक्खिमेण विसेसाहिया पच्चिक्खिमेण विसेसाहिया  
दिसाणवाएण सव्वत्थोवा आउकाडया पच्चिक्खिमेण विसेसाहिया दाहिणेण विसेसाहिया उत्त

सिपि अस्ति वरमद्वार जीवद्वार क्षेत्रद्वार वध पुद्गल महादशरुक् २७ यमनावासद्वार कक्षा दिशिआथो । सव्वत्थोवा जीवा पच्चिक्खिमेण पुरिक्खिमेण वि  
सेसाहिया दाहिणेण विसेसाहिया उत्तरेण विसेसाहिया । सर्वजीव घांडा पयिम जीभणौ सुस्थित देवतानावास गौतमदीप पयिमने लवण तेमाटे पाणौ  
घांडो घांडराणौ वनस्पतीनोन्नभाव तेमाटे पूर्व विंशपाधिक जमाटे गौतमदीप नद्यौ दक्षिण सर्वजीव विंशपाधिक जीभणो तेमाटे पाणौषणौ तिहा जा  
वयणा सन्न सूर्य षोपन्नथो तेमाटे अधिक उत्तरे विंशपाधिक जीवम ट योजन कोडाकोडीप्रमाण मानस २ असख्यातमेव तेमाटे । दिसाणवाएण  
सव्वत्थोवा आउकाडया पच्चिक्खिमेण वि० दाहिणेण वि० उत्तरेण वि० । यथादिशआथो लखवता सर्वथको पृथ्व्यानाय घांडा दक्षिण जिहा चन तिहा

मायिका एतन्मनुष्यातया तेषां प्राप्यमाणत्वात्, ततो यत्र ते बहव स्तत्र बहुल्यं जीवानां यत्र त्वल्पं तत्राप्यल्पं वनस्पतयश्च तत्र बहवो यत्र प्र  
ज्जना अपि " जलजलतत्त्ववर्णमिति वचनतः, स्तत्रावश्यं पनकसेवालादीनां ज्ञावात्, तेषां पनकसेवालादीनां वाटरनामकमर्षिदेये वर्तमाना अपि अ  
त्यन्तमून्मावगाहनत्वा दतिप्रजुतपिण्डीज्ञावाच्च सर्वत्र सन्तोपि न बहुया ग्राह्या, तथाचोत्सन्नयोगद्वारेषु-तेषां बालगान्धुमपणगजीवश्च सरी  
रोगरणान्दितो अस्तेज्जमुणा इति, ततो यत्रापि नैते दृश्यन्ते तत्रापि ते सतीति प्रतिपत्तया आह्वय मूलटीकाकार-इह स्वययश्चो वनस्प

रेण विसेसाहिया, डिमाणवाएण सव्योवा तेउकाडया दाहिणत्तरेण पुरच्छिमेण विसेसाहिया पञ्चच्छि  
मेण विसेसाहिया दिसाणवाएण सव्योवा वाउकाडया पुरच्छिमेण पुरच्छिमेण विसेसाहि  
या दाहिणेण विसेसाहिया उत्तरेण विसेसाहिया । डिमाणवाएण सव्योवा वणस्सडकाडया पञ्चच्छिमेण  
पुरच्छिमेण विसेसाहिया दाहिणेण विसेसाहिया उत्तरेण विसेसाहिया । दिसाणवाएण सव्योवा वेड्डि

वणाव्याकाय त्वैरहै तिहा थोडा भरत भरत एरवत थोडा विस्मारवन्ती मनुष्ययोडे अग्रि पिण्थोडे तद्वयकी पूर्ण अग्रिसख्यातगुणा अग्रि विदेहमाटे प  
क पृथ्वीकायकै चन्द्र सूर्य दोपमाटे । पुरच्छिमेण वि० पञ्चच्छिमेण वि० । पञ्च सूर्योप पूर्वपयिमेक पयिम विजेपाधिक पृथ्वीकायकै । हेमोतम दापमा  
टे पृथ्वीकायविशेष तथा पयिमे पृथ्वीकायविशेष धिक तथा किम पयिम अधोलोके सामादिसद्वयाननादि अग्रगण्ये खात पूरित न्यायेन तन्तुय  
न विजेपाधिक । दिसाणवाएण सव्योवा आउकाडया पञ्चच्छिमेण दाहिणेण वि० उत्तरेण वि० । दिग्गमीने ज्ञावता सर्वथोडा अग्रकाइयालोव पयिम  
जेमाटे भौतमसोप पयिमे तेमाटे पाणो तिहाथोडा पूर्व विजेपाधिकै दोपने प्रभावे दाहिणे विजेपाधिक जेभणी चन्द्रसूर्योप नथी उत्तरविजेपाधि  
क जेमाटे मानमरोवरकै । दिसाणवाएण सव्योवा तेउकाडया दाहिण उत्तरेण पुरच्छिमेण सखिज्जगुणा पञ्चच्छिमेण वि० । दिग्गमीने ज्ञावता धो  
डासर्व तेजस्काय दाहिण भरत उत्तर भरत एरवत थोडा विस्मारवन्ती मनुष्ययोडे अग्रि पिण्थोडे तद्वयकी पूर्ण अग्रिसख्यातगुणा अग्रि विदेहमाटे प

तथ इति कृत्या यत्र ते सति तत्र बहुल्य जीवानां तेषां च बहुल्यं "अत्यग्राउत्कृष्टतत्पत्नियमावणस्सइकाइयाइति, पञ्चगसेवाल्लह्याइयायराविहोति सुहृमात्राणगिज्जानचक्षणाइति, उदकं च मज्जतं समुद्रेषु द्वीपद्विगुणविप्रभ्रात्, तेष्वपि च समुद्रेषु प्रत्येकं प्राचीप्रतीचीदिशो यथाक्रमं चन्द्रसूर्ये द्वीपा यावति च प्रदेशे चन्द्रसूर्यद्वीपा श्रवणाडा स्तावत्युदकाभ्राश्च, उदकाभ्राश्चाश्च वनस्पतिकारिकाभ्राश्च फेवल प्रतीच्या दिशि लज्जसमुद्रादि पशुस्थितनामदेयावाचसूतो गौतमद्वीपो लज्जसमुद्रे ज्ययिका वसते तत्र च उदकाभ्राणां दुनस्पतिकारिकाभ्राणां मज्जावात् सबल्लोका जीवा पश्विमा या दिशि तेज्यो विज्ञेयाधिका पूवस्या दिशि तत्रहि-गौतमद्वीपा न विद्यते तत स्तावता विज्ञेयाधिका मवन्त्य तिरिच्यते तेज्योपि दक्षिणस्या

या पञ्चच्छिमेण पुरच्छिमेण त्रिसेसाहिया उत्तरेण त्रिसेसाहिया, दिसाणुवाएणं सन्नत्योवा तेइदिया पञ्चच्छिमेण पुरच्छिमेण त्रिसेसाहिया दाहिणेण त्रिसेसाहिया उत्तरेण त्रिसेसाहिया,

विम विमोवाधिकं अथायामादि घणामाट । दिसाणुवाएण सवत्थावा वासकाइया पुरच्छिमेण पञ्चच्छिमेण वि० । दिग्गन्थायो जीवता सर्गोधाडो यायु पूर्व जलग्ना घनभूमिं घणाद्धै तमाटवासथाडा पश्चिमं विमोवाधिकं जमणो अवालोक्कवा तमाट वाउघणा उत्तरं विमो० नरकावासानेठामै पालाड घणो माटे दक्षिणे विमोवाधिकं नरकावासा घणा तिहा वाउ घणो । दिसाणुवाएण सवत्थावा वणसाइकाइया पञ्चच्छिमेण पुरच्छिमेण वि० । दिग्गनोमल्ले सर्वे थाडा वनस्सतीकाय पाचम जमणो गौतमहाप जलथाडा तिणे माटे वनस्सती पिणथाडो पूर्व विमोवाधिकं गौतमहाप नद्यो तमाट पाणौघणाने वन पि णघणो । दाहिणेण वि० उत्तरेण त्रिसेसाहिया । दक्षिणोत्तरेण चन्द्रसूर्यक्षपनथा तमाटे उत्तरं वि० मानसरावरनी अपेक्षाये वनघणो । दिसाणुवाएण स वत्थावा वेद टिया पञ्चच्छिमेण पुरच्छिमेण त्रिसेसाहिया दाहिणेण त्रिसेसाहिया उत्तरेण विसे० । दिग्गनोमल्ले सवत्थावा वदाइय पाचम जिहा पाणोशो हा तमाटे गृह्णाति थाडा पूर्व विमोवाधिकं पाणौघ ५ तमाट दक्षिणे विमोवाधिकं चन्द्र सूर्य क्षपनथा तमाटे पाणौघणा वेन्द्रिय विमघणा उत्तरं विमोवाधिकं मानसरावरमाटे । दिसाणुवाएण सवत्थावा तोदया पञ्चच्छिमेण पुरच्छिमेण वि० दाहिणं वि० उत्तरेण वि० । दिग्गनोमल्ले सर्वयोडा तेद्वि



दिशि विशेषाधिका । यत - तत्र चन्द्रमूयद्वीपा न विद्यन्ते तदन्वावा, तत्रोदक प्रजत तराज्ज्याच्च वनस्पतिकार्यिकायापि प्रनूता इति विशेषाधिका स्तस्योप्युदीच्या दिशि विज्ञापाधिका क्रिकारणमिति चेत् उच्यते-उदीच्या हि दिशि सङ्ख्येयोजनेषु द्वीपेषु मध्ये कस्मिंश्चित् द्वीपे आयास विपक्षस्या सङ्ख्येयोजनकोटाकोटीप्रमाण मानस नाम सर समस्ति ततो दक्षिणदिगपेनया अस्या प्रजतमदक मून्कवाहुन्या च प्रजता वनस्प तय, प्रनूता द्वीप्या ज्ञावादय, प्रनूता स्तटलग्नजगामादिकलेवराधिता स्त्रीन्द्रिया पिपीलिकादय, प्रनूता पट्यादिषु चतुरिन्द्रिया ज्ञमरादय, प्रनूता पञ्चेन्द्रिया मत्स्यादय इति विज्ञापाधिका स्तदेव समान्यतो दिगनुपातन औधानामल्पबहुत्व मुक्त मिदानी विशेषेण तदाह-दिसाणवाएण सवस्योवा पुटविकाडया दाहिणेणमित्यादि ॥ दिगनुपातन दिगनुसारेण दिशोधिक्रत्येति ज्ञाव, एयिवीकार्यिका सवस्योका दाहिण स्या दिशि कथमिति चेत् उच्यते-उह यत्र यत्र तत्र वद्वय एयिवीकार्यिका यत्र सुपिर तत्र स्त्रीका दक्षिणस्या दिशि वहूनि प्रवनपतीना प्रव

एव चउरिटियावि, दिसाणवाएण सवस्योवा णेरडया पुरिक्खिमपच्चिक्खिमेण उत्तरेण दाहिणेणं चउसंखेज्जा गुणा, दिसाणवाएण सवस्योवा रयणप्पन्नापुढविणेरडया पुरिक्खिमपच्चिक्खिमेण उत्तरेण दाहिणेणं चउसखे ज्जगुणा, दिसाणवाएण सवस्योवा सक्खरप्पन्नापुढविणेरडया पुरिक्खिमपच्चिक्खिमउत्तरेण दाहिणेणं चउस खेज्जगुणा । दिसाणवाएण सवस्योवा णेरडया वालुयप्पन्नापुढविपुरिक्खिमपच्चिक्खिमउत्तरेण दाहिणेणं चउस

उ पात्रमे गौतमहोपमाटे पाणीशोडा घोडेपाणी सेयालाटिकनी निच ये कथगायोडा पूर्व विंगपाधिक गौतमहोपनया तेमाट दक्षिणे विशयाविक चउ हौपनथो उत्तरे विंगे मानसरोवरमाटे । टिमणुवाएण सवस्योवा चौरिटिया पच्च रक्खमण पुरिक्खिमेण विं दाहिणेण उत्तरेण विं । टियनौमले सर्व शीघोडा चउरिटिय पश्चिमे गौतमहोपछे तेवतो पाणीशोडा तिहा कमनयोडा तिहा भमरो चौरिटियाटिक थोडा पूर्व विंगपाधिक गौतमहोपनथो तेमाटे दक्षिणे विं चउ मूहोपनथो तेमाटे उत्तरे विं मानसरोवर भमरादि घणा । दिसाणवाएण सवस्योवा णेरडया पुरिक्खिम पच्चरक्खम उत्तरेण

नानि धराजो नरकावासा स्तत सुपिरप्रान्नस्यस्रवात् सर्वस्तोका दक्षिणस्याऽदिशि पृथिवीकायिका स्तेभ्य उत्तरस्या दिशि विशेषाधिक्या यत्र उ  
त्तरस्या दिशि दक्षिणदिगपक्षेया स्तोकाणि भवनानि स्तोकावरकावासा स्ततो घनप्रान्नस्यस्रवा द्वहव पृथिवीकायिका इति विशेषाधिका , ते  
भ्यापि पूज्य्या दिशि विशेषाधिका रविशशिहीयाना तत्र ज्ञायात्, तेभ्योपि पश्चिमाया दिशि विशेषाधिका किंकारणमिति चत्-उच्यते-यावतो  
रविशशिहीयोप पूर्वस्या दिशि तावन्त पश्चिमायामपि ततएव तावता साम्य पर तवणसमुद्र गौतमनामाद्गोप पश्चिमायामधिकोस्ति तेन विशे

खिज्जगुणा । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा पक्कप्पन्नापुढविणेरुडया पुरिच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेण दाहिणेण अ्सरे  
ज्जगुणा । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा धूमप्पन्नापुढविणेरुडया पुरिच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेण दाहिणेण अ्सरेज्जगुणा  
गुणा । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा तमप्पन्नापुढविणेरुडया पुरिच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेण दाहिणेण अ्सरेज्जगुणा

दाहिणेण अ्सरेज्जगुणा । दिग्नोमेने सर्वथोडा नारको पूर्वथोडा पश्चिमथोडा उत्तरथोडा स्यामाटे पण्यवकीर्णं नरकावासाथी दक्षिणे असव्यातगणा  
अधिका जंभणो दक्षिणदिग्ने पण्यवकीर्णं नरकावासकै तेमाटे क्षणपचो जौव । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा यणपभा पढवो येरइया परिच्छिमेण पक्षि  
मउत्तरेण दाहिणेण अ्सरेज्जगुणा । दिग्नोमेने सर्वथोडा उत्तरथोडा पश्चिमथोडा नारको पूर्वदिग्ने पण्यवकीर्णं नथो पश्चिमदिग्ने उत्तरदिग्ने असव्यात  
विस्तारै नरकावास कै तिहा क्षणपचो वणाकै ऊपजै । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा सक्करणभापढवो येरइया पुरिच्छिमेण पक्षिच्छिमेण उत्तरेण दाहिणेण अ्स  
रेज्जगुणा । दिग्नोमेने सर्वथोडा उत्तरथोडा पश्चिमथोडा नारको पूर्वदिग्ने पण्यवकीर्णं नथो पश्चिमं सोटा नरकावासा उत्तरपक्षी दक्षिणे असव्यात  
गुणा असव्यातयानने विस्तारै क्षणपचो वणा ऊपजै । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा वल्लुगणपढवो येरइया परिच्छिम उत्तरेण दाहिणेण अ्स  
रेज्जगुणा । दिग्नोमेने सर्वथोडा उत्तरथोडा वानकप्रमाना नारको सर्वदिग्ने पण्यवकीर्णं नथो पश्चिमउत्तरथो मोटा असव्यात विस्तारै दक्षिणे सव्यातगणा ऊ  
पपक्षि वणा ऊपजै तेमाटे । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा पक्कप्पन्नापुढविणेरुडया परिच्छिम उत्तरेण दाहिणेण अ्सरेज्जगुणा । दिग्नोमेने सर्व

पायिका , अत्ररराद-ननु यथा पश्चिमाया दिशि गीतमद्वीपो अथिज समस्ति तथा तस्यां पश्चिमाया दिशि अधोलौकिकग्रामा अपि योजन  
सहस्रावगाहा सन्ति तत रातपूरितव्यायेन तत्तुल्याएव पृथिवीकायिका प्राप्नुवन्ति न विशेषाधिकारः , नैतदेव-यतो धोलौकिकग्रामावगाहो  
योजनसहस्र गीतमद्वीपस्य पुन पट्ससत्यधिक योजनसहस्र मुच्चैरस्य विक्रम सस्य द्वादशयोजनसहस्राणि यच्च नैरो रारस्य धोलौकिकग्रामेभ्यो  
उर्गाद् हीनत्व हीनतरत्वं तदपूवस्यामपि दिशि प्रभूतगतादिमस्मवात् समान ततो यद्यधोलौकिकग्रामच्छिद्रपु दुच्या गीतमद्वीप प्रक्षिप्यते तथा  
पि समधिकएव प्राप्यते नतुत्य इति , तेन समधिकेन विशेषाधिकार पश्चिमाया दिशि पृथिवीकायिका , उक्त दिगनुपातेन पृथिवीकायिकाना म  
ल्यत्वं मिदानी मष्कायिकाना मलपचहुत्वमाह-दिशाणुवाएण सव्योवा आउक्काइया इत्यादि ॥ सवदोका अष्कायिका पश्चिमाया दिशि गी

दिसाणुवाएण सव्योवा तमप्यन्नापुढविनेरडया पुरच्छिमपञ्चच्छिमउत्तरेण दाहिणेण असखेज्जगुणां , दि  
साणुवाएण सव्योवा अहे सत्तमापुढविनेरडया पुरच्छिमपञ्चच्छिमउत्तरेण दाहिणेहिता अहे सत्तमापुढ  
विनेरडुएहिता वठीए तमाए पुढवीए नेरडया पुरच्छिमपञ्चच्छिमउत्तरेण असखेज्जगुणा , दाहिणेण अस

थाडा पङ्कतमापुष्पा नारका पूर्वादिगे पय्यवकौणं नद्यो तेमाटे पश्चिमउत्तर नद्यो दक्षिण असख्यातगुणा कण्णपाच्चिक घणा ऊपजै । दिसाणव.एण सउव  
त्यावा धूमप्यभपुढगीणेरडयाण पुरच्छिम पञ्चच्छिम उत्तरेण दाहिणेण असखिज्जगुणा । दिगन.मनै सर्वथाडा धूमप्रभानारको पव पय्यावकौणं नद्यो ते  
नाटे पश्चिम उत्तर नद्यो दक्षिणे असख्यातगुणा कण्णपको घणामाटे । दिम गवाएण सव्यथावा तमप्यभपुढवीणेरडया पुरच्छिमउत्तरेण दाहिणेण अस  
खिज्जगुणा । दिगनीमेनै सर्वथाडा तमप्रभानानारको पू पय्यावकौणे नद्यो तेमाटे पाचमउत्तर नद्यो दक्षिणे असख्यातगुणा । दिसाणुवाएण सउव  
थावा अहेमत्तमपुढवीणेरडया परारुम पञ्चच्छिम उत्तरेण दाहिणेण असखिज्जगुणा । दिगनी मनै सर्वथाडा. इठ सातमोनारको पू पय्यावकौणं  
नारकावासा नद्यो तेमाट पश्चिम उत्तर दक्षिणे असख्यातगुणा विस्तरके कण्णपको घणामाटे, इहे सात पुष्पायको दिगिनी असखहुत्व कहेक्के-दाहि

तमद्वीपर्याने तेषा मन्नावात्, तेज्योपि विशेषाधिका पूर्वस्यादिशि तेष्योपि विशेषाधिका दक्षिणस्यादिशि चन्द्रसंघीपानावात्, तेज्योप्युत्तरस्या दिशि विशेषाधिका मानसर सद्भावात्, तथा दक्षिणस्या मुत्तरस्या च दिशि सर्वस्तोका तेजस्कायिका यतो मनुष्यक्षेत्रे गव वादरा स्तेजस्कायिका नान्यत्र तत्रापि यत्र वरवो मनुष्या तत्र ते वरवो बाहुल्येन पाकारसम्भवात्, यत्र त्वत्पे तत्रस्तोका स्तत्र दक्षिणस्या दिशि पचसु न्नरतेषु उत्तरस्या दिशि पचस्वीरायतेषु द्वेयस्याल्पत्वात्, स्तोका मनुष्या स्तोपा स्तोक्तत्वेन तेजस्कायिका अपि स्तोका अल्पपाकारसम्भवा हत सर्वस्तोका दक्षिणोत्तरयो दिशो तेजस्कायिका स्वस्थानेन प्राय समाना तेज्य पूर्वस्या दिशि सहेयगुणा ज्ञेयस्य सहेयगुणत्वात्, ततोपि पथिमाया दिशि विशेषाधिका अधोलौकिकयामपु मनुष्यग्राह्यत्वात् ॥ दिसाणुवाएण सर्वत्योवा वाउकाइया पुरिच्छिमेणमित्यादि ॥ इह यत्र शुपिर

सेजगुणा, दाहिणक्षेहिती तमापुढविनेरइएहिती पचमाधूमप्यन्नाए पुढवीए नेरइया पुरिच्छिमपञ्चिच्छिम उत्तरेण अ्सखेजगुणा, दाहिणेण अ्सखेजगुणा । दाहिणक्षेहिती धूमप्यन्नापुढविणरइएहिती चउत्थीए पक्कप्यन्नाए पुढवीए णेरइया पुरिच्छिमपञ्चिच्छिमउत्तरेण अ्सखेजगुणा । दाहिणेण अ्सखेजगुणा । दाहिणक्षेहिती पक्कप्यन्नापुढविनेरइएहिती तइयाए वालुयप्यन्नाए पुढविनेरइया पुरिच्छिमपञ्चिच्छिमउत्तरेण अ

णहिती अद्वेसत्तमाएपुढवी णेरइयाणहिती क्खोएतमाणपुढवी णेरइण पुरिच्छिम पञ्चिच्छिम उत्तरेण अ्सखिजगुणा । हेठे सातनीपुखीनी दाक्षिणदिग्घो सातमीथी क्खोपुख नानारको पूय पथिम उत्तरे अ्सख्यातगुणा खामाटे होन २ वर पापकर्मना करणहार होन नरकगति जपजै तेमाटे सात मीपुखीथी क्खोनेरके अ्सख्यातगुणा ऊपलै । दाहिणेण अ्सखिजगुणा दाहिणक्षेहिती तमापुढवीणेरइणहिता पचमाण धमणभाएपुढवी णेरइया परिच्छिम पञ्चिच्छिम उत्तरेण अ्सखिजगुणा । दाक्षिणे अ्सख्यातगुणायुक्त सर्व पाकनीपरे जाणवी दाक्षिणदिग्घो तमापुखीगजो पाचमी धम्मप्रभा पुखी ना नारको होनतर पापकर्मना करणहार तेमाटे पूर्वपथिम उत्तरनानारको अ्सख्यातगुणे अधिका हुवे । दाहिणेण अ्सखिजगुणा । तेहयको दक्षि

तत्र दायु मंत्रं च घन तत्र वायव्यज्ञाव तत्र पूर्वस्या दिशि प्रभूत घनमित्यस्यावायव पश्चिमायादिशि विशेषाधिक्या अधोलौकिकग्रामेषु सम्भवात्  
उत्तरस्या दिशि विशेषाधिक्या अवननरकावासाहुत्येन शुषिरयाहुत्यात्, ततोपि दक्षिणस्या दिशि विशेषाधिक उत्तरदिगपेक्षया दक्षिणस्या दिशि  
जग्नाना नरकावासाना चातिप्रभूतत्वात्, तथा यत्र प्रभूता आपस्तत्र प्रभूता पनकादयो ऽनन्तकायिका नवस्पतय प्रभूता शङ्खादयो द्वीन्द्रिया प्र  
भूता पिपलीभूतसेवालाद्याश्रिता कुश्यादय स्त्रीन्द्रिया प्रभूता पद्याद्याभिता जमरादय यतुरिन्द्रिया इति, वनस्पत्यादिसूत्राणि चतुरिन्द्रियसूत्र

सखेज्जगुणा, दाहिणेण असखेज्जगुणा । दाहिणल्लेहितो बालुवप्पन्नापुढविणेरइएहितो वीयाए सक्खरप्प  
न्नाए पुढवीए णेरइया पुरिच्छिमपच्चिच्छिमउत्तरेण असखेज्जगुणा दाहिणेण असखेज्जगुणा दाहिणल्लेहितो  
सक्खरप्पन्नापुढविणेरइएहितो इमीसे रयणप्पन्नाए पुढवीए णेरइया पुरिच्छिमपच्चिच्छिमउत्तरेण असखेज्जगु  
णा । दाहिणल्लेण असखेज्जगुणा, दिसाणुवाएण सत्थयोवा पचिदित्रितिरस्कजोणिया पच्चिच्छिमेणं पुरिच्छि

ण असखेज्जगुणा कणपच्चो घणा तेमाटे । दाहिणल्लेहितो धूमप्पभाणपुढोण णेरइएहितो चउत्थोए पक्कप्पभाण पढोएणेइया पुरिच्छिमपच्चिच्छिम उत  
रण असखिज्जगुणा । दक्षिणदिगिना धूमप्रभापृष्ठाना नारको दक्षिणदिगिशो चौथो पक्कप्रभानानारको पूर्व पश्चिम उत्तरना असखातगुणे अधिकहुवे ।  
दाहिणेण असखिज्जगुणा दाहिणल्लेहितो पक्कप्पभाणपुढवीणेरइएहितो । तेइवोदक्षिणे असखातगुणा कणपच्चो घणा तेमाटे दक्षिणदिगिना पक्कप्रभा  
ना नारकोथो । तइयाए बालुवप्पभाणपुढोण णेरइया पुरिच्छिम पच्चिच्छिम उत्तरण असखिज्जगुणा । चौथो बालुक्कप्रभापृष्ठोना नारको पूर्व पश्चिम उत्त  
रना असखातगुणा होनकर्मना करणहार तेमाटे । दाहिणेण असखिज्जगुणा । तेइयको असखातगुणा युक्त पाकनोपरे । दाहिणल्लेहितो बालुवप्प  
भपढवी णेरइएहितो । दक्षिणदिगिना नारको बालुक्कप्रभाना नारकोघको । इइयाए सक्खरप्पभाए पुढोए णेरइया पुरिच्छिम पच्चिच्छिम उत्तरेण अस  
खिज्जगुणा । द्वौथो गक्कप्रभाना नारको पूर्व पश्चिम उत्तरना असखातगुणा हुवे धोडापापो तेमाटे ।





वक्तव्य युक्ते सर्वत्रापि समानत्वा तदेव प्रतिपृथिव्यपि दिग्विज्ञानेना ल्पयहुत्वा मुक्तमिदानीं सप्तपि पृथिवीरचिरुत्प दिग्विज्ञानेना ल्पयहुत्वा  
माह-दारिणोद्भूतो अहे सप्तपुण्ड्रविनेरुद्भूतो ठहीय तमाए पुण्डवीए नरइया इत्यादि ॥ सप्तमपृथिव्या पूर्वोत्तरपश्चिमदिग्विज्ञानविज्ञो नैरयिजे  
ज्योये सप्तमपृथिव्यानेव दाक्षिणात्या स्ते ऽसह्यगुणा स्तेन्य पष्ठपृथिव्या तमप्रज्ञाविधानाया पूर्वोत्तरपश्चिमदिग्विज्ञाविज्ञो ऽसह्यगुणा कथमिति  
येत्, उच्यते-इह सर्वोत्कृष्टपापकारिण सञ्चिपचेद्रियतियग्नमनुष्या सप्तमनरकपृथिव्या मृत्युन्ते, किंचिद्दीनहीनतरपापकर्मकारिणश्च पठ्यादिपु  
पृथिवीपु सर्वोत्कृष्टपापकर्मकारिणश्च सर्वस्तोका बहवश्च यथोत्तर किंचिद्दीनतरादिपापकर्मकारिण स्ततो युक्तमसह्यगुणत्व, सप्तमपृथिवीदान्ति  
यात्यनारकापेक्षया पष्ठपृथिव्या पूर्वोत्तरपश्चिमनारकाणा मव मुत्तरोत्तरपृथिवीरप्यचिरुत्प ज्ञावयितव्य, तेन्योपि तस्यामव पष्ठपृथिव्या दक्षिणस्या

साहि्या, दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा देवा ईसाणेकप्पे पुरच्छिमपच्चच्छिमेण उत्तरेण अ्सखेज्जगुणा दाहिणे  
ण विसेसाहि्या, दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा देवा सणकुमारैकप्पे पुरच्छिमपच्चच्छिमेण उत्तरेण अ्सखेज्जगु  
णा, दाहिणेण विसेसाहि्या दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा देवा माहिदेकप्पे पुरच्छिमेणपच्चच्छिमेण, उत्तरेण

पर घणा । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवादेवा सोइमेकापे पुरच्छिम पच्चच्छिमेण उत्तरेण अ्सखिज्जगुणा दाहिणेण विसेसाहि्या । दिशनीमेने सर्वथाडा  
सोधमं करपे पूर्वदिजे जेभणो पुप्पावकीणं नथो पयिमेपिण पट्टजभाव उत्तरे अ्सव्यातगुणा अधिक दक्षिणदिशि विशेषाधिक जेमाटे कृणपच्चो । दि  
साणुवाएण सव्वत्थोवा देवा इसाणेकप्पे पुरच्छिम पच्चच्छिमेण उत्तरेण अ्सखिज्जगुणा । दिशनीमेने जावता सर्वथाडा इगानकरपे पूर्व पुप्पावकीणं नहो  
तेमाट पयिम उत्तरे अ्सव्यात विस्तारविशेष । दाहिणेण विसेसाहि्या । दक्षिणे अ्सव्यातगुणा कृणपच्चो घणा ऊपजै । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा  
दथा माहिदे कपे पुरच्छिम पच्चच्छिमेण उत्तरेण अ्सखिज्जगुणा । दिगाआथी जावता सर्वथाडा देवता माहेट्ट कल्पना देवता सर्वपयिमे पुप्पावकीणं  
नथो उत्तरे अ्सव्यातगुणा । दाहिणेण विसेसाहि्या । दक्षिणविशेषाधिक कृणपच्चो ऊपजै । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा वमलोए कपे देवा परच्छिम प



दिशि नारदा अस्त्येयगुणा युक्तिर प्रागेवोक्ता तेभ्योपि पञ्चमपुत्रिव्यो धूमप्रज्ञानिधानाया पूर्वोत्तरपश्चिमदिग्नाविनो सहेयगुणा तेभ्योपि तस्यामेव पञ्चमपुत्रिव्यो दाहिणेन अस्त्येयगुणा । एव सर्गस्वपि क्रमेश वाच्य, तिर्यक्पंचेन्द्रियसूत्र त्वप्युक्तानां पञ्चाणां मीरावतक्षेत्राणां मत्स्यपत्न्यात्, तेभ्य मनुस्सा दाहिणउत्तरेणमित्यादि ॥ सर्वस्तीका मनुष्या दाहिणस्या मत्तस्यां च पञ्चाना उत्तरक्षेत्राणां पञ्चाना मीरावतक्षेत्राणां मत्स्यपत्न्यात्, तेभ्योपि पश्चिमाया दिशि विंशोपाधिका स्वप्नावत स्वाधोर्लोकिकग्रामेषु मनुष्यबाहुल्यात्वा पूर्वस्या दिशि सहेयगुणा क्षेत्रस्य सत्येयगुणत्वात्, तेभ्योपि पश्चिमाया दिशि विंशोपाधिका स्वप्नावत स्वाधोर्लोकिकग्रामेषु मनुष्यबाहुल्यात्वा त् ॥ दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा जवणवासीत्यादि ॥ सर्वस्तीका जवनवाचिनो देवा पूर्वस्या पश्चिमाया च दिशि तत्र जवनानामल्पत्वात्, तेभ्यो उत्तरदिग्नाविनो ऽसम्ययगुणा स्वस्यानतया तत्र जवनाना बाहुल्यात्, तेभ्योपि दाहिणदिग्नाविनो ऽसत्येयगुणा स्तत्र जवनाना मतीवबाहुल्यात्,

असखेज्जगुणा, दाहिणेण विसेसाहिया । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा वज्जलोए कप्पे देवा पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेण दाहिणेण असखेज्जगुणा दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा वज्जलोए कप्पे देवा पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेण दाहिणेण असखेज्जगुणा । दिसाणुवाएण उत्तरए कप्पे देवा पुरच्छिमपच्चच्छिम उत्तरेण दाहिणेण असखेज्ज

सच्छिम उत्तरेण दाहिणेण असखिज्जगुणा । दिग्मनोमेले सर्वथाडा वज्जलो क कल्पनादेवता पूर्व पश्चिमे प्यावकीणे नथी उत्तरे दाहिणे असत्त्वातगुणा । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा उत्तरए कप्पे देवा पुरच्छिम पच्चच्छिम उत्तरेण दाहिणेण असखिज्जगुणा । दिग्मनोमेले सर्वथाडा सातककल्पनादेवता पूर्व पश्चिमे उत्तरे दाहिणे असत्त्वातगुणा जाणिवा । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा देवा महासककप्पे पुरच्छिम पच्चच्छिम उत्तरेण दाहिणेण असखिज्जगुणा । दिग्मनोमेले सर्वथाडा देवता महाजुक कल्पना पूर्व पश्चिमे उत्तरे दाहिणे असत्त्वातगुणा युक्तपाच्छनी परे । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा सहस्रारे कप्पे देवा पुरच्छिम पच्चच्छिम उत्तरेण दाहिणेण असखिज्जगुणा । दिग्मनोमेले ज्ञापता सर्वथाडा देवता सहस्रारकल्पना पूर्व पश्चिमे उत्तरे दाहिणे असत्त्वात कल्पपक्षो नाटे । तेण पर बहुसमोववणगा समणउत्तो । तिनारपक्खे सरीखा स्यामाटे तिहा मनुष्य जपजे ते समावती सरीखा हुवे ब्रह्मायमणो आशु

तथा हि-निकाये २ चत्वारि २ जवनशतसहस्राण्यतिरिच्यते, ततो जवनसहस्रेयगुणा, अन्तरसूत्रे ज्ञावना यत्र शुपिर तत्र व्यन्तरा प्रवरन्ति, यत्र पत्र तत्र न, तत पूर्वस्या दिशि घनत्वात् स्तोका व्यन्तरा स्तोको ऽपरस्या दिशि विशेषाधिका, अथो लौकिकग्रामेषु शुपिरसम्भवात्, तेभ्योप्युत्तरस्या दिशि विशेषाधिका स्वस्थानतया नगरावासबाहुल्यात्, तेभ्योपि दक्षिणस्या दिशि विशेषाधि का अतिप्रज्ञतनगरावासबाहुल्यात्, तथा सर्वस्तोका ज्योतिष्का पूर्वस्या पश्चिमाया च दिशि चन्द्रादित्यद्वीपेषूप्रधानकल्पेषु कतिपयामासेव तेया ज्ञावात्, तेभ्योपि दक्षिणस्या दिशि विशेषाधिका विमानबाहुल्यात्, कृष्णपाक्षिका दक्षिणदिग्भाविताश्च, तेभ्यो प्युत्तरस्या दिशि विशेषा धिका यतो मानसे सरसि यद्बोधो ज्योतिष्का क्रीडास्थान भिति क्रीडनव्यापृता नित्यमासते, मानसरसि च ये मरस्यादयो जलचरा स्ते आस त्राविमानदज्ञानत समुत्पन्नजातिसरणात् किञ्चिद्व्रत प्रतिपद्या नञानादिष कृत्वा कृतनिदाना स्तत्रोत्पद्यन्ते, ततो जवनस्योत्तराहा दाक्षिणात्येभ्यो

विशेषाधिका, तथा सौधर्म कल्पे सर्वस्तोका पूर्वस्या पश्चिमाया च दिशि वैमानिकादेवा यतो यान्वावलिक्काप्रविष्टानि विमानानि तानि चत स्रयपि दिक्षु तुल्यानि यानि पुन पुष्पावकीर्णानि तानि प्रज्ञूतानि असह्येययोजनविस्तृतानि तानि च दक्षिणस्यामुत्तरस्या दिशि नान्यत्र तत स र्वस्तोका पूर्वस्या पश्चिमाया च दिशि तैस्य उत्तरस्या दिशि असह्येयगुणा पुष्पावकीर्णविमानाना बाहुल्या दसह्येययोजनविस्तृतत्वाच्च, तेभ्योपि दक्षिणस्या दिशि विशेषाधिका, कृष्णपाक्षिका प्राचुर्येण तत्र गमनात्, स्वमीशानसनत्कुमारमाहेन्द्रकल्पसन्नाश्यापि ज्ञावनीयानि, ब्रह्मलोककल्पे स्रवस्तोका पूर्वोत्तरपश्चिमदिग्भाविनो देवा यतो बह्व्य कृष्णपाक्षिका स्तियग्योनयो दक्षिणस्या दिशि समुत्पद्यन्ते शुक्लपाक्षिका पुन पूर्वोत्तरपश्चि माशु शुक्लपाक्षिकाश्च स्तोका इति पूर्वोत्तरपश्चिमदिग्भाविन सर्वस्तोका तेभ्यो दक्षिणस्या दिशि असह्येयगुणा कृष्णपाक्षिकाणा बहूना तत्रोत्पादात्, यत्र लान्तकशुक्रसहस्रारमृगाण्यपि ज्ञावनीयानि, ज्ञानतादिषु पुन मनुष्या एवोत्पद्यन्ते तेन प्रतिकल्प प्रतिश्रैवेयक प्रत्यनुत्तरविमान चतस्र्यु दिक्षु

प्रायो वदुसमावेदितव्या स्तथाचाह ॥ तेषपर वदुसमोववन्नगा समनाउसो । इति दिसाणुवाएण सद्यत्थोवा सिद्धा दाहिणउत्तरेणमित्यादि ॥  
 सयस्तीका सिद्धा दक्षिणस्या सुत्तरस्या घ दिशि कथमितिचेत् १ उच्यते-इह मनुष्याएव सिञ्चन्ति नान्ये मनुष्या अपि सिञ्च्यतो येषा काशाप्रदेशे  
 यिह परमसमये श्रवणाढा स्तेषेवाकाशाप्रदेशेषु द्वैमपि गच्छन्ति, तेषेव धोपर्यवतिष्ठन्ति, न मनागपि वक्र गच्छन्ति, सिञ्चन्तिच, यत्र दक्षिणस्या  
 दिशि पवतु अरतयुत्तरस्या दिशि पवत्यैरावतेषु मनुष्या अतपा क्षेत्रस्यापत्वात्, सुखमसुखमादौ च सिद्धे छात्रावादिति तत्रोत्रसिद्धा संवत्तो  
 का तेन पूर्वस्या दिशि सख्येयगुणा पूर्वविदेहाना प्ररतैरावतलत्रेण सख्येयगुणतया तद्गतमनुष्याणांमपि सख्येयगुणत्वात्, तेषा च संवत्तल  
 सिद्धिनामात्, तंत्र्य पश्चिमाया दिशि विशेषाचिका अघोलौकिकयामेषु मनुष्यबाहुल्यात् गत दिग्द्वार मिदानो गतिद्वार-तत्रेदमादिसूत्र-स्य  
 सिद्धिं ज्ञते । नेरइयाणमित्यादि ॥ संवत्तीना मनुष्या पञ्चवतिच्छेदनकच्छेदराशिप्रमाणात् सच पञ्चवतिच्छेदनकदायीराशि रगे दशयिष्यते, त

गुणा । दिसाणुवाएण सद्यत्थोवा देवा महासुक्ती कप्पे पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेण दाहिणेण अ्संखेज्जगुणा  
 दिसाणुवाएण सद्यत्थोवा देवा सहस्सरं कप्पे पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेण दाहिणेण अ्संखेज्जगुणा, तण

सन् । दिसाणुवाएण सद्यत्थोवा सिद्धा दाहिणउत्तरेण पुरच्छिमेण सखिज्जगुणा पञ्चच्छिमेण विसिंहादिया हार १ । दिग्गनीमेले जीता संवयोडा सिद्ध द  
 विण उत्तरे भरतैरवतना थाडा तेभणी थोडासिद्ध पूर्व महाविदेह भणौ सय्यातगुणा पश्चिमे अधाग्यामे मतुयवणा तेभणी सिद्धा विगोपाधिक इति  
 दिग्गिहार ॥ १ ॥ इति गतिहारनो अन्तवहल कहै—एयसिण भते शेरइयाण तिरिख्खजोणियाण मनुस्साण देवाण सिद्धाण पचगइसमाणे । एहने  
 इभगवन् नारकीनो तिर्यवयोणियानि मनुष्यने देवतानि सिद्धने पावगति ते समासेकरी । सेण कयरे २ इति अरपावा बहयावा तुसावा विसिंहादिया ।  
 ते किद्धा २ थोडाइवे घणाइवे सरीखाइवे किद्धा विगोपाधिक इवे । गोवमा सवत्थोवा मनुस्स थेरइया अखिज्जगुणा देवा अखिज्जगुणा सिद्धा अ  
 णतगुणा तिरिख्खजोणिया अणतगुणा । हेमौतम संवयोडा मनुष्यनुदकछे इच्छिणि प्रमाणे आगे विचार कहै—तेइयकी नारकी असय्यातगुणा

स्यो नैरयिका असस्येयगुणा अदुलमात्रप्रदेशराजो मय्यन्धिनि प्रथमवर्गमूले द्वितीयवर्गमूलेन गृण्ति यावान् प्रदेशराज्ञा श्रंयति, तावत्प्रमाणासु घनीकृतस्य लोकस्यैकप्रादेशिकीषु श्रेणिषु यावन्तो नन प्रदेशा स्तावत्प्रमाणत्वात्, तेष्वो देवा असस्येयगुणा व्यन्तराणां ज्योतिष्काणां च प्रत्येक प्रतरासस्येयजागद्यतिश्रेणिगताकाशप्रदेशराज्ञिप्रमाणत्वात्, तस्य सिद्धा अन्तर्गुणा अन्तर्ज्योत्यन्तगुणत्वात्, तस्य स्तिर्यग्योनिका अन्तगुणा यन्त्रप्रतिकारिकाणां सिद्धेज्योत्यन्तगुणत्वात्, तदेव नैरयिकस्तिर्यग्योनिकमनुष्यदेवसिद्धरूपाणां पञ्चानामल्पबहुत्व मुक्त मिदानो नैरयिकस्तिर्यग्योनिकस्तिर्यग्योनिकमनुष्यमानुषीदेवद्वीषिदुलक्षणां नाना मयाना मल्पबहुत्वमज्जितसुरिदमाह-सएसिण व्रते । नरइयाणमित्यादि ॥ स

पर वज्रसमीववन्नगा समणाउसो । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा सिद्धा दाहिणउत्तरेण पुरच्छिमेण सखेज्जगुणा, पच्चिच्छिमेणं त्रिसेमाहिद्या दार १ । एएसिण व्रते । णेरइयाण तिरिस्सज्जोणियाण मणुस्साण देवाण सिद्धाणय पचगइसमासेण कयरे कयरेहितो धूप्यावा वज्जयावा तुल्लावा त्रिसेसाहिद्या वा ? गोयमा !

अगुवमात्र चैवप्रदय रागवन्न पदिले वर्गमूल गुणते बाज वर्गमूले गुणते प्रदेशराज्ञि देव तेतलमान स्यू घनकौजे धोलोका एहवो एकप्रदेशकौजे जेतनो ते नभप्रदय तेतलाप्रमाणवतो असस्येयगुणा व्यन्तरज्जतिपाणी प्रत्येकप्रतर सस्येयमानवर्गसि श्रेणिगत आकाश प्रदेशराज्ञिदेव ते प्रमाणेदे मिह अणतगुणा समन्वयो अन्तगुणा तमाटे तिर्यचवानिया अन्तगुणा । घनस्सतौकाय अन्तरकाय तम टे । एसिणमते शेरइयाण तिरिस्सज्जोणियाण मणुस्साण मणुस्सोण देवाण देवीण सदाणय अट्ठगइसमासेण कयरे २ इति भाषावा ४ । एह वृमगवन एह नारकोने तिर्यचने तिर्यचकोने मनुष्यणान देवने देवीने सिद्धने ए आठपट समासेकरो माहोमाहि करो किहा २ थाडा अधिक । गायमा सव्वट्ठोवाआ मणस्सीओ नगुसा अस्सखिज्जगणा शेरइया अस्सखिज्जगुणा । इगौतम सर्वथोधादो मनुष्यणी मनुष्यथो सत्ताकोसगुणो स्रो अधिकौदे पिण इहा थाडो ते समू रक्कममनुष्य माहिभन्वा तेमाट स्रो धो मनुष्य असस्येयगुणा त मनुष्यथो नारको असस्येयगुणा त मनुष्यथो अस्सखिज्जगुणा दवीओ अस्सखिज्जगुणाओ सि

वंस्तोका मानुष्यो मनुष्यस्त्रिय सख्येयकोटाकोटीप्रमाणत्वात्, तास्यो मनुष्या असुरयेयगणा दृढ मनुष्या समूर्च्छनजा अपि गृह्यन्ते, वेदस्या विम  
ज्जनात्, तथ समूर्च्छनजा वाक्तादिषु नगरनिहमनान्तेषु जायमाना असुरयेया प्राप्यन्ते तेस्यो नैरयिका असुरयेयगणा मनुष्या अतुल्यपदे पि श्रे  
यसहेयनागतप्रदेशरात्रिप्रमाणा लभ्यन्ते, नैरयिकान्त्यदुलमात्रक्षेत्रप्रदेशरात्रिसप्तकद्वितीयवर्गमूलप्रमाणश्रेणिगताकाशप्रदेशरा  
त्रिप्रमाणा स्ततो नगरसह्यगणा स्तस्य स्त्रिययोनिका स्त्रियो ऽसह्यगणा प्रतरावहेयनागवत्सह्यग्रेणिनञ प्रदशरात्रिप्रमाणत्वात्, तास्यो

सह्ययोवा मणस्सा णेरइया असखेज्जगुणा देवा असखेज्जगुणा सिद्धा अणतगुणा तिरिस्कजोणिया अण  
तगुणा । एएसिण ज्ञेन ! णेरइयाण तिरिस्कजोणिवाणं मणस्माणं मणस्सीण देवाण  
सिद्धाणय अणतिसमासेण कयरे कयरेहिंतो अण्णवा वज्जयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा !  
सह्ययोवा मणस्सीनु मणस्सा असखेज्जगुणा । णेरइया असखेज्जगुणा तिरिस्कजोणिणीनु असखेज्जगुणा

वा अचतगया तिरिस्कजोणिया अणतगुणा द्वार २ । ते नारकीयो तिर्यञ्च स्त्रो असख्यातगणो प्रतर असख्यातभाग वर्त्तमस्थान येणि नमप्रदेश रात्रिप्र  
माण ते तिर्यञ्चणोयो देवता असख्यातभाग वर्त्तगतप्रदेश रात्रिप्रमाण ते देवतायो देवायना सख्यातगणो ३२ गुण ३२ रूप इति वचनात देवोयो मि  
वजीव अमन्तगुणा ते सिद्धयो तिर्यञ्चयोनिया अमन्तगुणा सख्यातगुणा निर्गोट सिपात् इति गतिहार सपूर्ण ह्वे, द्विवे इन्द्रियहार कहेहे—दूजपदे तो  
जोहार ३ ४ एणनिण भते सरट्टिगण । एह हेमगवन् सेन्द्रिय । एमिट्टिगण वेरट्टिगण तदट्टिगण चडरिट्टिगण पचेट्टिगण अणेट्टिगण कए  
२ इति अण्णवा ४ । एकेट्टिगणे वेरट्टिगणे तेरट्टिगणे चैरिट्टिगणे पचेट्टिगणे अणेट्टिगणे तदट्टिगणे चडरिट्टिगणे पचेट्टिगणे अणेट्टिगणे कए  
पचेट्टिगणा । हेमोतम सर्व पचेट्टिग सख्यातयोजन कोडाकोडो तेदयो । चडरिट्टिग विसेसाहिया तेरट्टिग विसेसाहिया वट्टिग विसेसाहिया । चैरिट्टि  
यनिगेवाधिक विष्कभ सूचोप्रभूत सख्यातयोजन कोडाकोडो प्रमाण तेद्विगत्रियेपाधिक विष्कभ सूचोप्रभूत तर सख्यातयोजन कोडाकोडो प्रमाण तेद्व

पि देवा असुरयेयगुणा प्रतरासुरयेयगुणवत्स्यं सरयेयश्रेणिगतप्रदेशराशिमानत्वात्, तेभ्योपि देव्य सुरयेयगुणा द्वान्विशुद्धस्त्यात्, ताभ्योपि चि  
हुा अमन्तगुणा स्तेभ्योपि तिर्यग्योनिका अमन्तगुणा, अत्र युक्ति प्रागेवोक्ता, गत गतिद्वार मिदानो मिन्द्रियद्वार मयिरुत्याह-एगुसिण ज्ञते ।  
सहृदियाण्यमित्यादि ॥ स्वस्त्वोका पञ्चेन्द्रिया सरयेया दक्षमोजनकाटाकोटीप्रमाणविक्रमसूचीप्रतिप्रतरासरयेयनागवत्स्यसरयेयश्रेणिगताकाशप्रदे

तु । देवा असुखेज्जगुणा । देवीतु सखेज्जगुणातु सिद्धा अणुगतगुणा तिरिस्कजोणिया अणुगतगुणा दार २ ।  
एएसिण ज्ञते । सहृदियाण एगिदियाण वेइदियाण चउरिदियाण पचिदियाण अणुकेदियाणय  
कयरे कयरेरहितो अप्पावा वज्जयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सन्नत्योवा पचिदिया चउरि  
दियाविसेसाहियानेइदिया विसेसाहिया वेइदिया अणुनिदिया अणुगतगुणा । एगिदिया अणु  
सइदिया वि० । एएसिण ज्ञते ! सहृदियाण एगिदियाण वेइदियाण चउरिदिया पचिदियाण  
अपज्जत्तगाण कयरे कयरेरहितो अप्पावा वज्जयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सन्नत्योवा पचि

थी वेदिय विमेषाधिक सूचीप्रभूत अससमातोजन कोडाकोली प्रमाण । आणदिया अणुगतगुणा एगिदिया अणुगतगुणा सहृदिया विसेसाहिया । तेइ  
थी अनेन्द्रियसहृदिय अमन्तगुणा एकेन्द्रिय अमन्तगुणा वनस्यतामाहि घाल्लतेथेके तेइथी सोद्वय विमेषाधिकने वेइदियमाहिला । एएसिणभते सहृदियाण वेद  
याण तेइ दियाण चउरिदियाण पचिदियाणय अपज्जत्तगाण कयरे २ हितो अरपावा ४ । भगवन् एइ सेन्द्रियने एकेन्द्रियने वे-न्द्रियने तेरिन्द्रियने चौरि  
दयने पचेन्द्रियने अपयत्तामाहि किहा २ घकी घोडा घणा । गोयमा सन्नत्योवा पचिदिया अपज्जत्तगा चउरिदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया तेद  
या अपज्जत्तगा विसेसाहिया वेइदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया एगिदिया अपज्जत्तगा सहृदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया । हेभीतम  
मन्त्रीघोडा पचेन्द्रिय अपयत्ता एकाप्रते जेनहा अगुल अससमातभागमात्र एणु तेवलेप्रमाण तेइथी चउरिदिय अपयत्ता विमेषाधिक ममन्तअगुल

शराशिप्रमाणत्वात्, तेन्य यतुरिन्द्रिया विशेषाधिका विक्रमसूच्या स्तेषा म्रतसख्येयोजनकोटाकोटीप्रमाणत्वात्, तेन्योपि त्रीन्द्रिया विशेषाधिका स्तेषा विक्रमसूच्या म्रततसख्येयोजनकोटाकोटीप्रमाणत्वात्, तेन्योपि द्वीन्द्रिया विशेषाधिका स्तेषा विक्रमसूच्या म्रततसख्येयोजनकोटाकोटीप्रमाणत्वात्, तेन्योपि एकेन्द्रिया अनन्तगुणा सिद्धाना मन्तत्वात्, तेन्योपि एकेन्द्रिया अनन्तगुणा वनस्पतिकारिकाणा सिद्धेन्यो प्यनन्तगुणात्, तेन्योपि सेन्द्रिया विशेषाधिका द्वीन्द्रिया दीनमपि तत्र महेपात्, तदेवमुक्त नेकमीचिकाना मत्पवहुत्व निदाने मतेषा मेवा पर्याप्ताना द्वितीयमत्पवहुत्वमान-एणसिण जते । सइदियाणा मित्यादि ॥ सर्वस्तोका पचेद्विया अपर्याप्ता एकस्मिन्प्रतरे यावन्त्यहुलासरये यज्ञागमात्राणि सशकानि तावत्प्रमाणत्वात्, तेन्य यतुरिन्द्रिया अपर्याप्ता विशेषाधिका म्रतताहुलासख्येयज्ञागराकप्रमाणत्वात्, तेन्य स्त्रीन्द्रिया अपर्याप्ता विशेषाधिका म्रतततप्रतराहुलासरयेयज्ञागराकप्रमाणत्वात्, तेन्योपि द्वीन्द्रिया अपर्याप्ता विशेषाधिका म्रतततमाहुला

दिवा अपज्जत्तमा चउरिदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, तेइदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, वेइडिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, एगिदिया अपज्जत्तगा अणतगुणा, सइदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया । एण सिण जते ! सइदियाण एगिदियाण वेइदियाणं तेइदियाणं चउरिदियाण पचिदियाण पज्जत्तगाण कयरे कयरेहितो अप्पावा वज्जावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सइल्लोवा पज्जत्तगा चउरिदिया

चनरातभाग खण्ड तेतने प्रमाण तेइगी तेद्वि अपर्याप्ता विगेपाविक प्रभूतप्रतर असखात भागमात्र खण्डप्रमाण तेइगी वेद्वि अपर्याप्ता विगेपाविक प्रभूतप्रतर असखातभाग खण्डप्रमाण एकेद्वि अपर्याप्ता अनन्तगुणा सटा अनन्ता पारिमये तेइगी अपर्याप्ता विगेपाविक वेद्वि अपर्याप्तामा इ चालता । एणसिणमते सइदियाण । हेमज्जन एण सेद्वियने । पमिदियाण बेर दियाण तेर दियाण चउरिदियाण पचेद्वियाण पज्जत्तगाण कयरे २ हि तो अप्पावा ४ । एकेद्वियने वेद्विद्वियने तेइद्वियने चौरिद्वियने पचेद्वियने पर्याप्ताने किहा २ यकी अल्लमहुत्व ४ । गोयमा सइल्लोवा चउरिदिया पचत्त

संश्लेषेणानुगतप्रमाणत्वात्, तेन्य एकेन्द्रिया अपर्याप्ता अनन्तगुणा धनस्पतिकारिकायिकानामपर्याप्ताना मनन्ततया सदा प्राप्यमाणत्वात्, तेन्योपि सन्दिग्धा अपर्याप्ता द्वीन्द्रियाद्यपर्याप्तानामपि तत्र प्रक्षेपात्, गत द्वितीयमल्पबहुत्य मयुनैतेषामेव पर्याप्ताना मल्पबहुत्यसह-ग एसिण नते । सद्दिद्याणमित्यादि ॥ सर्वस्वोका द्यतुरिन्द्रिया पर्याप्ता यतोल्यायुष द्यतुरिन्द्रिया स्तत् प्रभूतकालमवस्थानाभावात्, यच्छासमये

पचिदिया पञ्चतगा विसेसाहिया, तद्दिद्या पञ्चतगा विसेसाहिया, एगिदिया पञ्चतगा अणतगुणा, सद्दिद्या पञ्चतगा सखेज्जगुणा । एएसिण नते । सद्दिद्याण पञ्चतगाप ज्ञातगाण कयरे कयरेहितो अप्पावा वज्जयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा । सद्य्लोवा सड्दिद्या अप्पज्जत्ता पञ्चतगा सड्दिद्या सखेज्जगुणा । एएसिण नते ! एगिदियाण पञ्चतगापञ्चतगाण कयरे कयरे हितो अप्पावा ? गोयमा ! सद्य्लोवा एगिदिया पञ्चतगा अप्पज्जत्ता अस० । एएसिण नते !

या पचिदिय पञ्चतगा विसेसाहिया । हेगौतम सर्वथोडा चौरिन्द्रिया पर्याप्ता जेमणो थोडा आरखामाहि तेदथो पचिदिय पर्याप्ता जेमणो विसेसाहिया प्रभूत अगुल असय्यात भागमान खण्डयमाण । वेद दियपञ्चतगा विसेसाहिया तेद दिय पञ्चतगा विसेसाहिया एगिदिय पञ्चतगा विसेसाहिया अण तगणा सद दियपञ्चतगा विसेसाहिया । वेद दिय पर्याप्ता त्रिशेषाधिक प्रभनप्रतर अगुल असय्यात भागमाचखड तेतेने प्रमाण तेदियपर्याप्ता विसेसाहिया धिक्क णकेदियपर्याप्ता अनन्तगुणा वनस्पतिपर्याप्ता अनन्तामाटै तेदथो सेदिय पर्याप्ता विसेसाहिया वेददियपर्याप्तानामाहि घालता । एएसिण भते सद्दिद्याण पञ्चतगाण अप्पज्जत्ताण कयरे २ हितो अप्पावा ४ । हेभगवन् ण्ड सेदियने पर्याप्ता अपर्याप्ताने किहा २ थको थोडा इत्यादि ४ ॥ गोयमा सद्य्लोवा सद दिया अप्पज्जत्ताण सड्दिद्या पञ्चतगा सखेज्जगुणा । हेगौतम सर्वथोडा सेदिय अपर्याप्ता इहा सेदियमाहि एकेदिय घालै मूळ पर्याप्ता सेदिय सदरातगुणा दुवे । एएसिणभते एगिदियाण पञ्चत अप्पज्जत्ताण कयरे २ हितो अप्पावा ४ । हेभगवन् एह एकेदियने पर्याप्ता अपर्याप्ता



स्तोका अपि प्रतरे यावत्पुलसरेय्यज्ञागमात्राणि सन्तानि तावत्प्रमाणा वेदितव्या स्तेन्य पञ्चेन्द्रियपर्याप्ता विशेषाधिका प्रज्ञताहुलसह्येयज्ञा गखरुभामत्वात्, तेन्योपि द्वीन्द्रिया पर्याप्ता विशेषाधिका प्रज्ञततरप्रतराहुलसह्येयज्ञागखरुभामत्वात्, तेन्योपि त्रीन्द्रिया. पर्याप्ता विशेषाधिका स्वभावत एव तेषा प्रज्ञततमप्रतराहुलसह्येयज्ञागखरुभामत्वात्, तन्य एकेन्द्रियाः पर्याप्ता अनन्तगुणा वनस्पतिकारियिज्ञाना पर्याप्ता ना मनन्तत्वात्, तेन्य सेन्द्रिया पर्याप्ता विशेषाधिका द्वीन्द्रियादीनामपि पर्याप्ताना तत्र प्रज्ञेपात्, गत वृत्तीयमतपयहुत्व-सम्प्रत्येतेपामेव सेन्द्रियाणा मत्येकपर्याप्ताऽपर्याप्तगताम्यलपयहुत्वान्याह-एवसिण ज्ञते ! इत्यादि सबस्तोका सेन्द्रिया अपर्याप्तका इह सेन्द्रिया एव बहव स्तत्रापि

वेददियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहितो अप्पावा ४ ? गोयमा । सब्बल्योवा वेडंदिवा अपज्जत्ता वेडंदिवा अपज्जत्ता असखेज्जगुणा । एएसिण ज्ञते ! तेडडिवाण पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे कयरेहितो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सब्बल्योवा तेडडिवा पज्जत्ताण अपज्जत्ताण असखेज्जगुणा । एएसिण ज्ञते ! चउरिदिवाण पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहितो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सब्बल्योवा चउरिदिवापज्जत्ता गा चउरिदिवा पज्जत्ताण असखेज्जगुणा । एएसिण ज्ञते ! पचेदियाण पज्जत्ता पज्जत्ताण कयरे कयरेहितो

माहि किहाधकौ थोडा घणा सरीखा विगेयाविक हुवे ४ ॥ गोयमा सब्बल्योवा एमिदिअ अपज्जत्ताण पज्जत्ताण सखेज्जगुणा । देगौतम सर्वथोडा एके द्विय पर्याप्तावाटर सूक्काअपर्याप्ता घणाहुवे एकेद्विय पर्याप्ता सख्यातगुणाहे । एएसिण भते पज्जत्ता २ ण कयरे २ हितो अप्पावा ४ । देमगयन् एह वेदन्द्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ताने किहा २ यकौ थोडा घणा इत्यादि । गोयमा सब्बल्योवा वेददिया पज्जत्ताण वेददिया अपज्जत्ताण असखिज्जगुणा । देगौतम सर्वथोडा वेदन्द्रिय पर्याप्ता जेतका प्रतरमा अगुल सख्यातप्रमाण तेकथी बरिअ अपर्याप्ता असख्यातगुणा असख्यात प्रतरभाग । एएसिण भ त तेददियाण पज्जत्ताण कयरे २ हितो अप्पावा ४ । देमगयन् एह तेद्विय पर्याप्ता अपर्याप्ताने किहा २ थौ थोडा घणा सरीखा विगेयाविक हुवे ।



स्तोका अपि प्रतरे यावत्पुलसख्येयज्ञागमात्राणि खलानि तावत्प्रमाणा वेदितव्या स्तेष्वप्येन्द्रियपर्याप्ता विशेषाधिका प्रभूतापुलसख्येयज्ञा गस्यन्नमानत्वात्, तेभ्योपि द्वीन्द्रिया पर्याप्ता विशेषाधिका प्रभूततरप्रतराहुलसरयेयज्ञागस्यन्नमानत्वात्, तेभ्योपि त्रीन्द्रिया पर्याप्ता विशेषाधिका स्वभावत एव तेषां प्रभूततमप्रतराहुलसख्येयज्ञागस्यन्नमानत्वात्, तस्य एकैन्द्रियाः पर्याप्ता अनन्तगुणा वनस्पतिकायिकानां पर्याप्ता ना मनन्तत्वात्, तेष्वपि सेन्द्रिया पर्याप्ता विशेषाधिका द्वीन्द्रियादीनामपि पर्याप्तानां तत्र प्रक्षेपात्, गत तृतीयमल्पबहुत्व-सम्प्रत्येतेषामेव सेन्द्रियाणां प्रत्येकपर्याप्ताऽप्यपर्याप्तगतान्वत्पुलसान्याह-एएसिण जते ! इत्यादि सर्वस्तोका सेन्द्रिया अपर्याप्तका इह सेन्द्रिया एव बहव स्तत्रापि

वेददियाण पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा । सवत्थोवा वेददिया अपज्जत्ता वेददिया अपज्जत्ता अपसखेज्जगुणा । एएसिण जते ! तेडदियाण पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सवत्थोवा तेडदिया पज्जत्ताण अपसखेज्जगुणा । एएसिण जते ! चउरिदियाण पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सवत्थोवा चउरिदियापज्जत्ता गा चउरिदिया पज्जत्ताण अपसखेज्जगुणा । एएसिण जते ! पचेदियाण पज्जत्ता पज्जत्ताण कयरे कयरेहिंतो

माहि किह्वाधकी थोडा घणा सरीखा विगोपाविक हुवे ४ ॥ गोयमा सवत्थोवा एगिदिय अपज्जत्ताण पज्जत्ताण सए जगणा । हेगौतम सर्वथोडा एके द्विय पर्याप्तावाटर सूज्जाअपर्याप्ता घणाहुवे एकाद्विय पर्याप्ता सख्यातगुणाहे । एएसिण भते पज्जत्ता २ ण कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । हेभगवन् एह वेदद्विय पर्याप्ता अपर्याप्ताने किह्वा २ यकी थोडा घणा इत्यादि । गोयमा सवत्थोवा वेददिया पज्जत्ताण वेददिया अपज्जत्ताण अन्नाखिज्जगुणा । हे गौतम सर्वथोडा वेदद्विय पर्याप्ता जेतसा प्रतरना अगुल सख्यातप्रमाण तेद्वी बदाद्विय अपर्याप्ता असख्यातगुणा असस्यात प्रतरभाग । एएसिण भ तू तेददियाण पज्जत्ताण कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । हेभगवन् एह तेद्विय पर्याप्ता अपर्याप्ताने किह्वा २ थो थोडा घणा सरीखा विगोपाविक हुवे ।

त्वात्, तेन्य सोजास्कायिका अमख्येयगुणा अस्येयलोकाकाशप्रदेशमाश्रयत्वात्, तेन्य पृथिवीकायिका विशेषाधिकार प्रभूतासङ्ख्येयलोकाकाशप्रदेशमाश्रयत्वात्, तेन्यो ऽष्कायिका विशापायिका प्रभूतरासङ्ख्येयलोकाकाशप्रदेशमाश्रयत्वात्, तेन्यो व्यापुकायिका विशापायिका प्रभूततमासङ्ख्येयलोकाकाशप्रदेशमानत्वात्, तेन्यो ऽष्कायिका अनन्तगुणा, सिद्धाना मनस्तत्वात्, तेन्यो वनस्पतिकायिका अनन्तगुणा अनन्तलोकाकाशप्रदेशराशिमनत्वात्, तेन्य सकायिका विशेषाधिकार पृथिवीकायिकानामपि तत्र प्रदृपात्, उक्तमीयिकानामप्यद्वयत्व मिदानी मतेपामेव पर्याप्ताना द्वितीयमल्प बहुत्वमाह-एगसिण जते ! सकाद्वयाणमित्यादि ॥ सुगम, सम्प्रत्यतपामेव पर्याप्ताना तृतीयमल्पबहुत्वमाह-एगसिण जते ! सकाद्वयाणमित्यादि ॥

याण कयरे कयरेरिहो अण्पावा१ ? गोयमा ! सन्नत्योवा तसकाइया तेउकाइया असखेज्जगुगा, पुढवि  
काइया विसेसाहिया, अउकाइया विसेसाहिया वाउकाइया विसेसाहिया अणतगुगा,  
वणस्सइकाइया अणतगुगा, सकाइया विसेसाहियावा । एणसिण नते ! सकाइयाणं पुढविअडयाण  
अउकाइयाण तेउकाइयाण वाउकाइयाण वणस्सइकाइयाण तसकाइयाणय अपज्जातगुगाण कयरे कय

हा २ यकी थोडा इत्यादि । ४ . गीयमा सब्थोवा तसकाइया तेउकाइया असखिजगणा । हेगीतम सर्वथोडा चसकाया भावना पाऊनौपरे तेहथी  
असख्यातगुण । पुढवीकाइया वि० घाठकाइया वि० वाठकाइया वि० भकाइया अण० वणसाइकाइया अण० सकाइया वि० । तेहथी पृथिवीकार्यिक  
विगेपाधिक प्रभूत् नसखात लोकाकाम प्रमाण तेहथी वाठकाय वि० प्रभूत् तमस० लोकाकाश तहथी चकाइया अणतगुण सिद्धता भणी तथा वनस  
नीकाय अनन्तगुण अनन्तलोकाकाम प्रमाण तेहथी सकाइय विगेपाधिक पळ्वीकायादिमानि धानता<sup>म्</sup>चोधपणे । एषिसण भते सकाइयाण पढवीका  
याण घाठ० तेउ० वाठ० वणसाइ० तसकाय० अपल्लसगाण कयरे २ हितो अपपावा ४ । सुभगवन् ण्ह सकाइयने पळ्वीकायेने अपकाय तेउ वा  
उ वनसनी चसकायेने अपर्याप्ताने किहा २ थकी थोडा तथा विगेपाधिक ४ । गीयमा सब्थोवा तसकाइया अपल्लसगा तेउकाइया अपल्लसगा अ

गमात्राणि स्रगानि तावदप्रमाणत्वात्तेषां तेज्योऽपर्याप्ता असस्येयगुणा प्रतरगताहुलासस्येयज्ञागखगमानत्वा देव त्रिषतुरिन्द्रियाल्पत्वान्यपि वक्तव्यानि, गत पक्षस्य बाहुल्यत्वात्सक चतुर्थमल्पवहुत्व सम्प्रत्येतपा सन्दिद्यादीना समुदिताना पर्याप्तापर्याप्ताशामल्पवहुत्वमाह-स्यसिण ज्ञत । इत्यादि ॥ इदं प्रागुक्तद्वितीयवृत्तीयाल्पवहुत्वज्ञावनानुसारिण स्वयं ज्ञावनीय, तत्त्वतो प्रावितत्वात्, गत मिन्द्रियद्वार मिदानी कायद्वार मयि कृत्याह-स्यसिण ज्ञत । सकाद्वयाण मित्यादि ॥ सवस्तोका खसक्त्यायिका द्वीन्द्रियादीनानेत्र वसक्त्यायिकत्वात्, तेषां च शेषकायापेक्षया अत्यल्प

चउरिदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, तेइदिया अपज्जत्तगा विंमसाहिया, वेइदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, एगिदिया अपज्जत्तगा अणतगुणा, सइदिया अपज्जत्तगा विंमसाहिया, एगिदिया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा, सइदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सइदिया विंमसाहिया ढार ३ । एएसिणं जते । सकाइयाण पुढविक्काइयाण अउकाइयाण तेउकाइयाणं वाउकाइयाण वगरसइकाइयाण तसकाइयाण अउकाइ

पर्याप्ता भावना पाकूल्येपरं तेहथो पचेद्विग्र पर्याप्ताविशेषाधिक जाणिवा तेहया तेन्द्रियपर्याप्ता विशेषाधिक । पचेद्विग्र अपल्लसगा असखज्जगुणा चररिटिया अपल्लसगा वि० तेद्विग्र अपल्लसगा वि० वेददिया अपल्लसगा वि० एगिटिया अपल्लसगा वि० । तेहथी पचेद्विग्र अपर्याप्ता असखातगुणा तेहथी चौरिटिया अपर्याप्ता विशेषाधिक तेहथी वेदन्द्रिय अपर्याप्ता विशेषाधिक तेहथी एकेंद्रिय अपल्लसगा वि० । तेहथी पचेद्विग्र अपर्याप्ता असखातगुणा तेहथी चौरिटिया अपर्याप्ता विशेषाधिक तेहथी वेदन्द्रिय अपर्याप्ता विशेषाधिक । एगिटिया पल्लसगा सखिज्जगुणा सददियपल्लसगा वि० द्वार ॥ ३ ॥ तेहथी एकेंद्रियपर्याप्ता सख्यातगुणा तेहथी सेन्द्रिय पर्याप्ता विशेषाधिक जाणना इति द्वतीयद्वार तीज पटे तीसरीद्वार सपूर्णद्वार ॥ एएसिणभ ते सकाद्वारं पटवीकारयाण आसका० तेसका० वारका० यणसुदे का० तसका० अकाद्वारं कयेर २ इति अपपावा ४ । इभगयन् कायद्वारकथो एह सकायने पृथोकायने अपकायने तेसकायने वारकायने वमसतीकायने तसकायने अकायने एकमाद्वि कि

सुगम, साम्प्रतनेतेषामेव सकायिकादीना प्रत्येक पर्यासाऽपर्याप्तगत मत्पथहुत्वमाह-एएसिण ज्ञते । सकाश्याण पञ्जत्ताऽपञ्जत्ताणमित्यादि ॥ सुगमम्, सम्प्रत्येतेषामेव सकायिकादीना समुदिताना पर्यासाऽपर्याप्ताना मत्पथहुत्व पञ्चममाह-एएसिण ज्ञते । सकाश्याणमित्यादि ॥ सर्वस्ते

विसेसाहिया । एएसिण ज्ञते । सकाश्याण पञ्जत्ता पञ्जत्ता कयरे कयरेहितो अप्पावा वज्जयावा तुप्पावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सकाश्या अणपञ्जत्तागा, सकाश्या पञ्जत्तागा सखेज्जगुणा । एएसिण ज्ञते ! पुढविकाश्याण पञ्जत्ता पञ्जत्ता कयरे कयरेहितो अप्पावा वज्जयावा तुप्पावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पुढविकाश्या अणपञ्जत्तागा, पुढविकाश्या पञ्जत्तागा सखिज्जगुणा । एएसिण ज्ञते ! अणुकाश्याण पञ्जत्ता पञ्जत्ता कयरे कयरेहितो अप्पावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा अणुकाश्या अणु

नस्योकाय पर्यासा अनन्तगुणा । सकाश्या पञ्जत्ता वि० । तेहथी सकाश्या पर्याप्ता विरोपाधिक । एएसिण भते सकाश्याण पञ्जत्तापञ्जत्ताणय क यरे २ हितो अप्पावा ४ । भगवत् एह सकाश्याने पर्याप्ता अपर्याप्ताने किहा २ थो थोडा इत्यादि । गोयमा सव्वत्थावा सकाश्या अपञ्जत्तागा सकाश्या पञ्जत्तागा सखेज्जगुणा । हेगौतम सर्वथाहा सकाश्या अपर्याप्ता तेहथी सकाश्या पर्याप्ता सव्वत्तागुणा । एएसिण भते पढवीकाश्या पञ्जत्ता २ णय कयरे २ हितो अप्पावा ४ । हेभगवन् एह पढवीकायिकेने पर्याप्ता अपर्याप्ताने कहा २ थो थोडा घणा विरोपाधिक हुवे । गोयमा सव्वत्था वा पुढवीकाश्या अपञ्जत्तागा पुढवीकाश्या पञ्जत्तागा सखिज्जगुणा । हेगौतम सर्वथाहा पढवीकाय पर्याप्ता सव्वत्तागुणा । एएसिण भते आउकाश्याण पञ्जत्तापञ्जत्ताणय कयरे २ हितो अप्पावा ४ । हेभगवन् एह अप्पावा विरोपाधिक । गोयमा सव्वत्थावा आउकाश्या अपञ्जत्तागा आउकाश्या पञ्जत्तागा सखिज्जगुणा । हेगौतम सर्वथाहा अप्पावा अपर्याप्ता सव्वत्तागुणा । एएसिण भते तेउकाश्याण पञ्जत्ता २ णय कयरे २ हितो अप्पावा । हेभगवन् एह तेउकायने पर्याप्ता अपर्याप्ताने किहाथो थोडा घणा इ

रेहिती झुप्पावा? गोयमा ! सवृत्त्योवा तसकाइया अपज्जत्तगा, तेउकाइया अपज्जत्तगा झुसखे ज्जग्गुणा, पुढविकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, झुउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, वाउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, वणस्सइकाइया अपज्जत्तगा झुणत्तगुणा । सकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया एएसिणं जत्ते ! सकाइयाणं पुढविकाइयाण झुउकाइयाण तेउकाइयाण वाउकाइयाण वणस्सइकाइयाण तसकाइयाणय पज्जत्तगाण कयरे कयरेहिती झुप्पावा? गोयमा ! सवृत्त्योवा तसकाइया पज्जत्तगा, तेउकाइया पज्जत्तगा झुसखेज्जग्गुणा, पुढविकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया । झुउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, वाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, वणस्सइकाइया पज्जत्तगा झुणत्तगुणा, सकाइया पज्जत्तगा

सखिज्जग्गुणा । हेगौतम सर्वयौथोडा वसकाइया अपर्यापता तेहथो तेउकाय अपर्यापता अससयातगुणा । पुढवोकाइया अपज्जत्तगा वि० आउकाइया अपज्जत्तगा वि० वाउकाइया अपज्जत्तगा वि० वणस्सःकाइया अपज्जत्तगा वणत्तगुणा । तेहथो प्रथियोकाइया अपर्यापता विसेसाहिक तेहथो अप्पुकाइया अपर्यापता विसेसाहिक तेहथो वाउकाइया अपर्यापता वनम्मतोकाइया अपर्यापता वनत्तगुणा । सकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया वाउकाइया अपज्जत्तगा वि० । तेहथो सनाइया अपर्यापता विसेसाहिक । एणमिण भते सकाइयाण पुढवोकाइयाण आउ० तेउ० वाउ वणस्स० तस्सका० पज्जत्तगाणय कउरे २ हितो अप्पुमा ४ । हेभगवन् ए सनाउने पृथ्वोकाइयाणे अप्पुमा० तेउ वा उ वनम्मतो वस० पर्यापताने किडा २ थो थोडा प्रथवा घणाहवे ४ । गोयमा सवृत्त्योवा तसकाइया पज्जत्तगा वि० तेउकाइया पज्जत्तगा वि० अय० । हेगौतम सर्वयौडा वसकाय पर्यापता तेहथो तेउकाय पर्यापता वि० अससयातगुणा । पुढवोकाइया पज्जत्तगा वि० आउकाइया पज्जत्तगा वि० वाउ काइया अपज्जत्तगा वि० वणस्सइकाइया पज्जत्तगा अण० । पृथ्वोकाइया पर्यापता वि० अप्पुकाइया पर्यापता वि० वायुकाय पर्यापता विसेसाहिक तेहथो व

विशेषाधिका १० । ततो वनस्पतयो उपर्याप्ता अनन्तगुणा ११ । पर्याप्ता सख्येयगुणा १२ । तदेवं क्रायद्वारे सामान्येन पञ्चसूत्राणि प्रतिपादिता  
नि । सम्यक्सिद्धेव द्वारे सूक्ष्मवादरादिर्नेदेन पञ्चदशसूत्राण्यार-एवसिण जते । सुहुमाणमित्यादि ॥ सर्वसोक्ता सूक्ष्मैर्जरायिका असख्येय

तृणा सखेज्जगुणा । एवसिण जते ! तसकाइयाण पज्जत्ता पज्जत्ताण कयरे कयरेहिती अण्णावा१ गोय  
मा । सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तगा , तसकाइया अपज्जत्तगा असखेज्ज० । एवसिण जते ! सकाइयाण  
पुढविकाइयाण अण्णावा१ तसकाइयाण वाउकाइयाण वणस्सइकाइयाण तसकाइयाण पज्जत्ता २ ण  
कयरे कयरेहिती अण्णावा१ ? गो० । सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तगा , तसकाइया अपज्जत्तगा असखे  
ज्जगुणा , तसकाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा पुढविकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया , अण्णावा१ अ  
पज्जत्तगा विसेसाहिया , वाउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया , तसकाइया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा , पुढवि

असख्यातगुणा । एवसिण जते सकाइयाण पुढविकाइयाण अण्णावा१ तसकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे २ हिती अण्णावा १ ।  
हेभगवन् एह सक्कायने पुच्छोकायने अरकायने तेरकायने वायुकायने वनस्पतीकाय नमकाइया पर्या० अप० किहा २ यो योहा इत्यादि । गोयमा स  
वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तगा तसकाइया अपज्जत्तगा असखिज्जगुणा । हेभूतत सर्वयोहा नमकाइया पर्याप्ता नमकाइया अपर्याप्ता असख्यातगुणा ।  
तेरकाइया अपज्जत्तगा असखिज्जगुणा । तेहयो तेरकाय अपर्याप्ता असख्यातगुणा । पुढविकाइया अपज्जत्तगा वि० वाउका अप०  
वि० तेरका० अप० सखेज्जगुणा । तेहयो पुच्छोकायिक अपर्याप्ता अण्णावा१ विसेसाहिया वायुकायिक अपर्याप्ता विगेषा  
धिक तेहयको तेरकाय पर्याप्ता सख्यातगुणा । पुढविकाइया पज्जत्तगा वि० वाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया वणस्स  
इकाया अपज्जत्तगा अण्णतगुणा । पुच्छोकाय पर्याप्ता विगेषाधिक वायुकाय पर्याप्ता विगेषाधिक वनस्पतीकाय पर्याप्ता



का स्वसकायिका १ । पर्याप्तका स्तेज्य स्वसकायिका एवा उपर्याप्तका असह्यगुणा द्विन्द्रियादीनामपर्याप्ताना पर्याप्तद्वीन्द्रियादिभ्यो ऽसह्येयगु  
णत्वात् २ । तत स्तेजरकायिका अपर्याप्ता असह्येयगुणा असह्येलोकाकाशप्रदेशप्रमाणत्वात् ३ । तत पृथिव्यम्बुवायसो ऽपर्याप्ता क्रमेण विशे  
षाधिका ६ । तत स्तेजरकायिका पर्याप्तका सख्येयगुणा सूक्ष्मेयपर्याप्तस्य पर्याप्ताना सख्येयगुणत्वात् ७ । तत पृथिव्यम्बुवायव पर्याप्ता क्रमेण

ज्जतगा, आउकाइया पज्जतगा सखिज्जगुणा । एएसिण भते ! तेउकाइयाण पज्जता पज्जताण कयरे  
कयरेहितो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तेउकाइया अपज्जतगा, तेउकाइया पज्जतगा सखिज्जगुणा  
एएसिण भते ! वाउकाइयाण पज्जता पज्जताण कयरे कयरेहितो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वाउ  
काइया अपज्जतगा, वाउकाइया पज्जतगा सखिज्जगुणा । एएसिण भते ! वणस्सड्काइयाण पज्जत्ता २ णं  
कयरे कयरेहितो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वणस्सड्काइया अपज्जतगा, वणरसड्काइया पज्ज

त्वादि । गोयमा सव्वत्थोवा तेउकाइया अप० तेउका० पज्ज० सखिज्जगुणा । हेगौतम सर्वथोडा तेउकाइया अपर्याप्ता तेउकाइया पर्वाप्ता सख्या  
गुणा । एएसिणभते वाउकाइयाण पज्जत्ता २ यय कयरे २ हितो अपपावा ४ । हेभगवन् एह वाउकायने पर्याप्ता अपर्याप्ताने किंवा २ थो थोडा  
यथा इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा तेउकाइया अप० वाउका० पज्ज० सखिज्जगुणा । हेगौतम सर्वथोडा तेउकाइया अप० वाउकाइया पर्याप्ता सखि  
तगणा । एएसिण भते वणस्सड्काइयाण पज्जत्ता २ यय कयरे २ हितो अपपावा ४ । हेभगवन् एह वनस्सत्तीकायने पर्या० अप० ने किंवा २ थो थोडा घण  
इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा वणस्सड्काइया अप० वणस्सड्काइया पज्ज० सखिज्जगुणा । हेगौतम सर्वथोडा वनस्सत्तीकायिक पर्या० वनस्सत्तीकायिक  
अपर्या० सखातगुणा । एएसिण भते तसकाइयाण पज्जत्ता २ यय कयरे २ हितो अपपावा ४ । हेभगवन् एह वसकाय पर्या० अप० किंवा २ थो थोडा  
घणा इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तगा तसकाइया अपज्जतगा वसकाइया पर्या० वसकाय अप०



लोककाशमदेशप्रमाणत्वात्, तेन्य सूक्ष्मपृथिवीकायिका विशेषाधिकार प्रभूतासम्येयनोकाकाशमदेशप्रमाणत्वात्, तेन्य सूक्ष्माप्यकायिका, प्रभू-  
ततरासंख्येयसोकाकाशमानत्वात् २। तेन्य सूक्ष्म वायुकायिका विशेषाधिकार प्रभूततमासंख्येयसोकाकाशमदेशप्रदेशप्रमाणत्वात्, तेन्य सूक्ष्मनि-  
गोदा यसरयेयगुणा (यथाय ३०००) सूक्ष्मयदण वादरख्यवच्छेदाय, द्वित्रिधाहि-निगोदा सूक्ष्मा वादरा य, तत्र वादरा सूरणकादादिपु सूक्ष्मा

काइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, अण्णकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, वाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया,  
अण्णपज्जत्तगा वणस्सइकाइया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा, सकाइया अण्णपज्जत्तगा विमसाहिया, सकाइया पज्जत्त-  
गा सखेज्जगुणा सकाइया विमसाहिया, एणसिण भन्ते ! सुज्जमाण सुज्जनपुढावेकाइयाण सुज्जमअण्णउकाइ-  
याण सुज्जमतेउकाइयाण सुज्जमवणरसइकाइयाण सुज्जमणिउगाणय कयरे कयरेहिता  
अण्णपावा? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुज्जमतेउकाइया, सुज्जमपुढावेकाइया विमसाहिया सुज्जमअण्णउकाइया

अण्णपज्जत्तगा । सकाइया अण्णपज्जत्तगा विसेसाहिया वणस्सइकाइया पज्जत्तगा सखिज्जगुणा । सकाइया अण्णपत्ता विशेषाधिक वनरपत्तौकाइया पर्वात्ता  
सम्यातगुणा । सकाइया पज्जत्तगा विमसाहिया । सकाइया पर्वात्ता विशेषाधिक । पचसूत्राणिमामाग्गेन प्रतिपाटितानि अधनान्मस्सवाटराटिभेदेन  
पचटणमूत्राराइ । ण पाचसूत्र सामान्यणे काययागहारे कल्ल, हिये सूक्ष्मवाटर भेदेकरो १५ मूत्र कइछे—एणसिणभते सहमाण महुमपुढवौकाइया  
ण सहमपाउकाइयाण सहम-तेउ सहमवाउ-सहम वणस्स-सहमनिगोयाणय कयरे २ हितो अण्णपावा ४ । हेमगवन् ण्हने सूक्ष्मपृथ्वीकायने मन्मअण्णका-  
यने मन्मतेउकायने मन्मनायुकायने मन्मवनरपत्तौकाय मन्मनिगोदेने किहा २ यौधोडा घणा मरीखा विशेषाधिक इवे । गोयमा मवत्थोवा सहम ते  
उकाइया महुमपुढवौकाइया विसेसाहिया । हेमोतम सर्वथाडा म्हा तेउकाय तेइथी सूक्ष्म पृथ्वीकाय विशेषाधिक । सहम पाउकाइया वि० सहमवा  
उकाइया वि० सहमनिगोया असे० । म्हा अण्णकाय विशेषाधिक म्हायायुकायिक वि० तेइथी म्हा निगोद-असत्थातगुणो । सहमयणस्सरकाइया अण्ण

इ-एरसिण ऋते । सुहुमाण पज्जत्तापज्जत्ताणमित्थादि ॥ इह व्यादरेपु पर्याप्त्यो उपर्याप्ता अस्सहेयगुणा एकैकपर्याप्तनिश्रया अस्सहेयानामपर्याप्तानां मुत्थादा तयाचोक्त-प्राक् प्रथमे प्रज्ञापनास्ये पदे-पज्जत्तागनिरसाय अपज्जत्तगा वक्कमन्ति, जत्थ एगो तत्थ नियमा अस्सयेज्ज इति, सस्सेपु पुन नोय कम पर्याप्ताया पर्याप्तापेत्तया धिरकालावस्थायिन इति सदेव ते दहयो तन्मग्गे, तत्त उक्त-सर्वलोका सूत्ता अपर्याप्ता स्तेन्य सूत्ता पर्याप्तका सहेयगुणा, एव पृथिवीकायिकादिष्वपि प्रत्येक प्रावनीय, गत वतुंमल्पवहुत्व मिदानी सर्वेषा समुदिताना पर्याप्तापर्याप्तगत पब्ब

मनिगोदा पज्जत्तगा अस्सखेज्जगुणा, सुज्जमवणस्सइकाइयापज्जत्तया अणत्तगुणा, सुज्जमापज्जत्ता विसेसा हिया दार ३ । एरसिण ऋते ! सुज्जमाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरोहितो अप्पावा ४ ? सव्वत्थोवा सुज्जमा अणत्तगुणा सुज्जमा पज्जत्तगा सखेज्जगुणा । एरसिण ऋते ! सुज्जमपुढविकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे २ हितो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुज्जमपुढविकाइया अणत्तया, सुज्जमपुढविआइया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा । एरसिण ऋते ! सुज्जमअणत्तकाइयाण पज्जत्ता २ णं कयरे २ हितो अप्पावा ४ गोयमा । सव्व

वा सहमपुढवीकाइया अप० सुहुमपुढवीकाइया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा । हेगोतम सर्वयोडा सूचमपुढवीकाय पर्याप्ता मत्था तगुणा पर्याप्ता अपर्याप्ताने । एरसिण भत्त सहम आउकाइयाण पज्जत्ता २ णय कयरे २ हितो अपपावा ४ । हेभगवन् एह मूचनुत्ताने पर्याप्ता अपर्याप्ता किंवा २ वी घोडा घणा गोयमा सव्वत्थोवा सुहुमआउकाइया अपज्जत्तगा सुहुम आउकाइयाए पज्जत्तगा सखिज्जगुणा । हेगोतम सर्वयोडा सूचम अस्सकायेने पर्याप्ता अपर्याप्ता तेइवी सूचम अपकाइया पर्याप्ता सख्यातंगुणा । एरसिण सुहुम तेउकाइयाण पज्जत्ता २ णय कयरे २ हितो अपपावा ४ । हेभगवन् एह सूचम तेउकाय पर्याप्ता अपर्याप्ताने किंवा २ वी घोडा घणा । गोयमा सव्वत्थोवा सुहुम तेउकाइया अपज्जत्तगा सुहुमतेउकाइया पज्जत्तगा सखिज्जगुणा । हेगोतम सर्वयोडा सूचम तेउकाय अपर्याप्ताने सख्यातंगुणा । एरसिण भत्ते सु

अपञ्जतया विसेसाहिया, सुजमवाउकाइया अपञ्जतया विसेसाहिया, सुजमनिगोदा अपञ्जतगा अ  
 सखेजगुणा, सुजमवणस्सडकाइया अपञ्जतगा अणतणुणा, सुजमा अपञ्जतगा विसेसाहिया एएसिण  
 जते ! सुजमपञ्जतगाणं सुजमपुढविकाइयपञ्जतगाणं सुजमअउकाइयपञ्जतगाणं सुजमतेउकाइयपञ्जा  
 तगाणं सुजमवाउकाइयापञ्जतगाणं सुजमवणस्सडकाइयापञ्जतगाणं सुजमनिगोदपञ्जतगाणय कयरे कय  
 रेहिती अप्पावा ४ ? गोयमा ! सख्योवा सुजमतेउकाइया पञ्जतगा, सुजमपुढविकाइयापञ्जतगा वि  
 सेसाहिया, सुजमअउकाइया पञ्जतगा विसेसाहिया, सुजमवाउकाइया पञ्जतगा विसेसाहिया, सुज

अणततगुणा सू अप० विशेषाधिक । एएसिण भते सुहुम पञ्जतगाणं सुहुमपुढवीकाइया पञ्जतगाणं सु आउ० पञ्जतगा सु० तेउ० पञ्ज सु० वाउका  
 पञ्ज० सु० वणस्स० पञ्ज० सु० निगोय पञ्जतगाणय कयरे २ हिती अप्पावा ४ । हेभगवन् एह सूचुम पर्याप्ताने सू० पुढ्वीकायपर्याप्ताने सू० अरकाय  
 पर्या० सू० तेउका० पर्या० सू० वायुकाय पर्या० सू० वनस्सतीकाय पर्या० सू० निगोद पर्याप्ताने किहा २ धौ घोडा इत्यादि । गोयमा सख्योवा सुहुम  
 तेउकाइया पञ्जतगा सु० पुढ्वीकाइया अप० वि० सु० आउकाइया पञ्ज० वि० सु० निगोय पञ्जतगा सखिजगुणा सु० वणस्स  
 डका० पञ्जतगा अणतगुणा सुहुम पञ्जतगा विसेसाहिया । हेगौतम सर्वगोडा सूचुम तेउकाय पर्याप्ता तेउधौ सूचुम पुढ्वीकाय पर्या० वि० सू० अरका  
 य पर्याप्ता वि० सूचुम वायुकाय प० विशेषाधिक सूचुम निगोद प० सख्यातगुणा सूचुम वनस्सतीकाय प० अणतगुणा सूचुम सर्वपर्याप्ता विशेषाधि  
 क । एएसिण भते सहमाण पञ्जता २ णय कयरे २ हिती अप्पावा ४ । एहुने हेभगवन् सूचुम पर्या० अप० ने किहा २ धौ घोडा इत्यादि । गोयमा स  
 ख्योवा सुहुम अपञ्जतगा सुहुमपञ्जतगा सखिजगुणा । हेगौतम सर्वगोडा सूचुम अपर्याप्ता सूचुमपर्याप्ता सख्यातगुणा । एएसिण भते सुहुमपुढ  
 वीकाइयाण पञ्जता २ णय कयरे २ हिती अप्पावा ४ । एहुने हेभगवन् सूचुम अरकायने पर्या० अप० ने किहा २ धौ घोडा सया । गोयमा सख्या

ह-एषिण भते । सुहुमाण पज्जत्तापज्जहाणमित्यादि ॥ इह दादरेपु पर्याप्तो उपर्याप्ता एककपर्याप्तिनिश्रया असह्येयानामपर्याप्तानां मुत्थादा तथाचोक्त-प्राक् प्रथमे प्रज्ञापनास्ये पदे-पज्जत्तगानिस्साय अपज्जत्तगा वक्कमस्ति, जत्थ एगो तत्थ नियमा असह्येज्ज इति, सस्सेपु पुन नांय कम पर्याप्ताद्या पर्याप्तापेत्तया चिरकालावस्थायिन इति संदेव ते दइयो सज्जन्ते, तत उक्त-सर्वज्जोका सूत्ता अपर्याप्ता स्तेज्ज सूत्ता पर्याप्तका सह्येयगुणा, एव पृथिवीकायिकादिष्वपि प्रत्येक प्रावनीय, गत चतुर्थमल्पवहुत्व मिदानो सर्वपा समुदिताना पर्याप्तापर्याप्तगत पञ्च

मनिगीदा पज्जत्तगा अस्खेज्जगुणा, सुज्जमवणरसइकाइयापज्जत्तया अणतगुणा, सुज्जमापज्जत्ता विसेसा हिया दारं ३ । एएसिण भते ! सुज्जमाण पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहितो अप्पावा ४ ? सवत्थोवा सुज्जमा अपज्जत्तगा सुज्जमा पज्जत्तगा सखेज्जगुणा । एएसिण भते ! सुज्जमपुढविकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे २ हितो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सवत्थोवा सुज्जमपुढविकाइया अपज्जत्तया, सुज्जमपुढविकाइया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा । एएसिण भते ! सुज्जमअण्डकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे २ हितो अप्पावा ४ गोयमा ! सह

वा सहमपुढवोकाइया अप० सुहुमपुढवोकाइया पज्जत्तगा सखिज्जगुणा । हेगौतम सर्वघोडां सूज्जमपुढवोकाय पर्याप्ता मत्था तगुणा पर्याप्ता अपर्याप्तानि । एएसिण भते सहम अण्डकाइयाण पज्जत्ता २ णय कयरे २ हितो अप्पावा ४ । हेभगवन् ए ३ मज्जमपुढवोकाइयाण पर्याप्ता किदा २ धो घोडा घणा इत्यादि । गोयमा सवत्थावा सुहुमअण्डकाइया अपज्जत्तगा सुहुम आठकाइयाए पज्जत्तगा सखिज्जगुणा । हेगौतम सर्वघोडा सूज्जम अण्डकायने पर्याप्ता अपर्याप्ता तेइधो सूज्जम अप्पावा पर्याप्ता सख्यातगुणा । एएसिण सुहुम तेउकाइयाण पज्जत्ता २ णय कयरे २ हितो अप्पावा ४ । हेभगवन् ए ३ सूज्जम तेउकाय पर्याप्ता अपर्याप्तानि किदा २ धो घोडा घणा । गोयमा सवत्थोवा सुहुम तेउकाइया अपज्जत्तगा सुहुम तेउकाइया पज्जत्तगा सखिज्जगुणा । हेगौतम सर्वघोडां सूज्जम तेउकाय अपर्याप्तानि सूज्जम तेउकाय अपर्याप्तानि सख्यातगुणा । एएसिण भते सु

अपञ्जतया त्रिसेसाहिया, सुजमवाउकाइया अपञ्जतया त्रिसेसाहिया, सुजमनिगोदा अपञ्जतया अप  
सखेजगुणा, सुजमवणस्सडकाइया अपञ्जतया अपणतणुणा, सुजमा अपञ्जतया त्रिसेसाहिया एणसिण  
भते ! सुजमपञ्जतगणं सुजमपुढविकाइयपञ्जतगणं सुजमअउकाइयपञ्जतगणं सुजमतेउकाइयपञ्ज  
तगण सुजमवाउकाइयापञ्जतगणं सुजमवणस्सडकाइयापञ्जतगण सुजमनिगोदपञ्जतगणय कयरे कय  
रेहिती अप्पावा ४ ? गोयमा ! सख्योवा सुजमतेउकाइया पञ्जतगा, सुजमपुढविकाइयापञ्जतगा वि  
सेसाहिया, सुजमअउकाइया पञ्जतगा त्रिसेसाहिया, सुजमवाउकाइया पञ्जतगा त्रिसेसाहिया, सुज

अणततगुणा सू अप० विशेषाधिक । एणसिण भते सुहुम पञ्जतगाण सुहुमपुढवीकाइया पञ्जतगाण सु आउ० पञ्जतगा सू तेउ० पल सु० वाउवा०  
पञ्ज० स० वणस्स० पञ्ज० सू० निगोय पञ्जतगाणय कयरे २ हिता अप्पावा ४ । हेमगवन् एह सूचुम पर्याप्ताने सू० पद्धोकायपर्याप्ताने सू० अरकाय  
पर्या० सू० तेउका० पर्या० सू० वायुकाय पर्या० सू० वनसतीकाय पर्या० सू० निगोद पर्याप्ताने किहा २ धो घोडा इत्यादि । गोयमा सख्योवा सुहुम  
तेउकाइया पञ्जतगा सु० पुढवीकाइया अप० वि० सू० आउकाइया पञ्ज० वि० सू० निगोया पञ्जतगा सखिजगुणा स० वणस्स  
रका० पञ्जतगा अणतगुणा सुहुम पञ्जतगा त्रिसेसाहिया । हेगौतम सर्वयोडा सूचुम तेउकाय पर्याप्ता तेउधो सूचुम पद्धोकाय पर्या० वि० सू० अरका  
य पर्याप्ता वि० सूचुम वायुकाय प० विशेषाधिक सूचुम निगोद प० सख्यातगुणा सूचुम वनसतीकाय प० अणतगुणा सूचुम सर्वपर्याप्ता विशेषाधि  
क । एणसिण भते सुहुमाण पञ्जता २ णय कयरे २ हिता अप्पावा ४ । एहने हेमगवन् सूचुम पर्या० अप० ने किहा २ धो घोडा इत्यादि । गोयमा स  
ख्योवा सुहुम अपञ्जतगा सुहुमपञ्जतगा सखिजगुणा । हेगौतम सर्वयोडा सूचुम अपर्याप्ता सूचुमपर्याप्ता सख्यातगुणा । एणसिण भते सुहुमपुढ  
वीकाइयाण पञ्जता २ णय कयरे २ हिता अप्पावा ४ । एहने हेमगवन् सूचुम अरकायने पर्या० अप० ने किहा २ धो घोडा चया । गोयमा सख्योवा

इ-एगसिण ऋते । सुदुभाण पज्जतापज्जसाणमित्यादि ॥ इए दादरेपु पर्याप्तस्यो उपर्याप्ता असहेयगुणा एकैकपर्याप्तनिश्रया असहेयानामपर्याप्ताना मुत्थादा तथाचोक्त-प्राक् प्रथमे प्रज्ञापनारम्भे पदे-पज्जतगनिरसाय् अपज्जतगा वक्कमन्ति, जत्य गगो तत्य नियमा असय्येज्ज इति, सत्त्वेपु पुन नाय कम पर्याप्ताया पर्याप्तापेक्षया चिरकालावस्थायिन इति सदेव ते ग्रहयो लभ्यन्ते, तत उक्त-सर्वन्नोका सूद्धा अपर्याप्ता स्लेज्य सूद्धा पर्याप्तका सहेयगुणा, एव पृथिवीकापिकादिष्वपि प्रत्येक प्रावनीय, गत वतुयंमल्पवहुत्य मिदानी सर्वेषा समुदिताना पर्याप्तापर्याप्तगत पच्च

मनिगोदा पज्जत्तगा अस्सखेज्जगुणा, सुज्जमवणस्सइकाइयापज्जत्तया अणतगुणा, सुज्जमापज्जत्तया विस्सेसा हिंया दार ३ । एएसिण भत्ते । सुज्जमाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहिंतो अण्णवा ४ ? सवत्थोवा सुज्जमा अण्णत्तगा सुज्जमा पज्जत्तगा सखेज्जगुणा । एएसिण भत्ते ! सुज्जमपुढविकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे २ हिंतो अण्णवा ४ ? गोयमा ! सवत्थोवा सुज्जमपुढविकाइया अण्णत्तया, सुज्जमपुढविकाइया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा । एएसिण भत्ते ! सुज्जमअण्णत्तगा पज्जत्ता २ ण कयरे २ हिंतो अण्णवा ४ गोयमा ! सवत्थ

वा सहस्रपृष्ठवीकाद्या अप० सहस्रपृष्ठवीकाद्या पञ्चतगा सखिजगुणा । हेगौतम सर्वघोडाः सूक्ष्मपृष्ठीकाय अपर्याप्ता सूक्ष्मपृष्ठीकाय पर्याप्ता सख्या तगुणा पर्याप्ता अपर्याप्ताने । एएसिण भत सहस्रमावकाःयाण पञ्चत्ता २ णय कयरे २ हितो अप्पाया ४ । हेभगवन् एह सन्नुनन्नाकारने पर्याप्ता अपर्याप्ता किह्वा २ धी घोडा घणा । मायमा सब्बलोवा सहस्रमावकाद्या अपञ्चत्तगा सुहम नावकाद्याए पञ्चत्तगा सखिजगुणा । हेगौतम सर्वघोडाः सन्नुम अप्पायाये पर्याप्ता अपर्याप्ता तेहघी सूक्ष्म अप्पाकाद्या पर्याप्ता सख्यातगुणा । एएसिण सुहम तेवकाद्याण पञ्चत्ता २ णय कयरे २ हितो अप्पाया ४ । हेभगवन् एह सन्नुम तेवकाय पर्याप्ता अपर्याप्ताने किह्वा २ धी घोडा घणा । मायमा सब्बलोवा सुहम तेवकाद्या अपञ्चत्तगा सखिजगुणा । हेगौतम सर्वघोडाः सन्नुम तेवकाय अपर्याप्ताने सन्नुम तेवकाय अपर्याप्ताने सख्यातगुणा । एएसिण भते सु





येज्ज० । एएसिण भते ! सुहुमवणस्सड्काइयाणं पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहिती अण्णवावा १ ? गोयमा !  
 सञ्ख्योवा सुहुमवणस्सड्काइया अपज्जत्तगा, सुज्जमवणस्सड्काइया पज्जत्तगा सखिज्जगुणा । एएसिणं  
 भते ! सुहुमनिगोदाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहिती अण्णवावा १ ? गोयमा ! सञ्ख्योवा सुज्जमनिगोदा  
 अपज्जत्ता, सुहुमनिगोदा पज्जत्तगा सखिज्जगुणा । एएसिण भते ! सुहुमाण सुहुमपुढविकाइयाणं सुहुम  
 अण्णउकाइयाण सुहुमतेउकाइयाण सुहुमवणस्सड्काइयाण सुहुमनिगोदाणय पज्जत्ता २  
 ण कयरे कयरेहिती अण्णवावा १ ? गोयमा ! सञ्ख्योवा सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तया, सुहुमपुढविकाइया  
 अपज्जत्तया विसेसाहिया, सुज्जमअण्णउकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया, सुज्जमवाउकाइया अपज्जत्तया  
 विसेसाहिया, सुज्जमतेउकाइया पज्जत्तया सखिज्जगुणा, सुज्जमपुढविकाइया पज्जत्तया विसेसाहिया, सुज्ज

गा सुहुमनिगाया पज्जत्तगा स० । हेगौतम सर्वथाडा सूक्ष्मनिगाटिया अपर्यापता तद्वथी सूक्ष्मनिगाट पर्व्यापता सख्यातगुणा । एएसिण भते सहुमाय  
 सहमपुढवीकाइयाण सहमआउकाइयाण सहम तेल० सहम वाउ० सहमवणस्सड्काइयाण सहम निगायाण पज्जत्ता २ णय कयरे २ हितो त्रयपावा ४ ।  
 हेमगणन् ७७ सन्तुने सञ्चमपुढिबीकायने स० अप्कायने स० तेलकायने स० वायुने स० वनस्पतीकायने स० निगाटने पर्यापता २ ने किञ्चा २ थो  
 थाडा इटाटि । गोवमा मज्झ्यावा सहम तेलकाइया अपज्जत्तगा सहम पुढवीकाइया अपज्जत्तगा वि० स० आउकाइया अपज्जत्तगा वि० । हेगौतम  
 सर्वथाडा स० तेलकाय अपर्यापता स० पुखीकाय अप० वि । स० अप्काय अपर्यापता विशेषाधिक । सहम वाउकाइया पज्जत्ता वि० स० तेलकाइया  
 पज्जत्तगा सखिज्जगुणा स० पुढवीकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया सहम आउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया सुहुम वाउकाइया अपज्जत्तगा विसेसा  
 हिया सहमनिगाया अपज्जत्तगा असखिज्जगुणा । सूक्ष्म पुखीकाय पर्व्यापता विशेषाधिक सहम अप्काय पर्यापता विग्रयाधिक सूक्ष्मनिगोद अप



मूनमपृथिव्यादीनामपि पर्याप्ताना तत्र प्रक्षेपात् १४ । तस्य मूनमा विशेषाधिका अपर्याप्तानामपि तत्र प्रक्षेपात् १५ । तदेवमुक्तानि सूत्रमाश्रिता नि पञ्चमूत्राणि साम्प्रतिवादराश्रितानि पचोक्तक्रमणाभिधित्तुराह-एवमिति । वायराण वायरपुढविकाइपाणमित्यादि । सर्वस्वोका वादरा रसकायिका द्वीन्द्रियादीनामेव वाटरग्रयत्वात्, तेषाच शेषकायेभ्यो ऽल्पत्वात् १ । तेष्वेव वादरतेजस्कायिका असख्येयगुणा २ । असख्येयलोका

इयाणय कथरेर हितो अप्पावा वज्जयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गो० ! सख्येयोवा वाटरतसकाइया वाटरतेउकाइया असखेज्जगुणा, पत्तेयसरीर वाटरवणस्सइकाइया असखेज्जगुणा वायरनिगोया असखेज्जगुणा, वाटरपुढविकाइया असखिज्जगुणा, वादरञ्जाउकाइया असखेज्जगुणा वादरवाउकाइया असखेज्जगुणा वादरवणस्सइकाइया अपणतगुणा वादरा विसेसाहिया, एएसिण भत्ते । वाटरापज्जत्तगणं वादरपुढविकाइया अपज्जत्तगण वादरञ्जाउकाइया अपज्जत्तगण वादरतेउकाइया अपज्जत्तगण वादरवाउ

रनिगोयाण वायर तसकाइयाणय कथरेर हितो अप्पावा । प्रत्येकमरीर वाटर वनस्पतीकायने वादरनिगोदने वादर असकायने किङ्कायी घोडा वणा । गोयसा सख्येयोवा वायर तसकाइया वायर तेउकाइया असखिज्जगुणा । हेमैतम सर्वथाडा सकाया वादर वसकाइया तेइथी वादर तेउकाइया प्रसङ्गातगणा । पत्तेयसरीर वायरवणस्सइकाइया असखिज्जगुणा । प्रत्येकमरीर वादरवनस्पतीकारया प्रसङ्गातगणा । वायरनिगोया असखिज्जगुणा वायर पढवोकाइया अस० वायर आउ० प्रस० । वाटरनिगोद असकायतगुणा वाटरपृथ्वीकाय असकायतगुणा । वायर वाउकाइया प्रस० वायर वणस्सइकाइया अणता वायरा विसेसाहिया । वाटर वायुकाय असकायतगुणा वाटर वनस्पतीकाय अनन्तगुणा तेइथी वाटर विशेषाधिक । एएसिण भत्ते वायर अपज्जत्तगणा वायरपढवोकाइया अपज्जत्तगण वायरआउकाइया अस० वायर तेउकाइया अप० वायर वाउकाय अस० वायर वणस्सइकाइया अस० । हेमगवन् एह वादर अपर्याप्तानि वादर पृथ्वीकाय अपर्या० वादर अप्पाका० अपर्या० वादर तेउकाय अपर्या०



दीगु दहेसु वावीसु पुक्खरिक्खीसु दीहियासु गुजालियासु सरैसु सरपतियासु सर २ पतियासु विलपतियासु उक्करेसु निक्करेसु चिह्नरेसु पल्ले  
सु विप्पिन्नेसु दीयेसु समुहेसु सर्वेसु चैव जलासगसु जलठाणेसु एत्यण वायरवणस्सइकाइयाण पज्जत्तगाण ठाणा पन्नत्ता, तथा जत्थेव वायरवण  
स्सइकाइयाण पज्जत्तगाण ठाणा तत्थेव वायरवणस्सइकाइयाण अपज्जत्तगाण ठाणा पन्नत्ता इति ॥ तत्त क्षेत्रस्याऽसस्येयगुणत्वात् उपपद्यन्ते, वा  
दरते नस्कायिकेज्यो ऽसस्येयगुणा प्रत्येकशरीरेवाद्दरवनस्पतिकायिका स्तेज्यो वादरनिगोदा असस्येयगुणा स्तेषा मत्पन्तसूत्तावगाहनत्वा ज्जलेपु  
संव्यापिच प्राप्तात्, पनक संवालादयोहि जले अवश्य प्राविन स्ते च वादरानन्तकायिका इति तेज्योपि वादरपृथिवीकायिका असस्येयगुणा अ

गुणा, वादरपुठवीकाइया अपज्जत्तगा अपसंखेज्जगुणा, वादरञ्चाउकाइया अपज्जत्तगा अपसंखेज्जगुणा,  
वादरवाउकाइया अपज्जत्तगा अपसंखेज्जगुणा, वादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अपणतगुणा, वादरञ्चप  
ज्जत्तगा विसेसाहिया २ । एएसिण भते ! वादरपज्जत्तयाण वादरपुठविकाइया पज्जत्तयाण, वादरञ्चाउ  
काइया पज्जत्तयाण वादरतेउकाइयापज्जत्तयाण वादरवाउकाइया पज्जत्तयाण वादरवणस्सइकाइया पज्ज  
त्तयाण पत्तेयसरीरयादरवणस्सइकाइया पज्जत्तयाण वादरनिगोदपज्जत्तयाण वादरतसकाइयपज्जत्तयाणय

भावर पृथोकाय अप० असस्यगतगुणा । वायर आउकाइया पज्जत्तगा अस० वायर वाउकाइया अप० अस० । वाटर अप्पुकाय अपर्या० अस० वादर  
वायुकाइया अपर्या० अस० । वायर वणस्स० अप० अण० वायर अपज्जत्तगा विसेसाहिया । वादर वनस्पतीका० अपर्या० अनन्तगुणा वादर अपर्या०  
विशेषाधिक । एएसिण भते वायरपज्जत्तगाण वायरपुठवीकाइया प० वायर आउका० प० वायर वाउका० प० वायर वणस्सइका  
इय पज्जत्ता । हेमगवत्त पण्ड वाटर प० वादर पृथोकाय प० वादर अप्पुका० प० वादर तेउका० प० वादर वनस्पतीकाय प० ।  
पत्तेयसरीर वायरवणस्सइकाइया प० वायर निगोय प० वायर तयका० पज्जत्तगाणय कयरेर हिता अपावा ४ । प्रत्येक वादरवनस्पतीकाय प० वाद

धासु पृथिवीषु त्रैविषु विमानजननपर्वतादिषु ज्ञावात्, तेभ्यो ऽसंख्येयगुणाद्यादराष्कायिका समुद्रेषु जलप्राप्त्यूनात्, तेभ्यो वादरवायुकायिका  
 असंख्येयगुणा सुषिरे स्वत्र वायुसप्तधात्, तेभ्यो वादरवनरपतिकायिका अनन्तगुणा, प्रतिवादरनिगोद मनन्ताना ज्ञावाना ज्ञावात् ८, तेभ्य  
 सामान्यतो वादरा जीवा विज्ञोपायिका वादरत्रसकायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ८ । गतमेकमौपिकाना वादराणामल्पबहुत्व मिदानी तेषामेवा  
 उपर्याप्ताना द्वितीयमाह-सुसिण ज्ञते । वायरापज्जतगण मित्यादि ॥ सर्वस्वोका वादरत्रसकायिका अपर्याप्तका युक्तिरत्र प्रागुक्तैव, तेभ्यो वाद  
 रतेजसकायिका अपर्याप्ता असंख्येयगुणा असंख्येयलोकाकाशप्रदेप्रमाणत्वा दित्येव प्रागुक्तक्रमेणैव मल्पबहुत्व ज्ञावनीय, गत द्वितीयमल्पबहुत्व

कयरे कयरेहितो अप्यावा वज्रयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सख्योवा वादरतेउकाडया प  
 ज्ञातया, वादरतरसकाडया पज्जतगा असखेज्जगुणा । पत्तेयसरीरवादरवणस्सइकाडया पज्जतगा अप्सं  
 खेज्जगुणा । वादरनिगीदा पज्जतगा सखेज्जगुणा । वादरपुढविकाडया पज्जतगा असखेज्जगुणा । वादर  
 ज्ञाउकाडया पज्जतया असरेज्जगुणा । वादरवाउकाडया पज्जतगा असखेज्जगुणा । वादरवणस्सइकाड  
 या पज्जतगा असखेज्जगुणा । वादरापज्जतगा विसेसाहिया ३ । एएसिणं ज्ञते ! वादराणं पज्जता २ णं

रनिगोट प० वादर वसकाय प० किन्ना २ था थोडा बहुत इयादि । गोयमा सख्योवा वादर तेउकाय प० वादर य० स्सइका० प० अस० । हेगौतम  
 सर्वथोडा वादर तेउका० अप० तेइथी वादर वसका० अप० अस० । पत्तेयसरीर वादरवणस्सइकाय प० अस० वागरनिगोट प० अस० । प्रत्येकगरीर  
 वादरवनरपतीकाय प० अस० वादरनिगोट-असखातगुणा । वागर पुढोका प० अस० वायर थारका० प० अस० । वादर पृथ्वीकाय पर्याप्ता अस  
 रगातगुणा वादर अप्पकाय पर्याप्ता असखातगुणा । वायर थारका० प० अस० वागरवणस्सइका० प० अणतगणा । वादर वायुका० प० असखात  
 गुणा वादर वनरपतीकाय पर्याप्ता अनन्तगुणा । वायर पज्जतगा विसेसाहिया । वादर पर्याप्ता विसेसाहिक । एसिणं ज्ञते वायराण पज्जता २

मिदानी मतेषामेव पर्याप्तानां तृतीयमल्पमहुत्वमाह-समसिने ज्ञते । वादरपञ्जत्तयागमिस्यादि ॥ सर्वस्वोका वादरतेजस्कायिका पर्याप्ता आद्य  
लिकासमपवगम्य कतिपयसमयव्युत्पन्ने रावलिकासमये गुणितस्य यावान् समयराशि ज्ञवति तावदप्रमाणत्वं तेषां मुक्तव-आवलिवगोक्त्याधत्तिरगु

कयरे कयरेहितो व्युप्यावा वज्रगावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सख्योवा वादरापञ्जत्तगा । वा  
दरा व्युपञ्जत्तगा असखेज्जगुणा । एएसिण ज्ञते ! वादरपुढविकाइयाण पञ्जत्ता २ ण कयरे कयरेहितो  
व्युप्यावा ? गोयमा ! सख्योवा वादरपुढविकाइया पञ्जत्तगा १ । वादरपुढविकाइया व्युपञ्जत्तगा व्यु  
सखेज्जगुणा । एएसिण ज्ञत । वादरव्याउकाइयाण पञ्जत्ता २ ण कयरे कयरेहितो व्युप्यावा ? गोयमा !  
सख्योवा वादरव्याउकाइया पञ्जत्तगा वादरव्याउकाइया व्युपञ्जत्तगा असखेज्जगुणा । एएसिण ज्ञते !  
वादरतेउकाइयाण पञ्जत्ता २ ण कयरे कयरेहितो व्युप्यावा वज्रगावा तुल्लावा विसेसाहिया ? गोयमा !

अथ कयरे कयरेहिता अप्या पगापुता अपर्यापुतानि किहा २ धी याडा इत्यादि । गोयमा सख्योवा वादरपञ्जत्तगा वादर  
पञ्जत्तगा असखेज्जगुणा । हेगौतम सर्वथाडा वादरपर्यापुता तेहथो वादर अपर्यापुता असख्यातगथा । एएसिण भतेवायरपुढवीकाइयाण पञ्जत्ता २  
अथ कयरे २ हितो अप्यावा ४ । हेमगवन् एह वादरपुढवीकायने प० अप० किहा २ धी थोडा इत्यादि । गोयमा सख्योवा वादरपुढवीकाइया अप०  
असखिज्जगुणा । हेगौतम सर्वथाडा वादर पण्यैकाय पर्यो वादर पण्यैकाय अप० असख्यातगुणा । एएसिण भते वायरवाउकाइयाण पञ्जत्ता २ अथ  
कयरे २ हितो अप्यावा ५ । हेमगवन् एहने वादर अप्पुकायने पर्या० अप० किहा धी थोडा च पा इत्यादि । गोयमा सख्योवा वादर वाउकाइया प०  
अप० अस० । हेगौतम सर्वथाडा वादर अप्पुकाय प० वादर अप० असख्यातगुणा । एएसिण भते वायर तेउकाइयाण पञ्जत्ता २ अथ कयरे २ हितो अ  
प्यावा ४ । हेमगवन् एह वादर तेउकायने प० अप० ने किहा २ था अप्प च पा इत्यादि । गोयमा सख्योवा वादर तेउकाय प० वायर तेउकाय अ



वायराण पञ्जत्तापञ्जत्ताणमित्यादि ॥ इह वादरेकैकपर्याप्तनित्रया असङ्ख्यावादरा अपर्याप्ता उत्पद्यन्ते ॥ पञ्जत्तगनिरसाय अपञ्जत्तगा वक्कमन्ति जय्ये मेगो तस्य नियमा असखेज्जा इतिवचनात्, तत सबव पर्याप्तंज्यो उपर्याप्ता असस्येयगुणा वक्तव्या, त्रसकायिकसूत्र प्रागुक्तयुत्तवा ज्ञावनीय, गत चतुर्थमल्पबहुत्व, साम्प्रत्वेतेषामेव समुद्दिताना पर्याप्तापर्याप्ताना पञ्चममल्पबहुत्वमाह—एएसिण जते । वायराण वायरपुटविकाइयाणमि

वादरतसकाइया पञ्जत्तगा । वादरतसकाइया अपञ्जत्तगा असखेज्जगुणा ४ । एएसिण जते ! वादराण वादरपुटविकाइयाण वादरञ्जाउकाइयाण वादरतेउकाइयाण वादरवाउकाइयाण वादरवणस्सडकाइयाण पत्तेवसरीरवादरवणस्सडकाइयाण वादरनिगोदाण वादरतसकाइयाण पञ्जात्ता २ ण कयरे कयरेहिती अण्णावा वज्जयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वलोवा वादरतेउकाइया पञ्जत्तया १ । वाट रतसकाइया पञ्जत्तया असखेज्जगुणा २ । वादरतसकाइया अपञ्जत्तया असखिज्जगुणा ३ । वादरपत्तेय

अपर्याप्ता असख्यातगुणा इवे इति बौधो अल्प बहुत्व कर्त्ता, हिवे समुदित अल्प बहुत्व पाचमो कहेहै—एएसिण भते वायराण वायरपुटयोकाइयाण वायर अप० तेंउ० वाउ० वणस्सकाइया । हेभगवन् एहने वाटर पुल्लोकायने अक्कादने तेउकायने वाउकायने वनस्पतीकायने । पत्तेयसरीर वायर वणस्सकाइया वादर निगोवाण वायर तसकाइयाण कयरे २ हिता अपावा ४ । प्रत्येकयरीर वादर वनस्पतीकायने वाटर निगोदियाने वादर वसकावनेपर्याप्ता अपर्याप्ताने किह्वा २ थो थाळा धणा इत्यादि । गोयमा सव्वलोवा वायर तेउकाइया पञ्जत्तगाण वायर तसकाइया पञ्जत्तगा अस० । हेभोतम सर्वथाळा वादर तेउकाय पर्याप्ता एहनी युत्ति सर्व पाहलीपरे कट्ठिवा वाटर त्रसख्यातगुणा । वायर तसकाइया अपञ्जत्तगा अस० । वादर वसकाय अपर्याप्ता असख्यातगुणा । पत्तेयसरीर वायर वणस्सकाइया पञ्जत्तगा अस० । तेहथकी वाटर प्रत्येकवनस्पती प० त्रसख्यातगुणा इवे । वायर निगोवा वायर पुटवोकाइया वायर आउताइया वायर वाउ वायर तेउकाइया अप० अस० । तेहथकी वादरनिगोद वा०

त्यादि ॥ सर्वस्तीका वादरतेजरतीयिका पर्याप्ता १ । तेज्यो वादरजसकायिका पर्याप्ता असह्येयगुणा २ । तेज्यो वादरजसकायिका अपर्याप्ता असह्येयगुणा ३ । तेज्यो वादरप्रत्येकयनस्पतिकायिका पर्याप्ता असह्येयगुणा ४ । तेज्यो वादरनिगोदा पर्याप्ता असह्येयगुणा ५ । तेज्यो वादरपृथ्वीकायिका पर्याप्ता असह्येयगुणा ६ । तेज्यो वादराऽष्कायिका पर्याप्ता असह्येयगुणा ७ । तेज्यो वादरवायुकायिका पर्याप्ता असह्येयगुणा ८ । एतेषु पदेषु युक्ति प्रागुक्ता अनुसरणीया, तेज्यो वादरतेजरकायिका अपर्याप्ता असह्येयगुणा, यतो वादरवायुकायिका पर्याप्ता सरयेयेषु प्रतरेषु यावन्त व्याकाशप्रदेशा स्तावत्प्रमाणा वादरतेजरकायिकाद्यापर्याप्ता असह्येयलोकाशप्रदेशप्रमाणा स्ततो ज्वन्यत्वसह्येयगुणा ९ । तत प्रत्येकयादरयनस्पतिकायिका १० । वादरनिगोद ११ । वादरपृथ्वीकायिक १२ । वादरवायुकायिका अपर्याप्ता यथोत्तर

वणस्सडकाइया पज्जत्तगा असखेज्जगुणा ४ । वादरनिगोदा पज्जत्तगा असखेज्जगुणा ५ । वादरपुठविकाइया पज्जत्तगा असखेज्जगुणा ६ । वादरआउकाइया पज्जत्तगा असखेज्जगुणा ७ । वादरवाउकाइया पज्जत्तगा असखेज्जगुणा ८ । वादरतेउकाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा ९ । पत्तेयररीरवादरवणस्सडकाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा १० । वादरनिगोदा अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा ११ । वादरपुठविकाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा १२ । वादरआउकाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा १३ । वादरवाउकाइया

पृथ्वीकाय वादर आकाय वातर वायुकाय वादर तेजस्काय अपर्याप्ता असख्यातगुणा जेमणी वातर वायुकाय पर्याप्ता असख्यात प्रतर जेतना आकाय तेमाट असख्यातगुणा । तेतले प्रमाणे वादर तेउकाय अपर्याप्ता अस० लोकाकाय प्रमाणे । पत्तेयसरौर वाजरवणस्सडकाइया अपज्जत्तगा अस० । प्रत्येकशरीर वनस्सतीकाय अपर्याप्ता असख्यातगुणा । वायरनिगोदा वायर पुठवीकाइया वायर आउकाइया वायर वाउकाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा । तेहथो वादरनिगोद वादर पृथ्वीकाइया वादर आकाय वादर वाउकाय अपर्याप्ता असख्यातगुणा । वायर वणस्सडकाइया अपज्जत्तगा अप

मसंख्येयगुणा वक्तव्याः, यद्यपि षेते प्रत्येकमसंख्येलोकाकाशप्रदेशप्रमाणा स्थाप्यसङ्ख्या तस्या सङ्ख्यातर्जदञ्जलत्वा दित्य यथोत्तरमसङ्ख्येयगुणस्य न त्रिरूप्यते १४ । तेज्यो धादरवनस्पतिकारिका जीवा पर्याप्ता अनन्तगुणा , प्रतिबादरेकैकनिगोदमनन्ताना जीवाना ज्ञावात् १५ । तेज्य सामान्य तो वादरा पर्याप्ता विशेषाधिकका धादरतेजस्कारिकादीनामपि पर्याप्ताना तत्र प्रक्षेपात् १६ । तेज्यो धादरवनस्पतिकारिका अपर्याप्ता असंख्येयगु णा रैकैकपर्याप्तवादरवनस्पतिकारिकनिगोदनिश्चया असंख्येयाना मपर्याप्तधादरवनस्पतिकारिकनिगोदाना मुत्पादात् १७ । तेज्य सामान्यतो धा दराऽपर्याप्ता विशेषाधिकका धादरतेजस्कारिकादीना मप्यपर्याप्ताना तत्र प्रक्षेपात् १८ । तेज्य पर्याप्तपर्याप्तविशेषगणरहितता सामान्यतो धादरा विशेषाधिकका धादरपर्याप्ततेजस्कारिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् १९ । गणानि धादराश्रितान्यपि पञ्चसूत्राणि, सम्प्रति सूक्ष्मधादरसमुदायगता प ञ्चभूमीमजिचिरसु प्रथमत औचिक सूक्ष्मधादरसूत्रमाह-एयसिण जते । इत्यादि ॥ इह प्रथम धादरगतमल्पग्रहत्वं धादरसूत्रा यत्प्रथम सूत्र तद्व द्भावनीय , यावद्धादरवायुकारिकायपद ७ । तदनन्तर यत्सूक्ष्मगतमल्पग्रहत्वं तत् सूक्ष्मपञ्चसूत्रा यत्प्रथम सूत्र तद्वत् तावद्धादरसूक्ष्मनिगोदचित्ता

अप० असंखेजगुणा १४ । वादरचणस्सइकाइया पज्जत्तगा अणत्तगुणा १५ । वादरपज्जत्तगा विसेसा  
हिया १६ । वादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेजगुणा १७ । वादरा अपज्जत्तगा विसेसाहिया १९ ।  
वादरा विसेसाहिया २० । एएसिण ज्ञते ! सुज्जमाणं सुज्जमपुढविकाइयाण सुज्जमअउकाइयाणं सुज्जमतेउ

एतगुणा वायर पल्लसग विसेसाहिया वायर वणसरकादया अपल्लसगा असखेल्लगुणा वायर अपल्लसगा विसेसाहिया वायरविसेसाहिया ५ । वा  
टर वनसतीकाय अपर्याप्ता अनत्तगुणा वादर पर्याप्ता विमोपाधिक वादर वनसतीकादया अपर्याप्ता असङ्गतगुणा वादरअपर्याप्ता विमोपा  
धिक तेहथी सर्ववादर विमोपाधिक, दिवे ५ सत्र कहैके—एएसिण भते सुहुमाण सुहुमपुठबोकादयाण सुहुम आउकाव सुहुम तेठकाण सुहुम वाउव  
णसा,कादया सुहुमनिगोयाण वायराण वायरपुठबोकावियाण । हेभगवन् एठ सुखश्रव्योने सुखप्रकायने सुखतेठकाणने सुखअ । उकायने सुखवनसती

१२ । तदनन्तर वादरसनस्पतिकारिका अन्तर्गुणा प्रतिवाटरनिगोदमनस्ताणा जीगानां प्रायात् १३ । तेभ्य वाटरा विशेषाधिका वादरतेजस्का  
यिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् १४ । तेभ्य सूक्ष्मवनस्पतिकारिका अश्रययगुणा वादरनिगोदंभ्य सूक्ष्मनिगोदाना मस्रयेयगुणत्वात् १५ । तेभ्य  
सामान्यत सूक्ष्मा विशेषाधिका , सूक्ष्मतेजस्कायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् १६ । गत मकमल्पबहुत्व मिदानी मेतेपामेवा उपप्राप्ताना द्वितीयमा  
ह-ए-सिण नत । इत्यादि ॥ स्वस्ताका वादरवसकारिका अप्रयाप्ता १ । ततो वादरतेजस्कायिका वादरप्रत्यक्षनस्पतिकारिका वादरनिगोद  
वादरपृथिवीकारिकावाटराष्कारिकायिकावाटराष्कारिका अप्रयाप्ता । क्रमेण यथोक्त मस्रययगुणा अप्र प्रायना वादरपञ्चसूत्रा यत् द्वितीयमपर्याप्त

काडयाण सुक्ष्मवाउकाडयाण सुक्ष्मवणस्सडकाडयाण सुक्ष्मनिगोदाण वाटराण वादरपुढविकाडयाण  
वादरच्छाउकाडयाण वादरतेउकाडयाण वाटरवाउकाडयाण वाटरवणरसडकाडयाण पत्तेयसरीरवाटरवण  
स्सडकाडयाण वादरनिगोदाण वादरतसकाडयाणय कयरे कयरेहितो छुप्पावा ४ ? गीयमा । सहल्योत्रा  
वादरतसकाडया १ । वाटरतेउकाडया छुप्पखेज्जगुणा पत्तेयसरीरवाटरवणस्सडकाडया छुप्पखेज्जगुणा ।  
वादरनिगोदा छुप्पसिज्जगुणा । वादरपुढविकाडया छुप्पखेज्जगुणा ५ । वादरच्छाउकाडया छुप्पखेज्जगुणा

ने मन्त्र नगोदेने वाटरपृष्ठाकायने । वाटर प्राह तउ वाड वणस्सडकाय । वाटर अष्कायने वाउकायने तेउकायने वनस्पतीकायने । पत्तेयसरीर वाटरव  
णस्सडकाय वायर निगोदा य वायर तसकाडयाणय कयरे २ हिता अपावा ४ । प्रत्येकवाटर वनस्पतीकायने वादर निगोदेने वाटर वनस्पतीकायने किहा  
किहाथी थाहा घणा इत्यादि । गीयना सञ्चलावा वायर तसकाडया वायर तेउकाय अरुखुजगुणा । हेगोतम सर्वथाहा वाटर वनस्पतीकाय तेउकाय वा  
दर तेउकाय अमस्रगतगुणा । पत्तेयसरीर वायर वणस्सडकाडया अमस्रखेज्जगुणा । प्रत्येकगरीर वादर वनस्पतीकाय अमस्रयगतगुणा । वादरनिगोदा वा  
यर पुढवोकाडया वायर आउकाडया असः । वादरनिगोद नादर पृष्ठाकाय वादर अष्काय अमस्रगतगुणा । वायर वाउकाय मुहुम तेउकाय अमसः

कस्य तद्वत्कत्तया ७ । ततो वादरवायुकायिकेभ्यो ऽसङ्ख्यगुणा सूक्ष्मतेजस्कायिका अपर्याप्ता अतिप्रज्ञानाच्चहेल्लोकाकाशप्रदेशप्रमाणत्वात् ८ ।  
तस्य सूक्ष्मपृथिवीकायिका १ । सूक्ष्माकायिकायिका २ सूक्ष्मवायुकायिका ३ सूक्ष्मनिगोदा ४ । पर्याप्ता यथोत्तर मस्येयगुणा । अत्र जावना-सू-

वादरवाउकाडया असखेज्जगुणा । सुज्जमतेउकाडया असखेज्जगुणा । सुज्जमपुढविकाडया विसेसाहिया ।  
सुज्जमञ्जाउकाडया विसेसाहिया । सुज्जमवाउकाडया विसेसाहिया । सुज्जमनिगोदा असखेज्जगुणा ।  
वादरवणस्सडकाडया अणत्तगुणा वादरा विसेसाहिया । सुज्जमवणस्सडकाडया असखेज्जगुणा १५ ।  
सुज्जमाविसेसाहिया १ । एएसिण भते ! सुज्जमअपज्जयाण सुज्जमपुढविकाडयाण अपज्जत्तगाण सुज्जम  
ञ्जाउकाडया अपज्जत्तयाण सुज्जमतेउकाडयाण अपज्जत्तयाण सुज्जमवाउकाया अपज्जत्तयाण सुज्जमवण  
स्सडकाडयाण अपज्जत्तयाण सुज्जमनिगोदा अपज्जत्तयाण वादरा अपज्जत्तयाण वादरपुढविकाडया अप  
ज्जत्तयाण वादरञ्जाउकाडया अपज्जत्तयाण वादरतेउकाडया अपज्जत्तयाण वादरवाउकाडया अपज्जत्तया

सुहम पटवोकाया वि० सुहमवाउकाय वि० सुहम वाउकाय वि० सुहमनिगोदा वि० सुहम वायुकाय अस० सूक्ष्मतेजकाय अस० सूक्ष्म पृथ्वीकाय वि  
शेषाधिक सूक्ष्मरकाडया विशेषाधिक सूक्ष्म वाउकाय विशेषाधिक सूक्ष्मनिगोदा अस० । वायर वणस्सरकाडया अणत्तगुणा वायरा विसेसाहिया । ते  
द्वयो वादर वनरपतीकाय अमत्तगुणा वादरविशेषाधिक । सहम वणस्सरकाडया अस० सुहमाविसेसाहिया ॥ १ ॥ सूक्ष्मवनरपतीकाय असरयातगणा  
सूक्ष्मविशेषाधिक । एसिण भते सुहम अपज्जत्तयाण सुहमपुढवोकाडय अपज्जत्तगाण सु० वाउका अ० स० तेउका अप० स० वाउका अप० सु० वणस्  
रका अप० । हेमगवन् एह सूक्ष्मचर्म्यात्तानि मूखपृथ्वीकायने अपर्याप्तानि सूक्ष्मयकाय पर्या० सु० तेउकाय अप० सु० वायुकाय अप० सु० वनरपती  
काय अपर्याप्तानि । सुहम निर्गीय अप० वायर अप० वायरपुढवोकाय अप० वायर वाउकाय अपज्जत्ता वायर वाउकाय वणस्सरका

स्मपन्मूत्रा यद्वितीय मूत्र तद्वत् १२ । तेन्य सूक्ष्मनिगोदाऽपयोमैत्र्यो वाटरवनस्पतिकायिका जीवा अपयोसा अनन्तगुणा प्रतिवाटरकेकनिगो  
दमनत्ताना सद्भावात् १३ । तेन्य सामान्यतो वादरा अपयोमैत्रका विशेषाधिकार वाटरवसकायिका पर्यासादीनामपि तत्र प्रक्षपात् १४ । तेन्य मू  
त्रमथनस्पतिकायिका अपयोसा असह्यगुणा वाटरनिगोदपर्यासात् १५ । तेन्य सामान्यत सूक्ष्मापर्यासा  
विशेषाधिकार सूक्ष्मतेजस्कायिकापर्यासादीनामपि तत्र प्रक्षपात् १६ । गत द्वितीयमल्पवदुत्थ मधुरैतेयोमेव पर्यासाना दृतीयमल्पवदुत्थमाह-य  
सिण प्रते । सुदुमपज्जतयागमित्यादि ॥ सवस्तीका यादरतेजस्कायिका पर्यासा १ । तेन्यो वाटरवसकायिका २ वादरप्रत्येकवनस्पतिकायिका ३

ण वाटरवगस्सडकाइया अपज्जयाण पत्तेयसरीरवाटरवगस्सडकाइया अपज्जत्तयाण वादरनिगोदा अप  
ज्जत्तयाण वादरतस्सकाइया अपज्जत्तयाणय कयरे कयरेहिती अप्पावा ४ ? गोयमा ! सवत्थोवा वाटरत  
सकाइया अपज्जत्तया । वादरतेडकाइया अपज्जत्तया असखेज्जगुणा , पत्तेयसरीरवाटरवगस्सडकाइया  
अपज्जत्तया असखेज्जगुणा ३ । वादरनिगोदा अपज्जत्तया असखेज्जगुणा । वादरपुढविकाइया अपज्ज

य अपज्जत्ता । स० निगोद अप० वाटर अप० वादर पुढोकाय अप० वाटर तैडकाय अप० वाटर वायुकाय अप० वाटर वनस्प  
तीकाय अप० । पत्तेयसरीर वायरवगस्सकाइया अप० वायरनिगोया अप० वायर तस्सकाइया अप० कयरे २ हिता अप्पावा ४ । प्रत्येकगरोर वाटर  
वत्तरपतीकाय अप० वाटरनिगोट अप० वाटर वमकाय अप० किहा २ द्यो थोडा वणा सरीखा विंशेण जुवे । गाउमा सखलोवा वायरतस्सकाइया अ  
पज्जत्तया तथो प० पसवज्जगुणी । हेमौतम सर्वथाहा वाटर वसकाइया अप० तेडथो पर्यासा असखगतगुणा । पत्तेयसरीर वायरवगस्सकाइया अप०  
पस० । तेडथो प्रत्येकगरीर वाटरवनस्पतीकाय अप० अस० । वायरनिगोदा अप० अस० । वाटरनिगाद अप० असखगतगुणा । वायर पटवोकाइया  
अप० अस० । वाटरपुढोकाय अप० अस० । वाटर भाडकाइया अपज्जत्तया अस० । वादर अक्काय अप० अस० । वायर तैडकाय अपज्जत्ता अस० ।

वाटरनिगोदा ४ वाटरपृथिवीकायिका ५ वाटरवायुकायिका ६ वाटरवायुकायिका ७ पर्याप्ता यथोत्तर सहेयगुणा अथ ज्ञावना-वाटरपञ्चमन्या यत्  
तृतीय पर्याप्तसूत्र तद्वत्कस्य ९, वाटरपर्याप्तवायुकायिकेन्य सूक्ष्मतरङ्गायिकापर्याप्ता असह्यगुणा वाटरवायुकायिकाहि असह्यप्रतरप्रदेशरा  
शिप्रमाणा सूक्ष्मतरङ्गायिकास्तु पर्याप्ता असह्यलोकाकाशप्रदेशराशिप्रमाणा स्ततोऽसह्यगुणा ८ । तत सूक्ष्मपृथिवीकायिक ९ सूक्ष्मायिका  
१० सूक्ष्मवायुकायिका ११ पर्याप्ता क्रमेण यथोत्तर विशेषाधिक ११, तत सूक्ष्मवायुकायिकेन्य पर्याप्तसूत्र सूक्ष्मनिगोदा पर्याप्तका असह्येयगु

तगा असखेजगुणा । वाटरवायुकायिका ६ । वाटरवायुकायिका ७ अपज्जतगा अस  
खेजगुणा, सुज्जमततकायिका अपज्जतगा असखेजगुणा । सुज्जमततकायिका अपज्जतगा विसंसाहिया १  
सुज्जमततकायिका अपज्जतगा विसंसाहिया १० । सुज्जमततकायिका अपज्जतगा विसंसाहिया, सुज्जम  
निगोदा अपज्जतगा असखेजगुणा, वाटरवणस्सइकायिका अपज्जतगा अणतगुणा, वाटरा अपज्जतगा  
विसंसाहिया, सुज्जमतवणस्सइकायिका अपज्जतगा असखिजगुणा, सुज्जमा अपज्जतगा विसंसाहिया २ ।

वाटर तेउकाय अपर्याप्ता अस० । वाटर वायुकाय अप० अस० । सुहुम तेउकाय अप० अस० सुहुम पुढवीकाइया अ  
प० विसंसाहिया । सच्चुम तेउकाय अप० अस० सच्चुम पुढवीकाइया विशेषाधिक । सुहुम वायुकाइया अप० विसं० सुहुम वायुका० अप० विसं० । सच्चु  
म अपकाइया अप० विशेषाधिक सच्चुम वायुकाइया अपर्याप्ता विशेषाधिक । सुहुम निगोद अप० अस० वाटरवणस्सइकाइया अप० अणतगुणा । सू  
चुमनिगोद अप० अस० गुणा । वाटर वनस्पतीकाय अप० अनत्तगुणा । वाटर अप० विशेषाधिक । सुहुम वणस्सइकाइया अप०  
अम० । सच्चुम वनस्पतीकाय अपर्याप्ता असखातगुणा । सुहुमा अपज्जतगा विसंसाहिया ॥ २ ॥ सच्चुम अपर्याप्ता विशेषाधिक । एएसिण भते सुहुम  
पज्जतगा सुहुमपुढवीकाइया पज्जतगा । सुहुम पर्याप्ताने सच्चुम पुढवीकाय पर्याप्ताने । सुहुम वायुकाय पज्जतगा । सुहुम वाटरा

णा स्तेषामिति प्रभूततया प्रतिगोलक प्राधात् १२ । तैस्यो वादरवतस्पातिकायिका जीवा पर्याप्तका अनन्तगुणा प्रतिवादरैकैकनिगोदमनन्तना ना  
धात् १३ । तस्य सामान्यतो वादरापयाप्तका विशेषाधिकारः, वादरतेजस्कायिकादीनामपि पर्याप्ताना तत्र प्रक्षेपात् १४ तस्य सूक्ष्मवतस्पातिकायि  
का पर्याप्ता असंख्येयगुणा वादरनिगोदपर्याप्तस्य सूक्ष्मनिगोदपर्याप्ताना 'मसंख्येयगुणत्वात्' १५ । तस्य सामान्यत सूक्ष्मा पर्याप्ता विशेषाधिका,  
सूक्ष्मतेजस्कायिकादीनामपि पर्याप्ताना तत्र प्रक्षेपात् १६ । गत तृतीयमल्पयहुत्व निदानो मेतयामेव सूक्ष्मवादरादीना प्रत्येक पर्याप्तापर्याप्ताना

एएसिण नते ! सुक्ष्मपञ्चतयाण सुक्ष्मपुढविकाइयपञ्चतयाण सुक्ष्मअप्पकाइयपञ्चतयाण सुक्ष्मतेउका  
इयपञ्चतयाण सुक्ष्मवाउकाइयपञ्चतयाण सुक्ष्मवणस्सइकाइयपञ्चतयाण सुक्ष्मनिगोयपञ्चतयाण  
वादरपञ्चतयाण वादरपुढविकाइयपञ्चतयाण वादरअप्पकाइयपञ्चतयाण वादरतेउकाइयपञ्चतयाण  
वादरवाउकाइयपञ्चतयाण वादरवणस्सइकाइयपञ्चतयाण पत्तेयसरीरवादरवणस्सइकाइयपञ्चतयाण वा  
दरनिगोदपञ्चतया वादरतसकाइयपञ्चतयाणय कयरे कयरेहिती अप्पावा १ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वा

य पर्याप्तान । सुक्ष्म तेउका० वाउका० वणस्स० निगोय पर्या० । सूक्ष्म तेउक्काय वायुकाय वनस्पतीकाय निगोदन पर्याप्ताने । वायर पुढवोना०  
पञ्चत्ता वायर आउका प० वादर तेउकाय वादर वाउकाय वायर वणस्सइकाइया पञ्चत्ता । वादर पुढवोकाय पर्याप्ताने वादर अरकाय पर्या० वादर  
तेउकाय पर्या० वायुकाय पर्या० वादर वनस्पतीकाय पर्याप्ताने । पत्तेयसरीर वायर वणस्सइ वायर निगोया वायर तसकाय पञ्चत्ता २ यय कय  
रे २ हिती अप्पावा ४ । प्रत्येकशरीर व दर वनस्पतीकाय पर्याप्ताने वादरनिगोद प० वादर तसकाय प० किदा २ यो धोडा घणा इत्यादि । गोयमा  
सव्वत्थोवा वायर तेउकाय प० वादर तसकाय पञ्चत्तगा अस० । हेगोतम सर्वधोडा वादर तेउकाय पर्याप्ताना वादर वसकाय पर्याप्ताना असखेज्जगुणा ।  
पत्तेयसरीर वायरवणस्सइकाइया वायरनिगोया वायर पुढवोकाइया वायर आउकाइय वायर तेउकाय अपञ्चत्तगा असखेज्जगुणा वायर वाउकाय



पृथग् २ अल्पवृत्त्वमाह-यशसिणं व्रते । सुहुमाण वायराण पञ्जात्ताणमित्यादि ॥ सर्वत्रेय ज्ञावना-सर्वसोकावादरा पर्याप्ता-परमित  
 क्षेत्रगतिंत्वात्, तेन्यो वादरा अपर्याप्ता असह्यगुणा एकैकवादरपर्याप्तिनिश्रया असह्येयाना वादरापर्याप्तानामुत्पादात्, तेन्य सूत्रा अपर्याप्ता  
 असह्यगुणा, सर्वनीमोपहतया तथा क्षेत्रस्या सह्येयगुणत्वात्' तेन्य सूत्रपर्याप्तका सह्येयगुणा चिरकालावस्थायितया तेषा सदैव सह्येय  
 गुणतया वाप्पमानत्वात् ॥ गत बहुयमल्पवहुत्वम् ॥ इदानी मतेपामेव सूत्रप्रतिबोकायिकादीना वादरप्रतिबोकायिकादीना च प्रत्येक पर्याप्ता

दरतेउकाइया पञ्जतगा । वादरतसकाइया पञ्जतया असखिज्जगुणा । पत्तेयसरिरत्रादरवणस्सइकाइया  
 पञ्जतगा असखेज्जगुणा । वादरनिगोदा पञ्जतया असखेज्जगुणा, वादरपुढाविकाइया पञ्जतया असं०  
 वादरचाउकाइया पञ्जतया असखेज्जगुणा, वादरवाउकाइया पञ्जतगा असखेज्जगुणा । सुज्जमतेउकाइ  
 या पञ्जतया असखेज्जगुणा, सुज्जमपुढाविकाइया पञ्जतगा विसेसाहिया, सुज्जमचाउकाइया पञ्जतगा  
 विसेसाहिया, सुज्जमवाउकाइया पञ्जतगा विसेसाहिया । सुज्जमनिगोदा पञ्जतया असखेज्जगुणा, वाद

अपञ्जतगा असखेज्जगुणा । प्रत्येकशरीर वादर वनस्पतीकाय वादरनिगोद वादरपुढोकाय वादर अपुकाय वादर तेजस्काय वादर वायुकाय अपर्या  
 प्ता असखागतगा । सुहुमतेउकाय सुहुम पुढोकाय सुहुम आउकाय सुहुम वाउकाय पञ्जतगा विसेसाहिया सुहुम निगोया नपञ्जतगा अस  
 खेज्जगुणा । सूत्रम तेउकाय पुढोकाय आकाय वायुकाय निगोटिया अपर्याप्ता असख्यातगुणा । वायर वणस्सइकाइया अपञ्जतगा अणतगुणा । वा  
 दर वनस्पतीकाय अपर्याप्ता अनन्तगुणा । वायर अपञ्जतगा विसेसाहिया । वादर अपर्याप्ता विगोपाधिक । सुहुम वणस्सइकाय अपञ्जतगा असखे  
 ज्जगुणा सुहुमा अपञ्जतगा विसेसाहिया । सूत्रम वनस्पतीकाय अपर्याप्ता असखागतगुणा सूत्रम अपर्याप्ता विशेषाधिक । २ । पर्याप्त भते सुहुमप  
 णतगाण सुहुम पुढोकाइय पञ्जतगाण । हेमगवन् एह सूत्रम पुढोकाय पर्याप्ताने । सुहुम आउकाय पञ्जतगाण । सूत्रम अपुकाय पर्याप्ताने ।

रवणस्सइकाइया पज्जत्तया अणत्तगुणा, वाटरपज्जत्तया विसेसाहिया, सुज्जमवणस्सइकाइया पज्जत्तगा  
असखिज्जगुणा । सुज्जमपज्जत्तया विसेसाहिया ३ । एएसिण भत्ते ! सुज्जमाणवाटराणय पज्जत्ता २ ण  
कयरे कयरेहितो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वल्योवा वाटरा पज्जत्तरा, वादगा अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा  
सुज्जमा अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा, सुज्जमा पज्जत्तगा सखेज्जगुणा । एएसिण भत्ते ! सुज्जमपुढविकाइया

सहम तेउकाय वाउकाय वणस्सइकाय निर्गोय पज्जत्ता । सूक्ष्म तेजस्साय वायकाय वनस्पतीकाय निर्गोद पर्याप्ताने । वायर पठवोकाइया आउ  
काय तेउकाय वाउकाय वणस्सइकाय पज्जत्ता । वाटर पृथ्वीकाय अप्पुकायने तेजस्साय वायुकाय वनस्पतीकाय पर्याप्ताने । पसेयसरोर वायरवणस्सइ  
काय वायर निर्गोय वाटर तसकाइया पज्जत्तगाणय कयरे २ हिता अप्पुगा ४ । प्रत्यक्षगरोर वाटर वनस्पतीकाय वाटर निर्गोदने वाटर वसकाय  
पर्याप्ताने किह्वा थो थाटा घणा इत्यादि । गायमा सव्वल्योवा वायर तेउकाइया प० अम० । वायर तमकाइया अ० अम० । हगौतम सर्वथाडा वाटर  
तेउकाय पर्याप्ताने वाटर वमकाय पर्याप्ताने असव्व्यातगणा । पसेयसरोर वायरवणस्सइकाइया वाटर निर्गोद वायर पठवोकाय अपज्जत्तगा अम० ।  
प्रत्यक्षगरोर वाटर वनस्पतीकाय पर्याप्ताने असव्व्यातगणा वाटरनिर्गोद वाटर पृथ्वीकाय अससगातगुणा । वाटरथाउकाइया वायर वाउकाय पज्जत्ता  
असखिज्जगुणा वाटर अप्पुकाय वाटर आउकाय अपर्याप्ताने असव्व्यातगणा । सुहम तेउकाय प० अम० सु० पठवोकाय पज्जत्तगा विसेसाहिया स०  
आउकाय स० वाउकाय स० निर्गोय पज्जत्तगा असखिज्जगुणा । सूक्ष्म तेउकाय पर्याप्ता असव्व्यातगुणा स० पृथ्वीकाय पर्याप्ता विज्ञेयाधिक सू० अ०का  
य पर्या० विज्ञे० सू० वायुकाय प० विज्ञे० सू० निर्गोद पर्या० असव्व्यातगुणा । वायरवणस्सइकाय पज्जत्तगा अणत्तगणा । वाटर वनस्पतीकाय पर्याप्ता  
अनत्तगुणा । वायर पज्जत्तगा विसेसाहिया । वाटर पर्याप्ता विज्ञेयाधिक । सहम वणस्सइकाय पज्जत्तगा असखिज्जगुणा । सूक्ष्म वनस्पतीकाय पर्याप्ता  
असव्व्यातगुणा । सुहमपज्जत्तगा विससाहिया । ३ । सूक्ष्म पर्याप्ता विज्ञेयाधिक अल्प बहुत्व । एएसिण भत्ते सुहमाण वायरान

ण वाटरपुढविकाइयाणय पज्जता २ णं कयरे कयरेहितो अप्पावा १ गोयमा । सत्थलोवा वाटरपुढवि  
काइया पज्जत्तया वाटरपुढविकाइया अपज्जत्तया असखेज्जगुणा, सुज्जमपुढविकाइया अपज्जत्तया अस  
खेज्जगुणा, सुज्जमपुढविकाइया पज्जत्तया सखेज्जगुणा । एणसिण भते ! सुज्जमपुढविकाइयाण वाटरपुढ  
काइयाण पज्जता २ ण कयरे कयरेहितो अप्पावा १ गोयमा ! सत्थलोवा वाटरपुढविकाइया पज्जया  
वाटरपुढविकाइया अपज्जत्तया असखेज्जगुणा, सुज्जमपुढविकाइया अपज्जत्तया असखेज्जगुणा, सुज्जमपुढ

पज्जता २ णय कर २ हितो अप्पावा ४ । इभगवण णह सत्थवाटरने पर्याप्ता अपर्याप्तानि किंवा २ धी धोडा घणा सरीखा विगेष हवे । गोयमा स  
त्थलोवा वायर पज्जत्तया अपज्जत्तया असखिज्जगुणा । हेगोतम सर्वथोडा वाटर पर्याप्ता तेइयो व टर अपर्याप्ता असत्थातगुणा । सहम अपज्जत्तया अ  
सखिज्जगुणा । सहम अपर्याप्ता असत्थातगुणा । सहम पज्जत्तया सारुज्जगुणा । सहम पर्याप्ता असत्थातगुणा । एणसिण भते सहम पुढवोकाइयाण वा  
यरपुढवोकाइयाण पज्जता २ णय कयरे २ हितो अप्पावा ४ । इभगवण णह सत्थवाटरने पर्याप्ता अपर्याप्तानि किंवा २ धी धोडा  
घणा इत्थादि । गोयमा सत्थवा वायरपुढवोकाइया पज्जत्तया वायर पुढवोकाइया असखिज्जगुणा । हेगोतम सर्वथोडा वाटर पुढवोकाय  
पर्याप्ता तेइयो वाटर पुढवोकाय अपर्याप्ता असत्थातगुणा । सहम पुढवोकाइया अपज्जत्तया असखिज्जगुणा सहमपुढवोकाइया पज्जत्तया सखिज्ज  
सूक्ष्मपुढवोकाय अपर्याप्ता असत्थातगुणा स० पुढवोकाय पर्याप्ता सत्थातगुणा । एणसिण भते सहम वाटरपुढवोकाइयाण पज्जता २  
णय कयरे २ हितो अप्पावा ४ । इभगवण णह अप्पावा वाटर अप्पावने वाटर अप्पावने पर्याप्तानि किंवा २ धी धोडा घणा इत्थादि । गोयमा सत्थवा वायर  
वाटरकाइया पज्जत्तया वायर वाटरकाइया अपज्जत्तया अम० । हेगोतम सर्वथोडा वाटर पर्याप्ता वाटर अपर्याप्ता असत्थातगुणा । सहम वाटरकाइ  
या पज्जत्ता असखिज्जगुणा सहमवाटरकाय अपज्जत्तया असखिज्जगुणा । स० अप्पावा पर्याप्ता असत्थातगुणा स० अप्पावा अपर्याप्ता असत्थातगु

उकाड्या पञ्जत्तगा सखेज्जगुणा । एएसिण जते । सुज्जमतेउकाड्याण वाटरतेउकाड्याणय पञ्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिती अप्पावा ४ ? गोयमा । सख्योवा वाटरतेउकाड्या पञ्जत्तया, वाटरतेउकाड्या अप्प जत्तया अप्पसरेज्जगुणा, सुज्जमतेउकाड्या अप्पजत्तया अप्पसखेज्जगुणा, सुज्जमतेउकाड्या पञ्जत्ता सखेज्ज गुणा । एएसिण जते । सुज्जमवाउकाड्याण वाटरवाउकाड्याणय पञ्जत्ता २ ण कयरे कयरेहिती अप्पा वा ४ ? गोयमा । सख्योवा वाटरवाउकाड्या पञ्जत्तया वाटरवाउकाड्या अप्पजत्तया अप्पसखेज्जगुणा । सुज्जमवाउकाड्या अप्पजत्तया अप्पसखेज्ज ० । सुज्जमवाउकाड्या पञ्जत्तया अप्पसखेज्जगुणा । एएसिण जते ! सुज्जमवणरसइकाड्याण वाटरवणरसइकाड्याणय पञ्जत्ता २ ण कयरे कयरेहिती अप्पावा ४ ? गोयमा !

या । एएसिण भते सुहम तेउकाड्याण वायर वायरतेउकाड्याणय पञ्जत्ता २ णय कयरे २ हिती अप्पावा ४ । इभगवन एह मू तेउकाड्याने वाटर तेउकाड्याने पर्यापत्ता अपर्वापत्ताने किहाको बोडा घणा इत्यादि । गोयमा सख्योवा वायर तउकाय पञ्जत्तगा वायर तेउकाय अप्पजत्तगा अप्पसखिज्ज गणा । इहीतम सर्वयोडा वाटर तेउकाय पर्यापत्ता अपर्वापत्ता अप्पजत्तगा अप्पसखेज्जगुणा । सुहम तेउकाय अप्पजत्तगा अप्पसखेज्जगुणा । मूत्ता तेउ काय अपर्वापत्ता अप्पसख्यातगुणा । सुहम तेउकाय पञ्जत्तगा सखिज्जगुणा । सूत्ता तेउकाय पर्यापत्ता अप्पसख्यातगुणा । एणमिण भते सुहम वाउकाड्याण वाटर वाउकाड्याणय पञ्जत्ता २ णय कयरे २ हिती अप्पावा ४ । इभगवत् एह मूत्तावायुकायने वाटर वायुकायने पर्यापत्ता अपर्वापत्ताने किहा २ यो बोडा घणा इत्यादि । गोयमा सख्योवा वायर वाउकाड्या पञ्जत्तगा वाटर वाउकाड्या अप्पजत्तगा अप्पसखेज्जगुणा । इहीतम सर्वयोडा वाटर वायु काय पर्यापत्ता वाटर वायुकाय अपर्वापत्ता अप्पसख्यातगुणा । सुहम वाउकाड्या पञ्जत्तगा अप्पसख्यातगुणा । मूत्ता अप्पसख्यातगुणा । एएसिण भते सुहम वणसरकाड्याण वायर वणसरकाड्याणय पञ्ज

पर्याप्तानां च समुदायेन पञ्चम मत्स्यबहुत्वमाह-एएसिण ऋते । सुहुमाण सुहुमपुढविकाइयाणमित्यादि ॥ सर्वस्त्रोका वादरतेजस्त्रायिका पर्याप्ता  
 आधलिकासमपवर्गकतिपयसमन्यूनै राधलिकासमयै गुणिते यावान् समयरादि स्तावत्प्रमाणत्वात् तथा, तेज्यो वादरत्रसकायिका पर्याप्ता अस  
 र्येयगुणा प्रतरे यावत्सुहुनसत्ययज्ञागमात्राणि स्रगकानि तावत्प्रमाणत्वा सेपा, तेज्यो वादरत्रसकायिका अपर्याप्ता असख्येयगुणा प्रतरे यावत्सत्य

सहस्योवा वादरवणस्सइकाइया पज्जत्तया, वादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तया असखिज्जगुणा, सुज्जम  
 वणस्सइकाइया अपज्जत्तया असखिज्जगुणा । सुज्जमवणस्सइकाइया पज्जत्तया संखिज्जगुणा । एएसिण ऋते !  
 सुज्जमनिगोदाण वादरनिगोदाणय पज्जत्ता २ ण कयरे कयरोहिती अप्पावा ४ ? गोयमा ! सहस्योवा वाद  
 रनिगोदा पज्जत्तया, वादरनिगोदा अपज्जत्तया असखे ०, सुज्जमनिगोदा अपज्जत्तया असखिज्जगुणा,  
 सुज्जमनिगोदा पज्जत्तया संखेज्जगुणा ४ । एएसिण ऋते ! सुज्जमाण सुज्जमपुढविकाइयाण सुज्जमअ्याउका  
 इयाण सुज्जमतेउकाइयाण सुज्जमवाउकाइयाण सुज्जमवणस्सइकाइयाण सुज्जमनिगोदाणं वादराण वादर

त्ता २ णय कयरे २ हितो अप्पावा ४ । हेभगवन् एह वनस्सतोकायने पर्याप्ता अपर्याप्तानि किह्वा २ धो थोडा घणा इत्यादि ।  
 गोयमा सहस्योवा वायर वणस्सइकाइया पज्जत्तया वायरवणस्सइकाइया अपज्जत्तया असखिज्जगुणा । हेगौतम सर्वथोडा वादर वनस्सतोकाय पर्याप्ता  
 वादर वनस्सतोकाय अपर्याप्ता असख्यातगुणा । मुहुम वणस्सइकाइया अपज्जत्तया असखिज्जगुणा । मूज्ज वनस्सतोकाय अपर्याप्ता असख्यातगुणा । सु  
 हुम वणस्सइकाइया पज्जत्तया संखेज्जगुणा । मूज्ज वनस्सतोकाय पर्याप्ता सख्यातगुणा । एएसिण भते सुहुमनिगोदाण वायरनिगोदाण पज्जत्ता २ णय  
 कयरे २ हितो अप्पावा ४ । हेभगवन् एह सुज्जमनिगोदने वादरनिगोदने पर्याप्ता अपर्याप्तानि किह्वा २ धो थोडा घणा इत्यादि । गोयमा सहस्योवा वा  
 रनिगोदा पज्जत्तामा वायरनिगोदा अपज्जत्तया असखिज्जगुणा । हेगौतम सर्वथोडा वादरनिगोद पर्याप्ता वादर निगोद अपर्याप्ता असख्यातगुणा ।

दुलासख्ययनागमात्राण खण्डानि सायटप्रमाणत्वात् तेषां ततः प्रत्येकखादखनस्पतिकार्यिक ५ खादरतिगोद ५ खादरपुष्पिकार्यिक ६ खादरपुष्पाधिक ७ खादरवायुकार्यिक ८ पर्याप्त यथोत्तर असख्ययगुणा, यद्यप्येते प्रत्येक प्रतरे यावत्पुद्गलासख्ययनागमात्राणि खण्डानि यावत्प्रमाणास्तथा प्युद्गलासख्ययनागस्या सङ्ख्येजेदञ्जितत्वा दित्य यथोत्तर सङ्ख्येयगुणत्व मन्निधीयमान न विरुध्यते ८। एतेभ्यो खादरतेजस्कार्यिका अपर्याप्ता असङ्ख्यगुणा असङ्ख्यलोकाकाशप्रदेशप्रमाणत्वात् ८। ततः प्रत्येकशरीरखादखनस्पतिकार्यिक १० खादरतिगोद ११ खादरपुष्पिकार्यिक १२ खाद

पुढाविकाइयाण वादरञ्जाउकाइयाण वादरतेउकाइयाण वादरवाउकाइयाण वादरवणस्सइकाइयाण पत्ते  
यसररीरवादरवणस्सइकाइयाण वादरनिगोदाण वादरतस्सकाइयाण पज्जत्ता २ ण कप्परे कयरेहि तो अण्ण्वा  
वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वादरतेउकाइया पज्जत्तया १ । वादरतस्सकाइया पज्जत्तया अस्सखिज्जगुणा २  
वादरतस्सकाइया अपज्जत्तया अस्सखिज्जगुणा ३ । पत्तेयसररीरवादरवणस्सइकाइया पज्जत्तया अस्सखिज्ज  
गुणा ४ । वादरनिगोदा पज्जत्तया अस्सखिज्जगुणा ५ । वायरपुढाविकाइया पज्जत्तया अस्सखेज्जगुणा ६ ।  
वादरञ्जाउकाइया पज्जत्तगा अस्सखिज्जगुणा ७ । वादरवाउकाइया पज्जत्तगा अस्सखेज्जगुणा ८ । वादरतेउ

सुहृन् निगादा अपक्लत्तगा अश्विक्लगुणा सुहृन् निगीया पक्लत्तगा सखक्लगुणा । सुहृन् निगाद अपर्याप्ता असख्यातगुणा सूक्ल निगोट पर्याप्ता स  
ख्यातगुणा । एषसिण भते सहृमाण सुहृन्पटवौकाद्याण सुहृन् आरकाय सु० तेह स० वाह सु० वणस्रसकाय सु० निगीयाण वायराण वायरपुटवौका  
द्याण वायर आह० वायर तेह० वाह० सुहृन् एस सू० पुष्काकायने सू० अरकायने सू० तेहकायने सू० वायुकायने सू० वनसत्तौ  
कायने सू० निगीदने, वादर पुष्पाने वादर अरकायने वादर तेदने वादर वायुने वादर वनसत्तौने । पत्तेशसरीर बाउरवणस्रसकाद्या वायर निगीया  
ण वायरतसकाद्याण्य पक्लत्ता अपक्लत्ताण कथरे २ हितो अपपावा ४ । मल्लिकगरीर वादर वनसत्तौने वादर निगीदने वादर वनसकायने पर्याप्ता अ

राष्कायिक १३ वादरवायुकायिका अपर्याप्ता यथोत्तर मसङ्ख्यगुणा १४ । ततो वादरवायुकायिकेभ्यो ऽपर्याप्तेभ्यः सूक्ष्मेतरकायिका अपर्याप्ता अ  
सङ्ख्यगुणा १५ ततः सूक्ष्मपृथिवीकायिका १६ । सूक्ष्माष्कायिका १७ सूक्ष्मवायुकायिका अपर्याप्ता यथोत्तर विडोषाधिका १८ ततः सूक्ष्मपर्याप्ता स्ते  
नरकायिका सङ्घातगुणा , सूक्ष्मेष्टपर्याप्तस्य पर्याप्ताना मोघत एव सङ्ख्यगुणात् १८ । ततः सूक्ष्मपृथिवीकायिक २० मून्माष्कायिक २१ सूक्ष्मवायु

काडया अपपञ्चतया असखिज्जगुणा १ । पत्तेयसरीत्रादरवणस्सडकाडया अपपञ्चतया असखेज्ज ० १० ।  
वादिनिगोढा अपपञ्चतया असखे ० ११ । वादरपुढविकाडया अपपञ्चतया असखे ० १२ । वादरञ्चाउका  
डया अपपञ्चतया असखे ० १३ । वादरवाउकाडया अपपञ्चतया असखे ० १४ । सुज्जमतैउकाडया अपपञ्च  
तया असखेज्जगुणा १५ । सुज्जमपुढविकाडया अपपञ्चतया विसंसाहिया १६ । सुज्जमञ्चाउकाडया अप

पर्याप्तानि किञ्चा २ यो वाडा घणा सरोखा विजोय हवे । गोयमा सञ्चल्योवा वाटर तेडकाडया पञ्चतया वायरतसकाडया पर्याप्ता असखिज्जगणा वा  
यरतसकाडया अप० असखेज्जगुणा । हेगौतम सर्वथाडा वादर तेडकाय पर्याप्तता वादर वसकाडया अपर्याप  
ता असखगातगुणा । पत्तेय सरीर वायरवणस्सड० पञ्चतया असखेज्जगणा वायरनिगोय पञ्चतया असखेज्जगुणा । प्रलेकगरीर वादरवनरनतीकाय पर्या  
प्ता असखगातगणा वादर निगोद पर्याप्तता असखगातगुणा । वायर पुढवीकाडय पञ्चतया असखेज्जगुणा वायर आडकाडय पञ्चतया अस० वायर  
वाडकाय अप० अस० वायर तेडकाय अप० अस० । वादर पृथिवीकाडया पर्याप्ता अस० वादर आकाय पर्या० अस० वादर वायुकाय अप० अस० वा  
दर तेडकाय अप० अस० । पत्तेयगरीर वायर वणस्सडकाडया अपपञ्चतया अस० वायरनिगोय अपपञ्चतया अस० वायरपुढवीकाडय अप० अस० वाय  
र आडकाय अप० अस० वायर वाडकाय अप० अस० । प्रलेकगरीर वादरवनरनतीकाय अपर्याप्ता अस० वादर निगोद अपर्याप्ता अस० वादर  
पृथ्वीकाय पर्या० अस० वादर आकाय पर्या० अस० वादर वायुकाय अप० अस० । सुद्धम तेडकाय अपपञ्चतया अस० सु० पुढवीकाय अप० सु० आड०

क्रादिका पर्याप्ता यथोत्तर विशेषाधिक २२, तेभ्य सूत्रनिगोदा अपर्याप्ता स्तेषा भतिप्राप्त्येन संवलोनेषु प्रागात् २३, तेभ्य सूत्रनिगोदा पर्याप्तका सङ्ख्यगुणा सूत्रमप्यप्राप्त्येभ्य पर्याप्ताना मोचत एव सदा सङ्ख्यगुणत्वात्, एतच्च वादरापर्याप्तैर्अस्क्रादिकादय पर्याप्तसूत्रमनिगोदा पर्याप्तका सङ्ख्यगुणा यद्यप्यन्यत्रा विज्ञापेणा सङ्ख्यपलाकाकाक्षप्रदक्षामागतया सङ्कीयते, तथाप्यसम्येयस्या सङ्ख्येदं नित्यत्वा दित्य त्सनिगोदपययसाना पोरुण पदार्था यद्यप्यन्यत्रा विज्ञापेणा सङ्ख्यपलाकाकाक्षप्रदक्षामागतया सङ्कीयते, तथाप्यसम्येयस्या सङ्ख्येदं नित्यत्वा दित्य मसस्ययगुणत्व विशेषाधिकत्व सरयेयगुणत्व प्रतिपाद्यमानं न विशेषज्ञागिति २४। तेभ्य पर्याप्तसूत्रमनिगोदस्यो वादरवचनस्पतिज्ञादिका पर्याप्ता अतन्तगुणा, प्रतिवादरेकैकनिगोदमननानां नोवाना प्रावात् २५। तस्य सामान्यतो वादरा पर्याप्ता विज्ञेयाधिका, वादरपर्याप्तैरस्क्रादिका

ज्ञातृणा विसंसाहिया १७। सुजमवाउकाडया अपज्ज्ञातृया विसंसाहिया १८। सुजमतेउकाडया पज्ज्ञातृया ससि० १९। सुजमपुढाविकाडया पज्ज्ञातृया विसंसाहिया २०। सुजमन्याउमाडया पज्ज्ञातृगा विसंसाहिया २१। सुजमवाउकाडया पज्ज्ञातृया विसंसाहिया २२। सुजमनिगोदा अपज्ज्ञातृया अससं० २३। सुजमनिगोदा पज्ज्ञातृया ससि० २४। वाटरवणस्सडकाडया पज्ज्ञातृया अणतगुणा २५। वाटरपज्ज्ञातृया विसंसाहिया २६। वाटरवणस्सडकाडया अपज्ज्ञातृगा अससिज्ज्ञातृगा २७। वाटरअपज्ज्ञातृया विसंसाहिया २८। वादरा

अप० विस० सू० वाटकाय अप० विस०। सूत्रम ततकाय अप० अस० सू० पुष्टीकाय अप० विशेषाधिक सू० अरकाय अप० विशेषाधिक म० वायुका य अप० विशेषाधिक। म० ततकाय पज्ज्ञातृगा अस० म० पठनीकाय पज्ज्ञातृगा विस० सू० आनकाय० वाउकाय० निगाय पज्ज्ञ० विस०। सू० ततका य अप० अस० सू० पुष्टीकाय अपर्याप्तता विशेष० सू० अरकाय अप० विग० सू० आयुकाय अप० विग० सू० निगाटोया अप० सगातगुणा। वायर वणस्सडकाडया पज्ज्ञ० अणतगुणा वाटर पज्ज्ञातृगा विस०। वाटर वनरपतीकाय पर्या० अनन्तगुणा वाटर पर्या० विशेषाधिक। वायर वणस्सडकाडय अप० अस० वायर अपज्ज्ञातृगा विस० वायरा विसंसाहिया। वाटर वनरपतीकाय अप० अस० वाटर अप० अश्रय० विशेषाधिक वाटर विगमागिज्ज्ञ। सुजम



राष्कायिक १३ वादवायुकायिका अपर्याप्ता यथोत्तर ससङ्ख्यगुणा १४ । ततो वादवायुकायिकेभ्यो उपर्याप्तेभ्यः सूक्ष्मेतरकायिका अपर्याप्ता अ  
सङ्ख्यगुणा १५ तत सूक्ष्मपृथिवीकायिका १६ । सूक्ष्माष्कायिका १७ सूक्ष्मवायुकायिका अपर्याप्ता यथोत्तर विशेषाधिका १८ तत सूक्ष्मपर्याप्ता स्ते  
परकायिका सङ्ख्यातगुणा , सूक्ष्मपर्याप्तेभ्यः पर्याप्ताना मोघत एव सङ्ख्यगुणत्वाद् १९ । तत सूक्ष्मपृथिवीकायिक २० सूक्ष्माष्कायिक २१ सूक्ष्मवायु

काड्या अपपञ्चतया असंखिजगुणा १ । पत्तेयसरीवाटरवणस्सडकाड्या अपपञ्चतया असंखेज्ज ० १० ।  
वादिनिगोदा अपपञ्चतया असंखे ० ११ । वाटरपुढविकाड्या अपपञ्चतया असंखे ० १२ । वाटरञ्जाउका  
इया अपपञ्चतया असंखे ० १३ । वाटरवाउकाड्या अपपञ्चतया असंखे ० १४ । सुज्जमतेउकाड्या अपपञ्च  
तया असंखेज्जगुणा १५ । सुज्जमपुढविकाड्या अपपञ्चतया त्रिसेसाहिया १६ । सुज्जमञ्चाउकाड्या अप

पर्या ताने किञ्चा २ यो घोडा घणा सरीक्का विशेषे च्छे । गोधमा सञ्चत्थोवा वाटर तेवकाड्या पञ्चतया वायरतमकाड्या पर्याप्ता असंखिजगणा वा  
उरतमकाड्या अप० असंखेज्जगुणा । हेमौतम सर्वथाडा वाटर तेवकाय पर्याप्ता वाटर तमकाय पर्याप्ता तमव्यातगणा वाटर तमकाड्या अपर्याप  
ता असंख्यातगुणा । पत्तेय सरीर वायरवणस्सड० पञ्चतया असंखेज्जगुणा वायरनिगोउ पञ्चतया असंखेज्जगुणा । प्रत्येकगरीर वाटरवनस्सरीकाय धर्वा  
पत्ता त्रिसंख्यातगणा वाटर निगोद पर्याप्ता असंख्यातगुणा । वाटर पुढवोकाड्या पञ्चतया असंखेज्जगुणा यायर वाउकाड्या पञ्चतया अस० वायर  
वाउकाय अप० अस० वायर तेवकाय अप० अस० । वाटर पृथिवीकाड्या पर्याप्ता अस० वाटर भाक्काव पर्या० अस० वाटर वायुकाय अप० अस० वा  
टर तेवकाय अप० अस० । पत्तेयगरीर वायर वणस्सडकाड्या अपपञ्चतया अस० वायरनिगोय अपपञ्चतया अस० वायरपुढवोकाड्या अप० अस० वाय  
र वाउकाय अप० अस० वायर वाउकाय अप० अस० । प्रत्येकगरीर वादरवनस्सकोकाय अपर्याप्ता अस० वाटर निगोडिया अपर्याप्ता अस० वाटर  
पृथ्वीकाय पर्या० अस० वादर अरकाय पर्या० अस० । वादर वायुकाय अप० अस० । सुज्जम तेवकाय अपपञ्चतया अस० सु० पुढवोकाय तम० सु० भाउ०

क्राविका पर्याप्ता यद्योत्तर त्रिजोपाधिका २२, तेन्य सूत्रनिगोदा धापर्याप्ता असह्यगुणा स्तेषा भक्तिप्राप्त्यन्तेन संवलोक्येणु प्रावात् २३, तेन्य सूत्रनिगोदा पर्याप्तका सह्यगुणा मूक्षमयपर्याप्तेन्य पर्याप्ताना मोचत एव सदा सह्यगुणत्वात्, एतच्च वादरापर्याप्तैर्नरस्त्रापिकादय पर्याप्तसूत्रनिगोदपयवसाना पौन्य पदार्था यद्यप्यन्यथा विज्ञापेणा सह्यलोकाकाशाप्रदशप्रमाणतया सङ्गोयते, तथाप्यसंग्रयेस्या सह्यदेदनिनत्वा दित्य ममस्येयगुणस्य विगपाधिकत्व सरयेयगुणस्य प्रतिपाद्यमानं न विरोधनागिति २४। तन्म पर्याप्तसूत्रनिगोदज्यो वादरवनस्पतिकारिका पर्याप्ता अनन्तगुणा, प्रतिवादरैर्नरनिगोदमनताना जीवाना प्रावात् २५। तन्म सामान्यतो वादरा पर्याप्ता विज्ञोपाधिका, वादरपर्याप्तैर्नरस्त्रापिका

ज्ञातगा विसंसाहिया १७। सुजमवाउकाडया अपज्जतया विसंसाहिया १८। सुजमतेउकाडया पज्जतया ससि० १९। सुजमपुढविक्काडया पज्जतया विसंसाहिया २०। सुजमअउकाडया पज्जतगा विसंसाहिया २१। सुजमवाउकाडया पज्जतया विसंसाहिया २२। सुजमनिगोदा अपज्जतया अससं० २३। सुजमनिगां टा पज्जतया ससि० २४। वादरवणस्सड्काडया पज्जतया अणतगुणा २५। वादरपज्जतया विसंसाहिया २६। वादरवणस्सड्काडया अपज्जतया विसंसाहिया २७। वादरअपज्जतया विसंसाहिया २८। वादरा

अप० विसं० सू० वाउकाय अप० विसं०। मूत्रम तेउकाय अप० असं० मू० पृथ्वीकाय अप० विसंसाहिक मू० वायुका य अप० विसंसाहिक। म० तेउकाय पज्जतगा असं० मू० पठवोकाय पज्जतगा विसं० सू० आनकाय० वाउकाय निगाय पज्ज० विसं०। सू० तेउका य अप० असं० सू० पृथ्वीकाय अप० विसं० मू० वायुकाय अप० विसं० मू० विमाटोया अप० ससगातगुणा। वायर वणस्सड्काडया पज्ज० अणतगुणा वायर पज्जतगा विसं०। वादर वनस्पतीकाय पर्या० विसंसाहिक। वायर वणस्सड्काडय अप० असं० वायर अपज्जतगा विसं० वायरा विसंसाहिया। वादर वनस्पतीकाय अप० असं० वादर अप० विसंसाहिक। वादर निगायपिक। सुहम

तिष्ठा स्तेजोलेइयाका स्तथासौधर्मज्ञानकल्पदेवाद्य तत् प्राप्नुवत्यसंख्येयगुणा स्तदयुक्तं वस्तुतत्वापरिज्ञानात् । लेइयापदेति गन्धव्युत्क्रांतिकतिर्येगयो निम्नाना समूच्छिमपचेद्रियतिर्यक्त्योनिकाना च कृष्णलेइयाद्यल्पबहुल्ये सूत्र वक्ष्यति-सर्व्वत्योवा गन्धव्युत्क्रांतियतिरिक्ताजोशिया सुकलसा तिरिक्त्वजो शिशीउं सखेज्जगुणाउं पल्ललेसगमप्रवक्कतियतिरिक्त्वजोशिया सखज्जगुणा, तिरिक्त्वजोशियोउं सखज्जगुणाउं तउलेसा गन्धव्युत्क्रांतियतिरिक्ताजोशिया सखेज्जगुणा, तेउलेसाउं तिरिक्त्वजोशियोउं संखेज्जगुणाउं इति ॥ महादक्तं च तियंग्योनिकस्त्रीज्यो व्यतरज्योतिष्का च सखेयगुणा वक्ष्यते ततो यद्यपि जवनवासिन्यो व्य सखेयगुणा ज्योतिष्का तथापि पट्टलेइयाकेज्य स्तेजोलेइयाका सखेयगुणागव इदं मत्र तात्पर्योयं, यदि केवलान् देवानं व पट्टलेइयान धिकृत्य देवाएव तेजोलेइयाका श्रित्यन्ते ततो जवत्य सखेयगुणा यावता तिर्यक्सन्मिश्रया पट्टलेइयाकेज्य स्तियंग्सन्मि श्राएय तेजोलेइयाका श्रित्यन्ते तियं च पट्टलेइया अपि श्रित्यह्व स्त सखेयगुणा इति । तेज्य अलेइयाका अनतगुणा सिट्टाना मनस्त्यात् तज्य आपोतलेइया अनतगुणा वनस्पतिकायिकाना मपि आपोतलेइयाया सन्नवात् वनस्पतिकायिकाना च सिट्टेज्यो प्यनतगुणात्वात् तेज्यो पि नीलेश्याविशेषाधिका प्रभूततराणा नीलेश्यासन्नवात् तेज्योपि कृष्णलेइयाका विशेषाधिका प्रभूताना कृष्णलेइयकत्वात्, सामान्यत सले

लेसाण तेउलेसाण पम्हलेसाण सुक्कलेसाण अलेसाणय कयरेकयरेहितो अुप्पावा? गोयमा ! सर्व्वत्योवा जीवा सुक्कलेसा पम्हहेसा सखिज्जगुणा तेउलेसा सखिज्ज ० अलेसाअणतगुणा काउलेसा अणतगुणा नील

कापोतलेगीने तेजोलेगीने पद्मलेगीने शुक्कलेगीने प्रलेगीने किङ्करा २ धोयोडा घणा इत्यादि । गोयमा सर्व्वत्योवाजोवा सुकलसगा पद्मलेसगा सखिज्जगुणा । हेगौतम सर्व्वगोडा जीव शुक्कलेगीना लतकथी कपरिला देवने थाय पद्मलेगीना धणो सख्यातगुणा इयानाटिक देव मणुष्येने हुवे तेनाटे । तेउलेसगा सखिज्जगुणा अलेसगा अणतगुणा काउलेसगा अणतगुणा नीलसगा विसेसादिया किण्डलेसगाविसेसादिया सन्नसगा विसेसादिया चार ८ । तेजोले श्या ज्योतिपोने हुवे तेमाट सख्याता अलेगीविड तेभणो अनथा कापोतलेगीना धणो वनस्पती भणो नीललेगीना धणो विशेषाधिक घणा

त्रया विशेषादिका नीलशेखाकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात्, गतं लेशयाद्वारं, मिदानीं सम्यक्काद्वारं माह-गगसिण नते । जीवाणं सम्यग्दिठीण मित्यादि ॥ सर्वस्तीका सम्यग्मिथ्यादृष्टय । सम्यग्मिथ्यादृष्टिपरिणामकालस्या तर्मेतत्प्रमाणतयाऽतिस्तोकत्वेन तेषां पृच्छासमये साकानामेव राज्यत्वात्, तेन्य सम्यग्दृष्टयोऽनन्तगुणा सिद्धाना मनन्तत्वात्, तेन्योपि मिथ्यादृष्टयो नन्तगुणा वनस्पतिकार्यानां सिद्धेभ्योऽप्यनन्तगुणत्वात्, तेषांच मिथ्यादृष्टित्वा इति । गत सम्यक्काद्वारं, मधुना छानद्वारं माह-गगसिण नते । जीवाणं आग्निविबोह्यणाणीण मित्यादि ॥ सर्वस्तोकामन पयवनानि सपताना मेवा मर्यापथ्यादिश्रद्धिप्राप्ताना मन पयवज्ञानसन्नवात्, तेन्योऽसुर्येयगुणा अयचिज्ञानिनो नैरयिकतियक्पचेद्वियमनुष्यदेवाना मय्य वधिज्ञानसन्नवात्, तेन्य आग्निविबोधिरुचानिन श्रुतज्ञानिन य विज्ञपाधिका सच्चित्तियगपचेद्वियमनुष्याणां मेवा वधिज्ञानविकलाना

लेसा त्रिनंसाहिया करहलेसा विसेसाहिया, दार ८ । एएसिण नते । जीवाणं सम्यग्दिठीण मिच्छादिठीण समाभिच्छदिठीण च कयरे कयरेहितो अप्पावा ४ ? गीयमा ! सच्चित्तयोवा जीवा सम्यामिच्छदिठी, सम्मदिठी अणतगुणा मिच्छदिठीअणतगुणा, दार ९ । एएसिण नते ! जीवाणं आग्निविबोह्यणाणीण

चोयानेयय कण्णलग्न्याना धणो विज्ञपाधिक सातमानरक तथा मन्य तिर्यचने सर्वलेश्यानाधणो विशेषाधिक थाय इति लग्नाद्वारं, द्विवे सम्यक्काद्वारं कहे—एएसिण भते जीवाणं सम्यामिच्छदिठीण मिच्छदिठीण समाभिच्छदिठीणय कयरे २ हितो अप्पावा ४ । हेमगवन् एह जीवने सम्यक्कादृष्टिने मित्यादृष्टि सम्यक्मिथ्यादृष्टिने किडा २ या अल्प घणा इत्यादि । गायमा सच्चित्तयोवा जीवा सम्यामिच्छादिक्काद्वारं समादिठो अणतगुणा मिच्छदिठ्ठा अणतगुणा दार । हेमौतन भवथाडाजीव सम्यामिथ्यादृष्टि जेमणो मिथ्यगण्ठणाणीकाल तमणो तेहथो सम्यक्कादृष्टि अनरत्तसिद्ध भेनता तेहथो मिथ्यादृष्टि अनरता वनस्पती भेसता इति सम्यक्का ८ द्विवे छानद्वारं कहे—एएसिणभते जीवाणं आग्निविबोह्यणाणीण सयनाणी आहिणाणी मयपज्जवणाणी केवलणाणीणय कयरे २ हितो अप्पावा ४ । हेमगवन् एह जीवाने मतिज्ञानोने सुतज्ञानोने अवधिज्ञानोने मनपर्यवज्ञानोने केवलज्ञानाने किडा २ थो थोडा

मपि केषांचि दानिनिधोपिकभूतज्ञानज्ञाधात्, स्वस्थाने तु त्वेपि परस्पर तुल्या जत्यसुयनाण तत्यसुयनाण तत्यसुयनाण नितिउच  
नात्, तेज्य केवलजानिनो अरन्तगुणा सिद्धाना मनन्तत्वात्, उक्तहि-ज्ञानानि मल्पबहुत्व मिदानी तदप्रतिपक्षज्ञानात् मज्ञानिना मल्पबहुत्व  
माह-एएसिण भते । जीवाण मइअन्नाणीण मि यादि ॥ सर्वस्तीका विमङ्गलानि कतिपयानामेव नैरपिकदेवतिर्यक्पचेद्रियमनुप्याणा विजाना  
वात्, तेज्यो मत्यज्ञानिन युताज्ञानिनो उन्तगुणा, वनस्पतीनामपि मत्यज्ञान अताज्ञानज्ञाधात्, स्वस्थाने तु परस्पर तुल्या जत्यमइअन्नाण त  
त्यसुयअन्नाण जत्य सुयअन्नाण तत्यमइअन्नाण मितिबचनत्-सप्रत्युनयेपा ज्ञानाज्ञानिता मल्पबहुत्व माह-ययविण भते । जीवाण नित्यादि ॥  
सर्वस्तीका मन पर्यवज्ञानिन सुयताना मेवा सर्वोपप्या दृढिप्राप्ताना मन पर्यवज्ञानसदवात्, स्तेज्यो उसाय्येयगुणा अवचिच्चानिन स्तेज्य आनिनि

सुयणाणीण उहिणाणीण मणपज्जवनानीण केवलनानीण कयरे कयरंहितो अय्यावा? गोयमा ! सव्व  
त्योवा मणपज्जवनानी उहिमाणी अउस० अान्निवोहियनाणी सुयनाणी दोवि तुल्ला विसेसाहिया केव  
लनाणी अण० । एएसिण भते ! जीवाण मइअणानीण सुयअणानीण विनगनाणीणय कयरे कयरंहितो

षण इत्यादि गोयमा सबव्यावा जीवा मणपज्जवणाणी आहिणाणी असखेज्जगणा । इगोतम सर्वथाहा मनपर्यवज्ञानोने किम अमांसदो नयिना  
धणी ते इवे तेमाटे तेहथो अवधिचानो असकपात देवता नारकी मनय तिर्यचने इवे तेमाटे आभिणिवोहियणाणो सुयणाणी दोवितुल्ला विसेसा  
हिया केवलनानी अणतगणा । मतिज्ञानो युतज्ञानो वेमरीखा जीवाभिगमे कक्षाके जत्यमइणाण तत्यमइणाण, मइणाण अवविणाणीथो विगीपाधिक  
केवलज्ञानो अनगगणा सिद्धनाल्लेवा भणी, इवे ज्ञानना प्रतिपद्याना अयवइत्व गेहेके-एएसिण भते जीवाण मइअणाणीण सउअणाणीण विमगणा  
णीणय कयरे २ हितो अपपुत्ता ४ । हेभगवन् गइजोवने मतिज्ञानोने युतज्ञानोने विमगणाणीने किहा २ थो थोडा इत्यादि । गोयमा सबव्यावा विमग  
णाणी मइअणाणी सुयपणाणी दावितुल्ला अणतगणा । इगोतम सर्वथाहा विमङ्गलानो युतअज्ञानो दो

योधिक्रान्तिन युतञ्जानिन य विशेषाधिका स्वस्थाने तु द्वायपि परस्परं तृत्या अत्रनाध्या प्रागेवोक्ता, तेज्योस्येयगुणा विनंगञ्जानिनो यस्मात्सुरगती विरयती च सम्यग्दृष्ट्यो मिथ्यादृष्टयो असम्यग्दृष्टयो ऽप्यधिनानिनो मिथ्यादृष्टयो विजगज्जानिन इत्यसम्येयगुणा स्तेष्व केवलज्जानिनो ऽनन्तगुणा. सिद्धान्तमनन्तत्वात्, तेज्योस्येयगुणा वनस्पतिकारिकायिकाना सिद्ध्यो प्यनन्त

अप्यात्राऽ गीयमा । सवृत्त्योवा जीवा विजगनानी मडचुन्तानी दोवि तुल्ला अणतगुगा । एएसिणं नते ! जीवाण अग्निनिवांहियनानीण सुयनानीण उहिनानीणं मणपज्जवनानीण । केवलनानीण मतिचुन्तानीण सुयचुन्तानीण विजगनानीण कयरे कयरेहितो अप्यात्राऽ गीयमा । सवृत्त्योवा जीवा मणपज्जवनानी उहिनानी असखिजगुणा, अग्निनिवांहियनानी सुयनानीय दोवि तुल्ला विसेसाहिमा, विजगनानी असखेज्ज०, केवलनानी अणतगुगा मडचुन्तानी सुयचुन्तानीय दोवि तुल्ला अणतगु

उ सरोखा विभग्यो अनन्तगुणा वेभणी मतिप्रज्ञानो युतप्रज्ञानो वनस्पताने याग तेमाट । एएसिण भते कोवाण आभिनिवाहियनानीण मृत्तानीण आहियानी मणपज्जवनानी केवलनानी । हेभगवन एहने मतिप्रज्ञानोने युतप्रज्ञानोने भवविज्ञानोने मनपर्यवज्ञानोने केवलनानीने । मद्यनानीण मय प्रसाणीय विभगनानीणय कयरे २ हितो प्यावा ४ । मतिप्रज्ञानोने युतप्रज्ञानोने विभगप्रज्ञानोने किङ्का २ घोडा यणा सरोसा विजेष होवे । गीयमा सब्बत्वा जीवा मणपज्जवनानी ओहियानी असखिजगुणा आभिनिवाहियनानी मृत्तानी टावितुल्ला विसेसाहिमा । हेगौतम सर्वथाडा जीव मनपर्यवनाधणी नयना धणी साधने हुवे । तेह्यो अयधित्तानो असम्यक्तागुणा मतिप्रज्ञानो युतप्रज्ञानो वेभरीया अवधिप्रज्ञानोयो विजेषाधिक । विभगनानी असखिजगुणा केवलनानी अणतगुणा नदचणणी टावितुल्ला अणतगुगा दार १० । विभप्रज्ञानो असम्यक्तागुणा मिथ्यात्वोने हुवे पिण सम्यक्तानयो तेमाटे कालज्जानो अनन्तगुणा सिद्ध सेलता मतिप्रज्ञानो युतप्रज्ञानो दोव सरोखा केवलनानीयो अनन्तगुणा वनस्पतानोमटे इति ज्ञानद्वार ।

त्वात्, तेषां च मत्तज्ञानि श्रुताज्ञानित्वात्, स्वस्थानेतु द्वावपि परस्पर तुल्या गतं ज्ञानद्वार मिदानी दर्शनद्वारमाह-एवमिह ज्ञते । जीवाणां चक्षुः  
दसणीण मित्यादि ॥ सवस्तोका व्यवधिदर्शनिनो देवनैरयिकाणा कतिपयानां च सञ्चिपचेद्वियतिगमन्युयाणा मवधिदर्शनज्ञावात्, तेभ्यो अनुदर्शनिनो  
उसत्येयगुणा सर्वेषां देवनैरयिक गजगमन्युयाणा सञ्चितिर्यगपचेद्वियाणा चतुरिद्वियाणा च अशच्चितिर्यगपचेद्वियाणा चक्षुदर्शनज्ञावात्, तेभ्य केन  
दर्शनिनोऽनन्तगुणा सिद्धानामनन्तत्वात्, तेभ्यो उचक्षुदर्शनिनो अनन्तगुणा वनस्पतिकायिकानासिद्धेभ्योऽप्यनन्तत्वात्, गत दर्शनद्वार, मधुना संय  
तद्वार माह-एवमिह ज्ञते । जीवाण मित्यादि ॥ सवस्तोका संयता उत्कृष्टपदेपि तेषां कोटिसहस्रपृथक्प्रमाणतया लभ्यानत्वात्, कोटिसहस्रपुस्त  
मणुयलोए सजयाण मिति वचनात्, तेभ्य संयतासयतादेशविरता असत्येयगुणा स्तिर्यक् पचेद्वियाणा मसत्याताना देशविरतिसद्भावात्, तेभ्यो

णा, दारं १० । एवमिह ज्ञते ! जीवाण चक्षुदसणीण अचक्षुदसणीण उहितसणीण केवलदसणीणय क  
यरे कयरेहितो अप्यवा ४ ? गोयमा ! सद्योवा जीवा उहितसणी चक्षुदसणी असखेज्जगुणा, केवलदस  
णी अणतगुणा अचक्षुदसणी अणतगुणा, दार ११ । एवमिह ज्ञते ! जीवाण सजयाण असजयाण सज  
यासजयाण नोसजया नोअसजया नोसजया २ णय कयरे २ हितो अप्यवा ४ ? गोयमा ! सद्योवा

एवमिह ज्ञते जीवाण चक्षुदसणीण अचक्षुदसणीण ओहितसणीण केवलदसणीणय कयरे २ हितो अप्यवा ४ । हे भगवन् एह चक्षुदर्शने दर्शनद्वार कहेहि  
अचक्षुदर्शने अयधिदर्शने केवलदर्शने न किं २ यो धोडा घणा इत्यादि । गोयमा सद्योवा जीवा ओहितसणी चक्षुदसणी असखेज्जगुणा । हे  
गौतम सर्वधाडा जीव अवधिदर्शनी जेभणी मनुष्य तिर्यच देव नारकीने हवे चक्षुदर्शनी असत्यातगुणा चौरिन्द्रियादिकमे । केवलदसणी अणतगुणा अ  
चक्षुदसणी । केवलदर्शनी अनन्तगुणा अचक्षुदर्शनी अनन्त पांचेपाव यावरचाथी इति ११ । एवमिह ज्ञते जीवा सजयाण असजयाण सजयासजयाण  
नोसजय नोअसजय सजयाणय कयरे २ हितो अप्यवा ४ । हे भगवन् एह जीवाने संयतने संयतासयतने नोसयत नोअसयतने नासंय

नोसंयता नोअसंयतासंयता अनन्तगुणा प्रतिपेचययुत्ता ति सिट्ठा स्ते चा नंता इति तेज्यो ऽसंयता अनन्तगुणा वनस्पतीनां सिद्धेभ्यो प्यनन्त  
त्वात्, गत सयतद्वार, सप्रत्यु पयोगद्वार माए-एएसिण जते । जीवाण सागारोवउत्ताण मित्यादि ॥ इहा नाकारोपयोग काल सर्वस्तीका सा  
कारोपयोगकाल स्तु सहेयगुणा ततो जीवा अप्य नाकारोपयोगोपयुक्ता सर्वस्तीका पृच्छासमये तेपा स्तीकानामेवा वाप्यमानत्वात्, तज्य सा  
कारोपयोगोपयुक्ता सहेयगुणा साकारोपयोगकालस्य दीपतया तेपा पृच्छासमये बहूनाप्राप्यमाणत्वात्, गत मुपयोगद्वार, मिटानी माहार  
द्वार-एएसिण जते ! आहारगाण मित्यादि ॥ सर्वस्तीका जीवा अनाहारका विग्रहगत्यापन्नादीना मेवा नाधारकत्वात्, उक्त च-विग्रहगहमाव  
दा कंउलिणोसमुहयाअजोगीय सिद्धायअणाहारा संसाआहारगजीवा ॥ १ ॥ तेज्य आहारका असहेयगुणा ननु वनस्पतिकायिकाना सिद्धेभ्यो

जीवा सजया सजया असजया असखेज्जगुणा, नोसजता नोअसजता अनन्तगुणा, असज  
ता अनन्तगुणा, दार १२ । एएसिण जते ! जीवाण सागारोवउत्ताण अनन्तगुणा कयंरं २ हितो  
अप्पावा १ ? गोयमा ! सव्वत्थीवा जीवा अनन्तगुणा सागारोवउत्ता सखिज्जगुणा, दार १३ । एए

तासयतने किहा २ थो घोडा घणा इत्यादि । गोयमा सव्वत्थीवानोवा सजयासजय असखिज्जगुणा नोसजय नो असजय अनन्तगुणा नो सजयासजय  
अनन्तगुणा असजया अनन्तगुणा दार १२ । हे गौतम सर्वयोडा जीव सयतासयत कोडिसहस्र पुद्गल मण्णोण सजयाणमिति वचनात् देगविरिति अस  
ख्यातगुणा तिर्यच पक्षेद्रूपेण धाय वय प्रतिपेधवर्त्ती सिद्ध अनन्तगुणा तेद्वी असयत अनन्तगुणा वनस्पतीकायमाटे तेद्वी असयत अभय अनन्तगुणा  
इति १२ । एएसिण भते जीवाण सव्वत्थीवा सागारोवउत्ता अनन्तगुणा कयंरं २ हितो अप्पावा ४ । हेभगवन् एह जीवने साकारोपयोगीने  
अनाकारोपयोगीने किहा २ थो घोडा घणा इत्यादि । गोयमा सव्वत्थीवा अनन्तगुणा सागारोवउत्ता सखिज्जगुणा दार । हेगौतम सर्वयोडा जी  
व अनाकारोपयोगी पृच्छासमये घोडालाभे तेद्वी साकारोपयोगी सख्यातगुणा पृच्छासमय घणा लाभे । एएसिण भते जीवाण आहारगाण मणाहा



प्य नन्तत्वात्, तेषां चारक्तयापि लभ्यमानत्वात्, कथमनंतगुणा न भवति तदयुक्तं वस्तुतत्वापरिज्ञानात्, इह मून्मनिर्गोदा सर्वसङ्ख्या प्य सङ्ख्या तत्र प्यन्तर्मुक्तं समथराशितुल्या मून्मनिर्गोदाः सद्यकालविग्रहे वत्तमाना लभ्यन्ते ततो नाहारका अप्यतिथयश्च सकराजीवराश्यसङ्ख्येयाना गतुल्या इति, तस्य आहारका असङ्ख्येयगुणा स्तेय नानन्तगुणा, गत माहाद्वार, अज्ञापकद्वार माह-एएसिण ऋते । जीवाण ज्ञासगाण मित्यादि सर्वस्तीका नायका ज्ञापालब्धिसपत्ना द्वीन्द्रियादीना मेवज्ञापकत्वाते, अज्ञापका ज्ञापालब्धिहीना अनन्तगुणा वनस्पतिकायिकाना मनन्तत्वात्, गत ज्ञापकद्वार, समति परीक्षद्वार माह-एएसिण ऋते । जीवाण मित्यादि ॥ इह परीक्षा द्विविधा, नवपरीक्षा य तत्र नवपरीक्षा

सिण ऋते ! जीवाणं ज्ञाहारगाण ज्ञाणाहारगाणय कयरे २ हितो ज्ञप्यावा १ ? गोयमा ! सवृत्योत्रा जीवा ज्ञाणाहारगा ज्ञाहारगा ज्ञसखिज्जगुणा, दार १४ । एएसिण ऋते ! जीवाण ज्ञासगाण ज्ञासगाणय क यरे कयरे हितो ज्ञप्यावा वज्जयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सवृत्योत्रा जीवा ज्ञासगा ज्ञासगा ज्ञाणतंगुणा, दार १५ । एएसिण ऋते ! जीवाण परित्ताण ज्ञपरित्ताण नो ज्ञपरित्ताणय

रगाणय कयरे २ हितो ज्ञप्यावा ४ । हेभगवन् एह जीवने आहारोने किंवा २ योडा घणा इत्यादि । गोयमा सवृत्योत्रा जीवा ज्ञाणाहारगा ज्ञाहारगा ज्ञसखिज्जगुणा । हेगौतम सर्वयोडा जीव ज्ञाहारो विग्रहगति आहारनहो तथा सिद्ध ज्ञाहारो गाथा—विग्रहः मावणा केवल्लिणो समुदया ज्ञयो गो उ सिद्धाय ज्ञाहारो सेसा ज्ञाहारगा जीवा इति वचनात् तेहथो आहारो जीव असम्यातगुणा हुवे अनन्तगुणा नहो तेकिम सवृत्योत्रा गोट सर्वकाले वि ग्रहगति वर्तमानपामै तेमाटे ज्ञाहारो वणा पिण सकलजीवराथि सस्यातभाग तुल्यछै तेभथो आहारकजीव सस्यातगुणा लाभे पिण ज्ञाहारोथी ज्ञाहारगा नलाभे ए आहारकद्वार १४ सो कथो । एएसिण भते भासगाण ज्ञासगाणय कयरे २ हितो ज्ञप्यावा ४ । हेभगवन् जीवाने भायकाने वल्लो ज्ञापाकाने किंवा २ यो योडा घणा देवमनु तिर्यच नारको इत्यादि । गोयमा सवृत्योत्रा जीवा भासगा ज्ञासगाणय कयरे १५ । हेगौतम सर्व

येपाकिचिदूना उपाहुंपुद्गलपरिवर्तमानससार कायपरीक्षा प्रत्येकशरीरिण तत्रव्रत्येपिपरीक्षा सर्वस्तीका शुक्लपाक्षिकाणा प्रत्येकशरीरिणा च जो पञ्जीवापेक्षया तिस्ताकत्वात्' ततो नोपरीक्षा नोअपरीक्षा अनन्तगुणा उन्नयप्रतिपेधवृत्ता हि सिद्धा स्तेषा मता इति तन्नो उपरीक्षा अनन्तगुणा कृष्णपाक्षिकाणा साधारण्यनस्पतीना वा सिद्धेभ्यो प्यनन्तगुणत्वात्, गत परीक्षद्वार । समति पयामिद्वार-एएसिण व्रत । जीवाण पञ्जत्तगुणमित्यादि ॥ सर्वस्तीका नोपर्याप्तका नोअपर्याप्तका उन्नयप्रतिपेधवृत्तिनो हि सिद्धा स्तेषा पयामिकादिव्य सर्वस्तीका इति, तन्नो उपयामका

कयरे कयरेहितो अय्यावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा परिक्षा नोअपरिक्षा नोअपज्जत्तगुणा अयपरिक्षा अणत्तगुणा, दार १६ । एएसिण व्रते । जीवाण पज्जत्तगुणा अयपज्जत्तगुणा नोअपज्जत्तगुणा नोअपज्जत्तगुणा अयपज्जत्तगुणा

थाडा जीवभापक न्निधिसम्यन्न बोद्धयादिक तेद्वयो अभापक अनन्तगुणा वनस्पता भेनता इति १५ भापक समाप्त, इव प्रत्येकहार कहंहे—एएसिण भते जीवाण परिक्षाण अपरिक्षाण नापरिक्षा परिक्षाणय कयरे २ इतो अय्यावा ४ । हेमगवन एव जीव पारत्त अपरिक्षा टाउभेदे भवपरिक्षा काय परिक्षा तिहा भवपरिक्षा जेहन जणो अहुपुद्गल कहिय कायपरिक्षा प्रत्येकजीवना पारत्ता अपरिक्षा सिद्ध कहंहे एहमाहि किहा २ यो थाडा घ णा इत्यादि मरीखा विजेषाधिक हव । गोयमा सव्वत्थवा जीवा परिक्षा नापरिक्षा २ अणत्तगुणा अपरिक्षा अणत्तगुणा हार १६ । हेमोतम सर्वथाडा जीव शुक्लपक्षो प्रत्येकगरीर टोय प्रतिपेधवृत्ती सिद्ध ते अनन्त तद्वयो अपरिक्षा प्रत्येक अनन्तगुणा साधारण वनस्पता भेनता इति प्रत्येकहार १६ । एएसिण भते जीवाण पज्जत्तगुणा अपज्जत्तगुणा नो पज्जत्ता २ णय कयरे २ इतो अय्यावा ४ । हेमगवन एव जीव पर्याप्ता अपर्याप्ताने टोय प्रतिपेधो सिद्धे अपर्याप्ता पर्याप्ता किहा २ यो थाडा घ णा इत्यादि । गायमा सव्वत्थवा जीवा नो पज्जत्तगुणा नो अपज्जत्तगुणा अणत्तगुणा पज्जत्तगुणा स विज्जगुणा दार १७ । हेमोतम सर्वथाडा जीव उन्नयप्रतिपेधो सिद्धमणो सिद्धथाडा तेद्वयो अपर्याप्ता अनन्तगुणा साधारण्यनस्पता भते तद्वयो सत्था

अनन्तगुणा साधारणवत्तत्त्विकानां सिद्धेभ्यो नन्तगुणानां सर्वकालमपर्याप्तत्वेन लक्ष्यमानत्वात् । तेभ्य पर्याप्ता सहेयगुणा इह नर्ववत्त्वो जीया मूल्मा सून्माश्च सर्वकाल मपर्याप्तस्य पर्याप्ता सहेयगुणा इति । सहेयगुणा उक्ता गत पर्याप्तद्वार १७ । सप्रति सूत्तद्वार-स्यसिण प्रते । जीवाण सुहुमाण मित्यादि ॥ सर्वस्वोका जीवा नोसूत्ता नावाटरा सिद्धा इत्यर्थः । तेषां मूल्माजीवराशो वांटरजीवराशो वा नन्तगुणकल्पत्वात् । तभ्यो वाटरा अनन्तगुणा वाटरनिगोदजीयानां सिद्धेभ्यो नन्तगुणत्वात् । तस्य मूल्मा अससगुणा वाटरनिगोदेभ्य मूल्मनिगोदानां मसरयेयगुणत्वात् । गत सूत्तद्वार १८ । इदानीं सच्चिद्वार-स्यसिण प्रते । जीवाण सन्तीण मित्यादि ॥ सर्वस्वोका सच्चिन समनस्कानामेव सच्चित्वात् । तेभ्यो नोसच्चिनो नोऽसच्चिनो अनन्तगुणा उन्नयप्रतिषेधवृत्ता हि सिद्धा स्तेष सच्चिभ्यो अनन्तगुणा एवेति । तेभ्यो ऽच्चिनो अनन्तगुणा वनस्पतीनां सिद्धे

अणतगुणा पञ्जग सस्येज्जगुणा । एएसिण प्रते । सुज्जमाण वाटराण नोसुज्जमाण नोवाटराणय कयरे २  
हितां अण्वावा ४ ? गोयमा । सञ्च्योवा जीवा नोसुज्जमा नोवाटरा, वाटरा अणतगुणा सुज्जमा अणसखे  
ज्जगुणा, टार १८ । एएसिण प्रते ! जीवाण मन्तीण अणसन्तीण नोअणसन्तीणय कयरे कयरे  
हितां अण्वावा ४ ? गोयमा ! सञ्च्योवा सन्ती नोसन्ती नोअणसन्ती अणतगुणा, अणसन्ती अणतगुणा ।

तगुणा पर्याप्ता इति पर्याप्ताहार सपूर्ण इया, द्विवे मूल्माद्वार १८ मां कहंछे — पणसिण भते सुहुमाण वाटराण नो सुहुमाय वाटराणय कजर २ हितां अण्वावा ४ । हेमगवन् एह मूल्मावाटरने उभयप्रतिषेधवर्त्ती सिद्धने किहा २ यो योडा वणा इत्यादि । गोयमा सञ्च्योवा नो सुहुमा नो वाटरा वा यरा अणतगुणा सुहुमा असञ्चिज्जगुणा द्वार । हेमगवन् सर्वथांछाजीव उभय प्रतिवर्त्ती सिद्धना जेमणो मूल्मावाटर जीवराशिनो अणतगुणेभागे सिद्धे ते इयो वाटर अणतगुण निगोदिगा तेहयो मूल्मनिगोद असञ्च्यतगुणाकै इति ३ पदे मूल्माद्वार १८ मां कहंछे, द्विवे मूल्माद्वार कहंछे — पणसिण भते जो वाय सणीण असणीण नो सणीणय नो असणीणय कयरे २ हितां अण्वावा ४ । हेमगवन् एह जीव सञ्च्योअसञ्च्योने नसञ्चो नयसञ्चो उभयवर्त्ती सिद्धने



प्रवसिद्धिकद्वार २० । साप्रत मस्तिष्कायद्वार माह-एणसिण प्रते । धर्मास्तिकायो ऽधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय गते न  
यापि द्रव्यायंतया द्रव्यमवा स्तस्यन्नावो द्रव्यायंतया द्रव्यरूपतया इत्यर्थे, तुल्या समाना प्रत्येक मेकसङ्गाकत्वा दत्तएव सवेस्ती  
का, स्तेज्यो जीवास्तिकायो द्रव्यायतया नन्तगुण जीवाना प्रत्येक तद्द्रव्यत्वात्तया व जीवास्तिकाये ऽनन्तत्वात्, तस्मादापि पुद्गलास्तिकायो द्रव्या  
यतया नन्तगुण कथ मितिचेत् उच्यते-इए परमाणु द्विप्रदेशकाटीनि पृथक् २ द्रव्याणि तानि व सामान्यत स्त्रिया तद्यथा-प्रयोगपरिणतानि  
मिश्रपरिणतानि विश्रसापरिणतानिच तत्र प्रयोगपरिणतान्यपि तावज्जीवज्यो ऽनन्तगुणानि एकैकस्य जीवस्या नतै प्रत्येक ज्ञानावरणीयादिकर्म  
सु पुद्गलस्कन्धे रावेष्टितत्वात् किपुन यथाणि तत प्रयोगपरिणतज्यो मिश्रपरिणतज्यो नन्तगुणानि तज्यो पि विश्रसापरिणतान्य नन्तगुणानि,

स्तिकाय जीवस्तिकाय पुग्गलस्तिकाय अद्वासमयाण दव्वठयाए कयरे कयरेरहिती अप्पावा४ ? गोयमा !  
धम्मस्तिकाए अधम्मस्तिकाए अगासस्तिकाए एए तिन्निचि तुह्वा दव्वठयाए सव्वयोवा जीवस्तिकाए दव्व  
ठयाए अणतगुणे, पुग्गलस्तिकाए दव्वठयाए अणतगुणे अद्वासमए दव्वठयाए अणतगुणे । एएसिण नते !  
धम्मस्तिकाय अधम्मस्तिकाय अगासस्तिकाय जीवस्तिकाए पोग्गलस्तिकाए अद्वासमयाण पदेसठयाए

माधम्मस्तिकाए अधम्मस्तिकाए अगासस्तिकाए एएण तिणवितुहा दव्वठयाए । हेगौतम धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय ० ३ द्रव्याधर्मा  
वै द्रव्यरूपपरिण ३ ३ सरोखुाहे अस्सत्त्वत्तपणामाटै । सव्वयावा जीवस्तिकाए दव्वठयाए अणतगुणा पुग्गलस्तिकाए दव्वठयाए अणतगुणे अद्वासमए दव्वठ  
याए अणतगुणे । सर्वथाडाजीव जीवास्तिकाय द्रव्यो अनन्तगुणा व्वे जीवास्तिकाययो पुद्गलास्तिकाय द्रव्यायंतया अणतगुणा तेमाटे पुद्गलेना ३  
भेदकत्वा प्रयागपरिणित मिश्रपरिणित विज्रसापरिणित ३ तिहा जे प्रयोगपरिणित ते जीवयो अनन्तगुणाहे जिमारे एकजीवने अनन्त ज्ञानावरणा  
दिक पुद्गल स्तन्य नावेष्टितहे ते प्रयागपरिणतयको निजपः अनन्तगुणा तेव्वयो विज्रसा धारिणत अनन्तगुणा उल्लव-प्रज्ञतो सर्वथाडा पुद्गल प्रयो

तथा धोक्त प्रज्ञासौ सवृत्त्योवा पुग्गलापयोगपरिणया मीसपापरिणया अनन्तगुणा इति । ततो ज्ञवति जीवास्ति कायात् पुद्गलास्तिकायो द्रव्यायतया अनन्तगुण , तस्मादप्य द्वासमयो द्रव्यतया अनन्तगुण कथं मिति चत् उच्यते-इहै कस्यैवपरमाणो रनागतकाले तत्तद्वि प्रदेशकनिर्देशकयाव द्वाप्रदेशक सस्यातप्रदेशका ऽसस्यातप्रदेशका ऽनन्तप्रदेशकस्कन्धान्त परिणामितया अनन्ता प्राविन सयोगा पृथक् २ काला केवलवेदोपलब्धा यथा कैस्य परमाणो स्तथा सर्वपा प्रत्येक द्विप्रदेशकादिस्कन्धाना च अनन्ता सयोगा पुरस्कृता पृथक् २ कालाउपलब्धा सर्वेषामपि मनुष्यकुत्रान्तर्वात्ततया परिणामसञ्जात् , तथा क्षेत्रतो व्यय परमाणु रमुष्मिन् आकाशप्रदेशे अमुष्मिन्काले श्रवगाहिष्यते इत्येव मन ता एकस्य परमाणो प्राविन सयोगा यथै कस्य परमाणो स्तथा सर्वपा परमाणूना तथा द्विप्रदेशकादीनामपि स्कन्धाना मनन्तप्रदेशस्कन्धपर्यंता ना प्रत्येक तत्तदेकप्रदेशाद्यावगाहनेदतो त्रिन्न २ काला अनन्ता प्राविन सयोगा स्तथा कालतो व्यय परमाणु रमुष्मिन्ना काशप्रदेशो एकसमयस्थि

कयरे कयरेहितो झुप्पावाः गोयमा ! धम्मल्लिकाए झुधम्मल्लिकाए एएसिण दोवि तुल्ला पदेसठयाए स  
वत्थोवा जीवल्लिकाए पदेसठयाए झुणतगुणा पोग्गल्लिकाए पदेसठयाए झुणतगुणा झुद्धासमए पदेसठ

गपरिणता अपरिणता अनन्तगुणयोः सप्तापरिणता अनन्तगुणा इति, एक परमाणु अनन्तकालेके तिष्ठतु पच इमं सत्त्वात् अनन्त प्रदेशस्थ  
परमाणुमते अनन्तभावाः संयोगकोर्वात् एतौटा इमं सर्वं मनुष्यस्य पुद्गल जे अनन्तप्रदेशाख्य असत भावोसयोग पध् अनन्तकाल संगे इमं इत्यादिक  
सगले जाणिवां द्रव्यकी अल्प बहुल कक्षी, द्वि प्रदेशी अल्प बहुल कक्षी, एवमिण भते धर्मात्तिकाय अधर्मात्तिकाय आगासत्तिकाय जीवत्तिकाय  
पगलत्तिकाय अज्ञासमयाण एए पएसठ्गाए कयरे २ द्विती अध्यावा ४ । हेभगवन् एह धर्मात्तिकाय अधर्मात्तिकाय आकाशात्तिकाय जीवात्तिकाय  
पुद्गलात्तिकाय अज्ञासमय प्रदगार्थ किहा २ यौ याडा घणा इत्यादि । गायमा धर्मात्तिकाय अधर्मात्तिकाय आकाशात्तिकाय जीवात्तिकाय  
य नधर्मात्तिकाय ए दोय सरोखाके । पदसठ्गाए जावत्तिकाय सधत्तिकाय पएसठ्गाए अनन्तगुणे पुगलत्तिकाए पएसठ्गाए अणतगुण अज्ञासमए प

नित इत्येव मेकस्यापि परमाणो रेकस्मिन्नाकाशप्रदेशे सख्येया जाविन संयोगा एव सर्वेष्वप्या काशप्रदेशेषु प्रत्येकमसख्येया जाविन संयोगा स्त  
तो जूयोनूप स्तथाकाशप्रदेशेषु परावृत्तौ कालस्या नन्तत्वा दनन्ता कालतो जाविन संयोगा यथा चैकस्यपरिमाणो स्तथा सर्वेषा परमाणूना स  
र्वेषा च प्रत्येक द्विप्रदेशकादीना स्क्त्याना, तथा ज्ञावतो व्य य परमाणुरमुस्मिन्काले एकगुणकालको ज्ञावती तथैव मेकस्यापि परमाणुर ज्ञित २  
काला अनतो संयोगा, यथा चैकस्यपरमाणो स्तथा परमाणूना सर्वेषा च द्विप्रदेशकादीना स्क्त्याना पृथक् २ अनन्ता ज्ञावत पुरस्कृता संयोगा  
तदेव मेकस्यापि परमाणो द्रव्यक्षेत्रकालज्ञाविशेषस्यधृज्ज्ञा दनन्ता जाविन समयावपलब्ध्या, यथैकस्य परमाणो स्तथा सर्वेषा परमाणूना सर्वे  
षा च प्रत्येक द्विप्रदेशकाना स्क्त्याना नचै तत्परिणामकालवस्तुव्यतिरेकपरिणामिपुद्गलास्तिकायादि व्यतिरेकं बोधपद्यन्ते तत सर्वमिदं च तात्वि  
कं मतमेव । उक्तं च-संयोगपुरस्कारं च नाम जाविनि हि युज्यते कालेन हि संयोगपुरस्कारो ह्यसता केषाचि दुपपन्न इति । यथा च सर्वेषा पर

याए अणतगुणा आगासत्तिकाए पदेसठाए अणतगुणा । एएसिण ज्ञते ! धम्मत्तिकायस्स दव्वठ्ठयाए पदे  
सठ्ठयाए कयरे कयरेहितो अण्णयावा वज्जयावा तुल्लावा विसंसाहिंयावा ? गोयमा ! सव्वत्थोत्रा एगे धम्म  
त्तिकाए दव्वठ्ठयाए सोचंवे पदेसठ्ठयाए असंखिज्जगुणा । एएसिण ज्ञते ! अण्णम्मत्तिकायस्स दव्वठ्ठयपदे

एसठ्ठयाए अणतगुणे आगासत्तिकाए पणसठ्ठयाए अणतगुणे । प्रदेशाकौ लोकाकाशप्रदेश परिमान सर्वथाडा लोवास्सिकावप्रद्वयार्थं अनन्तगुणा लो  
वना अनन्ता सारै एकैका लोवनाप्रदेश लोकाकाशप्रदेश प्रमाणत्वे पुद्गलास्तिकायप्रदेशार्थं अनन्तगुणा अनन्ताकर्मना परमाणु वारावेष्टितत्वे एकैका लो  
वनाप्रदेश तेषांटे अनन्ता पद्मनास्तिकायं हवे अडासमय प्रदेशार्थं अनन्तगुणा हवे आकाशास्तिकायं अनन्तात्वे, हिंवे द्रव्यार्थं प्रदेशार्थं प्रायो परस्परै  
अन्य वस्तुत्वत्वे—आकाशास्तिकाय प्रदेशार्थो अनन्तगुणा अनन्तकता अनन्ताभावार्थो तेदर्थो अडासमय अनन्तगुणाप्रदेशार्थो अनन्ता अनन्तसमयमे भा  
व तेदर्थो अडासमया अनन्तगुणा । एएसिण ज्ञते धम्मत्तिकायस्स दव्वठ्ठ पणसठ्ठयाए कयरे २ हिंती णप्पमा ४ । हेमगेवन् एद धर्मास्तिकायादिकने

माणना च द्विप्रदेशकादीना स्कन्धाना प्रत्येक द्रव्यक्षेत्रकालत्राविविशेषस्यचवशां ननन्ताप्राविनो द्वासमया स्तथा अतीता अपीति सिद्ध पुद्गला  
स्तिकायाद नन्तगुणो द्वासमयो द्रव्याचंतयेति । उक्त-द्रव्यायतया परस्पर मल्पयदुत्व मिदानी मंतपामेय प्रदेशायतया तदाह-एवमिण जत । च  
त्मास्तिकाय त्यादि ॥ चमास्तिकायो अधर्मास्तिकाय एतौ द्वावपि परस्पर प्रदेशार्थतया तुल्या वृजयोरपि लोकाकाशप्रदेशत्वात्, शयास्तिकाया  
ऽद्वासमयापक्षया च सर्वस्तोको ततो जीगास्तिकाय प्रदेशार्थतया अनन्तगुण, जीवास्तिकायं जीवाना मनन्तत्वात्, एकैकस्य जीवस्य लोकाका  
शप्रदेशपरिमाणप्रदेशत्वात्, तस्मादपि पुद्गलास्तिकाय प्रदेशायतया अनन्तगुण कथमिति उच्यते-इहकमस्कन्धप्रदेशा अपि तावत्स्यजीवप्रदेशेभ्यो  
ऽनन्तगुणा एकैकस्य जीवप्रदेशस्या नन्तान्तै कमपरिमाणानि रावेष्टितपरिवेष्टितत्वात्, किपुन सकलपुद्गलास्तिकायप्रदेशा ततो अवति जी  
यास्तिकाया स्पुद्गलास्तिकाय प्रदेशायतया अनन्तगुण, तस्मादप्य द्वासमय प्रदेशायतया अनन्तगुण एकैकस्य पुद्गलास्तिकायप्रदेशस्य प्रागुक्तक्रमेण  
तत्तद्द्रव्यघटकालत्राविविशेष सधचभावतो ऽनन्ताना मतीताद्वासमयाना मनन्ताना मनागतसमयाना ज्ञावात्, तस्मा दाकाशास्तिकायप्रदेशायतया

सठयाए कयरे कयरेहितो अप्पावा ४ ? गोयमा । सव्वल्लोवे एगे अथम्मल्लिकारु दव्वठयाए सोचेव पदे  
सठयाए अससिज्जगणे । एतरसण जते । अगासल्लिकारुसस दव्वठपदेसठयाए कयरे कयरेहितो अप्पावा ४

द्रव्यायप्रदेशना चाथो जीवता निहा र थो थाडा घ णा इत्यादि । गोयमा सव्वत्थावा धम्मल्लिकारु दव्वठयाए सोचव पएसठयाए अससिज्जगुणा । हेगो  
तम सर्वथोडा धर्मास्तिकाय द्रव्यको एकमाटे ते धर्मास्तिकाय प्रदेशयको असव्व्यातगुणा लोकाज्जाग । एयसण भते अथम्मल्लिकारुसस दव्वठपएसठया  
कयरे र हितो त्रपावा ४ । हेमगवन एहने अधर्मास्तिकाय द्रव्ययो प्रदेशयो किहा र थो अल्प घणा इत्यादि । गोयमा सव्वत्थावा णे अथम्मल्लिकारु  
दव्वठयाए सोचेवपएसठयाए अससिज्जगणे । हेगौतम सर्वथाडा एक अधर्मास्तिकाय द्रव्ययो एकमाटे अधर्मास्तिकाय प्रदेशयो असव्व्यातगुणा लोकाका  
श प्रदेशममाणल्ले । एवमिण भते अगासल्लिकारुसस दव्वठ पएसठयाए कयरे र हितो अप्पावा । हेमगवन एह आकाशास्तिकायने द्रव्यो प्रदेशो पदयथा कि



अनन्तगुण अलोकस्य सर्वतोऽप्यनन्तताभावात्, गत प्रदेशार्थतया व्युत्पन्नत्वं, मिदानी प्रत्येक द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया लप्यनुत्वं माह-परमिण ज्ञते । इत्यादि ॥ सर्वस्तीकोपमोस्ति कायो द्रव्यायतया स्फुत्वात् प्रदेशार्थतया असंख्येयगुणो लोकाकाशप्रदेशपरिमाणप्रदेशात्मकत्वा देव मधमोस्ति कायसूत्रमपि भावनीय, आकाशास्तिकायो सर्वस्तीक एकत्वात् प्रदेशार्थतया अनन्तगुणो ऽपरिमितत्वात्, जीवास्तिकायो द्रव्यायतया सर्वस्तीक प्रदेशार्थतया असंख्येयगुण प्रतिज्ञीव लोकाकाशप्रदेशभावात्, तथा सर्वस्तीक पुद्गलास्तिकायो द्रव्यायतया द्रव्याणां सर्वत्रापि स्तीकत्वात्, सर्व पुद्गलास्तिकाय स्तद्द्रव्यापेक्षया प्रदेशार्थतया चित्तमानो ऽसंख्येयगुण, ननु वहव खलु जगत्पततप्रदेशका त्रपि स्कन्धा विद्यन्ते । ततो ऽनन्तगुणा कस्मा नञवति तदयुक्त-वस्तुतत्वापरिज्ञाना दिह हि स्थान्या अनन्तप्रदेशका स्कन्धा परिमाणव्यादयस्त्विति ज्ञेय, स्या बह्व्यति सूत्र-सर्वत्यो

१ गोयमा ! सर्वत्योवे एगे व्यागासत्तिकाए दव्वठयाए सोचैव पदेसठयाए अणतगुणा, एतस्सण ज्ञते ! जीवल्लिकायस्स दव्वठपदेसठयाए कयरे कयरेहि तो अण्णवा १ गोयमा ! सर्वत्योवे जीवल्लिकाए दव्वठयाए सोचैव पदेसठयाए अण्णतगुणा, एतस्सण ज्ञते ! पुण्णल्लिकायस्स दव्वठपदेसठयाए कयरे २

हा २ धो थोडा घणा इत्यादि । गोयमा सब्बत्थोवे एगे व्यागासत्तिकाए दव्वठयाए सोचैव पणमहुगए अणतगुणे । हेगौतम सर्वथोडा आकाशास्तिकाय द्रव्य एकमाटे आकाशास्तिकाय प्रदेशयो अनन्तगुणे अपरिमितमाटे । एसिण भते जीवल्लिकायस्स दव्वठयाए पणमहुगए कयरे २ हितो प्रपावा ४ । हेभगवन् एवमे जीवास्तिकाय द्रव्ययो प्रदेशयो किहा २ धो थोडाहवे । गोयमा सब्बत्थोव जीवल्लिकाए दव्वठयाए सोचैव पणमहुगए अण्णतगुणे । हेगौतम सर्वथोडा जीवास्तिकाय द्रव्ययो ते जीवास्तिकाय प्रदेशयो अनन्तगुणा प्रतिज्ञीव ते लोकाकाग प्रदेशमाय प्रदेशहवे । एसिण भते पुण्णल्लिकायस्स दव्वठ पणमहुगए कयरे २ हितो प्रपावा ४ । हेभगवन् एह पण्णाल्लिकाय द्रव्ययो प्रदेशयो किहा २ धो थोडा घणा इत्यादि । गोयमा स सब्बत्थोवे पुण्णाल्लिकाए दव्वठयाए सोचैव पणमहुगए अण्णतगुणे भन्नासमए न पुच्छिज्जा पणसाभाया । हेगौतम सर्वथोथोडा पुद्गलास्तिकाय द्रव्ययो

या अश्रुतपगमियारथा दद्वठयाग अनंतगुणा संवेज्जपगसिया राधा दद्वठयाग सखेज्जगुणा असखेज्जपगसिया राधा दद्वठयाग असखेज्जगुणा इति' ततो यदा सर्व एव पुद्गलास्तिकाया प्रदेशार्थतया चित्यते तदा अनंतप्रदेशकाना स्कन्धाना मतिस्तोकत्वा त्परमाणा च तिवहुत्वा तेषां पुण्यं पुण्यं द्रव्यत्वात् असत्यप्रदेशकाना च स्कन्धाना परमाण्वपेक्षया असख्येयगुणा दसख्येयगुण एवो पपद्यते ना नतगुण अट्टासमय न पुच्छिज्जइति । अट्टासमयो द्रव्याद्यप्रदेशार्थतया नपृच्छते कुत इत्याह-प्रदेशाज्जावात्, आह को य मट्टासमयाना द्रव्याय तानियमो यावता प्रदेशायता पि तया विद्यते एव तथाहि-यथा अनंताना परमाणूना समुदायस्कन्धो नश्यते स च द्रव्य तदवयवा य प्रदशा स्तये नापि सकल कालो द्रव्य तदवयवाद्य समय प्रदशा इति । तत्पुक्त दृष्टातदाष्टान्तिकवैपस्या त्परमाणूना समुदाय तदा स्कन्धो जयति यदा ते परस्परसापेक्षतया परिणमते परस्परनिरपेक्षाणा केवलपरमाणूनामिव स्कन्धत्वायोगात्, अट्टासमयास्तु परस्परनिरपेक्षाद्य वत्तमान समयत्वादे पूर्वापरसमयवो रजागात्, ततो नस्कन्धत्वपरिणाम स्तदजावा च ना ट्टासमया प्रदशा किंतु पुण्यकद्रव्याख्येवेति सम्प्रत्यमीया धर्मो स्तिस्मादादीना सर्वेषा युगपदद्रव्यायंप्रदेशार्थतया ल्पयहुत्व माह-मयसिण ज्ञते ! इत्यादि ॥ धर्मोस्तिक्कायो ऽवर्मोस्तिक्काय आकाशास्तिक्काय

हिती अप्पावा? गोयमा ! सख्योवा पगलत्तिकाए दद्वठयाए सोचेय पदेसठयाए अस्खिज्जगुणा अ  
छासमए ण पुच्छिज्जइ पदेसज्जावा ! एएसिण ज्ञते ! धम्मत्तिकाय अयम्मत्तिकाय अगासत्तिकाय जीव

द्रव्यपणे मघले घोडांमाटे तद्वथी पहलथी प्रदेशद्रव्य सुचिन्तावना यसख्यातगणा हुवे तेकिम परमाणुवा घणा अनन्तप्रदेशिक स्कन्धना घोडांमाटे यस  
ख्यातप्रदेशस्कन्ध सख्यातपणामाटे यसख्यातगणा हुवे पिण अनन्तान्तगण न कपले द्रव्यार्थमय द्रव्यार्थ प्रदेशार्थको न पृच्छिने प्रदेश अभावके जेमाटे  
अनन्ता परमाणवाने स्कन्धकहिणे ते द्रव्य तेवना अवयव ते प्रदेश कहिये ते अवासमय स्कन्धना अयोगके तमाटे द्रव्यप्रदेशाना विज्ञेय नथी, हिंव द्रव्य  
वो धर्मोस्तिक्कायादिकना द्रव्यवो प्रदेशाना एकठोवो ज अल्प बहुत्व कहिये—एएसिण भते धम्मत्तिकाय यधम्मत्तिकाय जीवत्तिकाय पुणल

एते त्रयोपि द्रव्यार्थतया तुल्या सर्वस्तोकाश्च प्रदेशकमेकसख्याकत्वात् ३ । तेभ्यो धर्मास्तिकायो ऽधर्मास्तिकाय एतौ द्वावपि प्रदेशार्थतया ऽस  
स्यगुणौ स्वस्थानेतु परस्परं तुल्यौ ताभ्या जीवास्तिकायो द्रव्यार्थतया अनतगुण अनताना जीवद्व्याणां ज्ञावात् ६, सस्य जीवास्तिकाय प्रदेशा  
यतया असख्यगुण प्रतिजीवमस्येयाना प्रदेशाना ज्ञावात् ७ । तस्मादपि प्रदेशार्थतया जीवास्तिकाया त्पुद्गलास्तिकायो द्रव्यार्थतया अनतगु  
ण प्रतिजीवप्रदेश ज्ञानावरणीयादिकमपुद्गलस्कन्धाना मप्य नताना ज्ञावात् ८ । स एव पुद्गलास्तिकाय प्रदेशार्थतया असख्यगुण अत्र ज्ञावना  
प्रागिव ९ । तस्मादपि प्रदेशार्थतया पुद्गलास्तिकायात् अद्वासमयो द्रव्यार्थतया अनतगुण अत्रापि ज्ञावना प्रागिव १० । तस्मादप्या काशास्तिकाय  
प्रदेशार्थतया अनतगुण सर्वास्वपि दिक्षुविदिक्षु तस्यात्तर्जावात्, अद्वासमयस्य च मनुष्यक्षेत्रमात्रज्ञावात् ११, गत मस्तिकाय, मिदानी चरमद्वार

स्तिकाय पोगलस्तिकाय अद्वासमयाण दक्षयण पदेसठयाए कयरे कयरोहितो ज्ञप्पावा ४ ? गोयमा !  
धम्मस्तिकाए ज्ञप्धम्मस्तिकाए ज्ञागासस्तिकाए एणं तिन्निवि तुल्ला, दक्षयणए सव्वयोवा धम्मस्तिकाए

स्तिकाय अद्वासमयाण दक्षयणए पणसठयाए कयरे २ हितो ज्ञप्पावा ४ । हेमगवम् एह अधर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकायने जीवास्ति  
कायने पुद्गलास्तिकायने गहासमगने द्रव्यप्रदेशयो किदा २ यो घोडाहवे । गोयमा धम्मस्तिकाए अधर्मास्तिकाए आगासस्तिकाए एण तिन्निवितुल्ला दक्षय  
ण सव्वयोवे पणसठयाए धम्मस्तिकाए अधर्मास्तिकाए कयतगुणे सोचं पणसठयाए पसखिजगुणे । हेमोतम धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिका  
य आकाशास्तिकाय ७ ३ ने द्रव्ययकी सरोखाह्वै सर्वयोडाह्वै प्रत्येके २ असख्याताह्वै द्रव्ययो सरोखा ह्वे प्रदेशयो सर्वयोडाह्वै धर्मास्तिकाय अधर्मास्ति  
काय ए दोंय सरोखास्थानके द्रव्ययो असख्यातगणे प्रदेश अधिकाह्वै तेह जीवास्तिकायप्रदेशयो असख्यातगुणा द्रव्यप्रदेशके तेमाटे पुद्गलास्तिकाय द्रव्य  
यो पनन्तगुणा ते पुद्गलास्तिकायप्रदेशयो असख्यातगुणा । अद्वासमए दक्षयणपणसठयाए कयतगुणे आगासस्तिकाए पणसठयाए कयतगुणे हार ।  
अद्वासमए द्रव्यप्रदेशयो अनन्तगुणा आकाशास्तिकाय प्रदेशयकी अनन्तगुणा अद्वासमए विदिग्गने अगतह्वै इति २१ नो आस्तिकार ३ पदे परोद्वा

माह-एएसिण ज्ञते । जीवाण परिमाण मित्यादि ॥ इह येषा परिमोजव सज्जी योग्यतयापि ते चरमा उच्यन्ते-तेषा योद्ग्या इतरे उचरमा अज्या सिद्धा य उन्नयेपामपि चरमाचरमजवाजावात्, तत्र सवस्तोका अचरमा अजव्याना सिद्धाना च समुदितानाम प्यजघन्योत्कष्टयुक्तानतक परिमाणत्वात्, तेभ्यो अनतगुणा थरमा अजघन्योत्कष्टानतानतकपरिमाणत्वात्, गत चरमद्वार, मधुनाजीवद्वार माह-एएसिण ज्ञते । जीवाण पोगलाण मित्यादि ॥ सवस्तोका जीवा स्तस्य पुद्गला अनतगुणा २ तेभ्यो उद्गुसमया अनतगुणा अत्रजावना प्रागेवकता इ तेभ्यो उद्गुसमये न्य सर्वद्रव्याणि विओपाधिकानि कय मितिषेत् उच्यते-इह येषा अनतरमद्गुसमया पुद्गलेभ्यो अनतगुणा उक्ता स्तेप्रत्येक द्रव्याणि ततो द्रव्यचि ताया तेषिपरिशुध्यते तेषु च मध्ये सर्वजीवद्रव्याणि सर्वपुद्गलद्रव्याणि धर्माधर्माकाशास्तिकायद्रव्याणि च प्रक्षिप्यते तानि च समुदितान्यप्य द्वासम याना मनतजागकल्यानी ति तेषु प्रक्षिप्तेष्वपि मनागधिकत्व जात मित्यद्वासमयेन्य सर्वद्रव्याणि विओपाधिकानि ४ । तेन्य सर्वप्रदेवा अनतगुणा आ काशानततयात् ५ तेन्य सर्वपर्याया अनतगुणा एकैकस्मिन्नाकाशप्रदेशे अनताना मगुरुलघुपर्यायाणा जावात् ६ गत जीवद्वार, मधुनाक्षेत्रद्वारमाह-

अधम्मल्लिकाएय एण दीणिवितुह्वा पदेसठयाए असखेज्जगुणा, जीवल्लिकाए दव्वठयाए अणंतगुणे सो चंन पदेसठयाए असखिज्जगुणे पोगलल्लिकाए दव्वठयाए अणतगुणे सोचिव पएसठयाए असखेज्जगुणे

इदिवे चरमद्वार कहैकै-एएसिण भते जीवाण चरमाण अचरमाणय कयरे २ इतिो थणावा ४ । हेमगवन् एह चरमभव जेदने ते चरम ते मव्यकहिजे अचरम ते अभव्य ते सिद्धने कहिये किहवा २ थो थोडा २ इवै । गोयमा सख्योवा जीवा अचरमाचरमा अणतगुणा द्वार । हेमौतम सर्व थोडा सिद्धने थने लघयोत्कष्ट युक्तानत परमाणकै चरमभज्य अनतगुणा जघयोत्कष्ट युक्तानत प्रमाणवती इति चरम तीसरे पदे २२ मो द्वार परो इवो । इदिवे जीवचार कहैकै-एएसिण भते जीवाण पुगलाण । हे भगवन् एह जीवारा पुद्गलाने । अद्वासमयाण सखद्व्याण सखलपएसण । अद्वासमयकै सर्वपर्याय ने सर्वद्रव्यने सर्वप्रदेशाने । सखपल्लयाणय कयरे २ इतिो थणावा ४ । केदा २ थो अल्प वथा इत्यादि । गोयमा सखत्यावा जीवा पुगला अणतगुणा ।

खेतागुण्य सव्योवा जीवा उच्छ्रित्यतिरिक्तोऽपि ॥ क्षेत्रस्यानपातौ नुसारं क्षेत्रानुपात स्तेन विचिंत्यमाना जीवा सर्वस्तीका ऊर्ध्वलोकं  
 यिग्लोके इह ऊर्ध्वलोकस्य यद्वस्तन माकाशप्रदेशप्रतर यच्च सर्वतियग्लोकेस्य सर्वपरितनमाकाशप्रदेशप्रतर संपद्वलोकप्रतर तथा प्रवचने  
 प्रसिद्धे तत्र ये मत्र भावना इहसामस्त्येन चतुर्दशरज्ज्वात्मकोलोक सच त्रिधा त्रिद्यते तद्यथा-ऊर्ध्वलोक तियग्लोकोऽधोलोकश्च सचका चतेपां  
 विज्ञान रतथा हि सचक्रस्या धस्ता नवयोजनज्ञातानि सचक्रस्योपरिष्ठा नवयोजनज्ञातानि तियग्लोकेस्तियग्लोकेस्यार्थस्ताडधोलोक उपरिष्ठा दृष्ट  
 लोको देशोनसपरज्जुप्रमाण ऊर्ध्वलोक समधिकसपरज्जुप्रमाणो अधोलोको मध्योऽदशयोजनशतोच्छ्रय म्तिर्यग्लोको मत्र सचक्रसमा द्रुतलजागा  
 नवयोजनज्ञातानि गत्वा य उज्योतिश्चक्रस्योपरितन तियग्लोकेस्यार्थि यकप्रदेशिक माकाशप्रतर त तियग्लोकेमतर तस्य चो परियदेकप्रदेशिकमा

अथासमए दृष्टपदेसथाए अणंतगुणे आगासत्थिकाए पदेसथाए अणंतगुणा दारं २१ । एएसिणं ज्ञते !  
 जीवाण चरिमाण अचरिमाणय कयरे कयरेहिंते अप्पावा १ ? गोयमा ! सव्योवा जीवा अचरिमा च  
 रिमा अणतगुणा दारं २२ । एएसिणं ज्ञते ! जीवाण पोगलाण अथासमयाणं सव्वद्वान्ण सव्वपएसाण

हेगोतम सर्वं योडा जीवहै तेहयो पुहल अनतगुणा इहा भावना पाळली परे तेहयो अथासमय अनतगुणा सर्वं पुहलद्रव्य धर्मास्तिकायाटिक वाने ते  
 द्यको सर्वं द्रव्य विगोपाधिक कहौ । अथासमया यणतगुणा सव्वद्वान्ण विसेसाहिया सव्वपएसा अनतगुणा सव्वपएसा अणतगुणा हार । तेहयको-सर्वं  
 द्रव्यविगोपगुणा आकाश अनोकाटि अनतवती तेहयो सर्वपर्याय अनतगुणा एकैकभाकायापदेय अनतागुण लघपर्यायगणा विगोपए एतल जीवहार कळो  
 धति २३ सो दार तौजे पदे समात हुओ । हिंवे चंवर कहै—खिस्ताणवाएण सव्वयोवा जीवा उच्छ्रित्यतिरिक्तोऽपि अहोनीय विमोहिमावा तिरि  
 यनीए अपतिकोण अमखिज्जागणा उच्छ्रितोए प्रस० अहोनीए विसेसाहियावास्तिस्ताणवाएण । आयोनीवा जे जीव मरण चैन ममद्वान्तकतला ने  
 प्रतरनव मध्य रक्षाकेपनीकवायी नीचाउपजेने इहा ननेया सर्वयोडाजीव ऊर्ध्वलोकतियकलोके जे आठारिसेयोजन तियकलोकेतेहनी जेतलोप्रदेशोन

[illegible][illegible][illegible]



इद्वयव्य प्रतिममय मूढलोके अधोलोके च सूक्ष्मनिगोदा उद्वर्तते, येन तिर्यग्लोकावर्त्तिनः सूक्ष्मनिगोदा उद्वर्तते तेऽर्थादधोलोके ऊर्ध्वलोके वा केषितस्मिन्नय वा तिर्यग्लोकसमुत्पद्यते, ततो नतेलोकत्रयसंस्पर्शिन इति, नाऽधिकृतसूत्रविषया तत्रोद्धृताकाधोलोकगताना सूक्ष्मनिगोदानामुद्धृतानाना मध्य कोचिरवस्थान मय ऊर्ध्वलोके अधोलोके वा समुत्पद्यते, केचि तिर्यग्लोके तन्न्योऽसंख्येयगुणा अधोलोकगता ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकागता अधोलोके समुत्पद्यते, ते च तथोत्पद्यमाना खीनऽपिलोकान् स्पृशतीत्यऽसंख्येयगुणा, कथ पुन रेतदवसीयते य द्रुत स्यप्रमाणा यद्वबो जीवा सदाविग्रहगत्यापन्ना लभ्यत इति चत् सच्यते-युक्तिवशात्, तथाहि प्रागुक्तमि दमऽत्रैवसूत्रपर्याप्तद्वारे । सद्योवाजीवानोपज्जन्ता नोऽपज्जन्ता अपज्जन्ता अनतगुणा पज्जन्ता संख्येयगुणा इति, ॥ तदस्यवनामाऽपर्याप्ता यदवा ये नैतेन्य पर्याप्ता संख्येयगुणा एव नाऽसंख्येयगुणा नाऽप्यऽनतगुणा तथाऽपर्याप्ता यदयोऽतरगतीवर्त्तमानालभ्यते इति ४ । तस्य ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकावस्थिता असंख्येयगुणा उपपातक्षेत्रस्यातिबहुत्वात्, असंख्येयाना च नागानामुद्धृतनायाय सन्नधात्, तेन्योऽधोलोके अधोलोकप्रतिनो विशेषाधिकारेण ऊर्ध्वलोकादत्रा दधोऽधिकत्वात्, तदं व सामान्य

नेरडया तेलुक्के अहोलोगतिरियलोगे असखेज्जा ० अहोलो ए असखेज्जागुणा । खेत्ताणवाण सवस्योवा  
तिरिरुज्जोणिया उह्लोयतिरियलो ए विससाहिया तिरियलो ए असखेज्जागुणा, ते

माहिकपलेनाहै प्रतरनेस्सग्गे असख्यातगुणामाटे अधोलोके असख्यातगुणा । खित्ताणवाण सख्योवा तिरिस्खज्जोणिया । चेत्त आत्थीतिरियवो निया मयंशोडा ऊर्ध्वलोके तिर्यकनो किमामान्यजीवमूने अत्तावेकछोहै तिमजाणिवो । उह्लोय तिरियलो ए अहोलो ए । तिर्यकनोके विषेयाधिक । तिरियलो ए विसे ० तिरियलो ए अस ० तिलक्के अस ० । तेह्योतिर्यकनोके असख्यातगुणा तेह्यो विलोके असख्यातगुणा । उह्लो ए असखिज्जागुणा । ऊह्वो ने असख्यातगुणा इवै । अहोलो ए विससाहिया कित्ताणवाण सख्योवो अहो तिरिस्खज्जोणियो अहो । अधोलोके विषेयाधिक ए सामान्यमवधो जाणिवो तिरियवना मयवइत्तकइहै चेत्त आत्थीसंशोहोतिरियवो निनीस्सो । उह्लो ए तिरियलो ए असखिज्जागुणा । ऊर्ध्वलोके लभणीमेरुपर्वत अजनमखुदधिनीवा



तो जीगाना केनानुपातेना उल्लवहुत्वमुक्त, मिदानो यतुगंतिदृक्कर्मण तदतिचिद्वस्तु प्रथमतो नैरयिकाणा माह-खेसाणुवागण सवत्योवा नेरइया तेलोके धृति ॥ केनानुपातेन केनानुपातेन नैरयिका धित्यमाना सवस्तोका खेलोक्से लोकत्रयसस्पज्ञिन कथलोक्त्रयसस्पज्ञिनो नैरयिका कथवा तेषवस्तोका इतिचेत्, उच्यते-इह ये मेसशिखरे यजनदधिमुखपवतशिखरादिषु वाधापीषु वसमानामस्यादयोनारकेषुत्यत्सव इलिकागत्या प्रदेशान् विचिपति तेकिल त्रैलोक्यमपि स्पृशति नारकव्यपदेशचलभते तत्कालमेव नरकेषुत्यन्तेनारकायुष्मत्तिसवेदनात्, तचेत्यन्नताकतिपयेइतिसर्वस्तोका, अन्तेतु व्याचलते नारकायवयथोक्तवापीषु तिर्यक्पचेद्रियतयो त्यद्यमाना समुद्रघातवशतो विचिपतिजात्प्रदेशदक्षा परिगृह्यते तैरिक्लि तदा नारका एव निखिवाटंतदायुष्मत्तिसवेदनात्, त्रैलोक्यसस्पज्ञिनश्च यथोक्तवापी योवदात्प्रदेशदंष्टस्य विचिपत्वादिति । तैस्यो उधोलोक्तति यंग्नोक्तसुखा प्रागुक्तप्रतरद्वयस्य सस्पज्ञिनोऽसख्येयगुणा यतो बहवोऽसख्येयेषु द्वीपसमुद्रेषु पचेद्रियतिर्येग्योनिनानरकेषु त्यद्यमाना यथोक्तप्र

लुक्ते असखेजगुणा उहुलोए असखिज० अहोलोए विसंसाहिवा, खेत्ताणुवाएणं सवत्योवा तिरिक्कजो णिणीउ उहुलोए उहुलोयतिरियलोए असखेज०, तेलुक्ते असखेज० अहोलोयतिरिलोए सखिजगुणान उहुलोए सखेजगुणान तिरियलोए सखिजगुणान खेत्ताणुवाएणं सवत्योवा मगुस्सा तेलुक्ते उहुलोयतिरिय

वधातीतिर्येवयानियानोस्तोइव खेत्ताणोसर्वधाकाडिचै तेइथो ऊर्ध्वलोकातिर्येकलोकाकथंमान असखातगुणा किमसहस्रारंदेवलोकानिकथो तिर्येवनो स्त्रीमाहिउपजेतेइथोपिलाके यमसगातगुणो । तिल्लंक्क असखिजगुणाया भवनपतिव्यतरयको ऊर्ध्वनोजतिर्येवउपजे । अहोलोय तिरियलोए असखिजगुणाया अहोलाएसखिजगुणाया । तेइथो अधालोकातिर्येकलोका सगातगुणा धणानारकोमरणसमुद्घात तिर्येवनोस्तोपणेइ । तिरियलोए सखिजगुणायासखिजाएण तेमाटेतेइथो अधालोकासगातगुणोलेमाटे अधोगामशकोइव समुद्रमा नवसेवोजनमच्छोमा उपजे । सवत्योवा मगुस्सातिल्लुके उहुलोयतिरियलोए, असखिजगुणा । खेत्ताणोसर्वधाका मनुष्यावलोकपुरसे वेकिवसमुद्घातना कारणहारपुरसे तेइथो ऊर्ध्वलोकातिर्येकलोकाके भव



ज्ञानपातेन तिर्यग्योनिकस्त्रियद्युत्पमाना सर्वस्तीका ऊर्द्धलोके इष्टमंदरादिवापीप्रभृतिद्युपिहि पंचेन्द्रियतिर्यग्योनिका स्त्रियोन्नवति ताद्य क्षेत्रे  
त्रयाऽल्पत्वात् सर्वस्तीका स्ताम्य ऊर्द्धलोकतिर्यग्लोक ऊर्द्धलोकतिर्यग्लोकसङ्गे प्रतरद्वये यत्तमाना अस्संययगुणा कथ मितिचेत् उच्यते-याव  
त्सहस्रारदेवलोक स्तावदेवा अपि गर्ज्ज्युक्तातिकतिर्यक्पंचेन्द्रिययोनिषु त्यद्यते किपुन ओपकाया स्तोए यथासन्नमपुपरिचर्तनोऽपि तत्रो त्यद्यते,  
ततो ये सहस्रारातादेवा अन्येऽपिच ओषकाया ऊर्द्धलोका तिर्यगपंचेन्द्रियस्त्रीत्वेन तदायु प्रतिसंबेदसमाना उत्पद्यते, या स्त्रियंग्लोकवर्तिन्य स्ति  
र्यगपंचेन्द्रियस्त्रिय ऊर्द्धलोके देवत्वेन ओपकायत्वेनचो त्यद्यमाना मारणातिकसमुद्रघातेनोत्पत्तिदेशे निजनिजात्मकप्रदेशद्वान् विचिपदि ता य  
योक्तप्रतरद्वय स्पृञ्जति तिर्यग्योनिकस्त्रियद्य ता स्ततो ऽस्संययगुणा क्षेत्रस्या ऽस्संययगुणत्वात्, ताम्य स्त्रीलोके संययगुणा यस्माद् ऽधो

देवा उहलोए उहलोयतिरियलोए अस्सखेज्जगुणा तेलुक्के अस्सखेज्जगुणा अहोलोए तिरियलोए अस्सखेज्जगुणा  
अहोलोए सखिज्जगुणानु तिरियलोए सखिज्जगुणानु खेत्ताणवाएण सख्योवानु देवीनु उहलोय उहलोए  
तिरियलोए अस्सखेज्जगुणानु तेलुक्के सखेज्जगुणानु अहोलोयतिरियलोए अस्सखेज्जगुणानु अहोलोए संखे

प्रदेशस्यं ऊर्द्धलोकसंस्थानगणौ कौडार्थवैत्यवदनाथे विद्याधरोजातिथके प्रदेशस्यं अधोलोके सख्यातगुणा अधोयामभपजती । तिरियलोएसखिज्जगुणा  
ओ । तिर्यक्लोकसख्यातगुणो क्षेत्रपसख्यातगुणामाटे । खिन्नाणुवाएण सख्योवादेवारुहलोए । द्विवेदेवतानो अत्यवद्वत्कष्टे क्षेत्रेधोसंवयोडादेवतो  
ऊर्द्धलोके जे भवनपतिजिनेद्रते महोत्सवेमेरुपर्वतेजायतेमाटे । उहलोवातिरिणोए असखिज्जगुणा । तेह्यो ऊर्द्धनोकातिर्यग्लोके असख्यातगुणा भवन  
पतिव्यतरज्योतिषो सोधस्यार्दिगतबेप्रतरस्यं । तिक्केसखिज्जगुणा अहोलीयतिरियसखिज्जगुणा । तेह्योभैलोके असख्यातगुणा भवनपतिव्यतरवैक्षिय  
समुद्रघातनिर्लोकनैस्यं तेह्यो अधोलोकतिर्यक्लोक भवनपतिद्यतरतिर्यक्लोक भावते तिर्यचयोनिमाहि उपलेतिसख्यातगुणा । अहो  
लोएसखिज्जगुणा तिरियलोएसखिज्जगुणा । अधोलोकेसख्यातगुणा भवनपतिनैपोतानाठामतेह्यो तिक्केलोकसख्यातगुणा व्यतरज्योतिषो सख्यातमाटे

लोला द्रव्यनपतिव्यतरनारका शेषकाया अपि चोद्लोकेऽपि तिर्यक्पक्षेद्विपस्त्रीत्वेनो त्पद्यते ऊद्लोकाद्देवादयो व्यऽधोलोकेच ते समवहता निज निजात्मप्रदेशद्वै स्त्रीनऽपि लोकान् स्पृशति प्रभूताद्यते तथा तिर्यग्योनिकख्यायु प्रतिसवेदनात्, तिर्यग्योनिकस्त्रियश्च तत सख्येयगुणा ३ । ताभ्यो ऽधोलोकतियग्लोके अधोलोकतियग्लोकसञ्ज्ञे प्रतरद्वये वत्तमाना सरययगुणा बहवोहि नारकादय समुद्र्यातमतरंगाऽपि तियग्लोके तिर्यक्पक्षेद्विपस्त्रीत्वेनो त्पद्यते, तियग्लोकवत्तिनश्च जीवा त्तिर्यग्योनिकस्त्रीत्वेना ऽधोलोकिकग्रामेभ्य ऽपि च तच तथो त्पद्यमाना यथोक्तप्रत रद्वय स्पृशति' तिर्यग्योनिकख्यायु प्रतिसवदना च तिर्यग्योनिकस्त्रियोऽपि तथा ऽधोलोकिकग्रामाभोजनसहस्त्रावगाहापर्यन्ते ऽर्वाक् क्वचित्प्रदेश नवभोजनशतावगाहाअपि तत्र काश्चित्तिर्यग्योनिकस्त्रियो ऽवस्थानेनाऽपि यथोक्तप्रतरद्वयाऽध्यासित्यो वत्तते, ततो प्रवति पूर्वोक्ताभ्य सरयेयगु णा ४ । ताभ्यो ऽधोलोक सरययगुणा यतोऽधोलोकिकग्रामा सर्वेऽपिच समुद्रा भोजनसहस्त्रावगाहा स्ततो नवभोजनशतानामऽधस्तात् या वत्तते मत्स्वीप्रभृतिका तिर्यक्पक्षेद्विपस्त्रिय स्ता स्वस्थानत्वात् प्रभूता इति सख्येयगुणा क्षेत्रस्य सख्येयगुणात्, ताभ्य स्त्रियग्लोक सख्येय गुणा, उक्त तिर्यग्वृत्तिमप्याधिकृत्या त्वयदुत्व मिदानी मनुष्यगतिविषयमाह-खेत्ताणुवागणमिदत्यादि ॥ केत्रानुपातन मनुष्या द्धित्यमाना खेत्तलोके त्रिलोक्यस्पर्शिन सवस्तोका यतो य ऊद्लोकाद ऽधोलोकिकग्रामेषु समुत्पित्सर्वो मारणातिकसमुद्र्यातेन समवहता प्रवति ते केचित्समुद्र्यात वशा द्वन्निगते स्वात्मप्रदेशे स्त्रीनऽपि लोकान् स्पृशति येषि चैकियसमुद्र्यात माहारकसमुद्र्यात वा गता तथाविधप्रयत्नविशेषा दृतर मूढाऽधोविद्विषात्मप्रदेशा यच कवलसमुद्र्यातगता स्तेपि त्रीनपिलोकान् स्पृशति स्तोकाद्यति संवस्तोका स्तेभ्य ऊद्लोकात्तिर्यग्लोक ऊद्लोका तियग्लोकसञ्ज्ञेप्रतरद्वयस्पर्शिनो ऽसरययगुणा यत इहैवमानिकदेवा शेषकायाश्च यथासम्भवमूद्लोका तियग्लोक मनुष्यत्वन समुत्पद्यमाना

जगुणान् तिरियलोए सखिजगुणान् खेत्ताणुवाएण सवत्थोवा नवणवासीदेवा उदुलोए उदुलोयतिरिउलोए

शिवेदोकेहेके । छित्ताणुवाएण सवत्थोवात्रो देशोत्रो सउदुलाए । चत्तपाभो ज्ञाता सर्वथाडादागता ऊहं कोनविपे एसर्वदवतानोपरेभावना । उदुदुलाए

[illegible]

असखेजगणानं तेलुक्कं सखेजगणां अहोलीयतिरियलोए असखेजगणा, तिरियलोए असखेजगणा

तिरिगुलोण्यसंख्यगुणयोः तिल्लोकासंख्यगुणयोः । ऊर्ध्वलोकान्तियं कलाके असंयतागुणो देवतानोपरितुष्टयो जेनोक्थिमयरातगुणो । अहोलीणतिरि  
गुणो सपिञ्जगुणयोः । अधोलोकान्तियं कलाके संयतागुणो । अहोलीसंयतागुणो । अधोलोकासंयतागुणो देवतानोपरितुष्टयो जेनोक्थिमयरातगुणो । अहोलीसंयतागुणो

कसमुद्धानवधः दूरतरमदुर्विस्मितात्मप्रदेशात्तम उद्याऽपि कालमकुर्वतीना यथोक्तप्रतरद्वयसम्पञ्चानाद्यान्, तामाचो त्रयापामऽपि बहुतरत्वात्, तान्मा उधालोक्तियग्लोक्त प्रागुक्तस्वरूपप्रतरद्वयरूप मस्ययगुणा स्तियग्लोका स्तनुष्यसीत्य श्रपेभ्यो वा उधोतीकिक्तग्रामेषु यदिवा उधोनोका दधोनोकिक्तग्रामस्यामत्पातज्ञायाद्वा तियग्लोक्तमनुष्यस्त्रीत्वनो त्विप्सना कासाधिद उधोतीकिक्तग्रामेषु उधस्त्यानतोऽपि यथोक्तप्रतरद्वयसम्पञ्चमनायात्, तामाच प्रागुक्ताभ्यो उतिबहुत्वात्, तान्मा उधुल्लोक्तस्ययगुणा क्रोनापं धीत्यवदानाभिमत वा सीमासादिषु प्रचूनतराणा विद्यावरीणा सन वत्, तान्माऽपि अधोलोक्तस्येयगुणा स्वस्यानत्येन तत्रापि बहुतराणां ज्ञायात्, तान्य स्तियग्लोके सम्ययगुणा कृत्रस्या सत्येयगुणायात् स्वस्या नत्या च, तत मनुष्यगतिमथिरुत्या ल्पबहुत्य मिदानी देवगतिनिधिरुत्याष्ट-वेतानुयायण सधुत्यावा उन्मलाय इत्यादि ॥ कुंजानुपातेन चित्यमाना दवा सर्वस्तोका ऊढलोकं, ऊढलोकं धेमानिकानामेव तत्रनावात्, तेषांवा उल्पत्यात् येषि प्रवरपतिप्रचूतयो किर्नेद्राजममरादौ मन्दरादिपृगच्छ ति तेऽपि स्वस्या एवं ति सर्वस्तोका स्तस्य ऊढलोकतियग्लोके ऊढलोकतियग्लोक्तसजे प्रतरद्वये अस्ययगुणा स्तदुष्मोक्तिकाणा प्रत्यासन्न मि इति स्वस्यान तथा प्रवनपतिव्यतरज्योतिका मदरादौ सीधमादिकल्पगता स्वस्यानगमागमन तथा यसीधमादिषु देवत्वेनोत्तरसर्वो देवायु प्र तिसवदयमाना खोत्पातिदशमनिगच्छति यथोक्त प्रतरद्वय स्पृशति सत म.मन्त्येन यथोक्तप्रतरद्वयसंस्पर्शिन परिज्जायमाना प्रतिपद्य इतिपू र्वोक्तैभ्यो उधस्येयगुणा, स्तस्य रौलोक्तसम्पञ्चिन सम्येयगुणा २ । ततो प्रवनपतिव्यतरज्योतिकेयमानिका देवा स्तयाधिप्रयत्नविज्ञेयवज्ञतो वैकिपसमुद्घातन समवदता सत स्त्रीनिपिलोकात् स्पृशति तेषे त्वसमवदता प्रागुक्तप्रतरद्वयपजिज्य सस्येयगुणा केयनवेदसोपलन्यत्त इति

अहोलीए असखेज्ज०, खेत्ताणवाएणं सव्वत्येवा न्नपणव्वासिणीनु देवीनु उट्टलोए तिरिप्रलोए अन्नग्गि०,

नौपारिक्ताहवौ । इवैविशमवनपतिनो अपवृत्तकहे । तिरिज्जाणसस्सज्जगणामो तिर्यक्कलाकट्टेयमना प्रसस्युत्तम् । त्रिभाणुवाएण मत्स्यावा  
भवणवासोदेवा स्ययौजोता सवैयाथोडादेमवनवसा जइलोक कोःपूसनति साधमदेवल ख तथा तौर्धकरने जनेमरुपितजाये तेमट्टेयाउ । तेहुधौ ।

सख्येयगुणा' स्तेभ्यो ऽधोलोकतिर्यग्लोके ऽधोलोकतिर्यग्लोकेसञ्जे प्रतरद्वये वर्त्तमाना सख्येयगुणा स्तद्विप्रतरद्विक जवनपतिव्यंतरदेवाना प्रत्या सज्जतया स्वस्थान तथा बह्वोजवनपतय स्वजावस्था स्तिर्यग्लोकनमामगेन तयो द्वर्तमाना स्तयावैक्रियसमुद्रपातेनसमवहता स्ताया तिर्यग्लोक वर्तिन स्तिर्यग्लोपचेद्रियमनुया वा जवनपतिव्वेनो त्वद्यमाना जवनपत्माऽऽपुरऽनुजवतो यद्योक्तप्रतरद्वयसस्पञ्जिनो ऽतिवह्य इति सख्येयगुणा तेभ्यो ऽधोलोके सख्येयगुणा जवनपतीना स्वस्थानमिति कृत्वा तेभ्य स्तिर्यग्लोके सख्येयगुणा ज्योतिफव्यतराणा स्वस्थानत्वात्, अधुना देवो रचिकृत्याल्पबहुत्व माह-खेसाणुवाएण सवृत्त्योवादेवीउ उच्छलोए इत्यादि ॥ सर्वदेवसूत्रमिवाऽविज्ञोपेण प्रावनीय, तदेवमुक्त देवविषयमौघिक मल्पबहुत्व मिदानी भवनपत्त्यादिविशोषविषय प्रतिपिपादयिषु प्रयमतो जवनपतिविषयमाह-खेसाणुवाएण सवृत्त्योवा देवा प्रवक्ष्यासीउ उच्छलो ए इत्यादि ॥ सेत्रानुपातेन जवनयासिनो देवा स्थित्यमाना सर्वस्तोका ऊर्द्धलोके तथाहि-केषाचि रसीपमार्गदिघपि कल्पेषु पूवसगतिकनिश्रया ग मन जवति केषाचि न्मन्दरे तीर्थंकरजन्ममहिमानिमित्त मजनदधिमुखेष्टाहिकानिमित्त मपरेया मन्दिरादिषु क्रीडांनिमित्तं गमन मतेषु सर्वेपि स्वत्प्या इति, सर्वस्तोका ऊर्द्धलोके तेभ्य ऊर्द्धलोकतिर्यग्लोके सज्जेप्रतरद्वये ऽसख्येयगुणा, कथमितिचेत् उच्यते-इहहि तिर्यग्लोकस्थावीक्रियसमु द्रपातेन समवहता ऊर्द्धलोकतिर्यग्लोक च स्पृशति यथा ते तिर्यग्लोकस्यायम् मारणान्तिकसमुद्रपातेन समवहता ऊर्द्धलोके सीपमार्दिषु देवलो कषु वादरपर्यासिपृथिवीकायिकतया वादरपर्यासऽपूकायिकतया वादरपर्यासप्रत्येकवनस्पतिकायिकतया च शृङ्गेषु मणिविधानादिषु स्थानेषूत्प

तेलुक्के सखेज्जगणानु उहोलीएतिरियलीए असखेज्ज०, तिरियलीए असखिज्ज० उहोलीए असखिज्ज०

सहृदुनोएतिरियनाए असखिज्जगणा ऊर्द्धलोकाविच्छेनोक्त असद्यातगुणा मरणसमुद्रपात ऊर्द्धलोकेवाटर पृथ्याटिकपणे उपजता विलोकक्यम् वैलोकाव प्रसह्यातगुणा वैक्रियसमुद्रपातेकराने । तिलोकेसाखज्जगणा उहोलीयतिरिनोए असखिज्जगुणा । तेदथो अजानाकचिच्छेनोक्त असद्यातगणाप्रतरने सखी तिर्यक्काकगमनागमनभाव । तिरियनोए असखिज्जगुणा उहोलीए असखिज्जगुणा । तेदथो चिच्छेनोक्त असद्यातगुणा समोसरणक्रीडाथ समाग

सुखमा अद्याऽपि स्वप्नावायु प्रतिषेधेदयमाना न पारत्राविक पृथ्वीकायिकाद्यायु द्विविधाभि मारणान्तिकमुदघाते समवहता केचित्पारजा  
विक्रमायु प्रतिषेधेदयते केचिन्नेति, तथा धोक्त प्रज्ञसौ-जीविण जते मारणतिकसमुच्चायण समोदय समोद्विषिता जेजविण मररस पवयस्स  
पुरत्थिमण थायरपुढाविकाइताग उववज्जित्तम सेण जते कि तत्थ गए उववज्जोला उयाहु पङ्कितियतेत्ता उववज्जइ गो०। अत्येगइय तत्थगए येउ  
उववज्जइ, अत्येगइय तउ पङ्कितियत्तिता दोच्चपि मारणातियसमुच्चायण समोद्विषिता तउ पच्छा उववज्जइति, स्वप्नवायु प्रतिसेधेद  
नाच्च ते जवनवासिन एव लभ्यते ते इत्यज्जता उत्पत्तिदेशे विच्छिप्तात्मप्रदेशेदशका स्तथा ऊढलोकगमनागमनत स्तरप्रतरद्वयप्रत्यासन्नजीवास्थानश्च  
यथोक्त प्रतरद्वय स्पशति, तत प्रागुक्तेभ्यो असहयेयगुणा स्तोम्य स्त्रीलोकं त्रैलोक्यसंपद्धान सख्ययगुणा यतो ये ऊढलोकं तिर्यग्पञ्चेन्द्रिया न  
वनपतित्वेनोत्पन्नकामा येष स्वस्थाने वैज्रियसमुदघातेन वा तथाविधतीप्रयत्नविशेषेण समवहता स्ते त्रैलोक्यसंप  
द्धान इति सख्येयगुणा, परस्थानसमवहतेभ्य स्वस्थानसमवहताना सह्यगुणात्वात्, तेभ्यो अधोनोक्तित्यलोकं अधोलोक्तित्यलोकसङ्घे प्रतरद्व  
ये असह्येयगुणा स्वस्थानप्रत्यासन्नतया तिर्यलोकं गमनागमनजावत स्वस्थानस्थितक्रोधादिमुदघातगमनतश्च वहूना यथोक्तप्रतरद्वयसंपद्धाना

खेत्ताणवाएण सवत्थोत्रा वाणमतरादेवा उहलोए उहलोयतिरियलोए अ्सखिज्जागणा, तेलुक्के अ्सखिज्ज०  
अ्होलीए तिरियलोए अ्सखेज्जागणा अ्होलीए सखेज्जागणा तिरियलोए सखिज्ज०, खेत्ताणवाएण सवत्थो

मचिरकालस्यावोमाटे वणा तेइथो अधोलोक असख्यातगुणा भवनपतिनोदेवीनां । खित्ताणवाएण सवत्थोत्रा भवनवासणोत्रा देवोत्रा उहट्ठनाजे ।  
चेवयात्रो अल्पवृत्त्वकहेक्के सर्वथाहोदेवागता ऊढलोकं भवनपतिदेवतानोपरिसर्वकहिबो । उहट्ठत्तायतिरियनोए असखिज्जागणात्रो ऊढलोकं कतिरियल्लोके  
असख्यातगुणोह्वे । तिल्लोके सखिज्जागणात्रो अहोलोयतिरियलोए अस० अहोलोए अस० तिरियलोए अस० । त्रिनाकमख्यातगणाह्वे वैकियसमुदघात  
वेत्ता अधोलोविश्लोक असख्यातगुणो त्रिक्केनाक असख्यातगुणो समोसरणे अधोलोकं असयगतगुणा स्वस्थान माटे त्रिक्केलोकं अस० । खित्ताणवाएण



वात् तेभ्य तिर्यलोके ऽसह्यगुणा समवसरणादौ बन्धननिमित्तं द्वीपेषु च रयशोपिपु श्रीशानिर्मितागमसम्पदा दागताभाव विरकालमऽप्यऽ  
वस्थानात्, तेभ्यो ऽधोलोके ऽसरयंगुणानुवनवासिनामधोलोकस्य स्थानत्वात्, गव प्रवनवासिद्वीगतस्तत्पदबुद्ध्या प्रावनीय, चाभ्यतिव्यन्तर  
गतमल्पबहुत्वमाह-स्वेतागुवाएणमित्यादि ॥ क्वानुपातन चिन्त्यमाना व्यतरा सधेस्तोका ऊरुलोकं कतिपयानामेव पण्डकवनादौ तेषा ज्ञावात्,

वानु वाणमतरीनु देवीनु उहूलोए उहूलोयतिरियलोए असखिज्जगुणानु तेलुक्को सखिज्जगुणानु अहोलोए  
तिरियलोए असखिज्ज० अहोलोए सखिज्ज० तिरियलोए सखिज्जगुणानु खेत्ताणुवाएण सवत्थोवा जोड  
सिया देवा उहूलोए उहूलोयतिरियलोए असखिज्ज० तेलुक्को सखेज्जगुणा अहोलोए तिरियलोए असखिज्ज  
गुणा अहोलोए सखेज्जगुणा निरियलोए असखेज्जगुणा खेत्ताणुवाएण सवत्थोवा जोडसिगीनु देवीनु  
उहूलोए उहूलोयतिरियलोए असखेज्जगुणानु तेलुक्को सखेज्जगुणानु अहोलोयतिरियलोए सखेज्ज०, अहो

मज्झिमा वाणमतरीदेवा उहूलोए । द्विवेद्यतरनाकहेक्के सर्वथाद्याव्यतर ऊर्ध्वलोकेन विषेसोधर्मे पूर्वसमतिने भिनवाभेतोर्थकरजग्मे । उहूलोए  
तिरियलोए अस० तिनोके सखिज्जगुणा । तेहथो ऊर्ध्वलोके विच्छेदोक्त अस० मरणमदृष्टात् तथा वादरमा पृथ्वीमाउपलै ते समरगाता पैलाक्के सख्यात्  
गुणा वेक्तिममदृष्टात् । अधोलोयतिरियलोए अस० । अधोलोकातिरिक्तलोके ये मरणमदृष्टममागमनकरते । अहोलोए असखिज्जगुणा तिरियलोए अस०  
खिज्जगुणाएण । तेहथो अधोलोके असख्यातगणा स्थानमाटे तिरिक्केलोके अस० मत्तासरणादिक्के । द्विवेद्यतरौ कनाकहेक्के खेत्ताणो । सवत्थोवा ज्ञोवाण  
मतरीमा देवीमा उहूलोए । सर्वथाहीयाण्यतरौ ऊर्ध्वलोके पूर्वमात् अथ तार्थकरजग्मे । उहूलोयतिरियलोए अस० तिलोका सखिज्जगुणाथो । तेह  
थो ऊर्ध्वलोके तिरिक्केलोका असख्यातगणौ पैलाक्के असख्यातगणौ वेक्तिममदृष्टात्करता । अधोलोयतिरियलोए असखिज्जगुणाथो । अधोलोके निरिक्केलो  
के प्रसख्यातगणौ गमनागमनवतो । अधोलोए अस० तेहथो अधोलोके असख्यातमाटे । तिरियलोए असखिज्जगुणाथो स्थितागुणाएषं । तिरिक्केलोके अस

तेन्य ऊदुलोके तिर्यग्लोके प्रतरद्वयरूपे अक्षरयेयगुणा केषापिस्वस्थानातवर्तितया अपरेषा स्वस्याग्रहानुव्रतया उत्तरेषा यद्वना सदरादिपु  
गमनागमनज्ञावतो यथाक्तप्रतरद्वयसम्पगात् तथा समुदायेन चित्यमानानामतियदुल्यन्नावात् । तेन्य र्ग्लोके सरयेयगुणा चतोलीकत्रयवर्त्तिनोपि  
व्यन्तरा स्तथाविचप्रयत्नविशेषज्ञतो वौक्त्रयसमुद्घातो समवहता सत स्त्रीनपि लाकानात्मप्रदज्ञो स्पृशति तथ प्रागुक्तस्यो तिवह्व इति सरयेय  
गुणा । स्तेन्यो धोलीकैर्तिर्यग्लोके प्रतरद्वयरूपे उत्तरयेयगुणा स्तद्वि बहूना व्यन्तराणा स्वस्थानाना तत स्तत्सरस्पृशिनो यद्वय इत्यसरयेयगुणा , अ  
धोलीके सरयेयगुणा अधोलीकिकग्रामेषु तेषा स्वस्थानन्नाद्या दृष्टूना मधोलीके क्रीडाथगमननावात्, तेन्य त्तिर्यग्लोके उत्तरयेयगुणा स्तियग्लो  
स्य तेषा स्वस्थानत्वात्, यव व्यन्तरदेवीविषयमप्यल्पयुल्य वक्तव्य साप्रति ज्योतिरविषय मरूपवदुत्व माह-वक्त्राणुगमण सप्रत्योवा लोडसिया  
इत्यादि ॥ अत्रानुपातेन ज्योतिरका स्वस्थाना सबस्तोका ऊदुलोके केषाधिदेव मदरे तीर्चकरजलमहोरसवनिमित्त मजनदधिमुख्य मुद्रिकानि

मिन्न मपरया केयाचि न्मदरादिषु कीदृशानिमित्त गमनसुजवात्, तस्य ऊर्दुतोक्तिवग्लोकं प्रतरद्वयरूपे ऽशरयेयगुणा स्तद्वि प्रतरद्वय कीचिस्त्व स्थाने स्थिता अपि स्पृशति प्रत्यासक्तत्वा दपर वैक्रियसमुदातसमवहता अन्ये ऊर्दुलोकं गमनागमनजायत ततो ऽधिरुतप्रतरद्वयस्पर्शजिन पूर्वोक्तयो ऽशरयेयगुणा, सास्य छैलोक्य त्रैलोक्यस्पर्शजिन सस्ययगुणा, यद्वि ज्योतिका स्तथायिघतीब्रमप्रवर्धेक्रियसमुदातेन समवहता स्तीनऽपि लोकान् स्वप्रदेशं स्पृशति ते स्वाजायतो ऽप्य ऽतिवद्वव इति । पूर्वोक्तैस्य सरयेयगुणा स्तेज्यो ऽधानोक्तप्रतरद्वये वर्तमाना असस्येयगुणा, यतो यद्ववो ऽधोलौकिकग्रामेषु समवसरणादिनिमित्त अधोस्तोकं कीदृशानिमित्त गमनागमनजायतो दहवया ऽधोलाका ज्योतिकेषु समुत्पद्यमाना यथोक्त प्रतरद्वय स्पृशति, ततो घटन्ते पूर्वोक्तैस्यो ऽशरयेयगुणा, सास्य सरयेयगुणा अधोलोकं यद्वूनमधोलोकं कीदृशानिमित्त मधोलौकिकग्रामेषु समवसरणादिषु धिरकालमवस्थानात्, तेज्यो ऽसस्ययगुणा स्तिथे-लोकं तियग्लोकस्य हेया रस्यानत्वात्, एव त्व्यानिक्तदेवीमन्त्रमपि जावनीय ।

साप्रति वैमानिकदेवविषयमल्पवृत्त्य माह-खेताणवाण सव्योवा वेमाणि या देवा उरुलोयतिरियलो इत्यादि ॥ द्वात्रिंशत्पातेन क्षेत्रानुसारेण चित्तमाना वैमानिकादेवा सर्वस्तीका ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकतियग्लोकसङ्गे प्रतरद्वये यतोय अधोनाके तियग्लोके वा वर्त्तमाना जीवा वैमानिकेषु त्प द्यन्ते येच तियग्लोके वैमानिका गमनागमम कुर्वन्ति, येच विवक्षितप्रतरद्वयाध्यासिन क्रोधास्यान सञ्ज्ञता येच तियग्लोकेस्थिता यव वैक्रियसमु द्यातमारणार्णतिकसमुद्घातवा कुर्वाणा स्थाविधप्रयत्नविशेषा दृढं मात्सप्रदेशदृढ निरुजति त विवक्षित प्रतरद्वय स्पृञ्जति, तेवा उपे इति । सर्वस्तीका स्तेज्य खैलोके सख्येयगुणा, कथ मिति चे दुष्यते-इह ये ऽधोलौकिकग्रामेषु समवसरणादिनिमित्त मऽधोलोकेवा क्रीडानिमित्तग ता सतो वैक्रियसमुद्घात मारणातिकसमुद्घातवा कुर्वाणा स्थाविधप्रयत्नविशेषात् दूरतर मृद्विजिष्ठात्मप्रदेशदृढा यच वैमानिकत्वा दीलिकाग त्या व्यवमाना अधोलौकिकग्रामेषु समुत्पद्यन्ते तैकिल त्रीनापि लोकान् स्पृञ्जति, यतवद्य पूर्वोक्तेभ्य इति सख्येयगुणा, स्तेज्येयपि अधोलोकातिर्य ग्लोके प्रतरद्वयसङ्गे सख्येयगुणा, अधोलौकिकग्रामेषु समवसरणादी गमनागमनप्रावतो विवक्षितप्रतरद्वयाध्यासिन समवसरणादीवा ऽऽस्थानतो

लोए सखि० तिरियलोए अुसखे० खेताणवाएण सव्योवा वंमाणिया देवा २००० उहुलोयतिरियलोए  
तेतुक्के सखेज्ज० अुहोलोयतिरियलीय सखिज्ज० अुहोलीए सखेज्जगुणा तिरियलाय सखेज्ज० उहुलोए

सख्यातगणो समोसरणक्रीडाथे व्यातिषी कहेह्वे क्षेत्रगण्यो । सव्योवाजायसिया देवा उहुदुलोए । सर्वथाहव्यातिषी ऊर्ध्वलोके मरुनैवैये जम्भोत्तैवैरामति काजे । उहुदुलोयतिरिलोण असखिज्जगणा । तेह्यो ऊर्ध्वलोकातिर्यकुलोके वे प्रतरस्पर्शे अस० वैक्रियसमदृवातवेत्ता । तिल्लोके सखिज्जगुणा । वैलोके स ख्यातगुणा वैक्रियसमदृवातवेत्ता । अधोलोकातिरियलोए समखिज्जगुणा । अधोलोके तिरिल्लोके असख्यातगणा गमनागमनभणौतिर्यवमा उपजता । अधोलोण सखिज्जगणा तिरियलोए सखिज्जगुणा । अधोलोके सख्यातगणा समोसरणादिक्रीडाथे तियग्लोके सख्यातगुणा सख्यानवतो । खित्ताणवाएण सव्योवाजी जोयसिषीघो देवीपा उहुदुलोए । यत्रयाथेव्यातिषी कहेह्वे सर्वथाहोव्यातिषी ऊर्ध्वलोके व्यातिषीनोपैरैभाना । ऊहुदुलोयतिरिय

बहूना यथोक्तप्रतरद्वयसम्पन्नतावात् । तेभ्यो धोलोके सख्येयगुणा ; अधोलोकीकियामेपु बहूना समग्रसन्नादाव उवस्थानान्नावात्, तेभ्य स्त्रिये रलोके सख्येयगुणा बहुपुसमवसरणेपु बहुपुच क्रीडास्थानेपु बहूना मवस्थानान्नावात्, तेभ्य ऊर्ध्वलोके उसरयेयगुणा ऊर्ध्वलोकस्य स्वस्थानत्वात्, त

असखिज्ज० खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवानु वेमाणिणीनु देवीनु उट्ठलोयतिरियलोए तेलुक्की सखेज्जगुणानु अ  
होलंयतिरियलोए सखिज्ज० अहोलोयसखेज्ज० तिरियलोए सखेज्ज० उट्ठलोए असखि० खेत्ताणुवाएण  
सव्वत्थोवा एगिदिया जीवा उट्ठलोए तिरियलोए, अहोलोयतिरियलोए त्रिसंसाहिया, तिरियलोए असं

ना० असखिज्जगुणाओ । ऊर्ध्वलोके तिरियक्कुलोके पसंख्यातगुणा । तिल्ल के सखि० चिनोके सख्यातगुणा । अहोलोयतिरियलोए अस० अधोलोकीकतियक्कुलोके  
पसख्यातगुणो । अहोलो० सखि० अधोलोके सख्यातगुणो । द्विवे वेमानिकना कहैछे । खित्ताणुवाएण सव्वत्थोवा विमाणोयादेवा उट्ठलोयतिरियलो  
० । सर्वथाडोवेमानिकदेवता ऊर्ध्वलोकीकतियक्कुलोकेने किमतियक्कुलोके यत्ताजोव वेमानिकमा उपजे तथा वैक्रिय समुद्वात स्वप्रदेयेकरो वेप्रतरस्म्यं  
तिल्लोके सखिज्जगुणा । तेलोव थोडाछे जैनोकोसख्यातगणा समोसरणथे । अहोलोयतिरियलो० सखिज्जगुणा । अधोलोकीक तिरियक्कुलोके वेप्रतरस्म्यं समोम  
रणथे । अहोलो० स० तिरियलोए स० । अधोलोके सख्यातगणा समोसरणथे तिरिक्खेनोके सख्यातगुणा रमवाभणो । उट्ठलो० अस० खित्ताणुवाएण ।  
ऊर्ध्वलोके असख्यातगुणा स्वस्थानमाटे द्विवे देवीनो कहैछे । सव्वत्थोवोपो वेमाणोओ देवीओ उट्ठलोयतिरियलो० तिल्लोके स० । सर्वथाडोवेमानिक  
नीदेवी ऊर्ध्वनाके तिरिक्खेनोके वैक्रियसमुद्वातकरता मनुष्यादिदेवीमा उपजे ते थोडोचिनोकेने ख्येमदगातगणो समोसरणथे । अहोलोयतिरियलो०  
सखि० । अधोलोके सख्यातगुणो समोसरणभणो तिरिक्खेनोके सख्यातगुणा । अहोलो० स० तिरियलो० स० । अधोलोके समोसरणभणो तिरिक्खेनोके स  
ख्यातरमवाभणो । उट्ठलो० असखिज्जगुणाओ । ऊर्ध्वलोके असख्यातगणो स्वस्थानभणो । खित्ताणुवाएण सव्वत्थोवा एगेद्विज्जोवा उट्ठलो० तिरिलो० ।  
एकेद्वियनो कहैछे सर्वथाडा खेवाथी नाता एकेद्वियजोव ऊर्ध्वलोके तिरिक्खेनाक मरणातसमुद्वातकरता प्रतरवेस्म्यं तेलोवथाडा । अहोलोयतिरियलोए ।

त्रय सदैवबहुतरजावात् । एवं वीमानिकदेवीविषयसूत्रं मपि नास्तीत्यर्थः सा प्रत्ये केन्द्रियादिगत मल्यधुत्व माह-खेतागुवाश्व सद्योवा एभिदि  
या इत्यादि ॥ क्षेत्रानुपातेनचित्तमाना एकैन्द्रियाजीवा सर्वस्तोका ऊर्ध्वलोकोक्तियंग्लोके ऊर्ध्वलोकोक्तियंग्लोके प्रतरद्वये यतो ये तत्रस्याएव केचन  
ये चोर्ध्वलोका स्तियंग्लोके तियंग्लोकाद्वा ऊर्ध्वलोके समुत्पन्नस्य कृतमारणातिक्रममुद्धाता स्ते किल विधाक्षित प्रतरद्वय स्पृशति स्वस्थाश्च ते इति  
संज्ञास्तोका, सेज्यो उधोलोकोक्तियंग्लोके विज्ञोपाधिक्ता यतो ये अधोलोका स्तियंग्लोके तियंग्लोकाद्वा उधोलोके ईलिकागत्या समुत्पद्यमाना विव  
क्षित प्रतरद्वय स्पृशति तत्रस्याथ ऊर्ध्वलोकाद्या धोलोकोक्तिविज्ञोपाधिक स्नातो यस्यो धोतोका स्तियंग्लोके समुत्पद्यमाना ग्रवाप्यते इति विज्ञोपाधि  
का, सन्त्य स्तियंग्लोके असरयेयगुणा उत्तप्रतरद्विक्षेत्रा त्तियंग्लोकोच्चेत्रस्याऽअसयेयगुणत्वात्' तेभ्य खोलोके असयेयगुणा वर्धोहि ऊर्ध्वलोका द

खेजगुणा, तेलुक्के अस०, उहुलोए असखेजगुणा, अहोलोए विसेसाहिया, खेताणुवाएण सव्वत्योत्रा  
 एगिया जोवा अपजत्तगा, उहुलोयतिरियलोए अहोलोए तिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए अ  
 खेजगुणा, तेलुक्के असखेजगुणा, उहुलोए असखेजगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेताणुवाएण

[illegible]

धोनीके श्रयोलीकाद्या ऊर्ध्वलोके समुत्पद्यते तेषां च मध्ये बहवो मारणातिकसमुद्रातवशा द्विदिशालप्रदेशदशा स्त्रीनपितोकान् स्पृशति ततो जवत्यऽसंख्येयगुणा, स्तेन्य ऊर्ध्वतोके असंख्येयगुणा उपपातक्षेत्रस्या ऽतिवहुत्वा तेभ्यो ऽधोलोके विशेषाधिक्या ऊर्ध्वलोकक्षेत्रा दधोलोकक्षेत्रस्य वि शेषाधिक्यत्वात् एवम ऽपर्याप्तविषय पर्याप्तविषय च सूत्र ज्ञावयितव्य मऽयुना द्वीद्रिपविषय मरुपवदुत्थ माए-संज्ञानुवाच्यण सद्योयोवा यद्दि या इत्यादि ॥ क्षेत्रानुपातेन क्षेत्रानुसारेण चित्यमाना द्वीद्रिया सर्वस्वोका ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकस्यैकदेशे तेषां समवात्, तस्य ऊर्ध्वलोकतियंग्लाके प्रत

सद्योयोवा एगिया जीवा पञ्चासगा, उर्ध्वलोयतिरियलोए अहोलीयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए अस्सेजगुणा, तेलुक्के असखेजगुणा, उर्ध्वलोए अस्सेजगुणा, अहोलीए विसेसाहिया । खेत्ताणवाएण सद्योयोवा बह्मदिया उर्ध्वलोए उर्ध्वलोयतिरियलोए असखेजगुणा, तेलुक्के असं०, अहोलीए तिरियलोए असखेजगुणा, अहोलीए ससेजगुणा, तिरियलोए ससेजगुणा । खेत्ताणवाएण सद्योयोवा बह्मदिया अ पञ्चासगा उर्ध्वलोए । उर्ध्वलोयतिरियलोए सखेजगुणा, तेलुक्के असखेजगुणा, अहोलीयतिरियलोए अस

विशयाधिक तिरिक्खेलोके असद्यगातगणा । तिनोक्क असं० उर्ध्वलोए असं० तिनोक्के असद्यगातगुणा ऊर्ध्वलोके असद्यगातगुणा । यद्वालीए विसेसाहिया अधोलीके विषयाधिक । विज्ञानुवाएण सब्बयावावेदिया उर्ध्वलोय उर्ध्वलोयतिरिण्णाण असखिजगुणा तिलाके असखिजगणा । खेत्ताओजाता सर्व थोडावेदिय ऊर्ध्वलोके मरुनीचूलिकावाविमाडिहुवे तेभ्यो तिरिक्खेलोके किमऊर्ध्वो अधदपल अधवो ऊर्ध्वपजे तेभ्यो समुद्रातवसे मरणातकरता तो नलाकषणं । अधोलीयतिरियलोए असखिजगुणा । अधोलीक तिरिक्खेलोके असद्यगातगुणा स्पष्टानभयो । यद्वालीण सखि० तिरियवाए सखिजगुणा । अधोलीके सदयातगुणा उपजे तिरिक्खेलोके सदयातगुणा उपजजनाठाम । विज्ञानुवाएण सद्योयोवेदिया अपजसगा उर्ध्वलोण । खेचनामने सर्वथोडा वेदिय अपर्याप्ता ऊर्ध्वलोके भावनाश्रोवनीपरे । उर्ध्वलोयतिरियलोए असं० । ऊर्ध्वलोके तिरिक्खेलोके असद्यगातगुणा । तिलाके असं० तोनलाकषणं अस

रद्वयरूपे असंख्येयगुणा, यतो ये ऊर्ध्वलोका त्रियंगुलोकं त्रियंगुलोकाद्वा ऊर्ध्वलोकं द्वीन्द्रियत्वेन समुत्पत्तुकामा स्तादायुरनुजवत ईलिकागता समुत्प  
द्यन्ते येच द्वीन्द्रियायु त्रियंगुलोका दूर्ध्वलोकं ऊर्ध्वलोकाद्वा त्रियंगुलोकं द्वीन्द्रियत्वेना अन्यत्वेनवा समुत्पत्तुकामा कृतप्रथममारणातिकसमुद्रघाता अ  
तएव द्वीन्द्रियायुप्रतिसवेदयमाना समुद्रघातवशा च दूरतरविघ्ननिजात्मप्रदेशदक्षा येच प्रतरदयाध्यासितक्षेत्रसमासीना स्ते यथोक्तप्रतरदय  
स्पर्शिनो वच्येति पूर्वोक्तैर्भ्यो असंख्येयगुणा, स्तेभ्य खलोकं असंख्येयगुणा यतो द्वीन्द्रियाणा मासुर्येणो त्वत्तिस्थानान्य उर्ध्वलोकं तस्माच्चा ऽति  
प्रभूतानि त्रियंगुलोकं तत्र य द्वीन्द्रिया अर्धलोका दूर्ध्वलोकं द्वीन्द्रियत्वेना अन्यत्वेन वा समुत्पत्तुकामा कृतप्रथममारणातिकसमुद्रघाता समुद्रघात  
वशाच्चो त्वत्तिदेश यावद्विघ्नित्वात्मप्रदेशदक्षा स्ते द्वीन्द्रियायु प्रतिसवेदयमाना येचो उर्ध्वलोका उदधोलोकं द्वीन्द्रियाशेषकाया याव द्वीन्द्रियत्वेन समु

खेजगुणा, अर्धलोए सखे०, तिरियलोए सखे० खेत्ताणुवाएणं सख्योवा वेइदिया पज्जत्तया उहलो उ  
हूलोयतिरियलोए अ्सखेजगुणा, तेलुक्को अ्सखेजगुणा, अर्धलोयतिरियलोए अ्सखेजगुणा, अर्धलो  
ए सखेजगुणा, तिरियलोए सखेजगुणा । खेत्ताणुवाएण सख्योवा तेइदिया उहलोए उहूलोयतिरियलो

स्यातगुणा । अर्धलोयतिरियलोए असं० अर्धलोको त्रियंगुलोकं असंख्यातगुणा । अर्धलोए सखि० अर्धलोको सख्यातगुणा । तिरियलोए सखि० तिर  
ल्लोको सख्यातगुणा । खित्ताणुवाएण सख्योवा वेइदियपज्जत्तया उहूलोए । चैव नोमैल्लोका सर्वथोखा वेइदियपर्वासा ऊर्ध्वलोको भावनाप्राधान्येपरं ।  
उहूलोतिरियलोए असं० तिल्लोको असं० ऊर्ध्वलोको त्रियंगुलोकं असंख्यातगुणा । अर्धलोए तिरियलोए असं० अर्धलोको तिरियलो  
को असंख्यातगुणा । अर्धलोए सखि० तिरियलोए सखि० । अर्धलोको सख्यातगुणा तिरियलोको सख्यातगुणा हि वै तेन्द्रियकहेत्थे । खित्ताणुवाएण सख्यो  
वातेइदिया उहूलोए उहूलोए तिरियलोए असं० तिल्लोको असं० । चैव नोमैल्ले सर्वथोखातेन्द्रिय ऊर्ध्वलोको वेइदियनोपरं तेल्लोको भावनाकोजे ऊर्ध्वलो  
को तिरियलोको असंख्यातगुणा तिल्लोको असंख्यातगुणा । अर्धलोयतिरियलोए असं० अर्धलोको त्रियंगुलोकं असंख्यातगुणा । अर्धलोए स० तिरियलोए







देशायत् विविधात्मप्रदेशदहा पचेद्रियायु रद्याप्यनुभवति ते त्रैलोक्यसम्पत्तिं स्तोत्रा रपेक्षति । सर्वस्तीका स्तेन्य ऊहलोकतिर्यग्लोके प्रतरद्व  
यरूपे सख्येयगुणा प्रनूततराणा मुपपातन समुद्घातेन वा यथोक्तप्रतरद्वयसम्पत्तिसम्पत्तयात्, तस्यो ऽधोलोकतिर्यग्लोके सख्येयगुणा अतिप्रनूत  
तराणा मुपपातसमुद्घाताभ्या मऽधोलोकतिर्यग्लोकसङ्घप्रतरद्वयसम्पत्तिसम्पत्तयात्, तेन्य ऊहलोक सख्येयगुणा वैमानिकाना मऽवस्थानज्जावात्, ते  
न्यो ऽधोलोके सख्येयगुणा वैमानिकदेवेन्य सरयेयगुणाना नैरयिकाणा तत्र जावात्, तेन्य स्त्रियग्लोके ऽसख्येयगुणा समूर्च्छिमजलचरखचरा  
दीना व्यसरज्योतिष्काणा समूर्च्छिमन्युप्याणाच तत्र जावात्, एव पचेद्रियाऽपर्याप्तसूत्रमपि प्रायणीय, पचेद्रियपर्याप्तसूत्र सिद्ध-सप्तशतयाण्य  
सद्योवा पचिदिद्या पज्जाता उहल्लोए इत्यादि ॥ क्षेत्रानुपातेन चित्तमाना पचेद्रिया पर्याप्ता सर्वस्तीका ऊहलोक प्रायवैमानिकानामेव त  
त्र जावात्, तेन्य ऊहलोकतिर्यग्लोके प्रतरद्वयरूपे ऽसख्येयगुणा विवक्षितप्रतरद्वयप्रत्युत्पत्त्योतिष्काणा तदध्यासितक्षेत्राश्रितव्यतरितर्यापचेद्रि

अधोलोचतिरियलोए असखेज्जगुणा, अहोलोए सखेज्जगुणा, तिरियलोए सखे० । खेत्ताणुवाएणं सद्यत्यो  
वा पचिदिद्या तेलुक्की उहल्लोयतिरियलोए असखेज्जगुणा, अहोलोए तिरियलोए सखेज्जगुणा, उहल्लोए  
सखेज्जगुणा, अहोलोए सखेज्जगुणा, तिरियलोए असखेज्जगुणा । खेत्ताणुवाएण सद्यत्योवा पचिदिद्या

रक्षेणके असद्ययातगुणा । धनोके असद्ययातगुणा । अहोलोचतिरियलोए अस० । अधानोके तिरिक्षेणोके असद्ययातगुणा । अहोलोए स० तिरियलोए स० ।  
अधोलोके तिरिक्षेणोके सद्ययातगुणा । विक्ताणुवाएण सद्यत्योवा पचेद्रिया तिलोके उहल्लोए तिरियलोए स० अहोलोयतिरियलोए स० । धेवमेलीने सर्व  
यादा पचेद्रिय तौनसोक्तना सम्यणहार ऊहना अधधधना ऊह तेयाडा ऊहलोक तिरिक्षेणोके सद्ययातगुणा । उहल्लोए स० अहो  
लोए अस० तिरियलोए असखिज्जगुणा । उपपातममुद्घातवसे वेप्रतरपुरसे अधोलोके तिरियलोके सद्ययात० अतिप्रभूतर उपपातसमदुघात न वसे वे  
प्रतरसर्गे ऊहलोके असद्ययाविविमानमा उपजता तेद्वो अधोलोके असद्ययातानारको माहि उपजे घणा तेमाटे घणा मनुय तिरिक्षेणोके उपजे ।



विसेसाहिया, तिरियलोए असखेजगुणा, तेलुक्की असखिजगुणा, उहुलोए असखेजगुणा, अहोलोए  
 विसेसाहिया, खेत्ताणुवाएण सवत्योवा पुढविकाइया अपजत्तया उहुलोयतिरियलोए अहोलोयतिरिय  
 लोए विसेसाहिया, तिरियलोए असखेजगुणा, तेलुक्की असखेजगुणा, उहुलोए असखिजगुणा, अहो  
 लोए विसेसाहिया । खेत्ताणुवाएण सवत्योवा पुढविकाइया पजत्तया उहुलोए तिरियलोए तिरियलोयअ  
 होलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असखेजगुणा, तेलुक्की असखेजगुणा, उहुलोए असखेजगुणा, अहो  
 लोए विसेसाहिया, खेत्ताणुवाएण सवत्योवा अउकाइया उहुलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए वि

धोनोंक तिरछेनोंके सस्यतागुणा वणाय्तर स्वस्थान पणा माटे । स० तिरियलोए सखेजगुणा खित्ताणुवाएण सवत्योवा पुढवोकाइया उहुलोयति  
 रियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया । तेलुक्की तिर्यक्नोंके सस्यतागुणा पचेन्द्रियस्वस्थान तिर्यचमनुयमाहि नावे । द्विवे एके द्रुगो अन्पयहल  
 कहैके चैवनीमेले सर्वथोडा पृथिवीकाइक ऊर्दलोक तिर्यनाके भावना सर्वपाकलो परिजाणवो । अधोनोंके तिरछेनोंके विगोपाधिक । तिरियलोए अस०  
 तिस्रोके अस० उहुलोए अस० अहोलोए विसेसाहिया । तिर्यक्नोंके असस्यतागुणा धिनाके असस्यतागुणा ऊर्दलोक असस्यतागुणा अधोनोंकेविगोपा  
 धिक । खित्ताणुवाएण सवत्योवा पुढवोकाइया अपजत्तया उहुलोयतिरियलोए अहोनोंयतिरियलोए विसेसाहिया । चैवनीमेले सर्वथोडा पुढवोकाइ  
 या अपर्याप्ता ऊर्दलोक तिरछेनोंके भावनापाकलो परे । ऊर्दलोक अधोनोंके विगोपाधिक । तिरियलोए अस० तिस्रोके अस० उहुलोए असमि० ।  
 तिरछेनोंके असस्यतागुणा धिनाके असस्यतागुणा ऊर्दलोक असस्यतागुणा । अहोलोए विसेसाहिया । अधोनोंके विगोपाधिक । खित्ताणुवाएण सवत्यो  
 वा पुढवोकाइयपजत्तया उहुलोयतिरियलोए । चैवनीमेले सर्वथोडा पृथिवीकाइयापर्याप्ता ऊर्दलोक तिर्यक्नोंके भावनापाकलो परे । अहोनोंयतिरि  
 यलोए विसेसाहिया । अधोनोंके विगोपाधिक तिरछेनोंके । तिरियलोए अस० तिस्रोके अस० उहुलोए विसेसाहिया । तिरछेनोंके । तिरछेनोंके

याणा वैमानिकव्यतरज्योतिषविद्याधरचारणमुनितिर्यग्पंचेद्रियाणा मूढलोके तिर्यग्लोके च गमनागमने कुर्वता मऽचिकृतप्रतरद्वयस्पर्शात्, तेन्य  
स्त्रीलोके त्रीलोक्यसस्पशिन सख्येयगुणा कथ मितिचत् यतो ये प्रवनपतिव्यतरज्योतिषवैमानिका विद्याधरा वा ऽधोलोकस्था कृतवैक्रियसमुद्  
घाता स्तथाविधप्रयत्नविशेषा दूद्धूलोकाविज्ञिमात्मप्रदेशदृष्टा स्ते त्रीनऽपि लोकान् स्पृशती ति सख्येयगुणा, स्तेन्यो ऽधोलोकतियग्लोके प्रतरद्वय  
रूपे सख्येयगुणा दह्वोहिव्यतरा स्वस्थानप्रत्यासन्नतया प्रवनपतय स्तियग्लोके जटुलोकेवा व्यतरज्योतिषवैमानिका देया अधोलोकि कक्रामपु स  
मवसरणादा वऽधोलोके क्रीडादिनिमित्त च गमनागमनकरणत स्तथा समुद्रेषु केचिद्वियग्पंचेद्रिया स्वस्थानप्रत्यासन्नतया अपरे तदध्यासितकृत्रा  
श्रिततया यथोक्त प्रतरद्वय स्पृशति तत सख्येयगुणा तेन्यो ऽधोलोके सख्येयगुणा नैरयिकाणा प्रवनपतीनाच तत्रा ऽवस्थानात्, तेन्य स्तियग्

अपज्जतया, तेलोक्के उहूलोयतिरियलोए अ्सखेज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए सखेज्जगुणा, उहूलोए  
सखेज्जगुणा, अहोलोए सखेज्जगुणा तिरियलोए सखिज्जगुणा खेत्ताणुवाएण सव्वस्योवा पचिंदिया पज्जत्ता  
उहूलोए उहूलोयतिरियलोए अस०, तेलुक्के अस०, अहोलोयतिरियलोए सखेज्ज० अहोलोए सखेज्ज०  
तिरियलोए अ्सखेज्ज०, खेत्ताणुवाएणं सव्वस्योवा पुढविकाइया उहूलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए

खित्ताणयाएण सव्वस्योवा पचेदिय अपज्जत्तगा तिक्कोकं । खेत्तनोमैने सर्वघोडा पचेदिय अपर्याप्ता तिरिक्खेत्तिलोके भावना आंघनो परि कहवो । उहूढ  
लोयतिरियलोए अस० । ऊर्हलोके तिरिक्खेत्तिलोके असयातगुणा । अहोलोयतिरियलोए सखिज्जगुणा उहूढनाए सखिज्जगुणा अहोलोए स० तिरियलोए  
असखिज्जगुणा । अधोलोके तिरिक्खेत्तिलोके सयातगुणा ऊर्हलोके अधोलोके सयातगुणा तिरिक्खेत्तिलोके असयातगुणा । खित्ताणुवाएण सव्वस्योवा पचेदि  
यपज्जत्तगा उहूढलो उहूढलोयतिरियलोए अस० । खेत्तनोमैने सर्वघोडा पचेदिय पर्याप्ता ऊर्हलोके वैमानिकने भावै तेहथो ऊर्हलोके तिरियक्खेत्तिलोके अ  
सयातगुणा वेप्रतरपुरसे ज्योतिषो विद्याधरचारण यमसणे गमनागमने । तिक्कोके सखिज्जगुणा । तिक्कोके सयातगुणा । अहोलोयतिरियलोए । अ

विसेसाहिया, तिरियलोए असखेजगुणा, तेलुक्के असखेजगुणा, उहुलोए असखेजगुणा, अहोलोए  
 विसेसाहिया, खेत्ताणुवाएण सवत्योवा पुढविकाइया अपजत्तया उहुलोयतिरियलोए अहोलोयतिरिय  
 लोए विसेसाहिया, तिरियलोए असखेजगुणा, तेलुक्के असखेजगुणा, उहुलोए असखेजगुणा, अहो  
 लोए विसेसाहिया । खेत्ताणुवाएण सवत्योवा पुढविकाइया पजत्तया उहुलोए तिरियलोए तिरियलीयअ  
 होलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असखेजगुणा, तेलुक्के असखेजगुणा, उहुलोए असखेजगुणा, अहो  
 लोए विसेसाहिया, खेत्ताणुवाएण सवत्योवा अउकाइया उहुलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए वि

धानीक तिरछेनोके सस्यतागुणा घणाध्यतर स्वस्थान पणा माटे । स० तिरियलोए सखेजगुणा खिस्ताणुवाएण सवत्योवा पुढवोकाइया उहुलोयति  
 रियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया । तेहथो तिर्यक्लोके सस्यतागुणा पचेदियस्वस्थान तिर्यचमनुयमाहि नावे । हिबे एके टुगनो अल्पवहुत्व  
 कहैछे सेवनीमेले सर्वयोडा पृथिवीकाइक ऊर्दकोक तिर्यनोके भावना सर्वपाकलो परिकान्वो । अधोलोके तिरछेनोके विगोपाधिक । तिरियलोए अस०  
 तिस्रोके अस० उहुलोए अस० अहोलोए विसेसाहिया । तिर्यक्लोके असस्यतागुणा धिनाके असस्यतागुणा ऊर्दलाक असस्यतागुणा अधोलोकेविगोपा  
 धिक । खिस्ताणुवाएण सवत्योवा पुढवोकाइया अपजत्तया उहुलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया । सेवनीमेले सर्वयोडा पुढवोकाइ  
 या अपर्याप्ता ऊर्दलोके तिरछेनोके भावनापाकलो परे । ऊर्दलाक अधोलोके विगोपाधिक । तिरियलोए अस० तिस्रोके अस० उहुलोए असखि ।  
 तिरछेनोके असस्यतागुणा धिनाके असस्यतागुणा ऊर्दलोके असस्यतागुणा अहोलोए विसेसाहिया । अधोलोके विगोपाधिक । खिस्ताणुवाएण सवत्यो  
 वा पुढवोकाइयापजत्तया उहुलोयतिरियलोए । सेवनीमेले सर्वयोडा पृथिवीकाइयापर्याप्ता ऊर्दलोके तिर्यक्लोके भावनापाकलो परे । अधोलोयतिरि  
 यलोए विसेसाहिया । अधोलोके विगोपाधिक तिरछेनोके । तिरियलोए अस० तिस्रोके अस० उहुलोए विसेसाहिया । तिरछेनोके । तिरछेनोके

सेसाहिवा तिरियलोए असखेजगुणा, तेलुक्की असखेजगुणा, उट्टलोए असखेजगुणा, अहोलोए विसे साहिया। खेत्ताणवाएण सव्योवा आउकाइया अपजत्तया उट्टलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसे ससाहिया तिरियलोए असखेजगुणा, तेलुक्की असखेजगुणा, उट्टलोए असखेजगुणा, अहोलोए विसे साहिया। खेत्ताणवाएण सव्योवा आउकाइया पजत्तया उट्टलोएतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसे ससाहिया, तिरियलोए असखेजगुणा, तेलुक्की असखेजगुणा, उट्टलोए असखेजगुणा, अहोलोए विसे साहिया। खेत्ताणवाएण सव्योवा तेलुकाइया उट्टलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया,

असख्यातगुणा विनोके असख्यातगुणा अर्धलोके विगोपाधिक। विताणवाएण सव्योवा आउकाइया उट्टलोयतिरियलोए। सेवनीमेले सर्वोहा अरकाइया अर्धलोके तिरिखेलोके। अर्धलोयतिरियनोए विसेसाहिया तिरियलोए अस०। अर्धलोके तिरिखेलोके विगोपाधिक तिरिखेलोके असख्यातगुणा। तिल्लोके अस० उट्टलोए अस०। विनोके असख्यातगुणा अर्धलोके असख्यातगुणा। अर्धलोए विसेसाहिया विताणवाएण। अर्धलोके विगोपाधिक सेवनीमेले सर्वोहा। आउकाइया अपजत्तया उट्टलोयतिरियलोए। अपकाइया अपर्याता अर्धलोके तिरिखेलोके सर्वोके द्विगुनीपर भावना। अर्धलोए तिरियलोए विसेसाहिया। अर्धलोके तिरिखेलोके विगोपाधिक। तिरियनोए अस० जगुणा तिल्लोके अस०। तिरिखेलोके असख्यातगुणा विनोके असख्यातगुणा। उट्टलोए अस० अर्धलोए विसेसाहिया। अर्धलोके असख्यातगुणा अर्धलोके विगोपाधिक। विताणवाएण सव्योवा आउकाइया अपजत्तया। सेवनीमेले सर्वोहा अपकाइयापर्याता। उट्टलोयतिरियलोए विसेसाहिया। अर्धलोके तिरिखेलोके। अर्धलोयतिरियनोए विसेसाहिया तिरियलोए अस०। अर्धलोके तिरिखेलोके विगोपाधिक असख्यातगुणा। तिल्लोके अस० उट्टलोए अस० अर्धलोए विसेसाहिया। विनोके असख्यातगुणा अर्धलोके विगोपाधिक। विताणवाएण सव्योवा तेलुकाइया उट्टलोयतिरियलोए। जेन

तिरियलोए असखेज्जगुणा, तेलुक्के असखेज्ज०, उहुलोए असखिज्ज०, अहोलोए विन्नेसाहिया। सेत्ताणु  
वाएण सव्वत्थोवा तेउकाइया अपज्जत्तया उहुलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विन्नेसाहिया, तिरि  
यलोए असखेज्जगुणा, तेलुक्के असखिज्जगुणा, उहुलोए असखेज्जगुणा, अहोलोए विन्नेसाहिया। खेत्ता  
णुवाएण सव्वत्थोवा तेउकाइया पज्जत्तया उहुलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विन्नेसाहिया, तिरि  
यलोए असखेज्जगुणा, तेलुक्के असखेज्जगुणा, उहुलोए असखेज्जगुणा, अहोलोए विन्नेसाहिया। खेत्ता  
णुवाएण सव्वत्थोवा वाउकाइया उहुलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विन्नेसाहिया। तिरियलोए अ

नोमेले सर्वथोडा तेउकाइया जइलाक तिर्यक्कुलोके भावनापाक्खनीपरे। अहोनायतिरियलोए विशेषाहिया तिरियलोए अ०। अधोलोके तिरिक्केलोके वि  
शेषाधिक तिरिक्केलोके अससयातगुणा। तिलाके अस० उहुलोए अ० अइलाए विन्नेसाहिया। विलोके अससयातगुणा ऊईलोके अससयातगुणा अधो  
लोके विशेषाधिक। खित्ताणवाएण सव्वत्थावा तेउकाइयअपज्जत्तया। चव्वनोमैले सर्वथोडा तेउकाइया अपर्मात्ता। उहुलोनायतिरियलाए अहोलोयतिरि  
यलाए विन्नेसाहिया। ऊईलाकतिर्यक्कुलोके अधोलोके तिरिक्केलाके विशेषाधिक। तिरियलोए अ० तिलाके अ० अहोलाए विन्नेसाहिया।  
तिरिक्केलोके अससयातगुणा विलोके अससयातगुणा अधोलाके विशेषाधिक। खित्ताणुवाएण सव्वत्थावा तेउकाइयपज्जत्तया  
चव्वनोमैले सर्वथोडा तेउकाइयापर्याप्ता। उहुलोनायतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विन्नेसाहिया। ऊईलोके तिर्यक्कुलोके अधोलाके तिर्यक्कुलोके वि  
शेषाधिक। तिरियलोए अ० तिलाके अ० उहुलोए अ०। तिर्यक्कुलोके अससयातगुणा ऊईलोके अससयातगुणा। अहोलाए वि० खित्ताणुवाएण सव्वत्था  
वा। अधोलाके विशेषाधिक चव्वनोमैले सर्वथोडा। वायुकाइया उहुलोयतिरियलोए अ०। वायुकाइया ऊईलोके तिर्यक्कुलोके। अहोलोयतिरियलोए विन्ने०  
अधोलोके तिरिक्केलाके विशेषाधिक। तिरियलोए अ० तिलाके अ० उहुलोए अ० अहोलाए विन्नेसाहिया। तिरिक्केलाके अससयातगुणा विलोके अससया





लोके उभयेयगुणा स्तिर्यक्पक्षे द्वियमप्युत्तरज्योतिष्काणां भवस्थानात्, तदेव मुक्तं पक्षे द्वियाणां मल्पयदुस्य भिदानो मेके द्वियजेदानां पृथिवी कायिकादीनां पचानां मौषिकपर्याप्तपर्याप्तज्जदेन प्रत्येकं त्रीणि त्रीण्युल्पर्यदुस्यान्मां उह-रोत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा पुढविक्काइया उहल्लोयतिरिय

उहल्लोए अस्सेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिंया । खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा वणरसइकाइया अपज्जत्तया उहल्लोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिंया, तिरियलोए अस्सेज्जगुणा, तेलुक्के अस्सेज्जगुणा, उहल्लोए अस्सेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिंया । खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा वणरसइकाइया पज्जत्तया उहल्लोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिंया, तिरियलोए अस्सेज्जगुणा, तेलुक्के अस्सेज्जगुणा, उहल्लोए अस्सेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिंया । खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा तरसकाइया तेलुक्के

तिक्काइया अपर्याप्ता ऊहं नाक तिरिक्केलोके । अहोलायतिरियलोए विसेसाहिंया तिरियलोए अ० तिलोके अ० । अहोलाके तिरिक्केलोके विग्रयाधिकं तिरिक्केलोके चिन्तोके असदयातगुणा । उहल्लोए अ० अहोलाके विसेसाहिंया । ऊहं लोके असदयातगुणा अधोलोके विग्रयाधिकं । खित्ताणुवाएण सव्वत्थोवा अपज्जत्तया । चैवनीमेले सर्वथाडा वनस्पतिकारयापर्याप्ता । उहल्लोयतिरियलोए अहोलायतिरियलोए विसेसाहिंया । ऊहं लोके तिरिक्केलोके पधोलाके तिरिक्केलाके विग्रयाधिकं । तिरियलोए अ० उहल्लोए अ० । तिरिक्केलोके असदयातगुणा चिन्तोके असदयातगुणा ऊहं लोके अ० असदयातगुणा । अहोलाए विसेसाहिंया खित्ताणुवाएण सव्वत्थोवा तसकाइया । अधोलोके विग्रयाधिकं चैवनीमेले सर्वथाडा वसकाइया । तिलोके उहल्लोयतिरियलोए अ० अहोलोयतिरियलोए सखि० । चिन्तोके परसे ते इहा पक्षे द्वियनौपरे भावना ऊहं लोके तिरिक्केलोके असदयातगुणा अधोलोके तिरिक्केलोके सखि० । तिरियलोए अ० । ऊहं लोके सखि० अहोलोके सखि० अहोलोके असदयातगुणा । खित्ताणुवाएण सव्वत्थोवा तसकाइया अपज्जत्तया । चैवनीमेले सर्वथाडा वसकाइया अपर्याप्ता । तिलोके उहल्लोयतिरियलोए अ० अहोलोय

सखेजगुणा, तेलुक्के असखिजगुणा उहुलोए असखेजगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणवाएण  
सह्योवा वाउकाडया अपजत्तया उहुलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया । तिरियलोए  
असखेजगुणा, तेलुक्के असखेजगुणा, उहुलोए असखिजगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणवाएण  
सह्योवा वाउकाडया पजत्तया उहुलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया । तिरियलोए  
असखेजगुणा, तेलुक्के असखेजगुणा, उहुलोए असखेजगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणवाएण  
सह्योवा वणरसइकाइया उहुलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया । तेलुक्के असखेजगुणा

तगुणा ऊँलोके असखातगुण अंलोके विगोपाधिक । खित्ताणुगएण सख्योवा वायुकाइय अपजत्तया उहुलोयतिरियलोए विसेसाहिया । खेवनी  
मेनेमवंधोडा वायुकाइया अपर्याता ऊँलोके तिर्यक्लोके । अहोनीयतिरियलोए विसेसाहिया तिरियलोए अस० । अधोलाके तिर्यक्लोके विगोपाधिक  
तिर्यक्लोके असखातगुणा । तिर्यक् अस० उहुलोए अस० अहोला विसेसाहिया । त्रिनाके असखातगुणा ऊँलोके असखातगुणा अधोलाके विगो  
पाधिक । खित्ताणवाएण सख्योवा वाउकाइयपजत्तया उहुलोयतिरियलोए । खेवनीमेले सर्वथोडा वनसतिकाइया ऊँलोके तिर्यक्लोके । अहोला  
य तिरियलोए विसेसाहिया तिरियलोए अस० । अधोलाके तिर्यक्लोके विगोपाधिक तिर्यक्लोके असखातगुणा । त्रिनाके अस० उहुलोए अस० ।  
त्रिनाके असखातगुणा ऊँलोके असखातगुणा । अहोला विसेसाहिया । अधोलाके विगोपाधिक । खित्ताणवाएण सख्योवा । खेवनीमेले सर्वथोडा  
वणरसइकाइया उहुलोयतिरियलोए । वनसतिकाइया अपर्याता ऊँलोके तिर्यक्लोके । अहोनीयतिरियलोए विसेसाहिया तिरियलोए अस० ।  
अधोलाके तिर्यक्लोके विगोपाधिक तिर्यक्लोके असखातगुणा । तिर्यक् अस० उहुलोए अस० । अधोला विसेसाहिया । त्रिनाके असखातगुणा ऊँ  
लोके असखातगुणा अधोलाके विगोपाधिक । खित्ताणवाएण सख्योवा वणरसइकाइय अपजत्तया उहुलोयतिरियलोए । खेवनीमेले सर्वथोडा वनस

लोके ऽसुरयेयगुणा स्तिर्यक्पचेन्द्रियमनुष्यव्यतरज्योतिष्काणां भवस्थानात्, तदेव मुक्त पचेन्द्रियाणां मत्पयदुस्त्व सिद्धानी मेकेन्द्रियजेदना पृथिवी कायिकादीनां पचानां मीचिकपर्याप्तापर्याप्तजदेन प्रत्येक त्रीणित्रीण्य ऽल्पवदुत्वान्या ऽह-संज्ञाशुवायण सद्यत्योवा पुढविकाइया उहल्लोयतिरिय

उहलोए असखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणुवाएण सद्यत्योवा वणरसइकाइया अणपज्जात्तया उहलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असखिज्जगुणा, तेलुक्के असखिज्जगुणा, उहलोए असखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणुवाएण सद्यत्योवा वणरसइकाइया पज्जात्तया उहलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असखेज्जगुणा, तेलुक्के असखेज्जगुणा, उहलोए असखिज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणुवाएण सद्यत्योवा तससकाइया तेलुक्के

तिष्काइया अपर्याप्ता ऊहं नाक तिरिक्खेनाके । अहंलारायतिरियलोए विसेसाहिया तिरियलोए अ० तिलोके अ० । अवालोकं तिरिक्खेनाके विग्रपाधिकं तिरिक्खेनाके विन्नोके असरयातगणा । उहलोए अ० अहोलोए विसेसाहिया । ऊहं लोके असरयातगुणा अधोलोके विग्रपाधिकं । खित्ताणुवाएण सद्यत्योवा वणरसइकाइया पज्जात्तया । खेत्तनीमेले सर्वथाहा वनसत्तिकाइयापर्याप्ता । उहलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया । ऊहं लोके तिरिक्खेनाके अधोलोके तिरिक्खेनाके विग्रपाधिकं । तिरियलोए अ० तिलोके अ० उहलोए अ० । तिरिक्खेनाके असरयातगुणा विन्नोके असरयातगुणा ऊहं लोके असरयातगुणा । अहोलोए विसेसाहिया खित्ताणुवाएण सद्यत्योवा तसकाइया । अधोलोके विग्रपाधिकं खेत्तनीमेले सर्वथाहा वसकाइया । तिलोके उहलोयतिरियलोए अस० अहोलोयतिरियलोए सखि० । विन्नोके परसे ते इहां पचेन्द्रियनोपरे भावना ऊहं लोके तिर्यक्कनोके असरयातगुणा अधोलोके तिरिक्खेनाके तिरिक्खेनाके सद्ययातगुणा । उहलोए सखि० अहोलोए सखि० । तिरियलोए अस० । ऊहं लोके सखिज्जगुणा अधोलोके सखिज्जगुणा तिरिक्खेनाके असरयातगुणा । खित्ताणुवाएण सद्यत्योवा तसकाइया अपज्जात्तया । खेत्तनीमेले सर्वथाहा वसकाइया अपर्याप्ता । तिलोके उहलोयतिरियलोए अस० अहोलोय

लोए इत्यादि ॥ इमानि पञ्चदशपिम्बूणि प्रागुक्तैर्द्वयसूत्रवद्भावनीयानि साप्रत मोचिक्रसकायापर्याप्तापर्याप्तसकायसूत्राण्या ह-खेताणुवा  
एण सव्वत्थोवा तसकाइया तेलोके इत्यादि ॥ इमानि पञ्चेद्वयसूत्रवद्भावनीयानि गत क्षेत्रद्वार २४ । इदानीं वधद्वार वक्तव्यं, वधोपलक्षित द्वार  
तदाह-एणसिण भन्ते । जीवाण आउयस्स कम्मस्स वधगाण अवधगाण भित्थादि ॥ इहा यु कम्मवधकावधकाना पर्याप्ताऽपर्याप्ताना सुप्तजायता

उहुलोयतिरियलोए अस्सखिज्जगुणा, अहोलीयतिरियलोए सखेज्जगुणा, उहुलोए सखेज्जगुणा, अहोलीए  
सखेज्जगुणा, तिरियलोए अस्सखिज्जगुणा । खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा तस्सकाइया अपज्जत्तया तेलुक्के उहु  
लोयतिरियलोए अस्सखेज्जगुणा, उहुलोए सखिज्जगुणा, अहोलीए सखिज्जगुणा, तिरियलोए अस्सखेज्ज  
गुणा । खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तया तेलुक्के उहुलोयतिरियलोए अस्सखिज्जगुणा, अहो  
लोयतिरियलोए सखेज्जगुणा, उहुलोए सखिज्जगुणा, अहोलीए सखिज्जगुणा, तिरियलोए अस्सखेज्जगु  
णा । दार २४ । एणसिण भन्ते ! जीवाण आउस्स कम्मस्स वधगाणं अवधगाण अपज्जत्ताण पज्जत्ताण

तिरियलोए सखिज्जगुणा । विनाके कर्हलाके तिरियन्तोके असस्यातगुणा अधोलीके तिरियन्तोके सखिज्जगुणा अहोलीके स  
खि० । कर्हलोके सस्यातगुणा अधोलीके सस्यातगुणा तिरिक्केलोके असस्यातगुणा । खित्ताणुवाएण सव्वत्थोवा तसकाइयपज्जत्तया । चेतनोमैले सर्वथाह  
वमकाइयापर्याप्ता । तिलोके उहुलोयतिरियलोए अस्स० । विनाके कर्हलोके तिरियन्तोके असस्यातगुणा । अहोलीयतिरियलोए सखि० उहुलोए स० ।  
अधोलीयतिरियन्तोके सस्यातगुणा कर्हलोके सस्यातगुणा । अधोलीए स० तिरियलोए अस्स० दार । अधोलीके सखिज्जगुणा तिरिक्केलोके असस्यातगुणा  
इति तौजे ३ पदे २४ । चौवोसमो द्वार जाणियो ॥ एणसिण भन्ते जीवाण । इहिवे वधद्वार कहिक्के—हे भगवन् एहजोवने । आऊकम्मवधगाण अवधगा  
ण पज्जत्ताण अपज्जत्ताण । आयु कर्मनाबुक्कने आऊकर्मनाबुक्कने अपर्याप्ता अपर्याप्तावे । मुत्ताण जायराण समोइयाण असमोइयाण । मूताने जा

समवहतासमवहताना सातावेदकाऽसातवेदकाना इन्द्रियोपयुक्तनोऽन्द्रियोपयुक्ताना साकारोपयुक्ताऽनाकारोपयुक्ताऽनाऽल्पबहुत्व वक्तव्य , तत्र प्रत्येक तावद्द्रुमो येन समुदाये सुरेन तद ऽवगम्यते तत्र सर्वस्वोका आरूपो वधका अथवा सख्येयगुणा , यतो ऽनुन्नयमाननवायुरपि त्रिनागाऽवधोपपारजाविक मायु कीवा वध्नन्ति त्रिनागत्रिनागाद्यऽवधोये वा ततो द्वौ त्रिनागा वऽवधकाल एक त्रिनागो वधकाल इति । वधकाल्यो ऽवधका सख्येयगुणा , स्तथा सयस्वोका अपर्याप्तिका पर्याप्तिका सख्येयगुणा , एतच्च सूक्ष्मजीवान ऽधिकृत्य वेदितव्य ' सूक्ष्मेपु हि द्वाह्यो व्याघातो न प्रवर्तति तत स्तदऽजावा द्वहूना निष्पत्ति स्तोकानामेव चा ऽन्यपत्ति स्तथा सर्वस्वोका सुप्ता जागरा सख्येयगुणा , एतदऽपि सू

सुप्ताण जागराण समोहयाण अस्मोहयाण सातावेदगाण असातवेदगाण इन्द्रियउवउत्ताण णोऽन्द्रियउवउत्ताण सागारोवउत्ताण अणगारोवउत्ताणय कयरे कयरेहितो अण्णावा वज्जवावा तुल्लावा विसेसाहिया वा ? गोयमा । सवृत्त्योवा जीवा अणउस्स कम्मस्स वधगा अपज्जत्तया सखिज्जगुणा , सुत्ता सखिज्जगुणा , समोहया सखिज्जगुणा , सातावेदगा सखिज्जगुणा , इन्द्रियउवउत्ता सखिज्जगुणा , अणगारोवउत्ता

गताने समाह्वाने असमोह्याने । सायावेयगाण असायावेयगाण । सातावेदकने असातावेदकने । इन्द्रियोवउत्ताण नाऽन्द्रियोवउत्ताण । इन्द्रियोपयुक्तने नाऽन्द्रियोपयुक्तने । सागारोवउत्ताण अणगारोवउत्ताणय । साकारोपयुक्तने अनाकारोपयुक्तने । कयरे २ हितो अण्णावाजाव विसेसाहियावा गोः सवृत्त्योवा जीवा आठकम्मस्सवधगा अपज्जत्तगा सखिज्जगुणा सत्तासखिज्जगुणा । एहमा किंहा २ यो थोडा अथवा यणा सरीया विणोपाधिक हुवे । हेगो तम सर्वथोडा जीव आयुकर्मनावध विभागविगये परभवतो आयु वधधेनो थोडा तेहथी अवधक असख्यातगुणाकै वैचित्र भावना अवधकाल विभाग वधकानमाटे अवधक असख्यातगुणा सर्वथाहा अपर्याप्ताए सूक्ष्मजीवाथौजाणिवा सर्वथाहा सताने जागता सख्यातगुणाण पिणसूक्ष्मोऽन्द्रियने जेमाटे अपर्याप्ता सत्ता कविये । असमोहियासखिज्जगुणा सायवेयगा सः इन्द्रियोवउत्ता सः अणगारोवउत्ता सः सागारोवउत्ता सः नाऽन्द्रियोवउत्ता वि० ।

त्साने केद्रियान अधिष्ठत्य वेदितव्य, यस्माद् उपर्यासा मुसा एव लभ्यन्ते जागराश्चापि, तत्क मूलटीकाया-जम्हा अपञ्जता सुता लभति, केद् अपञ्ज  
तगा जेयि सखिज्जा समया अतीता ते यद्योवा इयरे विर्योधगा चैव सेसा जागरा पञ्जतगा ते सखिज्जगुणा इति, जागरा पर्वोसा को न सख्ये  
यगुणा इति, तथा समग्रता संवत्तोका यतइह समवहता भारणातिकसमुद्घातन परिगृह्यते भारणातिक थ समुद्घातो मरणकाले न ज्ञेयकाल  
तत्राऽपि न सर्वथा मिति सवत्तोका, स्तोम्यो असमवहता सख्येयगुणा जीवनकालस्या अतिबहुत्वात्, तथा सवत्तोका सातवेदका यत इह व  
हव साधारणशरीरा अरूपे प्रत्येकशरीरिण साधारणशरीरा थ यहवो असातवेदका स्थत्या सातवेदिन प्रत्येकशरीरिण स्तुन्नयास, सातवेद  
का, स्तोका असातवेदिन, स्तत स्तोका सातवेदका, स्तोम्यो असातवेदका- सख्येयगुणा स्तथा संवत्तोका इयोपयुक्ता इद्रियोपयोगो हि प्रत्यु  
त्यज्जकालविविध स्तत तदुपयोगकालस्य स्तोक्तत्वात्, पृच्छासमये स्तोका अवाप्यते यदातु तमेवार्थे इद्रियेण दृष्टा विधारयत्यो अयसञ्चया अपि त  
दा नेद्रियोपयुक्त स व्यपदिश्यते ततो नेन्द्रियोपयोगस्या अतीताऽनागतकालविविधतया बहुकारतया त्सरयेयगुणा नोषुद्रियोपयुक्ता स्तथा संव  
त्तोका अनाकारीपयुक्ता अनाकारीपयोगकालस्य स्तोक्तत्वात्, साकारीपयुक्ता सख्येयगुणा, अनाकारीपयोगकाला त्साकारीपयोगस्य सख्येयगु

सखेज्जगुणा, सागारोवउत्ता सखिज्जगुणा, नोइन्द्रियउवउत्ता त्रिसेसाहिया, असातावेदगा त्रिसेसाहिया,  
असमोहिया त्रिसेसाहिया, जागरा त्रिसेसाहिया, पञ्जतगा त्रिसेसाहिया, अउत्तस कम्मस्स अन्नधगा

ने पर्याप्ता जागता कश्चिद् । तेमाटे असखातगुणा सर्वथोडा समोहित मरणसमुद्घात आचोले पविसे मरणातसमुद्घात मरणकाले इवे । तेमाटे अ  
समोहना सखातगुणा के लौववानाकाल घणा माटे संवथोडा सातावेदनीय प्रत्येकशरीरो साधारण शरीरो असातावेदकेने असखातगुणा सर्वथो  
डा इद्रियोपयुक्त असखातगुणा इद्रियोपयुक्त प्रवृत्तकाले ते उपयोगकाल थोडाछे मच्छीसमये थोडा पामिये नोइद्रियोपयुक्तकालाचो अनोतानाग  
नो विषय घणा माटे असखातगुणा सर्वथोडा अनाकारीपयोगकाल थोगमाटे । आसायवेयगा यि० असमोहया वि० जागरविसे० पञ्जसगा वि०

खत्वात्, इदानीं समुदायगत सूत्रोक्त मऽल्पथदुत्थ प्राप्यते, सर्वस्तीका जीवा आयु कर्मणो बंधका आयुर्बंधकालस्य प्रतिनियतत्वात्, तेभ्यो ऽ पर्याप्ता सूर्ययगुणा, यस्मा दपर्याप्ता अनुन्नयमानजवविभागाद्यऽवद्यापायुप पारजाविक मायु बध्नति ततो द्वौ त्रिजागाव बध्नकाल एको वध काल इति वधकालाद ऽत्रथकाल सूर्ययगुण तेन सरययगुणा ऽपयाप्ता आयुर्बंधकस्य, तेभ्यो ऽपर्याप्तस्य सुप्ता सूर्ययगुणा यस्माद ऽप यांतेषु च पर्याप्तपु च सुप्ता लज्यते, पर्याप्ताद्या पर्याप्तस्य सूर्ययगुणा इत्य ऽपयाप्तस्य सुप्ता सूर्ययगुणा स्तस्य समयवहता सूर्ययगुणा यत्नना

त्रिंसेसाहिया, दार २५। खेत्ताणवाएण सव्वत्थोवा पोगगला तेलुक्की उहुलोयतिरियलोए अणतगुणा अहो लोयतिरियलोए विंसेसाहिया, तिरियलोए असखिज्जगुणा उहुलोए अणतगुणा अहोलोए विंसेसाहिया दिसाणवाएण सव्वत्थोवा पोगगला उहुदिसाए अहोदिसाए विंसेसाहिया उत्तरपुरिच्छिमेण दाहिणपच्चिच्छि मेणय दोवि तुल्ला अणतगुणा। दाहिणपुरिच्छिमेण उत्तरपच्चिच्छिमेणय दोवि तुल्ला विंसेसाहिया पुरिच्छि

थावकमश्रयवत्तना हार। तेद्वथो साकारोपयोग असत्तातगणा अनाकारापयोग थो साकारोपयोगना कात वणो छे पर्याप्ता विगोपाधिक आय कर्म ना वधथो अवधक विगोपाधिक एतल ववहार २५। मो तोजे पदे अत्यवद्वलनाद्विपूरा दुवो ॥ खिसाणयाएण सव्वत्थावा पुगल तिलाके उहुटलोयति रियलोए अणतगुणा। द्विवै पुहलहार कहैछे—जैवने प्रमाणेकरो द्रव्यथो जे महास्सन्ध ते तेनाक्यापो थोडा पहलछे ऊहुलाक तिरिछेलाके अणतगुणा। ऊहुलोचना अवप्रदेगछे प्रतरनेफरसे तेमाटे अणतगुणा छे। अहोलायातारगलाए विंसेसाहिया तिरियलोए असखिज्जगुणा उहुटलोए अणतगुणा। तेद्वथो अधोलाक तिण्कलाके प्रागुक्त माकार बेपतरने फरसे विगोपाधिकमाटे तेद्वथो तियलोके अणतगुणा अणतगुणा अणतगुणा माटे ऊहुलोके अण तगुणा तियंकोकोकथा ऊहुलोके असत्तातगुणा माटे। अहोलाए विंसेसाहिया दिसाणवाएण सव्वत्थोवा पुगल उहुटदिसाए अहोदिसाए विंसेसा हिया उत्तरपुरित्थिमण। अधोलीक विगोपाधिक जेववेवप्रधिका माटे ७ राजकाइक अधिकावनी विगोपाधिक द्विवेदियि चारप्रदेग घथा ७ राजप्रमा



[illegible]

मेण अणसखंजगुणा पञ्चच्छिमेण विमंसाहिया दाहिणं विसेसाहिया उत्तरेण विसेसाहिया खेत्ताणवाएण  
सव्वत्योवाइ दव्वाइ तेलुक्के उह्ठलोयतिरियलोए अणतगुणाइ अह्ठलोयतिरियलोए विसेसाहियाइ उह्ठलोए

ण अधोक्षीक समधिक ७ सातराज कांश्च विगोपाधिक इवे इयानकू विद्युत्प्रभमाख्यवाननव कूट तेहथी उपरिक्लनपद्म । दाहिणपक्षत्यमेणव दौबितुत्ता असखिज्जगुणा दाहिणपुरित्येण उत्तरपक्षत्यमणयदवितुत्ता विमसाहिया प्रच्छिमेण असखिज्जगुणा पक्षच्छिमेण विमसाहिया दाहिणेण विमसाहिया उत्तरेण विमसाहिया । दक्षिण पश्चिमे वेसरिपोने असख्यातगणे अधिकाकू तेहथी दक्षिणपूर्व उत्तरपश्चिमे प्रत्येके २ विगोपाधिक खख्यान के परस्परेरिरिया इहा सीमनसगधमाटननानव कूट तिहा मूल्यापट्टगलप्रभूत उपजताकू तेहथी पूर्व असख्यातगुणा चित्रना असख्यातपणा माटे तेहथी पश्चिमे विगोपाधिक अधानोकायामने संप्रभावे घणा पट्टगलना यानककू दक्षिणे विगोपाधिक भवननैसुखनेभावे पट्टगलविगोपाधिककू उत्तरपट्टगल विगे पाधिक मानसरोवरकू तैमाटे कक्षा पट्टगलना अक्षपट्टगलद्वयाथी कहैछै । यिसाणवाएण सब्बलोवा इ दख्याइ तिलोके उखुट्ठनायतिरियनोए अणतम्

स्य शुन्द्रिप्रसाकारोपयुक्तेषु विशतिकल्पेषु उपनीतेषु द्विपञ्चाशत्कल्पेषु अनाकारोपयुक्तेषु तेषु मध्ये प्रचिमेषु द्वेक्षते चतुर्विंशत्यधिके ज्ञवते तत  
साकारोपयुक्तस्यो नोइन्द्रियोपयुक्ता विशेषाधिका स्तस्यो उसातवेदका विज्ञोपाधिका इन्द्रियोपयुक्तानामप्य उसातवेदकत्वात् १० तस्यो असमव  
दता विशेषाधिका सातवेदकानामप्य असमवदत्तत्वादात्, तेस्यो जागरा विशेषाधिका समवदतानामपि केपाचि ज्ञागरत्वात् १२ । तेस्य  
पर्याप्ता विशेषाधिका सुप्तानामपि केपाचि त्वयोप्तत्वात्, सुप्तानि पर्याप्ताऽपर्याप्ता अपि ज्ञवन्ति जागरास्तु पर्याप्ता एवेति नियम १३ । तेस्यो  
ऽपि पर्याप्तस्य आयु कर्मोऽन्यथा विशेषाधिका अपर्याप्तानामप्यायु कर्मोऽन्यथादात् १४ । इदमेवाऽल्पबहुत्व विनयेजनानुग्रहाय स्थापनारा  
शिञ्जि रुपदशये-इह द्वे पक्षी उपयोषावेन न्यस्यते तत्रोपरितन्या पक्षी आयु कमवन्थका अपर्याप्ता सुप्ता समवदता सातवेदका इन्द्रियोपयु  
क्ता अनाकारोपयुक्ता क्रमेण स्याप्यत तस्या अथस्तन्या पक्षी तयोमेव पदानामथस्तात् यथासस्यय मायुरयन्थका पर्याप्ता जागरा असमवदता अ  
सातवेदका नोइन्द्रियोपयुक्ता साकारोपयुक्ता स्थापनाचेय माद्यमिति तत्परिमाण स्याप्यते तत शोपपदानि किल जघन्येन सस्ये  
यगुणानीति द्विगुणो द्विगुणाक स्तेषु स्याप्यते तद्यथा-ह्रीं सत्वार अष्टौ पोरुका द्वात्रिंशत् चतुर्षष्टि सर्वोऽपि जीवराशि रनन्तानन्तस्वरूपो ऽप्य  
ऽसत्कल्पनया पटपञ्चाशदधिकशतद्वयपरिमाण परिकल्प्यते ततो ऽस्मा द्राशोरायुर्बन्धकादिगता सङ्गा शोधयित्वा यत् शोप मऽऽतिष्ठति तदायुर

असरेज्ज० अहोलीए अणतगुणाइ तिरियलीए सखिज्जगुणाइ दिसाणुवाएण सस्योवाइ द्वाइ अहेदि  
साए उहदिसाए अणतगुणाइ उत्तरपुरिच्छिमेण दाहिणपच्चिच्छिमेण दोवि तुलाइ असखेज्जगुणाइ दाहिण

णा ॥ अहोलीयातिरियलीए विसेमाहिद्या २ उट्टलीण अमखिज्जगणाइ अहान्ताए अणतगुणाइ तिरियली० सखिज्जगणा २ । चेवायो सवथोडा द्रव्यधर्मो  
भित्ताकायादिबिणे लोके फरस्वाकै धर्मोस्तिकायपदगल महस्काध समदुधातलौबने पणिल तीनलोक फरसे तेहद्वयपाडाकै अनतालीबने पुटगलने द्रव्यैक  
री लोवद्रव्यने फरसेकरोने अनतगुणा एवै तेहथो जइलीकातयकलोके प्रगुत ख० पप्रतरबने फरसे बेअनतगुणा हुवै । तेहथो अंधोलीकतिरियकलोके वि

पर्याप्तं उपपातेषु च मारणान्तिकसमूहानेन समवहताना सदा लभ्यमानत्वात्, तेन्य सातावेदका. सहेयगुणा आयुर्व्यकापयोस्तत्सुप्रैद्यपि सा तवेदकाना लभ्यमानत्वात्, तेन्य इन्द्रियोपयुक्ता सहेयगुणा असावेदकानामपि इन्द्रियोपयोगस्य लभ्यमानत्वात्, तेन्यो उनाकारोपयोगोपयुक्ता इन्द्रियोपयोगेषु नो इन्द्रियोपयोगेषु वा उनाकारोपयोगस्य लभ्यमानत्वात्, तेन्य. साकारोपयुक्ता इन्द्रियोपयोगेषु नो इन्द्रियोपयोगेषु साकारोपयोगकालस्य बहुत्वात् तेन्यो नो इन्द्रियोपयुक्ता विशेषाधिका नो इन्द्रियोपयुक्ताना मपि तत्र प्रदेपात्, साकारानाका रोपयुक्तानामपि तत्र प्रदेपात्, अत्र विनयजनानुग्रहार्थं उमद्भावस्यापनया निदेशनं मुच्यते-इह सामान्यतः किल साकारोपयुक्ता दिनवत्यधिकं ज्ञात १६२ तैच कित द्विधा इन्द्रियसाकारोपयुक्ता नो इन्द्रियमाकारोपयुक्ता तत्रै न्द्रियसाकारोपयुक्ता किलाऽतीवस्तीका इति विशतितरख्या कल्प्यन्ते, तेषु द्विसप्तत्युत्तरं ज्ञात १७२ । नो इन्द्रियसाकारोपयुक्ता नो इन्द्रियोपयुक्ता नो इन्द्रियोपयुक्ता द्विपञ्चाशत्कल्पा स्तत सामान्यतः साकारोपयुक्ते

मेण अमखंजगुणा पञ्चच्छिमेण विमसाहिया उत्तरेण विमसाहिया खेत्ताणवाएणं सख्योवाइ दवाइ तंलुक्ते उहलोयतिरियलोए अणतगुणाइ अहोलीयतिरियलोए विमसाहियाइ उहलोए

ए अधोलोकं समधिक ७ सातराज काइक विमेषाधिक इवै इगानकूणे विद्युत्प्रभमात्माननव कूट तेहथो उपरिसनपद्मन । दाहिणपञ्चत्यमेणय दौवितुत्ता असाखिजगुणा दाहिणपुरत्यमेण उत्तरपञ्चत्यमेणयटावितुत्ता विमसाहिया परच्छिमेण असाखिजगुणा पञ्चच्छिमेण विमसाहिया दाहिणेण विमसाहिया उत्तरेण विमसाहिया । दक्षिण पायमे वंसरिपाणे असाख्यातगुणे अधिकाइ तेहथो दक्षिणपूर्व उत्तरपश्चिमे प्रत्येके २ विमेषाधिक स्वस्थान के परस्परैसरिया इहा सौमनसगधमाटमनानव कूट तिहा मूल्यापटुगलभूत उपजताइ तेहथो पूर्व असाख्यातगुणा चेतना असख्यातपणा माटे तेहथो पायमे विमेषाधिक अधोलोकागामने मरुभावे वणा पटुगलना यानकके दक्षिणे विमेषाधिक भवननेसखनेभावे पटुगलविमेषाधिक उत्तरपटुगल विमेषाधिक मानसरोवरके तैमाटे कछो पटुगलना असाखिजगुणा इह दखाइ तिलोके उहलोयतिरियलोए अणतगु

गोपाधिकत्वात् । तत्र पुद्गला विशेषाधिका स्तोत्र्य उत्तरपूर्वस्या दक्षिणपश्चिमायाच प्रत्येकमऽसहस्रेण गुणा स्वस्थानेन परस्पर तुल्या सत स्ते द्वे अ  
पि दिक्षौ रुचकाद्विनिगतं मुक्तावलिसंस्थिते तिर्यग्लोकात्ममूढलोकात् पर्यवसिते तेन क्षेत्रस्या ऽसहस्रेण गुणत्वा तत्र पुद्गला असहस्रेय  
गुणाः क्षेत्रतु स्वस्थाने सममिति पुद्गला अपि स्वस्थाने तुल्या स्तोत्र्योऽपि दक्षिणपूर्वस्या मुत्तरपश्चिमायाच प्रत्येक विशेषाधिका स्वस्थानेन परस्पर

पुरच्छिमेण उत्तरपश्चिमेणय दोत्रि तुल्लाह् विसेसाहियाह् पुरच्छिमेण अस्खेज्जगुणाह् पञ्चच्छिमेण वि  
सेसाहियाह् दाहिणेण विसेसाहियाह् उत्तरेण विसेसाहियाह् । एएसिण जते ! परमाणुयोगलाण सखेज्जप

गोपादिक निगारेक ७ राज अधिकाभाषी तेहथी ऊर्ध्वलोके असख्यातगुणा माटे अधोलोके अनतगुणा अधोलोकाग्रामे क्षेत्रभावद्रव्य  
काशना अनतापर्याय माटे तिर्यक्कुलोके कालसङ्गविशेषाधिक असख्यातगुणा इवै । दिसाणुवाएण सख्योवा इद्व्याह् अहोदिसाह् वहुदुदिसाह् अ  
नतगुणाह् उत्तरपश्चिमेण दाहिणपश्चिमेण दोवितल्लाह् असखिल्लगुणाह् । दिवेदिग्ग आयो सामान्यपणै द्रव्यनौ अल्पबहुत्वकहेहै—दिग्गिने अन  
मारे संबोद्धाद्रव्य अधोदिग्ग पाकलौपरे वयाणवो तेहथो ऊर्ध्वदिग्ग अनतगुणा किम इहा ऊर्ध्वलोके मरुनो पाचसोजन स्फाटिकमयकाह् तिहा चट्टा  
दित्य प्रभावेकरी ऊर्ध्वदिसे अनतगुणाहै तेहथो इगानकूणै तथा नैऋतिकूणै ण वदिग्ग सरीपाहै क्षेत्रयो असख्यातगुणा माटे । दाहिणपुरच्छिमेण सत्त  
रपश्चिमेणय दोवितल्लाह् विसेसाहियाह् । असख्यातगुणा अग्निनकूणै वायवकूणै वसरिपाहै अनेविशेषाधिकहै विद्यत्प्रभमानसवत कूटायोधूमकाता  
दि उत्तपट्टात्त घणा उपजेहै तेमाटे विशेषाधिकहै । पुरच्छिमेण असखिल्लगुणाह् पञ्चच्छिमेण विसेसाहियाह् दाहिणेण विसेसाहियाह् उत्तरेण वि० ।  
तेहथी पूर्वनोदिग्गिद्रव्य असख्यातगुणा क्षेत्रअसख्यातगुणा माटे तेहथी पश्चिमे विशेषाधिक अधोलोकाग्रामादि सुखीभावघणा पुद्गलद्रव्य रहित तेहथी  
पश्चिमे विशेषाधिक घणै सखुनेभावै । तेहथी उत्तरदिग्ग विशेषाधिक मानसरोजरने विपै लोवद्रव्यनौ तेजस्सामंण पुद्गलस्कधनीय द्रव्यघणाहै तेमाटे  
विशेषाधिक कहिये । एसिण भते परमाणुपुगलाण सखिल्लपएसियाण असखिल्लपएसियाण अणतपएसियाण खुधाण दब्धयाए पएसडयाए दब्धप

वन्धकादीना परिमाणे स्यापयितव्यं तद्यथा-आयुर्वन्धकादिपदे द्वे शते पञ्चपञ्चाशदधिके शेषेषु यथोक्तक्रमे द्वे शते चतु पञ्चाशदधिके द्वे शते द्वि  
पञ्चाशदधिके द्वे शते अष्टचत्वारिंशदधिके द्वे शते चत्वारिंशदधिके द्वे शते चतुर्विंशत्यधिके द्विनवत्यधिके शतम्, एवं च सति उपरितनपक्षिगताभ्याना  
कारोपयुक्तपयन्तानि पदानि सङ्ख्येयगुणानि द्विगुणद्विगुणाऽधिकत्वात्, तत पर साकारोपयुक्तपदमऽपि सख्येयगुणं त्रिगुणत्वात्, शेषाणि तु नो  
इन्द्रियोपयुक्तादीनि प्रतिलोमं विशेषाधिकानि द्विगुणत्वस्यापि क्वचिदज्ञात्वात् । तदेव गतं यद्वारं मिदानी पुद्गलद्वारमाह ॥ सत्ताणुवाएण सव्व  
त्थोवा पोगलातेल्लोके इत्यादि ॥ इदमल्पबहुत्व पुद्गलानां द्रव्याण्यत्व मङ्गीकृत्य व्याख्येयं तथा सम्प्रदायात् तत्र ज्ञेयानुपातेन ज्ञेयानुसारेण चिन्त्य  
माना पुद्गला खल्लोके त्रैलोक्यसर्पाशनं सर्वस्तोका सर्वस्तोकानि त्रैलोक्यव्यापीनीति पुद्गलद्रव्याणीति ज्ञाव, यस्मा न्महास्कन्धायैव त्रैलोक्य  
व्यापिन स्तेचाल्या इति तेभ्य ऊर्ध्वलोकतियंल्लोके अनन्तगुणा यतस्तियल्लोकस्य यत्सर्वोपरितनमेकप्रादेशिकं प्रतर यच्चोर्ध्वलोकस्य सर्वोप्यस्तनमेक

प्रादेशिकं प्रतर मेते द्वे अपि प्रतरे ऊर्ध्वलोकतियंल्लोकं लघ्यते-तेचाऽनन्ता सङ्ख्येयप्रादेशिका अनन्ता असङ्ख्यप्रादेशिका अनन्ता अनन्तप्रदेशिका स्क  
न्या स्पृशन्तीति द्रव्यायतया अनन्तगुणा स्तेभ्यो ऽधोलोकातियंल्लोकप्रागुक्तप्रकारेण प्रतरद्वयरूपे विशेषाधिका क्वत्रस्य आयासविकल्पाभ्या मना  
क्विशेषाधिकत्वात्, तेभ्य स्तियंल्लोके असङ्ख्यगुणा ज्ञेयस्याऽसङ्ख्यगुणत्वात्, तेभ्य ऊर्ध्वलोकं असङ्ख्यगुणा यत स्तियंल्लोकक्षेत्रा दूर्ध्वलोकक्षेत्रे म  
सङ्ख्येयगुणमिति तेभ्यो ऽधोलोके विशेषाधिका ऊर्ध्वलोकादऽधोलोकस्य विशेषाधिकत्वात्, देशोनसप्तस्रज्जुप्रमाणो स्र्ध्वलोक समधिकसप्तस्रज्जुप्रमा  
ण स्त्वऽधोलोक, सम्प्रति दिगन्तपातेना ऽल्पबहुत्वमाह-दिस्साणुवाएण सव्वत्थोवा पोगला उल्लादिसाए इत्यादि ॥ दिगन्तपातेन दिगन्तसारण  
चिन्त्यमाना पुद्गला सबस्तोका ऊर्ध्वदिशि इह रत्नप्रज्ञासमन्तूमितलमेरुमध्ये अष्टप्रादेशिको रुचक मत्स्माद्विनिर्गता यत्तु प्रदेशा ऊर्ध्वदिक्काव ह्यो  
कान्त स्तत स्तत्र सर्वस्तोकाः पुद्गला स्तेभ्यो ऽधोदिशि विशेषाधिका अधोदिगपि रुचकादेव प्रजयति चतु प्रदेशा याव ह्योकात् स्तत स्तस्याधि

यसम्बन्धघटा रमतिपरमाण्वादिद्रव्यऽनन्तता ततो जघन्यऽधोलोके उत्तमगुणानि तेभ्य स्त्रियैर्लोकैः सङ्ख्येयैर्गुणानि अधोलौकिकग्रामप्रमाणानां स्य  
 गताना मनुष्यलोकं कालद्रव्याधारभूते सङ्ख्येयाना मवाप्यमानत्वात्, साम्प्रतिदिगनुपातेन सामान्यतो द्रव्याणा मल्पबहुत्वमाह-दिसाण्णवामण स्रव  
 त्योवाइ दद्वाइ अहे दिसाण इत्यादि ॥ दिगनुपातन दिगनुसारण चिन्त्यमानानि सामान्यतो द्रव्याणि स्वस्तोकाणि अधोदिशि प्राग्व्यावर्णित  
 म्वरूपाया तेभ्य ऊहृदिद्वयऽनन्तगुणानि किंकारणमिति चेत्, अन्त्ये-इह ऊर्ध्वलोकै मेरो पञ्चयोजनशतक स्फटिकमर्थ काष्ठ तत्र चन्द्रादित्यप्रज्ञानु  
 प्रवशात् द्रव्याणा चणादिकालप्रतिज्ञागोस्ति कालस्यच प्रागुक्तनीत्या प्रतिपरमाण्वादिद्रव्यमानस्य सन्त्यो उत्तमगुणानि तभ्य उत्तरपूर्वस्थांमौशान्या  
 दक्षिणपश्चिमाया नैर्त्रांतकोणे इत्यर्थः असङ्ख्येयानि क्षेत्रस्यासंख्येयगुणत्वात्, स्वस्थाने तु दधान्यपि परस्पर तुल्यानि समानक्षेत्रत्वात्, तेभ्य दक्षि  
 णपूर्वस्यामान्येभ्यामुत्तरपश्चिमाया सायव्यकाणे इति ज्ञाव, विशेषाधिकानि विद्युत्प्रज्ञमाल्यवत्तद्व्यापितानां धूमिकावद्व्यायादिश्वदणपुद्गलद्रव्याणा  
 यद्गूना समवा सन्त्य पूर्वस्या दिशि असंख्येयगुणानि क्षेत्रस्या संख्येयगुणत्वात्, तेभ्य पश्चिमाया विशेषाधिकानि अधोलौकिकग्रामेषु शुपिरज्ञा  
 यतो यद्गूना पुद्गलद्रव्याणामवस्थानात्, ततो दक्षिणस्यां दिशि विशेषाधिकानि बहुनवनशुपिरज्ञावात्, तत उत्तरस्यां विशेषाधिकानि तत्र मा  
 नससरसि जीवद्रव्याणा तदाश्रिताना तैजसमानणपुद्गलस्कन्धद्रव्याणा च भूयसा ज्ञावात्, साम्प्रति परमाणुपुद्गलाना सरययमदज्ञाना असंख्येयप्रदे  
 शानामनन्तप्रज्ञाना परस्परमल्पबहुत्वमाह-एणसिण जने । परमाणुपुग्गलाण सरैज्जपणंसियाण मित्यादि ॥ पाठसिद्ध ॥ नवर मन्नात्पयधुत्त  
 तयनाया सर्वत्र तथा स्वाप्ताव्य कारण वाच्य साम्प्रत्यतेपामेव क्वत्रप्राधास्येमाल्पबहुत्वमाह-एणसिण जते । एगएणसोगाढाणमित्यादि ॥ इह क्षत्रा

कअरेर हितो व्युप्यावा? गो० । सवृत्यावा अणतपटंसिया खथा दव्वठयाए परमाणुपोगला दव्वठयाए व्यु

परमाणु पुद्गलअनन्तगुणके । सखिज्जपणंसिया खमादव्वहुयाए सखिज्जगुणा असाखिज्जपणंसिया खवा दव्वठयाए अस० पणसठ्ठयाण सवृत्यावा अणत  
 पणसवाखवा । सवृत्यातप्रदग्गखव द्रव्ययो सवृत्यातगुणके स्वभावै असवृत्यातप्रदग्गो खव द्रव्ययो असवृत्यातगुणके सर्वयोडा अनन्तप्रदेशाखध । परमाणुप

र तुल्याः कथं विशेषाधिका इति चेत् उच्यते-इष्ट सीमनसगन्धमादनेषु सप्त २ फूटानि विद्युत्प्रज्जमाल्यवती नव २ तेषु च कूटेषु धूमिका अवश्या  
यादिमून्मपुद्गला प्रज्ञता सम्भवन्ति ततो विशेषाधिका स्वस्थानेतु क्षेत्रस्य पर्वतादेश समानत्वा तुल्या स्तेन्य पूवस्मा दिशि असस्येयगुणा ज्ञे  
त्रस्याऽसस्येयगुणत्वात्, तेन्य पश्चिमाया विशेषाधिका अधोलोकीकग्राभेषु शुषिर्ज्ञावती बहूना पुद्गलानामऽवस्थानज्ञावात्, तेन्यो दक्षिणस्या  
विशेषाधिका बहुत्रवनशुषिर्ज्ञावात्, तेन्य उत्तरस्या विशेषाधिका यत् उत्तरस्यामाऽयामविक्रान्त्या सस्येययोजनकोटीकोटीप्रमाणं मानस  
सर स्तत्र ये जलचरा पनकसेवालादयश्च सत्वा स्ते अतिवहव इति तेषा ये तैजसकर्मणपुद्गला स्ते अधिका प्राप्यते इति पूर्वोक्तेभ्यो विशेषाधि  
का तदेव पुद्गलविषयमल्पबहुत्वमुक्त मिदानी सामान्यतो द्रव्यविषय क्षेत्रानुपातेन आह-येत्ताणुवाएण सव्वयोवाड दवाइ तेलोके इत्यादि ॥ हे  
त्रानुपातेन चिन्त्यमानानि द्रव्याणि सर्वस्वोक्तानि त्रैलोक्यसंस्पर्शानि यतो घर्मास्ति कायाऽधर्मास्ति कायाकाशास्ति कायद्रव्याणि पुद्गलास्ति कायस्य  
महास्कन्धाजीवास्ति कायस्य मारणान्तिकसमुद्घातेना तीव्रमयहता जीवा त्रैलोक्यव्यापिन स्तेचाल्पे इति सर्वस्वोक्तानि, तेन्य जडलोकतियंग्लोके  
प्रागुक्तस्वरूपप्रतरद्रव्यात्मके अनन्तगुणानि अनर्त पुद्गलद्रव्यं रनर्त जीवद्रव्यं स्वस्य सस्पञ्जनात्, तेभ्यो ऽधोलोकीकतियंग्लोके विशेषाधिकानि जड  
लोकीकतियंग्लोकादधोलोकीकतियंग्लोकस्य मनाग् विशेषाधिकत्वात्, तेन्य जडलोकके असंख्यगुणानि क्षेत्रस्याऽसस्येयगुणत्वात्, तेभ्यो ऽधोलोके अ  
नन्तगुणानि, कथमिति चेत् उच्यते इहाधोलोकीकग्राभेषु कालोस्ति तस्य च कालस्य तत्त्वस्वरमाणुसस्येयाऽसस्येयाऽनन्तप्रादेशिकद्रव्यक्षेत्रकालज्ञावयवयो

## देसियाणं अस्खिज्जापदेसियाणं अणतपदेसियाणय खंधाणं दव्वठयाए पएसठयाए पएसठयाए पदेसठयाए

एसठयाए । हिंवे परमाणुपुद्गल सख्यातप्रदेश अनन्तप्रदेशात्तो अल्पबहुत्वकक्षेत्रे-हेभगवन् एहनै परमाणुपुद्गलद्रव्यने संख्यातप्रदेशी असस्यातप्रदेशीने  
अनन्तप्रदेशीने खंधने द्रव्यधो प्रदेशीधो द्रव्यने अर्थे प्रदेशेने द्रव्यार्थ प्रदेशायए माहि । कयरे २ द्वितो अण्णावा ४ भोगमा सव्वयावा अणतपणिसिया खुंधा  
दव्वठयाए परमाणुपुद्गलादव्वठयाए अणतगुणा । केहा २ धो धोडा सथा ४ हेभीतम सर्वधोडा अणतप्रदेशो भित्तो नोपनाखुध तेधोडा सभावैणै द्रव्ययो

यसम्यग्प्रज्ञा तमतिपरमाशङ्कादिद्रव्यऽनन्तता ततो अवगम्यऽधोलोके उत्तमगुणानि तेभ्य स्तियग्लोके सङ्ख्येयगुणानि अधोलोकीकियामप्रमाणानां श्रुताना मनुष्यलोके कालद्रव्याधारभूते सङ्ख्यानाना मवाप्यमानत्वात्, साम्प्रतिदिगनुपातेन सामान्यतो द्रव्याणा मल्पबहुत्वमाह-दिसाणवापण सव त्पोवाह दद्याह अहे दिसाण इत्यादि ॥ दिगनुपातेन दिगनुसारण चिन्त्यमानानि यामान्यतो द्रव्याणि सवस्तोकानि अथोदिशि प्राग्व्यावर्णित स्वरूपाया तेभ्य ऊर्ध्वदिदयऽनन्तगुणानि फिकारणमिति चेत्, उच्यते-इह ऊर्ध्वलोके मेरो पञ्चयोजनशतक स्फटिकमयं काष्ठ तत्र चन्द्रादित्यप्रमानु प्रवशाद् द्रव्याणा लणानादिकालप्रतिज्ञागोस्ति कालस्य च प्रागुक्तनीत्या प्रतिपरमाणवादिद्रव्यमानन्या सन्न्यो अनन्तगुणानि तभ्य उत्तरपूर्वस्वामीशान्या दक्षिणपश्चिमाया तैर्ऋतकोणे इत्यथः' असङ्ख्येयानि क्षेत्रस्यासङ्ख्येयगुणत्वात्, स्वस्थाने तु हयान्यपि परस्पर तुल्येनि समानक्षत्रत्वात्, तेभ्य दक्षि णपूर्वस्यामान्येय्यामुत्तरपश्चिमाया सायव्यकाण इतिज्ञाव, विज्ञापार्थिकानि विद्युत्प्रक्षमाल्यवन्तकटाशितानां धूमिकावश्यायादिश्लक्ष्णपुद्गलद्रव्याणा यदूना समवाय संन्य पूर्वस्या दिशि असङ्ख्येयगुणानि क्षेत्रस्या सङ्ख्येयगुणत्वात्, तेभ्य पश्चिमाया विज्ञापार्थिकानि अधोलोकीकियामेषु शुपिरक्षा यतो यदूना पुद्गलद्रव्याणामवस्थानात्, ततो दक्षिणस्या दिशि विज्ञापार्थिकानि बहुनवनशुपिरक्षावात्, तत उत्तरस्या विज्ञोपाधिकानि तत्र मा नससरश्च जीवद्रव्याणा तदश्रिताना तेजसकामणपुद्गलस्कन्धद्रव्याणा च भूयसा ज्ञावात्, साम्प्रति परमाणुपुद्गलाना सरययप्रदज्ञाना असङ्ख्येयप्रदे ज्ञानामनन्तप्रदज्ञाना परस्परमलपबहुत्वमाह-एगसिण जते । परमाणुपुगलाण सङ्ख्येयसियाण मित्यादि ॥ पाठसिद्ध ॥ नवर मजाल्पयदुत्व त्रवनाया सर्वत्र तथा स्वानाव्य कारण वाच्य साम्प्रत्यतेयमेव क्षत्राधाम्नेमाल्पबहुत्वमाह-एगसिण जते । एगपसोसोगाढाणमित्यादि ॥ इह क्षत्रा

कत्ररेर हितो षुप्यावा? गो० ! सङ्ख्येयोवा षुणंतपटसिया खवा दक्ष्णयाए परमाणुपोगला दक्ष्णयाए षु

परमाणु पुद्गलचनतगुणाहे । सखिलपणसिया खवा दक्ष्णयाए सखिल्लगुणा असखिल्लपणसिया खवा दक्ष्णयाए अस० पणसङ्गाए सङ्ख्येयोवा अणत पणसियाखवा । सल्यातप्रदमखव द्रव्ययो सल्यातगुणाहे स्वभावै त्रसल्यातप्रदयो खव द्रव्ययो असल्यातगुणाहे सर्वयोडा अततप्रदेगोखव । परमाणप



नियमारतः। जेऽस्य प्राधाराया त्वरमाणकाद्यनन्ताणुका रदन्था अपि विवक्षितेकप्रदेशावगाढा आधाराधेयोरनेदोपचारा देकद्वयत्वेन व्यवह्रियते ते इदम्यच्चता एकप्रदेशावगाढा पुद्गला पुद्गलद्वयाणि सर्वस्तीकानि रीकाकाशप्रदेशप्रमाणाधीत्यय । नहि स कश्चिद्वयभूत आकाशप्रदेशोऽस्ति य

णतगुणा सखेज्जपदेसिया खधा दव्वठयाए सखेज्जगुणा असखेज्जपदेसिया खधा दव्वठयाए असखेज्जगुणा  
 पदेसठयाए सव्वत्योवा अणंतपदेसिया खधा पदेसठयाए परमाणुपोगला अणतगुणा सखेज्जपदेसिया  
 खधा पदेसठयाए सखेज्जगुणा असखेज्जपदेसिया खधा पदेसठयाए असखेज्जगुणा दव्वठपदेसठयाए सव्व  
 त्योवा अणतपदेसिया खधा दव्वठयाए तेचेव पदेसठयाए अणतगुणा परमाणुपोगला दव्वठपदेसठयाए  
 अणतगुणा सखेज्जपदेसिया खधा दव्वठयाए सखेज्जगुणा तेचेव पदेसठयाए सखेज्जगुणा असखेज्ज  
 पदेसिया खधा दव्वठयाए असखेज्जगुणा तेचेव पदेसठयाए असखेज्जगुणा । एएसिणं चते ! एगपदेसो

गलापणसुधाए अणतगणा साखिल्लपणसिवाखुधा पणसहुयाण सखिल्लगणा । परमाणपुटुगल अपदेगार्थगौ अनतगणाकै सरयातप्रदेगौसुध प्रदेगार्थकरी  
सद्यातगणा । असखिल्लपणसियाखुधा पणसहुयाण असखिल्लगणा दव्वहुपणसहुयाण । असद्यातप्रदेगौ खुधप्रदेगार्थे यसद्यातगणा द्रव्याध्रप्रदेगार्थेकरी  
सव्वत्थीवा अणतपणसियाखुधा दव्वहुयाण तचेवपणसहुयाण अणतगणा । सर्वथाडा अनतप्रदेगौसुध द्रव्यथौ तिम सर्वप्रदग अनतगणाकै । परमाणपणगला  
दव्वहुयाण पणसहुयाण अणतगणा । परमाणपुटुगलद्रव्यार्थ प्रदेगार्थकरी अनतगणाकै । सखिल्लपणसियाखुधा दव्वहुयाण सखिल्लगणा तचेव पणसहुयाण  
सखिल्लगणा । सद्यातप्रदेगौसुधा द्रव्ये सद्यातगणा ते सर्वप्रदेगसद्यातगणा । असखिल्लपणसियाखुधा दव्वहुयाण असखिल्लगणा तचेव पणसहुयाण  
पस० । असद्यातप्रदेगौसुधा द्रव्यार्थ असद्या० तिमहौलप्रदेगार्थे असद्या० । पणसिण भते पणपणसोगाढ सखिल्लपणसोगाढ अमखि० सोगाढापण  
पणालाण । विमगवन् एकप्रदेगावगाठेन सद्यातप्रदेगावगाढ पुत्तुगसे असद्याप्रदेगावगाढपुत्तुने । दव्वहुयाणपणसहुयाण कवरेर हित्तो अण्णावा४ गो०

गकप्रदेशाजगालपरिणामपरिणताना परमागदीना मवकाशप्रदानपरिणामेन परिणतो नवसंते इति तेन्य' सख्येपप्रदेशावगाढा पुद्गला द्रव्या यतया सख्येपगुणा, कथमिति चेत् ? उच्यते-इहापि क्षेत्रस्याप्राधान्यात् क्षणिकाद्यनन्ताणुरकस्या द्विप्रदेशावगाढा सकद्रव्यत्वेन विप्रसृजन्ते तानि

गाढाण सखेज्जपदेसोगाढाण असखिज्जपदेसोगाढाणय पोगगलाण दव्वठयाए पदेसठयाए दव्वठपदेसठयाए कयरे २ हितो अप्पमावा १ गोयमा ! सव्वत्थोवा एगपदेसोवगाढा पुगगला दव्वठयाए सखेज्जपएसोवगाढा पुगगला दव्वठयाए असखिज्जपदेसोगाढा पोगगला दव्वठयाए असखिज्जगुणा पदेसठयाए सव्वत्थोवा एगपदेसोगाढा पोगगला पदेसठयाए सखिज्जपदेसोगाढा पोगगला दव्वठयाए असखेज्जगुणा सखेज्जपदेसोगाढा पोगगला पदेसठयाए असखेज्जगुणा दव्वठपदेसठयाए सव्वत्थोवा एगपदेसोगाढा पोगगला दव्वठपदेसठयाए सखेज्जपदेसोगाढा पोगगला दव्वठयाए सखेज्जगुणा तेचेव पएसठयाए सखेज्जगुणा

द्रव्ययो प्रदग्यो द्रव्याय प्रदेग्यार्थं किं नर यो थाहा यथा इत्यादि हेतौ तम । सव्वत्थोवा पुगगला एगपएसोगाढा दव्वठयाए सखिज्जपएसोगाढा पुगगला एगपएसोगाढा दव्वठयाए सखिज्जगुणा । सव्वत्थोवा पुद्गलप्रदेग्यावगाढा द्रव्याय सख्यातप्रदेग्यावगाढा पट्गलप्रदग्यो सख्यातगुणा । असखिज्जपएसोगाढा पुगगला दव्वठयाए असखिज्जगुणा । असख्यातप्रदेग्यावगाढा पुद्गल द्रव्याय असख्यातगुणा । पएसठयाए सव्वत्थोवा एगपएसोगाढा पुगगला पएसठयाए प्रदेग्यावगाढा पट्गलप्रदेग्यो । सखिज्जपएसोगाढा पुगगला पएसठयाए सखिज्जगुणा । सख्यातप्रदेग्यावगाढा पुद्गलप्रदेग्यो सख्यातगुणा । असखिज्जपएसोगाढा पुगगला पएसठयाए असखिज्जगुणा । असख्यातप्रदेग्यावगाढा पट्गलप्रदेग्यो असख्यातगुणा । दव्वठपएसठयाए सव्वत्थोवा एगपएसोगाढा पुगगला दव्वठपएसठयाए । द्रव्यायप्रदेग्यार्थो सव्वत्थोवा एकप्रदेग्यावगाढा पट्गलद्रव्याय चप्रदग्याय । सखिज्जपएसोगाढा पुगगला दव्वठयाए सखिज्जगुणा । सख्यातप्रदेग्यावगाढा पुद्गल द्रव्याय सख्यातगुणा । तत्रैव पएसठयाए स० । तिमहाज प्रदेग्यार्थं सख्यातगुणा । असखिज्जपएसोगाढा पुगगला दव्वठयाए ।

च तथाप्राप्तानि पुद्गलद्रव्याणि पूर्वोक्तस्य सस्येयगुणानि तथाहि-सर्वलोकप्रदेशा स्वत्वतो उच्यन्ते अपि असत्कल्पनया दश परिकल्प्यन्ते ते च प्रत्येकचित्ताया दशैवेति दश एकप्रदेशावगाढानि पुद्गलद्रव्याणि लब्धानि तेष्वेव दशसु प्रदेशेष्वन्यग्रहान्यसोल्लङ्घ्येण बहवो द्विकसयोगा लभ्यन्ते इति ज्ञवन्त्येकप्रदेशावगाढस्यो द्विप्रदेशावगाढानि पुद्गलद्रव्याणि सस्येयगुणानि एव तेभ्योपि त्रिप्रदेशावगाढानि स्वमुत्तरोत्तर याव दुरुह्य सस्येयप्रदेशावगाढानि, तत स्थितमेतत् एकप्रदेशावगाढस्य सस्येयप्रदेशावगाढपुद्गला द्रव्यार्थतया सस्येयगुणा इति, एव तेभ्यो उच्येयप्रदेशावगाढा पुद्गला द्रव्यायतया सस्येयगुणा असङ्गातस्य असङ्गातभेदविनश्वत्वात्, प्रदेशायतासूत्र द्रव्यार्थपर्यायायतासूत्रस्य सुगमत्वात् स्वय प्राव

असखिज्जपसोगाढा पोगला दव्वठयाए अस्सखेज्जगुणा तेचेव पएसठयाए अस्सखिज्जगुणा । एएसिण जत्ते ! एगसमयठितीयाणं सखिज्जसमयठितीयाण अस्सखिज्जसमयठितीयाणय पोगलाण दव्वठयाए पदे सठयाए दव्वठपदेसठयाए कयरे २ हितो अप्पावा ४ ? गायमा ! सव्वत्थोवा एगसमयठिइया पोगला दव्वठयाए सखेज्जसमयठितीया पोगला दव्वठयाए सखेज्जगुणा अस्सखिज्जसमयठिइया पोगला दव्वठयाए सखेज्जसमयठिइया पोगला पदेसठयाए सव्वत्थोवा एगसमयठिइया पोगला पदेसठयाए सखेज्जसमयठिइया पोगला

असङ्गातप्रदेशावगाढ पुद्गला द्रव्यार्थे । असखिज्जगुणा तेष्व पएसठयाण अस० । असङ्गातगुणा तिमहीजपदेशार्थे असङ्गातगुणा णत्तिण भते एगसमयठिइयाण सखिज्जसमयठिइयाण । हेमगवेन् एह एकसमयनो प्रतिमानो सस्यातसमयनो प्रतिमानो । असखिज्जसमयठिइयाणय पोगलाण दव्वठयाण असखिज्जसमयनो प्रतिमापुद्गला द्रव्यतो । पएसठयाण पदद्वयसठयाण । प्रदेशो ज्ञयार्थप्रदेशार्थे । कयरे २ हितो अप्पावा ४ गो० । किंवा २ यो यत्तवणा इत्यादि हेतौतम । सव्वत्थोवा एगसमयठिइया पोगला दव्वठयाण । सर्वयोहा एकसमयनो प्रतिमापदद्वयं तेहयो । सखिज्जसमयठिइयोवा पोगला दव्वठयाए सखि० । सस्यातसमयनो प्रतिमापुद्गलं तेहयो सस्यातगुणा । असखिज्जसमयठिइयोवा पोगला दव्वठयाए अस० । असस्यातसमयनो प्र

पपसठयाए संखिजगुणां अस्खिजसमयठिईया पोगला पदेसठयाए अस्खिजगुणा दवठयपदेसठयाए सवत्थोवा एगसमयठिईया पुगला दवठपपसठयाए सखेजसमयठिईया पोगला दवठयाए सखेजगुणा तेचेव पदेसठयाए सखेजगुणा अस्खिजसमयठिईया पोगला दवठयाए अस्खिजगुणा तेचेव पदेसठयाए अस्खिजगुणा । एएसिण जते । एगगुणकालगण सखिजगुणकालगणं अस्खेजगुणकालगण अणतगुणकालगणय पोगलाण दवठयाए पदेसठयाए दवठपदेसठयाए कयरं कयरं हितो अण्पावा ४ ? गोयमा ! जहा परमाणुपोगला तहा ज्ञाणियव्हा, एव सखेजगुणकालयाणवि, एव सेसाणवि वसरस

तिमापुहलछे तेइथी द्रव्य असस्यातगुणा । पपसठयाए सवत्थोवा एगसमयठिईया । प्रदेगाथे सवत्थोवा एकसमयस्थितानि । पुगला पपसठयाए सखिजसमयठिईया । पुहलप्रदेगाथे सद्यातसमयस्थिताना । पगला पपसठयाए सखि० । पहलप्रदेगाथे सद्यातगुणा । असखिजसमयठिईया पुगला पपसठयाए अस० दवठपपसठयाए । असस्यातसमयनो स्थितिपुहलप्रदेगाथे सद्यातगुणा द्रव्यप्रदेगाथे । सवत्थोवा एगसमयठिईया पुगला दवठपपसठयाए सवत्थोवा एकसमयनो स्थितिमान पहलद्रव्यप्रदेगने । सखिजसमयठिईया पुगला दवठयाए सखि० । सद्यातसमयनो प्रतिमा पुहलद्रव्याथे सद्यातगुणा । तेचेव पपसठयाए सखि० । तिमहोलप्रदेगाथे सद्यातगुणा । असखिजसमयठिईया पुगला दवठयाए अस० । असस्यातसमयस्थिताना पहलद्रव्यो असस्यातगुणा । तेचेव पपसठयाए अस० एसिण भते । तिमहोलप्रदेगे असस्यातगुणा हेभगवन् । एगगुणकालगण सखिजगुणकालगण एइएकगुणकालादिकालने सस्यातगुणाकोले । असखिजगुणकालगण । असस्यातगुणा कालने । अणतगुणकालगणय पगलाण दवठयाए पपसठयाए । अनतगुणाकालने पहलने द्रव्यो प्रदेगथी । दवठपपसठयाए कयरं हितो अण्पावा ४ गो० । द्रव्यो प्रदेगाथे किडार अन्य घणा इत्यादि हेगो० । सवत्थोवा जहा परमाणुपगला तहा भा० । सवत्थोवा तिम सर्वकद्विवा एवं सखिजगुणकालयाणवि एव सेसाणवि वण, गधरसा भाण

नीयम्, कातज्रावसूत्रायपि सुगमत्वा तस्यैवावयितव्यानि नवर॥ जहा पोगला तथा ज्ञापियद्वा इति॥ यथा प्राक् सामान्यत पुद्गला उक्तास्तथा  
एकगुणकालकादयोपि वक्तव्याः, तैवेव-सर्वतोवा अणतपर्यसिया सथा एगगुणकालगा परमाणुपोगला दद्वठयाए एगगुणकालगा अणतगुणा  
सरेज्जपएसिया सथा एगगुणकालगा सखेज्जगुणा असरेज्जपएसिया सथा एगगुणकालगा अणतगुणा पयसठयाए सव्वतोवा अणतपर्यसिया  
राथा एगपरमाणुपोगला एगगुणकालगा अणतगुणा इत्यादि॥ एय सख्येयगुणकालकाना मनत्तगुणकालकानामपि वाच्य मेध शोषवर्णेगन्यरसा अपि  
वक्तव्या, ककशसुदुगुरुलघव रपशो यथा एकप्रदेशाद्यवगाढा ज्ञापिता सथा वक्तव्या तैवेव-सर्वतोवा एगपरमाणुपोगला एगगुणकालकासा दद्व  
ठयाए सखेज्जपएसियागाढा एगगुणकालकासा दद्वठयाए सखेज्जगुणा इति, एय सख्येयगुणकालकंशरपशो असख्येयगुणकालकंशरपशो वाच्या, एव  
सुदुगुरुलघव अवजोपा इत्यार शोतादय रपशो यथा घर्णादय उक्ता सथा वक्तव्या स्तत्र पाठोप्युक्तानुसारेण सुगमत्वात् स्वय ज्ञावनीयो, गत  
पुद्गलद्वार ॥ २६ ॥ इदानी महादलक विवशु गुरुमाएच्छति-अहन्नते । त्यादि ॥ यथ प्रदत्त । संवजीवाल्यथदुत्वं संवजीवाल्यबहुत्वथक्तव्यतात्मक

गंधा ज्ञापियद्वा, फासाण कस्सकमउयगरुयलज्जयाण जहा एगपदेसोगाढाणं ज्ञापियद्वां ज्ञत्र  
सेसा फासा जहा वसा ज्ञापिया तथा ज्ञापियद्वा दार २६ । ज्ह नते ! सव्वजीवप्पज्ज महादंठयं वत्तइ  
स्सामि सव्वतोवा गप्पवक्कतियमणुस्सा मणुस्सीच्च सखेज्जगुणात्ता वादरतेउकाइयापज्जत्तया ज्ञसखिज्जगुणा

यग्वा । इम सरया० कालपिण इम बोजा वणं गंधरए संवं कहिवा । फासाण कस्सकमउयगरुयलज्जयाण जहा एगपदेसोगा  
ढाण भणिय तद्वाभा० । एहनै एक्कजिम प्रदेशाविगाद कछो तिमकहिवा । अवसेसा फासा तज्जहा वसा भणिया तद्वा भा० दार। याकता। फरस जिन क  
द्या तिम कहिवा पुद्गलद्वार इति २६ पदे २६ दार समोसं हवे । हिवे महादलककहेके जीवो अण्यथदुत्वं । अह भते सख्जीवपयवहुमहादलया वत्तइस्सामि  
इमगंवं एह संवजीवो अठा भागे । सव्वतोवागधवक्कतियमणुस्सा । सर्वथांदा जीवभजमनुय । मणुस्सीओ सखिज्जगुणाओ व्यापरेतेउकाइयपज्जत्तया

महादण्डक यत्तायिद्यामि रचयिष्यामीति तात्पर्याच्च, अनेन मतं भाषयति-तीर्थकरानुमानाप्रमाणेन यत्र जगज्जान् गणपर मृगपरता प्रतिप्रय  
जते ननुन श्रुताभ्यामसुरस्वरमिति, पट्टनज्जापयति कुजालेपि कमेति विनयेन गुणमतापेक्षा न प्रयत्नित्य किन्तु तदनुशासुरस्वर मन्वया विने  
यत्तायेनात् विनयेत्यस्य लक्षणमिदं-गुरोर्विद्यदितात्मायो गुणनामानुयत्तकं । मुक्त्यर्थपट्टनित्य सविनेय प्रकीर्तित ॥ १ ॥ गुरोरपि य प्रज्वनी

अणुहरोववाडया देवा अस्येज्जगुणा उग्ररिमगेवेज्जगा देवा ससिजगुणा मज्जिमगेवेज्जगा देवा सखेज्ज  
गुणा हेठिमगेवेज्जगा देवा सखेज्जगुणा अज्जुएकप्पे देवा सखेज्जगुणा अरणे कप्पे देवा सरोज्जगुणा पा  
णए कप्पे देवा सखेज्जगुणा अणएकप्पे देवा ससिज्जगुणा अहे सत्तमाए पुढवीए णेरडया अस्येज्जगुणा  
तठीए तमाए पुढवीए नेरडया अस्येज्जगुणा सहस्सारे कप्पे देवा अस्येज्जगुणा महासुक्के कप्पे देवा अज्जरा  
ज्जगुणा पचमाए धूमप्पञ्जाए पुढवीए णेरडया अस्येज्जगुणा लतए कप्पे देवा अस्येज्जगुणा, चउत्थीए पक्क

अस्येज्जगुणा अणुत्तराववाडया नस्येज्जगुणा । तेरुवो मनुज्जगुणा । तेरुवो सज्जगुणा । तेरुवो वादतेरुवाउपयोगा पसत्तातगुणा नसत्तात अन्  
सरोपवातदवता असत्तातगुणा । उग्ररिमयविज्जगादेवा सखिज्जगुणा । तेरुवो उग्ररिनामकेयकदवता सत्तातगुणा । माउकमयविज्जगाटया स  
खिज्जगुणा हिडिमगेविज्जगाटया सखिज्जगुणा । मध्यमगेवेयकदिक्कनादेवता सत्तातगुणा तेरुवो हेठनार्पिकनादेवता सत्तातगुणा । अस्येज्जगुणा  
सखिज्जगुणा । तेरुवो अचुत्तदव सत्तातगुणा । अरणेकप्पेदेवा सखिज्जगुणा पाणएकप्पेदेवा सखिज्जगुणा । याततनादेव सत्तातगुणा । दहेमत्तमा  
पठवीएनेरडया सखिज्जगुणा । तेरुवो पाचि मातनीरकानारको सत्तातगुणा उग्रारकानारको अ  
सत्तातगुणा । सहस्सारेकप्पेदेवा सखिज्जगुणा । तठवी महस्सारेकप्पेदेवा असत्तातगुणा । मज्जिमगेवेज्जगा देवा सखिज्जगुणा । तेरुवो मरुग  
नादय असत्तातगुणा । पचमाए धूमप्पञ्जाए पुढवीएनेरडया असत्तातगुणा । पाचमत्तनारको असत्तातगुणा । माउकपदेवा असत्तातगुणा

नीयम्, कातन्नावसूत्रायपि सुगमत्वा त्वयस्मावपितथ्यानि नवर॥ जहा पीगला तथा ज्ञाणियद्वा इति ॥ यथा प्राक् सामान्यत पुद्गला उक्तास्तथा  
 एगुणकालकादयोपि वक्तव्याः, तैर्चैव-सद्वत्योवा परमाणुपीगला दद्वठयाए एगुणकालगा अणतगुणा  
 सरेज्जपएसिया सथा एगुणकालगा असखेज्जपएसिया खथा एगुणकारगा असरेज्जगुणा पयसठयाए सद्वत्योवा प्रणतपएसिया  
 सथा मगपरमाणुपीगला एगुणकालगा अणतगुणा इत्यादि ॥ एवं सख्येयगुणकालकानामपि वाच्य मेव शेषवर्णेगन्तरसा अपि  
 यक्तव्या, फक्तशसुदुगुरुतपव स्पशो यथा एकमदेशाद्यावगाढा ज्ञाणिता स्तथा वक्तव्या तैर्चैव-सद्वत्योवा एगपएसोगाढा एगुणकत्वकफासा दद्व  
 ठयाए सरेज्जपएसोगाढा एगुणकत्वकफासा दद्वठयाए सरेज्जगुणा इति, एव सख्येयगुणककंशस्पशो असख्येयगुणककंशस्पशो वाच्या, एव  
 गदुगुरुतपव अवजोपा इत्यार शीतादय स्पशो यथा वर्णादय उक्ता स्तथा वक्तव्या स्तत्र पाठोप्युक्तानुसारेण सुगमत्वात् स्वय ज्ञावनीयो, गत  
 पुद्गतद्वार ॥ २६ ॥ इदानी महादक्रक विवशु गुरुमापच्छति-अहभते । त्यादि ॥ अथ प्रदन्त । सर्वजीवाल्यथहुत्वं सर्वजीवाल्यथहुत्वं यत्तयात्मक

गथा ज्ञाणियद्वा, फासाण कखक्रमउयगरुलज्जयाण जहा एगपदेशोगाढाणं ज्ञाणिय तथा ज्ञाणियद्वं ज्ञत्र  
 सेसा फासा जहा वणा ज्ञाणिया तथा ज्ञाणियद्वा दार २६ । इह भते ! सद्वजीवप्यज्ज महादक्रयं वत्सइ  
 रसाभि सद्वत्योवा गप्पवक्कतियमणस्सा मणस्सीनु सखेज्जगुणाउ वादरतेउकाइयापज्जत्तया ज्ञसखिज्जगुणा

यथा । इम सयगा० कालापिण इम बीजा वर्णे गधरस सर्व कहिवो । फासाण कखडमउयगरुलज्जयाण । जहा गगपएसोभा  
 टाणे भणिय तहाभा० । एहने एकजिम प्रदेशावगाढ कळो तिमकहिवो । यवसेसा फासा तज्जहा वणा भणिया तहा भा० दारायाकताप्रस जिम क  
 द्वा तिम कहिवो पुद्गतद्वार इति ३ पटे २६ द्वार समाप्त द्वे । द्वि मेहादुलकहेके जीवो भल्लवहुत् । अह भते सखजीवपवदुमहाउलया वत्सइस्साभि  
 देमगवन् एह सर्वजीवनो अठा भागे । सद्वत्योवागअवकतियमणुष्सा । सर्वयोढा जीवगर्भजमनुथ । मणुष्सोभा सखिज्जगुणाभा व्यायरेतेउकाइयपज्जत्तया

हेतो श्रेयसख्येयप्रागस्या सख्येयगुणत्वात् १४, तेज्यो महाशुक्रं कल्पे देवा असख्येयगुणा विमानवापुल्यात्, तथाहि-पट्सहस्राणि विमानानां सहस्रारकल्पे चत्वारिंशत् सहस्राणि महाशुक्रं अन्यद्वाधांविमानवासितो देवा बहुबहुतरा स्तोकस्तोक्तरा द्योपरितनोपरितनविमानवासिन तत सहस्रारदेवेभ्यो महाशुक्रकल्पे देवा असरयेयगुणा १५। तेज्योपि पञ्चमयूमप्रजाप्रिधाननरकपृथिव्या नैरयिका असख्येयगुणा वृहत्तमश्रेयसख्ययज्ञागवर्त्तिनत्र प्रदेशराशिप्रमाणत्वात् १६। तेज्योपि तान्तके कल्पे देवा असख्येयगुणा अतिपुष्टरश्रेयसख्ययज्ञागवर्त्तिनत्र प्रदेशराशिप्रमा गत्वात् १७। तेज्योपि चतुष्या पङ्कप्रजाया पृथिव्या नैरयिका असरयेयगुणा युक्तिप्रागुक्तैव प्राचनीया १८। तेज्योपि ब्रह्मलोकं कल्पे देवा असख्ये यगुणा युक्तिप्रागुक्तैव १९। तेज्योपि तृतीयस्या वालुकाप्रजाया पृथिव्या नैरयिका सख्येयगुणा २०। तेज्योपि मारेंद्रकल्पे देवा असख्येयगुणा २१। तेज्योपि सनत्कुमारकल्पे देवा असख्येयगुणा युक्तिरसवत्रापि प्रागुक्तैव २२। तेज्यो द्विती यस्या शर्कराप्रजाया पृथिव्या नैरयिका असख्येयगुणा एतेव सप्तमपृथिवीनारकादयो द्वितीयपृथिवीनरकपर्यन्ता प्रत्येक स्वस्थाने चिन्त्यमाना स

त्रापु पुढवीए नेरइया असखेजगुणा वन्नलोए कप्पे देवा असखेजगुणा तच्चाए वालुयप्पन्नाए पुढवीए ने रइया असखेजगुणा माहिदे देवा असखिजगुणा सणकुमारं कप्पे देवा असखेजगुणा दोच्चाए सक्करप्प त्नाए पुढवीए णरइया अस० समुच्चिममणुस्सा असखेज० ईसाणं कप्पे देवा अस० ईसाणं कप्पे देवांनु

चउत्थीए पक्कभाए पुढवीएनेरइया असखिजगुणा। लातकटवत्ता असखगतागुणा तेइयो चायोनारकनानारको असरगातगुणा। व्यभलोएकपिदेवा अस खिजगुणा। व्यभलोएकनादेव असखगतागुणा। तथोए वालुयप्पभाए पुढवीएनेरइया असखिजगुणा। तोजोनरकनारको असखगतागुणा। माहिदेकपि देवा अस० मणकमारं कपपदेवा असखिजगुणा। माहिदेकल्पनादेव असखगतागुणा सनत्कुमारदेव असखगतागुणा। दासाए सक्करप्पभाए पुढवीएनेरइ या अस० समुच्चिममणुस्सा अस०। वीजोनरकनानारको असखगतागुणा। ईसाणं कपपदेवा असखिजगुणा



य स गुरुं रूपो-धर्मज्ञो धर्मकर्ता च सदा धर्मप्रवर्तक ॥ सत्वेभ्यो धर्मज्ञान्मार्गं देशकौगुस्तुच्यते ॥ १ ॥ इति, महादग्नक वक्ष्यिष्यामीत्युक्तं ततः प्र  
तिज्ञातमेव निर्वाहयति-सर्वतो वा गन्धर्वकृतियमगुस्तेत्यादि ॥ सर्वस्वोका गर्जयुक्तान्तिका मनुष्या सस्येयकोटीकोटीप्रमाणत्वात् १, तेभ्यो मानु  
ष्यो मनुजस्त्रिय सहेयगुणा समविज्ञातिगुणत्वात्, उक्तञ्च-सप्तावीसगुणापुण मणुयाणतदहिंयाचेवेति ॥ २ ॥ ताभ्यो वादरतैजस्कापिका पर्याप्ता  
असहेयगुणा कतिपयवर्गन्यूनाधितिकाधनसमयप्रमाणत्वात् ३, तेभ्यो अनुत्तरोपपातिनो देवा असहेयगुणा, क्षेत्रपल्योपमासहेयज्ञागवर्तिनश्च प्रदे  
शरशिप्रमाणत्वात् ४, तेभ्य उपरितनग्रेवैयकत्रिकदेवा सहेयगुणा-वृहत्तरक्षेत्रपल्योपमासहेयज्ञागवर्तिनश्च प्रदेशरशिप्रमाणत्वा देतदपि कथम  
वसेय मितिचे द्रुच्यते-विमानयादुल्यात्, तथाह्यनुत्तरदेवाना पञ्चविमानानि विमानज्ञत तूपरितनग्रेवैयकत्रिकप्रतिविमानवा ऽसहेया देवा यथा  
२ वाधोवर्तीनि विमानानि तथा २ देवा अपि प्राचुर्येण लभ्यन्ते, ततोऽवसीयते अनुत्तरोपपातिदेवेभ्यो वृहत्तरक्षेत्रपल्योपमासहेयज्ञागवर्त्योकाश्च

प्रदेशरशिप्रमाणा उपरितनग्रेवैयकत्रिकदेवा एव सुहृत्त्रापि प्रावना कार्यो यावदानतकल्प ५, तेभ्योपुपरितनग्रेवैयकत्रिकदेवेभ्यो मध्यमग्रेवैयक  
त्रिकदेवा सहेयगुणा ६, तेभ्यो प्यधस्तनग्रेवैयकत्रिकदेवा सस्येयगुणा ७, तेभ्यो प्यच्युतकल्पदेवा सहेयगुणा ८, तेभ्यो प्यारणकल्पदेवा सस्ये  
यगुणा यद्यप्यारणाच्युतकल्पो समश्रेणीको समविमानसस्याकीच तथापि कप्रपाक्षिका स्थास्वाज्ञाव्यात् 'प्राचुर्येण दक्षिणस्या दिशि समुत्पद्यन्ते  
नोत्तरस्या वहवश्च कप्रपाक्षिका स्तोका शुरुपाक्षिकां स्ततो च्युतकल्पदेवापेक्षया आरणकल्पे देवा सस्येयगुणा ९, तेभ्योपि प्राणतकल्पे देवा  
सस्येयगुणा १०, तेभ्योप्यानतकल्पे देवा सस्येयगुणा प्रावना आरणकल्पवत्कल्पे ११, तेभ्यो ऽप्यसप्तमनकपृथिव्या नैरयिका असस्येयगुणा  
श्रेण्यसस्येयज्ञागतेनश्च प्रदेशरशिप्रमाणत्वात् १२, तेभ्य यष्टपृथिव्या नैरयिका असस्येयगुणा गतश्च प्रागेव दिगन्तुपातेन नैरयिकाल्पबहुत्वचि  
त्ताया प्रावित १३, तेभ्योपि सहस्रारकल्पदेवा असस्येयगुणा यष्टपृथिवीनैरयिकपरिमाणहेतुश्रेण्यसस्येयज्ञागापेक्षया सहस्रारकल्पदेवपरिमाण

तत्किंचिद्वदन्नात्रिशतमज्जागकल्पे ईशानदेवा स्तुती देवा समूर्च्छिममनुष्येभ्यो असुरयेयगुणा २४ । तेभ्य ईशानकल्पे देव्यः असुरयेयगुणा द्वात्रिंशदु  
 शतत्, धत्तीसगुणाद्यत्ती सत्त्वयहियाउहोतिदेवीनु इतिवचनात् २६ । ताभ्य सीधयन्त्रे देवा सरययगुणा स्वय विमानयाहुल्यात्, तथाहि-  
 तत्र द्वात्रिंशतशतसहस्राणि विमानाना मष्टाविंशतिशतसहस्राणि इक्षाने कल्पे अपिच दक्षिणादिद्वत्ती सीधर्मकाप दक्षानकाप स्तुतयदिग्वत्ती द  
 क्षिणस्या च दिशि बहव कल्पपाक्षिणा समुत्पद्यन्ते तत इक्षानदेव्यः सीधमदेवा सरयेयगुणा, नन्विष युक्ति मौरिद्रसनरहुमारकल्पयो रप्यु  
 क्ता पर तत्र माहेन्द्रकल्पपापेनया सनरहुमारकल्पदेवा असुरयेयगुणा उक्ता इरतु सीधर्मकल्पे सरयेयगुणा स्तदेव तत्तक्य उच्यते-वचनप्रामाण्यात्

चिदियतिरिस्कजोणिगया पुरिता सखेजगुणा जलयरपचिदियतिरिस्कजोणिगीनु सखिजगुणानु वाणमतरा  
 देवा सखेजगुणा वाणमतरनीनु देवीनु सखेजगुणा जोडसिणीनु देवीनु सखिज  
 गुणानु खहयरपचिदियतिरिस्कजोणिगया नपुसया सखिजगुणा थलयरपचिदियतिरिस्कजोणिगया नपुसया स  
 खेजगुणा जलयरपचिदियतिरिस्कजोणिगया नपुसया सखेजगुणा पडिया पज्जहा

नचरपचेद्वितीयं यानिया सद्यातगुणा । जलयरपचेद्वितीयतिरिस्कजोणीभां स० वाणमतरादेशा सखिजगुणा वाणमतरनीनां देवीभां स० । जलचरनी  
 स्त्री सद्यातगुणा तेहथी वानव्यतरदेव सद्यातगुणा तेहथी वाणव्यतरनीस्त्री सद्यातगुणा । जोरमियादेशा स० जोरमिणीभां देवीभां स० । तेहथी  
 ज्योतिषी सद्यातगुणा ज्योतिषीनीस्त्री सद्यातगुणा । खहयरपचेद्वितीयतिरिस्कजोणीया नपुमगा स० । तेहथी खचरपचेद्वितीयं यानियानपुमक स  
 द्यातगुणा । थलयरपचेद्वितीयतिरिस्कजोणीया नपुमगा स० । तेहथी थलयरपचेद्वितीयं यानियानपुमक सद्यातगुणा । जलयरपचेद्वितीयतिरिस्कजोणि  
 या नपुसया चउरेदियपज्जत्तगा स० पचेदियपज्जत्तगा विसे० वेदियपज्जत्तगा वि० । तेहथी जलचरपचेद्वितीय नपुमक सद्यात  
 गुणा चौरिद्वितीयपयांता सद्यातगुणा पचेद्वितीयपयांता विसेपाधिक तेद्वितीयपयांता विसेपाधिक । पचेदिय अपज्जत्तगा अस० च

वैपि पनीकृतलोकश्रेण्यसख्येयज्ञागवर्तिनश्च प्रदेशराशिप्रमाणा द्रष्टव्या केवल श्रेण्यसख्येयज्ञागोऽसख्येयभेदश्चिन्तय स्तत इत्यनसरयेयुगुतया अल्प बहुत्वमन्निधीयमानं न विरुध्यति २३ । तैस्म्यो द्वितीयतरकपृथिवीनारकेभ्यः समृच्छिममनुष्या असख्येयगुणा स्तोहि अद्भुतमात्रज्ञेयप्रदेशराशौ सख्येय न्थिनि तृतीयवर्गमूलेन गुणिते प्रथमवर्गमूले यावान् प्रदेशराशि स्ताथप्रमाणानि सगुणानि यावन्त्यकस्यामेव प्रादेशिक्याश्रणी जयन्ति तावत्प्रमाणा २४ । तेभ्य ईशाने कल्पे देवा असख्येयगुणा यतोद्भुतमात्रज्ञप्रदेशराशः सख्येयानि द्वितीये वर्गमूले तुनीयेन वर्गमूलन गुणिते यावान् प्रदेशराशि जयति तावत्प्रमाणा स्तु पनीकृतस्य लोकस्यैकप्रादेशिकीपु अणिपु यावन्तो नश्च प्रदेशा स्तावत्प्रमाणा ईशानकल्पगतो देवदेवीसमुदाय स्तद्ग

सखे०, सोहस्मै कल्पेदेवा संखेज० सोहस्मै कल्पे देवीनु सखेजगुणानु स्रवणवासीदेवा अ्सखेजगुणा अ वणवासिणीनु देवीनु सखिजगुणानु । इमीसे रयणप्यन्नाए पृढवीए णंरडया अ्ससिजगुणा सहचरपचि दिवतिरिस्कजोणिया पुरिसा अ्सखेजगुणा खहचरपचिदिवतिरिस्कजोणिणीनु सखिजगुणानु थलयरपचि दिवतिरिस्कजोणिया पुरिसा अ्सखेजगुणा थलयरपचिदिवतिरिस्कजोणिणीनु सखिजगुणानु जलयरप

अण्येकल्पेदेवीशौ सखिजगुणौश । तेहथो दयाननादत्र असख्यातगुणा तेहथो दयाननौदेवी अस्यातगुणौ । ता, सादेवा सखिजगुणा सोहस्येकल्पे देवीया सखिजगुणौश । तेहथो सौधर्मनादेव सख्यातगुणा । तेहथो सौर्गदेवी सख्यातगुणौ । भवणवासीदेवा अम० भदणवाणिणौशौ देवीशौ सखि० । तेहथो भवनपतिदेवता असख्यातगुणा तेहथो भवनपतिनौदेवी सख्यातगुणौ । रमोसरवणपभाए पृढवीणनेरया अम० खहचरपचिदिवतिरिस्कजोणीया पुरिसा सखि० । तेहथो रत्नभानारका असख्यातगुणा तेहथो खचरपचिदिवतिरिस्कजोणीया सख्यातगुणा । सुहृत्तर चादयतिरिस्कजोणीशौ स० थलयरपचिदिवतिरिस्कजोणिया पुरिसा स० । तेहथो थलयरपचिदिवतिरिस्कजोणीशौ स० । थलयरपचिदिवतिरिस्कजोणीशौ स० । थलयरपचिदिवतिरिस्कजोणीशौ स० । थलयरपचिदिवतिरिस्कजोणीशौ स० । तेहथो ज

प्रज्ञाया पृथिव्या नैरियमा असुर्येयगुणा अहुलमात्रकेनप्रदेशराशौ सम्यन्निनि प्रथमवर्गभूते द्वितीयेन वर्गभूतेन गुणिते यावान् प्रदेशराशि स्ता  
वत्प्रमाणापु अणिपु यावन्त आकाशप्रदेशा स्तावत्प्रमाणात् ३१ । तस्योपि सचरपचेद्वियतिर्यगोनिजा पुरुषा असुर्येयगुणा प्रतरा ऽसुर्येयता  
गवत्पञ्चैयभोगिनञ्च प्रदेशराशिप्रमाणात् ३२ । तेस्योपि सचरपञ्चैन्द्रिया स्तिर्यगोनिजा रिय सूर्येयगुणा स्थिगुणत्वात्, तिगुणातिरूवय  
द्विया तिरियाणइत्यियामुणेषुवा इतिवचनात् ३३ । तान्य स्थलचरपचेद्विया स्तिर्यगोनिजा पुरुषा सूर्येयगुणा वृहत्तरप्रतरासुर्येयजागवत्पञ्च  
सुर्येयश्रेणिगताकाशप्रदेशराशिप्रमाणात् ३४ । तेस्य स्थलचरपञ्चैन्द्रियतिर्यगोनिजा रिय सूर्येयगुणा स्थिगुणत्वात् ३५ । तस्यो जलचरपञ्च  
न्द्रियतिर्यगोनिजा पुरुषा सूर्येयगुणा वृहत्तमप्रतरासुर्येयजागवत्पञ्चैन्द्रियतिर्यगोनिजा प्रदेशराशिप्रमाणात् ३६ । तस्यो जलचरपञ्चैन्द्रियति  
र्यगोनिजास्त्रिय सूर्येयगुणा स्थिगुणत्वात् ३७ । तस्यो व्यन्तरा देवा पुवेदोदयिन सूर्येयगुणा यत -सूर्येयोजनकोटाकोटीप्रमाणाणि शूची

रूपाणि स्रग्नानि यावत्पञ्चैस्मिन् प्रतरे भवति तावत् सामान्येन व्यन्तरा केवलमिह पुरुषाविवक्षिता इति सकलसमुद्रायापेक्षया किञ्चिदून्मद्वा  
त्रिंशत्तमजागकल्पा वेदितव्या ततो षट्ते जलचरयुवतिष्य सूर्येयगुणा ३८ । तेस्यो व्यन्तय सूर्येयगुणा द्वानिश्चदुगत्वात् ३९ । तस्यो ज्योतिष्क  
देवा सूर्येयगुणा स्तेहि सामान्यत षट्पञ्चाशत् आधिकशतद्वयाहुलप्रमाणानि शूचीरूपाणि स्रग्नानि यावत्पञ्चैस्मिन् प्रतरे भवति तावत्प्रमाणा  
परमिह पुरुषा विवक्षिता इति ते सकलसमुद्रायापेक्षया किञ्चिदून्मद्वात्रिंशत्तमजागकल्पा प्रतिपत्तव्या स्तत उपपद्यन्ते, व्यन्तरीज्य सूर्येयगुणा  
४० । तेस्यो ज्योतिष्कदेव्य सूर्येयगुणा द्वानिश्चदुगत्वात् ४१ । तान्य सचरपञ्चैन्द्रियतिर्यगोनिजानपुमुका सूर्येयगुणा ज्ञापित असूर्येयगुणा इ  
तिपाठ स न समीचीनो यत इत ऊद य पयाप्तचतुरिन्द्रिया वक्ष्यते तेषां ज्योतिष्कदेवापेक्षया सूर्येयगुणा गवोपपद्यन्त तयाहि -षट्पञ्चाशदधि  
कशतद्वयाहुलप्रमाणानि शूचीरूपाणि स्रग्नानि यावत्पञ्चैस्मिन्प्रतरे भवति तावत्प्रमाणा ज्योतिष्का पञ्च-द्वयपञ्चदशयाहुल सूक्ष्मसहस्रिजाइय

नचात्र पाठज्ज्ञमी यतीन्याप्युक्तं-इंसाणेष्वप्ययि यहीसगुणाउर्होतिदेवीते । संखेज्जासोहम्मे तनुअसस्याप्रवणवार्सी ॥ १ ॥ २७ । इति, तेज्योपि त  
सिखेव सीधमंरूपे देव्य सख्येयगुणा हात्रिशदुणत्वात् । सध्वत्याविद्यतो सगुणाउर्होतिदेवीतेइतिवचनात् २८ । ताज्योप्यसरययगुणा प्रवनवासि  
न कयामितिचेत् इह अहुलमात्रकेत्रप्रदेशराज्ञा सख्यन्थिनि प्रथमे वर्गमूले तृतीयेन वर्गमूले गुणिते यावान् प्रदेशराशि अंशवति तावत्प्रमाणायु घ  
नीकृतस्य लोकस्य एकप्रदेशिकीपु श्रोणपु यावतो नत्र प्रदेशा स्तावत्प्रमाणो प्रवनपतिदेववीसमुदाय तद्गतकिञ्चिदनृत्तात्रिशद्भागकल्पा य प्रवनप  
तयो देवा स्ततो घटन्ते सीधमंदेवीन्य स्ते ऽसख्येयमुणा २९ । तेज्यो प्रवनवासिनोदेव्य सख्येयगुणा हात्रिशतगुणत्वात् ३० । ताज्यो प्यस्या रत्न

त्रिसेसाहिया बेइदिया पज्जत्ता विसे० । पचिदिया अपज्जत्तया असखिज्जगुणा चउरिदिया अपज्जत्तया  
विसेसाहिया तेइदिया अपज्जत्तया विसेसाहिया बेइदिया अपज्जत्तया विसेसाहिया पत्तेयसरीरवादर  
णस्संडकाइया पज्जत्तया असखेज्जगुणा वादरनिगोदा पज्जत्तया अपज्जत्तया वादरपुढाविकाइया अप  
ज्जत्तया असखेज्जगुणा वादरअ्याउकाइया पज्जत्तया असखिज्जगुणा वादरवाउकाइया पज्जत्तया असखि

उरेदियपज्जत्तया वि० । पचेद्विय अपर्याप्ता असख्यातगुणा चौरिद्विय अपर्याप्ता विशेषाधिक । तंददिय अपज्जत्तया वि० बेइदिय अपज्जत्तया विसेसा०  
तेद्विय अपर्याप्ता विशेषाधिक वेद्विय अपर्याप्ता विशेषाधिक । पत्तेयसरीरवायरवण्डेकाइयापज्जत्तया अस० । प्रत्येकशरीरवादर वनसतिकारक पर्या  
प्ता असख्यातगुणा । वायरनिगोयपज्जत्ता अस० वायरपुढवीकाइयपज्जत्तया अस० । वादरनिगोदीवापर्याप्ता असख्यातगुणा वादरप्रथिवीकारयपर्या  
प्ता असख्यातगुणा । वायरवाउकाइयपज्जत्तया अस० वायरवाउकाइयपज्जत्तया अस० । वादर अक्काइयापर्याप्ता असख्यातगुणा वादरवाउकाइ  
यापर्याप्ता असख्यातगुणा । वायरतेउकाइय अपज्जत्तया अस० । वादरतेउकाइया अपर्याप्ता असख्यातगुणा । पत्तेयसरीरवायरवणस्संडकाइय अप  
ज्जत्तया अस० । प्रत्येकशरीरवादर वनसतिकार्य अपर्याप्ता अस० । वायरनिगोय अपज्जत्तया अस० वायरपुढवीकाइय अपज्जत्तया अस० । वादर

निगात्र अपर्याप्ता असं वादप्रशयवौकाइका उपर्यप्ता असं । वादर आचकार्वा अपज्जातगा असं । वादर आचकार्वा अपर्याप्ता असयात्तगुणा ।  
मातराचकार्वा अपज्जातगा असं । वादरवायकाइक उपर्यप्ता असयात्तगुणा । सुहुमतेउकार्वा अपज्जातगा असं । सूक्ष्मतत्त्वकार्वा अपर्याप्ता  
यमन्यात्तगुणा । सुहुमपट्टधकार्वा अपज्जातगा वि० सुहुमपाठकार्वा अपज्जातगा वि० । सूक्ष्मपृथिवीकार्वा इकपर्याप्ता  
विगेपारिक मध्यमकार्वा विगेपाधिक सूक्ष्मवायुकार्वा उपर्यप्ता विगेपाधिक । सुहुमपट्टवौकाइयपज्जातगा स० सुहुमपट्टवौकाइयपज्जातगा वि० स०

पपर । लोभमिहिरिहति अहुलसह्येयज्ञागमात्राणि शूचीरूपाणि स्रग्नानि यावत्येकस्मिन्प्रतरे नवति तावत्प्रमाणा शतुरिन्द्रिया उक्तव-प  
 कृतापज्जता विति चतुश्चसन्निधोःकवहरति । अगुलसगाऽसप्त प्यसन्नयपुढोपयर । अगुलसख्येयज्ञागमापेक्षया पट्पञ्चाशदधिकमहुलज्ञतद्वय स  
 ह्येयगुण ततो ज्योतिष्कदेवापेक्षया परिज्ञाव्यमाना पर्याप्तचतुरिन्द्रियान्यपि सह्येयगुणा एवघटते किपुन पर्याप्तचतुरिन्द्रियापेक्षया सह्येयज्ञागमा  
 त्रसवरपञ्चेन्द्रियनपुसका इति ४२ । तेज्योपि यलचरपञ्चेन्द्रियनपुसका सह्येयगुणा ४३ । तेज्योपि जलचरपञ्चेन्द्रियनपुसका सह्येयगुणा ४४ । ते  
 ज्योपि पर्याप्तचतुरिन्द्रिया सह्येयगुणा ४५ । तेभ्योपि पर्याप्ता सञ्चसञ्जिज्ञेदजिज्ञा पञ्चेन्द्रिया विज्ञोपाधिका ४६ । तेज्योपि पर्याप्ता द्वीन्द्रिया  
 विज्ञोपाधिका ४७ । तेज्योपि पर्याप्ततेइन्द्रिया विज्ञोपाधिका ४८ । यद्यपि पर्याप्तचतुरिन्द्रियादीना पर्याप्तत्रिन्द्रियपर्यन्ताना प्रत्येकमहुलासख्येयज्ञा  
 गमात्राणि शूचीरूपाणि स्रग्नानि यावत्येकस्मिन् प्रतरे नवति तावत्प्रमाणत्वमविज्ञोपेक्षान्यत्र वग्यते तथाप्यहुलासख्येयज्ञागस्य सह्येयज्ञेदजिज्ञातया

दित्यविज्ञोपाधिकत्वमुच्यमान न विरुद्ध उक्तचेत्य मल्पयतुत्व मन्यत्रापि ततो नपुसक सप्तयससेज्जा यलयरजलयरनपुसका चतुरिन्द्रिय ततेपणवि  
 तितपज्जहकिचिहिया इति ४८ । तेज्योपि पर्याप्तत्रिन्द्रियेभ्यो ऽपर्याप्ता पञ्चेन्द्रिया असह्येयगुणा ४९ । अहुलासख्येयज्ञागमात्राणि स्रग्नानि सूचीरू  
 पाणि यावत्येकस्मिन् प्रतरे नवति तावत्प्रमाणत्वात् ४९ । तेज्य शतुरिन्द्रिया अपर्याप्ताविज्ञोपाधिका ५० । तेज्योपि त्रीन्द्रिया अपर्याप्ता विज्ञो  
 पाधिका ५१ । तेज्यो द्वीन्द्रिया अपर्याप्ता विज्ञोपाधिका यद्यपि चापर्याप्ता शतुरिन्द्रियादयो ऽपर्याप्तद्वीन्द्रियपर्यन्ता प्रत्येकमहुलास्य सह्येयज्ञाग  
 मात्राणि स्रग्नानि शूचीरूपाणि यावत्येकस्मिन् प्रतरे नवति तावत्प्रमाणा अन्यत्राविज्ञोपेक्षोक्ता स्तथाप्यहुलासख्येयज्ञागस्य विचित्रत्वा दित्य वि  
 ज्ञापाधिकत्व मुच्यमान न विरोधमास्कदति ५२ । तेज्योपि द्वीन्द्रियापयातेज्य प्रत्येकवादरवनस्पतिकारिका पर्याप्ता असख्येयगुणा यद्यपि चा  
 पर्याप्तद्वीन्द्रियादिवत् पर्याप्तवादरवनस्पतिकारिका ऽप्यहुलासख्येयज्ञागमात्राणि सूचीरूपाणि स्रग्नानि यावत्येकस्मिन् प्रतरे नवति तावत्प्र

जोपाधिका ७१ । तेज्योपि सूक्ष्मनिगोदा अपर्याप्ता असुरेयगुणा ७२ । तेज्योपि पर्याप्ता सूक्ष्मनिगोदा सुरेयगुणा यद्यपिच पर्याप्ततेज  
स्कायिकादय पर्याप्तसूक्ष्मनिगोदपर्यन्ता अविशेषेणाऽन्यत्राऽसुरेयलोकाकाशप्रदेशराशिप्रमाणा तक्ता कथाऽपि लोकाऽसुरेयत्वस्याऽसुरेय  
प्रेदन्निष्ठत्वादित्यमस्पद्यदुत्त्वमन्निधीयमानमुपपन्न इष्टम् ७३ । तेज्योऽत्रवसिष्ठिका अनन्तगुणा जयन्ययुक्तानन्तप्रमाणास्त्यात् ७४ । तस्य प्रतिपति  
तसम्यग्दृष्टयोऽनन्तगुणा ७५ । तेज्य सिद्धा अनन्तगुणा ७६ । तेज्योपि वादरवनस्पतिकायिका पर्याप्ता अनन्तगुणा ७७ । तेज्योपि सामान्यतो  
वादरपर्याप्ता विशेषाधिका वादरपयापुत्पृथिवीकायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ७८ । तेज्यो वादरापर्याप्तवदनस्पतिकायिका असुरेयगुणा स  
कैकवादरविगोदपर्याप्तनिशयासुरेयगुणाना वादरापर्याप्तनिगोदाना सम्भवात् ७९ । तेज्य सामान्यतो वादरापर्याप्ता विशेषाधिका वादरा  
पर्याप्तपृथिवीकायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ८० । तेज्य सामान्यतो वादरा विशेषाधिका पर्याप्ताऽपर्याप्ताना तत्र प्रक्षेपात् ८१ ।  
तेज्य सूक्ष्मजनस्पतिकायिका अपर्याप्ता असुरेयगुणा ८२ । तेज्य सामान्यत सूक्ष्मा अपर्याप्ता विशेषाधिका सूक्ष्माऽपर्याप्त पृथिवी  
कायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ८३ । तेज्य सूक्ष्मजनस्पतिकायिका पर्याप्तका सुरेयगुणा पर्याप्तसूक्ष्माऽनऽपर्याप्तसूक्ष्मेभ्य खत्ता

विसेसाहिया वादरा विसेसाहिया सुक्ष्मवणस्सडकाइया अपज्जत्तया सुक्ष्मा अपज्जत्तया  
विसेसाहिया सुक्ष्मवणस्सडकाइया पज्जत्तया सखेज्ज० सुक्ष्मपज्जत्तया सुक्ष्मा विसेसाहि

वि० वायरवणस्सडकाइय अपज्जत्तया अस० । वादरपर्याप्ता विशेषाधिक वादरवनस्पतिकाइक अपर्याप्ता असत्यातगुणा । जीवावायरा अपज्जत्तया  
वि० वायराविसेसाहिया । सडुमवणस्सडकाइय अपज्जत्तया अस० । सुक्ष्मवणस्पतिकाइक अपर्याप्ता असद्यातगुणा सूक्ष्मा अप  
र्याप्ता विगेयाधिक । सुडुमवणस्सडकाइयपज्जत्तया स० । सुडुमपज्जत्तया वि० । सूक्ष्मवणस्पतिकाइकपर्याप्ता सद्यातगुणा सूक्ष्मपर्याप्ता विगेयाधिक ।  
सुडुमावि० भवसिद्धिया विसेसाहिया निगायनीया विसेसाहिया । सूक्ष्मविगेयाधिक तेहथो भवसिद्धिया विशेषाधिक तेहथो निगोदजोव विशेषाधिक ।



गुणा असुर्येलोकाकाशप्रदेशराक्षिप्रमाणत्वात् ५८ । तेन्य प्रत्येकक्षरीरवाद्दरवतस्पतिकायिका अपर्याप्ता असुर्येयगुणा ५९ । तेन्योपि वादर  
निर्गोदा अपर्याप्तका असुर्येयगुणा ६० । तेन्यो वादरपृथिवीकायिका अपर्याप्ताका असुर्येयगुणा ६१ । तेन्यो वादराप्तायिका अपर्याप्ता अस  
र्येयगुणा ६२ । तेन्यो वादरवायुकायिका अपर्याप्ता असुर्येयगुणा ६३ । तेन्य सूक्ष्मतेजस्कायिका अपर्याप्ता असुर्येयगुणा ६४ । तेन्य सूक्ष्म  
पृथिवीकायिका अपर्याप्ता विज्ञेयायिका ६५ । तेन्य सूक्ष्माप्तायिका अपर्याप्ता विज्ञेयायिका ६६ । तेन्य सूक्ष्मवायुकायिका अपर्याप्ता विज्ञे  
यायिका ६७ । तेन्य सूक्ष्मतेजस्कायिका पर्याप्तका असुर्येयगुणा अपर्याप्तकमह्येन्य पर्याप्तसूक्ष्माणा स्वभावतएव प्राचुर्येण प्रावात् तथाचाह-  
अस्याय प्रज्ञापनाया सुद्वन्द्वनिर्मा-जीवाणमऽपज्जता बहुतरगावायराणविक्रिया सुदुर्माण्यपज्जता उहेण्यकैवलीविति ॥ ६८ ॥ तेन्योपि सूक्ष्म  
पृथिवीकायिका पर्याप्ता विज्ञेयायिका ६९ । तेन्योपि सूक्ष्माप्तायिका पर्याप्ता वि

मपुढविकाडया पज्जतगा विसंसाहिया सुज्जमअण्डकाडया पज्जतगा विसंसाहिया सुज्जमवाडकाडया पज्ज  
तगा विसंसाहिया सुज्जमणिगोदा अपज्जता असुरे० सुज्जमणिगोदा पज्जतया सखिज्जगुणा अज्जवसिद्धि  
या अणतगुणा पठिवत्तिय सम्मदिठी अणतगुणा सिद्धा अणतगुणा वादर वणरसडकाडया पज्जतगा अ  
णतगुणा वादरपज्जता विसंसाहिया वादरवणरसडकाडया अपज्जतया असखिज्जगुणा वादरअपज्जतया

हमवाडकाडय पज्जतगा वि० । सूक्ष्मतेजकाडकपर्याप्ता सख्यातगुणा सूक्ष्मपृथिवीकाडकपर्याप्ता विशेषाधिक सूक्ष्मवायुकाडकपर्याप्ता विशेषाधिक ।  
सु० नवाडकाडयपज्जतगा वि० सु० सनिगोय अपज्जतगा अ० । मन्त्रवायुकाडकपर्याप्ता विशेषाधिक सूक्ष्मनिगोद अपर्याप्ता असख्यातगुणा । सुदुम  
निगोयपज्जतगा स० अभवसिद्धिया अणतगुणा पठिवत्तिय सम्मदिठी अणतगुणा सिद्धा अणतगुणा वादर वणरसडकाडया पज्जतगा अ  
प्रतिपतितसम्पद्विट अणतगुणा सिद्ध अणतगुणा । वायरवणरसडकाडयपज्जतगा अण० । वादरवणरसडकाडकपर्याप्ता अणतगुणा । वायरपज्जतगा

जोषाधिका ७१ । तेभ्योपि सूक्ष्मनिगोदा अपर्याप्ता अपर्याप्ताका असंख्यगुणा ७२ । तेभ्योपि पर्याप्ता सूक्ष्मनिगोदा सरस्येयगुणा यद्यापच पर्याप्ततज्ज  
स्कायिकादय पर्याप्तसूक्ष्मनिगोदपर्यन्ता अविशेषेणाऽन्यत्राऽसरस्येयलोकाकाशप्रदेशराशिप्रमाणा उक्ता स्तथाऽपि लोकाऽसरस्येयत्वस्याऽसरस्येय  
त्रेदन्निजत्वादित्यमत्पवहुत्वमन्निर्धीयमानमुपपन्नं द्रष्टव्य ७३ । तेभ्यो ऽनवसिद्धिका अनन्तगुणा जघन्ययुक्तानन्तकप्रमाणाख्यात् ७४ । तेभ्य प्रतिपति  
तसम्यग्द्रष्टव्योऽनन्तगुणा ७५ । तेभ्य सिद्धा अनन्तगुणा ७६ । तेभ्योपि वादत्रनस्पतिकायिका पर्याप्ता अनन्तगुणा ७७ । तेभ्योपि सामान्यतो  
यादरपर्याप्ता विशेषाधिका वादरपथापुप्तपृथ्वीकायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ७८ । तेभ्यो वादरापर्याप्ततयनस्पतिकायिका असंख्येयगुणा ग  
कैकवादरनिगोदपर्याप्तनिश्चयासरस्येयगुणाना वादरापर्याप्तनिगोदाना सम्भवात् ७९ । तेभ्य सामान्यतो वादरापर्याप्ता विशेषाधिका वादरा  
पथापुप्तपृथ्वीकायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ८० । तेभ्य सामान्यतो वादरा विशेषाधिका पर्याप्ताऽपर्याप्ताना तत्र प्रक्षेपात् ८१ ।  
तेभ्य सूक्ष्मत्रनस्पतिकायिका अपर्याप्ता असंख्येयगुणा ८२ । तेभ्य सामान्यत सूक्ष्मा अपर्याप्ता विशेषाधिका सूक्ष्माऽपर्याप्त पृथिवी  
कायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ८३ । तेभ्य सूक्ष्मत्रनस्पतिकायिका पर्याप्तका सरस्येयगुणा पर्याप्तसूक्ष्माणामऽपर्याप्तसूक्ष्मेभ्य स्वना

विसेसाहिया वादरा विसेसाहिया सुक्ष्मवणस्सडकाइया अपज्जत्तया अपज्जत्तया सुक्ष्मा अपज्जत्तया  
विसेसाहिया सुक्ष्मवणस्सडकाइया पज्जत्तया सखेज्ज ० सुक्ष्मपज्जत्तया विसेसाहिया सुक्ष्मा विसेसाहि

वि० वायरवणस्सडकाइय अपज्जत्तया असं० । वादरपर्याप्ता विशेषाधिक वादरवनस्पतिकाइक अपर्याप्ता असंख्यातगुणा । जीवावायरा अपज्जत्तया  
वि० वायराविसेसाहिया । सुक्ष्मवणस्सडकाइय अपज्जत्तया असं० सुक्ष्मअपज्जत्तया वि० । सूक्ष्मवनस्पतिकाइक उपर्याप्ता असंख्यातगुणा सूक्ष्म अप  
र्याप्ता विशेषाधिक । सुक्ष्मवणस्सडकाइयपज्जत्तया सं० सुक्ष्मपज्जत्तया वि० । सूक्ष्मवनस्पतिकाइकपर्याप्ता सदयानगुणा सूक्ष्मपर्याप्ता विशेषाधिक ।  
सुक्ष्मावि० भवसिद्धिया विसेसाहिया निगायनीवा विसेसाहिया । सूक्ष्मविशेषाधिक तेइथी भवसिद्धिया विशेषाधिक तेइथी निगोदजोव विशेषाधिक ।

गुणा असुर्येयलोकाकाशप्रदेशराशिप्रमाणत्वात् ५८ । तेन्य प्रत्येकक्षरीरवादादवनस्पतिकायिका अपर्याप्ता असुर्येयगुणा ५९ । तेन्योपि आदर  
निर्गोदा अपर्याप्तका असुर्येयगुणा ६० । तेन्यो वादरपृथिवीकायिका अपर्याप्तका असुर्येयगुणा ६१ । तेन्यो वादराप्तायिका अपर्याप्ता अस  
र्येयगुणा ६२ । तेन्यो वादरवायुकायिका अपर्याप्ता असुर्येयगुणा ६३ । तेन्य सूक्ष्मतेजस्कायिका अपर्याप्ता असुर्येयगुणा ६४ । तेन्य सूक्ष्म  
पृथिवीकायिका अपर्याप्ता विज्ञेयाधिका ६५ । तेन्य सूक्ष्माप्तायिका अपर्याप्ता विज्ञेयाधिका ६६ । तेन्य सूक्ष्मवायुकायिका अपर्याप्ता विज्ञे  
याधिका ६७ । तेन्य सूक्ष्मतेजस्कायिका पर्याप्तका असुर्येयगुणा अपर्याप्तकसूक्ष्म स्वभावतस्व मासुर्यण जावात् तथाचाह-  
अस्यास्व प्रज्ञापनाया सद्गुणिकार-जीवाणमपपञ्जता बहुतरगावायराणविकेया सुदुर्माख्यपञ्जता उरेण्यकेवरीविति ॥ ६८ ॥ तेन्योपि सूक्ष्म  
पृथिवीकायिका पर्याप्ता विज्ञेयाधिका ६९ । तेन्योपि सूक्ष्माप्तायिका पर्याप्ता वि

सपुढविकाइया पञ्जतगा विनेसाहिया सुज्जमच्याउकाइया पञ्जतगा विसंसाहिया सुज्जमवाउकाइया पञ्ज  
तगा विसंसाहिया सुज्जमणिगोदा अपपञ्जता असखे० सुज्जमणिगोदा पञ्जतया संखिज्जगुणा अन्नवसिद्धि  
या अणतगुणा पणिवसिद्धि सम्मदिष्टी अणतगुणा सिद्धा अणतगुणा वादर वणरसइकाइया पञ्जतगा अ  
णतगुणा वादरपञ्जता विसंसाहिया वादरवणरसइकाइया अपपञ्जतया असंखिज्जगुणा वादरअपपञ्जतया

हुमवाउकाइय पञ्जतगा वि० । सूक्ष्मतेज्जकाइकपर्याप्ता नख्यातगुणा सूक्ष्मपृथिवीकाइकपर्याप्ता विज्ञेयाधिका विज्ञेयाधिका ।  
सुदुमवाउकाइय पञ्जतगा वि० सुदुमनिगोय अपपञ्जतगा अ० । मूलागायकाइकपर्याप्ता विज्ञेयाधिका सूक्ष्मनिगोद अपर्याप्ता असख्यातगुणा । सुदुम  
निगोयपञ्जतगा स० अभवसिद्धिया अणतगुणा पणिवसिद्धि सम्मदिष्टी अणतगुणा सिद्धा अणतगुणा वादर वणरसइकाइया पञ्जतगा अ  
प्रतिपत्तितसस्यगुणा सिद्ध अणतगुणा । वादरवणरसइकाइयपञ्जतगा अण० । वादरवणरसइकाइयपञ्जतगा अणतगुणा । वादरपञ्जतगा

जोषाधिका ७१ । तेभ्योपि नूत्ननिगोदा अर्थात्तका असुर्येयगुणा ७२ । तेभ्योपि पर्याप्ता सून्मनिगोदा सूर्येयगुणा यद्यपिच पर्याप्ततेन स्कायिकादय पर्याप्तसूत्सनिगोदपर्यन्ता अविक्षोपेणाऽन्यत्राऽसुर्येयलोकाकाशप्रदेशाणिप्रमाणा उक्ता स्तायाऽपि लोकाऽसुर्येयत्वस्याऽसुर्येय प्रेक्षितत्वादिह्यमल्पबहुत्वमन्निधीयमानमुपपन्नं द्रष्टव्य ७३ । तेभ्योऽनवसिद्धिका अनन्तगुणा जगन्मयुक्तानस्तकप्रमाणाख्यात् ७४ । तस्य प्रतिपत्ति तस्यमगृह्योऽनन्तगुणा ७५ । तेभ्य सिद्धा अनन्तगुणा ७६ । तेभ्योपि वादरवन्स्पतिकारिका पर्याप्ता अनन्तगुणा ७७ । तेभ्योपि सामान्यतो वादरपर्याप्ता विक्षोपाधिका वादरपर्याप्तापूतपृथिवीकारिकायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ७८ । तेभ्यो वादरपर्याप्तजनस्पतिकारिका असुर्येयगुणा ग कैकवादननिगोदपर्याप्तनिश्रयासुर्येयगुणाना वादरपर्याप्तनिगोदाना सम्भवात् ७९ । तेभ्य सामान्यतो वादरपर्याप्ता विक्षोपाधिका यादरा पर्याप्तपृथिवीकारिकायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ८० । तेभ्य सामान्यतो वादरा विक्षोपाधिका पर्याप्ताऽपर्याप्ताना तत्र प्रक्षेपात् ८१ । तेभ्य मूत्सवनस्पतिकारिका अर्थात्ता असुर्येयगुणा ८२ । तेभ्य सामान्यत सूत्सा अर्थात्ता विक्षोपाधिका मूत्साऽप्यापूत पृथिवी कारिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ८३ । तेभ्य मूत्सवनस्पतिकारिका पर्याप्तका सूर्येयगुणा पर्याप्तसूत्साऽप्यापूतसूत्सैन्य स्वजा

विसेसाहिया वादरा विसेसाहिया सुजमवणस्सडकाडया अपज्जत्तया सुजमा अपज्जत्तया  
विसेसाहिया सुजमवणस्सडकाडया पज्जत्तया ससेज्ज० सुजमपज्जत्तया विसेसाहिया सुजमा विसेसाहि

वि० वायरवणस्सडकाडय अपज्जत्तया अस० । वादरपर्याप्ता विक्षोपाधिक वादरवनस्पतिकारिक अर्थात्ता असुर्याता असुर्याता अपज्जत्तया वि० वायराविसेसाहिया । सुहुमवणस्सडकाडय अपज्जत्तया अस० सुहुमवणस्पतिकारिक अर्थात्ता असुर्याता असुर्याता अपज्जत्तया सुज्जा अप र्यात्ता विक्षोपाधिक । सुहुमवणस्सडकाडयपज्जत्तया स० सुहुमपज्जत्तया वि० । मूत्सवनस्पतिकारिकपर्याप्ता समयातगुणा सूत्सापर्याप्ता विक्षोपाधिक । सुहुमावि० भवसिद्धिया विसेसाहिया निगायजोषा विसेसाहिया । मूत्सविगयाधिक तेहयो भवसिद्धिया विक्षोपाधिक तेहयो निगोदोव विक्षोपाधिक ।

वत सदैव सख्यगुणतया प्राप्यमाणत्वात्, तथाकेवलवेदसोनुपलब्धे ८४ । तेज्योपि सामान्यत सूक्ष्मा पर्याप्ता विशेषाधिका पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकादीनामऽपि तत्र प्रक्षेपात् ८५ । तेज्य पर्याप्ताऽपर्याप्तविशेषणरहिता सूक्ष्मा विशेषाधिका अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिव्यपत्तेर्जोवायुवनस्पतिकायिकानामऽपि तत्र प्रक्षेपात् ८६ । तेज्योऽपि प्रवसिद्धिका ज्ञेये सिद्धि र्येवा ते प्रवसिद्धिका ज्ञेयाविशेषाधिका जघन्ययुक्तानन्तकमात्राऽन्यपरिहारेण सर्वजीवानां ज्ञेयत्वात् ८७ । तेज्य सामान्यतो निगोदजीवा विशेषाधिका इह ज्ञेया अज्ञेया द्याऽतिप्राचुर्येण वादरसूक्ष्मनिगोदजीवराज्ञावेव प्राप्यन्ते नाऽन्यत्राऽन्येया सर्वपाऽमपि मिलिता नामसरययलोकाकाशप्रदेशराणिप्रमाणत्वात्, अज्ञेयाश्च युक्तानन्तकसस्यामात्रपरिमाण स्ततो ज्ञेयापत्तया ते किञ्चित्मात्रा ज्ञेयाश्च प्रागऽज्ञेयपरिहारेण चिन्तिता इदानीतु वादरसूक्ष्मनिगोदचित्ताया तेषां प्रक्षिप्यन्ते इति विशेषाधिका ८८ । तेज्य सामान्यतो वनस्पतिजीवा विशेषाधिका प्रत्यक्षशरीरिणामपि वनस्पतिजीवाना तत्र प्रक्षेपात् ८९ । तेज्य सामान्यत एकैन्द्रिया विशेषाधिका वादरसूक्ष्मपृथिवीकायिकादीनामपि तक्षेपात् ९० । तेज्य सामान्यत स्तिर्यग्योनिका विशेषाधिका पर्याप्तापर्याप्तद्वित्रिच

या ज्ञवसिद्धिया विसेसाहिया निगोदा जीवा विसेसाहिया वणरसइजीवा विसेसाहिया एगिदिया विसेसाहिया तिरिक्खजोणिया विसेसाहिया मिच्छदिठी विसेसाहिया अविरया विसेसाहिया ठउमत्या विसेसाहिया सजोगी विसेसाहिया ससारत्या विसेसाहिया सव्वजीवा विसेसाहिया ॥ पणवणाए नगवइए

वणरसइजीवा विसेसाहिया एगिदिया विसेसाहिया । वनस्पतिजीव विशेषाधिक एकैन्द्रिय विशेषाधिक । तिरिक्खजोणिया विसेसाहिया मिच्छदिठी विसेसाहिया । तेहदो तिरिचयोनिया विशेषाधिक तेहदो मिष्ठाट्टि विशेषाधिक । अविरतो विसेसाहिया सकसाइ विसेसाहिया कउमत्या विसेसा० सजोगी विसेसाहिया ससारत्या विसेसाहिया । तेहदो अविरतो सस्यगट्टो विशेषाधिक सकपाइ विशेषाधिक सजोगी विशेषाधिक ससारतो जीव विषाधिक । सजजीवा विसेसाहिया ८८ पणवणाए नगवइए वहुवत्तया पय सम्भत्त । तेहदो सर्वजीव विषेपादिक सिद्धिजाताए ८८

तुरिन्द्रियतिर्यकपञ्चेन्द्रियाणामपि तत्र प्रक्षेपात् ८१ । तेन्य श्रुतगतिज्ञाविनो मिथ्यादृष्टयो विशेषाधिका इह कतिपयाविरतसम्पदृष्ट्यादिसञ्ज्ञा  
व्यतिरिक्तेण शोषा सर्वेपि तिर्यञ्चो मिथ्यादृष्टिचिन्ताया चासख्येयनारकादय स्मः प्रक्षिप्यन्ते तत स्तियगन्धीयराइयपेक्षया चतुर्गतिज्ञा मिथ्यादृष्टय  
श्चिन्त्यमाना विज्ञायाधिका ८२ । तेन्योप्यविरता विशेषाधिका अविरतिसम्यग्दृष्टीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ८३ । तेन्य सकयायिणो विशेषाधिका दे  
शविरतादीनामऽपि तत्र प्रक्षेपात् ८४ । तेन्य कृत्स्नया विशेषाधिका उपशान्तमोहादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ८५ । तेन्य सयोगिनी विशेषाधिका.  
सयोगिकेर्वालनामऽपि तत्र प्रक्षेपात् ८६ । तन्य ससारस्या विशेषाधिका अयोगिकवर्तिनामऽपि तत्र प्रक्षेपात् ८७ । तेन्य सर्वजीवा विज्ञायाधि  
का सिद्धानामऽपि तत्र प्रक्षेपात् ८८ ॥ इतिश्री सत्यगिरिविरचिताया प्रज्ञापनाटीकाया बहुवक्तव्यास्य तृतीय पद समाप्तम् ॥ ३ ॥  
व्याख्यात तृतीयपद मिदानी चतुथमा रज्यते-तस्यचायमजिस्यन्य इहानन्तरपदेदिगनुपातादिनाऽल्पबहुत्वसङ्ख्या निदुरिरता अस्मिन्नु तथा  
अल्पबहुत्वसङ्ख्या निर्दोरिताना जीवाना सत्वाना जन्मत प्रजृत्त्यामरणात् यत्नारकादिपयायरूपण व्यवच्छिन्न मवस्थान त चिन्त्यते, अनन स  
म्वन्धेनापातस्यास्येदमादिम सूत्र-नेरइयाण प्रते । केवइय काल तिइपन्नता इति ॥ नेरयिकाणा प्रदत्त । कियन्त काल स्थिति प्रज्ञप्ता तत्र स्थी

वज्रवत्तद्यपद सम्प्रत ॥ ३ ॥ ॥ ॥  
नेरइयाण प्रते । केवइय काल तिई पणत्ता ? गोयमा ! जहणेण दसवाससहस्साड उक्कोसेण तंतीस साग

नेरयिकाणा प्रदत्त । कियन्त काल स्थिति प्रजृप्ता ? गीतम । जघनेन दशउपसंस्त्राणुत्कपंतस्त्रयस्त्रिंशरसागरोपमाणि' प्रपयात्तनेर  
हारनो महाटडक अन्यवदत्तना पट तीजा सनामपवा इणतीजे पदे अन्यवदुल जीयनो कञ्जा २७ द्वार प्रज्ञापना भगवती मा इ ॥ ३ ॥  
नेरइयाण भते केवतिय कालाटड प० । द्विवे पउथेपदे पर्याप्त उरकटजघन्याम्यति प्रागुत्तो कहेहे-नारकीनो हभभवत कतना कालनोस्थि त नही । गो०  
जइनेण दसवाससहस्साड उ० तिणोससागरावमाइ । इंगीतम जघन्य थाडो दयइजारवपनो स्थितिरत्नप्रभानो अपचाये उरकटो ततासस.गगापन

॥ मू ॥

॥ प्र० ॥

॥ भाषा ॥

यते ऽग्रस्थीयते मनया ऽयु कर्मानुवृत्त्येति स्थिति स्थितिरयु कर्मानुवृत्ति जीवनमितिपर्योया , यद्यप्यत्र जीवेन मिथ्यात्वादिनिरुपात्ताना कर्मपु

रोवमाह अपज्जत्तणेरइयाण ऋते ! केवइय काल ठिइं पखत्ता ? गोथमा ! जहणेग अतोमुज्जत्त उक्को  
सेणवि अतोमुज्जत्त पज्जत्तगणेरइयाण ऋते ! केवइय काल ठिइं पखत्ता ? गोथमा ! जहणेग दसवामस  
हस्साइ अतोमुज्जत्तणाइ उक्कोसेण तेहीस सागरोवमाइ अतोमुज्जत्तणाइ रयणप्पन्नापुढविणेरइयाण ऋते !

विकाणा नदत्त ! कियन्त काल स्थिति प्रज्ञाप्ता , गीतम ! जघन्येनान्तमुहूतं मुत्तर्कपेणाप्यन्तमुहूतं , पर्याप्तकर्त्तरियिजाणा कियन्त काल  
स्थिति प्रज्ञाप्ता ? गीतम ! जघन्यतो दशवपसहस्राणि अन्तमुहूशोनानि उत्तरुपत रायस्सिञ्जत्तसागरोपमाणि अन्तमुहूतोनानि , रत्नप्रज्ञापृथि  
वीनेरयिकाणा जटत्त ! कियन्त काल स्थिति प्रज्ञाप्ता ? गीतम ! जघन्यतो दशवपसहस्राण्युत्तरुपत सागरोपमम् , अपर्याप्तरत्नप्रज्ञापु

नो ! स्थिति तन्तमा पृथिवीनो अपेक्षाये । अपज्जसग नेरइयाण भन्ते केवतिय कालाठिइ प० । अपर्याप्तानारकौनो कंतकाकालनोस्थितिकही । गो० लइ  
णेण यनामइत्त उक्कोसेणवि अतोमइत्त । हेगीतम जघन्येपिण अतमुहूतं उत्तरुपेपिण अतमुहूतं । पज्जसगनेरइयाण भन्ते केवतिय कालाठिइ प० । पर्याप्ता  
नारकौनो कंतकाकालनोस्थितिकही । गो० जइनेण दसवामसहस्रा । हेगीतम जघन्येदगइज्जारवपं । अतोमइत्त पाइ उक्कोसेण तेत्तीससागरोव  
माइ अतोमइत्तणाइ । अतमुहूतंजणो उत्तरुपेतेतोससागरोपम अतमुहूतंजणो । रयणप्पण पण्डोप नेरइयाण भन्ते क० । रत्नप्रभा पृथिवीना नारकौनो  
हेभगवन् कंतकाकालनोस्थिति । गो०मा जइनेण दसवामसहस्राः उक्कोसेण सागरोवम । हेगीतम जघन्येदगइज्जारवपं उत्तरुपे एकासागरोपम । अपज्ज  
त्तयणप्पभपण्डोनेरइयाण भन्ते क० । अपर्याप्ता रत्नप्रभाना नारकौनो कंतकोस्थिति हेभगवन् । गो०मा जइनेणवि अतोमइत्त उक्कोसेणवि अतोमइत्त ।  
हेगी०म जघन्येपिण अतमुहूतं उत्तरुपेपिण अतमुहूतं । पज्जत्तयणप्पभपण्डोनेरइयाण भन्ते क० । पर्याप्ता रत्नप्रभाना नारकौनो कंतकोस्थिति हेभगवन् ।  
गो०मा जइनेण दसवामसहस्राइ । हेगीतम जघन्येदगइज्जारवपं । अतोमइत्तणाइ उक्कोसेण सागरोवम अतोमइत्तण सकरप्पभपण्डोनेरइयाण भन्ते

केवडय काल ठिईं पणता ? गोयमा ! जहणेण टसत्रामसहस्साड उक्कोमेण सागरोवमं अणज्जत्तरयणप्य  
 तापुढविणेरडयाण केवडय काल ठिईं पणता ? गोयमा ! जहणेणवि अतोमुज्जत्त उक्कोमेणवि अतोमु  
 ज्जत्त पज्जत्तरयणप्यपन्नापुढविणेरडयाण नते ! केवडय काल ठिईं पणता ? गोयमा ! जहणेण टसत्रा  
 ससहस्साड अणोमुज्जत्तूणाड उक्कोसेण सागरोवम अणोमुज्जत्तूण ! सक्करप्यपन्नापुढविणेरडयाण नते ! केव  
 डय ठाण ठिईं पणता ? गोयमा ! जहणेण एण सागरोवम उक्कोसेण तिणि सागरीवमाड अणज्जत्त  
 सक्करप्यपन्नापुढविणेरडयाण नते ! केवडय काल ठिईं पणता ? गोयमा ! जहणेण अतोमुज्जत्त उक्कोसेण  
 वि अतोमुज्जत्त पज्जत्तसक्करप्यपन्नापुढविणेरडयाण नते ! केवडय काल ठिईं पणता ? गोयमा ! जहणेण साग

यिधीनैरयिकाणा नदन्त ! कियन्त काल स्थिति प्रचप्ता ? गोतम ! जघन्येनाप्यन्तमंरुत्तमुत्कर्षणाप्यन्तमुत्तं, पर्याप्तकरत्तप्रज्ञापुयिधी  
 नैरयिकाणा नदन्त ! कियन्त काल स्थिति प्रचप्ता ? गोतम ! जघन्येन दशवपसहस्साण्यपत्तमंरुत्तानि वटकपत्त. सागरोपममन्तमंरुत्तानि  
 म् । शकराप्रज्ञापुयिधीनैरयिकाणा नदन्त ! कियन्त काल स्थिति प्रचप्ता ? गोतम ! जघन्येनैक सागरोपममुत्कर्षणं ग्रीणि सागरोपमा  
 णि, अपवास्तसक्कराप्रज्ञापुयिधीनैरयिकाणा नदन्त ! कियन्त काल स्थिति प्रचप्ता ? गोतम ! जघन्येनान्तमंरुत्तमुत्कर्षणाप्यन्तमुत्तं  
 क० । अमंरुत्तकणौ वटकथौ सागरापम अमंरुत्तजन शकरप्रभाना नारकोनोस्थिति केतञ्चाकान्त हेभगवन् । गात्तमा जहडय एणनागरोवम ।  
 उक्कोमेण विज्ञमागरोवम । हे गोतम जहडय एकसागरापम वटकथौ नममागरापमनो स्थिति । पपज्जत्तसक्करप्यपुढवोनेरडयाण भते के० । अपर्वासा  
 गकरप्रभाना नारकोनो क्तलोस्थिति हेभगवन् । गोयमा जहडयेण गतामहत्त उ० ग्रामुत्त । एगौतम जघन्येयतमहत्त वटकथे ग्रतमहत्त । पज्जत्त  
 सक्करप्यपुढवोनेरडयाण भते के० । पर्वासागकरप्रभापुयिधीनो नारकोनोस्थिति हेभगवन् तेतलोस्थितिकथौ । गावमा जहडयेण सागरोवम त्रतोमुत्त,



रोचम अतोमुज्जत्तूण उक्कोसेण त्तिणि सागरोवमाइं अतोमुज्जत्तूणाइं वालुयप्पन्नापुढविनेरइयाणं जते !  
 केवइय काल छिइं पणत्ता ? गोयमा ! जहत्तेण त्तिणि सागरोवमाइ उक्कोसेण सत्त भागरोवमाइं अय  
 ज्ञत्तयवालुयप्पन्नापुढविनेरइयाण जते ! केवइय कालं छिइं पणत्ता ? गोयमा ! जहत्तेण अतोमुज्जत्तू  
 उक्कोसेणवि अतोमुज्जत्त । पज्जत्तयवालुयप्पन्नापुढविनेरइयाण जते ! केवइय काल छिइं पणत्ता ? गोय

म् । पर्याप्तज्ञकराप्रज्ञापृथिवीनैरियिकाणा जदत्त । कियन्न काल म्यिति प्रज्ञप्ता २ गीतम् । जयन्तेनान्तमुहूर्त्तौ न सागरोपम सुत्तपतोत्त  
 मंहुत्तौनानि त्रीणि सागरोपमणि । वालुकाप्रज्ञापृथिवीनैरियिकाणा नदत्त । कियन्त काल स्थिति प्रज्ञप्ता २ गीतम् । जयन्तेन त्रीणि सा  
 गरोपमणि उत्कर्षत सप्तसागरोपमणि । अपर्याप्तकमातुकाप्रज्ञापृथिवीनैरियिकाणा जदत्त । कियन्त काल स्थिति प्रज्ञप्ता २ गीतम् । जय  
 जयन्तेनान्तमुहूर्त्तमुत्कर्षतोप्यन्तमुहूर्त्तम् । पर्याप्तकवालुकाप्रज्ञापृथिवीनैरियिकाणा जदत्त । कियन्त काल स्थिति प्रज्ञप्ता २ गीतम् । जय

त्त ३० । त्तिवसागरोवमाइ अतोमुहत्तूणाइ । इभगवन् जवग्ग पक्कसागरोपम अतमंहुत्तकणो वट्ठुत्तोत्तसागरोपम अतमंहुत्तकणो । वाज्जयन्पुट  
 वीनेरइयाण भते क० । वालकप्रभाना नारकोनो कान्तास्थिति जमवन् । गोयमा जहत्तेण त्तिवसागरोवमाइ उ० सत्तसागरोपमाइ । इगीतम् ल  
 वग्गे तौनसागरोपम उत्कर्षेसातसागरोपम । अपत्तत्तत्तान्पभपुटोनेरइयाण भते क० । अपर्याप्ता वालुकाप्रभाना नारकोनो कित्तोस्थिति हेभगव  
 गोयमा जहत्तेण अतोमुहत्त उक्को० अतमुहत्त । इगीतम् जवग्ग अतमुहत्त वट्ठुत्त अतमुहत्त । पत्तत्तत्तान्पभपुटोनेरइयाण भते क० । पर्वोदइया  
 लकप्रभाना नारकोनो कित्तोस्थिति हेभगवन् । गोयमा जहत्तेण त्तिवसागरोवमाइ अतोमुहत्तूणाइ । इगीतम् जवग्गोत्तसागरोपम अतमंहुत्तकण ।  
 उ० सत्तसागरोवमाइ अतोमुहत्तूणाइ । उत्कर्षेसातसागरोपमनौ अतमुहत्त क० । पक्कसागरोवमाइ नारकोनो कित्तोस्थिति  
 कडो प्र० । उत्तर इगीतम् जवग्ग सात सागरोपम उत्कर्षेद्वय सागरोपमनौ स्थिति कडो । अपर्याप्ता पक्कसागरोवमाइ नारकोनो

द्रुलानां क्षानाथरणीयादिरूपतया परिणताना यदयस्थान सा स्थिति रितिप्रसिद्धं तथापि नारकादिव्यपदेशैस्तुरायु कर्मानुनूति स्तथाहि-यद्यपि नरकगतिपञ्चेन्द्रियचात्यादिनामकर्मदयाश्रयो नारकत्वपर्याय स्तथापि नारकायु प्रथमसमयसंबन्धनकालगव तत्त्वित्यन्तनारकदेशममाशेपि नारकस्य व्यपदेश लभ्यते, तथाच मीनीन्द्र प्रवचन-नेरडगण भते । नेरडगसु उववज्जड अनेरडग नेरडगसु उववज्जड २ गो० । नेरडग नेरडगसु उववज्जड नो अनेरडग नेरडगसु उववज्जड इत्यादि, तत सेवायु कर्मानुनूति रिह यथोक्तव्युत्पत्त्या स्थिति रजिगीयते इति, अत्र निर्वचनमाह-गो यमेत्यादि ॥ एतच्च पर्याप्तापर्याप्तविज्ञागात्रायेन सामान्यत उक्त यदा तु पर्याप्तापर्याप्तज्ञानेन चित्ता तदेद सूत्र-अपज्जतनेरडयाण भते । इत्यादि ॥ इहापयासा द्विविधा लब्ध्या करणैश्च तत्र नेरयिका देवा सङ्ख्यवर्णायुप स्तियमनुप्या करणैरेवाऽपर्याप्ता न लब्ध्यालब्धऽपर्याप्तकाना तेषु मध्ये उत्पादासम्भवात् तत एते उपपातकालगव करणै कियन्त कात मपयासा द्रष्टव्या, 'सेपास्तु तियमनुप्या ताड्या अपयासा उपपातकाले च, उक्तञ्च-नारगदेवातिरिमणु यगमज्जालेअसयवासाज । गस्अपज्जती इवजायवेववोचव्वा ॥ १ ॥ सेसायतिरियमणुया लद्धपपोववायकालेय । दुइउ विवज्ज'यद्या पज्जतिरियरियणिणवयण ॥ २ ॥ अपर्याप्तिका थ जघन्यत उतकपंतोवान्तमुहुत्त मत उक्त-गोयमा । जइत्तेण उक्कोमेणावि अतोमुत्त, ॥ अपयासाटापगमे च ओपकाल पर्याप्ताटा तत उक्त पयात्तमू-गोयमा । जइत्तेण दसवाससहस्साइ अतोमुहुत्तकणाइ उक्कोसेण तंतीस सागरोव माइ गतामुत्तकणाइ ॥ एतच्च पथिव्यऽविज्ञानेन चिन्तित सम्प्रति पृथिवीविज्ञानेन चिन्तयति-रयणपपजापुडविनेरडयाण भते । इत्यादि सुग

मा ! जहन्नेण तिन्नि सागरोवमाइ अतोमुहुत्तकणाइ सत्तसागरोत्रमाइ अतोमुहुत्तकणाइ पकप्प

येन गीणि सागरोपमाणि अत्तमुहुत्तानि उतकपंत सत्तसागरोपमाणि अत्तमुहुत्तानि । पद्धमजापृथिवीनेरियिकाणा जदत्त । कियन्त

वेभगवन् केतला कालनी स्थिति कहो प्र० । उत्तर हेगौतम जघन्य अत्तमुहुत्तं नो कहो । पज्जतव पकपमत्ति । पर्याप्ता पकपभाषयिथोना नारकौनी हे भगवन् केतला कालनी स्थिति कहो प्र० । उत्तर हे गौतम जघन्य अत्तमुहुत्तं गून् सात सागरोपम उतकट अत्तमुहुत्त

त्रापुढविनेरइयाणं जते ! केवइयं काल ठिई पखत्ता ? गोयमा ! जहखेणं सत्तसागरोवमाइं उक्खोसेणं दससागरोवमाइ । अपज्जत्तयपकप्पन्नापुढविनेरइयाण जते ! केवइय काल ठिई पखत्ता ? गोयमा ! जहखेणं अत्तोमुज्जत्त उक्खोसेणवि अत्तोमुज्जत्त । पज्जत्तयपकप्पन्नापुढविनेरइयाण जते ! केवइय काल ठिई पखत्ता ? गोयमा ! जहन्तेण सत्तसागरोवमाइ अत्तोमुज्जन्नाइ उक्खोसेण दससागरोवमाइ अत्तोमुज्जन्नाइ धूमप्पन्नापुढविनेरइयाण जते ! केवइय काल ठिई पखत्ता ? गोयमा ! जहखेण दससागरोवमाइ

काल स्थिति प्रज्ञप्ता ? गीतम । जघन्येन सत्तसागरोपमाणि उत्कर्षतो दशसागरोपमाणि, अपर्याप्तपङ्कप्रज्ञापृथिवीनैरयिकाणा अदत्त । कियन्त काल स्थिति प्रज्ञप्ता ? गीतम । जघन्यतो प्यत्तमुद्धतमुत्कर्षतोप्यत्तमुद्धतम्, पर्याप्तकपङ्कप्रज्ञापृथिवीनैरयिकाणा अदत्त । कियन्त काल स्थिति प्रज्ञप्ता ? गीतम । जघन्येन सत्तसागरोपमाणि अत्तमुद्धतानि उत्कर्षतो दशसागरोपमाणि अत्तमुद्धतानि । धूमप्रज्ञापृथिवीनैरयिकाणा अदत्त । कियन्त काल स्थिति प्रज्ञप्ता ? गीतम । जघन्येन दश सागरोपमाण्युत्कर्षत सप्तदश सागरोपमाणि । अपर्याप्तधूमप्रज्ञापृथिवीनैरयिकाणा जगवन् । कियन्त काल स्थिति प्रज्ञप्ता ? गीतम । जघन्येनाप्यत्तमुद्धत मुत्कर्षतोप्यत्तमुद्धतम् ।

सं गूढ दय सागरोपम नो कही । धूमप्रभापृथिवी ना नारकौनो हे भगवन् केतला कालनो स्थिति कही प्र० । उत्तर हे गीतम जव ग दय सागरोपम नो उत्कट सतरह सागरापम नो कही । अपज्जत्तय धूमसि । अपर्याप्त धूमप्रभा पृथिवीना नारकौनो हे भगवन् केतला काल नो स्थिति कही प्र० । उत्तर हे गीतम जवन् धूमप्रभा पृथिवीना नारकौनो हे भगवन् केतला कालनो स्थिति कही । पज्जत्तधूमसि । पर्याप्त धूमप्रभा पृथिवीना नारकौनो हे भगवन् केतला कालनो स्थिति कही प्र० । उत्तर हे गीतम जवन् अत्तमुद्धतं न्यून दय सागरोपम उत्कट अत्तमुद्धतं कम सतरे सागरोपम कही । तमप्पभति । तमप्रभा पृथिवीना नारकौनो हे भगवन् केतला काक्षनो स्थिति कही प्र० । उत्तर हे गीतम जवन् सतरह सागरोपम

उक्तीसेण सतरसागरीवमाह । अपज्जत्तयधूमप्यन्नापुढविणेरडयाणं जते । केवडय काल ठिई पयत्ता ? गो यमा । जहत्तेणवि अतोमुज्जत्त उक्तीसेणवि अतोमुज्जत्त । पज्जत्तयधूमप्यन्नापुढविणेरडयाण जते ! केवडय काल ठिई पयत्ता ? गोयमा । जहत्तेण दससागरीवमाह अतोमुज्जत्तूणाइ उक्तीसेण सतरसागरीवमाह अतोमुज्जत्तूणाइ , तमप्यन्नापुढविनेरडयाण जते । केवडय काल ठिई पयत्ता ? गोयमा । जहत्तेण सत रसागरावमाह उक्तीसेण वात्रीसनागरीवमाह । अपज्जत्तयतमप्यन्नापुढविनेरडयाण केवडय काल ठिई प० १ गोयमा । जहत्तेणवि अतोमुज्जत्त उक्तीसंणवि । अतोमुज्जत्त पज्जत्तयतमप्यन्नापुढविनेरडयाण जते ! केव

पर्याप्तवमप्रतापृषिवीनेरयिकाणा नदत्त । कियन्त काल स्थिति प्रज्ञप्ता १ गीतम् । जघन्येन दश सागरोपमाख्यन्तं नूतानानि उत्कृष्टत सप्तदशसागरोपमाख्यन्तमु हूतानानि , तमप्रज्ञापृषिवीनेरयिकाणा प्रदत्त । कियन्त काल स्थिति प्रज्ञप्ता ? गीतम् । जघन्येन सप्तदशसाग रोपमाख्यत्कपतो द्वाविंशति सागरोपमाणि । अपर्याप्ततमप्रज्ञापृषिवीनेरयिकाणा कियन्त काल स्थिति प्रज्ञप्ता १ गीतम् । जघन्येनान्तमु तूतं मुत्कर्षणाप्यन्तमु हूतम् । पर्याप्ततमप्रज्ञापृषिवीनेरयिकाणा प्रदत्त । कियन्त काल स्थिति प्रज्ञप्ता १ गीतम् । जघन्येन सप्तदश

उत्कृष्ट बावोस सागरापम नो कहो । अपर्याप्त तमप्रज्ञापृषिवीना नारकीनो ह भगवन् केतना काननो स्थिति कहो प्र० । उ चर ह गीतम् जघन्य पिण अन्तर्मुह्यं नो उत्कृष्ट पिण अन्तर्मुह्यं नो कहो । पर्याप्त तमप्रज्ञापृषिवीना नारकीनो ह भगवन् केतना कानना स्थिति कहो प्र० । उत्तर हे गीतम् जघन्य अन्तर्मुह्यं उत्कृष्ट सागरापमनो उत्कृष्ट अन्तर्मुह्यं गूढ बावोस म गीतम् नो कहो नृदेसत्तमसि । अधीमातमो पृषिवीना नारकीनो ह भगवन् केतना काननो स्थिति कहो प्र० । उत्तर ह गीतम् जघन्य बावोस सागरापम नो उत्कृष्ट तेतोस सागरापम ना प्ररूपो । अपल्लतय अहसत्तमसि । अपर्याप्त नाच सातमा पृषिवीना नारकीनो केतना काननो स्थिति प्ररूपो प्र० । उत्तर

उक्तोसेणं पणपन्नपल्लिउत्तमाइं अतोमुज्जत्तणाइं । अत्रणवासीणं ज्ञते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई प० ?  
 गोयमा ! जहन्नेण दसवाससहस्साइ उक्तोसेणं सातिरेण सागरोवस । अपज्जत्तयअवणवासीणं ज्ञते ! दे  
 वाण केवइय कालं ठिई प० ? गोयमा ! जहन्नेणवि अतोमुज्जत्त उक्तोसेणवि अतोमुज्जत्त । पज्जत्तयअ  
 वणवासीण ज्ञते ! देवाण केवइय कालं ठिई प० ? गोयमा ! जहन्नेण दसवाससहस्साइ अतोमुज्जत्तणा  
 इ उक्तोसेण सातिरेण सागरोवमं अतोमुज्जत्तण । अत्रणवासिणीण ज्ञते ! देवीण केवइय कालं ठिई प०

यन्त काल स्थिति प्रज्ञप्ता ? गीतम । जघन्यनात्तमुत्तुर्त्तानि दशवपसहस्राणि उत्तकपंत पञ्चपञ्चाशत्पल्योपमान्यन्तमुत्तुर्त्तानि ॥ अवन  
 वासिदेवाना जदन्त । कियन्त काल स्थिति प्रज्ञप्ता ? गीतम । जघन्येन दशपसहस्राणि उत्तकपंत सातिरेक सागरोपमम् । अ  
 पर्याप्तकन्नवनवासिदेवाना जदन्त । कियन्त काल स्थिति प्रज्ञप्ता ? गीतम । जघन्येनाप्यन्तमुत्तमुत्तमुत्तकपंतो प्यन्तमुत्तुर्त्तम् । पर्याप्तकन्नवन  
 वासिदेवाना जदन्त । कियन्त काल स्थिति प्रज्ञप्ता ? गीतम । जघन्येन दशवपसहस्राण्यन्तमुत्तुर्त्तानि उत्तकपंत सातिरेक सागरोपम  
 त्तमुत्तुर्त्तम् । अवनवासिनीना देवीना जदन्त । कियन्त काल स्थिति प्रज्ञप्ता ? गीतम । जघन्येन दशवपसहस्राण्युत्तकपंतो ऽद्वपञ्चमानि

ह्री । नवणवासोण भतेत्ति । भवनवासा देवतानो हे भगवन् केतना कालनो स्थिति कही मन् । उत्तर गीतम जघन्य यो दश हजार वर्षनो उत्कृष्ट यो  
 सातिरेज सागरोपम कही । अयज्जत्तयभवनवासोणत्ति । अपरोपेन भवनवासो देवतानो केतना कालनो स्थिति कही म० उत्तर गीतम जघन्य यो पि  
 यन्तमुत्तुर्त्तं उत्कृष्ट यो पि अन्नमुत्तुर्त्तं । पज्जत्तयभवनवासोणत्ति । पर्याप्त भवनवासी देवतानो हे भगवन् केतना कालनो स्थिति कही म० उत्तर  
 गीतम जघन्य यो दश हजार वर्षनो अन्नमुत्तुर्त्तं यन् उत्कृष्ट यो अन्नमुत्तुर्त्तं नून सातिरेक सागरोपम । भवनवासोणत्ति । भवनवासि देवीना  
 हे भगवन् केतना कालनो स्थिति कही म० उत्तर हे गीतम जघन्य यो दश हजार वर्षनो उत्कृष्ट यो साटे चार पल्लोपम नो कही । अपज्जत्तिया

१ गोयमा ! जहणेण दसवाससहस्साइ उक्कोसेण अरुपचमाइ ! पलिन्वमाइं अपज्जितियाणं जते !  
 नवणवासिणीण देवीण केवडय कालं ठिई प० ? गोयमा ! जहन्नेणवि अतोमुज्जत्तं उक्कोसेणवि अतोमु  
 ज्जत्त ! पज्जितियाण जते ! नवणवासिणीण देवीणं केवडय काल ठिई पणत्ता ? गोयमा ! जहणेण दसवा  
 समहस्साइ अतोमुज्जत्तूणाइ उक्कोसेण अरुपचमाइ पलिन्वमाइ अतोमुज्जत्तूणाइ ! असुरकुमाराण जते !  
 देवाण केवडय काल ठिई पणत्ता ? गोयमा ! जहणेण दसवाससहस्साइं उक्कोसेण साइरेण सागरोवम  
 अपज्जत्तयअसुरकुमाराण जते ! देवाण केवडय काल ठिई पणत्ता ? गोयमा ! जहणेणवि अतोमुज्जत्तं

( साङ्गचतु ) पत्तोपमानि । अपयाप्तजनवासिदेवीना प्रदत्त । कियत्त कात् स्थिति प्रज्जप्ता ? गीतम । जघन्येनाप्यन्तमुहूत्तं सुत्कर्पेणाय्य  
 त्तमुहूत्तम् । पर्याप्तजनवासिदेवीना प्रदत्त । कियन्त काल स्थिति प्रज्जप्ता ? गीतम । जघन्येन दशवर्षसहस्रायन्तमुहूत्तानि चरकपतो  
 दपचमानि पत्तोपमान्यन्तमुहूत्तानि ॥ असुरकुमाराणा प्रदत्त । कियन्त काल स्थिति प्रज्जप्ता ? गीतम । जघन्येन दशवर्षसहस्रायुत्क  
 पत्त सातिरेक सागरोपमम् । अपर्याप्तासुरकुमारदेवाना प्रदत्त । कियन्त काल स्थिति प्रज्जप्ता ? गीतम । जघन्येनाप्यन्तमुहूत्तं सुत्कर्पतो

ण भवणवासिणीणत्ति । अपर्याप्त भवनवासि देवीनो हे भगवन् केतसा कालनो स्थिति कही प्र० उत्तर हे गीतम जघन्य यो पिण अगतमुहूत्तं चत्कट  
 नो पिण अगतमुहूत्तं कही । पज्जत्तयाण भवणवासिणीणत्ति । पर्याप्त भवनवासो देवीनो हे भगवन् केतसा कालनो स्थिति कही प्र० उत्तर हे गीतम  
 जघन्य यो अगतमुहूत्तं न्यू दग्ग जार वप चत्कट यो अगतमुहूत्तं न्यू सण्डे चार पर्यापम नो कही । असुरकुमाराण भर्तेत्ति । असुरकुमारदेवतानो  
 हे भगवन् केतसा कालनो स्थिति कही प्र० च० हे गीतम जघन्य दग्गजार वर्षनो चत्कट यो सातिरेक सागरोपम नो कही । अपज्जत्त असुरकुमारा  
 णत्ति । अपर्याप्त असुरकुमारदेवतानो हे भगवन् केतसा कालनो स्थिति कही प्र० उत्तर गीतम जघन्य यो पिण अगतमुहूत्तं चत्कट पिण अगतमुहूत्तं

उक्षोसेणवि श्रुतोमुज्जतं । पञ्जतिव्यश्रुसुरकुमारारणं नते ! केवडयं कालं ठिई पसुत्ता ? गोयमा ! जहन्तेणं  
दसवाससहस्साइ श्रुतोमुज्जत्तणाड उक्षोसेणं सातिरेग सागरोवमं श्रुतोमुज्जत्तण । अश्रुसुरकुमारीणं नते !  
देवीण केवडय काल ठिई पसुत्ता ? गोयमा ! जहन्तेण दसवाससहस्साड उक्षोसेणं अश्रुपचमाइं पलिउ  
वमाइ । अपञ्जतिव्याणं अश्रुसुरकुमारीणं नते ! देवीण केवडय काल ठिई पसुत्ता ? गोयमा ! जहन्तेणवि  
श्रुतोमुज्जत उक्षोसेणवि श्रुतोमुज्जत । पञ्जतिव्याणं अश्रुसुरकुमारीणं नते ! केवडय काल ठिई पसुत्ता ? गो

प्यत्तमुं हूत्तम् । पर्याप्तकासुरकुमाराणा देवाना नदत्त । कियन्त काल स्थिति प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनात्तमुं हूत्तानि दशवपसहस्वा  
श्रुतकर्पत सातिरेक सागरोपममत्तमुं हूत्तानम् ॥ असुरकुमार देवीना नदत्त । कियन्त काल स्थिति प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन दशवप  
सहस्वाणुदुर्गपेतोइं पञ्चमानि पत्न्योपमानि । अपर्याप्तकासुरकुमारदेवीना नदत्त । कियन्त काल स्थिति प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनाप्यत्त  
मेदुत्तमुदुर्गपत्तमुं हूत्तम् । पर्याप्ता सुरकुमारदेवीना नदत्त । कियन्त काल स्थिति प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन दशवपसहस्वाण्यत्तमुं

नौ कहौ । पजत अश्रुसुरकुमाराराणति । पर्याप्त असुरकुमार देवतानौ हे भगवन् केतला कालनौ स्थिति कहौ प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थो अन्तमुं  
त्तं न्यून दश हजार वपनो उरकट थो अन्तमुं हूत्तं न्यून कुक्क अधिक सागरोपम कहौ । असुरकुमारीण भते देवीणति । असुरकुमार देवीनो हे भगवन्  
केतला कालनौ स्थिति कहौ प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य दश हजार वपनो उरकट साडे चार पत्न्योपमनौ कहौ । अपञ्जतिव्याण अश्रुसुरकुमारीण  
ति । अपर्याप्त असुरकुमारदेवीनो हे भगवन् केतलौ आयु कह्यो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थो पिण अन्तमुं हूत्तं नौ ।  
पञ्जतिव्याण अश्रुसुरकुमारीणति । पर्याप्ता असुरकुमारनौ देवीनो केतलौ आयु कह्यो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थो अन्तमुं हूत्तं न्यून दश हजार वपनो  
उरकट थो अन्तमुं हूत्तं न्यून साडे चार पत्न्योपमनौ कह्यो । नागकुमार देवतानौ हे भगवन् केतलौ आयु कह्यो प्र० उ० हे गौतम

यमा । जहणेण दसवाससहसाडं अतोमुज्जत्तणाइ अतोसणं अठ्ठपंचमाइ पलिनवमाइ अतोमुज्जत्तणाइ । नागकुमाराण नत । देवाण केवडय काल ठिइ पणत्ता ? गोयमा ? जहखेण दसवाससहसाड उक्कोसण ढोवि पलिनवमाइ देसूणाडं । अपज्जत्तयाणं नते ! नागकुमाराण देवाण केवडय काल ठिइ पणत्ता ? गोयमा ! जहणेण अतोमुज्जत्त उक्कोसणवि अतोमुज्जत्त । पज्जत्तयाण नते ! नागकुमाराण देवाण केवडय काल ठिइ पणत्ता ? गोयमा । जहखेण दसवाससहसाइ अतोमुज्जत्तणाइ उक्कोसणं दोसि पलिनवमाइ देसूणाइ अतोमुज्जत्तणाड । नागकुमारीण नते ! देवीण केवडय काल ठिइ पणत्ता ? गोयमा ! जहखेण

दूर्त्तानान्युत्कर्षतादुपचमनि पल्यापमान्यन्तमुहूर्त्तानि । नागकुमाराणां नदत्त । देवानां कियन्त काल स्थिति प्रज्ञाता ? गीतम ! जघन्येन दशवर्षसहस्राण्युत्कर्षतो देशीने द्वे पत्योपमे । अपर्याप्तकनागकुमाराणां नगवन् । कियन्त काल स्थिति प्रज्ञाता ? गीतम । जघन्य तोप्यन्तमुहूर्त्तमुत्कर्षतोप्यन्तमुहूर्त्तम् । पर्याप्तकानां नदत्त । नागकुमाराणां देवानां कियन्त काल स्थिति प्रज्ञाता ? गीतम ! जघन्येन दशवर्षसहस्राण्यन्तमुहूर्त्तानान्युत्कर्षतो देशीने द्वे पत्योपमेन्तमुहूर्त्तानि । नागकुमाराणां नदत्त । देवीनां कियन्त काल स्थिति प्रज्ञाता ? गीतम । जघन्येन दशवर्षसहस्राणि उत्कर्षतो (देशीन जन) दक्षीन (किञ्चिन्न्यून) पत्योपमम् । अपर्याप्तकनागकुमारीणां नदत्त । देवीनां कियन्त

जघन्य धौ दशवर्षा उत्कर्षतो देशीन दाय पत्यापम कक्षा । अपज्जत्तियाण नागकुमाराणां नदत्त । अपर्याप्त नागकुमारानां नगवन् कतलो आयु कक्षा प्र० ८० जघन्य धौ पिण अन्तर्मुहूर्त्त कक्षा उत्कर्षतो देशीन दाय पत्यापम कक्षा । अपज्जत्तियाण नागकुमाराणां नदत्त । देवानां कियन्त काल स्थिति प्रज्ञाता ? गीतम । जघन्य तोप्यन्तमुहूर्त्तमुत्कर्षतोप्यन्तमुहूर्त्तम् । पर्याप्तकानां नदत्त । नागकुमाराणां देवानां कियन्त काल स्थिति प्रज्ञाता ? गीतम । जघन्येन दशवर्षसहस्राणि उत्कर्षतो (देशीन जन) दक्षीन (किञ्चिन्न्यून) पत्योपमम् । अपर्याप्तकनागकुमारीणां नदत्त । देवीनां कियन्त



उक्षोसेणवि व्यतोमुज्जतं । पज्जत्तय्यसुरकुमाराणं भते ! केवडयं कालं ठिई पसत्ता ? गोयमा ! जहन्तेणं  
दसत्तासहस्साइं व्यतोमुज्जत्तणाइ उक्षोसेण सातिरेग सागरीवम व्यतोमुज्जत्तण । असुरकुमारीणं भते !  
देवीण केवडय काल ठिई पसत्ता ? गोयमा ! जहस्सेण दसत्तासहस्साइ उक्षोसेणं व्यरुपंचमाइं पल्लि  
वमाइं । व्यपज्जत्तियाणं असुरकुमारीणं भते ! देवीणं केवडय काल ठिई पसत्ता ? गोयमा ! जहस्सेणवि  
व्यतोमुज्जत्त उक्षोसेणवि व्यतोमुज्जत । पज्जत्तियाणं असुरकुमारीणं भते ! केवडय काल ठिई पसत्ता ? गो

प्यन्तमुत्तम् । पर्याप्तकासुरकुमाराणा देवाना भदन्त । कियन्त काल स्थिति प्रज्ञप्ता ? गीतम् । जघन्येनान्तमुत्तानानि दशवपसहस्त्रा  
व्युत्क्रपंत सातिरेक सागरोपममन्तमुत्तानम् ॥ असुरकुमार देवीना भदन्त । कियन्त काल स्थिति प्रज्ञप्ता ? गीतम् । जघन्येन दशवप  
सहस्त्राण्युत्क्रपंतोद्वपञ्चमानि पल्योपमानि । अपर्याप्तकासुरकुमारदेवीना भदन्त । कियन्त काल स्थिति प्रज्ञप्ता ? गीतम् । जघन्येनाप्यन्त  
मेत्तमुत्क्रपणाप्यन्तमुत्तम् । पर्याप्ता सुरकुमारदेवीना भदन्त । कियन्त काल स्थिति प्रज्ञप्ता ? गीतम् । जघन्येन दशवपसहस्त्राण्यन्तमु

नी कहौ । पज्जत्त असुरकुमाराणति । पर्याप्त असुरकुमार देवतानो हे भगवन् केतलो कालनो स्थिति कहौ प्र० उत्तर हे गीतम् जघन्य यो अन्तमे  
त्तं ग्यून दग हजार वर्षनो उत्क्रष्ट यो अन्तमेत्तं ग्यून कुक्खं त्रिदिक सागरोपम कहौ । असुरकुमारीण भते देवीणति । असुरकुमार देवीनो हे भगवन्  
केतलो कालनो स्थिति कहौ प्र० उत्तर हे गीतम् जघन्य दग हजार वर्षनो उत्क्रष्ट साट चार पल्योपमनो कहौ । अपज्जत्तयाण असुरकुमारीण  
ति । अपर्याप्त असुरकुमारदेवीनो हे भगवन् केतलो आयु कछो प्र० उ० हे गीतम् जघन्य यो पिण अन्तमेत्तं नो । उत्क्रष्ट यो पिण अन्तमेत्तं नो ।  
पज्जत्तियाण असुरकुमारीणति । पर्याप्ता असुरकुमारनो देवीनो केतलो आयु कछो प्र० उ० हे गीतम् जघन्य यो अन्तमेत्तं ग्यून दग हजार वर्षनो  
उत्क्रष्ट यो अन्तमेत्तं ग्यून साट चार पल्योपमनो कहौ । नागकुमार देवतानो हे भगवन् केतलो आयु कछो प्र० उ० हे गी०



उक्तीसेगवि अंतीमुजतं । पज्जत्तयअसुरकुमारानं भते । केवडयं कालं ठिई पसत्ता ? गोयमा ! जहन्तेणं  
 दसवाससहसाइ अंतीमुजत्तगाड उक्तीसेणं सातिरेग सागरीवम अंतीमुजत्तणं । असुरकुमारीण भते !  
 देवीण केवडय काल ठिई पसत्ता ? गोयमा ! जहसेण दसवाससहसाड उक्तीसेणं अरुपचमाडं पलिउं  
 वमाइ । अपज्जत्तियाणं असुरकुमारीणं भते ! देवीण केवडय काल ठिई पसत्ता ? गोयमा ! जहसेणवि  
 अंतीमुजत्त उक्तीसेगवि अंतीमुजत्त । पज्जत्तियाणं असुरकुमारीणं भते । केवडय काल ठिई पसत्ता ? गो

प्यत्तमुं हूत्तम् । पर्याप्तकासुरकुमाराणा देवाना जदत्त । कियन्त काल स्थिति प्रज्ञप्ता ? गीतम ! जघन्येनान्तमुं हूतीनानि दशवपसहसा  
 ण्युत्कर्षत सातिरेक सागरोपममन्तमुं हूतीनम् ॥ असुरकुमार देवीना प्रदत्त । क्रियन्त काल स्थिति प्रज्ञप्ता ? गीतम ! जघन्येन दशवपं  
 सहसाण्युत्कर्षतोद्वपब्बमानि पत्थोपमानि । अपर्याप्तकासुरकुमारदेवीना प्रदत्त । कियन्त काल स्थिति प्रज्ञप्ता ? गीतम ! जघन्येनाप्यन्त  
 मुं हूत्तमुत्कर्षेणाप्यन्तमुं हूत्तम् । पर्याप्ता सुरकुमारदेवीना प्रदत्त । कियन्त काल स्थिति प्रज्ञप्ता ? गीतम ! जघन्येन दशवपसहसाण्यन्तमुं

नी कहौ । पज्जत्त असुरकुमाराराणति । पर्याप्त असुरकुमार देवतानो हे भगवन् केतना कालनो स्थिति कहौ प्र० उत्तर हे गीतम जघन्य धो अन्तमुं हू  
 तं न्यून दग हजार वर्षनो उत्कट धी अन्तमुं हूतं न्यून कुक्क भविक सागरोपम कहौ । असुरकुमारीण भते देशेणति । असुरकुमार देवीनो हे भगवन्  
 केतना कालनो स्थिति कहौ प्र० उत्तर हे गीतम जघन्य दग हजार वर्षनो उत्कट साटे चार पत्थोपमनो कहौ । अपज्जत्तयाण असुरकुमारीण  
 ति । अपर्याप्त असुरकुमारदेवीनो हे भगवन् केतनो आयु कक्षां प्र० उ० हे गीतम जघन्य धो पिण अन्तमुं हूतं ना ।  
 पज्जत्तियाण असुरकुमारोणति । पर्याप्ता असुरकुमारनो देवीना केतनो आयु कक्षां प्र० उ० हे गीतम जघन्य धो अन्तमुं हूतं न्यून दग हजार वर्षनो  
 उत्कट धी अन्तमुं हूतं न्यून साट चार पत्थोपमनो कहौ । नागकुमार देवतानो हे भगवन् केतनो आयु कक्षां प्र० उ० हे गीतम

सेण ढी पलिनुवमाइं देसूणाइं अतोमुज्जत्तूणाइ । सुवणकुमारीण देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहणेण दनवा  
ससहस्साइ उक्कोसेण देसूण पलिनुवन । अप्पज्जत्तियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेणवि उक्कोसेणवि अप्प  
तोमुज्जत्त । पज्जत्तियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहणेण दसवाससहस्साइ अतोमुज्जत्तूणाइ उक्कोसेण देसूण  
पलिनुवम अतोमुज्जत्तूण, एव एएण अजिलावेण उहिअप्पज्जत्तपज्जत्तसूत्तत्तय देवाण देवीणय गेयइ जाव  
थणियकुमाराण जहा नागकुमाराण । पुढविकाइयाण नते । केवइय काल छिई प० ? गो० ! जहन्तेण अतो  
मुज्जत्तं उक्कोसेण वावीस वाससहस्साइ । अप्पज्जत्तपुढविसाइयाणं नते ! केवइय काल छिई प० ? गो० !

पणकुमारदेवीना पुच्छा ' गीतम । जघन्यम दशवपसरस्त्राण्णत्तपतो देशोन पत्थोपमम् । अपर्याप्तकुसुपंजुमारदवीना पुच्छा , गीतम ।  
जघन्येनाप्पुत्तपतोप्यन्तर्मुहुत्तम् । पयाप्तकुसुपंजुमारदेवीना पुच्छा ' गीतम । जघन्येन दशवपसरस्त्राण्णत्तर्मुहुत्तानानि उत्कर्षतो देशोन  
पत्थोपममन्तर्मुहुत्तानम् । एवमतेनाजिलापेनीयिमापर्याप्तपर्याप्तमूत्रय देवाना दवीनाञ्च ज्ञातव्य यावत्स्तनितकुमाराणा यथा नागकुमा  
राणाम् ॥ पुष्टिवीकरपिकाना नदन्त । कियत्काल स्थिति मच्च० ? गीतम । जघन्येनात्तर्मुहुत्तमुत्कर्षतो द्वविशतिवपसरस्त्राणि । अपर्याप्त

णकुमारीण पुच्छा । सर्वणकुमारीनां प्रत्य कौधा उत्तर हे गीतम जघन्य दशवजःसर्व उत्कर्ष देवान पत्थोपम । अपर्याप्तियाणं पुच्छा । अपर्याप्त मव  
णकुमार देवीना प्रत्य कौधा उत्तर हे गीतम जघन्य यो पिण अन्तर्मुहुत्तं उत्कर्ष यो पिण अन्तर्मुहुत्तं । पदरितं सर्वणकुमारना  
दवीनां प्रत्य कौधा उत्तर हे गीतम जघन्य अन्तर्मुहुत्तं नून दशवजःसर्व उत्कर्ष यो अन्तर्मुहुत्तं नून देवान पत्थोपम, दम पणे अभिलावे औत्तिक ?  
अपर्याप्त २ पर्याप्त ३ मव तीन देवता देवीना जाणवा यावत्स्तनितकार लगे कहवा निम नागकुमारने कछा तिम कहवा । पुष्टिवीकायिकना  
हे भगवन् कतला आयु कछा हे गीतम जवन् अन्तर्मुहुत्तं ना उत्कर्ष वावीसदजार वर्षना । अपज्जत्तयपुढविकारयाण्यति । अपर्याप्त द्वाविधौकायना

दसवाससहस्साड उक्तीसेण देगूण पलिउवम । अपज्जत्तियाणं नागकुमारीणं भते ! देवीण केवडय कालं  
ठिई प० ? गोयमा । जहसूण अतोमुज्जत उक्तीसेणवि अतोमुज्जत । पज्जत्तियाण नागकुमारीण भते !  
देवीण केवडयं काल ठिई प० ? गोयमा । जहन्तेण दसवाससहस्साड अतोमुज्जत्ताड उक्तीसेणं देसूग  
पलिउवम अतोमुज्जत्तण । सुवसकुमाराण भते ! देवाण केवडय काल ठिई पसत्ता ? गोयमा ! जहसूग  
दसवाससहस्साड उक्तीसेण दो पलिउवमाड देसूगाड । अपज्जत्तियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेणनि  
उक्तीसेणवि अतोमुज्जत । पज्जत्तियाणपुच्छा ? गोयमा ! जहसूण दसवाससहस्साड अतोमुज्जत्ताड उक्ती

काल स्थिति प्रज्ञप्ता ? गीतम । जघन्यतोप्यन्तर्मुहूर्तमुत्कपतोप्यन्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्तकनागकुमारीणा प्रदत्त । देवीना क्रियन्त काल स्थिति  
प्रज्ञा ? गीतम । जघन्येन दशवपंसहस्त्राण्यन्तर्मुहूर्तानि उत्कपतो दशोन पत्योपममन्तर्मुहूर्तानम् ॥ सुपगकुमाराणा जगवन् । देवाना क्रिय  
न्त काल स्थिति प्रज्ञा ? गीतम । जघन्येन दशवपंसहस्त्राण्युत्कपतो द्व पत्योपमे देशोने । अपर्याप्तकाना पुच्छा । गीतम । जघन्येनाप्युत्तम  
पतोप्यन्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्तकाना पुच्छा । गीतम । जघन्येन दशवपंसहस्त्राण्यन्तर्मुहूर्तानि उत्कपतो देशोने द्व पत्योपमेन्तर्मुहूर्ताने । सु

माराणात । अपर्याप्त नागकुमार देवीनो वभगवन् कतना आयु कथा प्र० ३० इ गौ० जघन्य पिण अन्तर्मुहूर्त उत्कट पिण अन्तर्मुहूर्त । पज्जत्तियाण  
नागकुमारीण । पर्याप्ते नागकुमारो देशोने द्व भगवन् कतलो आयु कथा प्र० ३० इ गौ० जघन्य अन्तर्मुहूर्त ग्यून दशहजार वपना उत्कट अन्तर्मुहूर्ते  
ग्यून देशान पत्योपम । सुवसकुमाराण्यति । सुवर्ग कुमार देयतानो कौतनो स्थिति कौतो प्र० उत्तर द्व गीतम जघन्य यो दशहजार वप उत्कट यो दे  
शान दोय पत्योपम । अपज्जत्तियाण पुच्छा, अपर्याप्त मर्णकुमारनो प्र० कौतो उत्तर द्व गीतम जघन्य यो पिण उत्कट यो पिण अन्तर्मुहूर्त । पज्जत्त  
याण पुच्छा । पर्याप्तनो प्र० कौतो उत्तर द्व गीतम जघन्य यो अन्तर्मुहूर्त ग्यून दशहजारवप उत्कट यो अन्तर्मुहूर्त ग्यून देयान दोय पत्योपम । सुव

पञ्चतयवादरपुढविकाइयाण पुच्छा ? गोयमा । जहणेणं अतोमुज्जतं उक्कोसेणं वावीसं वाससहस्साइ अतोमुज्जत्तूगाइ । अउकाइयाण भते । केवइय काल ठिई प० ? गोयमा । जहन्तेण अतोमुज्जत उक्कोसेण सत्तवाससहस्साइ । अपञ्चतयअउकाइयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहणेणवि उक्कोसेणवि अतोमुज्जत्त । पञ्चतयअउकाइयाण पुच्छा ? गोयमा । जहणेण अतोमुज्जत उक्कोसेण सत्तवाससहस्साइ अतोमुज्जत्तकणिअइ । अउकाइयाण उहियाण अपञ्चतयाणं पञ्चतयाण जहा सुज्जमपुढविकाइयाण तथा मा

मैरुत्तमुत्कपतो द्वाविशतिवर्षसस्त्राणि । अपर्याप्तकवादरपृथिवीकायिकाना पृच्छा , गौतम ! जघन्येनाप्यन्तर्मुहूर्तमुत्कपतोप्यन्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्तकवादरपृथिवीकायिकाना पृच्छा , गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कपतो द्वाविशतिवर्षसस्त्राण्यन्तर्मुहूर्तानि ॥ अर्कायिकाना प्रदन्त ! कियन्त काल स्थिति प्रज्ञ० ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कपत सप्तवर्षसहस्त्राणि । अपर्याप्तकायिकाना पृच्छा , गौतम ! जघन्येनाप्युत्कपतोप्यन्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्तकायिकाना पृच्छा , गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कपत सप्तवर्षसहस्त्राण्यन्तर्मुहूर्तानि । अर्का

गौतम जघन्य यो अन्तर्मुहूर्तं नो उत्कृष्टं यो बावौसहजारवर्षं नो । अपलत्तयवादरपुढविकायियाणति । अपर्याप्त वादर पृथिवीकायिक नो प्रज्ञ को धो उत्तर हे गौतम जघन्य यो पिण उत्कृष्टं यो पिण अन्तर्मुहूर्तं ना । पञ्चतयवादरपुढविति । पर्याप्त वादरपृथिवीकायिक नो प्र० कीधो उत्तर हे गौतम जघन्य यो अन्तर्मुहूर्तं नो उत्कृष्टं यो अन्तर्मुहूर्तं न्यून बावीसहजार वर्षं नो । आउकाइयाण भते ति । अर्कायिक नो हे भगवन् केतलो आयु कथो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य यो अन्तर्मुहूर्तं नो उत्कृष्टं यो सातहजारवर्षं नो । अपलत्तयवाउकाइयाणति । अपर्याप्तकायिक नो प्र० कीधो उत्तर हे गौतम जघन्य यो पिण उत्कर्षं यो पिण अन्तर्मुहूर्तं नो कथो । पञ्चतय आउकाइयाणति । पर्याप्त अर्कायिक नो प्र० कीधो उत्तर हे गौतम जघन्य यो अन्तर्मुहूर्तं उत्कर्षं यो सातहजारवर्षं अन्तर्मुहूर्तं न्यून । आउकाइयाण आहियाणति । अर्कायिक औषिक १ अपर्याप्त २ पर्याप्तने जिम स

जहन्तेणवि उक्कोसेणवि अतोमुज्जतं । पज्जत्तयपुढविक्काइयणं भते ! केवडयं कालं ठिडं प० ? गोयमा !  
 जहन्तेणं अतोमुज्जतं उक्कोसेण वावीसं वाससहस्साइ अतोमुज्जत्तूणाड । सुज्जमपुढविक्काइयाण पुच्छा ?  
 गोयमा ! जहन्तेणवि उक्कोसेणवि अतोमुज्जत अत्तयसुज्जमपुढविक्काइयाण पुच्छा ? गोयमा ! जह  
 न्तेणवि उक्कोसेणवि अतोमुज्जत । पज्जत्तयसुज्जमपुढविक्काइयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेणवि उक्कोसे  
 णवि अतोमुज्जत । वादरपुढविक्काइयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेण अतोमुज्जतं उक्कोसेण वावीसं वा  
 ससहस्साइ । अपज्जत्तयवादरपुढविक्काइयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेणवि उक्कोसेणवि अतोमुज्जतं ।

कपुथिवीकायिकाना नदत्त । कियत्काल स्थिति प्रश्न० गीतम । जघन्यतोप्युत्कपंतोप्यन्तमुद्भूतम् । पर्याप्तकपुथिवीकायिकाना नदत्त ।  
 कियन्त काल स्थिति प्रश्न० गीतम । जघन्यनान्तमुद्भूतं मुत्कपंतो हायिजातिवर्षसस्त्रायन्तमुद्भूतानि । सूक्ष्मपुथिवीकायिकाना पुच्छा,  
 गीतम । जघन्यतोप्यन्तमुद्भूतमुत्कपंतोप्यन्तमुद्भूतम् । अपर्याप्तकमूक्ष्मपुथिवीकायिकाना पुच्छा, गीतम । जघन्येनाप्युत्कर्षेणाप्यन्तमुद्भूतम् ।  
 पर्याप्तकमूक्ष्मपुथिवीकायिकाना पुच्छा, गीतम । जघन्यतोप्युत्कपंतोप्यन्तमुद्भूतम् । वादरपुथिवीकायिकाना पुच्छा, गीतम । जघन्यनान्त

हे भगवन् केतलो आयु कछो प्रश्न उत्तर हे गीतम जघन्य धो पिण अन्तमुद्भूतं उत्कट धो पिण अन्तमुद्भूतं नो कछो । पज्जत्तपटविकाइयाणति । पर्या  
 प्त पुथिवीकाय नो हे भगवन् केतलो आयु कछो प्रश्न उत्तर हे गीतम जघन्य धो अन्तमुद्भूतं उत्कट धा अन्तमुद्भूतं गून् टगहजारउर्य नो कछो । म  
 मपुढविक्काइयाणति । सूक्ष्मपुथिवीकाय ना प्रश्न कौधा उत्तर हे गीतम जघन्य धो पिण उत्कट धो पिण अन्तमुद्भूतं नो । अपज्जत्तयसुज्जमप० । अपर्या  
 प्त सूक्ष्मपुथिवीकायिक नो प्र० कौधा उत्तर हे गीतम जघन्य धो पिण उत्कट धो पिण अन्तमुद्भूतं नो । पज्जत्तयसुज्जमपि । पर्याप्तसूक्ष्मपुथिवीकायिक  
 ना प्र० कौधा उत्तर हे गीतम जघन्य धो पिण उत्कट धो पिण अन्तमुद्भूतं नो । वादरपुढविक्काइयाणति । वादरपुथिवीकाय नो प्र० कौधा उत्तर हे

उक्तीसेणं तिरिण राइदियाइं अतोमुजत्तूणाइं । सुज्जमत्तेउकाइयाणं पुच्छा ? गो० । जहन्नेणवि उक्तीसेणवि अतोमुजत्त । अपज्जत्तापज्जत्ताण सुज्जमाण पुच्छा ? गो० । जहन्नेणवि उक्तीसेणवि अतोमुजत्त । वायरत्ते उकाइयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण अतोमुजत्त उक्तीसेण तिरिण राइदियाइ । अपज्जत्तयाण पुच्छा, ? गोयमा । जहणेणवि उक्तीसेणवि अतोमुजत्त । पज्जत्तयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहणेण अतोमुजत्त उक्तीसेण तिरिण राइदियाइ अतोमुजत्तूणाइ । वाउकाइयाण जत्ते ! केवडय कालं ठिई प० ? गोयमा ! जहन्नेण अतोमुजत्त उक्तीसेण तिरिण वासमहस्साइ । अपज्जत्तवाउकाइयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहणे

नाप्युत्कपतोप्यन्तमुत्तुत्तम् । अपयास्तपयास्तसूक्ष्मतेजस्कायिकाना पृच्छा, गीतम् । जघन्येनाभ्युत्कपतोप्यन्तमुत्तुत्तम् । वादरत्तजस्कायिकाना पृच्छा, गीतम् । जघन्येनात्तमुत्तुत्तमुत्कप्यंतस्त्रीणि रात्रिदिवानि । अपयोस्तकवादरत्तेजस्कायिकाना पृच्छा, गीतम् । जघन्यनोत्तरुपताप्यन्त मुत्तुत्तम्, पयोस्तकवादरत्तजस्कायिकाना पृच्छा, गीतम् । जघन्येनात्तमुत्तुत्तमुत्कप्यंतस्त्रीणि रात्रिदिवानि अन्तमुत्तुत्तानि । वायुकायिकाना

य यो तीन रात्रिदिन । सुदृढतेउका-याणति । मून्मतेजस्कायिक ना प्र० कौधा उत्तर हे गीतम् जघन्य यो पिण उत्कप यो पिण अन्तमुत्तुत्तं नो कल्या । अपज्जत्तापज्जत्ताण सुदृढमाण । अपयोस्त पयोस्त सूक्ष्म तेजस्कायिक ना प्र० कौधा उत्तर हे गीतम् जघन्य यो पिण उत्कप्ये यो पिण अन्तमुत्तुत्तं ना । वाद रत्तेउका-याणति । वादरत्तेनस्काय ना प्र० कौधा उत्तर हे गीतम् जघन्य अन्तमुत्तुत्तं उत्तल्लट तीन अहोरात्र । अपज्जत्तयाणति । अपयोस्त वादरत्तेन स्काय ना प्र० कौधा उत्तर हे गीतम् जघन्य यो पिण उत्कप्ये या पिण अन्तमुत्तुत्तं । पज्जत्ताणति । पयोस्त वादर तेजस्काय ना प्र० कौधा उत्तर हे गी तम् जघन्य यो अन्तमुत्तुत्तं उत्कप्ये यो तीन रात्रिदिन अन्तमुत्तुत्तं ज्ञान । वाउकाइयाणात् । वायुकायिक नो हे भगवत् ज्ञाना कालना स्थिति कही । गीतम् जघन्ययो अन्तमुत्तुत्तं नो उत्कप्ये या तीन हजार-पं नो । अपज्जत्तयाणकारवाणति । अपयोस्त वायुकायिक ना प्र० कौधा उत्तर हे गीतम् जघ



णिग्रहं । वादरच्या उकाडयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण अतोमुज्जतं उक्कोसेणं सत्तवाससहरमाइं अपज्जा  
तयवादरच्या उकाडयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अतोमुज्जतं । पज्जत्तयाण पुच्छा ?  
गोयमा ! जहन्नेणं अतोमुज्जतं उक्कोसेण सत्तवाससहरसाइं अतोमुज्जन्नाइं । सेउकाडयाणं जते ! केवइय  
काल ठिईं पणत्ता ? गोयमा ! जहन्नेण अतोमुज्जत उक्कोसेण तिरिण राइंदियाइं । अपज्जत्तयाणं पुच्छा  
? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अतोमुज्जत । पज्जत्तयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण अतोमुज्जतं

यिकानामौघिकानामपर्याप्तकाना पर्याप्तकाना यथा सूक्ष्मपृथिवीकायिकाना "द्रणित", तथा प्रणितव्यम् । वादराप्यायिकाना पुच्छा, गौत  
म । जघन्यनान्तर्मुहूत्तमुत्कपत सप्तधर्पसहस्राणि । अपर्याप्तवादराप्यायिकाना पुच्छा, गौतम । जघन्येनाप्युत्कपतोप्यन्तर्मुहूत्तं । पर्याप्तका  
ना पुच्छा, गौतम । जघन्येनान्तर्मुहूत्तमुत्कपत सप्तधर्पसहस्राण्यन्तर्मुहूत्तानि । तेजस्कायिकाना ज्रदन्त । क्रियन्त काल स्थिति प्रज्ञ० ?  
गौतम । जघन्येनान्तर्मुहूत्तमुत्कपतस्त्रीणि रात्रिदिवानि । अपर्याप्तकाना पुच्छा, गौतम । जघन्येनाप्यन्तर्मुहूत्तमुत्कपतोप्यन्तर्मुहूत्तम् । पर्या  
प्तकाना पुच्छा, गौतम । जघन्येनान्तर्मुहूत्तमुत्कपतस्त्रीणि रात्रिदिवानि अन्तर्मुहूत्तानि । सूक्ष्मतेजस्कायिकाना पुच्छा, गौतम । जघन्ये

स्म पृथिव्या कायिकन कक्षा तिम कहवो । वादर आधुक्ताद्याणति । वादर अध्यायिकनो प्र० कौधो हे गौतम जघग यो अन्तर्मुहूत्तं उत्कृष्ट यो मात  
हजारधर्प नी कक्षा । अपज्जत्तवादर आउकाद्याणति । अपर्याप्तवादर आकायिक नो प्रथ उत्तर हे गौतम जघन्य यो पिण उत्कर्षं यो पिण अन्तर्मुहू  
त्तं । पलत्त्याणति । पर्याप्तक नो प्र० कौधो उत्तर हे गौतम जघन्य यो अन्तर्मुहूत्तं उत्कर्षं यो सातहजारधर्प अन्तर्मुहूत्तं जन कक्षो । तेजकाद्याणति ।  
तेजस्ताग नो प्र० कौधो उत्तर हे गौतम जघच यो अन्तर्मुहूत्तं उत्कर्षं यो तीन अहोरात्र । अपज्जत्तियाणति । अपर्याप्त तेजस्तागिक नो प्र० कौधो उ०  
हे गौतम जघग यो पिण उत्कर्षं यो पिण अन्तर्मुहूत्तं । पज्जत्तियाणति । पर्याप्त तेजस्तायिक नो प्र० कौधो उ० हे गौतम जघन्य अन्तर्मुहूत्तं नो उत्ता

॥ मध्य ॥

|| **॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥** ||

२ भाग ॥

उक्तीसेण तिसिण राइदियाइं अतोमुजत्तूणाइं । सुजमत्तैउकाइयाणं पुच्छा ? गो० ! जहन्नेणवि उक्तीसेणवि अतोमुजत्त । अपज्जत्तापज्जत्ताण सुजमाण पुच्छा ? गो० । जहन्नेणवि उक्तीसेणवि अतोमुजत्त । वायरत्त उकाइयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण अतोमुजत्त उक्तीसेण तिसिण राइदियाइ । अपज्जत्तयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहर्णेणवि उक्तीसेणवि अतोमुजत्त । पज्जत्तयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहर्णेण अतोमुजत्त उक्तीसेण तिसिण राइदियाइ अतोमुजत्तूणाइ । वाउकाइयाण नत्तै ! केवडय काल ठिई प० ? गोयमा ! जहन्नेण अतोमुजत्त उक्तीसेण तिसिण वाससहस्साइ । अपज्जत्तयाउकाइयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहर्णे

[illegible]

गवि उक्क्षोसेगवि अतोमुज्जत । पज्जत्ताण पुच्छा ? गोयसा ! जहसेगं अतोमुज्जतं उक्क्षोसेणं तिसि वा  
ससहस्साइं अतोमुज्जत्ताण । सुज्जमवाउकाइयाण पुच्छा ? गोयसा ! जहसेगवि उक्क्षोसेणवि अतोमु  
ज्जत । अपज्जत्ताणं पुच्छा ? गोयसा ! जहसेगवि उक्क्षोसेगवि अतोमुज्जत । पज्जत्ताण पुच्छा ? गो  
यसा ! जहसेगवि उक्क्षोनेगवि अतोमुज्जत । वादवाउकाइयाणं पुच्छा ? गोयसा ! जहसेण अतोमुज्ज  
तं उक्क्षोसेणं तिसि वाससहस्साइं । अपज्जत्तावादवाउकाइयाणं पुच्छा ? गोयसा ! जहसेणवि उक्क्षोसे

पुच्छा, गीतम । जघन्येनात्तमुहुत्तमुत्कपतस्त्रीणि वयंसहस्त्राणि । अपर्याप्तवायुकायिकाना पुच्छा, गीतम । जघन्येनाप्युत्कपतीप्पत्तमुहुत्तं  
म् । पर्याप्तकाना पुच्छा, गीतम । जघन्येनान्तमुहुत्तमुत्कपतस्त्रीणि वयंसहस्त्राण्यन्तमुहुत्तानि ॥ मत्तवायुकायिकाना पुच्छा, गीतम । ज  
घन्यतोप्युत्कपतीप्पत्तमुहुत्तम् । अपर्याप्तकाना पुच्छा, गीतम । जघन्यतोप्युत्कपतीप्पत्तमुहुत्तम् । पर्याप्तकाना पुच्छा, गीतम । जघन्येना  
प्युत्कपतीप्पत्तमुहुत्तम् । वादवायुकायिकाना पुच्छा, गीतम । जघन्येनात्तमुहुत्तमुत्कपतस्त्रीणि वयंसहस्त्राणि । अपर्याप्तवादवायुकायि

ग्य यो पिण उत्कट यो पिण अग्निमुहुत्तं । पज्जत्ताणति । पर्याप्त वायुकायिकाना प्र० कीधो उत्तर हे गीतम जघन्य यो अन्तमुहुत्तं उत्कट या तोनहजार  
वयं अन्तमुहुत्तं जना मुहुत्तवायुकायिकानाति । मूत्तवायुकायिकाना प्र० कीधो उत्तर हे गीतम जघन्य यो पिण उत्कट यो पिण अन्तमुहुत्तं । अपज्जत्ताण  
ति । अपर्याप्त मूत्तवायुकायिकाना प्र० कीधो उत्तर हे गीतम जघन्य यो पिण उत्कट यो पिण अन्तमुहुत्तं । पज्जत्ताणति । पर्याप्त मूत्तवायुकायि  
प्र० कीधो उत्तर हे गीतम जघन्य यो पिण उत्कट यो पिण अन्तमुहुत्तं । वाद वादकायिकानाति । वाद वायुकायिकाना प्र० कीधो उत्तर हे गीतम ज  
घन्य यो अन्तमुहुत्तं उत्कट तोनहजारवयं नो । अपज्जत्तावादवाउकाइयाणति । अपर्याप्तवादवायुकायिकाना प्र० कीधो उत्तर हे गीतम जघन्य यो  
पिण उत्कट यो पिण अन्तमुहुत्तं । पज्जत्तावादवायुकायिकाना प्र० कीधो उत्तर हे गीतम जघन्य यो अन्तमुहुत्तं उत्कट यो तोन

णवि अतोमुज्जत । पज्जत्तवाटरवाउकाडयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहणेण अतोमुज्जतं उक्खोसेण तिरिणि  
वाससहस्साइ अतोमुज्जत्तूणाइ । वणस्सडकाडयाण जतं । केवइय काल ठिडं पणत्ता ? गोयमा ! जहसेण  
अतोमुज्जत उक्खोमेण दसवाससहस्साइ । अपज्जत्तयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहणेणवि उक्खोमेणवि  
अतोमुज्जत । पज्जत्तयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेण अतोमुज्जत उक्खोसेण दसवाससहस्साइ अतोमुज्ज  
त्तूणाइ । सुजमवणस्सडयाकाइण उहियाण अपज्जत्तापज्जत्ताणय अतोमुज्जत । वादरवणस्सडकाडयाण

काना पृच्छा' गीतम । जघन्येनाप्युत्कपंतोप्यन्तमुहुत्तम् । पर्याप्तवाटरवायुजायिकाना पृच्छा, गीतम । जघन्येनान्तमुहुत्तमुत्कपतच्छीणि व  
पसहस्साण्यन्तमुहुत्तानि ॥ वतस्परिकायिकाना अदन्त । कियन्त काल स्थिति प्रश्न ? गीतम । जघन्येनान्तमुहुत्तमुत्कपंतो दशवर्षसह  
स्त्राणि । अपर्याप्तकाना पृच्छा, गीतम । जघन्येनाप्युत्कपंतोप्यन्तमुहुत्तम् । पर्याप्तकवनस्परिकायिकाना पृच्छा, गीतम । जघन्येनान्तमुहुत्तमु  
त्कपंतो दशवर्षसहस्त्राण्यन्तमुहुत्तानि । सुक्ष्मवनस्परिकायिकानामपर्याप्तपयाप्तकाना ज्ञान्तमुहुत्तम् ॥ वादरवनस्परिकायिकाना  
पृच्छा, गीतम । जघन्येनान्तमुहुत्तमुत्कपंतो दशवर्षसहस्त्राणि । अपर्याप्तवाटरवनस्परिकायिकाना पृच्छा, गीतम । जघन्येनोत्कपंतयान्त

हजारवर्ष अन्तमुहुत्तं जन । वणस्सरकावियाणति । वनस्पतिकाऽक नो इ भगवन् केत्ता काज्जनो स्थिति कही । हे गीतम जघन्य यो अन्तमुहुत्तं  
उत्कपन्त दश हजार वर्षेनो । अपल्लत्तियाण पुच्छा । अपर्याप्त वनस्पतिकाय नो प्रयु कोधो उत्तर हे गीतम जघन्य यो पिण उत्कपन्त यो पिण अन्तमुहुत्तं  
पल्लत्तयाणति । पर्याप्त वनस्पतिकाय नो प्र० कोधा उत्तर हे गीतम जघन्य यो पग्गममुहुत्तं उत्कपन्त यो दग्गद्वारवर्ष अन्तमुहुत्तं जन । सुद्धमवणस्स  
काइयाणति । सुक्ष्मवनस्पतिकायिक औविक्क अपर्याप्त पर्याप्त नो अन्तमुहुत्तं ना प्रायु कही । वाटरवणस्सरकाइयाणति । वादरवनस्पतिकाय नो प्र०  
कोधा उत्तर हे गीतम जघन्य अन्तमुहुत्त उत्कपन्त दश हजारवर्षेनो कया । अपल्लत्तवाटर वणस्सरकाइयाणति । अपर्याप्त वाटर वनस्पतिकाय ना प्र०

कौंधो हे गीतम नवग्न यो पिण उत्कर्षं यो पिण श्रेत्सुमुहूर्त्तं । पञ्जस्रवाटर वणस्त्रादकाश्याणति । पर्याप्त वाटर वनस्त्राति कायि नो प्र० कौंधो उत्तर हे  
 गीतम जवत्य यो अतसुमुहूर्त्तं उत्कर्षं यो दगहजारवप नो अतसुमुहूर्त्तं गून । वेददियाणति । वेददियनो हे भगवन् कतला कासनी स्थिति कहो प्रश्न  
 उत्तर हे गीतम जवत्य यो अतसुमुहूर्त्तं उत्कर्षं यो वारेवप । अपञ्जस्रयाण वेददियाणति । अपर्वाप्त ह्यान्द्रिय नो प्र० कौंधो उत्तर हे गीतम जवत्य था  
 पिण प्र० मुहूर्त्त उत्कर्षं यो पिण अतसुमुहूर्त्तं । पञ्जस्रवेद दियाणति । पर्याप्त वेद द्रिय नो प्र० उत्तर हे गीतम जवत्य प्रगतमुहूर्त्त उत्कर्षं यो वारे वप  
 अतसुमुहूर्त्तं ज्ञत । तेद दियाणति । तारादग्नो हे भगवन् कतला कासनी स्थिति कहो प्र० उत्तर हे गीतम जवत्य यो अतसुमुहूर्त्त उत्कर्षं यो जगुण

उक्तीसेण एगूणवणराइदिथाड । अपज्जत्तेइदिथाण पुच्छा ? गोयमा ! जहणेणवि उक्तीसेणवि अतोमु  
 जत्त । पज्जत्तेइदिथाण पुच्छा ? गोयमा ! अतोमुजत्त जहणेण उक्तीसेण एगूणवणराइदिथाड अतोमु  
 जत्तूगाइ । चउरिदिथाण जत्त । केवइय काल ठिहं पयात्ता ? गोयमा ! जहणेण अतोमुजत्त उक्तीसेण  
 वग्गसा । अप्पज्जत्तयचउरिदिथाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेणवि उक्तीसेणवि अतोमुजत्त । पज्जत्तयचउ  
 रिदिथाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेण अतोमुजत्त उक्तीसेण वग्गसा अतोमुजत्तूणा । पचिदियतिरिक्क  
 जोणियाण जत्त ! केवइय काल ठिहं प० ? गोयमा ! जहन्तेण अतोमुजत्त उक्तीसेण तिथि पल्लवमाड ।

पुच्छा, गीतम । जघन्येनोत्कपत्त धाल्लमुहुत्तम् । पर्याप्तत्रोन्द्रियाणा पृच्छा, गीतम । जघन्येनात्तमुहुत्तमुत्कपत्त मकोनपप्वाश्रयादिधानि  
 अत्तमुहुत्तानि । चतुरिन्द्रियाणा पृच्छा, गीतम । जघन्येनात्तमुहुत्तमुत्कपत्त परमासा । अपर्याप्तकवतुरिन्द्रियाणा पृच्छा, गीतम । जघ  
 न्येनाप्युत्कपतोप्यत्तमुहुत्तम् । पर्याप्तकवतुरिन्द्रियाणा पृच्छा, गीतम । जघन्येनात्तमुहुत्तमुत्कपत्त परमासा अत्तमुहुत्ताना ॥ पञ्चेन्द्रिय

वास अहोरात्र । अपज्जत्तेइदिथाणति । अपर्याप्त तैरिद्रिय नो प्र० उत्तर हे गीतम जघय यो पिण अत्तमुहुत्तं । पज्जत्तेइदिथाण  
 ति । पर्याप्त तैरिद्रिय ना प्र० कौधा उत्तर हे गीतम जघय यो अत्तमुहुत्तं उत्कपं यो उगुणवास अहोरात्र अत्तमुहुत्तं जन । चउरिदिथाणति । चो  
 रिद्रियनो हे भगवन् केतला कालनो स्थिति कहो प्र० उत्तर हे गीतम जघय यो अत्तमुहुत्तं उत्कट यो क माननो कहो । अपज्जत्तयचउरिदिथाण  
 ति । अपर्याप्त चतुरिद्रियनो केतला कालनो स्थिति कहो प्र० उत्तर हे गीतम जघय यो पिण अत्तमुहुत्तं कहो । पज्जत्तयचउरिदिथा  
 णति । पर्याप्त चौरिद्रियनो केतला कालनो स्थिति कहो प्र० उत्तर हे गीतम जघय यो अत्तमुहुत्तं उत्कट यो अत्तमुहुत्तं न्यू क मास । पचिदियति  
 रिक्कजोणियाणति । पचिदियतिर्यच यानिकनो हे भगवन् केतला कालनो स्थिति कहो प्र० उत्तर हे गीतम जघय यो अत्तमुहुत्तं उत्कट यो तीन पण्यो

अपज्जत्तपचिदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहसेणवि उक्कोसेणवि अतोमुज्जत्तं, पज्जत्तप  
चिदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहसेणं अतोमुज्जत्त उक्कोसेण तिसि पल्लिनुयमाइ अतो  
मुज्जत्तणाइ । सम्मूच्छिमपचिदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेणं अतोमुज्जत्त उक्कोसेण  
पुल्लकोढी । अपज्जत्तयसम्मूच्छिमपचिदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहसेणवि उक्कोसेणवि  
अतोमुज्जत्त । पज्जत्तयसम्मूच्छिमपचिदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेण अतोमुज्जत्तं उ

तियंयोगिनिकाना नदत्त । कियत्त काल स्थिति. प्रचरता ? गीतम । जघन्येनान्तमुद्धत्तमुत्कपत्तच्छीणि पत्थोपमानि । अपर्याप्तकपप्पेन्द्रियोत  
यंयोगिनिकाना पुच्छा, गीतम । जघन्येनाप्युत्कपत्तोप्यन्तमुद्धत्तम् । पर्याप्तपप्पेन्द्रियतियंयोगिनिकाना पुच्छा, गीतम । जघन्येनान्तमुद्धत्तमुत्कपत्त  
पत्तस्तीणि पत्थोपमान्यन्तमुद्धत्तानि । सम्मूच्छिमपप्पेन्द्रियतियंयोगिनिकाना पुच्छा, गीतम । जघन्येनान्तमुद्धत्तमुत्कपत्त पव्वकोटि । अप  
र्याप्तकसम्मूच्छिमपप्पेन्द्रियतियंयोगिनिकाना पुच्छा, गीतम । जघन्यत्त उत्कपत्तद्यान्तमुद्धत्तम् । पर्याप्तसम्मूच्छिमपप्पेन्द्रियतियंयोगिनिकाना पु  
च्छा, गीतम । जघन्येनान्तमुद्धत्तमुत्कपत्त पर्यकोटिरन्तमुद्धत्ताना । गमयुत्तकान्तिकपप्पेन्द्रियतियंयोगिनिकाना पुच्छा, गीतम । जघन्येनान्त

पम । अपज्जत्तपचिदियति । अपर्याप्त पचेद्विय तियेव योनिक नो प्रय उत्तर हे गीतम जघन्य यो पिण उत्तरकपं यो पिण अन्तमुद्धत्तं । पज्जत्तपचिदिय  
ति । पर्याप्त पचेद्विय तियेव योनिक नो प्र० उत्तर हे गीतम जघन्य यो अन्तमुद्धत्तं उत्तरकपं यो तोन पन्नापम अन्तमुद्धत्तं न्यून । सम्मूच्छिमपचिदियति  
रिक्खजोणियाणति । सम्मूच्छिम पचेद्विय तियेव योनिक नो प्र० कोधो उत्तर हे गीतम जघन्य यो अन्तमुद्धत्तं उत्तरकपं यो पूर्वकोटो । अपज्जत्तयसम्मूच्छि  
मति । अपर्याप्त सम्मूच्छिम पचेद्विय तियेव नो प्र० उत्तर हे गीतम जघन्य यो पिण उत्तरकपं यो पिण अन्तमुद्धत्तं । पज्जत्तयसम्मूच्छिमति । पर्याप्त सम  
ूच्छिम पचेद्विय तियेव योनिक नो प्र० उत्तर हे गीतम जघन्य यो अन्तमुद्धत्तं उत्तरकपं यो अन्तमुद्धत्तं न्यून पूर्वकोटो । गमयुत्तकान्तिक

क्षोसेण पुव्वकोप्पी अतोमुज्जत्तूणा । गप्पवक्कतियपचिदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गो० । जहणेण अतोमु  
 ज्जत्त उक्कोसेण तिसि पल्लिवमाइ । अपज्जत्तगप्पवक्कतियपचिदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा ? गोयमा !  
 जहणेणवि अतोमुज्जत्त उक्कोसेणवि अतोमुज्जत्त । पज्जत्तगप्पवक्कतियपचिदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा ?  
 गोयमा ! जहणेणं अतोमुज्जत्त उक्कोसेण तिसि पल्लिवमाइं अतोमुज्जत्तूणाइ । जलयरपचिदियतिरिक्ख  
 जोणियाण केवइय काल ठिई पणत्ता ? गोयमा ! जहणेणं अतोमुज्जत्त उक्कोसेण पुव्वकोप्पी । अपज्जत्त  
 जलयरपचिदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहणेणवि उक्कोसेणवि अतोमुज्जत्त । पज्जत्तयज

मुहुत्तमुत्कपत्त खीणि पत्थोपमानि । अपमाप्तजव्वयुत्तक्रात्तिरुपपञ्चेन्द्रियतियग्योनिक्काना पृच्छा, गीतम । जघन्यत्त उत्तकपत्तयान्तमुहुत्तम् ।  
 पर्याप्तगजव्वयुत्तक्रात्तिकपञ्चेन्द्रियतियग्योनिक्काना पृच्छा, गीतम । जघन्येनात्तमुहुत्तमुत्कपत्त खीणि पत्थोपमानयन्तमुहुत्तानि । जलयरप  
 प्चेन्द्रियतियग्योनिक्काना पृच्छा, गीतम । जघन्येनात्तमुहुत्तमुत्कपत्त पुव्वकोटि । अपमाप्तजलचरपचिदियतियग्योनिक्काना पृच्छा, गीतम ।  
 जघन्यत्त उत्तकपत्तयान्तमुहुत्तम् । पर्याप्तजलचरपचिदियतियग्योनिक्काना पृच्छा, गीतम । जघन्येनात्तमुहुत्तमुत्कपत्त पुव्वकोटिरत्तमुहुत्तो

पचेन्द्रिय तियच्च यानिकनो प्र० इगीतम जघन्य यो अन्तमुहुत्तं उत्तकप यो तोन पत्थोपम । अपज्जत्तगजव्वयुत्तक्रात्तिक पचिन्द्रिय  
 तियच्चयानिकना प्र० उ० इगीतम जघन्य यो उत्तकप यो पिण अन्तमुहुत्तं । पर्याप्तगजव्वयुत्तक्रात्तिक पचेन्द्रिय तियच्चयानिकना प्र० उ० इगीतम जघन्य यो  
 अन्तमुहुत्तं उत्तकप यो तोन पत्थोपम अन्तमुहुत्तं ज्ञा । जलयरपचिदियतिरिक्खजोणियाणति । जलचरपचिदिय तियच्च यानिकना इ भगवन् केतना  
 काली स्थिति कटो प्रश्न उत्तर इ गीतम जघन्य यो अन्तमुहुत्तं उत्तकप यो पुव्वकोटि । अपज्जत्त जलयरपचिदियति । अपचिदियत्त जलचर पचेन्द्रिय ति  
 यच्चयानिक ना प्र० उत्तर इ गीतम जघन्य यो पिण उत्तकप यो पिण अन्तमुहुत्तं ना । पज्जत्तपचिदियत्त । पर्याप्त जलचर पचेन्द्रिय तियच्चयानिक नो



प्र० उत्तर हे गीतम लघ्वग यो अन्तर्मुद्रत् उदक्य या अन्तर्मुद्रत् गूढ पूर्वकाडो । समुच्छिन्नमलयरपचिटियतिरिक्त्वसि । समुच्छिन्नमलवर पचे द्रय  
तिर्यचयोनिक नो प्रग्र उ० हे गीतम लघ्वन्य थो अन्तर्मुद्रत् उदक्य थो पूर्वकाडो । अपक्वत्तममुच्छिन्नमलसुरपचिटियसि । अपर्याप्त समुच्छिन्नमलवर  
पचेद्रिय तिर्यचयोनिक नो प्रग्र उ० हे गीतम लघ्वन्य थो पिण उदक्य थो पिण अन्तर्मुद्रत् । पक्वत्तममुच्छिन्नमलसरपचिटियसि । पर्याप्त समुच्छिन्नम  
लवर पचेद्रिय तिर्यचयोनिक नो प्र० उ० हे गीतम लघ्वग थो पिण अन्तर्मुद्रत् उदक्य थो पूर्वकाडो अन्तर्मुद्रत् नान । गप्रकृतिगलयरसि । गर्भय  
रक्रान्तिक लवर पचेद्रिय तिर्यचयोनिक नो प्र० उ० हे गीतम लघ्वग थो अन्तर्मुद्रत् उदक्य थो पूर्वकाडो । अपक्वत्तममुच्छिन्नमलसरपचिटियसि । अपर्याप्त गर्भय

णिग्याण पुच्छा ? गोयमा ! जहणेणवि उक्कोसेणवि अतोमुज्जतं । पज्जतगप्पवक्कंति यजलरपरपचिदियतिरि  
स्कजोणिग्याण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेण अतोमुज्जत उक्कोसेण पुव्वकोली अतोमुज्जतना । चउप्पय  
थलयरपचिदियतिरिस्कजोणिग्याणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेण अतोमुज्जत उक्कोसेण तिणिपलिनवमाइ  
अपज्जतयचउप्पयथलयरपचिदियतिरिस्कजोणिग्याण पुच्छा ? गोयमा ! जहणेणवि उक्कोसेणवि अतोमु  
ज्जत । पज्जतयचउप्पयथलयरपचिदियतिरिस्कजोणिग्याण पुच्छा ? गोयमा ! जहणेण अतोमुज्जत उक्को  
सेण तिणि पलिनवमाइ अतोमुज्जतूणाइ । सम्भूच्छिमचउप्पयथलयरपचिदियतिरिस्कजोणिग्याणं पुच्छा ,

तकान्तिकजलवरपप्पान्दयतिर्यगोनिग्याण पुच्छा , गौतम । जघन्येनान्तमुहुत्तमुत्तपतोत्तमुहुत्तना पूयंकोटि । चतुप्पटस्यलवरपप्पेन्द्रिय  
तिर्यगोनिग्याण पुच्छा , गौतम । जघन्येनान्तमुहुत्तमुत्तपत खीणि पत्यापमानि । अपर्याप्तस्यलवरपप्पेन्द्रियतिर्यगोनिग्याण पुच्छा , गौत  
म । जघन्यत उत्तकपतद्यान्तमुहुत्तम् । पर्याप्तचतुप्पटस्यलवरपप्पेन्द्रियतिर्यगोनिग्याण पुच्छा , गौतम । जघन्येनान्तमुहुत्तमुत्तपतस्तीणि प  
ल्योपमान्यन्तमुहुत्तानि । सम्भूच्छिमचतुप्पटस्यलवरपप्पेन्द्रियतिर्यगोनिग्याण पुच्छा , गौतम । जघन्येनान्तमुहुत्तमुत्तपत यत्तुरशीतिवर्ष

तकागिनिक जलवर पचेद्विग तिर्यचयानिक ना प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य धा अन्तमुहुत्तं उत्तकपं धौ पिण अन्तमुहुत्तं । पज्जतगप्पवक्कंति यजलरपाचिद  
यति । पर्याप्त गर्भव्यत्कागिनिक जलवर पचेद्विग तिर्यच यानिक नो प्रत्य उत्तर हे गौतम जघन्य धौ अन्तमुहुत्तं उत्तकपं धौ अन्तमुहुत्तं जन पव्वंकोली ।  
वउप्पय धलवरपचिदियतिरिक्खति । चतुप्पटस्यलवर पचन्द्रिय तिर्ययानिक नो प्रत्य उत्तर हे गौतम जघन्य धौ अन्तमुहुत्तं उत्तकपं धौ तौन पन्योपम  
प्रपज्जतयचउप्पयथलयरपचिदियति । अपर्याप्त चतुप्पटस्यलवर पचन्द्रिय तिर्यगोनिग्याणं ना प्रत्य उत्तर हे गौतम जघन्य धौ पिण उत्तकपं धौ पिण अन्त  
मुहुत्तं । पज्जतयचउप्पयथलयरपचिदियात्त । पर्याप्त चतुप्पटस्यलवर पचन्द्रिय तिर्यच यानिक ना प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य धौ अन्तमुहुत्तं उत्तकपं धौ

१ गोयमा ! जहन्नेणं अतोमुज्जत्तं उक्कोसेण चउरासीइं वामसहस्साइं अपज्जत्तयसम्मूच्छिमचउप्पयथलय  
रपचिदियतिरिस्कजोगियाण पुच्छा ? गो० ! जहयेणवि उक्कोसेणवि अतोमुज्जत्त पज्जत्तगसम्मूच्छिम चउप्प  
यथलयरपचिदियतिरिस्कजोगियाण पुच्छा ? गो० । जहन्नेणं अतोमुज्जत्त उक्कोसेणं चउरासीइं वाससहस्साइं  
अतोमुज्जत्तूणाइ । गप्पवक्कतियचउप्पयथलयरपचिदियतिरिस्कजोगियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण अ  
तोमुज्जत्त उक्कोसेण तिसि पल्लवमाइ । अपज्जत्तगप्पवक्कतियचउप्पयथलयरपचिदियतिरिस्कजोगियाण

सहस्राणि । अपर्याप्तसमूच्छिंमस्यलघुरचतुष्पदपञ्चन्द्रियतियग्योनिकाना पृच्छा, गौतम । अघन्येनात्कपतथान्तमुद्भूतम् । पर्याप्तसमूच्छिंम  
चतुष्पदस्यलघुरपञ्चन्द्रियतियग्योनिकाना पृच्छा, गौतम । अघन्येनात्तमुद्भूतमुत्कपतथान्तमुद्भूतानि । गतव्युत्क्रा  
न्तिकचतुष्पदस्यलघुरपञ्चन्द्रियतियग्योनिकाना पृच्छा, गौतम । अघन्येनात्तमुद्भूतमुत्कपतथान्ति पत्न्योपमानि । अपर्याप्तकगजं व्युत्क्रान्ति  
कचतुष्पदस्यलघुरपञ्चन्द्रियतियग्योनिकाना पृच्छा, गौतम । अघन्येनात्कपतथान्तमुद्भूतम् । पर्याप्तकगजं व्युत्क्रान्तिकचतुष्पदस्यलघुरपञ्च

[illegible]

पुच्छा ? 'गोयमा ! जहन्तेणवि उक्कोसेणवि अतोमुज्जतं पज्जत्तगग्लवक्कातियचउप्पयथलयरपचिदियतिरि  
 रक्कजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहणेण अतोमुज्जत उक्कोसेणं तिरि पलिउवमाइ अतोमुज्जत्तणाइ ।  
 उरपरिसप्पथलयरपचिदियतिरिक्कजोणियाण पुच्छा ? 'गोयमा ! जहन्तेण अतोमुज्जत उक्कोसेणं पुद्द  
 कोही अपज्जत्तयउरपरिसप्पथलयरपचिदियतिरिक्कजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहणेणवि उक्कोसे  
 णवि अतोमुज्जत । पज्जत्तगउरपरिसप्पथलयरपचिदियतिरिक्कजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेण  
 अतोमुज्जत उक्कोसेण पुद्दकोही अतोमुज्जत्तणा । सम्भूच्छिमसामसपुच्छा कायव्हा, गोयमा ! जहन्तेण

न्त्रियतियगोनिकाना पुच्छा, गीतम । जघन्येनान्तमुद्दत्तमुत्तमुत्तकपंतच्छीणि पल्लोपमान्यन्तमुद्दत्तानि । उर परिसपंस्थलचरपञ्चन्द्रियतियगोनि  
 काना पुच्छा, गीतम । जघन्येनान्तमुद्दत्तमुत्तमुत्तकपंत पूवकोटि । अपर्याप्तकीर परिसपस्थलचरपञ्चन्द्रियतियगोनिकाना पुच्छा, गीतम ।  
 जघन्येनान्तमुद्दत्तमुत्तमुत्तकपंत दान्तमुद्दत्तम् । पर्याप्तकीर परिसपस्थलचरपञ्चन्द्रियतियगोनिकाना पुच्छा, गीतम । जघन्येनान्तमुद्दत्तमुत्त  
 पंतोन्तमुद्दत्ताना पूवकोटि । सम्भूच्छिमसामान्यपुच्छा, गीतम । जघन्येनान्तमुद्दत्तमुत्तमुत्तकपंतच्छिपञ्चादाहपंसस्साणि । अपर्याप्तकसम्भूच्छिमो

हे गीतम जघग्ग धो पिण उरकपं धो पिण अन्तमुद्दत्तं । पज्जत्तगग्लवक्कातियचउप्पयथलयरति । पर्याप्तं गर्भयुत्तकार्गिक चोपट थलचर पचिदिय तिर्यग्य  
 निदं नो प्रय उत्तर हे गीतम जघन्य धो अन्तमुद्दत्तं उरकपं धो तोन पक्कोपम अन्तमुद्दत्तं ग्यून । उरपरिसपस्थलयरति । उरपरसपं थलचर पचेद्विग  
 तिर्यच्च यानिकनो प्र० 'गीतम जघन्यधो अन्तमुद्दत्तं उरकपं धो पूवकोही । पपज्जत्तयउरपरिसपस्थलयरति । अपर्याप्त उरपरिसपं थलचर पचेन्द्रिय तिर्यच  
 यानिक नो प्रय उत्तर हे गीतम जघग्ग धो अन्तमुद्दत्तं उरकपं धो पिण अन्तमुद्दत्तं । पज्जत्तगउरपरिसपगलयरति । पर्याप्त उरपरसपं थलचर पचेद्विग  
 तिर्यच यानिक नो प्र० उ० हे गीतम 'जघग्ग धो अन्तमुद्दत्तं उरकपं धो पूवकोही अन्तमुद्दत्तं ग्यून । सम्भूच्छिमसामयति । सम्भूच्छिमनो सामान्य पुच्छा ।

अतोमुजतं उक्कोसेण तेवसुवाससहसाइं । अपज्जत्तगसम्मूच्छिमउरपरिसप्पथलयरपंचिदियतिरिक्कजोणि  
याणं पुच्छा ? गोयमा ! जहसेणवि उक्कोसेणवि अतोमुजत । पज्जत्तगसम्मूच्छिमउरपरिसप्पथलयरपचिं  
दियतिरिक्कजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहसेण अतोमुजत उक्कोसेण तेवसुं वाससहसाड अतोमु  
जत्तूगाइं । गप्पवक्कतियउरपरिसप्पथलयरपचिदियतिरिक्कजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहसेणं अतो  
मुजत उक्कोसेणं पुव्वकोढी । अपज्जत्तगगप्पवक्कतियउरपरिसप्पथलयरपचिदियतिरिक्कजोणियाणं पुच्छा ?  
गोयमा ! जहसेणवि उक्कोसेणवि अतोमुजत । पज्जत्तगगप्पवक्कतियउरपरिसप्पथलयरपचिदियतिरिक्क

र परिसपंस्थलचरपब्बेन्द्रियतियग्योनिकाना पृच्छा, गीतम ! जपय्येनोत्तकपंत्यान्तमुहुत्तंम् । पर्याप्तकसम्मूच्छिमोर परिसपंस्थलचरपब्बे  
न्द्रियतियग्योनिकाना पृच्छा, गीतम ! जपय्येनान्तमुहुत्तंमुत्तकपंत्यिपब्बाणपंसहसाण्यन्तमुहुत्तानि । गज्जयुत्तान्तिकोर परिसपंस्थल  
चरपब्बेन्द्रियतियग्योनिकाना पृच्छा, गीतम ! जपय्येनान्तमुहुत्तमुत्तकपंत्य पुव्वकोटि । अपर्याप्तकगमंयुत्तान्तिकोर-परिसपंस्थलचरपब्बे  
न्द्रियतियग्योनिकाना पृच्छा, गीतम ! जपय्येनान्तमुहुत्तमुत्तकपंत्योप्यन्तमुहुत्तंम् । पर्याप्तकगमंयुत्तान्तिकोर परिसपंस्थलचरपब्बेन्द्रियति

करवो ७० हे गीतम जघय्य यो अत्तमुहुत्तं उत्तकपं यो अपनहजारवयंनो । अपज्जत्तसमूच्छिमउरपरिसपंस्थलचर  
पवेन्द्रिय तियं च योनिक नो प्र० ७० उत्तर हेगीतम जघन्य यो उत्तकपं यो पिण अन्तमुहुत्तं । पज्जत्तगसमूच्छिमउरपरिसपंस्थलचर  
उत्तलचर पवेन्द्रिय तियं ग्योनिक नो प्र० ७० हे गीतम जघय्य यो अन्तमुहुत्तं उत्तकपं यो अपनहजार वयं अन्तमुहुत्तं न्यून । गम्वक्कतियउरपरिसपंस्थलचर  
गमंयुत्तान्तिक्क उरपरिसपंस्थलचर पवेन्द्रिय तियं च योनिक नो प्र० ७० हे गीतम जघन्य यो अन्तमुहुत्तं उत्तकपं यो पुव्वकोटी । अपज्जत्तगगप्पवक्कतिय  
उरपरिसपंस्थलचर । अपर्याप्त गमंज उरपरिसपंस्थलचर पवेन्द्रिय तियं च योनिक नो प्र० ७० हे गीतम जघन्य यो पिण उत्तकपं यो पिण अन्तमुहुत्तं । पज्ज

जोगियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहणेण अतोमुज्जत्त उक्कोसेणं पुव्वकोप्पि अतोमुज्जत्तना । नुयपरिसप्यथ  
 लयरपचिदियतिरिस्कजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण अतोमुज्जत्त उक्कोसेण पुव्वकोप्पि । अपज्जत्त  
 यन्नयपरिसप्यथलयरपचिदियतिरिस्कजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अतोमुज्जत्त  
 पज्जत्तयन्नयपरिसप्यथलयरपचिदियतिरिस्कजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहणेण अतोमुज्जत्त उक्कोसेण  
 पुव्वकोप्पि अतोमुज्जत्तना । सम्मूच्छिमन्नयपरिसप्यथलयरपचिदियतिरिस्कजोणियाण पुच्छा ? गोयमा !  
 जहणेण अतोमुज्जत्त उक्कोसेण वायालीस वाससहसाइ । अपज्जत्तयसम्मूच्छिमन्नयपरिसप्यथलयरपचिदि

यग्योनिकाना पुच्छा, गीतम । जघन्येनान्तमुहत्तमुत्तमुत्त । पुव्वकोटिरन्तमुहत्तना । नुजपरिसप्यथलयरपचेन्द्रियतियग्योनिकाना पुच्छा, गी  
 तम । जघन्येनान्तमुहत्तमुत्तमुत्त पुव्वकोटि । अपयात्तनुजपरिसप्यथलयरपचेन्द्रियतियग्योनिकाना पुच्छा, गीतम । जघन्येनाप्यत्तपतो  
 प्यन्तमुहत्तम् । पयोत्तनुजपरिसप्यथलयरपचेन्द्रियतियग्योनिकाना पुच्छा, गीतम । जघन्येनान्तमुहत्तमुत्तमुत्त पुव्वकोटिरन्तमुहत्तना । स  
 म्मूच्छिमन्नयपरिसप्यथलयरपचेन्द्रियतियग्योनिकाना पुच्छा, गीतम । जघन्येनान्तमुहत्तमुत्तमुत्त द्विधत्वारिणहृपसहसाइ । अपयात्तसम्मू

तगभवत्तियवरपरिसप्यति । पर्याप्त गभज सरपरिसप्य थलचर पचेद्रिय तिय च योनिक नो प्र० उ० हे गीतम जघन्य थो अन्तमुहत्त उत्तप थो पव्व  
 काडो अन्तमुहत्त गून । भुजपरिसप्यथलयरपति । भुजपरिसप थलचर पचेद्रिय तिय च योनिक नो प्र० उ० हे गीतम जघन्य थो अन्तमुहत्त उत्तप थो  
 पुव्वकोटि । अपज्जत्तयन्नयपरिसप्यति । अपयात्त भुजपरिसप थलचर पचेद्रिय तिय च योनिक नो प्र० उ० हे गीतम जघन्य थो पिय उत्तप थो पिय  
 अन्तमुहत्त । पर्याप्तक भुजपरिसप थलचर नो प्र० उ० हे गीतम जघन्य थो अन्तमुहत्त उत्तप थो पुव्वकोटि अन्तमुहत्त गून । सम्मूच्छिम भजपरिसप  
 पचेद्रिय नो प्र० उ० हे गीतम जघन्य थो अन्तमुहत्त उत्तप थो वेतालोस हजारवर्ष । अपज्जत्तयसम्मूच्छिमन्नयपरिसप्यति । अपयात्त सम्मूच्छिम भुज

यतिरिस्कजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहस्येणवि उक्कोसेणवि अतोमुज्जत । पज्जत्तगसम्मूच्छिमन्नयपरि  
 सप्पथलयरपचिदियतिरिस्कजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहस्येणं अतोमुज्जत उक्कोसेण वायालीस वा  
 ससहस्साइ अतोमुज्जन्नूणाइ । गप्पवक्कतियन्नयपरिसप्पथलयरपचिदियतिरिस्कजोणियाण पुच्छा ? गो  
 यमा ! जहस्येण अतोमुज्जतं उक्कोसेणं पुव्वकोली । अपज्जत्तगप्पवक्कतियन्नयपरिसप्पथलयरपचिदियति  
 रिस्कजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहस्येणवि उक्कोसेणवि अतोमुज्जत । पज्जत्तगप्पवक्कतियन्नयपरिस  
 प्पथलयरपचिदियतिरिस्कजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहस्येण अतोमुज्जत उक्कोसेण पुव्वकोली अतोमु

च्छिमन्नजपरिसप्पथलयरपचिदियतिरिस्कजोणियाण पुच्छा, गीतम । जयम्येनाप्पूरकपतीप्पत्तमंहुत्तम् । पर्याप्तसम्मूच्छिमन्नजपरिसप्पथलयर  
 पचिदियतिरिस्कजोणियाण पुच्छा, गीतम । जयम्येनात्तमंहुत्तंमुत्तकपती द्विचत्वारिंशद्वपंसहस्राण्यत्तमंहुत्तानि । गन्नव्युत्क्रान्तिकज्जुजपरिस  
 प्पथलयरपचेन्द्रियतियग्योनिकाना पुच्छा, गीतम । जयम्येनात्तमंहुत्तंमुत्तकपतं पूव्वकोटि । अपर्याप्तगंनंयुत्क्रान्तिकज्जुजपरिसप्पथलयरप  
 चेन्द्रियतियग्योनिकाना पुच्छा, गीतम । जयम्यत्त उत्तकपतश्चात्तमंहुत्तम् । पर्याप्तगंनंयुत्क्रान्तिकज्जुजपरिसप्पथलयरपचेन्द्रियतियग्योनिका

परिमप थल्लवर पचेन्द्रिय तिं च योनिक नो प्र० ८० । हे गीतम जवन्य यो पिण उत्तकं यो पिण अत्तमंहुत्तं । पल्लत्तगसम्मूच्छिमन्नजपरिमपत्ति । पर्या  
 प्तकसम्मूच्छिमन्नजपरिमप थल्लवर पचेन्द्रिय तियं थ योनिकनो प्र० ८० । हे गीतम जवन्य यो अत्तमंहुत्तं उत्तकं यो वेतालौस हल्लार वपं अत्तमंहुत्तं जन  
 गमकतियमपपरिसपत्ति । गर्भव्युत्क्रान्तिक भुजपरिसप थल्लवर पचेन्द्रिय तियं च योनिक नो प्र० ८० । हे गीतम जवन्य यो अत्तमंहुत्तं उत्तकं यो पं  
 कोटो । अपर्याप्तक गर्भव्युत्क्रान्तिक भुजपरिसप थल्लवर पचेन्द्रिय तियं थ योनिक नो प्र० ८० । हे गीतम जवन्य यो पिण उत्तकं यो पिण अत्तमंहुत्तं । पल्ल  
 तागमकतियमपपरिसपत्ति । पर्याप्त गर्भव्युत्क्रान्तिक भुजपरिसप थल्लवर पचेन्द्रिय तियं थ योनिक नो प्र० उत्तर हे गीतम जवन्य यो अत्तमंहुत्तं उत्तकं

जन्तूणा । खडहरपचिदियतिरिक्कजोणियाणं नते । केचइय कालं छिईं पणत्ता ? गोयमा ! जहणेण अतोमुजत्त उक्कोसेण पलिउवमस्स असखेज्जागो । अपज्जात्तयखहरपचिदियतिरिक्कजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अतोमुजत्त । पज्जात्तयखहरपचिदियतिरिक्कजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण अतोमुजत्त उक्कोसेण पलिउवमस्स असखिज्जिजागे अतोमुजत्तूणे । सम्मूच्छिमखहरपचिदियतिरिक्कजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण अतोमुजत्त उक्कोसेण वावत्तरिवाससहस्साणि । अपज्जात्तयसम्मूच्छिमखहरपचिदियतिरिक्कजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अतो

ना पृच्छा । गीतम ! जघन्येनान्तमुद्दुत्तमुत्कपत पुंवकोटिरन्तमुद्दुत्तीना । खचरपचेन्द्रियतियग्योनिकाना नदन्त । कियन्त कालं स्थिति प्रज्ञा ? गीतम ! जघन्येनान्तमुद्दुत्तमुत्कपत पत्थोपमस्यासङ्खेयोन्नाग । अपयांमत्तखरपचेन्द्रियतियग्योनिकाना पृच्छा, गीतम ! जघन्येनाप्युत्तरपंतोप्यन्तमुद्दुत्तम् । पयांमत्तखरपचेन्द्रियतियग्योनिकाना पृच्छा, गीतम ! जघन्येनान्तमुद्दुत्तमुत्कपत पत्थोपमस्यासङ्खेयोन्नागो ऽन्तमुद्दुत्तीना । सम्मूच्छिमखरपचेन्द्रियतियग्योनिकाना पृच्छा, गीतम ! जघन्येनान्तमुद्दुत्तमुत्कपतो द्विसप्ततिवपसङ्खानि । अपयांमत्तसम्मूच्छिमखरपचेन्द्रियतियग्योनिकाना पृच्छा, गीतम ! जघन्येनान्तमुद्दुत्तमुत्कपतो द्विसप्ततिवपसङ्खान्यपन्तमुद्दुत्तानि । गजंठ्यट्कान्तिक्क

यो पुंवकाहो अन्तमुद्दुत्तं जन । खहरपचाटयात्त । खचर पचन्दित्र तिवंख योनिक ना प्र० उ० हे गीतम जसद्व यो अन्तमुद्दुत्तं उत्कर्षं यो पत्थोपम नो असम्भ्यातमो भाग । अपपञ्चत्तखहररति । अपयांमत्त खचर पचेन्द्रिय तिवंख योनिक नो प्र० उत्तर हे गीतम जसद्व यो पिप उत्कर्षं यो पिप अन्तमुद्दुत्तं । पज्जात्तयखहरपचिदियतिरिक्कजोणियाणति । पयांम खचर पचेन्द्रिय तिवंख योनिक नो प्र० उत्तर हे गीतम जसद्व यो अन्तमुद्दुत्तं उत्कर्षं यो पत्थोपम नो असम्भ्यातमो भाग अन्तमुद्दुत्तं ग्यन् । सम्मूच्छिमखहरपचिदियतिरिक्कजोणियाण पुच्छा । सम्मूच्छिम खेवर पचन्दित्र तिवंख योनिक नो



मुञ्जत । पञ्जत्तयसम्मूच्छिमखहयरपचिदियतिरिक्कजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेणं अतोमुञ्जतं उक्कोसेण वावत्तरिवाससहस्साइ अतोमुञ्जत्तूणाइ । गप्पवक्कतियखहयरपचिदियतिरिक्कजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जह्सेण अतोमुञ्जत उक्कोसेणं पलिउवमस्स अउसखेज्जइजागे । अपज्जत्तयगप्पवक्कतियखहयरपचिदियतिरिक्कजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जह्सेणवि उक्कोसेणवि अतोमुञ्जत । पज्जत्तयगप्पवक्कतियखहयरपचिदियतिरिक्कजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेणं अतोमुञ्जत उक्कोसेण पलिउवमस्स अउसखेज्जइजागो अतोमुञ्जत्तूणो । मणुस्साण जते ! केवडय कालं ठिई पणत्ता ? गोयमा ! जहन्तेणं

सुखरपञ्चन्द्रिययोग्योनिकाना पुच्छा ? गीतम । जघन्येनान्तमुद्धत्तमुत्कपतो पल्योपमस्याऽऽस्यंसे जागे । अपर्याप्तगन्धयुत्कालिकसुखरपञ्चन्द्रिययोग्योनिकाना पुच्छा ? गीतम । जघन्येनान्तमुद्धत्तमुत्कपतयात्तमुद्धत्तम् । पर्याप्तगन्धयुत्कालिकसुखरपञ्चन्द्रिययोग्योनिकाना पुच्छा ? गीतम । जघन्येनान्तमुद्धत्तमुत्कपत पल्योपमस्याऽऽस्यंसे जागे ऽन्तमुद्धत्तम् । मनुष्याणा जदन्त । कियन्त काल स्थिति मनुषता ? गीतम । जघन्येनान्तमुद्धत्तमुत्कपतस्त्रीणि पल्योपमानि । अपर्याप्तकमनुष्याणा पुच्छा ? गीतम । जघन्येनापुत्कपतश्चान्तमुद्धत्तम् । पर्याप्तकमनुष्याणा पुच्छा ? गीतम । जघन्येनान्तमुद्धत्तमुत्कपत स्त्रीणि पल्योपमानि अन्तमुद्धत्तानि । सम्मुखिममनुष्याणा पुच्छा ? गीतम । जघन्येना

प्रय उ० हे गीतम जघन्य यो अन्तमुद्धत्तं उत्कर्षं यो बहत्तर इज्जार वर्य । अपज्जत्तसम्मूच्छिमखहयरपचिदियति । अपर्याप्त समच्छिन्नं सुखर पचेन्द्रिय तियेव योनिक नो प्र० उत्तर हे गीतम जघन्यं यो पिण उत्कर्षं यो पिण अन्तमुद्धत्तं । पज्जत्तयसम्मूच्छिमखहयरपचिदियति । पर्याप्त सम्मुखिम सुखर पचेन्द्रिय तियेव योनिक नो प्र० उ० हे गीतम जघन्य यो अन्तमुद्धत्तं उत्कर्षं यो बहत्तर इज्जार वर्य अन्तमुद्धत्तं ग्यून । गभधक्कतिव सुहयरपचिदियति गभधुत्कालिका खवर पचेन्द्रिय तियेव योनिक नो प्र० उ० हे गीतम जघन्य यो अन्तमुद्धत्तं उत्कर्षं यो पथोपम नो असख्याता मा भाग । अपज्जत्तयग

अतोमुज्जत उक्तीसेणं तिणि पलिनुवमाइ । अपज्जतगमणुस्साणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेणवि उक्तीसेणवि अतोमुज्जत । पज्जतयमणुस्साण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेण अतोमुज्जत उक्तीसेण तिणि पलिनुवमाइ अतोमुज्जतूणाइ । सम्मुच्छिममणुस्साण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेणवि उक्तीसेणवि अतोमुज्जत गप्पवक्कतियमणुस्साण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेण अतोमुज्जत उक्तीसेण तिणि पलिनुवमाइ । अपज्जत गप्पवक्कतियमणुस्साण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेणवि उक्तीसेणवि अतोमुज्जत । पज्जतगप्पवक्कतियमणुस्साण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेणवि उक्तीसेण तिणि पलिनुवमाइ अतोमुज्जतूणाइ । वाणमत्तराण

पुत्तकपत्तथात्तमूहत्तम् । गर्जयुत्क्रान्तिकमनुप्याणा पृच्छा, गीतम ! जघन्येनाऽन्तर्मूहत्तमुत्तकपत्तथात्तमूहत्तम् । अपर्याप्तगज्जयुत्क्रान्तिकमनुप्याणा पृच्छा, गीतम ! जघन्येनाप्युत्तकपत्तथात्तमूहत्तम् । पर्याप्तगज्जयुत्क्रान्तिकमनुप्याणा पृच्छा, गीतम ! जघन्येनात्तमूहत्तमुत्तकपत्तथात्तमूहत्तम् । पत्योपमानि अन्तर्मूहत्तानि । वानव्यन्तराणा देवाना ज्ञदन्त ! कियन्त कात् स्थिति प्रज्ञप्ता, गीतम ! जघन्येन दस वपसस्सा भवक्कतिउद्धयस्ति । अपर्याप्त गर्भयुत्क्रान्तिक खचर पचेद्विय तियेव योनिक नो प्र० उत्तर हे गीतम जघन्य थो पिण उत्तर्कपं थो पिण अन्तर्मूहत्तम् । पज्जतगभवक्कतियखद्धयस्ति । पर्याप्त गर्भयुत्क्रान्तिक खचर पचेद्विय तियेव योनिक नो प्र० उत्तर हे गीतम जघन्य थो अन्तर्मूहत्तं थो पय्यापम नो असस्वातमो भाग अन्तर्मूहत्तं नून । मनुष्याण भते ति । मनुष्य नी हे भगवन् केतसा काज नी स्थिति कही प्र० उत्तर हे गीतम जघन्य थो अन्तर्मूहत्तं उत्तर्कपं थो तीन पत्योपम । अपज्जतगमणुस्साण पुच्छा । अपर्याप्त मनुष्य नो प्र० उत्तर हे गीतम जघन्य थो पिण उत्तर्कपं थो पिण अन्तर्मूहत्तम् । पज्जतयमणुस्साण ति । पर्याप्त मनुष्य नो प्र० कीधी उत्तर हे गीतम जघन्य थो अन्तर्मूहत्तं उत्तर्कपं थो तीन पत्योपम अन्तर्मूहत्तं नून । समस्सिममणुस्साण पुच्छति । समस्सिम मनुष्य नो प्र० उत्तर हे गीतम जघन्य थो अन्तर्मूहत्तं उत्तर्कपं थो पिण तेहिज । अभवक्कतियमणुस्साण पुच्छा । गर्भज मनुष्य

जते ! देवाण केचद्वयं कालं ठिई पणत्ता ? गोयमा ! जहन्तेण दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं पलिउवमं ।  
 अपज्जत्तवाणमतरदेवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहसेणवि उक्कोसेणवि अतोमुज्जत्तं । पज्जत्तयवाणमतर  
 देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेण दसवाससहस्साइ अतोमुज्जत्तुणाइ उक्कोसेण पलिउवम अतोमुज्ज  
 त्तुणं । वाणमत्तरीणं देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहसेण दसवाससहस्साइ उक्कोसेण अरुपलिउवम । अ  
 पज्जत्तियाणं जते ! वाणमत्तरीणं देवीण पुच्छा ? गोयमा ! जहसेणवि उक्कोसेणवि अतोमुज्जत्त । पज्ज

णि उरककंठ पत्थोपमम् । अपर्याप्तकवानव्यन्तर देवाना पृच्छा, गीतम् । जघन्येनाप्युत्कपंतोप्यतमुद्भूतम् । पर्याप्तकवानव्यन्तराणा देवा  
 ना पृच्छा, गीतम् । जघन्येन दस वर्षसहस्राणि अन्तमुद्भूतानि उरकपंतोन्तमुद्भूतानि पत्थोपमम् । वानव्यन्तरीणा देवीना पृच्छा, गीत  
 म । जघन्येन दस वर्षसहस्राणि उरकपंतो अरुपत्थोपमम् । अपर्याप्तदेवीना प्रदन्त । पृच्छा, गीतम् । जघन्येनाप्युत्कयतथात्तमुद्भूतम् ।  
 पर्याप्तकवानव्यन्तरीणा प्रदन्त । पृच्छा, गीतम् । जघन्येन दस वर्षसहस्राणि अन्तमुद्भूतानि उरककंतोदपत्थोपमम् अन्तमुद्भूतानि ।  
 ज्योतिष्काणा प्रदन्त । देवाना कियन्त काल स्थिति प्रज्जप्ता, गीतम् । जघन्येन पत्थोपमाएजागो उरककंठ पत्थोपम पर्यसहस्राभ्यापिकम् ।

नो प्रश्न उत्तर हे गीतम् जघन्य धी अन्तमुद्भूतं उरकपं धी तीन पत्थोपम । अपज्जत्तग भवकतियमयसाय ति । अपर्याप्त गभंज मनुय नो प्रश्न कीर्धो  
 उत्तर हे गीतम् जघन्य धी पिण उरकपं धी पिण अन्तमुद्भूतं नो । पज्जत्तग भवकतियमयसाय ति । पर्याप्त गभंज मनुय ना प्र० उत्तर हे गीतम् जघन्य  
 धी अगतमुद्भूतं उरकपं धी तीन पत्थोपम अन्तमुद्भूतं न्यून । वाणमतराण भते देवाणात् । वानव्यन्तर देवनो हे भगवन् केतवा कास नो स्थिति क  
 हौ प्र० उत्तर हे गीतम् जघन्य धी दगहजार वर्ष उक्तं धी पत्थोपम । अपज्जत्तयवाणमतराण ति । अपर्याप्त वानव्यन्तर देवता नो प्र० उत्तर हे गीतम्  
 जघन्य धी पिण उक्तं धी पिण अन्तमुद्भूतं । पज्जत्तयवाणमतराण देवाणं ति । पर्याप्त वानव्यन्तर देवता नो प्र० उत्तर हे गीतम् जघन्य धी अगतमुद्भूतं

त्रियाण नन्ते । वाणमन्तरीण पुच्छा ? गोयमा ! जहृण्येण दसवाससहस्राइं अतोमुज्जत्तणाइ । उक्कोसेण अउपलिनुवम अतोमुज्जत्तणं । जोडसियाण नन्ते ! दंवाण कंवडय काल ठिई पयत्ता ? गोयमा ! जहृण्येण पलिनुवमठन्नागो उक्कोसेण पलिनुवम वाससयसहससमप्पहिय । अपज्जत्तयजोडसियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहृण्येण पलिनुवमठन्नागो उक्कोसेणवि उक्कोसेणवि अतोमुज्जत्त । पज्जत्तयजोडसियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहृण्येण पलिनुवमठन्नागो अतोमुज्जत्तणो उक्कोसेण पलिनुवम वाससयसहससमप्पहिय अतोमुज्जत्तण । जोडसियाण

अपयाप्तज्योतिफाणा पुच्छा, गीतम । जघन्येनाप्पुत्तपतद्यात्तमुद्धत्तम् । पर्याप्तकल्योतिफाणा पुच्छा, गीतम । जघन्येन पत्योपमाएन्नागम ल्त्तमुद्धत्तनमुत्तपत पत्योपम वधगतसहस्राज्यधिकमत्तमुद्धत्तनम् । ज्योतिफदेवीना पुच्छा, गीतम । जघन्यत पत्योपमाएन्नाग उत्तकप

गून दगङ्गार वर्यना उत्तप्य थो पन्यापम अत्तमुद्धत्तं गून । वाणमन्तरीण देवीणति । वानज्यन्तर देवी नो प्र० उ० गीतम जघन्य थो दगङ्गारवध उत्तकप्य थो अथ पन्यापम । अपज्जत्तियाण भत वाणमन्तराण देवीणति । अपर्याप्त वानज्यन्तर देवी ना ह भगवन् केतसो आयु कक्षा हे गीतम जघन्य थो पिण उत्तकप्य थो पिण अत्तमुद्धत्तं । पज्जत्तयाण भते वाणमन्तरीण देवीणति । पर्याप्त वानज्यन्तरनो दवी ना प्र० उ० ह गीतम जघन्य थो दगङ्गारवध अत्तमुद्धत्तं कन उत्तकप्य थो अहं पत्योपम अत्तमुद्धत्तं गून । जोडसियाण भते देवाणति । जोतिक्क देवता नो हे भगवन् केतला कात्तनो स्थिति कही प्र० उ० हे गीतम जघन्य थो पत्योपम नो आठमा भाग उत्तकप्य थो पत्योपम एकलाख वर्य अधिक । अपज्जत्तयजोडसियाण पुच्छा । अपर्याप्त जोतिक्क ना प्र० उ० हे गीतम जघन्य थो पिण उत्तकप्य थो पिण अत्तमुद्धत्तं । पज्जत्तयजोडसियाणति । पर्याप्त जोतिक्को ना प्र० उत्तर हे गीतम जघन्य थो पत्योपम नो आठमी भाग अत्तमुद्धत्तं गून उत्तकप्य थो पत्योपम लाख वर्य अधिक अत्तमुद्धत्तं गून । जोडसियाण भते देवीणति । जोतिक्क देवी नो प्र० उ० हे गीतम जघन्य थो पत्योपम ना आठमो भाग उत्तकप्य थो अहं पत्योपम पचास हजारवध अधिक । अपज्जत्तियाण जोडसियाणति । अ

जते ! देवीग पुच्छा ? गोयमा ! जहखेण पलिनेवमठनागो उक्खीसेण अछपलितुवन पण्णासवाससहस्स  
 मझ्हिय । अपज्जत्तिथाण जोइसिणीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेगवि उक्खीमेणवि अतोमुज्जत्त । पज्जा  
 त्तिथाण जोइसिणीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहखेण पलिनेवमठनागो अतोमुज्जत्तणो उक्खीसेण अछपलि  
 नेवम पण्णासवाससहस्सेहि अझ्हिए अतोमुज्जत्तण । चदविमाणेण जते ! देवाण पुच्छा ? गोयमा !  
 जहखेण चउन्नागपलिनेवम उक्खीसेण पलिनेवम आससयसहस्समझ्हिय । चदविमाणेणं जते ! अपज्जत्तयाण  
 देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेगवि उक्खीसेणवि अतोमुज्जत्त । चदविमाणेण जते ! पज्जत्तयाण देवाण

तोइहं पत्थोपम पच्चाशद्वर्षसहस्राभ्यधिकम् । अर्थात्मकज्योतिष्कदेवीना पृच्छा, गीतम । जघन्यत उत्कर्षतद्यान्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्तज्योतिष्कदे  
 वीना पृच्छा, गीतम । जघन्यत पत्थोपमाष्टमन्नागोन्तर्मुहूर्तान उत्कर्षतोहंपत्थोपम पच्चाशद्वर्षसहस्रैरधिकमन्तर्मुहूर्तानम् । चन्द्रविमाने जद  
 त् देवाना पृच्छा, गीतम । जघन्येन वृत्तत्रांग पत्थोपममुत्कर्षत पत्थोपम वर्षलक्षाभ्यधिकम् । चन्द्रविमान जदन्त । अर्थात्मकदेवाना  
 पृच्छा, गीतम । जघन्येनाप्युत्कर्षतोप्यन्तर्मुहूर्तम् । चन्द्रविमाने जदन्त । पर्याप्तकाना देवाना पृच्छा, गीतम । जघन्येन पत्थोपमवृत्तत्रांगम

पर्याप्त जातिष्क देवो ना प्र० उ० हे गीतम जघन्य यो उत्कर्ष यो पिण अन्तर्मुहूर्त । पज्जत्तिथाण जोइसयोपति । पर्याप्त जातिष्क देवो ना प्र० उ० हे  
 गीतम जघन्य यो पत्थोपम ना चाठमा भाग अन्तर्मुहूर्त न्यून उत्कर्ष यो अन्तर्मुहूर्त ऊन पचाम दुआरवर्ष अधिज अदं पत्थोपम । चदविमाणेण भते  
 देव पति । चन्द्रविमाने भदन्त देवतानो कतला कानो स्थिति कौ प्रत्य उत्तर हे गीतम जघन्य यो चतुर्भांग पर्याप्तम कर्त्तव्य यो पत्थोपम साख  
 वर्ष अधिक । चदविमाणेण भते अपज्जत्तयाण देवापति । चन्द्रविमान गा हे भगवन् अपर्याप्त देवतानो पृच्छा हे गीतम जघन्य यो पिण उत्कर्ष यो पिण  
 अन्तर्मुहूर्त । चदविमाणेण भते पज्जत्तयापति । चन्द्रविमाने मा देवतानो हे भगवन् कतलो आशु प्रत्य उत्तर हे गीतम जघन्य यो चतुर्भांग पत्थोपम

म ॥ शेषमपि सुगम मापटपरिसमाप्ते भंडर चदविमारेण जते । देवाणमित्यादि ॥ चन्द्रविमाने चन्द्र उत्पद्यते शेषाद्य तत्परिवारज्जना स्तत्र तत्परिवारज्जना जपन्त्यस्तत्तुजागपत्योपमप्रमाणा उत्कपत कंषाधिदिन्द्रसामानिकादीना वपलस्याप्यधिक परयोपम चन्द्रदेवस्य तु यथोक्तमुरक

पुच्छा ? गीयमा । जहणेण चउन्नागपलिउवम अतोमुज्जत्तूण उक्कोसंण पलिउवम वाससयसहससमप्लहिंय अतोमुज्जत्तूण । चटविमाणेण देवीण पुच्छा, गीयमा । जहन्तेण चउन्नागपलिउवम उक्कोसंण अठ्ठपलिउवम पयासाए वाससहस्सेहि अप्लहिंय । चदविमाणेण अपज्जत्तियाण देवीण पुच्छा ? गीयमा । जहणेण वि उक्कोसंणवि अतोमुज्जत्त । चदविमाणेण पज्जत्तियाण देवीण पुच्छा ? गीयमा ! जहन्तेण चउन्नागपलिउवम अतोमुज्जत्तूण उक्कोसंण अठ्ठपलिउवम पयासाए वाससहस्सेहि अप्लहिंय अतोमुज्जत्तूण । सूत्रवि

ल्लमुत्तानिमुत्कपत पत्योपम वपलशाज्यधिकमन्तमुद्धर्तनम् । चन्द्रविमाने देवीना पुच्छा । गीतम । जघन्येन पत्योपमचतुन्नागमुत्कपतनोद्ध पत्योपम पञ्चाशद्वर्षसहस्रैरधिकम् । चन्द्रविमान अपयोपकदेवीना पुच्छा, गीतम । जघन्येनोत्कपतश्चात्तमुद्धर्तनम् । चन्द्रविमाने पर्यापकदेवीना पुच्छा, गीतम । जघन्येन पत्योपमचतुन्नागमन्तमुद्धर्तनमुत्कपतनोद्धर्तनमुत्कपतनोद्धर्तनम् । सूर्यविमाने जट मन्तमुद्धर्तनं जन उत्कपयं यो पयापम सागुवयं अधिक अन्तमुद्धर्तनं जन । चटविमाणे देवीणिति । चटविमान मा देवीनां प्रत्य उत्तर हे । तम जघन्य यो पर्यापम नो चौगं भाग उत्कट यो पचास वलार वप अधिक अर्ध पन्नापम । चटविमाणे अपज्जत्तियाण देवीणिति । चन्द्रमा ना विमानन विप अपर्णमक देवीनो स्थितिनो प्रत्य उ० हे गीतम जघन्य यो पिण अन्तमुद्धर्तनं । चटविमाणे पज्जत्तियाण देवीणिति । चन्द्रमाना विमान ने विपे पर्यापक देवीनो स्थितिनो प्रत्य उत्तर हे गीतम जघन्य यो पर्यापम नो चौघा भाग अन्तमुद्धर्तनं नून उत्तरकपं यो अन्तमुद्धर्तनं नून पचास व जटवयं अधिक अर्ध पर्यापम । सूर्यविमाणेय भेद यावति । सयना विमानने विपे हे भगवन् देवतानो केतवा काखो स्थिति कही प्रत्य उत्तर हे गी

माणेण ज्ञते ! देवाण केवडय काल ठिडं पणत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं चउन्नागपलिनुवमं उक्कोसेणं पलि  
 नुवम वाससहस्समप्लहिहय । सूरविमाणे अपज्जत्तदेवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं चउन्नागपलिनुवमं उक्कोसेणं पलि  
 मुज्जत्त । सूरविमाणेणं पज्जत्तदेवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण चउन्नागपलिनुवमं उक्कोसेणं पलि  
 सेण पलिनुवम वाससहस्समप्लहिहय अतोमुज्जत्तूण । सूरविमाणदेवीण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण चउ  
 न्नागपलिनुवम उक्कोसेण अरुपलिनुवम पचहि वाससपुहि अप्लहिहयं । सूरविमाणे अपज्जत्तियाण देवीणं  
 पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं चउन्नागपलिनुवमं उक्कोसेणं पलिमुज्जत्त । सूरविमाणे पज्जत्तियाणं देवीण पुच्छा ? गो

त्त । देवाना कियत्त काल स्थिति मज्झा ? गीतम ! जघन्येन पत्तोपमचतुन्नांगमुत्कर्षत पत्तोपम वर्पसहस्राभ्यधिकम् । सूर्यविमान उप  
 र्यासदेवाना पुच्छा ? गीतम ! जघन्येनोत्कर्षतद्यान्तर्मुहत्तम् । सूर्यविमाने पर्यासदेवाना पुच्छा, गीतम ! जघन्येन चतुन्नांगपत्तोपममन्तर्मुह  
 त्तान्मु उत्कर्षत पत्तोपम वर्पसहस्राभ्यधिकमन्तर्मुहत्तान्मुहत्तान् । सूर्यविमाने देवीना पुच्छा, गीतम ! जघन्येन पत्तोपमचतुन्नांगमुत्कर्षततोह  
 पत्तोपम पञ्चान्नैर्वपशैरधिकम् । सूर्यविमाने उपयासदेवीना पुच्छा, गीतम ! जघन्येनोत्कर्षतद्यान्तर्मुहत्तम् । सूर्यविमाने पर्यासकदेवीना पृ

तम जघन्य यो चौष्टे भागे पत्तोपमने उदकट पदयापम हजारवर्प अधिक । सरविमाणे अपज्जत्तदेवाणत्ति । सूर्या विमानने विधि चपर्यास देवनी प्रज  
 ४० हे गीतम जघन्य यो पिण उदकट यो पिण अग्तर्मुहत्त । सूरविमाणे पज्जत्तदेवाणत्ति । सूर्यविमानने विधि पर्यास देवनी प्रज ४० हे गीतम जघन्य  
 यो अतर्मुहत्त न्यून पत्तोपमनो चौष्टो भाग उदकट यो अतर्मुहत्त न्यून हजारवर्प अधिक पत्तोपम । सूरविमाणे देवौणत्ति । सूर्या विमानने विधि दे  
 वीना प्र ४० हे गीतम जघन्य यो पत्तोपमना चौष्टो भाग उदकट पाच वर्प अधिक अत्र पत्तोपम । सरविमाणे अपज्जत्तियाण देवौणत्ति । सूर्या  
 विमानने विधि अपर्यास देवीना प्र ४० हे गीतम जघन्य यो पिण उदकट यो पिण अतर्मुहत्त । सरविमाणे पज्जत्तियाण देवौणत्ति । सूर्या विमानने विधि

यमा ! जहन्तेण चउन्नागपलिउवम अंतोमुज्जत्तुणं उक्कोसेणं अरुपलिउवमं पंचहिं वाससएहि अस्सहिं  
अंतोमुज्जत्तुणं । गहविमाणे देवाण पुच्छा ? गो० ! जहसेण चउन्नागपलिउवम उक्कोसेण पलिउवमं । गहवि  
माणं अपज्जत्तदेवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुज्जत्त । गहविमाणे पज्जत्तदेवा  
ण पुच्छा ? गोयमा ! जहसेणं चउन्नागपलिउवम अंतोमुज्जत्तुण उक्कोसेणं पलिउवम अंतोमुज्जत्तुण ।  
गहविमाणे देवीण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेण चउन्नागपलिउवम उक्कोसेण अरुपलिउवम । गहविमाणे  
अपज्जत्तियाण देवीण पुच्छा ? गोयमा ! जहसेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुज्जत्त । पज्जत्तियाण गहविमाणे

च्छा , गीतम । जघन्येन चतुन्नागपल्योपममत्तमुद्धर्तनमुत्कर्षतौद्वेपल्योपम पञ्चत्रिवंशैरधिकमन्तमुद्धर्तनम् । ग्रहविमाने देवाना पृच्छा,  
गीतम । जघन्येन चतुन्नागपल्योपममुत्कर्षत पल्योपमम् । ग्रहविमानेऽप्यांसदेवाना पृच्छा, गीतम । अपन्येनोत्कर्षतद्यान्तमुद्धर्तनम् । ग्रहवि  
मानेऽप्यांसदेवाना पृच्छा, गीतम । जघन्येनान्तमुद्धर्तन पल्योपममत्तमुद्धर्तनम् । ग्रहविमाने देवीना पृच्छा,  
गीतम । जघन्येन चतुन्नागपल्योपममुत्कर्षतौद्वेपल्योपमम् । ग्रहविमानेऽप्यांसदेवीना पृच्छा, गीतम । जघन्येनोत्कर्षतद्यान्तमुद्धर्तनम् । ग्रह

प्यांस देवीनी स्थिति नो प्र० ८० हे गीतम जघन्य यो अतर्तमुद्धर्त ग्नून पल्यापम नो चौथो भाग उत्कर्ष यो पाच वर्ष अधिक पल्योपम अतर्तमुद्धर्त ग्न  
न । गहविमाणे देवाण पुच्छा । ग्रहना विमानने विषे देवता नो प्र० ८० हे गो० जघन्य यो पल्यापमनो चौथो भाग उत्कर्ष यो पल्यापम गहविमाण  
अपज्जत्तदेवाण ति । ग्रहना विमान मा अप्यांस देवता नो प्र० ८० हे गीतम जघन्य यो पिण अतर्तमुद्धर्त । गहविमाणे पज्जत्तदेवाण  
पुच्छा । ग्रहना विमानने विषे प्यांस दयनो प्र० ८० हे गीतम जघन्य अतर्तमुद्धर्त ग्नून पल्यापम नो चौथो भाग उत्कर्ष यो पल्योपम अतर्तमुद्धर्त जन  
गहविमाणे देवीण पुच्छा । ग्रहना विमानने विषे देवीना प्र० ८० हे गीतम जघन्य या पल्यापम चतुर्भाग उत्कर्ष अर्ध पल्यापम । गहविमाणे अपल



देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहस्रेण चउन्नागपलिनुवमं अतोमुज्जत्तुणं उक्कोसेणं अरुपलिनुवम अतोमुज्जत्तु  
ण । नरकत्तविमाणे देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहस्रेणं चउन्नागपलिनुवमं उक्कोसेणं अरुपलिनुवम । न  
रकत्तविमाणे अपज्जत्तयाण देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहस्रेणवि उक्कोसेणवि अतोमुज्जत्त । नरकत्तवि  
माणे पज्जत्तयाण देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहस्रेण चउन्नागपलिनुवम अतोमुज्जत्तण उक्कोसेण अरुप  
लिनुवम अतोमुज्जत्तुण । नरकत्तविमाणदेवीण पुच्छा ? गोयमा ! जहस्रेणं चउन्नागपलिनुवम उक्कोसेणं

विमाने पर्याप्तकदेवीना पुच्छा ॥ गीतम । अचन्येनान्तमुद्धूर्तान पत्त्योपमवतुर्जांगमुत्कर्षतोद्वेपत्योपममल्लर्मुद्धूर्तानम् । नत्तत्रविमाने देवाना पु  
च्छा, गीतम । अचन्येन चतुर्भागपत्त्योपममुत्कर्षतोद्वेपत्योपमम् । नत्तत्रविमानेऽपर्याप्तदेवाना पुच्छा, गीतम । अचन्येनोत्कर्षतश्चान्तर्मुद्धूर्त  
म् । नत्तत्रविमाने पर्याप्तकदेवाना पुच्छा, गीतम । अचन्येन चतुर्जांगपत्त्योपममल्लर्मुद्धूर्तानमुत्कर्षतोद्वेपत्योपममल्लर्मुद्धूर्तानम् । नत्तत्रविमाने  
देवीना पुच्छा, गीतम । अचन्यतश्चतुर्जांग पत्त्योपममुत्कर्षतस्सातिरेक चतुर्जांगपत्त्योपमम् । नत्तत्रविमानेऽपर्याप्तकदेवीना पुच्छा, गीतम ।

तियाण देवोण पुच्छा । यहविमानने विप अपर्याप्त देवीना प्र० ४० हे गीतम अचन्य था पिण उत्कर्षं थो पिण अर्तमुद्धूर्त । पज्जत्तियाणति । पर्याप्त  
यहविमाननो देवीना प्र० ४० हे गीतम अचन्य थो अर्तमुद्धूर्त न्यून पत्त्योपम चतुर्भाग उत्कर्ष थो पत्तर्मुद्धूर्तं ग्यून अउं पत्त्योपम । नत्तत्तविमाणे देवाण  
पुच्छा । नत्तत्र विमानमा देवता नां प्र० ४० हे गीतम अचन्य थो चतुर्भाग पत्त्योपम उत्कर्ष थो अउं पत्त्यापम । नत्तत्तविमाणे अपज्जत्तयाण देवाणति  
नत्तचना विमानने विपे अपर्याप्त देवता नां प्र० ४० हे गी० अचन्य थो पिण उत्कर्षं थो पिण अर्तमुद्धूर्त । नत्तत्तविमाणे पज्जत्तियाणति । नत्तचना विमान  
ने विपे पर्याप्त देवता नां प्र० ४० हे गी० अचन्य थो अर्तमुद्धूर्तं कन पत्त्यापम चतुर्भाग उत्कर्ष थो अर्तमुद्धूर्तं कन अउं पत्त्यापम । नत्तत्तविमाणे देवी  
ण पुच्छा । नत्तचना विमानने विप देवीना प्र० ४० हे गीतम अचन्य थो चतुर्भाग पत्त्योपम उत्कर्ष थो सातिरेक चतुर्भाग पत्त्योपम । नत्तत्र विमान ने

सातिरेग चउन्नागपलिनुवम । नरुत्तविमाणे अपुञ्जितियाणं देवीणं पुच्छा ? गो० ! जहणेणवि उक्कोसेणवि  
 अतोमुज्जत । नरुत्तविमाणे पज्जितियाण देवीण पुच्छा ? गो० ! जहणेण चउन्नागपलिनुवम अतोमुज्जतूणं  
 उक्कोसेण सातिरेग चउन्नागपलिनुवम अतोमुज्जतूण । ताराविमाणे देवाण पुच्छा ? गो० ! जहणेण अठ  
 न्नागपलिनुवम उक्कोसेण चउन्नागपलिनुवम । ताराविमाणे अपुञ्जितदेवाण पुच्छा ? गो० ! जहणेणवि उक्को  
 सेणवि अतोमुज्जत । ताराविमाणे पज्जितदेवाण पुच्छा, गो० ! जहणेण अठन्नागपलिनुवम अतोमुज्जतूण उ

अपुन्येनाप्युत्तपतीप्यत्तमुत्तम् । नत्तविमाने पयाप्तकदेवीना पृच्छा, गीतम् । अत्तमुत्तूत्तं चतुर्जागपत्योपममुत्तपतीत्तमुत्तूत्तं साति  
 रेक चतुर्जागपत्योपमम् । ताराविमाग देवाना पृच्छा, गीतम् । अचन्येनापुन्नाग पल्यायनमुत्तपतद्यत्तूत्तम् । ताराविमानेऽप्या  
 मदेवाना पृच्छा, गीतम् । अपन्यतद्योत्तपतीत्तमुत्तम् । ताराविमान पयाप्तदेवाना पृच्छा, गीतम् । अचन्येनात्तमुत्तूत्तं नमपुन्नागपत्यो  
 पममुत्तपतीत्तमुत्तूत्तं चतुर्जागपत्योपमम् । ताराविमाने देवीना पृच्छा, गीतम् । अचन्येनापुन्नागपत्योपममुत्तपतीत्तमुत्तूत्तम् । ताराविमानेऽप्या

विप अपर्याप्त देवीना प्रत्य उत्तर हे गीतम् अवन्त्य यो पिग उत्तपं यो पिग अत्तमुत्तूत्तं । नत्तविमाने विप पर्याप्त  
 देवीना प्रत्य उत्तर हे गीतम् अवन्त्य यो चतुर्भाग पत्यापम अत्तमुत्तूत्तं न्यून उत्तपं यो सातिरेक चतुर्भाग पत्यापम अत्तमुत्तूत्तं यून । ताराविमाने  
 देवाण ति । ताराविमानने विप देवतानो प्र० उ० हे गीतम् अवन्त्य यो अठभाग परगोपम उत्तपं यो चतुर्भाग पत्यापम अपन्यतदे  
 वाति । ताराविमान ने विप अपर्याप्त देवतानो प्र० उत्तर हे गीतम् अवन्त्य यो पिग उत्तपं यो पिग अत्तमुत्तूत्तं । ताराविमाणे पज्जितदेवाणति ।  
 ताराविमानने विप पर्याप्त देवतानो प्र० उ० हे गीतम् अवन्त्य यो अठभाग परगोपम अत्तमुत्तूत्तं यून उत्तपं यो चतुर्भाग पत्यापम अत्तमुत्तूत्तं यून  
 ताराविमाणे देवीणति । ताराविमानने विप देवीना प्रत्य उ० हे गीतम् अवन्त्य यो अठभाग परगोपम उत्तपं यो सातिरेक अठभाग पत्यापम ।



च्छा, गोयमा । जहन्तेण पलिनुवमं उक्कोसेण सत्त पलिनुवमाइ । सोहम्मे कप्पे परिग्गहियाण अपज्झाति  
याण पुच्छा, गोयमा ! जहन्तेणवि उक्कोसेणवि अतोमुज्जत्त । सोहम्मे कप्पे परिग्गहियाण पज्झासियाणं  
देवीण पुच्छा, गोयमा ! जहन्तेण पलिनुवम अतोमुज्जत्तुण उक्कोसेण सत्त पलिनुवमाइ अतोमुज्जत्तुणाड  
सोहम्मे कप्पे अपपरिग्गहियाण देवीण पुच्छा, गोयमा ! जहन्तेण पलिनुवम उक्कोसेण पन्नासपलिनुव  
माइ । सोहम्मे कप्पे अपपरिग्गहियाण अपज्झात्तियाण देवीण पुच्छा, गो० ! जहन्तेणवि उक्कोसेणवि अतो  
मुज्जत्त । सोहम्मे कप्पे अपपरिग्गहियाण पज्झात्तियाण देवीण पुच्छा, गोयमा । जहन्तेण पलिनुवम अतो

पयासकदेवीना पुच्छा, गीतम । जपन्येन पत्थोपममत्तमुद्धर्त्तनमुत्कपत्त सप्तपत्थोपमान्यत्तमुद्धर्त्तनानि । सौधमं कल्पेऽपरिग्रहीताना देवी  
ना पुच्छा, गीतम । जपन्येन पश्योपममुत्कपत्त पञ्चाशत्पत्थोपमानि । सौधमं कल्पेऽपरिग्रहीतानामपर्याप्तकाना देवीना पुच्छा, गीतम ।  
जपन्येनाप्युत्कपतोप्यत्तमुद्धर्त्तम् । सौधमं कल्पेऽपरिग्रहीताना पर्याप्तकाना देवीना पुच्छा, गीतम । जपन्येन पत्थोपममत्तमुद्धर्त्तनमुत्कपत्त

माहम्मे कप्पे परिग्गहियाण पज्झात्तियाण देवीणति । सौधमं कल्पने विधि परिग्रहीत पर्याप्तक देवीनो प्र० ४० हे गीतम जवग्य थो अतमुद्धर्त्तं ज्ञा  
पन्नापम उत्कपं थो अतमुद्धर्त्तं ज्ञान सात पत्थोपम । सोहम्मे कप्पे अपपरिग्गहियाण देवीणति । सौधमं कल्पने विधि अपरिग्रहीत देवीनो प्र० उत्तर हे  
गीतम जवग्य थो पन्नापम उत्कपं थो पवास पश्योपम । सोहम्मे कप्पे अपपरिग्गहियाण अपज्झात्तियदेवीणति । सौधमं कल्पने विधि नपरिग्रहीत  
पपर्याप्ता देवीना प्र० उत्तर हे गीतम जवग्य थो पिण उत्कपं थो पिण अन्तमुद्धर्त्तम् । सोहम्मे कप्पे अपपरिग्गहियाण पज्झात्तियाण देवीणति ।  
सौधमं कल्पने विधि अपरिग्रहीत पर्याप्तक देवीना प्र० उत्तर हे गीतम जवग्य थो पवास पश्योपम अतमुद्धर्त्तं ज्ञान उत्कपं थो  
पूणं ज्ञान । रसाणे कप्पे दयाण पुच्छा । इगान कल्पने विधि देवतानो प्र० उत्तर हे गीतम जवग्य थो सातिरेक पत्थोपम उत्कपं थो सातिरेक द्वा

मुञ्जत्तणाइ । ईसाणे कप्पे देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहस्येणं साइरेणं पलिनुवम उक्कोसेण साइरेगाइं ठो सागरोवमाइ । ईसाणे कप्पे अपज्जत्तयाण देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहस्येणवि उक्कोसेणवि अतोमुज्जत्तं ईसाणे कप्पे पज्जत्तयाणं देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहस्येणं सातिरेग पलिनुवम उक्कोसेण सातिरेगं पलिनुवम अतोमुज्जत्तणाइ । ईसाणे कप्पे देवीण पुच्छा ? गोयमा ! जहस्येणं सातिरेगं पलिनुवम उक्कोसेण पणपसपलिनुवमाइ । ईसाणं कप्पे देवीण अपज्जत्तियाणं पुच्छा, गोयमा ! जहस्येणं उक्कोसेणवि अतोमुज्जत्तं । ईसाणे कप्पे पज्जत्तियाण देवीण पुच्छा, गोयमा ! जहन्तेणं साइरेगं

पञ्चाशत्पत्थोपमान्यत्तमुद्भूतानि । ईशाने कल्पे देवाना पुच्छा, गीतम ! जघन्येन सातिरेक पत्थोपममुत्कपंत सातिरेके द्वे सागरोपमे । ईशाने कल्पेऽपर्याप्तकदाना पुच्छा, गीतम ! जघन्येनाप्युत्कपंतोप्यत्तमुद्भूतम् । ईशाने कल्पे देवाना पर्याप्तकाना पुच्छा, गीतम ! जघन्ये न सातिरेके पत्थोपममत्तमुद्भूतम् । उत्कपंत सातिरेके द्वे सागरोपमेत्तमुद्भूतम् । ईशाने कल्पे देवीना पुच्छा, गीतम ! जघन्यत साति रेके पत्थोपममुत्कपंत पञ्चपञ्चाशत्पत्थोपमानि । ईशाने कल्पेऽपर्याप्तकदेवीना पुच्छा, गीतम ! जघन्येनाप्युत्कपंतोप्यत्तमुद्भूतम् । ईशाने

सागरोपम । ईशाणे कप्पे अपज्जत्तियाण देवाणति । ईमान कल्पने विपे अपर्याप्तक देवनी प्र० छ० हे गीतम जघन्य यो पिण उत्कपं यो पिण अन्तमु द्भूतं । ईशाणे कप्पे पज्जत्तयाण देवाणति । ईमान कल्पने विपे पर्याप्तक देवतानो प्र० छ० हे गीतम जघन्य यो सातिरेक परबोपम अन्तमुद्भूतं जन उत्कपं यो सातिरेक टोय सागरोपम अन्तमुद्भूतं जन । ईशाणे कप्पे देवीणति । ईमान कल्पने विपे देवीनो प्रश्न उत्तर हे गीतम जघन्य यो सातिरेक परबोपम उत्कपं यो पचावन परबोपम । ईशाणे कप्पे अपज्जत्तियादेवीणति । ईमाने कल्पने विपे अपर्याप्तक देवीनो प्रश्न छ० हे गीतम जघन्य यो पिण उत्कपं यो पिण अन्तमुद्भूतं । ईसाणे कप्पे पज्जत्तियादेवीणति । ईमान कल्पने विपे पर्याप्तक देवीनो प्रश्न उत्तर हे गीतम जघन्य यो सातिरेक

पलिनुवम अतोमुज्जत्तूणं उक्कोसेणं पणपणपलिउत्तमाइं अतोमुज्जत्तूणाइ । ईसाणे कप्पे परिग्गहियाण देवीण पुच्छा ? गोयमा । जहन्नेण साइरंग पलिनुवम उक्कोसेण नव पलिनुवमाइं । ईसाणं कप्पे परिग्गहियाण अपज्जत्तियाण देवीण पुच्छा ? गोयमा । जहन्ने गवि उक्कोसेणवि अतोमुज्जत्त । ईसाणं कप्पे परिग्गहियाण पज्जत्तियाण देवीण पुच्छा ? गोयमा । जहणेण साइरंग पलिनुवम अतोमुज्जत्तूण उक्कोसेण नव पलिनुवमाइ अतोमुज्जत्तूणाइ । ईसाणं कप्पे अपरिग्गहियाण देवीण पुच्छा ? गोयमा । जह

कल्प पयाप्तकदवीना पृच्छा, गीतम् । जघन्येन सातिरेक पश्योपममन्तमुद्भूतान्मुरक्षपत पञ्चपञ्चाशत्पश्योपमान्यन्तमुद्भूतानानि । इदानीं कल्पे परिग्रहीताना दैवीना पृच्छा, गौ० । जघन्येन सातिरेक पश्योपममुरक्षपतो नव पश्योपमानि । इदानीं कल्प परिग्रहीतानामपयोप्तन दैवीना पृच्छा, गीतम् । जघन्येनाप्युत्कर्षतोप्यन्तमुद्भूतम् । इदानीं कल्पे परिग्रहीताना पयाप्तकदवीना पृच्छा, गीतम् । जघन्येन सातिरेक पश्योपममन्तमुद्भूतान्मुरक्षपतो नवपश्योपमान्यन्तमुद्भूतानानि । इदानीं कल्पऽपरिग्रहीताना दैवीना पृच्छा, गीतम् । जघन्येन सातिरेक

? गीयमा ! जहखेणवि उक्खोसेणवि अतोमुज्जत्तं । वज्रलोए पज्जत्ताणं पुच्छा , गीयमा ! जहन्तेणं सत्त  
 सागरोवमाड अतोमुज्जत्तणाड । उक्खोसेण दससागरोवमाड अतोमुज्जत्तणाडं । लंतए पुच्छा ? गो० । जह  
 न्तेण दससागरोवमाड उक्खोसेण चउदससागरोवमाड । लंतए अपज्जत्ताण पुच्छा ? गीयमा ! जहखेणानि  
 उक्खोसेणवि अतोमुज्जत्त । लंतए पज्जत्ताण पुच्छा , गीयमा ! जहन्तेण दससागरोवमाड अतोमुज्जत्तणाड  
 उक्खोसेण चउदससागरोवमाड अतोमुज्जत्तणाडं । महासुक्खी देवाण पुच्छा , गीयमा ! जहन्तेण चउदससा  
 गरोवमाड उक्खोसेण सत्तरसागरोवमाड । महासुक्खी अपज्जत्ताणं पुच्छा , गीयमा ! जहन्तेणानि उक्खोसे

श्रान्तमुद्गत्तम् । दृष्टलोक कल्पेपर्याप्तकाना पृच्छा , गीतम् । जघन्येन सप्तसागरोपमाख्यन्तमुद्गत्तानि उल्कयन्तो दशसागरोपमाख्यन्तमुद्गत्तानि । लान्तके पृच्छा , गी० । जघन्येन दशसागरोपमाख्यत्कर्पत चतुदशसागरोपमाख्यत्कर्पत । लान्तकऽपर्याप्तकाना पृच्छा , गीतम् । जघन्येनोत्कपत  
 श्रान्तमुद्गत्तम् । लान्तके पर्याप्तकाना पृच्छा , गीतम् । जघन्येन दशसागरोपमाख्यन्तमुद्गत्तानाभ्युत्कर्षयन्तमुद्गत्तानि । महा  
 शुक्ते देशाना पृच्छा , गीतम् । जघन्येन चतुदश सागरोपमाख्यत्कर्पत सप्तदश सागरोपमाख्यि । महाशुक्ते ऽपर्याप्तकदेवाना पृच्छा , गीतम् । जघ  
 न्येनीरुत्कर्षयन्तमुद्गत्तम् । महाशुक्ते पर्याप्तकाना पृच्छा , गीतम् । जघन्येन चतुदशसागरोपमाख्यन्तमुद्गत्तानाभ्युत्कर्षयन्त सप्तदशसागरोपमाख्य

रापम श्रान्तमुद्गत्तं धीं ऊन । लतए पुच्छा । लतकनो प्र० उत्तर हे गीतम् जघन्य धीं दस सागरोपम उरुत्कर्ष धीं चउदे सागरोपम । लतए अपप  
 ताचति । लतक देवकीकने विप चपर्याप्त देवतानो प्र० उत्तर हे गीतम् जघन्य धीं विप उरुत्कर्ष धीं विप श्रान्तमुद्गत्तं । लतए पञ्चताचति ।  
 सतकने विपे पर्याप्त देवतानो प्र० उत्तर हे गीतम् जघन्य धीं दस सागरोपम श्रान्तमुद्गत्तं धीं ऊन उरुत्कर्ष धीं ऊन चउदे सागरोपम ।  
 महाशुक्ते देवाचति । महाशुक्ते देवकीकने विपे देवतानो प्र० उत्तर हे गीतम् जघन्य धीं चउदे सागरोपम उरुत्कर्ष धीं सत्तर सागरोपम । महाशुक्ते

णवि अतोमुज्जत्तं । महासुक्ते पज्जत्ताण पुच्छा, गोयमा ! जहन्तेण चीटस्ससागरोवमाइ अतोमुज्जत्तूणाइ उक्कोसेण सत्तरसागरोवमाइ अतोमुज्जत्तूणाइ । सहस्सारे देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेण सत्तरसागरोवमाइ उक्कोसेण अठारससागरोवमाइ । सहस्सारे अपज्जत्ताण पुच्छा, गोयमा ! जहन्तेणवि उक्कोसेणवि अतोमुज्जत्तं । सहस्सारे पज्जत्ताण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेण सत्तरसागरोवमाइ अतोमुज्जत्तूणाइ उक्कोसेण अठारस सागरोवमाइ अतोमुज्जत्तूणाइ । आणए देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेण अठारस

त्तमुहुत्तानि । सहस्सारे देवाना पृच्छा, गीतम । जघन्येन सप्तदश सागरोपमाण्युत्कर्षतोष्टादशसागरोपमाणि । सहस्सारेऽपय्याप्तकाना पृच्छा, गीतम । जघन्येनोत्कर्षतश्चान्तमुहुत्तम् । सहस्सारे पयाप्तकाना पृच्छा, गीतम । जघन्येन सप्तदश सागरोपमाण्युत्कर्षतोष्टादश सागरोपमाण्यन्तमुहुत्तानि । आनते कल्पे देवाना पृच्छा, गीतम । जघन्येनाष्टादशसागरोपमाण्युत्कर्षत एकोनविंशति सागरोपमाणि । आनते कल्पेऽपय्याप्तकाना दयाना पृच्छा, गीतम । जघन्येनोत्कर्षतश्चान्तमुहुत्तम् । आनते कल्पे पयाप्तकदेवाना पृच्छा, गीतम । जघन्येनाष्टा

अपज्जत्ताणति । महासुक्ते देवलोकेने विषे अपर्याप्त देवतानो प्र० एत्तर हे गीतम जघन्य यो पिण उत्कर्षं यो पिण अन्तमुहुत्तं । महासुक्ते पज्जत्ताणति । महासुक्तेने विषे पर्याप्त देवताना प्र० ए० हे गीतम जघन्य यो चउट्टे सागरोपम । अन्तमुहुत्तं करिं जन उत्कर्षं यो सत्तर सागरोपम अन्तमुहुत्तं करिं जन । सहस्सारे देवाणति । सहस्सार देवलोकेने विषे देवतानो प्र० एत्तर हे गीतम जघन्य यो सत्तर सागरोपम उत्तह्व यो अठारे सागरोपम । सहस्सारे अपज्जत्ताणति । सहस्सारकल्पने विषे अपर्याप्त देवतानो प्र० ए० हे गीतम जघन्य यो पिण उत्कर्षं यो पिण अन्तमुहुत्तं । महासुक्ते पज्जत्ताण देवाणति । सहस्सारे कल्पने विषे पर्याप्त देवताना प्र० एत्तर हे गीतम जघन्य यो सत्तर सागरोपम अन्तमुहुत्तं जन उत्कर्षं यो अठारे सागरोपम अन्तमुहुत्तं जन । आणए कल्पेति । आनतकल्पे देवताना प्र० ए० हे गीतम जघन्य यो अठारे सागरोपम उत्तह्व एगणोस सागरोपम ।



मेण तेवीसं सागरोवमाड् अतोमुज्जत्तूणाइं । हिठिममज्जिम गेविज्जदेवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहस्येणं  
तेवीस सागरोवमाड् उक्कोसेण चोवीस सागरोवमाड् । हिठिममज्जिम अपज्जत्तयदेवाण पुच्छा, गो० !  
जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अतोमुज्जत्तं । हिठिममज्जिम पज्जत्तदेवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहस्येणं तेवीस  
सागरोवमाड् अतोमुज्जत्तूणाड् उक्कोसण चोवीस सागरोवमाड् अतोमुज्जत्तूणाड् । हिठिमउवरिमगेविज्जदे  
वाण पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेण चउवीस सागरोवमाड् उक्कोसेण पणवीससागरोवमाड् । हिठिमउवरिम  
गेविज्जदेवाण अपज्जत्ताणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अतोमुज्जत्त । हिठिमउवरिमगेवि

तुं चणत्तिसागरोपमाणुत्तकपत्त पच्चविज्ञत्तिसागरोपमाणि । अघस्तनो परितन गेवेयकदेवानामपर्याप्ताना पुच्छा, गीतम । जघन्येनोरुत्तपत्त ।  
हे इमहेहिम गेवेयकदेवतानो प्रश्न ४० हे नौ । जघन्य यो पिण तेवीस सागरोपम उत्तपत्त यो पिण चोवीससागरापम । हेहिमहेहिम अपल्लत्तदेवाणत्ति ।  
हेहिमहेहिम गेवेयकने विपे अपर्याप्त देवतानो प्रश्न ४० हे गीतम जघन्य यो पिण उत्तपत्त यो पिण अत्तमुत्तपत्त । हिहिमहेहिमगेविज्जदेवाण पुच्छेत्ति ।  
हेहिममध्यम गेवेयकदेवतानो प्रश्न ४० हे गीतम जघन्य यो पिण तेवीस सागरोपम उत्तपत्त यो पिण चोवीस सागरोपम । हेहिममज्जिम अपज्जत्तदेवाण  
त्ति । हेठे मध्यम अपर्याप्त देवतानो प्रश्न ४० हे गीतम जघन्य यो पिण उत्तपत्त यो पिण अत्तमुत्तपत्त । हेहिममज्जिम पल्लत्तदेवाणत्ति । हेहिम मध्यम  
पर्याप्त देवतानो प्र० ४० हे गीतम जघन्य यो तेवीस सागरोपम अत्तमुत्तपत्त जन उत्तपत्त यो चोवीस सागरोपम अत्तमुत्तपत्त । हेहिम उवरिमगेवि  
ज्जदेवाणत्ति । हेठिम उपरिमगेवेयक देवतानो प्र० ४० हे गीतम जघन्य यो चउवीस सागरोपम उत्तपत्त यो पचविशत्ति सागरापम । हेठिम उवरिमगे  
विज्जदेवाण अपज्जत्ताणत्ति । हेठिम उवरिमगेवेयक देवता अपर्याप्तानो प्र० ४० हे गीतम जघन्य यो पिण उत्तपत्त यो पिण अत्तमुत्तपत्त । हेहिमउवरि  
मगेविज्जदेवाण पज्जत्ताणं पुच्छत्ति । हे इमउवरिम गेवेयकना पर्याप्त देवतानो प्र० उत्तर हे गीतम जघन्य यो चोवीस सागरापम अत्तमुत्तपत्त जन

ज्जदेवाण पज्जज्ञाण पुच्छा, गोयमा । जहन्तेण चउवीस सागरोवमाइं अतोमुज्जत्तूणाइं उक्कोसेणं पणवीसं सागरोवमाइ अतोमुज्जत्तूणाइ । मज्झिमहेठिमगेविज्जदेवाण पुच्छा, गोयमा ! जहणेण पचवीस सागरो वमाइ उक्कोसेण वहीस सागरोवमाइ । मज्झिमहेठिमगेविज्जदेवाण अपज्जज्ञाण पुच्छा ? गोयमा ! जहणेण रोणवि उक्कोसेणवि अतोमुज्जत्त । मज्झिमहेठिमगेविज्जदेवाणं पज्जज्ञाण पुच्छा, गोयमा । जहणेण पणवीस सागरोवमाइ अतोमुज्जत्तूणाइ उक्कोसेण वहीस सागरोवमाइ अतोमुज्जत्तूणाइ । मज्झिम २ गोवि

द्यान्तमुद्दत्तम् । अपस्तनो परितनग्रेवयकदेवाना पर्याप्ताना पृच्छा, गौ० । जपन्येन चतुर्विंशतिसागरोपमाख्यन्तमुद्दत्तानि उत्कर्षेण पञ्च विंशति सागरोपमाख्यन्तमुद्दत्तानि । मध्यमाचस्तनग्रेवयकदेवाना पृच्छा, गौतम । जपन्येन पञ्चविंशतिसागरोपमाख्यत्कपत्त पङ्क्तिंशति सागरोपमाणि । मध्यमाऽप्यस्तनग्रेवयकदेवानामपयाप्ताना पृच्छा, गौतम । जपन्येमाप्युत्कर्षतस्यान्तमुद्दत्तम् । मध्यमाचस्तनग्रेवयकपर्याप्त देवाना पृच्छा, गौतम । जपन्येन पञ्चविंशतिसागरोपमाख्यन्तमुद्दत्तानि उत्कर्षेण पङ्क्तिंशतिसागरोपमाख्यन्तमुद्दत्तानि । मध्यममध्यम ग्रेवयकदेवाना पृच्छा, गौतम । जपन्येन पङ्क्तिंशतिसागरोपमाणि उत्कर्षेण सप्तविंशतिसागरोपमाणि । मध्यममध्यमग्रेवयके अपर्याप्ताना दे

उत्कर्षं धो पचीस सागरोपम अन्तमुद्दत्तं जन । मज्झिमहठिमगेविज्जदेवाणति । मध्यम हठिमग्रेवयक देवतानो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य धो प चीस सागरोपम उत्कर्षं धो कवीस सागरोप । मज्झिम हेठिमगेविज्जग अपज्जज्ञदेवाणति । मध्यम हेठिम ग्रेवयकना अपर्याप्त देवतानो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य धो पिण उत्कर्षं धो पिण अन्तमुद्दत्तं । मज्झिमहेठिमगेविज्जदेवाण पज्जज्ञाणति । मध्यम हेठिम ग्रेवयकना पर्याप्त देवतानो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य धो पचीस सागरोपम अन्तमुद्दत्तं जन उत्कर्षं धो कवीस सागरोपम अन्तमुद्दत्तं जन । मज्झिम २ गोविज्जदेवाणति । मध्यम २ ग्रेवयक देवताना प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य धो कवीस सागरोपम उत्कर्षं धो कवीस सागरोपम अपज्जज्ञदेवाणति । मध्यम २

पुच्छा, गीयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतीमुज्जत्तं । उवरिममज्जिमगेविज्जगदेवाणं पज्जत्ताणं पुच्छा ? गीयमा ! जहन्नेण एगणतीसं सागरोवमाइ अंतीमुज्जत्तूणाइ । उवरिम २ गेविज्जगदेवाणं पुच्छा, गीयमा ! जहन्नेण तीस सागरोवमाइ उक्कोसेण एक्कतीस सागरोवमाइ । उवरिम २ गेविज्जगदेवाण अणपज्जत्ताण पुच्छा ? गीयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतीमुज्जत्तं । उवरिम २ गेविज्जगदेवाण पज्जत्ताण पुच्छा, गीयमा जहन्नेणं तीस सागरोवमाइ अंतीमुज्जत्तूणाइ

गीतम । जघन्येनैकोनत्रिसत्सागरोपमाण्युत्कर्षतं त्रिसत्सागरोपमाणि । उपरितन मध्यमगैवेयकदेवानामपर्याप्ताना पृच्छा, गीतम । जघन्येनाप्युत्कर्षतद्यान्तमुद्भूतम् । उपरितनमध्यमगैवेयकदेवाना पर्याप्ताना पृच्छा, गीतम् । जघन्येनेकोनत्रिशत्सागरोपमाण्युत्कर्षतं त्रिसत्सागरोपमाण्यन्तमुद्भूतानि । उपरिमोपरिमगैवेयकदेवाना पृच्छा, गीतम् । जघन्येन त्रिशत्सागरोपमाण्युत्कर्षत एकत्रिशत्सागरोपमाणि । उपरिमोपरिमगैवेयका पर्याप्तकदेवाना पृच्छा, गीतम् । जघन्येनाप्युत्कर्षतोप्यन्तमुद्भूतम् । उपरिमोपरिमगैवेयकदेवाना पर्याप्ताना पृच्छा, गीतम् । जघन्येन त्रिशत्सागरोपमाण्यन्तमुद्भूतानि उत्कर्षत एकत्रिशत्सागरोपमाण्यन्तमुद्भूतानि । विजयवैजयन्तजयन्तापराजि

दन्तं । उवरिममज्जिमगेविज्जगदेवाण पज्जत्ताण्यति । उपरिममध्य गैवेयकना पर्याप्त देवतानो प्र० छ० हे गीतम जघन्य क्षेत्रे एगुणतीस सागरोपम अतमुद्भूतं जन वटकर्षं यो वीस सागरोपम अन्तमुद्भूतं जन । उवरिम २ गेविज्जगदेवाण्यति । उपरिम २ गैवेयकना देवतानो प्र० छ० हे गीतम जघन्य यो वीस सागरोपम वटकर्षं यो एकवीस सागरापम । उवरिम २ गेविज्जगदेवाण अपज्जत्ताण्यति । उपरिम २ गैवेयकना अपर्याप्त देवतानो प्र० छ० हे गीतम जघन्य यो पिय वटकर्षं यो पिय अन्तमुद्भूतं । उवरिम २ पज्जत्तदेवाण्यति । उपरिमोपरिम गैवेयकना पर्याप्त देवतानो प्र० छ० हे गीतम जघन्य यो वीस सागरोपम अतमुद्भूतं जन वटकर्षं यो एकवीस सागरोपम अन्तमुद्भूतं जन । विजयवैजयन्तजयन्तापराजितिसु देवाण्यति । विजयवैजयन्त

उक्त्वोसेणं एकृतीसं सागरोवमाइ अतोमुज्जत्तूणाइ । विजयवेजयंतजयंतअपराजिएसुणं नत्ते देवाण केवड  
य काल ठिइ पणत्ता ? गोयमा ! जहणेण एकृतीस सागरोवमाइ उक्त्वोसेण तत्तीस सागरोवमाइ । वि  
जयवेजयंतजयंतअपराजितदेवाण अपज्जत्ताण पुच्छा, गोयमा ! जहन्तणवि उक्त्वोसेणवि अतोमुज्जत्त ।  
विजयवेजयंतजयंतअपराजिसंदेयाण पज्जत्ताणं पुच्छा, गोयमा ! जहणेण एकृतीस सागरोवमाइ अतोमु  
ज्जत्तूणाइ उक्त्वोसेण तत्तीस सागरोवमाइ अतोमुज्जत्तूणाइ । सब्बसिद्धगदेवाण नत्ते । केवइय काल ठिइ  
पणत्ता ? गोयमा ! अजहन्तमणक्त्वोनेण तत्तीस सागरावमाइ ठिइ पणत्ता । सब्बसिद्धगदेवाण अपज्जत्ताण

तेषु तदस्य । देवानां कियन्त कालं स्थितिं प्रज्ञप्ता ? गीतम् । अचयेनैकत्रिंशत्सागरोपमाभ्युत्कृष्टतत्त्वयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि । यिजयर्विजयस्तपस्तपराजितदेवानामपपाप्तानां पृच्छा, गीतम् । अचयेनाप्युत्कृष्टतोष्यन्तमुद्भूतम् । विजययैजयस्तपस्तपराजितेषु पर्याप्तदेवानां पृच्छा, गीतम् । अचयेनैकत्रिंशत्सागरोपमाण्यन्तमुद्भूतानां उत्कर्षतस्त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाण्यन्तमुद्भूतानि । सवायसिद्धकदेवानां षट्सु । कियन्त कालं स्थितिं प्रज्ञप्ता ? गीतम् । अचन्यानुत्कर्षेण त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि स्थितिं प्रज्ञप्ता । सर्वार्यसिद्धकदेवानामपर्याप्तका

अग्र्य अपराहित विमान ना उक्त, नो प्र० उ० हे गीतम लवण्य धो एकनौस सागरापम उत्कर्षं धौ तत्रौस सागर पम । विजयवैजयगतजयगत अपराहितदेशण अपप्यसाधति । विजय वैजयगत जगत अपराहितना अपर्गात देवतानो प्र० उ० हे गौ० जघग्य धौ पिण उत्कर्षं नो पिण अन्तर्मुह्यत । विजयअग्र्यगतगतअपराहितदेशण पजसाधति । विजय वैजयगत जगत अपराहित विमानना पर्याप्त देवताना प्र० उत्तर हे गीतम जघग्य धौ उत्कर्षोस सागरापम अग्र्यमूर्धनं जान उत्कर्षं धौ तत्रौस सागरापम अन्तर्मुह्यत । सर्वाधिसिद्ध विमानना देवताना

१. मय स्यादिविमानेषुपि ज्ञातनीय । इतिश्री मलयगिरिविचिताया प्रज्ञापनाटीकाया चतुर्थं स्थितारूप पद समाप्त ॥ ४ ॥

तद्वय व्याख्यात चतुर्थपदसिद्धान्तो पञ्चममारज्यत तस्य चायमार्ज्यसम्यग् , इद्वानन्तरपदे नारसादिपर्यायकूपेन सत्त्वानामास्थितिज्ज्ञा इत्युक्तो  
दृष्टिनामोपशमिज्ज्ञायाश्रयपर्यायावधारण प्रतिपाद्यने , तत्रचदनादिम सूत्र-कडविज्ञाण ज्ञते । पञ्चवा यत्तत्ता इति ॥ अय कर्माभिमा  
येण गीतस्त्वामिना ज्ञावानव पट ? उच्यते-उक्तमादौ प्रथमपदे प्रज्ञापना द्विविधा प्राप्ता स्तद्यथा-जीवप्रज्ञापना अजीवप्रज्ञापनाचेति , तत्र जी

पुच्छा , गोयमा ! जहणैणवि उक्तासेणवि अतोपुज्जत । सत्त्वसिद्धदेवाणं पञ्चात्तणं केवइय काल ठिड  
पणत्ता ? गोयमा ! अजहन्नमणुक्तासेण ततोस सागरोवमाइ अतोपुज्जत्तणाड ठिडं पणत्ता । पणत्त  
णाए जगवतीण चउत्थ ठिडपद सम्मत्त ॥ ४ ॥ कडविहाण जत्त ! पञ्चात्ता पणत्ता ? गोयमा !

ना पुच्छा , गीतम । जघन्येनाप्युत्कपतोप्यत्तमुत्तम् । सर्वोयंयिदुक्केवाना प्रदत्त । पर्याप्ताना पुच्छा , गीतम । अजपयन्यनुरूपण न  
यत्तज्जसागरोपपाय्यत्तमुत्तमोत्तमानि स्थिति प्रज्ञप्ता ॥ इतिजीवप्रज्ञापनामूत्रसंस्कृतानुवादे रामचन्द्रगणितविनेयेन नानरुचन्द्रेण प्रिचित  
चतुर्थं स्थितिपद सम्पूर्णम् ॥ ४ ॥ कतिपिया प्रदत्त । परंवा प्रज्ञप्ता ? गीतम । द्विविधा . प्रज्ञप्तास्तद्यथा-जीवप

यंमद विमानाया यपर्याप्त दृष्टतानो हे भगवन् केतला काखनो स्थिति कहो प्र० उ० हे गीतम जयन्त यो पिण उरुत्तं यो पिण अन्तर्मुहूर्त्तं नी कहो  
सम्बुत्तुदगदेवाण पञ्चात्ताणति । सर्वोयंसिद्ध विमानना पर्याप्त देवतानो केतला काननो स्थिति कहो प्र० उत्तर हे गीतम अजयय यो अन्तर्मुहूर्त्तं यो  
तेवास सागरोपमं अन्तर्मुहूर्त्तं ग्वन् नो कहो ॥ एतले प्रज्ञापना नो चौथो स्थिति पट पूर्णं यथा ॥ ४ ॥ चतुर्थं पदने विपे नारकादि पर्मा  
गत्तं यो जीव तो स्थिति कहो इहा पचम पदने बिदि तो औदगिज्ज्ञा चावोपगमिक चायक भाव चायो पर्याय नो अत्रधारण कहेहे—कति विहाण  
भतेति । येतले भेदे हे भगवन् पर्यायि कक्षा प्रथ उत्तर हेगीतम जगधारना कक्षा ते कहेहे—जीव पर्याय सने अजीव पर्याय । जीवपञ्चापाण भतेसि । जी

